VESSELS, WITH POSITION AT TIME OF OBSERVATION.	Barometer reduced to sea-level		Temperature of the air.		Relative humidity.	Wind.			Clouds.			Rain or melted snow in the past 12 hrs.	Sea-waves.		Weather.
						Direction.	Velocity.	Force.	Amount and kind.		Direction.		Character.	Direction from.	
	Inch.	Mill.	Fah.	Cent.	Per cent.	From.	Miles p. hr.	Mtrs. p. sec	Upper. 0–10	Lower. 0–10	From.				
MERCHANT MARINE.—Continued.															
S. S. Mexico, N. 30° 50′, W. 116° 31′ †	30.05	763.3	64.6	18.1	86	se.	.....	.....	3	.....	10	.....	mod.	se.	cloudy.
S. S. Bothnia, N. 48° 43′, W. 31° 30′	30.06	763.5	58	14.4	82	nnw.	.....	.....	2	.....	9	.....	con.	.....	overcast.
S. S. Gallia, N. 51° 30′, W. 10° 17′	29.64	752.8	54	12.2	87	n.	.....	.....	6	.....	2	.....	mod.	nw.	fine.
S. S. Marathon, N. 36° 40′, W. 0° 11′	30.13	765.3	76	24.4	.....	sw.	.....	.....	4	.....	2	.....	sm'h	w.	clear.
S. S. Parthia, Saint George's Channel*†	29.20	741.7	47	8.3	.....	sw.	.....	.....	7	.....	5	.....	mod.	w.	overcast.
S. S. Pavonia, N. 42° 23′, W. 50° 09′*	30.05	763.3	54	12.2	87	ne.	.....	.....	5	.....	0	.....	long	ene.	clear.
S. S. Scythia, New York, N. Y.	30.11	764.8	52	11.1	93	wsw.	.....	.....	2	.....	2	.....	calm	o	o	.....	.....	fine.
S. S. Canada, N. 49° 30′ W. 19° 30′	30.01	762.2	46.4	8	.....	nw.	.....	.....	4	.....	2	.....	wnw.	o	o	h'vy	nw.	clear.
S. S. France, N. 49° 30′, W. 72° 25′	.....	.....	46.4	8	.....	nnw.	.....	.....	4	ck	0	.....	n	o	o	h'vy	ne.	cloudy.
S. S. Labradore, N. 49° 38′, W. 26° 36′*†	30.16	766.0	57.2	14	.....	w.	.....	.....	3	.....	6	.....	w.	o	o	h'vy	w.	fair
S. S. Ville de Marseilles, N. 49° 50′ W. 1° 16′*†	29.35	745.5	57	13.9	.....	wnw.	.....	.....	6	.....	6f	.....	wnw.	h'vy	h'vy	r'gh	w.	covered.?
S. S. Abyssinia, N. 41° 03′, W. 66° 26′	.....	.....	57	13.9	81	n.	.....	.....	9	.....	10	.....	ne.	8 h'r	8 h'r	h'vy	e;ne.	gloomy.
S. S. Gellert, N. 50° 40′, W. 20° 52′	29.90	759.4	58	14.4	.....	wnw.	.....	.....	6	.....	4	.....	nw.	o	o	cross	w.	cloudy.
S. S. Silesia, N. 48° 55′, W. 11° 30′†	29.72	754.9	53	11.7	.....	w.	.....	.....	7	.....	4	.....	wnw.	o	o	7	wnw.	d. clouds.
S. S. Vandalia, N. 41° 45′, W. 58° 40′	30.04	763.0	61.2	16.2	.....	e.	.....	.....	6	.....	10	.....	e.	4 h'r	4 h'r	hv'y	e.	rainy.
S. S. City of Berlin, N. 46° —′, W. 50° 15′	30.23	767.8	40	4.4	91	ene.	.....	.....	2	.....	2	.....	e.	.....	.....	.....	.....	clear.
S. S. Archimedes, N. 41° 28′, W. 63° 39′	.....	.....	.....	.....	.....	ene.	.....	.....	7	.....	10	.....	ene.	10 h'r	10 h'r	h'vy	ne.	raining.
S. S. Hevelius, Buenos Ayres, Argentine Rep*†	30.09	764.3	62	16.7	.....	ne.	.....	.....	5	.....	4	.....	nne.	o	o	.....	.....	clear
S. S. Ptolmey, S. 14° 45′, W. 35° 30′	29.98	761.5	82.2	27.8	83	n.	.....	.....	6	.....	10	.....	.....	4 h'r	4 h'r	3	nne.	raining.
S. S. City of San Antonio, Nassau, Bahamas, W. I†	30.12	765.0	78	25.6	.....	ve	.....	.....	4	.....	2	.....	ne.	o	o	.....	.....	fair.
S. S. Colorado, N. 33° 06′, W 76° 56′ †	30.26	768.6	56	13.3	.....	ne.	.....	.....	3	.....	5	.....	ne.	o	o	high	ne.	fair.
S. S. Rio Grande, Galveston, Texas†	30.08	764.0	78	25.6	.....	se.	.....	.....	3	.....	2	.....	se.	o	o	.....	.....	clear.
S. S. San Marcos, Key West, Fla†	30.22	767.6	78	25.6	.....	ne.	.....	.....	4	.....	0	.....	.....	.....	.....	mod.	e.	fine.
S. S. Archimede, Palermo, Sicily*†	29.95	760.7	68	20.0	74	sw.	.....	.....	4	.....	4	.....	sw.	o	o	.....	.....	fair.
S. S. Hermod, N. 47° 03′, W. 33° 59′†	29.96	761.0	57.2	14	.....	ne.	.....	.....	4	.....	10	.....	nne.	o	o	long	wnw.	cloudy.
S. S. Glenapp, S. 3° 30′, W. 37° 30′ †	30.00	762.0	79	26.1	.....	e.	.....	.....	3	ck	8 s	.....	e.	o	o	light	e.	cloudy
S. S. Chalmette, N. 27° 47′, W. 87° 30′ †	30.21	767.3	71	21.7	.....	e.	.....	.....	1	.....	3	.....	e.	o	o	sm'h	.....	clear.
S. S. Lone Star, N. 37° 55′ W. 74° 30′ †	30.24	768.1	54	12.2	.....	nw.	.....	.....	2	.....	2	.....	calm	o	o	large	ne.	hazy.
S. S. New York, N. 39° 15′, W. 74° 15′	.....	.....	50	10.0	.....	nnw.	.....	.....	4	.....	10	.....	n.	o	o	ong	ene.	cloudy.
S. S. Denmark, N 41° 20′, W 58° 47′	.....	.....	61	16.1	.....	e.	.....	.....	6	.....	10	.....	ese.	2 h'r	2 h'r	r'gh	e.	squally.
S. S. England, N. 42° 41′, W. 56° 18′	30.01	762.2	.....	.....	.....	ese.	.....	.....	5	.....	2	.....	ese.	o	o	h'vy	ese.	clear.
S. S. Erin, New York, N. Y.	30.16	766.1	56	13.3	.....	n.	.....	.....	3	.....	8	.....	n.	o	o	.....	.....	fine
S. S. Greece, N. 49° 05′, W. 16° 30′	29.78	756.4	.....	.....	.....	w.	.....	.....	5	.....	8	.....	w.	2 h'r	2 h'r	long	nw.	squally
S. S. Helvetia, off Poor Head, Ireland	29.48	748 8	50	10.0	.....	w.	...	.....	7	.....	2	.....	w.	7 h'r	7 h'r	long	w.	raining.
S. S. Santiago, N. 33° 00′ W. 73° 27′	30.40	772.1	68	20.0	79	n.	.....	.....	4	.....	4	.....	ne.	o	o	long	ne.	fine.
S. S. City of Alexandria, N. 39° 52′, W. 73° 55′†	30.21	767.3	50	10.0	.....	nnw.	.....	.....	6	.....	.....	.....	.....	.....	.....	mod.	ne.	
S. S. City of Merida, N. 19° 10′, W. 96° 08′*†	29.98	761.5	73.4	23	.....	w.	.....	.....	1	.....	5	.....	e.	2 h'r	2 h'r	light	se.	fine.
S. S. City of Washington, N. 23° 10′, W. 82° 24′ *†	30.22	767.6	80	26.7	.....	ne.	.....	.....	5	.....	5	.....	ne.	o	o	sm'h	.....	fine.
S. S. City of Chester, N. 47° 16′, W. 47° 15′	.....	.....	37	2.8	.....	w.	.....	.....	1	.....	.....	.....	.....	.....	.....	sm'h	.....	cloudy.
S. S. Knickerbocker, N. 25° 49′, W. 84° 30′ *†	30.19	766.8	75	23.9	.....	ne.	.....	.....	6	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	sw.	squally.
S. S. Elbe, N. 40° 30′, W. 69° 11′	30.11	764.8	47.3	8.5	78	n.	.....	.....	6	.....	10	.....	n.	o	o	cross	n;e.	covered.
S. S. Koln, N. 42° 30′, W. 58° 58′	29.93	759.4	58.5	14.7	91	e.	.....	.....	6–7	.....	10	.....	e.	8 h'r	8 h'r	r'gh	ene.	drizzling.
S. S. Kronprinz F. Wilhelm, N. 50° 19′, W. 0° 55′ *	29.43	747.5	52.7	11.5	.....	wnw.	.....	.....	5–6	.....	5	.....	wnw.	3 h'r	3 h'r	h'vy	nw.	squally.
S. S. Oder, N. 49° 51′, W. 6° 59′	29.07	753.6	53.6	12.0	.....	nw.	.....	.....	5	.....	2	.....	nw.	2 h'r	2 h'r	r'gh	nw.	fair
S. S. Ohio, N. 26° 10′, W. 87° 06′	30.22	767.6	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	2	.....	3	.....	nne.	o	o	sm'h	nne.	fair.
S. S. Sallier, N. 44° 05′, W. 54° 02′	30.16	766.1	41.0	5.0	.....	e.	.....	.....	4	.....	10	.....	e.	o	o	long	e.	cloudy.
S. S. Weser, N. [illegible]	[illegible]														covered.

11,319

S. S. City of Alexandria, N. 39° 32′, W. 73° 35′ †.....	30.21	761.3	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....
S. S. City of Merida, N. 19° 10′, W. 96° 08′ *†.....	29.98	761.5	73.4	23	.....	w.	.....	.....	1	.....	5	.....	e.	2 h'r	2 h'r	light	se.	fine.
S. S. City of Washington, N. 23° 10′, W. 82° 24′ *†.....	30.22	767.6	80	20.7	.....	ne.	.....	.....	5	.....	5	.....	ne.	o	o	sm'h	.....	fine.
S. S. City of Chester, N. 47° 16′, W. 47° 15′	.....	.....	37	2.8	.....	w.	.....	.....	1	.....	.....	.....	.....	.....	.....	sm'h	.....	cloudy.
S. S. Knickerbocker, N. 25° 49′, W. 84° 30′ *†.....	30.19	766.8	75	23.9	.....	ne.	.....	.....	6	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	sw.	squally.
S. S. Elbe, N. 40° 30′, W. 69° 11′.....	30.11	764.8	47.3	8.5	78	n.	.....	.....	6	.....	10	.....	n.	o	o	cross	n;e.	covered.
S. S. Koln, N. 42° 30′, W. 58° 58′.....	29.93	759.4	58.5	14.7	91	e.	.....	.....	6–7	.....	10	.....	e.	8 h'r	8 h'r	r'gh	ene.	drizzling.
S. S. Kronprinz F. Wilhelm, N. 50° 19′, W. 0° 55′ *.....	29.43	747.5	52.7	11.5	.....	wnw.	.....	.....	5–6	.....	5	.....	wnw.	3 h'r	3 h'r	h'vy	nw.	squally.
S. S. Oder, N. 49° 51′, W. 6° 59′.....	29.67	753.6	53.6	12.0	.....	nw.	.....	.....	5	.....	2	.....	nw.	2 h'r	2 h'r	r'gh	nw.	fair
S. S. Ohio, N. 26° 10′, W. 87° 05′.....	30.22	767.6	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	2	.....	3	.....	nne.	o	o	sm'h	nne.	fair.
S. S. Salier, N. 44° 05′, W. 54° 02′.....	30.16	766.1	41.0	5.0	.....	e.	.....	.....	4	.....	10	.....	e.	o	o	long	e.	cloudy.
S. S. Werra, N. 53° 49′, E. 6° 40′ *.....	29.98	738 6	47.3	8.5	.....	ssw	.....	.....	6	.....	10	.....	sw.	hv'y	hv'y	high	sw.	covered.
S. S. Belgic, Hong Kong China †.....	30.12	765.0	70	21.1	75	e.	.....	.....	4	.....	7	.....	e.	o	o	sm'h	.....	cloudy.
S. S. Coptic, N. 39° 43′, W. 127° 11′.....	30.12	765.0	54.0	12.2	77	nw.	.....	.....	6	.....	3	.....	nw.	sh'rs	sh'rs	mod.	nw.	overcast.
S. S. City of Augusta, Savannah, Ga †.....	30.30	769 6	.....	.....	.....	ne.	.....	.....	1	.....	0	.....	.....	o	o	.....	.....	smoky.
S. S. Mississippi, N. 44° 20′, W. 124° 35′†.....	30.15	765.8	52	11.1	79	ene.	.....	.....	1	.....	0	.....	.....	.....	.....	light	nw.	clear.
S. S. Columbia, N. 40° 46′ W. 124° 30′†.....	29.98	761.5	51	10.6	72	nnw.	.....	.....	3	.....	0	.....	.....	.....	.....	mod.	nnw.	clear.
S. S. Oregon, San Francisco, Cal †.....	29.95	760.7	50	10.0	93	calm	.....	.....	0	.....	0	.....	.....	.....	.....	.....	.....	hazy.
S. S. Ancon, N. 33° 25′ W. 118° 09′†.....	29.94	760.5	58	14.4	88	nw.	.....	.....	4	.....	10	.....	nnw.	.....	.....	sm'h	.....	cloudy.
S. S. Australia, Sydney, N. S W.....	30.27	768.8	63	17.2	83	n.	.....	.....	4	.....	5?	.....	nne.	o	o	.....	.....	cloudy.?
S. S. City of New York, S. 23° 42′, W. 175° 36′†.....	29.88	758 9	75	23.9	68	s.	.....	.....	3	.....	0	.....	.....	o	o	mod.	se.	clear.
S. S. City of Pekin, N. 33° 39′, E. 145° 04′†.....	30.23	767 8	65	18.3	78	n.	.....	.....	6	.....	10	.....	n.	o	o	mod.	n.	cloudy.
S. S. City of Sydney, S. 27° 18′ E. 177° 40′†.....	30.00	762.0	63	17.2	62	nnw	.....	.....	1	.....	5	.....	sw.	o	o	cross	.....	fair.
S. S. Colima, N. 17° 20′ W. 101° 35′†.....	29.85	758.2	80	20.7	87	nw.	.....	.....	4	.....	5	.....	wnw.	o	o	small	sse.	fair.
S. S. Grenada, N. 23° 02′, W. 107° 54′ †.....	29.95	760.7	80	20.7	74	ne.	.....	.....	2	.....	0	.....	.....	o	o	sm'h	nnw.	clear.
S. S. San Jose, N. 8° 54′ W. 79° 30′ *†.....	30.03	762.7	.....	.....	.....	nw.	.....	.....	2	.....	5 k	.....	nw.	o	o	light	nw.	
S. S. Bermuda, St. Pierre, W. I †.....	30.04	763.0	85	29.4	.....	ene.	.....	.....	1	.....	3	.....	ene.	o	o	gentle	se.	fine.
S. S. Muriel, N. 20° 25′, W. 64° 20′.....	29.98	761.5	81	27.2	.....	e.	.....	.....	2	.....	10	.....	.....	o	o	long	n.	overcast.
S. S. Caracas, La Guayra, Venezuela †.....	29.92	760.0	82	27.8	79	ene.	.....	.....	1	.....	3	.....	ene.	o	o	hv'y	nne.	fair.
S. S. Belgenland, New York, N. Y †.....	30.38	771 6	53	11.7	86	s.	.....	.....	2	.....	8	.....	s.	o	o	.....	.....	hazy.
S. S. Pennland, Antwerp, Belgium	29.34	745.2	50.5	10.3	79	w.	.....	.....	4	.....	3	.....	w.	4 h'r	4 h'r	.....	.....	fine.
S. S. Rhynland, N. 50° 00′, W. 23° 30′	29.93	760.2	49	9.4	93	wnw.	.....	.....	6	.....	8	.....	wnw.	2 h'r	2 h'r	long	wnw.	gloomy.
S. S. Switzerland, N. 48° 10′, W. 42° 42′†.....	30.15	765 8	.....	.....	.....	ne.	.....	.....	1	.....	10	.....	ne.	o	o	mod.	ene.	cloudy.
S. S. Waesland, N. 41° 03′, W. 66° 14′.....	29.90	759.4	53	11.7	93	nne.	.....	.....	6	.....	10	.....	n.	5 h'r	5 h'r	r'gh	ne.	cloudy.
S. S. Maas, New York, N. Y	.....	.....	50.4	10.2	84	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....
S. S. P. Caland, N. 51° 44′, E. 3° 43′.....	29.27	743.4	49.6	9.8	86	w.	.....	.....	6	.....	3	.....	wnw.	.....	.....	sm'h	.....	clear.
S. S. Schiedam, N. 49° 40′, W. 10° 35′.....	29.73	755.1	55.4	13.0	81	wnw.	.....	.....	5	.....	4	.....	wnw.	4 h'r	4 h'r	h'vy	w.	fair.
S. S. W. A. Scholten, N. 46° 31′, W. 48° 07′..	30.35	770.9	38.8	3.8	77	n.	.....	.....	1	.....	7	.....	nw.	o	o	mod.	se.	
S. S. State of Florida, N. 49° 18′, W. 36° 14′	30.00	762.0	47	8.3	.....	ne.	.....	.....	2	.....	8	.....	ne.	o	o	mod.	n.	cloudy
S. S. State of Indiana, N. 40° 24′, W. 72° 10′†.....	30.24	768.1	50	10.0	.....	nw.	.....	.....	2.	.....	2	.....	nw.	6 h'r	6 h'r	sm'h	.....	clear.
S. S. State of Nevada, N. 52° 58′, W. 29° 15′†	29.94	760.5	45	7.2	.....	w.	.....	.....	5	.....	5?	.....	w.	o	o	long	wnw.	clear?
S. S. Thingvalla, Swinemunde, Prussia †.....	29.36	745.7	49.1	9.5	.....	sw.	.....	.....	3	.....	4	.....	sw.	5 h'r	5 h'r	.....	.....	clear.
S. S. Iowa, Liverpool, Eng *†.....	29.33	745.0	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....
S. S. Adriatic, N. 49° 48′, W. 22° 03′†.....	30.04	763.0	48	8.9	.....	w.	.....	.....	3	.....	3	.....	wnw.	.....	.....	mod.	wnw.	fair.
S. S. Baltic, N. 51° 18′, W. 12° 50′.....	29.71	754.6	49	9.4	85	nnw.	.....	.....	6	.....	6	.....	nw.	4 h'r	4 h'r	rg'h	nw.	squally
S. S. Celtic, N. 42° 22′, W. 62° 46′†.....	29.89	759.2	56	13.3	87	nne.	.....	.....	6	.....	10	.....	.....	4 h'r	4 h'r	mod.	ne.	drizzling.
S. S. Romano, N. 52° 49′, E. 1° 38′.....	29.39	746.5	52	11.1	.....	sw.	.....	.....	3	.....	10	.....	w.	3 h'r	3 h'r	.....	.....	dull.
S. S. Salerno, Odessa, Russia.....	.....	.....	50	10.0	.....	s.	.....	.....	3	.....	10	.....	s.	o	o	.....	.....	dull.
S. S. Aries, N. 39° 10′, W. 74° 20′*†.....	30.22	767.6	.....	.....	.....	nw.	.....	.....	4	.....	0	.....	.....	o	o	long	ese.	
S. S. Catherine Whiting, Barnegat, N. J †.....	30.26	768.6	.....	.....	.....	nnw.	.....	.....	1	.....	.....	.....	nw.	o	o	long	e.	
S. S. Norman, N. 41° 13′, W. 71° 34′.....	30.20	767.1	.....	.....	.....	nw.	.....	.....	4	.....	.....	.....	nw.	o	o	sm'h	.....	clear.
S. S. Saxon, Philadelphia, Pa*†.....	30.42	772.7	58	14.4	.....	sw.	.....	.....	3	.....	0	.....	.....	.....	.....	.....	.....	
MISCELLANEOUS.																		
Bg. Abbie Clifford, N. 35° 05′, W. 74° 24′.....	.....	.....	61	16.1	.....	n.	.....	.....	2	.....	2	.....	ne.	o	o	r'gh	ne.	
Bk. Adelaid. N. 10° 40′, W. 50° 13′ *†.....	29.96	761.0	81	27.2	.....	ese.	.....	.....	5	.....	2	.....	var.	4 h'r	4 h'r	r'gh	ese.	squally.
Bg. Alcira. N. 22° 58′, W. 66° 10′	29.99	761.7	81	27.2	.....	ne.	.....	.....	6	.....	2	.....	ne.	o	o	h'vy	ne.	clear.
Sch. Anna A. Holton, N. 36° 39′, W. 74° 09′†.....	30.19	766.8	62	16.7	.....	nne.	.....	.....	4	.....	2	.....	ane.	o	o	r'gh	ne.	clear
S. Annie M. Law, Kobe, Japan *†.....	30.20	767.1	54	12.2	.....	nne.	.....	.....	2	.....	0	.....	.....	o	o	.....	.....	fine.
Bk. Anna Thormann, S. 8° 42′ E. 114° 42′*.	29.92	760.0	82.4	28.0	79	se.	.....	.....	3	.....	10 k	.....	ne.	o	o	long	sse.	cloudy
S. S. Antonio Lopez, Cadiz, Spain *	30.24	768.1	62	16.7	83	wnw.	.....	.....	3	.....	0	.....	.....	o	o	.....	.....	hazy.
Bk. Aquidneck, N. 15° 35′ W. 39° 08′*†.....	30.02	762 5	.....	.....	.....	ese.	.....	.....	2	.....	.....	.....	ese.	.....	.....	light	e.	clear.
Bk. Aureola, N. 48° 01′, W. 22° 44′*†.....	30.25	768.3	57	13.9	.....	w.	.....	.....	3	.....	7	.....	w.	1 h'r	1 h'r	h'vy	nw.	cloudy.
Bk. Alba, N. 49° 48′, W. 4° 40′*†.....	29.57	751.0	51.1	10.6	.....	nw.	.....	.....	3	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	covered.
Bk. Bayonnaise, N. 22° 35′, W. 50° 12′ *†.....	30.08	764.0	.....	.....	.....	sSw.	.....	.....	2	.....	5?	.....	sw.	o	o	r'gh	se.	clear?
S. S. Buiswell, North Shields, Eng *†.....	28.88	733.5	49	9.4	.....	wnw.	.....	.....	9	.....	3	.....	wnw.	5 h'r	5 h'r	sm'h	.....	clear.
Bk. Champion, Maassluis, Netherlands †.....	29.31	744.5	53.0	11.7	.....	wnw.	.....	.....	5	.....	2	.....	wnw.	8 h'r	8 h'r	.....	.....	clear.
Schr. Chas. F. Heyer, Apalachicola, Fla.....	30.24	768.1	62	16.7	88	ne.	.....	.....	1	o	4 k	.....	ne.	o	o	.....	.....	fair
Schr. C. R. Flint, N. 21° 10′, W. 84° 35′†.....	30.08	764.0	77	25.0	.....	ne.	.....	.....	5	.....	3	.....	ne.	o	o	r'gh	ne.	fair.
S. S. D. J. Foley, N. 24° 55′, W. 74° 12′.....	.....	.....	77	25.0	.....	n.	.....	.....	5	.....	2	.....	n.	o	o	long	n ne	fine.

Br. Vincenzo [illegible] came Lisbon, Portugal																		
Schr Viola Reppard, Tybee, Gat	30.17	766.3	64	17.8	.....	ne.	.....	.....	1	.....	2	.....	ne.	o	o	.....	.....	fine.
Schr. Walter L. Plummer, Miragone, Hayti, W. I *†	30.00	762.0	.....	.....	.....	nw.	.....	.....	5	.....	2	.....	nw.	o	o	.....	.....	clear.
Bk. Wandering Jew, S. 30° 05′, W. 30° 07′†	29.87	758.7	81	27.2	.....	ese.	.....	.....	4	.....	4	.....	se.	o	o	long	sse.	cloudy.
Bk. Warden Law, S. 52° 19′, W. 82° 31′	29.28	743.7	.....	.....	.....	sw.	.....	.....	4	.....	6	.....	sw.	6 h'r	6 h'r	sm'h	w.	foggy.
Bgt. Willie, S. 38° 10′, W. 8° 40′*†	30.36	771.1	69	20.6	.....	nw.	.....	.....	5	.....	fg.	.....	.....	.....	.....	mod.	nnw.	

(✝)

EXCELLENTISSIMO DOMINO D. IAIME MANVEL DE CARDENAS,

Manrique de Lara, Duci, Duci de Naxera, & Maqueda, Marchioni de Elche, & de Belmonte, Comiti de Trebiño, & Valentia, Primati maiori Regni de Granada, Domino domus, & Maioratus Sereniſsimi Infantis Domini Ioannis Manuel, Commendatario de Eſparragoſa de Lares, Equiti ordinis militaris de Alcantara, à Camera Regiæ Maieſtatis, Æchonomo maiori Dominæ noſtræ Reginæ, & Principiſſæ Infantæ.

M. Fr. DIDACVS DE BENAVIDES, Ordinis Carmelitarum, & Primarius in Sacræ Sripturæ in Academia Complutenſi,

Dicat opus, &

S. P. S.

PATRONVM, *alium quam te (Princeps Excellentiſsime) primigenio prælo, nuncupare nefas duxi, attento iure tuo dominij, meoque tuæ ditionis clienti. Hæro dominij iure debentur partus ex legum diſpoſitione, & partus iure, quo vendicat hærum. Vtrique iuri iniurias irrogarem, ſi tutelare numen non inclamarem adultus, quem ipſa natura ſuperna prouidentia dirigente in conceptione infantuli ingenuit impuſum, & propenſionem ante nato. Si ſata, & planta eius fiunt, in cuius ſolo plantantur impeririali iure inſtituente lib. 2. tit. 1. de rerum diuiſione,* Si Titius, &c. *Vbi gloſſa ſi Titius ſuã plantã in ſolo vicini plantauerit, dominium plantæ vicino acquiſitum intelligitur, dum parens exter (quem gloria teneat) in conceptione me tenellã plantam ingenitrice (cui comes beatitudo) vaſſalla tua in villa*

¶ *nobi-*

nobili de Torrijos plantauit, plantæ dominium tibi adquisitum facile intelligitur, quã gloriã in stemate originali affixi. Natiuitatem repetit, & vendicat iure suo Madritũ, fateor, sed vestræ excellentissimæ ius, nec intendit infirmare, nec euacuare. Cum cautum sit ex lege imperiali præcitata, quod arbor posita iuxta confiniũ, si in vicini fundus radices egerit, cõmunis fit: ego ex parente plãta, ex cognomine bona vitis, Madriti natus ex originali radices vtrobiq; emisi, fit ergo fieri vtrique cõmunẽ, Torricu lum vendicet conceptionẽ, repetat Matritũ natiuitatẽ, vtrique radices, vtrobique ius, vtriusque, & ego planta, vitis, vtinã bona. Hinc, & tibi repetenti ius tuum, tuum pecus, tua originaria suppellex, ipseque non parum gloriabundus tanto Principe hero originaliter gloriosus. Hinc, hoc opus primigeniũ, mei auctoris, tui Domini, & Principis, cui debitũ fateor. Glorias patronũ inculcare orbi optent, & solicitent, qui è tenebris ad publicã lucẽ videndã inclamãt, mihi silentiũ erga eminentissimas omniũ plausu dignas, quas orbi cõmendare superfluum. De antecessorum fola claritate gloriari inglorium. Nec illa egent illustri præconio, nec tu increscere, & illustrare nouis à te adauctis destitisti. Nota notificare insulsum. Tibi illustrius de illorũ, tuaq; adaucta gloriari, mihi te Principem, & Patronũ assequutũ, cui facile seruos, & vassallos maioribus honoribus magnificare. Regis conditionis est, quod creauit ad altiora promouere, & eleuare. Vale superans Nectoreos annos, è Carmelo Complutensi.

Vestræ excellentissimæ dominationis. S. & Capell.

Fr. Didacus de Benauides.

AD LECTOREM AVTHOR,

CAthedrarius es Sacræ Scripturæ? habebis quinque lecturas ad vsum tui muneris subseruientes. Si placeat formula excitãdi dubia litteralia supra textum, & in calce adijciendi sub titulo ad mores, doctrinales capitales discursus, qui in vltimo indice subijciuntur cum fulcimentis, & probationibus suis (vt aiunt) ne insummerent horam lecturæ litterariæ moralia. Frigidum enim visum est (ne acerbiori puniam censura) ex loco proposito Sacræ Scripturæ deduxisse aliquos materiam scholasticam, quod vitandum, vt exosum scripturario.

Si studiosus adiscendi Sacrã Scripturã, aut etiã versandi in pulpitis, instrui facile poteris, Arte, & methodo exponendi, quẽ exhibet prior lectura, ne perfunctorie illa vtaris, & auditoribus cachinũ moueas.

Si

Si antagonista in palestra Bacchalaureorũ aduantium Complutensium pro obtinenda laurea Doctoratus: cuius vsibus principalius dicatum institutũ operis, exhibeo quinque dictas lecturas Scripturæ, stillo tuo scholastico, cui assuetus accommodatas, vt ex illis possis conficere conclusiones quodlibeticas, tres principales, plures ambientes, quas exigit sanctio Academiæ pro vno ex octo actibus, quibus cõplectitur vniuersa Theologia. Subijcia breuiter Deo dante alias lecturas, vt tibi amplior pro quodlibetis eligendi ditior suppellex.

Si declamator tyro verbi Dei, instrui poteris Arte exponendi Sacram Scripturã, vbi quot dubia, tot regulas, multa curiosa, plura de sensib⁹ sacrę Scripturę, ne inordinatis, & dissone dictis pias audientiũ aures eruditorũ cõtundas, & veritati, & dignitati sacræ Scripturæ iniurias irroges. Ad explendũ munus cõcionatoris iuuari poteris summa doctrinaliũ conceptuũ admores applicatorũ ad sacras cõciones, digestas stillo claro, & facili ab aduentu in Pascha Resurrectionis, cũ interme dijs festis, solitis prædicari, cũ suis probationib⁹ (vt aiunt) remissis ad indicẽ secundũ, & vltimũ doctrinaliũ ad mores: fortè nõ frigidis, & ineptis, sed pungẽtibus. Vbi habes. 250. Capitalia loca, quippe cõmunia segregata, quę applices alijs occurrẽtib⁹ instructis, vt nostris applicaui. Deniq; historiã Sãsonis ad cõtiones vespertinas quadragesimæ.

Crede mihi inuenies hic, quod vterque voles. Ex Ioan. Ovv. Anglo. quod quicumque es voles. Si te deceptum experieris, huic, & alijs operibus digestis ad prælum des repulsam. Quo nulla acerbior pœna scriptori, maior imprecatio.

Cum primũ à Regio Senatu mihi iuncta regentia Cathedræ principalis Vespertinæ, vniuersam Theologiã scholasticam varijs libellis digestã, selectioris, & subtilioris doctrinæ, quę in Academia à triginta annis est versata, & à subtilioribus Magistris Societatis deriuata, & à me alijs subtilitatibus adaucta, pro tenuitate in votis ad typũ paratũ habui. Ex istis fontibus quatuor quoque tomos in quatuor libros Magistri sententiarũ, inscriptos à Magistro lectiones magistrales, distinctione singula illustrata adiectis duabus lectionibus, ad oppositiones, pro meis elaboratis, quæ, & tuis ad Cathedras, Collegia, beneficia, &c. valde vtiles ad leuandũ conflictũ periodi vigintiquatuor horarũ: quas bibliopola Lugdunẽsis suis expensis cudẽdas optauerat: quæ vita comite tradẽtur prælo: sed iam ad primariũ sacræ Scripturæ vocatus ab eodẽ Regio Senatu, digredi ad soluẽdũ pẽsũ scripturarij necessum visũ est. Fidẽ oppignoratã Cathedrę sacrę Scripturę, his peractis in ea lecturis, pro exiguitate exoluo. Eo potissimum, quod doluit incuria transcribentium diuagasse truncas, mancas, lacunatas. Æquitas ipsa postulabat, vt suæ integritati, & nitori (si quid in meis opellis) restituerentur. Opellam primò edere decreui exiguis expensis cudibilem, exiguo prętio frcile venalem, nec suppressi angustis cancellis, quantum volui, cum ampliandi super esset non modica seges,

manuali studio nostrorum antagonistarũ ad quodlibeta manibus importuna, quibus leuare satius onerosa mollie. Magnitudo operis non debet expendi apud exteros (nam apud proprios quid exiguitatis in quolibet satis notũ) ex quãtitate molis, sed ex quãtitate perfectionis.

Displicuit insana, & insulsa gloria de Eunochismo litterario, placuit æmulari lignum (non aridum) *quod plantatum est, secus decursus aquarum, quod fructum suum dabit in tempore suo*, nam terruit increpatio Christi ad filculneam infrugiferam, sine flore, viridanti folio, aut fructu, cum adhuc nõ esset tempus ficorum. Non deterruit illud iactatum, nescio an ab otioso, aut phrænetico, ingens diluuium librorũ inundare orbem in ætate feracissima eorum. Nam ingens segetum copia ad implenda horrea, fæcundandos campos, alendos homines nulli noxia. Amplissima librorum copia nunquam superflua. Non sunt multi libri, ti boni, nec pauci si mali, licet exiguo numero; præsertim si quid afferant eruditionis, nouitatis, dispositionis, claritatis, aut commoditatis, defæcando veterum obscuriratem, aut prolixitaté. Si nactus opella nostra sat mihi, si nõ, opella parum augmenti crescet multitudini. En æmulatus peritum geographum, qui in pagella breui situs varios distantes, alta cacumina, ima concaua vallium, magnas, & exiles ciuitates orbis lineantẽ in lecturis multos libros reddo volumine vno. Selegi grana, abieci festucas; admisi aluicantẽ farinam, reieci furfures; reddidi caduca noua: difficilia facilia, obscura perspicua, prolixa succincta, diminuta adaucta, pro ingenui tenuitate, vt inappetentia studendi vno breui hausto, sine fastidio plura alimenta deglutire possit: vt infirmus gallinam defæcatam breui poculo solet traijcere. Inaccessibiles, & intractabiles Scripturæ lecturas, accessibiles, & tractabiles reddidi, quippe scholasticis familiaribus liniui coloribus, vt iam inertia studendi sit inexcusabilis. Perfecti Theologi vtriusque Theologiæ scholasticæ, & expositiuæ ornamẽtis perfici. Angusti gutturis sola scholastica deglutire, augusti etiam expositiua, imò vrgens obligatio inuestigandi principia ex Scriptura firmitatem, & soliditatem mutuãte ad conclusiones scholasticas. Pudet subtilizare circa conclusiones, & cœcutire erga principia, impingendo in postes, & ita scitu dignissima.

Stillus noster erit temperate elegans, quantum sat ad discedendũ à barbaro. Cohibui data opera cultiorem varijs linitum coloribus, fucatum pigmentis, & elegantijs, illustratum phrasibus. Nostræ mentis non fuit (vt cum Hieronymo) instruere linguam (vt Rethorum) sed mentem intelligentiam potius, quam elocutionem, remittens ad munia rethorica, quæ Rethoris sunt.

Ex-

Expendo clauſulas textuales. Dubijs litteralibus ſub formula ſcholaſtica, quôd aſſuetis ſtillo ſcholaſtico facile percipiuntur. In calce ſingulorum ſub titulo *Ad mores* elicio ex præiactis concluſionibus conceptus doctrinales capitales. Non ſubijcio ſtatim probationes (vt aiunt) ne litterariam horam inſumam in moralibus, ſed indigito, & remitto ad indicem conceptuum doctrinalium vltimum, vbi inuenies ſub ſuis numeris intitulatos cum probationibns, & ſub eodem numero retrogrediendo inuenies originalia.

Otioſum iudicaui applicare illos doctrinales conceptus morales Euangelijs, nam facilè conſui mediocri ingenio. Sed inſtantia victus adieci applicationem, & intitulata eſt ſumma pro Euangelis ab aduentu ad Paſcha Reſurrectionis, cum intermedijs feſtis prædicari ſolitis. Si quid boni inuentum, Deo referas, à quo omne bonum, ſi mali noſtræ fragilitati, & tenuitati. Me, & omnia ſubijcio Eccleſiæ ſanctæ Romanæ Cenſuræ. Vale.

Tuo dicatus obſequio.
Author.

IVDITIVM OPERIS.

REVERENDISSIMI P. M. Fr. MICHAELIS DE Cardenas Concionatoris Catholici Regis, & ſupremi Senatus ſanctæ Inquiſitionis à ſacris cenſuris.

LEcturas iſtas de Arte, & methodo exponendi Sacram Scripturam, de vita, & geſtis Samſonis, de annis captiuitatis de Chriſto adorato à Regibus, & de fuga in Ægytum à R. P. M. Fr. Didaco de Benauides Academiæ Complutenſis in Sacra Pagina Primario Regente elaboratas. Luſtraui, expendi opus inſigne, in ſigni doctrina iudicaui, ad ſtudioſos erudiendos aptiſsimum, doctrinam ſolidam ſapit, ſua ſolum eget commendatione, vt mens ſtudio capiatur, ſi quæ author exhibet lector guſtet, & ebibat. Hugo Cardinalis: *Vena vitæ os Doctoris, à quo ad alios fluunt vitaliæ verba.* Recte Lyranus *in paradiſo Eccleſiæ ponitur lignum vitæ, id eſt Doctor Sacræ Doctrinæ*, Ameniſsimus paradiſus nobis eſt Paulus, cultiſsimus hortus delicijs plenus, doctrinam ex paradiſo hauſit ad cœlum euectus, (vt cum Chryſoſtomo loquar) ſed verba ipſius ad Thimotæum à noſtro Doctore in arte, & methodo ex-

pensa pro ligno vitæ sunt nobis, imò prò paradyso, vbi *spirationis flatum percipimus, cum sapientiæ thesauros mirantes rimamur, & rimantes miramur*, si oppotune aduocetur Ricardus Victorinus, Paulum vocauit Ecclesiæ nasum Philo Carpathiorum ab illo Spiritum haurimus, sed ab eo expenso ab Authore nostro vitalem respirationem gratum odorem Scripturæ percipient Lectores. Multi sunt (ait Hugo Carensis) *qui non gustant de mele Sacræ Scripturæ*, sed comedant volumen istud, *plenum enim est* supernis mysterijs cœlesti singula dulcedine redundantia, si tamen diligentem babeant inspectorem, qui nouerit sugere mel de petra verba mellita sunt Bernardi. Lectura devita, & gestis Samsonis breuis quæsiuit flores sententiarum, à quibus extrahit dulcissimum succum, reportauit in aluearium, & fauum est operata industria, vt placet Absaloni Abbati Leoni Samsonico similis, a cuius ore fluebat mel ad alios, dulcis oratio sermo fluit melleus. Samson sol solis sonat iterata voce illustris propter gesta, & quia tanto commentatore illustratus. Christus adoratur à Regibus, fuere Reges, sed dicuntur Magi, veræ sapientiæ nota est inquirere Christum, & dedit hos de Cristo adorato commentarios inuestigare, & rimari. A Magorum oculis stella subducitur, vt homines non solum per signa cœlestia erudirentur, sed per Doctores. Stella dispareat splendifera, dum adsit tantus Doctor, dum adsit commentarium istud doctriua clara coruscans. Daniel est iudicium Dei iuxta nominis interpretationem, & nomen Balthasaris à Rege Ethnico compellatum, idem ac thesaurum sonat, lecturæ nostri Doctoris ex eiusdem Vatis capite nono de septuaginta annis, & septuaginta hebdomadibus congruit aptissima, est veluti thesaurus continens insignem eruditionem, subtiles, & profundos discursus, quibus grauissimas expendit sententias, ac miro stillo loquendi, difficilia facilia reddit, recondita visenda proponit, vt exposcat potius diuini iudicij approbationem, quam hominis, miranda res potius, quam examini exposita, quæ congerit de Christi fuga. Deprehendi in his lecturis nil fidei, aut probis moribus aduersum, omnia satis consona, subtilitate referta, excellenti proprietate donata, cum modesta grauitate ad legitimum sensum, SS. PP. in Ecclesia Catholica receptum, vt dignissimas iudicem, quæ ad publicam vtilitatem typis excudantur. In Carmelo Madritensi, die 19. Iulij ann. 1647.

Frater Michael de Cardenas.

SVPRA-

SVFRAGIVM.

R. P. M. Fr. DIDACI LOPEZ IN ACADEmia Salmantina ſapientiſsimi candidati, & olim inter Cathedrarios eius dignissimi.

DEmandato Reuerendi admodum P. N. Prouincialis Lecturas de Arte, & methodo exponendi Sacram Scripturam, de Vita, & geſtis Samſonis, de Chriſto adorato à Magis, & fuga in Ægyptum, de 70. annis captiuitatis, & 70. hebdomadibus Danielis, vigili cura, & ingenio laboratas dulci ſtillo concinatas, multigena eruditione refertas, aptiſsimis expoſitionibus exornatas, ex diſsiris ad vitam, & Artem ſocialem adductas, ſubtili nouitate donatas, ad formulam ſcholaſticam reductas, & ad calcem dubij litteralibus conceptibus ad informandos mores exornatas, quantum fas eſt Cathedræ Scripturariæ, quim in meſſem pulpitarem falcem immittant, ſed releget ad tabulas. Latinitate donatas, non ſola, quæ fugiat, auerſeturque barbariem, ſed quæ redoleat eloquentiam, quam diſſerte, & prudenter relectionibus quodlibeticis reſeruauit, quas illa mire ditauit. Diligenti indagine luſtratus primoribus laudibus, & elogijs ob egregia in illis inuenta dignas recenſui. Opus quidem mole exiguum, comprehenſione ſummum, anguſtum corpore, valore anguſtum, lacinioſa aliorum reddit ſuccinta, faſtidioſa placida, tenebricoſa clara, vetuſta iuuenilia, ariditate inſulſa ſuaui ſucco dulcia, diminuta acceſsione noua integra, plurima vno cingit volumine, & offert in breui materia ditiſsimas ſupellectiles. Accidit quod monetæ aureæ, quæ in minima materia plurium aggerum pondera concludit, & quod mappæ geographicæ, quæ in breui cartula orbis plures varias, & diſsitas ciuitates depingit, vt dixerim cura Poæta.

Denique quidquid habet diuini pagina verbi
exiguo, aut nullo hic pœne labore petes:
Ille breui gyro ſacri myſteria verbi
claudit, & hæc vbi ſint inuenienda docet.

Ex quibus, & alijs mihi ſuaſum præſertim cum nil contineant fidei Catholicæ, & probis moribus diſſonum, ſi prælo mandentur maximam vtilitatem, & lucrum lectoribus allaturas. In quorum fi-

¶ 4 dem

dem propria manu subscripsi in Carmelo Madritensi, pridie nonas Iuli anno D.1647.

Fr. Didacus Lopez.

FACVLTAS ORDINIS.

FRater Bernardus de Vallejo in Sacra Theologia Magister Ordinis Carmelitarum antiquæ obseruantiæ in Prouincia Castellæ, Prior Prouincialis, authoritate nostri officij facultatem facio, vt liber continens lecturas quinque de Arte, & Methodo exponendi Sacram Scripturam de Vita, & gestis Samsonis, cum alijs elaboratus à R. P. M. Fr. Didaco de Benauides nostro Prouinciæ Religioso, & in Academia Complutensi Sacræ Scripturæ primario interprete, & nostræ Religionis grauium Doctorumque virorum, quibus remissimus iudicio approbatas typis possint mandari obtentis cæteris requisitis Regij Senatus, & R. Ordinarij, in quorum fidem præsentes dedimus nostra manu subscriptas, & sigillo officij munitas in nostro Carmelo Madridensi nonis Iulij ann. D.1647.

Fr. Bernardus Vallexo. Prouincialis.

Demandato R. P. N. Prouincialis.
Fr. Ildephonsus Ceuicos. Secretarius.

CENSVRA D. DOCTORIS GONII SALII DE CASTILLA in Academia Complutensi primarij Cathedræ Sancti Thomæ, & in Ecclesia Magistrali SS. Iusti, & Pastoris Canonici in dignitate.

OPus istud complectens quinque lecturas elaboratas à Sapientissimo P. M. Fr. Didaco de Benauides, Ordinis Carmelitarum in Academia Complutensi artium Magistri, Sacræ Theologiæ Doctoris, & Primarij meritissimi in Cathedra Sacræ Scripturæ, suscepi examinandum ex commissione R. D. Ordinarij in hac curia Archiepiscopali D. D. Ioannis de Narbona, Canonici in Sacra Ecclesia Magistrali nostra, pro Eminentissimo D. Cardinali Moscoso Archiepiscopo Toletano, opus quidem tanti viri laude dignissimum, quod ingeniosum (vt loquar cum Poeta) quod breue, quod castum, doctum, celere, atque politum. Quodque habet multos, & sine den-

te

ue sales, hoc tua mussa dabit Geneus promittit, & vltra confirmat Dominæ mentio primatuæ, denique dicã quale tuum parturit ingeniũ, & nostra commendatione dignum, qnod vidimus, testamur, oculis perspeximus, & manus nostræ contrectauerunt in Scholæ concertationibus. Id clamant opera, quod floret in Auctore tantum abest, vt quidquam fidei, aut probis moribus aduersum contineat, vt resplendeat cum graui modestia ingenium, breuitas, puritas, doctrina, celeris resolutio, policies culta, plurium compendiosa laconia, nostri primarij Scripturæ interpretis digna præconia, vt muneri suo egregiè satisfaciens ediderit lecturas, iam diu optatas à Bacchalaureis Academiæ ad conficiendas facile conclusiones quodlibeticas, quo digestam Scripturam ad dubia litteralia, & Scholasticam figuram, stilo assueto Scholastico familiarem facile perceptibilem, indigitando ad mores promunere concionandi, vt vno opere operibus vtriusque det aptissima subsidia. Quibus adductus censui prælo dignum, & pro vtilitate omnium in lucem publicam prosiliat Compluti die 12. Iunij Ann. 1647.

Doctor Ioannes Gomus Salius de Castilla.

CENSVRA, R. P. M. PETRI DE CALATRAVA Societatis Iesu in suo Collegio Complutensi Primarij Sacrarum litterarum interpretis.

EX commissione R. D. Doctoris Ioannis de Narbona Ordinarij in hac curia Archiepiscopali, & Canonici in S. Ecclesia Magistrali SS. Iusti, & Pastoris non cursim legi, sed ex professo lustraui opus continens varias elaboratas lecturas à R. P. M. ac Doctore Fr. Didaco de Benauides in perillustri Carmelitarum Collegio per plures annos Sacræ Theologiæ Magistro, & in Academia Complutensi Theologiæ Scholasticæ regente in Cathedra minori Sancti Thomæ, in super in Principe vesperaria, nunc in eadem Primario Sacrarum litterarum interprete, nil deprehendi, quod nõ mereatur primam laudem, & censuram, quippe quod omnigena eruditionis doctrinæ, ingenij, & grauitatis suppellectille sit vndequaque plenum, in eo enim non solum discipuli quid discant, sed Magistri inuenient quid mirentur, vnum animaduertam, & illud quidem aureum, quod in hoc pretiosissimo thesauro specialiter inueni miram dispositionem, qua metho do admorem Scholasticum reduxit Sacrarum litterarum sententias in conclusiones, & quidquid præstitum à Doctoribus importuna, & indigesta mole salebrose, & diminute, breui calamo, & illustri

com-

compendio rerum coniunxit cum præcisione copiam,& vbertatem, opus quidem tanto Magistro, & Doctore dignum, & quod diu fuit in votis studiosis vniuersitatis ad conclusiones quodlibeticas exoluendas, succesit pro votis à nemine hic prædi ficultate negotij tentatum; vel ausum,deinceps hoc erit ars,& methodus, quæ ad intelligentiam Sactæ lectionis debeat omnium oculis versari, manibus tractari,mente,& voce laudari,& communi plausu excipi tamquam Diuinum inuentum à Doctore Academiæ Complutensis, ne diu iaceant in tenebris expositiuæ controuersiæ, sed nouæ lucis splendore agitentur. Quare censeo dignissimum,quod prælo mandetur, & duret æternum,quod auctorem ita commendat æternum.Hoc meum iudicium in hoc nostro Collegio Complutensi Societatis Iesu die 18. Iunij anni 1647.

Petrus de Calatrana.

Licencia del Ordinario.

EL Padre Maestro Fr. Diego de Benauides Cathedratico de Prima en la de Escritura de la Vniuersidad de Alcala tiene licencia del Doctor D Iuan de Narbona Vicario general en la audiencia, y Corte Arçobispal de esta Villa, y canonigo de la Magistral de San Iusto, para imprimir este libro. Dada en Alcala a primero de Iulio de 1647.

CENSVRA

R. P. Fr. IOANNIS PONCE DE LEON ORDINIS minorum Sancti Francisci de Paula, Catholicæ maiestatis prædicatoris, supremi Consilij inquisitionis generalis Calificatoris, atque omnium Bibliothecarum Visitatoris.

M. P. D.

DOctissimi Magistri, Sapientissimi Theologi P. Fr. Didaci de Benauides Ordinis Carmelitarum in Academia Complutensi Primarij publici Sacræ Scripturæ interpretis supremo mihi iubente Senatu librum vidi, in quo variæ continentur lecturæ pro maiori Sacræ paginæ intelligentia; & recognitum verid. cum inueni, excoctum agnoui, laborioſſum, & eruditum comperi, in eo nil cõmune moneta percussum, nil publici iuris effertur. In illo habent Theologi nouam, & germanam Sacræ Scripturæ explanationem, eamque vel firmandis placitis Catholicæ veritatis, vel formandis ad pietatem Christia-

tianam moribus accommodatam, tamquam si hæc per se singula non cum illis tot alia plura, quæ redoleant pietatem, & honestatem veridicæ doctrinæ huius libri, in quo contra fidem nulla, imo pro illa multa, contra pietatem nihil, pro eius augmento exquisita, & singularia, & disposita omnia tali brevitate, vt his disputationibus merito possit aptari quod S. Hieronimus de Sancti Iacobi Epistolis pronuntiauit dicendo, *accipite epistolas Iacobij Apostoli breues pariter, ac longas, breues in verbis, longas in sententijs.* Sic de isto libro iudico, sic affirmo, & quod typis possit mandari sit mea Censura. In hoc conuentu Minimorum cuiæ Matritensis die 7. Mensis Octobris anno Domini. 1647.

Fr. Ioannes Ponçe de Leon.

Suma del Priuilegio Real.

EL Padre Maestro Fray Diego de Benauides del Orden de Nuestra Señora del Carmen, y Cathedratico de Prima de Sagrada Escritura de la Vniuersidad de Alcala, tiene priuilegio de su Magestad por tiempo de diez años para imprimir vn libro intitulado Lecturas de Sagrada Escritura, como parece por el testimonio que dello dio Don Ioseph de Arteaga, y Cañiçares escriuano de Camara en Madrid à 16. de Octubre de 1647. años

ERRORES CORRIGENDI.

Pag.	Col.	Lin.	Errata	Correcta
		In Lect. de Arte, & methodo exponendi. SS.		
9	1	13	obnaxia	obnoxia
16	2	14	scrituris	scriptoris
45	1	8	cortitudo	certitudo
49	2	33	misereri	miseri
77	1	15	alaim	aliam
82	2	19	XXII	XII
95	1	24	שׁשׁרוּשׁ	אוּשׁשׁאוּשׁ
98	1	23	Hebræo	Hebrea
99	1	27	ædificatio	ædificacioni
110	2	7	XX	X
136	1	3	vtrusque	vtriusque
147	1	17	audiri	edoceri

Pag.	Col.	Lin.	Errata	Correcta
184	1	19	votus	vetus
234	2	2	ſum	ſumi
243	2	18	omnis	omnes
261	1	4	prætermitto	prætermiſſo
275	2	16	raiiona	ratio

In Lect. de vita, & geſtis Samſonis.

6	1	4	viuo	vino
13	2	20	couexos	conexos
14	1	10	deſcedenti	deſcendenti
15	1	5	22	12
15	2	5	23	13
18	1	23	dic	die
20	2	25	aſcendis	aſcendit
27	1	18	Samon	Samſon
45	1	7	35	36

In Lect. de 70. ann. Captiuit.

2	1	32	extiens	exiſtens
12	1	15	exicidij	excidij
17	1	35	Ioacijaz	Ioacaz
23	1	18	tẽqli	templi
23	1	26	nouus	nonus
24	1	24	Iachoniam	Iechoniam
27	1	9	aneo	anno
30	2	21	tune	tunc
30	2	26	andito	audito
34	2	2	Iuda	Perſarum
47	1	4	Xerxis	Artaxerxis
47	1	25	70	20
49	1	16	Percognouit	Præcognouit
51	2	3	Regnum	Regum
55	2	1	Aſsalouitæ	Aſcalonitæ
58	1	3	Carmelius	Carmelus
59	2	22	Rapex	Rapax
68	1	2	Ambitionæ	Ambitione
73	2	23	eius	ius
74	1	6	eminentiæ	eminentia

In

Pag.	Col.	Lin.	Errata	Correcta
In Lect. de Christo adorato, &c.				
6	2	23	8	6
16	2	11	10	8
21	2	2	11	9
26	2	14	12	10
28	2	21	13	11
31	1	6	14	12
34	1	5	15	13
35	1	26	16	14
38	1	2	17	15
40	1	27	18	16
42	1	2	19	17
46	2	10	20	18
50	2	21	21	19
In Lect. de Fuga Christi, &c.				
5	2	25	virgem	virginem
7	1	1	leuam	leuem
8	1	11	damnotis	damnatis
8	2	1	conici	conijci
19	2	34	perucusus	percusus
37	2	4	dono	domo

¶ Fidem facio librum hunc complectentem prænotatas, lecturas cõ cordare cum suo originali, demptis prænotatis mendis, quæ irrep serunt. Compluti idibus Decembris ann. Domini 1647.

Dr. D. Franciscus de Porres
Corrector Vniuersitatis.

SVMA DE LA TASA.

LOs Señores del Consejo Real tasaron este libro intitulado Lecturas de Sagrada Escritura, que con su licencia fue impreso, cõpuesto por el P. M. Fr. Diego de Benauides del Orden de Nuestra Señora del Carmen, y Cathedratico de Prima en la de Sagrada Escritura de la Vniuersidad de Alcala a quatro marauedis el pliego como consta por el testimonio de D. Ioseph de Arteaga, y Cañizares Escriuano de Camara. En Madrid a 11. de Henero de 1648 años.

SVM-

SVMMA

PRO VSV CONCEPTVVM DOCTRINALIVM ADMORES, AD CONCIONES.

Ab Aduentu in Paſcha Reſurrectionis.

HINC FIERI POSSET REMISSIO NVMERORVM ad ſequentes originales Lecturas, ſed fit ad indicem vltimum doctrinalium admores, earum, in quem reiecti ſunt capitales, quoniam ibi ſunt (vt aiunt) cum fulcimentis (& probationibus ſuis) ſed vtrobique ſub eodem Numero.

DOminic. 1. Aduent. Tha. *Tunc videbunt, &c. Venientem cum poteſtate magna, & maieſtate* Lucæ. 21.

1 *Tunc.* die ſtatuta ad iudicium vniuerſale. *Quod Deus abinitio diſſimulat ſcelera, ſed die vna ſtatuta iudicio punit.* Indice 2. lect. de Sãſone. ſub num. 3.

2 *Maieſtate. Qui olim pacificum* Redemptorem, non recipit inicidet in ſeuerum Iudicem. In indice. 2. lect. de 70 ann. ſub 67.

3 *Maieſtate.* Maieſtuoſus induit humilia, vt conciliaret homines, *humilis* induit maieſtatem, vt auerſos puniat. Indic. 2. Lect. de Samſ. ſub. 9.

4 *Cum poteſtate.* Cum ſibi intrinſeca, illa, quaſi ad ſcito comite, & lictore. *Quaſi neſcius per ſe punire*, ſed per alios. Indic. 2. Lect. de Chriſto adorat. ſub. 16.

5 *Maieſtate.* In honore iniuriata, & ofenſa peccatis, aſſumit rigores, vindices in peccatores. Indic. 2. Lect. de Samſ. ſub. 3.

6 *Ite maledicti, &c Venite benedicti, &c. Eſurijui, &c. Et dediſtis, &c. Eſurijui, & non dediſtis. Quod iudicis ſententia* ſeparãdi ſunt reprobi in ignem æternum, & prædeſtinati in vitam æternam. Ind. de Chriſto adorat. ſub. 8. & de 70. ann. ſub. 35.

Domin. 2. *Cum audiſſet Ioannes in vinculis opera Chriſti.* Matth. 11.

1 *Ioannes in vinculis.* Amicus, & cognatus. *Quod nec familia* ſanctorum eſt in præſenti libera ab anxietate, & erumnis amaricat

tem

temporalia, vt aspirent ad cœlestia. Ind. de Fuga sub. 8.

2 *In vinculis mittens.* In vinculis alligari potuit corpus, non fides præmi. *Quod fides* in Deum non extinguitur, sed acuitur aduersis. Ind. de Samſ. sub. 51.

3 *In vinculis.* Gerebat officium precursoris. *Officium de vicit* ad incommoda personalia pro in demnitate suorum. Indic. de Samſ. sub. 51.

4 *In vinculis mittit.* Magnus coram Domino abiectus, & postratus, excellens mittit suæ magnitudinis splendores. Ind. de Samſ, sub. 56.

5 *In vinculis.* Patiens erumnas in præsenti thesaurizat gloriam in futura. Ibid. sub. 53.

6 *Quæ audistis, & vidistis.* Fides Christi aptissimè probatur miraculis. *Quod nomen Christiani* institituti debet respondere operibus & opera probare institutum. Ind. Samſ. sub 11.

Domin. 3. *Miserunt Iudæi ab Hierosolymis, &c. ad Ioannem, &c. Ioann.* 1.

1 *Miserunt ad Ioannem.* Non ad sibi intimos contemporaneos. *Quod inuidia* accensus egre fert eminentiam, & excellentiam cõtemporaneorum. Ind. de Christo sub 28.

2 *Ad Ioannem*, ignorantia scripturæ potius quam ambitione sui honoris. *Quod ambitio sui honoris* auida non patitur, nec memoriam aliorum ad excelsa. Ind. de Christo sub. 37.

3 *Ad Ioannem, &c. Tu qui es*, ponitur in eius libertate Mesiatus. Inepte. *Quod Deus vult* vnũquemlibet nominari, & tractari, secundum id, quod est, non quod appertit, & ambit. Ind. de Samſ. sub. 11. & 12.

4 *Miserunt.* Mirum litigasse, vt deferrent ad Ioannẽ. *Quod præstantia virtutis* acuit æmulationem, & quo maior maiorem. Ind. de Samſ. sub. 44.

5 *Quid existis videre arundinem, &c. medius vestrum stetit, cuius nõ sum dignus corrigiã, &c.* Humilis exaltatur à Domino. *Quod optabilis felicitas*, constitui vasallum Regis, qui vasallos eleuat, & exaltat in Reges, non contra reddi vasallos, & tributarios Reges. Ind. de 70. annis, sub. 74.

Domin. 4. *Anno, quinto decimo imperij Tiberij Cæsaris, &c. factũ est Verbũ Domini super Ioannẽ, &c. Et venit prædicans baptismũ pœnitẽtiæ.* Luc. 3

1 *Factum est verbum Domini, & venit prædicans.* In vigilat Deus eiendo, & instigando Ioannẽ, vt prædicet aduentum Mesiæ. *Quod Deus implet promissa*, & publicat impletionem de aduentu Mesiæ ad conuincendam perfidiam Iudæorum. Ind. de Christo sub. 5.

2 *In-*

2. *Imperij Tiberij Cæsaris procurante Poncio pilato, &c.* Pietas cogit Deum curare de salute perditissimorum. *Quod Deus habet* in memoria Reges, & Magistratus perditissimos mittendo prædicatores ad doctrinam salutis. Ind. de Christo sub 4.

3 *Imperij Tiberij Cæsaris procurante Poncio pilato, &c.* Superiores suis titulis proponuntur, & aptè. *Quod Deus vult superiores adhuc* improbos suis titulis honorificis tractari. Ind. de Christo sub 5.

4 *Venit in omnem regionem Iordanis.* Relicta domo patria, & re familiari. Apte. *Quod nec labori*, nec rei familiari parcendum, vt subsistat recognitio; & adoratio veri Dei Messiæ. Ind. de Christo sub. 6.

5 *Prædicans pœnitentiam agite.* Indilate. *Quod non est deferenda* virvirtus, pœnitentiæ, & bona opera, nam dilatio est valde periculosa. Ind. de Christo sub. 6

6 Pœnitentiam agite. Clamat stillo claro. *Quod prædicatores* tenentur aperire veritatem auditoribus stillo claro, & abstinere acuto fucato, & obscuro, vt ab omnibus percipiantur. Ind. de Christo sub. 35.

Infesto conceptionis purissimæ Mariæ. *De qua natus est Iesus.* Mat. 1.

1 *De qua natus est Iesus.* Quod conceptio, & natiuitas purissima filij proponitur, vt exemplar purissimæ Matris, maiorum genealogia minoris æstimationis. *Quod in domo Dei* habenda ratio virtutis, & sanctitatis potius, & immunitatis à culpa, quam generis nobilitatis. Ind. de 70. ann. sub. 9. & de fuga. sub. 37.

2 *De qua natus est Iesus.* Conceptionis, & natiuitatis præposteræ filij exemplar indigitat digitat conceptionem anticipatam purissimæ matris. *Quod sibi dilectis* indulxit Deus sanctificationem in vtero, Deiparæ vero in primo instanti immunitatem ab originali, imo debito ex Christi meritis, & ruina imminens serio delusa anticipatione. Ind. de Sams. sub. 5.

3 *De qua natus est Iesus.* In aspectu Mariæ sola puritas filij apparet, fugatur impuritas culpæ. *Quod in templo Dei* est adeo reuerentia debita, quod irreuentia præsentiæ originalis punitur fuga, vt idoli Dagon corã arca clade, & ruina. Ind. de Sams. sub. 56.

4 *De qua natus est Iesus.* Filij generosi nobilitas exigit ingenuitatem matris, infame effet filio pati infamiam originalem Matris ex filiatione nobili arguitur nobilis maternitas. *Quod sola præsentia Dei* sat ad fœlicitandam matrem, sicut absentia per gratiam adinfœlicitandam.

5 *De qua natus est Iesus.* Ignominiã culpæ imminentẽ ex anteceſſoribus in genealogia, deriuabilis in poſteros, cõuertit Ieſus deſcẽdens ex Maria in honorificã immunitatẽ gratiæ, per omnipotentiã, cuius *ea est habilitas, vt elicitat* ex infirmitate ſaluté, ex morte vitam, ex genealogia infecta puritatẽ Mariæ deſcẽdẽtis. Ind. de Sãſ. ſub. 4 In Natiuitate Chriſti. *Peperit filium ſuum primogenitum, & pannis eum inuoluit, & reclinauit in præſepio.* Lucæ 2.

1 *Peperit, inuoluit pannis, & reclinauit in præſepio.* Deus in excelſis glorioſus ab Angelis publicatur, & in terra abſcõditur panniculis, & ponitur in humili præſepio, ſub anguſtia corpuſculi, in humili emittit maiores ſplendores maieſtatis, & gloriæ, ita ſane. *Quod ante humanitatẽ* aſſumptã maieſtatis gloriã oſtẽtabat, in excelſis, in throno Seraphinorũ, ſolio triumphali Angelorum, more Regum terræ in ſplendido apparatu: infantiam noſtram aſſumptus in humilibus panniculis, exili corpore, vili præſepio gloriæ ſuæ diffundit ſplendores, non indigus mutuatis. Ind. de Samſ. ſub. 9.

2 *Peperit filium, pannis inuoluit, faſciis cinxit, reclinauit in præſepio.* Immenſus anguſtiari, & cingi patitur, corpuſculo, faſciis, præſepio. *Quod in exiguo* Dei virtus infinita, & immẽſa dum cingi patitur, infinita, & immenſa in ſe oſtenditur. Ind. de Samſ. ſub. 47.

3 *In præſepio.* Thronus Seraphinorũ glorioſus, præſepij ſedes, in cunabulũ ignobile, indecorũ Deo aſſumere ignobilia? glorioſum ſane pro homine. *Quod Principibus* non indecorum, ſed glorioſum aggredi humilia pro bono publico ſuorũ Ind. de Samſ. ſub. 41.

4 *Peperit filium ſuum,* imò, & Patris. Æmulatur Patrem partu, Pater genuit ſuum, Mater peperit ſuũ, Pater genuit, vt Mater pareret, vtriuſque liberalitas in dono infinito oſtenditur. *Quod Dei liberalitas,* non ſonat in paucitate, ſed in copia, & abundãtia, & virgo idem donũ immenſum parit hominibus. Ind. de Samſ. ſub. 33.

5 *Peperit filiũ.* Illæſa virginitate. *Impoſsibile naturæ reddidit Deus* poſsibile, vt ſibi arroget, nõ ſolũ æternã filij editionẽ, natiuitatẽ, ſed etiã tẽporalẽ in virginitate, quæ partũ neſcit. Ind. de Sãſ. ſub. 4.

6 *Reclinauit in præſepio.* Expoſitum temporis calamitatibus, duro præſepio, algenti figori, &c. Non ſine myſterio. *Quod Chriſtus ab infantia,* vt indicet feruorem dilectionis erga homines ſubijt ſponte frigoris incommoditates. Ind. de fuga. ſub. 8.

Infecto S. Stephani. *Ecce ego mitto ad vos Prophetas, &c. & ex illis occidetis, & crucifigetis.* Matth. 23.

1 *Occidetis, & crucifigetis.* Mirum mitti ſuos ad mortem, *ſed in morte vitam conſtituit,* in felle, & amaritudine lapidum, mel dulce gloriæ, in quo intima amititia. Ind. de Samſ. ſub. 16.

2 *Prophetas, sapientes.* Stephanũ plenũ fide, & Spiritu Sãcto vultu Angeli stant ẽ inter illos, ob eam excellentiã strident dẽtibus ineũ, & damnant acerba morte lapidationis, nec mirum præ odio, & inuidia. *Quod præstantia virtutis* acuit inuidiam, & æmulationem, & quo maior maiorem. Ind. de Samſ. ſub. 44.

3 *Ex illis occidetis. Illis occasio* paſsiua crucifixionis, & lapidationis mirabili tolerantia perpeſſa, licet diuturna, dulcis. *Quod labores, & calamitates* perpeſſæ pro Deo ſunt patienter tolerandæ, licet diu durent, quia amore Dei induleantur. Ind. de fuga ſub. 14.

4 *Occidentis, & crucifigetis.* Corpus viuificatur anima in halitus vitales, dum orat pro lapidantibus. *Quod fides non extinguitur* aduerſis, ſed accenditur, & firmatur. Ind. de Samſ. ſub. 51.

5 *Et ex illis occidetis.* Dum occiditur Stephanus corpore, animã viuificatur, dum truditur mundo, introducitur cœlo, vidit cœlos apertos, nec mirũ, quia *patientia, & ſufferẽtia* mortis in præſenti pro Deo, theſaurizat vitã, & gloriã in futura, Ind. de Samſ. ſub. 53.

6 *Et ex illis occidetis,* vbi amititia Dei, quæ patitur occidi ſuos? *Quod verior amititia* non eſt ſita in eo, vt dilatet vitam, ſed, vt tranſferat in gloriam. Ind. de Samſ. ſub. 57.

7 *Ecce relinquetur domus veſtra deſerta,* quia nõ tantum Prophetas occidiſtis, ſed occidetis Principem Prophetarum. *Quod Chriſticidium,* adeò eſt immane ſcelus, quod non ſatis pro meritis punitur, niſi deſertione Dei perpetua. Ind. de ſeptuaginta ſub. 79

Infeſto S. Ioan. Euang. Petrus *vidit illum diſcipulũ, quẽ diligebat Ieſus ſequentem, qui & in cœna recubuit ſuper pectus eius.* Ioan. 21.

1 *Quẽ diligebat Ieſus, &c.* Qui in cœna recubuit, &c. Dei familiaritas fecit præſtãtẽ, cõciliauit venerabilitatẽ, ſed potuit odiũ, & inuidiã inter cõdiſcipulos cõtẽporaneos *Quod Dei præſentia intima,* & pectoralis fuit ſat ad fẽlicitandum, & exaltandum inter fratres, & condiſcipulos. Ind. de 70. ſub. 89.

2 *Quem diligebat Ieſus.* Quid mirum proſequi ſpeciali dilectione, ſi præſtabat meritis, & vnione ſanguinis? *Quod vnio amoris inter ſanguine coniunctos,* aut profeſsione foueri debet ſtudio, ne diſſoluatur in odia perpetua ſine fine. Ind. de ſeptuaginta, ſub. 79.

3 *Quẽ diligebat, &c. Qui recubuit ſupra pectus, &c.* Chriſti fauores ſpeciales excitare poſsent emulationẽ, quod ſibi appropiabat magiſtrum communem, & ipſe diligebat ſpeciali dilectione. Periculoſa prælatio vnius præ alijs. *Quod æmulatio, & diſcordia* eſt valde frequens inter filios, vt maior ſibi arroget maioratũ, integrã hæreditatem, & excludat alios. Ind de fuga ſub. 32.

4 *Exijt ſermo inter fratres, quod diſcipulus ille nõ moritur, &c.* Nil diſpendij cæteris, quod nõ moreretur. Priuilegiũ præſumptum acuit emu-

æmulationē. *Quod ambitio sui honoris auida*, no patitur, sed egre fert excellētiā, & præstātiā cōtēporaneorū. Ind. de Christo sub. 28. & 37

5 *Domine hic autē quid?* Adulationis sonat Domini vox hic, innominata æmulatione, ac si affectus esset Petrus adulatione, & æmulatione in inquisitione à Magistro. *Quod adulatur Princeps*, vt disfauorem inferat improperato pauperi ope destituto. Ind.

6 *Hic autē quid? &c. Quid ad te? tu me sequere.* Ingeniosa curiositas non semel periculosa, & ita vitanda, ab illa reuocatur Petrus ad sequelam Christi. *Quod vir bonus* hauritus ad parendum sine ingenio ad discutiendum. Ind. de Christo sub. 4.

7 *Super pectus Domini in cœna recubuit.* Ibi secreta de fonte Dominici pectoris hausit, potauit altissima fidus, intimus cōsanguineus solus. *Quod secreta* magni ponderis non sunt communicanda multis ad fœlicem exitum. Ind. de Christo sub. 35.

Infesto Sanctorū Inocentiū. *Herodes occidit omnes pueros, qui erant in Bethleem, & in omnibus finibus eius.* Matth. 2.

1 Habes integram lectūram de fuga in Ægyptum, vbi elige discursus tibi placitos.

In die Circūcisionis Christi. *Postquā impleti sunt dies octo, vt circuncideretur Puer, vocatum est nomen eius Iesus, &c.* Lucæ 2.

1 *Postquā impleti sunt dies octo, vt circūcideretur puer.* Infans vix habet esse existēs, cū rumpit moras diffundēdi sanguinē Redēptoris. Nec mirū diffudisse, sed distillasse ad octauū diē, præsertim, cū dies morę illi iā numerātur lege aliorū infantū, nā iam decretus Redēptor ab origine mūdi impetus, ac propēsiones diffundēdi instabant quasi in tyrocinio diffundēdi cōcepto ante diē natiuitatis, & diē legis typicis exercitamētis. *Quod iam olim in figuris*, & agni occisi ab origine mūdi assuefiebat exercitijs Redēptoris in veteri testamēto, vt in nouo impēsius, & glorioſius fūgeretur. Ind. de Sams. sub. 6

2 *Postquā impleti sunt dies octo.* Mirādū, nō die octauo diffūdisse sāguinē, sed vitā egisse dieb⁹ octo, qnin anxietas solicita rūperet mores, ne expectaret diē octauū. *Quod sit adhibēda diligētia*, & celeris solicitudo, & abijcienda desidia in Dei obsequio, & officij obligationibus. Ind. de Christo sub. 6.

3 *Puer.* Vix habet infans esse existētiæ ad vitā, cum habet sanguinem anxium ad diffusionē inductricē mortis, sed illi est pro vita mors, & viuere mori pro homine. *Quod Deus* constituit in mortificatione corporis vitā, vt sit vita in morte, in pœnis gloria, & mors in absentia mortis, & pœnalitatis. Ind. de Sams. sub. 16.

4 *Dies octo, vt circūcideretur Puer.* Anxietas præcox diffundendi sanguinem, impulsus, & propensio egre patitur moras, & ætas natiuitatis octo dierum erumperet, si deesset diffusor pro

inclinatione, & propẽsione. *Quod quilibet aggreditur ardua* facinora pro propẽsione boni originis, & boni sanguinis. Ind. de Sãſ. ſub. 38

5 *Dies octo.* Infans natus octo dierũ ſponte patitur abſciſsionem dolorificã, ſignaculũ dilectionis, illi parũ pati niſi oſtenderet ſigillo, & ſignaculo dilectionis. *Quod Chriſtus* ab infantia ſua, vt det ſignum ſingularedilectionis libenti animo ſuſtinet incommoditates abſciſsionis dolorificæ. Ind. de fuga ſub. 8.

6 *Dies octo.* Præfiniti per legem in circunciſsione infantũ, & vix legis adſit intimatio, cum ſine coactione, & reſiſtentia patitur impleri, nec differri vlterius. *Quod infantia* à parentibus diſponi debet iuxta Legis diuinæ præſcriptum. Ind. de Samſ. ſub. 11.

5 *Poſtquã impleti ſunt dies octo, &c.* Ea erat anxietas in infante diffundẽdi ſanguinẽ pro ſuis, vt in impletione legis dicitur trãſactus illius terminus, vt anticipet moras in affectu. *Quod Deus vult, quod quilibet* impleat ita exacte leges ſui ſtatus in vita. Quod ſi fas anticipet initium vitæ. Ind. Samſ. ſub. 6.

8 *Circũcideretur puer.* Infans exili corpore, nõ exilẽ ſanguinẽ diffuuderet pro anxietate, ſed vt in adulatiori in horto, riuos decurrentes in terrã, ſed ætati. & poſsibilitati tẽporis ſtat, ne excedens poſſibilitatẽ videretur infans corpuſculo phantaſtico. Quod oportet, *Quod quiſq; gerat morẽ* poſsibilitati ſui ſtatus, ne excedẽs phaſtu, & ſumptib⁹ inſpiciatur, & ſit phãtaſma ciuitatis. Ind. de Xpo. ſub. 50.

9 *Et vocatũ eſt nomine ius Ieſus.* Illuſtre nomẽ præfinitũ ante conceptionẽ non ſuſcipitur, niſi poſt diffuſsionẽ ſanguinis Saluatoris, vt officio exercitia reſpõdeant. *Quod nomen*, & inſtitutũ chriſtiani debet probari per opera, & fides cõiũgi operib⁹. Ind. Samſ. ſub. 11.

In die Epiphaniæ. *Cũ natus eſſet Ieſus, &c. Ecce Magi ab oriẽte, &c.* Mat. 2

1 In Lectura de Chriſto adorato à Regibus eligi poſſunt plurimi diſcurſus, vt libuerit.

Dominica ſeptuageſimæ. *Simile eſt Regnũ cœlorũ homini Patrifamilias, qui exijt primo mane conducere operarios in vineã ſuam.* Matth. 2.

1 *Patri familias.* Pater intitulatur reſpectu filiorũ, nõ Dominus reſpectu ſuorum, quia optat obſequi ſpõtanea filiorũ obediẽtia, nõ coacta ſeruorum, pater qui benigne obſequatur à filijs, non Dominus, qui ægre tolleretur à ſeruis *Quod potius* meretur nomen patris, quam &c. Ind. de Samſ. ſub. 35.

2 *Conducere perarios, &c.* Homo poſt peccatum operarius, & mercenarius in tẽporalibus, & ſpiritualibus. *Quod Deus vult*, quod quilibet impleat leges ſui ſtatus ab initio vitæ. Ind. de Samſ. ſub. 6.

3 *In foro ocioſo.* Indagaturi vitã æternã otio⁹, & pigritia de indecorũ. *Quod abigenda eſt deſidia*, & adhibenda diligentia in obſequio Dei. Ind. de Xpo. ſub. 6.

4 *Con-*

4 *Conuentione facta ex denario. Misit illos in vineam.* Obsequia Dei non sine præmio, & mercede, sed humana, conditio vilis nisi vult obsequi sine pacta mercede Adduci solet ex vtilitate, & lucro: *quod argentum*, & aurum rapit humanam voluntatem ad labores, & difficilia. Ind. De Sanct. sub. 9. & 41.

5 *Circa vndecimam, &c.* Ite & vos. Deus auidus humanæ salutis omnibus horis, & ætatibus inuigilat, & mittit operarios ad denarium salutis comparandum, non contentus semel, & iterum conduxisse. *Quod Deus non semel tantum*, sed iterum, & iterum vrget nostrã salutem. Ind. de Christo sub. 26. dat initium, & finem sub. 40.

6 *Circa vndecimam, &c. Ite & vos.* Otiosi & in hora senectutis merito increpantur. *Quod non sunt differendæ* bona opera in senectutem ad solis vitalis ocasum, nam dilatio valde periculosa. Ind. de Christo sub. 6.

7 *Cum sero factum esset dixit procuratori, voca operarios, & redde illis mercedem suam.* Implet pactũ de denario soluendo, fœlicitas seruire sine anxietate, timò spe certa obtinendi præmium. *Quod fidelis Dei* promisso, quæ certam, & infalibilem habet impletionem. Ind. defuga. sub. 3.

Dominica sexagesimæ. *Dixit per similitudinem exijt, qui seminat seminare semen suum* Lucæ 8.

1 *Dixit per similitudinem, &c. Semen est verbum Dei, &c.* Deus apte docet homines per similitudines illi familiares, sensibiles, & corporales, vt facilius percipiant. *Quod Deus se ingerit* inclinationi, & studio hominum, accommodando se vsualibus, vt lucrifaciat omnes. Ind. de Christo sub. 26.

2 *Per similitudinem, &c. Semen est verbum Dei,* Parabolæ obscuritatem reddijt expositione clarã ad instantiam discipulorum, *edisere* parabolam, ad exemplum magistrorum, & concionatorum. *Quod prædicatores* studeant aperire doctrinam stillo claro, reiecto culto occulto, vt ab omnibus percipiatur. Ind. de Christo sub. 35.

3 *Semen est verbum Dei,* Agricola incipit diffundendo semen, & inserit terræ, & nisi foueatur amplexu, non redditur fructus, ita Dei initium, & nostra cooperatio necessaria est ad salutem. *Quod Deus per se dat initium* ad salutem nostram, vt cooperemur in finem. Ind. de Christo, sub. 40.

4 *Cecidit secus viam, &c. inter spinas, &c. supra petram, &c. in terrã bonam, & fructum attulit.* Mysterium semen entitatiue idem diffunditur in varias portiones terrarum, & non paritur idem fructus, sed dispar exitus; ita gratia entitatiuè eadem in varijs, imò in eodẽ

in varijs occasionibus. *Quod Deus dat gratiã*,& doctrinã salutis,& non cogit voluntatem,nec prædeterminat,ad bonum euentum,sed relinquit libram ad bonum,& malum. Et non determinat ad alterutrum,sed potius determinatur. Ind.de fuga.sub.28.

5 *Aliud cecidit secus viam,& volucres rapuerunt.* Quod reconditũ non est in subterraneis intra aream, sed expositũ in superficie viæ à volucribus dilaceratur, & sine fructu. *Quod secretum* magni ponderis,& momenti non debet propalari multis,si optatur fœlix euẽtus. Ind.de Christo.sub.37.

6 *Aliud cecidit inter spinas,& spinæ subortæ suffocauerunt illud.* Diuitiarum anxietas distrahit ab atentione cœlestium,gratiã,& doctrinam suffocat. *Quod distracti* ad terrena perdunt,& amittunt cœlestia. Ind.de Christo sub.39.

7 *Aliud cecidit supra petrã,& aruit,quia non habebat humorẽ.* Semen secundum se prolificum,sed petrarũ ariditate,& vitio non paritur fructus. *Quod ignauia nostra* sepe talẽta collata a Deo ad negociãdũ manent infrugifera sine lucro, & fructu. Iud.Sams.sub.30.

8 *Aliud cecidit in terrã bonã,& fructũ attulit,&c.* Terra fructifera se ipsa virtute seminis grauida,oppignorata erat ad reddẽdũ copiosũ fructũ. *Quòd ingenio*, & maiori talẽto instructus præmitur maiori obligatione ad exhibẽda maiora obsequia Deo. Ind.de Xpo.sub46

Dominica quinquagesimæ. *Ecce ascendimus Hierosolimam.* Matth.20.

1 *Ecce ascendimus,&c. Tradetur,illudetur,flagellabitur,conspuetur, occident eum,&c.* Ascensus cõmunis Christo, & discipulis,soli magistro imminent tot labores,flagella,mors,pro discipulis,nec timore cohibetur,aut retardatur,cum discipuli sequebantur stupentes. *Quod excelsi animi est* pro vita, & bono Reipublicæ exponere periculo propriam. Ind.de Sams.sub.27.

2 *Ascendimus.* Christus sese offert sponte ad mortẽ in accliui ascensu,vt homini vitam lucretur,|in morte sua vitam cæteris. *Quod constituit* in morte vitam,in pœnis gloriam. Ind.de Sams.sub.16.

3 *Ecce ascendimus,&c. Præcedebat illos Iesus,& ipsi sequebantur stupentes.* Christus incitat exemplo,vt adducat in sui imitationem,& ingerat vigorem,& animi neruos. *Quod in capite* Rege, aut Principe consistit virtus,& robur Reipublicæ, vt si boni exempli quidquã excidat, ruant Reipublicæ mores. Ind.de Sams sub.47.

4 *Ecce ascendimus,&c. Præcedebat Iesus, & ipsi sequebantur stupentes.* Præcursori animoso pro eis,ipsi se exibere debebant animosi comites prompta societate,sed comitantur pigri,& tremuli. *Quod Regi indigenti* tenẽtur subditi subuenire rebus proprijs,præsertim in indigentiã incursa pro cõmuni bono, & abundantia suorum. Ind.de Sams.sub.20.

5 *Tra-*

5 *Tradetur gentibus, illudebitur, flagellabitur, & occidetur.* Redemptoris officium cum anexis pensionibus aceptauit Christus, & tradi patitur, vt pēsiones soluat. *Quod munus liberatoris* deuixit ad sustinē das incōmoditates personales, vt liberaret suos. Ind. de Sāſ. sub. 51.

6 *Et tertia die resurget.* In domo Dei nō meritū sine præmio, non pœna, & tristitia sine ingēti cōcupita gloria. *Quod gaudiū cœlestiū* implet, & satiat appetitū, terrenorū vix ūnū replēt. Ind. de Xpo. sub. 41

7 *Tradetur gentib⁹ flegellabitur, conspuetur, occident, & tertia dia resurget.* Ecclesia doctrix in Bachanalib⁹ proponit mensā Christi cū varijs cōdimentis amaritudinis, fellis, & tristitię, flagellorū, & mortis, cū finali gaudio, & gloria resurrectionis, inuertitur ordo in Bachanalib⁹ ab intēperato, vtitur glorioſis, & lætis, differt pœnosa, & tristia. Curandū omnibus. *Quod mensa nō est prophanāda* intēperatis, & superfluis condimentis, scurrilitate, & lasciuia verborū, & operum, sed temperantia, comitate, & honestate præsertim inter Religioſos, & Eccesiasticos. Ind. de Samſ. sub. 17.

In feria quarta cinerū. *Memēto homo, quia puluis es, &c. & in puluerē reuerteris,* Gen. 3. *Cū ieiunatis nolite fieri sunt hipocritæ tristes.* Matt. 6.

1 *Memēto homo, quia puluis es.* Homo in rei veritate mortalis in auiditate immortalis, in re breui duraturus, in ficta sibi adulatione æternò. Ecclesia ista ceremonia imponēdi cineré in frōte admonet tituli fragilitatis, & moralitatis tēporalis, & repellit fictam adulationē sibi duraturus æterno. *Quod Ecclesia iubet* intitulari, & tractari hominē mortalē, secundū id quod in se est, non secundū id quod fictum, in quod inducit adulatio. Ind. de Samſ. sub. 11.

2 *Memēto quia puluis es.* Homo traditus obliuioni sui esse fragilis adducitur in memoriā hoc puluere Anachardo ab Ecclesia in scholā virtutum, in initio pœnitentiæ quadragesimalis suæ fragilitatis. *Quod in puluere* fragili inseritur virtus, & robur virtutis, & obseruātiæ quadragesimalis, & fragilitate armatur in militia spirituali contra vitia, & hostes animæ. Ind. de Samſ. sub. 47.

3 *In cinerē reuerteris.* Memoria mortis cohibetur homo, vt frēno à vitæ deliramētis, & præcipicijs, *quod fragilitas*, & finis vitæ cōceptus ingerit generosum animū ad contemnendā vitā, & intendenda ardua pœnitentiæ, & virtutum. Ind. de Samſ. sub. 33.

4 *Cū ieiunatis nolite fieri sicut hipocritæ.* Ecclesia inducit initiū pœnitētiæ quadragesimalis istud ieiuniū, ac si in solo ieiunio, quo cōprimūtur vires corporis, cōfisteret expulsio vitiorū, & virtutū aggregatio. *Quod in vno* vitio intēperātię vitāda omnia. Ind. de Sāſ. sub 48

5 *Cum ieiunatis nolite, &c.* In capite quadragesimæ statuit Ecclesia

clesia ieiunium,& apte,vt instruat ad exercitia virtutum, & armet contra vitia,quia *in ieiunio*,& abstinentia corporis includitur fortitudo,& robur animæ contra vitia. Ind.de Sams.sub.48.

6 *Nolite fieri sicut hypocritæ tristes.* Hypocrita non est quod in se est,sed quod indicat fictio,quod fit ficta simulatione,& apparietia, Ecclesia amat esse verum, odit factum,amat quod in se est bonum,odit quod in se non est bonum,sed apparens,& consonat cum priori admonitione,quòd pulueres, cũ simulatur immortalitas,secunda,ista sis in re virtuosus, non Hypocrita fingens virtutes,caue istam metamorphosim,trãsfigurationem. Nam *simulatio semper intendit aliud*,quam demonstrat exterius. Ind.de Christo sub 30.

7 *Thesaurizate thesauros in cœlo.* Auocat à caducis,& terrenis telinquendis cum vita, & inducit ad colligendos thesauros virtutũ pœnitentiæ,mortificationis,non occiduis in futura. *Quod panitentia,& sufferentia laborum* in præsenti vita, thesaurizat gloriam in futura. Ind.de Sams.sub.53.

Feria sexta post cineres. *Ego autem dico vobis diligite inimicos vestros,&c.* Matth.5.

1 *Ego autẽ dico,diligite inimicos,benefacite,&c.* Christus authoritatis suæ põdus opponit traditioni antiquorũ de diligẽdo amico,& odiendo inimico,doctrinam piã doctrinæ impiæ, non debet infectari antiquius,sed verius. Magna Dei clementia propensio ad saluandum potius, quam puniendum in homines bonos, & malos. *Quod Deus dissimulat iniurias*,potius quam puniat, nec passus est zizaniæ malum inferri,sed indemnitatẽ. Ind.de Sams.sub.3. & seq.

2 *Ego autẽ dico diligite,benefacite.* Dũ Christus seuere repellit traditionem antiquorũ de odiendo inimico,assertorem se profitetur amoris erga illũ. *Quod Deus dum seuere* castigat,de beneficijs conferendis cogitat,ita propensus ad clementiam. Ind.de Sept.sub.35.

3 *Diligite inimicos.* Vis amoris vnitiua redigens diuisos ad vnitatem,discordes ad concordiam, Christus amat concordiam, & ita præcipit. *Quod Deus iure creationis pater familias* creaturarũ,vnitatẽ suam amat in familia illarum,*sicut in familia viri,& vxoris* vna concors,& simultanea debet seruari cohabitatio, nec discidio disiungenda. Ind.de fuga.sub.13.

4 *Diligite,benefacite,vt sitis filij Patris vestri.* Christus docet pluribus,& instantia victima. Quod Patris vnius filios,& domesticos expedit viuere in vinculo pacis,sectari vnionẽ *Quod vnitas* inter vnitate sanguinis patriæ,& professionis cõiunctos,studio & cura speciali ali,& foueri debet,nã dissolui solet in odiũ,nõ diariũ,sed sine fine. Ind.de Septuag.sub.79.

5 *Dili-*

5 *Diligite, benefacite.* Inimicum molientem diuitias, & honorem auferre sat diligere quin oneretur beneficijs, durum aut lenti saccum, porrigere, etiam palium. Cordatius sanè dum vitatur litigiũ, & illi annexas molestias. Glorioſior triumphus iuri cedere, quam litigare pro iure, pati iniuriam, quam inferre, vinci quam vincere. Iuimitatis præſagium illuſtre filij Dei trophæum. *Quod homo nitti ac pius patietur* ſponte, potius iuris ſui, diuitiarum, & regni iacturam, quam litigium. Ind. De Septuaginta ſub. 9.

6 *Diligite benefacite.* Non diligamus verbo, & lingua ſolum, ſed opere, & veritate, non ſimulata vindicta, ſub ficta beneficentia, id enim ſanguinolenti, & ruſtici non ingenui filij Dei. Intus vindicta exterius ſimulatio charitatis. *Quod crudelitas*, dum differt vindictam, non laxat, ſed acuit ad inuaſionem crudeliorem. Ind. de Fuga ſub. 20.

7 *Diligite, benefacite.* Ego autem ſum qui præcipio, ait Chriſtus, acquieſcite ſine diſcuſsione, ego motiuũ, ſub me obſcuramini flagellum inimicum, ego qui largiturus præmium. *Quod obedientia, debet eſſe aurita*, cæca, & prompta, ſine ingenio ad diſcutienda præcepta, vt præmio cumuletur. Ind. de Chriſto ſub. 20.

Dominica. 1. Quadrag. *Ductus eſt Ieſus in deſertum à ſpiritu, vt tentaretur à Diabolo.* Matth. 4.

1 *Ductus eſt Ieſus, vt tentaretur.* In certamen ducitur, & patitur tentari, non quærit, ne quæramus, quia non quæſitum firmat victoriam. *Quod qui non quærit*, ſed excipit occaſiones tentationum erit victor glorioſus, licet inuaſor ſit leo, Angelus, Deus. Ind. de Samſ. ſub. 14.

2 *In deſertum.* Schola virtutis egregia, vbi exercicium fugit in tuitum, & plauſum adulationis hominum fructuoſe. *Quod fugienda eſt innanis gloria*, ex noſtris facinoribus intenta. Ind. de Samſ. ſub. 15.

3 *Vt tentaretur.* In tentatione eſt tentatiua virtutum, & ſtudioſi trophæum, ſed virtus interdum eſt in fuga imminente periculo. *Quod imminentia pericula* animæ ſolicita celeritate fugienda. Ind. de Fuga ſub. 11.

4 *Accedens tentator dixit*, ſi filius Dei es, &c. Paralogium patitur Diabolus, & audet tentare in ſui perniciem, & repulſam. Delirium enim tentare Deum adhuc exiſtimatum. *Quod eſt infamia Diabolica*, ſumere experimentum de diuina virtute, & perfectione, ſed imprudentia Diaboli auſa eſt aggredi. Ind. de Samſ. ſub. 45.

5 *Dic, vt lapides panes fiant.* Ingrata Deo ſuperfluitas cum viro

Reli-

Religioſſo vnus panis ſufficeret, patitur repulſam, quod non ſolo cibo corporali, ſed ſpirituali incumbendum. *Quod ab alimento intemperato*, ſicut immodico vino abſtinendum, præſertim Eccleſiaſticis, & Religioſsis. Ind. de Samſ. ſub. 5.

6 *Dic vt lapides panes, &c.* Repellitur ſtatim, non in ſolo pane ad eruditionem noſtram. *Quod inuaſiones Demonis* primo aſpectu ſunt repellendæ, ne iteretur vlterius periculum congreſus. Indic. de Samſ. ſub. 16.

7 *Mittite deorſum*, Inſerit volatum per aera, cum facilius per ſcalam, cui exiſtimabat ambitioſum innanis gloriæ. Calide, ſed fruſtra. *Quod ambitioſſo* impoſsibile (volare) facile poſsibile apparet, & offert. Ind. de Fuga ſub. 9.

8 *Hæc omnia tibi dabo ſi cadens adoraberis me.* Offert & non ſua, & omnia, & ficta, ſub onere ſummiſsionis, genuflexionis, vt qui accipit ruinoſſe cadat. Nec mirum *nihil in tentatum relinquit* ambitioſſus, vt regnet. Ind. de Fuga ſub. 9.

9 *Hæc omnia tibi dabo.* Inuadit muneribus, vt inducat ad præcipitium genuflexionis adorationem, idoli Diaboli deformis aurati. *Quod rapit humanam voluntatem* argentum, & aurum, vt vim inferat ad adorandum idolum deformem aureum, ſed repulit homo Deus ad exemplum hominis. Ind. de Samſ. ſub. 41, & 42.

Feria quarta poſt primam. *Magiſter volumus arte ſignum videre.* Matth. 12.

1 *Magiſter volumus à te ſignum, &c.* Incipiunt in dolo verbōrum, in corde odium, in verbis blandiloquium, moliti ſermones ſuper oleum, non blandi, ſed ſpicula, iacula, adulator hoſtis occultus offerrens innanem gloriam. Cauendus, vt hoſtis ſub amici apariencia transfiguratus. *Quod fugienda eſt adulatio*, & innanis gloria ex noſtris operibus intenta, & Deo gloria refferēda. Ind. de Samſ. ſub 15. Quod cauenda arrogantia ibidem ſub. 24.

2 *Magiſter volumus.* Magiſtrum vocant, non repulit titulum, erat etenim, ſed intentionem, dicebant bonum, ſed malè, verum ſed fraudulēter. *Quod nō debent* admitti plauſus, & veneraciones hyperboleæ ſupra merita, ſed tēperate repulſis adulationibus. Ind. de Sāſ. 9.

3 *Magiſter volumus à te ſignum, &c.* Accedunt animo tentandi ſub titulo honorifico, & capiendi experimentum de virtute, ſimulatione honorifica, hoſtes verſipeles. *Quod eſt ſcelus grauiſsimum* ſuſcipere experimētum de diuina præſertim, & humana parfectione. Ind. de Samſ. ſub. 45.

4 *Magiſter volumus ſignum videre.* Miraculum ſupra ſtillum hor

dina.

dinarium naturæ, vt ignem de cœlo cadere, mugire tonitrua extra tempus, vt magnus habearis. *Quod solus ille æstimatur magnus*, qui prætergreditur ordinaria naturæ. Grandis proles, magnus Baptista supra infœcundam sterilitatem. Ind. de Sams. sub. 4. Digna Principibus ardua, & insolita. Ibidem sub. 21.

5 *Magister volumus videre.* Miraculum licet fiat, cæcitate, & passione imbuti nõ videbunt, sed tergiuersabunt, calumniabunt, licet sit euidens. *Quod diuina virtus* solet efficere miracula in ea circumstantia, vt sine tergiuersatione probetur Deum auctorem. Ind. de Sams. sub. 24.

6 *Volumus signum, &c. non dabitur, &c.* Dat repulsam, sed faceret miraculum si illis proficuum ad conuersionem, & pœnitentiam; non oportet prodigi miracula. *Quod Deus ne deficiat* in necessarijs, non dubitabit edere miraculum, cum deficiunt subsidia naturæ. Ind. de Sams. sub. 32.

7 *Generatio prauа, & adultera.* Despicit acerbè, sed cordate adulationem, aliud in corde, aliud in ore gerentes, adinstar adulteri, interius infidelitatem, exterius fidem exhibens. Generatio parua non ex prosapia auorum, sed ex moribus personalibus. *Quod in domo Dei* nobilitas pensanda ex ratione virtutum, non stirpis nobilitate. Ind. de Septuaginta sub. 9.

8 *Non dabitur signum nisi Ionæ.* Clementia conditionis Dei plus dat quam exigitur, negat vnum beneficium, sed annuit maius, mortis suæ, pro illorum salute sub forma, & interminatione minaci largitur maius beneficium, cum punire misseretur. *Quod Deus dum castigat* de beneficijs præparandis cogitat. Ind. de Sept. sub 35.

9 *Regina austri, &c. Viri Niniuitæ, &c.* Exemplo vnius improperat inpœnitentiam alterius, & excellentioris prædicatoris æstimationem post habitam inferioris, & ministri. Quod non sit excellentior admissus. *Quod Iudæorum firma* perfidia posset inducere pudorem, & confusionem Christianis desua infirma, & tepida fide. Ind. de Sept. sub. 83.

Feria. 6. post primam. *Erat dies festus Iudæorum, &c. Est autem Hierosolymis probatica piscina, & erat homo ibi* 38. *annos habens in infirmitate sua.* Ioan. 5.

1 *Erat dies festus Iudæorum, & ascendit Iesus Hierosolymam, erat illi probatica piscina, &c. in his erat multitudo langentium.* Clementia Christi diem festiuam habebat nullam aliam, quam visitatio pauperum, visitat non visitatos. Ibi cor, vbi pauperes, vbi languentiũ

mul-

multitudo ibi præsentia, visitat vt sanet, ibi inuenitur, vbi languentium domicilium. *Quod inuenitur Christus, potius in hospitali* pauperum, Xenodochio languentium, quam in aula Regũ, & Principum terræ. Ind. de Christo sub. 46.

2 *Erat autem ibi homo habens* 38. *annos in infirmitate.* Magnus forte peccator, tam diuturna infirmitate detentus, cui sanitati restituto præcauetur reciduum, iam amplius noli peccare. *Quod origo, & causa calamitatum* forte peccatum est, sicut bellorum, quibus præmitur nostra Hispania. Ind. de Sanct. ub 3.

3 *Erat autem ibi homo* 38. *annos habens in infirmitate.* Visitat Christus non visitatum; à memoria hominum abolitum, habet in præsenti memoria, quin obstent peccata, optat sanari. *Quod Deus habet in memoria* perditissimos, & optat illorum salutem. Indic. de Christo sub. 4.

4 *Hunc cum vidisset Iesus iacentem, & cognouisset, quia iam multum tempus haberet dixit vis sanus fieri?* Angelus viderat 38. annis iacentem, dum mouebat aquam piscinæ, introducitur à nullo, relinquitur iacens in infirmitate sine salute, vix inspicitur à Christo cum illi offert in voluntate salutem. Minister adhuc Angelus, non rumpit moras. 38. annorum, Christus optimus Princeps statim ac vidit. *Quod Dei incuria ad nostra incrementa* plus valet, quam solicitudo creata humana, vel Angelica Ind. de Fuga sub. 32.

5 *Hunc cum vidisset dixit, vis sanus fieri?* Christus non expectauit instantem petitionem salutis, sed prævenit offerrens illam, ea est illius propensio ad salutem, quod sit impaciens moræ petionis. *Quod clementia Dei*, solet prævenire pias petitiones suorum indulgendo ante petitionem vocalem. Ind. de Christo sub 53.

6 *Hunc cum vidisset iacentem.* Ipsa ostensio infirmitatis vissa, fuit Deo pro petione salutis, in priori ad orationẽ vocalem. *Quod Deo visio necessitatis* est pro instanti petione in ordine ad subueniẽdum. Ind. de Sanct. sub. 32.

7 *Respondit languidus, Domine hominem non habeo, vt cum turbata fuerit aqua mittat me in piscinam.* Destitutum ope amicorum, sanguine, & patria vnitorum Christus offert opem amici, consanguinei, contarranei, iam homo effectus, habes hominem Deum amicum contarraneum. O improperandum valde. *Quod cum sit debitus* cordialis affectus opes, & subsidium sanguine, & patria coniunctis non datur subsidium, sed non semel repulsa. Ind. se Sept. sub. 79.

8 *Triginta, & octo annos in infirmitate.* In desertione omnium amicorum, & ope hominum destitutum in desperata salute opem,

&

& salutem largitur Christus. *Quod Deus in maiori angustia*, & extremo conflictu accurrit validiori subsidio. Ind. de Sams. sub. 17.

9 *Dum venio ego, alius ante me descendit.* Diligentiæ amica salus, & optima fœlicitas, atque fortuna. Nec mirum. Diligentia vtilis, otium in vtile, & odiosum. *Quod in negotio salutis vult Deus* adhiberi diligentiam, & abijci inertiam & desidiam. Ind. De Christo sub. 6.

10 *Ecce iam sanus factus es, iam amplius noli peccare ne tibi deterius, aliquid contingat.* Reduxit ad se inueteratum peccatorem molestijs infirmitatis. 38 annorum, præcauet reciduum, ne duriori, & diuturniori suplicio puniatur. *Quod Deus erumnis* grauat, atque molestijs à se fugitiuos, vt reducat, & reductos præuenit verbis minacibus, ne recedant Ind. de Sams. sub 51.

Dominica 2. *Assumpsit Iesus Petrum, Iacobum, & Ioannem fratrem eius, & ducit illos in montem excelsum seorsum, & transfiguratus est ante eos,* Matth. 17.

1 *Assumpsit Iesus Petrum, Iacobum, & Ioannem, &c. In montem excelsum seorsum, & transfiguratus est ante eos.* Christus ad gloriam assumit comites, qui solus graditur ad passiones, & labores. Si ad labores ducerentur esset tollerabilis inertia, & tepiditas, sed assumi quasi coactos, & compulsos ad gloriæ splendores insultum. & reprehensibile, non nisi coactos, qui auidi, & anxij deberent anhelare ad gloriam. *Quod pro assequenda gloria* omnia terrena facile deflerenda, adhuc cum onere ascendendi, comitando per semitam crucis, & laborum. Quod cauendum, nam amatores terrestrium facile faciunt iacturam cœlestium. Indic. de Fuga sub. 28. & de Christo sub. 39.

2 *Transfiguratus est ante eos, resplenduit facies, sicut sol, vestimenta eius sicut nix, nubes lucida, &c.* Gloria animæ redundat in gloriam, & totes corporis, illustrat faciem, corpus, vestimenta, nubem, oculos assistentium. O magnum bonum supra modum gloria cœlestis, quæ redundans amplissime implet omnia, illustrat cuncta, optanda cœlestis, despicienda terrestris. *Quod gloria cœlestis* implet appetitum, pellit anxietatem, satiat omnia, cum terrestris vix pugillum impleat. Ind. de Christo sub. 41.

3 *Transfiguratus est ante eos.* Glorioſſa methamorphosis, manens idem in persona, induit Solis splẽdoris, niuis candores, imo nubem fulgoribus. & assistentes reddidit lętabundos, sibi, & alijs superabundans, præsentia sat ad omnia. *Quod Dei sola præsentia* sat ad ditanta, & fœlicitanda omnia. Ind. de Christo sub. 16.

4 *Transf-*

4 *Transfiguratus est ante eos.* Gloriã animę, quæ suo opte pondere redundaret in gloriã corporis cohibuit, non sine miraculo diffussam breui tempore in corpus, quid mirum? Si in præsenti vita. *Quod gloria Dei* in præsenti vita est breuis, & momentanea, quæri debet, quæ in futura est perpetuo duratura, Ind. de Samſ. sub. 36.

5 *Tunc Petrus dixit ad Iesum, bonum est nos hic esse, si vis faciamus tria tabernacula tibi vnum, Moysi vnum. Et Eliæ vnum.* O Petri bona indoles more optimi priuati Regis, qui Regem communem multis, non arrogat, ſibi soli, vir perfectus, qui Deum quem habet in corde vult communi cari cæteris opere, nescius potuit dicere, sed nõ probatur ambitioſſus, inuidus, auarus. *Quod ambitio* auida ſui non patitur lucrũ, imo nec memoriã cæterorũ Ind. de Chriſto sub 37.

6 *Ante eos.* Tres solos ex discipulis fœlicitauit gloria, cæteri ad montis radicem sine illa fœlicitate manent, forte ne cũ illis fœlicitaretur Iudas, manent omnes exortes. *Quod fugienda, & cauenda est* societas cum impijs, ne ob illorum societatem excludamur à gloria Ind. de Chriſto sub. 53.

7 *Decendentibus dixit visionem, quam vidistis nemini dixeritis, &c.* Secretioribus ſuis oſtendit visiouem, & indicit labijs ſilentium, ad exemplum viri ſpiritualis, ne publicet diuinos fauores, ſibi in oratione conceſſos. *Quod fugienda est innanis gloria,* ex noſtris operibus &c. Ind. de Samſ. sub. 15. & 30.

Feria. 4. poſt 2. *Ecce ascendimus Hierosolymam.* Matth. 20.

1 Summi debet ex Dominica quinquageſimæ.

Feria 6. poſt 2. *Homo quidam erat Pater familias, qui plantauit vineam, &c.* Matth. 21.

1 *Homo erat pater familias, qui plantauit vineã, &c.* Dominus erat vineæ, & ſeruorum, ſed intitulari voluit Pater, quia exigere voluerat ſpontanea obſequia filiorum, non inuita, & coacta mancipiorum, dum incumbebat potius illorum bono, quã ſuo. *Quod potius meretur* nomen patris, ita incumbens, &c. Ind. de Samſ. sub. 35.

2 *Locauit eam agricolis.* Reddituarijs, vt iuxta inſtitutũ, & profeſsionẽ reddant reditus, & fructus annuos. Quod vult Deus vnũquemque operari iuxta legẽ, & penſionẽ ſui ſtatus, vt ſtatui reſpõdeãt opera. *Quod debet nomen* reſpondere operibus. Ind. de Samſ. sub 11.

3 *Cum venisset fructuũ, &c. misit seruos, &c.* Vt exigerent annuos reditus, ſed dimiſſerunt vacuos præ auaritia, & iniuſtitia, & immerito. *Quod Deus confert* talenta, & capitalia ad negociandum, & ea eſt ſeruorum cupiditas, auaritia, & iniuſtitia, vt ſibi capitale, & fructus arrogent, & nil lucri Domino contribuatur. Ind. de Samſ. sub. 30.

4 *Cum*

4 *Cum tempus fructuum appropinquasset, &c.* Misit. Merito sibi exquirit suæ vineæ fructus, sui capitalis redditus, licet industria similiter agricolarum sint adquisiti, iure Dominij omnia sunt sua. *Quod Deo dicanda*, & reddenda non solum quæ ab eo sunt seorsim, sed quæ eius ope industria nostra, & diligencia sunt comparata. Indic. de Samſ. sub. 15. & 51.

5 *Cum tempus fructuum appropinquasset, misit seruos, &c. aliũ occiderunt, alium lapidauerunt, &c.* Plantauit vineã, locauit agricolis, vt sibi, & ipsis consulerent, & accidit proberuium, quod qui seminat beneficia colligit iniurias, & ofensas, exhibituri fructus Domino reddiderunt lapides, mortem, &c. *Quod Deus largitus* est hominibus ingentes diuitias, vt in obsequiũ Dei conuerterentur, & inuersa sunt in iniurias, & offensas. Ind. de Christo sub. 12. & 16.

6 *Nouissimè misit filium dicens, verebuntur forte filium meum, &c. Hic est hæres, &c. occidamus, & habebimus, &c.* Hæredem vnigenitũ agnoscunt, & cupiunt occisione subrogari loco hæredis? deliriũ. In mercenario ius hæredis adrogari, cũ satius iure mercenario. *Quod conquirenda est* beatitudo studio bonorum operum, dependenter à meritis, non iure hæreditario. Ind. de Sept. sub 35.

7 *Misit filium, &c. Hic est heres, &c. occidamus, & habebimus, &c.* Vnigenitũ heredem agnoscunt, & spe lucri occidunt, agnoscunt dignitatem, & inferunt irreuerentiam petulantia, o scelus. *Quod ea est audacia* passionis vehementis, vt audeat in Deum cognitum cupiditate boni temporalis. Ind. de Christo sub. 37.

8 *Quid faciet Dominus agricolis illis, & malos male perdet, &c.* Dissimulauit ordinaria scelera, & offensas in seruos priores, & lapidatos, & interfectos, sed cum scelus occisionis vnigeniti audit ira inflamatur ad vindictam. *Quod ordinaria scelera* dissimulat Deus crimen læsæ maiestatis suæ, & vnigeniti extrema calamitate castigat. Ind. de Samſ. sub. 3.

9 *Malos male perdet, & vineam suam locabit alijs, &c.* Assumit seuerum vindicẽ pro occisione vnigeniti sui, perdens, sine dolore extrema calamitate. *Quod Christicidium* adeo est immane scelus, vt nõ satis puniatur, nisi extremo suplicio. Desertione finali in perfidia Iudaica, & vocatione gentium ad fidem, & salutem. Ind. de Septuagint. sub 79.

Dominica 3. *Erat Iesus eijciens Dæmonium, & illud erat mutũ.* Lucę 11.

1 *Erat Iesus eijciens Dæmonium.* Demoniũ erat in homine, vt in castro munito, vallato, clausis vndiq; portis, sensibus, visu, auditu, lingua, &c. Lucas dicit mutũ, alius cæcũ, ali⁹ surdũ, Xpus erat etiã inua-

inuasurus quasi pedetentim, data opera, ex proposito, & decreto, erat opus ingens, & arduum secundum se, exigit vigilem industriã grande opus, & studio diligenti, & constanti, & ad comparandũ. Ita ad exemplum suorum. *Quod Magistri* tenentur indicare viam salutis & doctrinam contra prauos mores pedetenti assistentia, nõ transeunti, & casuali. Ind. de Christo sub. 46. & 6.

2 *Erat Iesus eiiciens, &c. Et illud erat mutum.* Deus largitus erat plures sensus internos, & externos, vt homo inquireret salutem, Dæmon zoilus, æmulus obstruxit; vt nullus esset aditus ad salutẽ. Christus referat aditus interius, & exterius, restituendo sensus, ille obstruxit ad ruinam, hic astruxit ad reparationem. *Quòd Deus vrget* salutem nõstram, non solum per internas illustrationes, sed per externas protectiones, repellendo noxia, applicando proficua, remouendo noxium Dæmonem, admouẽdo sensus proficuos. Ind. de Christo sub. 26.

3 *Erat mutum.* Erat forte mutus grauis peccator, & per sensus per quos peccauit punitur, & statim ac amissa est gratia in anima per peccatum, amissi etiam sunt sensus externi ad salutem. *Quod non semel priuatum gratia* animæ, deserit valor corporis ad ægregia facinora. Ind. de Sams. sub. 38.

4 *Erat Iesus eiiciens Dæmonium, &c.* Christus se ostendit clemẽs, & liberalis supra modum, largitur sensus, non solum, non petenti, sed nec habenti linguam adpetendum, in eo est prægrandis liberalitas, ordinaria largiri quærenti, & petenti: rara, nec quærenti, nec petenti, nec habenti linguam ad promendam petitionẽ. *Quod immensa liberalitas* Dei ostenditur in copia, diuturnitate, & alijs generosis qualitatibus. Ind. de Sams. sub 33.

5 *Erat Iesus eiiciens Dæmonium, & illud erat mutum, cæcum, surdũ.* Ab effectibus causatis Dæmon cæcus surdus, & mutus, per methonimiam Deus autem erat viuificaturus, effectus illi à Dæmone, nõ à Deo nisi cogente peccato, Dæmon deordinat sensus ad ruinam Christus ordinat ad ædificationem. *Quod Deus est origo sentalis* vitæ, & ineptum à vita timere mortem, nisi reclamante peccato. Ind. de Sams. sub 10.

6 *Locutus est mutus, & admiratæ sunt turbæ.* Sensus præpediti per Dæmonem, fuerũt expediti per Christum, vt illi dicentur in obsequium, & laudem. *Quod Deus largitus est* hominibus prætiosa, & innumera dona, vt gratus conuertat in obsequium, ingratus autem conuertit in Diaboli cultum. Ind. de Christo sub. 12.

7 *In Beelzebuth Principe Dæmoniorum eiicit Dæmonia.* Miraculum ixre

irrefragabile probat excellentiam virtutis, potestatis Christi conuitiantur calumniam in decoram, quod non virtute sua patratum, sed virtute Principis Dæmoniorum, vt vna sit vtriusque. Christus argute repellit vnitatem virtutis inter vtrumque ex ruina, & desolatione regni Dæmonis, & operum eius, venit enim, vt dissoluantur opera diaboli. Concordia, & vnitas munit Rempublicam, discordia destruit, vbi interitus arguitur, diuisio. *Quòd vnio, & concordia* in Republica, & inter coniugatos studio astruēda, & conseruanda est, & vitanda discordia, ne dissoluatur in ruinam perpetuā. Ind. de fuga sub. 13. & 32.

Feria 4. post 3. *Quare discipuli tui transgrediuntur traditiones seniorum, non lauant manus, cum panem manducant.* Matth. 15.

1 *Quare discipuli tui.* Magistrum improperant, qui conuicium inferunt discipulatui. Christus, & discipuli in eadem causa, in eadē alea suam iniuriam facile tollararet, discipulorum excutit acerbe. *Quòd Christus dissimulat* calumnias, sed contra discipulos excutit acerbe. Ind. de Sams. sub. 3.

2 *Quare discipuli tui, &c. & quare, & vos.* Magister Apostolorum excutit, & increpat magistros synagogæ. Christus intimo dolore sentit conuitium contra innocentem, & repellit reprehensione. *Quò magistratus* non potest pro arbitrio innocentem honore, fama, bonis, aut vita mulctare. Ind. de Sams. sub. 20.

3 *Quare discipuli tui, &c. & non enim lauant manus, &c.* Non vident mensam, nec si labant, aut nō labāt, in absentia præsumptione inflati, sciunt quod ignorant, & ignorant virtutes, & miracula, quæ sciunt ad oculum, ignorant operationem bonam, quam vident, & sciunt indecora, quæ non vident, & præsumunt, ex qua causa impingunt acriter improperia, & cōuitia. *Quòd sunt cohibenda* iudicia temeraria eorum, quæ fugiunt scientiam nostram. Ind. de fuga sub 9. & ex sola opinione, aut præsumptione vxor innocens non est defamanda, aut occidenda. Ind. de Sams. sub. 21.

4 *Quare discipuli, &c. quare, & vos, &c.* Christus defendit innocētes discipulos, & increpat peccatores accusatores prælatus mitis in bonos, acerbus debet esse in malos. *Quòd dicans Deo obsequium* in sacello deuincit Deum ad indulgenda beneficia, qui vitio prophanat ad infligenda supplicia. Ind. de Sept. sub. 89.

Quare discipuli, &c. quare, & vos, &c. trāsgredimini mādata Dei, &c. Peccatores increpant innocentes, & *debet esse immunis à peccato*, qui reprehendit, & improperat peccata, sicut magister immunis ob ignorantia, & prauis moribus, qui instruit in sapientia, & bonis mo-

ribus discipulos quin instructus debet esse sapientia,& virtutibus, qui dirigit alios in salutem. Ind. de Christo sub. 30.

6 *Quare & vos transgredimini mandata Dei propter traditiones vestras.* Magister Christus supremus increpat libere inferiores Scribas,& Phariseos,ad exẽplum,quòd magistri,& concionatores debent intrepide increpare peccata contra præcepta Dei. *Quòd præcepta Dei intimata* sunt diligenter obedientia exequenda. Ind. de fuga sub. 4. *Quòd gratissimum* Deo virum inuigilare de familia coniugis,& filiorum obedientia. Ibidem.

7 *Transgrediuntur traditiones seniorũ.* Studio tamen,& diligentia obseruant præcepta noua Euangelia,exhibendo exẽplum imitandum à vobis transgressoribus, cum non tam curandum de sequelâ antiquæ ceremoniæ,& doctrinæ, quam de instruendo nouam,dignam sequela. *Quod dissimilitudo, & inæqualitas* inter contemporaneos alit lites,& discordias in similibus. Ind. de Sams. sub. 13.

8 *Quare discipuli tui,&c. quare, & vos transgredimini mandata Dei.* Aduentus iste ad calumniandam vitam Apostolorum cum discrimine itineris,expensarum,& cõmoditatum,non instigatur,aut mouetur zelo Dei. Nõ colit legislatorem,qui violat præcepta eius. O insolens scelus iam sæpe solitum. *Quod non parcitur labori,* & expensis ad diffamandos bene opinatos, sicut non parcendum ad exhibẽdum obsequium Deo. Ind. de Christo sub. 6.

Feria 6. post 3. *Venit Iesus in ciuitatem Samariæ, &c. fatigatus ex itinere sedebat sic supra fontem, &c. Venit mulier Samaritana, &c.* Ioann. 4.

1 *Fatigatus ex itinere sedebat sic supra fontem.* Non tam fatigatus ex sudore,& labore itineris,quam ex anxietate. & cupiditate reducẽdi peccatricẽ. Incipit,& tunc incipit quiescere. Conuersio vnius ita æstimatur,ac valor plurium, nec parcit anxieti pro vna. *Quòd non parendum* labori opibus sumptibus,vt subsistat recognitio, & obsequium Dei. Ind. de Christo sub. 6.

2 *Fatigatus.* Grande opus,& arduum. Reductio peccatricis lasciuæ immersæ voluptatibus exigit fatigationẽ, & diligentiam, ea est rei difficultas. *Quòd facilis accessus* ad libidinem, sed difficilis regressus ab ea. facilis accessus ad feminam,difficilis,& tardus regressus. Ind. de Sams. sub. 36.

3 *Venit mulier quædã.* Publica,nota omnibus, scandalũ ciuitatis, & sine nomine,meretrix abiectissima, & vilissima ciuitatis supellex. *Quòd fœmina lasciua* est instrumẽtũ captiosum ad capiẽdos amãtes Laqueus veneratoris æmula diaboli. Ind. de Sams. sub 40.

4 *Venit haurire aquã.* Hydria. Mirum publicã deuenisse ad extremam

mam inopiã, cum amantium copia, vt in persona propria veniret in solis ardore, nec superesset ancillula ad hauriẽdã aquã. Ornamẽta forte fœminea, largissimi sumptus, immodicæ delitiæ, amatorũ diuitias, & donatiua ad extremam inopiam redegerant. *Quòd fœmina lasciua est ruina* opum familiæ, ciuitatis, & totius regni, ignis omnia consumens. Ind. de Sams. sub. 26. & sub. 40. & 36.

5 *Mulier da mihi bibere.* Christus introduxit colloquiũ cum meretrice, vt mirũ inferret Apostolis, & merito, nã ille solus ingressus est colloquiũ immunis à culpa, in imminẽti periculo fœminæ, consultius alijs fuga. *Quòd fugiẽdi sunt aspectus*, & colloquia cum fœmina eleganti præsertim lasciua, nam vix Angelica puritas euasit immunis. Ind. de Sams. sub. 13.

6 *Mulier da mihi bibere, &c. quomodo tu petis à me, &c.* Vt donum distrahat immiscet astute, & calide interdictũ colloquiũ inter Iudæos, & Samaritanos. *Quòd ingeniũ muliebre* à natiuitate propẽsum, in fictiones, & fallatias, vt nec lacrymis fidendũ. Ind. de Sãs. sub. 17

7. *O mulier si scires donũ Dei, & quis est qui petit, &c. tu petũsses, &c. & daret tibi aquã viuã.* Hęc putei extinguit sitim ad tẽpus, viua autem in æternum. Domineda, ne veniam huc haurire, &c. Christus prudenter disponebat gradatim donis, quam agnouit donorum auidam. apte. *Quòd fœminæ facile adducuntur*, & vincũtur lenocinijs, & donis vtilitatis, & commoditatis. Ind. de Sams. sub. 19.

8 *Voca virũ tuũ, &c. non habeo, &c. bene. Quinque habuisti, & hic, quẽ habes nõ est vir tuus.* Stupẽdũ cõcupiscẽtiã fœminæ nõ satiatã tot viris, vt amitum nõ haberet, quin potius à primo in cęteros increscebat propẽsio. Frequẽs sanè. *Quòd incõtinẽtia semel gustata* ingerit propẽsionẽ in relapsũ, nec reddit cautos ad vitandũ. Ind. de Sãs. sub. 40

9 *Hic quẽ habes nõ est vir tuus.* Propriũ habẽs nõ patitur digressus ad alios, quę nullũ, inde, vnde digrediatur ad omnes, & nulli fidẽ acquiescat. *Quòd fides fœminæ* in virũ rara auis in terra, & firmitas prodigiosa, quę spe facile nõ sit flexibilis in plures. Iud. de Sãs. sub. 18

Dominica 4. *Abiit Iesus trans mare Galileæ, quod est Tyberiadis, & sequebatur eum multitudo magna.* Ioan. 6.

1 *Multitudo magna.* Adducta post Christũ nõ tam auida doctrinę, quã vtilitate. Signa, & miracula erga infirmos itineris lucrũ scop⁹. Christo magna multitudo, magnũ gaudiũ, festiuitas solemnis, non propter magnũ plausũ, sed propter magnã, & aptissimã occasionẽ diffundẽdi liberalitatẽ, & beneficia, nõ vni soli, sed multis *Quòd liberalitas Dei* eò procliuis, & propẽsa ad beneficiẽdũ, quod gaudet cũ donat, nõ in limitatione, & inopia, sed amplitudine, & copia, nõ vni, sed multis. Ind. de Sams. sub 33.

2 Se-

2 Sequebatur multitudo magna immemor omninō præuenien di alimenta, primo solita in festiuis, sed incuria non inanis sed pro uida, cum adest cuta fidendi in Christo, in quo omnia. *Quòd ille agit vtilius* negotium, qui sequitur improuide, & cæcè confidentiam Dei. Ind. de Christo sub. 40.

3 *Multitudo magna, quæ venit ad eum.* Inopum, & egenorum ca- terua in nomine Dei egestate exigens eleemosinam, prænuntium certissimum futuræ ingentis copiæ. *Quòd pauperi exibenti Christum* sunt largienda plurima donatiua cumulatissime. Dum erogantur, a gentur, vt superfluant, vt Christo Magi non singula, sed terna. Ind. de Christo sub. 50.

4 *Cū vidisset quòd multitudo magna venit ad eum, dixit ad Philippū, vnde ememus panes, vt manducent hi?* Gratum Deo valde Principem, & superiorem inuigilare, non tam de priuato bono, quam de pu- blico, & communi suorum. *Quòd Angeli* administratorium obse- quium, tunc magis placet Deo, cum accuratius incumbit saluti, vtilitati, & commoditati hominum sibi commissorum. Ind. de Sams. sub. 16.

5 *Est puer vnus hic, qui habet quinque panes hordeaceos, & duos pis- ces, sed quid inter tantos?* Christo inclinato, & propenso ad subsidiū, Philippus se opponit parcitate quinque panum. *Quòd Regi deesse* non solet priuatus collatoralis aulicus, qui consilio, & adula- tione cohibeat Regem à propensione beneficiendi suis. Ind. de Christo sub. 28.

6 *Dixit ad Philippum, vnde, &c.* Consulit Apostolos, viros san- ctos, spirituales, cum sapientia sua nouisset, quid esset facturus, ad exemplum, vt superioris scioli repellat præsumptionem, non inquirentis consilia sapientum. *Quòd adhibendi sunt* consultores præsertim in graui negotio, non aulici adulatores, sed viri Apostō lici, sapientes, & spirituales, & cauendi terrestres, vt admittantur cœlestes. Ind. de Christo sub. 39.

7 *Accepit ergo Iesus panes quinque.* Non vt iuuaretur ad multi- plicationem, cum esset patrandum miraculum æque cum illis, ac sine illis. Reddit ex quinque, alimenta pro quinque millia, in exemplum Regum, & vasallorum. *Quòd Regi indigenti* tenen- tur subditi subuenire rebus proprijs, & Rex conuertere in pu- blicam, & communem vtilitatem vasallorum. Ind. de Sams. sub. 20.

8 *Accepit ergo Iesus panes, & distribuit discumbentibus, quan- tum volebant.* In manu hominum quinque panes, quinque homi-

hominem alimenta, in manu Christi, ò mira diuinæ omnipotentiæ liberalitas, ò rarum miraculum, multiplicantur ad quinque millia hominum satianda, quantum voluit appetitus, vt superfluerent ad alios. *Omnipotentia Dei habilis ad omnia*, ex nihilo aliquid, olim, nunc impossibilia naturæ reddit possibilia, elicit ex sterilitate fœcunditatem, ex inopia copiam, ex infirmitate salutem. Ind. de Sams. sub. 4.

9 *Colligite, quæ superauerunt fragmenta, &c. & collegerunt duodecim cophinos ex quinque panibus hordeaceis.* In manu hominum vix tetrena ad quinque, in manu Christi cœlestis ad quinque millia abunde satianda, in aliam naturam, quasi inuersa cœlestem. *Quòd bona terrestria* in parcitate vix sinum implent, assiora cœlestia implent omnia quantum appetit auiditas. Ind. de Christo sub. 41.

Feria 4. post 4. *Præteriens Iesus vidit hominem cœcum à natiuitate.* Ioann. 9.

1 *Præteriens Iesus, vidit cœcum.* Aspectus Dei fauorabilis, & origo fontalis beneficiorum, vidit cœcum non reliquit, sed donauit visum. Visio Dei est medicatiua necessitatis, quia vidit cœcum, cœcus videt, minabantur lapides à tergo, sed ea est pietas, & propensio magnifica, quòd cum sibi deberet consulere, consulit cœco, vt nec gressum transigeret vellocem, qui non esset remedium indigentis, fugiendo lapides generosa cum sui periculo dat visum indigenti. *Quòd generosi animi est*, & excelsi pro vita, & salute hominis exponere periculo propriam. Ind. de Sams. sub. 27. & 51.

2 *Vidit cœcum.* Ex aspecta benuolo miseri instigatur ad largiendum visum. Ex primo beneficio non de obligatur, sed cogitur ad secundum. *Quòd Deus non semel tantum*, sed semel, & iterum viget bonum nostrum, dat initium, & prosequitur in finem. Ind. de Christo sub. 26. & 40.

3 *Vidit cœcum à natiuitate.* Desperata infirmitas à natura, priuatus homo sensibus, inuersus in alteram naturam quasi non accidenti superaddito, medicina supra naturæ impetum miraculosa, cum sensus visus sit valde necessarius ad peragendam vitam. *Quod Deus ne deficiat in necessarijs* naturæ, non dubitat edere miraculum, vbi deficiunt naturæ subsidia. Ind. de Sams. sub. 32.

4 *Cœcum à natiuitate.* Insanum valde, si priuationem putaret visum, cum esset ingenita à natiuitate, multi insaniunt, se in insania frenitidem, imaginantes sanæ mentis iudicium, multi stulte suasi se scientiam habere, cum ignorantia sint valde onusti. *Quòd*

non fit ita abominabilis directa cœcitas, quam reflexa, quâ reddunt se certos se habere fidem linceam, qui perfidiam Iudaicam de aduentu Meſiæ. Ind. de ſeptuag. ſub. 83.

5 *Quis peccauit, &c. Vt cæcus naſceretur.* Vident priuatum viſu corporali, & coniecturis præſummunt etiam ſpirituali, gratia. Si vidiſſent cœcitatem animæ illatione legitima inferrent cœcitatem corporis, nam oppoſitum rarum, hoc ſolitum. *Quòd rarum amiſſa gratia animæ*, non amiſſam fortitudinem corporis. Ind. de Samſ. ſub. 38.

6 *Quis peccauit hic, aut parentes, &c.* Magna exaggeratio in propenſione ad peccandum, vt ante natiuitatem incideret in peccatum, quod puniretur cœcitate, natiuitati coæua, Deo valde diſpliceret, vt ſibi ſolatium in recompenſationem, quoſdam *ita obſequi præceptis, vt anticipent* ad initium vitæ. Ind. de Samſ. ſub. 6.

7 *Quis peccauit*, vt cœcus naſceretur. Chriſtus egre tulit Apoſtolos occulatos inſultaſſe in miſſerum non occulatum, ſed cœcum, & afflictum, qui potius parcend s, & miſſerendus. *Quòd eſt inhumanitas* victis inſultare victores, famelicis ſaturatos, &c. Iud. de Samſ. ſub. 53.

8 *Fecit lutum, & liniuit oculos cœci, &c.* O res ſtupenda per inepta, & improportionata viſum reſtituit. Per lutum aptum ad priuandum viſu, induit viſum, non luto, ſed Deo gloria. *Quòd diuina omnipotentia* mira, & ægregia operatur per inſtrumenta inepta, vt ſibi arroget facinoris gloriam. Ind. de Chriſto ſub. 3.

9 *Fecit lutum, vt liniuit oculos cœci.* Aptior medicina, aut collirium vtile, ſed non applicat, non fidit illis, quod ſuæ virtuti. *Quòd non eget medicamentis*, ſed minimis, & ineptis aggreditur, & aſſequitur magna. Ind. de Samſ. ſub. 28.

10 *Vade ad natatoria Siloe, &c. Laua.* Aſperſus luto in facie, & occulis mittitur ad Siloe, expoſitus illuſioni, & irriſioni, contra auctoritatem honorificam, ſed paret cœce prudens. *Quòd in negotio ſalutis*, non eſt nimium inuigilandum in honore, ſed obediendum cœce, ſine ingenio, & diſquiſitione. Ind. de Chriſto ſub. 40.

11 *Vade ad natatoria Siloe.* Vſu iam potitus, vt referat gloriam Deo, imò viſum reſtitutum. *Quòd ſpolia virtute Dei* in bello comparata ſunt Deo in gloriam referenda. Ind. de Samſ. ſub. 53.

Feria 6. poſt 4. *Erat quidam languens Lazarus à Bethania.* Ioannis. 11.

1 *Ecce quem amas infirmatur.* Dolentes sorores deflerunt Christo amanti triste nuntium, doloris plenum. Potuit amor Dei se, & illos eximere à perferēdis doloribus, sed patitur, vt à terrestribus eleuet ad cœlestia. *Quòd nec familia* seruorum Dei, est immunis ab anxietate, doloribus, & molestijs præsentis vitæ. Ind. de fuga, sub. 8.

2 *Ecce quem amas infirmatur.* Infirmitas Christum tangit in corde, quæ infirmum in corpore. Illius est cura medendi, qui familiā sibi deuotam audit anxiari. *Quòd ille cui incumbit* cura familiæ tenetur, vt sibi consulat, arte procurare proficua, & auertere noxia. Ind. de fuga, sub. 11.

3 *Ecce quem amas, &c. Vt audiuit, mansit duobus diebus, &c.* In mora periculum, nec accelerat profectum, permittit infirmitatem grauari ad extremum, nec mirum. Deo æque facile infirmo salutem, & defuncto vitam indulgere. *Quòd Deus sæpe minori* cura, ac minimis agreditur, & assequitur magna, & ardua. Ind. de Sams. sub. 28.

4 *Ecce quem amas, &c. Vt audiuit mansit in eodem loco duobus diebus.* Non statim solicite dedit subsidiū, sed studio distulit in angustiā extremam, vt *in maiori præsura* infirmitatis validiori (vt assolet) accurreret subsidio. Ind. de Sams. sub. 27.

5 *Vt audiuit, &c. Mansit duobus diebus.* Certus quidem de salute animæ, curauit parum de infirmitate corporis, sed permisit stillo ordinario. *Quòd vbi est certa salus animæ*, sinit corporis geri iuxta stillum ordinarium naturæ. Ind. de Sams. sub. 56.

6 *Eamus in Iudæam, &c. quærebant te lapidare, & iterum vadis illuc? &c. & Lazarus mortuus est, vado, &c.* Si proficiscitur exponit vitam suam periculo, si non amici. Zelus, amor, & gratitudo spernunt pericula retardantia, attendunt, & inquirunt motiua perurgentia, magnus amor, ingens zelus amici. *Quòd cum iactura vitæ*, & temporalium inuigilandū de obsequio Dei, amici vita, & gratitudine. Ind. de Sams. sub. 27. de Christo sub. 40. de Fuga sub. 11.

7 *Domine si fuisses hic frater meus non fuisset mortuus, resurget frater tuus.* Christus differte increpat, & improperat Martham, toties sibi appropriare fratrem, qui Dei potiu-suppellex, quam illius. Tempera lacrymas, non abstulit à te tuum, qui recuperauit proprium. *Quòd lacrymæ sunt temperandæ*, cum Deus rapit ad se parentes, consanguineos, amicos, scientes, quod non abstulit te à tua, sed tibi mutuata ad tempus recuperauit. Ind. de Sam. sub. 67.

8 *Vadit ad monumentum, vt ploret ibi, &c. Iesus ergo, vt vidit eam plorantem, & Iudæos, qui cum ea venerant, infremuit spiritu, &c. Lacrymatus Iesus, &c. Ecce quomodo amabat eum, &c.* Christus comitatur suis plorantium lacrymas, non solum, quia reuocaturus erat ad vitam periculosam, sed quia amica pietas erga visum, maximum cogebat exibere signũ doloris. *Quòd pium valde, & sanctum* exequias honestas lugere pro defunctis, amicis, consanguineis, parentibus. Ind. de Sam. sub. 57.

9 *Tollite lapidem.* Sepulchrum, aut fouea ostio occultabat defunctum quatriduannum, vult prius tolli lapidem, quam resucitari, videri defunctum, quam restitui ad vitam, intueri ligatum insignijs funeralibus, quam illis solutum, vt ambigat nemo. *Lazare veni foras*, & prodijt qui erat mortuus ligatus pedes, & manus institis, & facies sudario, ò stupendum, & rarum miraculum nullis calumnijs tergiuersabile. *Quòd omnipotentia Dei efficit sua mira*, & rara facinora in circunstantijs, vt conuincant sine tergiuersatione Deum illorum auctorem. Ind. de Sams. sub. 29.

Dominica in passione. *Quis ex vobis arguet me de peccato?* Ioann. 8.

1 *Quis ex vobis arguet me de peccato?* Mira sagacitate Christus innocens increpat peccata Iudæorum, ex vobis peccatoribus iaculari non potest argumentum in innocentiam. Peccatum obstruit os, ne proferatur argumentum contra peccatum. Accusaturus enim immunis debet esse à peccato, vos multi peccatores, ego vnus, sed immunis à peccato, in victoriã, & triumphum. *Quòd plus valet vnus*, quam mille si spiritu Dei sit suffultus. Ind. de Sams. sub. 29.

2 *Quis ex vobis arguet me.* Vnus audet in multos, sed innocens in peccatores. Audax innocentia irruit in offensores & intrepide, timet nullum, vincit omnes. *Quòd ars, industria, & sapientia* solet præstare viribus, & multitudini. Inde de Sams. sub. 25.

3 *Qui ex vobis arguet me.* Homines estis linceis oculis ad alienos defectus, vbi sunt, vobis non occulti, ego sapientia superior conficiam argumenta, quæ vestram æmulationem, & præsumptionem ita conuincant, vt nec muriri audeatis silentio. *Quòd Christus Magister* supra Magistros, qui summa sapientia ligat inimicos argumentis, vt non supersit replica. Ind. de Samson. sub. 25.

4 *Quis ex vobis arguet me.* Emphatica increpatio, quis ex vobis peccatoribus innocentem, puris hominibus Deum impeccabilem, diuina natura prædeterminatum ad non peccandum, increpatio

aspe-

aſpera, nec mirum contra cæcucientes in diuinitatem *Quod Chriſtus* blande ſolet increpare ordinaria peccata, ſed crimen læſæ Deitatis acerbè. Ind. de Samſ. ſub. 3.

5 *Si veritatem dico vobis, quare, &c.* Nobiles, & generoſos decet veritas, dedecet enim nobilem dicere non verum, pronuntiare mẽ datium, ignominioſi, & viles non admittunt veritatem, ſed acquieſcunt mendatio, poſsito quod perfidia veſtra ſuadet difficiliora, imo mendatia, quare ex ipſo ore veritatis, non ſuſcipitis facilia, & vera de Meſiæ aduentu, & eius Diuinitate? perfidia, qua imbuti eſtis infert reſiſtentiam, non auditis, quia ex Deo non eſtis. *Quod perfidia Iudaica* incrementa cæcitatis, & obſtinationis aſſumit, vt lumini naturali, & ſcripturarum doctrinæ præcluſerit aditum. Ind. de Septuag. ſub 67.

6 *Si veritatem dico vobis, quare vos, non creditis.* Nec vnus eorum liber eſt à perfidia, omnes illa ſunt infecti, nec mirum, *quia infidelitas Iudaica ab initio eſt*, ægritudo tabifica, & contagioſa, aqua vix vnus, aut altet ad fidem Chriſti reuocatur. Indic. de Septuag. ſub. 33.

7 *Nonne benedicimus nos, quia Samaritanus es, & Dæmonium habe?* O perfidia omnium abominabilis ſupra cæcam, & obſtinatam, directa petulantior reflexa. *Quod non ſit, ita abominabilis perfidia cæca* Iudæorum, ac reflexa, quæ reddit certos habere fidem lineam, cũ habant perfidiam cæcam, habere ſcientiam, cum habent ignorantiam. Spem Meſiæ, cum ſpei non ſuperſit locus. Indic. de Septuag. ſub. 83.

8 *Samaritanus es, & Dæmonium habes.* Cum eſſet ſuæ patriæ, & nationis aſperè increpant, vt extraneum, ſi eſſet extraneus forte mitius tractarent, plauderent, ſed quia non, ſed cõciuis. Exacerbitate oritur diſidium perpetuum interminandum inter Chriſtum, & Iudæos. *Quod vnio inter ſanguine*, patria, & profeſsione coniunctos debet foueri ſpeciali cura, & ſtudio, ne diſſoluatur (vt ſolet) in diſcordias perpetuas. Ind. de Sept. ſub. 79.

9 *Ego Dæmonium non habeo, ſed honorifico Patrem meum*, Chriſtus mittis, & blandus præ manſuetudine excutit iniurias ſuas, cum eſſet danda repulſa, vt honorificet Patrem cœleſtem, ad exemplũ. *Quod manſuetudo*, & patientia in præſenti theſaurizat gloriã, & honorem in præſenti, & in futuro. Ind. de Samſ. ſub. 53.

10 *Tulerunt lapides, vt iacererent in eum, Ieſus autem exiuit de tẽplo.* O miſeri lapidibus repellitis Chriſtum, dignas pœnas luetis, non relinquetur in vobis lapis ſuper lapidem, quod non cognouiſtis

uistis visitationem Christi, dedistis repulsam, patiemini perpetuam, & conuentetur ad gentes. *Quòd Deus sui desertores* pro meritis deseret in fine m. Ind. de Sept. sub. 67.

Feria 4. Post Dominicam in passione. *Facta sunt Ænœnia in Hierosoymis, & hyems erat, & ambulabat Iesus in porticu Salomonis.* Ioann. 10.

1 *Facta sunt Ænœnia, &c. & hyems erat.* Dedicato templi festiua concursu, & plausu confluentium, si non sub Salomone, quia mense Septembris, sub Zoroabele, quia in hyeme, vt erudite Caiet. Ambulabat in porticu in hyeme exposítus temporis inclemẽtijs. Benigne tollerat, vt erudiat de doctrina cæleſti. Quod nulla Christo festiuior solemnitas, *quam occasio erudiendi in doctrina fidei, & morum*, adhuc cum dispendio commoditatis. Ind, de Christo sub. 40.

2 *Hyems erat, & ambulabat in porticu.* Expositus inclementijs hyemis inatrio, sed parcit dum viam Dei ostendat. *Quòd non parcendum labori*, vt subsistat cognitio veri Dei. Ind. de Christo sub. 6.

3 *Et ambulabat Iesus in templo in porticu Salomonis.* In priuata domo quiescere, & sedere in domo Dei, sistere in via leui morula retrogredi est. *Quod in Dei obsequio adhibenda diligentia*, & abijcienda desidia, vt semper de virtute in virtutem. Indic. de Christo sub. 6.

4 *Ambulabat Iesus in templo in porticu Salomonis.* Non intra templum, sed extra in atrio, porticu, infra septa. Decet enim templũ genuflexio cum timore, & tremore in recognitionem, & reuerentiam Dei, non ambulatio ad exercitamentum, non circulus fabulantium. Indecens iuxta exemplum Christi, quod non intra, sed extra fiendũ. *Quod reuerentia in templis* est adeo debita, quod irreuerentia acriter puniatur. Indic. de Samſ. sub. 156. & de Sept. sub. 89.

5 *Et ambulat Iesus in templo in porticu, &c.* Præsentia Christi in porticu locum sacrabat, & mystice templum constituebat. Porticus sacratur in templum, vbi adest præsentia Christi, porticus templum est. *Quod sola præsentia Dei* sat ad fœlicitandum templum, & vrbem, & absentia ad infœlicitandum. Indic. de Septuag. sub. 89.

6 *Ambulabat Iesus in templo, in porticu Salomonis.* Appellatur nomine Salominis porticus cum fuerit euersum ædificatum à Saloe

mon

mone per Chaldæos, & mirum situm Salomonis subsistere, sed quoniam Salomon ampliſsimum ædificauerat, in hoc memoria Salomonis æternizatur in præmium. *Quod qui dicat Deo templum*, sacellum, aut altare obstringit ad indulgenda ingentia beneficia. Ind. de Septuag. sub 89.

7 *Circumdederunt ergo eum Iudæi, & dicebant, si tu es Christus dic nobis palam. Quousque animam nostram tollis?* Circulus plaudendi magistrũ ostenditur, interior animus calumniandi occultatur, in cruce dubij pendere cruciari, & torqueri manifestant. Animus ponendi in cruce, & torquendi celatur, fingunt se cruciari dubio, qui sine dubio cruciare contendebant. O maligna interrogatio, circulus malignantium, exterius plausum, interius odium occultant. *Quod simulatio semper intendit aliud*, quam demonstrat. Ind. de Christo sub. 30.

8 *Si tu es Christus dic nobis palam.* Magisterium plaudunt, discipulatum demonstrant, fingunt vtrumque. Dic nobis palam, in quo dexteritas magistri? cruciamur obscuritate, vt si dicas manifeste sequemur magistrum. Decet magistros claros, & in eo inducunt ad præcipitium, vt accusſent se Regem esse. *Quod magistri, & doctores tenentur* mentem aperire stillo claro, vt ab omnibus percipiantur. Indic. de Christo sub. 35.

9 *Si tu es Christus dic nobis palam.* Sub laudabili studio dignoscendi Christum virus venenosſum, latens in pectore, instabat ad præcipicium. Quod idem esset dicere se Christum, ac Regem esse, vt ex ipsius ore accusſarent læsæ maiestatis contra Cæsarem. Cognita Iesu instantia maligna, & captioſsa cohibet verbum externum, dixerat missum, & filium Dei, sed cum maligne instant de Christo, reddit pro responsione doctrinam, & miracula, quo menti respondit, & odium illusit, comprehendit sapientes malignos in astucia eorum, Jnam *ingenuæ sagacitatis est cretizare contra cretensem*, & vulpinari contra vulpes. Ind. de Sanct. sub. 37.

10 *Loquor vobis, & non creditis, opera, quæ facio in nomine Patris mei illa testimonium perhibebunt de me.* Late verbis, & operibus indicauerat se esse filium Dei, hæc euidens probatio, vt non opus sit alia fido, sed perfido, nil efficax. *Quod perfidia Iudaica* ea incrementa cæcitatis, & obstinationis assumpsit, vt luci euidenti obcludat aditum. Indic. de Septuag. sub. 67.

Feria

Feria. 6. post Dominicam in passione. *Collegerunt Pontifices, & Pharisæi concilium dicentes, quid facimus, quia hic homo multa signa facit.* Ioann. 11.

1 *Collegerunt Pontifices, & Pharisæi concilium.* Supremi gubernatores ex officio suo incumbere tenebantur in bonum commune Reipublicæ, & conspirant in ruinam, & excidiũ innocentis Christi, malignitas agit præsidentiam in concilio, inuidia, & ambitione consultoribus, quid ab his, nisi ruina, & mors Christi sperari poterat? *Quod nullus supremus* pro sua authoritate, & malignitate potest priuare innocentem bonis, & vita sua. Indic. de Sams. sub. 20.

2 *Collegerunt Concilium Pontifices, &c.* Virtus facile vnit, & conciliat bonos ad bonũ, difficile malos. Ambitio inuidia virtutis æmula facile conspirat malos ad malum ad iniurias, & offensas Christi Ind. de Christo sub 37.

3 *Collegerunt Pontifices, & Pharisæi, &c.* Personæ publicæ ex munere obligatæ prospicere bono communi, & auertere malum commune præ malignitate conspirant in detrndendo Christo, proficuo miraculis, & priuando isto bono ciues contra pondus officij. *Quod ille cui incumbit cura familiæ* tenetur arte, & industria illi procurare proficua, & auertere noxia. Ind. de Fuga sub. 11.

4 *Quia hic homo multa signa facit.* Inuidia præses Concilij inuidos assessores stimulatur in Christum, ac si delictum esset miracula patrasse excellenti potentia in ciuium vtilitatem, quid si inuident excellentiam Christi? *Quòd præstantia virtutis* in aspectu inimicorum acuit inuidiam, æmulationem, & concertationem, & quo maior maiorem. Ind. de Sams. sub. 44.

5 *Quid facimus, quia hic homo multa signa, &c.* Si scelera facinorosi exorbitassent egre ferre Pontifices, æquum, quia ex munere tenebantur propulsare, sed egre ferre signa, & miracula Reipublicę vtilia, arguit imbutos malignitate, inuidia, & ambitione. *Quod ambitio sui auida,* nec patitur famam aliorum. Ind. de Christo sub. 37. *Quòd accensus inuidia* egre fert excellentiam, & dignitatem aliorum. Ind. de Christo sub. 28.

6 *Quid facimus?* In carcerabimus, exulabimus, occidemus? *Nil intentatum relinquunt,* nullum non lapidem mouent, ambitio impellit ad omnia, vt sola regnet. Ind. de Fuga sub. 9.

7 *Quid facimus?* Magistratus, & gubernatores plures, quid timent vnum, ac si regno priuaturum suo aduentu, aut Romanorum timor suadet vnius necem pro cautione plurium, qui minori

timo-

timore agitari deberent, sed agitat quo maiores, & plures. *Quod suprema potestas maiori quatitur timore*, & anxietate amittendi Regnũ temporale. Ind. de Christo sub. 28.

8 *Si dimittimus eum sic, venient Romani, & tollent, &c.* Tollant temporalia, dum non tollant æterna. tollant Regnum, dum non auferant Regem Regum Christum, ita honestum, & laudabile. Temporalia enim pauci, spiritualia magni præponenda. *Quod pro Dei obsequio* posthabendæ dignitates, & omnia temporalia. Ind. de Christo sub 16.

9 *Vnus autem, ex eis Cayphas nomine, Pontifex anni illius, dixit vos nescitis quidquam. Expedit vt vnus moriatur homo, & ne ab illo die cogitauerunt, vt interficerent eum.* Cayphas ignorantia oppletus connitiatur alios de ignorantia, cum stultitia sua esset abominabilior cæteris, dum inducit mortem Christi, cum sapientia teneretur dirigere ad vitandam. *Quod vera sapientia in eo consistit*, vt inducat ad inquirendum Deum, & salutem æternam. Indic. de Christo sub. 12.

10 *Ab illa ergo die cogitauerunt, vt interficerent eum.* Christum benefactorem publicum miraculis ostendentem diuinitatem, iam cognitum exmiraculis. O delirium? maximum sacrilegium? homicidium. *Quod delirium aggredi* quidquam contra Deum, suspicatum, aut cognitum, vt Deum. Indic. de Fuga sub. 29. & detestabilior dum auiditate boni temporalis. Ind. de Christo sub. 37.

Dominica in ramis palmarum. *Ecce Rex tuus venit tibi mansuetus, &c.* Matth. 21.

1 *Ecce Rex tuus vinit tibi mansuetus super asinam.* Ecce quasi rem nouam Rex in apparatu humili, non in curru triumphali, eleganti equo, sed tarda asina, Rex quidem terræ, & cœli humili gloriam ostentat, sicut Rex terræ in splendido apparatu. *Quod Deus ostendebat maiestatem* in throno Seraphinorum, curru triumphali, nunc in humili maiores emittit sui splendores. Ind. de Sams. sub. 9. & de Christo sub. 46.

2 *Ecce Rex tuus venit tibi sedens super asinam, &c.* quem vident, ita pauperem plausu, & vocibus clamant Regem, si regnum assequendum donatiuis, aut subornationibus dines tantum acclamare tur Rex, sed est Rex cœli, & terræ, se ipso Rex, non adiuncto, iure, & apparatu. *Quod Christus est Rex ab intrinseco* iure naturæ, non iure derivato ab extrinseco, vt Reges terræ, & ita cæteris præferendus, Ind. de Christo sub. 26.

3 *Ecce Rex tuus venit tibi* mansuetus. Pater aptius, & glorioſsius

appel-

appellari, quam Rex, qui potius venit ad saluandum, quam ad regnandum. *Quo potius meretur nomen* patris, quam Regis, qui incumbit accurate bono suorum. Ind. de Samſ. sub 33.

4 *Ecce Rex tuus venit tibi mansuetus.* Benignitate, & mansuetudine excipiendus, ne incidias in rigoroſſum, & seuerum Iudicem. *Quod Regio apparatu* virtutum palmis, & plausu recipi debet Rex pacificus, ne timore, & minis recipiatur seuerus Iudex. ind. de Septuag. sub. 74.

5 *Ecce Rex tuus venit tibi.* Ad vtilitatem, inducendam gratiam, repellendi seruitutem peccati, constituendi filios Dei, & hæredes Regni in Reges. Nihil optabilius. *Quod optabilis fœlicitas*, esse vassallum Regis, qui erigit vassallum in Reges, non deprimit Reges in vassallos tributarios. Ind. de Sept. sub. 74.

6 *Ite, & inuenietis asinam alligatam, soluite, & adducite mihi, siquis dixerit, &c. dicite quia Dominus his opus habet.* Diffinitiua Ratio, & peremptoria vrgens obligationem submittendi sua Regi. *Quod Regi in graui necessitate constituto*, & indigenti tenentur subditi subuenire rebus suis. Ind. de Samſ. sub. 20.

7 *Turba spreuerunt vestimenta sua, alij cædebant ramos*, & clamabant benedictus, qui venit, &c. Pro baldachino, quo Rex terrestris suscipitur super caput, vestimenta, & ramos sternunt sub pedibus incumbentes officio seruorum, recognoscentes Regem cœlestem, cui vestimentis operiunt pauimentum terræ. *Quod in præsentia Regis Regum* serui omnes, deponentes authoritatem, Rex nullus appareat. Ind. de Christo sub 12.

8 *Turba strauerunt vestimenta, alij cædebant ramos de arboribus.* Vnusquisque plaudit Regem pro modulo, pauperrima turba plausu arborum, ramorum, palmarum; vestimentorum: potentes, & nobiles, si exciperent pretiosis supellectilibus, & splendido apparatu deberent, nam ad id præditati. *Quod Deus est elargitus hominibus*, ingentes diuitias, vt cum requirit occasio exponant in obsequium Dei. Ind. de Christo sub. 12.

9 *Clamabant benedictus, qui venit in nomine Domini.* Iubilant plaudunt, clamant Regem pacificum. Est bonus Princeps cœleste plausibile donum, & acceptat plausum, non ob gloriam suam, sed plaudentium, vtilitatem, cuius præsentia ingens lucrum. *Quod sola præsentia Christi* sat ad fœlicitandos suos. Indic. de Septuag. sub. 89.

10 *Benedictus, qui venit in nomine Domini.* Festiuo, & glorioso plausu hodie suscipitur, sed cito transibit in tristem, & ignominiosum,

sum, plausus tradetur ignominiosse morti citissime, sed quæ gloria mundi non cito transit? *Quod adhuc gloria Dei in præsenti vita* est breuis, & momentanea, & sola futura diuturna, & perpetua. Ind. de Samſ. sub. 33.

Feria 2. Heb. Sanctæ. De oratione Christi in horto. *Factus in agonia prolixius orabat.* Lucæ. 22.

1 *Factus in agonia prolixius orabat.* Quod diligentius recesſit à ciuitate, aqua ibat secundum consuetudinem orare in montem oliuarum, imo à suis quò auulsus est iactu lapidis, eo impensius inflamatus feruore fudit orationem ad exemplum, & instructionem suorum. Primus gressus, & gradus adorationem feruidam, est digredi à rebus terrenis, quarum cura distrahere solet ab oratione, nam, *qui distrahuntur in terrenis* fiunt inepti, & tardi ad cœlestia. Ind. de Christo sub 39.

2 Posſitis autem genibus orabat dicens. *Pater si vis transfer calicem, sed non mea voluntas, sed tua fiat.* In conspectu, & præsentia venerandæ maiestatis sui Patris, cui æqualis secundum diuinitatem. Quia minor secundum humanitatem se exibet humili genuflexione seruorum, reuerentia venerabili, & prælatione paternæ voluntatis ad propriam, ad exemplum suorum. *Quod in præsentia Regis Regum,* omnes serui humiles, & obsequioſi apparere debent. Nullus, adhuc Rex, sine summisſione. Ind. de Christo sub. 12. & de Sept. sub. 74.

3 *Apparuit Angelus de cœlo confortans eum.* Non laxum ſpiritu, sed infirma carne, natura refugiente, impellente ſpiritu, non confortat afferens ignoti notitiam, quæ leuare posſet ignarum, sed viri magnanimi, & fortis expones laudes in conformitate efficaci cum Patre. Christi excellentiæ decebat talis legatus nuntij paranimphus. *Quod viris pijs ſpiritualibus*, & deuotis loqui solet Deus familiariter per Spiritus Angelicos. Ind. de Fuga sub. 4.

4 *Factus in agonia prolixius orabat, &c. Et factus est ſudor eius, sicut guttæ ſanguinis decurrentis in terram.* Cum prompto ſpiritu caro insimularetur infirma ad imminentem mortem, cum spiritus esſet immortalis, sui honoris auida non inepti corpore, vt in circumcisſione, sed in adulto viri, impetum, & propensionem manifestans dat, non guttulas tantum, sed copioſſa fluenta sparsa in terram. Vide in die circumcisſionis aptisſima *de impulsu, & propenſione ſanguinis* ad præsens institutum.

5 *Non*

5 *Non quod ego volo, sed quod tu.* Prompte,& ingenue ãcceptat sibi interminatam mortem, impulsum amoris, quo affectabat vitam, facile relinquit, quam sine amore efficaci sui posside bat, amore salutis hominum. *Quòd sine dolore* relinquitur, quod sine amore possidetur. Ind. de Fuga sub. 25.

6 *Non mea voluntas, sed tua fiat.* Mira, & rara conformitas, cum voluntate Patris, non solum prælatiua, sed (sifas) anticipatiua præuenit obedientia præceptum, ne præueniatur petitio, dispensatione, aut reuocatione. *Quod Deus solet præuenire*, pias petiones suorum largiendo optata ante petitionem vocalem. Ind. de Christo sub. 53.

7 *Non quod ego volo, sed quod tu. Non mea voluntas, sed tua fiat.* Vtra voluntas Patris efficax sit digna prælatione, nec inquiritur, nec discutitur, & sine vlla replica acceptatur. *Quod obedientia debet esse aurita, & cæca,* sine ingenio, & discussione executiua prõpta, & ingenua. Ind. de Christo sub. 40.

8 *Et cum surrexisset ab oratione iuuenit eos dormientes prætristicia. Vigilate, & orate, ne intretis in tentationẽ.* Magister vigilans per se visitatus discipulos inuenit dormientes. Difficile reddi vigilantes cum eo, quam egre, & difficile dormientes fiunt vigilantes, tam imperfecti aggregantur perfectis in contubernio perfectionis. *Quod imperfecti difficile addnciuntur, & aggregantur* congregationi perfectorum ad diuinum obsequium. Ind. de Christo sub 37.

9 *Vigilate, & orate, ne intretis in tentationem.* Oratione enixe postulandum à Deo retrahi abvrgentibus tentationibus peccatorum, ob imminens periculum, ne illo tangamur, & inficiamur. *Quòd vitanda est familiaritas cum* impijs, ne pestilentia contagiemur. Ind. de Sams. sub 21. & de Christo sub 53.

Feria 3. Hebdom. Sanctæ de lachrymis Sancti Petri, *& egressus foras flenit amare.* Lucæ 22.

1 *Et egressus foras.* Palatium Principis ingressum Iesum, sequebatur Petrus à longe, vsque intro, &c. Extra sequebatur Christum, intra negauit Christum per ter, ò quam *difficile inuenire Deum in aula Principum, in domo diuitis,* in domicilio voluptatis, facilius extra. Ind. de Christo sub. 46.

2 *Egressus foras, &c.* Intus accessit ad lumen frigidus, quem cũ vidisset ancilla sedentem ad lumen, & eum esset intuita dixit, & tũ cum Iesu Galileo eras, & ille illi, & duobus alijs instantibus negauit. Colloquium, cum fœmina, & alijs ministris peperit negationem Christi in Petro, qui constantia, & firmitate se præmunie

rat

rat, cauendum colloquium, cum huiusmodi, ex quo nostra ruina. *Quòd fugiendum est colloquium cum fœmina*, nam vix Angelica puritas euasit immunis. Ind. de Samſ. ſub. 13.

3 *Egreſſus foras fleuit.* Ancilla cum videret intus ad lumen conuitiatur. *Et hic cum illo erat*, ac ſi fuiſſet comitata ſatellites in Chriſti comprehenſione. Cum aſtitiſſet ad lumen fingit non ore iudicis ſe vidiſſe, quod non vidit, vt extorqueat confeſsionẽ, ſed quid non ingenium fœminæ. *Quòd ingenium mulierebre ad malitiate prompta ſum* ad actiones, fallatias, & mendatia, vt illi nõ ſit fidendum. Ind. de Samſ. ſub. 15.

4 *Egreſſus foras fleuit.* Intus inter miniſtros, & facinoroſos prætori negauit Chriſtum exterius, dum vigerent aſsiſtentes. Quid nõ mirum inter malos bonus? inter facinoroſos non inficit contagio. *Quòd tenemur deſere pericula*, & occationis peccandi. Ind. de Samſ. ſub. 21. Et *quod vitanda eſt familiaritas, cum impijs*, ne contagium pestilentia peccatorum. Ind. de Chriſto ſub. 53.

5 *Conuerſus Dominus reſpexit Petrum, &c, recordatus eſt Petrus verbi, &c. & egreſſus foras fleuit.* Origo fontalis fœlicitatis Petri fuit benecuolus aſpectus Chriſti, & increpatio efficax, vt nec opus verbis. *Quòd Deus ad præmonendo pios vix mittit leues excitationes*, ad impios vrgentes, & plures. Ind. de Chriſto ſub. 53.

6 *Et recordatus eſt Petrus verbi &c.* Memoria prænunciatæ negationis ſtimulus illi ad conuerſionem, initium finis. *Quòd dolens de amiſſa gratia*, & virtutibus eſt valde proxime diſpoſitus ad illã recuperandam. Ind. de Chriſto ſub. 11.

7 *Fleuit amare.* Animam iam defunctam gratiæ Dei inſequitur fletibus, ſuſpirijs, doloribus. Ad plura inuentæ lachrymæ, ſed ad nulluma rius, quam ad deplorandum peccatum, amiſſam gratiam, defunctam animam. *Quòd pium eſt lugere defunctos* corpore, ſed valde pius defunctos animi. Ind. de Samſ. ſub. 57.

8 *Amare.* Diabolus per peccatum ad ſe rapit animam peccatoris, non ſuam: Deus in morte hominum rapit ad ſe defuncti animã ſuam. *Quòd lachrymæ temperandæ*, cum Deus rapit ad ſe conſanguineos amicos, &c. Sed cum diabolus rapit animam per peccatum diffundi debent lachrymæ ſine temperantia, & modo, in copia, & in affluentia ſumma. Ind. de Samſ. ſub. 57.

9 *Fleuit amare.* Non lingua quæ exterius negauit Chriſtũ loquitur, occulti flent, qui inquirebant, implorãt veniã & impetrãt. *Quòd magna eſt vis orationis* cum lachrymis viriliam pœnitẽtis, impetrauit, vt imperium petita, cui Deus præſtat obedientiam. Ind. de Samſ. ſub. 32.

Feria 4. Heb. sanctæ de bono latrone. *Domine memento mei, cum veneris in regnum tuum.* Lucæ 23.

1 *Vnus autem de his, qui pendebant, latronibus, blasphemabat dicens, si tu es Christus salvum fac te met ipsum, & nos.* Christus in cruce, vt in solio regni, regnans à ligno, patibuli infamiam reddit solium maiestuosum, iudicis tribunal in causa latronum. *Quòd reges terræ ostendunt maiestatem* in apparatu splendido. Christus in ignominia crucis. Ind. de Christo sub. 46.

2 *Vnus autem, &c. Latronibus blasphemabat dicens, si tu es Christus salua te met ipsum, & nos.* Blasphemum descendere à trono Regio, vt probet Regem. Inepta intitulatio conditionalis, & dubia. Redemptor desserere in fine interminatam redemptionem, consummationem redemptionis, in qua daret experimenta Redemptoris. *Quòd scelus iniuriosum* est capere experimentum de diuina virtute omittendo spiritualem Redemptionem, fine boni temporalis. Ind. de Samf. sub. 45.

3 *Alter increpabat eum dicens, &c. Nec tu times Deum. Nos quidem digna factis recipimus, hic autem nihil mali gessit.* O agonizantis non infame, sed illustre Christi testimonium. Quod infamia suplicij infirmare poterat, vltima agonizatio firmat, & illustrat. Honestum lenocinium, quod Christi honorem exaltat, & pariter consortem crucis obiurgat, & corrigit ad salutem vtiliorem. *Quòd animus dubitandi*, interdum cogit in vita ad lenocinium Principis, cum dispendio priuato, hic ad honestum fine illo, potius cum spirituali vtilitate. Ind. de Christo sub. 28. & 35.

4 *Nos quidem digna factis, &c. Hic autem nihil mali gessit, &c.* Latronis infamis testimonium illustris est fidei declamatio, & in agonia vltima omni exceptione maior, omni infirmitate firmior, quin infamia testificantis inficietur. *Quòd veritas* debet expectari secundum se præcisa ab auctoritate, & dignitate proferentis. Ind. de Christo sub. 25.

5 *Hic autem nil mali gessit.* Optimus Christi preco inuersus ex facinoroso latrone. Nemini iam desperãdum. Innocens labi potest in peccatum, & peccator reduci potest ad innocentiam, iustus in peccatorem, & peccator in iustum. *Quòd neminì desperandum*, quam tumuis vili, spe Dei magna per ipsum assequenda. Ind. de Samf. sub. 33.

6 *Nos quidem iuste digna factis recipimus.* Infamiam suplicij, & patibuli dolores patienter tollerans bonus latro, conuertit infamiam in honorem, dolores in gloriam. *Quòd sufferentia calamitatum*

tatum in præsenti vita thesaurizat honorem,& gloriam in futura. Ind.de Samſ.ſub.53.

7 *Domine memento mei.* Patrem potius inuocaret, quam Dominum, facinoroſus per vitæ diſcurſum, vt prodigus rediens ad patrem brachijs excipiendus, latro ducendus in Paradyſum beneficium Paternale. *Quòd meretur potius nomen Patris*, quam iudicis, qui incumbit bono ſuorum. Ind. de Samſ. ſub. 35.

8 *Domine memento mei.* Agonizantis ſera, & tarda nunquam pœnitentia ad vitam, ſed valde ad vitandum periculum amittendi. Quia vni,& raro, & contingenter profuit. *Quòd non eſt differenda pœnitentia* ad vltimum articulum vitæ,nam ibi ſalus cõtingens, & rara. Ind.de Chriſto ſub.6.

9 *Amen dico tibi hodie mecum eris in paradiſo.* Tibi bono, & pœnitenti, non alteri prauo, & impœnitenti. Chriſtus promittit, bonum ſaluat prædeſtinatum, malum relinquit in damnatione ſua reprobum iudex in tribunali crucis. *Quòd Iudicis exercet duo munera*, liberare innocentem, & damnare reum. Ind. de Samſ. ſub. 35.

10 *Domine memento mei dum veneris in regnum tuum.* Magna, & mira fides videt in cruce pati, vt facinoroſum, & profitetur Regem. Mehercle dignus, cui non ſola memoria petita concedatur, ſed memoria ſimul, & paradyſus non petitus. More Regis donantis liberaliter,qui merita ſuplicum excedit,& vota. *Quòd Dei liberalitas* non dat in limitatione,ſed in copia,& abundantia. Ind. de Samſ.ſub.33.

Feria 5.Hebd.ſanctæ.De mandato In cœna Domini. *Ante diem feſtum paſchæ ſciens Ieſus, quia venit hora eius, &c. cum dilexiſſet ſuos in finem dilexit eos.* Ioan.23.

1 *Ante diem feſtum paſchæ,ſciens quia venit hora eius,in finem dilexit.* Præſcius,& prudens imminere finem vitæ, & inſtare diem mortis acquieuit fini vitæ,non fini amoris,acquieuit fini præſentiæ corporalis,non fini amoris in ſacramento.Et inſtituit, vt in eo realiter manens in finem diligeret inde ſuos in finem. Exidat vita, non excidat dilectio. *Quòd ea,quæ cum maiori amore poſſidentur*, cum intenſiori dolore relinquuntur, ſolatium de abſentia fuit dilectio ſine fine. Ind.de fuga ſub 25.

2 *Sciens quia venit hora, vt tranſeat,&c. In finem dilexit.* Familiæ ſuæ incumbit in tranſitu ineuitabili, quoad præſentiam corporalem, ſed ingenium inſtituit aliam præſentiam ſpiritualem, & manſionem, cum eis in ſacramento. Ea ſapientia, & induſtria

admirabili, vt nec præsentia frequens fastidium, nec absentia omnimoda inducere et obliuionem, fit absens præsens, & præsens, vt absens, quo dilectio æternizatur dum relinquitur alimenta sacramentalia suis, in quo viget dilectio transeuntis in corporali, præsentis in sacramentali. Ingenio Christi digna meditatio. *Quòd quò quis est instructus maiori ingenio*, & talento præmitur maiori obligatione exibendi dilecto maioris amoris signa, & obsequia. Ind. de Christo sub. 46.

3 *In finem dilexit eos.* Miror. Nulla vnquam dilectio dilexit in finem, in fine suo diffundendo sanguinem in sacrificio cruento crucis per manus carnificum, hodie præuenit manus occidentium, & instituit sacrificium, quo anticiparet ingeniosa industria finem optatum, diffundendi sanguinem pro suis in sacrificio incruento altaris, inferendi sibi agno paschali misticam mortem incruentam, quæ anticipauit dilectionem in finem. *Quòd Deus solet præuenire actiones* sicut pias, impias efficiendo pie, antequam ministri efficerẽt impiè, in pietatis erga suos signum. Ind. de Christo sub 53.

4 *Surgit à cœna ponit vestimenta, præcinxit se linteo, misit aquam in peluim, & cæpit lauare pedes, &c.* Ingeniũ humilitatis raræ transfigurat Regẽ in formã serui, cum ingeniũ carnificũ à figura serui facinorosi affixi in cruce in Regẽ sub titulo crucis. Non adhibet ministros coadiutores ad humilia, se solo peragit omnia, & singula ad exẽplum Regum, vt perse gerant omnia, adhuc humilia exclusis priuatis. O ambitio sancta humilitatis raræ Christi. *Quòd sicut ambitiosus nil intentatum relinquat, vt regnet*, Christi humilitas nil intentatum relinquit, vt submittatur in omnibus vt seruus. Sicut carnifices nil intentatum relinquunt ad illusionem Regis, à seruitute in conuitiando in Regem. Ind. de fuga sub 9.

5 *Venit ergo ad Simonem Petrum, &c. Tu mihi?* Nullus auderet se intromittere, vt lauaretur, nec petulans Iudas præuenit omnes. Ab apparatu, & situ lotionis præmisso, venit ad Petrum, non à prælotione Iudæ. O rarum humilitatis exemplum non lauat quærentes, sed quærit, vt lauet, vt ingenium liberale, non dat quærenti solùm, sed quærit, vt det donatiua. *Quòd sicut ambitio suis horis auida* non patitur, nec memoriam aliorum ad prælationẽ; rara humilitas Christi suæ summissionis auida, nõ patitur sibi præhumiliari discipulos, sed præuenit humilitate omnes, vt in admirationem rapiatur Petrus emphatica locutione. *Tu mihi* lauas pedes, tu Magister ego discipulus, tu Deus, ego creatura, tu Dominus, ego seruus, cui præuenire debeo lotionem pedum tuorum, dum magister præuenis lotionem discipuli. Inde de Christo sub. 37.

6 Ve-

6 *Venit ergo ad Simonem Petrum.* Inde venit ad alios, & Iudam malignum. O mira bonitas, ò diuina maiestas postrata ad pedes proditoris! auida reduci in viam salutis, pedes discipuli. Suppositi sunt in manibus magistri, pie osculatur, lachrimis forte lauat, capillis tergit. O stupendum spectaculum osculatur pie pedes falsi discipuli, velloces in via diffundendi sanguinem magistri, vt solet osculo pacis suppliciandus funem, & carnificem. Si viam salutis quæreres in meis manibus est via, veritas, & vita, si ouis erratica en humeros pastoris, quibus reducaris ad gregem, si prodigus fugitiuus en brachia Patris parata ad amplexum reducis. Summa doloris intimi, non me perdi à te, sed te perdi, non tam me deseri, quam te desertione dignum in perpetuũ. Quod facturus es, ò carnifex fac cicius, quo citius feceris, tibi minor culpa, quominus immoreris, mihi paciẽdi auido maior voluptas, quo celerius perfeceris, ò amoris mira instantia! videris non præscia futurorum, sed vere præscia operaris, non iuxta quod sapis, sed iuxta quod optas, licet labores in vanum. *Quòd improbi difficile aggregantur congregationi* iustorum ad diuina obsequia. Ind. de Christo sub. 37.

7 *Cũ dilexisset in finẽ dilexit.* Cum dilexisset olim Redemptor in finem dilexit conuiuator. Instituit sacramentum Eucharistiæ sub quo lateret. Non fugit timidus, vt ad ergastuli latebras. inquirens vitam, qui venit inquirere abhostibus mortem. Quærit illam è propijs manibus mistice, præueniendo manus ministrorum, vt dilectionis daret signum, omnium maximũ in buccela minima, vbi clauditur summa Deitatis magnitudo, vt vno hiatu Deitas deglutiatur. *Quòd in exiguo domicilio accidentiũ* Dei maiestas adest, emittens deitatis splendoris. Ind. de Christo sub. 46.

8 *Exemplum dedi vobis, vt quemadmodum ego feci, ita & vos.* In sua persona Christus præparationes disponit sibi, ad institutionem venerabilis Eucharistiæ, sumenti pariter dispositiones prærequisitas ad dignam susceptionem. Deponit vestimenta, docuit deponere temporalia, vt digne suscipias, dum se cinxit linteo mundissimo astruit munditiam animæ, dum lauat pedes discipulorum docet excutiendas leuissimas culpas ad susceptionem fructuosam sacramenti, vt probet se homo, & sic de pane illo edat, & de calice bibat. Qui enim manducat, & bibit indigne, iudiciũ sibi mãducat, & bibit. Suscepturus Agnũ sub accidẽtibus dispone, ne suspias leonẽ, recepturus Redemptorẽ benignũ, caue ne cogaris recipere seuerũ, & rigorosum Iudicẽ, nam alterũ eorũ, necessũ. *Quòd qui non recipit Christũ pacificum* incidet in Christũ Iudicem. Ind. de Sept. sub. 74.

Feria 6. De passione Domini. *Egressus est Iesus cum discipulis suis trans torrentem cedron, vbi erat hortus. In quem introiuit ipse, & discipuli eius.* Ioann. 18.

1 *Egressus est.* Propensio, & impulsus tradendi vitam pro homine, & effundendi sanguinem pro humana salute, quasi impatiens moræ rumpit moras, iam in adulta ætate. Quod à die Natiuitatis cohibuit in octauũ, vbi mirum non à die octauo diffudisse, sed distulisse à quo habuit esse ad illud tempus. Vide dicta in die Circuncisionis, *de ista propensione sanguinis* Christi, non inepta.

2 *Vbi erat hortus, in quem introibit ipse, & discipuli eius, &c.* Paradisi antiquum facinus primorum parentum elationis essendi sicut Deus, & excutiendi seruitutem creaturæ, compensat Christus subijciendo se hominibus, & patiendo ligari funibus, comprehendi, & duci ad carcerem malefactorum, vt subsistat diuinitas Dei, cui in oratione se submiserat postratus in terram, & præferendo propriæ voluntati diuinam. *Quòd labori non parcendum*, vt subsistat recognitio, & adoratio veri Dei. Ind. de Christo sub. 6.

3 *Vbi erat hortus, &c. Et factus in agonia prolixius orabat.* De oratione feruida, in axietate, & agonia instauranda dicta feria secunda istius hebdomadæ.

4 *Quid vultis mihi dare, & c. constituerunt* 30. *argentos, &c. quærebat opportunitatẽ, vt traderet.* A Christo emptore tui pretio magno, pretiosi sanguinis, discere poteras valorem vẽditionis Christi. Cupiditas, si vrget clamet preco ad ostium Virginis, filium venalem. O vilis proditor. *Quòd viles pecuniæ*, & auro addocuntur in facinora, generosi aliter. Iud. de Sams. sub. 44.

5 *Iudas venit. Cum accepisset cohortem cum lanternis, facibus, & armis.* Christus sensit acerbe falsi discipuli proditionem sub obsculo pacis odium, & dirum bellum occultantis. Tãquam ad latronẽ exijstis cum gladjs, & fustibus comprehendere me, & non mirum, quod qui tanta pertulit acerbi doloris, dederit signum dura perpeti ab amico, à quo pia, & obsequiosa iure expectanda. *Quòd vxor obligata fidem*, viro seruare, vt Iudas fidem in infidelitatem conuertit. Ind. de Sams. sub. 18. Et quod diaboli æmula inquiete cœlat periculum. De Sams sub. 18.

6 *Iesus autem sciens omnia, quæ ventura erant super se processit, & dixit, quem quæritis? responderunt Iesum Nazarenum. Dixit ego sum, vt dixit ego sum abierunt retrorsum, & ceciderunt in terram.* Tota cohors cum ministris paratis cum facibus, & armis ruit ad solam vocem Christi victa, triumphante voce, quid si manibus, quid si aduocaret

caret ministros exhiberi duodecim legiones Angelorum. Capi patitur, quia vult *Quia plus valet vnus, quam mille*, si spiritu Dei diriga tur. Ind. de Sams. sub. 24.

7 *Si ergo me quæritis, sinite hos abire, vt impleretur sermo, non perdidi ex eis quemquam.* O mira Christi charitas, quæ capi pateretur, dum discipuli liberi abeant. *Quòd deuixit munus liberatoris* ad tustinēdas in se ligaturas, & improperia personalia, vt liberatet suos. Ind. de Sams. sub 51.

8 *Petrus eduxit gladium percussit Pontificis seruum, & abscidit auriculam eius dexteram, &c.* Dixit Iesus Petro, mitte gladium tuum in vaginam. Petrus Sacerdos, qui facinus heroicum aggressus in obsequium, & fauorem Magistri cohibetur, & increpatur, non solum quia Ecclesiastico indecens facinus, sed quia impedire videtur passionē Christi, qui si vellet, vel voce extermiaret cohortem. *Christus non eget gladio, nec copijs militaribus ad vincendas phalanges.* Ind. de Sams. sub. 29.

9 *Et cum tetigisset auriculam eius, sanauit eum.* Lucæ 22 vers. 51. O magna pietas in hostes etiam, & inimicos benefica! quid opus consui auriculam, ita zelose amputatam? mirum vt so tanto miraculo non conuerti, & desistere à comprehensione satillites. Sed vis passionis excæcauit, ne viderent, & expenderent, rarum miraculū. Vt conuincerentur, & adducerentur in confessionem, & laudem Christi. *Quòd ea est vehementia passionis, & cæcitatis Iudaicæ*, vt luci, & naturali lumini præcluserit aditū. Ind. de Septuag. sub. 67. imò auserit inijcere manus in Christum. Ind. de Christo sub. 37.

10 *Et adduxerunt (ligatum) ad Annam primum. Deinde ad Caipham & Pilatum, &c. quam causam affertis aduersus hominem hunc.* Christus Rex, & Iudex viuorum, & mortuorum patitur adduci ante tribunalia Iudicum, examinari, ipsam innocentiam argui, & accusari per ministros iniquos, sed nihil causæ inuentum est contra eum. *Quòd veritas non renuit examinari, & probari in iuditio*, & sui rationem reddere, sicut timet mendatium. Ind. de fuga sub. 25.

11 *Sequebatur autem Iesum Simon Petrus, & alius, &c. Dum ligatus defertur ad carcerem, alij relicto eo fugerunt.* Vt viderunt adduci ligatum pauci discipuli, & à longe secuti sunt Magistrum. O aduersa fortuna, amici deserunt infortunatum, inimici vrgent in eum persecutionem, indecens discipulis, nam *discipuli pro Magistro vitam, & incommoda periculo exponere* tenerentur. Ind. de Christo sub. 16.

12 *Petrus stabat ad ostium foris. Exiuit discipulus notus Pontifici, & dixit ostiariæ, & introduxit Petrum, &c. Petrus erat stans, & calefaciens se. Dixit Petro ancilla numquid & tu ex discipulis es hominis istius? Negauit Petrus.* Sed exteriori sola negatione, ab interiori fide, non excidit ob orationem Christi. Vide dicta in feria secunda superiori de negatione Petri, & lachrimis.

13 *Quam causam affertis aduersus hominem hunc. Si non esset malefactor non tibi tradidissemus eum.* Aggrediuntur vitam tollere, & capitali sententia damnare, & instant Iudicem, vt proferat sententiam in causa graui inaudita parte, non visis allegatis, & probatis, sed suppositis ex hominibus in causa fidei, vt Iudex inuestigaturus, actuata suscipiat cæce. *Quòd res magni momenti, & ponderis non est admittenda* cæce, & imprudenter, sed visa causa sufficienti, & rationabili. Ind. de Christo sub. 1,

14 *Dixit Pilatus, accipite eum vos, & secundum legem vestram iudicate. Nobis non licet interficere quemquam.* Iudex tradit, vt iudicetur secundum legem, ministri dicunt non licere interficere, ac si idem esset tradi, & interfici, sanè ita, dum traditur odio & passione cõspiratis. *Populus solet esse in adiutorium Principis in inopem, ope destitutum,* illi cooperando ad iniusta, hic inuersus ordo, Iudex in adiutorium populi conspirati in innocentem. Quid prodest lauare manus, si tradit sanguinibus, nec liberat, manus tales sanguine plenæ sunt Ind. de Christo sub. 28.

15 *Pontifex interrogauit Iesum de discipulis, & doctrina. Iesus respondet, ego palam locutus sum mundo, & in occulto, locutus sum nihil. Interroga eos, qui audierunt hi dicent, quid dixerim ego. Hæc cum dixisset vnus assistens dedit alapam Iesu dicens, sic respondes Pont sici? Si male locutus sum, testimonium perhibe de malo, si autem bene, quid me cedis?* O audax, & sacrilega manus, quæ ausa est impingere alapam in faciem, inquam desiderant Angeli prospicere, pro veritate in sui defensionẽ ocre ferre sanguineã impressionem. Manus insolens aussa eleuari in altũ ad ictũ aspectus cãdidi, & rubricũdi electi ex millib⁹ in adulationẽ Iudicis, digna, quæ in aere maneret arefacta, sed ad quid non cogat adulatio iniusti ad iniuriandum Iesum. *Quòd adulatio cogit ad lenocinium Principis cum iactura,* & dispendio innocentis priuati. Ind. de Christo sub 28.

16 *Pilatus introiuit iterũ in prætoriũ, vocauit Iesum, & dixit ei, tu es Rex Iudæorũ?* Et cũ instaret, & inuestigasset iteratis interrogationibus *exiuit* ad Iudæos, *& dixit, ego in eo nullam inuenio causam.* Nec mirum. *Quòd est innocentia Christi, vt non timeat,* nec recuset inuestigari, & suscipi informationẽ adhuc ab inimicis, sicut nec timet veritas fidei. Ind. de Christo sub. 40.

17 *Est*

17 *Est autem consuetudo vobis, vt vnum dimittam in Pascha, &c.* quem vultis *de duobus dimitti?* dixerunt, *non hunc, sed Barrabam, erat autem Barrabas latro.* O Iudex infande, si causa mouet, vt dimittas immunem, quomodo moueri instantia iniusta populi, vt exponas damnandum? quis vnquam vidit tam malignam electionem, vt eligatur facinorosus, & reprobetur iustus, & sanctus? me hercle, Iudex facinorosus, in cuius tribunali consensere iura peccatis, dum ius nõ patitur consentire, sed moueri instantiã iniustã peccatorum. *Quòd solus ille, non est iniquus Iudex,* qui in ferenda sententia mouetur impulsu Spiritus Sancti. Ind. de Sams. sub 35.

18 *Quem vultis de duobus dimitti,* Iesum, an Barrabam? O malignitas Iudicij, vbi iura decidendi Iudicis, committuntur iniustitiæ & odio populi conspirati, & quod Iudicis erat decidere inter reũ, & innocentem, id odio accusatoris cõmittitur. *Quod Iudici est liberare innocentem, & damare reũ,* huc ita sinistrè peragitur iuditiũ, vt populus odio conspiratus dimittat flagitiosum, & damnet innocentem annuente Iudice. Ind. de Sams. sub. 35.

19 *Pilatus apprehendit Iesum, & flagellauit.* Flagellat, vt emẽdatum dimittat, nõ vt tradat morti. In disciplina acerbissima, vt vulgo (açotes de muerte) intendit ille reseruare vitã, vt quem vident, viderint acerbissime flagellatum, ex misseratione dimittant. Disciplinam acerbissimã, & inhumanam parat pro mensura indignationis, imo cum exorbitantia ad sacietatem, vt cum supra modũ excarnificarum viderent à planta pedis mittescerent, & dimitterent disciplina acerbissima, quę vinceret indignationẽ flagellat; quippe varijs adinuentis disciplinarũ excogitat virgarũ, funium, catenarũ, spiculorum, & garphiorũ, vt ad verticem excoriauerint, & ex carnificauerint, vt per scapularũ foramina introspicerẽtur palpitã tia viscera, diffusis riuulis interran sanguinis, vt columna, & pedes stagnarent, in qua vlnea ligati equites ad abstergendũ, ligaretur ad flagellandũ. Vt inquirens vestimentũ præ debilitate lapsus, in lacunam sui sanguinis, nec adesset, qui ministraret. *O pijssima virgo accurre,* ministra filiũ ope destitutũ, nec tibi erit difficile per foramina scapularum introspicere viscera, quæ formasti. Nec duritia conspirati agminis satiata est, tam inhumana crudelitate, sed increuit malignitas. Satius ipsam flagellis ad pietatẽ adduci, vt in se discerent aliorum misereri. Fugitiuos Deus adducit ad se eruminis, & molestijs, illis reduci satius oporteret ad pietatem conspiratos ministros. Ind. de Sams. sub 51.

20 *Et milites plectentes coronam de spinis, imposuerunt capiti eius, & veste purpurea circumdederunt eum, &c. Et velauerunt faciem eius*

Mar-

(*Marco dicente*) *& dicebant, aue Rex Iudæorum, & dabant ei alapas, &c. Quis est qui percussit?* Optauit Christus velari oculos ad impropetria, oprobria, & tot iniurioſſas ſaliuas conſputas, & alapas incuſſis in faciē. Eā enim vim habēt excitandi cordis dolorē, vt ipſe Chriſtus patiētiſsimus nō voluerit videre inferri ſibi in faciē (cara a cara) cū ex inhonore honor, ex ignominia gloria ſibi eſſet apud Deū & homines cōparandū. *Quòd patientia, & ſufferentia inhonoris, & contumeliæ* in erumnis theſaurizat honorē, & gloriā. Ind. de Sāſ. ſub 53

21 *Et milites plectentes coronā de ſpinis impoſuerunt capiti eius. Arūdinem in dextera. Et veſte purpurea circūdederunt eum, & genuflexo illudebant, &c. Aue Rex Iudæorum, & dabant ei alapas.* Regem immortalē ſæculorum in ſolio maieſtatis aliter Seraphim velabant faciem alis, & aliter inſultabant in laudes clamantes; Sanctus, Sanctus, Sānctus. In aſſumpta mortalitate immortalē illudūt corona ſpinea in ſignijs regijs purpureis, inſultat opprobijs, ſaliuis, contuſionibus, & alapis. O Ieſu bone in quot erumnas maieſtatē immortalē ſubiecisti, ſane maieſtatē immortalē, in carne mortali, vel inuiti Regalibus inſignijs mortiferis proteſtantur. Dū in præſentia maieſtatis immortalis, nulla alia cingenda corona niſi inferiori, & illuſoria. Illi minor, non in perſona, ſed in mortalitate aſſūpta. *Quod in præſentia Regis Regū, non debet vllus apparere Rex.* Sed ſerui, formā accipiens, in ſimilitudinē hominū factus, & habitu inuētus, vt homo. Propter quod exaltauit illū, & donauit illi nomen, quod eſt ſuper omne nomen, vt in nomine Ieſu, omne genuflectatur. & in præſentia illius nullus appareat diademate Regio. Ind. de Chriſto ſub 12

22 *Ecce adduco eū foras, vt cognoſcatis, quia nullam inuenio cauſam. Exiuit ergo Ieſus portans coronā ſpineam, & purpureum veſtimentū, & dicit eis. Ecce homo. Pilatus primo proponit innocentē, iterū ecce Rex veſter, illi repondent, crucifige, crucifige, & iterum tolle, tolle, crucifige. Regem veſtrum crucifigam? Non habemus Regem, niſi Cæſarem. Omnis qui ſe Regē facit contradicit Cæſari.* Defiguratus figura humana Chriſtus oſtēditur, qui non apparet homo, degradatus corona, & Regia dignitate, qui iure intrinſeco Rex, ſuppliciatus vt nocens, qui innocens, increſcunt diræ doloris incrementa, dū eruitur in publicū, infamis famoſſus, inhonoratus honorificus, vilis qui nobilis, ſeruus qui iure intrinſeco Rex. Hęc improperia in occulto ſilentio tolerabilius perferuntur, ſed in ſana, & delira paſsio, quæ vero Regi admit coronam, vt deferat intruſo. *Magna vis adulationis, quæ cogit Iudicem, vt traderet innocentem crucifigendum,* & ipſos miniſtros, vt cruci affigant, *quæ cogit deferri coronam ad Principem terræ intruſum cum iac-*

tura

tura Principis legitimi cœlestis. Indic. de Christo sub. 28.

23 *Et baiulans sibi crucem exiuit in eum, qui dicitur Caluariæ locus, &c.* Ingressus ille glorioſſas triũphalis in Hieruſalem, & egressus iſte ignominioſſus, & miſſerãdus diſtãt valde diſsimiliter. Ibi triũphans, vt Rex, hic ſubiectus, vt ſeruus ſuppliciãdus, ibi ſternebãtur rami, & veſtimenta in via, hic riui ſanguinis decurrentis in terrã, ibi equitãs ſupra iumentũ, hic famulans infra lignũ ponderoſſum, ibi pueri clamabant, & plaudebant iubilo, hic fœminæ inſequentes lamentabantur, ibi ſplendidus, & decorus facie candidus, & rubicundus electus ex millibus præcinctus tẽpora ramis, hic corona ſpinea redimit⁹ coagulato ſanguine intra capillos, lachrymis plenus, ſudore fluẽs, anguſtia triſtis. Qui effigiẽ ſui in linteo impreſam ad doloré, & cõpaſsionem adamantina corda mouere poſſet. Ibi ſpiritu promptus ad perferendas paſsiones, hic caro infirma ex corporis debilitate, crucis pondere procidens in terrã, vt ne in via interiret, ſit angariatus Cireneus, qui tolleret crucẽ eius, ibi denique turbæ vocibus, & plauſu honorificatus, benedictus, qui venit, hic turbæ multæ cũ ſtrepitu, & fragore confluentis diffamatus, & alta præconis voce dehonoratus. Hæc eſt iuſtitia exequi mãdata à ſupremo Iudice, nomine Cęſaris, in hominẽ iſtũ facinoroſsũ, qui ſe Regẽ, & Deũ auſſus eſt intitulare, ideo morte turpiſsima, & ignominioſſa crucis ducitur mulctandus. Quid nõ transfigeret præcordia virginis, quæ iubilis heſternis sẽſerat plaudi, & honorari? quid non transfixiſſet dolor filij Matris præcordia. O quam breui tranſit gloria mundi! optanda minime gloria, quę terminatur in cruce, dulcedo, quæ infele, & amaritudine, fama, quæ in infamia, fœlicitas, quæ in tãta infœlicitate. Incremẽta anguſtiæ, & doloris tãgũt cor Chriſti ſupra modum, nec maior vlla infelicitas, quã fuiſſe fœlicem, & inter tot erumnas, non vincitur ingens amor Chriſti, nec extingui potuit ardor amoris, nec flumina obruent illã. *Victor amor Chriſti, qui tantum abeſt, quod infirmetur, & extingatur, quod potius roboratur, & inflamatur aduerſis.* Ind. de Samſ. ſub. 51.

24 *In eum, qui dicitur Caluariæ locus. Et ibi crucifixerunt eum, & cum eo duos alios, hinc, & hinc, &c. Medium autem Ieſum. Et inclinato capite tradidit ſpiritum.* Poſſuit titũlum Pilatus, & ſuper crucem, *Ieſus Nazarenus Rex Iudæorum.* Chriſtus in vita propenſus ad perferendos dolores pro ſuis, in fine vitæ velocius, vt in centro, vt perpeſſos in vita poſt terga reliquerit. Ea fuit acerbitas in fine ſpõte, & voluntarie admiſſa, quod crucifixio Xpi. finiẽs viam, vitæ lõge ſuperauit dolores, labores in vita perpeſſos, imo quos vidit ab initio vniuerſus orbis ex obiecto, & ſingulis circũſtãtijs.

Pri-

Primum incrementum doloris ex vastitate ligni inculti virgulis, vt aculeis pungentibus delicatũ, & excoriatum corpus flagellis, & contusionibus, quod attendit Ecclesia dum in hymno verba facit, *flecte ramos arbor*, &c. Et rigor lentescat ille, quẽ dedit natiuitas. 2. *Incitamentũ doloris*, quod lignum perforatũ est ad clauos, inæqualitate improportionata ad corpus, & manu dextra afflixa clauo, cũ altera extera, nõ posset accedere ad foramẽ, trahitur violẽter ligata fune, vt erumperet sanguis per vngues, & artus distraherentur, è situ naturali crudeli ministro firmante pedem in pectore. Peruentũ cum esset ad affligendos pedes, cum non ita extensi, vt affligi possent, funibus distenduntur, vt artus omnes naturali situ deflexerint, vt corpus Christi vehementi tenratione cõcuteretur, vt videns Propheta dixerit, *& concussa* sunt omnia ossa mea. 3. *doloris incrementũ*, nam Christo, iam affixo in cruce, vt claui reflecterentur vertitur, infra crucis pondus, vt sanguine perfuso corpore, sui effigiem in terra posset imprimere, vt illud corpus tot vulneribus perforatus sanguinis riuos crucis pondere oppressus diffuderit, vt racemi sub virga torcularis iuxta propheticũ *torcular calcaui solus*. Vt manibus, & pedibus fluxerint, quatuor sanguinis stagna à cœlesti paradyso ad fertilizandũ orbem. 4. *Incrementũ doloris*, nam cum eleuaretur crux in altum cum crucifixo, infouea præparata ad recipiendũ pedem crucis, ita subito cecedit pondus, trahentibus funibus, vt corpus Sanctissimum in cruce eleuatum in aere fluctuãs ad quietẽ, manibus pedibusque dilatauerit scissuras, & nerui cõcussione, & distentione incredibiliter auxerint incrementa doloris. 5. *Doloris incrementũ*. Exaltatus à terra nuditatem corporis obijciens intuentiũ oculis, præ honestate sensit valde, præsentibꝰ vociferãtibus cunctis: inde intuente dilectissimã matrem, & comitantes Marias lachrymantes, comitantes discipulos, attendens similiter milites mittentes sortes super vestimenta eius, videns similiter facinosos colaterales audiens alterius conuitia, similiter audiens vocem præconis, quod auderet nullus tollere corpora crucifixorũ. 6. *Doloris incrementũ*, mediatio ingratitudinis crucifigentiũ, imo, & Iudaici populi, pro quo obtulit vitam, vt liberaret à morte. Credibile in transitu interius illa verba dixisse, *populo* meus quid feci tibi, aut quid molestus fui tibi? quod affixisti me in cruce, quã dedi causam incredibili inhumanitati? fuit ne, quia eduxi te de Egypti seruitute? fuit ne, quia dux tibi per desserta, quia dedi mana multi saporis, quia eduxi aquã de petra, quia protexi columna nubis, quia de di transitũ per mare Rubrum, quia insequentes hostes aquis tumulauit, quia sanaui infirmos tuos, visum oculis, pedes claudis, vitam de-

dedi defunctis, hæc, & similia doloris incrementa ex peccatorum in pœnitentia nostra acerbitatē crucifixionis augescūt. O fideles, qui auditis aliqua incrementa doloris Christo ex crucifixione allata, optatis videre spectaculū, ad cuius intuitū lamentabile, creaturæ adhuc irrationales assumunt imitatione doloris incrementa, iam moribundū in cruce: ad cuius aspectū sol obscuratur luna assumit indumēta sanguinea, aera induunt se tenebris, vt panis funebris, velū templi scindi tur à summo, vsque deorsū: petræ scindantur alterna collisione. *Ecce lignū* Sanctissimæ crucis (*hic ostendatur crux ipsius populo*) in quo salus mundi pependit, venite adoremus, & c. flexis genibus accedite, O filij ad crucis lectulū Patris moribundi, iam fere expirantis Expolc te lachrymis vltimā benedictionem, expendite mecum, & orate cum moribundo innocente. O amantissime Pater, Rex Regū in carne mortali, corona spinea redimitus, quæ perforatas habent plures partes capitis, coagulatus est sanguis, & cōmixtus spinis, & capillis, lingua amaricata felle, labia distillantia mirrhā cærulea, dentes compressis moriē tis more, occuli iam lumine perfracto, manus, & pedes perforati clauis, scapulæ scissionibus, & aperturis ostendentibus viscera, pectore iam moribundo, anima propedentes efflanda ad Patrē pulsus iam debilitantur, extrema iam sunt infrigidata, vt moriētis. O bene saluator in agonia mortis. Accedat iam virgo sacratissima, & animā agenti filio det benedictioné extremam, & expoſcat suā. *O Cythara Dauid*, quæ funibus, & chordis personas, fugas Dæmonē, culpā à genere humano, innocens nō tua, sed mea culpa subis tot pœnas. Cui nos orphanos relinquis? quæ extrema verba memorabilia relinquis? septē. 1 filio. 2 Pater, vt derelinquisti me. 3. Pater ignosce illis. 4. Hodie mecum eris in paradyso. 5. Mulier ecce filius tuus. 6. In manus tuas cōmendo. 7. cōsummatū est. O Iesu bene, ò pia Mater filio animā agenti, & offerenti sacrificiū, oratione tuua ad bonam mortē verbis illis, *exaudiat te Dominus in die tribulationis*, mitat auxiliū de Sancto, & c. Memor sit omnis sacrificij tui, & c. Fiat tibi secundū cortuum, & c. Vt mors tua sit tibi consummatio redemptionis, nobis vita, & redēptio. Cōsummatū est, *hæc dicens expiravit*. O spectaculū lamentabile, efflauit animā Christus, *obstupescite cœli super hoc*, sol obscura lucē, luna induc Sanguinē, aer luctus, & tenebras, petræ mutua collisione inclamare defuncti clamores, orfani relicti sumus, ò Pater æterne suscipe, & foue filij defuncti filios. *Recordare quid acciderit nobis*, intuere, & respici opprobriū nostrū, populi facti sumus absq; patre, virgo Mater, quasi vidua, defecit gaudiū cordis nostri, versus est in luctum chorus noster, ve nobis, quia peccauimus. Nostra enim peccata cruci affixerunt Christū. O quos ergo fideles relicti sumus orfani, accuramus ergo ad subsidium Patris

æter-

æterni, & cum Ecclesia oremus dicendo. *Respice quæsumus Domine*, &c. Mortem subijt, nobis vita gratiæ, & gloriæ, &c.

In angustia, & orbitate virginis. *Stabat iuxta crucem Iesu mater eius, & soror matris eius Maria Cleophe, & Maria Magdalene.* Ioann. 19.

1 *Mater eius.* Mater non solũ in præsentia viuentis, sed in absentia defuncti, in vtroque statu Matris exibet intensissimũ amorẽ filium viuentẽ diligebat intensissimo amore, filiũ defunctũ lamentatur acerbissimo dolore, & cũ nullius maior amore, quo diligebat præsentẽ, nullus acerbior dolor, quo doletorbitatẽ filij absentis, amor enim in præsentia mẽsura doloris in absentia. *Quod quæ cum maiori* amore possidentur, cum maiori dolore relinquuntur. Ind. de Fuga sub. 25.

2 *Mater eius.* Plorat mater, lamentantur discipuli, & Mariæ comites, quilibet suis titulis, Matris verò vnione sanguinis cõiunctæ, nullo potior, & charior, Matris eius præcipua laměta, acerbiores ploratus, fusiores lachrymæ, sicut intimior amor. *Quod parentibus potissimum est* tristari de infaustis filiorum euentibus. Ind. de Fuga sub. 25.

3 *Mater eius.* Diligens ita intime filiũ, *quod mortem*, quam ille pertulit in corpore animam illius sauciauerit. Ind. de Sept. sub. 79.

4 *Mater eius, & soror Matris eius Maria Cleophe, & Maria Magdalene.* Purissimę numquã peccatricis Matris, & Magdalenæ aliquando peccatricis fletus, lamentatur absentiã, & orbitatẽ Christi. Decens sane, & æquum. Quod absentia Dei, non solum lachrymis peccatorum, sed innocentium lamentari debet. *Quod nec familia Sanctissima est* immunis ab anxietate, & doloribus præsentis vitæ. Ind. de Fuga sub. 8.

5 *Mater eius.* Virgo Virago, magnanima spiritu, infirma corpore. Magnanimos viros non dedecet, dare signa doloris in infaustis, & infortunatis. Stans cõstans, & magnanima iuxta crucẽ corpore delicato præ angustijs, & doloribus sautiata, & postrata, vt pro discretione, & sagacitate animus vigilãs, angustias, & laměta corporis cohiberet, ne vno ictu, & funere filius, & mater videret sepulchrũ. Quod tẽperandæ sunt lachrimæ cũ rapit Deus ad se suos, posito. *Quod non tam eius est* defunctus, quam Dei conditoris, qui mutuauit ad tempus, vt cũ vellet recuperaret, quod potius eius erat. Ind. de Sams. sub. 57.

6 *Mater eius.* Signa ostendit pietatis, & cordialis amoris erga filium defunctum, non solum vestitu lugubri, & funesto, sed lamentis, & eiulatibus clamorosis vocibus, lachrymis oculorũ, suspirijs cordis. *Quod pium valde est honestas* exequias legere, & lngere pro defunctis. Ind. de Sams. sub 59. & de Fuga sub. 25.

In die Resurrectionis. *Maria Magdalene, Maria Iacobi, & Salome emerunt aromata, vt venientes vngerent Iesum, &c. Iesum, quem quaritis crucifixum surrexit, non est hic.* Marci. 16.

1 *Iesum, quem quæritis crucifixum surrexit, non est hic.* Epitaphiũ sepulchri publicat resurrectionis gloriã. Crucifixus in gloriã assurgit. Ex sepulchro funesto cõsurgit vivus ad gloriã, ex sudario mortis vita. Relinquit mortem, qui propria virtute actiua resurtexit in vitã glorioſsam. Omnipotentiã demonstrat actiua resurrectio, mortalitatis veritatẽ passiua: iuxta Apostolum, *qui declaratus est* filius Dei in virtute ex resurrectione mortuorũ. Resurrectio mortui impossibilis naturæ, sed in eo resplendet virtus, & gloria omnipotentiæ, vt reddat possibile. *Quod ea virtute, & habilitate gaudet*, vt eliciat ex infirmitate salutem, ex mortis sudario horribili gloriam resurrectionis, ex morte vitam. Ind. de Samſ. ſub. 4.

2 *Introeuntes in monumentũ viderunt iuuenẽ sedentẽ in dextris, coopertũ stola candida, &c. Dixit eis nolite expauescere.* Angelus glorioſſus splẽdidus stola candida, paranimphus glorię, Christi implet gloria, & lætitia, & perfundit gaudio fœminas, anguſtia, & triſtitia plenas, facit deponere triſtitiã, timorẽ, & mœrorẽ. Crucifixũ imaginatis, exiſtimate glorioſsũ. Crucifix⁹ enim surrexit in gloriã. Merito sane triſtitia versa est in gaudiũ, quia defunctus ſuſcepit vitã, quia crucifixus surrexit in gloriam. *Quod lætitia, & gaudium cœleſtium* implet appetitum terrestrium vix sinum. Ind. de Chriſto ſub. 41.

3 *Viderunt iuuenẽ sedentẽ, &c. Qui dixit eis surrexit, non est hic, &c.* Magiſter Angelic⁹ paranimph⁹ resurrectionis in sepulchro, vt in Cathedra sedens, docuit miſterium, cum primo relegaſſet timorem. Ad exẽplum cæterorum. *Quod Magiſtri* indicent Chriſtum, & viam salutis, non transeunter, sed pedetentim. Ind. de Chriſto ſub. 46.

4 *Viderunt iuuenem sedentẽ, &c. Qui dixit eis surrexit, non est hic.* Fœminæ magnanimæ, piæ, & deuotæ aggrediũtur arduа ex amoris impulſu abijciunt ſomnũ, euigilant, cum adhuc tenebræ eſſent, præueniunt pretioſſa aromata, domo egrediuntur, ſine timore audent intrepidæ adire defunctotũ sepulchra. Præferũtur ſolicitudine, & diligentia viris, quin fragilitas cohibeat, aut timor defunctorum retardet, vis amoris accenditur, rumpit, & impetitur dificultates. *Quod fidei, & amoris* firmitas, non extinguitur, ſed augetur, inflamatur aduerſis. Ind. de Samſ. ſub. 51.

In ſecundo die paſchatis. *Duo ex diſcipulis Ieſu ibant ipſa die in caſtellum, quod erat inſpatio ſtadiorũ ſexaginta ab Hieruſalẽ nomine Emaus.* Lucæ 24

1 *Duo ex diſcipulis Ieſu ibant ipſa die, &c. & ipſe Ieſus appropinquans ibat cum illis.* Præsentiã glorioſam promiſſerat Chriſtus. *Poſt tres* dies resurgã, & ante finitã periodum fugiunt ex Hieruſalẽ ipſi quidẽ timidi bacillantes in fide, quaſi ſpe præſentiæ fraudati, cum ibi eſſe præſen-

sentia Christi impleta in viæ comitatu. *Quod Deus fidelis in impletione* promissionum, vt vix incipiat inchoari terminus, cum implet promissum. Ind. de Septuag. sub. 11.

2 *Factū est dum fabularentur, &c. & Iesus appropinquās ibat cū illis.* Peregrinos à patria, & viatores se exibebant, Christus quoq; peregrinº, & viator se illis ostēdit, vt inde sūpta occasione instrueret in mysterio & formaret eos in fide suauiº, & efficaciº. *Quod Deº se ingerit inclinationi*, & studio cuiusq; vt suauiter trahat ad se omnes. Ind. de Sāct. sub 26

3 *O stulti, & tardi corde ad credēdū in omnibus, quæ locuti sunt Prophetæ.* Angeli testimoniū peribent de vita glorioſſa, mulieres similiter testificantur se visionē Angelorū vidisse: Christus alias promisserat tertia die resurrecturū, & cum ista cohereant, adhuc tardi bacillāt, sanè digni sunt dura increpatione. *O stulti*, &c. Mysterium Resurrectionis arduum quidem ad credendum, sed quod tot tantisque probatur testimonijs, non credere, non leuitatis, potius tarditatis argueretur. *Quod re magni ponderis mira, & rara* repelli non debent, sed suscipi ex motiuis, & causis sufficientibus. Ind. de Christo sub. 1.

4 *Nonne oportuit pati Christū, & ita intrare in gloriā suam?* Immortale regnū existimati in Christo, dū mortalē passionē, & acerbam expendūt, fiduciā infirmant, & languidant, sed minus attēte, ideo eruditiūtur à Christo ex scriptura quod mors via ad vitā, & passiones ad gloriam. *Quod studio bonorum operum*, & laborum inquirenda est gloria, & dependenter à meritis triumphi. Ind. de septuag. sub. 35.

5 *Finxit se longius ire, &c. Mane nobiscum Domine, &c.* Peregrinū vident oculis, & Dominū appellant, fide satius euigilate de somno, cor ardens dicit præsentē. Ipse autē introducit absentiā. fingens se lōgius ire, vt ipū exigant præsentiam tanti Magistri, scripturarū expositoris, & inuitant admensam. suis sumptibus soluendā. Merito quidem, vt indigenti peregrino, & docto subsidium afferant. *Quod Deus largitus est hominibus* diuitias, vt in obsequium pauperis peregrini in occasione conuertantur. Ind. de Christo sub. 12 & 16.

6 *Cognouerunt in fractione panis.* Honesta, & temperata mensa discipulorum Christi, pretiosis, non referta dapibus, forte pane solo. Quod paucitas alimenti dispositio ad aperiendum occulos mentis, vt agnoscerent Christum. *Quod abstinendum est à cibo immoderato*, præsertim Ecclesiasticis, & religiosis. Inde Sams. sub. 5. 12. & 17.

7 *Euanuit ex oculis eorū.* Vbi se explicuit cognoscendus, & cognosci passus est, statim subito disparuit ex oculis eorū. Ad exēplum nostrum. *Quod prædicatores, & confessarij*, vbi ostenderint Deum per doctrinam, dispareant, nec se intromittant visitando præsertim fœminas doctrinæ deuotas. Inde de Christo sub 35.

LEC-

LECTVRA.

AD ILLVD SECVNDAE AD TIMOTH. III.

VERS. XVI.

Omnis Scriptura diuinitùs inspirata, vtilis est ad docendum, ad arguendū, ad corripiendum, ad erudiendum in iustitia, vt perfectus sit homo Dei ad omne opus bonum instructus.

DE

ARTE, ET METHODO EXPONENDI Sacram Scripturam.

OPERA

P. MAG. F. DIDACI DE BENAVIDES
Ordinis Carmelitarum.

IN ACADÆMIA COMPLVTENSI PRIMARII publici Sacræ Scripturæ interpretis.

Ab Anno 1645.

PRAELOQVIVM.

SACRAM Scripturam, immensum æquor, innauigabile prōrsus sine charta, quæ notet scopulos, & saxa minantia, cuius classis ad intuitū nautica flectat iter, aptè in sua Poæta, à quo præcautus statim ac à Regio Senatu mihi iniunctum interpretis munus, in ani-

mum induxi pro charta tyronibus artem istàm, & methodum prælibandam, qua optimi auditores instructi, facile possint pericula errandi vitare, Scillas, & Charibdes incolumes effugere. Deus optimus maximus, qui eduxit de seruitute Egyptiaca dilectũ sibi populũ, traduxit pede sicco per mare rubrum, & duxit in terram promissam, duce columna, per diem expansa in obumbraculum nubis, ad solis leuandos ardores, & per noctem transfigurata in facem accensam, ad noctis caliginem abigedam, vias, & semitas illuminandas: nos à seruitute ignorantiæ per peccatum inducti, suæ gratiæ luce ductrice eripiat, & per inuia, & difficilia Sacræ Scripturæ dirigat, & in finem optatum, in vestigandi assequendi, & exponendi sensum ab Spiritu Sancto intentum, inspiratũ, atque dictatum fœliciter, & fructuosse perducat.

De dignitate Sacræ Scripturæ innumeri congerunt Patres, & Doctores apud Serarium, Salmeronem, & Rua, & nouissimè apud Eusebium, Tirinum, & Cornelium insignes Iesuitas, nos breuiter ex Augustino, Scripturæ tanta est dignitas, quòd est principia conclusionum Theologiæ. Præstat enim principia, vnde discurrat Schola Theologorum, sine scriptura (ait) sine sole radius, sine fundamento domus, sine origine fluuius, sine semine proles, & tandem est Magistra ostendens imagines Dei, gratiæ, fidei, Virtutum, morum, beatitudinis, & felicitatis æternæ, & lucerna lucens in caliginoso loco, donec dies elucescat.

De vtilitate, & epitectis plura prædicti authores, quàm capiat nostra brebitas, præsertim cum ex dicendis sint ouia, quæ sunt maioris ponderis, & momenti.

De stilo, & modo procedendi duxi præmonendum, data opera omisisse Doctoralem, admisisse doctrinalem, per disputationes, & dubia vt possint assueti formæ Scholasticæ, facile assequi sensum, & expositionem Scripturæ, & per conclusiones dispositas cum fundamentis deprehendere, & retinere, & tandem iubari ad conclusiones quodlibeticas substineri solitas, inter actus, pro laurea Doctoratus in Academia obtinenda, & inde instrui ad altiora Sacræ Scripturæ indefessa studia capessenda.

(·.·)

Ad

Ad illud, *Omnis Scriptura Sacra, &c.*

DISPVTATIO I.

De essentia quidditate, & existentia Sacræ Scripturæ.

SAcra Scriptura, est subiectum in præsenti, de quo secundū se, & secundum varias habitudines, respectus, & connexiones, ad varia prædicata veniunt disquirenda, & examinanda, quæ in disputationibus, & dubijs huius lecturæ indagine examinamus, ad Thema præfixum, *omnis Scriptura Sacra*, &c.

DVBIVM I.

An sit aliquod Verbum Dei præter increatum, in tempore, quid Dei Verbum? & quotuplex? & an solum increatum sit vere Verbum Dei?

PRima conclusio asserit, *esse Verbum Dei præter increatum, quod sit nomine Verbi Dei dignum, nō vocales, & oracula fictorum Deorum.* Ita catholici, & suo modo gentiles, qui sic appellāt leges, & oracula idolorum, per quæ Dæmones loquebantur, ficta & existimata Deitate, iuxta Psal. 95. *Omnes dij gentium Dæmonia.* Dissidēt soli, qui dari Deum negant, & qui concepti Dei naturam, vt numen, constituunt in ligno, lapide, figuris mutis, & alijs, qui adhuc admittunt Verbum Dei ficti, propter dæmonis responsa, per illos prolata, vere fraudulenta, mendacia, & qui ignorant, quid sit loqui interiùs secum, aut exteriùs cum alijs, & qui ignorant posse formari aliquod Verbum sine lingua, & labijs corporalibus, & denique qui censent loqui posse; sed non dignari, nec velle cum creaturis aliquid cōmertij, aut negotij tractare, sed quod circa cardines Cœli perambulat, nec nostra cōsiderat, apud Iob 22.

Probatur prima conclusio ex Sacræ Scripturæ locis, in quibus dicitur, semel, aut pluries Deum loquutum, hęc dicit Dominus. loquutus est Dominus. Ad Moysen dicens, multifariam multisque modis olim, &c. Angelis, & hominibus loquutum, quæ indigitasse satis. Secundò, quia quamuis Deus sit expers corporis, sine lingua, & ore corporali, potest formari Verbum, quod sit signum indicans, & manifestans internum conceptum loquentis. Tertiò, nam sicut pater solet loqui cum filijs, & Dominus prædictus affabilitate cum famulis, & seruis, & non dedignatur habere comertium, & familiaritatem cum illis, ita Deus infinitè pius, & affabilis, pater misericors, humanus, & benignus Dominus gerit plura negotia cum creaturis, de quibus opportuit prēmoneri,

vt de eleuatione, & ordinatione in finem supernaturalem suis viribus altiorem, de mysterijs, &c. Vltimo contra gentiles, nam si illis dijs gentium, dæmonibus, verbũ voces, & oracula deferebantur, quantò potiori iure tribui debent verò Deo.

Secunda conclusio asserit *Verbum Dei esse, id omne, quod procedit ex ore Dei cum intentione significandi, in ratione, & modo loquutionis, siue ad homines, siue ad Angelos dirigatur, siue ante scriptionem, siue post*, ita præcitati potissimum contra eos, qui ausi sunt dicere, id solum esse Verbum Dei, quod Apostoli susceperũt immediatè ex ore Dei, & in scripturam, & tabulas retulerunt, & exararunt, acsi ante scriptionem, non præcessisset vllum verè Verbum Dei.

Probatur primo ex in numeris Scripturæ testimonijs, in quibus fertur, Deum fuisse loquutum, creaturis, Angelis, aut hominibus, vt cum initio mundi nascentis dicitur Genes. 1. *dixit Deus fiat lux, & facta est lux: fiat firmamentum, &c.* Et cum in paradiso loquutus est ad Adam, & Euam primos Parentes, & ad serpentem, aut Dæmonẽ, in ea insinuatum, & laruatum, &c. prius quàm esset vllus scriptor, qui redigeret ad Scripturam. Secundò contra assertes oppositum. Nam si Verbum Dei esset id solum, quod à Deo immediatè acceptum, reductũ est ad Scripturã, in priori ante scriptionem Scripturæ nõn esset verè Verbum Dei, quod legimus, factum Dei ad creaturas, Angelos, & primos pàrentes, & innumera dicta Prophetis, & sanctis hominibus, quæ non inueniuntur scripta, nec litteris mandata, nec plura dicta à Christo, quæ nõ sunt scripta in libro ab Apostolis, & Euangelistis, quod est delirium. Denique contra hæreticos Bezam Caluinum, & alios, qui instinctũ Spiritus Sancti, quo fideles ad fidem instigantur, imò illum Spiritum, quo ipsi aslari garriunt, & ineptè appellatur Verbum Dei, quandiu non scriptum affirmant, de quo latè apud Serarium, & præcitatos.

Tertia conclusio asserit *Verbum Dei creatum in tempore factum, diuidi posse multipliciter. in vniuersum, iuxta varios modos, sed in præsenti dupliciter: in scriptum, & non scriptum.* Ratio. Nam sub his membris comprehẽdi potest. Quidquid est vere Verbum Dei, à Deo factum immediatè perse, vel mediatè per Angelos, aut homines, inspirante Spiritu Sancto ante, aut post scripturas, siue priuata reuelatione alicui facta, siue publica communitati, vt traditiones ore tenus, non scriptę, iuxta Tridentinum sess. 4. siue publica, vt recipi, & credi debeant ab omnibus communitatis, vt quæ in Bibilijs probatis à Tridentino continentur, in quibus est verè Verbum Dei scriptum, & hinc Scriptura meritò dicitur Verbum

bum Dei, non vt cumque, sed scriptum de quo statim.

Quarta conclusio, ex dictis asserit, *quod non solum Verbum Dei increatum, & æternum sit verè, & propriè Verbum Dei, sed esse præter illud creatum, & temporale, quod sit vere Verbum Dei.* Ita præcitati contra contendentes, solùm dari Verbum Dei increatum, & æternum, & non esse sacram scripturam, imò decalogum proprie Verbum Dei, sed eius picturam, imò imperfectam, & licet Molina 1. parte q. 27. disp. 6. & 7. dicat, dici analogicè de increato, & creato, per attributionem creati ad increatum, tamè dicit creatum esse verè, & propriè Verbum Dei, sicut ens, quoduis ens accidentale, quamuis dicatur per attributionē ad ens principale substantiale.

Probatur primo ex sacrę Scripturæ locis, vbi vocari solet Verbum Dei Deuter. 4. *non addetis ad Verbum, quod vobis loquor*, & ita decalogus ibidem appellatur decem verba & 1. ad Thesal. 2. *cum accepissetis à nobis Verbum Dei, accepistis illud, non vt Verbum hominum, sed sicut est vere Verbum Dei.* Vltimo nam præter increatum Verbum, plurima loquutus est Deus, vt constat, & omnis prolatio, eloquutionis affirmatio, & negotio, vel si velis, terminus illius est verè, & propriè Verbum Dei.

DVBIVM II.

An sit, & quid sit sacra Scriptura, & an sit Verbum Dei scriptum?

RAtio dubitādi circa *an sit, est.* Primò, nam si daretur, diceretur sacra Scriptura, quidquid agit, & tractat de Deo, & ita scripta Magistri senten. S. Tho. PP. & omnium Doctorum, qui aliquid differunt de Deo, diceretur scriptura sacra, sed hoc non, quia deberent esse infallibilis veritatis, & certissimę auctoritatis fidei, quod est intolerabile absurdum. Secundò, nam Scriptura sacra, vel dicitur illa, quæ ab ipso Deo est immediate scripta, & exarata, vel ipso dictante scripta, per interpositos sacros scriptores, si primum, illa sola erit scriptura sacra, quæ digito Dei fuit olim scripta in tabulis Moysis, scilicet præcepta decalogi, & illa, quæ à Christo digito fuit scripta in terra, *qui sine peccato &c.* ad liberandam adulteram, & propulsandos acusatores, & si placet illa epistola, à Christo missa ad Agabarum Regem, apud Eusеb. lib. 1. cap. 13. & Carthusian. in vita Christi, & hoc non, quia admisso, præter hæc sunt aliæ scripturæ sacræ, per Apostolos, & Prophetas, aut, quæ Scriptæ sunt dictante Deo per sacros scriptores, & hoc non, quia scripta à Deo propria manu est vere Scriptura sacra, aut demum vtrumque, &

hoc non, nam præter ista sunt alia volumina (præter Bibliorum) quę olim sunt scripta, & iam non extant, sed citantur in Biblijs, vt dicemus, quæ vere fuere scriptura sacra. Confirm. primo. Nam Scriptura sacra veteris Testamenti videtur nunc non extare, sed perijsse in incendio Templi Hierosolimitani, cum alijs pertinentibus ad rem sacram, cum diruta, & euersa fuit ciuitas, & Israelitæ ducti sunt captiui in Babilonem, & ab illo reintegrata. Confirm secundò, nam non extant in lingua Hebræa, aut Syra, Christo, & Apostolis vernicula, & solùm noui Testamenti Euangeliorum, & epistolarum extant in Græca, vt videre est in volumine Bibliorum Sanctes pagnini, & aliorum, & dato quod extarent, mouerí solent difficultates, de integritate, incorruptibilitate, & mixtione, & alijs vitijs contractis perfidia Iudæorum, malitia, aut incuria typographorum, mitto qua lingua dictata, & an aprimæua in alias conuersa, & in plurimas versiones, sit verè Verbum Dei.

Ratio dubitandi circa *quid sit est*, quod sacra Scriptura non sit Verbum Dei scriptum. Primò, quia nihil est Verbum Dei verè, & propriè nisi increatum, immutabile, & æternum iuxta Isaiæ 40. *Verbum Dei manet in æternum*, sed id quod in charta, vel in membranis manet scriptum, non est ita, quia non viuit in se, nec est immutabile, sed mutationi obnoxium, vt comburi possit. Confirmatur, quia esset sapientia, & veritas Dei, sed sacra Scriptura non est sapientia, & veritas Dei, quia non viuit, non est vita, non manet in æternum, perire autem Verbum Dei pereunte Scriptura Bibliorum videtur inconueniens. Vltimo, nam si sacra Scriptura esset Verbum Dei, id esset respectu Angelorum, aut hominum, sed non est respectu Angelorum, qui scriptis non vtuntur, nec hominum saltem rusticorum, & literas ignorantium ergo.

Conclusio asserit, *de fide tenendum, dari Scripturam sacram, & quod sit signum mentis interioris, & verè Verbum Dei, non sub quauis ratione, sed scriptum, & dictatum ab Spiritu Sancto.* Ita Catholici contra Hereticos negantes apud Serarium, Rua, Trinum, & præcitatos. Pro ista, & dicendis attendi debet in sacra Scriptura habitudo varia, & multiplex, ex parte efficientis. Deus dictans, & sugerens rem, vel sententiam scribendam scriptori sacro, ex parte causæ materialis res scribenda, ordinis naturalis, aut supernaturalis, vt opificium creationis, opus iustificationis, redemptionis, glorificationis, &c. ex parte formalis, & differentialis ab ab alijs scripturis, dictatio, & assistentia Spiritus Sancti, & inde scriptura induit rationem ve-

rita

ritatis infallibilis, sine vlla ad mixtione falsitatis, quibus aliæ sunt obnoxiæ, & scatent pluribus, tandem ex parte finalis intentio dirigendi homines doctrina sacra ad finem optatum salutis æternæ, in quam dedit potestatem filios Dei fieri participes, & consortes diuinæ naturæ, & hæredes regni, quas omnes causas congesit Apostolus satis laconice in prę dicto testimonio, vt expendenti constabit, in proposito themate, in quod indagandum instituti scopus.

Probatur primo, nam Moyses in lege veteri, Christus, & Apostoli in noua, non semel remittunt auditores ad indaginem scripturæ sacræ, euoluendam, scrutandam, ad auspicanda diuina oracula, & expiscandam internam mentem Dei. Deuter. 17. Moyses, *si aliquid difficile, aut dubium esse perspexeris, vade ad Sacerdotes, & quæcumque erudierint te facies*, & Christus Ioann. 5. *scrutamini scripturas*, & ex illa probat aduentum, & missionem suam in mundum. Isaiæ 61. *Spiritus Domini super me, eo quod miserit me, ad annuntiandum mansuetis*; & Christi diuinitatem ex illo Psal. 109. *Sede à dextris, &c.* & Mar. 12. *Multa sunt in Psalmis, & Prophetis de me*, & Luc. 24. *interpretabatur discipulis euntibus in Emaus scripturas, quæ de ipso erant, incipiens à Moyse, & Prophetis.* Ergo extat Scriptura sacra.

Probatur secunda pars, nam Deus multifarie loqui fertur. Primò, ipso opere creationis, hac acceptione, ipsa rerum natura solet dici prima Scriptura Dei, & multiplices, & variæ rerum naturæ se habent veluti caracteres in orbe, indigitantes Dei secreta, per visibilia inuisibilia Dei, vt (non sine sale) cogitauit Eusebius in lib. 1. de Origine sacræ Scripturæ à cap. 2. Rursus secundò, verbis per se immediatè, aut ministerio Angelorum, Prophetarum, Apostolorum, &c. Tertio denique scriptis inspirante, & dictante Spiritu Sancto rem, aut sententiã, sed in priori modo ipsa rerũ natura est scriptum sine caracteribus, elingue, & mutum, sine arte, sine voce, quippe pro indoctis, & illiteratis, in secunda nulla est Scriptura, in tertia versatur institutum, quæ in rigore est, & veritate, scriptura sacra, nam hic institutum est de Verbo Dei exteriori, non vt cumque prolato, sed scripto, ad differentiam non scripti, vt traditionum, &c. Solent adduci pro triplici modo innumera sacræ Scripturæ testimonia, nobis pro breuitate sat ista. Pro. 1. Psal. 182. *cœli enarrant &c. & in omnem terram exiuit sonus, &c.* & ita Trimegistrus appellauit orbem, librum diuinitatis, in quo ipsa natura rerum sunt pro litteris, & caracteribus: Sanctus Basil. homil. 1. Examer. *Vniuersa mundi machina, est ac liber litteris exaratus.* Prou. 2. Psal. 44. *Lingua*

mea calamus scriba velociter scribentis, vt instrumentum Spiritus Sancti. 2. Reg. 23. *Spiritus Domini loquutus est per me, & sermo eius per linguam meam.* Luce 1. ait Zacharias, *sicut loquutus est per os Sanctorum*, & in Nizeno de Spiritu Sancto dicitur, *qui loquutus est per Prophetas*, & in nostro themate, *Spiritu Sancto inspirati loquuti sunt sancti Dei homines.* Denique Prob. 3. illud Ioan 5. *scrutamini scripturas*, & in themate *omnis scriptura sacra*, & similia, vbi est sermo de Verbo Dei scripto, qua ratione PP. non semel dicunt, quod sacra Scriptura, *est epistola Dei ad nos missa.* Cæterũ quamuis ipsa rerum natura, possit dici latè liber diuinitatis, à cuius specie specioſa potest creator eorum videri, iuxta Apostolum *inuisibilia Dei, &c.* est tamen valde imperfectus, & sine caracteribus, & mutus, pro indoctis, qui nesciunt artem figurandi caracteres, nec compaginare, ad concipiendum sensum. Deindè nam licet possit indicare, quæ ad vnitatem Dei pertinent, non, quæ ad Trinitatem. Vlteriùs nec inseruire in ordine ad indicandas res supernaturales, & finem, ad quem est eleuata ipsa natura rationalis, sed Verbum Dei inspiratum, & quasi ore prolatum in priori quam sit scriptũ, licet sit infallibilis veritatis, non tamen est Verbum scriptum, vt requiritur, vt sit Scriptura sacra, igitur Scriptura sacra est verè VerbũDei, non vt cumque, sed scriptũ, continens nõ sola opera, ordinis supernaturalis, iustificationis, & glorificationis, sed ordinis naturalis creationis, & conseruationis, verum, & innumera sub hac ratione contenta, historias, doctrinas, & omnia alia, pro varijs speciebus librorum.

Vltimo, nam cum genus humanum sit eleuatum ad finem supernaturalem, supra vires altiorem, ignotum, qui nec potuit in cor eius ascendere, opus fuit altiori notitia, vtilibus, & necessarijs medijs subeniri, ne in re tanti ponderis, & momenti destitueretur necessarijs, & in ignorantiæ caligine versaretur, sed fuit aptissimum, & vtilissimum Scriptura sacra, quæ continet veritatem infallibilem, omni certitudine fulcitam, face clarissima illuminantem, iuxta Psalmistam, *Lucerna pedibus meis verbum tuum, & lumen semitis meis*, & tandem affert paratissimum subsidium scripto suo ad memoriæ labilitatem, quæ facillima esset, si solo Verbo constitueretur, quo circa apte Apostolus Roman 15. *Quæcumque scripta sunt ad nostram doctrinam scripta sunt*, & iuxta thema assumptum, *omnis scriptura sacra, vtilis est ad docendum, &c. ad erudiendum hominem in iustitia.*

Respondetur *ad primam dubitandi*, hic nomine sacræ Scripturæ non accipi, aut intelligi, quamlibet Scrip-

Scripturã, quæ habet Deũ pro materia circa quam versatur, opinabiliter, verè, aut falsè, sed pro Verbo Dei scripto, dictato à Deo, siue manu propria, aut manu scriptoris sacri, amanuensis, decebat enim supremam maiestate scribere, nõ solum immediate per se, sed per interpositos amanuenses scripturam noui, & veteris testamenti, ne inficerentur ærrore, & veritas eius periculo vacillaret, cui periculo sũt obnaxia cætera scripta, extra Canonica, & sacra, quamtũuis Sanctissimi, & eminentissimi authoris, vt Augustini, S. Th. & aliorum.

Ad primã confirmationẽ, quod licet sit valde credibile, illud volumen Scripturæ Sacræ, quod in templo asseruabatur publicè igne, & incendio perijsse; non tamen alia exemplaria apud Sacerdotes, & Prophetas, quibus incumbebat seruare illæsa, vt apte Belar. lib. 2. de Verbo Dei c. 1. ex proprietate caracteris hebraici, mitto, quod quidam dicunt, dato casu quo Esdras retinens memoriter Scripturam, post captiuitatem spatio 40. dierum dictasse quinque viris, Spiritu Sancto aflatus, summa velocitate, quod acceperunt ex Basil. & alijs, id mihi certum. Quod præstitit Esdras, solùm fuisse redigere in vnum volumen libros sacros, & partes eorum, & in vitiatis, dilaceratis, incuria scribarum, vetustate temporum, correxisse, & ex memoria integrasse, eo quod Iudæi in captiuitate, non potuerunt admodum curare de in dem[illegible] Bibliorum.

Ad secundã confir. quòd solùm Euangelium Mathæi, & Epistola ad hebræos sit hæbraicè scripta, de quo Salmer. tom. 1. prologom. 25. ex lib. noui testamenti. Sed quid ad rem? hoc vel illo idiomate primo scripta originalia, si per seueret authenticum, vt nostra editio latina vulgata adeo acuratissimè ædita, quod potius ad illam recurrendum ad cotrectionem, vt ad probatiorem, & purgatiorem. Admitto admodum vtilem ad plura esse recursum ad originalia, quæ extant Hæbrea, & Græca de quo latiori calamo disputatione octaua de versionibus.

Ad rationem dubitandi circa *quid sit* negandum est antecedens, ad primam probationem, non est inconueniens, perire Verbũ Dei scriptum, quoad existentiam materialẽ, secùs quoad essentiã, & existentiam veritatis formalis, ad alteram probationem negãda minor.

DVBIVM III. ET VLT.

Qui libri sint, & quot, ex quibus Sacra Scriptura Bibliorum constat, qui Canonici, & authentici, & an contineant Verbum Dei?

COnclusio asserit, *in canonem, & cathalogum librorum, quibus constat volumen Bibliorum, esse admitten-*

dos

dos, & recenſendos ex veteri teſtamẽto, Pentateucum, cõplectens quinque libros Moyſis ſcilicet Geneſ. Exod. Leuit. Num. Deuter. Deinde intitulati Ioſue, Iudices, Ruth, quatuor Reg. duo Paralip, duo Eſdræ, Tobias, Iudic, Eſther, Iob, Pſalter, Proberu, Eccleſiaſtes, Cãtica, Sapientia, Eccleſiaſticus, 4. Prophetæ maiores, 12. minores duo Machabæorum: *ex nouo teſtamento*, qui ſunt inſcripti quatuor Euãgelia, Acta Apoſtolorũ, Epiſtolæ 14. Pauli, Ioan. 3. Petri duæ, Iacobi 1. Iudæ 1. & Apocalypſis, eſt fide certa apud Catholicos.

Probatur ex Trid. ſeſſ. 4. vbi anathematizatur, qui non ſuſceperit hos libros, cum omnibus ſuis partibus, vt Eccleſia ſuſcepit, & probauit vſu ſæculorum, in publicis lectionibus, diſputationibus, prædicationibus, expoſitionibus; vt nullus audeat repellere vllo prætextu. Et meritò ita definitum, nã hæc editio eſt omnium latinarum optima, nulla ita antiqua, magis viſitata, & laudata ab Eccleſia, & viris doctiſsimis, nulla maiori ſtudio, diligentia, ac peritia, ex varijs latinis, Hæbreis, & Græcis exẽplaribus collecta, & elaborata præcipuè à diuo Hieronymo, doctiſſimo, peritiſsimo, eruditione linguarum, fidiſsimo in regula fidei aſtruenda, cui tanti ponderis negotium commiſſum fœliciter, & gloriosè expediuit: an autẽ ex ſpeciali aſsiſtentia Spiritus Sancti dicendũ, cum aſsignemus diſcrimen inter ſcriptorẽ ſacrũ, & tranſcriptorẽ, an verò iſta auctoritas, & approbatio ſit tributa à Tridentino tantũ intra genus verſionis, diſputatione octaua, vbi in proprio loco fuſius.

Ad *diuinitus inſpirata*.

DISPVT. II.

De cauſa efficiente, principali, Sacræ Scripturæ authoritate, & veritate illius.

SAcra Scriptura dicit habitudinẽ eſſentialẽ (inter alias) ad infallibilẽ veritatẽ Dei, à qua habet ſibi deriuatam infallibilẽ veritatẽ, & ita cõueniens viſum eſt, de vtroque inſtituere diſputationem.

DVBIVM I.

Quis ſit author principalis Bibliorum?

COnclusio aſſerit, *quod Deus eſt principalis, & generalis, particularis verò, & inſtrumentalis homines, quibus vti dignatus eſt, vt manu, calamo inſtrumento.* Primo nam plurimum reffert ad veritatem, & conciliãdum aſſenſum, quis ſit author à quo dignitas, & certitudo infallibilis ſcripturæ, iuxta thema 2. ad Thim. 3. *diuinitus inſpirata*, author enim cẽſetur, qui dictat ſcripta, & Spi-

Spiritus Sanctus spirat, & dictat, scripturã sacrã. Secundò ex ibidẽ *Spiritu Sancto inspirati loquuti sunt Sancti Dei homines*, Sanctus Petrus voce, & scripto, alij multifariam multisque modis. Tertiò Gregor. præfatione in Iob *ipse scripsit, qui hæc scribenda dictauit qui, & operis inspirator extitit.* Quartò, & vltimo Moyses Prophetæ, &c. Dei fuere amanuenses ex Psal. 44. Dauid de se *lingua mea calamus scribæ, &c.*

DVBIVM II.

An Deum esse auctorem Bibliorum possit probari euidenter lumine naturali extra scripturam?

PRima conclusio, *non est per se euiden Deum esse authorem Bibliorum.* Primò quia licet esset Deũ loqui, non tamen dicta, & loquuta esse scripta, & litteris mandata, quia sine scripto, vt ab initio ad Moysem dicta sua cõseruare apud homines potuit, sicut à Christo ad primam scriptionem Euangeliorum. & vti calamo scriptorum vt suo motione immuni ab errore est supra vires naturæ.

Secunda conclusio, *non potest demonstrari Deum esse authorem Bibliorum argumentis lumine naturali notis.* Primò quia est vnum de principijs fidei, quibus sola fide damus assensum, non scientia, aut cognitione clara, quia supra vires naturæ eleuatum. Quod in sequitur Augustinus lib. de vtilitate credendi cap. 14. contra Manichæos arguens temeritatis, quod nihil dicebant credendum sine ratione clara, & euidenti, quæ scientiam euidentem generaret, & ait Christiani non sunt, si negant Christo credendum, nisi addita fuerit indubitata ratio, natura enim viribus proprijs non elicit demonstrationem nisi obiecti intra, non supra vires. Secundò ex diuo Tho. prima parte. q. 1. art. 8. vbi recenset scripturam inter principia Theologiæ fide admittenda, non quæ natura suis viribus, sine reuelatione assequi potest.

Tertia, & vltima cõclusio *potest probari, optimis, & claris rationibus, quod Deus sit Author Bibliorum, illud esse prudenter credibile, & merito ab omnibus suscipiendum.* Primo nam ita solet probari nostra fides, & Christiana religio, ita hoc eius principium & motiua fidei solent vocari rationes assentiendi, semel propositis mysterijs fidei, & ita semel proposito, quod Deus sit author Bibliorum, non desunt incitamenta & adminicula ad id prudenter credendum; & quanta sit vis eorum nouit satis Theologus in materia de fide.

DVBIVM III.

An Deum esse authorem Bibliorum possit, & debeat probari, aliunde, quam ex scriptura?

Conclusio asserit, *quod possit, & debeat probari, non solũ ex scriptura, sed etiã aliunde.* Primò, nã si solũ ex scripturis, videbitur testimoniũ infirmum, vt domesticum. Secundò nam authoritas, & fides, ex quibus id probatur eget, & debet prius probari. Tertiò nam plures iactãtur, à Deo esse quosdã libros conscriptos, cum vere non sint, vt de Alcoramo, & similibus. Quartò nam Christiani obiurgãt Turcas, quod nõ possint probare Alcoramum esse à Deo authore, vt ipsi inaniter gloriantur. Quintò quia plurimi negant Deum esse authorem etnici, hæretici, qui contemnunt authoritatem scripturæ, & ita aliunde contra eos est probandum. Sextò quia quidam dubitant de hac re apud Caluinum lib. 1. institut. c. 7. Septimòquia quidam optãt, hoc ipsum sibi probari probatione petita extra scripturam. Vltimo quia quidam existimãt in suo sensu aliquas partes Bibliorũ falsas, & consequenter ineptas ad inducendam probationem efficacem, & ita aliunde petendam vt Iob. Iudic. Ester, &c. contra quos Bellar. c. 1. contr. 1. & alij.

DVBIVM IIII.

Quibus rationibus possit probari aliunde, quam ex Scriptura, Deum esse authorem Bibliorum, esse prudenter credibile, & merito credendum?

Conclusio asserit *pluribus, & aptissimis, in probatione subijcien dis, &* cõtra hæreticos, qui interiorem spiritum solum admittunt, vt respuunt, probare omnes rationes assentiendi, & motiua credibilitatis innixi in illo Ioan. 6. *Nemo potest venire ad me nisi pater traxerit* & c. 12. *nisi ei datum fuerit à Patre* & 1. Corint. 12. *nemo potest dicere Dominus Iesus nisi in Spiritu Sancto*, quia sine interiori instinctu, motu, & testimonio, non est argumentum efficax, cũ reuera in eo sint decepti, & illud argumentũ non sit euidens, quod non reddit res fidei euidenter credibiles, & ita est probandũ Deum esse Authorẽ, argumentis, & rationibus, quibus id fiat prudẽter credibile, & non solis generalibus, quibus solet probari mysteria fidei nostræ Christianæ religionis esse euidenter credibilia (in lectura nostra de fide) sed magis specialibus, & proprijs, pro scriptura vt sequentibus.

Prima ratio est petita ex materia Bibliorum, quæ digna est Deo authore, nam cum sit author naturalium, & supernaturalium

ralium meritò æstimandus est author libri, & voluminis continentis legem, quod proponit mysteria supernaturalia, quibus natura eleuatur, & perficitur, qui liber, licèt habeat plura supra naturam, & rationem, non contra, sed satis consona, vt Deum esse vltimum finem, & ad ipsum omnia referenda. *Diliges Dominum Deum tuũ*, & alia practicabilia in salutem. Deinde quòd speculatiua continet Dei perfectiones, & attributa digna Deo, quæ ab ipso relegant infideles. Deinde continet prædictiones futurorum, quæ probatæ sunt per euentus, quæ maximè commendant Dei diuinitatem, vt Genes. 49. de principatu, & regno Iudæorum. Ieremiæ 3. de 70. annis captiuitatis, & libertate per Cyrum edicto publico, & similia, quæ à solo Deo poterant prænunciari; antequam fierent, & ex impletione illorum, potest prudens certificari de authore, & alia similiter impleda de dilatatione Ecclesiæ, de fine mũdi, supplicio, & præmio reddendis.

Secunda ratio est petenda, à causa efficiente, secundaria, ac particulari. Nam qui scripserunt Scripturam Bibliorum, aut fuere boni, aut mali, si boni, non possunt sibi attribuere, quæ propria Dei sunt, si mali non poterunt ita verè, & seriò prohibere, & punire malum, & in veritate præcipere, & præmiare bonum. Deinde si ipsi sunt authores, qui inscribũtur, cum sint viri Sancti, & serui Dei verisimile est scripsisse in rei veritate, quæ dicunt se accepisse à Deo, & ita ingenuè scripserunt suas & sui generis virtutes, & labes iuxta instructionem, & motionem Dei, vt Moyses de se, quod esset mitissimus virorũ, Iob quod esset vir simplex, iustus, & timens Deum, Moyses Genes. 48. de Leui suæ stirpis aliqua cum dedecore generis, & fratre Aaron fabricationem vituli, de sorore murmurationem, & diuinam punitionem memorauit. Deindè in scriptis detestatur mendacium, & fit exhortatio certandi pro veritate ad mortẽ, & nõ fit verisimile. Quod cum in illis dicitur *Hæc dicit Dominus* dicant mendacium *cum Dominus non sit loquutus*. Nec valet dicere non mentiri, sed falli, quia si asseuerarent, quæ non satis habent explorata, licet possent excusari à mendacio, quod difficile in asseuratione, nullo modo à temeritate, &c. Cæterum si dicatur, non esse authores, licet intitulentur, sed alios, si nostræ religionis cur essent mentiti, qui damnant mendacium, & quo prætextu assummerent alia nomina, ad decipiendam posteritatem cum Deo potiùs, quam sibi tribuatur mendacium, si verò non sint catholicę religionis, cur tantoperè commendarent illam, & improbarent oppositam.

Tertia ratio petita est à modõ scriptionis Bibliorum, & mira cõ

cor-

cordia inter ipsa, adhuc in rebus vniuersis consensio, ergo inter huiusmodi scriptores tãto tempore, & loco disitos signum est originaliter esse vnum authorẽ, & causam supremam dictatricem, & directricem omniũ, ad idem vniformiter scribendum, & sentiendum, quin vnus declinet ab alio vel latum vnguẽ, & prioris erroré carpat posterior. Accedit efficacitas in verbis simplicibus, sine linito colore, stilo rethorico, vllo ornatu; sed simplici Verbo spiritus efficacia, sine omni sophistica argumentatione res fidei astruitur, & historiæ simplici narratione, *in principio creauit Deus, &c. Missus est Angelus Gabriel à Deo, &c. Verbum caro factum est*, &c. Ita vt maxima eius efficacitas, nulli rei creatæ nisi Deo, merito sit tribuenda, iuxta Apostolum 1. Corint. 2. *non in sublimitate sermonis*, &c. *non in persuasibilibus humanæ sapientiæ verbis, sed in ostensione spiritus.*

Quarta ratio petita est à circunstantijs, quæ mirè suadent Scripturam Bibliorum esse solius Dei opus. Primò, tot conuertisse ad se barbaras regiones, tot adduxisse sine eloquentiæ apparatu fucatis coloribus, rebelles voluntates, potissimum per doctrinam adversariam delitijs, & voluptatibus carnis, & ad altiora Spiritus exhortantem. Tertiò induxisse sinceritatem, & innocẽtiam vitę, Angelicos mores, relegasse, & auulsisse vitia in animo nimis radicata. Quartò introductam fuisse doctrinã per viros humiles, & obscuros non ornatos eloquentia, potentia, opibus, quę recipit, & amplectitur orbis. Quintò sibi conciliasse authoritatẽ, & venerationem prę tot miliaribus librorum in vniuerso. Sextò ad se rapuisse studiũ tot doctissimorum virorũ diuersæ sortis, & dignitatis diuersæ occupationis, & instituti. Septimò in tam ingenti multitudine indagantiũ veritatem, & requirentium precibus à Deo, nec inueniisse vllam falsitatẽ, aut errorem, inconsequentiã, aut discordiam, potiùs aduertisse astitisse diuinã prouidẽtiam. Octauò, opprimi non potuisse tot calumnijs, tot sophismatibus, hostilibus de prauationibus, infestissimis calumnijs. Nonò, euasisse incẽdia temerè intentata à Tyrannis, vt ab Antiocho 1. Macab. 1. & à Diocletiano apud Baton. tom. 2. Vltimò viguisse, & conseruata fuisse magna exparte, etiã apud hostes Christianæ religionis, Iudæos, hæreticos, &c. quod insequitur August. 11. de ciuit. cap. 1. & 3.

Quinta ratio est petita à comparatione cum alijs scriptis, & voluminibus. Pręstat enim omnibus, veritate, infallibilitate, certitudine, quod hìc, nec leuis falsitas, nec quid aduersũ rationi, sicut in alijs præsertim alterius religionis, vt demostrant plura contra Alcoramũ Turcarũ, & Hęreticorũ Bibliothecas, nec in hijs Biblijs res, aut sententia expunctione digna, præter

eâ quæ irrepsisse constat ignauia transcriptorum, odio, & malitia hostium, quibus indies corrigẽdis inuigilat (vt è specula) Ecclesia.

Sexta ratio petita est à testimonijs, quibus sacri codices habere Deũ pro authore suadetur vario, & diuerso genere. Primò eorũ, qui his libris adhæserunt, quos prius respuebant. Secundò eorũ martyrũ, qui suo sanguine protestarunt in his libris diuinã doctrinam esse contentam. Tertiò eorũ, qui voluerunt mori potiùs, quã tradi sacros codices Gẽtilib⁹, apud Euseb. lib. 8. historię c. 3. Quartò Dei, qui istos libros esse diuinos, monstrauit miraculis, supra vires naturæ, diuinum manifestantem, & illis, vt ore loquẽtem, & illis, vt subscriptione roborantẽ, vt in patratis per ipsos scriptores in præsentia infidelium, vt à Moyse, Iosue, Petro, Paulo, & alijs, imò in patratis à Deo, primũ, quod septuaginta interpretes vniformiter, quasi vno ore transtulerint, & tam breui periodo temporis. Secundò, quòd iussa exuri cum essent Biblia, sereno Cœlo imber ingens lapsus extinxit ignem. Tertiò quod ad aspectũ Euangeliorum extinctũ fuit incendium Constantinopoli. Quartò, quòd volumen Euangeliorum in flamam iniectum, non arserit; sed illæsum euaserit. Quintò, quod in præsentia Euangeliorum sint dæmones fugati, de quibus præcitati, & fusiùs Serarius.

Vltimum testimonium suadens, Deum esse authorem sacræ scripturæ Bibliorum petitum est ab inimicis, & hostibus fidei Iudæis, qui vetus testamentum venerantur, vt diuinum, & fortè ob hoc non sunt extincti omnino, vt crimen Christicidij potustulabat, & hac ratione sunt appellati à Patribus Capsarij, & custodes, & vẽditores librorum, qui cum huc, illucque vehãt, non fiunt doctiores, deinde Turci in Alchorano laudant vtrumque testamentũ, & hæretici admittunt vt diuinum, licet ad deprauatos sensus retorqueant. Denique Ethnici, quatenus ex illis sunt suffurati plura, de quo præcitati, & ex Scholasticis plures agentes de argumentis credibilitatis rerũ fidei.

DVBIVM V.

Quomodo Deus dictauerit Biblia sacra.

COnclusio asserit *quod infundẽdo in mentes scriptorum species in fassas rerũ scribendarum.* Ratio, nam homines dictãtes alijs solent duo præstare. Primò, iniciũt voces in aurem. Secundò, indicant quę scribi volunt, id priùs est dictare propriè, posteriùs verò pertinet ad transcribendũ præostẽsum. Deus igitur per id propriè dicitur dictasse, quod iniecerit species immẽtes scriptorum, dum vel ostendit imagines, vt ostendit manum in superficiè parietis Balthasari, boues pingues, & macilentas Pharaoni,

&

& hoc minùs prōpriè, quæ licet eſsēt diuinæ loquutiones per ſymbola, & imagines, tamen erant mutæ ſine interprete, & minùs aptæ, vt mens loquentis manifeſtaretur, & ab audiente, in quem erāt directæ perciperentur, & ita infudit ſpecies imaginum, & rationem ſigni connexionem habentis cum re ſignificata Prophetæ, aut interpreti, nam videns ſolas imagines prophetales non erit propheta ni ſi habeat ſpeciem illius ſigni, & connexionis cū re ſignificata, præſenti, præterita, aut futura.

DVBIVM. VI.

Quomodo Deus ſit author Bibliorum?

COnclusio aſſerit *Deus potuit immediatè per ſe ipſum vniuerſam ſcripturam, ſic tamen non ſcripſit, ſed per homines ſcriptores, quibus dictauit prædicto modo res, aut ſententias ſcribendas.* Primo. Quia potuit imperio voluntatis efficacis lineare, & effigiare figuras literarum, ſicut efficit alias creaturas. Illud autem Exod. 31. *quod digito ſcripſit decalogū in tabulis* lapideis Moyſis, poteſt intelligi minùs propriè, & methaphoricè ſicut habere digitos manus, oculos corpus, &c. & ita aptius dicitur ſcripſiſſe digito ſuo, quia per Angelos miniſtros ſuos, & ita aptiùs dicitur id per Angelos immediatè operatum, ſicut per Moyſſem, Matheum, & alios ſcriptōres ipſorum ſcripta. Nam ſicut apud homines arguit dignitatem ſcribere per ſecretarios, notarios, & amanuenſes, ita decebat diuinum numen, maieſtatem ſupremam, dictare per ſe, ſcribere tamen per alios, cum quo ſtat, quod ipſe ſit author, ſicut autor libri, qui ſcripſit per amanuenſes, ſicut facere dicimus, quæ per amicos, aut miniſtros facimus.

DVBIVM VII.

Qua ratione Deus afficiat Sacris Scripturis mentem, voluntatem, & manum?

COnclusio aſſerit *de mente, & intellectu, quod variis modis.* Primò. Nam Deus poteſt immediate infundere lumen, aut imprimere ſpecies nouas rerum ſcribendarum in intellectum, aut mediatè, immutando ſenſus interneos per imagines, ſpecies nouas, aut veteres, ſic vel ſic ordinando, diſponendo, coniungendo, vt ad intentum conferant, vt ſæpe in prophetis *in ſomno apparebo eis*, aut immutando ſenſus externos, vt viſum, vel auditum, obijciendo imagines, vel formando voces, vt Chriſtus Paulo act. 9. cum igitur illuminet Deus, intellectum ſcriptoris lumine, & ſpeciebus, aut etiam habitu, vt virtute veritatis, aut habitu luminis prophetici (ſi diſtinguitur ab ſpeciebus) ſit propriè tunc reuelatio, quando res velate, aut ocul-

ōcultæ, patefiunt aut si antea congenitæ, vt actio, aut alio modo, vt inseruiunt prescripto primi authoris, vt non solùm speculatiuè perficiantur, sed practicè, vt cùm dicitur illud fore scribendū, licet contingere possit, non dari tantā lucem, & illuminationē, cùm præter species impressas, imagines, aut sonos, intelligatur significatio, quòd facilè euenire solet, vt si imperito dictantur verba latina, aut hebrea. Cæterùm si à Deo non imprimantur species intellectui, aut sensib°, aut fiat ignoti reuelatio, sed scriptor aliquid scriberet ex se, quod à Deo nō esset dictatū, propriè, licèt Deus testaretur, id esse verū, non censaretur esse à Deo authore, vt Scriatura sacra, licèt optimè approbata, nisi latiori significatione sumpta dictione pro quauis approbatione.

Secunda conclusio, *Deus afficit voluntatē scriptoris mouendo illam, vel per habitum virtutis veritatis, vel per auxilium actuale, quoaptatur ad scribendum benè, & fideliter ne vnum pro altero scribat*, quæ *affectio dicitur motio incitatio, & etiam inspiratio* à quiquidā ad illud 2. Petri 1. *Spiritu Sancto inspirati loquuti sunt Sancti Dei homines.*

Tertia conclusio, *Deus sic afficit manū scriptoris, & si non per habitum saltim per assistentiam, & concursum, quo dicatur eam tenere, & mouere, vt rem dictatam scribat, & exaret fideliter, ne rem vnam pro alia, litteram pro littera, verbum pro verbo, quibus conficiatur diuersus ab intento.* Ratio, nam Deo facilè est per omnipotētiam, sicut, & imprimere motū rei animatæ, aut inanimatæ.

An autem per se ipsam immediatè omnia illa perficiat in mente, voluntate, & manu scriptoris, an interposito ministerio Angelorum? Dico immediatè fieri, quæ imprimuntur in mente, & voluntate scriptorum. Primò, nam Deus facilè potest immediatè per se ipsum infundere habitus, spirituales inspirationes, & illuminationes excitare, & imprimere species rei scribendæ. His consonat sententia, quæ admittit Dei illapsum cum his possentijs spiritualibus, ea autē quæ fiunt in sensibus immediatè fieri per Angelos est admodū credibile, per quæ mediate fieri potest aliquid eorum, quæ contingunt in intellectu, & sæpè fecisse probant loquutionxs factæ Danieli cap. 10. idem de Zachariæ 1. & Apocalyp. 1. &c.

DVBIVM VIII.

An scriptores sacri Biblici scripserint liberè, an arreptitiæ correpti, & coacti?

RAtio dubitandi, nam Gregorius dicit instar calami scripsere, cùm vsurpatur à scriptore, quod inanimè sine motu proprio, sed alieno scribit. Secundò, quia illis tanta necessitas imponebatur à spiritu Sancto, vt in arbitrio nō

esset aliter scribere, aut non scribere. Tertiò, si libertati Moyses relinqueretur nō scriberet de se Num. 12. *Erat vir mitissimus.* Idē de Iob. *erat vir simplex rectus, & timens Deum*, & idem de alijs, qui de se, suis moribus, generis sui laudabilia, aut indecora scripserunt.

Conclusio asserit, *quod non arreptitiè, sed voluntariè, & liberè.* Est cōmunis. Primò, quia Deus vsus est illis, vt instrumentis animatis rationalibus, & humano modo, vt liberè agant sibi dictata. Secundò, nam si arreptitie, inuoluntarij, & coacti, nihil meriti esset in scribendo, aut loquēdo Prophetas, Apostolos. Vltimò, nam licèt in receptione rei scribendæ, & receptione specierum non fuerint liberi, sed fierent in illis sine illis liberè concurrentibus, tamen liberi fuerunt in vsu, inspiratio autem directio, & illuminatio, cohærent optimè cum arbitrio.

Respond. ad primū, non tenere exemplum in inanimitate, sed in motione ab alio, scilicet Spiritus Sancti. Ad secundum significari diuini influxus copiam, non eripi libertatem, sed componi cum efficacitate. Ad tertium libertati dicitur relictus, eo quod non est impositum præceptum, vis, aut coactio, non quia nō impulsus, cui cohæreret libertas, sicut Iobo, & alijs, in eo enim se habuit Spiritus Sanctus, sicut in humanis dictator cum amanuense, qui liberè ita scribit, quod posit si velit cessare.

DVBIVM IX.

An sacra Scriptura sit dictata ab Spiritu Sancto, & requirat assistentiam illius?

Conclusio, *est indubitatum Catholicis, non solùm Deum esse authorem principalem sacræ Scripturæ, & dictatorem, sed tribui inter personas diuinas specialiter Spiritui Sancto.* Quod hìc statuendum. Plurimum enim refert ad firmandum assensum, scire quis sit author Scripturæ, quæ est admitenda, qua virtute, scientia, & bonitate sit ornatus, & hoc est solidum fundamentum, cui innititur, sicut fides, doctrina sacra.

Primò ex instituto themate Apostoli, *omnis doctrina diuinitus inspirata, &c.* cui similia sunt alia innumera in sacra Sriptura 2. Petri 1. *Spiritu Sancto inspirati loquuti sunt sancti Dei homines*, & ibidem, *omnis prophetia scripturæ propria interpretatione non fit*, nam priuata scientia sciri non possunt rerum futurarum vaticinia, quidquid de præsentibus, & præteritis Ezechielis 1. *vbi erat impetus spiritus illuc gradiebantur.* Vbi sensus est agi ab Spiritu Sancto in scribendo scriptores, siuè sint prophetæ, siuè Euangelistæ Psal. 84. *audiam, quid loquatur in me Dominus Deus*: Psalm. 67. *Dominus dabit verbum Euangelizantibus*: Psalm. 44. *Lingua mea calamus scribæ*, scilicèt Spiritus Sancti, à quo

à quo accepit verba, vt à dictatore amanuensis. Lucæ 1. *sicut loquutus est per os Sanctorum.* Matthæi 10. *Non enim vos estis, qui loquimini, sed spiritus Patris vestri.* Et Matthæi 16. *Caro, & sanguis non reuelauit tibi*, sed, &c. Ex quibus constat Deo tribui, sed frequentius Spiritui Sancto.

Secundò probatur, ratione deducta ex sacra Scriptura, nam eum Deus creaturam, ratione præditam, eleuauerit ad finem supernaturalem, à sensu, & ingenio remotissimum, vt Isaiæ 64. dicatur, *nec oculus vidit, nec aures audiuit Deus absque te, quæ præparasti expectantibus te.* Vbi ponitur auditus, quia est disciplinæ sensus, & 1. ad Thimotheum 6. *Lucem habitat inaccessibilem*, opus fuit reuelatione, qua sit assequuta notitia rei salutaris, supra vires, quã illis nõ immitens, nec odorari, nec coniectari satis posset, & in ignorantiæ tenebris, & caligine semper versaretur, nam licet lumine naturæ assequi posset, quæ pertinent ad vnitatem Dei, non quæ ad Trinitatem, & supernaturalitatem.

Arguitur contra primam, nam si libri Bibliorum essent dictati à Spiritu Sancto, esset stilus idem, & similis in omnibus, & modus dicendi, phrases, & caracteres, sed sunt dissimiles, & vna, & eadem historia, & doctrina, solet repeti in diuersis libris diuerso tenore verborum, & diuerso modo, imò pluries, quam fieret ab vno authore, vt historia seruitutis in Egypto, captiuitatis in Babilonia, res gestæ Dauidis, & aliorum in Exodo. Numeris, Psalmis, libris Regũ, Prophetis, &c. ergo nõ est dictata ab Spiritu Sancto.

Respond. dictasse rem, & sententiam, & reliquisse reliqua stilo, & modo scriptorum, phrasi, & idiomati cuiuslibet, pro modulo suo: sicut scriba doctus, qui vtitur diuersis calamis, varie temperatis, ad figurandas litteras maiores, & minores, & sub varijs formulis, quòd non tollit vnitatem dictatoris, nec derogat immutabilitatem sententiarum.

Arguitur secundò, nam si essent ab Spiritu Sancto dictata sacra volumina Bibliorum, non esset in eis vlla inconsequentia, contradictio, aut antilogia in varijs libris, & sunt penè innumera, quæ plures antiqui, & moderni congesserunt in aceruum, & nouissime Tirinus tom. 3. indice 4. antilogiarum, ex Augustino, & alijs ferè 1450. ex quibus vnum in exemplum. Micheæ 5. *& tu Bethleem Ephrata paruulus es, &c.* Matthæi verò 2. *& tu Bethleem, nequaquam minima es*, vbi videtur contradictio inter Prophetam, & Euangelistam, quòd videtur obstare, ne scriptura habeatur sacra, & dictata ab Spiritu Sancto.

Respond. re ipsa in his locis, nõ esse vllam contradictionem in sensu, sed in verbis, antilogia autem,

quæ est contradictio, quoad apparientiam, veritati non obstat, nam redigi possunt in concordiam, facilè, vt ibi à Tirino, illud allegatũ sic conciliatur, quod cùm dicitur Bethlehem parua, intelligatur ambitu murorum, cùm verò, quod ne quaquam minima est, sed magna, intelligatur, inde oriundo, alumno Christo, nam excellentes ex aliquo genere, familia ciuitate, collegio, aut religione, magnificant originem fontalem originariam.

Arguitur vltimò, nam si essent dictati ab Spiritu Sancto scripta essent ipso mouente, & ex intimo motiuo suo ab scriptura, sed Euãgelistæ exararunt sua Euangelia ex alijs causis, & motiuis, nam Eusebius Cæsarienſis lib. 3. c. 24. dicit de Matthæo scripsisse Euangelium, vt relinqueret Indæis, quib⁹ prædicauerat, quia volebat transire ad gentes, & lib. 2. c. 15. ait de Marco, quod non tua sponte, sed iussus à Petro, & compulsus à Romanis, & lib. 3. dicit de Luca scripsisse, quia vidit scripsisse quondã de Christo plura sibi ignota, & à veritate aliena. Denique inquit de Ioanne, quod non sponte, sed rogatus ab Episcopis Asiæ scripsit aduersus errores Ebionitarum.

Resp. nihil concludit, quia spiritus impellebat per illa motiua, & per illas extrinsecas occasiones, interius ministrãdo scriptori rem, & sententiam, sicut interna gratia, ex motiuis externis solet mouere ad pœnitentiam. An autem sine tali motione possit scribi aliqua pars historiæ, aliàs visa ab scriptore sacro, vel requiratur, vt habeatur sacra statim.

DVBIVM X.

An sufficiat impulsus propriæ voluntatis ad scribendam Scripturam Sacram, an sit requisita motio, & impulsus Spiritus Sancti?

CONclusio asserit, *quod non sufficiat impulsus proprius, & interna motio priuata, sed requiri impulsum, & motionem Spiritus Sancti mouentis.* Est communis.

Primò ex prælibatis testimonijs dubio præcedẽti, quibus probatum est, Deum esse authorem, inspiratorem, motorem, & dictatorem: præsertim illis, *diuinitus inspirata*, vbi *erat impetus spiritus, &c. Spiritu Sancto inspirati, &c. non voluntate humana allata est prophetia, &c.* Secundò, ratione ex his deducta, nam sicut Magister mouet manum pueri ad figurandas litteras, & caracteres pro arbitrio ex arte, ita vt sine motione, & ductu illius non sufficeret impulsus pueri, ita non sufficeret impulsus, & connatus scriptoris ad scribendas veritates, ex arte infallibili Spiritus Sancti, & ita insinuauit Regius vates, *lingua mea calamus scribæ*, ex directione Rectoris, &c. Vltimò, nam cum veritas

tas sacræ Scripturæ sit certa, & infallibilis debet dicere habitudinem, & ordinem essentialem, aut inseparabilem ad artem, & regulam infallibilem, & indefectibilé, sed illa est motio, & impulsus Spiritus Sancti, non voluntatis creatę fallibilis, & defectibilis, nam ad, id est insuficiens, & inepta omnino ergo.

Arguitur pro parte opposita, nam in sacra Scriptura sunt aliqua parui ponderis, & momenti ad quæ non videtur insufficiens motio, & impulsio voluntatis humanæ, sicut esset ad veritates grauis põderis, & momenti, vt mysterij supernaturalis, eo quod nõ omnes veritates sunt æquales dignitate, vt Tobiæ 6. *canem blandi esse cauda* primò ad Timotheum 5. consilium sumendi modicũ vinum, aliæ verò dignitatis supernaturalis. Vt Mathæi vltimò *Deũ esse trinum, & vnum.* Secundò nam plura narrantur lasciua, & obscœna, ad quæ videtur indecens impellere Spiritum Sãctum Genes. 34. stuprum Thamar Genes. 39. solicitatio Ioseph ad lasciua ab vxore Putiphar. 2. Reg. 11. adulterium Dauid cum Bersabe, vxore Vriæ, & Spiritus Sanctus potius impelleret ad silentium, quam scriptionem, & recordationem, ne virorum huiusmodi deliquia scripto perpetuarentur in memoria mortalium, vel ne alij illorum exemplo incitarentur ad similia. Tertiò nam imbecilitas, infirmitas, & fatigabilitas voluntatis humanæ non posset diu sustinere agi, & moueri, à Spiritu Sancto in conficiendis, & exarandis tot scripturis contentis in volumine Bibliorum.

Respondetur ad primũ omnes veritates esse æquales formaliter, quidquid sit subiectiuè, nam veritas consistit in indiuisibili adæquatè cum obiecto, idem de infallibilitate illarum in ordine ad dictãté, esse æquales, qñidquid sit subiectiuè, vt latius in materia de Trinitate in dubio, an procedat verbum ex cognitione possibilium, vbi de veritate, necessitate, certitudine, & falsitate, vna enim propositio non est verior alia, quia veritas consistit in adæquatione cũ obiecto indiuisibiliter, & excludit inadæquationem, potest tamen vna propositio esse magis falsa quam alia, si habeat latitudinem obiectiuam, vt quæ asserit, quòd personæ Trinitatis sunt octo magis, quam, quæ asserit esse quatuor, quia prior magis distat ab obiecto, dum deficit quinta parte, & altera deficiat vna, certitudo autem sumnitur à principio determinante ad cognitionem obiecti, vt est in se, & ita potest vna esse certior alia pro exigentia principij, & cum in præsenti principium sit dictatio infallibilis Spiritus Sancti, reddit scripturam omnino certam, & excludit omnem incertitudinem, sicut necessarium in essendo excludit omnem contingentiam, vt vna neces-

sitas in essendo non sit maior alia. Ad secundũ scribi propter nostras plures vtilitates ex illis occasionatas, vt quòd sit fugienda incontinentia, quòd sit vitanda familiaritas fœminarum, quod ex illis glorioſos educit victores, pœnitẽtes, victos, &c. non verò sunt scripta ad inducẽndũ nobis noxia, quæ in de scaturiri possunt, ex vsu prauo nostro. Ad tertiũ Deo facile præstare vires fragilitati potẽtiarum, quibus vtitur ad scriptionẽ, & suauiter stimulat ad laborem, vt det indutias ad quietem, & vtatur nõ vno solo scriptore, sed pluribus, ad plures libros Bibliorum.

DVBIVM XI.

An sit necessaria reuelatio ad scribendam scripturam sacram, & an talis esse possit sine vlla reuelatione, vt sufficiat motio, & directio Spiritus Sancti?

CONclusio asserit, *sine reuelatione scribi posse scripturam sacrã, & non fuisse semper necessariam reuelationem, manifestantem ignotum, sed sufficit motio, directio, & instinctum, ex assistentia Spiritus Sancti.* Est cõmunis. Primò, nam sine reuelatione potuerunt exarari multa, & de facto sunt exarata, quæ erant aliun de nota scriptori sacro, hac ratione Moyses, licet plura sibi aliàs ignota didicerit, & scripserit ex reuelatione, vt cœli, terræ, Adæ creationem, Euæ formationem, scripsit etiam, quæ vidit sibi nota, præcisſa reuelatione, vt transitum Maris Rubri, ducatum columnæ nubis, & ignis, manfiones in deserto, & alia plurima, quorum fuit testis occulatus. Similiter Euangelista Ioannes cap. 19. *Qui vidit testimonium perhibuit*, vt assistens cruci, quod ex latere Christi, *exiuit sanguis, & aqua*, &c. Similiter Lucas in actis Apostolorum scripsit plura, quæ vidit, vt aliquorum fuerit testis occulatus, aliorum hauritus. Secundò, nam non omnis veritas scripta secundùm se à quouis authore, Aristotele, aut alio, habetur eo ipso, vt sacra, quantumuis sit conexa cum obiecti existentia, ab eo, quod res est, vel non est, propositio dicitur vera, vel falsa, sed vlterius induere debet ex principio certitudinem, aut veritatem extrinsecam, quę excludit omnem incertitudinem, & ambiguitatem, sunt enim diuersa principia veritatis intrinsecæ cum obiecto, & certitudinis, & veritatis extrinsecæ, & induere debet veritas sacræ Scripturæ illam certitudinem ex principio dictãte, dirigente ad nota, & ad ignota, reuelatione, vt saltim ex illo capite motione, aut directione vendicet certitudinem, ad ignota verò ex reuelatione, ignorantiam remouente, & afferente notitiam, ergo ad scripturam sacram sufficit directio, sine reuelatione, licet ad ignota scribenda sit necessaria reuelatio.

Arguitur pro sententia, quæ asserit

serit præter directionẽ intellectus, & motionẽ voluntatis, esse requisitam reuelationẽ specialẽ, vt percipiantur res sacræ, & scribantur exterius, Rua tom. 1. controu. expositiuarum. Nã requiritur, & est necessaria notitia altior, quam naturalis ad Scripturã sacrã, nam intra vires naturæ nõ est certitudo, & infallibilitas, quam exposcit Scriptura sacra, sed ista haberi nõ potuit aliundè, quam ex reuelatione, ergo fuit semper necessaria specialis reuelatio.

Respon. admissa maiori, nego minorem, nam illa haberi potuit ex directione, motione, & assistentia Spiritus Sãcti, naturę superaddita, & ita non fuit opus reuelatione speciali, nisi ad ignota reuelanda, & illur nanda.

DVBIVM XII.

An vt Scriptura habeatur sacra sufficiat, quod res, & sententia scribenda diuinitus dictetur à Deo, & suggeratur scriptori sacro, an etiam scribendi voluntas, idiomata, seu verba, quibus exprimatur?

COnclusio asserit, *sufficere rem, & sententiam scribendam dictari, & suggeri, sine libera voluntate, idiomate, verbis, & alijs.* Est cõmunis. Ratio, nam si res, & sententia semel dictetur à Deo authore, scripta erunt sacra, certæ, & infallibilis fidei, & inconcussæ veritatis ex tali principio, quãtumuis omnino inuolũtariè, & coactè scribãtur, licèt etiã, species idiomatis, phrases, & verba nõ suggerantur, vt de facto nõ semel nõ sunt suggesta, nam tradi potuit veritas scribẽda sine iniuria veritatis vario idiomate, varijs verbis, & phrasibus. Nam sicut idẽ cõceptus mẽtis nostræ ostendi, & repræsentari potest varijs verbis, latinis, hebręis, vulgaribus, sine iniuria veritatis, ita res, & sententia dictata ab Spiritu Sancto. Et licèt nõ sponte, sed inuitus, & omnino inuolũtariè cogeretur ad dictã sententiã scribendã, haberetur sacra, sicut habita est loquutio diuina, facta per os Caiphæ, omnino ignorantis, & inuolũtarij, prophetãtis, cũ esset Põtifex anni illis prophetauit, *oportet vnum hominẽ mori pro populo, ne tota gens pereat*, & Magister interdũ mouet manũ pueri ignorãtis, & inuiti ad figurãdã scripturã, & diabolus mouet linguã obsessi, ignorantẽ, inuitã, & obsistentem, ad loquutionẽ latinã, græcã, aut hæbraicam, prout vult, & ad hunc modũ sagitarius agit impulsu sagitã in scopũ, qua phrasi loquitur Ieremias c. 1. *Noli dicere puer sum, quoniã ad omnia, quæ mittã te, ibis, & quæcũque mãdauero tibi loqueris, & in pharetra sua absẽdit me, & dixit seruus meus, &c.* & ita habebitur sacra licèt inuiti, & coacti scripsissent, licet de facto voluntariè scripserint, nõ arreptitie, tamẽ nihil obstaret, si ita, sicut nihil obstat, quod sit scripta calamo, inscio motionis artificioſe, quæ seruatur

tur in effigianda scripturâ. Vltimo nã si non sufficeret quod res, & sententia dictaretur, sed etiam idioma, idem esset omnino stilus, & eadẽ phrasis in omnibus, sed non semper idem, adhùc in eodem scripto re, nam vt constat, in Isaia est stilus elegans, in Amos in pastoralibus creatus stilus rusticus, in quibusdã phrophetis minoribus vulgaris, ergo licet Spiritus Sanctus dictauit sententiam, non dictauit stilum, modum, verba, idiomata, sed cuilibet reliquit, vt scriberet pro modulo, quæ omnino sunt extra substantiam veritatis, & sententiæ, & illi sunt superadditæ, cùm ad id non sit requisitum vllum speciale idioma, Latinum, Græcum, aut Hæbreum.

DVBIVM XIII.

An omnia, & singula, quæ sunt in sacra Scriptura sint dictata ab Spiritu Sancto, an dicendum, quod res, & sententiæ graues, aut leues assertiuæ, aut relatiuæ, vt non sit distinguendum, interdicta à Deo, & dicta ab scriptore?

COnclusio asserit, *ita dicendum absolutè, nisi scriptor exprimat, & distinguat inter dicta à se nomine Dei, & interdicta à se nomine proprio, quod accidere solet rarò.* Primò ex 1. Corinth. 7. vbi distinguit Apostolus, inter huiusmodi dicta, *dico ego, non Dominus, si quis frater vxorem habeat infidelem, &c. non dimittat*, vbi distinguit inter præcepta Dei, & sua consilia, inter dicta à Deo, & dicta à se, quod non dimittat vxorem infidelem, volentem habitare cum viro fideli, vt ista sententia, & doctrina sit accipienda, vt dicta à se. Secundò nã scriptura solet citare fabulas gentiliũ, vt decornu Amaltheæ apud Iob, & similia mendacia, & vtitur Hiperbolis, enigmatibus, &c. quæ ab scriptore solent memorari, non vt asserta, sed vt relata à Deo per ipsum, vt Genes. 3. *eritis sicut Dij*, Genes. 4. *maior est iniquitas mea, quam vt veniam merear*, Psal. 13. *dixit insipiens in corde suo non est Deus*, Ioannis 8. *none benedicimus nos, quia Samaritanus es, & Dæmonium habes?* & apud Prophetas, non semel, *hæc dicit Dominus, cum Dominus non fuerit loquutus*, vbi ponitur distinctio inter sententias loquutas à Deo per veros Prophetas, & inter loquutas à falsis Prophetis, per se ipsos, igitur non omnia, & singula, quæ sunt in sacra Scriptura, accipi debẽt, vt dicta à Deo assertiuè, sed aliqua, vt dicta, vt plurimum relatiuè. Vltimo nam si ita non dicatur absolutè dictasse omnes, & singulas sententias, cum suis partibus, non staretur Tridentino, quod sessione 4. præcepit amplectendam, & habendam canonicam, cùm omnibus suis partibus, nec daretur regula certa amplectendi fidei sententias, & daretur ansa dubitandi, & vacillandi circa omnes

nes, & singulas graues, aut leues, an essent amplectendæ? immo daretur licentia libera respuēdi omnes, quia si leues, etiam graues, Trinitatem, Incarnationem, sacramēta, Tobiæ 11. de cane insequente herum, & blandiente cauda, 2. ad Thimoth. 4. illud de penulla relicta à Paulo Troade, & ita vacillaret, & nutaret authoritas scripturæ, & fidei nostræ, vt expendit Augustinus 1. de Doctrina Christiana cap. 27.

Arguitur primò pro parte opposita, nam si semel dicamus dictasse ita omnia, & singula, vt possit distingui inter dicta à Deo per scriptorem vt instrumentum, & dicta à scriptore ex suo capite, & sententia, vt à causa principali, dabitur occasio, & ansa dubitandi, similiter de cæteris alijs, & ita authoritas scripturæ, & nostræ fidei admodum vacillaret, ergo dici debet dictasse omnes, & singulas res, & sententias ad fidem pertinentes, & etiam minimas syllabas apices, & puncta, &c. vt nihil sit adhuc minimum, quod non sit æstimatione nostra dignum, & fide, iuxta PP. Hieronymum Epist. ad Ephesios Basil. Chrisost. ad eum modum quo in officina aurarij, ad hùc, minimi pulueres sunt aurei, prætio, & æstimatione digni, præsertim cum ex Tridentino constet *recipiendam, & admittendam cum omnibus suis partibus.*

Respondetur non dari ansam, cum dicat doctrina, recipiendam cum omnibus suis partibus, vt in se sunt, ita distincta, vt à Deo dicta, & vt ex capite scriptoris seorsim, nam quamuis dicendum absolutè recipiendam cum omnibus suis partibus, stat dicta distinctio, & exceptio, quid autem sit de mente Tridentini approbantis editionem vulgatam, in ratione translationis, absolutè, & respectiuè ad præteritas, & futuras latiori calamo disput. 8. de Versionibus à dubio 24. in finem.

Arguitur secundò ex locis sacræ Scripturæ, vbi dicitur de Prophetis, Apostolis, & alijs scriptoribus sacris, non loqui à se, sed ab Spiritu Sancto, *non estis vos, qui loquimini, sed spiritus patris vestri, qui loquitur in vobis, &c. Hæc dicit Dominus*, &c. *Hæc nuntiabis populo meo ex me*, &c. *loquutus est per os Sanctorū*, &c. & in nostro themate, *diuinitus inspirata*, &c. ergo sacri Scriptores, nihil à se scribunt, sed omnia à Deo.

Respondetur cum distinctione, quod, vt sunt scriptores ministeriales, & instrumentales, amanuenses Dei, nihil, nisi vt à Deo, causa principali, scribunt, secùs, vt sunt causæ principales, & ex suo capite scribunt, & ex propria sententia, vbi id aduertunt, & tunc possunt etiam, vt à Deo referente per illos vt fabulas, & similia, quæ non sunt à Deo assertiuè.

DVBIVM XIV.

Quæ, & quãta sit veritas sacræ Scripturæ, & an illæ nihil sit verius, ex parte authoris, & scriptoris principalis sententiæ, & verbi scripti?

Conclusio asserit, *quæ in Bibliis scripta sunt, esse verissima supra omnia alia scripta extra, omni ex parte, tam ex parte authoris principalis, quam instrumentalis, & sentẽtiæ scriptæ.* Est communis. Ratio nã, quę in Biblijs scripta sunt prodiere ab authore principali sũmè veraci in essendo, & in dicendo, qui sapientia, & veracitate sua est determinatus ad dicendum, iuxta id, quod sentit sapientia, & sapiẽtia, quæ conectitur cum re, vt est in se, iuxta, quæ, implicat dictare falsum, per modũ assertionis, adhùc de potentia absoluta, à quo principio dictata accipiũt certitudinem, omnino infallibilem, & excludentem omnem incertitudinẽ, & falsitatem, iuxta illa testimonia sacræ Scripturæ, Numerorum 13. *non est Deus, quasi homo, vt mentiatur*, Romanorum 3. *est autem Deus verax, omnis autem homo mendax*, Psalm. 118. *Lex tua veritas, omnes viæ tuæ veritas*, & ex alijs, *ipsamet veritas* ad Galatas 3. Psalm. 30. Ioan. 14. *Domine Deus veritatis*, &c. *Spiritus veritatis*, &c.

Secunda pars, quod *nihil verius dictum, aut scriptum*, probatur ex prædicta ratione, quia cum Deus sit prima, & summa veritas, quę determinat Deum ad dicendum veritatem, excludentem omnem falsitatem, & non sit in cæteris infra ipsum æqualis, sed limitatè, & participatiuè, infra summum, omnia erunt obnoxia fallibilitati, & falsitati, omnia autẽ, quæ sunt in sacra scriptura Bibliorum ex principio, & authore infallibili, superant cætera, vt dictata à Deo, ergo tali gaudent excellentia supra cætera. Confir. nam quamuis visio beata, fides nostra diuina, & prophetia habeant veritatẽ omnimodam, & certitudinem, non tamen habent maiorem Scriptura sacra, saltim obiectiuã, quidquid de subiectiua, qua ratione solet accipi, illud 2. Petri 1. *habemus firmiorem propheticum sermonem*, vbi fit collatio cũ voce audita, de cœlo allata, in mõte sancto, *hic est filius meus*, &c. & solùm potest dici firmior reuelatione cœlesti subiectiuè, nã prophetiæ firmius adhærent, vt lucernæ lucenti in caliginosso loco, quę habetur subiectiuè vt minus obnoxia falsitati, quam vox illa cœlestis in aëre formata. Vltimò, nam veritas prima in dicendo est principium omnino certum, inducens infallibilem certitudinem, supra omnem creaturam, hominem, aut Angelum, quæ excludit omnem incertitudinem, & falsitatem, vt nullus infra Deum, possit illam æquare: manent enim semper obnoxia fallibilitati, & incertitudini, igitur

tur Scriptura sacra ex suis causis. & principijs, superat omnia alia dicta, & scripta.

DVBIVM XV.

An Verba Dei scripta in volumine Bibliorum sint verior a præ alijs Dei Verbis prolatis, per se immediatè, aut mediate per Angelos, aut homines?

CONclusio asserit, *non esse veriora verba scripta præ alijs verbis prolatis, immediate à Deo*, licet benè mediatè, per Angelos, aut homines veracissimos. Ratio à Deo loquuta, & prolata sunt paris, & æqualis veritatis, & certitudinis ante, & post scripturam, nec illi accrescit aliquod genus maioritatis ex scriptione, nec potest loqui interdū verè, interdum verius, sed semper æquè vere, & æquè certè, siue per se, siue per instrumētum, nam instrumentū nō mouetur à se sed motum à causa principali. Secunda pars probatur, nam si Deus possit loqui per homines, aut Angelos ratione, & concursu generali indifferenti, vt determinatur à causa secunda, obnoxia fallibilitati, & incertitudini, posset ex medio contrahere contagium extrinsecum, vt non esset ita certa ex medio, Angelo, aut homine, ac cū fit loquutio immediatè à se, aut ipso mouente scriptorem, vt instrumentum. Nā licèt Deus nō possit per se, aut per aliū dicere falsum, aut mendacium, si moueat concursu indifferēti hominem, aut Angelū, vt determinetur ab illis concursus pro sua libertate, licèt dicant verum, & Deus concurrat ad illud, non erit tantæ certitudinis, vt determinatus à causa secunda fallibili, ac cum ipsa mouet, & determinat instrumentum ex plenitudine authoritatis, certitudinis, & infallibilitatis, quod est dicere in summa, quod non est tantæ certitudinis Angelus, aut homo dicens veritatem à se, vt causa principali, ac cum à Deo mouente, vt causa instrumentalis, sicut accidere solet inter homines, vbi homo veracissimus immus creditur eius imperium delatum per seruum mendacem, quam per seruum veridicum.

Argui potest contra, nam ab Angelo, aut homine veraci potest dici, & proferri veritas, æquè vera, cum dictis à Deo, & scriptore Bibliorum, vt si dicatur ista veritas, Deus est existens, Christus est natus, est adoratus, est crucifixus, homo est rationalis, gaudet vita, est peccabilis, &c. quæ ita veræ sunt, ac alię dictatę à Deo in sacra Scriptura.

Respōdetur iuxta dicta dubio 10. admittendo veritates secundū se habere æqualitatem formalem, nam veritas excludit falsitatem, & propositiones posse esse, non æqualiter falsas, si patiantur extensionem, tamen propositiones, & veritates posse esse inæqualis certitu-

titudinis ex suis principijs, & cùm Deus author principalis scripturæ gaudeat summa certitudine, & infallibilitate supra omnes creaturas, infra ipsum, Angelum, aut hominem, licet dictæ propositiones sint secundùm se æqualis veritatis, quæ summitur ab eo, quod res est, vel non est, possunt reddi inæqualis certitudinis, ex inæqualitate principiorum, certificantium, immo inæqualis vetitatis extrinsicæ, ex inæquali veracitate dicentium, licèt quoad intrinsecam sint æquales.

DVBIVM XVI.

An sit, quanta, & quotuplex authoritas sacræ Scripturæ Bibliorum in se, & quoad nos?

PRima conclusio asserit, *esse authoritatis fidei secundùm se, & quoad nos, in priori ad cognitionem potentialiter, post illam actualiter.* Est communis.

Ratio, nam in sacra Scriptura residet authoritas, & dignitas fidei, vt dicta veritas à summa diuina veracitate sit digna nostra fide, obedientia, & honore, hoc enim eius insigne honorificum. In quo sunt duo, & habitudo dignitatis ad se, & habitudo ad nos, vt ei debeatur fides, reuerentia, &c. Cùm autē ista authoritas est ignota nobis consideratur quoad se, & in potentia ad obligandum nos, ad prestandam fidem, accidit enim non semel, vt authoritas cōsideretur secundum se, præscindendo ab habitudine quoad nos, vt cùm est ignota nobis, vt si Rex sit latens in turba, ornatus auro, & argento, Princeps, aut nobilis Doctor, &c. aut instrumentum authenticū obclusum sigillo, habet authoritatē quoad se, non verò quoad nos, nisi in potentia, sic Christus amabilis, & venerabilis in habitu peregrino occultatus, oculis discipulorum euntium in Emaus, & olim in matris vtero, & in vili præsepio, Deus absconditus, & Ioan. 1. *in medio* vulgarium *stetit, quem nescierunt*, dum verò ista authoritas est cognita quoad nos, exigit actu nostram fidem, obligationem reuerentiam, &c. est igitur authoritas sacræ Scripturæ duplex, & quoad se, & quoad nos, quoad se, quia est Verbum Dei scriptum, in priori ad cognitionem, immò licèt non esset vllus, qui cognosceret, & daret assensum, esset digna omni fide, & veneratione, sicut Christus adhùc prius quam cognosceretur, quoad nos verò dum actu cognoscimus authorem, dignum nostra fide, inducentem, exigentialiter actu obligationem nostram assentiendi, & credendi, ea quæ sunt in ea contenta.

Secunda conclusio asserit, *quod authoritas sacræ Scripturæ, & quoad se, & quoad nos, est omnium maxima scripturarum, & digna fide diuina.* Est communis. Primò probatur ex causis, nam Deus est author

thor summæ, & infallibilis certitudinis, & veritatis, præstans dignitatem similem deriuatam, vt tali fide susciptiatur, deinde Ecclesia applicãs est illius testis, organum, vox, preco, iudex, &c. & ita a PP. scriptura dicitur autentica, canonica, sacra, diuina, oraculum Dei, & alijs epitectis, summis excellentijs ornatur de quibus suo loco. Secundò probatur, ex comparatione positiua cum alijs, nam antecellit, & præcedit importantes solas veritates naturales. Ratio nam sensus, sententiæ, & doctrina Philosophorum obnoxiæ sunt errori, & falsitati, Romanorum 3. *Omnis homo mendax*, ideſt saltim potentia. Deinde si fiat comparatio cum libris PP. & doctorum, etiam præcedit, quoniam veritates sunt obnoxiæ falsitati, & cum illis sunt permixtæ aliquę falsitates, vt egregiè Augustinus Epist. 19. apud Gratianum dist. 19. *ego* (inquit) *fateor solis libris scripturarum, qui canonici appellantur, didici hunc honorem deferre, vt nullum authorem eorum, in scribendo aliquid errasse affirmem, & firmissimè credam, &c. alios ita lego, vt quantalibet aut sanctitate, doctrinaque perpolleant, nõ ideo verum putem, quia scripserunt, &c.* & similia repetit pluribus in locis, vbi fatetur vir egregius, *se propterea fecisse libros retractationum, vt sicut ipse sibi ipsum, non sequitur, alij, nec ipsum, nec alios sequantur cæci, & pertinaciter*, in quo quidam instruuntur, ne ita sequantur suos authores quantalibet sapientia, & sanctitate sint præditi, nam vbique veritas inquirẽda, & prę ferenda, & ad illam sunt omnes exhortandi. Vlterius si fiat comparatio cum Verbo Dei non scripto, vt cum scientia reuelationis priuatæ, aut publicæ, aut cum traditione, par est omnium authoritas quoad se, at verò quoad nos, præstat, saltim priuatis reuelationibus, qua ratione docuit Paulus, præstare voci Patris de cœlo allatæ prophetiã, cui bonum est attendere, vt lucernæ lucenti in caliginoso loco præsentis vitæ. Denique si compatio scripturæ fiat per negationẽ, nam authoritas scripturæ non excediturab vlla alia, nec vlla alia anteponitur.

Arguitur ab Hæreticis, qui iaculantur dicteria, vt valeat, quã tum Fabulæ Æsopi, nisi accederet testimonium Ecclesiæ, & esse incertam, & ab aliquibus catholicis olim negatã, & modo ab authoribus admitti, non re, sed verbo & insaniũt, quod dixerint Bibliã esse librum Hæreticorũ, quæ congessit Serarius in prolog. cap. 7. quæst. 2.

Respondetur nihil interesse ad intentum examinare, qui obiecerint istas, aut illas blasphemias, nec vacat disquirere ex proposito cum Serario, qui consuli potest à volente, illa enim nihil derogant authoritati scripturæ, dum nihil probant, sunt enim canis latratus, quos spernit Diana peragens

agens nitida cursus suos, iuxtà Alciati emblema.

DVBIVM XVII.

Vnde acceperint Biblia sacra istam authoritatem certissimam, & immunem ab errore, & falsitate, quoad se, & quoad nos?

COnclusio asserit, *quod à Deo dictante, quoad se, formaliter autem ab vniformi connexione, & concordia cum re significata, quoad nos verò etiam à Deo primò, & principaliter, principio certissimo, & infallibilissimo testificante, & dictante, minùs verò principaliter ab scriptore sacro, qui audiuit, & accepit à Deo, & scripto tradidit, qua ratione accepit*, ad eum modum, quo inter homines reddit authetica instrumenta publica à se exarata signando, & firmando illa, præsertim cùm sacri scriptores solent probare, se esse ministros Verbi Dei editis miraculis, vt Moyses Exodi 4. & ita admittitur ab Ecclesia. Deindè ab Ecclesia minùs principaliter deriuatur authoritas, vt dirigitur assistentia Spiritus Sancti, quæ constat, collectione Doctorum, & pastorum, cùm capite Pontifice Romano, cui incumbit munus interpretandi, declarandi, docendi, &c. Omitto alia capita, ex quib⁹ scriptura, sibi magnam authoritatem conciliauit, vt ex authoribus, qua ratione inter homines liber accipit authoritatem ex suo authore, approbatore, aplausore, qua ratione Ioan. 1. Christo Domino Baptista fidem, & authoritatem conciliabat.

Prima pars satis probata est illis testimonijs, quibus supra probauimus Deum esse authorem principalem sacræ scripturæ. Secunda probatur ex 1. ad Thimoth. 3. vbi dicitur, quod *est columna, & firmamentum veritatis*, cui firmissimè, & securissime innititur nostra fides; & credulitas, vt applicanti credẽda, an etiã assensus veritatis naturalis, phisicè, astronomicè, &c. illi innitantur, an extra Ecclesiam possit inniti alio firmiori, & certiori fundamento, videtur, nulli maioris põderis, vt illæ veritates naturales philosophicæ sint certiores, quo magis congruerint cum admissis ab Ecclesia. Secũdò nam in veteri testamento ad Ecclesiã pertinet dari testimonium de sacris scripturis, sicut in nouo quæ sint autenticæ, qui libri, & partes sint amplectendi, qui canonici, qui extra canonem. Tertiò nam inualuit mos in dubio, discordia, & lite, qui libri essẽt diuini, & canonici, & vt tales suscipiendi? Standum iudicio, & decisione Ecclesiæ, quæ est iudex cõtrouersiarũ fidei cum scriptura, vt constat ex PP. Origine, Cyrillo, Augustino, & alijs apud Serar. ibidem, vbi ex libro contra Epistolam fundamenti capite 5. illud celebre Augustini *ego Euangelio non crederem, nisi Eccle-*

sia

ſiæ authoritas me commoueret, & in fine *vtramq; ſcripturã* (ſcilicet acta, & Euangelia) *mihi catholica commendat authoritas,* cui tã claro, tanti viri, teſtimonio hæretici varias tenebras offundere ſunt connati. Serarius ibidẽ quaſtiuncula quarta latè. Quidam dicunt quod ſicut vna hirundo non facit ver, ita nec Auguſtini vnius exemplum regulam generalem. Sed eſt inſtar multarũ, & facile præexcellit multis. Alij non in ſua, ſed in perſona hæretici, id dixiſſe. Alij quod in ſua, ſed cum eſſet infidelis. Verùm dixiſſe in propria, & cum eſſet fidelis, & Epiſcopus ſuadent, quæ dixit c. 4. præcedenti. *Tenet me Eccleſia*, ſubiungit *quibus præcipientibus Euangelio credidi*, ſed non eſt præceptum niſi ſuperioris, ad ſubditum, ergo.

Arguitur ab hæreticis, ſequi eſſe maiorẽ, & præſtantiorẽ authoritatem Eccleſiæ, quam authoritatẽ ſcripturæ, præſertim cùm ſola ſcriptura non ſit iudex, ſed Eccleſia decidat ſcripturæ ſenſum. Reſpondetur nõ ſequi, nã teſtificator non eſt præſtantior, ſicut nec Baptiſta Chriſto, de quo perhibuit teſtimonium, immo dixit, *qui poſt me veniet ante me factus eſt, maior me eſt, cuius non ſum dignus, &c.* ſimiliter de Baptiſta ſui diſpuli perhibuere teſtimoniũ, & nõ fuit diſcipulus ſupra Magiſtrũ. Nec obeſt, quòd Eccleſia ſit iudex, cũ ſenſus ſcripturæ ſit ignotus, & occultus, qua ratione eget iudice, & interprete, iuxta eiuſdem nõtitias clariores, & præſcripta.

DVBIVM XVIII.

An ſit neceſſarium Eccleſiæ teſtimonium ad recipiendam, & credendam authoritatem ſcripturæ reſpectu noſtri, vt authoritas ſcripturæ probetur per authoritatem Eccleſiæ. Et an ſufficiat Eccleſiæ teſtimonium, & ſit vtilis etiam traditio?

RAtio *dubitandi*, ſummitur ex verbis Auguſtini dubio præcedente, *ego Euangelio non crederem, niſi authoritas Eccleſiæ me moueret.* Deinde *infirmata authoritate Eccleſiæ Euangelio credere non potero*, inde ergo colligitur neceſsitas authoritatis, & teſtificationis Eccleſiæ. Secundò, nam ſiue Eccleſiæ teſtimonium compleat obiectum formale fidei, iuxta ſententiã aſſerentium, motiuum formale illius eſſe diuinam reuelationem, non ſecundùm ſe, ſed vt factam per Eccleſiam, ſiue ſit ſola conditio applicans, ſine qua non ſubſiſteret aſſenſus fidei, ſemper ſtat neceſsitas authoritatis Eccleſiæ, ad ſuſcipiendas, & credendas res fidei, & ſimiliter ad ſuſcipiendam authoritatem Eccleſiæ, & præſtandum aſſenſum rebus in illa contentis.

Prima concluſio, *in fidei obiectis ſuſcipiendis* (*qualis eſt authoritas ſcripturæ, & authoritas Eccle-*

Ecclesiæ) non est ordo prioris necessarius, vt vnum credatur propter aliud, vt propter motiuum, sed vtrumque propter reuelationem diuinam, motiuum formale fidei, & propter alia, quæ possunt inducere ante fidei susceptionem, & applicare mysteria credenda. Primò quia satis congruè credi potest hoc, & illud, quia Deus reuelauit, licèt præcedat applicatio, & propositio reuelationis. Secundò, nam si vnus actus potest agi, & fieri sine altero, non probatur connexio prioris cum posteriori, nec necessitas inter priorem, & posteriorem, sed plures (adhùc Christiani) suscipiunt, & credunt authoritatem scripturæ ex Dei reuelatione, sibi applicata, ignorantes authoritatem Ecclesiæ, & testificationem circa authoritatem Bibliorum, ergo.

Secunda conclusio, *post inchoatam, & susceptam fidem, si authoritas scripturæ sit minus nota, poterit probari per authoritatem Ecclesiæ notiorē, & vulgariorem, secùs si sit æquè ignotum vtrumque.* Item *si sit notior authoritas scripturæ, ex illa poterit congruè probari authoritas Ecclesiæ, si verò vtraque authoritas sit æquè nota, & credita, vnum solum probabitur propter alterum, vt facilius firmius, & intensius suscipiatur, & credatur, & sic vnum non erit necessarium simpliciter ad alterum, sed ad melius firmius intensius, &c.* Ratio, nam alias probabitur notum per ignotius, contra leges, & regulas dialecticas.

Tertia conclusio asserit, *quod authoritas Ecclesiæ sit necessaria volenti credere authoritatem scripturæ, & res in illa contentas, ad probandam quoad nos authoritatem Bibliorum.* Ratio, nam tunc credituro admodum est necessaria Ecclesiæ authoritas ad credendum, nam cùm fides ex auditu, & qui proponit substituat personam Ecclesiæ nomine, & loco illius proponēs, & illa sit antiquior scriptura, & latius patens, ad fidei obiecta scripta, & non scripta, sed tradita, & sit notior ex symbolo, *credo Sanctam Ecclesiam*, &c. & facilior simplitioribus, loquens verbo viuo, & sensibili, fit Ecclesiæ authoritatem, vt notiorem, esse quoad nos necessariam, ad suscipiendam authoritatem Bibliorum, sicut etiam in communi modo credendi ad alia mysteria. Secundò, quia illa cogi possunt, & moueri (adhùc hæretici) ambigentes, aut dubitantes de authoritate librorum sacræ Scripturæ, ad admittendam authoritatem istius, aut illius libri, vt sibi visum à Spiritu Sancto, præsertim cum de illa non satis constet, est enim iudex in negotijs fidei, & morum, ad decidenda dubia circa illam suborta, iuxta illam sententiam Augustini *ego Euangelio non crederē, nisi, &c.* an verò vice versa probetur ex Scriptura Ecclesiæ authoritas, vt sibi inuicem præstent mutuum auxilium, ad eum modum, quo videns loripes, & cæcus cum pedibus, apud Alciatum

tum dum altera est notior, alia, dicendum statim.

Quarta conclusio asserit: *quòd Ecclesiæ testimonium sit sufficiens, ad probandam authoritatem Bibliorum, in genere causæ principalis, aut instrumentalis, & similiter traditio diuina, vt per verbum Dei traditum, probetur verbum Dei scriptum.* Primò, nam loquendo de testimonio communi, & vulgari Ecclesiæ, constat hoc certissimo sillogysmo, certum est aliquid esse tale, quod Ecclesia testificatur esse tale, sed de isto, aut illo libro testificatur esse authenticum, & canonicum, ergo certissimum est esse canonicũ. Idem formari potest de vniuersa scriptura. Secundò, nam Ecclesia vtitur rectè traditione diuina, deriuata per Apostolos, ad probandum scripturæ authoritatẽ, aptè enim per verbum Dei traditum probatur verbum Dei scriptum, nam subrogatur traditio loco reuelationis, vt aptè August. 18. contra Faustum cap. 2. *ego credo esse librũ Manichei, qui ex quo viuebat in carne, sine interruptione, continuata successione*, ab his discipulis in alios deriuatus, & perductus est, sic istum esse Sancti Matthæi, quia ex tempore, quo in carne vixit, sine serie interrupta temporum, vsque ad nostra tempora, fideles Ecclesiæ perduxerũt, & Ecclesiã ab initio traditum, & conseruatum agnoscit. An autem sint alia motiua præuia? principalia, aut instrumentalia inducentia ad id prudenter credendum, vt miracula, rationes, aut etiam Ecclesiæ authoritas humana, & priuata virorum Doctorum suo loco.

DVBIVM XIX.

Quæ authoritatum sit maior, Scripturæ, an Ecclesiæ perhibentis testimonium de illa, quoad se, & quoad nos, & an sint pares?

CONclusio asserit primò, *esse parem vtramque authoritatem, quoad se in rebus fidei, & morũ.* Secundò, *Ecclesiæ authoritatem absolutè esse minorem, acceptam ratione partis, adhuc quoad se.* Vltimò, *Ecclesiæ authoritatem esse maiorem quoad nos.* Est communis. Probatur prima pars, nam Dei loquutio est eadem, siue per scripturam, siue per vocem Ecclesiæ, & Spiritus Sanctus eiusdem authoritatis, certitudinis, veritatis, & infallibilitatis, per scripturam, & per Ecclesię vocẽ: iuxta Matth. 26. Luc. 22. *qui vos audit me audit, qui vos spernit me spernit*, nam Spiritus Sanctus assistit semper Ecclesiæ, dirigit eam, & gubernat, Doctor veritatis in æternum in his, quæ pertinent ad fidem, & mores, quidquid sit, in alijs Ecclesia excedatur ab scriptura, quia est dictata ab Spiritu Sancto sine errore, aut falsitate Ecclesiæ testificatio, & doctrina, v. g. in Concilio, ante sententiam, & approbrtionem, ad fidem non pertinent. Confir. ex PP. Gregorio

Athanasiõ, & alijs apud prologistas, & latè apud Serarium cap. 7. quæstiuncula 12. qui suscipiunt quatuor Cõcilia generalia æquali veneratione, ac quatuor Euãgelia.

Probatur secunda pars, scilicet, *dici quoad se absolutè Ecclesiæ authoritatem minorem authoritate scripturæ*, quia Scriptura in eo præstat, quòd habeat omnia, & singula verba, & sententias dictatas ab Spiritu Sancto, ita vt nihil falsum, nihil superfluum, omnia ad fidem pertinentia: Ecclesię verò verba, orationes, non ita, nam primò verba, & sententiæ Conciliorũ, non pertinent ad fidẽ ante Pontificis approbationẽ. Deindè in Concilijs rationes sententiarũ non sunt de fide. Confir. nã in eo præstat Scriptura, non solùm ratione signorũ, sed etiam rerum significatarum, quòd res omnes significatæ certissimæ sunt, & ad fidẽ pertinent, generales, aut particulares fidei, & morũ, ab Ecclesia autem proposita, pertinent solùm ad fidem, quæ generales sunt in fide, & moribus.

Secunda pars *ex alio capite*, nam Prophetæ, Apostoli, primitiuique scriptores sacrę Scripturæ ornati erant maiori sapientia, sanctitate, & virtutibus, quàm pontifex proponens res verbaliter.

Tertiò *ex alio capite*, nam illi primitiui scriptores, Moyses, Prophetæ & Apostoli, qui primitias spiritus habebant, præstabant in modo confirmandi doctrinam, & scripta miraculis, & raris portentis.

Quartò *ex alio capite*, nã illi primitiui scriptores, assequuti veritates, facili labore proponebant, Ecclesiæ verò primates studio, labore, industria, in verbo Dei scripto, & tradito inuestigando, cum accidebat occasio, iuxta act. 15. conquisitio magna facta est, quæ attẽtè expendi debent à catholicis, qui videntur Ecclesiæ authoritatem simpliciter exequare cum authoritate scripturæ Bibliorum, secuti Stapletonium controu. 4. q. 5.

Probatur tertia pars, scilicet, *Ecclesiæ authoritatẽ quoad nos quadantenus esse maiorẽ*, quia est quoad nos magis nota, magis perspicua, & clara, quippè visibilis, & sensibilis, scriptura autẽ nõ ita clara est, vt se ipsa sit perspicua, & nõ indigẽs interpretatione, explicatione, & viua voce Ecclesiæ, quibus ipsa subijcitur. Vltimò, nã in dubijs, & controuersijs fidei, ipsa se sola non est iudex, proferens decisionẽ, & definitiuã sententiã, sicut est Ecclesia, cuius decisioni standũ in his, quę ad fidẽ, & mores pertiner, est enim columna, & firmamentũ veritatis, Spiritus Sancti vox, & tuba.

Arguitur primò *contra primam partẽ*, nam loquendo de authoritate gemina quoad se, videtur implicatorium dicere, habere paritatẽ quoad se, & authoritatẽ essentialẽ, & posse dici minorem absolutè, quòd non esset difficile admitti, si esset sermo de authoritate accidẽtali adiuncta, & aduentitia ex circunstantijs.

Ref-

Respond. dici minorem adhuc quātū ad essentialia authoritatis, si fiat cōparatio, & cōferentia inter scripturā cùm authoritate Ecclesiæ, non quoad res fidei in quo est par ratio Dei loquētis per vtrā que authoritatem, sed quoad aliàs res procedētes ab authoritate priuata humana, & ordinaria.

Arguitur secundò *contra tertiā partem* ab Hereticis, qui vertunt in conuitium Catholicis, quod sacræ Scripturæ præferant authoritatē Ecclesiæ, & Scripturæ sensus subijciant iudicio Ecclesiæ, quòd asserat, quod in dubijs fidei, & morum sit Ecclesia legitimus iudex, cuius decisioni, & sensibus standum, vt implicita explicanti.

Respond, ineptè, nam ei de quo perhibetur testimonium non præfertur testis, nec testificatio, sicut nec Christo Baptista, qui testimonium perhibuit de Christo, vt egregiè respondet noster Vualdensis lib. 2. a 2. à cap. 21. obijcientibus esse maioris ponderis, & authoritatis, decretum PP. quam authoritas scripturarum.

Arguitur tertiò *contra tertiam partem*, nam Sanctus Petrus iam Pōtifex dixit de suo verbo, & sermone, quod propheticus esset firmior.

Respond. ex August. primò dici firmiorem iuxta opinionem auditorum. Secundò, fuisse sermonē de maiori firmitate quoad nos, quoad visum, & auditionē. Tertiò dici vocē de cœlo allatā minus firmā prophetico sermone, nō quoad se, sed circunstantias dubitandi, an verè esset Pater vt sonabat vox.

Arguitur quartò *contra tertiam partem*, nam verbū Dei est semper veritatis, Ecclesiæ verò, nō semper, sed aliquando erroris. Respō. cum distinctione in rebus ad fidē, & mores pertinentibus semper est veritatis in alijs transeat. Deindè, si loquitur authoritate diuina, & publica semper est veritatis si priuata transeat, potest enim esse erroris.

Arguitur quintò contra tertiā partem ex 1. Ioan. 5. *si testimonium hominum accipimus, testimonium Dei maius est*, sed Ecclesię testimonium est hominum ergo.

Respond. accipi posse dupliciter iuxta Apostolum accipientis illud non vt verbum hominū, sed sicut est verè verbū Dei. Ecclesiæ enim authoritas, vt Dei per eam loquentis est diuina participatiuè saltim.

Arguitur vltimò, nam se habēt sicut excedens, & excessum, nam Scriptura excedit quoad essentialia authoritatis secundum se, quia nihil habet quod non sit de fide, Ecclesia verò solùm vt est os linguaque Dei, exceditur autē quoad accidentalia, circunstantias claritatis, & visibilitatis quoad nos.

Resp. ita, non in conferentia authoritatis ad authoritatē quoad essētialia in eodē genere, sed in cō paratione extremorū diuersi ordinis, in quo nō fit propria cōparatio

DVBIVM XX.

An admitti debeat præter verbum Dei scriptum, verbum Dei traditum, æqualis authoritatis, ita vt omnis, sed non sola scriptura, sit diuinitus inspirata?

PRima conclusio asserit, *præter verbum Dei scriptum, admittendum non scriptum, sed traditum, & admittendas quasdam traditiones Apostolicas, quæ non sunt expressæ, in scriptura, paris, & æqualis authoritatis cum illa: loquendo generaliter de traditionibus noui testamenti.*

Primò ex Tridentino sessione 24. Secundò ex sacræ Scripturæ testimonijs, 2. ad Thessalonicenses 2. *Itaque fratres state, & tenete traditiones, quas didicistis, siue per sermonem, siue per epistolam.* Quo circa, Chrisostomus, hinc patet, *quòd non tradiderit omnia per epistolam, sed multa sine litteris, tamen eadem fide digna sunt illa, quàm ista.* Basil. lib. de Spiritu Sancto cap. 27. *dogmata, quæ habemus scripta, doctrina ex Apostolorum traditione partim in mimisterio ad nos delata, recipimus.* Epiphanius hæresi 61. *Non enim omnia à diuina Scriptura possunt accipi, oportet, & traditione vti, quæ propter aliqua in scriptis, aliqua in traditione tradiderunt Apostoli, quemadmodum dicit Apostolus, sicut tradidi vobis, & ita plurima, quæ scripta non sunt, petenda sunt ex traditione.*

Secuuda ratione probatur, *esse paris, & æqualis authoritatis.* Nam eandem vim, & authoritatem habet Dei verbum, siuè sit scriptum, siuè prolatum voce, per prophetas, & Apostolos, ad eum modum, quo Regis mãdatũ, siuè per vocẽ, siuè per scripturã, siuè per se, siuè per Viceregem prolatum. Vbi apertè distinguebat Apostolus sic, *accepistis illud, non vt verbum hominum, sed sicut est verè verbum Dei*, loquentis per os Sanctorum, Apostolorum, & Prophetarum. Illis enim est vsus, vt tuba, ore, voce, calamo, scriba, lingua, organo, & instrumento.

Confir. nam vtraque doctrina, est Dei verbũ scripta, & prolata, quia à Deo inspiratũ, igitur est æqualis authoritatis viua voce tradita, & scripta, nam si scripta est Dei verbum; etiã prolata est Dei verbum, ita, vt eadem fides sit adhibenda, verbo Dei scripto, & viue vocis oraculo.

Secunda cõclusio, *admitti debent quædã traditiones Apostolicæ de quibusdã dogmatibus fidei, & de moribus, ac ritibꝰ externis, quæ nõ sunt in scriptura, sed in sola traditione, deriuatæ.*

Probatur prima pars. Nã quòd sacra Scriptura vtriusque testamẽti quoad omnes libros cũ suis partibus sit Dei verbũ scriptũ, & dictatũ à Deo, suscepimus ex traditione; quod sit integra salua, & incorrupta in his, quæ ad fidem, & salutem pertinent; & quod sit apud nos verus, & legitimus sen-

sensus : & quod præter tira dicta principia fidei scripta, sint admittenda alia ex traditione, cum hæretici non admittant, nisi expressa in sacra Scriptura. Primò, quod symbolum fidei sit in rei veritate canonicum, & Apostolicum. Secundò, quòd infantes sint baptizãdi, quod accepit Ecclesia per traditionem ab Apostolis, iuxta Origi nem in cap. 6. epist. ad Romanos, & August. de Genes. ad lit. c. 23. consuetudo (inquit) Ecclesiæ in baptizandis paruulis, non est vllo modo superflua reputanda, nec credenda, nisi Apostolica esset traditio. Tertiò, quod non sint rebaptizandi baptizati ab Hæreticis, iuxta August. lib. 2. de Baptismo contra Donatistas cap. 7. & 5. cap. 23. Quartò, Dei genitrix permanserit virgo post partum, contra Heluid. iuxta Hieronymum contra eundem, & iuxta August. lib. de Hæresibus cap. 84. Quintò, quod proferri debent in baptismo illa verba formæ : *Ego te baptizo in nomine Patris, & Filij, & Spiritus Sancti*, vt non sit validum, sine tali inuocatione Trinitatis, sub nominibus personalibus, quod probari non potest, nisi ex Ecclesiæ traditione, nam licèt sit in Scriptura, *nisi quis renatus, &c.* & *docete omnes gentes, baptizantes eos in nomine Patris, &c.* Matth. 28. quandiu non constat, quis sit legitimus & verus sensus, hic, & nõ alter, solùm admittitur ex vsu, & traditione Ecclesiæ, vt si cõstaret prædicta verba, *nisi quis renatus, &c.* habere illũ sensum duntaxat, nisi quis baptizatus fuerit baptismo aquæ, sequeretur infantes indigere baptismo, & alio medio nõ posse consequi salutẽ, aut subrogari loco baptismi, vt martyrio, vt intrarent in regnũ Dei. Similiter si constaret, quod Christus præcepit Apostolis, dum dixit, *baptizãtes eos &c.* quod proferrent illa verba, vt formã, *ego te baptizo*, iam res esset manifesta, sed ex Scriptura sola nõ colligitur manifestè, nam sicut Christus dixit, *baptizantes, &c.* dixit, *si quid petieritis Patrem in nomine meo, &c.* & tamẽ non requiritur, vt, qui petit in nomine Christi, proferat istam formulã, *ego peto in nomine Christi*, & ita quod sit necessaria illa prolatio sub illis verbis, & inuocatione Trinitatis, accipimus per traditionem Apostolicã, & vsum Ecclesiæ. Septimò, quòd sit certus, & determinatus numerus septenarius sacramentorũ nouæ legis, nam in sacra Scriptura non est definitus, potius septenarius, quã senarius, & ita petendum ex traditione, nec mirũ, quòd de verbo Dei scripto reddamur certi, verbo non scripto, sed prolato, viuæ vocis verbo, nam Deus ipse loquitur vtroque modo, verbo, scripto, & viuæ vocis oraculo, per os Prophetarum, & Apostolorũ.

Probatur secunda pars, *de traditionibus ad mores, & ritus exteriores* pertinentibus. Primò, nam multi sunt ritus Ecclesiæ, qui non sunt

in sacra Scriptura expressè exarati, & accepti sunt per traditionem ab Apostolis. Nam primò est exorcismus, & ceremoniæ vsitatæ in collatione baptismi. Secundò, vt fiat trina mersio. Tertiò, vt renouetur chrisma singulis annis. Quartò, vt in calice vino admisceatur gutta aquæ. Quintò, vt Eucharistia suscipiatur à ieiuno. Sextò, vt in Missa oretur pro defunctis. Septimò, vt in fronte formetur signum crucis, in confirmatione, & initio orationum. Octauò, vt fit aqua benedicta. Nonò, vt oremus versi ad orientem, de quibus loqui licet verbis Tertul. lib. de corona militis cap. 4. *harum disciplinarum, si legem expostules scripturarum, nullam inuenies, traditio tibi autrix, confirmatrix, & fides obseruatrix.*

Tertia conclusio. *Præter dictas traditiones Apostolicas, sunt aliæ Ecclesiasticæ à prælatis Ecclesiæ introductæ, quæ licet non habeant parem, & æqualem authoritatem cum Apostolicis, admitti, & obseruari debent.* De illis loquitur Augustin. epist. 108. *illa non scripta, sed tradita custodimus, quæ toto terrarum orbe, obseruantur, sicut, quod Domini passio, resurrectio, & ascensio in cœlum anniuersaria solemnitate celebratur, & si quid aliud occurrit, quod seruatur ab vniuersa Ecclesia.* Vbi distinguit traditiones Apostolicas, & Ecclesiasticas, vt expendi potest ex verbis ab ipsis Apostolis, vel plenaris Conciliis, & subdit de vtrisque, quod *insania est insolentissima disputare, an faciendum sit, quod tota Ecclesia frequentat per orbem.*

Quarta cõclusio asserit, *de traditionib⁹ veteris testamẽti*, quod *Iudæi præter scripturã sacram, admittebant traditiones in duplici genere, quarum aliæ erãt Mosaicæ, ad salutẽ necessariæ & laudabiles, aliæ verò Pharisaicæ, quas Christus reprehẽdit in Euãgelio.*

Probatur, quòd primã partẽ *de Mosaicis.* Nã numerantur 3. præcipuè. Prima, quòd libri omnes, & singuli in Canonem Iudæorũ recepti, haberẽtur, vt inspirati à Deo verè diuini, & infallibilis authoritatis; & hoc nõ erat scriptũ in veteri testamẽto, sed ex traditione receptũ, & ita ex traditione petẽdũ, quod illi libri essent tũc habiti, vt authẽtici. Secũda, similiter, videlicet, quod femellę haberẽt remediũ contra originale, licèt non cõstet, quodnã illud fierit, sicut de remedio masculorũ, ne in illa lege sine remedio perijssent, an verò fuerit fides parentũ, siue aliqua prolatio, aut potestatio extrena, in sacra Scriptura nõ inuenitur expressũ. Deniq; tertiò, quòd sacrificia cruẽta significarẽt Christi futuri mortem. Hæc autẽ fide credebant ex deriuata traditione, nõ ex scriptura, & ita Iudæi aliquid habebant per scripturã, aliquid sine illa per traditionẽ, quòd autẽ ista traditio esset necessaria ad salutẽ, constat, Exodi 13. *Narrabis filio tuo in die illo, dicens, hoc est quod fecit Dominus, quãdo egressus sum de Egypto.* Dexter. 32. *interroga patrẽ, & annuntiabit tibi*

tibi, &c. Psal. 43. *Patres nostri annuntiauerunt nobis opus, quod operatus es in diebus eorũ, & in diebus antiquis.* Psal. 77. *Quanta mãdauit patribus nostris, nota facere ea filijs suis, vt cognoscat generatio altera.* Vbi fuit à Deo præcepta, & mãdata traditio Iudæis, & cum essent plura præcepta in scripturis, nõ fit remissio ad scripturã, sed ad traditionem, vel quia tunc nõ erant redacta ad vnũ volumen, sed in varijs chartis, & membranis dispersa, vt possent legi à quolibet seorsim, & cõmodè, quousque Esdras post captiuitatẽ Babylonicã redegit, vel quia Deuteronomiũ, principalius inter veteris testamenti, nõ habebatur passim à populo, sed vnum exemplar in arca custodiebatur à sacerdotibus, qui septimo quoque anno ex iussu perlegebatur populo. Deuter. 31. & exemplificétia, amissum, postea est inuentũ ab Elzia Pontifice, tẽpore Iosiæ, & perlectũ populo, 4. Reg. 22. & ita populi coacti, & necessitati sunt vsi traditione in plerisque, per viuæ vocis oraculũ: alterum verò exẽplar Deuteronomij à Rege custodiebatur in scrinio, & ærario suo.

Probatur secũda pars *de traditionibus Pharisaicis*, quas reprehendit Christus. Nã prima erat de lotione manuũ ante sumptionẽ cibi Matth. 15 *Quare discipuli transgrediuntur traditiones seniorũ, non lauant manus cùm panẽ manducant.* Secũdò quòd venientes è foro non acciperent, aut gustarẽt cibos, nisi prius loti essent. Marc. 7. & *à foro nõ comedãt, nisi baptizẽtur.* Tertiò, quòd ista lotio esset pluries repetenda inter comedendũ, Marc. 7. *Non vrã ducant nisi crebrò lauerint manus:* iuxta quod in nuptijs in Cana Galilææ erãt positæ sex hydriæ ad purificationes manuũ inter prandẽdum Ioan. 2 Quarta, quòd nõ esset accipiendus cib' cum publicanis, & peccatoribus, Matth. 9. & Lucæ 5. & alibi. Quinta, quòd nõ permitteret quis, se tãgi à peccatoribus, Luc. 7. *Hic si esset Propheta, sciret vtique, quæ & qualis est mulier, quæ tãgit eum, quia peccatrix est,* ex quo suboritur scandalũ Pharisæi, & Esaiæ 65. *recede à me, cutia immũ dus es.* Sexta, quòd in Sabbatho famelici nõ possent euellere spicas ad condendũ, Matth. 12. vbi de illo facta est obiectio, & calũnia cõtra discipulos. Septima, quòd in sabbatho nõ liceat medicari, & sanari ægrotos, Luc. 6. *Si licet in Sabbatho curare,* & Ioan 9. *Nõ est hic homo à Deo, qui sabbatũ nõ custodit,* in properatũ est Christo sanãti cœcũ à natiuitate. Octaua, quòd esset ieiunãdũ, & orãdũ frequẽter, Matt. 9. vbi illud vitij opponitur discipulis Christi, & Luc. 5. discipulis Baptistæ. Decima, quòd decimæ rerũ adhuc minimarũ essent Deo offerẽdæ, Math. 23. vbi opponitur, quòd decimãdo omittebãt grauiora legis, *hæc oportuit facere, & illa nõ omittere,* decimæ autẽ dari poterãt. Primò, ex præcepto legis 2. ex voto. 3. extraditione. Decimę debe-

bantur ex lege de frugibus arborum, pomis, de bobus, ouibuss, capris, Leuit. 27. ex voto, pro arbitrio vouētis 2. Prralip. 31. Deinde ex traditione aneti, zimini, & simi lū minimorum à Phariſæis, non ex præcepto, qua ratione iactantiā imbuti quidam gloriabantur, *decimas do omnium, quæ poſideo*, eò, quòd alij, non darent de omnibus, ſed de vino, frumento, &c. Vndecimò, quòd qui iuraſſet per altare, & templum non eſſet reus criminis, ſed, qui per oblationes, quæ fiebant in eo, & per aurum templi, quos redarguit Chriſtus Matth. 23 *vè vobis duces cæci*. Duodecimò, quòd filij non eſſent obligati ad alendos parētes, honorādos, beneficiandos, ſed ſat eſſet offerre munus aliquod ſacerdotibus in tēplo, & Chriſtus reprehendit acerbè Matth. 15. quòd prętextu offerēdi munus Deo, inducto per hominū traditionē, omitterent præceptum Dei de honorandis, & ſubeniētis parētibus. Ex prædictis traditionibus, quamuis alię eſſent bonæ, alię malæ, aliæ indifferentes, ac innutiles, non ſemel Phariſæi reprehenduntur à Chriſto, & iure meritò, tum primò, quia inquirebant in illis, inanem gloriā, captare opinionem ſanctimoniæ apud homines, Matth. 23. *omnia ſua faciunt, vt videantur*, tum ſecundò, nam illas obſeruantias, & orationes longas, & prolixas dirigebant ad finē lucri, Matth 23. *vè vobis hypocritæ, quia comeditis domos viduarū, orantes longas orationes*, & Marc. 12. viduæ veniebant ad Phariſæos, ſimulatores huiuſmodi, & pretio emebant orationes longas eorum: tum denique tertiò, quia dabant decimas rerum minimarum intenta diligētia, & obſeruātia, vt negligant maiora, omittebant iudicium in iudicando de cauſis ad ſe delatis, & miſericordiam cum indigentibus, in quo ſenſu imputatur acrius illis, illud Matth. 23. *Excolantes culicem, & deglutientes camelum*.

Arguitur primò contra traditiones, pro illa parte, quæ aſſerit non eſſe admittendas, niſi in ſacra Scriptura expreſas, ex illo Dauter. 4. *non addetis ad verbum, nec auferetis ex eo*, ergo nihil eſt addendum ad verbum Dei ſcriptum ex traditione non ſcripta.

Reſpond. primò, quòd in ſcriptura legitur apud Paulum, *tenete traditiones, quas accepiſtis*, & ita ſenſus illius loci eſt, nihil violandum de præceptis, additione, aut detractione, quòd alia phraſi induci ſolet, *non declinandi ad dexteram, aut ſiniſtram*, ſed integrè ſeruanda præcepta Dei, ceremonialia, iudicilia, Deuter. 17. *Diſcat timere Deum ſuum, & & cuſtodire verba, & cæremonias ſuas, neque declinet in partem dexteram, vel ſiniſtram*, idem ibidem cap. 28. & 31. & Ioſue 1. *Farcies omnem legem, quam præcepit tibi Moyſes, ne declines ab ea, ad dexteram, &c.* Secundò, illud teſtimonium, quod tanto

pere

pere vrgent, pertinebat ad Iudęos tantùm, & adduci non potest contra Christianos, ne admittant præter scripturam, traditiones Apostolicas, & Ecclesiasticas, & cum illi cogerentur suis, exponendum, nil addendum, aut auferendum contra præscripta, ex gentilismo.

Arguitur secundò ex Deuter. 12. *Quod tibi præcipio facito, tamen nec addas, nec minuas.* Ergo nihil attendendum ad præcepta, Apostolica, & Ecclesiastica, nec parendũ præceptis hominum cuilibus, aut Ecclesiasticis. Respondetur ineptè deduci irrita omnia, & si ita, cur Iudæi tam acuratè seruabant præcepta humana, de facto enceniarum, & Reccabitæ Patris sui de abstinentia à vino, Ieremiæ 25. & cùm Apostolus dicat *quod omnis potestas à Domino Deo est*, insolentissimum esset dicere, ex illo loco esse irrita omnia mandata, edita à potestate humana, Ecclesiastica, & sæculari, sed sensus illius loci est, nil addendum ex sacrificijs gentilium, qui Dijs filios, & filias per ignem offerebant, sed in terra promissa illa sola offerenda Deo, quæ ab illo præcipiuntur, ex animalibus, fructibus, &c.

Arguitur tertiò ex ad Galat. 1. *si quis Euangelizauerit vobis, præter id, quod accepistis anathema sit*, licet nos, aut Angelus de cœlo; ergo illicitum est, præter scripturas Euangelij, admittere traditiones.

Respondetur posse obijci cõtra aduersarios, quod Apostolus dicit *tenete traditiones*, sed dum dicit nil admittendum *præter id, &c.* intelligendum est de sententia asserentium, non posse saluari per fidem in Christum, nisi simul admittantur legis Mosaicæ cæremonialia, & circuncisionem, horum nil admittendum.

Arguitur quartò, ex illo Apocalyp. 22. *Si quis apposuerit ad hæc apponet Deus plagas scriptas in libro isto, & si quis diminuerit de verbis libri Prophetiæ huius, auferet Deus partem eius de libro vitæ*, ergo Scripturæ sacræ nil addendum de traditionibus.

Respondetur prohiberi illam prophetiam deprauari per additionem alterius adiuncti, quasi partis, aut per detractionem partis, sed integram seruari, vt in se scripta est, & ita prohibitione comprehendi, quod hæretici adiungunt; vt legitimum sensum, qui de mente illius non est re ipsa. Exempli gratia Ioannes cap. 11. prædicit, quod *Venturi sunt duo Prophetæ amicti saccis, qui prophetabunt diebus, 1260. & habebunt potestatem claudendi cœlum, ne pluat, &c.* Hæretici autem interpretantur intelligendam de Luthero, & Caluino, cùm nec amicti fuerint saccis, nec habuerint illam potestatem claudendi cœlum, & patrandi illa portenta, ibi contenta, quæ mirificè Elię Parẽti, & Enohe congruunt.

Arguitur quintò, ex illo 2. ad Timoth. 3. *Omnis scriptura diuinitus*

nitus inspirata vtilis est ad docendum, &c. Ergo præter illam non sunt necessariæ traditiones, sed superfluæ. Confir. nam si scriptura est vtilis, ergo, & sufficiens, vt alia sint superuacanea.

Respõdetur ineptè argui ex vtilitate ad sufficiẽtiam, sicut si dicatur omnis cibus est vtilis ad nutriendum, ergo nilil præter illum necessarium, ergo potus non erit necessarius, sed superuacaneus, eleemosyna vtilis est ad salutẽ ex Lucæ 11. & Danielis 4. ergo sufficiens, vt oratio, & sacramenta nõ sint necessaria, sed superflua, & superuacanea, an idem est esse vtilẽ, & esse sufficientem, vt alia non sint necessaria, sed superflua? instruit ergo Apostolus Episcopum, discipulum Timotheũ, vt instrat subditos in fide, & operibus, iuxta doctrinam scripturæ veteris testamenti, quã didicerat infans, antequã extaret noua, & docet illo medio posse perficere. Nam omnis scriptura diuinitus inspirata vtilis est &c. ad docendum, quia diuinitus inspirata, & ita cõficitur inepti argumentum; est vtilis veteris testamenti, ergo noui non est necessaria, sed superflua, est vtilis scriptura vtriusque testamenti, ergo doctrina traditionũ non est necessaria, sed superflua, & minimè admittenda, ista est inepta argumẽtatio, nam vtilitas vnius, non excludit vtilitatẽ alterius, quia neutra est adequata, idè de vtilitate, & sufficientia respectu necessitatis, &c.

Arguitur vltimò, ex illo Matth. 15. *Irritum feciſtis mandatum Dei propter traditionem veſtram*, & 1. Petri 3. *Redempti eſtis de vana conuerſatione paternæ traditionis*, ad Coloſ. 2. *Videte nequis vos decipiat per philoſophiam, & inanem fallatiam, ſecundùm traditionem hominum*, in quibus videntur damnari omnes traditiones à Christo, & Apostolis deriuatæ, & receptæ.

Respondetur loqui de traditionibus Iudæorum, quibus Pharisei male vtebantur, vel de gentilium, oppositis fidei Christianæ, nos defendimus diuinas, & Apostolicas supra relatas.

DVBIVM XXI.

An Verbum Dei ſcriptum credatur propter Dei Verbum traditum, & An petendum ex traditione, qui libri ſint ſacri?

Conclusio asserit, *credi ſcriptũ propter traditũ, & quinam credices ſint habendi ſacri, & diuini ex traditione petendũ.* Ita cõmuniter omnes Eusebius lib. 6. Historiæ c. 10. Clemens Alex. Basil. & alij PP. quos sequuntur Recent.

Probatur prima pars, nã Verbũ Dei traditũ per Ecclesiam est vniuersalius, clarius, & notius quoad nos iuxta dicta, & ita non ineptè probatur per notius ignotum, vt ideo credamus in sacra scriptura contineri Verbũ Dei, quia Ecclesia id nobis proponit, & testificatur

tur. An Ecclesiæ authritas infallibilis, & participata. Deinde probatur ex sacra Scriptura, vt fiat circulus abvna authoritate in aliã, & ánsit innutilis, statim discendũ, nõ obstante, quòd authoritas scripturæ, & authoritas Ecclesiæ sint duo articuli credendi inconnexi secũdũ se, & quoad essentialia, & vtrũque credibile immediatè propter diuinam authoritatẽ, & reuelationem, vt motiuum formale fidei.

Secundò, nã quãuis sacra scriptura sit re ipsa Verbum Dei scriptum, id tamen nobis constat per Ecclesiam, & per traditionem ab his, quę acceperunt à Deo dictatore, & per successionem continuatam descendentium, & tradentiũ, immò ipsa Ecclesia est iudex in dubijs scripturæ in his, quę ad fidẽ, & mores pertinent, iuxta Isidorũ 3. aduersus hęreses, vbi dicit, quod illę dicuntur sacræ Scripturæ, quę *à Christo, & Apostolis, ab initio primitiuæ Ecclesiæ per seriem successionis, in hæc vsque tẽpora peruenerunt*, in quo conspirant cõmuniter omnes PP. & vno ore fatentur in sacra Scriptura contineri Verbum Dei, ab ipso inspiratum, & dictatum, in illis libris, qui accepti sunt ab Ecclesia vt canonici, & ita accepisse ab Apostolis, & Prophetis, per quos Deus olim loquutus est. Confir. ex illo Augustini lib. 6. contra Epist. iuramenti cap. 6. *Ego Euangelio non crederem, nisi Ecclesia me commoneret, & præciperet.*

Vltimo ex illo Apostoli 1. ad Thessalonicenses 2. *cum accepisse tis à nobis Verbum auditus Dei, accepistis illud, non vt verbum hominum, sed sicut est verè Verbum Dei*, ab eo inspiratum, & pronuntiatum per os nostrum.

Arguitur primò, contra ex argumentis dubio 18. & 19. Nam si scripturæ creditur propter Ecclesiæ authoritatẽ, & traditionem, vt illi libri habeãtur pro authẽticis, & canonicis, quos probauerit Ecclesiæ testimoniũ, & traditio: sequitur, quòd Ecclesię authoritas, & traditionis, sit maior authoritate, & infallibilitate sacræ scripturæ, quę susci pere vidẽtur ab Ecclesiæ testimonio, & traditione firmitatem, & certitudinem.

Respondetur nõ sequi iuxta dicta, sicut Christus creditur propter testimonium Baptistæ, ergo authoritas Baptistę maior est Christi. Deus creditur Trinus propter Ecclesiam, ergo Ecclesiæ authoritas est supra veritatem Trinitatis; ita in præsenti scripturam continere Verbum Dei, & libros eius esse authenticos, diuinos, & canonicos creditur propter Ecclesiam, & traditionem, ergo illius authoritas est maior, Verbum Dei scriptum creditur propter verbum prolatum, & traditum, ergo, nam æqua est authoritas vtriusque, quoad se, & essentiale authoritatis (quidquid sit de quoad nos) immo idẽ est Verbũ Dei in scriptura, & in ore, & voce Ecclesię & idẽ credi propter se, vt in ordine ad nos alte-

alterum apparet obscurius, alterum manifestatur clarius,& in eo, non est vllum inconueniens,quòd idem vt obscurius sit creditum propter se vt clarius,& sensibilius apparet,vel vt sub motiuo formali,aut conditione prærequisita applicatiua,quod verius.

Arguitur secundò, nam ideo credimus Scripturam sacram esse diuinam, infallibilis veritatis, & authoritatis, quia id docetur, & testificatur per Ecclesiam, & traditionem. Deinde quod Ecclesia, & traditio habeant authoritatem diuinam infallibilem, & participatam creditur propter scripturam,& illius testificationem: est enim columna, & firmamentum veritatis,immo,& inuersoordine, vbi est manifestè circulus, & vitiosus.

Respondetur non dari circulum in tali probatione scripturæ per Ecclesiæ testimonium,licet admitti possit recursus,& ad minus non est innutilis, & vitiosus, cùm non probetur ignotum per ignotius, sed per id quod notius est,& affert maiorem lucem, quod non est damnatum lege Philosophi,vt statim dicendum dubio sequenti latiori calamo.

Arguitur tertiò,nam si creditur scripturam habere authoritatem infallibilem,& continere Verbum Dei, ex Ecclesiæ traditione, scripturæ firmitas, & fundamentum inniteretur in traditione, & Ecclesia, contra illud Apostoli ad Ephes. 2. *Quod Scriptura sacra est fundamentum Apostolorum, & Prophetarum, ipso summo angulari lapide Christo Iesu.* Igitur potius didicimus ex sacra Scriptura dari Ecclesiam, & authoritatem infallibilem participatam, quàm contra.

Respondetur quòd sit admittenda loquutio Apostoli, quòd Scriptura sacra sit fundamentum, & firmitas Apostolorum, & Prophetarum, eò quòd ex illa firmatur authoritas, & certitudo prædicationis, & testificationis illorum; illi enim sciebant in illa contineri Verbum infallibile Dei, & cùm proferebant ore, & tradebãt illud esse Verbum Dei scriptum, nitebantur in illa veritate, vt in fundamento solidissimo, & ita Verbum Dei scriptum solebat credi propter Verbum Dei traditũ, & illorum ore prolatũ; cum quo optime stat,quod saltim in ordine ad nos,vnius authoritas probetur per alterius, immo mutuo, inspectis diuersis respectibus,circunstantijs, gradibus, & attributis diuersis, quibus ad inuicem se probant, & auxilio mutuo iubantur: secus in serie aliqua determinata gradus,aut qualitatis,quo scriptura probari potest per Ecclesiam, & traditionem,quoad nos notiorem iuxta dicenda dubio sequenti,præsertim cùm in comparatione diuersorum facta conferentia, possint se habere sicut excedens,& excessum. Exceditur enim scriptura

tura ab Ecclesię authoritate, & testificatione, si non in se, quoad nos, in perspicuitate, claritate, sensibilitate, &c. excedit autem in alijs à dubio 18. relatis, presertim in 19.

DVBIVM XXII.

In quid debeat resolui certitudo nostri assensus, circa authoritatem infallibilem sacræ Scripturæ, an in Deum primam veritatem, an in Ecclesiæ authoritatem, & testificationem?

CONclusio asserit, *quòd in Ecclesiam, vt præuiam conditionem, applicantem, & proponentem: in Deum verò, vt primam veritatem dicentem, & manifestantem, authoritatem, vtrã que secundum se certam, & infallibilem, quoad ipsis essentialia.* Est communis.

Primò, nam cum inuestigamus indagine illa, quarè credis sacram Scripturam esse Verbum Dei scriptum, & habere authoritatem infallibilem, & certam in significando in ipsa contenta? & respondetur, quia Ecclesia (authoritatis infallibilis participatę in proponendo) illud testificatur, si verò vlterius fiat inquisitio: quare creditur Ecclesiam habere illam authoritatem. Respondetur quia Deus prima, & infallibilis veritas, dicit vnum, & alterum articulum, ergo ille prior assensus circa scripturę authoritatem (verã, & infallibilem) resoluitur vltimò in primam veritatem dicentem, & testificantem vtrũque, ita vt prior ille in Ecclesiam, vt in applicationem, & conditionem, in Deum verò, vt in primam veritatem dicentem, & testificantem, & quæ est motiuum formale fidei diuinæ. Et ita fidelis scit istam Ecclesiã esse catholicam, & authoritatis infallibilis, non ex sola fide humana proponente, sed ex diuina, quæ innititur assistentia Spiritus Sancti, iuxta ad Ioannis 4. *Ille vos docebit omnia, & suggeret vobis omnia, quæcumque, &c.* Similiter extraditione credit: istas propositiones scriptura sacra continet Verbum Dei, isti libri sunt canonici, iste est verus Papa, istud est concilium legitimum, quia ad Spiritum Sanctum pertinet illuminare in necessarijs ad gubernationem Ecclesiæ, & dirigere traditiones, ne ærret in tradendis rebus fidei.

Arguitur contra, nam assensus de certitudine, & traditionum, innititur authoritati fidei humanę, proponentis, nam talis assensus fidei, quo creduntur fit ex auditu, quo deriuatur, & accipitur, fideles vbique habere traditiones vt certas.

Respondetur inchoari ex auditu vt organo, & instrumento doctrinæ recipiendæ, & non credi illa sola, sed diuina, & infallibili innitente Ecclesiæ instrumento, & Deo causæ principali.

DV-

DVBIVM. XXIII.

An in probatione authoritatis sacræ Scripturæ, & Bibliorum per authoritatem, & testificationem Ecclesiæ sit admittendus circulus necessariò, & ineuitabiliter, & an ille sit vitiosus, & inutilis?

RAtio dubitandi, *pro parte affirmatiua*, est petita ex calumnia iaculata ab hæreticis, & clamorosè videlicèt in præsenti confici circulum à catholicis, & criminosius cæteris, à Pareo in Osseam, proleg. 3. q. 2. pag. 35. nam cum sit admittenda duplex authoritas scripturæ, & Ecclesiæ, statim suboritur dubium, an in obiectis fidei recipiendis sit ordo? Vt vnum sit credẽdum per alterum, vnum probetur per alterum? & an authoritas scripturæ possit probari per authoritatẽ Ecclesiæ, & contra? quo præsuppositio fit circulus, nam siquis interrogatus, cur credit scripturæ authoritatem esse diuinã, & infallibilem, dicat, quia Ecclesia (authoritatis infallibilis) proponit, & testificatur, & si iterũ interrogetur, vndè credit Ecclesiæ authoritatẽ esse tantam, & tã infallibilem, vt non possit ærrare: & respondeat, quia Scriptura sacra (authoritatis infallibilis) id testatur, & si vltimò inquiratur, cur credit, quod Scriptura sacra sit authoritatis infallibilis, in testificãdo, cogitur redire ad primã interrogationẽ, & respõsionẽ, quia Ecclesia (authoritatis infallibilis) testificatur, quæ decipere non potest, aut ærrare in testificatione. En vbi cõmittitur circulus, dũ authoritas infallibilis scripturæ probatur per authoritatẽ infallibilẽ Ecclesiæ, & Ecclesiæ per scripturam; & scripturę per Ecclesiam, ab ignoto per ignotius. Vbi nihil notię adaugetur.

Conclusio asserit, *dari probationẽ authoritatis scripturæ per authoritatẽ Ecclesiæ, & vlterius admitti recursum, & regressum vtilẽ, vt plurimùm, non verò circulum formalem inutilem, & vitiosum.* Est communis.

Ratio est, nã in præsenti, non fit disputatio de duplici authoritate quod se, & secundũ essentialia authoritatis, nã in obiectis fidei credendis non est ordo perfectatis, vt vnum credatur propter aliud, sed satis est credi immediatè vtrumque, propter reuelationẽ Dei, quia Deus in ipsa fidei susceptione, aut post, illa reuelauit, si verò sit sermo, de illis in ordine adnos, si vnũ sit notius altero v. g. Ecclesię authoritas, per notius potest probari minus notũ, prius per posterius, si verò esset vtrũque æquè ignotũ, sic regressus ab vno in aliud esset circulus formalis, & omnino vitiosus, non minus quã dùm probatur notũ per ignotius, quia nihil acquiritur maioris claritatis, sed sicest quod in præsenti authoritas Ecclesię (in cõmuni modo credẽdi, & quoad nos) est notior, facilior,

lior cõmodior, latior, & visibilior simplicibus, & antiquior, quã sit sacra Scriptura, ergo in probatione, qua per Ecclesię authoritatẽ, & testificationem probatur authoritas scripturę non fit circulus formalis, inutilis, & vitiosus, nil afferens nouitatis substãtialis, aut accidentalis, sed re ipsa afferens, si nõ substantię, saltim qualitatis, scilicet maioris notitię, claritatis securitatis, &c. maior est certa; nam tunc in probatione fit circulus formalis si sit ęquè ignotũ vtrũque, aut probetur notũ per ignotius, quia per illud medium non fit magis notum quam antea, quoad substantiam, & modũ, minor verò (in qua est maior difficultas) probatur, quia authoritas Ecclesiæ est magis nota, & euidentior ex multiplici, capite 1. ex cõmuni modo credẽdi inter Christianos, quibus rudimẽtis fidei, cathechesi, & symbolo Apostolorum intimatur, & proponitur: *Credo Sanctã Ecclesiã Catholicam*, non ita expresse *credo Scripturam sacrã Bibliorũ*, & ita euadit notior ex symbolo. Secundò, quia Ecclesia est antiquior scriptura, nã olim extitit, antequã exaret scriptura, immò post quã extitit, aliqui fidẽ adhùc Christianam susceperũt, sine cogitatione saltim expressa illius. Tertiò authoritas Ecclesiæ est latior ad omnia obiecta fidei, ad scripta, & ad non scripta, & tradita. Vltimò est facilior notior, & accommodatior simplicibus, sensibilis, & visibilis, quę docet sensibili voce, & cogit ad admitendam authoritatẽ Scripturæ sacræ, iuxta illud Augustini. *Ego Euangelio non crederem, nisi authoritas Ecclesiæ me nõ moueret*, ergo per authoritatem Ecclesiæ magis notã, probari potest authoritas scripturæ. Immo addi potest, quòd dato, quòd essent ęquè notæ, adhùc vnum posset probari per aliud, si afferet maiorem intensionẽ, facilitatem, aut firmitatẽ subiectiuã, vt acuratius alterum admitteretur, imò, si ex repetitione actionũ renatius prior radicaretur, qua ratione plura lumina magis illustrant, quã singula, nã singula, quæ prosunt plus cumulata iuuant, & ita si authoritas Ecclesiæ aliquod horũ præstet intensius, acuratius, cognoscatur, argumentatio non erit circulus inutilis, & vitiosus, sed vtilis, & valdè proficuus, & erit vtilis regressus, qui non est improbatus ab Arist. 1. post c. 3. Sed visitatissimus, vt dũ ab effectu confusè cognito ducimur ad causam ex illo confusè cognitã, & à causa iã cognita clarius reddimus ad effectũ cognoscendũ, distinctius, & clarius. Idẽ quod dictũ est de authoritatibus quoad nos, dici potest de rationibus assentiendi, quæ solent esse media in probatione, à cognitione vnius ad cognitionem alterius, ab vno bene considerato ad aliud benè considerandum, fit cognitio maior, illustrior, firmior, &c. cæterum apud eos quibus vtraque authoritas est

æquè

æquè ignotâ, non erit locus illi in quisitioni, & indagini, nam non fit responsio probè, *credo scripturam propter Ecclesiam*, æquè ignotam, nec contra, *credo Ecclesiæ authoritatem propter authoritatem scripturæ*, æquè ignotam: sed vtraque creditur immediate, propter diuinũ testimonium, applicatum per fidem humanam.

Respondetur ad rationem dubitandi in illo casu, quo authoritas Ecclesiæ in ordine ad nos, & quoad nos est vniuersalior, notior, clarior, firmior, &c. non committi circulum vitiosum, quod nil affert nouitatis, aut maioris lucis (improbatum ab Aristotele) sed regressus, & cum maxima vtilitate, aut si vellis circulum, non erit formalis, quia non inutilis, & vitiosus, in illo autem discursu, in quo ab vna authoritate æquè ignota proceditur ad aliam, dicendum in illis tribui interrogationibus, quare credis, &c. non posse assignari idoneam responsionem, nisi vltima, in qua terminatur, sic credo vtramque: quia Deus reuelauit.

DVBIVM XXIIII.

An authoritas infallibilis sacræ Scripturæ Bibliorum sit vnus ex articulis fidei?

Conclusio est *affirmatiua*. Ratio nam licet nomen articulus summatur dupliciter. Primò, pro qualibet parte totius obiecti materialis fidei, nam multitudo rerum credendarum consideratur, ad instar vnius corporis, constantis, ex membris magnis, & paruis, quæ dicuntur artus, & articuli, & ita vocari solet quælibet res credenda articulus totius corporis fidei, & similiter summatur pro qualibet particula symboli Apostolorum, quod se habet veluti epitome corporis Christianæ fidei, qua ratione duodecim particulæ illius dici solent duodecim articuli fidei: tamen sumpto nomine articuli vniuersè priori illo vniuersaliori modo, est vnus ex illa collectione articulorum, obiecti totalis materialis fidei, quia qui non crederet esse scripturam diuinam, & authoritatis certæ, & infallibilis, esset hæreticus, non minus, quàm qui negaret, quemlibet alterum ex dictis articulis, explicitè, aut implicitè, habita ratione iudicij, & status. Idiota enim, qui de sacræ Scripturæ Bibliorum authoritate, aut qui libri sint habendi, vt diuini, & canonici, non teneretur nisi implicitè, & in confusso credere, sicut alia mysteria subtilissima, & abditissima fidei, vt si expressè illi hoc proponatur tenetur expressè credere, sicut vnum ex articulis totius corporis, & collectionis articulorum fidei. An autem sit necessaria talis scientia, circa istam authoritatem, &c. ad salutem singulis, etiam idiotis, & imperitis, vel Ecclesiæ com-

cōmunitati, suo loco dicendum: quod hic deciditur, est esse diuinā authoritatem sacræ Scripturæ, & infallibilem, esse vnum ex articulis dignis fide diuina, contra Lutheranos negantes fide insussa credendum esse diuinam, hunc vel illum librum, v.g. Euāgelium Matthæi esse diuinum.

DVBIVM XXV.

An Scriptura sacra, & sola sit iudex, & regula in negotio fidei, & religionis decidendo, & qui sit index ordinarius, & humanus, an Ecclesiæ authoritas? & illius traditio?

RAtio dubitandi, prō *parte asserente*, quod *sola scriptura sit iudex, & regula, secluſa authoritate Ecclesiæ, & traditione.* Primò ex Apostolo in nostro themate 2. ad Thimoth. 3. *Omnis Scriptura diuinitus inspirata, vtilis est, ad docendum ad arguendum, ad corripiendum, &c.* ergo. Secundò, nam Deus in veteri testamento remittit Iudæos in dubio ad Scripturam, vt ad iudicem, normam, & regulam Isaiæ 6. *ad legem, &c.* & Christus in nouo similiter ad scripturam, *scrutamini scripturas, ipsæ enim testimonium perhibebunt de me*, & fecisse Thessalonicenses constat ex act. 17. *quotidie scrutantes scripturas, si hæc ita se haberent.* Tertiò, nam Deus Deuter. 4. præcipit, vt ad Scripturam nihil addatur, *non addetis ad verbum, quod loquor vobis*: & Christus videtur damnare omnes traditiones, & velle nos sola Scriptura esse contentos, & instructos, Matth. 15. *& irritum fecistis mandatum Dei propter traditiones vestras.* Vltimò ex ratione vulgari petita ex ad Rom. 4. *est autem Deus verax, omnis autem homo mendax*, sed Ecclesia est collectio hominum, quæ inepta videtur, vt sit Iudex, & regula, quia regula debet esse certa, & infallibilis, & sine vlla obliquitate, vt qui sequitur, sit sibi certus, & securus non incidendi in errorem, sola autem Scriptura est regula certa, & infallibilis. Nam est Dei Verbum scriptum, Papa verò est homo, & omnis homo mendax, ergo sola Scriptura Sacra debet esse iudex, & regula recta, & infallibilis, sub qua non possit contingere deceptio, aut fallacia.

Hæretici (quos non patitur breuitas referre) satis procaciter affirmant, quod sit iudex, & regula quilibet è populo, in quo iudicatur esse spiritus Dei, hi enim moueri solent proprio spiritu, & existimant agi spiritu filiorū Dei, in quo misereri decepti.

Concluſio asserit, quod *Sacra Scriptura sola non est Iudex, sed Ecclesia (in capite Summo Pontifice) qui Iudex est ordinarius ad decidēdas lites, & controuersias in negotio fidei, iuxta regulas tamen Sacræ Scripturæ.* Vbi est distinctio inter iudi-

cem, & regulam, quod iudex est qui dat sententiam, regula verò est ratio, & forma decidendi, & ita Pontifex Romanus est iudex, qui profert sententiam in dubio fidei, siuè per se immediatè, siue per concilium nomine eius, & Ecclesiæ sacra verò scriptura, lex, & regula, secundùm quã, fieri debet decissio in dubio fidei, & religiones.

Nota primò pro intelligentia, quòd catholici profitẽtur Deum, Spiritum Sanctum, & Christum (etiam vt hominem) esse iudicem supræmum, & in præsenti inquiri iudicem visibilem, qui in dubio fidei, & religionis, nec falli, nec fallere possit, & dicat ius publica authoritate, ita suprema, vt non sit ab illo appellatio in superiorem. Nam in omni bona communitate, & republica rectè ordinata constitui debet iudex supremus, cuius sententiæ cæteri aquiescant, & ita dictat naturæ lumen. Quo circa in Ecclesia Mosaica fuit olim vnus summus (præter ordinarios ad vulgaria negotia) & in Christiana, est Pontifex summus à Petro in successores, sicut in republica seculari, & politica Rex Magistratus, &c. Nam scripturæ, & leges non dicunt propriè ius, sed exigentialiter, ad eum modum, quo dici solet, quod sanguis, & lapides clamant, Genes. 3. Lucæ 19. & sapientiæ 4. & qua ratione viri iusti dicitur damnare vitam, & mores peccatoris, *iustus mortuus vi*

uus impios, omnia enim ista habent quodadmodo linguã, suam. Inquiritur, in præsenti, quis iudex verè, & propriè, qui possit litigantes audire, indagare, & examinare veritatem, & fungens officio iudicis, pronuntiare sententiam, cui standum, quod sacra scriptura non dicitur præstare, nec Deus in illa, & per illam: nisi valde impropriè, Christus Dominus est iudex, lex autem, est regula, iuxta quam nos regit. Non tamen transit in iudicem, sicut ars secundùm quam agit artifex, nõ est ipse artifex, & in nulla replubica lex nõ est proprie, iudex, nam eodẽ modo se habet, dirigit sententiam, sed non dat, immo scriptura nõ potest facere munus iudicis, saltim in aliquibus causis. Primò nõ in hac, an hi, aut illi libri, hæc aut illa verba sint canoca? Secundò an hic vel ille sensus sit legitimus, & inspiratus à Deo? & similibus.

Secundò notandum, quòd *licet Deus sit supremus iudex rerum, omnium, tamen non aptè diceretur iudex ad decidendas controuersias in scriptura, aut per scripturam, cuius veritas, & sensus est latens & occultus.* Primò quia in præsenti indagamus de iudice visibili, cum alijs, requisitis, & circũstantijs aquo distat inuisibilis incorporeus Deus. Secundò nam sicut Regi facit iniuriam, qui deferret principali sententiam quam Porregi, vicario semel commisit officiali, ita qui Deo deferret iudicaturam, qua-

si

si vicarialem, aut ministerialem, sicut proprietario munus substitutionis cathedræ.

Tertiò, *notandum homines priuatos, & singulares excommuni plebe non posse esse iudices, in negotio fidei, & religionis.* Nam inquiritur in præsenti index ita certæ, & infallibilis veritatis, vt nec falli, nec fallere possit; alias fides vacillaret, & cæcus cæcum duceret. In dubio autem, quis esset legitimus sensus, standum non vulgari, & priuato iuditio, sed publico habentis authoritatem decidēdi. Et republica esset inordinata, vbi omnes, & singuli sibi arrogarent supremam iudicaturam, cùm essent priuatæ, vulgaris, & paris authoritatis.

Vltimo *notandum*, quod *in negotio fidei, & religionis non possunt esse iudices, Reges, & Magistratus, pura authoritate saculari.* Primò, quia, qui habet potestatem sæcularem naturalem, & politicam tantùm, non potest esse iudex in spiritualibus causis, & supernaturalibus, sed recipere sententiam latam ab habente potestatem legitimā. Quod infequitur latissimè, & doctissime P. Suarez, suo tomo contra Regem Angliæ. Ex quibus deduci debet, assignandum necessariò iudicē superiorem, visibilem, & publicum, cum cæteris qualitatibus prærequisitis, ad decidendas littes, & controuersias fidei, iuxta regulas scripturæ.

Probatur prima conclusio; *ex methaphora muneris, & officii iuditialis.* Nam iudex debet esse in causis fidei, qui possit audire littes, extricare dubia, diffinire difficilia, & proferre sententiam, & terminare causam, cui sit standum. Sed scriptura non præstat ita, quia est, lis, inter Lutheranos, & Caluinistas, multis retròannis, attēta sola scriptura indecisa, & interminata, quæ esset diffinita admissa Pontificis, & Ecclesiæ sententia, quæ diffiniret littem, & controuersiam viua voce, in his punctis, & controuersijs. Prima de Baptismo paruulorum. Secunda de prædestinatione. Tertia de exorcismo. Quarta, de numero, & canone, librorum authenticorum sacræ scripturæ. Quinta de persona Christi. Sexta, de reali præsentia eius in eucharistia: & cum sacra scriptura, sit apud illos iudex, non est lis decisa, & prolata sententia, accipiant, & acquiescant, sed insistunt in suo litigio. Non enim est satis clara, & manifesta, & sensus legitimus est occultus. Igitur illa sola non potest esse iudex, decisinus, eget, ergo iudice Pontifice, & Ecclesia decidente, & dirimente, & si sola scripturaest iudex, si det sententiam iustam, ac quiescant, si verò iniustam appellent ad supremum.

Secundò ratione *petita ex parte scriptura*, in qua ex Apostolo. 1. Corinth. 3. & PP. solet distingui littera, & spiritus, sicut in

homine corpus, & anima, littera secundùm sonitum occidit, spiritus autem sensus legitimi viuificat, littera externa solet astruere errorem, Spiritus legitimi sensus ipsam veritatem. Sed non potest esse iudex littera, quia potius inducit homines in errorem, nec spiritus legitimi sensus, quia ille sæpiùs est occultus, non est clarus, & manifestus semper, vt indè decidatur dubium, sed obscurus, vt inde suboriatur difficultas, & ambigendi occasio de legitimo, & verò sensu. Est igitur alibi inquirendus iudex, definiens legitimum sensum. Minor solet probari, nam olim littera occidit Iudæos, quia accipiebant secundùm litteræ sonum prænuntiata de Christo à Moyse, & Prophetis, iuxta Apostolum 2. Corinth. 3. cùm legitur Moyses vsque in hodiernum diem, *velamẽ superpositum est super cor eorum*, ideſt non intelligunt Moysem, quem quotidie legunt, & non introspiciunt sensum internum, contenti littera externa, nec suscipiũt Christum, qui sub velamine sacrificiorum fuerat præfiguratus, quod à Christo fuit improperatum dum remittit illos caliginates ad sacrã Scripturam, Ioan. 5. vt cognoscat esse Messiam à Deo promissum. Similiter occidit littera hæreticos. Nam relicto legitimo sensu, quem sequitur sancta Catholica, Ecclesia, caligine litteræ obnubilati, vt cæci impingũt in postes, & parietes. 1. Sabeliani ex illo Ioan. 10. *Ego & Pater vnum sumus*. Inspicientes corticẽ litteræ dicebant esse vnam personam sub varijs nominibus, propter diuersa munera, & officia: si autem Ecclesiæ spiritum sequerentur adepti essent intelligentiam, esse (scilicet) vnum in essentia, & substantia. Secundò Arriani ex illo Ioan. 14. *Pater maior me est*, accipiebant absolutè, & simpliciter maiorem, quoad humanitatem, & diuinitatem, relicto Ecclesiæ sensu. Idem de innumeris alijs, quibus littera fuit errandi occasio, quos latè Salmer Beccan, Serar. Rua, & alij. Quos prohibet præsura temporis recensere. Deinde alia pars minoris solet probari, quòd non potest esse iudex adhùc spiritus legitimi sensus occulti. Nam licet contineat verbum Dei authoritatis, & veritatis infallibilis, est difficilis, & absconditus, nã nõsemel; & de illius mente nõ cõstat, & oritur indè litigium, & disceptatio de verò, & legitimo, & à tempore Apostolorum originatæ sunt penè innumerabiles difficultates, & cõtrouersiæ circa legitimũ, & verũ sensum, nõ igitur est iudex idoneus spiritus litteræ legitimi sensus, qui implicatus latet ambiguitate, saltim ex defectu claritatis necessariæ, ad decidẽdas littes, indè subortas, patet, nã ille solus est aptus iudex, qui diffinit littẽ, & cõtrouersiã diffinitiua, clara, & manifesta sentẽtia. Quod sola scriptura non præstat; cuius sensus sæpiùs sunt valde obscuri. Est enim liber

liber ille signatus sigillis septem in Apocalipsi, visus à Ioanne, quē nullus in cœlo, in terra aperire, & referare valebat. Solus agnus aperire, valuit, & in terra eius vicem gerens, Pōtifex Romanus, Ecclesiæ caput, cui traditum est ad deuorā dum. Data opera omitto innumera exempla huius difficultatis, & obscuritatis. Per otium videndus est Beccanus tom. 3. cap. 7.

Confirmatur, nam sunt innume ra sacræ Scripturæ testimonia, in quibus sensus legimus haberi non potest, nisi ex Ecclesię authoritate, & traditione: ergo in his scriptura sola nou potest aptè fungi officio iudicis, sed erit recurrendū ad Ecclesiam, & traditionē. Sit ex innumeris exemplū. Ad illud Matth. 28. *Docete omnes gentes baptizantes eos in nomine Patris, Filij, & Spiritus Sancti.* Siquis diceret, sufficere ad Baptismum intentionem sine prolatione, & inuocatione Trinitatis, ex solius Scripturæ verbis non facilè posset conuinci, sed si fiat recursus ad Ecclesiæ traditionem, vsum, & praxim, quæ intellexerit requiri inuocationem, & prolationem, præter intentionem, conficietur efficax argumētū. Mitto huius generis similia, quę videri possunt apud præcitatos, eget igitur scriptura alio iudice, qui viuæ vocis oraculo definiat, qui sit legitimus sensus, intentus à Deo hic, & non alius, cùm sit sæpè legitimus obscurus, & ambiguus.

Tertiò probatur, *disiunctiua petito ex parte controuersiarum.* Nam multæ sunt lites, & cōtrouersiæ in negotio fidei, & religionis, de quibus non fit vlla mentio in sacra Scriptura, aut si fit, nō est tā perspicua, & clara, vt inde possit proferri sententia, quin sit inquirēdus iudex, ad decisionē, & diffinitionem manifestā. Ex innumeris exēplis. Primò, an libri Iob, Iudic, Sapiētiæ, & alij sint canonici? Vbi ex sola Scriptura assignari nō potest certa decisio, alij asserunt, alij negant, & in discordia est confugiendum pro decisione certa ad traditionē Ecclesiæ. Secundò, an Ecclesiæ sacramenta sint tantū septem, decidi non potest ex sacra Scriptura, sed ex traditione, & sensu Ecclesiæ. Tertiò, an baptizati ab hereticis sint baptizandi, decidi non potest ex sacra Scriptura, & petendū est ex Ecclesiæ vsu, praxi, & traditione. His adde, an confici debeat baptismus vna, aut trina mersione. An Christiani debeant colere diē dominicū loco Sabbathi. An Deipara post partū māserit virgo. An corpore, & anima cœlos ascēderit. An Petrus fuerit Episcopus Ecclesiæ Romanæ. An symbolū fidei sit verè canonicū, & Apostolicū. An in veteri lege fuerit aliquod remediū externū cōtra originale pro femelis. De his, & similib⁹ ex sola sacra Scriptura nō elicitur sentētia diffinitiua, nisi fiat recursus ad Ecclesiæ authoritatē, sensū, vsum, praxim, & traditionē. Ergo scriptura difficilis, & obscura eget alio iudice.

Quartò prōbatur, & ſummitur *ex vſu, & praxi veteris teſtamenti*, in quo non ſola ſcriptura cognoſcebatur iudex, ſed confugiebatur ad ſummum Sacerdotem, vt conſtat ex Ioſepho lib. 2. contra Apionē, & ex Deuter. 14. v. 8. *Si difficile, & ambiguum apud te iudicium perpexeris, &c. venies ad ſacerdotes, &c.* & 2. Paralip. 19. vbi litigium, de alijs controuerſijs de lege, demandato, de cęremonijs, de iuſtificationibus, &c. Ex quo colligitur in ſingulis ciuitatibus conſtitutos eſſe iudices inferiores, in quòrū diſcordia recurrendum erat ad Hieruſalem, in qua præſidebat Summus Pontifex, cuius deciſioni, & ſententiæ ſtandum, ſub pœna mortis. De quo mentio Marci 14. Lucæ 19. de inſtitutione verò vtriuſque Concilij maioris, & minoris ſub Moyſe, & Ietro Exod. 18. de maiori, Numer. 11. de minori, & vtroque colapſo reſtitutum eſt à Ioſaphat Rege Iuda, iuxta 2. Paralip. 19. antequam veniſſent ad terram promiſſam, in qua ſunt inſtituta dicta tribunalia, Moyſes in deſerto iudex ſolus, & extraordinarius iudicabat omnes lites exortas populo, & additi ſunt tribuni, Centuriones, Quinquagenarij, & Decani ad minores cauſas, vt ab illorum onere leuaretur, & electi ſunt ad maius leuamen ſeptuaginta ſeniores aſsiſtentes ad maioris pōderis cauſas, & grauiores. Moyſes ante legem ſcriptam ex Dei vicæ vocis oraculo dirimebat plures, vt qua pœna eſſent afficiendi, qui colligerent ligna in die Sabbathi, numer. 15. & alia numer. 9. & alia numer. 27. de quibus in lege nil erat ſcriptum. Deinceps poſt legem ſcriptam. Alij Pontifices dirimebant in terra promiſſa, ex Conſilio ſeniorū, & datus eſt ſpiritus Prophetiæ in electione num. 11. & ſingulis Dei aſsiſtentia ad difficiliora, non ita ſucceſſoribus ſubrogatis, qui non ſolùm decidebant controuerſias legales, ſed etiā in negotio fidei, in quibus cauſis ſcriptura ſola, nō erat Iudex, vtraque autem ſeries cauſarum appellabatur legalis, tùm quia ex lege originem ducebat, non ſatis clarè percepta, tùm quia erant dirimendæ ex vera, & legitima legis intelligentia, Deuter. 17. erat præcipua inter cōtrouerſias fidei, illa de Meſia, in qua litigatū eſt tempore Herodis, an Meſias in lege promiſſus iam eſſet natus, & delatus eſt ad ſenatū ſacerdotū præſidente Pontifice, Matth. 2. *& congregans omnes Principes Sacerdotū ſciſcitabatur ab eis, vbi Chriſtus naſceretur, at illi dixerunt, & in Bethleem Iudæ*, & cum eſſent dubij de loco, non auſi ſunt decidere per ſe, ſed delata eſt dubitatio ad ſacerdotes, qui ex officio ad ſcripturam confugerunt, nam ſpectabilis erat Pontificis ſententia ex aſsiſtentia Spiritus Sancti, licèt eſſent fortè alij Doctores. Conſtat in exēplo Moyſis, cui Deus cōceſsit maiorē aſsiſtentiā, quā 70. ſenioribus coadiutoribus, iuxta

iuxa num. 11. *dicit Dominus ad Moysem auferã de spiritu tuo, tradamque eis, vt sustentent tecũ onus populi*, vbi nomine spiritus intelligitur donũ gratiæ ad regendũ, & gubernandũ alios, non verò quod aliquid spiritus sit ablatũ à Moyse, sed quia infra illud donũ, dabatur aliud simile, illis, sicut de candela luminosa aufferri dicitur lux, & dari alijs ex ipsa accensis, sine destractione lucis fontalis.

Quintò probatur *ex vsu, & práxi in nouo testamento*. Nã sicut in veteri non ad scripturã solã, sed ad Summum Pontificé deferebantur causæ decidẽdæ in negotio fidei, & religionis, sic in nouo, nõ ad solam scripturã, sed ad Summũ Põtificé, & Ecclesiã, sunt deferendæ ad decisionẽ, & definitionẽ innumeris exẽplis, primũ: fuit orta cõtrouersia tẽpore Apostolorum, *An noui Christiani possent saluari, sine circunci sione?* Quidã aiebant, quidam negabãt, decisa est cõtrouersia in Concilio Hierosolymitano definitiuè act. 15. *Visũ est Spiritui Sancto, & nobis*, & nõ ex scriptura sola, nam ibi non fuit illa alligata cum adduci possent, pro vtraque parte, pro circunciſsione illud Genes. 17. *circuncidetur ex vobis, &c.* pro abstinendo à circunciſsione, & legalibus, illud Deuter. 30. *circuncidit Dominus cor in nouo testamento*; & illud Ieremiæ 4. *circuncidimini, & auferte præputium cordium*. Ac si diceret nõ requiro carnis, sed cordis circunciſsionẽ, per contritionẽ de peccatis. Et tamen Apostoli in Concilio, nõ dederunt sententiam ex scriptura, sed ex assistẽtia, & directione Spiritus Sancti, promissa sibi, & successoribus. Post tẽpora verò Apostolorũ decisæ sunt aliæ in negotio fidei, & nõ ex scriptura sola. Ex innumeris. Prima, an pascha deberet celebrari cum Iudæis decimaquarta die primi mensis. Secunda, an Ecclesia possit absoluere lapsos post baptismũ. Tertia, an in Christo sint duæ personæ, sicut duæ naturæ. Quarta, an possit reiterari baptismº. Quinta, an paruuli nascantur in originali in his, & similibus (latiori calamo apud prędcitatos) sentẽtia diffinitiua pronuntiata est, non ex sola scriptura, cùm in ea nõ esset expressum, sed ex Ecclesiæ authoritate, & iudicatiua potestate. Et si scriptura sola esset iudex, Ecclesia non interposuisset suam authoritatẽ, & potestatem in decidendo, & sine illa nõ reputarentur aduersarij damnati, est res certa, & indubitata. Deinde Ecclesia non potuit ærrare inferenda sententia, sicut nec Christus, Apostoli, & Prophetæ, qui mentiri in hoc negotio non potuerunt, & Apostoli testati sunt Ecclesiam ærrare non posse. Est enim fundata supra, *firmam petram. Et portæ inferi non prævalebunt, aduersus eam.* Est enim ex Apostolo 1. ad Thimotheum 3. *columna, & firmamentum veritatis*. De quo sunt alia testimonia Isaiæ 4. 12. & 17.

Sexto probatur *ex analogia, & similitudine tribunalis iudiciarij* iniudicando in negotijs, & causis ciuilibus, in quo sunt lites, quæ deferũ tur deciden læ, iudex laturus ferẽtiam, leges & regulæ, iuxta quas res est definienda. Sic ad tribunal, Ecclesiæ deferuntur dubia, & controuersiæ in negotijs fidei, & religionis, in quo est iudex Pontifex, Scriptura ratio decidendi, & regula, &c & sicut in politico sunt tria lex scripta, consuetudo, non scripta, iudex, &c. sic in negotijs fidei in tribunali Ecclesiastico scriptura, traditio, Princeps Ecclesiæ, iudex. Sed in politico lex sola, & consuetudo, non est sufficiens iudex ad decidendũ, & proferendũ sentẽtiã, sed est indigentia Magistratus, qui fungitur officio iudicis, secundum regulas legis consuetudinis, &c. ergo idem proportionaliter in Ecclesiastico, præter scripturã, opus est Ecclesia, & Principe illius Põtifice, qui fungitur officio iudicis, & definiat causas fidei, & morum.

Confirmatur, nam dato, quòd suboriatur difficultas in politico tribunali, quæ nec ex legibus, nec consuetudine decidi possit, opus est videre, qua ex ratione, æquo, & bono proferas sententiam, ergo idem, si in negotio fidei, & religionis, si ex scriptura tradi non possit confugi debet ad Ecclesiæ authoritatem, quæ ex dictamine rationis & existenria Spiritus Sancti dicat sententiam, sicut olim Apostoli in Cũcilio Ierosolimitano circa circuncisionem, & obseruantiam legalium, in hoc enim casu ad assistẽtiam, & Ecclesiam, vt ad iudicem dantem sententiam definitiuam fuit recurrendum.

Resp. *ad rationem dubitandi.* Ad primũ dico, quòd scriptura vtilis est, sed non sufficiens, & ita eguisse iudice, Pontifice, Ecclesia, &c. Ad secundũ remittere, vt ad vtilẽ, non vt ad sufficientẽ, sine alijs & non remittit ad solã scripturã ad probandã diuinitatẽ, sed ad vocẽ Patris, ad testimoniũ Baptistæ, admiracula, &c. ex act. autẽ 17 nihil concluditur *scrutantur scripturam*, ergo illa sola est iudex, scrutantur loca Augustini, ergo solus Augustinus est iudex, scrutantur loca Ciceronis, ergo Cicero est author latinitatis. Ad tertiũ ibi prohibetur, nil addendũ (intellige) irritatiuũ, & derogatiuũ legis: non damnari recursum ad Ecclesiã, & traditiones. Ad vltimum, dico primò, inuerti posse hoc argumentũ contra conficientes hereticos, nam si omnis homo mendax, etiam Moyses, Prophetæ, Apostoli, Euangelistæ, ergo etiam Lutherus Caluinus, & prædicantes eorũ mentiri, & errare possunt. Igitur dico secundò, in Pontifice distingui duas authoritates, priuatã Doctoris particularis, & publicã, qua vice Dei est, & licet sit homo, qui possit mentiri secundũ primã, non secundùm secundam, qua gerit vicem Dei, & habet assistentiam Spiritus Sancti, dirigitur, & gubernatur ab illo,

in

in negotijs fidei, & Religionis decidendis, & in presenti cum scriptura sit obscura, quamtumuis, certa, & infallibilis, nec satis constat de illius sensu, eget illo iudice, decidente, & determinante ex assistentia Dei. Talis fuit Moyses in veteri lege, & Pontifices successoros, Deuter 17. Malach. 2. & Prophetę, Isaias, Ieremias, Dauid, &c. & in noua lege, Apostoli, Petrus, & successores, quibus promissa est assistentia Spiritus Sancti, Ioan. 15. & 16. *ille Spiritus veritatis docebit vos omnem veritatem.* In hac autem excluditur omne mendatium graue, aut leue, inducit enim negationē omniū. An autem omnes, & singuli fideles Ecclesiæ habeant istam assistintiam, & directionem, vt in fide errare non possint, qua impulsum fidei sequntur; qua ratione dicitur, quod *quicquid natus est ex Deo non potest peccare*, pertinet ad materiam de fide, in qua dicitur quòd singuli quidem habent dependenter ab Ecclesia, vt coniuncti sunt cum illa, vt membra coniuncta cum capite, spiritus vitales dependenter à capite, & corde, qua ratione hortatur ab Apostolo seruare *vnitatem spiritus*, vnus Deus, vna fides, &c. de quo latius Becan. tom. de Fide c. 7. à n. 100.

Ad *Scriptura*, &c.

DISPVT. III.

De claritate, & obscuritate Sacræ Scripturæ Bibliorum.

DVBIVM I.

Quæ, & æqualis sit claritas, vel obscuritas sacræ Scripturæ Bibliorum? an ita perspicua, vt se ipsis sine vlla interpretatione possit legi, & intelligi etiam ab idiotis, & cum fructu spirituali?

RAtio *dubitandi* pro vtraq; parte, summitur, ex PP. apud Serar. in proleg. cap. 22. à quæstiuncula 1. quidam aiunt *esse perspicuas & euidente*, vt egeant solo auditore, non explicatore, & ex velamine peccatorum fieri obscuras, & sic esse à Deo scriptas, vt legi, & intelligi possint etiam ab opificibus, & idiotis, & in ea omnia lucida, & plana, & minime obscura, & ambigua, & in perspicuitate excedere scripturæ Philosophorum & prophanorū, & esse nobis lucernam, lucem, solem, illustriorem, & clariorem cœlesti & hæreticos huius solis lucifugas. Alij verò *in scripturis in esse magnam obscuritatem*, difficultatem profunditatem, & intelligi non posse sine Doctore, atque Magistro, & esse librum sig-

signatum,& abissum quæstionum, & agrum in quo est Thesaurus sapientiæ absconditus, & egere laborioso fossore, & esse conchiliũ claudentem margaritam, & nubẽ iusto pluentem vbertatem,peccatori sterilitatem, & esse mare, in quo magna profunditas sensuum, & inexhaustum pelagus, plusquã hauriatur, & sciatur. Et non omnes admittendos ad studium scripturarum. Denique speciali prouidentia esse obscuram ob plures fines,& causas nobis occultatas, vt qui sentit se posse humilietur, superbia suprimatur, ne authoritas vilescat apud vulgares. Vt sit ingeniorum exercitatio, & illustrent commentarijs, & infirmitas imploret diuinum auxilium. De quibus statim fusius.

Prima conclusio affert. *Scripturam diuinam non esse in se simpliciter obscuram, aut claram, sed respectu rerum significatarum, vel eorum, quibus signat.* Ratio nã sol potest in se ipso ipso clarus dici simpliciter, sed si induat rationem signi, potest dici ita, respectu rerum significatarum, vel respectu eius, cui significat, nam signum est rei signatæ signum, & illi cui signum, scriptura autem hic non summitur absolutè secundùm se, vt ita possit dici clara, vt sol, & obscura, vt tenebræ, sed secundùm rationem signi relatiuam, signum autem est rei signatæ signum, & illi cui sit significatio, & in his respectibus est inquirenda ratio signi, clara, vel obscurà, vnde si res sit significata clarè, vel obscurè, inde etiam signum, clarum, vel obscurum dici solet, item si ei cui res significatatur clarè, vel obscurè cognita fiat, indè dici solet signum clarum, aut obscurum. Ergo scriptura secundùm se non dicitur aptè clara, & obscura absolutè, sed in ratione signi respectu rei,& cui fuerit signum

Secunda conclusio. *Sacra Scriptura in ratione significandi, & modi significandi, est difficilis, & obscura, vt se sola, nec capi possit ab idiotis sed egeat Magistro, nec diffiniat dubia in negotijs fidei, & religionis sinè Ecclesia, aut interpretatione.*

Ratio nam siuè spectetur significatio, siuè modus significandi, siuè res significatæ, siue is cui significantur. Est difficilis, & obscura, & eget expositione, probatur experientia, nam si signum sit verbum hebraicum, aut alterius idiomatis, licet nota sit significatio perito, coniunctio cum alijs reddere potest difficilem, & dubiam significationem, cùm eidem vocabulo præsertim Hebræo insint non semel plures significationes. Interdum significat propriè, interdũ metaphoricè, & oritur dubitatio, an vox summi debeat propriè, an allegoricè, aut figuratiuè? & opus est sæpissimè, non sola cognitione vnius idiomatis latini, aut hæbrei, sed comparatione cum alijs, vt melior sensus eliciatur. Secundò si spectetur ex parte rerum

rum est difficilis, & obscura, nam si res sint cœlestes, erunt supra vires, occultæ, si terrestres, & ob id faciles, ratione finis, in quem ordinantur occultæ, ratione principij à quo sunt similiter, & de illis quęstiones moueri possint obscuræ, & difficiles, vt circa illud *in principio creauit Deus cœlum, & terram.* Quid principij nomine intelligatur, initium temporis, aut verbum, per quod omnia facta sunt? Quod cœlum tunc creatum? An Angeli? an orbes, an omnes simul, an aliqui tantum. An cœlum prius terra, an simul? & an ante illa sint creati Angeli? cur non antè creauit, cur non citius? & alia huiusmodi formę, quæri possunt, quæ non facile à quoquam expediantur, & si docti tot vigilias, & labores insummunt, quanto magis stupidi, & hebetes ingenij, consummentur, & forte sine fructu, dicendum est, & ita concludi debet, quod licet scriptura, quoad aliquas sit clara, & perspicua, siuè in significatione, modo significandi, re significata, aut respectu eius cui significatur, vniuersè dici debet difficilis, potius, & obscura, quàm perspicua, & clara, siue prima superficie aspiciamus, siuè acuratius, & profundius inuestigemus, nam licet historiæ, & aliquot ex dogmatibus facilia sint intellectu ex ipsa contextura verborũ, vt esse Deum natum, passum, & similia, tamen difficille admodum, cui Deus hos prædestinauerit, non alios, qua ratione cor Regis possit moueri in manu Domini, & an Pharaonis, aut alterius indurari: Quid de illo, *in principio erat verbum*, nomine, habita ratione significationis, modi significandi, & rei & cui. V bi sunt penè innumera difficilia, & perobscura, qua ratione verbum sit filius naturalis, & non Spiritus Sanctus? & an sit etiam Deus aut prima creatura, & aliæ huiusmodi.

Respondetur *ad rationes dubitandi.* Quòd PP. qui dicebant esse perspicuam, & claram, intelligendi sunt, quoad aliquas illius partes, quoad aliqua præcepta, & monita benè viuendi, & aliqua dogmata generalia, & non de illa sola, & secundùm se, sed adiuncta explicatione, & rudimentis Ecclesiæ, vel de ea respectiuè, ad peritos viros, sibi similes, & diuina luce præditis. Qui verò dicunt scripturam obscuram loquuntur similiter, quoad alias partes, iuxta dicta, & intelligentias, non superficiales, sed absconditas, & profundas, vt etiam ipsi hostes hæretici, non semel affirmarint; esse in scripturis facilia, & difficilia, clara & obscura, & intellectu difficilia.

(.·.)

DVBIVM II.

An Scriptura sacra Bibliorum sit adeò difficilis, & obscura in sensu litterali, &c. vt non valeat, se sola intelligi, sed egeat magisterio, & arte interpretandi?

CONclusio est, *ita est difficilis, & obscura, vt ingenio, & industria propria egrè, aut numquàm possit rectè, intelligi, & ita egeat Magisterio, & arte.* Est contra hæreticos, nimia præsumptione, & caliditate plenos: dicentes esse adeò facilem, vt sit manifesta cuiuis legenti, nec sit necessaria doctrina Theologica, & PP. legitimè exponentium in sensu Spiritus Sancti, vt ita sit illis libera licentia adulterandi, & retorquendi ad suos depravatos sensus. Primò, ex vtroque testamento Isaiæ 2. *Dabitur iste liber scienti litteras, & dicet non possum, clausus est enim liber.* Petrus de Epistolis Pauli 2. c. 2. *in quibus sunt quædam difficilia intellectu, quæ indocti depravant ad suam perditionem.* Lucæ 24. Discipulis non intelligentibus scripturam *interpretabatur Christus, quæ de illo erant.* Act. 8. Philippo interroganti Eunucho Reginę Etyopum, *Putas ne intelligis, quæ legis?* (& legebat Isaiã Prophetam) *respondet, quomodo possim, si aliquis non ostenderit mihi.* Matth. 13. non intelligebant discipuli plura, quæ dicebantur à Christo, & petebant expositionẽ, *edissere nobis parabolam* cizaniorũ, Lucæ 18. *Ipsi nihil horum intellexerunt*, quæ dicebantur à Christo de passione, & resurrectione. Matth. 24. *qui legit intelligat.* Danielis 12. Præcipitur Prophetæ *signa librum, & claude sermones, transibunt multi, & multiplex erit scientia*, id est multiplex sensus. Ioan. 11. *Soluite templum hoc, & in tribus diebus excitabo illud:* Ioan. 3. Nicodemus Magister in Israel nõ intelligebat illud *nisi quis renatus*, de regeneratione spirituali per Baptismum, nec illud, *sicut Moyses exaltauit serpentem, in deserto*, quia non capiebant, exaltationem Christi per crucem, & Paulus ipse 2. Corinth. 4. dicebat, *Iuum Euangelium esse opertum*, & act. 22 fatetur se didicisse interprætari sacram Scripturam ad pedes Gãmalielis, & vt abstineam asilua locorum, quæ facile coacerbare possem, do finem cum Apocalyp. vbi c. 5. ostensum est Ioanni liber signatus intus, & foris sigillis septem, & ipse flebat, quia non esset inuentus, nec in cœlo, nec in terra, qui apperire librum, & soluere signacula, non nisi leo de Tribu Iuda, Christus, & cæteri nomine cuius, virtute, & auxilio illius. De Apocalypsis difficultate, & profunditate dixit Hieronymus in scripturis peritissimus in Epistola ad Paulinum. *Quod tot sint sacramenta, quot verba.*

Secundò probatur ex Trid. decreto de vsu sacrorum librorũ

vbi

vbi definitur quod nullus proprio ingenio, & industria fissus audeat inuestigare, & interpretari sacram Scripturam, sed insistat vestigijs, & explicationibus Sanctorum Patrum.

Tertio probatur difficultas assequendi sensum litteralem. Ob scripturæ obscuritatem ex pennè innumeris partibus ad Sanctum Hyeronimum ferè ex toto orbe deferebantur quęstiones decidendæ, studio discendi, adhùc à PP. Damasso Papa illum consuluit de his quæstionibus. Prima, quid significat in Genes. *Omnis qui occiderit C. in, septuplum punietur.* Secũdò, si Deus fecit omnia valde bona, cur præcepit Noe, vt de immundis eligeret in arcam, cum nihil huiusmodi posit esse bonum. Tertiò, cur Abraham susceperit signum fidei in circuncisione. Quartò, cur Isaac benedixit errore, quem noluit, non quẽ voluit benedici. Quintò, quæ sit interpretatio visionis Isaiæ de Seraphinis, & Trisagio Sanctus. Euagrius Dardanus, Vitalis, Cyprianus, & plures PP. de quibus Baccanus ibidem cap. 3. de difficilibus consulimur, vt quid sit terra promissionis, quid sit Seraphim apud Hebræos, quid sit *panis dolerit?* quid *filij excussorum?* Quæ sunt illa *nec oculus vidit, nec auris audiuit.* An aliqui antequam moriantur, sint in iudicio deferendi ad cœlum cũ Christo, cum nullus sit, qui nõ sit visurus mortem. Qualiter sit intelligendum illud Christi Matth. 26. *Non bibam amodo de hoc genimine vitis.* Quid significet *velum templi scissum est in duas partes.* Quomodo dicit Matthæus, quòd Christus resurrexerit vespere Sabbati, cùm Marcus dicit *mane*, & illud Matth. 24. *vè prægnantibus.* Et quis sit ille villicus iniquitatis laudatus à Christo, & huiusmodi perinè innumera, quæ non vacat coacerbare. Deinde venio ad Sanctũ Augustinum, ad quem ferè ex toto orbe delatę sunt quæstiones discendi studio, per Doctissimos PP. Bolusianum, Bonifatium, Dardanum, Euodium Honoratum, Paulinum, Simpliciauum, & alios, de quibus latè Baccanus ibidem. Primò, qualiter Deus immensus claudi potuit in angusto virginis vtero. Cur Deus abrogauit sacrificia Mosaica, quæ instituit. Quomodo Magni Pharaonis post cõuersam totam aquam Egypti in sanguinẽ inuenerunt aquam, quam mutarent in sanguinem. Quomodo infantibus prosit parentum fides in Baptismo, & non noceat impietas post illum. Et quomodo Patrini, & susceptores infantium respondeant credere infantes, cum non habeant vsum rationis, & incertum sit, postea crediturosne. Quomodo Christus in cruce dixerit latroni, *hodie mecum eris in paradiso*, & hodie credatur esse in cœlo. Quinam sint illi spiritus, quibus Petrus 1. cap. 19. dixit, *Christum prædicasse in carcere detentis, qui tempore*

pore Noe, cùm fabricaretur arca, erãt incredulæ. Quid sibi vellit vox illa Christi *Deus meus, quare dereliquisti me?* Quæ sint quinque virgines sapientes, & quæ quinque stultæ, Matth. 25. quæ sint tenebræ exteriores Matth. 22. Quomodo sit intelligendum illud Ioan. 1. *in principio erat Verbum, & Verbum caro factum est.* Qua ratione sit intelligendum illud 1. Reg. 10. *insiluit Spiritus Domini super Saul* cũ 1. Reg. 16. sit scriptum, *& exagitabat eum Spiritus nequeam.* Denique, vt abstineam ab innumeris an ille spiritus malignus, qui erat in Phytonissa, valuerit efficere, vt euocaretur à mortuis Sanctus Propheta Samuel, & loquerentur de euẽtu belli cum Rege Saule. Ex his ergo concluditur difficilem esse, & obscuram scripturam, vt egeat Magistro, & arte ad eliciendum sensum præsertim litteralem.

Vltimò ex PP. Chrisost. hom. 4. in Ioan. ad illud, *scrutamini scripturas*, expendit non dixit tantum legite, illæ enim sunt perspicuæ, & claræ, sed adhibete scrutiniũ, ac si illius sensus vt Thesaurus absconditus, studio, & labore fodiendus. Iuxta sapientiæ 1. *si quæsieris sapientiam, quasi pecuniam, & quasi Thesauros effoderis eam.* Hieronimus Epist. 103. ad illam visionẽ Ezechielis de similitudine quatuor animalium cõparauit labirintho cretensi. Et illud Psalm. *Si dormiatis inter medios cleros*, dixit esse crucẽ Theologorũ, sicut Aristoteles physicã, carnificinã ingeniorum, & Dauid Psal. 118. orauerit Deum, *da mihi intellectum, & scrutabor mirabilia de lege tua.* Est ergo adeò difficilis, vt egeat Magistro, arte, & methodo explicandi, interpretandi, & auxilio diuino.

Arguitur primo pro Hæreticis Deutor. 38. *mandatum, quod ego præcipio tibi, non supra te est, nec procul positum, nec cœlo situm, nec transmare*, ergo similiter, & scriptura, vt sit opus authoritate Ecclesiæ, & arte exponendi.

Respondetur ibi sermonẽ esse, de facilitate adimplendi legem ex diuina gratia, intus mouente, iuxta Vazquez 12. tom. 2. disp. 198. à num. 154. Quod si de scriptura, assimili, dico, astrui facilitatem, ex recursu ad Ecclesiam, &c.

Arguitur, ex veteri testamento Psal. 118. *Lucerna pedibus meis verbum tuum, & lumen semitis meis, declaratio sermonum tuorum illuminat, & intellectum dat parvulis*, Ps. 18. *præceptum Domini illuminans corda.* Prouer. 6. *mandatum lumen est, & lex lux*, ergo sacra Scriptura est admodum clara, vt lux illuminans.

Respondetur, quòd scriptura (si sit recte explicata) est lux illuminans, sed est sub modio, & lanterna, dum non constat sensus illius, indigens aperiri, & referari ad emittendum splendorem, & illuminando intellectum, & mo-

tum-

uendo voluntatem ad operationis honestas, est littera occidens, vt exterius sonans, est externus viuificans, vt interius latens.

Arguitur tertio nam Christus apud Matth. 5. appellat Apostolos *lux mundi*, quæ deffert doctrinam Euangelicam, ergo sacra Scriptura, præsertim noui testamenti, non eget luce manifestatiua.

Respondetur loqui de ipso Euangelio secundum se, rectè intellecto, secundùm spiritum viuificantem, non secundùm litteræ sonum. Ex quo occasionari possunt errores, vt ex illo Matth. *si oculus tuus scandalizat te abscinde eum, & proijce abs te*, abscisio manus, & eruitio oculorum, cùm intelligi debeat de abscisione, & remotione ocasionum, & causarum peccandi.

Arguitur quartò, nam veteris testamenti est impletio, & explicatio noui. Ex Daniel. 12. *Claude sermones vsque ad tempus statutum*, id est vsque ad Christum, iuxta Theodoretum, & *liber signatus sigillis septem*, iam apertum per agnum occisum. Ireneus lib. 4. aduersus hæreses, antiquos Prophetas fuisse enigmata ante sui implectionem, iam verò manifestos, & apertos, ergo saltim nouum testamentum non est difficile, & obscurum, sed manifestum, & clarum.

Respondetur ex hoc probari esse clarius veteri, non tamen ita clarum, vt non indigeat iudice, Magisterio, & arte exponendi, quo circa adduci, & explicari soled illud Apostoli, *videmus nunc per speculum, & in enigmate, tunc autem facie ad faciem*, vbi particula nunc significat vitã præsentem, sub duplici statu veteris, & noui testamenti, particula verò tunc vitam futuram in visione clara, & faciali, in veteri testamento mysteria fidei visa sunt in enigmate, in nouo inspeculo, in vita futura facie ad faciem. Sit in exemplum mysterium Eucharistię videbatur in Maria, vt in enigmate, in verbis Christi *hoc est corpus*, vt in speculo, in cœlo autem facie ad faciem, visu lii oculo, corpus, & sanguinem Christi.

Arguitur vltimò, nam probari nam potest rectè notum per ignotius, sed clarior est sacra Scriptura, quam Patrum expositiones, ergo catholici ineptè probãt scripturas per expositiones.

Respondetur isto sophismate fuit Lutherus deceptus, in lib. de libero arbitrio, vt affirmaret, quòd sacra Scriptura est clarior, quam sit interpretatio PP. sed facilis est solutio, nam PP. probãt per scripturam idoneas esse suas expositiones, vt per verius, non per notius, nam Scriptura sacra superat in veritate expositiones PP. ille verò superãt in notorietate, perspicuitate, & claritate.

DV-

DVBIVM III.

Quæ sit causa obscuritatis sacræ Scripturæ?

Conclusio asserit, *quòd plures, & potissimæ inter alias* prima sumitur *ex parte rerum, & ex parte modi*, ex parte rerum est obscuritas, nam res, vel historiæ sunt, vt in Genes. & alijs historijs veteris testamenti: aut historiæ noui, vt in Euangelio, & actibus, vel vaticinia, & prophetię, in Psal. Prophetis maioribus, & minoribus, & ex nouo in Apocalypsi, vel tria mysteria fidei Trinitas, Incarnatio, præsentia realis in Eucharistia, fide iustificante, prædestinatione, & similibus. Denique quatuor præcepta morialia, aut legalia de virtutibus, & vitijs, & quamuis in libris historialibus, legalibus, non esset magna obscuritas, est tamen in mysterijs fidei, & prophetijs, quæ superant vires, & intelligentiam humanam. Nam videmus iuxta Apostolum *per speculum, & in enigmate* caliginosso, & obscuro. Deindè modus, tractandi est obscurissimus, varijs ex capitibus: Primò, quia in scriptura sunt plures loquutiones figuratæ, nam sunt frequentes figuræ, methaphoræ parabolę, allegoriç, & hyperboles, quibus intelligi, & capi non patiuntur facile à lectoribus. Secundò, quòd interdum vnum, & idem verbum in eadem sententia, aut clausula significat variè, modò propriè, modò figuratiuè, Ioann. 4. *Qui biberit ex hac aqua sitiet iterũ*, qui verò ex aqua à Christo propinata, non sitiet in æternum, in priori parte fit sermo de siti, & aqua corporali, in secunda spirituali, Ioan. 9. dixit Christus *ego in hunc mundum veni, vt qui non vident videant, & qui vidẽt cæci fiãt.* Vbi prius intelligitur de visu corporali, posterius de spirituali. Denique, vt ab alijs innumeris abstineam 2. Corinth. 5. *Qui non nouerat peccatum, pro nobis peccatum fecit:* nã priori parte peccatum summitur propriè pro actione peccaminosa dissona contra legem, in posteriori in accceptione figurata, scilicet pro hostia pro peccatis oblata, & conficitur sensus: decreto diuino factum: Quòd Christus, qui non peccauerat, esset hostia pro peccatis hominum: iuxta Augustinum lib. 2. de consensu Euangelistarum cap. 30.

Secunda *causa obscuritatis* inde oritur, quòd occurrunt figuræ, in rebus, vocibus, & dictionibus. Nã vna res (non semel) est figura alterius, vt per agnum Paschalem Christus, per mana Eucharistia, per mare Rubrum, Baptismus, per montem Sion Ecclesia, & sic de mille alijs. Hinc difficultas, & obscuritas. Primò, quòd non facile cõstat, quæ res sit figura alterius, & cuius sit exẽplũ. Agar ancilla Abrahæ fuit figura synagogæ, & Sara Ecclesiæ, & nisi

nisi Apostolus ex instinctu Spiritus Sancti explicaret id ad Galat. 4. non esset manifestum, *Abraham duos filios habuit, vnum de ancilla, alterum de libera, &c.* idem de virga vigilante visa à Ieremia, significante executionem celerrimam diuinæ sententiæ contra Iudæos, & gentiles. Idem de olla succenssa Ieremiæ 1. quæ figura, & typus, aduentus Nabucodonosoris. Idem de calice furoris Domini Ieremiæ 25. indigitante potentiam, & furorem Regis Babyloniæ. Idem de lumbari computrescenti Ieremiæ 13. præindicante interitum populi in captiuitate. Idem de laguncula implenda vino Ieremiæ 13. significante habitatores Hierusalem in ebriandos fore vino iræ furoris Domini. Idem de luto in manu figuli, indicante Iudæorum populum esse in manu, & libera potestate Dei. Idem de laguncula testacæa confracta Ieræmiæ 19. quæ significabat euersionem Hierusalem, & totius populi. Idem de quatuor bestijs consurgentibus de mare, 2. Daniel. 7. quæ significabant quatuor imperia, & regna capitalia mundi. Hæc igitur, & alia huiusmodi fuisse figuras, & typos rerum aliorum, non facile constaret, nisi esset à Deo, ita explicatum, per scriptores sacros, & adhuc significata vix percipiuntur sine interprete. Secundò oritur difficultas, & obscuritas ex eo, quòd vna res sit figura plurium, & diuersarum, immo, & repugnantium. Sic Ionas fuit typus Christi Matthæi 12. *Sicut fuit Ionas in ventre ceti, sic erit filius hominis in corde terræ.* Et idem Ionas fuit etiam typus populi Iudæorum, nam sicut Ionas dolebat de conuersione, & pœnitentia Niniuitarum, ita Iudæi de vocatione, & conuersione gentium. Idem de petra, de diluuio, & similibus, petra Christum significabat, qui 1. Petri 2. & Rom. 9. fuit *lapis offensionis, & petra scandali*, pereuntibus, & in caput anguli credentibus, similiter diluuium ex vna parte fuit figura Baptismi fidelium, & ex alia suplicij infidelium. Denique tertiò, nam interdum contingit, vt vna res figura alterius sit similis, & dissimilis; similis in vno, & dissimilis in alio. Sit exemplum, nam fœmina illa fornicaria, quam iussus est accipere in vxorem Propheta Oseas, fuit typus Sinagogæ. In eo similis, quòd sicut ipsa commisit fornicationem carnalem, ita Sinagoga spiritualem, scilicet idolatriam. In eo dissimilis, quod illa post matrimonium initum, non redijt ad fornicationem, iuxta probabilem sententiam, Sinagoga verò post reconciliationem cum

Dei, redijt iterum ad idolatriam.

Tertia causa obscuritatis est, quòd in Scriptura sæpè est ambiguitas ex defectu distinctionis necessariæ. Ex innumeris sit exemplum illud Matthæi 9. *Pater noster, qui es in cœlis*, vbi in dubio est an nomen Pater accipi debeat essentialiter, vt est communis tribus personis, an personaliter, vt proprium soli primæ? & in ambiguitate oritur occasio disquirendi, & est verius, summi essentialiter, vt est commune omnibus, iure creationis, gubernationis, & adoptionis, qua ratione tota Trinitas in vnitate deitatis, vt Deus vnus est, dicitur Pater noster. Ioan. 20. summitur nomen Patris vtroque modo, *ascendo ad Patrem meum, & Patrem vestrum*: Patrem meum, vt prima persona, Patrem vestrum, vt habet essentiam, & paternitatem essentialem, communem cum cæteris. Ad Colos. 1. dicitur quod Christus est *primogenitus omnis creaturæ*, & in ambiguitate, an secundùm diuinam naturam, an secundùm humanitatem? eget interpretatione, & distinctione, alij secundùm diuinitatem. Idem ad illud ad Hebræos 1. *Et iterum cùm introducit primo genitum in orbem terræ, &c.* est ambiguitas, an sit sermo de primo aduentu Saluatoris, an de secundo iudicis? Idem ad illud ad Galat. 4. *illa autem, quæ sursum est Hierusalem*, est difficultas, an de militante, an de triumphante intelligendum? Denique in hoc genere ambiguitatis, & obscuritatis, versari plura alia, concors est sententia: Matthæi 28. *ecce ego vobiscum sum, &c.* Act. 9. *Saule Saule quid me persequeris? &c.* An sint intelligenda de Christo capite, an de eodem in membris mysticis? discipulis, fidelibus, &c. & eget interprete Magistro, & arte decidendi.

Quarta causa obscuritatis oritur, ex eo quòd in scriptura sit frequens transitus à sensu litterali, in sensum mysticum, à carnalibus ad spiritualia, à temporalibus ad æterna. Et ingerit legenti ambiguitatem, & obscuritatem non modicam. Sit in exemplum ex innumeris, Isaiæ 14. *Quomodo cessauit exactor, &c.* vbi insultatur contra Regem Babylonis, & statim fit transitus ad Luciferum in Rege figuratum, & significatum vers. 12. *Quomodo accidisti de cœlo Lucifer, &c.* Simile est illud Psal. 71. vbi cum esset sermo de Salomone, fit transitus ad Christum, *& adorabunt eum omnes Reges terræ*, huius farinæ sunt innumera alia, apud citatos authores.

Quinta causa obscuritatis, & non infrequens, oriri solet, ex eo quòd in historijs, non dispo-

nitur

nitur ordo rerum gestorum, cum ordine prioris, & posterioris; sed non semel est prolepsis, idest anticipatio rerum gestarum, aut recapitulatio, &c. ex innumeris sit in exemplum, Genes. 7. legitur, quòd Noe accepit illud oraculum à Deo, *Non permanebit spiritus meus in homine*, cùm esset etatis 600. annorum, sed erunt dies illius 120. anni: & capite antecedenti legitur, quòd *erat* 500. *annorum*, quibus si adiungantur illi 120. conficitur plusquam 600. Et reuera ibi est prolepsis, scilicet anticipatio annorum 20. Idem non semel contingere solet in recapitulatione. Ex quibus oriri solent difficultates, quę sunt cruces expositorum.

Sexta causa obscuritatis, oritur, quòd in scripturis solent citari plures libri, qui hodie non extant, qui si extarent plurimum lucis afferrent, & exularent occasiones ambiguitatis, & obscuritatis. Est obseruatum communiter à sacris Interpretibus. Primò, quòd Numer. 21. vers. 14. citatur *liber bellorum Domini*. Secundò, quòd Iosue 10. vers. 13. *liber Iustorum*. Tertiò, quòd 3. Reg. 11. vers. 41. *liber verborum dierum Salomonis*. Quartò, quòd 3. Reg. 14. *liber sermonum Regum Iuda, & Regum Israel*. Quintò, quòd 1. Paralip. 29. vers. 29. *liber Samuelis videntis*, de rebus gestis à Dauide, & ibidem *liber Nathan*, de gestis eiusdem, & ibidem *volumen Gad videntis*. Sextò, quòd 2. Paralip. 9. vers. 29. *liber Nathan Prophetæ*, de rebus, & gestis Salomonis, & ibidem *liber Ahiæ Silonitis*, & ibidem *visio Addo videntis*, contra Ieroboam filium Nabat. Septimò, quòd 2. Paralip. 20. vers. 34. *Historia Regum Israel* conscripta à Iehu. filio Annani. Octauò, quòd 2. Paralip. 26. vers. 22. *Historia Oziæ Regis*, conscripta ab Isaia filio Amos. Nonò, quòd 2. Paralip. 33. vers. 1. *Sermones Hozai de rebus Manasse*. Decimò, quòd 2. Paralip. 35. vers. 25. *Lamentatio Ieremiæ in funere Regis Iosiæ*. Vndecimò, quòd Ieremiæ 36. vers. 6. *Volumen Ieremiæ de euersione vrbis, & captiuitate populi*. Duodecimò, quòd Ieremiæ 51. vers. 6. *liber Ieremiæ de vastitate Babylonis*. Decimotertiò, quòd 1. Macab. 16. vers. 24. *liber dierum sacerdotis Ioan. Hircani*. Decimoquartò, quòd 2. Matth. 2. vers. 1. *Descriptiones Ieremiæ prophetæ*, quæ omnes, & aliæ citationes, librorũ, qui hodie non extant, pariunt plures difficultates, & ambiguitates. An libri isti sint diuersi tituli, & inscriptionis librorum, cum re ipsa sint idem, ac in Bibliis positi an sub alio titulo, & diuersi? qui re ipsa iam perierint, non vacat disputare.

Septimò, causa obscuritatis, & difficultatis est, quòd in scriptura, non semel sese offerunt anti-

logiæ : scilicet apparentes contradictiones, quæ sibi inuicem videntur implicare, & secum discordare testimonia. Quæ lectori densas obtundunt tenebras. Ex innumeris, quas Trinus reduxit in cathalogum ad plus 11450. tom. 3. indice. 4. antilogiarum (ex quibus aliqua congessit Becc tom. de fide cap. 3. & Salmeron prolegom. 2.) inexemplum accipite. Genes. 2. dicit Moyses, quod *Deus creauit cœlum, & terram sex diebus, & die septima quieuisse*: Ecclesiasticus autem, dicit cap. 18. quòd, *qui viuit in æternum creauit omnia simul*. Genes. 32. dicit Iacob, *vidi Dominum facie ad faciem, & salua facta est anima mea*, & Exodi 33. dicitur, *non videbit me homo, & viuet*, Psal. 115. *omnis homo mendax*, & Apocalyp. 14. *In ore eorum non est inuentum mendatium*: Marci 16. quod Christus *crucifixus est hora tertia*, & Ioan. 19. *hora erat quasi sexta*. Huiusmodi contradictiones inuentæ in sacra Scriptura graue facessit negotium Patribus, & in enodandis, & conciliandis, non infructuose laborauerunt, & nouissime Trinus loco præcitato, vt vix sit vlla antilogia, quæ non sit mirificè cõciliata, cum re vera inter illa non sit dissidium, sed summa consentiant concordia.

Denique vt ab alijs abstineam, quòd sæpè legenti occurrunt idiotismi, hæbraismi, orti ex lingua hębraica, & græca, qui non satis intelligi, valent, nisi à viris peritis in dictis idomatibus, & Trin. tom. 1. collegit in summam breuem, cum tropis, figuris, adagijs, fabulis gentilium, & alijs, quibus solet vti sacra Scriptura, quæ terrere solent tyrones, de quo infra.

DVBIVM IV.

Cur Deus voluerit Scripturam sacram Bibliorum, ita esse difficilem, & obscuram in litterali, & alijs?

Conclusio, *sunt variæ rationes excogitatæ à Doctoribus*. Primò, nam Deus voluit in sna Ecclesia seruari ordinem discipulorum, & Magistrorum, discipuli discerent ignota, Magistri docerent cognita, iuxta Apostolum 1. Corinth. 12. *Posuit Deus in Ecclesia primum, Apostolos 2. Prophetas 3. Doctores*, & infra, *nunquid omnes Doctores, &c.* & ad Ephe. 4. *Alios Pastores, & Doctores in edificationem corporis Christi*, scilicet mistici, videlicet fidelium, ac si diceret, non omnes Doctores, alij docent, alij discunt. Quod introducit ex pulchra similitudine, petita à corpore physico humano, in quo nõ omnia habẽt eũdẽ actũ. Est caput, brachia, pedes, &c. & vnum quòdque membrum est intentum suo exercitio, & muneri, nec vnum vsurpat offi-

officium alterius, caput pedis, pes capitis, oculus auditus, auditus oculi, &c. ita in Ecclesia sunt Doctores, quibus incumbit officiū dicendi, alijs discendi. Esset enim inordinatū, quòd potestas legendi sacram Scripturam, interpretādi, docēdi, daretur sæcularibus, ac mulierculis, præsumptione imbutis, vt inoleuit inter lutheranos, & caluinistas, vbi inualuit inordinatio, vt opifices, sartotes, cauponarij, iactentur se nō indigere Magisterio, interprete, suo optè ingenio, & proprio marte posse assequi sensus scripturæ, imò, & mulierculæ in negotio fidei, & religionis interponant suam sententiā, emulantes Euam, sibi arrogantem colloquium cum serpente, cui (sanius consilium) silentium præsente viro. Hac de causa Apostolus 1. Corinth. 4. prohibet fœminas loqui in Ecclesia, sed sumopere sint subditæ viris suis, à quibus discant. Est enim in Ecclesia, sicut in republica Angelorum, sua subordinatio, vt inferiores accipiant illuminationes de rebus ignotis à superioribus, nisi Angelicis fœminis, ex dispensatione (idiotis) à Spiritu Sancto scribendi, & docendi mysteria concedatur facultas, vt hac nostra ætate, & Prouincia Sanctæ Theresiæ Virgini, iam in catalogum sanctorum adscriptæ, à nostro Incarnationis Abulensi vocatæ, vt esset mater Religiosissimæ familiæ nostrorum Patrum excalceatorum, ad quem Priorissa regressa est, & licet ad obedientiam ordinarij recesserit (nescio an prudenti causa) tamen sub nostra, Theresiæ, & discalceatorum fontalis origo.

Secunda *ratio* summitur ex dignitate sacrę Scripturę, in cuius amplexu, vt Thesauro, & scrinio recluſit Deus in æstimabilis pretij sensus, & mysteria, vt meditatus est Theodoretus in præfatione super Ezechiel. Nam quæ sunt magnij pretij, & valoris solent custoditi clane, sigillo, & intimis terræ visceribus argentum, & aurum, in profundo maris margaritæ, in secretiori amico consilia maioris ponderis, &c. Nam si Scriptura esset adeò perspicua, & clara, vt à quouis penetraretur, & esset omnibus expositi, vili æstimatione haberetur, & authoritas indecenter tractaretur ab infidelibus, & ita cautum est illi ex obscuritate. Iuxta, Matth. 7. *Nolite Sanctum dare canibus, & margaritas mittere ante porcos, ne conculcent pedibus, &c.*

Tertia ratio, vt obscuritas induceret occasionem se humiliandi ingenijs, & tolleret occasionem superbiendi, & arrogandi, si facilis esset penetratio profunditatis, & mysteriorum, Matthæi 1. *Abscondisti à sapientibus, &c. Et reuelasti ea paruulis, &c.* & Iacobi 4. *Deus superbis resistit, humili-*

milibus autem dat gratiam, & Rom. 1. *Dicentes se esse sapientes, stulti facti sunt.*

Quarta ratio, vt obscuritas sibi conciliaret in studiosis maiorem diligentiam indagandi, & in assequutione maiorem delectationem. Ad eum modum, quo dulcius quiescimus in partis labore proprio, quàm in adquisitis iure hæreditario.

Quinta ratio, nam obscuritas esset causa eliciendi plures sensus sententias, & doctrinas, nam in reconditis, & obscuris est maior occasio eliciendi plures, quam in patentibus, & claris. Iuxta Augustin. 11. de ciuitate: *Obscuritas ad hoc vtilis est, vt pariat plures sententias, dum alius sic, alius sic intelligit*, & omnes sint concordes sacræ fidei; iuxta Daniel. 12. *Signa librum, & multiplex erit scientia.*

Denique (multis alijs omissis) vt obscuritas cogat ad implorandam à Deo scientiam, sacræ Scripturæ intelligentiam, eius comprehensionem, sensuum, iuxta Iacob 1. *Qui indiget sapientia, postulet à Deo, qui dat omnibus affluenter, &c.* Et iuxta Apocalyp. 5. cùm Ioanne fletibus impetremus, quòd agnus occisus, *aperiat librum, & soluat septem signacula*, & instruamur inde in cordis innocentia, & puritate expectare intelligentiam Scripturæ, & abstinentia ab iniquitatibus, quoniam iuxtà Sapientiæ 1. *In malevolam animam, non introibit sapientia, nec habitabit in corpore subdito peccatis.*

Arguitur contra, nam aptius erat, & consultius scripturas esse claras, perspicuas, & apertas, ne homines arcerentur ab illarum studio, & ne orirentur indè errores, hæreses, & schismata in Ecclesia.

Respondetur id esse peraccidens, & satis cautum esse periculo ex doctrina Doctorum, sensu Ecclesiæ, instin&u, & assistentia Spiritus Sancti, & licèt segnes arduitate terreantur, ingenioſi aspirant ad ardua subijcienda.

Arguitur secundò, nam potius damnatione digna est talis obscuritas, vt sub illa esset recondita sapientia sacra, & id factum inuidia, ne essemus participes diuinæ sapientiæ, arcanorum illius, sicut in Doctore Catholico damnamus intentam obscuritatem (data opera) & circumloquia, quæ obtundunt tenebras, sibi soli arrogans docendi Magisterium, & doctrinæ clauem, qui se exhibeat clarus, & facilis intellectu existimatur à popularibus minus, quo debet æstimari. Adinstar fluminis, cuius profunditas timorem auget, audaciam cohibet, sed si expandatur in planitiem, vt videri possint arenæ minutulæ, & numerari,

faci-

facilè despicitur, transuadatur, & pedibus omnium teritur.

Respondetur absit talis impietas, & auaritia in Deo, & talis blasfemia in nobis, nam sapientia per Salomonem testatur cap. 7. *Quam sine fictione didici, & sine inuidia communico, & honestatem eius non abscondo.* Estque diabolicum obiectum primis parentibus, quòd prohibuerit Deus esum ligni scientiæ boni, & mali, ne essent Dij, sicut ille, *scientes bonum, & malum*: quod si Magistri arrogantes sibi solis scientiam arrogent, & arte, ita contendant, valde damnabile esset, cùm parnulis in Christo lac, potum dandum sit fluidum, facilè hausto, non panis durus, vt fame laborent, & pereant.

DVBIVM V.

An Scriptura Sacra Bibliorum fuerit conueniens, & necessaria hominibus?

RAtio dubitandi est, nam quæ sunt supra vires, & captum, non sunt conuenientia, aut necessaria, sed disconuenientia, & noxia, vt splendor solis visui noxius, Ecclesiastici 3. *Altiora te ne quæsieris fortiora te, ne scrutatus fueris, &c. plurima supra sensum hominis ostensa sunt tibi.* Isaiæ 64. *Oculus non vidit, &c.* & meritò, nam res debet esse proportionata percipienti, sed sacra Scriptura est supra vires humanas, improportionata, & noxia, saltim quæ continet res supernaturales, & mysteria, & dogmata supernaturalia. Ergo potest dici iuxta Apostolum 1. Corinth. 2. *quod animalis homo non valet, percipere ea, quæ Dei sunt.*

Secundò, nam à primo Parente Adamo vsque ad primum scriptorem Ecclesiasticum (Moysem, Iob, aut quicumque ille fuit, de quo suo loco) non fuit Scriptura in mundo, nec communitati, aut vlli priuatæ personæ tradita. Ergo non fuit conueniens, aut saltim simpliciter necessaria. Nam ab initio in Ecclesia fuerunt cultores Dei cultu interno, & externo publico, per fidem, & charitatem, & exteriorem adorationem, & sacrificia, Adamus, Abel, Enos, Noe, Melchisedech, &c. & sine Scriptura. Confirmatur, nam iuxta Apostolum Iudæis *credita sunt eloquia Dei*, per bis mille annos vsque ad Christum, & sine Scriptura, quidam Deum verè colebant sola traditione, benè sentientes de immortalitate, futura beatitudine, saltim hi gentiles, qui cum Iudæis comertium, & conuersationem habebant, & post Christum per tres, aut quatuor annorum centurias, plures fuere Christiani in diuersis Prouincijs sine Scriptura, sola traditione

doctrinæ Euangelicæ, apud Irenęum lib. 3. cap. 4.

Prima concluſio, *in ſtatu innocentiæ non fuit neceſſaria ſacra Scriptura.* Primò, quia erat impreſſa mentibus hominum ſufficiens notitia ad vitam rationalem, & mores componendos, & ſine periculo obliuionis. Nam vt aptè docet Maximus lib. 1. in miſtiologia, in pœnam obliuionis inductæ per peccatum, & in ſubſidium illius onus fuit introductum ſcribendi, & ſimiliter etiam ſacra Scriptura.

Secunda concluſio, *in lege naturæ, non fuit neceſſaria communitati, aut priuatæ perſonæ.* Ratio, nam in illo ſtatu pauca documenta neceſſaria ad ſtatum poſſent tradi, maioribus per inſpirationem, & inde ad minores deribari, & in caſu obliuionis inferiorum, quibus eſſet facilior, poſſent recurrere ad maiores, quorum collectioni non eſſet difficilis, quidquid de vno, aut altero.

Tertia concluſio, *in lege ſcripta fuit neceſſaria communitati non priuatis, & ſingulis.* Primò, ex Deut. 17. vbi Regi præcipitur, quòd cùm primò ſederit in ſolio Regni, *deſcribat ſibi Deuteronomium legis*, ex exemplari à Sacerdotibus, & Leuitis, vt in lege Domini meditetur, & non declinet ad dexteram, aut ſiniſtram. Et cap. 31. Moyſes, cum illum librum compleuit, iuſit Sacerdotibus, vt illum ſeruarent in latere arcæ fœderis. Ergò quia communitati erat neceſſaria. Nam erat impoſsibile memoraliter retineri prolixa, tot præcepta, cæremonialia, legalia, prophetias, hiſtorias, &c. & vt de doctrina illi populo eſſet ſufficienter prouiſſum, conueniens, & neceſſarium fuit, Scripturam caracteribus mandari, tùm propter obligationem, tùm propter multitudinem, quæ facilè retineri non potuit.

Quarta concluſio. *In lege Euangelica Sacra Scriptura eſt admonendum neceſſaria, non ſolùm communitati, ſed etiam perſonis particularibus, non ſolùm Scriptura noui, ſed etiam veteris teſtamenti.* Primò, quamuis lex ſit breuis, & compendioſa, hiſtoria exigua, Euangelijs, & actis comprehenſa, prophetia verbis, vno Apocalypſi concluſa, doctrina ſuauis Apoſtolorum epiſtolis, &c. Eſt tamen intimata, & promulgata omnibus, & ſingulis. Et licet primi temporis hominibus proximis ad diſcipulos, & Apoſtolos non ita fuerit vrgens neſsitas ponendi in Scripturis, fuit tamen in remotioribus ad innumeras occaſiones, & pluribus de cauſis ad inſtruendos, & formandos mores etiam Iudæorum, ad refellendos hæreticos, & ad introducendum illum ſcriptis, vbi non eſt facilis ingreſſus Prædicatorum, & Doctorum, vt intret ſermo per oculos, quibus negatur intrare per aures

aures. Vltimò in subsidium memoriæ, & vt in omnium temporum occasionibus sit fidei, & Religionis præsidium.

Vltima conclusio. *Non fuit necessarium simpliciter beneficium sacræ Scripturæ in vllo statu, ante, & post peccatum, bene tamen secundùm quid, & admelius esse, & ita dici posse absolutè conueniens.*

Ratio, nam si esset simpliciter necessaria, maxime ne homo eleuatus ad finem supernaturalem versatur in ignorantia finis, & mediorum suæ salutis, sed poterat notitiam assequi doctrinæ sine Scriptura sacra, à primo homine in posteros per traditionem à maioribus ad iuniores, vel per reuelationem, & doctrinam reuelatam, ergo non fuit simpliciter, sed secundùm quid.

Confir. nam hoc fuit conueniens, quia proficuum. Nam scriptura facit pro præsentibus, & futuris, nam licet sufficeret reuelatio derivata à maioribus ad posteros, tamen in scripto semel posita firmius, & tenacius retinetur, & glorioſſum diuinæ prouidentiæ, quæ in necessarijs, non defuit ostendendo viam, & dando media, ad salutem, auxilia, &c. Lucæ 8. *Vobis datum est nosse mysterium regni Dei.*

Confir. ex Apostolo Rom. 15. *quæcumque scripta sunt ad nostram doctrinam scripturæ sunt.* Et ex scriptura mutuamus principia discurrendi ad Theologiam, & veritates naturales perfectius addiscendas, immò ex sensu scripturæ, adminus litterali, deducitur argumentum efficax ad viritates fidei firmandas, & oppositos errores abigendos, & tandem quoniam multum lucis afferunt in negotijs fidei, & morum, & in rebus agendis, & sicut Mercurio in triuio demonstranti viam viatoribus, grates rependebantur, apud Alciati emblemata, potiori ratione Deo demonstranti viam salutis, per Mercurium doctrinæ Scripturæ sacræ.

Respondetur *ad rationes dubitandi*, quòd licet supra vires sint noxia, & improportionata, non si vires sint robustæ, auxilio diuino, sine quo nihil aggrediendum astruunt, prædicta testimonia.

Ad secundùm, quinam fuerit primus scriptor Moyses an Iob? suo loco. Ad argumentum dico solùm probare, non fuisse necessariam simpliciter, licet propter maximam illius necessitatem, dicatur absolutè necessaria, non sub sola conditione, aut absolutè simpliciter, sed secundùm quid, ad melius.

Ad omnis Scriptura sacra, &c.

DISPVT. IIII.

De epitectis elogijs, & nominibus sacræ Scripturæ Bibliorum: de illius perfectione, & præstantia, stilo simplici, & eloquentia.

POst absolutam perfectionem substantialem, in veritate, certa, & infallibili sacræ scripturæ, ex authore Deo, ad alias proprietates, & perfectiones elucidandas gradiendum.

DVBIVM I.

An sint epitecta, & nomina varia sacræ Scripturæ Bibliorum, quæ, & qua ratione illi sint adeptata?

PRima conclusio asserit. *Esse diuersa, varia, epitecta, nomina, & elogia, sacræ Scripturæ*: scilicet literæ sacræ, Scriptura, vel Scripturæ sacræ. In singulari, in plurali. Præseferunt enim principia, aut elementa, quibus constant, vt genitorem proles. Libri sacri, deifici, authentici, canonici, diuinitus inspirati, eloquium Dei, Verbũ Dei, Biblia, Bibliotheca sacra, instrumenta, aut instrumenta Dei, testamentum, aut testamenta, pandecta sacra, Epistola cœlitus missa, cum pluribus alijs vsitatis, aut minus vsitatis, propria, aut metaphorica. De quibus brebiter nos, alij latiori calamo apud prȩcitatos prolegonistas.

Secunda conclusio, *quæ, & cur sint Scripturæ varia nomina impositæ reddi solet, cuiusque sequens ratio.* Primò nomen *scriptura*, valde vsitatum, adhùc vulgo notissimũ, aut in plurali, idque ratione excellẽtiæ, qua cæteras multis superat anthonomasticè, Ioan. 10. *nõ potest solui scriptura*, ipsa enim sola præ cæteris est digna, quę legatur, aut scripto imprimatur. Secũdò in plurali *scripturæ*, Matth. 26. *quomodo implebuntur scripturæ*. Eò quòd hoc volumen constat pluribus partibus hæterogeneis, historia, lege, prophetijs, doctrinis, &c. continet enim amplexu libros historiales, legales, prophetales, in quolibet vtriusque testamenti. Tertiò, dicitur *Sancta*: quia digna est veneratione, ob doctrinæ sanctitatẽ, tum quia reddit sanctos admittentes pet fidem, tũ quia est sine turpitudine, aut erroris vitio. Quartò, dicitur *sacra*, ratione dignitatis, & excellentiæ, quæ segregata est à prophanis exigens veneratione, & æstimatione non solùm politicam, sed sacrã nã petit, vt sacra tractari, & non verti in vsus prophanos nec adduci ad sensus hæreticales. Quintò, dicitur *sacra pagina* per *sinedochẽ*, qua summitur continens pro contẽto, quia in illa includitur res, & doctrinæ sacræ ordinis naturalis, & supernaturalis, pro hominibus erudiendis. Sextò, dicitur *diuinitus*

inspi-

inspirata à Deo dictatore infusore reuelatore supra ingeniũ naturale, supra vires humanas dictans plura, vt Trinitatẽ, conceptum virginis sine viro, præsentiam in Eucharistia, & alia huiusmodi, vt prædictiones, & vaticinia futurorum, quæ assequi, aut nanciſci nõ possunt sine diuina reuelatione. Septimò, dici solet prophetia, 2. Petri 1. *Omnis Prophetia scriptura* eo quòd tradit multa de futuris, quæ sciri non valerent, nisi Deus reuelasset. Octauò; dicitur *canonica*, cur autẽ ita nominatur, sæpè dictũ quia continet doctrinas fidei religionis, & morũ, sicut canones conciliorũ. Deindè quia in canonẽ sacrũ librorũ recepta est ab Ecclesia vt cui canones, & regulæ cæterę scripturæ debent conformari admitti, aut reijci. Authoritas diuinà facit diuinam, authoritas Ecclesiæ canonicã. Nonò, dicitur *authẽtica*, quia à Deo authore est authenthicata, vt certæ, & infallibilis veritatis, ad fidẽ plenam, & publicã faciendam sacratione. Instrumentum publicũ dicitur authenthicũ, quãdo signatum, & firmatum est, authoritate publici scribæ, instituti ad faciendã fidem. Decimò, dicitur liber. Ps. 36. *in c. libri scriptũ est de me*, &c. quia initio Genes. qui est caput omnium librorum, & in principio Euangelij Ioan. fit sermo de de Verbo Diuino incarnato. *In principio erat Verbum, & Verbum caro factum est.* Vndecimò, dicitur *libri in plurali* 1. Machab. 12. *habentes solatio libros Sanctos*, eo quòd illi dicuntur per anthonomasiam sancti, propter in eis cõtenta. Duodecimò, dicitur *eloquium*, aut *eloquia Dei*, Rom. 3. Psalm. 113. Iudæis credita eloquia Dei ratione distinctionis ab alijs hominibus, quia fidelis Dominus in omnibus verbis suis, *eloquia Domini igne examinata*, & purgata ab omni fece doli, fraudis, & falsitatis quibus scatent, & abũdant eloquia hominum. Nã sicut argentum igne examinatũ, & purgatum est ab omni scoria, & fulligine fęcis, ita eloquia Dei sunt sine dolo fraudis, & falsitatis. Vltimò dicitur *vetus*, & *nouum testamentum*, tum quia continet fœdera pacta, & contractus initos inter Deum, & homines, tum quia continet voluntatẽ Dei quasi testatam publico instrumento à Scriba, sacro, testatore, fide digno, approbato. Hoc discrimine, quod scriptura ante Christũ dicitur vetus testamentum, post Christũ verò exprimens ipsum promissum Redemptorem nouum testamentum. Et sumitur analogia, vt aptè Lactantius lib. 4. diuin. institut. cap. 20. ex vsu forensi, in quo voluntas vltima testatoris dicitur testamentũ, siuè instituat hæredẽ, & succesſorẽ in bonis, fundo, &c. & solet tradi signatum, & clausum apperiendum solùm post testatoris mortem, qua interueniẽte, redditur validum, & irreuocabile, qua ratione nouum testamentum

tum instituens hominem filium & hæredem Regni redditum est validum, & irreuocabile.

DVBIVM. II.

Cur vocetur vetus, & nouum Testamentum?

Dico dici testamentum generalem mentis testationem, siuè sit vox composita ex teste, & mente, quòd parui refert: siuè animi dicatur externa testatio, id verò certum speciatim ex hominum vsu vocabulum restrictum, vt significet vltimam, & constantem voluntatem, instituendi, hæredem, aut successorem in bonis, vt latius Serar. c. 25. quæst. 10. ex Hieronymo, & alijs, vt Isaiæ 14. *Sedebo in monte testamenti.* Zach. 9. *Tu in sanguine testamenti tui emisisti vinctos.* Lucæ 1. *& memorari testamenti sui sancti*, & in specialiori significatione receptа apud omnes Matth. 26. *Sanguis meus noui testamenti.*

Conclusio, *sacra Scriptura vocatur testamentum ob triplicē causam.* Primò, quia testatur nobis generatim Dei voluntatem. Secundò, quia continet pacta varia, & fœdera inita inter Deum, & homines, de bonis terrenis, & cœlestibus, de obseruatione præceptorum, & cæremoniarum, præmio, & pœna futuris. Matth. 25. *possidete paratum vobis regnum.* Iuxta PP. præsertim Ambros. 1. de Cain cap. 7. & testamentum dicitur, quoniam sanguine dicatum est, vetus in typo (moriens in agnis cęsis) nouum in veritate, qua ratione Deus dicitur legatū morte, in signis, aut præsentia Christi confirmasse, vetus autem à Christo potuit inualidair, & cassari, sicut reipsa factum est, licet non quoad præcepta naturalia, quoad cæremonialia, & legalia antiquari ergo potuit, & antiquatum, dum dixit *consummatum est*, & data Apostolis potestas implendi, exequendi, & euulgandi in eo contenta, ita, & prioris fuerit ad impletio status posterior, vt Matth. 5. dicitur *non veni soluere legem, sed ad implere*, quibus rationibus, scripturæ aptantur, & cohęrent conditiones testamenti.

DVBIVM III.

An initum fœdus, & pactum, in quo non intercedit mors testatoris rectè appelletur testamentum?

Conclusio, *licet nomen fœdus pactum, & testamentum inquadā generali acceptione sæpiùs posit, licet paciscentes vtrumque viuant, tam sanè speciali vsurpatione solet solùm rectè vocari testamētū alterutrius pasciscentis interueniēte morte, siue in se, siuè in symbolis, aut signis.* Hoc dixerim, vt componant dissidentes, quod licet vocari possit, fides, conuentio, & pactum, non verò testamen-

mentum alij contra adhùc vocari testamentum licet pascisscentes vtrimque viuant, vt Serar. ibidem quæst. 11. nec præmit vllum ex innumeris allegatis, adhuc quod vox latina testamentum respondeat hebraicæ berith pro fœdere, & pacto Quia licet vsurpari possit pro ratione generica, negari non potest quasi specifica, testamẽtum enim vtramque includit. Nec tandem præmit, quod alij opponunt Deum immortalẽ morti non esse obnoxium, cùm ad verificandam alaim acceptionem saluari, & dici possit sufficere mori in typo, figura, aut signo agni, arietis, auis aut alterius animalis occisi, in pactis initis cum Abrahamo, & alijs interceſſerit. Et in nouo testamento Christi Domini mors cruẽta. Ex quibus probatæ manent partes factæ conclusionis, & oppositæ discordiæ conciliatæ.

DVBIVM IIII.

Cur scriptura Bibliorum vocetur instrumentum, vel instrumenta?

COnclusio asserit, *quod tiplici ex causa.* Primò eo quòd dicatur instrumentum ab instruendo, & ita id quod nos de re aliqua instruit, erudit, docet, ira solet dici Psal. 118. *viam iustificationum tuarum instrue me* 2. Timoth. 3. de sacris litteris dicitur *instruere possunt ad salutem*, & infra, *vt sit perfectus homo Dei, ad omne opus instructus.* Secundò, ex eo quòd dicitur apud Latinos, & apud iurisconsultos ea scriptura testamentum, quæ instruit, & continet authenticè conuentiones factas, & contractus valdè firmos, ratos, certos. In qua acceptione congruit appellatio. Vt sit testamẽtũ in qua inita inter Deũ, & homines cõtinẽtur. Tertiò, eo quòd solet appellari instrumentum id quo aliquis vtitur ad efficiendum aliquid: Deus autem optimus maximus illa vtitur ad instruendos homines dans præcepta, cognitionem, religionem, viam salutis ad essequendam æternam fœlicitatẽ. Denique alijs placet vocari instrumentum electorum, quòd illa vtantur, vt instrumento apto ad opera charitatis, & iustitiæ præstanda, quod aptius verificatur respectu Dei, qui dictauit, proposuit, & motione causæ principalis mouet ad eruditionem, & instructionem nostrã. Cùm homines, non sint illius causę principales. Licet latiori significatione non ineptè illis, vt instrumentis dicatur operari, & causare plura bona opera. An verò sicut testamentum dicitur duplex, dicatur etiam instrumentum duplex, vetus, & nouum, non inficior, res est parui momenti.

(.·.)

DV-

DVBIVM V.

Cur impositum sit scriptura nomen Biblierum?

COnclusio asserit, quòd *nomen hoc* (vsitatissimum adhùc in vulgo,& in nostratibus lingua vernacula notissimum) *olim impositum* (Hebraice a Rabi Azaria alio qui commune tributum) quasi proprium *sacris litteris ob miram dignitatem,& excellentiam rerum contentarum, quibus authoritate dignitate vbertate, vtilitate longa superat aliorum scriptorum Bibliothecas* iuxta dicta dub. 1. 2. 3. & 4. Igitur merito hoc volumen venit intelligendum quoties Biblia nominamus authonomastice, licet non exprimamus sacra iuxta ibidem dicta de scriptura sacra.

Sciendum dici Byblu, vt prior syllaba scribatur per ypsilon, aut i, simplici Biblus, & hinc dici solet Biblium, quidquid ad sacras litteras pertinet ab illo autem singulari vsus receptissimus in plurali Biblia, sed quidam etiam in singulari femenino dicebant Biblia Bibliam apud Baron. 4. 9. irridebant grammatici, sed immerito. nam apud peritos Latinos leguntur plura neutra pluralia, quarum etiam est lectio femenini singularis, vt Sch mam à Schemà. De quo latius, quam patiatur nostra breuitas, apud Serar. ibidem, sed quę de nomine superfluunt.

DVBIVM VI.

Vnde, & cur dicta sit scriptura Biblia rum, scripta adhùc sacra diuinitus inspirata, & Deifica?

COnclusio asserit, quòd *huius nuncupationis causa principalis est dignitas, & excellẽtia sacra scriptura, ab authore, materia, & fine, siue nomine singulari, siue plurali.* In singulari scriptura Rom. 4. *Quid dicit scriptura?* Ioann. 2. *crediderunt scripturæ* act. 8. *locus scripturæ, quem legebat.* Scripturæ in plurali Psal. 86. *Dominus narrabit in scripturis, &c.* Matth. 22. *quomodo implebuntur scripturæ?* Ioan. 5. *scrutamini scripturas.* Et huiusmodi principalis alia causa est dignitas illius, & excellentia, quam ab authore excellentissimo mutuatur, & a materia excellentissima, quam tractat, & ad finem excellentissimum proponit super omnium gentium litteras. Vt ait Augnst. 11. de ciuit. cap. 1. nil enim continet falsitatis, vnde litteræ aliæ, quamuis aliquid contineant de Dto, aut Christo, non sunt dignæ tali compellatione, sacræ. Deindè dicitur, *diuinitus inspirata*, ex Apost. 2. ad Timoth. 3. quia à Deo diuinitus dictata, & reuelata est. Denique *Deifica*, quia scientes Deos quod admodo, & consortes diuinorũ facit, vt olim apud PP. præsertim Augustinũ lib. de gestis cum Fœlice c. 13. Vide dicta dubio 1. latius.

DV-

DVBIVM. VII.

Cur libri sacri sint appellati authentici, canonici, Deifici?

COnclusio asserit, quod libri, quibus constat sacra, & scriptura *dicuntur sacri, sancti, ob doctrinã sanctam, & sacram quã continent* iuxta dicta à dub. 1. Deinde *authentici, & canonici propter excellentiam, & dignitatem, & authoritatem certam, & infallibilem, qua digni sunt constitui in canonem* certæ, & infallibilis veritatis, iuxta supra dicta. Deniq; *Deifici propter rationem* superiori dubio *dictam.*

DVBIVM VIII.

An Scriptura sacra Bibliorum aptè dicatur Epistola Dei ad nos missa?

COnclusio *est affirmativa.* Probatur ex PP. ab authoribus præcipuè ex Greg. lib. 4. Epist. 8. in hęc *quid* est Scriptura sacra? *nisi Epistola Dei ad creaturam è cœlo missa à Patre ad filios, à patria ad exilium* per Angelos Prophetas Apostolos, & Filium Dei, Quod si sententia Satirici de cœlo descendisse fertur, quantò magis sacra Biblia Ex quo excitari possumus ad eorum frequentem lectionem, sicut quidam, qui imperatorum litteras lectitabat, æstimabat, & amicis communicabat.

DVBIVM IX.

An Biblia sacra sint integra, & perfecta essentialiter, & accidentaliter?

PRima conclusio asserit, quòd *sint perfecta essentialiter.* Quia habet omnes rationes ad illius essentiam requisitas. Quod sit eloquium, & Verbum scriptum Dei, ab ipso inspiratum, certæ, & infallibilis veritatis.

Secunda conclusio asserit, quòd *non sint perfecta integraliter, vt à principio extiterũt.* Ratio, nã ista pẽsanda sunt ex omnibus, & singulis partibus, quibus á principio cõstituerũt, & nunc non habemus integra, nam plures citati in editione vulgata perierunt, & non extant. Iuxta supra dicta disp. 3. dub. 3. quorum saltim aliqui fuere canonici, licet alij non sint recepti in canonem Iudæorum, hęc dixerim de illis secũdũ se, nã de illis quoadnos, aut Ecclesiã integrior, & amplior est volumẽ quàm olim, antequã Ecclesia proposuerit plures libros authenticos, quam probauerit synagoga, vt Tobiæ, Iudic. duos Machabeorum, &c. iuxta Tridentinum.

Tertia conclusio. *Perfectio accidentalis admodũ varia est, & expendi debet ex varijs capitibus*, explicãdis in dubijs. Nã attendi potest ex varijs qualitatibus, quæ sit illius efficacitas in ordine ad varios effect-

quæ

quæ ab illa oriri possunt, an ad illos efficiendos perfecta sint: deinde de alijs qualitatibus,& accidẽtibus,an sint perfecta,quoad perspicuitatem, eloquentiam,latinitatem,& similia? Deinde ratione finis, an sint perfecta in ordine ad hunc,aut illum assequendum, gratiam,salutem, vitam æternam. De quibus sigillatim dictum est disputatione superiori,& an sit in negocijs fidei, & religionis proponendis, & diffiniendis, necessarijs ad salutem iudex,aut egeat iudice,& alijs pertinentibus ad sufficientiam,& perfectionem.

DVBIVM X.

De sacrarum litterarum, eloquentia. an sint disertæ, & eloquentes sacræ Scripturæ? & quid de illa senserint gentiles,Christiani, & Patres?

PRima conclusio, *sacra Scriptura Bibliorum ex se, & ex ipsa rei natura, est dissertissima, & eloquentissima, quoad vim suadendi,& assequendi finem intentum, non quoad optimum, & politum dicendi genus, à Gentilibus,& oratoribus egregijs concinatum, & commendatum.* Prima pars probatur, quia vera eloquẽtia, est, quæ ita disponit, & instituit orationem,vt aptissimè intentum finem assequatur, & medijs præstat eam vim, & perfectionem quæ necessaria, & vtilis valdè est ad dictum finem. Ex quo optima ars pingendi, canendi, medendi, bellandi, fabricandi, navigandi, &c. censetur,quæ propositum sibi finẽ facit,aut assequitur,quam per ipsam stet, his enim re vera eloquens est,qui dicẽdo suadet,quòd vult, loco tempore, & occasione perspecta. Non Cicero aut Atticus,qui orationis fisus ratione,nitore,commitate, copia, elegantia, inflatione,aut exaggeratione, aliquid suadere cõnatur. Nam oratio nobilissima Demosthenis,aut Ciceronis,si ab hoc, aut alio oratora,aut aliter pronunciaretur nihil efficeret,nisi scopum præstitutum,& finẽ attingat, nam vt Tulius de optimo genere oratorum ait. *Non quærimus quid sit Atticè, sed quid sit optimè dicere, ex medijs non est constituendus finis, sed ex fine media*, sed Scriptura sacra ad finem,& scopum, præstitutum,scili cet gloriam Dei,hominis salutem, inducendam fidem,spem,charitatem,pœnitentiam, & alias virtutes, est optimè, & sapientissime scripta. Nam,erat in manu Dei authoris omne dicendi genus, oratorum politiorum assumere, Demosthenis, Platonis, Tulij,imò facile superare. Et vnũ illud (quod videmus in sacris litteris) assumpsit,vulgarem, inornatum,rudem, &c. vtiliorem ad hominum salutem. Illa igitur maior elegantia, quæ in veritate, & efficacitate spiritus,quam, quæ in persuasibilibus humanæ sapientiæ verbis, salitis, delibutis, fuccatis, colli-

ma-

matis. In illis enim est vis maxima efficacitas rara &c. in his ornatus inanimis ad aures recreandas.

Probatur secunda pars, nam licet verisima eloquentia sit, quæ ex ratione sua quid veri sit statuit finemque, & scopum præstitutũ assequitur, tamen vera est, quoad politum dicendi genus tantopere ab Oratoribus, & Rethoribus laudatum, quæ in ornatu verborum fucatis, & depuratis clausulis consistit à recto stilo, rudi vulgari inornato, sed sacra Scriptura licet non quoad se totam, saltim quoad plurimas, sui partes scatet eloquentia, licet in alijs abundet rusticitate, sint indisertæ, & ineloquentes, & aduerterunt PP. in Isaia, & alijs politis comptis, in alijs stilo rustico, vt in Amos pastoralibus Thecue, &c. educatus, & alijs qui de spiritu, non stilo cultiori curarunt. Iuxta Apostoli *Doctrinam non in persuasibilibus humanæ sapientiæ verbis, sed in ostensione spiritus.*

Secunda conclusio. *Sacra scriptura absolutè, & simpliciter dici potest eloquentissima, & differtissima.* Primò, nam sicut dictũ, habet specialem eloquentiam, & substantialem, imò & accidentalem, quoad aliquas partes, & aliquid denominatur magis tale, ab his, quæ ipsi essentialia, & substantialia sunt, quam ab his, quæ accidentalia, & aduentitia. Confirmatur, nam in omni genere rerum, id solet dici tale, quod habet naturam, & essentiam illius generis perfectissimi, & sacra Scriptura habet totam istã, vt probatum altera parte prioris conclusionis.

Tertia conclusio asserit. *Philosophos, & Oratores sensisse de illa submisse, simplicem, vulgarem, & indisertam existimantes, & indignam, vt cõpararetur dignitati, & eminentiæ Tullianæ, & sermonem Prophetarum incultum*, vt latè ex PP. apud Serar. cap. 23. quæst. 1. Quod temperari debet iuxta dicta. Quid de ista sacrorum eloquentia senserint PP. dico. *Non solùm sapientiam redolere, sed eloquentiam* apud viros dignissimos, & illam præstare cæteris poętarum, imò propter hanc excellentiam comparatur, vt paleis ticticum, illud brutis pabulum, hoc hominibus vitæ stabilimentum, & apud Ierem. 23. *Ignis, & malleus conterens petram*, illam continere ignauiam, scripturam verò feruorem ad inflamandos animos illam molitiem ad cordis pertinaciam emoliendam, scripturam mallei duritiem ad conterendas petras, omneque ornatum coloribus fuccatum, figuris politum, arte collimatum in præsentia eloquij diuini languida infirmitate decidere, licet capti, & asueti lepore, & suauitate humanorum, vix sibi suadeat ex sententia ex PP. petita ex Augustino, Gregor. Nazianz. Hieronim. apud pro legistas, præsertim Serar, ibidem quæst. 3.

DVBIVM XI.

Quod sit discrimen inter sacram scripturam, & alias scripturas?

COnclusio asserit, quòd *sint plura*. Ratio, nam sacra Scriptura, oritur, atque dimanat à Deo authore, & dictatore, & indè est infallibilis veritatis, quæuis verò alia edita ab homine, quantumuis sancto, & docto, est obnoxia falsitati, & non semel permixta cum falsis, & erroribus. Iuxta Rom. 9. *Est autem Deus verax, omnis autem homo mendax*, & ita ex natiua exigentia habet cum authore affinitatem, & proportionem. Diuina cùm vindicat essentialem ordinem, & habitudinem, ad authorem, infallibilem, humana verò ad obnoxium falsitati, & fallibilitati. Secunda, quòd fit certa regula pro stabiliendis rebus fidei, & morum, quòd non conuenit alijs scripturis, & ex illa potest reddi satis opinabile, aut probabile. Tertia, quòd diuina dicitur sacra per anthonomasiam, ob miram sui dignitatem, excellentiam, & viuidam efficacitatem, quæ est digna, vt tractetur cultu, & reuerentia. Quarta, quòd diuina est sermo viuus, & efficax, & penetrabilior omni gladio ancipiti, iuxta Apostolorum 4. Hebræorum cap. 12. qua excitamur, & prouocamur, & accendimur ad virtutem, & veram sanctitatem. Hoc didicerunt plurimi experimento, in lectura epistolarum Apostoli, quòd tribui non potest scripturis prophanis, Platonis, Aristotelis, Demosthenis, & Ciceronis, quæ delectant animum, non stimulant animam ad virtutem. Vltimò (vt abstineam ab alijs) quòd illa sola demonstrat iter, & viam certissimam ad vitam æternam; & instruit de medijs per Christum, qui est via veritas, & vita causaliter, & efficienter, & scripturæ communicauit similia attributa suis, & si quæ fortè id præstent, id efficere, vt ab illa trahunt Originem, & illius sunt membratæ participationes.

DVBIVM XXII.

An habeatur apud Lutheranos, & Caluinistas, vera, & legitima Scriptura, & an liber illorum sit Biblia sacra?

COnclusio asserit, quòd *non habetur*. Primò, nam illi non habent, qui non habent canonem, aut cathalogum authenticũ librorũ, editionem, versionem, interpretationem, verum, & legitimum sensum, sed talis est habita ab illis, nõ ergo habent veram, & legitimam Scripturam. Maior probatur discurrendo per partes. Primò, nam illi non habent cathalogum, & canonem authenticum librorum, nam ille qui est in vsu eorum, non fuit vnquam ab Ecclesia approba-

tus,

tur; nam à tempore Innocentij primi in Ecclesia, semper viguit catalogus appositus à Tridentino, & ante Innocentium, ratò inuenientur, qui amplexi sint in omnibus illud Lutheranorum, & Caluinistarum, imo inter se se dissident, & minime cohærent. Secundò, nec habent authenticam editionem, aut versionem, certâ, & constantem, sed nouam, inauditam, suspectam, & damnatam à pluribus ipsorum. Lutheri damnant Tiburini, Osiandri, Buczerus, & alij, immo ipse Lutherus Tiburini, multis excipiunt sacris, de quo conqueritur Stoltius in defensione Lutheri. Osiandri improperant illi dolum, & falsitatem Buczerus obijcit non paucos lapsus. Musterus omissionem non paucorum versuum, immo ipse Lutherus confessus est, se sæpè errasse, eò quòd dedisset fidem glosis Rabinorum, apud Coglum in actis Lutheri. Tertio, nec habent authenticham interpretationem, & legitimum sensum, sed nouum, inauditum, & repugnantem, probatis authoribus. Nam vbi legimus Matthæi 19. *Si vis ad vitam ingredi serua mandata*, interpretatur Caluinus, dictum esse à Christo, non seriò, & assertiuè, sed hyronicè, vt sit sensus, si vis ingredi, ne serues mandata. Nam illorum obseruatio, non est possibilis, nec prodest quidquam ad salutem. Deindè vbi legitur Actorum 2. *Non derelinques animam meam in inferno*, interpretatur Beza, non relinques cadauer in sepulchro. Denique vbi legitur Matthæi 26. *Hic est sanguis meus*, interpretatur Caluinistæ. Hoc vinum significat sanguinem meum; & Lutherani hoc vinum est sanguinis meus, vt astruat præsentiam substantiæ vini post consecrationem, & negent illius absentiam, & præsentiam realem sanguinis, & admittant solam præsentiam intentionalem, tanquam in signo. Et ita manifestè conuinci possunt, non stare Scripturæ sacræ, admissæ à Catholicis, nec sensui legitimo, & interpretationi, receptæ ab Ecclesia, & repulisse legitimam editionem, & confeciſſe nouam, cùm innumeris implicationibus, & repugnantijs, cùm re ipsa nostra sit legitima, antiqua, vera, sibi constans, atque cohærens, vnica, non varia & multiplex, instabilis, & discordans.

DVBIVM XIII.

An Biblia sint appellanda liber Dei, & an possit appellari liber hæreticorum?

CONclusio asserit. *Esse appellanda simpliciter liber Dei, & non posse appellari liber hæreticorum, nisi posteà, & abusiuè, cum addito, & explicatione.* Ratio. Nam liber dici solet alicuius simpliciter, vt authoris

dictatoris, scriptoris, quo sunt solius Dei, & sui sacri scriptoris instrumentaliter. Secundò, ita dici solet ratione materiæ. Qua ratione inscribitur liber Iudicum, qui agit de iudicibus Israel, liber Regum, qui tractat de Regibus. Tertiò ratione possessionis vniuersalis, qua ratione dicitur Ecclesiæ, & Catholicorum liber. Quartò ratione vsus boni, aut mali, vt boni Ecclesiæ, & Catholicorum, mali vt hæreticorum, abutentium, retorquentium ad deprauatos mendaces, & falsos sensus. Sed sic est, quòd solus Deus est author scripturæ, non hæretici, deinde in scriptura non agitur de ærroribus, hæresibus, & falsis, assertiuè, denique dici non potest, aut vocari aptè abutentium, nam ita immeritò diceretur, nam Eucharistia non dicitur indigne summentium, nec mundus male vtentium, nec vxor adulterantis ergo, &c. Nec obstat quod apud Ohum lib. 3. de authoritate Scrrpturæ referatur, quòd appelletur liber hæreticorum, nam talis nomenclatura fuit imposita à solis hæreticis, cùm apud Catholicos id non admittatur verè, sed solùm abusiuè, quia illa abutuntur, multiplici ex causa, malitia, nequitia, animo fallendi, & positis ex parte illius solùm, stilo obscuritate, profunditate, sono gramaticali, varietate acceptionum, ambiguitate vocum. Ex quibus illi sumpserunt occasionem interpretandi pro arbitrio, & voluntate libera, siue vlla attentione ad Ecclesiæ, & PP. interpretationes, & probatissimos sensus. Vt latiori calamo insequitur Serar. ex verbis PP. ibidem q. 1.

DVBIVM XIV.

Qui sint sacræ Scripturæ varij effectus, & qua ratione sit causa illorum, & quatenus?

PRima conclusio asserit. Ex innumeris *præcipuos, & principales esse sequentes.* Primò, *docere*, ex secundò ad Thimoth. 3. Secundò, *arguere.* Tertiò, *corrigere.* Quartò, *erudire in iustitia*, ex ibidem Quintò, *conuertere*, animas ex Psrl. 18. Sextò *sapientiam præstare*, paruulis, ex Prober. 1. Septimò, *fidem confirmare*, ex Ioann. 5. Octauò, *minari, ac terrere*, ex Psal. 118. Nonò, *conterere corda dura*, ex Ioan 23. Decimò, *sanare corda*, ex ad Titum. 2. Vndecimò, *lætificare*, ex Psal. 18. Duodecimò, *consolari*, ex Rom. 15. Decimotertiò, *delectari*, ex Psal. 118. Decimoquartò, *illuminare*, Psal. 18. Decimoquintò, *excitare, & stimulare*, ex Ecclesiastici 12. Decimosextò, *inflamare*, ex Prob. 30. Decimoseptimò, *scindere, & penetrare corda*, ex ad Hebræos 4. Decimooctauò, *tueri à Diabolo*, ex Prober. 30. Decimo nonò, *gignere in Christo*, ex Iacobi 1. Vigesimò, *alere, & roborare animum*, ex Matth. 4. & 1. Corinth. Vltimò, *beare, & dare vitam æternam*, ex Ioanne 5. ex quo repulsi hæretici, qui

qui non tribuunt vllam vim, & efficaciam verbo Dei scripto, vt insultent, esse sine vi, mortuam. Licet alij tribuant per exaggerationem eandem vim, ac sacramentis, vt sit instrumentum Dei.

Secunda conclusio. *Verbum Dei vt scriptum, & pronuntiatum spectatur, est instrumentum, quo vtitur Deus ad finem suæ gloriæ, & salutis hominum.* Primò, nam hæc efficientia satis significatur ex Iacobi primo, *genuit nos verbo veritatis*, vt instrumentum principalis Dei.

Tertia conclusio. *Tribuenda est verbo Dei efficiens a significatiua*, (quasi significat res legenti, vel audienti) non alia intrinseca practica, physica supernaturalis, aut moralis. Ratio, nam oratio loquentis hanc vim habet, vt per sensus, oculos, aures, menti, & voluntati, repræsentet res significatas, nec affirmari debet alia vis supernaturalis saltim sine firma ratione, aut fundamẽto qualis inuenitur in sacramentis causatiua gratiæ. Confirmatur, nam ille effectus est ei tribuendns, quem habet ex natura rei, aut institutione, in ordine ad intelligendum, hic autem est ratio significationis, tam bonis, quãm malis, vt orationi, oratorum solent varia attribui, pro varijs actionibus oratoris, voce, gestu, vultu, &c. An autem ex institutione, aut promissione Dei, aut ipsa exigẽtia verbi Dei sit auxilij efficiẽtia annexa, statim. Vltimò, nam tribui non debet verbo Dei scripto, aut loquuto illa efficatia, quæ solet tribui sacramentis, physica, aut moralis, quia est discrimen inter vtrumque, vt istius sit ratione significationis illius ratione causalitatis practicæ, physicæ, aut moralis.

Quarta conclusio, *solet tribui verbo Dei loquto, aut scripto efficientia, aut causalitas in serie morali ratione annexi auxilij actualis, aut in eo insinuati, dati audienti, vel legenti ad pietatis opera, quod non est commune cum alijs loquutis verbis, aut scriptis.* Primò ex illis scripturæ testimonijs, quæ illi tribuunt vim aliquam, & efficatiam, vt late probant pro prima conclusione insinuata verbum Dei *penetrabilior* dicitur ab Apostolo *omni gladio ancipite pertingas*, &c. & maleus *conterens petras*, & ita vt verbũ semel prolatum *non reuertatur* (sine fructu) *vacum*, & alia hũiusmodi, quæ satis indicant intentum. Ratione, nam ratione litterarum physicè solùm immutantur aures audientis, oculi scripto, quod commune est alijs scripturis, ratione efficientiæ moralis adiunctæ comittantis illuminatur cor audientis, vel legentis, ista autem in auxilijs formaliter consistit, ad præsentiam illius, & ex vtroque coalescit, nan sine dubio, si ore Christi profertur vim habet maiorem, quam si profe-

rantur ab alio, ergo vt à Deo eam vim illi annexam committari dicendũ, licet interdũ ratione audientis dici possit occidere, scandalizare. Ordinariè, tamen, probabile est dari audienti, aut legenti actuale auxilium in ordine ad salutem. Nam verisimile est à Deo dari sine vlla promissione ex pressa, stando in sua prouidentia seruata decentia rerum, verbo & scripto suo. Sicut quilibet scriptor si posset, daret, ad sua scripta vtiliter perlegenda. Confirmatur, nam si rebus benedictis solet tribui aliquis effectus physicè, aut moraliter, quantò magis Dei verbo sacro, & sancto ab ipso dictato. Vltimò nã non mirum est, Deũ aliquid physicè, aut moraliter operari verbo suo, vt organo, & instrumẽto diuinæ veritatis, vt ex sacra scriptura, *in nomine Iesu Christi surge, & ambula* in Verbo Dei *expulsos dæmones*, & alia mira patrata. Vt ex admisso legitur de Biblia Lutherana, quam cum quidam audiret ostio clausso, & cum custodibus armatis, fuit à diabolis abreptus, & interemptus Mulburgi, in Thurin gia.

DVBIVM XV.

An apud Apostolum omnis & vniuersa scriptura Bibliorum, an solum vetus testamẽtum, possit appellari littera occidens? & an tota integra Biblia sit littera viua, & viuificans, an littera mortua & occidens?

PRimà conclusio. *Apud Apostolum non tota scriptura vocatur littera occidens, sed solum vetus testamentum.* Ratio ex textu, nam manifestè vetus appellatur littera, nouum, verò spiritus, cum ait 2. Corinth. 3. *Idoneos non fecit ministros noui testamenti non litteræ, sed spiritus*, id est noui testamẽti quòd nõ constat littera, sed spiritu, vt in græco noui testamenti, non litteræ, sed spiritus, id est quod minimè est littera, sed spiritus, & subditur causa, *littera enim occidit*, & ab effectu, scilicet occisione, aut morte, dicitur vetus testamentum mors, & damnatio, littera occidens, &c. Secunda, nam in hoc testimonio, mors ista dicitur literis de formata in lapidibus. Sed Exod. 13. vetus testamentum fuit quoad legem excultum, in lapidibus, non nouum, sed in tabulis cordis: ergo apud Paulum vetus testamentum, vt distinguitur contra nouum dicitur litera occidens, nouum verò spiritus viuificans. Confirmatur ex illo, *Lex*

per

per Moysem data est, & veritas per Christum, vbi ponitur distinctio, inter vetus, & nouum testamentum, legem naturæ, & gratię quòd antiqua appellatur littera occidens, noua spiritus viuificans, vt vetus sine noua, sit littera sine spiritu, corpus sine anima viuificante. Vltimo ex Augustino de spiritu, & littera c. 14. *Quod lex illa dicebatur littera occidens duplici ex causa prima quia iubebat, non iuuabat dando gratiam ad sui obseruantiam, & ita* indicans, & prohibens occasionabat peccatores, præuaricatores. Nam vbi non est lex, nec præuaricatio, nam cognitio delectabilis, excitat concupiscientiam, quæ nititur inuetitum cupitquè negata, vetus illa continebat elementa vacua, & egena, noua verò sacramẽta, quæ ex opere operato conferunt gratiam non ponentibus obicẽ. Ex eo autem vetus testamẽtũ dicitur littera occidens, mors, dãnatio &c. quia sub illa ratione, qua secernitur, à gratia mortis reos constituebat, quòd obseruari perfectè non posset, Rom. 3. & ipsi prohibitio occasionem occasionabat, agendi contra, peccandi, & moriendi. Cur autem potius vetus, quam nouum dicatur littera occidens, cùm ex vtriusque prohibitione possit occasionari occasio agendi contra prohibitum, peccandi, & moriendi, dico ideò, quia vetus in Adamo indicabat mortem, non dabat vitam, licet deduceret ad inquirendam, & expetendam, nouum verò est ipsa vita, seu gratia Ioan. 1. & gratiæ authorem continebat Christum, per sacramenta adhùc (non egena, & vacua elementa) sed plena illorum causalitate continebat.

Secunda conclusio, *vniuersa Biblia vtriusque testamenti* significatiue, siue in voce, siue in scripto, *dici possunt littera viua viuificans.* Ex ad Hebr. 4. *Viuus est sermo Dei, &c.* Nam saltim pronunciatione viuere videntur, & ex Hieron. Epist. 103. ad Paulinum *nescio quid habet latentis eneregiæ viua vox.* Et tandemquia ratione gratiæ adiunctæ à Spiritu Sancto, in legente, aut audiente ordinariè inducente ad sui studium, & piam operationem rei significatæ, aut aliter, non ineptè viuificare dici potest. Licet ipsa quatenus scripta, aut vt sonorè pronuntiata præcisse sine vita, & mortua dici possit.

Tertia cõclusio. *Vniuersa Scriptura sacra cõtinens vtrũque testamentum potest vocari littera occidens secundùm litteræ sonum, non per se, sed per accidens, dupliciter.* Primò, quia, quidam accipiunt occasionem moriendi ex illius abusu, & praua intelligentia, vt hæretici deprauantes 1. Corinth. 1. & 2. Petri 2. Ita vt scriptura non sit illis causa, sed ipsorum malitia, & animi peruersitas iuxta Athanasiũ, & alios. Cæte-

rum ſecundùm ſenſum ſpiritualem, non ineptè dici poteſt ſpiritus viuificans. *Ratio*, nam licet attento ſolo ſono verbali plurimi arripiant occaſionem errandi, vt ipſa dici poſsit ſecundùm litteræ ſonum ſuperficialem ſeminarium hæreſum, & errorum, vt optimè Ferdinandus Ieſuita in Theſauro diuinarum ſcripturarũ proſequitur latè, adducendo innumera teſtimonia deprauata ab illis, vt Ioan. 10. *Ego, & Pater vnum ſumus*, ex quo elicuit Sabellius hæreſim, vnum in perſona, tollendo diſtinctionem perſonarum, & Arrius, quod ſint vnum charitate, nõ eſſentia, & Neſtorius vnum vnitate habitationis, ſicut auriga, & currus, homo & iudumentum, & huiuſmodi alia, quæ non vacat referre, tamen ſecundùm ſenſum legitimum litteralem, aut ſpiritualem, ſpiritus viuificans, propter rationes dictas, quòd continent Dei ſententias, veritates, infallibiles, quæ ſecundùm ſe ſpectatæ inſtigant, & perducunt homines ad fines honeſtos, finem ſalutis, &c.

Argui poteſt primò ex prima concluſione contra tertiam, nam veriſimile (& aptiſsima eſt ſententia ex verbis Apoſtoli, & PP.) quòd vetus teſtamentum dicatur littera occidens, nouum verò ſpiritus virificans. Ergo non tota ſcriptura, etiam ſecundùm litteræ ſenſum, dici debet littera occidens, & tota ſecundùm legitimum ſenſum ſpiritus viuificans.

Confirmatur, quia ſi lex antiqua dicebatur littera accidens, quia conſtituebat ſuplitia malis, etiã dici debet ſpiritus, quia conſtituebat præmia bonis, Leuit, 18. *Cuſtodite leges meas, quæ faciens homo viuit in eis*. Deinde etiam lex noua poteſt propter idem dici, littera occidens, quia prohibet, & punit, & ſpiritus viuificans quia promittit, & præmiat: ergo vtrum que teſtamentum poteſt dici littera, & ſpiritus: non vetus littera ſine ſpiritu, nec nouum ſpiritus ſine littera.

Reſpondetur primò, loqui Apoſtolum non ſenſu miſtico, & ſpirituali, in quo ſolùm vetus teſtamentum aptè dicitur littera occidens, propter rationes dictas, & nouũ ſpiritus viuificans, cum quo cõponatur, quòd ſecundùm ſcripturæ legitimum ſenſum, tota ſcriptura dicatur ſpiritus viuificans, quidquid ſit ſecundùm ſonũ litteræ ſuperficialẽ. Ex quo ſummitur occaſio ab hæreticis errãdi, & hæretizandi. Secundò, non eſſe incõueniens, quod de eodẽ ſecundùm diuerſas habitudines, & conſiderationes varia aſſerantur, & vtraque concluſio ſuũ ſenſum retineat, nõ incompoſsibilem cum alterius.

Ad confirmationem. Non inficior, quod ex varijs eiuſdem rei habitudinibus oriri poſsint variæ denominationes, admodum ſimiles, in præſenti tamen, id quod Apoſtolus protulit de veteri teſtamento per oppoſitionẽ ad nouũ, atten-

attentis rationis allegatis in ſtrictiori, & nobiliori ſenſu dicatur de vniuerſa ſcriptura veteris, & noui, ſub varia acceptione, ſcilicet ſecundùm litteræ ſonum, & ſecundùm ſenſum legitimum, & litteralem, &c.

DVBIVM XVI.

An obſtent antilogiæ ne ſcriptura habeatur diuina, & ſacra?

CONcluſio. *Eſt negatiua*, & cõmunis. Ratio, nam licet primo intuitu, & aſpectu innumera ſcripturæ teſtimonia exhibeant, & præſeferant contradictionem, diſſidium, atque diſcordiam, eſt in ſenſu mira concordia, & conſonãtia, & ita ſolùm inuenitur contradictio apparens, non re ipſa, quæ ſit affirmatio, & negatio eiuſdem de eodem. Sed veritati ſacræ, & infallibili non derogatur ex contradictione apparenti, ſed ex re ipſa reali, & vera. Ergo illi non obſtant antilogiæ, quæ ſunt apparentes contradictiones patet, quia in verò ſenſu, & legitimo non eſt re ipſa contradictio. Patet ex innumeris, vno, aut alio exemplo Geneſ. 56. *Omnes animæ domus Iacob, quæ ingreſſæ ſunt in Egyptum, fuere* 70. & actorum 7. dicitur *in animabus* 75. Ita conciliandum quòd Geneſ. loquitur de exiſtentibus extra cauſas tempore ingreſſus, Stephanus verò in Actis, comprehẽdit incluſos intra cauſas, in femore Iacob quinque ne potes, poſteà in Egypto natos, & ita non ſunt audiendi, qui, vt diſſoluant, recurrunt ad librariorum ærrores. Nec, qui dicũt ærraſſe 70. Interpretes. Deindè Exodi 14. dicitur *erat nubes tenebroſſa*, & circa finem capitis dicitur. *Erat nubes illuminans noctem.* Vbi eſt ſermo de illa colũna, quæ generebat ducatum anteſignanũ. ita conciliari debet, quòd eſſet illuminans in parte anteriori, qua dirigebat exercitum hebræorum, in vltima verò extremitate, aut poſteriori, eſſet tenebroſſa, qua interponebatur inter hebræos, & Egyptios, ne videri poſſent ab Egyptijs inſequentibus. Deinde apud Ioannẽ dicitur. Quod Maria Magdalenæ *ibat ad monumentũ, cum adhùc tenebræ eſſent*, & apud Marcum dicitur, quòd *orto iam ſole*, ita conciliari debent, quod via ſit inchaota (ad ſepulchrum) in nocte, & ſit impleta, orto iam ſole. Denique Marci. 15. quod quando Pilatus tradidit Chriſtum occidendũ, *erat hora tertia*, & Ioann. 19. dicitur *erat hora quaſi ſexta* ita conciliari debent, de tertia hora propè finem declinante ad meridiem, à qua inchoatur hora ſexta, & ita erat quaſi ſexta, & colligitur ex v. 3, vbi dicitur Chriſto crucifixo fuiſſe hora ſexta. Et ita audiendi non ſunt qui dicunt eſſe mendum in numeris.

(*)

DV-

DVBIVM XVII.

An ex solo scripturæ sensu litterali, possit confici argumentum efficax, ad astruenda mysteria fidei, & abigendos errores? an etiam ex mistico spirituali, & accommodatio?

PRima sententia asserit, quòd *ex solo litterali*. Salmeron, prolog. 19. & alij. Primò nam Christus, & Apostoli ex scripturis in solo litterali, eliciebant argumentum, ad probandum intentum, cõtra Phariseos, vt Math. 22. diuinitatem. Nam *si Dauid vocat Christum Dominum. Quomodo filius eius est?* Vbi nominatur filius eius secundùm sanguinem, sed Dominus secundùm diuinitatẽ. Similiter ex Ioann. 7. dum probat se non sabbathum violare sanando infirmos, si quidem ex lege Moysi licebat Leuit. 12. inflige re vulnus circumcisionis in sabbatho, & iumenta ducere aquatũ. Similiter Petrus. Paulus, Stephanus, in disputationibus cum Iudæis, ex argumentis ductis ex sacra scriptura litteraliter, præmebant, & vrgebant, vt silentio ora obturarent.

Secũdò ex PP. Hyeron. ad 13. Metth. tom. 9. lib. 2. defermento absconditio in farinæ satis tribus, explicato à quibusdam de vnitate essentiæ, & Trinitate personarum: docuit pium esse sensum, sed ad intentum parum proficere. Idem insequitur, Salmeron ibidem, ex Augustino, & alijs, qui videri possunt ibidem.

Tertiò, *Ratione*, quia solus sensus litteralis est intentus à Spiritus Sancto, certus, verus, & manifestus, habens vim, & pondus, ad firmanda fidei dogmata, pramendum, & vrgendum aduersarios fidei, Iudæos, aut hæreticos. Contra, quos PP. solùm dimicarent litterali sensu.

Secunda *sententia* asserit, quod etiam ex spirituali, & mystico deduci possit efficax argumentum; ad intentum prædictum. Ribera in Prophetas præludio 1. n. 18. Primò, nam Apostoli interdum in sensu mystico, argumenta conficiebãt, Ioann. c. 19 vsus est illo, *os non comminuetis ex eo*. Paulus, *non alligabis os bobi triturãti*. Matth. 2. *Ex Egypto vocaui filium meũ*. Quibus vsi sunt in sensu mystico, quia non litteraliter, immediata vocum significatione, sed per res significatas per ipsas voces, vt de reductione populi Israel de Egypto, figura regressus filij sui de Egypto, Christi Domini. Confirmatur ex Apostolo ad Galat. 4. qui illo Genes. 19. *Abraham duos filios habuit vnum de ancilla, alterum de libera, &c.* Vtitur in sensu allegorico inquit enim, *Quæ sunt per allegoriam dicta, & hæc enim sunt duo testamenta.*

Secundò, *ratione*. Nam sensus

sus litteralis, & etiam spiritualis sunt certi firmi, & intenti à Spiritu Sancto. Immo licet litteralis interdum primò, tamen spiritualis est intentus principalius à Spiritu Sãcto. Ex innumeris exemplis probrebitate. 1. Corinth. 10 docuit Apostolus, quod *omnia in figura contigebant illis* in lege veteri, illæ enim præfigurabant res noui testamenti, vt symbolum, typus, hieroglyficum, agnus paschalis Christum, transitus maris Rubri ad salutem transitum per Baptismum ad spiritualem. Exodi. 12. dicitur de agno paschali, *os non communuetis ex eo*. Et Spiritus Sanctus in eẽdebat in illo, quod dicit Ioann. de Christo, *non fregerunt eius crura*. vbi in sensu litterali significabatur non frãgendum os agni paschalis, & per agnum illum non perfringenda crura Christi, vbi vtrumque intenditur ab Spiritu Sancto. Illud primo, & litteraliter, hoc principalius, & mistice. Matth. 2. dicitur, *accepit puerum, & matrem eius, & fugit in Egyptum, vt impleretur, quod dictum est per Prophetam, ex Egypto vocaui filium meum*. Vbi verbis Prophetæ immediatè significatur, & litteraliter exitus populi Israelis de Egypto, & per illum exitum, Christi, ex Egypto. In regressu illud primo, & immediate, hoc principalius, illud litteraliter, hoc misticè: ergo sensus spirituales sunt firmi, & efficaces, vt intẽti ab Spiritu sancto. Immo interdũ principalius.

Prima conclusio asserit; quòd *semper, ex litterali desumitur argumentum efficax ad dictum intentum, ex spirituali verò, & misticò, licet secundùm se, non tamen semper quoad nos, sed cùm de eo satis constat*. Vazquez tom. 1. in primã partem disput. 16. c. 5. Zumel ex parte tom. 1. in 1. p. ad quæst. 1. art. 10. q. 4. Ribera in Prophetas Præludio 1. n. 18. & alijs scripturarijs.

Probatur prima pars ex fundamentis primæ sententiæ, quę solũ, id probant. Secunda autem pars scilicet, quòd ex misticò secundũ se etiam deducatur efficax, probatur, eo quòd etiam est intentus, imo æquæ, ac litteralis, & ex parte Dei equè verus, certus, ac firmus, & infallibilis, & interdũ principalius, licet litteralis immediatius, & primò.

Tertia pars, scilicet, quòd *quoad nos non sit adeò certus, & firmus, ac litteralis*, probatur, nam litteralis est certior quoad nos spirituali, quia litteralis est ille, qui significatur immediatè per verba accepta in propria, aut methaphorica significatione. Spiritualis verò, & misticus, est occultus, & obscurus quippè, qui non significatur immediatè per voces, sed per res significatas, quæ sunt figura, vmbra, & ænigma illarũ. Est enim sub illis incluſus, & latẽs, & vt sub corpore spiritus: & inde dici solet spiritualis, & quia recõditus, & arcanus mystic⁹, sicut mysteriũ, cũ ergo sit eli-

eliciendum argumentum præmẽs, ex notis,& manifestis, & misticus, & Spiritualis, sit adeò obscurus, quoad nos,non poterit desummi ex illo argumentum efficax. Quo circa optimè Vazquez ibidem, quod misticus,cùm sit de intentione Spiritus Sancti,si de eo constet, ex illo ita efficax deduci posset argumentum,ac ex litterali quoad nos, & ita non erit inutilis ad arguendum,si de eo cõstet, ex alio scriptore sacro.

Secunda conclusio asserit. *Ex accõmodatio non deduci efficax argumentum ad fidei dogmata comprobanda,& ad id nullius esse momenti nisi cùm sumitur argumentum ab exẽplo,aut à simili.* Vazquez ibidẽ disputat. 16. c. 7. Primò, quia ille non est de mente Spiritus Sancti, nec primariè, nec secundariè immediatè,aut principaliter. Secunda *pars probatur.* Primò, quia illo genere arguendi à simili,& exemplo vsus est Christus Lucæ 6.nam cum ibi Pharisei acussassent discipulos, quòd famelici euelerent spicas illicitè in die Sabbati ad comedendum, Christus repulit calumniam ab exemplo, dicendo, quòd in necessitate licuit Dauid tollere panes propositionis destinatos pro sacerdotibus,& dare militibus famelicis. Ergo etiam liceret discipulis famelicis spicas euelere, sinè violatione temporis sacri, sicut sine violatione rei sacræ.

Respondetur, *ad opposita*, ad primæ sententiæ dicõ illa probãre primam partem nostræ primæ cõclusionis.

Respondetur *ad Secunda fundamenta*, sub dicta distinctione, quòd quamuis secundùm se sit intentus, & ex illo vt sic, possit deduci argumentum efficax, tamen quoad nos solùm deduci; cùm constat de illius sensu, de Apostolis, dico cùm Salmerone (ibidem proleg. 19.) illos, vti aptè illo, tum quia habebant ius interpretandi scripturã; tùm quia illis satis noti erant per reuelationem Spiritus Sancti, & ex miraculis in confirmationẽ patratis. Ad secundùm dico, secundùm se esse certos,& firmos; secus quoad nos, aut respectu nostri, quibus sunt arcani, & occulti, & ita cum de illis non constat, non posse sufficienter formari argumentum efficax.

Ad *Omnis scriptura,&c.* Ad *docendum,&c.*

DISPVT. V.

De forma sacrorum Bibliorũ, quoad vocem, linguam, idioma, scripturam, & caracteres. Vbi de origine linguæ sanctæ, & Scripturæ sacræ.

Dictum est hactenus de formã essentiali, & substantiali sacræ

ræ Scripturæ. Agi nunc debet de formulis accidentalibus, superadditis, quæ acrescunt, ex voce, idiomate, caractere, & scriptura.

DVBIVM. I.

Qua lingua vsus sit Deus per se, & per alios loquutus?

Conclusio. *Deus est loquutus per se omnibus lingua spirituali, qua mentem illorum interius perfecit per species intelligibiles, & intentionales: per accidens tamen interdum insonuit auribus, voce sensibili, & lingua Hebræa sola, penè pura, vel admixta alijs affinibus, accessione, aut detractione.* dixi penè sola hebræa, quia fortè insonuit auribus, alia lingua, aut varijs, quòd est verisimile, vt Egyptia, Syra, Græca, &c.

Pro quo notandum. Quòd lingua Hebræa solet summi dupliciter. Primò, strictè pro limpidissima, & pura, vt distincta est ab alijs, Asyria, Chaldea, &c. Genes. 31. 4. Reg. 18. Daniel 1. qua ratione Origines 3. contra Celsum affirmat quòd hebræi habebant linguam patriam, prius quàm descenderent in Egyptum, vbi familiaritate Egyptiorum, variè immutata est, vt opus fuerit, iterum infundi à Deo Moysi, vt scriberet pentatheucum, & populus linguam, quã non nouerat, cũ nossent olim Parẽtes, & ab illis lapsa, iterum audirent. Secundò, summitur latè pro omni lingua aliquantum afine, discrepante, accessione, detractione, aut mutatione accidentali vocum, in dialecto substantiali. Hac ratione Chaldæa in captiuitate Babylonica, post Egyptiacam, aut antea, Asiria, &c. appellari solent Hebræa. Ioann. 5. & 19. qua ratione Philo lib. 2. de Vita Moysis, dicit quòd *lex ab initio fuit scripta lingua Chaldæa*, id est Hebræa. Iuxta Hieronymũ in 1. Daniel. & sic hodiè Syra, & omnis Thalmudica, & Rabinica solet appellari Hebræa. Ita Serar. in proleg. cap. 3. quest. 2. Qua autem ratione inter se se different, satis norunt, qui saltim priora rudimenta degustarunt, differre tantùm aciden taliter Hebræam, Chaldæam, Asyriam, non imperiti docent, si latè vsurpentur. Admitto igitur satis verisimile Deum in Paradiso primis Patrib⁹, & alijs alibi voce sensibili fuisse loquutũ, aut Hebræa, aut dialecto patria, Egyptijs, Persis, &c. Deinde similiter existimo quod dũ est loquutus per alios v. g. scriptores librorum Bibliorum, quòd sit vsus voce sensibili iuxta idioma, & dialectum patriã scriptoris. Existimo tamen penè sola Hebræa loquutum, eò quòd fuit prior omniũ, data primo parenti in Paradiso, & Moysi infussa ad scribendam sacram scripturam. qui sibi commendatos libros sacros exarauit dialecto Hebræa, imò, & lex digito Dei exarata in tabulis lapideis in Sina. Qui verò sit omnium prior sacer scriptor, Iob, an Moyses? & quæ omnium prior lingua statim suo loco.

DV-

DVBIVM II.

Qua lingua fuerint vſi homines in paradiſo, & in priori ad diluuium, Hebræa, an Chaldæa.

PRima *ſententia* aſſerit, quòd Chaldaica. Ita plures apud Euſeb. Neriembeg de origine ſacræ Scripturę lib. 6. c. 13. Primò, quia Chaldei ſunt antiquiores Hebreis, & lingua Caldaica antiquior Hebraica, quia Iudicum 5. dicitur, quòd Oloferni Principi Aſſiriorũ interroganti ab Achiore, quis eſſet ille populus Iſraeliticus dixit Achior *populus iſte ex progenie Chaldæorum eſt, & habitauit in Meſopotamia, quia noluit ſequi Deos Patrum ſuorum in terra Chaldæorum, deſerentes cæremonias Patrum ſuorum (id eſt Chaldæorum) in multitudine Deorũ, & coluerunt vnum Deum cœli, qui præcepit, vt exirent indè, & habitarent in Charran, &c.* Ex quo colligitur Hebræos eſſe, ex progenie Patrum Chaldæorum, & ita habere originem linguam Hebraicam à lingua Chaldaica, ſicut progenies Hebræa à Patribus Chaldæis. Confir. 1. ex PP. qui ex Philone probant, ex genere Chaldęorum prodiſſe Moyſem, & ex Chaldæis duxiſſe genus, qui Moyſes fuit Hebræus, & ſcripſit penthatheucum à creatione mundi, ad Hebræos, & dicitur Hebræus ratione ſui generis Hebraici, & Hebræi omnes ſunt de genere Chaldæorum. Confir. 2. ex vaticinio Ieremiæ cap. 5. vbi antiquitas Chaldaica commendatur *ecce ego adducam ſuper vos gentem de longinquo domus Iſrael, cuius ignorabis linguam*, populus enim Chaldæorum iucenſurus erat templum, deſtructurus Ieroſolymam, & ducturus Hebræos captiuos in Babilonem ex 2. Paralip. vlt. propter peccata Hebræorum adduxit ſuper eos *Regem Chaldæorum, &c. donec impleretur Rex Perſarum, & compleretur ſermo Domini ex ore Ieremiæ de 70.* annis captiuitatis. Vbi indicatur Chaldæos fuiſſe antiquiores Hebræis, & robuſtioriores armis, aliàs Hebræi poſſent reſpondere Deo oppoſitum, concluditur ergo antiquitas linguæ Chaldaicæ ſupra Hebraicam. Vltimò, nam Abraham fuit Chaldæus, & illi præcepit Deus *vt egrederetur de terra ſua, & cognatione ſua, vt faceret illum, creſcere in gentem magnam*, & Pater eius Thare tulit eum, & eduxit de Vr Chaldæorum, & Abraham *egreſſus tulit animas, quas fecerat in Aram* Geneſ. 12. & act. 7 & inde profectus eſt in Meſopotamiam, & ita ex illo prodijt gens Hebræa. Confir. nam rationi conſonum erat, vt illa lingua eſſet communis in ea regione, in qua erigebatur à fundamentis, & fundabatur illa Vrbs Babylonica, cui acceſsit linguarum con-

confusio, sed ea Regio fuit Chaldæa. Iuxta Philonem, qui scribit de quodam loco, appellari Deli, ante ædificatione turris, lingua Chaldæorum: licet lib. antiquit Biblicarum non sit danda fides, præsertim in eo quòd dicit Abraham Nachor, & Loth restitisse erectioni, & ædificationi turris, cùm nondum essent tunc nati in rerum natura.

Conclusio asserit. Quòd *vsi sint Hebraica*. Ita Caiet, & eruditi plurimi dicentes antiquitate præstare, & esse primam omnium, sequitur nouissime præcitatus Eusеb. pluribus in locis, licet varia sint fundamenta, firma, & infirma, firmius præeligendum. Primùm, quia à nomine viri fit nuncupatio nominis fœminæ, Euæ à nomine is deducitur nomen issa אישה Secundùm quia Hebræa est simplitior cæteris, & breuior. Tertiùm, nam ea lingua est antiquior cuius litteræ Alphabeti sunt nomina, & voces significatiuæ, vt Hebraicæ. Quartùm, ex Caiet. ex indicijs pro principatu Hebraicæ, tum quia nomen Dei Thetagrammato, Iehoua, erat in illa lingua, tum etiam, quia nomen Babel impositum turri erat dialecti Hebraicæ. Quintùm ex Guidonis coniecturis, qui dixit. Adæ fuisse familiarem, & vernaculam, & ita seniorem Arabica, & alijs. Quoniam Iosephus 1. antiquit narrat à filijs Seth fuisse erectas duas illas columnas, & permansisse in Syria ad sua tempora, & in eis arte scripturas, quarum inscriptio referri, non potest nisi ad linguam Hebraicã, tum etiam quia Iudas in sua canonica citat Prophetas, & librum Enoch. viri septimi ab Adamo, & Adam, quas fuisse conscriptas Hebraico sermone sibi certum, vbi astruitur fuisse solùm librum scriptũ ab Enoch. Sextùm, ex August. & alijs PP. qui dicunt, quod Heber atauus Abrahæ, non interfuit ædificio turris, & ita retinuisse priscam linguam, & deribasse in posteros, & ab illo dictos esse Hebræos, & linguam Hebræam, & meritis reliquisse suæ familiæ linguam Hebræam, saltim in linea progenitorum Christi.

Impugnantur aliqua, licet pro nobis adducta, tamquam infirma. Et primò, quia potest optimè vna lingua esse antiquior quam alia, licet à viri nomine non vsurpetur nomen fœminæ. Confirmatur, nam idem habetur in alijs linguis, vt in Latina à nomine viri deribatur virago. Secundò, nam simplicitas non est argumentum efficax antiquitatis, nam Latina est simplicior Græca, & non senior, & aliæ iactari possunt de maiori simplicitate, quin de antiquitate, vt de Cimbrica, & sinensi, quæ sunt penè monosylabę. Confir. nam lingua est simplicior, & brebior cæteris. Primò quia non habet tot vo-

voces, ex quo potius colligitur quod sit imperfectior, quam antiquior. Secundò quia non habet tot dicendi formulas, & phrases ad idem exprimendum, & id magis probat inopiam, & inuentutē, quam antiquitatem, qua ratione lingua Hebraica sæpè est plena vocibus syriacis, & Chaldaicis. Dein de *negari potest minor*, nam alia est æquè simplex, imò magis, Hebræa, vt consideranti Syram, & Chaldaicam patebit, & non est ita concisa, quòd non habeat plures dicendi modos, & phrases ad idē exprimendum. Tertiò, non probatur, satis antiquitas, ex significatione litterarum alphabeti Hebræi, poterat enim idioma vnius linguę esse antiquius caracteribus alterius, nam non debet esse necessario coæua vox cum scripto, & caractere. Quartò, nam Caietani coniecturis nihil efficaciter probatur de antiquitate, nam nomen Dei constat quatuor litteris apud Syros Græcos, &c. & nomen Iehoua fuit Moysi reuellatū post factā linguarum varietatem, & potuit Iob idumeo, & Melchisedecho Chananęo. Deindè quidā putant, quòd Babel non sit nomen Hebræum, sed Chaldæum, seu Syrū, à nomine Boblo, id est titubatio, confusio, hæsitatio, linguæ balbuties. Quintò, nam coniecturę Guidonis, non probant efficaciter intentum, nam nullus præextitit liber Enoch. Deindè nam in columnis, non fuerunt litterę, Alphabetariæ, sed Hieraticæ, & dato, non probatur scriptas Hebraicè. Sextò, circa illud Augustini, opponitur ratio Theodoreti, nam si ab Heber denominarentur Hebræi, non solùm illi, sed aliæ nationes, ducentes originem deberent ita appellari, vt Ismahelitæ, Amalecitæ, & qui trahebant genus ex Nacor, & Labam, & tamen nullus est vsus lingua Hebraica. Et non valet dicere resedisse Hebræam apud solos posteros, in quibus mā sit fides vnius Dei, nam videtur gratis dictum. Deinde falsum est apud solos fides mansisse, nam mā sit apud maiores Abrahæ, in quibus non mansit, ut in Thare, & Nachor, qui seruierunt Dijs alienis Gen. 24. & Philo affirmat, quod adhùc Abraham fuit aliquando idolatra, & Genebrardus in Rabinis adorasse stelas, & cæpisse Deū colere anno ætatis 48. & ita lingua Hebræa fuit in posteris Heber etiam infidelibus in Mesopotamia, & Chaldæa ante Abrahā, & post ipsum in Egypto Confir. ex Augustino 16. de cinit cap. 11. vbi soli lineæ, ex qua Christus erat proditurus astrinxit linguam Hebræam, non solis fidelibus posteris Heber, licet credat fuisse primam, & communem, & illi accidisse multiplicationem diuisionis in pœnam, & Heber non refudisse in vniuersam progeniem linguam illam, sed in lineam illam per generationes perductas ad Abrahā, cum quæritur vbi lingua illa

illa pōtuerit remanere in diuisione linguarum, quæ fuit antea communis, nisi in illo gente à cuius nomine nomen accepit. Non videtur virisimile, quòd lingua nobilissima in vnius familiæ, aut lineę, vt incarcere esset recluſa. Nec dici potest primogenitum edoctum secretò lingua Hebręa, & alios communi, nam quid obstat notam esse alijs transuersarijs. Denique gratis videtur dictum, relictam familiæ Heber intuitu meriti non ędificandi turrim, nam quidam id negant, & asserunt non esse illam rationem efficacem, cur illa vna, & communis lingua mansit conseruata in domo Heber, potius quam in alia, & cur Heber non sit sortitus suæ patriæ Chaldeæ linguam natiuam, potius quam Hebræam, nam in illa sententia assummuntur plura, quæ non probātur. Primum, quòd Heber habitauit cum suis in Chaldæa, & non acceperit patriam, Chaldæam, potius quam Hebræā. Secundum, nam est petere principium, fuisse primam, & communem, quam habuit Heber illam Hebræam cum sit positū in quæstione. Tertiò, non probatur, quòd Heber non conspirauerit tùm cæteris ad ędifficium turris, cum sit in sacra Scriptura satis manifestum Genes. 11. *cum venissent in campum Sennar, dixit vnusquisque ad proximū suum venite faciamus &c.* quæ est vox vniuersalis nullū excipiens, & ita inter omnes fuit Heber. Quartum statim, *ecce vnus est populus, & vnum est labium omnibus, venite, &c. confundamus linguam eorum*, inter quos etiam erat Heber sub communi labio, & ita etiam ipse passus videtur, pœnam cōfusionis cum cæteris, sicut culpam, siquidem vnusquisq; non audiebat vocē proximi sui. Quintū, nam nō est eadem ratio pro Noe, & Heber, nam Noe erat vir iustus, vt non conspiraſſet in ędificium, non ita ipse Heber, sed idolatra, & ita conspirauit in commune consilium, quod si fuisset iustus, scriptura memorasset, dicendo nō præbuisse consilium, aut consensum, sicut de alijs. Vt de pluribus, vt de Iosepho Abarimathea Lucæ 23. *& ecce vir nomine Ioseph vir bonus, & iustus; hic non consenserat concilio, & actibus eorum*, scilicet damnandi Christum.

Impugnari potest ista impugnatio. Primò, ex eò quòd vtitur non semel, quauis oppositarum sententiarum, vt impugnet sibi infixam, & propositam. Secundo, quia nil, sibi probatur opinabile, aut verū, nisi quod euidenter mathematicè probatur. Tertiò, quia insolubilia existimat omnia argumenta assumpta, cùm vrgentiora admittant solutionem, præsertim illud de denominatione Hebręa in omnibus decendētibus, & non in solis fidelibus, præsertim in progenitoribus Christi, quòd dicit gratis dictum, eò quòd sint, qui negent, sed alij negant, quod ipse asserit.

Deinde ex Genes. 11. non conclu dit efficaciter Heber conspirasse in ædificium turris, nam vox illa *vsquisque ad proximum suum*, non est vox ita vniuersalis, quòd non patiatur exceptionem. Nec aliud, scilicet, quòd *vnus est populus, & vnum labium, confundamus*, &c. non probat non mansisse commune labiũ pro omnibus, & non mansisse inconfusum in Heber, & linea progeniali Christi, & ita existimo ex his, & alijs adducendis confici sufficiens argumentũ pro conclusione, licet sint approbata alia minus solida, vt constabit infra, vbi dicemus, quod lingua Hebræa sit omnium prima, & antiquior, & illa vsos esse primos hòmines in paradiso, & quòd primo resedit in regione Chaldæorum, & primos Chaldæos fuisse loquutos dialecto Hebræo, & quòd linguæ Hebraicæ vsus fuerit apud Chaldæos, & Mesopotamos, & fuisse linguam patriam eorum, quæ communis fuerat humano generi ante diluuium, & omnem Chaldæam habuisse vulgarem linguam, quam nos vocamus Hebræam, quæ suis dubijs sunt solidanda.

Respondetur ex dictis *ad fundamenta primæ sententiæ*, potius esse pro nobis, nam illis admissis, solùm deduci potest, quòd lingua Hebræa resedit in regione Chaldæorum, & illa vsos fuisse, non solùm Chaldæos, sed Hebræos ab illis originatos. Ab illud Ieremiæ 5. *Ecce ego, &c. cuius ignorabitis linguam.* Respondent quidam, referri ad tempus, quo filij Israel captiui in Egypto, iam obliti erant linguam Hebræam, & patriam, ex communicatione cum Egyptijs. Imò Moysi esse diuinitus restituram, ad scribendam sacram Scripturam. Secundò, alij id dictum propter aliquas differentias accidentales, inter illas temporum successione adiunctas.

DVBIVM III.

An lingua paradisi, & communis ante diluuium extet modo, & quæ illa sit?

Prima sententia asserit. Nõ extare linguam Hebræam, infusam à Deo primo homini, nec apparturam, nisi in futuro sæculo.

Impugnatur sine ratione, quòd sine fundamento dicitur, nam id non probat, nec demonstrat.

Secunda sententia, non extare Hebræam, nec habere primatum. Primò nam ab illa essent deribandę ceteræ, & haberent voces redolentes originem, à matrice, quòd non verificatur de Hebræa.

Impugnatur à quibusdam. Primò, quia in dialecto Hebraica venerantur istam dignitatem inuentam, & ita appellant linguam linguarum, & cum Hieronimo matricem linguarum. Secundo, quo-

niam non est necesse, quod deriuatę retineant reliquas prioris dialecti, quoniam multiplicitas idiomatum nō accidit cursu naturali, sed per impressionem subitam noui habitus, diruto, & sublato antiquo. Nam Deo liberum erat infundere menti species distinctas vocum diuersarum, sicut & confusionem.

Tertia sententia asserit. Linguā paradisi fuisse extinctam omnino, & iam non extare. Primò, quia lingua Hebræa inchoata est ab Abrabam, Moyse, aut Heber, & ita non fuit lingua paradisi, quòd si fuisset, esset extincta in confusione linguarum in turri Babylonica, si præextitisset senior, & antiquior illa, quia omnes concurrentes ad ędificium turris ibi sunt confusæ, præsertim, si fuit vnius labij, & sermonum eorundem.

Conclusio asserit *dialectum fuisse in illis, qui adfuerunt ædificatio turris antè diluuium, & illa fuit Hebræa, quæ in aliquibus perseuerauit.* Primò, quia ab Heber dicta est trans, & transiens, quoniam ea fuit, quæ transierit vnicè indemnis confusionem Babilonicam. Cuius dialectus fuit communis antè ædificium, & transit ad tempora Israelitarum. De ratione huius appellationis pro Hebræa postea, & an illa, aut Chaldaica sint homines loquuti communiter ante diluuium? Secundò, nam consonum erat rationi, vt lingua primo homini infusa dilatatur in tępora, & perseueraret, saltim in aliquibus, iuxta supra dicta.

Respondetur ad oppositas sententias ex impugnationibus propositis, & fundamento conclusionis.

DVBIVM IV.

An lingua Hebraica sit omnium prima, & antiquior? & quibus inditijs, & argumentis asseratur illius primatus?

Conclusio est *affirmatiua.* Primò, quia cum in Egypto esset commertio Egyptiorum deformata, & absoleta apud Israelitas, Deus miraculo reparauit (cū lex esset in ea illis tradenda) infundendo Moysi illius species, vt in ea scripturam traderet, & in exitu Israel de Egypto verificaretur, quòd linguam progenitorū, quam descendentes non nouerant, audirent. Abolita enim fuit decursu temporis, vt videretur inaudita, & noua, in noua progenie. Quo circa primò firmandum est omnium primam Hebræā, & in Chaldea resedisse, vt sit ferè vna, & eadem cum Chaldęa. Nā Thare pater Abrahæ eduxit illum de Vr Chaldæorum, vt oraculū Abrahæ factum Genes. 11. & 12. *Egredere de terra tua*, &c. exequtioni mandaretur, & ibi legitur, quòd egressus, *habitauit in Aram*, & ibi habuisse filios, & indè eduxisse

animas quas fecerat in Aram, & duxisse in Chanaam, Mesopotaniam, &c. & inde *semen illius peregrinasse in Egiptum*, vbi Iacob, Ioseph, & progenies habitauerunt 215. annis, & Deum eduxisse eos de Egypto, & reduxisse in Hierusalē, & inde ductos esse captiuos in Chaldeā, & Babyloniam per 70. annos; & inde reductos edicto publico Cyri in patriam ad templū, & ciuitatem reędificandam iuxta Daniel 9 vbi legitur Danielem pro libertate populi sic orasse: *Deus qui eduxisti populum tuum de terra Egypti, &c. auertatur obsecro ira tua, &c.* Secundò, ita fuisse in seruitute Egypti deformatam, vt dici possit fuisse amissam. Tertiò, in exitu Israel de Egypto diuinitus restitutam, & Moysi datam in omni perfectione sua, vt scriptura traderetur in ea. *Secundò probatur conclusio*, ex inditijs aptissimis. Quod nomina antiquis hominibus imposita, & rationes eorum congruunt hebraicæ, nam causas denominationis tradidit Moyses, iuxta linguam in qua scripsit. Sed scripsit in Hebræa, ergo illa nomina erant Hebræa, & similiter lingua illius primi temporis. Tertiò, nam Moyses notat nomina olim imposita à Deo, & illa sunt Hebræa, quippè Deus loquutus est voce Hebraica, cum imposuit nomina, luci, terræ, firmamento, & mari, licet non piscibus, quia Hebræa caret nomine piscium. Constat ex vocib⁹ אדמה erets, Adamà שׁמים schamaim, Accedit forsam quoniā Adam non indidit nomina piscibus, vt obseruit Abulen. in Gen. 13. q. 328. in Hebræo habentur plura nomina animalium, terrestrium, & auium, nō piscjum, nisi nomen commune, nō specificum, & proprium. Apud Tobiam piscis, quem ex iusu Angeli apprehendit, & occidit, designatur nomine communi, colligitur tamen ex eius proprietatibus fuisse callionimum. Tertiò accedunt rationes, quæ licet singulæ nihil firmum euincant, vniuersa collectio suadet multùm. Quartò, quòd Hebræa sit omnium prima ex Apocalip. 7. vbi in cœlo datur, *hoc labium electum*, promissum in cœlesti Hierusalem, in qua cantandum est *Alleluia*, quæ vox est Hebræa, & apud Ioannem de Hierusalem cœlesti ędificata ex saphiro, & lapidibus præciosis non de terrestri, & cœlesti subditur, *per vicos eius Alleluia cătabitur*. Si ergo promittitur redditio labij electi, & illud est Hebræū eloquium, concluditur illud fuisse primum, electū, & datum hominibus.

Vltimo probari potest, ex fundamentis, pro conclusione dubij 2. adductis, quæ rememorari sufficiat, ne actum agamus.

(.§.)

DV-

DVBIVM V.

An lingua Togormana Scitia Phrigia, Cimbria, siue Ascama (quæ eiusdem sunt varia nomina) fuerit omnium prima, senior, & antiquior?

PRima *sententia* est affirmatiua, Goropius Beccanus vir magni ingenij, sed infortunati Adrianus & alij. Primò ex Herodoti narratione, quod Rex cupidus sciendi, quæ esset prima tradidit pastori duos pueros, recenter natos, educandos, in tugurio solitario, inter peccora, & infantes clamauerunt aperienti ianuam *Bec*, inquirens autem quid significaret, inuenit sic appellari panem apud Phrigas, & Goropius Becan. censet non esse fabulam, sed veram historiam. Ita vt prima mundi infantia, hac lingua sit vsa. In qua verbum *Bec* significaret panem, & nomine infantium illam significabant Egyptij, non quòd esset à natura, sed primigenia, & ita Apuleius appellauit Phrigas primigenios, & Claudianus cecinit versibus historiam puerorum. Secundò, nam Iaphet, & Gomer cum posteris, non adfuerunt Turi Babylonicæ habitaturi in Europa, & septentrione, & retinuisse vnicam linguam vnius labij, vsitatum ante diluuium, in qua non sunt passi confusionem, & in eis fuit antiqua dialectus Cimbria. Confirmatur, nam quæ sunt, simpliciora sunt priora, vt in ista lingua Cimbria, à qua deducit (hic author) aliqua nomina Sacræ Scripturæ, & dicit Adam significare odium aggeris, quasi homo sit ager tentationum, obiectus fluctibus inuidiæ, Eua seculi vas, quia in prima fœmina fuit conceptum initium sæculorum, Abel odium belli illati à fratre Caino, deinde Cain malus finis, Mathusale salua te à diluuio instanti. De quibus, & similibus latiori calamo Eusebius Iesuita, cũ alijs authoribus.

Concluſio est *negatiua*. Et probatur ex impugnatione prioris sententiæ, nam dicta sunt infirma, & non possunt astruere antiquitatis vexillum, & palmam pro lingua cimbria, nam quod Iaphet, & posteri non adfuerunt ædificio turris difficile est, nam tunc temporis accolæ mundi suffragati sunt bono, aut malo fine. Deinde Genes. 10. memorato Iaphet cum Sem, & Cham cum posteris, dicitur *ab his diuisæ sunt gentes*, in terra, post diluuium, quòd accidisse in confusione Babilonica recipiunt omnes Interpretes. Deinde id quod iactatum est de simplicitate linguæ, non est inditium efficax antiquitatis primitiuæ, nam Sinensis, est omnium simplicissima, & non prima. Præterea ad illud de deriuatione nominum, & ethymologiarum cer-

tè vim non affert, nàm lingua Hebræa eſt in eo fœlicior cimbria, iſta enim dat deriuationes coactas, & extortas, futiles, & ex ſuo capite in Hebræa verò אדם Adam ab אדמה Adama, ideſt terra, & ſimilibus alijs, in Cimbria, non talis fœlicitas, quòd non ſit in lingua alia penè innumera, & in Arabica inueniuntur multæ ſignificationes nominum, tam Hebræorum, quàm Romanorum, & ea non fuerunt in vſu in Arabia, nec deſumpta à lingua Arabica ſit exemplum Ieſus receptio clamoris. Maria ſignum, aut prodigium Ioſeph jaſpis, Betlehem domus panis, fertilis ad paſcua, Hærodes pauidus. Hnius farinę innumera apud Euſebium lib. 6. cap. 9. ibidem, in quo probat ex lingua Arabica deriuari nomina Hebręa, aut in ea inueniri, quin probetur antiquitas, & principatus illius. Ex quo ſolui poteſt dubium. An ex lingua Arabica ſint deriuationes nominum Hebraicorum? Deinde ad illud de ethymologia illius vocis infantium. Bec. ſignificare panem ridiculum eſt, per illam panem petijſſe aptius didiciſſe ex balatu ouium, & ita ſunt digni irriſsione, & cachino, qui indè auſpicari contendebant, antiquitatem linguæ Phrigiæ, & argutè illudit Ariſtophanes vocans Becce ſelanos, ideſt Becce lunares, qui ita ſtolidi eſſent. Et ipſi Beccano inuertitur ethimologia in irriſsionem nominis factum accidit, dictus eſt Beccànus à Belgico Becade torente quaſi torrentinus, ancilla rogauit num noſſet ſui nominis ethymologiam? dixiſſet, quod Beccanus Ethymon quaſi Bec. Aem Nuus, idſt quod haberet os vicinum naſſo, quod cachinum mouit ita ridiculum, ſicut quod dicebat, quod lingua Arcadia eſſet antiquior cæteris. Ex quo cõſtat, an lingua Arcadia ſit antiquior cęteris, quòd non. In certamine. An Athenienſes eſſent antiquiores Arcadibus, Ariſtides adulantur Athenienſibus, vt illis deberi omne genus humanum aſſereret. Arcades verò, vt conuincerent eſſe inferiores fabulantur fuiſſe ante lunam, & ita rugantur in hac fabella, vt maiores eſſent ante confuſionem linguarum. Conſtantia eſt propria ſolis, inconſtantia lunæ, & linguarum diuerſitas notatur per lunam, vt diuerſis lunis alius intelligit aliud agendum. Et ita concluditur ex his miſtylogijs ridiculè ſummi argumenta contra veras hiſtorias, eo quod concluditur, quod lingua Arcadia non fuerit antiquior.

DVBIVM VI.

An lingua Syra fuerit omnium prima.

PRima *sententia* est affirmatiua, vt det antiquitatem ab initio, & exordio mundi. Primò ex PP. Nazianzeno, Basilio cui quærenti, qua lingua loquutus est Deus cum Adamo, & quæ fuerit ab initio in diuisione in turri Babel? Respondet Nazianzenus, quòd Syra facilis omnibus, & Genes. 10. varietas linguæ Syræ contigit post diluuium. Theodor. quæst. 59. quòd sit antiquior, & probat, quia Adam, Cain, Abel, & Noe sunt propria linguæ Syriacæ, & discurrit in ethymologijs. Adam terrenus ex terra, Cain possessio, possedi hominem, &c. Abel idem quod custos, quia primus defunctus, atulit luctum parentibus, Noe idem, quòd requies, alij cum Platone similia. Secundò ex Sophroniæ 3. vbi Deus promittit, *tunc reddam populis labium electum*, vt omnes inuocent in nomine Domini. Hoc verò labium redditum Iudæis post captiuitatem non fuit lingua hebræa, sed Syra. Tertiò Iudæis restitutis in Hierusalem, & punita gente Chaldæa, & exciſſo imperio Babylonico Iudæi loqui cœperunt lingua Syra, & durauit in Iudæa vsque ad Christum, qui loquutus, & concionatus est lingua Syra sibi vernacula, & ita ob id dicitur electa. Quartò, nam in statu innocentiæ fuit vsus illius, quod supponitur in illo Sophoniæ 3. vbi promittit Deus redditurum labium electum, quod supponit fuisse illius vsum pristinum in populo Dei ante captiuitatem, quod accidit antè diluuium, & edificationem turris Babylonicæ, & non potest interpretari de lingua hebrea, quia Iudæi tempore Sophoniæ ea vtebantur. Quintò, quia vetus Adam vsus est ea lingua, qua nouus Adam Christus, qui Syriaca conuersatur est cum hominibus. Serpens dedit consilia peccandi illa lingua, Christus salutaria eadem.

Impugnatur, nam propheta non loquitur de Iudæis, sed populis omnibus, quibus promisit Deus labium electum, ergo non fuit dia lectus Syriaca.

Respondet Iudæos dispersos in vniuersis regionibus iuxta Ieremiæ 4. potuisse vocari diuersi populi, præsertim cum plurimi, gentiles, Egyptij, &c. essent permixti Iudeis, quibus dicitur reddi labiũ electum antea amissum, quod ineptè dicitur reddi populo gẽtili, cui non erat datum antea. An autem ex loco dicto Sophoniæ possit summi efficax argumentũ ad probandum, quod lingua Syra fuerit omnium prima, petẽdum est, & ex varijs interpretamẽtis illius ponẽdis infra, vbi ad illũ locum Sophroniæ 3. labium electum dicit

disputandum. An beati in cœlo sint loquuturi lingua hebræa, an alia, vna, an multis dialectis? interim sit.

Conclusio asserit, quòd *Syra non sit omnium prima, sed Hebræa.* Quæ probari debet ex fundamentis pro conclusione dubij 4. quæ non repetemus, ne actum agamus, ex quibus etiam constabit, ad primum oppositum, solutio, negando antecedens, & probationes, & ad secundùm de labio electo, non hic, sed in cœlo beatis restituendum, quod est Hebræum. Et ad tertium negandum, quòd si admittatur simul loqui Hæbraico negari non potest licet limatiori, & defæcato à particulis Chaldæis. Ad quartum, iam cõstat de illo Sophoniæ. Ad quintum, potius creditur vernaculam Adami fuisse Hebræam, licet cùm infusis, omnibus abundaret, non mirum aliquãdo vsum Syra sicut & Christus.

DVBIVM VII.

An primi Caldæi sint vsi dialecto Hæbraica, & an vsus linguæ Hæbraicæ fuerit apud Caldæos, & Mesopotamos, & an omnis Caldæa habuerit vulgarem linguam, quam nunc vocamus Hebræam?

PRima conclusio asserit, quòd *lingua Hebræa communis generi humano vsque ad ædifficium turris refedit in regione Caldæorum, & quòd linguæ Hebraicæ vsus fuerit apud primo Caldæos, & Mesopotamos.* Primò, nam Abraham fuit Caldæus, & habuit vsum linguæ Hebraicæ, & id indicat nomen antiquum Abrahæ, & nominis mutatio, & coniugis facta à Deo, iuxta Hebræum idioma. Secundò, nam antecessores Abrahæ, & posteri Heber permanserunt in Chaldæa, vt constat ex Sacra Scriptura. Tertiò, nam Heber vir fuit pius, & seruus Dei, non dedit opem ad ædifficium turris saltem illo malo fine, & ob id non fuit punitus diuisione, & confusione linguarũ, sed eloquio pristino retento perstitit in eadem sede Babylonica, & non est dispersus sicut Phaleg cum posteris, quando diuisæ sunt in Caldæa gentes, & linguæ, vt dispergerentur in varias regiones, vt superbi, & peccatores, sed in ea regione remanerent soli Dei cultores, & qui non dederunt opem ad ædifficium turris saltim malo fine. Confirmatur, nam Heber prouisus hoc beneficium Dei, vt celebraret eius memoriam, vnum ex natis Phaleg, vocauit illo nomine, eò quòd diuisa sit terra in diebus eius, & dispersi homines, & confusæ linguæ, & ita plaga non tetigit familiam Heber, & Phaleg. & lingua non fuit turbata, nec inde discesserunt præsertim cum Arphaxad auus Heber tene-

ret

ret possessionem illius terræ, & regionis inxta Hieronymum, & Iosephum, qui faciunt Arphaxad avum Heber, progenitorem Chaldæorum, qui Heber, dicitur ortus eo tempore, quo Arphaxad discessit ex Armenia, traiecit tygrim, & sedit in Chaldæa primus omnium, & ob id indidit nepoti nomen illud Heber, id est trãsiens tygrim. Confir. ex Iosepho, qui dicit quod Chaldæi primo vocati sunt Arphaxadei, & Hebraice casdim כשדים & à tribus postremis Arphaxad ופשד iuxta morẽ Hebræorum diminuendi nomina, & ita Arphaxad genuit Sale de quo est Heber, & de illo Phaleg, in cuius diebus est diuisa terra ex Heber ortus est etiam Getam ex Genes. 10. & ita Arphaxad per Heber; & antecessores Abrahæ dedit originem Chaldæis, & cõstat ex sacris litteris Phaleg. & posteri Thare, & Nachor habitauerunt in Chaldæa à cuius posteris geniti sunt Chaldæi, qui retinuerũt linguã, quæ modo dicitur Hebraica, secus de posteris Getã. Confir. nam dici non potest linguam Hebræam post diluuium in vna sola familia mansisse, non in gente illius, cum familia excreuerit in gentem magnam, cum vna, & eadem lingua Hebræa. Et idem accidit cæteris familijs per capita ibi numeratis, in quorum singulis personis, & familijs sua lingua iuxta diuisionem est propagata, & ita idem dicendum accidisse Heber, & Phaleg, ita vt statim post diluuium originata sit aliqua gens cum lingua sua, & idem de Phaleg. iuxta scripturam dicentem, *ab his diuisæ sunt gentes post diluuium*, & nequet esse ex Heber alia gens nisi, quę retinuit linguã Heber, & fixit sedem permanentem in Chaldæa. Confir. nam non fuit Israeliticus populus ille spectans ad diuisionem Heber, & Phaleg, nam habitauit in Chaldæa non in Chananæa, quia deferri debet ad Chananæã, cum post diluuium diuisi sint Chanaam, & filij eius, & Israeliticus populus ortus est à Iacob. Et habitauit in Chananæa, & ex Heber, & Phaleg. prodijt post multos annos gens Hebræa, quæ habitauit in terra Chanaam. Confir. tã Laban, Chaldæi Mesopotami, nomen est Hebræũ, & habuit idioma Hebræum. Quarto, nam reuera antiquum idioma, & eloquium Chaldæorum idem, quod statim dictum est Hebræum, & illa lingua, lingua Hebræa, & Israelitæ habuerunt in vsu ab exitu Egypti ad captiuitatem Babylonicam, & Babylonij decursu temporis degenerarunt à puritate eloquij, & dialecti Hebraici, & fuit transformatum in idioma Chaldæum, aut Syrum, & Iudæi sibi vsurparunt, & retinuerunt loquelam vsque ad Christi aduentum, nec mirum variasse illã gentẽ post multa tempora dialectum, cũ idem accidisse videamus Italis Gallis Hispanis, &c.

Ar-

Arguitur contrà, nam in Chaldæa imperabant filij Cham ergo non potuit spectare Chaldæa ad Heber, & posteros eius. Respondetur id factum per Tyranidem, nam inuaserunt filij Cham, & dominati sunt ipsis posteris Sem, qui resederunt in Chaldæa. Et id probat, quod firmamus, remansisse in eãpo Senaar posteros Sem ex Heber in regione Babylonis, & ita merito dicitur, quòd Nachor, Thare, & Abraham habitauerunt, & deguerunt in Chaldæa.

Secunda conclusio asserit, quòd *vsus linguæ Hebraicæ fuerint apud Chaldæos, & Mesopotamos*, & quòd *lingua Hebræa fiat natiua, & patria Chaldæorum.* Primò, quia nomina illorum sunt Hebraica, vt Laban, Lia, Rachel, Bathuel. Secundò, nam deduci videtur ex Genes. 31. de aceruo lapidum. Vbi Laban genere Chaldæus, & Mesopotamus vsus fuit idiomate Hebraico in concertatione cum Iacob, de aceruo lapidum testimonij. Nam dicitur, *Tulit itaque Iacob lapidem, & erexit in titulum*, & Laban vocauit tumulũ testis; Iacob verò aceruum testimonij, vterque iuxta proprietatem linguæ suæ, &c. & id circo appellatum est nomen eius Galaad. Hic difficultas coegit plures, dicere, mendum esse vulgatæ, sed absit. Hic supponitur antiquos Chaldæos posse dixisse linguam Hebræam. Quo impugnari possunt efficaciter, qui linguam Hebræam intra vnam familiam Abrahæ, Isaac, & Iacob includunt, vt in carcerem, differentia vtriusque pronuntiati est, quòd Laban locutus sit Hebraicè, & vsus fuit concreto, Iacob verò Syriace, & vsus sit abstracto, licet idem prorsus significet. Iegar Siriacum, & Gal Hebraicum, scilicet aceruum, aut tumultum testis in concreto testimonium, at verò in abstracto testimonium. Laban dixit tumulùs testis Hebraicè גלעד Galhed, Iacob aceruus testimonij siriacè nõ Hebraicè. Nã est יגר שהדותא iegai sadaduta, addit formã Syriacã. Cæterũ עד significat, & addit in concreto testem. Nec obstat Delrij ingeniossum effugiũ, præiuisse alternè, vnum alterius dictum, mutuò repetendo nomen impositũ ab altero, vt erat mos infœderibus, quia nõ congruit textui in quo dicitur Labã sic appellasse, & Iacob sic appellasse, & vterque secundũ proprietatem linguæ suæ, & dicere debuisset, si vnus esset vsus lingua alterius, non sua. Secundùm proprietatem linguæ alterius. An autem sit referendum ad vitiũ librariorum, vt iam olim facta sit transpositio duorum nominum à Laban, & Iacob, puto non impossibile, sed textus Hebraicus corrigendus per Latinum, quem prætulit Ecclesia, non contra, & si scio lus Hebræus transmutauit dictum

Laban,

Laban, & Iacob ne tribueret linguam Hebraicam Labano idolatræ, non fuit ita solidum, qui non relinqueret vestigium suæ malitiæ, & sui ærrati, nam statim scribitur verbum Hebraicum in ipsa formula initi pacti, dum ait, *& id circo appellatum est nomen eius Galaad*, id est tumulus testis ab ipso Laban qui colligitur Hebraicè loquutus, siue impositum sit à Labano, siue ab alio, repetendo dictum Labani. An autè Hieronymus dixetit parum refert, eundem acerum significatum ab vtroque proprio idiomate per vocem idem significantem. Existimo accommodari non posse vulgatę sine violentia, & ita Hieronymum non attendisse nostram versionem sed fontem Hebræum. Et admitti non potest, quod periti quidam dicunt, nil interesse hoc, vel illo modo sit dictum, & imputatum Iacob, aut Laban. Nam vulgatus voluit notare aliquam differentiã in eo, quòd vnus dixerit testimonium in abstracto, alter testem inconcreto, quæ differẽtia, cùm verè sit in verbis Syriacis, & Hebraicis debuit inueniri in dicto, & verbis vtriusque. Nec confugiendum ad confusionem, & transmutationem verborum, & ita impositio nominis Hebræi Galaad à Laban, aut ab alio relatore, aut repetitore probat ipsum fuisse loquutum Hebraicè, & ita in Chaldæa viguisse vsum linguæ Hebraicæ, & trãs Euphratem progeniẽ Abrahæ transmisso Euphrate, sed desuevisse paulatim illi linguæ ex comertio cùm Chananæis, quorum quibusdam fuit in vsu lingua Syriaca. Cæterum Chaldæi olim loquuti lingua Hebraica de cursu temporis corruperunt puritatem antiquam, qua verò ratione Israelitæ repetierunt vsum linguæ Hebraicæ posito, quod degenerauit inter Chaldęos suos conuiuales petendum est exmiraculosa restitutione facta Moysi de qua suo loco.

Tertia conclusio asserit, *in Chaldæa fuisse vulgarem, linguam quam modo Hebræam, vocamus, ex toto, aut ex parte vulgi*, constat ex hic dictis.

DVBIVM. VIII.

An fuerit vsus linguæ hebraicæ extra Chaldæam in Chanà ante aduentum Abrahæ in Chaldæam?

PRima sententia asserit, quòd fuit vsus linguæ Hebraicæ extre Chaldæam in Chanaam. Ariasmontan, & alij. Primò, nam fuit apud Chananæos vsus nominũ Hebraicorum, & in personis, vt Melchisedec Abimelec, & alia. Erant enim Chananæi, & habebant nomina Hebraica Similiter in Vrbibus, vt Ierico, Cariat Sepher, Salem, &c. Ergo in tota lingua conueniunt. Secundò ex vaticinio Isaię c. 19. vbi ait *in die illa erunt*

5. ci-

5. *ciuitates in terra Ægypti loquentes lingua Chanaam*, id est Hebræa, ac si esset vna, & eadem Chananea, & Hebręa. Tertiò, ex eo quòd illi Patriarchæ non possent celebrare suos contractus nisi esset cõmunis, & vulgaris lingua Hebræa cum Chananęa, vt Iosue cum Gabaonitis, & cum Raab exploratores. Quod si in angulo vnius domus lateret Hebræa Nachor, Thare, & Abraham quomodo fuisset nota Chananęis, & in eos diffusa. Confir. nam non satis dant, qui respondent quòd Sem primogenitus Noe fuit ille Melchisedec, & ita non mirum habuisse nomen Hebræum, & notiam linguæ. Primò, quia Sem non fuit Melchisedec, quia ille fuit sine Patre, & sine matre, & sine genealogia; Sem autẽ fuit filius primogenitus Noe, cuius non semel ponitur generatio in sacra Scriptura. Deindè. Secundò, quia Sem migrauit ad orientem, & Asiã, non ad Chananæam, quæ fuit portio posterorũ Cham. Nam Sem Rex Iustissimus non quęreret Regnum in sede aliena. Rursus. Tertiò, quia Apostolus ad Hebręos 7. indicat quod Melchisedec non fuit de prosopia Abrahę. Vltimò, nam si habuit nomen Hebręum, potius ex illo probatur vsus linguæ Hebraicæ in Chanaam.

Conclusio affert quòd, *non fuit vsus communis linguæ Hebræe relictus post confusionem in Sem per Heber ipsis filijs Chanaam, sed diuersa lingua vsos fuisse, & ita non fuit vsus illius extra Caldæam in Chanaam.* Primò nam in diuisione in Heber, & Phaleg, relicta est puritas linguæ Hebraicæ, nec deriuata est ad Chanaam, & 11. filios, nec in eis conseruata, potius ab illis sunt diuisæ familiæ populi, & linguæ. Secundò, nam inditia quibus posset probari linguam Chananęorum esse eamdem cum Hebręa, suaderent, etiam esse vnam solam linguam Chananęorum scilicet Hebræam, cum admitti debeant plures, tot, quot filij Chanaam numerantur, quibus accidit diuisio linguarum, & populorum, & fit mentio in scriptura saltim 7. populorum Chananæorum.

Respondetur ad oppõsita variè apud Eusebium de origine sacræ Scripturæ lib. 6. cap. 21. sufficiat prima. Quòd non probatur ex communitate illarum vocum in personis, & vrbibus Chananæorum in tota integra lingua fuisse communitatem, potius in illis vocabulis esse concordiã, & in tota lingua desidium. Sunt enim aliquę voces communes Italis, & Hispanis, Latinis, & Hispanis, non tamen sequitur indè communem habuisse linguam, sed stare potest desidium inter proprias. Moyses est nomen Egyptiũ, & similiter Hebręum, & ita vtrique commune, & tamen est desidium in tota lingua. Nam Moyses ab vtraque lingua deduci potest

teſt ex Ioſepho *Mos* ſignificat aquam apud Egyptios, & *iſes* ſeruatum, quaſi ſit ſeruatus ex qua. Alij admittunt eſſe etiam Hebræũ à radice מָשָׁה maſcha, quod ſignificat educere, præſertim ex aqua, & ſic non mirum eſſe plura nomina, quæ communia ſint diuerſis nationibus, quæ idiomata diuerſa habent. Ex quo patet ad alia obiecta.

DVBIVM IX.

An fuerit vna lingua, vel plures antè ædificium turris Babylonicæ, & ante diluuium?

COnclufio aſſerit, quòd *fuerit vna communis omnium, quin eſſet vlla conſiderabilis varietas.* Primò, nam licet non ſit fide tenendum, tamen diuturnitas vitæ hominum in cauſa fuit, vt vna, & primæua inconcuſſa perenaret, nam cum tunc eſſent ætatis longeuæ potuit idem idioma perſeuerare in plures annos, quin declinaret à ſua prima puritate, quòd non fierit modo facile cum ſint breuis, & exiguæ ætatis. Secundò, ex Geneſ. 10. nam ante ædificationem relatam cap. 11. dicitur *erat terra labij vnius, & ſermonum eorundem*, & cum additur in edificatione Babel *ibi confuſum eſt labium vniuerſæ terræ* intelligitur incipi primo diuidi, quòd erat indiuiſum, & ſimplex in varium, & multiplex. Deindè loquens de filijs Adam ędificatoribus turris Babel *ecce vnus eſt populus, & vnum eſt labium omnibus.* Et ſtatim *venite deſcendamus, & confundamus linguam eorum, vt non audiat vnuſquiſque, id eſt* intelligat *vocem proximi ſui.* Ita Auguſt. & alij Patres. Vltimò ex Ambroſio, & alijs apud Ruam.

Arguitur primo pro ſententia Philiaſtri, nam Geneſ. 10. ſcribitur *diuiſas eſſe inſulas gentium à filijs Iaphet, ſecundùm linguam ſuam, & familias ſuas in nationibus ſuis*, & hoc narrat Moyſes, & ſequenti cap. 11. deſcribit turris ędificationem, ergo non erat vna ante turris ędificationem, ſed plures. Reſpondetur ita poſitum per prolepſim, id eſt anticipationem in illo cap. 10. quæ ſcribenda erant poſt edificationem turris, & confuſionem linguarum iuxta ſcripturæ morem vſitatum ex regula Ticonij. Ita ſenſit Auguſt. lib. 16. de ciuit. cap. 140. & citat prædictum teſtimonium, *erat terra labium vnum*, quod non ſemel eſt in ſcriptura, nam cap. 5. Geneſ. dicitur quod *Noe erat* 500. *annorum cum accepit illud oraculum non permanebit Spiritus meus in homine, erũtq; dies illius* 120. anni, & cõficitur ſumma ex vtraque partita 620. ante inchoationem diluuij, & tamen inchoatũ eſt anno 600. Noe.

Arguitur ſecundò, nam ideo dicitur

citur *labij vnius*, quia cum essent plures loquens intelligebat, & intelligebatur ac si vnus, sicut Christus, & Apostoli intelligebantur, à varijs nationib⁹, quæ sub cœlo sunt, & intelligebant, quia donum linguarum in eo est prædicãte Petro (in die Pentecostes) suo idiomate intelligebatur ab omnibus, iuxta quod, illud Sophoniæ 3. *restituturum populis labium electum*, interpretari solet de lingua, qua intelligi, & intelligere possit alterum. Respondetur non esse locum huic interpretationi propter scripturæ claritatem.

Arguitur tertiò, nam id quod dicit scriptura *erat terra labij vnius*, accipi debet ita quod essent plures varietates linguarum, sed tamen se intelligerent inuicem, ac si esset vna lingua, & idem sermo communis omnibus, & in hoc sensu dicitur *labij vnius*, non quoad eloquium, sed intelligentiam, & sensum, non quòd esset idem idioma. Respondetur, quòd ista interpretatio firma non est, & notatur hæresis ab Alphonso à Castro, eo quòd scriptura in hac parte est apertissima.

Arguitur vltimò, nam mirũ est, quòd in tanta multitudine hominum, & varietate generis humani manserit vna, & indiuisa lingua, cũ videamus multiplicari, variari intrusione, aut mixtione ad centesimum annum, ergo non fuit vna, sed multæ ante diluuium, & Turrim. Respondetur mirum reti niusse vnitatem sine notabili varietate, tamen reuera retinuisse, ratione diuturnæ ætatis illorum hominum, quin à puritate substantiali notabiliter declinarẽt.

DVBIVM XX.

An Noe, & omnes homines communi consilio conspirauerint, & inuauerint ad ædificationem Turris?

CONclusio est *conspirasse, & inuasse, licet non omnes malo animo, & fine, sed quidam bono, quidam malo.* Iosephus, Abul. Perer, Delr. Cornel. Tirin, & alij. Primò, nam eggressi cum Noe in campum Sanaar Babilonicum, vt in orbis terrarum meditullium multiplicati per 350 annos (quibus Noe vixit post diluuium) iuxta Genes. erant necẽssarij ad aggrediendum illud ingens ędificium; nec aggredi potuit à 60 hominibus, immane edificium vsque ad cœlum: vidit igitur Noe vir sanctissimus fabricam cùm pijs alijs, & attendit inualuisse idolatriã, vidit incremẽta hominum, & innumera bella post quam fecit diuisionẽ, & dispersionem suorum ad implendum orbem, suscepto iuramento à filijs de seruando cultu Dei, amore, & mutua concordia, aggressi sunt quidem, vt turris seruiret pro spe cula omnibus, pro cõmuni memoria, pro directione itineris à quo dis-

disperſi ſunt in orbem pro mũdi ornatu, & gloria. Alij agreſsi malo fine, vt ſi iterum reddiret diluuij punitio euaderent flagellum Dei, alij fine gerendi belluni Deo &c.

Arguitur primò, ex Ioſepho referente oraculum Sibillinum, in quo pronunciatur, non omnes cõſpiraſſe in fabricam ſuperbi ædificij, ſed ſolùm quoſdam. Confir. ex illo Deut. 32. in cantico Moyſis *conſtituit terminos populorum iuxta numerũ filiorum Iſrael*, in quo indicatur in ſingulis linguis confuſis, & diſtributis in diſperſione Babel fuiſſe tantum 12. homines ex vnaquaque lingua 12. dũtaxat, & ſi non paſsi eſſent plures ¦confuſiones, neceſſariũ eſſet ſuperaſſe alios retinentes primitiuam linguam Noe vir ſanctus, & alij pij, qui nõ dederunt opem, aut ſaltim malo fine.

Reſpondetur, quòd illud interpretamentum Ioſephi de oraculo Sibillino inſulſum eſt, & non fuit verum vaticinium, ſed quiſque ex cerebro fingere poterat. Ad confirmationem dico quòd illa, coniectura potius eſt, quam expoſitio, & frigida, & parui ponderis, quòd in ſingulis populis, & linguis fuerint viri tantum duodecim, nam quouis modo fiat ſumma, & confictiatur numerus, ſiue facta ſit diuiſio in 75 linguas, ſiue in 55, pauciſsimi homines eſſent 900 aut 600 conſpirati ad aggredieudum immane illud ædificium in cœlum cum teſte Plinio ad vnã pyramidẽ Egypti, erigendam, & conſtruendam conuenerit 366000.

DVBIVM XI.

An diuiſio communis linguæ facta fuerint in 72. linguas, & fuerint totidem poſteri Iacob, qui ingreſi ſunt in Egyptum?

PRima ſententia aſſerit *in 72. populos diuerſis eſſe gentes poſt diluuium.* Primò ex Patribus Hieronymo, Auguſtino, & alijs, ex tribus filijs Noe 72. gentes, totidemque linguæ per Orbem eſſe cæperunt. Et 72. ex familia Iacob, ingreſſos in Egyptum, tamen complent numerum ex Iacob nepotibus natis in Egypto ex Ioſeph, ſcilicet Ephraim, & Manaſſe.

Concluſio aſſerit *oppoſitum.* Et probatur ex impugnatione, quia non quadrat cantico. Deut. 32. *conſtituit terminos populorum iuxta numerum, filiorum Iſrael.* Secundò, quia protrahit numerum filiorum Iſrael, qui fuit duo denarius ad nepotes, & omnem familiam. Tertiò, quia ille numerus ſiue 72. ſiue 70. fuit filiorum, & nepotum Iacob, non populorum diuiſorum, aut linguarum. Nam Geneſ. 46. dicitur ſic de numero poſterorum

Iacob

Iacob *omnes animæ, quæ ingressæ sunt in Egyptum cum Iacob, &c. 66.* ergo non fuerunt 72. duo filij, & nepotes Iacob. Deindè de numero Iacob cum familia, & Ioseph, qui erant in Egypto, & eius duobus filijs. Filij Ioseph, qui nati sunt ei in terra Egypti animæ duæ. Omnes animæ domus Iacob, quæ ingressæ sunt in Egyptum 70. vbi dicitur omnes animæ domus Iacob. Vbi non ingrediuntur in computum filij, & nepotes Iacob. Nam quamuis computaretur Ioseph, & filij eius Ephraim, & Manasse non essen nisi 69. Iacob domus incluso Iacob continebat 70. viros, iuxta Hieronymum in traditionibus Hebraicis sic 66. animæ cum Iacob sunt ingressæ, & inuenerunt in Egypto 3. animas Ioseph, & duos filios eius, ipse Iacob fuit numero 70. igitur in familia Iacob fuerint 72. adhùc cum Ephraim, & Manasse. Et si sermo sit de posteris Iacob non fuerunt post ipsum nisi 69. Confirmatur, nam id dictum forte sumpta ocasione ex 1. Exodi *erant igitur omnes animæ eorum, quæ egressæ sunt de femore Iacob* 70. Ioseph autem erat in Egypto. Vbi expendi debet poni numerum integrum, rotundum, & completum (more scripturæ) pro 69. 70. in alio exemplo idem capit. 9. Iudic. *filij Ieroal interfecti ab Abimelec dicuntur* 70. & tamen huic numero defuerunt duo, videlicet, Abimelec interfector, & Ionathas minor natu, qui euasit, ita dicuntur 70. posteri Iacob ingressi in Egyptum numero rotundo, & completo, cum essent tantum 69.

Confirmatur ex cap. 7. act. vbi dicitur fuisse 75. quoniam adduntur ad Iacob posteri, qui nati sunt ipso viuente, & Ioseph, vbi extenditur ingressus in Egyptum ad mortem Iacob, & Ioseph, quibus viuentibus nati sunt filij, & nepotes ad illum numerum complendum, vt notauit August. quando scriptura commemorat introitum Iacob in Egyptum in 75. hominibus, totum illud tempus cõprehenditur, quo vixit Ioseph per quem factum sit, vt intrarent. Fuit igitur insignis lapsus dicere familiam Iacob includere 72. addito Ephraim, & Manasse, cum ista additione facta non fuerint posteri nisi 69.

Probatur secunda pars scilicet *non fuisse numerum populorum diuisorum, siue linguarum dispertitarum* 72. nam quamuis Genes. 10. enumerentur 72. viri à quibus diuisæ sunt gentes scilicet ex Iaphet 14. ex Cham 31. ex Sem 27. cum Cainam, qui non numeratur ab Hebræis, & latino, tamen nomina patrum non debuerũt numerari, sed tolli, quia Patres non conficiunt, familiam diuersam à filijs,

lijs, ergo illis demptis, & Cainam superſunt 55. filij à quibus originem habuerunt ſingulæ nationes. Confirmatur fortè non omnes familiæ ſortitæ ſunt linguam diuerſam, nam ex 11. filijs Canaam vndecim familiæ remanentes in Chananea, vſæ fuerunt vna, & ſola lingua Chananea iuxta peritos, nam difficile videtur accidiſſe vni Chananeæ 11. linguas. Vltimò, quia non conſentirent interpretes in numero 72. adhuc numerando Patres, & filios. Alij dicunt 70. alij 73. alij 74. alij 72.

In calce explicari debet ille locus Deut. 32. *Conſtituit terminos populorum iuxta numerum filiorum Iſrael.* Vbi fit memoria beneficij à Deo collati populo Iſraelitico commendanda filijs per traditionem. *Memento dierum antiquorum.* Et ommiſsis, quæ non habent opus concordandi, & æquandi numerum populorũ cum numero filiorum Iſrael. Cur, quæ exponit de Angelis, & quæ exponit de electis, qui dicuntur appellari filios Iſrael. Similiter omiſſa, quæ dicit dictum Hyperbolicè, vt eſſet numerus populorum tantus à Deo conſtitutus, quantus perſonarum in vniuerſo populo Iſraelitico, qui conſtituit tot regiones, in quibus habitarent, quot erant perſonæ in populo Iſrael. Quia hic loquendi modus eſt valde hyperbolicus, quia populi gentium in toto orbe terrarum non æquabat numerunt (penè innumerum) perſonarum filiorum Iſrael, & Gloſſa interlinealis dicit dictum per hyperbolem tot conſtituiſſe populos gentium, quot perſonæ erant in populo Iſrael. Secunda expoſitio Caietani, & aliorum, quod Deus cum diuidebat per obem populos Chananeorum dedit terminos, tam latos, quàm expoſcebat ad excipiendos futuros Iſraelitas, quibus decreuerat donare regionem illam. Tertia expoſitio Ariaſmont. dicit, quod Deus conſtituit terminos populorum Chananeorum in 12. populos iuxta numerum filiorum Iſrael, qui exprimuntur Geneſ. 10. ex Chanaam, & 11. filijs eius incluſo parte fit numerus 12. Vltima expoſitio eſt, quòd Deus conſtituit terminos populorum, ſeu capita populorum, inter quos diuidenda erat terra Chanaam ad 11. populos, & capita iuxta numerum 11. filiorum Iacob, & Chanaam, nam illi fuerunt 11. dempto Patre, qui non debet numerari, quia non conſtituit diuerſam familiam, & populum à filijs, nam licet filij Iacob fuerint 12. Leui non accepit hæreditatem, nec diſtributionem in terra Chanaam, & quamuis Ioſeph ſit ſortitus duas partes manent 11. filij Iſrael. Confirmatur, quia non obſtat huic ex-

positioni nōtari tantùm 7. populi Cananæorum annis posteriorib⁹, nam cum constituit Deus terminos populorum fuerunt 11. & idcirco in diuisione populorum numerari sunt 11. filij Chanaam 11. capita populorum. Et licet non admittamus expositionem 70. & aliorum de Angelis, non cogimur negare constitutos esse tutelares, & pro singulis populis, imò plures pro singulis, non non tamen iuxta numerum populorum.

DVBIVM XII.

Cur Sem commendetur in sacra scriptura ab Heber quinto nepote suo? & quis, & qualis fuerit Heber?

COnclusio, *aptissimè Sem commendatur ab Heber.* Nam qualis ille fuerit fidelis, an infidelis, & idolatra? & an ab illo sit deriba ta nòminis Hebræi denominatio, aut nomenclatio facile in præsenti dedit consensum, & opem in ædifitio Babylonico, fuit seruus Dei non idolatra, & clarus spiritu prophetico. Nam Iosue vltimo dicitur, *Thare pater Abraham, & Nachor seruierunt Dijs alienis*, quod non dicitur de ipso, & cum hos notet, & solos excipere videtur alios maiores à labe infidelitatis. Excelluisse autem dono prophetiæ colligitur, nam multò ante diuisionem linguarum, & regionum, eam præuidit, nam filio imposuit nomen Phaleg eo, quod *in diebus eius diuisa sit terra*, quia nomen eius referri debet ad Phaleg, cui imposuit Pater Heber, & propheticum nomen filio dedit, licet sit discordia in quo tempore vtriusque contigerit diuisio.

Deinde Noe ad tres filios, Sem, Cham, & Iaphet. *Benedictus Dominus Deus Sem, sit Chanaam seruus eius*, eo quòd derisit nuditati parentis Genes. 10. dicitur, de Sem, nati sunt Patre, filiorum, Heber maior Iaphet, non natu, sed sanctitate. Vt dicant quidam fuisse institutorem familiæ religiosæ, & Sem constitui, patrem omnium, qui dicebantur filij Heber ante, & post Abrahæ tempus, & erat tunc illorum supremus Archimandrita, & ita ab Heber virtute insignem commendari eius attauum Sem, cuius fuit Heber nepos quintus.

DV-

DVBIVM XIII.

An ab Heber sint appellati Hebræi eius posteri? & an fuerint eius posteri Chaldæi?

PRima conclusio, *incertum est fuisse vsurpatum nomen, aut ethimologiam Hebræi ab Heber.* Primò, quia ex Heber aliæ nationes deriuatæ etiam hæreditarent nomenclaturam, & non omnes hæreditarunt. Secundò, quoniam nomen Hebræum fuit inauditum quousque Abraham transijt Euphratem, qui antea vocabatur, eratque Chaldæus sicut sui antecessores. Tertiò, quia à Chaldæis duxit originem gens Hebræa, & Heber vixit antequam esset gens Chaldæa, nam Heber dedit exordium Chaldæis, & ita nomen Hebræum non fuit ab Heber sumptum, & eius posteri appellabantur Chaldæi. Non verò Hebræi ante Abraham. cap. 5. Iudit Oloferni dixit Achior de populo Hebræo loquens, *populus iste ex progenie Chaldæorum est.* Quartò, nam PP. vocant Abraham Chaldæum, & Hebræos semen Chaldæum, & de Moyse Clemens Alexan. primò stromat Moyses petita origine exalto, cum esset Chaldæus natus est in Egypto. Quintò, nam quidam dicunt ab Abraham dictos Hebræos, quasi Abræos. quòd displicet, nam Abraham dictus est in scriptura Hebræus Genes. 14. *Vnus qui euaserat nuntiauit Abraham Hebræo*, & ita inde Augustinus retractauit ab Abrahã dictos, & nuncupat eos Hebræos lib. 1. de consensu Euangelistarum.

Secunda conclusio asserit nomen Hebræum dici à radice עָבַר Abar, id est transiuit, quasi gens transiens ex altera parte Euphrates ex Chaldæa, aliàs originem trahens habitans in Chanaam, qui cum peruenit ad Chananæos cœpit vocari, vt extraneus, trans Euphratem, vocari ab ab incolis Hebræis, vt apud nos transmarinos, transalpinos, & non est verisimile, quòd Heber dedit nomen posteritati, & non regioni. Vnde Abrahan cum gente, quę traiecit Euphratrem, & peruenit ad Chananæos cœpit vocari Hebræus cum gente sua, ideſt, quæ ex altera parte fluuij Euphrates, venit ad ibi habitandum in Chanaam.

DVBIVM XIV.

An inuentum litterarum ad scribendum fuierit vtile? & adeo vtile ad scripturam sacram, vt habeatur ex beneficio Dei? & quinam dimanuerint vsum litterarum?

PRima conclusio asserit, *quod inuentum litterarum fuerit admodum vtile, non solum pro vsu diuini oraculi, sed vitæ politicæ.*

Primò ex Platone; cum Tertuliano. Confitebor litteras necessarias, & rebus comertij, & studijs nostris erga Deum. Rupertus lib. 3. de victoria verbi Dei cap. 23. vbi dat Deum authorem primum talis inuenti, vt inde cognoscatur creator plusquam ex cœlo, sole, & luna, signa omnipotentiæ. Hæc signa præterita narrant, præsentia demostrant, futura prænuntiant. Vt opus dignum Deo ipse prior scripsit in tabulis digito suo modo inefabili; & deinde iussit homini scribere. Basil. ad Ambros. epist. 55. miratur inter Dei beneficia absentes loqui per eloquium litterarum. Largitus est duplicē modum cognoscendi Primum per conuictum præsentem. Secundum, per vsum, & consuetudinem litterarum. Diodorus initio Bibliothecæ ait, mirandum præter ista exempla repræsentari, loqui mortuos, tempora elapsa reduci, & deberi multum scriptoribus, qui ostendunt exemplis elapsis, quid appetendum, quid fugiendum ad vitam degendam, & sine periculo experientiæ. Heroum facta discernere ex aduersis, & prosperis, doctrinam sine periculo recipere, & ex aliorum ærratis vitam instruere. Seniorum concilia accepta longa experientia breui suscipere, & iuniores historia, & exemplis instructi, æquare seniores. Deinde historia illustrium virorum alit, & acuit ad egregia facinora ipsorum, qui immortalem gloriam sunt adepti vrgent ad egregia similia, & inseruit non pro vno loco solo, præsentibus, sed pro omnibus in orbem diffusis, & futuris. Deinde quilibet cum absenti amico quasi internuntijs se salutat, & colloquijs mutuis, quasi cum præsenti fabulatur. Deinde inter Reges idoneum inuentum ad ineunda fœdera, & pacta conseruanda. Deinde Dei oracula, conciliorum sententias, Patrum doctrinas præcepta disciplinarum, & res litterarum conseruant, & deinceps æternitati posterorum, commendant (hæc ex Diodoro.) Tertiò, inuentum litterarum adeò vtile, vt sit creditum apud profanos, & Ecclesiasticos authores, vt donum Dei, imò Deus sit creditus inuentor, qui non adepti sunt notitiam, vt Barbari Americani statim obstupuere, ac viderunt litteras, quibus fuit communicatio inter absentes. Denique accidit apud Braienses, quòd cum vellent occidere quendam ex nostris ostendit librum, cœpit legere, & illis minitatus, si accederent prope, illis autem territis, euasit artificio.

Secunda conclusio asserit, *damnasse quæstum inuentum litterarum.* Primò ex Socrate, quòd

cum

cum quidam eorum Rege Egypti rationes pro vtraque partes retulisset. Rex repulit, dicendo, inuentum litterarum non redditurùm homines promptiores ad memoriam, sed negligentiores, quo magis sint fisi in inuéto litterarũ & non reuoluent disciplinas, & ignari sine doctrina, præceptoris & videbũtur, & erunt molestiores nõ præditi sapiétia, sed opinione subornati. Secũdò, ex dicto Aristotelis, aut Platonis apud Strobeum agit de memoria. Si non scribantur, sed ediscantur est conseruatio maxima studiorum, nam fieri non potest, quin excidant scripta nobis, ego nihil scripsi, nec extat opus à Platone conscriptum, nec extabit. Quæ ei tribuuntur sunt illius Socratis pulchri, qui interrogatus ab amicis, quid scribebat, respondit irrisoriè conficio memoriã papiraceam. Vltimo Lacinus Imperator litteras appellauit virus, & pestem publicam, propter damna, quæ ex litteris inuentis oriri solent teste Aurelio &c. Et Sabellicus t. 1. enæadarum dicit. aliquas nationes abstinuisse ab vsu litteras scribendi. Ob id nõ est damnandum inuẽtum eo quòd ista incõmoda ex accidenti consurgunt.

(.)

DVBIVM XV.

An fuerit necessarium & conueniens ab initio scribi scripturam sacram litteris, & caracteribus? & quo idiomate, & caractere primum scribi cœperit? & an à tempore Moysis?

PRimá conclusio asserit quòd; *non fierit necessarium simpliciter*, Primò, nam ab Adam vsque ad Moysem per spatiũ, bis mille annorum, & eo amplius, orbis vniuersus non accepit vllam scripturam sacram, qua regeretur in credendo, aut operando, & sine vlla posset cõsequi salutem. Nam posset Deus singulis reuelare notitiam mediorum ad salutem. Secundò, nam instatu innocentiæ nõ fuit necessaria doctrina reuelata illorum mentibus impressa per per scripta, sed sufficeret aliunde impressa per scripta, sed sufficeret aliunde impressa, quam ex scriptura, per species immediate infusa. Confirmatur, nam quauis post peccatum subrepserit obliuio in mentes hominum in pœnam culpæ, & ad iuuandam infirmitatem, fuerit opus doctrina scripta, tamẽ non fuit simpliciter necessaria ad hùc quoad media necessaria salutis, nam potuit infundi semel per reuelationem, & deindè diffundi viua voce per traditionem, & memoriæ commẽdari, vt homines ad finẽ suum perducerentur, sicut de facto contigisse existimamus.

Secunda conclusio, *licet non fuerit necessarium simpliciter fuit tamen conueniens diuinam scripturam litteris, & caracteribus exarari.* Primò; nam id voluit Deus. In primis, vt prospiceretur fragilitati hominis post peccatum, debilis enim manet memoria, cum parua tenacitate. Et alias ex litteris agnoscitur vtilitas ad finem, & beatitudinẽ, & ita daret lucem, & opem vniuersis præsentibus, & futuris, dum varijs linguis, & idiomatibus, pro omni natione, tempore, & loco scriberetur. Confirmatur, nam licet ad susciepienda dicta à maioribus, & traddita sufficeret memoria, difficile tamen esset ipsam esse expeditam ad tot, & tanta, quæ in libris erant exaranda à Moyse, & alijs scriptoribus. Erat enim orbis ab initio sicut infans, qui domi educatur, & à parente, aut nutrice per traditionem accipit documenta, & doctrinam, à tempore Moysis vsque ad Christum se habuit, vt puer, qui mittitur ad scholam ad litteras addiscendas, à Christo autem ad finem se habet, vt adolescens, qui iam intelligit, & iudicat de re tradita à præceptoribus, & libris, vsquedum crescat in virũ perfectũ, in gloria, & in verbo legat, & intelligat omnia. Secũdò, fuit cõueniens doctrinã reuelatã litteris exarari, vt daretur scripturæ fides firmior, quã voci, nã tũc magis creditur prænuntiatum, quantò magis versatur in præsenti scripto, tunc enim magis quiescit intellectus, & firmius creditò quod audiuit. Tertiò, fuit conueniens, vt fidei, humilitatis, & virtutis meritum, maiora susciperes incrementa, quam si fieret singulis reuelatio. Nam homo humiliatur homini; dũ ab illo discit ignotum, & illi præstat obedientiã, vt discipulus præceptori, filius parenti: & captiuat intellectum doctrinę magistri. Hac ratione Actor? 9. *Mittitur Paulus ad Ananiam* ad Cathechismũ, & 10. *Cornelius ad Petrum*, & 8. *Eunuchus Cãdacis ad Philippũ*. Et similiter ostẽditur Dei suauitas, dum perducit per infima ad summa, dum scripturæ cõmendat veritates. Et supernaturalia per se infundit, fidem spem charitatem, &c. Vltimo, vt ex illa, vt regula certissima probarentur, aut reprobarentur quæ cum illa non coherent, vt falsi sensus, suspectæ reuelationes. Nam pro modulo susciptiẽtis, percipitur, in vno sensu reuelatio; ac percipi deberet in re vera. Vt illa Ioann. 11. *expedit vt vnus homo moriatur, ne tota gẽs pereat*, quã Caiphas intellexit in ordine ad mortem Christi, cum illius legitimus sensus, esset de Christo, in omnium spritualem salutem.

Tertia conclusio, *Idiomate Hebræo primũ scribi cæpit sacra scriptura veteris testamenti à tempore Moysis, noui verò in græca, & hebraica.* Ex parte Serar. ibid. q. 3. Euseb. ibidẽ lib. 6. c. 2, Rua, & alij. Primò, quia Moysses scripsit legẽ & historias Hebræis, & congruebat

bat, scribere idiomate Hebræo illis noto. Secundò, nam ex sermone Hæbreo fuit traslata in Chaldæũ nõ contra, in captiuitate Babilonica. Tertiò, nam licet Philo Iudæus in lib. de vita Moysis dixerit, legẽ Dei ab initio scriptam in lingua Chaldæa, & diuturnauit longo tempore in ea, non vrget. Nam solet responderi, quòd Hebræi duxerint originẽ ab Abraham chaldæo, qui transmisit linguã ad Moysẽ, & late loquitur, notando, & appellando Hebræã chaldaicam, eo quod Hæbrai fuerunt quondam chaldæi. Deinde quia illæ linguæ discrepãt non substantialiter, sed accidẽtaliter. Deinde nam græcis erat notius nomen Chaldeũ, quam Hæbrẽum, ni dici posit, cum Rabi Azaria ignorasse vtramque linguam, & confudisse vnã cũ alia. Vltimo nam si admitatur sententia, quòd liber Iob, sit tribuẽdus Moysi, vt authori, facile tollitur primatum a lingua Arabria, aut idumẽa, in qua dicunt quidã Iob exarasse librum suum, & defferre Hebraicæ, inqua alij, exarasse Moysem, nisi vellis vti latiori acceptione, qua Hebræa comprehedit similes, & affines iuxta Serar. ibidem quæstiunc. 3. Probari ꝓtest altera pars de novo testamento ex PP. Ireneo, & alijs apud Ser. ibidẽ, qui docet S. Matthæi euangel. Hebraica fuisse conscriptum.

Colligitur, non habuisse initiũ ab Arabica, aut idumæa in qua dicunt Iob scripsisse Primò, nam historiam illam suotitulo inscriptam solet imputari, & tribui Moysi vt authori, dicũt, de quo statim.

DVBIVM XVI.

An lingua Hebræa fuerit amissa Israelitis in Egypto.

COnclusio asserit, quòd, *in seruitute Egypti fuit valde corrupta, & fere omnino amissa.* Ita qui dicunt solùm esse vsos idiomate Egyptio. Primò, nam huius est multiplex coniectura, nam si postea, in Babilonica amisserunt Iudæi liguamHebræam, ex commercio cũ illis, ergo potiori ratione, vidẽtur obliti in Egypto, antecedens probatur, nã ibi vsi sunt nõ Hebraica sed Chaldaica, adeò, vt non intelligerent posteri verba Hebraica post captiuitatẽ, sed Esdras exponebat syriace cum, magna lætitia populi, & ita verisimile idem contingisse in Egypto, & potiori ratione, quia seruitus Egypti durauit 215. annis, in oppressione 144. captiuitas verò Babilionis durauit 70. annis. Confirmatur, nam ad Babiloniam ducti sunt Iudæi, vtentes lingua Hebræa in sua puritate, & integritate, in Egypto autẽ declinante, & degenerãte dialecto per 200, annos. Confirmatur, nam Tyrannis Babilonica minus molestabat Iudæos quàm Egyptia, adeò prolixa oppressio, vt in scriptura appelletur Fornax ferrea. Deute. 4. & 3. Re-

gum.4. in Babilonica autem dabatur tempus & locus ſtudijs,& coloquutionibus priuatis & vſui ſacrarum ſ litterarum, & Bibl'ia non ſunt omnino extincta,cuius rei cauſa veriſimile eſt retinuiſſe propriam dialectum. InEgypto verò non fuit vſus libri Alphabetarij,nec ſacri voluminis,quo ſeruaret incorruptas voces,ſed vndiq; labor,& afflictio.Confir.nam in Babilonia Iudæi non hauſerunt mores, & falſam idolatriam, ſed erant ſeparati à vulgo Babilonico, & nihilominus reliquerunt propriam linguam. In Egyptio verò hauſerunt mores Egyptios religionẽ, & idolatriam, iuxta Ioſue 24. Ezechiel. 23. ſub metaphora fornicandi in terra Egypti nam nomine fornicationis ſolet ſignari idolatria. Et ita facile indeſerto adorauerunt 'Apim Deum Egyptiorum, in vitulo. Amor enim illorum fecit, vt eſſet memoria, obſeruata, & obliuiſcerent Dei patrum ſuorum Abraham &c.& propriæ linguæ,quod voluit corrigi Deus legatione data Moyſi. *Hæc dices filijs Iſrael,Deus Patrum veſtrorum* &c. Vt auocaret à ritibus, & idolatria Egyptiorũ, ex ratione religionis acurate memorata, quæ iubat ad tuendam religionem, & linguam anteceſſorum. Sicut accidit reliquijs Maurorũ inter Hiſpanos,& ita non mirum reliquiſſe linguam,qui reliquerunt religionem,& ita eſt veriſimile in Egypto reliquiſſe religionẽ auitã & loquutionem patriam in tot annis ſeruitutis,imo in pœnam idolatriæ, vt apte Abulenſ. imo ex mutuo commertio etiam Egyptij ſuſceperunt circũciſionem iuxta Ieremiæ. 9. & ideo non mirum Hebræos in Egypto non retinuiſſe linguam Hebræam à diuiſione retentã. Sextò,nam in Egyptũ ingreſſa eſt parua familia Iacob ad 66.animas,quæ facile cederet linguę maiorum, in Babilonia verò ducta eſt captiua ingens multitudo, quę facile poſſet conſeruare patrium eloquium, & ipſi Hebrei, habitabant aliàs per mixti Egyptijs & fœminis Hebræis parturiẽtibus,aſsiſtebant,& opilabantur obſtentrices Egyptiæ & ars iſta obſtetricandi non patitur moras & ob id ſimul habitabant,quod etiam ſuadet illud Exod. 11. Quod *poſtulabit mulier a vicina ſua vaſſa*, &c. Et ita in eadem vicina cohabitabant. Quod admitit Philo, imo ita indiſcrete,quod nec habitu eſſent diſtinctæ vſi quo iuſsit Pharao diuerſa veſte ſecerni,iuxta Eupolemum,imo non ſolùm vicini erant ſed conturbernales iuxta Exodi 12. *A vicina ſua & ab hoſpita ſua.* Hac de cauſa ſunt ſignare domõs Hebræas in occaſsione primogenitorum conſperſione ſanguinis Exod. 12. vt ſcirent quanto miraculo diuidat Dominus

nus Egyptios, & Israel. Exod. 11. Quod illis clamantibus apud Israelitas permixtos non mutiat canis. Nec obstat quòd si poster domus essent intincti sanguine vbi in vicinia erant permixti, & in eadem domo quòd in ea non esset occisa primogenita Egyptia, nam forte accidit, quòd in communi domo solùm essent aspersi postes domicilij, & habitationis priuatæ.

DVBIVM XVII.

An Moyses acceperit dono linguam Hebraicam.

COnclusio est *affirmatiua*. Primo quia non didicit in pueritia, nam fuit educatus in aula regia Regis Egypti, & habitus vt filius Principissæ: & in aula nemo loquebatur hebraica, & dum a nutrice lactaretur non fuit tempus discendi, quia brebi fuit traductus in aulam regiam. Iuxta Philonem in eius vita. Quod filia Pharaonis Thermutim fixit se grauidã, & vt deciperet Patrem suppossuit Moysem natum filium, & ita nepos tanti Regis, nõ permitteretur diu manere apud nutricem Hebręam, & minus apud veram, matrem quo esset tempus opportunum instruendi lingua Hebręa, & Hebręis Pharao ita erat infensus, quòd id non pateretur sed quidquid sit de historia Philonis, certũ est non diu mansisse cum nutrice. Nam Actor. 7. dicitur sustulit eum filia Pharaonis, & nutriuit in filium *& eruditus est Moyses omni sapientia Egyptiorum* vt traductus in palatium esset traditus præceptoribus. Et dato quòd in domo matris aut nutricis didicisset linguam Hebream, translatus in palatium non egit cum Hebræis vsque ad annum 40. iuxta Act. 7. cum impleretur ei tempus 40. annorum *ascendit in cor eius, vt visitaret fatres suos filios, Israel.* Deinde exul in Madiam alios annos 40 fuit sine vsu linguæ Hebraicæ, & homo 80 sine occasione loquendi hebraice posset obliuisci, licet didicisset quim obstet fuisse tenacissimæ memoriæ, nam cum tenacitate oblitus est linguæ Egyptiæ in Madiam cui erat assuetus in Egypto per tot annos. Et id colligitur a multis ex illis. *Non sum eloquens ab hari, & nudius tertius, ex quo locutus es ad seruum tuum* impeditioris sum linguæ. Et hoc vitium linguæ referunt quidam eo quòd esset oblitus linguæ Egyptiæ illis annis. 40. quibus vixit in Madiam. Et timebat ne in legatione proferet impolite, & ineleganter ad Pharaonem Regem Egypti, ad quem mit-

te

tebatur tardioris linguæ fuisse ad loquendum lingua Egyptia, cuius fuit oblitus, & permixtus lingua Madianitica, is legatus est necessarium ad Regem, qui Egyptia lingua, & eloquio sit eloquens, ego sum linguæ Barbarę Madianiticæ. Et non obstat, quod vocet se Moyses Exod. 6. incircuncisum labijs, quia sic poterat re appellare, propter rationes iam dictas, quia vix poterat loqui intelligibiliter lingua Egyptia, iam ferè totaliter oblita, & valde permixta vocibus rudibus Madianitis. Sed dato quod Moyses, esset tardiloquus, & balbutiens iuxta interpretamentum aliquorũ nequit negari quòd non, esset ineloquens in lingua Egyptia. Quia in absentia ab Egypto ex obliuione, & omissione exercitamenti passurus erat exidium, ergo multo magis linguæ Hebraicæ licet illam didicisset in pueritia, sed sic est quod statim post exitum Egypti composuit illud canticum Hebraicè compositus forte in Madiam libros Hebraicos, stilo purissimo, & cum etymologijs plurium nominum quod requirit peritiam linguæ est ergo verisimile quòd tempore quo fuit in Madian deditus cõtemplationi, & forte reuelatione sibi facta in Egypto, quòd deputatus esset à Deo dux, & liberator Hebræorum ad perducendos eos in terram promissam Chanaam, accipisse á Deo reuelationem totius libri Genes. & maiorum suorũ parentum, & dialecti Hebraicæ, vt scriberet illas historias lingua Hebraica, pro vsu populi sui Israelitici Hebraici, & caractere Hebraico.

VBIVM XVIII.

An ars scriptoria sit reuelata Moysi ad exarandam caracteribus sacram Scripturam, sicut ars fabrilis Beseleel ad fabricandas effigies hyeroglificas tabernaculi?

Conclusio est *affirmatiua*. Primò, nam licet Deus per prælocuia, & apparatus ipsarum rerum naturalium, vt per præambula dederit instrumenta faciæ Scripturæ per media rudimenta, voluit signis, & caracteribus politioribus scripturam exarari, signis scilicet artificialibus, quarum ipse primus inuentor, & author, infundendo Moysi seruo suo, artem scriptoriam, peritiam, & inuentum nouum, quod forte mundus ignorabat. Confir. ex Exod. 31 vbi dicitur, quòd Deus infudit Beseleel sapientiã ad facienda cuncta in arca testimonij, propitiatorio, & vasis tabernaculi, & tabernaculo fœderis, & ita non mirum simili prouidentia, fuisse vsum indicando Moysi artem litterariam alphabeti notis composi tam, vt diuinam doctrinam exararet, & sacra Scriptura, esset liber primus in orbe. Secundò, nam

libri

libri sacri appellantur scriptura eo quòd ars scriptorin in ea initium operata, & exequuta est. Probari debet. Primò, ex testimonijs. Secundò, ex inditijs. Tertiò, ex cõgruentijs. Quartò, ex eo quòd nil sit contra efficax &. Quintò, ex eo quòd cum ista sententia plura alia constant. Primùm, ex authoritatibus. Rupert. lib. 3. de Victoria verbi c. 21. & 22. Deus ipse litteras ipsas elementorum figuras primus conscripsit, & ei tradidit, scilicet Moysi, qui primus meruit scribere ex omnibus hominibus, & statim quòd Deus per semet ipsum ostenderet homini in vna lingua, scilicet Hebræa. Et c. 23. in tabulis opere suo, scripturam suam scripsit, & homini in libro scribere iussit idem 24. 25. littera data Moysi fecerunt viam multitudini ad intelligendum, & percipiendum Verbum Dei, & ita decuit Deum esse primum litterarum inuentorem, & authorem. Eupilemus in libro, de Regibus Iudæe, Moysem primùm tradidisse litteras Iudæis, & ab illis accepisse Fenices, & ab illis Græcos. Idem Artapanus in Hist. loquens de Moyse apud Clementem Alexand. 1. Stomat. Idem Euseb. Cesar. 9. de præparatione Euangelica, & plurim autiqui apud Euseb. lib. 1. cap. 10. & 2. cap. 1. præcitatum, equi faciunt Moysem authorem litterarum post Deum, illum subintelligẽtes, sub pluribus nominibus Mercurius, &c. Denique plures ex recent. Cornel. Agripp. Girald. Marian. in præfatione in Genes. inueniisse miraculo primas litteras, notas prolationis notis 22. litterarum, comprehendentes voces omnes innumeras. Otho in Chaldaico quod Moyses solus, & primus accepisset à Deo tabulas nouis lineamentis litterarum exornatas, & alphabetarias litteras, & ante hoc tempus in sacra Scriptura, non esse mentionem litterarum, & ipse eas hominibus rudibus antiquitatis. & historiarum dictus est inuenisse. Cyrill. Alex. lib. 7. aduer. Iulian. tradit Moysem primum grammaticę Hebraicæ authorem. Denique August. lib. 18. de ciuitate fuisse, qui affirment, *à lege cæpisse litteras Hebræas, quæ data est per Moysem.* Demque Asiriæ litteræ solent vocari Hebręæ, & Asirij Hebræi ab antiquis, qui imputant inuentum litterarum origini Hebræe, quæ solet denotari, his nominibus Asiria, Syria, Fenix, Chananæa, quia Hebræi illius plagas habitarunt, vt fœniceas, & Hebręas penè easdem litteras appellent. Apud Hethnicos litteræ Asiriæ appellantur Hebraicæ, & sacræ, vt Themistius oratione 5. alludens ad Prouerb. 21. *Cor Regis in manu Domini*, &c. ex Græco in Latinum. Huic Asiriorum sententiæ, fidem addit, quæ cor Regis merito dicit in Dei manu custodiri. Necesse est, enim vt qui hasce litteras facile scribit ex ea

manu

manu veniat, quæ largitur vitam omnibus perpetuo. Et in oratione 9. fatetur inuenisse idem dictum in libris Asiriorum, ex greco in latinum. Sic ego animadverti hoc ipsum litteris, asiriorum prodirum, Regis animum in manu Dei custodiri. Hæc Themistius qui intelligit per litteras Asiriorum sacrã scripturam Hebrçorũ, & assirios vocat Hebræos. Et verba citata a Themistio non inueniuntur in græco, ex quo potuerunt hauriri. Nam apud. 70. sic. *Sicut impetus aquæ, ita cor Regis in manu Dei, quocumque vtique volens annuere inclinabit illud.* 70. verò legentes in manu Dei differunt à Themistio vtente voce palmæ, quæ in palmis portantur in prætio habentur. Et faboris est vox, apud Græcos, & Latinos. Themistius ergo in palma Dei dicit custodiri cor Regis, vt satellitio, 70. verò aliter, & est diuersa sententia. Comparant Regis voluntatẽ cum flumine. Iuxta metaphoram Eccles. 4. Contra ictum fluuij indignationẽ Principis cohibere manu Dei. Denique Themistius in dicto proberuio adhùc non concordat cum nostra vulgata quę habet sic. *Sicut diuisiones aquarum, ita cor Regis in manu Domini* quocumque voluerit inclinabit illud. Est aptissima similitudo. Nam sicut in manu hortulani est ducere fluenta aquarum, per hos aut illos alueos ad istam, vel illam aream irrigandam, ita Regis voluntas, faborabilis diuina manu post inclinari ad benefaciendum huic, aut illi.

Secundò Probatur ex inditijs, quibus indicatur a Moyse inuentas litteras ex Diodoro. Quj excusat Regum gesta non esse mandata æternitati, quia non erant iuuentæ primæ litteræ ante primos reges. Nam sicut vsus litterarum haberemus illas historias & historia cępit cum inuentæ fuerunt litteræ Alphabętariæ. Et Eusebius lib. 8. probat, quòd Moyses fuit ante omnes scriptores. S. Iustinus in exhortatione ad gent. Quòd Moysis historia præcesit omnibus, quam ille scripsit litteris Hæbraicis spiritu diuino afflatus & fuit ante grecas litteras. Inspirato artificio litterum alphabetarum. Idem Diodorus siculus. Quod Moyses fertur primus tradedisse legas scriptas, & si litterarum vsus fuisset ante ipsum, illius scripta nõ haberẽt istam gloriam primatus cœteris. Ex Iustino, Cyrilo Alex. Et alijs. *Mosaicam historiam esse omnibus antiquiorem.* Illas scripsit diuino spiritu affectus litteris Hebraicis, neque enim erant græce litteræ nec formabolum pro insertione litterarum. Prodi memoriæ Moysem fuisse primum; qui legibus scriptis vsus fuerit. Aliud indicium sumitur, quòd indicatur in aliquibus locis, Pentatheuci. Cõstituisse Moysem litterarum introductores, & præceptores c. 18. in græ

co

co, & Deut. 16. 21. & 31. Quale fuerit horum hominum genus iudicat Augustinus lib. 18. de Ciuitate Moyses in populo Dei constituit, qui docendis litteris præessent priusquam diuinæ legis vllus litteras nosset. Et Ioseph, lib. 2. contra Apionem Moysem inter cætera curam habuisse, litteris erudiri suos. Moyses enim habebat tunc opus coadiutoribus, vt introduceretur inuentum scribendi in omnem multitudinẽ. Aliud inditium sumitur ex ratione, qua vsus est Cæsariensis lib. 10. c. 2. Quòd litteræ Hebrææ, sunt primæ eo quòd significatiuę, sunt illę solę, & ab Hebręis, Grę cas appellationem accepisse ab Aleph. Græci Alpha, à Beth Græci vita, à Gimel, Gama, à Dalet, Delta, à Zain, Græci Zeta, & sic de alijs. Ab Adamo autem non fuit institutum alphabetum Hebræum, nam plurns litteræ signant res arte postea inuentas, & eleboratas, quibus Adam, non potuit ponere significationem, vt Dalet portam, Zain clauam, Tsade venabulum. Et si Henoch, Abraham, aut alij inuentum litterarũ, & caracterum inuenisset meminisset Moyses, & ab inuento commendaret authorem. vt aliorum artis ferrariæ, agriculturæ Musicæ, &c. Tubal primum Cytaristam, Cain architectum, fundatorem ciuitatis Noe agricolam Tubal Cain, Fabrum Ferrarium &c., nõ obstãte, quòd ipse esset inuentor præ modestia suppressit silentio, potius errata promulgaret, vt Matthæus de se c. 9. *Hominem sedentem in telonio Matthæum nomine*, ita Moyses se inuentorem silentio possuit, sicut alia sua facinora. Vt cum repulit diadema Regiũ, quod Apostolus cũ alijs egregijs ibi commendauit. Aliud indicium summitur, ex eo quòd libri, qui ante Moysem fuerunt apud Egyptios, & littera Dalet signatur plenitudo librorum iuxta Euseb. Cesar. ibidem, non erant exarati alphabetarijs litteris, sed Hieroglificis figuris, pro rudibus, vt leone fortitudinẽ, equo liberalitatẽ, vulpe callliditatem, &c. & ita fuisse hoc genus librorum ante inuentum litterarum Hebraicarum, non obstat institutio, licet postea pro ingeniosis sint alphabetariæ. Nam si Alphabetum Hebræum præcessissent libri caracteribus insigniti, non probaretur primatus Hebræi. Aliud inditium summitur ex eo quòd Egyptij omnium cultissimi, & sapientissimi Sacerdotes ignorarunt legere nomen Dei in tabula scriptum à Moyse teste Euseb. lib. de Præparatione Euangelica, quòd si ante diluuiũ extitere ab Adam, aut Enoch. vniuersi inundatione perisse forte & Moysem, deinde adinuenisse. Nec obstat, quòd gens Hebræa potuit retinere in captiuitate vsum litterarum in Egypto, nam certe amissæ, sicut, & in Babylonica, & Moysi restituta ad scribendum li-

libros sacros ex quibus constat pro 4. fundamento scilicet, nil esse pro parte opposita obiectum efficax. Vltimò ex congruentijs, nam fuit congruum, vt Moysi reuelarentur ad exarandam diuinã doctrinam, & ad id instituendum erat nouum, & optimum scribendi genus quòd facilius, clarius, certius, vniuersalius, vt decebat doctrinam, ex qua fides, & religio pendet, & ad id patratum esse hoc miraculum. Cùm Dei verba esset impossibile scribi literis, & figuris Hieroglificis, iuxta Rupert. lib. 3. de Victoria Verbi Dei & 25. cap. *Litteræ datæ confestim viam fecerunt multitudini ad percipiendum Verbum Dei*, & ita opportuit litteris huiusmodi diuinam doctrinam, & scriptis tradi. Nam *scriptura* iuxta B. Maximũ *est oblitionis medicamentum, & memoriæ auxilium.* Et ad tot mysteria aliæ columnæ, aut piramides essent angustissimæ. Moysi igitur dedit iuxta Chrisost. homil. 1. in Genes. Deus abinitio per se ipsum adhoc nines loquebatur. Deinde, quasi absentib' litteras mittit, quas attulit Moyses ad conciliandam hominum amititiam. Iuxta quòd S. Odo. lib. 1. collat. per scripturas velut per Epistolas longe positos reuocans.

DVBIVM XIX.

An sit diuinitus restituta Moysi lingua Hebraa amissa Israelitis in Egypto ad instruendum populum lingua, & caractere Hebraico?

Conclusio est *affirmatiua, fuisse ante exitum Israel de Egypto, prope ante restitutam Moysi, vt libros sacros exararet.* Primò ex Psal. 80. *cùm exiret de terra Egypti linguam quam non nouerat audiuit.* Primùm *interpretamentum est*, quòd Ioseph cum ingrederetur in Egyptum audiuit loqui dialectum Egyptium, quam ipse non nouerat.

Impugnatur. Nã infert vim textui nam non dicit cùm ingrederetur, sed cũ exiret. Secundò, nã non loquitur de sola persona Ioseph. sed de vniuerso populo Israeliticõ. Constat ex antecedentibus, & consequentibus, quòd præceptum in Israel est, impositũ autem fuit celebrandi Neomeniam populo Israel, non personæ Ioseph aut Iacob, sed post obitum eorum, & nomine Iacob, & Ioseph, solet notari in scriptura populus Israeliticus 2. Reg. cap. 9. *veni de omni domo Ioseph.* Vbi nomine Ioseph intelligitur Israel. Psalm. 79. accipitur Ioseph pro toto Israel, *Qui regis Israel intende qui deducis velut ouem Ioseph.* Et statim. Remisisti in brachio tuo populum tuũ filios

filios Iacob, & Ioseph. Israelitæ autem aptè dicuntur filij Iacob, & Ioseph. Quia Ioseph fuit veluti pater in Egypto fratrum suorum, & Israelitarum, & etiam qui fuit parter duarum tribuum, imò multorum Israelitarum, qui descenderunt ex fratibus Ephraim, & Manasse antequam autem posteri, scilicet Ephraimitæ possiderent Regnum Israel, & post diuisionem à Iuda Israel, à Prophetis sepius vocatur Regnũ Israelis, nomine Ioseph, quoniã ex tribu Ephraim filio Ioseph. orti sunt reges Israelitici, & ita Campensis vertit, posteris Ioseph. Et ita non de ingressu personæ Ioseph in Egyptum interpretandum, sed de toto Israel cũ egrederetur in exitu de Egypto licet verum sit, quòd cum Iacob descendit in Egyptũ ex terra Chanaam audiuit linguam Egyptiam quam non nouerat, nec intellexerat.

Secunda *interpretatio* est. De toto Israel in exitu ex Egypto cùm ingrederetur in terram Chanaam.

Impugnatur. Nam quid inde mirandum, vt eius rei fieret commemoratio, quòd non sciret linguam Chananæorũ, quos iussus fuit deuastare, & nec communicare cum eis. Secundò ad institutum Ps. nil referebat ignorantia linguæ Chananææ, nam vbi fiebat mentio insignis beneficij à Deo collati, non erat beneficium ignorantia linguæ Chananææ.

Tertia *expositio est*. Quòd Israel cum exiret de terra Egypti à Deo audiuit immediate loquutione idioma, quòd non nouerat.

Quarta *verior*. Quòd audiuit, non solum exterius, sed interius intellexit linguam Hebræam cuius iam obliti, & immemores in longeuitate tot annorum seruitutis, hoc enim est benificium commemoratum in hoc Psalmo. vbi etiam *audiuit*, non solùm debet referri ad auditum externum, sed ad internum, & intellectualem, nam in scriptura sæpe sumitur audire pro intelligere Genes. 11. *Confundamus linguam, vt non audiat quisquam vocem proximi sui*. Vbi audire sumitur pro intelligere idioma, aut dialectum. Nam in confusione audiebantur voces, sed non intelligebantur Isaiæ 36. & ita transtulit Chaldæus apte, didici, & audiui, vt significaret auditionem externam, & interiorem intellectualem percipiendi.

Secundò probatur ex PP. Theodoreto in Ps. 80. & alijs à quibus abstineo penuria tẽporis coactus.

Tertiò, nam Moyses erat cõmendaturus litteris sacram Scripturam, & decẽs fuit scribi in lingua omniũ primate, propter dignitatẽ, vt ratio nominũ primorum virorum nobis constaret, quòd non alia lingua facile faciendum.

Quir-

Quartà, quiá oportuit linguam amissam in pœnam amissæ religionis, & cultum veri Dei ex commertio cùm Egyptijs restitui, cum iam separabantur à populo Barbaro, & resumebant veram religionem, & à Deo acceptabãtur in gentem sanctam. Iuxta illud, *in exitu Israel de Egypto domus Iacob de populo Barbaro*, idem sapientiæ 8 Deut. 32. *inueni eum in terra deserta, in loco horroris*, &c. quippe post exitum elegit eos in deserto in populum, sibi gentem sanctam, & in sui potestatem & in regnum speciale, & in Sacerdotium. In Egypto fuit populus Pharaonis, & ipsorum ille Rex. Deus autem eduxit de potestate Regis, & assumpsit eos in regnum sibi, distinctum ab Egyptijs. In constitutione autem populi segregati ab Egyptio diuersitas linguæ est aptissima qualitas, & conditio ad diuortium adstruendum diuersitate dialecti, & loquutionis, & ad id restituit Israelitis linguã amissam, iuxta August. lib. 19. de ciuitate cap. 7. nam diuersitas linguæ, alienat hominem ab homine, sicut vnitas vnit, & cõsociat, & ita Romani, vt vnum conficerent populum ex multis constituerunt vnitatem linguæ, vt vna esset omniũ lingua, quòd vnus est specialis Deus. Et ita in die Pentecostes discipulis data est omnis lingua, quia Deus omnes populos recipiebat in gentẽ suã. Quod prefiguratum est vnius linguæ dono in monte Sinã. Quintò, nã Moyses edoctus est diuinitus lingua Hebræa, & idem censeri debet accidisse omni populo, imò infantibus, & mutis in exitu de Egypto miraculosse. Iuxta dictum Psalm. 80. cùm exiret de Egypto populus Israel, *linguam, quam non nouerat audiuit*, licet Moyses, omisserit narrare, hæc, & alia miracula, quæ acciderunt in exitu.

Vltimò ex dub. sequenti, vbi inquiritur. An canticum Moysis fuerit inspiratum Israelitis omnibus adhuc infantibus, & mutis? & an negari, possit accidisse miraculus in cantico simultaneo? vbi ex cõclusionis affirmatiuæ fundamentis, etiam proposita est vlterius probanda.

DVBIVM. XX.

An canticum Moysis fuerit inspiratum Israelitis omnibus adhuc infantibus, & mutis? & an negari possit accidisse miraculum in cantico simultaneo?

COnclusio affirmat *fuisse inspiratum adhùc infantibus, & mutis, & negari non posse accidisse miraculum in cantico simultaneo.* Primò ex sapientiæ 10. *Decantauerunt Domine nomen sanctum tuum, &c. quoniam sapientia aperuit os mutuum, & linguas infantium, fecit differtas*, vbi commendatur miraculum post transitum maris rubi

bi creditur enim inspiratum Moysi, & Israelitis, adhuc infantibus & mutis. Quo circa expendendũ. Primò fuisse tot millibus hominũ inspiratum, vt simul pariter pronuntiarent illud canticum. Secundò infantes, & mutos solutos lingua ad illud canticũ inspiratũ. Sic Augustinus lib. de mirabilib. sacræ scripturæ. c 21 accidit dignũ miraculũ, &c. Deus facilè potuit in tot simul 600000. hominum, & innumeris fœminis pariter vniformitate inspirationis hymnum afflare. Sicut tribus pueris in fornace Babylonis, & Sauli cum Prophetis, *& insiluit super eum*, & multis alijs sicut, & Moysi accidit, & Iosue pari spiritu afflati illud carmen, *audire cœli*. Et ita creditur, quòd qui linguarum infantium fecit diuersas instruxisse lingua Hebraica, vt cum alijs edoctis in illa simul canerent, licet in illa multitudine promiscua Exod 12. plurimi essent Egyptij, qui adhæserunt Hebræis omnino ignorantes illius dialecti. Sicut & plurimi alij nati, & nutriti in remotis, & ita non mirum inspiratam linguam Hebræam, si infantibus, si mutis, si pluribus, si singulis, & omnibus ignorantibus.

Argui potest, quòd nulli essent muti ex Psalm. 104. *Non erat in tribubus eorum infirmus*. Respõd. distinctione, infirmitate impediente iter concedo, non impediente vt ista mutuitate nego, sicut accidit Zachariæ muto Patri Baptistæ in initio scribendi nomen filij, & in fine loquax. Et ita Deus ex ore infantum perfecit laudem, sicut & Christo ingredienti Hierusalem Matthæi 21. infantes, & lactantes miraculosè clamarunt osana. Qui si tacuissent lapides clamassent, Lucæ 19.

Arguitur secundò, nam illud sapientiæ 10. *De cantauerunt, &c.* debet intelligi figuratè, non pro infantibus, & mutis, cum quibus illud miraculum fuisset patratum, sed pro ipsis Israelitis, qui ex metu Egyptiorum ausi, nõ sunt dicere Deo canticum, sed se habuerunt, vt muti, & infantes donec experti sunt euasionem, & Pharaonem cum exercitu submersum in aquis. Tunc ausi sunt loqui excuso pauore, ac si primo facultas loquendi, esset restituta vsque tunc infantibus, & mutis.

Respondetur in Egypto ceciniisse hymnum ipsa nocte occisionis primogenitosum, & ita in eo egre verificatur fuisse infantes, & mutos, ita vt post transitum lingua solueretur timore. Secundo, si sapientis sententia esset recipiẽda figuratè, melius esset dicere infantes, & mutos ratione ignorantiæ dialecti Hebræę, in qua nescij fuere, vt infantes, & muti. Post transitum verò edocti, idioma Hebræorum. Tertiò, negari nequit aliquid miran-

dũ accidiſſe in illo concẽtu. Nã dicitur, quòd ſapientia aperuit os mutum, ſcilicet Dei virtus, & diuinus afflatus, non facultas humana. Inter miracula ſapiens enumerat huius carminis concentum, ſicut columnę ducatum. Et ita fuit canticum vniuocum miraculoſum, & nequit aſsignari commoda, niſi in dicta infuſsione. Nam dicere, quòd Moyſes compoſſuit canticum, & dedit canendum, poſtquam eſſent ſtudio inſtructi, non quadrat. Primò, quia non diceretur, quod ſapientia Dei fecit diſſertam linguam infantium, & apperuit os mutum. Deinde quia non poſuit tam brebi, cùm fortè adhuc litteræ non eſſent introductæ ſatis. Ad quod Moyſes deſignauit decanos, ſeu præceptores iuxta 70. tam innumerabilis multitudo diſcere canticum, & non erat copia tranſcribendi exemplaria ſufficientia pro introducenda illa vniuerſitate innumera. Præſertim ruſticorum hominum, & fœminarum, qui addicti, & ocupati erant ſeruilibus, & ruſticanis operationibus, vt in oppreſsione vixcet vllus, qui ſcribere, aut legere diciſſet.

(.§.)

DVBIVM XXI.

An prima Scriptura fuerit nomen Domini? An tabulæ decalogi? vt litteræ alphabetariæ initium habuerint in lege tabularum?

Concluſio aſſerit, *quòd primò ſcriptum à Moyſe fuerit nomen Domini, & ab illo initium habuiſſe litteras alphabetarias, & ita non fuit prima ſcripturæ tabulæ decalogi.* Probatur prima pars ex PP. Clement. Cyrill. Alexand. Euſeb. Ceſar. qui referunt ex Artapano ſcriptore antiquiſsimo miraculum, quòd Moyſes incarceratus eo, quòd petebat à Rege Egypti libertatem populi, quòd cuſtodes ſint mortui, & fores apertæ, & ſimiliter omnes palatij vſque ad Regem, à quo rogatus, quodnam eſſet nomen Domini à quo mittebatur. Cum Moyſes in aure dixiſſet, audientem cecidiſſe mortuum, & à Moyſe fuiſſe ſuſcitatum, & ſcripſiſſe nomen Dei in tabula, & Sacerdotes irridentes expiraſſe paſtmo, &c. nihilominus ante iſtud tempus inuenit Moyſes litteras, & aliquid ſcripſit, & fortè Geneſ. Secundò, nam dici poteſt, quòd primò ſcripſit nomen Domini, vel in fronte, vt apud debotos nomen Ieſu, vel in priori clauſula. Nam ſi Geneſ. ſuit primus liber librorum inſpici debet, quæ ſit prima vox totius ſcripturæ

turæ, an sit, quæ primo loco ponitur, & deducitur à ראש id est capud, seu principiũ. An prima vox sit Elohim, & asseri potest, nam sine Deo intelligi non potest quis sensus conficiatur. Nam siue dixeris creauit, siue in principio, siue cœlum, & terram, non intelligitur vlla veritas, nisi adiungatur, aut præponatur illa vox Deus. Nam adhuc in grammatica in quauis oratione inquiritur nomen, quod antecedit verbum actiuum, explicitè, aut implicitè. Et ita nomen Dei in dicta scriptura cõstitui potest, vt prima vox. Nam Deus regit, mouet, & sustinet omnia. Sicut in ipso viuimus, mouemur, & sumus, &c. & sine quo nil formatur, nomen, verbum, aut apprehenditur veritas. Iuxta Psalm. 118. *Principium verborum tuorum veritas.* Et iuxta lectionẽ Hebræam caput verbitui veritas ראש דברך אמת Rorsc deuareca emet. Vbi non mirandum, quòd capud, & principiũ, & veritas conueniant. Cum à radice אמן aman signet educationem, nutritium, fortem, fidelis à qua fluit veritas, qualis est prima, sine qua nil verum, quę à Patre processit æternaliter, & à terra virginali temporaliter. Psalm. 84. *veritas de terra orta est.* Et in 70. incœpit Genesis nomine Deus. Qui est vnus locus ex tredecim. In quibus discordant 70 ab Hebræo.

Probatur secunda pars, scilicet, quòd prima Scriptura non fuerunt tabulæ decalogi, nec inde habuisse initum litteras Alphabetarias. Nam ista promulgatio legis scriptæ ian. supponebat vsum litterarum, & notitiam. Secundò, nam est in controuersia, An Deus, an Moyses scripserit tabulas? Tertiò, nam qui tribuunt Moysi principatum de inuentione litterarum, conueniunt inuenisse in Egyto, antequam reciperet legem in monte Sina. Colligitur ergo, quod tabulæ decalogi non fuerit prima scriptura.

Arguitur potest pro opposita parte, quæ putat, primã omniũ scripturam fuisse tabulas legis, & in Sina edoctum Moysem, vt instrueret filios Israel. Et litteras alphabetarias initium habuisse à lege. Apud August. lib. 18. de ciuitate cap. 39. & tenent plures Hebrei, Otho in Chaldaico suo, apud Euseb. lib. 4. c. 13. & antea fuisse in vsu solas Hieroglificas, quæ sunt minus nobiles figuris, pro rudibus, & ignorantibus. Vt apud Chinenses, &c. Nam vt constat Moyses non scripsit in Egypto, aut in Madiam libros, ipsi imputatos, sed in deserto post legem acceptam. Cum itineris fatigario per mansiones dabat requiem, & otium.

Respondetur potius in Madiam scripsisse. Constabit ex dicendis.

(.·.)

DVBIVM XXII.

Quinam scripserit tabulas decalogi? Deus digito suo, an Moyses instrumento in silice?

PRima sententia asserit, quòd *Moyses scripserit*. Primò ex Exodi 34. *præcide tibi duas tabulas lapideas instar priorum*, & statim *scribe tibi verba hæc*, & deinde *scripsit in tabulis verba fœderis decem*. Scilicet Moyses, de quo præcesserat sermo, aliàs inferretur violentia textui, vt aduertit Augustinus q. 15. in Deut. & q. 166. & Cyp. tract. de Spiritu Sancto.

Secunda sententia asserit, quòd Deus digito suo. Primò ex Exod. 3. *Præcide tibi duas tabulas lapideas instar priorum, & scribam super eas verba, quæ habuerunt, quas fregisti.* Et Deut. 10. Dola tibi duas tabulas lapideas, sicut priores, & scribam, &c. statim scripsitquè in tabulis iuxta id, quòd prius scripserat, &c. Secundò ex PP. Ruper. lib. 2. de Victor. verbi Dei cap. 20. clarissimè cap. 22. Factas opere Dei scripsitquè in tabulis iuxta id, quòd prius scripserat verba decem. Et ita liquido cõstat, quòd idem ipse Deus prius scripserit figuras elementorum, & tradidit Moysi, qui primus meruit scribere. Et ita Deus se habuit cum Moyse, vt Magister dirigens manum pueri, vt Deo tribueretur, vt author, Moysi vt instrumento.

Conclusio asserit iuxta secundam sententiam, quòd Deus scripserit. Primò, nam id, quòd dicitur *scriptas digito Dei*, aliquid denotat plusquam directionem manus Moysi. Secundò illud Deut. 10. refert, & tribuit scriptionem Deo iuxta id, quod prius scripserat. Teatiò, nam licet quidam sint opinati à Deo scriptas priores tabulas, & à Moyse secundas satis indicatur testimonijs citatis à Moyse neutras scriptas. Iuxta Rupert. lib. 3. de vict. verbi Dei cap. 24. Quamuis nec in illis scripserit Moyses, nam dixit Dominus præcide tibi instar priorum, & scribam super eas, &c.

Respõd. ad opposita. Ad Exod. 30. quòd licet de Moyse præcesserit sermo, dum dicitur scripsit, &c. est sermo de Deo. Est enim Hebræis satis familiare (quidquid de latinis) intelligere de supposito remotiori, præsertim si sit notum, & aliàs nominatum, vt dum dicitur. Dixit Deus se scripturam in tabulis legem fuit manifestum, quod id, quod sequitur scripsit intelligendum de Deo, non de Moyse.

DV-

DVBIVM XXIII.

De Origine sacræ scripturæ. An fuerit Moyses primus scriptor an Iob? Et An Moyses inceperit scribere libros sacros in Egypto? An in Madiam?

PRima *sententia* circa primũ asserit, *quod nõ fuit Moyses primus scriptor, sed Iob, & quod prima scriptura artificialis fuit ab ipso exarata.* Primò ex illo Iob, 9. *Quis mihi tribuat, vt scribantur sermones mei quis mihi det, vt exarentur in libro* stilo ferreo, & plumbi lamina, vel celte sculpantur in silice. Et contigit si cut optauit. Et c. 31. *Quis mihi tribuat, &c.* Et desiderium audiat omnipotens, & librum scribat ipse qui iudicat. Secundò, nam Geneſis non fuit prima scripturarũ. Nam venit in dubium primò de libro Enhoc, qui citatur a S. Iuda in sua canonica. Prophetauit inquit septimus, ab Adã Enoch qui fuit 1133300. annos ante Moysem. Deinde venit in dubium historia Iob, quæ extat scripta multis annis ante natiuitatem Moysis, & ante seruitutẽ in Egypto, & ante mortem Ioseph, à qua incepit seruitus. Rursus est in dubio de tabulis digito Dei scriptis, nam datæ sunt post exitum in syna ante penthatheucũ. Nam syna fuit locus duodecimæ mãsionis, & cœpit scribere Geneſim post deser-

tũ, iuxta directionẽ Dei. Quidquid alij dicãt quòd ante egressum de Egypto quãdo commoratus est cum socero sacerdote Madiam per 30. annos, vt suos instrueret de diuina prouidentia, & consolaretur in seruitate, & erigeret eos in spem, & fiduciam. Et deinde rediens in Egyptũ transtulit librum Iob, ex lingua Idumęa in Hebræam linguam vulgarem, & vernaculam suis, ad leuandas eorum calamitates exemplo libri iam olim scripti laborum; Sancti Iob. Tertiò, nam ita tenent plures Patres. Gregorius de libro Iob, docet ab ipso fuisse exaratum, partim litteris syriacis, partim Arabicis, Idumea lingua, mixta ex vtraque, vulgari illius regionis. Quartò, ex eo quòd Iob non triuiale instrumentum Spiritu Sancti, sed aptũ, & idoneum. Nam sapiens fuit, & paciens, & ex his, quæ passus est didicit sapientiam. Vltimò, nam non est vllum argumentum, quòd vim habeat, & præmat pro opposito.

Prima conclusio asserit, quòd *Moyses sit primus scriptor, non Iob. Et à Moyse sit origo, Scripturæ Sacræ artificialis.* Primò, nam Iob non fuit scriptor sui libri. Nam si esset quomodo de se ipso scriberet, vir sanctus, & modestus tot elogia: *vir sanctus, iustus, timens Deum, &c.*

Displicet, vt in efficax. Nam ita fuit in more apud sacros scriptores, de se loqui, quasi in tertia alia persona. Et ita Moyses Num. 12.

de se scribit. Erat Moyses *vir mitissimus super omnes, &c.* Inde non probatur, non fuisse authorem talem libri S. Iob, & Mathæus 9. *vidit Iesus hominē sedentē in telonio Mathæū nomine*, & Ioann. 19. Ioannes de se ipso *Hic est discipulus ille, quē diligebat Iesus.* Et hoc verè confirmat scripsisse, vt instrumenta spiritus Sancti, tam prose, quam contra se, tam prosuo genere, quam contra illud. Secundo probatur ab alijs conclusio, nam si liber Iob fuisset prima scriptura erat collocanda in initio sacrorum librorum ante Genesim.

Displicet. Quia inefficax. Nam in ordinandis sacris libris, non attenditur antiquitas temporis, sed ordo, & series rerum conditarū. Et ita incipitur à Genesi, qui tractat de Genesi, & creatione rerum.

Vltimò, probatur efficatius. Nam vt statim constabit, prima scriptura fuit Genesis, scripta in Madiam, ante egressum de Egypto, & ante Tabulas, & liber Iob fuit scriptus etiam à Moyse saltim. Nam figuris aut laminibus plumbi forte à Iob. Ex quo ad opposita ex ista distinctione patet solutio, à primo ad vltimum.

Circa secundum quæsitum, prima *sententia* asserit, quòd in nostra parte, sed in solitudine in qua per mansiones tendebat ad terram promissam cum populo, & post legem acceptam scripsisse librum Genesis. Ita Theodoretus quæst. prima in Genes. Tostat. ad caput. 13. Genes. q. 131. Primò, nam Moyses cap. 2. Genes. ait quòd Deus requieuit ab omni opere, quod patrarat, & ob id benedixisse diei septimo, & vacationi ab omni opere, & labore seruili, & in vsu esse cepit post legem datam apud Iudæos, & ita illo stilo vacationis vsus est Moyses, & expectauit, & ita expectauit post promulgatam legem ad scribendum librum Genesis. Secundò, nam c. 7. Genes. scribit quod Noe iussu Dei intulit in arcam animalia, cum distinctione, mundorum, & immundorum; quæ, lex ostendit, esse mūda aut immūda, & ita post legē latam Hæbreis videtur scripsisse, nisi dicatur vsus figura anticipationis, in sacra scriptura vsitata.

Impugnatur, nam est inefficax. Nam multa etiam ante legem erāt in vsu apud viros probos extradictione ab Adam, vel Enoc nepote, qui cœpit inuocare nomē Dñi. Licet lege Mosaica non essent constituta, & in eorum numero ponipossunt erectiones altariū oblationes, decimæ, ritus sacrificiorum, vota, abstinentiæ à sanguine suffocato, suscitatio seminis fatris defuncti sine liberis, atque adeò ita distincta inter animantia, munda, & immunda.

Sz

Secunda sententia asserit, Moysem scripsisse librũ Genesi ante exitum de Egypto. Pererius, & alij. Nam vbi accepit reuelationẽ esse de gente illa Hebræa, oppressa, etiam accepit creationis mundi, & aliorum antecessorum vitas, quas scripsit ad animandos suos exemplis maiorum.

Secunda conclusio asserit. *Scripsisse interra Madiam, cum esset ab Egypto vagus, & sequestratus, per 40 annos in solitudine, in qua pascebat gregem soceris sui sacerdotis Madiam. In cuius otio apto, & opportuno ad diuina meditanda, litteris fuit intentus, & scripturæ illa mandauit.* Primò, ex Cedreno in comprendio historiarum, scribit greca, in hæc traductus. Quòd Moyses relicto Egypto se contulit in solitudinẽ, & ibi edoctum à Gabriele Angelorum Principe, de Origine mundi, & alijs vsque ad ipsum decursis, & futuro diluuio, diuersitate linguarum, de lege tradenda iudæis, de elementis, astrologia, geometria & alijs scientijs. Secundò, deinde ex Basilio in idem inclinãte. Tertiò, ex quorundam coniectura scripsisse genesim, eo tempore ad consolandos Hebræos, & erigendos eorum animos, qui in Egypto tenebantur oppressi in seruitute, proponendo in libro, insignes virtutes Parentum, & Principum inuictos animos in aduersis, vt exẽplo maiorum patiẽter sustinerẽt calamitates, & erigerent fiduciã in auxilio diuino, quo Deus succurit maioribus, adhuc in casibus desperatis. Et tandem Abrahamo promissam terram promissionis pro posteris, post laboriosam peregrinationem 40. annorũ, & seruitutem durissimam, 200. annorum & amplius, & iam esse in iannis tempus liberationis, in exitu de Egypto, & iteneris peragendi per solitudinem per mansiones. Ita Eusebius præcitatus, cuius verba hic late apud Neriemberg. arrisit Augustin. 18. deciuitate c. 39. vbi ait, quòd Moyses constituit in populo Dei qui præssent docendis litteris antequam nossent litteras diuinæ legis, & in q. 18. in Exod. dicit, quòd Hebræi habuerunt litteras ante datã legem de quorum initio nescit, vtrum valeat indagari. Vltimo, nam quamuis Hebræi in seruitute Egypti essent pene omnes obliti suæ linguæ patriæ, & illam amisserint in Egypto non obstat ne dicamus inceptisse Moysem Genesim lingua Hebrea in Madiam. Nam sibi restituta est diuinitus, vt doceret alios in Egypto, & à iam peritis deribaretur in cœteros.

DVBIVM XXIV.

An Moyses scripserit Genesim, & librum Iob? & quod vtrusque prius?

PRima *sententia asserit*. Scripsisse vtrumque, & prius librum genesis, quã librũ Iob. Primò nam rationabilius est scribi prius vitas, & historias maiorũ suorũ Patriarcharũ populi Israelitici, quã historiã priuati hominis, & exteri, idumæi Iob. Secũdò nã quãuis esset opportunũ scripsisse in Madiam historiã Iob, viri patientissimi, ad erigendã patientiã, & fiduciam in Deo ad exẽplum, & imitationẽ Iob, nõ minus erigeretur exemplo maiorum suorum, ad sufferendam seruitutem, & sperandum de Deo meliora. Tertiò, ex Origine cuius verba late Euseb. Ner. pro secunda sententia, quæ magis videtur istam probare. Nam eò tendit, vt historiam Iob orti ex genere Saul reprobati indicet apud Deũ, non genus estimari; sed virtutes. Vt quãuis ipsi essẽt de semine Abrahæ potius virtutem conciliare cũ Deo, quam nobilitatem maiorum. Vt deponerent fastum ex promissis Abrahæ, Isaac ortum. Et assumant virtutes sine elatione maiorum.

Secunda *sententia asserit*, scripsisse vtrumque librum. Iob tamen ante egressum, cũ diuertit ad Madiam, sed post exitum illius de Egypto Moyse duce. Primò, ex origine, & alijs.

Conclusio asserit. *Scripsisse post librum Genesis, librum Iob.* Propter rationes primæ sententiæ, non verò ante Moysi reuelatum nomen Iehoua. Ratio nam inuenitur hoc sanctum nomen in eo lib. & antiquis PP. fuit incognitum. Secundò ex rationibus primæ sententiæ.

DVBIVM XXV.

An Moyses prius scripserit Genes. & Iob, quam Psalmum 89?

CConclusio asserit, *certum scripsisse etiam Ps. 89. incertum verò quo tempore, an ante, aut post Genes. & Iob.* Primò, scripsisse præter alios Psalmos, hunc Psalmum, qui non extant, probatur ex titulo, nam legitur *oratio Moysis hominis Dei.* Secundò, nam licet sit incertum an scripserit alios Psalmos, qui non extant, tamẽ Hieronimus, Genebrardus, & alij dicunt scripsisse istum. 89 cum decem sequentibus, pro quo non inuenio firmum fundamentum. Tertiò, nam scripta in eo 89 id suadent. Nam pro liberatione, & libertate recuperata ab oppressione Egypti, ad lętitiã, & gaudium, facta allusione dicit *Exulauimus, & lætati sumus pro diebus, quibus nos humiliasti, annis quibus vidimus mala.* Nec dici post David ipsius nomine scripsisse aut gen-

gentis anteceſſoris, ſicut alia huiuſmodi, quoniã nõ eſt firmum fundamentum. Confirmatur ex Paraphraſte deſignãte tempus. Oratio tio qua orauit Moyſes, quando peccauit populus in deſerto. Vltimo, nã aliqui Pſalmi ſunt ab alijs compoſiti, & poſiti intra numerũ Pſalmorũ, & ita non eſt cur negetur iſte Pſalmus Moyſi, licet ſit in numero Pſalmorũ præſertim cũ dicãt plures ſcripſiſſe etiam alios, licet non extent.

Argumentatur, nam iſte Pſalmus à Dauide fuit compoſitus non à Moyſe, nam potuit reuelari Dauidi oratio, & dicta Moyſe, vt inſcriberet titulum, & ſcriptis exararet, vt ſenſit Arnouius. Reſpond. id eſſe diuinare, nam aliqui Pſalmi ſunt compoſiti ab alijs, & iſte potuit à Moyſe, & ita non debet negari; præſertim cum Faber impugnauerit Paulum Hebreum, docentem quod Moyſes poſitus in titulo, & fronte Pſalmi, non fuerit, iſte dux populi, & legislator, ſed alius eiuſdem nominis.

DVBIVM. XXVI.

An ante geneſim Moyſes ſcripſerit libros alios, qui ipſi ſolent imputari.

PRima *ſententia aſſerit* ſcripſiſſe inſcriptum de Chiſopæia ſeu Alchimia in Egypto, & docuit Egyptios, qui in ea arte euaſerunt peritiſſimi vſque ad tempora Dioletiani vt refert Delrio, & ſcripta deauri, & argẽti fuſsione addicta fuiſſe incendio, & flamis, ne illa arte ditati Egyptij, freti auro interim ſe rebellarent Romanis. Et quidam addunt inde nomen chemiæ traxiſſe originem, & Arabes addidiſſe articulum *Al*, & inde Europeos accepiſſe nomen, & artem. *Impugnatur*. Nã mos eſt impoſtorum nugas ſuas ſpargere ſub ſpecioſo aliquo titulo authoris, ad fidẽ conciliandam, vt Adamo ſunt imputati multi ab alij, ſed falsò.

Prima concluſio. *Non eſt facile affirmandum ſcripſiſſe alios libros, ante librum Geneſis.* Primò ex dictis, vbi Moyſes probatus eſt primus ſcriptor, & Geneſis primus omnium ſcriptorum.

Secunda concluſio. *Non eſt neceſſe dicere Moyſem ſcripſiſſe ante geneſim librum, qui inſcribitur liber bellorũ Domini, quẽ citat ipſe Moyſes.* Ratio, nã allegatur in libro Numerorũ, qui poſt Geneſim ſcriptus eſt.

Arguitur ex Clemente Alex. 1. ſtomat. vbi dicit ſcripſiſſe quoſdã (ibi) relatos & epiſtolas. Reſpondetur quòd ipſe clemens agnouit dictos libros, Moyſe poſteriores, & ita ſi dedit illis primatũ librorum, reſtringi debet, intra Græciam aut Perſiam, non in Orbe.

***

DV-

DVBIVM XXVII.

Quibus characteribus olim vsus Moyses? An lex olim scripta fuerit à Moyse in charactere Hebræo, maiori, & quadrato? An in minori, & hispanico, ita vt qui legitur hodie sit ille, in quo ab initio scripta fuere lex, & Biblia sacra.

PRima conclusio asserit, *non scripsisse in caractere, quo Iudæi modo vtuntur, & legitur hodie in quem est per versiones scriptura trãsfussa, qui solet vocari assirius, sed Samaritano.* Primò, ex Hieronimo in præfatione ad libros Regũ vbi dicit quod Esdras scribalegis post instaurationẽ, Hierosolimæ, & tẽpli sub Zorobabele inuenisse alias litteras, quibus nunc vtimur cum olim ad illud vsque tempus fuerint idem characteres hebræorum, & Samaritanorum, idem in alijs locis apud Ioannem Eus. & sequuntur Beda Rupertus, & alij. Secundò, ex Thalmud. initio sectionis vbi Hebræi dicunt scriptura, quæ est hodie in manibus nostris non est scriptura Hebraica, & doctores Babilonij, Zutra, & alij, & dicunt in Thalmud, tractatu Sanhedrin sect. 2. Quòd initio data à lex Israeli scriptura Hæbraica, & lingua sancta, in diebus Esdræ data, & restituta est scriptura assyria, & linguã Chaldæã postea reliquerunt idiotis scripturam hæbraicam, & elegerunt pro Israel, post expurgationem scripturam assiriam, & linguam santã relicta autem idiotis esse illam quæ cõspicitur, insculpta, & picta in siclis Iudaicis. Cuthei autem sunt Samaritani, qua prisce monetę scriptæ reperiuntur. Deinde ex ex Moyse Bar Nachmam in Achone ciuitate Palestinę, ostensam esse monetam cum figuris cuidam ex idiotis Cutheo, & statim legit, quia erat scripta hebraica relicta Cuthæris. Rabi Moyses scriptura Hebræa est scriptura Heber, qua populus, qui appellatur samaritanus scribit legem, scriptura verò, qua nos scribimus scriptura est assiria. Idem alij, vt vocetur assyria, quia character eius est excellens, & ornatus. Quamquam autẽ non sit data lex per Esdram, tamẽ data est scriptura per manum eius. Denique Samuel Iaphe in quit, sententia mea est, quòd mutata est scriptura ex Hebraica, in qua data est lex, in assyriã, & indiebus Esdræ scripta est lex assyriè.

Secunda conclusio asserit, *quod olim lex non fuit scripta in caractere hebræo, qui nũc est in vsu scilicet minori, & hispanico.*

Ratio, nam chracter Hebręus fuit duplex, primus maior, & quadratus, qui solet dici Hebręus absolute, & simpliciter, secundus qui dicitur minor secundũ quid cur-

currens, & hiſpanicus, aut Masket præcipue habẽs puncta loco vocaliũ, qui habuit originẽ aut ab Eſdra aut à Rabinis, ſed fic eſt quod hic recentior nouiſſimus minor & currens hiſpanicus eſt inuentus poſt legem ſcriptam in tabulis longo poſt tempore. Ergo non eſt illo, quo olim ſcripta eſt lex, aut Biblia ſacra. Dificultas ſolum moueri poteſt de antiquo illo charactere Hebræo maiori, & quadrato. An ſit idem cum illo, quo olim ſcripta eſt lex, & ſcriptura.

Tertia concluſio aſſerit, *quòd adhuc iſte maior, & quadratus non eſt idem cum illo priſco, & antiquo quo ſcripſit legem, & ſcripturã ſuam Moyſes, & fuit in vſu apud Prophetas, & alios vſque ad Eſdram. Sed ille ſolet dici Samaritanus, qui ceruitur in ſicli numiſmate, ab alijs Phenicium.* Ita plures Euſeb. Hieron. Rup. Salmer. & alij apud Serar. ibidẽ c. 4. q. 4. Probatur ex Scaligero. Nam olim Hebræi vſi ſunt antiquo charactere cũ Samaritanis, & chananæis, & alię littere nõ fuerunt in vſu à Moyſe vſque ad excidium templi. Nã litteræ, quibus hodie Iudæi ſcribunt libros ſacros, & omnia ſua actu ſunt nouitiæ, nuperæ, & deprauatæ ex ſiriacis, & Samaritanis. Confirmatur, ex eodem pog. 109. vbi dicit, quòd in pecuijs, numis, & ſiclis ſunt affixę iſtæ litteræ quæ leguntur in ſcriptis Samaritanorum, & exiſtimaſe aliquos, alias litteras fuiſſe antiquorum Hebræorum, quam quæ conſpiciuntur in mone ta, & ſiclis, & in commertijs Iudæorũ verſabantur ſub Regibus Iuda, eſſe inſaniæ, & impericiæ extremæ. Idem apud plures Rabbinos, quibus videtur ineptum non aſſentire in re tam nota.

Arguitur pro ſententia quæ aſſerit, quòd lex, & ſcriptura ſit ſcripta eodem charactere hebraico, ac modo eſt in vſu, ſaltim loquendo de illo maiori quadrato, ex Philone lib. 2. de vita Moyſis apud Baronium tom. 2. ad annum. 180. Qui putat ipſum Hebræum, quo vtuntur eſſe illum, in quo ſcripta eſt lex à Moyſe, aquo deinceps alij libri Bibliaci prodiere. Qua dicit Philo quòd lex olim ſcripta permanſit ſine mutatione, vſque ad Ptholomei Philadelphi tempora. Reſpondetur permanſiſſe quoad rem & linguam ſine mutatione, non verò quoad figuras characterum. De hoc enim Philo nil expreſsit.

Quæritur. *Qualis fuerit ille character, quo poſt Eſdram ſunt Biblia ſacra exarata.* Reſpondent Thalmudici abſolute, & ſimpliciter aſſyrium, aut Babiloni cum, alij non ſimplicitert, ſed cum mixtione, & deprauatione.

Ve-

Verùm iam passim syriæ vocantur, appellare enim antiquas illas litteras assyrias, aut Babylonicas, videtur contra communẽ sententiam.

Quæritur cur Esdras mutauit characterem? *Prima sententia*, quia in captiuitate Babylonica perierunt veteris libri, & characteres. *Duplicet*, quia incertum, omnes perijsse, nam dato quòd perierunt sacri, non alij, nec memoria, saltim in virisperitis. Sed nec omnes homines sũt adducti in omnimodã obliuionẽ, & barbariam. *Secunda sententia asserit*, mutasse causa facilitatis & maioris elegantiæ, in figuris, & formis caracterum. *Displicet*. Nam non erat sufficiens causa ad deserendum, & repudiandum vsitatũ ab antiquis. Deinde, nam nullus ita peritus, quòd castigare posset. aut effigiare. In quo esset maior facilitas, venustas, speciositas, & elegantia quam in priscis.

Verius iudico, id factum, præsertim vt populus Israeliticus dissociaretur à Samaritanis, & hęreticis.

In calce aduerte. Thau vetus samaritanum habuisse similitudinẽ crucis. Et de illo signo loqui Ezech. c. 9. ex Origine, Hieronimo, & alijs?

DVBIVM XXVIII.

An à tempore Moysis caracteres hebræi sint affecti punctis, loco vocalium, in libris Bibliorum? vbi, quando, & à quo sint excogitata, & inuenta puncta.

PRima *sententia* esserit, iam olim fuisse puncta à Moyse, & in monte synai a Deo tradita, cũ lege, in tabulis.

Secunda *sententia*, non traxisse originem a Moyse, sed ab Esdra inuenta, & affixa in Biblijs?

Conclusio asserit primò, *esse non potuisse vllas voces, & sermones hominum sine vocalibus*. Secundò, *non dubitari, de origine seni vocaliũ, sed de signis, quibus notata sunt scilicet punctis*. Nam cum voce humana, quoad sonum ortæ sunt litterę cõ sonantes, & vocales, non tamen statim inuentę sunt figuræ, & caracteres, quibus significarentur & notarentur. Tertiò, *ista puncta inuenta, & excogitata, & appunctuata in Biblijs à peritis Rabbinis, qui Masoreth vocantur in Tiberiade Palestinæ (celebri Ioann. 6.) anno Christi 500, nomina verò punctorum inuenta post redditum ex Babylonica captiuitate*. Primo quia hodie non licet Iudæis habere volumen legis in sinagogis cum apicibus, & punctis vocalibus, sed so-

solis consonantibus. Secundò, nã non fit mentio istorum punctorum in toto Thalmud, neque in in S. Hieronimo, aut alio vetustiori, nam licet in Hieron. sit mentio accentuum, quibus scriptura sonorè pronunciatur, non punctorum, vt videre est in suis traditionibus in Genes. & in Epistola ad Euagrium, in qua in alio sensu accepit nomen puncti, prout signat articulum, aut compendium, aut brebiloquium, & ita licet sine vocalibus, non possit lingua Hebraica pronunciari, potuit scribi, vt videmus hodie, licet id non possit facile assequi, sed assiduo habere, & exercitio. Ita vt facile sit legere cũ vocalibus, per difficile sine illis. Tertiò, ex tracta tu Thalmudico, Bababathia, vbi legitur. Intulisse manus discipulum Magistro, quod Deutor. 25. legeret Thimcheh Eth Zachar Hamalek, id est *delebis Masculum Amelekitam*, non verò, vt odie legitur cum punctis, Thimcheh, Eth, Zecher, Hamalek, id est *delebis memoriam*. Vel vt vertit noster nomen Hamalek, nam cum ædem litteræ consonantes sint in Zachar, & Zecher, est diuersa significatio, ob ista, aut alia puncta superadita. Quæ si Thalmudis tempore, aut tunc fuissent litteris subiecta, ille Magister ita legere non potuisset. An autem ista narratio sit historia, aut fabulosa nostrum non est. Denique ex antiquis authoribus probat Serarius ibidem, quòd Biblia non habuerunt puncta vocalia, & si eo tempore habuissent, quo facta est versio, & translatio latina, quæ est in vsu, non posset Latinus interpretes mutare quidquam in vocalibus.

Arguitur pro prima sententia, nam videtur puncta fuisse à tempore Moysis, & legi contemporanea, non verò inuenta post Christũm. Nam Matth. 5. dicitur *donec transeat cœlum, & terra, iota vnum, aut vnus apex*, non præteribit à lege, & Lucæ 16. facilius est cœlũ, & terram præterire, quam vnum apicem de lege cadere. Vbi idem videtur significare apex, & punctum.

Respondetur, nomine apicis significari particulam minimam, nam quidquid de veteri Hebræo, Asirio, aut Phœnicio in recẽtiori alphabeto, qui in vsu erat illo tempore littera minima sit, iod, & dixerit Christ°, nec iod, nec particulam minimã excidere posse, vt apta sit gradatio minima debet intelligi paticula eiusdem, non punctum siue sit sermo de puncto in acceptione triplici, accẽtuum, vocalium, & singularis obseruationis. Quia non sunt maioris, sed minoris magnitudinis, quàm *iod*, aut certè non minoris, vt inepta fieret Christi gradatio, dum fit à maiori ad minorem apicem.

Arguitur secundo ex Iacob peritissimo Masoriticorum Qui dicit veritas est dedisse Deum scripturam compunctatam, sed obli

tos

tos Iudæos vsque ad aduentũ Esdræ, & nulla memoria potest legi sine punctis. Respondetur, illi opponi assertores nostræ opinionis. Deinde fateor difficilem lectionem consonantium sine punctis, non impossibilem. Imo difficultas superata est à plurib⁹, adiunctis regulis, & non exigua opitulatio ex litteris quiescentibus indicantib⁹ aliquando vocalem adinuenta est. Iuxta Bellarm. de institutione linguæ Sanctæ p. 1, c. 1. & 5.

DVBIVM. XXIX.

Cur Moyses non scripserit nisi solùm litteris consonantibus, non vocalibus, aut earum loco punctis?

CConclusio, *illius esse aliquas congruentias.* Prima, quia incipiunt omnia, non omni no perfecta, & ita similiter ista ars alphabetaria. Secunda, quia Deus non solet dari vni omnia simul, sed sua ui dispositione progreditur successione addendo. Tertia, quia potuit scriptura Moysis artificiosa minus incommode carere punctis pro vocalibus, quam alia scriptio, non habens tale artificium, quòd confici, & legi possit sine vocalibus. Quarta, Moyses assuetus litteris Hieroglificis Egyptiorum, vna figura significaantibus sententiam, instituit adinstar litteras, vt singulæ denotare possent syllabam vltra consonantem, quatenus sufficiebat artificio scripturę, & lectioni. Quinta, nam opportebat, vt intelligentia, quæ instruebatur pro libris sacris penderet à Sacerdotibus, & Magistris, & populus discceret ex illis, & traditione, & difficultas excitaret rei studium. Sexta, nam ad dignitatem eius pertinebat, vt legi possent aliquando diuerso verbo, sicut ad dignitatem diuini eloquij, vt vno verbo plures sensus significarentur, & ita non mirum, si vna scriptiuncula notet plura ra verba. Et inde varietas versionum, quamtumuis diuersarum approbatur à PP. Denique pro inscriptione sine punctis, adduci possunt, quæ solent, quare voluerit Deus scripturam esse obscuram, & quidquid adducitur pro necessitate, & vtilitate traditionum, ad intelligentiam perfectam.

DVBIVM XXX.

Cur Esdras reliquerit caracteres Mosaicos, & vsus fuerit Assyrij? & an restituerit scripturam amissam, & dilaceratam, in suam integritatem?

PRima sententia asserit, *reliquisse ob Angeli reuerentiam qui dixit illi. Et Assyrijs litteris scripsit, esse mutandam scripturam, non quoad exemplar Moysi, sed quoad linguam.* Displicet, nam cur, non habuit rationem antiqui alphabeti Hebraici,

ci, in quo lex digito Dei scripta erat, & data per manus Angelorum.

Secunda *sententia* asserit, id factum, ob miram pulchritudinem caracteris asyrij, dicti talis, quia pulchri, & elegantis, non quia venerint ab Assur. Sic Obadias comment. in librum Mischuaiot, Rambam, & alij. Samaritani autem antiqui, seu chuthei erant rudiores effigie. Et putant Esdræ conciliari laudem, eo quòd introduxerit characteres elegantiores, & ob inuentum promeruisse statuam. Ita Dionisius Lincius.

Tertia *sententia* asserit, id factum, in memoriam diuini beneficij, quo erepti sunt Iudæi à captiuitate in libertatem, & retinuisse Esdram characterem asyriorum: ita Iosephus.

Quarta *sententia* asserit, id factum, quia scribendi genus antiquum, in captiuitate, tam longa amissum erat, & ita Esdram renouasse legem vsitato characte Asyriornm. Ita Salmer.

Quinta *sententia* asserit, id factum, vt Israeliticus populos dissociaretur à Samaritanis, & Hæreticis. Ita Postelus, & Euseb. Cesar. in Chronico. Vbi dicit, quòd Esdras fuit Magister sapientissimus Iudæorum, qui de captiuitate regressi sunt in Iudæam, & memor condidisse diuinas scripturas, & ne commiscerentur Samaritanis, comutasse litteras Iudaicas.

Conclusio asserit, *reliquisse Mosaicos, & vsum Assyrijs, ob ignorantiam vulgarem antiqui characteris, per dissuetudinem elapsi. Et vsum Assirio charactere, iam facto vulgari, & familiari Hebræis, qui erant in captiuitate sub Assyrijs, & vt diuortiarentur à Samaritanis* qui illo *vsi* vtebantur. Primò, ex Rupertò lib. 3. de Victa Verbi Dei. Nam Deus præuisus primas tabulas lapideas scriptas digito suo, voluit præcidi, & scribi alias, per Moysem, & vetera transierunt, & facienda omnia noua. Et ita non mirum, quòd post instaurationem templi, & Hierosolimæ, figuras elementorum, quas Deus ipse tradiderat, voluerit per Esdram immutari. Præsertim cum reperirit figuras alias, varietate mutatas, sono permanente. Hęcratio misticareddit causã mutandi litteras, quia videlicet voluit, quòd pertransierint omnia, quę instituit Deus, nõ factus homo. Vt vetera transirent, & fieret omnia noua. Adde quòd tempore Esdræ fuit aliqua scriptura, licet depravata, quã restituit teste Theodoreto, & Hilario prædictis litteris, & collegit in vnum corpus, Psalmos. Et ita Nabuc-Donosor non combusit omnia exemplaria, nec Antiochus. Ita sentiunt plures Rabini qui docent, quòd Esdras Sacerdos, princeps scribarum intendet ad corrigenda depravata, quamtùm fuit possibile, & intenderunt in Concilio restituere legem ad priscam suam

ve-

vetuſtam, data fide exemplaribus, qui concordabant, ſpretis alijs diſentientibus. Et vbi non potuerunt diuinare ſenſum ſcripſerunt vnam dictionem ſine punctis, intra contextum, & aliam in margine. Hæc ex Radaco ad 3. Reg cap. 17. & ita Iudæi male affirmant, bis amiſſam Scripturam ſacram, ſemel redditam per Othonielem, & iterum per Eſdram. Et ita PP. ſunt intelligendi non de ſcriptura amiſſa totaliter. Et ita conſtat quid fuerit Eſdras in libris ſacris, & qua ratione reſtituerit ſcripturam, non omnino extinctam, ſed ex parte, male in captiuitate tractatam, ex aliqua parte dilaceratam in aliquo codicum iuxta dicta, ſed de hoc ſtatim.

DVBIVM XXXI. ET VLT.

An Scriptura ſacra Bibliorum aliquando totaliter perierit in excidio templi, & captiuitate Babylonica? & an ſit reſtituta per Eſdram? & qua ratione?

PRrima *ſententia* aſſerit. Perijſſe incendio, omnino abſumptum in expugnatione Hieruſalem per Nabuc-Donoſorem. Iræneus. Tertulianus, Alexand. Baſil. Hieron. Theodor. Iſidor. Chriſoſt. Hilar. Optat. Mileuit. Senenſ. & alij apud Ioann. Euſeb. ibidem lib 9. c. 18. & Serar. ibidē c. 12. q. 1. Probatur pirmò ex 4. Eſdrę 14 vbi late dicit peritus à Deō, vt incendio conſumpta, ſibi ſcribenda daret, dediſſe. Adhibitis quinque viris velociter ſcribentibus in campo, ſpatio quadraginta dierum. In quibus ſcripti ſunt libri 204. Secūdò. ex PP. Iren. lib. 3. c. 25. inſpirauant Deus Eſdræ poſt 70 annos, omnes ſermones, & reſtituere populo eam legem, quæ data eſſet per Moyſem, & Hier. aduerſus Eluud. appellat Eſdram reſtauratorem, &c. & ſcripturas reſtituit. Idem latiori calamo apud Ioan. Euſ. ibidem ex Theodor. Hilar. Iſidor. & alijs PP. qui iudicant omnino perijſſe.

Concluſio aſſerit, *non perijſſe omnino, ſed atritas, & depranatas collegiſſe, ordinaſſe, & forte aliquid iuxta contexturam adieciſſe. Et in hoc ſenſu dici reparaſſe.* Bellarm. Baron. quos ſequitur Serar. ibidem. Primò, ex PP. & antiquis Doctoribus apud Serar. ibidem. Secundò, nam non conſtat aliqua ſacræ authenticę Scripturæ incendio illo perijſſe. Secundò, nam licet iuſſu Nabucho-Donoſoris aliqui codices concremati fuiſſent, non eſt veriſimile omnes flamis combuſtos. Sicut nec iuſſu Antiochi, ſed quidam conſeruati iuxta 1. Machab. cap. 1. vbi legitur Iudæos *expandiſſe libros legis*, & lib. 2. cap. 2. ſcribitur *ſolatio habuiſſe libros ſanctos*. Et ſicut Ieremias eripuit arcā, & tabernaculum Moſaicum incendio, potuit facilius libros legis. Præcipue cum eſſet ex be-

ne-

nebolentia Regis Nabuchod. cõstitutus in libertate. Confirmatur ex Daniel 9. qui antecesit Esdrã per 80. annos vbi ponitur mentio lib. Moysis, & Ieremiæ, ex quo colligitur post incendiũ Hierosolimæ, in captiuitate Babilonica superstites fuisse, & in illa non perijsse. Tertiò, nam ex Philone apud Euseb. constat, quòd Iudæi sic diligebant libros legis, vt paterentur potius mori, quàm legem mutari. Quartò, nam ante incendium potuit esse opportunitas reseruandi, & ocultandi libros sacros, cùm se obsideri videbant à Nabucodonosore, in priori transmigratione. In qua ducti sunt captiui Ezechiel, Daniel, & alij Principes, & viri sancti. In secunda sub Iechonia, qui se sponte tradidit Nabuchodonosori. Quintò, nam ex Ioseph. 11. antiq. cap. 1. constat, quod Cyrus dimisit publico edicto Iudæos ex captiuitate, quoniam nomen illius ostensum est illi expressum in vaticinio Isaię Prophetæ, & quidã dicunt, id factum à Daniele. Esdras ergo sic dicitur restituisse, non quia memoriter retentã rescripserit, sed quia iam vsu, & tempore atritos codices, & ex parte corruptos in pristinum ordinem, & integritatẽ reduxit, & id characteribus asirijs, quibus Hebræi iam assueti erant. Vltimo, nam si ita Esdras reparasset, id scripsissent de eo Rabini, sicut alia facinora.

Respond. ad primum ex Esdrę 4. dico esse Apõchrisum, non canonicum, & fidem non mereri. Ad secundùm ex PP. id dixisse, non quia omnino perierint, & integrè sint restituti, sed quia attritos tempore, tractatu, & alijs causis dirutos reparauerit in sensu dicto.

Ad, *Vtilis est ad, &c.*

DISPVT. VI.

De fine sacræ Scripturæ Bibliorum.

POstquam de causa materiali, formali, & efficiente sacræ Scripturæ actum est, supereſt de causa finali, vt statim ad alias habitudines, quas habet sacra scriptura, & conexiones cùm externis versionibus, & alijs procedamus.

DVBIVM I.

Quis sit finis sacrorum Bibliorum, proximus, & remotus?

COnclusio asserit, quòd *finis remotus est gloria Dei, & nostra fœlicitas, proximus verò generalis Dei cognitio, amor Dei, & proximi, cum exercitio virtutum: particularis ex multipli, solet assignari quadruplex, doctrina, redargutio, correctio, & eruditio.* Primò ex sacra Scriptura Ioann. 2. *Hæc scripta sunt vt credatis, quia Iesus est filius Dei, &*

vt credentes vitam habeatis. Ex Apostolo, *quidquid facitis, omnia in gloriam Dei facite*. Rom. 15. *Quæcumque Scripturæ sunt ad nostram doctrinam scriptæ sunt, vt per patientiam, & consolationem scripturarum spem habeamus*. Fides enim otiosa esse non debet, & mortua, sed instigans ad exercitium charitatis, & virtutum. Deinde ex nostro Themate 2. ad Thim. 3. vbi Apostol⁹ plures vtilitates scripturæ ad plures fines, relatus, adiungit istum finem, *vt perfectus sit homo Dei, ad omne opus bonum*. Vnde Augus. lib. 6. Musicæ capit. 14. diuinæ Scripturæ, &c. nil aliud nobiscum agunt nisi vt diligamus Deum, & proximum, tanquam nos metipsos.

Secunda pars, probatur, ex eodē nostro Themate 2. ad Thimot. 3. *Omnis sacra Scriptura, &c. vtilis est ad docendum, ad arguendum, ad corripiendum, ad erudiendum, &c.* Quo circa expende, quòd duo priores pertinent ad dogmata, ad docendum vera, ad redarguendum falsa, duo verò posteriores ad mores. Praui corriguntur, recti traduntur.

DVBIVM II.

Quis sit finis Dei authoris Bibliorum docendi per se, & per alios?

CONclusio afferit, quòd *idem est finis simpliciter Dei, qui sacræ Scripturæ*, nam idem est finis operis & operātis, præsertim cùm Deus, licet non vellit vnū propter aliud creatū, sed omnia propter se, vult vnum esse propter aliud; finis verò respectiuus (& vt alij comparate) varius est, nam Deus duplicē habet docēdi modū per se, aut per alios. Primò, vt omnibus, & singulis immediate fieret reuelatio doctrinæ. Secundò, vt alicui immediatè, aut aliquibus, & per istos cæteris. In isto secundò potest intendi respectu hominis, vt finis cui multiplex finis qui, scilicet fides obedientia, humilitas, charitas, &c. nam fides exercetur, dum fit reuelatio vni, & per illum cæteris, & per alteri factū quis credit. Et humilitas, dum homini alter homo se discipulum instruendū tradit, & submittit obedientia, dum alteri suum intellectum captiuat propter Deū, & charitas, dum eū à quo discit, diligit. Hi fines respecti sunt à Deo, dum Actor. 8. Eunuchus Reginæ Cādacis eruditur à Philippo. Actorum 9. Paulus remittitur ad Ananiam, & Act. 10. Cornelius ad Petrum. De quo Augustinus præfactione in lib. de doctrina Christiana aptissime. Quod ait per hominem discendum est, discat homo sine superbia, & tradat per quem docetur alius, sine superbia, & inuidia. Secundò, nam id etiam consentaneum est diuinæ prouidentiæ, quæ deducit per media infima ad summam perfectionē, dum ab vno alios doctrinā accepere vult. Quo tollitur omniū

præ-

præsumptio, & reijcitur Anabaptistæ, & aliorum, qui apud Stapletonum anglum in anglia vocitantur superilluminati, qui iactitant se ipsos immediatè à Spiritu sancto afflatos. Cur autē Deus nō vellit omnes doceri immediate per se ipsum, sed per aliorum? Resp. ex intentione finis propositis, & vtilitatibus dictis assequendi.

DVBIVM III.

An Deus in edocenda Ecclesia vsus sit scripto, non solo, sed scripto, & traditione simul? & cur non vno solo modo, sed vtroque scripto, & traditione simul voluerit Ecclesiā audiri?

PRima conclusio asserit, *Deum in Ecclesia docenda vti non solo scripto, sed scripto, & traditione simul.* Est sententia communis inter catholicos.

Nota, quòd docendi modus, nō per se, sed per alios est ttiplex. Primò, sola viua voce, & traditione. Secūdò, solo scripto. Tertiò, vtroque iuncto, scilicet, scripto, & traditione simul. Olim à condito mūdo ad Moysem viguit sola vox nō scriptū, nam vt dictū ipse fuit primus scriptor, & eius libri prima scriptura. Accessit tādem scriptura illius, & quia sola nō valet esse iudex in negotijs fidei, & morum (iuxta dicta) opus fuit traditione, ab Ecclesia, & capite per alios. Nec obest, quod fuit liber Enoch, ante Moysem, ex epistola Iudæ, nā ex illa solùm constat prophetasse, non verò an verbò, an etiam scripto, & illo dato saltim ante Enoch. fuit sine scripto *600.* annis.

Probatur prima conclusio, quoad vetus testamentū, tū ex cōmuni sentētia Iudeorū, quòd Moyses accepit à Deo bis legem in scripto vnā, & alteram, quæ in ore traditur, tum etiam, quia Scriptura vetus egebat traditione, & Magistro, cum deessent puncta, & posite essent litteræ loco vocalium ℵ Aleph. י iod, & ב Bab, & signarent varias vocales. Præterea quoad nouum testamentum. Tum quia post Christi ascensionem aliquot annis scribi cœpit, & nunc sine aliqua traditione neutrū haberi potest. Tū quia opus est vt distinguatur verū ab adulterino, & falso, & vt vis litterarū, & idiomatū intelligantur, & illa voce hoc, aut illud significari, præsertim, vbi sensus est obscurus, & reconditus iuxta dicta supra disp. 2. dub. 19.

Secunda conclusio, *voluit Deus Ecclesiā docere scripto simul, & traditione propter plura.* Primò, vt modū inceptum, & inchoatum ab initio mundi accessione scripturæ locupletaret. Secnndò, quia est modus perfectior coniunctio scripturæ, & traditionis, & ad docendū magis aptus, & accommodatus. Tertiò, quia iste modus prodest pluribus doctis, & indoctis, qui legere nesciunt. Quartò, quia vsitatior est, in omni republica bene instituta, in qua sunt tabulæ legis, & cōsuetudines verbo deriuatę. Quintò, vt hoc

ornamento nõn caret Ecclesia, quo præuidebat Deus Philosophos, & legislatores ornaturos suam rempublicam. Sextò, vt omni careret vitio extremè sentientium, hæreticis, & illuminatis, qui iactabant internos suos spiritus, & intelligentias esse afflatus Spiritus Sancti, & hæreticas solas scripturas litterales, sine spiritu viuificante, & traditione Ecclesiæ mordicùs vrgentes. His occurrit modo cõiuncto, scriptura, & traditione simul. Septimò, quia iste modus magis confert ad fidei, humilitatis, obedientiæ, & virtutum exercitationẽ, iuxta dicta, dũ quis docetur submittitur, insequitur dilectione, & obedientia. Vltimò, quia isto modo efficatius improbitas humana reducitur, dum verbo, non acquiescens proponitur scripturæ testimonium, vt verbo simul, & scripto reducatur.

Arguitur, nam Deus voluit à tempore Moysis Ecclesiam solo scripto doceri cum vidisset doctrinæ puritatem ante, & post diluuium non esse conseruatã, sed prætextu traditionis, admixta esse plura falsa, & peregrina, & corrupta à Cain, aut alio ab Adam, Enoc Ecclesiæ capitib⁹. Sic Chemnitius contra sess. 4. Trid. Resp. dicunt & non faciunt. Dicit Chemnitius, & non probat, quod traditio sit ita corrupta. Deinde nec censetur repudiata accessione scripturæ per Moysem, sicut quia Genes. 9. vsus carnium fuit promulgatus, nõn ob id sublatus est vsus antiquus herbarum. Nec per posteriores sublatæ sunt scripturæ antiquiores. Denique sicut verbum scriptum Deus conseruat, ita etiam verbum suum traditum.

DVBIVM VLT.

An finis particularis scripturæ, respiciens generalem, sit ille quadruplex ab Apostolo commendatus, 2. ad Timoth. 3. doctrina, redargutio, correctio, eruditio?

Conclusio est, *affirmatiua*, quæ manifestè cõstat ex ipso Thematis textu, nec eget alia probatione. An autem ex solo sensu litterali eliciatur argumentũ efficax ad astruenda mysteria fidei, & errores repellendos, dictum disp. 4. dub. 17.

Ad *Omnis Scriptura, &c.*

DISPVT. VII.

De ordine sacrorum librorum, diuisione, & partitione.

EXpeditis causis sacræ Scripturæ, materiali, formali, efficiente, & finali, statim exposcit istum locum, disputatio de ordine sacrorum librorũ diuisione & partitione.

DV-

DVBIVM I.

Quis sit ordo librorum sacræ Scripturæ in vniuersum apud latinos.

COnclusio asserit, *non est idem ordo, sed varius apud latinos, græcos, iudæos, & hæreticos. Apud latinos est nunc propositus in Trid. præcitato*, qui ibi est inspiciẽdus, nec sigillatim referẽdũ cẽsui, eo quòd facilè ex dispositione nostræ Latinæ vulgatæ, obius est cuique. Resque nõ est grauis momenti. Ob id etiam, quis sit apud Græcos Bibliorũ ordo remitto ad Serarium ibidem cap. 27. quis sigillatim traddit ordinem, & seriem. Et etiam apud Iudæos varietatem ordinandi, & similiter apud Hæreticos nostros.

DVBIVM II.

De diuisione sacrorum Bibliorum à toto ad partes prima diuisiua in nouũ, & vetus testamentum. An sit? & quid sit nouum, & vetus testamentum?

PRima conclusio, *negari non potest esse duo testamenta vetus, & nouũ* Primò ex S. Scrip. ad Galat. 4. *Abraham duos filios*, &c. *Hæc enim sunt duo testamenta* ad Hebr. 8. 9. & 18. vetus prius, & primum vocatur. Ad 2. Chorint. 3. alterum nouum vocatur. Ierem. 31. expressè dicitur nouũ fœdus. Idem sæpissime Matth. 26. Marc. 14. Luc. 20.

Secundò ex PP. Ambros. August. & alijs apud prologistas sufficiat. Lactãtius 9. lib. 4. c. 20. Scriptura omnis in duo testamenta diuisa est, illud quod antecessit, id est lex, & prophetæ vetus dicitur, ea verò quæ post resurrectionem scripta sunt, nouum testamentum nominantur.

Secunda conclusio circa quid vetus, & nouum testamentum asserit, *vetus dici illos libros, qui ante Christi aduentum, de rebus diuinis authoritate diuina tractarunt, & ab Ecclesia in canonem relati sunt. Nouum verò, qui post Christi aduentum similiter.* Nam cum testamentum generatim sit mentis testatio, speciatim verò sit instructum ad mentis testationem, quæ fit in pactis, aut legatis rerum relinquendis, cũ firmitate, & perpetuitate, quæ in morte fit & amplius mutari nõ potest, vt vltima voluntas. Et Deus suo solo verbo rato, & immutabili, ac si moriens foret vltimũ. Sacri libri ob triplicem causam recte appellantur testamentum. Primò, quia generatim Dei virtutẽ testantur. Secundò, quia speciatim mentis, & voluntatis testationem in pactis, & fœderibus, & promissionib' initis cũ homine, de obseruatione præceptorũ, cerimoniarũ &c. Tertiò, specialiter testationẽ de his, quæ homini transmisit per modum hæreditatis de terrenis,

& cœlestibus bonis largiẽdis Matth. 25. *possidete paratum regnum*, &c. firmo verbo suo, & rato, quam si moritis esset vltimũ, in symbolis, in cesis agnis, & pecudibus repræsentatiue moriens ante assumptam mortalẽ naturam post assumptionẽ in ea moriens, iuxta Ambros. lib. 1. de Cain c. 7. Testamentum dicitur, quo defertur bonorũ hæreditas, quoniã sanguine dicatum est, vetus in typo, nouũ in veritate. Secũdũ istã triplicem testamenti notionem res distingui debent; triplices testatæ, tum in veteri, tum in nouo, triplices similiter describendæ, ita vt illud ante Christi aduentum sit immutandum, in post Christi aduentum, ad distinctionẽ veteris, & noui testamenti. *Quanam autem bona Deus homini transcripserit tam quã hæreditatẽ ante, & post Christi aduentum* certissimũ est ab initio legasse supernaturalem, & æternam beatitudinem in omni generatione, & sæculis. Tanquam principale bonum, cum alia sint min⁹ principalia, sub modo tamẽ, & conditione, si hoc egerit, capiat hæreditatẽ, si non egerit non capiat. Primum constat ex Matth. 34. *Possidete paratum vobis regnum*, & ex eo quòd homo ad istũ finẽ fuit creatus, vt principale bonum, ratione mediorum, vt adminus principale. Alterũ verò ex Genes. 3. quia statim, ac creatus est ista conditio est apposita, *præcepit nobis Deus, ne comederemus, &c. ne forte moriamur*, & deinceps posteris Abrahamo, Isaaco, Moysi, & cæteris intimatum. Deinde vbi Matth. 25. dicitur *possidete paratum regnum*, &c. adiungit conditionẽ, & modum. *Esurivi, enim & dedisti mihi manducare*, &c. quàm conditionem adeundæ hæreditatis. Initam plura alia testantur Rom. 8. *si filij, & hæredes*, &c. *si tamen compatimur, vt glorificemur*. Aduerte tamen pro varietate status, & temporum varias præfixas conditiones ante Christum. Primo homini abstinentia à fructu vetito, veteris legis hominibus, circuncisio, victima, sacrificium, &c. hominibus post Christum, Baptismus, & illis fidẽ Christi venturi, istis Christi præsentis. Minus principalia bona hominib⁹ largita sunt omnia ea media, quibus ad finem, & hæreditatis principatum perducimur, & speciatim Christus redemptor in nouo gratia Dei, & alia spiritualia, sacramenta leges, quibus accedunt temporalia, quæ iuuant: qui etiam profuit in veteri, saltim post Adami peccatum. Olim non ita manifeste explicata gratia, & cœlestia bona, quia in figura contigebant illis, nunc iam post Christi incarnationem expressus, & frequens de gratia Dei sermo, de cœlestibus bonis, mandatis, consilijs, sacramentis remotis velaminibus, & inuolucris explicata, vt docent sancta Euangelia, epistolæ, & Apostolorum acta.

Ar-

Arguitur primò, pro parte Hæreticorum negante duo testamenta condidisse Deum rata, & firma. Tum primò, quia testator qui semel moritur, tantũ vnũ condit testamentum, quod vna morte confirmat, vetus autem non valuit vsque ad Christi mortem, & semel tantũ mortuus est, non bis. Deus autẽ immortalis non moritur. Tũ secũdò, quia illud non potest dici testamẽtũ, quod solùm habet vim pro tempore determinato, & limitato, sicut vetus vsque ad Christũ. Tum tertiò, quia donatio inter viuos non dicitur testamentum, quia donatio vim non habet vltimam, perpetuam, irreuocabilem non intercedente morte testatoris. Tum quartò, quia qui dat rem legato intercedẽte cõfirmãtione per mortem manet sub carentia, & priuatione illius, quia transit hæreditas, & possessio ad alterum: Deus autem, & Christus nunquam ita dederunt fœlicitatem, vt illa sint priuati.

Respõdetur, quòd duplex fuit Christi mors typica, vna vera, & realis altera, illa in agnis, & pecudibus, ista in se. Ad secundùm dico, quòd licet non manserit nisi vsque ad Christum temporaliter quoad minus principalia hæreditatis, conditiones, fugaces, &c. permansisse tamẽ perpetuo quoad principalia, & præstantiora legem naturalem, gratiã iustificantem, &c. Ad tertium, iam constat qualiter intercesserit mors in typo, & in re, & ita non cogit ad confugiendum ad donationem inter viuos. Ad quartum, id non esse de ratione testamenti nisi imperfectionem contractam ex imperfectione testatoris, qui est mortalis, vt si velit retinere post mortem non possit, & rei testatæ, quę ex paruitate adeò est angusta, vt simul à duobus obtineri non possit. In Christo autem est alia ratio, quia licet sit mortalis, secundùm humanam, est immortalis secundùm diuinam naturam, & infinitorũ possessor. Qui ita immortalis & viuus dare potest, vt possit simul retinere eminentissimo modo.

Arguitur secundò, ad probandum, quòd non sint duo tantum, sed plura. Nam vbi sunt inita plura pacta, sunt plura testamenta, sed ante Christum fuere inita cum hominibus plura fœdera, cùm Adam ante peccatum, & post peccatum, & aliud cum Noe, aliud cum Abraham, aliud cum Moyse, aliud cum Dauide; & ita illis tribuit Apostolus non duo tantum, sed plura testamenta Rom. 9. cũ ergo ante Christum tot fuerint cum hominibus inita fœdera quomodo non sunt plura, quàm duo testamenta. Respond illa dici plura inadæquatè contenta sub diuisione mundi tempore ante Christũ, & alia cõprehendi mundi tempore post Christum.

(··)

DVBIVM III.

Cur in sacra Scriptura volumine, alij libri appellantur veteris, alij noui testamenti? & cur res contenta dicantur vetus, & nouum testamentum?

CONclusio asserit, *pluribus causis, ita vocari generatim*, quia cõtinet res, quæ sunt vetus, & nouum testamentum de mentis testatoris. Vetus secũdũ, quod ante Christũ, nouum secũdũ, quod post Christũ, speciatim verò quòd illi libri, qui dicũtur veteris, prius scripti sunt, qui verò noui, post (secundũ quòd diuiditur totum mundi tempus) in duas partes, vna ante Christum, altera post, qui scripti sunt priori parte dicũtur vetus, qui posteriori nouum testamentum. Qui continet res gestas prioris temporis ex instituto vetus testamẽtum. Qui verò posterioris nouũ. Deinde illi in quibus fuere typi, & figuræ obscuræ eorum, quæ spectabant ad Christi aduẽtũ, & Ecclesiã appellantur veteris. Illi verò qui explicitas, & manifestatas continent figuras, in quibus est veritas manifesta figurata, quam inspicimus reuelata facie, meritò dicitur nouum testamentum. Vetera transierunt, & facta sunt omnia noua.

Secunda cõclusio asserit, quod *in rebus datur testamentum vetus, & nouum, & si ex parte Dei testatoris, & bonorum hæreditatis, tam principalium, quàm minus principalium, relictis alijs adiunctis, & accessorijs sit loquendum dici potest simpliciter vnum testamentum.* Nam ab eodem testatore, & de eisdem bonis, non solent dari plura testamenta. Attentis, tamẽ alijs adiunctis bona hereditatis principalia, & minus principalia dicũtur duo testamẽta. Nã primo ratione adiunctorum, quæ diuersis temporibus super addita fuere, non mirum, quòd eadem res dicantur duo testamenta, nouum, & vetus. Secundò ratione diuersi modi explicandi. Nam fuere proposita eadem aliter, & aliter inuolute, & reuolute typice, & verè, in vmbra, & figura, & in corpore, & figurato *Eandem escam manducauerunt, eundem potum biberunt*, ait Apostolus, sed sub typo, & figura tunc, nunc verò in verite, & figurato. Tertiò tandem ratione variarum conditionum ab Adam ad Christum, & à Christo in finem mundi, fide venturi, & fide præsentis, sub hoc, aut illis præceptis, &c.

Tertia conclusio, *res appellantur vetus testamentum pluribus de causis, & similiter res appellantur nouum triplici ex causa.* Ratio, nam res appellantur veteris. Primò generali ratione temporis, quia illæ res prius datæ, quàm istæ. Lex, & circumcisio prius quã baptismus, & sacramenta ritus Iudaici, quam Christiani fidem

des in Christum venturum, fides in Christum præsentem. Secundò, ratione etiam rerum, quæ sicut aliæ res veterascunt, & in fine, expirant plura data in illa lege, vel spiritualia, vel temporalia senuerunt, & perierunt. Datæ autem post Christum, non obnoxia sunt vetustati, & morti, sed immortalia sunt. Tertiò, ratione modi significādi typica, & in re. Prius obscurè, & confusè, post clarè, & distinctè. Quarta, etiam ratione testatoris. Tum primi testatoris in diuina natura, secundi in natura humana. Tum vetus confirmantis in typica morte in agnis, & pecudibus occisis, nouum verò in morte reali, & vera in se ipso Quartò ratione noui hæredis, vel exheredatis prioribus, vel adiunctis, non exheredatis Iudeis prioribus, gentiles sunt adscripti ad Rom. 11. & alibi sæpè.

Vltima conclusio. *Communia bona vtrique testamenti, principalia, aut min° etiā principalia. Finis, & media, gloria, & gratia ab vno testatore Christo, dici possunt vnum testamentū, vel ad vnum, & idem pertinere, vel certe, potius esse noui, quam veteris.* Ratio, nam omnia illa vim, & virtutem suam ex vno Christo acceperunt, qui in carne apparuit, & morte ipsius reali confirmationem acceperunt. Qua ratione sancti Patriarchæ ante Christum dici solent à Doctoribus omnes esse noui testamenti. August. 2. contra Epist. Pelag. cap. 4. Hi pertinent ad testamentum nouum. Addi post quod data, & legata cum modis, & conditionibus per Christum expectat ad testamētum, quia non solùm pertinent legata data, & danda, sed etiam conditiones gratiæ dandæ conditio, vt crederetur danda per Christum venturum postea vt per Christum qui iam veniisset tunc typicè nunc in rei veritate.

DVBIVM IIII.

An sit diuisio veteris, & noui testamenti apta in species librorū; Historiales, sapientiales, legales, prophetales? & an sit vtilis diuisio. Librorum in capita, & capitum in versus, & quis author illius?

PRrima conclusio asserit, *quòd aptissima sit illa diuisio in species librorum.* Nam tam in veteri, quàm in nouo testamento numerantur illæ species librorum quinam autem ad illas species reducantur. Ipsa nominis impositio, & appellatio congruit materijs librorum. Vt Historiales libris Regum, &c. legales Leuitico, & alijs leges, & ceremonias continentibus. Sapientialem his qui diuinam sapientiam, manifestant. Vti in creatione rerum libro Geneseos, &c. libris Salomonis Ecclesiast. Sapientiæ, &c. Prophetales prophetiæ maioribus, & minoribus. Est etiam in noui testa mēti libris ista

di

distinctiõ quasi specifica Historiales acta Apostolorũ, legales quatuor Euangelia, quibus mirifice diuina præcepta, & consilia ostenduntur, doctrinales, Epistolæ, Apostolorum, prophetales liber Apocalypsis. Ista solet appellari diuisio Theologica à Rua t. 1. & alijs. Alij alias diuisiones ex varijs respectibus afferunt. In veteri in legẽ, & Prophetas, iuxta illud *in lege, & Prophetis de me*, sed temporis penuria cogit omittere, & remittere ad Prologistas; præsertim Serarium à cap. 26. præsertim cùm id non sit magni ponderis, & vtilitatis.

Secunda conclusio asserit, *vtilem esse diuisionem vlteriorem librorum in capita, & capitum in numeros, aut versus pro diuersis clausulis.* Et ratio vtilitatis inde colligitur, nam ex quo primò facta est, ita benigne ab omnibus est amplexata, vt omnes inde impressiones prodierint communiter sub talibus diuisionibus. Numerorum autem, aut versuum pro diuersis clausulis notissimam habet, saltim istam vtilitatem, vt statim inueniatur sub numero id, quod inquiritur. Nec vt olim consumitur tẽpus in percurrendo toto libro, aut toto capite, sed statim occurrit quæsitum sub numero. Nec tempus innaniter consumitur. Omitto alias vtilitates apud prologistas, quia parui momenti.

Vltima conclusio asserit, *quod licet ex Hieronymo, & alijs colligatur antiquam esse distinctionem in versus, & irrepsisse simile ad Latinos quis ista sæculo intermissã, excitarit, ignotum, & incertum existimo*, cum Serario ibidẽ q. 17. qui non aquiescit Henrico dicenti patrem suum Robertum fuisse authorem, & repudiat vt vanam gloriationem. Nec res parui momenti exigit diligentiorem indaginem.

DVBIVM V.

An diuisiones librorum in capita, & capitum in versus, sint canonicæ in Biblijs correctis?

Conclusio asserit, *quod nõ sunt existimandæ canonicæ.* Primò, quia in Biblijs correctis non sunt collocatæ, vt canonicę sed vt esset opus tali distinctione capitum, & versuum pulchre distinctũ. Vnde Salmeron Prolog. 9. dicit, illam distinctionem esse nouam à Latinis, & Græcis PP. excogitatam ad docendi commoditatem, quòd si ratio, & authoritas faueat, posse præcedentis capitis verba cum sequenti connecti, & si meliorẽ sensum conficiant sic explicare. Et eadem est ratio in versibus. Secũdò probatur quia istę diuersiones factę nõsunt à canonicis scriptoribꝰ, nec semper extiterant, sed sunt admodũ recentes, vt cõstat ex dictis. Tertiò, quia sunt eiusdem rationis, & authoritatis cũ summarijs, præmisis ipsis capitibus, quæ licet sint vtiles, quia compendio continent diffusa per caput, tamen non sunt canonicę, nec à canonicis scriptoribus affixæ.

Ad

Ad *Omnis scriptura, &c.*

DISPVT. VIII.

De versione sacræ Scripturæ è primæua lingua in alias, Chaldaicam, seu Thargum, Syriacam, Græcam 70, Latinã, & vulgatam nostram vernaculam, & alias.

SAcra Scriptura dicit habitudinem respectũ, aut connexionẽ ad versionem, seu translationem à primigenia lingua in alias. De quibus disserendum in hac disputatione.

DVBIVM I.

An sit licitum sacram Scripturam à primæua lingua, in qua scripta est, in alias conuersio, seu translatio?

PRima sententia est *negatiua*. Primò, nam, quidam, qui connatus est, fuit punitus mentis insania diuinitus, & alter cæcitate apud Serar, ibidem cap. 11. quæst. 1. Secundò, nam Iudæi indixerũt ieiunium die octauo Tebeth, qui respondet fere nostro decembri ob translationẽ Bibliorum, indici autem non solet ieiunium, nisi ad placandum Deum, ob causam, quę excitat iram diuinam, ex Thalmudo Hierosolymitano. Vbi additur ob translationem 70 fuisse mundum circunfussum tenebris per triduum. Tertiò, nam liber Bibliorum est, liber signatus apud Danie. c. 2. & Apocalyp. 5. & solus agnus Dei potest illum digne aperire. Quartò, nam videtur vtilius, quod à primæua lingua in qua Deus loquutus est per suos scriptores, non fiat versio, aut translatio, quia inde excitatur illius linguæ maius studium, maior reuerentia. Deinde quia sic est libera à periculo ærroris, qui facile accidere solet ex tot versionibus. Deinde quia excussari posset labor grauis, & molestus in addiscendo tot linguas. Vlterius, nam sic inter fideles conseruaretur maior vnitas, ex vnitate linguæ, in qua Deus loquens audiretur ab omnibus, & lex ab omnibus perciperetur. Præterea in verbo Dei est veracitas, & energia, & infirmari per translationem linguam Hebræum contendit Origines lib. 1. cõtra Cels. & in prefectione ad Ecclesiastic. Denique, nam fides, & religio Christiana nõ eget vlla versione, vt recipiatur ab vniuersis, & reciperetur firmius, si in primæua lingua proponeretur sine alijs versionibus, quæ minorem fidem videntur afferre.

Con-

Concluſio aſſerit, quòd *ſit licitum transferre ſacram ſcripturam à primæua lingua in alias.* Eſt communis. Primò, quia id non eſt prohibitum vlla lege diuina, aut humana. Secundò, quia cùm bonum ſit diffuſiuum ſui, conſonum eſt ſcripturam bonam diffundi per varias linguas, & verſiones. Quia latius patet per illas Dei cognitio religio, & cultus, ad plures regiones in vniuerſum orbem. Tertiò, nam nil eſt vtilitatis in Theſauro abſcondito, & fonte ſignato apud Eccleſiaſt. 20. Quartò, nam abſcondere, & obcludere libros ſapientiæ, arguit inuidiam, & inhumanitatem. Iuxta Eccleſiaſticum *quam ſine fictione didici, & ſine inuidia communico.* Quintò, nam cum Deus dederit omnibus naturæ rationalis librum in intellectu iuxta illud, *ſignatum eſt ſuper nos lumen*, &c. eſt veriſimile, non voluiſſe retrahere communicationē doctrinæ ſuæ ſacræ. Sextò, nam Deus miraculis viſus eſt approbaſſe tranſlationes ſaltim 70. & vulgatæ, apud Hieronymum, de quo infra. Denique, nam cum alij libri in alias linguas ſoleant conuerti, cum maxima vtilitate etiam vtile valde erit, etiam ſcripturam ſacram conuerti.

Reſpondetur ad oppoſita. Ad primùm, ideo ita quia malo fine, & malo modo, ſecus ſi ſincere tranſtuliſſent digni non eſſent vlla punitione. Ad ſecundùm, inſtitutum hoc ieiunium à Rabbinis poſt Chriſti aduentum, quia egre ferebant verſionem Græcam 70. publicè legi in Synagogis à pleriſque Iudæis, & plurimos ad fidem Chriſti conuerti. Illud verò de tenebris triduanis, habetur fabuloſſum, præſertim cum floruerit tunc aſtrologia, & non ſit illius vllibi mentio. Ad tertiùm, quod ſemper permanet liber ſignatus, licet in alias linguas transferatur, quia ſenſus eſt ſublimis, & occultus. Ad Quartùm, ſemper venerari, vt verbum Dei in quacumque lingua ſit tranſlatum. Sicut colitur effigies Chriſti latria in quocumque metallo. Deinde illi errores ex accidenti oriuntur. Rurſus illa difficultas honeſto ſtudio labore, & exercitio ſuperatur. Denique licet religio, non egeat verſionibus ad ſui integritatem, non erit illicitum adhiberi, præſertim cum ſit vtile Religioni, quoad dilatationem, & propagationem in alias regiones.

(.·.)

DVBIVM II.

An sacra Scriptura à primæua lingua in alias conuersa sit verè verbum Dei?

Ratio dubitandi. Primò, nã potest dici verbũ alicuius authoris putà Arist. aut Platonis, quod scribitur, & profertur alio idiomate, & charactere, quã ab illo scriptum, & prolatum est, alias diceretur loqui verbo, aut idiomate quod non intellexit, dum vixit, nec intelligeret, si ad vitam reuocaretur. Præsertim cũ vna lingua differat specie ab alia Hebræa à Græca Latina à Gallica. In hoc ærrorre sunt Hæretici asserentes, quòd translata, non sit Verbum Dei, nec authentica. Takerus, Robertus, Iunius, & alij apud Serar. ibidem de editione præsertim 70. & Latina,

Conclusio asserit, *esse Verbum Dei, quòad formale significationis, quidquid de Phisica materiali artificiosa, articulatione, figura, aut sono.* Ratio, nam dicitur id esse alicuius authoris, quod importat, & signat sententiam eius, in quacumque sit lingua propria, aut extranea. Nã sententia est eadem, secũ dũ suam speciem, quoad significationem, & rem significatam, sicut idẽ est panis, secundũ speciem significatus sub differentijs accidentalibus idiomatum, Græco, Latino, aut Castellano. Secundò, nam Apostoli, & Euangelistæ, nonsemel citarunt scripturas vetetis testamenti ex versione Græca 70. &c. & dixerunt esse Verbum Dei, per os Sanctorum, & Prophetarum, ad Galat. 3. cap. Tertiò, nã dicimus Baptizare per hæc verba, Baptizo te, & consecrare per hæc, *Hoc est corpus meum.* Et vti verbis Christi quocumque idiomate proferantur, quamtumuis diuersus ab eo, in quo vsus est Christus, quoad sentẽtiam. Imò, quamuis non redderetur verbum, pro verbo, sed retenta sola sententia. Confirmatur, nam Beati qui in cœlo sunt, & viatores, qui sunt in via dicuntur audisse, & legisse Verbum Dei, licet, nec audissent, nec legissent in idiomate Christi vernaculo, aut Hebræo. Vltimò, nam aliàs soli Iudæi in suis synagogis legerent, & audirent Verbum Dei, & hodie in scholis, & tẽplis nõ legeretur, nec audiretur. Imò inuertitur argumẽtũ cõtra Hæreticos. Quòd si Scriptura sacra à primæua lingua conuersa in alias, non est Verbum Dei, nec authenticum; sequitur, quòd nec ipsi legant, & audiant Verbum Dei. Vnde aptus erit modus conuertendi, si semel referat mentem, & sensum authoris, siue exhibeat sententiam, secũdùm substantiam, siue etiam reddat verbum pro verbo. Nam in eò qui vertit, & transfert duo sunt valde necessaria, & fides in transferendo cum conformitate, & peritia vtriusque

que linguæ ãquã, & in quam fit conuersio, seu translatio.

Respondetur ad oppositã in ratione dubitandi, ex distinctione adhibita de Verbo Dei quoad formalem sententiam, & quoad materiale accidentale diuersorum idiomatum.

DVBIVM. III.

Quis sit optimus modus conuertendi Scripturam è primæua lingua, vt redatur verbum pro verbo, aut sententia solummodo?

CONclusio asserit, *optimum esse modum conuertendi, qui refert optime mentem, & sensum, siuè reddatur verbum pro verbo, siue secus. Habita ratione finis, & circunstantiarum.* Ratio, quia oratio instituitur ad animi mentem, & sensum aperiendum cùm primò profertur, & cum prolata conuertitur. siue seruetur ordo verborũ, & reddatur verbum pro verbo, siue sola sententia, dummodo, ista integrè seruetur parum refert ordinatio verbi pro verbo. Adhiberi tamen post vterque modus, & pœne adhibitum esse constabit cũ de singulis versionibus fiat sermo. Addo requiri in eo qui vertit ad recte vertendum iuxta dicta fides in conformitate sententiarũ, & peritia saltim vtriusque linguæ à qua, & in quam fit versio cum singulari auxilio Dei ne errorem ingerat in transferendo. Iuxta 2. Petri 1. *Omnis Prophetia scripturæ propria interpretatione, non fit, sed Spiritu Sancto inspirati*, &c. An autem requiratur assistentia Spiritus Sancti, tã in scriptore sacro, quàm in translatore dicendum infra, discrimen inter vtrumque.

Arguitur, nam ea videtur versio præferenda, quæ reddit verbum pro verbo ex Hieronymo libello, ad Pamachiũ de optimogenere interpretandi. Et alibi in scripturis sacris (inquit) & verborum ordo mysterium est. Respondetur optimò melior erit modus iste quoad perfectionem accidentalem, non quoad substantialem, quæ saluatur, si mens, & sensus, & sententia transferatur.

DVBIVM IIII.

Quanam fuerit primæua lingua à qua in alias facta est sacra scriptura translatio?

CONclusio asserit, quòd *ab Hebræa.* Ratio ex supra dictis disput. 5. dub 15. Vbi quo idiomate, & charactere, primò scribi cœpit sacra Scriptura. Quod non repeto ne actum agam. Terminus à quo conuersionis fuit Hebræa, terminus ad quẽ multi, & varij, de quibus statim, vbi quotuplices sint versiones.

DV-

DVBIVM V.

An perierit primæuus textus Hebræus totaliter aliquandò?

COnclusio est *desumenda ex disput. 5. dub. 3.* Vbi de sacra scriptura generatim inquiritur, an perierit in excidio tẽpli totaliter, & in captiuitate Babilonica? & an sit restituta per Esdram? nam cum ea fuerit primæua, si perijt, similiter perijsse censeri debet textus Hebræus.

DVBIVM VI.

An originales Hebræi primitiui permanserint in corrupti, vsque adtempora Christi, & Apostolorum?

COnclusio asserit, *venisse incorruptos, sine graui vitio, aut lesione* S. Hieron. S. Tho. in c. 11. ad Rom. lectione 2. *Imò ad nostra tempora in aliquibus vitiatos.* Primò, quia Iudæi adhùc dispersi: & captiui, vigiles fuere custodes quantùm potuit humana diligentia sacræ Scripturæ. Secundò, nam ex Philone constat apud Euseb. Cesar. lib. 8. de Præparatione Euangelica cap. 2. Quod vnusquisque Iudæorum, prius daret vitam quam vitiaret aut derogaret aliquid de lege Moysis. Tertiò, nã Christus (Ioannis 5. & Matth. 16.) Hortatur, *Scrutamini Scripturas*, quòd non consuleret, si codices essent vitiati in integrum, & Apostoli illos, de crimine arguissent, si ita deprauassent. Quartò, nam prouidencia diuina adeò prouida fuit, vt id non pateretur in excidio Hierosolymitano, & captiuitate Babylonica, potiùs conseruauit, vt possent peruenire ad gentes integra sine graui corruptione, & præiuditio, imò Iudæi curarunt, si quòd vitium irrepsit emendare per varias correctiones, Ticum Sophim, &c. Vltimò, quia editio ista nostra Hebraica, quam præmanibus versamus concordat cum priscis antiquis originalibus primæuis, ante tempora Hieronymi, & aliorum. De concordia constabit peritis in lingua sancta.

Argui solet pro sententia, quæ asserit fuisse vitiatos, & corruptos originales prototypi omni ex parte, in odium Christi à Iudæis, & sectæ patrocinium Figuerola, Valẽt. Titel. Cano, Lindan. noster Bachon, Castro Salmant. & alij apud Rua t. 1. controuers. 2. positiua. Primò ex libro inscripto Ticum Sophim, quo correcti sunt errores. Secundò, quia inueniuntur corrupti omni genere corruptionis, discurrendo per singula, per singulorum exempla. Primùm, genus corruptionis accidit cùm pro vna dictione ponitur altera. Secundùm, cum pro vna litte-

littera altera. Tertiũ ratione simi litudinis in figura vnius litteræ cum alia. Quarta ratione variationis punctorum, qui ponuntur loco vocalium. Quinta, eo quòd in textu ponitur vnum, & in margine aliud, diuersi significatus. Vltimò cum ponitur vnum, & pronuntiatur aliud, vt si ponatur יחוה Iehouah ineffabile, & proferatur aliud, ex nominibus Dei. Singulorum accipite vnum exemplum relictis alijs pro peritis linguæ sanctæ. Primùm, exemplum. Vbi Isaiæ 7. legitur *ecce virgo concipiet*, &c. e בתולה Bedulach. posita est alia dictio עלמה Gnalmah in odium virginis indicat infantem, siue virgo sit, siue non. Secundi exemplum. Vna littera pro altera addita, aut ablata. Vbi legitur Zachariæ 2. *Qui vos tangit, tangit pupilam oculi mei* olim עינו Gneni, nunc עינו Gneno, oculi sui, vbi mutatur iod in olem. Tertiũ exemplum in litteris similis figuræ vt בד-נז-כב שש-צע-סס סמ-זן-חה. Quartum exemplum variatione puncti vocalis, quæ facilima, sicut quoad figuras, quoad sensus, & significationes. Sicut accidit in nostra. *Suena* sueña, *sana* saña, *manà* maña. Quintùm exemplum, vnum in textu, & aliud in margine, causa honestatis, &c. vbi legitur Deut. 23. vbi inter maledictiones illatas à Moyse contra violantes præcepta legis. *Vnus accipiat vxorem, & alius construpet.* Legitur in textu ישגלנה Isgalenach, id est construpet eam, in margine וישכבנה, iaceat, & dormiat cũ ea. Sextùm, & vltimum exemplũ additur à Figuerola Valentino cum vnum scribitur, & aliud pronũtiatur, vt in Iehoua, proppsito. Nullum, ergo genus corruptionis, non accidit huiusmodi primæ uo, originali Hebræo.

Respondetur ex dictis probari solùm irrepsisse aliqua vitia, nec vacat examinare singula obiecta, non tamen fuisse adeò vitiatos, quoad omnes, & singulas clausulas impietate Iudaica. Non inficiabor irrepsisse, non pauca, imperitia amanuensium, & Typographorum.

DVBIVM VII.

An qui legitur hodie textus Hebraus sit vitiatus, quoad vniuersas clausulas communi consilio, & perfidia Iudæorum, in odium Christi? vt sit discordia à primitiuo prothotypo?

PRrima *sententia* asserit esse in corrumptũ omnino. Ita Iudæi, & plures Hæretici nostri temporis.

Secunda *sententia* asserit, non in corruptum, sed corruptum, & vitiatum ex incuria librariorum, in aliquibus locis, & in alijs ex malitia Iudæorum, in odium fidei Christi, & religionis Euangelicæ. Vbi viderunt eam florere, & dilatari,

ori, Canus, Lindan. Salmer. & alij apud Rua ibidem, & Serar. ibidē cap. 12. quęst. 2. Primo probatur à Salmeron, quia dici debet esse corruptos, nē dicamus versiones latinas, & græcas esse falsas, in locis, quibus ab illis discordant. Secundò, nam Ieremiæ 8. videtur prædici à Deo. *Vere mendatium operatus est stilus mendax scribarum*, vbi ponitur prēteritum pro futuro, *operatus est*, pro operabitur tempore Messię, ita certò operandum, quòd dici potest, iam operatum. Tertiò, ex varijs exemplarib', quæ manifestant corruptelam. Ex non paucis vnum, aut alterum accepite. Lucæ 3. *videbit omnis caro salutem Dei*, ex Isaiæ 40. non inuenitur in Hebręo, sed est à Iudæis sublatum, vt aboletur memoria aduentus, & passionis Christi. Deinde Iustinus quæritur, quòd etiam abstulerint illud Zachariæ cap. 12. *Aspicient ad me, quem confixerunt*. Vbi illud ad me, quòd notat Deum loquentem omittitur in Hebræo: & similiter illud Psalm. 95. *Regnauit à ligno Deus*. Quartò ex PP. Iustino, Athanas. Hieron. & alijs apud Rua, & Serar ibidem. Quintò ex ratione parum efficaci, nam Iudæi abstulerunt penitus Christum de corde suo, ergo etiam de scriptura, vt erraderetur de terra viuentiū iuxta Hierem. 11.

Tertia *sententia* asserit, esse corruptum textum Hebræum in aliquibus locis, non multis, ex insciti a, & incuria non ex malitia, Iudæorū. Diredo, Ariasmontanus, Ribera in Oseam cap. 12. & alij ibidem.

Prima conclusio asserit, quòd *ante tempus Christi, nil corruptum, aut depranatum, ex malitia Iudæorum, sed ex incuria, & insciti a amanuensium, & librariorum*. Ratio, quia humanum est, errare, & quandoque diligentissimus dormitat scriptor. Et in litteris Hebræis est facilis occasio errandi, propter similitudem, & figuram litterarum. Secundò, quia in illis temporibus non erat Iudæis vlla causa vrgens, turbandi fontes sacræ Scripturæ, vt post aduentum Christi. Tertiò, quia a Christo, nec à plures, illud scelum immanissimum fuit reprehensum, potius remittit ad scrutiniū Scripturarum, vt ad limpidissimos fontes. Vnde haurirent veritatem de eius aduentu, diuinitate, miraculis, &c. imò iubet Matthæi 23. Audiri sedentes *in Cathedra Moysis*, & si tanta fuisset depranatio, non æstimaretur authoritas cathedræ, nec fieret remissio ad deprauatam scripturam.

Secunda conclusio asserit, quòd *pluribus annis post aduentum Christi*, 50. *ante tempora Hieronymi, nil malitiosè corruptum, aut immutatum*. Primò ex pœna incredibili diligentia Iudæorum in conseruanda incorrupta Sacra Scriptura, & ne in canonicis libris,

aliquid immutaretur singulorum librorum versus,& eorum vocabula,& eorum litteras notarunt. Vt integra transmitterent posteritati. De quo latè apud Serar. ibidé ex Rabi Sadaie, Theraftica, & quia cum ipsi essent admodum vigiles,si vidissent quempiam depravantem,arguissent. Secundò,nam D.Hier.admodum vigil, & peritus,si aduertisset quidpiam immutatum,id adnotasset, & ipse dicit, nil immutatum,saltim graue.Tertiò, nam si aliquid esset corruptum,maximè illud,quod de se, & per se dixisset Christus, & pro illo Apostoli,sed de hoc nil, ergo minor probatur ex Hieron.ad c.6. Isaiæ vbi dicit,quòd si quis id audeat dicere ipse non poterit cohibere chachinum. Quartò ex Augustino contemporaneo Hieron. ep.5.de ciuitate cap.13. nam si Iudæi vetus testamentum corrupissent in odium fidei, sibi existimarent inferre nocumentum. Nam existimabant habituros vitam in Scriptura iuxta Ioan.5. *Hæc est vita vt cognoscant te,&c.* Quintò,nam adhuc si vellent nõ potuissent corrumpere omnia exemplaria.Nam erant dispersi in plurimas regiones. Et non legitur initum concilium ab eis, vt ex communi consilio,& perfidia fieret talis deprabatio. Sextò, nam sparsi sunt in varias partes, & fortè ex diuina prouidentia. Vt ipsi darent testimonium esse veras scripturas illas veteris testamẽti.Et deduci potest veritas ex concordia earum, quæ vigent apud nos, & illos. PP. autem allegati in oppositum fortè loquuti sunt de alijs versionibus Iudaizantium, Aquila, Simacho,&c.

Tertia conclusio, *Post Christi aduentum ad annos 500. a temporibus Hieronymi,negari non potest Iudæos malitiose, vbi se offerebat occasio, vbi similitudo litterarum, varietas lectionum, induxisse in textum Hebræum, varietatem, & corruptionẽ, non cum graui detrimento, & incommodo suo, in libros, quos tantopere colebant, sed cum non leui nostro obscurantes, & vitiantes quoad nos.* Serarius,& præcitati.

Probatur ex varijs capitibus, quæ congerit Serar.Isaiæ 9.Ieromiæ 23. &c. vbi adhibitis falsis explicationibus,distraxerũt scripturas in sensus alienos à veritate.

Secundò ex odio induxisse dictas deprauationes, afferentes obscuritatem,& confusionem quoad nos,solet probari ex varijs generibus mutationum supra adductis, hoc enim videntur, vt plurimum probare, allata, à sententia, quæ asserit induxisse omnimodam correptionem in originalia hebræa, inductam aliquam, ex triplici capite. Primò ex additione punctorum,& adducit exempla, ex Isaiæ 9. Ierem. 23.Psalm.18.nobis fat præcitata. Secundò ex mutatione similium litterarum in figura, & adducit exẽpla ex Ieremiæ 23. Psalm.18. in quibus mutatur La-

met

met detracto capite in bab. ה.). Deinde ex Psal. 21. vbi mutatur Bab in Iod, addita superflue aleph. vice camets. In quo sit maximum incommodum Christianis, leue sibi, quibus addi possunt plura alia. Ex Genes. 49. *Donec veniat, qui mittendus est.* Siloh pro Schaluac. 3. Denique contigit ex alio capite, & causa, scilicet, depravatione, in dinumeratione, & consignatione in litteris, & vocibus, qua olim præcautione præoccupata erat depravatio. Exempla producta non patitur nostra brevitas.

Vltima conclusio affert, quòd *qui hodie legitur textus, & præ manibus versatur, sit corruptus, non absolute, & simpliciter omnino, sed secundùm quid. Et ex aliqua parte, & ita in re leui discordia.* Primò, nam negari nō potest, quòd vbi agitur de integritate, & perfectione textus per quemlibet defectuum, induci corruptionem, quæ inimica est integritati. Nam soluitur illa integritas quolibt genere corruptelæ, siue ex nequitia Iudæorum, siue imperitia, & oscitantia amanuensium, & typographorum.

Probatur secunda pars; quòd non sit simpliciter corruptus, sed secundùm quid, & ex parte. Nam non censetur, ita si sit integer, in aliquo exemplari inuiolato, lectione, memoria, iuditio Doctorum, aut sensu Ecclesiæ, quamuis accedat aliqua leuis corruptio ex prædictis, sedita manet, ergo minor probatur. Nam quidam fide digni testantur, se vidisse vnum exemplar manuscriptum integrum, & incorruptum, & si accidat aliquod genus mutationis leuis, ex prædictis periti facile ex antecedentibus, & consequentibus corrigũt, & componunt. Et ita in corde Ecclesiæ, arca mistica seruatur hodie, sicut olim textus integer, & incorruptus simpliciter, licet corruptus, secũdũ quid, & ita non est tanti momenti ista depravatio, vt deficiat integritas necessariæ in his, quæ ad fidem, & mores pertinent. Et ita discordia posita est in re leui, & minuta, quæ immutat sensum purum, aut nil. Denique nam corruptio ex mutatione punctorum parum solet officere veritati, nam potest legi scriptura additis, aut detractis omnino punctis.

Respondetur *ad opposita* ad primum secundæ sententiæ negatur assumptum. Ad secundum intelligendum est de stillo mendaci scribarum, in explicatione scripturarum ingerentium falsos sensus contra fidem, & Religionem Christi. Ad tertium dico primò de illis suo loco adhibendæ sunt explicationes. Deinde non probant esse simpliciter, & integre corruptam, sed secundùm quid, & ex parte. Ad quartum loqui Patres de translationibus græcis Iudaizantium, iuxta dicta. Ad quintum concesso antecedenti negatur consequentia, si intendant

simpliciter omnino, & totaliter sublatum.

DVBIVM VIII.

An in dubio, ad indagandam profundius mentem vulgatæ editionis, sit licitus, & vtilis recursus ad originales Hæbraos?

COnclusio asserit, *vtile esse generaliter loquendo, ob plurimas vtilitates. Si tamen sit dubium de his, quæ ad fidem, & mores pertinent, in dubio, & discordia standum est editioni Vulgatæ, & ad illam, vt probatiorem recurrendum, non contra.* Probatur prima pars, quia vtillis est ille recursus ad hebræa originalia ob plures causas. Primò, vt eruantur plures sententiæ in textu contentę: Vbi Genes. 1. habetur. *In principio*, &c. alij de principio tęporis, alij de principio creaturarum, alij de principio essentiali, per quod omnia facta, Ioan. 1. Cum in Hebræo sólũ sit בְּרֵאשִׁית בָּרָא אֱלֹהִים Bereſith Bara Elohim. *In principio creauit Deus.* Secundò, nam editio latina, intelligitur clarius, si penetrentur linguæ sanctæ emphasses, & proprietates, quas latinus non satis explicauit. Tertiò, vt intelligatur modus loquendi, phrases, proberbia, adagia, & idiotismi, quæ plurimùm lucis afferunt editioni latinæ. Quartò, vt editionis nostræ ambigua verba determinatione vnius in veritate percipiantur. Quintò, vt inter sententias de fide aptior dignosci potuit. Vltima, vt vitia, quæ irrepserũt ex malitia hostis Ecclesiæ, aut incuria facilius dignosci possint. Exẽpla videri possũt apud Rua ibidẽ. Nõ capit, illa nostra brebitas. Probatur secunda pars. Nam editio nostra latina Vulgata edita est diligentissimo studio, peritia linguarum, animi sinceritate, & veritate, vt non supersit ambigendi locus, sed omnis occasio sit de medio sublata. Secundò, nam editio nostra est à Tridentino authenticata, & approbata, vt firmissima regula fidei, igitur in negotio fidei in illa sistendum, vt non sit necessariũ, vlterius aliquid indagare probatius, & certius, & ita meritò est præferenda cæteris. Vnde si in concilio ageretur de correctione editionis vulgatæ in locis in quibus introducta esset discordia, aut vitiam aliquod, mendum, aut simile non esset inutilis recursus ad illa exẽplaria. Nam licet essent viciati, & deprauati, non simpliciter, & ex toto, sed secundùm quid & ex parte.

Argui potest argumentis dubij 6, & 7. & respondetur eisdem solutionibus.

(.§.)

DV-

DVBIVM IX.

An sit aptior sententia interdum relicta in Originali Hebræo, ad fidei dogmata elucidanda, & comprobanda, quàm sit posita in editione nostra vulgata?

CONclusio asserit, *interdum esse aptiorem, sed rarò.* Ita plures apud præcitatos. Probari potest pluribus exemplis de quibus latè Rua ibidem. Ex illis saltim vnum producamus. Nam licet in originali Hebræo sub vno verbo sint plures sententiæ, & non semel omnes de fide, nihilominus vulgatus interpres potuit ibi relinquere aptiorem ad fidei dogmata comprobanda, & id de facto ita contigisse. Ex pluribus vnum accipite, vbi nostra vulgata Genesis. 49. legit, *non auferetur sceptrum de Iuda, donec veniat, qui mittendus est*, legitur in originali Hebræo שילה scilo, id est Messias, vbi verbum illud sustulit occasionem delirandi apud Hebræos. Dicentes quod qui mittendus esset erat Saul, secundùm alios Ieroboan, secundùm alios Nabucho donosor, qui abstulit sceptrum de Iuda, qui fuit expectatus, & veneratus à gentibus, & tulit sceptrum à Sedechia, & duxit illum captiuum. Nam vox scilo (vellint nolint Iudæi) accipi debet pro Messia filio fœminæ concipientis sine viro. Iuxta Chaldaicam paraphrasim, dum pro illa dictione scilo ponitur משיחא Messiae. Deinde vbi nostra Vulgata legit Genes. 30. *inimicitias ponam inter se, & mulierem, semen tuum, & semen illius, ipsa conteret caput tuum*, in Hebræo legitur הוא ישופך ראש Hu Ieschupecha ros vbi ponitur illud pronomẽ hic הוא in terminatione masculina, quia non est neutra vt esset concordans cum semine, & efficitur sensus, quòd semen illius virginis, scilicet Christus se ipso principaliter, & in virtute illius Maria erat attritura capud peccati originalis. Et si vulgatus trãsferat *ipsum*, loco *ipsa* tribuisset Christo, vt principi destructionẽ originalis, & actualium.

Argui solet pro opposita sententia, nam illi originales hebræi sunt venenati, & corrupti, & editio latina est declarata, vt autentica à Tridentino, & illi standũ, & nõ debet minui eius authoritas. Confirmatur, nam qui dicũt in originali Hebræo relictam esse aptiorem sententiam solent argui, & conuitiari præsumptionis, quod se iudicant sciolos, & peritos in lingua sancta, supra interpretem latinum, Sanctum Hieronimum, & alios. Respond. in venenata clausula non esse admittendos illos originales, cum hoc tamen stat, quòd ibi sit relicta interdum aptior sententia, ex ibi contentis, quam sit transcripta in editione

vulgata, & ita nõ sit cõtra Triden dentinum, nam illæ ibi, & aliæ alibi relictæ, sunt de fide. Ad confirmationem, immeritò illi conuiciantur de præsumptione, potius studium earum laude dignum. Quia non damnantes sensum enucleatum à nostro vulgato, incumbunt in alijs ibi relictis eruendis.

DVBIVM X.

Quotuplex sit versio sacræ Scripturæ, è primæua lingua in alias?

COnclusio asserit, *esse plures, & multiplices.* Primò, nam ratione librorum, qui conuertuntur, sunt generales omnum, aut particulares aliquorum, si ratione linguarum in quas conuertuntur, sunt Caldaica, Siriaca, Græca, Latina, & aliæ vulgares, & vernaculæ; si ratione authorum, qui eas fecerunt, alia est 70. Interpretum, alia Simachi, alia Hieronymi, & aliorum. Si denique ratione modi, aliæ sunt probæ, aliæ improbæ, aliæ catholicæ, aliæ hæreticæ. De singulis est discurrendum, & indagandum.

(.§.)

DVBIVM XI.

De versione Chaldaica, seu Thargũ. *Quæ sit versio Chaldaica? cur appelletur Thargum? & quotuplex sit Thargum?*

CONclusio asserit primò, *esse principem affinitate, & propinquitate cum hebræa, & librorum veteris testamenti. Et ita dicitur à plerisque, non tam versio, quàm paraphrasis. Et passim appellata est à Iudæis, & Christianis Thargum.* Asserit secundò, quòd *hæc versio appellata est Thargum, quia est veluti interpretatio, ac paraphrasis.* Nam Thargum est interpretari, & explanare, & inde liber qui voces Thargumicas explanat cuius author Elias Ieui solet appellari Methurgemã. Asserit tertiò, quòd *Thargum est multiplex.* Nã spectari potest respectu authoris, & sic est triplex Thargum Onkeli, Thargũ Ionathæ, & Thargũ Ioseph cœci. Quis Onkelus? An idem, ac Aquila? alij diuersos esse authores scriptis, & temporibus distantes. Verius esse vnum illo tempore excellentẽ inter filios Iaphet, nobilitate, & litteris, cuius mentio Act. 18. Eundem hominem sub dialecto Babilonica appellatam Onkelum, sub Hierosolimitana Aquilam. Quod late Serar. ibidem c. 14. quæst. 4. Quis verò Ionathas? filius Huzialis inter alios 80. præstãtissimũ

vixis-

vixisse aiunt Burgens. ante scripsisse post Christum. Quis denique Ioseph cœcus, quod eius appellatione summa signatur, non corpore cęcus, sed si in iudaismo petinax animo, à varijs, cõpellationib⁹ varijs citatur vir oculatissimus. Nõ vixit ante, aut circa tẽpora Christi, sed sub annum 400. apud Serar. ibidem vbi. Quis Thargum sit scriptus? à quo? quæ authoritas? saltim in pẽtateucho, quę vtilitates? & alia minoris notæ, quæ non patitur nostra brebitas.

DVBIVM XII.

De Versione Syriaca. *Quæ sit versio Syriaca? Quis author? Quæ authoritas? & vtilitas?*

COnclusio asserit, quòd *licet veteris testamenti olim fuerit Syriaca versio, hodie solùm extat typis expressa noui testamenti, versio Syriaca suo charactere edita.* Primo Vienę ab Alberto Cancellario imperatoris Ferdinãdi anno 1555. rogatu Moysis Mesopotamij, ad id missi in Europam ab Ignatio Patriarcha Antiocheno. Et postea, non semel edita est, licet non vtique integre. Deinde vetus testamentũ Syriacum est habitum in magna reuerentia, apud Orientales Ecclesias. De *authore* autem, author noui testamenti habetur S. Marcus à quibusdam, ab alijs negatur, eo quòd apud Originẽ, & alios antiquos nõ est vlla illius mentio, & ideo illis posterior. Deinde nam non apparet quomodo ab illo potuerit conuerti Euangelium Ioannis, & Apocalipsis, nam ante fuit mortuus, scilicet octauo Neroris anno, apud Vsuardum. Alij, *verius ab Apostolis, aut discipulis eorum. De authoritate*, dico, *quod non sit tanta eius authoritas, ac versionis græcæ, & latinæ.* Nam sicut textus græcus, ex quo Syriacus, sic iste omittit historiam adulteræ. Apud Ioan. 8. & alia immutata notata iã in alio emẽdatiori stellula. Denique *de vtilitate*, dico, *habere præter generalem, etiam specialem*, quòd Ecclesiæ orientalis Antiochenæ, & Hierosolimitanæ cum Romana demonstret vsum, & consensum in non paucis. Quis autem primus versor à Siriaca in Latinam, & quæ alię orientales versiõnes? erudite Serarius ibidem (supra nostrum compẽdium) quæst. 5. & 6.

DVBIVM XIII.

De Versione Gręca veteris, & noui testamẽti. *Quot veteris testamenti versiones græcæ? Et an aliqua fuerit ante Alexandrum Magnum? Et an editio græca noui testamenti sit omnino incorrupta?*

PRima concl. asserit, *veteris testamẽti fuisse plures. Vt alij 7. alij aliàs vsq; ad 13. numerauerint*, Nã vix

hodie extat vna integrâ, & pura. Numerari solent. Prima ante Alexan. l. Magnum. Secunda Lagiana. Tertia 70. de qua vt potissima suo loco. Quarta Herodiana tempora Herodis Tirani facta. Quinta, Aquilæ viri è gentili christiani è Christiano Iudæi facti. Sexta, Symachi è Samaritano Iudæi. Septima, Theodotionis ex Martionita Iudei. Octauo, Hierichuntina, quia inuêta Hierichunte in doliis. Nona. Nicopolitana inuenta Nicopoli vbi fuit victoria celebris Actiaca vnde Patres in actio litto re ad Aticum mare. Decima, Origeniana est ipsa 70. vt ab Origine correcta, explicata, & aucta per alios. Vndecima, Luciniana est etiam 70. emendata à mendis, quæ irrepserũt à Luciano Martyre. Duodecima, Hesuhiana est versio 70. ab Hesichio præsbytero emẽdata. Decimatertia Exhieronimiana, ex Latina D. Hieronymi in Græcũ traducta. De quatuor pricipalibus tantũmodo dicendũ, de prima aut Alex. de Lagiana Herodiana, & Exhieronymiana. An aliqua fuerit ante Alex. Magnũ versio græca, alij aiunt, alij negant.

Secunda conclusio, *Verisimile fuisse saltim aliquorum librorum.* Primò ex PP. Clemente, & alijs. Secundò, quia Ioseph lib. 12. cap. 2. narrat viros quosdam fuisse punitos quòd voluerunt inferere suis poematibus aliqua è libris sacris, & non ita, nisi illos legissent in lingua græca, quia Græci non solebant discere Hebræam, nisi inter Iudæos serui, benè contra vt 70. & Iosephus. Nam dicere accepisse non ex libris, sed verbaliter ex Iudæis, Iudæi potius puniti essent, quippe sparsissent margaritas ante porcos. Tertiò ex Iosepho lib. 1. contra Apionem, Platonem in lib. de legibus expressisse Moysem, & Philosophos Græcos fuisse imitatores Chaldæorum, & Egyptiorum, & non imitarẽtur si nõ perlegissent. & de Pytagora sacros libros legisse testantur Patres, vt diceret: *Quid est Plato, nisi Moyses attice loquens*, & ex litteris Hebræorum Theologiã Pitagoram didicisse, & Platonem ipso posteriorẽ, aut à Iudæis verbaliter accepisse, aut in libris Prophetarum legisse. Quartò, nam Rabini Iudæorum in Massecheth Sopherim agnoscunt fuisse Pentatheucum Græce ante versionẽ 70. licet illam versionẽ quinque senes feciſse dicant. Vltimo, nam illi Philosophi antiqui, si accepissent verbo illa, & non à libris sacris græcis non dicerentur compilatores, sed auditores, & relatores. Fateor, quod à Cyrilo 1. contra Iulianum appellantur fures, & ita concluditur verisimile satis fuisse aliquam græcam translationem ante Alex. Magnum.

Arguitur pro Baronio tom. 1. annaliũ 1. quod versio 70. vocatur à Patribus prima omnium. Et simpliciter veterem cui nulla præ-

cessit.

cessit. Secundò, quia si aliqua extaret, non esset cur Ptholomeus Philadelphus, ita enixe flagitasset à Iudæis, sibi mitti viros illos 70 peritos ad illam conficiendam editionem. Tertiò, quia si Philosophi antiqui in suis scriptis intro misserunt aliqua ex historijs sacris, id acceperunt verbaliter à Iudæis, non ex editione aliqua Bibliorum. Respondetur, merito ita æstimari, & vocari à Patribus, eo quòd illa, quæ præcessit erat particularis aliquorum librorum, & vitiata, & ita Ptholomeus Rex illam 70 enixe exoptauit integrã, & perfectam. De vltimo iam constat ex dictis.

Quæritur. Primò, *An verè fuerint versiones Lagiana, & Herodiana.* Prima sententia ficta à Chaluinista ex imperitia, & nouitatum amore. Et quia prolagiana citatur Clemens, stromar, & loquitur de 70. Et quia Iustinus relatus pro Herodiana mendosus est. Et ita Iunius inepte appellat istam suam versionem communem. *verisimile est*, quòd Herodiana sit ex 70 & Theodotione cõflata ab Origine iuxta Hier. lib. 16 in Isaiã. vbi dicitur toto orbe dispersa, non diuersa, & idem alibi.

Quæritur. Secundò, *An verè fuerit versio Exhierenymiana?* Dico fuisse, sed fuit paucorum librorum, & vix ponitur in numero versionum. fuisse autem isto nostro tempore nouam, Græcam, non ex textu Latino, sed Hebraico. Testatur se vidisse Serar. ibidem quæst. 4.

Quæritur. Tertiò. *Qua versio ex Græcis sit omnium nobilior, & Principes.* Dico, *quæ dicitur 70. interpretum.* Primò, ex elogijs plurimis, quibus ab omnibus est insequuta. Secundò, quia omnium industria laborauit, in statuenda, conseruanda, explicanda, illustranda, de illa plura suo loco

Secunda conclusio asserit, de editione, & versione Græca, noui testamenti hodierna. *Quod textus hodie vnus Græcus noui testamenti sit corruptis moraliter secundũ quid, Physice simpliciter, cum olim fuerit in maiori integritate.* Et præter corruptiones, quæ acciderunt ex malitia Hæreticorum, imperitia, oscitantia librariorum. Accidisse ex alijs capitibus. Probatur primo per additionem Matth. 6 additur orationi Dominicæ, quia tuũ est regnum, & potentia, & gloria in sæcula, quæ non fuit in vetribus, vt testantur Patres. Secundò, per mutationem Rom. 12. pro Domino legitur hodie in Græcis tempus scilicet tempori seruientes. Quibus arrisit Lutherus, & alij dicentes fidei articulos mutandos atque accommodandos ocasioni, vt aprobarentur Hærerici nostri temporis mutationes. Nil apud Hæreticos stabile, sed ad tempus mutãtur omnia, Apte S. Athanas. lib. de Synodis. Tertiò per detractationem Græcis hodiernis, non est Historia adulatioue Ioan.

8. &

8.& in multis exẽplaribus desunt illa verba Marci 11. si non dimiseritis, nec pater vester, &c. vltimum eiusdem Euangelistæ, & illa Actorũ 8.si credis ex toto cor de,& illud Ioã.5.ex multis exẽplaribꝰ.Quoniã tres sunt,&c.& ideo Lutherus amplecti maluit Græca exemplaria deprauata, & truncata. Et sic de alijs, latius, apud Serar. ibidem cap.13.

DVBIVM. XIIII.

De versione, & editione 70. Interpretum. *Quænam fuerit ista versio Græca, quæ intitulatur septuaginta interpretum? An à Iudæis missis in Egyptum ab Eleazero Pontifice, ad instantiam Regis Ptholomei? & quis Rex Ptholomeus? An Philadelphus? & à quo petijt interpretes? & quo fine?*

PRima cõclusio asserit, *illam intitulari versionem 70. interpretum, quam Iudæi 72. fecerunt in Egypto, missi ab Eleazaro Põtifice, ad instantiam, & petitionem Ptholomei Regis Egypti.* Est comunis Ser. & Rua ibidem. Probatur ex historia receptissima. Quòd ille Rex Egypti optauit habere in sua Bibliotheca, libros sacros. Misit legatos cũ Epistolis ad Summum Pontificẽ Eleazarum, vt sibi mitteret Iudæos peritissimos in Egyptum ad conficiendam talem versionem,& vt impetrasset misit plurima, & maxima donaria argenti, & auri in templum Hierosolymitanum, & dedit libertatem, plusquam centum mille Iudæis. Ita antiquissimi authores veteres, & moderni,& Ecclesiæ PP. apud Serar.ibidem c. 17. à quæst. 1. & Rua ibidem in tom.1.cõtrou.late. De qua historia examinari debet principiũ medium,& finis.

Secunda conclusio, ad illud à quo petijt Rex ille interpretes asserit, *ab Eleazero Pontifice maximo, & Ecclesia Iudæorum, non ab Hæreticis.* Probatur ex Historiæ veritate.

Tertia conclusio, ad illud quis ille Rex Egypti Ptholomeus, qui petijt interpretis asserit, quod *Ptholemus, Philadelphus, alterius Ptholomei Largi filij*. Ita omnes pauci exceptis, qui deferunt priori. Primò,quia ille prior fuit infestissimus Iudæis,& duxit plurimos in Ægyptum captiuos, iste verò mitior, & magis humanus, qui in numeros Iudęos asseruit in libertatem. Secundò,non obstat, quòd non pauci deferunt priori Ptholomeo Largi. Quia forte Largi tẽpore incepta, & imperfecta Philadelphi tẽpore fuit limata,& perfecta,non quòd eadẽ numero,sed secudũ speciẽ. Quo autem fine, & consilio petierit Rex iste interpretes? Dico bono,implẽdi Bibliothecam in Alexandria optimis libris à diuersis partibus conquisitos. Sicq; eo consilio libros sacros Iudæorum colligendos decreta-

uit.

uit. Quidquid, alij Iudæi recentes scilicet animo capiendi ex Iudæorum lege occasionem vocandi illos, vel abducendi illos à lege patria. Quomodo autem de his libris cognouerit, Rex dico relatu Demetrij Phalerei, qui exul venerat Alexandriam, & fuit præfectus institutus Regiæ Bibliothecæ, an autem fuerit in odio apud Philadelphum, vt non constituerit præpositum, an non? & dato quod ita, potuit visa innocentia res componi propter industriam, & doctrinam, an damnatus, vt aspidis morsu interiret, an casualiter? disquirit latius, Serarius ibidem, quàm sustineat nostra brebitas. Quoties autē Rex petierit libros illos sacros, & interpretes? bis ait Ephaph. Nam cum missi fuissent, scripti aureis litteris, & legi non possent, petijt secundò interpretes. Et fabet August. 8. de ciuit. 11. sed verius vtramque petitionem coniungi in vnā, dicunt alij quippe vnius, & eiusdem negotij. Ex quo resolutum est quæsitum, quo tempore sit facta ista 70. translatio. Respondetur tempore, istius Regis Egypti Ptholomei Philadelphi vt supra.

DVBIVM XV.

Quot interpretes missi ad fuerunt versioni 70? an 72? & quales fuerint? quos libros transtulerint? vbi? & quo tempore facta sit versio? & quanto tempore absoluerint?

PRima conclusio asserit, quòd *missi ad fuere 72. è singulis 12. tribus*, seni, & seni. Est cōmunis Sera. ibidē q. 7. Rua ibidē f. 178. ex alijs. Probatur ex Sixto Senens. quos nominatim ibi ad Lucæ 10. *designauit Dominus, & alios 72.*

Arguitur primò, fuisse 70. tantum, quia solet dici versio 70. Respondetur vocari 70. à maiori numero, & completo, & brebitatis gratia numero rotundo. Sicut 70. discipuli Christi, qui fuerunt 72. & apud Romanos centum viri, qui erant 105.

Arguitur secūdò, nam non potuerunt mitti à singulis tribus seni, & ita non 72. nam tunc, non extabant præter Iudæ, & Beniamim, nam illo tempore Ezechiæ aliæ asportatæ erunt captiuæ. Respondetur primò, extitisse alias tum quia in patria tempore captiuitatis semper aliqui remanserunt ex duodecim tribus, vt colligitur ex cap. 1. Iudith. Tum quia ex duodecim tribus rediere aliqui, licet ex tribu Iudæ, & Benianim latiori numero. Denique, nam qui habitabant in Babylonia, & Iudæa solebant

vltrò

vltrò citroque cõmeatâ, & ita nõ erat valde difficile posse à Summo Pontifice congregari, licet esset aliqua difficultas. Nec obstat quòd in quibusdam libris tantum numerentur tres senes, & in Thalmude Hierosolymitano quinque quia est contra Rabbinos omnes, & alterum Thalmudem, & ita illud mendum subrepsit incuria, aut inscitia.

Secunda conclusio asserit, *fuisse ex Senioribus legis peritissimos, & scientissimos vtriusq; linguæ Græcæ, & Hebraicæ.* Primò, ex PP. apud Serar. ibidem q. 8. Epiph. Iustin. Chrisost. &c. Secundò, nam aliter, non potuit fieri, moraliter loquendo, nam nec Pontifex, & Senatus Iudęorum, non misissent imperitos, vt tota sua republica esset radicula cæteris, nec ipsi susciperent onus suis viribus impar, nec dici post ita fuisse stolidissimos, vt susceperint. Et alij dicũt Sacerdotes, alij Prophetas fuisse. An ex solo Sinedrio Hierosolymitano, vt Metropolim, & gentem orbam peritioribus reliquerint? an ex alijs partibus conducti? *Videtur ex pluribus.* Nec obstat quòd Lutherus dixit imperitos, quia dixit, vt versio haberetur fatua, absona, & nullius authoritatis.

Tertia conclusio asserit, *transtulisse, non legẽ tãtũ, aut pẽtatheucũ, sed omnes libros sacræ Scripturæ, qui eo tempore erant conscripti, & canonici.* Est cõmunis. Primò, ex PP. apud Serar. & Rua ibidem. Secundò, nam si versio fuisset solius Pẽtatheuchi, non satis datum esset desiderio Regis, & amplitudini Bibliothecæ. Tertiò, quia fuit mirabile, quòd diebus 72. vertissent tot libros, & non esset, si quinque libros tantũ versissent 70. viri.

Arguitur pro sententia asserente vertisse solùm legem. 2. Pentatheucum quinque libros Moysis, ita plures ex antiquis, & modernis. Nam in tam brebi spatio 72. dierum, non potuerunt tot libri transferri. Respõdetur, quòd solet accipi ab his nomine legis, nõ solùm pentatheucum, sed totũ vetus testameutum, nam sic accepit Christus Ioan. 10. none scriptum est in lege vestra, quia ego dixi Dij estis, quia locus citatur ex Psalm. 81. idem Ioann. 15. Vt impleratur sermo, qui in lege eorum scriptum est, quia odio habuerunt me gratis, & citatur ex Psalm. 34. & ita non obest temporum brebitas, quia licet esset supra vires humanas, non supra vires diuinæ gratiæ, & adiutorij.

Quarta conclusio circa vbi facta sit ista versio. Asserit *in Egypto in Alexandria seu vicina insula Pharo in 72. cellulis disiunctos, ita vt alter cum altero nõ posset conferre, non in vno palatio, aut Basilica congregatos inter se circunferentes vertisse.* Baron Salmer. & alij apud Serar. & Rua ibidem. Primò ex PP. Iren. Clemens Alex. Cyril. Areg.

&

& alij ibidem. Secundò, quia solet proponi, vt magnum miraculus gentilibus à Iudæis pro suorũ gloria Hebræorum. Quòd singuli singulas versiones fecerunt, & in publicò coram Rege legerunt, & inuentas in mira concordia.

Arguitur pro sententia, quæ asserit in vna Basilica, aut palatio congregatos, & inter se conferentes vertisse. Bellar, Mus. & alij apud præcitatos 1. ex Hieronymo, præfatione in Penthat. Qui tribuit mendatio illam diuersitatæ 70. celullarum. Secundò, quia illarũ, nõ fecerunt métionẽ Iosephus, & Aristæus. Tertiò, quia si edidissent singuli singulas in 72. celullis separati, non tam vertissent Biblia ex Hebræo in Græcum quàm prophetassent.

Respondetur, quidquid de Hieronymo, pro nostra sunt PP. pene innumeri. Ad 2. petitum ex silẽtio Iosephi, & Aristeæ, dico siluisse, sed nõ negasse. Ad tertiũ dico vertisse, sed miraculo ita conueniisse, vt similis fuerit conuersio Prophetiæ in certitudine.

Quinta conclusio asserit, *fuisse factam tempore Ptholomei Philadelphi prioris Lagi filij. Anno? alij 4. alij 5. alij 38. alij 39. regni sui. Ante aduentum Christi? alij 100. alij 230. alij amplus.* Ratio, nam cum ille esset studiosissimus litterarũ, & ampliã dæ suæ Bibliothecæ incumberet. Credibile est illius tẽpore editam esse. Cur autem ab Hebræo in Græcam linguam? ideo, vt inciperet præparari via ad fidem Christianam gentilibus. Quòd latissime pateret lingua Græca. Secundò ex Rua, nam Eleazarus Pontifex à quo missi sunt 70 viri, assumptus fuit ad Pontificatum, non tempore prioris Ptholomæi, sed Ptholomæi Philadelphi prioris successoris. Si fides sit adhibenda chronologiæ Lucidi. Alij sentiunt tempore illius Ptholomæi prioris factã. Sed verosimilior est nostra conclusio.

Vltima conclusio asserit, *absoluisse inceptum opus 72 diebus.* Ita Aristæus, & Iosephꝰ, & recipitur communiter. Ratio nam, non videtur id impossibile operi, cui diuina prouidentia opitulabatur.

DVBIVM XVI.

An inceperint versionem inuocando Deum? quantam adhibuerunt diligentiam in vertendo? & quantũm gratiæ dederit Deus? & an habuerint assistentiam Spiritus Sancti, & illa sit requisita ad translationem? & an semel, vel pluries verterint?

PRima conclusio asserit *incepisse inuocando Deũ, vt ceptis faueret in finem.* Primò, ex Philone qui ait. Suplices ad cœlum manus tendebant.

Secunda conclusio, *eam adhibuerunt diligentiam in vertendo, vt*

initium ab oratione sumpserint, & eas adiunxerint, & à mane vsque ad vesperam, in opus magno labore, & industria incubuisse, & consuluisse traditiones maiorum, acceptarum, præcipuè à Moyse. Et adhibuisse scribas velocissimos, & tandem instructos fuisse peritia linguarum à qua, & in quam Hebrææ, & Græcæ.

Tertia Conclusio *Deus dedit præter concursum generalem, specialē. Qui esse post varius, vel assistentiæ Spiritus Sancti qualis datur scriptori sacro, vel charismæ Spiritus Sancti, qui ab Apostolo 1. corint. 12. dicitur interpretatio sermonum. Efficit quod nil dissedat interpres à mente authoris, à lingua à qua transfert in quam fit translatio, & istud interpretandi charisma, & donum Spiritus S. fuisse his 70. donatum, est veri simile.* Primò ex PP. qui eis tribuunt assistentiam Spiritus Sancti, vel simplicitet, vel secundùm quid. Qua ratione dicunt prophetasse. Quia ista assistētia est quodā genus prophetiæ, licet non quod ponitur proprie in predictione futurorū. Et ita plures PP. in hoc sensu, tamquam afflati numine prophetabant regi ab Spiritu Sāto, & fusse omnibus os vnum. Et Augustinus 18. de ciuitate 43. Quòd Spiritus, qui in Prophetis erat quando illa dixerunt, idem ip se erat in 70 quādo illa interpretati sunt. Nec obstat quod obijci solet ex Hieronimo ibidem. Qui dicit non fuisse vates, sed interpretes tantummodo. Nam primò dici post retractasse prafatione. Secundò in Paralypom. 2. reprehendisse illos aliquando. Tertiò loqui de ratione vaticinandi imperfecta. Quartò, quia vere transtulisse probat, quod Ecclesia per multos annos fuit vsa ea translatione. Imò Euangelistæ citantes.

Arguitur pro sententia, quæ asserit, non habuisse specialē assistentiam, sed protectionē. Primò, quia ex PP. constat habuisse multos errores Genes. 3. *super pectus tuum gradieris*, &c. 70. super pectus tuum, & ventrem. Deut. 2. habetur in Hebræo maledictus, qui pēdet in ligno. Illi addiderunt, omnis. Respondetur primò, quod optime mentem orationis interpretatur, qui exprimit, non solùm de verbo, ad verbum, sed paraphrastice addendo, vel demendo aliqua ex causa rationabili, & relinquēdo sententiam fidei, & morum.

Arguitur secundò, nam omiserunt multa, quæ erant in originali Hebræo. Oseæ 11. *Ex Egypto vocaui &c.* Esaiæ 2. *Quoniā Nazaræus vocabitur*, & de industria plura, quæ pertinent ad Trinitatem, & Incarnationem. Respondent quidam id fecisse, ne Regem Ptholomeū exponerent periculis errandi, & ignorantes putandi esse tres Deos, & reliquisse cætera ad tempus legis Euāgelicæ. Alijs displicet primo, quia Deus intendit translationem illam, vt futuris tempo-

ri-

fibus gentes ex illa haurirent fidem, & iustitiam, nec solo Ptholomeo fiebat illa translatio. Secundò, quia Philo, & Aristæas, dixerunt fidelissimè translata quoad res, & voces, quod non staret, si fuit addirio, & detractio saltim grauis. Respõdetur secundò, quod non voluit Spiritus Sanctus, ę quæ clarè transferri, sed pro commoditate, & vtilitate, illorum captu transferrit, & cum sub vna littera fuerunt plures, satis dederunt si elegerunt fidei consonum. Deinde in rebus fidei, & morum, nil graua, aut dissonum addiderunt, & si hic omisserunt aliquid, ideo quia alibi dictum, aut dicendum. Et additio fuit per modum paraphrasis, & explicationis gratia. Respondetur vltimo loqui, de illa translatione, non in sua puritate sed postquam vitiata fuit.

Arguitur tertio, nam non pauca sunt versa in contrario sensu ex imperitia linguę sanctę. Genes. 16. ex D. Hieronymo venerunt ipsa die serui, &c. de puteo effoso inuenimus aquam. 70. dixerunt, non inuenimus aquam. Deinde idem docuit lib. q. Hebraicarum. Genes. 3. in Hebræo Mutauit mercedem 10. vicibus, & 70. verterũt decem agnis. Respondetur negari non posse irrepsisse postea aliquod vitium, his simile. Deinde sumpsit pro voce agnus, stipendio datum.

Arguitur quartò, nam si editi sunt ex assistentia Spiritus Sancti, quæ est charisma, & donum interpretationis sermonũ, plane edita esset, originali in omnibus confirmis, & non reijceretur ab Ecclesia, vt in pluribus. Respondetur reiecisse vitiatam, non puram, & integram.

Quarta conclusio, 70. *interpretes, non habuerunt illam assistentiam Spiritus Sancti, quæ data est scriptoribus sacris. Sed quæ late dicitur assistentia pro charismate, & dono interpretationis sermonum. Et illa non est requisita.*

Ratio, nam inter scriptorẽ, & translatorem est latum discrimen. Quòd illi est debita, & ineuitabilis assistentia, & directio ne errret, potius edat scripturas infallibilis veritatis, ex tali assistentia inspiratione, & directione. Transcriptori, aut interpreti sufficit assistencia latior, pro ista gratia gratis data, quę in eo posita est, vt ex peritia infusa illius idiomatis, sententiam orationis transferat in aliam linguam. Quod saluari posset etiam transferendo sententiam falsam originalis, dum sit confirmitas inter vtrumque. Et ita translationi, non repugnat falsitas, secus scripturæ sacræ, editæ à scriptore sacro, lingua, & calamo Spiritus Sancti.

Arguitur primò, nam sufficit donum hoc charismatis interpretationis sermonum, vt sit veritas infallibilis in translatione, sicut in originali. Nam illud, non subest falsitati, ergo sicut implicat erraſſe

rasse scriptorē, ita trānslatorē, aut conuersorem. Respondetur, ex probatione conclusionis constare discrimen.

Vltima conclusio asserit, *non semel tantùm (dicunt aliqui) sed saltim bis. Vnam tempore Ptholomei prioris, alterā posterioris Philadelphi. Sed qui dicunt in primo* inchotam, in secundò perfectam, & fatentur vnam, licet quidam dicant, quod sexies, & alijs bis, & septuagies dico *vnam fuisse omnium versionem, vt septuaginta duæ versiones numero discreti exemplaris, viderentur vnius originalis exemplaria, aut transcriptiones, quàm 72. versiones.* Primò, ex PP. nam Rege audiente coram circunstantibus, ita visæ sunt, omniū communi admiratione, & plausu. Tunc autem, non est facta diuisio capitum, prout nunc in editione Romana.

DVBIVM. XVII.

An plausu fuit recepta, ista versio 70. à Rege, & cæteris? & qua ratione postea à quibusdam improbata?

PRima conclusio, *visa à Rege, & cæteris tanta consensione, & concordia inter tot sapientes, & disiunctos meritò cōmuni plausu est recepta, & approbata. Ita vt primo Rex admiratus fuerit religiosse, & stupens susceperit, & flexis genibus, cum inclinatione capitis sit veneratus.* Apud Aristæum. Secundò, institutus fuit dies festus anniuersarius, huius versionis apud Philonē, & alios. Tertiò, Iudæi Alexandriæ audiētes laudarunt plurimùm, & data examinādi potestate volenti. Sancitum est, vt illa versio in posterum omnino immutata maneret, & seniores, & sacerdotes quidquam addenti, aut dementi maledictiones imprecati sunt. Ex Aristæo, Iustino, & alijs apud Serar. ibidem quæst. 17. Quartò, ex Augustino 15. de ciuitate cap. 14. & 18. cap. 44. Christus, & Apostolos ex illa scripturas citasse, ex textu Hebræo, & versione 70. & ego (inquit) vtraq; authoritate vtendum putaui, quoniā vtraque vna, ac diuina est. Citatæ à Christo sunt Luc. 4. *spiritus Domini*, ex Isaiæ 61. ab Apostolis Matth. 1. *Ecce virgo*, ex Isaiæ 7. Rom. 9. *nisi Dominus Sabaoth reliquisset nobis semē*, ex Isaiæ 1. Quintò Iudæi omnes cum ad eos peruenit receperunt, & ante, & post Christum eam sequuti sunt, & legebant in sinagogis. In Asia, Grecia, Egypto, & glorioſis epitectis extulere: gloria Israelis, à Deo instituta, & oculus eius dexter, &c. Sextò, Ecclesia Christiana à temporibus Apostolorum transcripsit, recepit, & in Ecclesijs legit. Vt videri potest in Iustino, Tertul. & alijs PP. apud Serar. ibidem. Imò in nostro sæculo Romanæ, iam edita ex antiquis originalibus Græcis. Denique olim diligenter correcta

recta aliquoties, & dicta fuit communis, & vulgata.

Secunda conclusio, *ista versio adeò proba, est improbata à pluribus nil, enim sine Zoilo bonum.* Primò inuidia Iudæorum, incremento fidei Christianæ, ferè 200. annis post Christum impugnauit. Tum incucientes timorem ex mentitis triduanis tenebris, & ieiunio indicto anniuersario. Tum odio insequentes alios Iudæos, eo quòd retineant solùm græcam in suis synagogis, & conati sunt ex illa relegare. Quibus obstitit Iustinianus Imperator constitut. 146. & tandem exturbarunt conspiratione, aut negligentia Christianorũ. Denique græci Interpretes apostatæ, ac hæretici addentes translationes nouas. Aquila, Symachus, Theodotion. vt dictam obscurarent, & Lutherus vocauit fatuam, & ineptam, & alij negantes authenticam. Imò Hieron. videtur improbasse, & reprehendisse, præsertim in 50 comment. in Isaiam dicit addidisse aliquid. Deinde ademisse, mutasse, extenuase. Subuertisse fortissima contra Iudæos, vt late Serar. ibidẽ q. 18. An recte dico illos reprimendos, quia laudarint Rabini peritiores, & quia malitiosè infamant tot suos seniores, & sacerdotes doctissimos. De Hieronymo, quia pluribus in locis summè laudat, & vitia tribuit transcriptoribus.

(.§.)

DVBIVM XVIII.

Quæ sit authoritas huius versionis 70. in sua sinceritate, & integritate.

Conclusio asserit, *quòd maxime.* Primò, quia Dei speciali concursu, & charismate Spiritus Sãcti, quod dicitur interpretatio sermonum condita est. Secundò, quia maxima adhibita est diligentia. Tertiò, quia miraculis commendata. Quartò, olim à Iudæis, & Christianis approbata, & plausu ab initio à Rege, & alijs recepta. Iuxta dicta dub. præcedenti in probationibus primæ conclusionis.

DVBIVM XIX.

An ista versio 70. olim fuerit depraua ta? & an hodie sit correcta?

Prima conclusio asserit, *fuisse olim vitiatam, & depraua tam.* Primò, quia fuit obnoxia causis ex quibus oriri solent menda. Secundò, ex PP. præsertim Hieronymo præcitatis locis dub. 17. vbi visus est improbare istam versionem, cum certè non improbet integram, & incorruptam, sed vitiatam, & corruptam, & ait esse in vitiata multas depraua tiones, non in sola lege, & Prophetis, sed Hagiographis, & multas mu-

tationes in dictionum, litterarū, & punctorum varietate. Ex non paucis vnum exemplum accipite. In editione Hebræa, & latina nostra Ionæ 3. dicitur? *Adhuc 40. dies, & Ninive*, &c. & in 70. legitur adhuc 3. dies. Secundò, nam Mathusale anni Genes. 5. videntur deprauati dilatatione, vt vixerit adhuc post diluuium 14. annis, & fuerit in arca Noe. Cum ex 1. Petri 3. constet *pauci, id est, octo animæ salvæ factæ sunt.* Irrepserunt ergo in hac versione menda. Quod si Christi sæculo irrepserant, post tot sæcula irrepsisse alias certius erit.

Secunda conclusio asserit, quòd *hodie sit, & extet correcta.* Primò, quia Romæ edita est 70. versio græca, ann. 1587. ex antiquissimo exēplari, manuscripto, studio Cardinalis Caraphæ, iussu Greg. 13. inchoata, & perfecta, & authoritate Sixti 5. commēdata. An autem sit omnino sincera, in sua prisca puritate sit.

Tertia conclusio asserit, quòd *quamuis ista editio sit valde correctior, & purior aliis, ex pluribus græcis, quæ in editionibus Basilienſi, Complutenſi, & regia sunt. Non tamen esse omnino sinceram, & incorruptam.* Prima pars solet probari ex collatione facta inter eas adiuncta præfatione Pontificis, & rescripto. Vbi Sixtus 5. dicit duo, vnum, vt illa editio ab omnibus recipiatur, & retineatur, alterum, ne quis deinceps audeat ad dere quidquam, detrahere, aut immutare. Secunda pars probatur primò, quia à PP. interdum solent citari non pauca, ex versione 70. quæ in ista aliter sunt. Secundò, quia de isto Vaticani dicitur ad litterā rectissime expressus, sed additur modificatio, quoad fieri potuit. Tertiò, quia in eodem Vaticano dicitur aliqua suspicione mendi, non carere. Quartò, ex eo quòd antiqui scriptores non exhibent huius exēplaris lectiones sæpè. Quintò, nam ibi dicitur, quod explicari possunt ex cōmunibus libris quædam, quæ in 70. non habentur, Sextò, quia in illo Vaticano dicitur fuisse dirutas, & atritas aliquas membranas, ab initio Genes. vsque ad cap. 47. & à Psalm. 105. vsque ad 138. Septimò, nam in eadem præfatione dicitur, hanc editionem fuisse concinnatam ex permixtis aliis Aquilæ, Simachi, & Theodotionis vnde contagium contrahere potuit. Vltimò, eo quòd ibidem dicitur in ea elaboratum quantum fieri potuit, vt accedat ad eam, quam 70. ediderunt ex afflatu Spiritus Sancti.

DV-

DVBIVM XX.

An ista editio 70. in initio suo consenserit omnimoda concordia, cum originali Hebræo? Et quæ causa cur videatur dissentire ab illo? Et an sit admittenda, & probanda ista versio 70.

PRima *sententia* asserit, olim cõsensisse tam rebus, quàm verbis. Primò ex Philon. Aristæo, & alijs apud Serar. ibidem quæst. 23. Secundò, ex communi plausu, & acclamatione facta cum primo edita fuit.

Prima conclusio asserit, *dissensisse in pluribus locis, & ita non fuit omnimoda concordia.* Rabbini in 13. locis discordare tantùm quòd iure non debet admitti quoad omnes.

Probatur prima pars, ex PP. Augustino, Ambrosio, & alijs. Præcipuè ex illis, qui tribuunt spiritum propheriæ 70. quibus plures Doctores consentiunt Genebr. Mag. Baron. Salmeron, & alij.

Probatur secunda pars, scilicet, quòd ex 13. locis non omnes admittendi sunt. Probatur, nam licet ipsi contendant assignare in Pentatheucho, quia existimant, quod 70. solùm verterit Pentatheuchum, non in omnibus habent fundamentũ solidum si singuli loci examinentur. Ex illis vnum, aut alterum in exemplum accipite. Cæteri videri possunt apud Serar. ibidem quæstiuncula 22. erudite. Genes. 1. dicent non haberi in 70. verba illa *faciamus hominem*, sed faciam. Sed verum non dicit, nam habetur faciamus, & perito constabit. Genes. 18. dicunt in 70. non haberi. *Risit Sara intra se*, sed cum propinquis suis. Sed sane habetur verbum, quod significat in se ipsa.

Respondetur ad primam sententiam. Non ita laudare, vt respondeant singulis singula verba, sed rebus significatis. Etiam si facta fuerit aliqua leuis mutatio, aut additio, cùm optime sententiæ congruant. Imò Philo ipse aquieuit, dum ait, verba 70. fuisse eiusmodi, vt res in posterum reddant maximè explicatas, & declaratas. Imò quòd istæ editiones Hæbræa, & Græca videantur sorores. Imò vna versio, vt mens authoris exprimatur apte. Et ita phrasim, aut commentarium appellarunt. Ad secundùm dico, illam acclamationem meruisse miram illam concordiam inter se, & cum originali Hebræo. Ad quod non requiritur in omnibus, & simplicis concordasse, adhuc leuibus sat aliquibus exceptis.

Secunda conclusio asserit, quòd *dissensus, & discordia causa fuit, non odium in Iudæos*, quia non legitur peruenisse ad istam deprauationẽ,

nec incendium Bibliothecæ Regis Ptolomei, quia dato quod Archetypa illius consumpserit, non codices transumptos, de quo statim *fuit ergo vna ex alijs quatuor, aut singulæ, aut omnes*. Prima, quòd non reddit verbum pro verbo, sed plurib⁹ existimatur dissensio, cum non sit rerum, sed vt plurimũ verborum. Secunda, quòd significatio multiplex verbi Hebræi cum punctis, aut sine illis, minus peritis videtur discordia cum vere non sit ita habenda. Tertia, quoduis mendum, quod in Hebræo cernitur, aut græco, videtur deprauatio, licet leue. Vltima causa quòd silentium, quod ex Dei mente processit alicuius Misterij Trinitatis, aut Incarnationis, propter finem sibi notum dissensio videatur. Huiusplaciti sunt plures PP. & authores grauissimi, apud Salm. Serar. & Rua ibidem.

Tertia conclusio asserit, quòd *admitti debeat, & probari ista versio, & lectio* 70. ita Ribera ad cap. 3. Ionæ num. 12. & 13. & alij. Licet alij dicant, quos sequitur Zelada reprobãdam in hoc loco, & 2. Paralip. vltimo. Vbi agitur de sepulchro Ioachim, quia in hoc est vitiata. Qua autem ratione sit tuẽda ista versio 70. constabit ex solutione argumentorũ quibus quidem cũ Hieronymo visi sibi sunt triumphare.

Arg. pro opposita. Primò, eo quòd Ionæ 1. nostra vulgata transtulit. *Adhuc* 40. *dies*, &c, in versione 70 sit adhuc 3. dies, sed nequit dubitari de cõcordia nostræ versionis cũ originali Hebræo. Ergo 70. versio male transtulit. Propheta autem non dixit vtrumque. Resp. quòd visa sit insolubilis difficultas aliquibus, & quod non sit via tuendi 70. *Alij Resp.* in defensione 70. in hebræo, & in versione vulgata nostra esse 40. in 70. adhuc 3. sed minor numerus includitur in maiori. *Resp. alij* id contigisse ex incuria transcribentium ex exemplari Ptholomei Philadelphi. Ita excusat, & defendit Ribera ibidem. Aquiescit Tirinus hic errore scriptoris, y, Gamma legentis, id est tria pro, u mi, id est 40. Resp. tandem alij, post finem trium dierum, sicut vulgata post finem 40. dierum, sed 3. non sumuntur, excludendo alios.

Arg. secundò, eo quod apud 70. illud Matthæi 5. *& tu Bethleem Ephrata, paruulus es in millibus Iuda*, dicatur sicut in Hebræo, ab Euangelia verò Matth. 2. *nequaquam minima es*, vbi sibi contradicere videntur. Sicut assertio, & negotio, paruum, & nõ paruum.

Resp. ex concordia infra disp. 9. dub. 20.

(·.·)

DVBIVM XXI.

An perierint archetypa 70. Interpretum? Et quo tempore incendio, aut bello?

PRima conclusio asserit, *periisse archetypa quantum sciri, & nanciſci potest, non verò quoad transumptus. Quoad prothotypa, non quoad ectypa.* Quo autem tempore, & qua forte. Est triplex sententia.

Prima sententia asserit, perisse tempore, quo Iulius Casar occupauit Alexandriam, & incendio combusit Sarapeum. Secunda *sententia* asserit, quòd tẽpore Diocletiani. Tertia *sentẽtia*, quòd tẽpore Theodosij Senioris, quãdo dirutũ fuit tẽplũ Serapidis à Chriſtianis. Et vnaquæq; suos habet patronos apud præcitatos prologistas.

Secunda conclusio asserit, cum prima sententia, *periisse tempore Iulij Cesaris capientis Alexandriã, illo incendio.* Pro quo *nota* (ex Epiphanio lib. de ponderibus.) Primò, fuisse duas Bibliothecas Alexandriæ vna prior, & antiquior, quæ fuit ædificata in *Bruchio*, alia posterior, & iunior in serapio priore minor, & vocata filia illius. Secundò dicit, fuisse potos in prima libros 70. interpretum: in secunda versiones Aquilæ Symachi, & Theodotionis. Tertiò, arsisse secundam Bibliothecam illo bello, & incendio Cesaris, sed fuit postea reparata à Cleopatra donatiuo Antonij, quæ 200000. librorum constabat. Quartò arsisse rursum eandem secundam Bibliothecam in Saropeo à quo dicta est Saropeũ. Quartò fuisse dirutum idem Saropeum tempore Theodosij senioris, de quo loquitur tertia sententia. *Nota* secundò, difficultate esse inter Tertulianum, & Chrisostomum, ille apologiæ cap. 18. Dicit hodie exhibentur Bibliothecæ cum ipsis litteris Hebraicis apud Saropeum, Ptholomei, quæ erat Bibliotheca secunda, & Tertulianus hic scripsit. Post illud bellum, & incendium Iulij Cesaris. Chrysostomus verò scribit suo tempore in templo Serapidis asseruari libros 70. & scripsit post tempus Theodosij senioris. *Nota* tertiò, à nullo audiri, quòd illa Prior Bibliotheca ædificata in Bruchio sit incensa, aut diruta in qua erant Archetypa 70. bene secunda, quæ in Serapio, à quo dicta est Serapium. Ex quo oritur ratio dubitandi, scilicet, non perijsse omnino illa Archetypa 70. vllo modo bello, aut incendio. Nihilominus stat conclusio, & ita prob. Primò ex Amiano, qui dicit, pluraliter, Bibliothecas perijsse, quidquid sit, quod celebritas fuit secundæ, Sarapei nomen, & ita de illa sermonem intulisse. Secundò, nam si superfuissent prothotypa 70. Interpretum non incediſſet, nec per se veniſſet

prauatio in ectypis, sed potuisset saltim à perito, vt Origine corrigi nō ita correxisse indicat perijsse. Vltima, nam ratio dubitandi ex Tertuliani & Chrisostomi verbis concepta vini non affert maximā. Nam Tertulianus solùm dixit suo tempore exhibitas litteras Hebraicas, quod de alijs libris scriptis Hebraicè potest verificari. Chrysost. verò perperam citatur à Galesino sub illis verbis, teste Baronio tom. 2. deinde licet sint digni fide authores, qui testantur legisse fragmentis Græcum, in quò quid simile legitur, scilicet Græcum scriptum à 70. manssisse in secunda Bibliotheca Saropeo. Explicandum est, non quoad authographa, sed apographa.

DVBIVM XXII.

Quæ huius versionis 70. prodiere editiones Latinæ? Et quotuplices Catholicæ, & Hereticæ?

PRima conclusio asserit, *olim fuisse duas.* Prima quæ Latina vulgata appellabatur temporibus Hieronymi, & Augustini. Secunda, Romana quæ prodijt Romæ ann. 1588. authore Flaminio, quæ à Sixto Pontifice commendatur post præfactionem, tanquam fidelis, & ad verbum reddita, digna, quæ in posterum perpetuo conseruetur, & prohibet aliter imprimi.

Secunda conclusio, *Ex textu Græco 70. antiquæ pene innumerabiles prodierunt*, non ex Hebræo immediate ante Hieronymum, nam quilibet ad cuius manus venit codex Græcus audebat edere interpretationem, teste Augustino 2. de Doctrina Christiana cap. 11. Et apud Latinos tot explaria, quot codices teste Hieronimo in præfactione in Iosue. Inter quas vna fuit omnium præstantissima dicta Itala, teste Augustino ibidem cap. 15. & illam à principio acceperat, & retinuerat Ecclesia Romana, & solebat dici vetus, & vulgata. Post Hieronymum editæ sunt aliæ, quibus vsæ sunt Ecclesiæ, & princeps quæ respectu antiquæ dicta est noua versio, & nunc dicitur Trid. sess. 4. Vulgata.

Tertia conclusio, *Latinæ versiones recentes editæ à Catholicis, & ab Hæreticis, sunt plures à Catholicis.* Prima quæ dicunt Santes Pagnini Lucens. Secunda, Isidori Clari Brixiani. Tertia, quam Ariasmont. transtulit in Biblia regia. Quarta Vatabli, qui fuit catholicus, & professor Parisijs. Hæreticum autem versiones Latinæ solent numerari. Prima, Munsterij celeberrima. Secunda Ecolampadij, Tertia, Leonis Iudæ. Non perfecit alij consumarunt, & solet dici Tigurina, Tigurij edita. Quarta Castalionis. Quinta Iunij, ac Tremelij. Vltimò dici Genuensis (cum

(cum Genebrardo) quæ est assuta ex varijs, Vatabli; Munsterij, &c. Quinam autem particulares aliquorum librorum versores nõ capit tempus, nec papirus nostra.

DVBIVM XXIII.

An sit vtile, fieri tot versiones latinas, & quæ omnium optima?

PRima conclusio asserit, *licet sit vtile valde in re extare plures versiones, longe tamen vtilius esset extare solam vnam.* Probatur, nã ex multitudine solent oriri disidia, lites, & contentiones, & in re magni momenti, vt de multitudine græcarum, testatur Hieronymus, & de latinis August. apud præcitatos. Secundò, nam videtur præstantius esse vnum librum Dei verbis, & scriptis quoad fieri potuerit. Tertiò, quia Tridentinum sessione 4. censuit non parum vtilitatis Ecclesiæ Dei accedere, si ex pluribus editionibus latinis inotescat vna, quæ habenda sit pro authẽtica. Quartò, nam licet plures extare, sit eatenus vtile, quatenus ex plurium collatione magis cognosci potest vis periodi, aut vocabuli, aut eius maior expressio, quæ in primigenia lingua continebantur, & plus adiuuent, quàm impediant, tamen ista maior vtilitas, & intelligentia ex collatione plurium est valde paucorum, valde studiosorum, & doctorum. Denique, nam nouatores etiam improbant istam multitudinem versionum, vt Lutherus, & alij apud Serar eruditissime.

Secunda conclusio, *licèt inter Hereticos, vnusquisque suam veritatem commendet, & licet inter catholicos soleant commendari (inter latinas) versio Pagnini, & Leonis, Iudæ, recognita per Theologos Hispanos, omnium optima, & commendabilior est vetus, & vulgata nostra.* Pro Pagnini est Genebr. præfactione in Origen. & Diuus ius in lib. Esther. pro Leonis stat editio Salmanticens. & Lugdunen. apud Pouesin. lib. 2. Bibliot. cap. 11. & index expurg. per Mag. sacri palatij fol. 42.

Probatur altera pars, *de nostra veteri editione vulgata.* Primò ex Trident. sessione 4. vbi dicitur. Quòd sancta Synodus declarat, vt ita vetus, & vulgata editio, pro authentica habeatur. Secundò, quia aliæ editæ huic dant primatum, & huius sunt explicationes. Tertiò, nam adhuc Pagnini in multis culpatur à doctis, teste Genabardo, & Leone à Castro in cap. 28. Isaiæ. Quartò, quia Heterodoxorum sunt prohibitæ iustis de causis, quia intendunt ad fidei dissectionem, & plurimæ rabinizant, & iudaizant aliquæ, & gramatizãt & nouitatibus plena, in sententijs, ordine librorum capitum, & clau-

sularũ, & in nominibus proprijs, vt Iehoua. &c. & in singulis, ineptiæ sunt, dignæ sugillatione, quæ alij de alijs elogijs demonstrant illusioribus, & irrisorijs. Quòd latius Serar. ibidem cap. 18. quæst. 3. quàm capiat angustia temporis. Tertiò, quia adhuc dicti nouatores eximijs laudibus commendant nostrã vulgatam, & illam ex suis præferunt, quæ magis accedit ad illam. Quod latè Serar. insequitur ibidem dicterijs illorum.

DVBIVM XXIV.

De nostra Vulgata versione. *Quis nostræ Vulgatæ author? An D. Hieronymus veteris, & noui testamenti? an transtulerit ex Hebræo votus testamentũ? paucis exceptis, ex Græco? & an ex Græco transtulerit nouum, vel solũm emendauerit?*

Prima sententia asserit, quòd D. *Hieronymus*. Tenent plures authores. *Secunda sententia* asserit, non esse D. Hieronym. ita plures apud prologistas. *Tertia sententia* asserit, esse mixtam versionem ex diuersis authoribus, & partim esse Hieron. partim aliorũ, quæ sententia accipi potest dupliciter. Primò, vt sit solùm aliquorũ librorũ. Secundò, vt alij sint inserti, & adiecti illis, ab alijs authoribus. Iuxta hæc est sententia Bellarmini, qui ait, non vertisse ex Græco nouum testamentum, sed antiquam versionẽ emẽdasse, deinde non vertisse ex veteri testamento, lib. sapientiæ, Ecclesiastici, & Machab. quibus adiecit Salmeron, proleg. 3. Baruc, & Ierem. Vlterius non vetiisse psalterium, sed vertisse alium, & ipsum emendasse. Cæterum pro insertis, & adiectis ab alijs authoribus stat Baron. tom. 2 & Sixt. ad obiectionẽ 8. lib. 8. & alij.

Prima conclusio asserit, quòd D. *Hieronymus author est versionis totius veteris testamenti. Qui ex Hebræo transtulit, paucis exceptis, à tertia sententia.* Primò, ex ipso Hieronymo de scriptoribus Ecclesiasticis. Vbi ait, quòd vetus testamẽtum transtulit iuxta Hæbraicum exẽplar, & Græcæ fidei nouũ reddidit. Secundò, ex præfationibus præmissis ad libros Pentath. Iudices, Iosue, Ruth, libros Regum Paralip. Esdræ, Nehemiæ, Iudic Tobias, Ester, & alios, de quo late Serarius ibidem. Confirmatur ex August. epist. 11. cap. 6. & 18. de ciuitate cap. 43. nostris temporibus presbyter Hieronymus Doctissimus, & triũ linguarũ peritus, ex Hebræo in Latinum conuertit scripturas, quas 70. ex Græco. idem alij Patres.

Secunda pars probatur, quia illi libri excepti, fortè non sunt putati Canonici, vt Ecclesiastes, vel non vidit Hebraicos, vt sapientiã, vt insinuat præfatione in proberb. & Baruch. & præfatione in

in Hieremiam, disertè de Ecclesiastico. Secundò, quia non dicit vmquam illos libros à se translatos, vt dicit de alijs. Tertiò, quia in illis libris habet nostra vulgata versio, verba, & phrases, quæ sunt inuenta apud PP. antiquiores, Hieronymo, v. g. in Sancto Cypriano.

Secunda conclusio, *Damasi iussu S. Hieronymus recognouit, & emendauit nouum testamentum, non verò reddidit ex Græco in Latinum.* Primò ex præfatione ipsius ad Damasum. Deinde secundò ex Epistola ad Augustinũ, inter illius 11. Vbi dicit, in noui testamenti emẽdatione susceipis, &c. Vbi non dicit translatione.

Tertia conclusio, *non vertit S. Hieronymus ex Græco, sed ex Hebræo, vetus testamentum, exceptis paucis, quæ vertit ex Græco, Iob Psalter. & libros Salomonis, quos olim ex 70. edidit.* Primò, ex PP. Hieronymo, Augustino, & alijs apud Serar. ibidem. Secundò quoniam nũquam dicit Hieronymus ex Græco 70, aut aliorum transtulisse, vt dixit de illis, quos ex Hebræo transtulit, nec vllus vsque meminit, è Græco versionis, nec ex ea citatur aliquid. Tertio, nam si è Græco transtulisset vetus integrum testamentum, non defuissent, qui sugillarẽt, & vt canes ad latrassent. Si enim factum, in editione ex Hebræo, magis optata, & necessaria, melius fieret in ex Græco translatione, minus requisita, & necessaria. Quartò, nam vel versio è Græco fuit ante versionem ex Hebræo, vel post, si ante, ipsius æmuli calumniarent, quòd priori nouitate non contentus, aliam, secundam addidisset, & illius ex Græco prioris meminisset, & meminit solùm emendationis, non versionis: si verò post, id fecisset frustra, nam versio ex Hebræo, satis monstrabat, quid inter esset inter versionem Hebræam, & Septuaginta Græcam. Deinde, nam non esset sublata occasio calumniandi calumniatoribus. Præterea esset mirum, cur illa prior ex Hebræo permansisset, & hæc posterior ex Græco omnino interijsset.

Argui potest Epistola ipsius inter August. 11. cap. 5. & 6. Vbi insinuare videtur. Dicere cõnatus sum, &c. *De Græco in Latinum transtuli.* Respondetur loqui de paucis illis exceptis, Iob, Psalterio, & quos de Græco in Latinum transtulit, cum cætera veteris testamenti ex Hebræo transtulerit. In Psalterio autem laborauit quater, nam bis è Græco, vnam secundùm editionem tunc vulgatam, alteram secundùm aliam minus concisam. Deinde alias duas, vnam ex originali Hebræo, alteram ex originali Græco 70.

Quarta conclusio, *negari non potest. Quòd D. Hieronymus sit author nostræ totius vulgatæ editionis, quodadmodo veteris, & noui testamenti.* Ratio est de veteri, quia ex He-

Hebræo tranſtulit, paucis exceptis, quæ ex Græco. De nouo verò, nam totum nouum ex Græco correxit, & ita dici poteſt author illius, ratione tranſlationis huius, ratione correctionis. Antecedens ſolet probari de veteri, primò nã verſio noſtra latina veteris teſtamenti concordat cum Hebræo potiùs, quam cum Græco (paucis illis exceptis) & nullus legitur præter ipſum ex Hebræo edidiſſe vetus latine. Nã quæ ante ipſum præceſſere, ex Græco ſunt translatæ. Quod ipſi à Rufino vertitur in calumniã. Quòd nulli ante ipſum auſi ſint ex Hebræo vertere. Secundò, nã Hieronymus lib. de optimo genere interpretandi, & præfatione in paralip. dicit, in codicibus antiquis latinis, non inueniri aliqua loca, quæ inueniuntur in noſtra vulgata editione citata ex veteri teſtamento, vt ex Oſæ 11. *ex Egypto vocaui, &c.* apud Matth. 2. ex Zachariæ 12. *Videbunt in quẽ tranſfixerunt.* Apud Ioann. c. 9. ex Iſaiæ 54. *oculus non vidit, nec auris, &c.* apud Apoſtolũ. 1. Corint. 2. & ita non eſt ambigendi locus, quòd noſtra latina vulgata ſit abipſo edita. Tertiò nam in noſtra vulgata verſione leguntur aliqua, quæ ſunt in Hebræo, & dicit ſe vertiſſe, in codicibus antiquis latinis aliter leguntur, non ergo illa editio latina, ſed iſta noſtra vulgata habet authorem D. Hieronymũ. antecedens probari poterat plurimis exemplis. Accipite vnum, & alterum. Olim legebatur in codibus Geneſ. 2. *Compleuit Deus die 6. opus ſuum*, nunc in noſtra legitur *Die 7.* Olim, *immiſit Deus ecſtaſim in Adam*, nunc *ſoporem*, ſed ita in editione D. Hieronymi, ergo illius author. Quartò ex PP. qui vno ore fatentur ex Hebræo in latinam linguam vertiſſe. Aug? Fulgentius, Eucher. Beda, & alij apud Prologiſtas, præſertim Serar. cap. 19. quæſt. 4. Deinde, quintò, nam adhuc authores ſententiæ aſſerentis, eſſe mixtam, per interpolationem ex adiunctis, ab alijs authoribus, negare non poſſunt aliquo modo authorem, aut certe fateri abſolutè, quia à maiori parte ſumi debet denominatio. Secundæ partis ratio. Primò, quia iuſſu Damaſi, Pontificis facta eſt ex Græco, non verſio, ſed correctio. Secundò, quia non eſt vllus, qui neget, quòd noui ſit author, aut corrector. Tertiò, nam Latini ante, & poſt Hieronymum vnam, & eandem verſionem ſequuntur noui teſtamenti, & ita apparet eandem eſſe, quæ fuit ante Hieronymum, & quæ ab eo correcta, exceptis pauculis ex incuria commiſſis.

Quinta concluſio aſſerit, quòd *noſtra editio, vulgata, non ſit tota Hieronymi, tamquam tranſlatoris.* Primo, quia ex Hebræo ſaltim aliqui præcitati libri, non ſunt ab eo tranſlati. Et an idem ſint correcti ex Græco, non conſtat, licet ſit opinabi-

nabile, verum est extare translatum ex puriori 70. psalterium, & à nostro sæpè diuersum inter eius opera, & licet ex Hebræo non sit facta illa, psalterij translatio, ipsi tribuitur, quia est eius emendator, sicut noui testamenti, & ita dicit cõclusio, editionem veteris non esse totam Hieronymi, saltim tamquam translatoris. Secundò, nam vulgata veteris testamenti, non est tota Hieronymi saltim quoad aliquos versus, sed mixta. Nam in Psalm. 13. videntur inserti tres versus ex editione Romana, & in nostra editione, & versione, aliqua sunt, quæ aliter erãt vertenda ex sententia D. Hieronymi, ex Genes. 1. pro *Spiritus Domini ferebatur super aquas. Spiritus incubabat, confouebat.* cap. 2. pro *paradisum voluptatis, paradisum in Hedenis principio*, & alia non pauca, apud Serar. ibidem.

Vltima conclusio asserit, *Quòd editiones Bibliacæ D. Hieronimi sunt editio nostra vulgata, & ita illius ipse author, translator, aut corrector, aut saltim vetustioris innouator.* Ratio sumitur ex prædictis conclusionibus.

Obserua transtulisse, quos transtulit, instituto conuenientissime retinuit antiquæ latinæ verba, & periodos, & non mutarit sententias, si retineri potuerunt, ad vsum Ecclesiæ prudenter, & fideliter.

DVBIVM. XXV.

An S. Hieronymus semel confecerit versionem Eccl. siaste, ex Hebræo, an pluries? quoties? & an vllum alium librum, præter dictum? & quomodo? quam optime officio interpretis?

CONclusio asserit, *vertisse librũ Ecclesiastes bis ex Hebræo, alium verò librum integrum, nullum. Et dici non posse vertisse sepius ex Hebræo aliquos libros*, nisi vellit aduersarius dicere, multiplicem interpretationem ex Hebræo vnam, & ex Græco alteram, illam veteris, istã noui testamenti, illam interpretationem correctionem proprie appellet.

Rario nam semel vertit Ecclesiastem, sine commẽtarijs, vt ostendit præfatio in eius librum, semel verò cum commentarijs, vt constat ex proœmio eiusdem ad Paulam. Altera verò pars probatur dictis dubio præcedenti. Quos libros vertit, & semel an sepius? Altera pars probatur, nam boni interpretis officio fingitur, qui peritus est vtraque lingua à qua & in quam. Et adhibet diligentias requisitas, sed ita Sanctus Hieronymus, vt constat ergo.

(.:.)

DVBIVM XXVI.

Quam peritè, diligenter, & fideliter verterit, & emendauerit, S. Hieronymus?

PRima concluo asserit, *summa peritia linguarum Hebræe à qua in latinam transtulit, & Græcæ, à qua in latinam correxit, & emendauit.* Et fatentur, qui legerunt eius opera, & doctissimi in linguis suo sæculo, & nostro. August. Isidor. Beda, & alij, apud præcitatos, præsertim Serar. late ibiem quæst. 6, imò ipse Hieronymus narrat, quanto studio ab incunabulis in latino sermone, & in linguis Hebræa, Græca, &c. incubuerit. Et præceptores Christianos, Iudæos, & magno pretio consuluerit, adhibito, & repetito studio. Et fatentur etiam nouatores. Licet Lutherus linguæ Hebraicæ indoctum appellauerit, sed qui fatetur, se cœcum, & ignorantem linguarum, quomodo iudicium potest ferre de coloribus?

Arguitur primò, nam si ita peritus fuisset in Hebræo, non dissentiret sæpè editio Latina ab originali Hebræo, sed dissentire, notarunt Caluinus Kemnitius, & alij. Respondetur, non dissentire, sed ita quibusdam videri, vel quia vtrumque textum habent mendosum, vel quia significatio vocis Hebraicæ est multiplex, & qui probat vnam solet reprobare aliam, & immeritò, si locus admittit significationem vtriusque. Et non est bona illatio, vna significatio conuenit loco, ergo alia inconuenit.

Arguitur secundò, nam si ita peritus fuit in Hebræa, & Latina non inuenirentur in nostra editione verba illa, tam barbara, & impolita. Respondetur in scripturis res magis sunt expectandæ, quàm verba, & probari magis orationis perspicuitatè, maiestatem, adhuc impolitam, quàm valde comptam picturatam, fucatam, quibus res aliter quam est obijciatur. Præsertim, si de industria pro doctis, & in doctis conficiatur versio. Sed do ita, in aliqua parte, qua relictus est scriptor scribere pro suo stilo minus culto; plures alij scripserunt politiores.

Arguitur tertio, nam Iunius dicit lib. 2. cap. 13. Quòd præceptores Iudæi sint pessimi, & ex vsu illorum, non probat D. Hieronymus, esse in Hebræo peritum. Respondetur malos moribus, dialecto peritos audiri posse, & si quid vtile dicant ad intelligentiam scripturarum admitti prudentia, alia respui, vt fecisse creditur S. Hieronymus, vt gẽma seligitur ex luto.

Secunda conclusio, *vertit, & emendauit prædictos sacræ Scripturæ libros summa diligentia, & fidelitate.* Probant plura. Primò nam in rebus minimi momenti adhibuit magnas, in restanti ponderis adhiberet summam. Secundò multitudo æmulorum impellit ad du-

duplicem attentionem, & diligentiam, sicut calcaria equos ad volandum. Secundò, nam id probat fere omnium consensus (sciolo Lunio, & inepto excepto) quo eminentior Hieronymus oscitans, quàm ille vigilans. Probatur altera pars de fidelitate in vertendo, quæ non potuit non esse maxima, quæ versiones alias, Aquilæ, Simachi, Theadotionis, ad examen vocabat in suis scriptis. Imò & 70. Quòd si postea vlterius aliquid emendauit in versione, id ipsũ est argumentum fidei, & diligentiæ. Ex motiuo veritatis, Religionis Christianæ, fidissime laborauit.

DVBIVM XXVII.

Qua ope diuina afflatus verterit, & emendauerit Sanctus Hieronymus? An sit perfecta ista nostra editio Latina, ex assistentia spiritus Sancti? & an sit requisita?

PRima *sententia* asserit, fuisse factam, non sola ope, & auxilio generali, sed speciali, qualis est assistentia Spiritus Sancti, & ita errare non potuisse. Plures apud Rua tom. 1. à fol (mihi) 199. apud Serar. ibidem q. 8. Salmer. Cano Titelm. & alij. Primò, nam si versio 70 facta est ex assistentia Spiritus Sancti speciali, saltim ex charismate qui ex 1. corint. 12. dari solet, vt singulare auxilium. *Interpretatio sermonem, genera linguarum*, &c. quo dirigitur interpretes ne errret à vera mente, & sententia authoris, cum alias de cursu temporis esset abrroganda, melius dici debet, ita factam nostram editionẽ latinam. Quia Ecclesia egebat regula certa pro decidendis rebus fidei. Et erat duratura perpetuo, & approbanda à Tridentino. Ecclesia autem latina est totius Ecclesiæ Christi pars nobilissima, & ita interpres ad interpretationem, & versionem huiusmodi, debebat esse instructus, non solis auxilijs generalibus, sed isto speciali, qualiter decebat, Deum dare interpretẽ, omni errore immunem. Secundò, nam huiusmodo versio, secũdũ se, & rei ipsa fuit à principio authentica, & pro tali erat declaranda, sicut à Tridentino declarata est sess. 44. sed ab initio authenticæ necessaria fuit assistentia Spiritus Sancti, quæ inducit omnem veritatem, & reppellat omnis errorem. Tertiò, nam D. Hieronymus peritiæ suæ, & industriæ humanæ, adiunxit implorationem diuinæ, per orationes, & preces, non pro solo adiutorio generali debito, ergo pro speciali.

Secunda *sententia* asserit, factam fuisse ex sola ope, & cõcursu generali, & illo solo adiutum interpretem. Et id circo potuisse errare, & interdum erasse, ipse fatetur. Tenent plures apud Rua ibidem, & Serar. similiter Drieda

An-

Andreas, Vega, & alij. Qui dicunt non errasse in editione approbata à Tridentino, sed errare potuisse. Primò, nam post interpretes solis adiumentis humanis præmunitus, ingenio, peritia, diligentia, ope generali Dei, non errare in versione, & tamè post attētijs principijs, quibus est præmunitus. Secundò, nam si fuit adiutus speciali auxilio aut assistentia Spiritus Sancti in versione sua non errasset, nec posset, sed errauit ergo. Minor probatur, tum ex ipso corrigente aliqua, tum quia aliud positum est in textu post versionem, vt Isaiæ 59. Pro festiuitate pauor. Deinde ex ipso Hieronymo præfatione in Pentath. Vbi distinguit inter vatem, & interpretem, *aliud est esse vatem, aliud est esse interpretem, ibi Spiritus ventura prædicit, hic eruditio ea quæ intelligit, transfert.* Vbi dicere verbo interpreti, solam adesse industriam, & diligentiam humanam, & ita sibi datam assistentiam Spiritus Sancti specialem, numquam cognouit. Et S. August. Epist. 111. cap. 6. *falli potuisse*, docet. Et Epist. 19. *Non arbitror tuos libros legi velle, vt Apostolorum, & Prophetarum*, carentes omni errore. Et idem alibi sæpè. Tertiò, nã si facta esset ex assistentia Spiritus Sãcti, fuisset statim ab Ecclesia recepta, & nõ post tot annos, sed fuit, quia olim fuit duplex versio latina. Vltimò, nã si facta esset ex assistentia Spiritus Sãcti, nõ permiteretur ex illa ad originales Hebræos recurrere pro indaganda certa veritate.

Prima conclusio asserit, *non requiri assistentiam Spiritus Sancti ad versionē, aut translationē, ad effectum interpretis, sicut ad scriptoris*. Ratio ex notissimo discrimine inter officiũ scriptoris sacri, & interpretis, aut translatoris, quòd illud requirit illam, non istud. Nã requirit ad veritatē infallibilem scripturæ, vt regatur à Spiritu Sancto, cuius est lingua, aut calamus: ad munus autē translatoris nõ ita. Nam ad genus versionis, solùm requiritur, quòd intra genus versionis sit concordia inter rem translatam, & originale, vt nil sit dolosè adiectum, diminutum, aut immutatum, siue res translata sit vera, aut sit falsa. Nam si fabula ex Hebræo redderetur in latinum, in genere versionis nil requireretur, quàm inter originale, & translatum omnimoda cõcordia, & fidelitas. Difficultas est, an licet non sit requisita, habuerit illam.

Secunda conclusio asserit, quòd *licet sit difficile diffinire vtra sententiarum sit probabilior*, quia vtriusque possunt probabiliter dissolui fundamenta, vt expendit mature Serarius ibidem quæstiuncula 8. & in solutione dicat quòd negans loquitur de inchoata, versione, nondum perfecta, cui licet aliquod delere, aliud addi, licet in consumata, & perfecta non eraset. *Tamen existimo habuisse, non solùm opem generalem, sed specialem, non quæ sit in assisten-*

tia

tia Spiritus Sancti, directiua infallibiliter, ſicut ſcriptores ſacri, ſed in chariſmate, aut gratia gratis data (quæ 1. corint. 12. dicitur, *genera linguarum, & interpretatio ſermonum*) *nõ ſolùm in genere verſionis fideliter tranſcriberet, ſed ne erraret à vera ſententia tranſcribenda, iuxta mentem authoris, expreſſam in originali; in negotio fidei, & morum ſaltim. Et ita manaſſe à Spiritu Sancto in hoc genere perfectã, ſecus in alijs negotijs minoris notæ, in quibus relinqui potuit obnoxia erroribus.* Ex Rua, & alijs deduxi. Suadeor 1. nam Eccleſia egebat regula pro decernendis rebus fidei, & morum, & duratura perpetuo, in perfectiori ſtatu, quàm olim, ſine tot chariſmatibus (ex Chriſti meritis) & approbanda à Tridentino, vt verè eſt approbata. Credibile, ergo eſt ab initio ita editam, vt ſit facta ex auxilio ſpeciali, quo non errraſſet, non ſolùm in genere verſionis, fideliter, & concorde tranſcribendo, ſed ne errraſſet à mente authoris, ſibi expreſſa antiquo Hebræo, aut Græco originali, ſi non in omnibus, & ſingulis minutijs, ſaltim in negotio fidei, & morum. Nam ſicut donum alicuius chariſmatis dari potuit vni, ad plures effectus, alteri ad pauciores, vt apte Suarez in 3. part. quæſt. 7. articulo 8. diſputat. 21. Ita ſpeciale Dei auxilium, ſiue ſit gratia gratis data, ſiue etiam aſsiſtentia directiua Spiritus Sancti, dari, ne errret, non ſolùm in genere verſionis in vertendo fideli concordia, ſed ne errret in aperienda vera ſententia, iuxta mentem authoris, in negotio fidei, & morum. Licet non extendatur ad vlteriores effectus, vel dirigendos veros, vel remouendos falſos. Confirmatur, nam talis latina verſio ab initio, nil habuit contra fidem, & mores, quid ergo inconuenit dicere, ita manaſſe à Spiritu Sancto, non caſu, ſed dono, & ſpeciali; iuxta dicta. Antecedens autem ſatis probat approbatio Tridentini qua cum omnibus ſuis clauſulis probatur, vt authentica. Et non probaret, nec proponeret Tridentinum aliquod falſum ſequendum.

Reſpondetur ad oppoſita. Ad primæ ſententiæ, non eſt opus. Quia militant pro noſtra. Ad ſecũdæ ſententiæ. Reſp. a primũ quòd licet induſtria, & peritia linguarũ inſtructus, poſſet non errare in genere verſionis in fideli cõcordia, egebat altiori adiumento, ne errraret à mente authoris, expreſſa in originali in rebus fidei. Ad ſecundùm dico, non errraſſe in negotio fidei, & morum, ſed in alijs minoris notæ, in quibus relictus, vt poſſet errrare. Satis eſt, vt aliquod opus manans à Spiritu Sancto, ſit bonum, & perfectum, non tamen eſt neceſſe, vt ſit optimum, & perfectiſsimum, & excludat etiam minutiſsimos defect⁹. Ad Tertiũ, non conuincit, nam liberum eſt

Ec-

ecclesiæ libuerit tempore ad mittere, aut probare, quod aliàs est capax, & dignum tali approbatione.

DVBIVM XXVIII.

Quæ olim ab initio authoritas? receptio? & approbatio nostræ versionis vulgatæ? decursu temporis, & nunc?

CONclusio asserit, quòd *in initio non placebat omnibus in vita Hieronimi, post mortẽ cœpit magis, & magis pluribus placere, & tandem sola illa versio in Ecclesia latina obtinuit authoritatem.* Ratio, nam licet sit duplex authoritas (sicut hominũ) vna in se alia respectu aliorũm in cognitione, & plausu, & approbatione (quidquid de prima) loquẽdo de secunda in nostra versione, in initio, dum pluribus placuit, displicuit alijs. Et inter eos, Rufinus lib. 2. inuectiuarum improperat de Magisterio, vt qui appellabatur Barhanina irrisione appellaretur Barrabas, & quòd fuit audacia compilare Spiritus Sancti depositum, & instrumentum, dum immutauit, & correxit errorem. Et illius editionem Apostolicam arguere erroris, & dare gẽtilibus occasionem incredibilitatis. Nam præcessit error, vbi sequitur emendatio & non est diuinum, quod est immutatum ab homine, & quod Iudæi coegerunt, de ordine Christianorum fanda, & nefanda scribere, & turbari pacem Ecclesiæ, & generari scandala. Cæterum placuisse pluribus constat, ex penè innumeris elogijs, in præfationibus, &c. in eius libris.

Cæterum, *post mortem capisse versionem istam magis, ac magis placere, & probari.* Constat ex varijs hominũ indicijs, & approbationibus, quibus sensim adoleuit authoritas. S. Gregorius Magn. Epist. ad Leand. c. 5. Qui a sedes Apostolica, cui authore Deo præsideo vtraque versione vtitur, ex vtraque fulciatur studij mei labor. Vbi ante Pontificatum incepit sequi versionem Hieronymianam, & amplecti cœpit, in sacris lectionibus, in templis, & simul cum antiqua in Ecclesia fuit recepta.

Denique *in Ecclesia latina adeptam fuisse authoritatem.* Probatur, nã dupliciter adepta est, vel ex horum Doctorum approbatione recipiẽtium, vt meliorem, & magis conformem veritati Hebraicæ, in Ecclesia legi, in contionibus citari, in concilijs memorari, & in commentarijs explicari, cùm esset illa optima Itala, paulatim excidere plures, & inualuit nostra latina. Secundò, in Ecclesia latina obtinuit authoritatem ex Ecclesiæ præcepto, vel dato à Pontifice, vel consuetudine recepta, quæ instar legis fuit quod certius, & mansit vsque ad Tridentinum in

quo

quō est præceptum iam expresum decreto sessione 4. *Sacrosancta Synodus, &c.* statuit, & declarat. Quænam ex latinis editionibus pro authentica habenda sit. *Vt hæc vulgata editio, quæ in Ecclesia probata est in publicis lectionib⁹, disputationibus, &c.* Vbi est duplex, pars affirmans, & negans, præcipiens istam habendam pro authentica, & prohibens illius repulsam, aut repudium.

DVBIVM XXIX.

Quæ & quanta versioni nostræ vulgatæ sit tributa authoritas à Tridentino? An in genere versionis tantum? Et an accipienda definite cum certis modificationibus? Et an secundùm se, absolute, & simpliciter, aut respectivè, cōparatè ad alias editiones? Hebræas, Græcas, & Latinas, præteritas, præsentes, & futuras? Vt omnibus præsentibus anteponatur tali decreto? Et an amplecti debeat cum omnibus, & singulis partibus? & an posit fieri melior?

PRima conclusio, *authoritas, authenticatio, & approbatio nostræ versionis latinæ, per hæc verba tributa est à Tridentino* sess. 4. *Sacrosancta Synodus considerans, non parum vtilitatem accedere posse Ecclesiæ Dei, si ex omnibus latinis editionibus quæ circunferuntur sacrorum Bibliorum, quænam pro authentica habenda sit innotescat: statuit, & declarat, vt hæc ipsa vetus, & vulgata editio, quæ longo tot sæculorum vsu in ipsa Ecclesia probata est in publicis lectionibus, disputationibus, prædicationibus, & expositionibus, pro authentica habeatur, & vt nemo illam reijcere quouis prætextu audeat, aut præsumat.*

Secunda conclusio asserit, *editioni huic nostræ vulgatæ emendatæ rectissimè à Tridentino tributam authoritatem, & authenticatione dictā.* Ratio, nam in Ecclesia latina erat maximè necessarium, & vtile vnā versionem publica authoritate ornari, & probari, sed ista est omnium optima. Nam primò est antiquissima inter latinas, quę viguit iam ante mille annos, & ita appellatur à Concilio *Vetus.* Secundò ab authore optimo doctissimo, linguarum peritissimo, diligentissimo, & fidelissimo elaborata, S. Hieronymo. Tertiò à viris doctis, tot sæculis recepta, laudata, vsitata, & commendata. Quartò ab Ecclesia sæculis aliquot, recepta, & approbata suis vsibus in lectionibus, &c. ante Tridentinum teste Hugone, Victorino, vt constat ex citatis verbis Tridentini, longo etiam sæculolum vsu, in Ecclesia probata est. Rectè ergo haberi debet pro authentico, quòd tāta pro se habet. Vltimò, quia Hæretici non possunt vnā, ita probatam exhibere, omniū ferè plausu, & quæ cōtra nostrā improperant, & adlatrant, non possunt labefactare. Nā dicere Triden. decretum, edictum Barbarum, & irrationale, & nos obsequi decreto inepto, & in

quo, & verſionem ſcatere ærratis tertio quoque verſu, & diſſona Hebræo, & Græco, & quædam omittere, & quædam adijcere. Nam ex nimia paſsione eructant tot mendatia. Vt bene Bellarminus, & ex probatione ſatis conſtat, in hac verſione tot requiſita concurriſſe, vt in eam non cadant obiecta. Vt de ſingulis iam cõſtat, & conſtabit.

Tertia concluſio, de authoritate ſecundùm ſe tributa, non reſpectiua ad alias, afferit, quòd *quam uis, tam Bibliorum ſcriptum, quàm eius verſio, ſint olim authentica: nam iam olim authoritas decreto ſancita erat, in hoc decreto Tridentini ſolùm ſancita eſt authoritas in genere verſionis.* Ratio, nam id oſtendit decreti ſcopus finis, & verba, nan eſſe authenticam intra genus verſionis tantùm, nil eſt aliud, quàm eſſe fidelem, & conformem concordiam, cum ſcripto originali, & conſequenter eſſe de mente authoris, ſententias in verſione contentas. Nam illæ iam olim antea erant authenticatæ, & illarum authoritas ſancita. Nam poteſt ſcriptum, eſſe authenticum, non verſio, vt noſtræ Bibliæ, verſiones hæreticorum. Secundò verſio poteſt eſſe authentica, & non ſcriptum, vt ſiquis falſæ epiſtolæ, aut fabulæ edat fidã & concordem verſionem. Tertiò poteſt eſſe ſcriptum authenticum, & ſimiliter verſio, cuius exemplum eſt in noſtro ſcriptõ Bibliaco, & noſtra ipſius verſione. Authoritas Bibliorum, iam olim ſupponebatur ſancita, decreto de ſcripturis canonicis. De authoritate verſionum intra genus verſionis loquitur Tridentinum, & illam noſtræ verſioni tribuit, ex fine, & ſcopo intento.

Quarta concluſio, *authoritas, quæ tribuitur à Tridentino noſtræ editioni vulgatæ, eſt accipienda definite, cum his certis modificationibus.* Quòd ſit emendatiſsima. Secundò, quòd nil habeat quod fidei, veritati, & bonis moribus repugnet. Tertiò, quòd non det occaſionẽ vlli opinioni noxiæ, & inutili. Quartò, quòd ſit bona in ipſo genere verſionis. id eſt, quod vertat fideliter textum primæuum, & reddat eius ſententias. Non tamen eſt accipienda infinite, ſine vlla reſtrictione, vt accipiebant hæretici, qui Tridentini decretum barbarum appellarunt. Ac ſi non ſit data authoritas verſioni emendatiſsimę, veriſsimæ, cũ his, & alijs modificationibus, ſed daretur infinitè, ſicet etiã incorrectæ, falſæ, & mendaci. Ratio, nam decretum finis, & ſcopus illius ſtaret optimè cum dictis modificationibus, & per illas veluti per frenum, & chamum compeſcitur effrenis maledicentia hæreticorum, & immoderata procacitas. Confirmatur, nam Andreas de Vega, fidedignus, qui interfuit Concilio ſub Paulo 3. teſta-

tur

tur se audiuisse à Præside Concilij fuisse mentem concilij, vt intelligerentur huiusmodi cautiones, nec quidquam amplius statuere voluisse infinite. Et ita immeritò culpatur decretum, dum explicationes, & cautiones optimæ, & cordatæ, versioni opponuntur. Loqui se Concilium ostendit, cum dictis modificationibus, & de emendatissima constat ibidem, vbi videtur solùm eam versionem, & editionem approbare, quæ sit erratis purgatissima, & emendatissima, nec contineat fidei repugnans, aut occasionem præbeat noxijs sententijs. Denique esse optimam intra genus versionis, probatur ex ipsa rei natura. Nam approbare versionẽ nil aliud est, quàm ferre iudicium, de fideli conformitate cum scripto originali, & reddere eandem sententiam, quam illud exhibet, sine vlla mutatione, additione, aut detractione, vt apte Greg. de Valentia lib. 8. Analyseos cap. 5. eo quòd potest contingere scriptum originale esse authenticum, & versionem non esse authẽticam, quia nõ vertit fideliter, & concorditer.

Argui potest, si versio nostra latina solum isti decreto Tridentini est authenticata intra genus versionis, id est, quod reddit formaliter, & mira concordia sententiam, quam in scripto originali expressam inuenit de mente authoris, ergo ex vi huius decreti non est authenticata, vt nil contineat contra fidem, & bonos mores, nec quod sit de fide clausula, dictio, aut minutissima syllaba. Respondetur, quòd directè, & expresso solùm est approbata intra genus dictum versionis, cum autem reddat easdem sententias fidelissima concordia etiam extrinsece authenticantur, & declarantur de fide indirectè, quæ olim directe tales credebantur.

Quinta conclusio asserit, quòd de authoritate nostræ versionis tributa à Tridentino, respectiuè, & comparatè ad alias, asserit, *Tridentinum in hoc decreto non antepositisse versionem nostram originalibus fontibus, Hebræis, & Græcis, correctis, sed æquiparasse vt plurimum, bene tamen cæteris latinis versionibus extantibus, non extendit ad eas, quæ fuerunt, aut erunt.* Probatur prima pars, quia non meminit illarum, & restringit comparationem ad solas versiones latinas, & constat ex præfaciuncula decreti. *Ex omnibus latinis editionibus, quæ circumferuntur.* Decreti scopus, & finis fuit, vt in dies editæ plures excluderentur à disputationibus, concionibus, & lectionibus, in Ecclesia, & scholis, & inter latinas est sancita, optimè, & decreta. Secundò, nã si fuisset cõparatio cum fontibus, vel fuisset cum turbido, & venenato, & ad hoc non erat necessariũ decretum, quia satis manifestum est antecellere fonti turbido riuum

limpidissimum: vel fuisset, cum fonte limpido, & puro, in quo puri cum puro, satis constat exequasio (excepta prærogatiua originis) quæ non tollit vtriusque veritatem, & ita nostra versio vulgata, non erit anteposita, potius post posita ordine originis. Tertiò ex grauissimis authoribus, qui non admittunt istam antelationem fieri à Tridentino, quod de illa nil agebatur, sed comparate ad alias duas latinas, vt Salm. proleg. 3. & Dried. lib. 2. cap. 1. & alij circa mentem Concilij prætulisse alijs, non cuiusque idiomatis, sed latinis, quia de illis nil extat in Tridentino aduersum, potius rite poterat equiparari, quoad concordiam sententiarum.

Arguitur, nam si editio latina non est ante lata Hebræis, & Græcis, poterit quis illam, aliquo prætextu reijcere contra decretum Tridentini, si probetur ex illis sententiã minus bene esse traditam nostra editione, aut aliquid mutatũ, additũ, aut determinatũ. Resp. illud decretum Tridentini non licere quouis prætextu reijcere editionem vulgatam, intelligendum hac modificatione, quasi contineat aliquid fidei, & probis moribus aduersum, aut ab optimo genere versionis discordans, nec statim dicitur quis, aliquid reijcere, vt in legis intelligentia, si quærat modeste quippiam, aut latens, aut non ita patens, & expressum, nec ob id dici debet hosce originales Hebræos, aut Græcos nil prodesse, nil habere vtilitatis. Nam iuxta dicta ad plura sunt vtiles, ad indagandum veritatem variarum lectionum, ad inuestigandum sententiam verbi ambigui, ad expendendam melius vim, & energiam verborum, & tandem ad corrigendos errores, qui irrepserunt in editione latina ex incuria, aut malitia librariorum.

Probatur secunda pars de authoritate tributa à Tridẽtino respectiue ad alias versiones latinas, scilicet, quòd Tridentinũ antepossuit nostram vulgatam, alijs versionibus Latinis, huius sæculi. Primò, nam loquitur de his, quæ circunferuntur, qui loquendi modus istas latinas comprehendit extantes. Non fuit autem opus fieri comparationem, cum olim extantibus, & iudicio alio antiquioris Ecclesiæ sepultis. Nec fuit necesse, cum futuris, quæ esse possunt, tum quia incertum, an sint futura, & in lucem edenda, erat incertum. Tum quia non fuit concilio diuinandum, an essent meliores, quibus nostram postponeret, an deteriores, quibus præferret.

Sexta conclusio asserit, quòd *debeat complecti, cum omnibus, & singulis suis partibus, & nõ liceat discordare ab illa, & nulla sit particula, adhuc minima, contra fidem, & mores, secus de particulis, quæ sunt*

sunt præter illam, quæ solent ab Ecclesia vlterius perpurgari, aut quia irrepserunt ex malitia, aut iniuria typographorum, aut quia aptius verti possunt, concordiores originalibus, & ita ab his leuissimis defectibus discere, licet ex ductu, & assensu Ecclesiæ. Ratio, quia post Sixtum, Clement. & Tridentinum admitti debet cum omnibus, & singulis suis partibus, & deseri nullo prætextu possunt in his, quæ ad fidem, & mores pertinent, ex alia parte libera facultas est, in Ecclesia ad dictas perpurgationes, licebit ergo recedere in leuissimis defectibus, iuxta ordinationem Ecclesiæ. Secnndò, nã cum in originali essent relictæ aliæ sententiæ de fide, nec facta sit versio redendo verbum pro verbo, cum omnibus suis sensibus, & significationibus, potuit transcribi melius per aliam particulam expressiorem. Solent adduci plura exempla. Psal. 41. *Sitiuit anima mea ad Deum fontem viuum.* Corrigit Pintus ex codice Complutensi, *ad Deum fortem, viuum*, eo quòd in Hebræo sit el ל indicans fortem, non fontem. Similiter illud Cant. 6. *Reuertere Sunamitis. Reuertere Sulamitis*, quasi deriuetur à dictione *Salem*, quæ significat pacem. Vt adolescentulam celebret pacificam, &c. Et illud Lucæ 15. *Quæ mulier habens dragmas, &c. Si perdederit vnam accendit lucernam, & euertit, &c.* legit Catherin. *euerrit, &c.* & ex Tridentino sessione 6. capit. 10. illud Ecclesiast. 8. *ne verearis vsque in finem iustificari.* Legit *ne verearis.* Innuit esse duas lectiones, & non alligari ad vnam. Et istas mutationes esse parui momenti, nõ repugnantes fidei, & ita mutabiles, & ita non licet dubitare de veritate, quoad fidem, & mores. Secus de alijs minutissimis, illi non derogantibus, aut repugnantibus iuxta dicta.

Arguitur contra, nam Tridentinum dicit, istam versionem amplectendam, & non repellendam. Et Ecclesia non cogit amplecti errores adhuc leuissimos, aut non reijci. Sed optima ratione reijci possunt huiusmodi. Respondetur intelligendum amplecti debere, in his, quæ ad fidem & mores pertinent. De alijs leuissimis nil præcepit, aut prohibet, potius relinquitur Ecclesiæ libera potestas ad repurgandum.

Quæritur primò, *an possit effici versio melior nostra editione?*

Secunda conclusio asserit *posse.* Ratio, nã si res bona sita sit in eo genere, quòd admittat intensionem, & remissionẽ, magis, & minus. Non est vlla tam bona, quæ non potest intra latitudinem fieri melior, & potest in hoc genere nostra editio, si Deus det charisma interpretationis sermonum, & linguarum præstantiam. Sicut ornare intellectum maiori sapientia, ornare maiori facultate transferendi. Non enim est Dei manus abrebiata, & restricta. Isaiæ 59.

& fieri ab alio eminentiori, in linguis doctiori, & sanctiori, melius quam à S. Hieronimo docto, & sancto, vt saltim clarius, expresius, & fortè erutis in lucem, alijs sententijs relictis in originalibus, ratione multiplicis significationis verborum. De quibus posset fieri alia editio, quam non fuisse propositum abijcere nouam, ponitur in præfatione ad lectorum in Biblijs correctis. Licet iam non fuerit vtile, aut necessarium, & ideò non tentatum.

Arguitur, quòd non possit fierè melior. Quia si fieri posset melior reijci posset nostra, aliquo prætextu, quod non est ita bona, sed haberet secundum locum. Secundò, quia nõ possũt esse duę editiones authenticæ, & nostra est ad se authentica, & talis fuit, ergo nequit fieri melior. Resp. ad primũ, quòd si nostra meliori postponerentur non fieret vitiosa, vt reijceretur prætextu talis. Ad secundũ non implicat confici duas bonas, & authenticas, sed vna esset bona, & altera melior quoad dicta.

Quæritur secundò, *An aliquãdo sit futura melior editio?*

Octaua conclusio, *nil certi definiri posse*, nisi diuinandũ à Propheta, sicut si moueretur, quęstio quãdo Italacrat recepta, & laudabatur. An fienda esset nostra editio vulgata melior? sed cũ nostra iam mille, & plus annis, & sola tenuerit principatum in Ecclesia, videtur, quòd id, quod hactenus non est factum vix, aut nunquam, in futurum faciendum.

Quæritur tertiò, *An nostra editio quæ est præstantior alijs, ab ea immediate deribatis, sit etiam alijs (secundò per intermedias) deribatis.*

Nona conclusio, *Ist esse præstantiorem, cæteris paribus.* Sicut riui sunt puriores, quo immediatius, & propius accedunt ad originem, & fontem. Ad hunc modum Hieron. præfatione in Euangelio ad Damas. Vetus inquit testamentum à 70. in græcam linguam versum ad nos tertio gradu peruenit. Et altior est, & nobilior, qui primo gradui proximus est, versio nostra ex Hebræo immediate quoad vetus testamentum, & ex Græco immediatè quoad nouum, in secundo gradu est, inde riuuli in tertio sunt gradu.

DVBIVM XXX.

An irrepserint mendæ in nostram versionem ex parte versoris? An solum ex parte typographorum? Et quid à Pontificibus erga correctionem factum?

Conclusio asserit, quòd *solùm ex parte typographorum.* Ratio, nam non ex parte versoris, aut versionis, quia qui vertit reddit sermonem veriori sententias ita accuratissime, vt sit omnimoda conformitas inter vtramque, sed irrepserunt aliquæ, adhuc à tempore Hieronymi-

ronymi, & post, vt constat ex præfatione in Psalterium, quæ incipit Psalterium Romæ, sicut irrepsere, in Græco, & Hebræo textu iuxta dicta, supereſt ergo, quod ex librariorum incuria, imperitia, aut etiam malitia. Cõfirmatur ex Trident. sess. 4. vulgata editio, quàm emendatissime imprimatur agnoscit ergo impressam fuisse mendose. Nam præcesisse ærrorem, certũ est, vbi emendatio subsequuta est.

Arguitur contra, nam si irrepserunt mẽdę, Ecclesia potuit ex illis ærrare, & olim ante còrrectionem fuit editio authentica. Resp. fuisse leuioris momenti, & non contra fidem, & bonos mores, & ærrare non potuisse, quia in prõptu erãt alij codices correctiores, & recurri potuit ad Hebræos, & Græcos. Et ita licet physicè aliqui fuerint vitiati, nunquã moraliter. Quoad omnia in omnibus quim per industriam emendari possent. Et ita fieri non potuisse, vt omnes omnino ærrarẽt ex diuina prouidẽtia.

Secunda conclusio asserit, *Iussu Pontificum conquisitos plures codices, & adductos in Vrbem. Et Pius 4. adhibitis doctissimus Cardinalibus, & peritissimis viris in linguis demandauit correctionem consultis etiam fontibus Hebraicis, & doctrinis Sanctorum PP.* Et Pius Quint⁹ insequutus est donec tempore Clement. 8. ista editio protulit correctior, omniũ latinarum optima. Qua modo vtimur. A sacerdote summo legis exẽplar offerri, & accipi debet à Regibus, in his enim Pontificum authoritas maxima supra Reges, & Principes.

DVBIVM XXXI.

De præfatione ante textum Sacrorum Bibliorum, *An sit alicuius authoris? Quantæ authoritatis? An sit minoris, quam sit Sanctio Pontificea, aut Synodica?*

COnclusio asserit, *esse forte alicuius authoris, ex his qui astiterunt emendationi, & correctioni, aut typographi, aut sit anonyma. Et ita illius authoritas non est tanta, ac Pontificia Sanctio, aut concily decretum.* Prima pars, nam ista præfatio sic instituta est, vt nunquam eius author loquatur in prima persona, & se habet vt simplex narratio de sanctis à Trid. circa integritatẽ puritatẽ, & præstantiã editionis semper in tertia persona, nunquam in prima. Nos Cardinales, aut Doctores deputati, &c. vbi nullũ est inditium de aliquo authore, & ita non inepte dicitur ab Anonimo. Deinde typographi, aut per se, aut per interpositos doctos, solent præfationes aliquibus operib⁹ præponere. Secũda pars probatur, quia licet adiungi soleat, authoritas operi, ex huiusmodi præfactione, tamen non est ista tanta quanta Pontificea, aut Synodica, sed lõge minor. Tum quia non est authoritas ex aliquo nomine scriptoris Sacri, Prophetæ, Apostoli, Euangelistæ, Concilij, cum subscriptione secretarij, sed ali-

cuius docti, aut typographi, aut anonymi. Tum secundò, quia ipsa præfatio dicit dari Pontifice non iubente, approbante, sed à renuente, aut permittente. Inter quæ est discrimen. Nam Pontifex posset annuare, aut permittere duos libros imprimi, alterũ sentẽtiæ aientis conceptionẽ immaculatam, alterum negantis. Per hoc tamen non ideo approbaret alterutram, sed sineret eo modo, quo est, in constitutione Sixti 4. à Tridentino renouata. Et ita talis præfatio sub nulliusnomine edita, solùm continet annuitatem, non approbationem, & ita eius adiuncta authoritas, est in longe inferiori gradu, quam Pontificis sanctio, aut Concilij decretum. Nec mandati vim habet, aut plusquã commendationem pij, & docti præfatoris.

DVBIVM XXXII.

Quid præfatio ad lectorem, posita primo loco, complectatur?

COnclusio asserit, *in communi tria. Primò præfatio ad lectorẽ. Secundò Tridentini decretum de scripturis canonicis. Tertiò Clementis 8. Sanctio. In particulari tamen reuocari ad 5. capita. Primum caput*, quod Tridentinum rectè declarauit editionẽ istam latinam nostrã esse authenticam. Ex tribus causis, aut rebus, Prima, quia aliæ versiones latinæ magis fabent hæreticis. Secundò, vt vna retenta vitetur varietas exemplariũ. Tertiò, quia fuit illi maxima authoritas adiuncta à tempore, quo Ecclesiæ proposita est. Quartò, quòd illius libri sunt latine translati à D. Hieronymo sanctissimo, & peritissimo, aut residui, ex Itala, cuius laus vbique magna. *Secundũ caput.* Quòd à Iudæo rectè factũ, vt illa versio corrigeretur à doctissimis Magistris, laude dignis in Academijs, & correcta in lucem ederetur. Primò, vt cohiberetur licentia typographorum. Secundò, vt vigilantia Pastorũ excitaretur, & acueretur. *Tertium caput.* Quòd industria, & ea maxima viguit in editione faciẽda in Summis Pontificibus, Pio 4. & 5. Sixto 4. Gregor. 14. & Clemente Octauo. Primò, quòd curarunt adferri manuscripti codices vetustissimi in Vrbẽ. Secundò, quia Lectissimus viris in Scriptura, & linguis peritissimis Cardinalibus, comisserunt. Quia ad Pontificem pertinet cura de integritate, & puritate scripturarum, & in re tam graui, nulla diligentia nimia inuenitur. *Quartum caput.* Quòd ista editio ex typographia Vaticana, sit cæteris vcusque visis purior, & emendatior. *Quintum caput.* Quòd in ea editione quædam sint consultò mutata, quædam mutabilia, consultò non mutata. Primò, ob vitandam offensionem aliquorum. Secundò,

dò, ob cauendam suspicionem de libris futuris, ex correctoribus. Tertiò, vt institutum suscepti operis constanter teneretur, quod non fuit, nisi veterem, integritati, & puritati restituere, & ab erratis purgare, non edere nouam editionem. Sextùm *caput*. Quòd in editione ista vaticana visum est non apponere quidquam, non canonicum, ascititium, & extraneum. Et ita ista fuit causa omittendi quatuor. Primum. 3. & 4. Esdræ. Secundò, orationem Regis Manasse. Tertiò, præfationes argumenta librorum variæ lectionis notam, & concordiæ ad marginem. Vltimùm *caput*. Quòd Sedes Apostolica, non prohibet ex omissis adijci in posterum. Notas, & concordias ad marginem perfationes, & argumementa librorum.

DVBIVM XXXIII.

An ex illa clausula, posita in præfactione ad lectorem scilicet in editione nil non canonicum, extraneum, aut ascititium ponere vissum esse, *recte colligatur, illa omnia in correctis Biblijs contenta, esse canonica?*

COncluſio asserit, *non recte colligi*. Primò, quia præfatio, non habet authoritatem, ad faciendum, aut declarandum, quidquam canonicum. Secundò, nam particula illa, qua vtitur scilicet *nil non canonicum* accipi debet cum restrictione in textu. Nam licet contenta in libris sint canonica, non adiecta in titulis, quamuis alias vera, & bona. Vt cùm dicitur liber Geneſis Hebraicæ Bereſit, & similia, & qui careret tali titulo non esset Hæreticorum, aut canonice mutilum, vt si solùm diceretur liber Geneſis, liber Exodi, &c. idem de concordia in margine, diuisione librorum, capitum, versuum. Idem de narratiuncula ante caput, vt posita in Threnis. *Et factum est*. Quæ nec nec est liber, nec illius pars; secus si sit pars, vt illud proæmiũ Lucæ, *Queniam quidam*, quod ob id nõ ponitur ante caput primum, sed intra, vt sic incipiat, quoniam quidam, &c.

Arguitur; nam in clausula præfationis permittitur illas adiungi. Respondetur ita, sed in posterum, sicut & alia studij sacri adiumenta.

DVBIVM. XXXIV.

Quid contineat Clementis 8. sanctio in brebi præposita, ante latinam correctam editionem?

COncluſio asserit, *quatuor potissime. Primùm commendationem* editionis correctæ in illis verbis, iam prodijt textus sacrorum Biblio-

Bibliorum vigilis restitutus, à mẽdis expurgatus ex vaticana Typographia. Secundùm *triplicem* prohibitionem. Prima ne ille textus correctus, intra decem annos ab anno 1592. die 2 nobembris alibi imprimatur. Secũda ne præsumat aliquis, correctum typis mãdare, nisi habito exẽplari vaticano. Tertia ne ille edatur aliter quàm sit in exemplari vaticano, ne quidem particula minima mutata, addita, aut detracta, nisi quid occurrat, quòd manifeste sit adscribendum incuriæ typographicæ. Ratio finalis est, vt idem textus incorruptus in posterum conseruetur. *Deinde* tertium continet sanctio triplicẽ pœnam contra aliter facientẽ, vna est amissio librorum, alia est pœna temporalis ad arbitrium Pontificis, altera ex communicationis sententia ipso facto, reseruata Pontifici, nisi in articulo mortis. Denique quartum continet præceptũ, vt Magistratus Ecclesiastici curent, dicta obseruari, vt fides habeatur exemplaribus huiusmodi impressis. Brebe hoc Apostolicum directe spectat ad typographos, in directe ad alios, qui inducerent, ederent, aut aliter edi curauerint, quàm habetur in vaticano exemplari. Et meritò, nam vbi currit eadem ratio, idem ius statui debet. Ex l. illud ff. aquiliam, & alijs cap. iuris.

(***)

DVBIVM XXXV.

An omnium, & singulorum, quæ in præfatione illa insunt, & etiam in Biblijs correctis, fiat approbatio, illis litteris Apostolicis in illo brebi?

Conclusio est *negatiua*. Probatur, nã in primis, præfationis hic non est vlla approbatio, quia eius nõ fit vlla mentio, & disserte solũ fit commendatio textus correcti: Secundò, nãilla tantùm approbãtur in litteris approbationis, quæ præpositа sunt, vel deserte nominantur, non quæ ante posita sunt vtcumque nisi eorum fiat mentio, qualis non est præfatio ad lectorẽ. Tertio quia non est prohibitũ typographis, aliquid ponere ante textum Bibliorum, & ita sanctio Pontificis in brebi nil probat præfationis.

Probatur secunda pars, scilicet. *Quod non fiat approbatio omnium, & singulorum quæ insunt in præfatione.* Primò quia non fit vlla approbatio in illo brebi, aut litteris Apostolicis, in generali, aut speciali. Et quomadmodum detrahere authoritatem habẽti iniurium est, ita & defferre non habenti, sicut ineptũ dicere, fulminari illas censuras, & pœnas, contra censentes in correctis aliquid supereſſe dignum emendatione.

Probatur tertia pars, scilicet. *Quòd non fiat approbatio adhuc omniũ*

&

& singulorũ, quæ in Bibliis correctis in sunt, in illo brebi, aut litteris Apostolicis. Ratio, nã per hoc quod in breui dicitur, quòd ille textus est accuratissime expurgatus, quod fieri potuit non dicitur quidquid in illo cõtentũ esse, simpliciter à Põtifice approbatum, tãquam rectũ, authenticum, & canonicum. Sed solùm approbatur, quod sit (cõparatiue) correctior, & purgatior, alijs editionibus. Tum quia verbũ illud, quoad fieri potuit, nõ simpliciter correctum indicant, sed pro mensura humanæ diligentiæ. Tum quia in tali textu correcto, sunt in scriptiones, diuisiones capitum, incisiones versuum, & numeri, quæ licet sint bona, & vtilia, non tamẽ authentica, & canonica. Et cõstat, quo tempore, & à quibus tales esse cœperint. Probatur secundò, nã in dicto textu est præposita Threnis narratiuncula, quæ incipit, *& factum est.* Quæ non est scriptura canonica, & similiter ibi sunt voces Aleph, Beth, & aliæ alphabeti hebraici, de quibus est lis, non sine ratione an sint canonicæ. Probatur tertiò, nam aliquæ sunt particulæ, quæ videntur corrigendæ adhuc, alię posśũt corrigi, & in ipsa prefatione satis insinuatur. Primòdũ dicitur, *versio ista quãta fieri potuit diligentia, castigata*, quod intelligitur, quãta fuit possibilis moraliter, non tamen, quãta physice. Vbi relinquitur locus, & nõ negatur vlteriori diligẽtiæ. Si alio tempore, & loco, sit occasio opportunitatis, & adiumenti. Deinde secũdò, nam ingenue dicitur de tali editione correcta, *esse numeris omnibus absolutã pro humana imbecillitate affirmare, difficile est.* Cum in correctoribus aliqua debeat admitti humana infirmitas, dici nõ debet, vidisse, & correxisse, omnia, vt nil sit relictum, vlteriori lima dignũ. Rursus nam dicitur textus correctior (comparatiuè) alijs, tunc editis, vbi non negatur quod Sedis vigilantia, non possit deinceps edere correctiorem, & purgatiorẽ. Vlterius in illo textu vissa fuisse aliqua mutanda, quæ consultò mutata, non sunt, adhuc ex iudicio, & mente correctorum, & causa cessante, offensione, quorundam suspitione de libris posterioris sæculi, quòd futuri forent minus puri, & quoòd intentum non erat edere nouam, versionem, sed quæ erat corrigere, mutari posse particulã, aut verbulum. Probatur quartò, nam dum dicitur consultò aliqua mutata nõ sunt, quæ visa sant mutanda, ne esset suspitio de libris sæculi futuri, quòd *fortasse minus puri, & integri euaserunt*, vbi illud fortasse significat, in re ista, nil certi esse. Et est dubitãtis, quæ à fidei obiectis, & certis, in quouis negotio remouenda est iuxta August. 8. de Trinitate cap. 5.

DV-

DVBIVM XXXVI.

An liceat priuata authoritate, ab vllo notari aliquid, corrigi, aut emendari? In editione vulgata latina?

PRima cõclusio asserit, *licet notare, & corrigere menda, si quæ occurrant in textu editionis correctæ. Non solùm quæ irrepserunt incuria typographorum, sed aliunde. Non tamen in reuisione aliud, quam in exemplari vaticano est, mutare, addere, aut detrahere, adhuc, minimam particulam.* Ratio est quia illud prius non est prohibitum à Pontifice, sed secundum. Nam Pontifex in illo sancitu solùm agit de re typographica, & ita dicit *in recudenda*, & dictę prohibitiones, & paucæ, ad illã sunt tantũ directę. Secũdò, nã vt dictum dubio præcedenti, ex quibusdam verbis in præfatione satis probatur, non solùm dicere, sed excitari diligentiam doctorum, ad notanda errata, si quæ occurrunt, & laudat eos, qui adhibuerunt olim dictam diligentiam ad notanda errata, & corrigenda. Quia inquit in tanta re nulla potest esse nimia diligentia, & insuper aperit viam, qua id fieri possit. Nimirum si inspiciantur antiqui codices, & Hebraici, & Græci fontes, & PP. commentarij.

Secunda conclusio, *si notata recognoscerentur à Sede Apostolica possent in textum referri, illa iubente, & approbante, vt fiat editio correctior, atque perfectior.* Ratio constat ex dictis, & similitudine, & exemplo Brebiarij, & missalis à Pio 5. nam prima correctio, non prohibet aliam sequentium Pontificum curram, & diligentiam ad correctiorem. Secundò, nam non est vllum verbum diplomatis Clemẽtis, aut alterius prohibens istam notam, seu monitionem Doctorũ. Pontifici tamen licet exequi, aut habenti authoritatem ab illo. Nã Pontifici non est adempta corrigendi potestas, si expedire iudicauerit, & in textum inserere, dum Pontificis authoritate, & iussu fiat. Non igitur est illicitum doctis notare, & offerre sedi, vt probentur, vel improbentur. Vt iam vidimus sedi oblata non pauca. Apud authores exempla videri possunt.

DVBIVM XXXVII.

De versione vernacula, *Quæ vernacula versio? quotuplex? & an liceat transferre Scripturam sacram Bibliorum, in linguas vernaculas? & singulis legere, & quibus? & quid statuerit Ecclesia?*

PRima cõclusio, *versio vernacula apte dicitur, quæ communis est, & vulgaribus, vsitata, trita, & materna apud ipsos.* Ratio quia cum vernaculum dici soleat, quòd do-

domi nascitur, vsitatur, & teritur non inepte dicitur versio vernacula, quæ fit in linguam communē, & vulgarem. Sicque olim dictæ sunt vernaculæ, Hebræa, Græca, Latina, quia Israelitis, Græcis, & Latinis, notæ, vsitatæ, & tritæ simpliciter loquendo. Respectiuæ autem ad populos, loca, & tempora, vernaculæ solebant appellari, quæ in vsu erant vulgari, & secernebantur à sacris. Et apud Christianos tres cōsueruere sacræ vocari, quæ in titulo crucis Christi sunt sacratæ, scilicet Hebræa, Græca, & Latina. Apud Ioann. 19. aliæ verò omnes vernaculæ, & vulgares.

Secunda conclusio *sunt multiplices versiones vernaculæ, antiquæ, nouæ, catholicæ, hæreticæ, incerti authoris, & certi. Vt sint tot, quot nationes, Italica, Gallica, Anglica, Germanica, Belgica, Danica, Islandica, Vngarica, Hispanica, & innumeræ aliæ, quas nec recensere vacat.* Videri possunt apud prologistas. Præsertim Serarium ibidem latiori calamo cap. 10. quæst. 2.

Tertia conclusio asserit, *Quod quamuis transferre Scripturam sacram in linguas vernaculas, aut legere priuatim sit res indifferens, secūdū se, nec sit omnibus prohibitū, aut præceptum simpliciter, vt illo possit quis bene, vel male vti, sine scripturæ culpa, aut vitio: & quòd expedia, aliquando habere, & legere dictas versiones, aliquando non, attenta diuersitate personarum, temporum, & locorum: tamē iam statuit Ecclesia, quibus, & quomodo, liceat transferre, & legere huiusmodi vernaculas versiones.* Est communis.

Probari debet per partes. Probatur, *Quòd sit res indifferens, & adiaphora.* Nam non est intrinsicè mala, aut bona, sed qua (vt cibo, & potu, & alij huiusmodi) potest quis temperatè, aut intemperatè vti, in salutem, & in morbum, infirmitatem, & dispēdium salutis. Finis autem scripturæ extrinsecus, qui est Dei gloria, congnitio diuinæ voluntatis, & nostra beatitudo, potest bene vni consequi, aut amitti. Accedit quòd olim *nec est impositum præceptum, nec prohibitio.* Nā primò in Ecclesia Christi, nūquā fuit tale præceptum, nec ex sacra Scriptura, aut lege constat. Et si fuisset obtemperassent vtique illi, quibus dictum. Matth. 28. *Euntes, docete omnes gentes*, quique ornati erant dono linguarum act. 2. & saltim id docuissent verbo suo, & post Christum 400 annis, quibus in omnem terram exiuit sonus eorum Rom. 10. quibus doctrina Euangelica propagata est ab vllo vnquam ex præcepto, aut sine illo facta est vlla versio in vernaculos sermones, in Egypto, Africa, Anglia, Gallia, Hispania, aut alibi, vbi non esset vulgaris Latina, Hebræa, aut Græca, nec etiam fuit vllum præceptum impositum ad discendum lecturam, nec vt omnes legerent scripturam lingua ver-

vernacula translatam. Præsertim cum salus posset alia via obtineri. Confir nã synagoga Iudæorũ non habuit aliquod præceptum circa translationem vernaculam, vt vlla esset præcepta, nec dum hebræa erat vernacula, nec dum non erat. Iam inde à captiuitate Babylonica ad Christum, quæ passim abiecta publicè fuit, & admissa, Syriaca, aut assyria, & cùm Esdras legisset Hebraica, interpretatus est vernacula, scilicet syriaca. Vt modò cõcionatores dicunt latina Euangelium, aut aliam scripturam, deinde exponunt vernacula. Quòd si olim fuit facta aliqua versio vernacula, non tamen fuit præcepta.

Secundò probatur altera pars, *quòd non sit prohibita versio in vernaculam.* Tum quia non fuit vlla lex prohibitiua. Tum quia olim licuit legere versiones in vernacula (exceptis hæreticis) vt constat in concil. Oxonienſi, vbi prohibitum est legere, nisi approbatas à Diocesano.

Probatur altera pars, scilicet *expedire aliquando versionem vernaculam.* Primò, quia apud Hebræos initio, cum Hebraica esset vernacula, non erant alia Biblia, quàm Hebraica, apud Græcos græca, &c. Secundò, quia PP. hortabãtur laicos ad legendã scripturam Hebræa, Græca, & alijs, in quib' erat scripta, & erat apud illos vernacula. Imò Hieronymus id suadebat, nõ solũ doctis Paulæ, & Eustochio feminis, sed etiam Celantiæ Mãtri familias. Et fructuosè legisse S. Brigitam, & alias, late Serarius. & alij ibidem. Quod si partes versæ profuerunt, etiam vniuersa prodesse posset.

Probatur altera pars scilicet, *aliquando non expedire istas versiones vernaculas quibusdam personis.* Nam primò, quia non pauci ex illis hauserunt animabus venenum, & ruinam, elationem, superbiam, fastum, prauas intelligentias, cùm essent imperiti, iactabant se omnia scire, iuxta D. Hieronymum Epistola ad Paulin. imò Lutherus in Simposiacis cap. 1. de Anabaptistis. Et præsumentes mulierculæ melius se scire, contemnunt Doctores, & Pastores. Contra illud Lucæ 10. *Qui vos audit, &c.* Vt de Argula, & alijs ferunt fide dignæ historiæ. Secundò, quia non pauci in varijs locis propensi ad libidinem inflamabantur ad turpia, & obscena, legentes historias de Poligamia fœminarum, & ancillarum cõcubinatu, Genes. 16. 20. & 30. De incestu Thamaris Genes. 38. De adulterio, & homicidio Dauidis, 2. Reg. 11. & de colloquijs amatorijs inter sponsum, & sponsam, in libris canticorum, & similiter de alijs vitijs, vt de ebrietate Genes. 46. mendatijs, & alijs vitijs. Ex scripturis opinantes, quòd horũ flagitiorũ esset Deus author. Quòd periculum simplicioribus imminebat hæresum. Et

Cal-

vinus ausus est id asserere. Et Rex Anabaptistarum, quidquid habebat ex scriptura probabat. Imò, & apud nos, ex vernacula versione plures sutores, sutrices, caupones, & huius farinæ alij, abiectissimi occasionem sumpsisse delirandi in varios errores, & ex vernacula in iudaissimum declinasse aliquos, & in toxicasse alios, referunt fide dignæ historiæ. Tertiò, nam ex prauo vsu sacræ Scripturæ, non solùm in docti, & plebeij, sed docti assecłæ hæresum, & sectarum, ad suum palatum, & ventriculum, vernaculas conficiebant, & legebant. Et si astutia res noxias proponi, & inculcari, sub boni, & veri prætextu, cognoscamus, caute, & prudenter recedendum. Sicut à pharmaco intoxicato ab imo quo. Inter bonas herbas latent lethales. A mensa in qua inter cibos salutares ministrantur mortiferi cauendum, sed ita plures confecisse constat ex variis apud prologistas, & latiori calamo apud Serar. ibidem, vbi congerit multos, qui in his vernaculis mutilant sententias librorum sacrorum, & hæresibus accomodant, modo addendo, modò detrahendo verba, & præmitendo glosulas, noxias, pernicioſas, & lasciuas. Et ita constat, non fuisse salutares quibuslibet personis, varijs locis, & temporibus. Et ita opus esse prohibitione, cum nec versores omnes sint admodum periti; nec in omnibus regionibus possint esse ita vigiles, & diligentes Episcopi, & Pastores, vt impedire possint innumeras vernaculas, in tot, ac varijs regionibus, & locis.

Probatur altera pars scilicet, *quod ita non contingat ex causa, & vitio sacræ Scripturæ*. Nam non est culpa boni cibi, & potus, quòd quis incidat in morbum, sed ex malo, & intemperato vsu, sic non est culpa, & vitium scripturæ, quòd versio fiat imperitè, & prauè, & quòd lectio in perniciem legentis conuertatur. Vertentes enim prauè faciunt ex Verbo Dei, verbum Diaboli. Et legentes verbum Diaboli venenatum implentur erroribus lethalibus.

Probatur altera pars scilicet, *quòd tam isto seculo statuit Ecclesia. Quibus, & quomodo liceat transferre, & legere huiusmodi vernaculas versiones*. Primò, nam in Ecclesia est potestas apud Pontificem, ad cohibendum, & coercendum hominem, cuiusque conditionis, suo publico adiecto, præsertim in re tam graui, ad statum Ecclesiæ, quammaximè pertinente, & ad hominum salutem. A quo, & Reges voluit Deus accipere volumen legis, Deut. 17. & simiter maxima prudentia pro certis personis, locis, tẽporibus, arbitrã-

dis

dis, & adfuit causa legitimâ, ne isto seculo libera relinqueretur omnibus facultas cõficiendi istas versiones vernaculas, & legendi illas, & Pius 4. à quo prohibitio primò extitit, in indice prohibito rũ, prohibet vniuersè, vernaculas editas ab Hæreticis, non vniuersè à catholicis, & illis, qui ex lectione damnum potius, quàm incrementum fidei, & morum sunt accepturi. Ista autem prudẽtia, & attentione editum istud edictum constat ex verbis istius modi. *Cùm experimento manifestum sit, si sacra Biblia posſim vulgari lingua sine discrimine permittantur, plus inde (ob hominum temeritatem) detrimenti, quam vtilitatis oriri, hac in parte iudicio Episcopi, aut inquisitoris stetur, vt cum consilio Parrochi, vel confessarij, Bibliorum à catholicis authoribus versorum, lectionem in vulgari lingua eis concedere possint, quos intellexerint, ex huiusmodi lectione non damnum, sed fidei, atque pietatis augmentũ capere posse. Quam facultatem habeant in scriptis. Qui autem absque ea facultate legere, seu habere præsumpserit, nisi priùs Bibliis, ordinario redditis, peccatorum absolutionẽ percipere non possit.* Ex quibus colligitur in tã graui edicto, nõ defuisse, sed concurrisse necessara. Primò potestas, causa, prudentia, præcautio per coadiutores Episcopos, Inquisitores, Parrochos, & confessarios, vt si remotiores non habent sufficientem notitiam, adiuuentur per consilium proximiorum, & immediatiorum, qui possunt magis agnoscere, & sic versionem, & lectionem concedant, aut negent. Et detur licentia in scriptis, ne alijs detur occasio scandali. Et tandem pœna, contra facientes, non tyrana, barbara, & immoderata, vt hæretici obijciebant, flamæ, aut ferri, sed rationalis & moderata, censurę, & reseruationis. Ex quibus colligitur licitum esse legere versionem vernaculam, de licentia Episcoporum, aut Inquisitorum, saltim domi, & priuate. An autem debeat sacra Scriptura omnibus adhuc imperitis communis fieri, vt legi ab omnibus possint, in sua vernacula lingua, domi, aut in templis publicæ? An in hac re, nec simpliciter damnandum, nec simpliciter permittendum, sed habita ratione, & exceptione personarum temporum, & locorum, ex conclusionis probatione vltima constat.

Argui potest primò pro parte opposita, *quæ asserit Scripturam in linguas vernaculas vertendam, & excitandos omnes ad eas sæpè legendas.* Primò ex Ioann. 5. Vbi Christus dicit, *scrutamini scripturas.* Vbi alloquitur non solùm ad Scribas, & Phariseos, peritos, sed indoctam plebem, & imperitum vulgus præceptiuè. Respondetur, quòd adhuc si verba sumantur imperatiue, &

non

non solùm exhortatiua, loquitur infidelibus, qui *non volunt venire ad Christum, vt vitam habeant*, siue sint docti, siue indocti Iudæorum, sed si præceptum continerent, satisfacerent indocti, si per doctos scripturas scrutarentur.

Arguitur, nam gloriosum est hæreticis, quòd sutores, sartores, & paruuli, sint instructi, & docti in sacra Scriptura, & ignaros esse Catholicos, imò plures Ecclesiasticos, ergo opporteret transferri in vernaculam singulorũ, vt omnes in sacra Scriptura essent instructi. Confirmatur, nam Theodoretus lib. 5. de curand. Græc. attractionibus, de antiquis Christianis scribit in hunc modum. Videas passim teneri nostra dogmata, non solùm, ab his, qui sunt in Ecclesia Magistri, sed à sutoribus, cunctisque artificibus, quim, & à fœminis, non modò quæ litteras didicerunt, sed sartoribus, ancillis, & pedissequis, agricolis, & fossores inuenias de diuina Trinitate, & creatione omnium decertantes. Sed ad id assequendum plurimum confert versio venacula, quæ capitur ab omnibus. Respondetur cum Apostolo 1. Corint. 5. ò Hæretici, *non est bona gloriatio vestra, nescitis quia modicum fermentum totam massam corrumpit?* Lectionis vernaculæ aliàs non malæ, non modica, sed nimia arrogantia, inobedientia, & alia peccata, inde ex vsu prauo sint occasionata sciolis, & illitteratis. Ad confirmationẽ ex Theodoreto, dico, laudare artifices, plebeios, rusticos de notitia nacta mysteriorũ supra infideles, Platonem, Aristotelem, &c. & iactabundos hæreticos, non ex lectione versionis vernaculæ, sed doctrina Doctorum.

Arguitur tertiò, nam à Deo requiritur sapiẽtia, & eruditio in populo Deut. 4. Num. 11. ad Colloss. 3. & 2. Petri 1. sed in ea no possunt instrui à Pastoribus inscijs, & desidiosis. Ergo oportet discere ex versione vernacula. Respondetur requiri in populo, non in quolibet. Et licet defendi non possit ignorantia Sacerdotũ potest excusari. Nam sufficit ad alia minora ministeria ad cultum, ad baptizandum, &c. Deinde, facilè est recurrere ad doctiores, aut petere licentiam legendi vernaculas versiones.

Arguitur quartò, nam ex fonte iucundius bibitur aqua, quàm ex riuo derinato, & gratius est, & perfectius per se ipsum agere bona, quàm per alium. Ergo ex versione vernacula doctrinæ haurire perfectius, quàm ex Doctoribus, ab illa accipientibus. Respondetur, quòd non omnis perfectio congruit omnibus, nec ista ue tollatur ordo in Ecclesia proficientium, & perfectorum. *Numquid omnes Doctores?* & Matth. 25. talenta distribuũtur vnicuique, *secũdùm propriam mensuram.* Aliàs oporteret, non solùm vernaculã scire

versionem plebeijs, sed latinam, imò Hebræam, Græcam, &c. Quòd vnum omnibus necessariũ, reddere rationem doctrinæ vtcumque acceptæ.

Arguitur quintò, *pro alia parte, scilicet asserente, non expedire istas versiones vernacula edere, aut legere.* Quia si hoc non expedit, nec expediret latina versio, græca, aut hebræa. Nam si ex vernacula sunt inconuenientia, ex alijs maiora. Nam inflat multos maior scientia, & inde sumunt occasionem ad cogitandas, docendas, & patrocinandas hæreses. Vt variæ historiæ testantur. Respond. admitto, quòd in re indifferenti, adiaphora possint pro vtraque parte conuenientiæ, & disconuenientiæ rationes formari. Vt liberum sit cuique, quam malit amplecti. Quandiu non accedit prohibitio. Sed iam stante prohibitione, illi standum, quæ rationabiliori ex causa præcauit periculum illiteratorum, quàm litteratorum quod rarius, & ex accidenti.

Ad *Omnis Scriptura, &c.*

DISPVT. IX.

De Interpretatione exegetica, & expositiua sacræ Scripturæ, vt exponibilis, & sensibus illius.

DE sacra Scriptura Bibliorum secundùm aliam habitudinẽ ad sensus hic instituendus sermo. De sacra Scriptura, vt est exponibilis, & explicabilis assignatione per diuersos sensus, legitimos, aut illegitimos, ingenitos, aut suppositititios, & adulterinos. In quo nõ ignobilior pars artis, & methodi exponendi, & scitu digna, versantibus illam, tam in lectionibus, quàm in concionibus, ne fine rigore, & proprietate, insipidè stultè, & absurdè prædicetur.

DVBIVM I.

Quotuplex sit interpretatio, & sensus sacræ Scripturæ?

NOta, quòd inspici solet interpretatio. Primò ex parte ipsius Scripturæ. Secundò, ex parte ipsius sensus. Ex parte Scripturæ est multiplex, iuxta varietatem, vel clausulæ, dictionis, aut singulorum verborum, breuiter, aut copiosè.

Sic

Sic quædam verba vocantur notę, Scholia, Gloſſæ, &c. ſi omnia, & ſingulę exponuntur, quaſi in perſona authoris (ſi præciſſe) reditur verbum pro verbo, dicitur verſio: ſi non præciſè, ſed cum additione, & dilatatione ſolet dici Paraphraſis. In quo ſunt aliqui gradus copię aut breuitatis. Cęterũ ſi fiat expoſitio aliter, aut alio modo interruptè, quam author loquitur, ſolet vocari commẽtarius. His, & alijs exponendi modis, minoris momenti, ſolent imponi varia nomina. Secundò modo fieri ſolet ex parte ſenſus. De quo in præſenti potiſsimùm.

Concluſio aſſerit, quòd *ſenſus, & interpretatio ſcripturæ in vniuerſum, eſt duplex, alter litteralis, aut hiſtoricus: alter ſpiritualis, aut myſticus.* Quid autem ſit ſenſus litteralis, & quid myſticus, & quotuplex, explicandum, hic breuiter diſſerendum, ſtatim fuſius. Eſt cõmunis inter ſcholaſticos, & interpretes, apud Vazquez tom. 1. in primam partem diſp. 16. à cap. 1. Rua ibidem. Becanus ibidem cap. 3. quæſt. 3. Serarius cap. 21. q. 1. Tirinus, & alij. Senſus litteralis eſt qui ſignificatur immediatè per verba, ſiue ſint propria, ſiue metaphorica: myſticus verò, qui ſignificatur per rem ſignificatam, per verba, & ita D. Thom. attendit in Scriptura ſacra eſſe duplicem ſignificationem, alteram verborum, quæ pertinet ad ſenſum litteralẽ, alteram rerum, quæ pertinet ad ſenſum myſticum, ſeu ſpiritualem, qui ſub rebus, vt ſub figura, & vmbra eſt concluſus, & reconditus. Dicitur, & arcan⁹, ſpiritualis; quia ſicut ſpiritus ſub corpore; ille latet ſub rebus. Et ita ſub voce ſignificatur res litteraliter, ſub re verò ſecundùm myſterium. Iſte tamen ſenſus litteralis ſolet dici hiſtoricus, non quòd omnis litteralis, ſit hiſtoricus, quia in Scriptura præter hiſtorias, & res geſtas, ſunt alia, quæ habent litteralem. Vt præcepta morum, &c. & ita omnis hiſtoricus eſt litteralis, non omnis litteralis hiſtoricus.

Vtriuſque ſenſus, litteralis, & myſtici, eſt aptiſsimum exemplum 1. ad Chorintios 10. vbi dicit Apoſtolus. *Omnes mare tranſierunt, & omnes eandem eſcam ſpiritualem manducauerunt, & omnes eundem potum ſpiritualem biberunt.* Vbi eſt duplex ſenſus, litteralis, qui proximè, & immediatè ſignificatur per verba, videlicet quod filij Iſrael quando egreſi ſunt de Egypto, tranſierunt mare rubrum, comederunt manà in deſerto, & biberunt aquam de petra, percuſa virga à Moyſe: myſticus verò eſt, qui ſignificatur immediatè per res illas, per mare baptiſmus, per manà Euchariſtia, per petram Chriſtus, per aquam ſanguis eiuſdem. De quibus indigitaſſe ſat, ſuo loco ſatius.

(***)

DVBIVM II.

Quid sit sensus litteralis sacræ Scripturæ?

PRima sententia asserit, *illũ esse litteralẽ, qui significatur immediate per voces, proprie acceptas, per impropriας verò minime,* & ita esse locũ sine sensu litterali, quoties scriptura vtitur metaphora, aut parabola, & habere sensum solũ mysticũ, aut spiritualẽ, vt Matth. 5. *Si manus tua scandalizat te, abscinde eam,* & Iudic 9. *ierunt lignα, vt vngerent supra se regẽ.* Ratio, nã aliàs sequeretur, quòd sensus scripturę esset falsus, vel absurdus, vt iste, qui significatur in prędictis locis, & esset absurdum dicere esse abscindendã manum, & eruendum oculũ, & ligna siluarum conciliũ cõueniisse ad eligendum sibi regem. Et ita in illis locis non esse sensum litteralẽ, significatũ immediatè per verba, sed spiritualẽ, & mysticũ per res. Vt per manum significetur proximum scandalorum proijciendum, & euitandum, per ligna verò viri ciuitatis Sichem, qui conuenerũt ad eligendum sibi regem. Ista sententia est Lirani in prologo 3. post illę, qui addit, vt aliquis dicatur litteralis, non sufficere significari immediatè, & proxime per voces, sed necessum est exprimi ex intentione Spiritu Sãcti. Ita vt nõ transferantur voces ad significandum rem aliã. In casu autẽ quòd transferantur non erit litteralis simpliciter, sed solùm mysticus.

Secundò ex PP. qui videntur astruere esse aliqua loca sine sensu litterali, qui si solùm iuxta litterã, & corticem intelligantur non important animæ salutem, sed necẽ, sed sensus scripturæ litteralis non est noxius, sed salutaris, igitur aliquis locus caret sensu litterali, & solùm habet spiritualem. Antecedens, astruitur 1. ex il'o Casiani ex Matth. 10. *qui non accipit crucẽ suã, &c.* Vbi insimulat insipiẽtiæ quosdam monachos, qui intelligentes simpliciter, fecerũt sibi cruces ligneas, quo non ędificationem, sed risum excitarũt. Secùdò è Greg. 4. Moral. cap. 1. ad Iob. 3. *pereat dies in qua natus sum.* Tertiò ex Hieron. in cap. 11. Isaiæ, *habitauit lupus cum agno.* Idem ex Origine Ambrosio, & Augustꝰ. apud Vazquez ibidem latius.

Secunda sententia asserit illũ esse sensum litteralẽ, quẽ author scripturæ intẽdit significare per voces immediatè, aut mediatè, proxime, aut remotè. Vox significat proximè rem, res verò significat tropicè rem aliam. Et ita si non intenda tur, id quod significatur immediatè per voces, sed per rem, ille erit sensus litteralis, in quo datur intelligi, quod locus sit sine litterali, respectu rei immediatè significatę, & ꝙ sit litteralis respectu rei significatæ remote interuẽtu alterius rei im-

immediate significatæ per verba sic Abulẽsis in c. 13. Mathæi. q. 28. c. 2. in quo apud Ser. 1. & Vazq. ibidem mentem Abulensis ex errore reddit correctam, & aduertit in eo conuenire cum sententia Lirani, quòd, id quòd immediate significatur per verba, non sit litteralis. Secundò quòd videtur confundere litteralem, & mysticum qui, per res immediate significatur ex quo impugnatur efficaciter.

Tertia *sententia* asserit, illum esse literalem seu historicũ, quem author Spiritus sanctus intendit significare primò per verba, propria, siue metaphorica. Pro ista sunt S. Th. & plures grauissimi quos sequitur Vazquez ibidem c. 3. qui explicat verba difinitionis notado discriminẽ, inter litteralẽ, & mysticũ, vt literalis sit ille, qui per voces propiè aut metaphoricè acceptas, primo significatur: mysticus autẽ, qui per res immediate & primo significatur, nõ verò per voces. Res enim sunt signũ alterius rei recõditę vt spiritꝰ in corpore, sicut voces sũt signa sui significati. Ex quo explicat difinitionis partes. Prima est illa particula primũ, & posita est ad denotdũ, quod ille sẽsus literalis, qui primo, & immediate per voces significatur quia voces interdum habẽt duas significationes ex æquo, sicut equiuoca eodem nomine, & voce significãt duo, sed prima impositio est prima ria, altera verò secundaria, translatitia, aut metaphorica, qua nomen a prima impositione transfertur ad aliam. Vt in illo loco, *oculi Domini super istos*, nomen, oculi, significat proxime intellectum Dei, translatitiè ex oculo corporeo, quòd concipiatur ad instar corporei. Et ita quamuis in eadem voce sit impositio propria, & translatitia, non dicitur nisi proxima, nõ remota. Quia non est vnius rei per aliam, sed ex æquo vtrumque. Vnum ex prima impositione alterum ex secũda tranlatitia. Cœrũ sensus mysticus debet significare per res ipsas, vt per petrã Christus, per manà eucharistia, &c. *Secunda particula* definitionis explicat sensum litteralem esse, qui significatur immediate per voces siue proprie, vsitata, aut metaphorica vsurpatione. Hęc enim sunt posita, vt excludatur sensus misticus. Nam litteralis semper referri debet ad voces immediate, acceptas in communi significatione, & vsitata, quamuis interdum id possit contingere sensui mystico, in rebus tamen relatis ad verba, in communi, & vulgari significatione. Vt constat ex illo Oseæ 11. *ex Egypto vocaui filium meum*. Vbi in communi significatione vocum dici potest de populo, ex Egypto vocato, & de Christo ex Egypto reducto, de Christo filio naturali, & de popul filio adoptiuo. Vbi misticus referri potest interdum ad voces incommuni significatione acceptas, scilicet quando in vsitata significatione enũciantur de his

toria,& de mysterio in illa inclusso,& significato,licet si anteceden tia,& consequentia verba historię simul expendantur solùm aptari possint historiæ proximè, misterio verò per historiam significato, & per illam solùm remotè. Cœterum mysticus significari non potest verbis in communi & vsitata significatione acceptis, immò neque in metaphorica. Ille enim rebus immediate,& proxime significari debet. Exēplū in scriptura. Vbi dicitur,quòd Ionas fuit *in ventre cœti tribus diebus*, &c. Vbi communi,& vsitata vocum acceptione significatur historia Ionæ, non verò Christus,neque proprie, neque metaphoricè,sed per voces immediate,& proximè significatur historia Ionę,per historiā verò immediate & proximè Christus. Tertia particula difinitionis est, quam author Spiritus Sāctus significare voluit. Nam necessarium est id,vt aliquis sit sensus literalis. Licet non sufficiat. Nam etiam mysticus est ex intētione spiritus sancti simul cum litterali,& ita cum contingat eadem orarione proximè significari plura (vt dum solent vsurpari voces proprię)& trāslatitiè, siue metaphoricè sēsus literalis necesario debet esse intentus, licèt id nō sufficiat. Nam etiā mysticus potest intendi, licet non necessariò. In quo etiam est discrimen a litterali. Ista tertia sententia, verissima est, solùm in eo impugnatur à Serario, quòd non sit necesse ponere in definitione, litteralem sensum esse illum, quem spiritus sanctus voluit inijcere verbis, aut significare per illa. Nam licet re vera id adsit semper, ex eo tamen, non est colligēdus sensus, sed potius cōtra ex significatione verborū colligēdus est sensus scripturę. Verba enim satis sunt signa,& sēsus,& eorū, quę author habet in mēte. Iuxta istā sunt formādæ cōclusiones.

Prima conclusio *sensus litteralis est, qui immediate significatur per voces, propiè, aut impropriè, tropicè, aut trasslatitiè, aut metaphoricè acceptas.* Ita S. Thom. & innumeri apud Vazquez ibidem, & Serariū, Tirinum t. 3. in indice controuersiarum fidei controuers. 2. Ratio, nam in omni oratione authorum, siue sint prophani, siue sacri, ille dicitur esse sensus, qui significatur per verba, secūdùm impositionē primā immediate propriā, aut impropriam, translatitiā, aut metaphoricā,& in hoc discrimen est à sensu mystico,& per hoc excluditur à literali. Nā mysticus, nō significatur immediate per voces, sed per res, quidquid sit de remota, per res immediate significatas.

Secunda conclusio, *litteralis sensus solet vocari historicus, eo quòd litteralis in historia eluceſcit maximè non quia in sola historia sit. Nam in aliis scripturæ partibus, præter historiales est sensus litteralis.* Atque adeò omnis historicus est litteralis, non contra. Ita penè innumeri PP. & doctores apud Vazq. & Serariū ibidē, qui sicut inista appellatione etiā alijs solet insignirī apud

PP.

PP. historia cortex grãmatic⁹ corporalis text⁹ secũdũ primũ aspectã.

Arguitur contra primò, nam in voce communi, ita solent duo res immediatè significari, vt non vna per aliã, sicut eodẽ nomine in equiuocis vtrũq; eque primo. Nam voces significant interdum, tum proprie, tum metaphorice, ita significarentur immediatę duę res, quarum vna in sensu litterali, alia in mystico. Sicut in exẽplo adducto corũ, qui in cõmuni voce, & significatione, vsitata, significari possũt. Osee 11. *Ex Egypto vocaui filiũ meum.* Ergo sensus mysticus potest cũ litterali immediate significari voce cõmuni filij, populo, & Christo. Resp. quòd quãuis sub voce cõmuni possint duo significari immediate, quòd nũquã cõtingit hic, sed in vno significato indigitatur alterũ, ex illo, & per illũ, tamẽ precisẽ loquẽdo, vt in re aliqua includũtur, & significãtur alia, nequit significari nisi in sensu mystico. Nam de ratione illius est significari per rem immediate. Licèt possit idem significari mediate, & remote per vocem. Et ita vbi intercedit vox, quæ significat prima impositione, & secunparia per translationẽ, & metaphoram, ille est litteralis, qui impositione secundaria translatitia, aut metaphorica per voces significatur. De sensu autẽ litterali ſtatim dicẽdũ, an autẽ idẽ possit significari simul vtroq; modo litteraliter, & mystice? Dicetur suo loco.

Arguitur secundò, ad probandum, quòd litteralis nõ possit esse nisi qui, significatur per vocem, in propria significatione, non in impropria, & translatitia. Nam litteralis immediate significatur per verba, & mysticus per rem, sed in omni metaphora primo significatur res ex prima impositione, deinde per illã rẽ, altera, ad quàm transfertur. Vt Ioann. 15. *Ego sum vitis.* Apocalypsis. *Vicit leo.* Nomine vitis significatur immediate planta, ex prima impositione, secundò, & remote Christus. Est enim vitis vnũ extremum, à quo fit translatio ad alterum, scilicet Christũ significãdum: ratione similitudinis extremorũ. Resp. non ideo necesse esse, vt intelligatur prius vnum extremũ, & ex illo aliud. Sed simul vtrũq; intelligi, sicut relata. Et ita res ad quã fit trãslatio immediate, cũ respectu tamẽ, & habitudine ad eã, à qua ducitur similitudo, & trãslatio. Et ita decipi, qui putãt in sermone metaphorico immediate significari id aquo non verò id ad quod fit trãslatio. Potest vtrũq; simul, & ex equo. Licet id aquo, ex primaria impositione, & id ad quod, ex secũdaria. Quia qui loquitur libere potest loqui in primaria impositione, aut secũdaria, & cũ assumit vocẽ metaphoricã eã potest immediate significat rẽ posterioris impositionis (aut prioris saltim, terminatiue) vt cùm dico ridere prata, significatur immediate risus hominis, & viror prati sub habitudine impositionum. Et ita immediate significat, id quòd intenditur ibi, per metaphoram,

ne qui loqui metaphorice cogatur semper prius loqui falsum, quàm verum, & sub voce metaphorica potest loqui intentum, ad quod licet dicat habitudinem ad extremũ, a quo sumitur trãlatio, nec necessariũ est prius dici aut significari res, quę significãtur proprie, quàm quæ metaphorice. Cũ illa significatio simul respiciat vtrumque ad quem cum habitudine a quo. Et ita reuocari debet ad sensum litteralem ille, qui significatur, non solùm per vocem propriè, sed etiam metaphoricè, vt statim.

DVBIVM III.

Quotuplex sit sensus litteralis?

Conclusio *duplex, proprius, & figuratus*, ita precitati. Rationem eo ipso quo dicitur esse literalem qui significatur immediate per verba, in propia aut in impropia, tropologica, aut metaphorica significatione, admittũt duplicem sensum literalem, propriũ, & figuratũ. Secus Liranus, & sectatores, asserẽtes, quòd vbicumque est metaphora, ille est litteralis, qui significatur prima impositione, non secunda, & si in priori implicet carere literali. Nã scriptura semper aliquid significat propriè, aut metaphorice, est enim in voce metaphorica duplex nominis impositio, prior, & posterior: propia, & translatitia. Deinde aduertendum quosdã aducere alias diuisiones sensus literalis ex PP. pepitas ex varietate materię, vel historiæ, vel ex alijs mistici sensus materijs, vt de credendis, vel de operãdis, vel de sperãdi in alia vita. Etita instituere varia nomina pro diuersita te materiarum, allegoricarum, moralium, anagogicarum. Istæ tamen non sunt propriè diuisiones, nisi quasi materiales, desumptas ex materia. De quibus Salmerõ prolegomen. 12. Serarius ibidem quæst. 3.

DVBIMM. IIII.

An quilibet scripturæ locus admittat sensum litteralem? Vel sit aliquis sine litterali, solo mystico?

Prima *sententia* est Lirani dicentis esse aliqua sine litterali solo mystico, in duobus casibus, primo in casu parabolarum, vt Iudic. 9. *ierunt ligna, vt vngerent super se regem*: secundo in casu metaphoræ vt Mathei 5. *si oculus tuus scandalizat te, erue eum. Si manus, &c. abscinde eam*: vbi neuter admittit sensum litteralem. Quia esset falsus, & impossibilis, vt ligna iuisse ad eligendũ superse regem, vel esset absurdissimus, vt eruendum occulum, & abscindendam manũ, quoties fieret per oculum, aut manum aliquod pecca-

catum. Ergo vtriusque sensus debet esse mysticus. Vt per ligna figuraliter, & mystice intelligantur viri Sichem, qui conuenerunt ad eligendum sibi regem, & per oculũ, & dexteram, eruendum proximũ scandalizantẽ, qui reijci, & repelli debet, ne sit ocasio peccandi. Cõfirmatur ex autoritate Patrum Origenis, Hieron. Augustin. Gregorij, qui idem sentire videntur. Nam vbi deficit littera eundum est ad mysterium. Origenes Homilia 2. in Genesim adducit in exemplum illud proberuiorum 26. *Spina nascetur in manu temulenti.* Ibi deficit litera, & intelligi non potest literaliter, nisi absurdè. Hieron. in c. 11. Isaiæ, illud *habitabit lupus cum agno* quod redit sensum impossibilem, & falsum. Greg 4. moraliu. c. 11. & 2. illud Iob 3. *pereat dies in qua natus sum*, quòd si ad litteram intelligatur est absurdum. Denique Augst. 15. de ciuitat. c. 27. vbi (quod nonnulli) illud de diluuio, & arca non esse res gestas, sed figuras solas rerum significandarum. Et 3. de doctrina Christiana c. 5. ait cauendum est, ne locutio figurata accipiatur ad literã, adhoc enim pertinet, quòd ait Apostolus, *littera occidit, sensus viuificat.*

Conclusio asserit, *quòd quilibet locus admittit litteralem, & non esse vllũ sine illo, solo mystico cõtentũ.* Ita cõmuniter prædicti cum Ribera in prophetas, Serario ibidẽ, Becano, q. 4. Tirino, & alijs nouissimis.

Ratio, nam absurdum est negare verbo Dei, quòd commune est verbis hominum, vt possint indicare cõceptũ propriè, & impropriè aut methaphoricè. Igitur hic nõ caret sensu literali. Secũdò, nã sẽsus litteralis est radix, & fundamẽtũ cæterorũ. Et sicut arbor sublata radice aresc it, & ędifitiũ sublato fundamẽto ruit sic sine litterali cæteri. Vt docẽt plures patres apud Serarium ibidem. Tertio, nã constat ex dictis, quòd sensus litteralis est ille, qui significatur immediate per voces, siue in propria, aut metaphorica, aut translatitia acceptione. Sed nullus est, qui non habeat propriam aut figuratã. Ergo nullus est sine litterali patet, nam quando verba non sumuntur in propria significatione, sed figuratà, metaphoricà, & translatitià, ille est litteralis, qui significatur immediate per verba, translatitiè sumpta: vt cum dicitur *habitabit lupus cum agno*, non sumitur pro vero, & proprio lupo & agno, sed translatitiè, & metaphoricè promãsueto, & bellicoso, feroci, & ita sẽsus literalis est, quòd quãdo venit Christus, simul in eadẽ fide & religione Christiana habitabũt pacifi cè, bellicosi, & mãsueti, eò quòd induent mores pacificos, similiter cum dicitur, *si oculus* aut *manus*, nõ sumitur pro oculo, & manu materiali, & propia, sed tanslatitia, amico aut proximo scandalizante, & erit sensus litteralis, quòd si amicus inducat ad peccandum, sit abij

cien-

ciendus,& repelendus,vt Deutero mij 13. de occidendo patre,vxore,filio,& amico, inducēte ad ido latrandum.

Respondetur ad opposita ex Li rano,in sensu explicato cessare in conuenientia,impossibilia,& absurda. Ad confirmationem ex PP. facile constat de illorum mente, ex distintione sensus primæ impositionis;& proprię,& figuratę, vt immediate significetur id,quòd figuratè indicatur in omnibus testimonijs adductis à PP. & satis constat ex August. reprobari oppositam sententiā relatam,extare pro nostra illud de litera instruit vitandam confusionem litteralis, &mystici,quia litteralis(iuxta dicta)est immediate significatus per voces,mysticus per res.

DVBIVM. V.

Quis sit sensus litteralis parabolarū? An rei similis? An aplicationis ad rem,cuius sit aplicatio?

CONclusio,*ille est sensus, qui respicit rem similem, adductam in exemplum,& ille applicationis ad rem ad quam affertur.* Est communis inter præcitatos. Ratio,nam in parabolis verba habent duplicem significationem,immediatam primā rei similis, quæ in exemplum adducitur,secundam aplicationis rei similis ad alteram,ad quam adducitur:& in vtraque ille est sensus litteralis,quia immediate significatur,prior est quasi historia,secūdus est quasi aplicatio ad rē, cui aplicatur. Prior habet rem illam sensibilem, & rudem, quæ est quasi historia pro litterali, secunda, mysterium,aut rem spiritualē, ad quā aplicatur parabola. Sit in exēplum illud Matthei. 13. *Simile est regnū cœlorum fermento, quod acceptum mulier abscondit in farinæ satis tribus, donec fermentatū est totū.* Vbi in verbis distinguitur duplex pars & significatio. Prima,significat immediate opus,& factū mulieris,cōficientis panem ex fermento,& farina,& hæc est res, quæ in priori parte parabolę adducitur in exemplum simile. Secūda,significat immediatè aplicationem rei similis ad rem alteram,scilicet Euāgeliū quòd immediate significatur litteraliter. Et ita redditur sens',quòd sicut modicum fermentum habet vim ad penetrandam, & dilatandam massam farinę: ita Euangeliū habet vim,& efficaciam prædicatum in Palestina, ad persuadendū vniuersum orbē, & amplificandā Ecclesiam fidelium. Idem iuditiū ferendum est in alijs parabolis siue contineant expræsam aplicationem,siue solam implicitā. Nam in scriptura aliquæ parabolæ non afferunt explicatam aplicationem, vt Luc. 7. *simile est regnum cæterorum homini qui seminauit bonum semen in agro suo,&c.* Licet Christus exposuerit discipulis seorsim aplicationem. Est aliud solēne exēplum in scriptura,in illa parabola longissima vsurpata à Solomone

in

in canticis canticorum *de sponso, & sponsa* sub persona pastorum dulcissimi amoris colloquia. Vbi non est expressa applicatio. Et ita ab interpretatibus fit ad varia. Explicatius cęteris Gisler. de triplici sponsa Ecclesia, Deipara, & anima iusti, sponsis, spiritus sancti. Quis autem sit sensus litteralis canticorũ? Dico, iuxta dicta de parabolis in illis priorem significationem litteralẽ, referri ad rem similem: posteriorem, ad rem illam, ad quã ista gesta inter pastores, sponsos exemplificanda adducuntur.

Aduete, quòd licet in vtraque priori, & posteriori, sit suus sensus litteralis circa rem immediate significatam, si tamen in vna includatur, & significetur posterior: in ea serie dici potest mysticè significari. Iuxta dicta de sensu mystico, vt distinguitur à litterali. Nã dũ immediate vtrumque extremum significatur, dicitur vtrũq; significare litteraliter. Tamẽ si per rẽ significatã immediate, altera significetur, trahitur significatio in illa serie significandi ad mysticũ. Et significabitur in re simili, non litteraliter.

Aduerte in scriptura inueniri triplex parabolarum genus, primũ genus continet rem gestam, historiam, aut rem, quæ re ipsa narratur. Secundum, rem posibilem non gestam, Tertiũ impossibilem Primi, exemplum est in parabola de fermento in farina, nam quotidie gestum cernitur in confectione panis: Secundi verò in Mathæi 20. de patre familias qui exiit primò mane, conducere operarios in vineam suam. Similiter Luc. 13. in paraçola illa de grano sinapis. Nam de ratione parabolæ, non est id reuera accidisse, sed potuisse ita euenire, aut imaginari. Exemplũ, tertij de impossibili, est in illo Iudic. 9. dicitur, quòd *ligna cõuenerunt, vt eligerent sibi regem.* Huiusmodi in scriptura sunt raræ parabolæ, licet apud alios autores sint tot, quot fabulæ, emblemata, &c. An autem obstet quòd id, quòd narratur non euenerit, imò sit impossibile, vt assumatur in parabolã sentio, nil obstare, nã illud quòd introducitur in parabolam, ideo adducitur, nõ quasi revera acciderit, aut quasi euenire potuerit sed vt per illã similitudinẽ, adhuc fabulosã in aprehẽsione, res altera, melius exprimatur, intelligatur, aut significetur. In quo nullum est mẽdatiũ, sed assimilatio inducitur, quasi ex hipothesi, q; esset possibile, quòd assumitur. Cum re ipsa impossibile sit. Sicut non est vllum mendatium, in eo, quòd quis introducat aliquam fabulam ad eliciendum moralitatem ex illa, sicut sunt introductæ Æsopi fabelæ ad eliciendam adfabulationem, doctrinæ politicæ, aut moralis.

Arguitur cõtra ex sentẽtia Lirani. Nã saltẽ in parabolis de serie, & modo impossibili, nõ potest esse sensus litteralis. Alias esset sensus falsus, aut absurdus, vt in præcitatis de lignis eligentibus Regẽ

de

de exuendo ô ulo, & abscindẽda manu, siue sit sermo de prima parte rei impossibilis assumptæ, siue de secunda. Aut saltim dicendum cũ Lirano, & alijs in priori parte loci non inueniri sensuũ literalẽ. Nam requiritur quòd sit verus, aut possibilis litteralis. Respondetur, ex aduertentia præcedẽti, vbi dicitur, qua ratione sit de ratione parabolarũ accidisse assumptũ, potuisse, aut impossibile fuisse. Quia solũ assumitur, quasi ex hipotesi ad eliciendum ex illo simile aliquid morale. Et tunc erit ille sensus litteralis verus, quando aplicatio est bona, & cohærens, siue id quod assumitur in parabolam sit verum, factum, aut impossibile.

BVBIVM. VI.

An sit dicendum, quòd in tota scriptura sit vnus tantùm sensus litteralis, & nullus alius, adhuc mysticus?

PRima *sententia* dicit, in scriptura solùm esse litteralẽ, & ineptũ esse admittere alios plures, vt sint tot, ad quotverba aplicari possũt, tropologicè, allegoricè, aut anagogicè aut alio modo. Sic ex hæreticis plures apud Serarium ibidem quæst. 5. ex catholicis verò Abulensis in cap. 2. Mathæi c. 2. quæst. 57. agnoscit solùm litteralẽ, vt intẽtũ à Spiritu sancto, & sequuntur alij. Primo nam solus sensus litteralis est intentus à spiritu sancto, nõ mysticus. Secundò, nam licet ex litterali colligi possint varia, & variè aplicari rebus aut acommodari, non ob id fingẽdi sunt varij sensus, & explicationes scripturæ.

Conclusio asserit, quòd *admittendus est necessariò in scriptura, alius sensus præter litteralem.* Est communis inter prẽcitatos. Primò, nam præter litteralem, qui immediate significatur per verba, necessum est admittere alium mysticum, qui immediate significetur per res, nam verbis immediate significatur historia gesta, & per illã vt typum, & figuram significatur res gerenda, non immediate vtrũque: vt sit vn⁹, & idẽ sensus litteralis, igitur pri⁹ significatur historia & per ipsã, vt typũ misteriũ, hoc autẽ est esse duos sẽsus necessario, litteralẽ, & mysticũ, assũptũ videtur pobari ex innumeris, vno aut altero exẽplo. Apostol⁹ dixit 1. Corint. 10. quod Abrahami duę vxores, & duo filij ibi narrati. *Hæc duo sunt testamenta* ad Galatas 4. vbi nõ dixit aptari, & acõmodari possẽ duobus testamẽtis, sed dicta esse per allegoriã. Vbi in historia narratur res gesta, de ancilla, & libera, & in re gesta, vt typo, res gerẽda, illa figura, hoc figuratũ, illa historia, hoc mysteriũ. Deinde historia Ionæ c. 2. illius verba immediate significãt *triduũ in vẽtre ceti* extitisse Ionã, & ita historia habet suũ literalem, qui est res ipsa verè gesta, sed prẽter illũ est mystic⁹, quia res gesta scilicet triduũ in vẽtre cẽti significat *triduũ Christi in sepulchro*

chro Matth. 12. Deinde Exodi 12. *os non comminuetis ex eo*, habet sensum litteralē de agno typico, & præter illum mysticū de Christo, cuius ossa, non sunt confracta Ioannis 10. *non fregerunt eius crura*, vt viderunt iam mortuum ergo. In his, & similibus distinguendi sunt duo integri sensus totales, alter litteralis, & alter diuersus ab illo mysticus, tropologicus, aut allegoricus, quiuis ille sit. Est communis sententia PP. quorum adhuc nomina, non permittit brebitas inca thalogum recēseri. Videātur apud prēcitatos, præsertim Serarium.

Respondetur negando assumptum, nam etiam mysticus est intentus à Spiritu Sancto.

DVBIVM VII.

An vnus, & idem locus scripturæ habeat plures sensus litterales?

Conclusio asserit. Quòd *vnus, & idem locus non solùm admittit duos sensus, alterum litteralem, & alterum mysticum, sed duos litterales immediatos, non vnum immediatū, & alterum remotum, nisi myst cum.* Est communis inter scholasticos, & positiuos, cum S. Tho. Augustt. & PP. quos sequitur Serarius ibidem cap. 21. quæst. 12. Vazquez ibidem disput. 13. cap. Becanus ibidem quæst. 5. Salmeron prolegomen 8. Tirinus in suis sequutus innumeros alios.

Probatur primò, nam Deo qui est author sacræ Scripturæ, nō est deneganda, ista fœcunditas, vt sicut mētali verbo simul exprimit infinita vnico vocali, aut scripto significet plura. Nam si est possibile, non est Deo denegandum. Nam eodē signo immediate significari plura arguit maiorem perfectionem, vt in artifice agere vno instumento, vt non egeat pluribus: & melius natura, cuius est ars imitatrix, vt frusta fiant per plura, quæ per pauciora fieri possunt, idem in facultate loquendi arguit maiorem perfectionem, & excellentiam, paucis plura complecti, quæ alius ageret multis. In Angelis est inditium perfectionis, quòd quo superior est habeat speciem magis vniuersalem, non logicè, sed physicè, & plura repræsentantem, vt inferiores egeāt ad idē pluribus speciebus, & hebetes quā altioris ingenij homines. Igitur perfectionis est vno signo significare, sicut vno verbo plura plura eficere. Regem enim decet breuiloquiū. Si ergo est id perfectionis, nō est Deo, & scripturæ de negandū, præsertim, cùm id sit val de posibile. Videmus, enim quòd eadem vox arte, aut casu plura significet, non solùm in lingua Hebrea, & Græca, sed frequentissimum in latina, & nostra vulgari, imò plura signa sensibilia externa, vt capitis inflexio cultum sacrum, & politicum, motio vultus, nutus, manus indices arte diuer-

uersarum rerum, cur ergo si vellit Deus nõ poterit, ea instituto face re, & in scriptura feciſſe, vt idem verbum indicet tot sensus litera lis diuersos, & varios, quot inter pretationes, & sensus adhibere so lent doctores, vt in eo monstrari posset mirabilius immensa Dei potentia, ac sapientia, & ornare scripturam ista fœcunditate, & laude, quòd non sit innanis, & va cua, sed fœcundissima sensibus, & mysterijs eodem signo, & verbo immediate significatis. Dixi imme diate, vt displicerem de sententia asserentium sub vna littera inue niri duos sensus litterales, vnum immediatũ, alium mediatum. Nã hic modus Lirani difficilis est, nã ille prior erit litteralis immedia te rem significans, ille autem per rẽ significatus immediate, & per verba, prioris remote, in rigore, nõ potest dici litteralis, sed mysti cus, eo ipso quod in typo signifi catur.

Dubiolum. Qui sint loci, qui habent duos sensus litterales, aut plures?

Cõclusio *sunt penè innumeri apud probatos authores.* Ex innumeris Ps. 2. *ego hodie genui te.* Significat gene rationem æternã ad Hebræos 1. & temporalem. Imò, & Christi re surrectionem. Actorum. 13. Isaiæ 53. *generationem eius quis enarra bit*, significat generationem æter nam, & temporalem Christi, Iux ta Leonem Papam sermone 3. in natiuitate Christi cap. 1. Isaiæ 53. *Vere languores nostros ipse tulit, &c.* habet interpretationem de pecca tis iuxta 1. Petri. 2. *qui peccata nostra pertulit super lignum*, & de pœ na peccati, & similiter de infirmitatibus corporalib', quas sanauit. Iuxta Matth. 8. *Curauit male habentes, vt impleretur, quod dictum est per Isaiam, dicentem, ipse infirmitates nostras accepit.* Denique Daniel 9. *& erit in tẽplo abominatio desolationis*, habet duplicem intelligẽtiam, de prima ante Christũ sub Antiocho rege, & de ea, quæ futura erat post mortẽ Christi. Illud autem aduer tẽdũ, vt regula firmissima, quòd aliqui sunt decepti existimantes scripturas habere duos sẽsus litte rales cũ sub cõmuni voce cõpre hendi solẽt plura, vt in præcitato. *Ex Egypto vocaui filium meum*, de po pulo Israelitico, & Christo Infan te. Existimo, tamẽ primũ esse litte ralem, & historicum, alterum myst icum. Quippè significatum in re, & typo. Et ita pro regula est ha bendum, quòd quoties in primo significatur secundus, non signifi cari secundum literaliter, sed solũ mystice: Quia in figura, & typo mysterium.

Arguitur contra, nam si inscrip tura essẽt plures litterales, esset illa, ambigua, flexiloqua, amphibo logica, quæ nil firmi sensus, ac cer ti exhiberet legenti, & esset iconia oratio, & bisona, sicut oracula Dæ monũ bifrontia ad decipiẽdos in cautos, vt vno ambiguo oraculo

præ-

prædiceret euntum in vtrãq; partem. Respondetur illam esse orationem ambiguã, &c. quando, qui loquitur intendit in eo vnum sensum æquiuocum ad deceptionem, non ita in scriptura, nam Deus intendit vnius verbi percipi plures sensus, vt per illos erudiatur homo in vtriusque veritate.

Arguitur secundò, nam vsitata loquendi humana consuetudo nõ fert, vt sub eadem voce subsint plures sententiæ, nec ingenium humanum capax est percipiendi vnius verbi plura significata. Respondetur, interdum in vsu humano vno verbo plura dicuntur, & ingenium interdum assequitur, præsertim, si significentur, & exponantur à loquente, & licet ita, non esset in vsu non esset cur ista præstantia, & prærrogatiua negaretur Verbo Dei, quæ aliquando inuenitur in scriptura humana.

Arguitur tertiò, nam ita sententia, quæ asserit in vno loco esse plures litterales oritur ex timore ne scriptura veteris testamenti citata in nouo inanis, & sine sensu affirmaretur ad quòd attendit ista sententia. Respondetur, non semper est necessum, quòd scriptura veteris testamenti habeat vnum litteralem in veteri, & alterum impletum in nouo. Nam quamuis citata ex veteri aliquando citentur in sensu litterali, ferè semper in mystico, vt cum res nouitestamenti significatur in re significata à verbo veteris.

DVBIVM. VIII.

An in scriptura præter sensum litteralem, sit etiam mysticus? quid sit? & quotuplex?

CONclusio asserit, *præter litteralem esse in scriptura alium, qui apte dictus est sensus mysticus.* Quid sit sensus mysticus supra insinuatum est. Diffinitio autem, aut discriptio sensus mystici traditur sic: est ille, qui per rem significatam, significatur immediate, & proxime. Est enim sub rebus quasi in figura, & vmbra conclusus, & hac ratione dicitur reconditus, arcanus, & mysticus. Cur autem vocetur spiritualis insinuati, quòd quia sub re latet, vt spiritus sub corpore, Dici etiam solet typicus, aut allegoricus, res enim se habent, vt signa, & typi significatiui respectu aliorum. Hæc quoad nomen, ad rem ergo. Probatur conclusio, nam conceptus mentis dupliciter potest significari. Primò, Vocibus proprijs, aut metaphoricis. Secundò rebus, vt fuit in consuetudine apud Egyptios symbolis, & hieroglificis,

&

& rebus conceptum mentis significari, vt animalibus, leone fortitudinem, vulpe caliditatem, apemelifica cum aculeo, regis misericordiam, & iustitiam. Et secundū S. Th. 1.p. quæst. 1. art. 10. in Scriptura sacra, est duplex significatio, vna per verba ad litteram, altera per res ad mysteria, ita quòd verba significent immediate res, res verò immediate res alias, seu mysteria, sed Deus qui sapientia, & potentia est præstantissimus super homines, poterit longe altius per verba, & per res, vt signis significare conceptus. Cum ergo homines possint loqui per verba, & per res multò magis Deus optimus maximus. Homines loqui per res constat ex penè innumeris humanæ sapientiæ libris apud præcitatos præcipuè Serarium ibidem cap. 21. quæst. 6. vt per æquationē segetum, in ciuitate æqualitatem ciuium intendē dam. Per abscisionem spicarum supereminentium, decapitandos reipublicæ superbos. Per euulsionem inutilium herbarum, inutiles, & ociosos radicitus è republica euellendos. Quòd vsitatum inueni mus in historijs apud Reges. Secū dò in vsu quotidiano signis manuum, & motionum, & nutibus plura solent significari, & tuba dā tur signa, &c. Quis ergo audeat negare Deo elocutionem per res, quæ adhuc hominibus conceduntur. Et vt cum Greg. loquar. *Scriptura dum narrat gestum, podit mysterium.* An autem sit illi peculiare sub historia quodere mysterium, ita quòd in eo præstet scriptura rebus alijs? asserit Greg. 20. moralium cap. 1. & S. Th. 1. p.q. 1. art. 10. & quodlib. 7. art. 8. nam quamuis signorum sint tria genera, quibus significari possunt aliqua. Primùm vocum. Secundùm rerum, quod commune habet cum cæteris. Tertiùm est speciale, quo Deus solus vtitur in scriptura, significando per res, aut per historias, non præsentia tantū, vt homines, sed futura, sibi nota vt per egressum Israel de Egypto, regressum Christi infantis ex Egypto in nouissimis diebus, & per manà Sacramentum Eucharistiæ futurum, quòd homines inscij futurorum præstare, non possunt. Scriptura autem gestum narrat litteraliter, gestum verò significat mystice mysterium. Id tamen aduertendum, quòd in omni loco, non inuenitur sensus mysticus, nam in quibusdam non est, sed litteralis, vt in præceptis, & consilijs Euangelicis, nec arbitrio cuiusque censendus est mysticus ex mente Spiritus Sancti, sed attendi debet explicatio Sanctorum Patrum.

Arguitur, nam oratores in vsu humano, non significant nisi vnam, & eandem rem per verba, & per res, per gestus, manus, & alias actones, ergo scriptura non debet significare per signa scripta immediate rem, & per rem aliam longe distinctam. Respondetur dis-

discrimen non negandum inter Deum, & homines quoad modum loquendi, & Deum præstare, vt possit vti solis rebus, & possit solis rebus. Vt olim in iride, & arcu cœlesti, & simul verbis, & rebus.

Secunda conclusio, *generali diuisione sensus scripturæ, cum dividitur in duo membra, in litteralem, & mysticũ; mysticus solet diuidi tria mẽbra, in allegoricũ, moralem, & anagogicum.* Est communis apud scholasticos, & interpretes prȩcitatos. Vazquez ibidem disp. 16. cap. 2. Serarius ibidem quæst. 7. sequuti innumeros alios, S. Thom. Liranum, Abulensem, Burgens. & triplex mysticus solet explicari per materias, trium virtutum Theologicarum, vt allegoricus sit de reb' fidei credendis, moralis aut tropologicus de rebus agendis charitatis, & cæterarum virtutum, Anagogicus de rebus sperandis à Deo in præsenti, aut in futuro. Et hi quatuor sensus solent commendari ad memoriam illis versiculis.

Littera gesta docet, quid credas allegoria,
Moralis quid agas, quò tendas anagogia.

Adduci solet in exemplum istorũ quatuor sensuum illa vox *Hierusalem*, quæ significat litteraliter, & historicè ciuitatem terrenam in Palæstina, allegoricè Ecclesiã militantem, animam moraliter in hac vita virtutibus exercendam, anagogicè Ecclesiam triumphantem in cœlicitate æterna. Ita tamen explicari solent tres mystici, vt allegoricus respõdeat fidei, moralis charitati, anagogicus spei. Ratio, *nam allegoricus*, est quando Scriptura præter litteralem significat aliquid attinens ad fidem, aut Ecclesiam militantem, moralis est, quando scriptura præter litteralem significat aliquid attinens ad instructionem morum, per charitatis exercitia, & aliarum virtutum. Anagogicus est, quando scriptura præter litteralem significat aliquid pertinens ad fœlicitatem æternam, Ecclesiæ triumphantis. Omnes isti quatuor sensus solent illustrari pluribus exemplis sacræ Scripturæ latiori calamo apud Vazquez ibidem cap. 3, in ad Galatas 4. *Abraham duos filios habuit*, est sensus litteralis, & historicus. *Hæc sunt duo testamenta*, est allegoricus. *Quomodo tunc his qui*, &c. est moralis, aut tropologicus. *Illa autem quæ sursum est Hierusalem*, est anagogicus. Addẽ dũ quòd à viris doctis obseruatũ, quatuor Ecclesiæ Doctores principes excelluisse, singulos in singulis sensibus explicandis. Hieronymus incubuit in litterali. Ambros. in allegorico. Gregor. in morali Augus. in anagogico.

Arguitur primò, nam PP solent numerare pauciores sub tribus nominibus apud Serarium ibidem quæst. 7. Respondetur sub vno nomine duos complecti.

Arguitur secundò, nam diuidi

possunt, vt vnus sit immediatus, alter mediatus. Resp. quòd sic fieri possit in aliquo sensu vtendum est vocibus cum multis. Nam licet per vocem immediatè res significatur, & remotè sub mystico tres numerati, vt ille immediatè alij remotè: aptius dicendũ cum doctrina communi, & vsu vsitato, sensum diuidi generaliter in litteralẽ, & mysticũ, & mysticũ subdiuidi in tres, allegoricum, moralẽ, & anagogicum. Ita vt sicut littera lis immediatè significatur per voces, mysticus significetur immediatè per res.

DVBIVM IX.

An sit sensus mysticus in veteri, & nouo testamento? & in omnibus, & singulis partibus vtriusque?

PRima sententia, Lirani est in nouo, & in veteri testamento, nõ inueniri nisi literalem sensum, vbi sunt verba in propria acceptione. *Secunda sententia*, est Originis in omnibus, & singulis partibus veteris testamenti, etiam minutissimis esse mysticum.

Conclusio asserit, *in veteri testamento generaliter esse quosdam sensus mysticos, licet non in omnibus, & singulis particulis minutissimis.* Probatur prima pars ex 1. Corint. 10. *Omnia in figura contingebant illis.* Ad Hebræos 10. vmbram habens lex futurorum bonorum, &c. Secunda ex PP. Hieron. in proœmio cõment. in Isaiam. Post veritatem historiæ, spiritualiter accipienda sunt omnia. Vt in exemplo de Hierusalẽ, & alijs nominibus. Ex August. 12. cõtra Faustũ c. 7. vbi dicit. Quæ in libris veteris testamenti continentur, dicta sunt, vel de Christo, vel propter ipsum. Ergo in veteri testamento generatim quoad partes maiores est mysticus, licet non in singulis generũ in generibus singulorum.

Probatur secunda pars, scilicet, *quòd non sit mysticus in singulis particulis illius.* Nam sunt plurima, quæ solùm significant immediatè rem gestam personas, actiones, vrbes, & similia, quæ nil aliud videntur significare pertinens ad fide credenda, aut bona operanda, aut speranda Sit in exemplum Genes. 1. *In principio creauit Deus cœlum, & terram.* Secundò *serpens erat calidior*, 2. Reg. 12. *misit Dominus Nathan ad Dauid*, vbi præter rem gestã nil aliud indicatur. Licet quis possit elicere aliquid pertinens ad credẽda, operanda, & speranda, non ideo erit sensus ipsius scripturæ. Aliàs singula essent allegorica, tropologica, & anagogica. Ex quibus potest colligi discursu aliquid huiusmodi, imò singulæ conclusiones Theologicæ ex scriptura deductæ, dici possent illius sensus mystici. Igitur in singulis non est inquirẽdus necessariò sensus mysticus, sufficit in plurib⁹. Nam vt postea dicemus, licet non omnia in-

intelligantur de Christo mystice, aut litteraliter sunt plura.

Secundò probatur, nam in veteri testamento sunt plurima, quæ intelliguntur ad litterā de Christo, vt Genes. 49. versu 10. Deut. 18. Isaiæ 7. Confirmatur ex August. 17. de ciuit. cap. 3. vbi dicit, *Non omnia in vetere testamento esse mystica, & multum errare, qui dicit omnia esse inuoluta significationibus allegoricis.* Et D. Hieron. reprehendit Originē, quòd vbique inquirat adeò allegorias, vt videatur tollere, nō semel historię veritatem, & ita cauendum interpretem semper allegoricum, vt fugiat rei veritatem. In quo reprehendi solet noster Ioan. 44. Hierosol. vt Originista, immerito. Videri possūt alij PP. apud Serarium, Salmeronem, & Vazquez præcitatos.

Secunda Conclusio, *in nouo testamento sunt in aliquibus partibus varius, quam in veteri, aliqui sensus mystici.* Primò ex Apostolo ad Hebræos 13. *Exeamus igitur ad eum extra castra*, improprium eius portantes. Quod mystice continetur in illo, quod Christus extra portam passus est. Secundò ex PP. qui dicunt in nouo testamento Christum implesse prophetias, ita vt ipse daret initium aliarum, vt in Matthæi 22. vbi de *ficulnea*: de *captura piscium*, apud Chrysostom. Augustinum, & S. Thom. 1. parte quæst. 1. artic. 10. Ex Dionis. quod lex noua est figura futuræ gloriæ, & quæ in ea sunt gesta, sunt signa eorum, quæ per nos sunt agenda. In his autem mysticis asserendis, non procedendum pro libertate, sine authoritate PP. & Doctorum.

Ex quibus constat, quid dicendum ad oppositas sententias.

DVBIVM X.

An sint plures sensus mystici in vno, & eodem loco sacræ Scripturæ, eiusdem speciei?

Conclusio asserit, *posse esse plures, non solum diuersæ speciei, sed eiusdem, numero diuersi.* Ita grauissimi Interpretes. Probatur prima pars, nam vt dictum est supra in vno, & eodem verbo possunt concurrere tres mystici, Allegoricus, Moralis, & Anagogicus, vt in particula illa *Hierusalem*, in qua est triplex dicta habitudo. Similiter illud Genes. 1. *Fiat lux*, litteraliter immediatè de luce corporali; allegoricè *de Christo qui est lux* illuminans; moraliter, & tropologicè de luce gratiæ, inclinante ad operandum benè, anagogicè de lumine gloriæ, Trinus in indice controuersiarum fidei controuersia 2. Secunda pars probatur, quia in eodem loco sunt plures sensus litterales, ergo possunt esse plures mystici de rebus, quæ signa sint aliarū, adhuc in eodē genere significationis, vt allegoricè,

& non solùm quando vna voce significantur plures res, sed etiam quando vna. Vt in voce manà significante ad litteram cibi speciem de cœlo lapsam, quæ vna res mysticè plura significet, vt Eucharistiã 1. Corinth. 10. & eloquium Dei Sapientiæ 16. nam est signum vtriusque.

Argui solet contra argumentis adductis, ad probãdũ, in vno & eodem loco, non esse plures litterales. Quia inconuenientia procedunt, etiam in mystico. An in vno, & eodem loco sint plures mystici. Respondetur eadem solutione.

DVBIVM XI.

An in sola sacra Scriptura sit sensus mysticus? An in alia scientia, & doctrina?

COnclusio asserit, quòd *in sola Scriptura*, ita vt id sit illi proprium S. Thom. 1. parte quæst. 1. art. 10. Liranus prologo 1. Bibliorum. Serarius ibidem quæst 9. Vazquez ibidem, ex D. Greg dicente Scripturam sacram in eo alijs præstare, quod sit illi singulare, & peculiare, quòd sermone quo narrat gestum, prodit mysterium. Ratio est, nam quamuis inter homines sit vsus loqnendi vocibus, & rebus, tanquam signis, est peculiare Scripturæ, in quo est discrimen ab alijs. Primò, quod ex instituto, ac intentione Spiritus Sancti loquentis actu per res dum fit locutio inter homines, non dum fit, sed postquam facta est. Nisi signo vocis, & signo rei, idem simul inculcet, aut repetat, & ita in sola scriptura est iste sensus mysticus ex instituto, & intentione loquentis. Nam si præter institutum, & mentem authoris aliquis ingeniose ex rebus dictis, alias colligat, non erit mysticus, & si affirmet re illa significatas ex intentione authoris falsò affirmabit. Secundum discrimen est, quòd inter homines, rebus gestis vti soleant ad indicãda alia, hoc fit solùm ab eis post factum: inducendo eas in parabolam, similitudinem, aut exemplum. Est verò proprium Scripturæ, non solùm post factum, aut gestum erigere in parabolam, sed ita gesta narrare, vt author scripturæ simul, & semel, non solùm voce significat gestum, sed per gestum vt per signum indicet mysterium. Tertium, discrimen est quòd Deus solus in Scriptura per res, vt signa, intendat indicare, non solùm, quæ iam facta sunt, & habent existentiam præsentem, sed quæ habebunt in futurum multo post tempore. Qualis fuit in exitu Israel de Egypto, quo vt signo typico indicabatur à Deo, regressus filij sui infantis ex Egypto, multis post annis futurus, quod non est commune scripturis hominum, qui

vt

vt plurimùm possent rebus significare facta, non facienda, præterita, aut præsentia, non futura.

Arguitur, nam etiam inuenitur in alia scriptura, & disciplina à sacra, quòd voce significentur res, & per res, vt per signa aliæ significentur, illæ litteraliter aliæ, mysticè. Nam ad id authores scripserunt fabulas, emblemata, adagia, ænigmata, hieroglifica, & symbola, vt sub illis figuris, arcanas sententias indicarent. Respondetur primò, fabulas adagia emblemata, & alia huiusmodi habere sensum non litterarium, sed figuratum. Secundò, & verius, quòd quamuis ita esset, non ex intentione, dum fiunt, sed post factum. Et significari, solùm facta, non facienda: vt in rebus mysticis, quibus vtitur Spiritus Sanctus prescius futurorũ, in quo præstat scriptura cæteris.

Arguitur secundò, nam inter homines etiam inuenitur vsus vocis, & vsus rei, tanquam signorũ, vt dum loquuntur voce, signo, gestus, aut manus. Respondetur, quòd si cum voce vtuntur signis rerum, voce significatur idem cum re. Et ita idem bis inculcant, vt accidit in oratoris, aut histrionis locutione. Qui voce, & gestibus idem significant, si autem sit vsus rei sine voce, non est mysticus, quia voce debet significare res, & deinde res debet esse signum alterius rei.

Arguitur tertiò, nam ratio pro conclusione adducta non est firma, nam non solùm Deus author scripturæ, sed etiam homines vtuntur voce, & rebus, vt signis, & id est in potestate vtriusque. Nam princeps solet statuere, vt posita tali voce, aut scriptura fiat aliqua res, quæ sit signum alterius faciendæ, vt audito sono, quòd erigatur vexillum, & illo erecto accingantur milites ad prælium, & quod in specula erecta vna face accensa, sit signum accendendæ in alia turri, aut specula alteram; & idem in tertia, quæ sit signum confluendi ad portum maris, aut locum præliandi. Ita in scriptura 1. Regum 20. Ionathas locutus fuit sic apud Danielem. Audito signo buccinæ fiat genuflexio, & adoratio idoli, &c.

Respondetur iam dictum, quòd hic loquendi modus sit proprius solius Dei, & quę ratione sit communis ad homines, & quę sit differentia erigendi res in signa mystica, & sane si Deus illius non daret indicem; in scriptura, & traditione nõ didicissent homines, emulari Deum, sed manerent in ignorantia.

DVBIVM XII.

An culpandi PP. antiqui in mystico sensu eliciendo ex litterali? & an aptè verbis, & factis illum commendauerint?

Conclusio asserit, *Prisci PP. recte se gesserunt in eliciendo mystico ex litterali. Nec ob id sunt culpandi, quòd peruerterent litteralem, nimium incumbendo allegorijs.* Ita varij. Ratio est, quia historia, & litteralis sensus est fundamentũ omnis sensus mystici, & hi per res significari debent. Et ita si historia, & litteralis sint assecuti sufficienter, & vitentur in eliciendo mystico, tria præcipuè inconueniẽtia, quibus reddi solet vitiosa, non est ratio reprehendendi. Nã hi tantùm reprehendendi in eliciendis mysticis, qui aut tollunt historiæ veritatem, aut non expendunt, aut eliciunt aliquid contra fidem, aut incomposibilia, & repugnantia. Sed PP. antiqui non impegerunt in hæc inconuenientia, & si impegerunt non periculosè, & grauiter, nec omnes, nec semper. Nã vnus tantũ qui culpari solet Origines, excusari potest à calumnia Lutheri. Nam Origines Christum, eius fidem, & mysteria sepissime inseruit scriptis, vt patebit inspicienti, adhuc per transenam. Et statim à principio in cap. 1. Genes. homil. 1. *In principio creauit Deus cœlum, & terram*, proponit, quòd Dominus noster Iesus Christus est principium, & saluator omnium, & primogenitus omnis creaturę. Si qui verò fingant sensus mysticos, qui non sunt in littera, vt imputatur Hiron. in adolescentia, & admittit ipse in Abdiæ prolog. quod studio, & ardore scripturarum interpretatus sit Abdiam allegorice, cuius (inquit) nesciebam historiam, id sine periculo. Cum & ipse improbauerit. Reprehensio enim inuerti debet contra spernentes ex proposito sensum litteralem, & retorquẽtes ad ineptas allegorias, inconsequẽtes, & impugnantes bonos mores. Pudeat ipse Lutherus, quod in tulerit calumniam, & blasfemiam obijciendo, in re peccasse Hieron. & Originẽ. Vt in Origine, nec verbum quidẽ sit de Christo, & quòd Hieron. sit absurdus in allegorijs, & in eliciendis mysticis simulasse plura. Et finxisse, sicut Dauid olim simulauit insaniam coram Rege Achis. Imò aliquãdo eliciẽdo manifesta repugnantia. In quo mendatio carpẽdus esset Lutherus, Beza, & alij, ita mentientes. De quo apud Serarium ibidem quæstiuncula 11.

Secunda conclusio, *Prisci PP. verbis, & factis aptè commendarunt sensum mysticum, respectiuè ad litteralem.* Ratio, nam litteralem appellarunt corpus, mysticũ animã, apud Philonem. Essen. lib. de vita contemplatiua, & canunt hunc sensum litteralem, fundamentum, mysticum culmen ædificij,

Hie-

Hieronym. epitaphio Pauli. Litteralem, corticem arboris, mysticum, fructum, Greg. 20. moraliū cap. 11. litteralem, librum scriptum foris, mysticum intus. Greg. homil. 9. in Ezech. litteralē fœminam, mysticum virum. D. Damianus serm. 3. didici, litteralem centrum sphęræ, mysticum circunferentiam, & periferiam mundi intelligibilis. Origines in capit. 1. Ioannis, his, & alijs elogijs, & laudibus sunt insecuti PP. vt interdum Hieron. dixerit parum prodesse litteralē, sine mystico. Deinde 2. valde commendarunt PP. non solùm verbis, sed factis. Operibus suis frequentantes multi, & multum mysticum. Greg. in moralibus. Hieronym. in prophetas. Ambros. in Lucā. Augustin. in Ioannē, & ps. Cyrill⁹ noster in Prophetas, & in libris de adoratione, & alij plures similiter, sed omnium maximè Origines pœne in omnibus operib⁹, & noster Ioan. 44. Episcopus Hierosolimitanus. t. 9. Biblioth. lib. de Institut. Monachorum, ad Carmeli Priorem.

DVBIVM XIII.

An præter sensum litteralem, & mysticum sit in scriptura alius sensus, qui dicitur accommodatius? & quis ille? & qua ratione vtendum?

PRima conclusio, *sensus accommodatitius est ille, qui præter institutum, & mentem scriptoris, & verborum, proximè aut remotè significatus. Et applicatur, seu accōmodatur rebus alijs prout se se offert occasio.* Sic communiter Interpretes, qui alijs insequuntur nominibus, tum loquendo de scripturis prophanis, tum de sacris. Ratio, & explicatio est, nam de mente spiritus Sancti est ille litteralis, & mysticus, & præter mentem illius est accommodatitius, nisi cum scriptura vtitur illo per accommodationē & adhuc tunc est saltim præter mētem scripturæ assumptæ. Hac ratione apud prophanos fit vsus acōmodatitius, vt siquis dicat. *Dic mihi Dameta, cuius pecum? an Melibœe?* apud Virgilium si quis vellit interrogare cuius magistri discipulatum, aut cuius Vniuersitatis alumni? aut cuius diocœsis diocœsani? simili modo fit vsus per accommodationem illius.

Tunc tua res agitur paries cum proximus ardet.

Si quis velit dare amico cautionem sui mali imminentis.

Secunda conclusio, *in scripturis est etiā aliquis sensus accōmodatitius; iuxta prædictam descriptionē accommodatitij in vniuersum, præter litteralē, & mysticum intentum.* Ratio, nam quòd est cōmune libris omnibus, negari non debet scripturæ sacræ detractis imperfectionibus aliorum librorum, vt quòd possit habere aliquid falsi, superuacanei, aut inutilis, propter eius dignitatem, & præstantiam. Sed illa est exposita vsui accommodationis à virorum ingenijs, sicut & prophanæ, vt constat ex accommoda-

tione in Virgilio, Cicerone, &c. eago patet, quia nulla est negandi ratio, si imperfectiones prædictæ detrahãtur, quib⁹ sacra Scriptura minimè subiecta est. Secũdò probatur ex variis applicationibus, & accommodationibus Scripturæ apud PP. & Ecclesiam Ecclesiastl 44. dicitur de Noe, *Inuentus est iustus, & in tempore iracundiæ factus est reconciliatio*, & Ecclesia in Breuiario, & ritualibus applicat confessoribus, idem de pluribus alijs similibus, *non est inuentus similis illi*. Ecce *Sacerdos magnus, &c.* Secundò, nam vna scriptura applicatur in hoc sensu ad aliam, nam Zachariæ 4. quod dictum de Pontifice Iesu, & duce Zorobabel, applicatur ad alios. Simili modo Apocalypsis 11. *isti sunt duæ oliuæ*, quod dicitur de Moyse, & Elia, iuxta aliquos PP. vt vult Maldonatus, vel de Enoc, & Elia iuxta Ambro. & PP. applicatur ab Ecclesia ad Martyres Ioannem, & Paulum, & ab aliquibus PP. ad Apostolos Petrum, & Paulum. Denique illud Ieremiæ 1. *prius quam te formarem* applicatur conceptioni, & natiuitati Baptistæ.

Tertia conclusio, *ista applicatio, seu traductio scripturæ fieri potest ad res alia, benè, & malè, benè quidem quando ad res honestas, & fine honesto, vt vidimus in exemplis nuper allatis, qui modus tractandi scripturas frequens est.* Vt docet Vazquez disp. 14. cap. 1. est frequens in sanctis PP. & vtilissimus in concionibus ad populum, & accommodatissimus ad suadenda bona, & improbanda mala, *malè verò quando ad mala*, vt si quis transferat ad vitia, spurcitias, facetias, vt prohibetur à Tridentino sessione 4. sub pœnis ab arbitrium Episcopi. Secundò, si quis adhibeat, & proponat veluti litterarum, aut mysticum istam accommodatitium. Quòd carpit Hieronym. in epist. ad Paulinum, vbi dicit vitiosum hoc dicendi genus, mulcendo aures verbis compositis, deprabando sensum scripturæ ad intentum voluntatis. Quasi non essent historiæ prophanæ, quibus ad id possint vti. Tertiò, si quis sensum literalem, aut mysticum doceat accommodaticium, vt delirarunt plures, docentes sensum litteralem, in aliquibus locis sacræ Scripturæ, non litteralem, aut mysticum, sed accommodatitium. Vt quæ in veteri testamento dicuntur de Christo Psalmo 15. *non derelinques animam meam in inferno*, Micheæ 5. *& tu Bethleem, &c.* In sensu solo accommodatitio interpretantes. Quàm interpretãdi rationem quidam connati sunt renouare in Hispania, quod reprobatum est à Pontificibus late apud Serarium, & Cõcilijs sub anathemate. Denique si quis ascribat scripturę sacræ sensum, qui falsus, & impius

pius est, vt Michael Seruetus de se, scriptum illud apocalypsis 12. *Michael, & Angeli eius præliabantur cum dracone*, apud Bezam in vita Caluini. Et iste sensus dictus est abusiuus à Caiet. & meritò, non enim fit scripturæ vsus, sed abusus, non aplicatio, sed turpis deprauatio.

DVBIVM XIV.

In quo conueniant, & differant, sensus litteralis, & mysticus? in quo sint similes, & dissimiles? quis dignior, & minus dignus, quoad efficaciam argumentandi?

COnclusio asserit, *conuenire in eo, quòd vterque sit intentus ab authore scripturarum, Spiritu Sancto: & vterque significetur immediate. Ille verbis, iste rebus, deinde differunt in multis.* Primò, quod litteralis significatur immediate per verba, non verò mysticus. Secundò, quòd litteralis sit vasis & fundamentum mystici, & sine eo non subsistat mysticus, bene litteralis, sine mystico. Tertiò, quòd vbique sit sensus litteralis in omni loco, secus mysticus. Quartò, quòd vbi concurrit litteralis, & mysticus, licet litteralis sit immediate intentus, non tamen primò, & principaliter, sed interdum mysticus, licet nõ semper. Iuxta dicta. Primò, constat ex 1. Corinth. 9. Vbi Apostolus proponit illud præceptum. *Non alligabis os bobi trituranti*, vbi de veris vestijs, bobus, est litteralis, & subdit Apostolus magis intentum esse à Deo mysticum *nunquid* (ait) *de bobus cura est Deo?* an propter nos vtique dicitur? igitur interdum principalius intenditur mysticus, quàm litteralis. Vt constat ex positis exemplis de Iona, Osea, agno paschali, Abrahæ vxoribus, ac filijs. Et idem est de alijs rebus veteris testamenti, relatis ad gerenda in nouo, quę principalius, licet non immediatius intenta sunt à Spiritu Sancto. Probatur secunda pars, scilicet non semper intendi principalius mysticum, sed potiùs litteralem, ex innumeris exemplis ad Hebræos 13. Vbi dicitur, quòd *Christus extra portam passus est*, litteraliter, quod principalius inspexit Spiritus Sanctus, quam sensum mysticum, vt exirent us ad illũ extra castra. Illa enim res prior, est, quoad se. Multò maior, & nobilior, quam exitus noster, licet vbique immediate intendatur litteralis, interdum etiam principalius. Quintò differunt, quòd litteralis, licet obscur⁹, est notior & facilior: mysticus verò obscurior, & ignotior. Ille enim voce immediate manifestatur, iste verò mysticus latet in rebus reconditus, & arcanus. Vltimò differunt, quòd ex sensu litterali (iuxta supra dicta) semper sumitur efficax, & firmum argumentum ad fidei dogmata, ex mystico verò licet sumatur

tur ſecundùm ſe efficax, quippe intentus à Spiritu Sancto, non quoad nos. Iuxta dicta, niſi cum de eo cõſtat, aut cùm ab alia ſcriptura monſtratur. Iuxta D. Th. Auguſt. 1. & PP. apud Serarium ibidem q. 10. & ob hoc Dioniſius epiſt. ad Polycarpum dicit, miſticã Theologiã, non arguere. Et ſequũtur plures recentiores ſcholaſtici, & interpretes, Vazquez, Ribera, Salmerõ, alij apud Serar. ibidem. Nam ſi myſticus, vel ſit euidẽs, vel ſit probatus ex alia ſcriptura, erit vis, & efficacitas æqualis inter litteralem, & myſticũ. Idem ſi Apoſtoli à myſtico ſumant argumenta, nã vel didicerunt à Chriſto, aut Spiritu Sãcto. aut traditione, aut authoritate, qua gaudebant interpretandi. Nã myſtici ſucundùm, quòd nobis noti, aut oculti ædificant, non probant. Suadent, non perſuadent. Inducunt, nõ cogunt. Plures tamen magis mouent, & ſuadent, quam vnus, vel ſinguli, vt ſi concordent figuræ, & figurata veteris, & noui teſtamenti. Et ita cõcluditur, quòd magis dignus ſit litteralis ad dogmata fidei, & improbandos infideles, quam myſticus. Quia ille verbis immediate ſignificatus eſt, & magis manifeſtus, & non ita reconditus & arcanus ac myſticus.

DVBIVM XV.

An à ſenſu accommodatio poſſit ſumi efficax argumentum ad fidei dogmata probanda, & improbanda oppoſita, ſaltem aſſimili, & exemplo?

COnclusio aſſerit, *non ſumi, niſi aſſimili, aut exemplo formato argumento*, Vazquez diſp. 14. ibidem cap. 7. quoad ſecũdam partẽ. Quoad primam penè innumeri. Probatur prima pars, nam iſte ſenſus non eſt immediate ſignificatus, per verba, ab authore Spiritu Sancto, nec à rebus in contextu, ergo nil efficaciæ præſtãt argumẽto ab illis deducto. Confirmasur, nam non ſumitur efficax adhuc è myſtico per res ſignificantes arcana, niſi in caſibus prædictis, quibus de illo ſenſu conſtat, ergo multò minus ſummi poteſt ex accommodatitio. Secunda pars probatur, nam ab exemplo, & ſimili formati efficaciter conducunt ad demonſtrandum, quid ſit licitum, quid illicitum, & ad perſuadendum virtutis amorem, & peccati odium in re morali. Ex pluribus exemplis Lucæ 6. Chriſtus vſus eſt, iſto ſenſu per accommodationem ab exẽplo, ex 1. Reg. 21. Nam ſi licuit comedere panes ſacros Dauidi, & militibus famelicis, ergo licuit diſcipulis euellere ſpicas in die Sab-

Sabathi ; & commedere , nam vtrobique excusat necessitas. Secundùm exemplum , nam in veteri testamento fuit in magno honore , & veneratione illa arca, fœderis Psalm. 98. ergo imaginis inanimatæ licita est veneratio ob prototypum.

Arguit Serarius , contrra secundam partem P. Vazquez. Nam in exemplis adductis, videtur sumi argumentum à sensu litterali , non à sensu accommodatio. Nam antecedens argumenti , est in sensu litterali , & ex eo , quia sumitur ad inducendum consequens , & illud probandum , dici non debet , quod sit sensus accommodatitius,aliàs omnis scripturæ sensus assumptus ad aliquid probandum per vim , quam habet inferendi, erit acommodatius. Et ita quilibet discursus Theologicus , aut ratiotinatio, ex vna re simili ad concludendam aliam, per vim argumenti, esset dicendus sensus accommodatitius , quòd videtur absurdum. Respondetur , quòd litteralis sumi potest dupliciter. Primò , secundùm se , vt habet vim inferendi conclusiones litteraliter. Secundò , in ratione similis , quæ est ratio accidentalis superaddita . Et illud antecedens , ex quo sumitur argumentum , quòd vocatur à simili , aut exemplo inducit litteralem præsuppositiuè , vt fundamentum , & materiam similitudinis superadditæ. Primò, modo includit litteralem. Secundò , exponitur sensui accommodatio sub ratione similitudinis , & ita distinguendum est antecedens , vt supponatur litteralis , materialiter , & ratione similitudinis superadditæ fundet immediate accommodatij translationem, aplicationem, aut accommodationem à simili. Idem ad cætera , obiecta sub dicta distinctione , quòd non omnis sensus scripturæ dicendus sit accommodatius. Nam litteralis sub ratione , similis fundat significationem accommodatitiam. An autem scripturæ , exponi debeant in litterali, mystico , aut accommodatio? definiri debet iuxta diffinitiones historum sensuum. Quæ habendæ sunt , vt regulæ ad definiendum , vt in illis Oseæ. 11. *Ex Egypto vocaui.* Matthæi 2. & ex Ieremiæ. 31. in Matthæi . 2. *Vox in Rama* , & de alijs huiusmodi , *aperiam in parabolis* , Matthæi. 13. ex Psalm. 71. Matthæi 15. ex Isaiæ 29. *Populus hic labijs* , &c. ex Isaiæ 29. ad Hebræos 1. *Ego ero illi in patrem* , & 2. Reg. 7. ad Tit. 1. *Cretenses semper mandaces.* De quorum sensu sunt, disensiones inter interpretes. Recurri debet ad interpretes earum scriptura-

turarum, vt ex varijs aptior textui eligatur. An autem sola scriptura in litterali sit iudex in negotijs fidei, an Ecclesia, & traditio? iam dictum.

DVBIVM XVI.

An quando scriptura veteris testamenti citatur in nouo, citetur semper in litterali? an etiam in mystico, & accommodatio?

CONclusio asserit, *quòd aliquando Christus, & Apostoli citant scripturas veteris testamenti Moysis, & prophetarum, aliquas citari in litterali, aliquas in mystico, alias verò solùm in accommodatio.* Probatur ad ducendo exempla triplicis, generis. Matth. 19. citatur, illud Genes. 1. in litterali *masculum, & fœminam fecit eos.* Deinde actorum 3. citatur illud Genes. 12. *In semine tuo benedicentur omnes gentes.* Deinde Romanorum 4. citatur illud Genes. 15. *credit Abraham Deo.* Similiter Romanorum 13. citatur illud ad Exodi 20, *non adulterabis, non occides, &c.* Ista ergo, & alia eiusdem farinæ citantur in sensu litterali. Nã citantur in sensu immediate significato per voces. Secũdò, pars probatur exemplis, nã ad Galatas 4. citatur illud Genes. 21. *Eiice ancillã, & filium eius, non enim erit hæres filius ancillæ, cum filio liberæ,* quæ verba intelliguntur litteraliter de vxorib⁹ Abrahæ, libera, & ancilla Sara, & Agar, & filijs Isaac, & Ismaele, & citantur in mystico. Nam in rebus illis fit sermo de synagoga, & Ecclesia Euangelica, & filijs vtriusque, & in Agar, & filio Ismaele, repudiatis; Sara, & Isaac remanentibus in domo cum Abraham significatur synagoga cum iudæis repudianda, & Ecclesia Euangelica, cum filijs Christi admitenda in amplexu Christi. Deinde similiter Ioannis 19. citatur ex Exodi 12. & numerorum 9. illud *os non comminuetis ex eo,* quòd ad litteram immediate significabat agnum paschalem, cuius ossa, non frangebantur, cum mactabatur in sacrificio, in illo autem mysticè præfigurabatur Christus, cuius crura in sacrificio cruento crucis non sunt perfracta, & ita in sensu mystico citatur à Ioanne. *Idem* de illo Matth. 2. Vbi citatur illud Oseæ 11. *Ex Egypto vocaui filium meum,* quòd intelligitur ad litteram de populo Israel in exitu de Egypto, ad terram promissam, & Euangelista citat illud in mystico, in illo filio adoptiuo præfiguratus est naturalis Christus, & in illo exitu per Moysem, regressus infantis, ex Egypto per Angelum. Denique de illo 1. Corinth. 9. ex Deutor. 25. *Non alligabis os bobi trituranti,* quòd ad litteram intelligitur de bobe vestia triturante in area frumentum, & stipulas: Apostolus autem in eis intelligit de ministris Euangelij in Ecclesia laborantibus

bus quibus largienda est congrua sustentatio.

Tertia pars probatur, citari aliquando in genere accommodatio. Ex innumeris exemplis sequétia. Illud Zachariæ 4. *Isti sunt duæ, oliuæ, & duo candelabra*, quòd ad litteram intelligitur de Iesu filio Iosedec, & Zorobabele, duce Iudæ, applicat Ioannes apocalyp. *Duobus testibus Enoc, & Eliæ.* Simile est. Illud Matthæi. 15. ex Isaiæ. 29. *Populus hic labijs me honorat, cor autem eorum longe est à me*, quod intelligitur ad litteram, de Iudaico populo in temporibus Isaiæ, & Christus applicat accommodatitiè scribis, & pharisæis, sibi contemporaneis. Simile est. Illud Genes. 1. *Fecit Deus duo lumina magna*, quod ad litteram intelligitur de cœlestibus luminarijs Sole, & Luna, & Greg. applicat accommodatiè, ad duo capita suprema Pontificem, & Imperatorem. Nõ dissimiliter, illud Lucæ 22. *Ecce duo gladij hic*, quòd intelligitur ad litteram, de duobus ensibus paratis ad pugnam, & Bonif. oct. applicat accommodatitiè ad duplicem potestatem Pontificis spiritualem, & temporalem. Denique illud canticorum primò. *Nigra sum, sed formosa*, ab Ecclesia accommodatur Beatæ Virgini. Et illud 2. Corinth. 3. *Littera occidit spiritus vivificat*, applicatur per accommodationem ad scripturæ litteram, & sonum, occasionantem ærrores, & ad legitimum sensum continentem veritatem.

Arguitur contra ad probandũ, quòd omnia, quæ citantur ex veteri testamento, citantur in litterali, quem exhibent verba immediate, aut in mystico, quem res veteri testamenti, exhibent immediate, & nõ solùm in accommodatio. Nãantecedens, ex quo ducitur argumentum, accommodatiũ, vel est res immediate significata per verba, & tunc litteraliter accipitur, sicut probant testimonia citata, in primo genere citandi litteraliter, vel est res signũ significãs alia in eo figurata, & arcana, & tunc citari debent in mystico, vt probant testimonia pro secundò genere citandi in mystico. Ergo nulla citantur in accommodatio, nam si dicendus sit accommodatitius, qui transfertur ad aliquid aliud probandum, omnis scriptura, & omnis sensus illius, qui assumitur ad aliud, debet dici, citari, non in litterali, aut mystico, sed solùm in accommodatio. Respondetur, iuxta dicta quòd locus, qui sumitur in antecedenti potest secundùm se continere litteralem sub verbis immediate, vel mysticum sub rebus, & præsupponi ista materialiter ad superadditam rationem similitudinis. Quia dicta testimonia sunt, exposita vsui, applicationi, & accommodationi ad rem aliam similem. Et ita in accommodatio attenditur immediate ista similitudo, licet præsupositiue, & materia

rialiter indicto antecedenti sit sensus litteralis sub verbis, vel mysticus sub rebus.

DVBIVM XVII.

An vox scripturæ indicans id, quod in figura dicitur, in veteri testamento contigisse? habeat duos sensus litterales, figuræ, & figurati, gesti, & gerendi?

Conclusio est, *negatiua, sed vnũ significatur litteraliter, aliud verò mysticè, & allegoricè*, Ribera in Oseã c. 11. n. 4. Ex Hieron. Chrisost. S. Th. & alijs. Ratio sumitur à definitione, ad definitum. Nam ille est sensus litteralis, qui significatur immediate per verba: ille mysticus, & allegoricus, qui significatur immediate per res, quæ sunt signa, & arcana aliarum. Licet vox adhuc in cõmuni vsurpetur, ergo vox, aut scriptura veteris testamenti saltim, quę significat rẽ figuram, rei noui testamenti, non significat vtrumque litteraliter, sed gestum litteraliter, gerendum mysticè, & allegoricè, figuram litteraliter, figuratũ mysticè, patet. Nam ille est mysticus, qui significatur immediate per res. In exemplum adduci solet aptissimum. Id quòd dicitur Oseæ 11. *Quia puer Israel dilexi eum, & ex Egypto vocaui filium meum*, quòd citatur à Matthæo cap. 2. illis verbis. *Consurgens accepit puerum, & matrem eius*, & secessit in Egyptum, & erat ibi vsque ad obitum Herodis, vt impleretur, quòd dictum est per prophetam. *Ex Egypto vocaui filium meum*, vbi verba Prophetæ in communi voce filij, Egypti, vocarionis, videntur comprehendere vtrumque filium, & vtrumque regressum ex Egypto, immediate & proxime populum Israel dilectũ filium in exitu de Egypto ad litteram, mediate, & remote interuentu illius historiæ historiã, filij infantis Christi, & regressum, ex Egypto, vox ergo aut scriptura significas immediate figuram, & remote figuratũ, non habet duos sensus litterales, sed vnũ literalẽ significatũ, per verba & alium mysticum per res, signa aliarum. Quod autem verba prophetæ significent in sensu litterali populum Israel in egressu de Egypto est manifestissimum ex ipsis verbis, & illi soli aptari possunt verba antecedentia, & cõsequentia. Nam illi populo aptari potest, quòd regnum illius pertrãsijt brebriter, sicut mane: & peccasse cultu idolorum, & si mulacrorum: quæ quidem antecedentia, & consequentia, quæ necessario expendi debent ad definiendum, quòd ibi sit sermo in sensu litterali, de populo Israel, nequeunt aptari Christo litteraliter, quia nec peccauit, nec dedit cultũ idolis. Ergo solùm debent intelligi litteraliter de populo Israel, & mysticè de Christo.

Con-

Confirmari potest, ex alijs exemplis supra relatis, vt illo Exodi 12. *Os non comminuetis ex eo.* Litteraliter de agno typico, mystice de Christo in eo figurato.

Confirmatur vltimò, nam cum agitur de significatione vocis inducitur sensus litteralis, cùm verò de significatione rerum, quibus injcitur signum aliorum, inducitur sensus mysticus, qualis est figuræ ad figuratum, gesti ad gerendum typi, ad mysterium. Ita vt sit habē da regula generalis, quoties dicitur, hoc est figura, & typus alterius, inducitur aliud non litteraliter, sed mysticè, & allegoricè.

Arguitur pro sententia Lirani existimantis, quòd id, quòd dicitur in figura contigisse, habeat duos sensus litterales, vnum principalem, alterum minus principalem. Et ita inueniri in præcitato testimonio Oseę 1. quia eadem vox potest habere duos sēsus litterales, ergo figuræ, & figurati, vt Deus voce, & rebus sit loquutus. Confirmatur primò, nam Euangelista dicit, vt impleretur, quod dictum est, per prophetam, ergo vox illa prophetæ, tam dixit populum Israeliticum reductum de Egypto, quam Christum infantem litteraliter Confirmatur secundò, nam Euangelista, vsus est illo testimonio prophetæ, tamquam antecedenti ad formandum argumentū, ad persuadendum Iudęis, exitum Christi infantis de Egypto; quibus licet suaderet ex sensu mystico Prophetæ, non cōuinueret, nisi deduxisset argumentum ex sensu litterali. Præsertim, quia ille est intentus, non mysticus, ex illo deducitur argumentum efficax, non ex mystico.

Respondetur admitto, quòd cōmuni voce possit Deus significare duos sensus litterales immediate. Cæterum, si vox immediate, & proxime significet litteraliter gestum, historiam, aut quid aliud, & in illo, vt in figura, & typo, aliud diuersum, licet hoc voce illa communi significetur remote, per interpositionem gesti, historiæ, &c. nequit significari, nisi mysticè, & typicè. Nā in illa via, & serie, non est locus significandi litteraliter vtrumque. Licet vnum principaliter, & aliud minus principaliter, quia vnum significatur in voce litteraliter, aliud in re significata. Ad primā confirmationem, dico dictum esse per prophetam vnum litteraliter per vocem, & aliud mysticè, per rē dictā, figurā, & typū alterius, primùm immediate, secūdùm remote, quatenus in re fuit figuratum. Ad secundam confirmationem, dico ex dictis aptè duci argumentum, non solùm ex litterali, sed etiam mystico, quia in vtroque re ipsa est locutio Spiritus Sancti, certa, & infallibilis. Præsertim, si sit aliquandiu manifestus quoad nos, vt est verisimile fuisse in illo casu Euangelistæ.

DV-

DVBIVM XVIII.

An possit significari aliquid in alio mystice? & idem simul historicè, ac litteraliter? saltim voce communi, indice vtriusque, significantis, & significati?

Conclusio asserit, *significari posse in alio mystice, & allegoricè, si tamen idem semel significetur in alio allegoricè, non posse simul, & semel (voce adhuc communi) significari historice. Nisi vellit Deus illa voce communi, significare immediate vtrumque*, sine respectu, aut connexione vnius ad aliud, defacto tamen, ita (adhuc voce omni) vt immediate significetur res gesta, & in illa, & per illam mystice res gerenda. Ita grauissimi interpretes quos sequitur Ribera, ad Osee 11. num. 11. Probatur prima pars illis testimonijs præcitatis, in quibus res noui testamenti significantur, in rebus veteris, vt in illo. *Ex Egypto vocaui filium meum*, vbi illa voce communi filij, &c. potuit immediate significari filius populus, & filius infans, Christus, tamen dum Christus significatur in populo, vt figura, & typo, non potest, non significari mystice, typice, & allegorice. Quippe, quia non immediate, & proxime per vocem, sed solùm remote interuentu populi, immediate significati, & assumpti, vt esset signum, & typus præfigurans, & indigitans Christum figuratum. Confir. ex ratione Riberæ, nam voce adhuc communi, non potest immediate significari figura, & figuratum, sicut idem, non potest simul esse figuratum corpus, & vmbra, signum, & veritas, licet voce significetur, primò proxime, secundò, remote. Confir. secundò, nam in exemplo adducto, licet voce communi possint significari aliqua communia vtrique, non omnia, nam populo Israel tribuitur idolatria, & plura alia ex antecedentibus, & consequentibus ex quibus coalescit litteralis, & ex quibus expendi debet, quæ non sunt, nisi dissimilia Christo, & ei aptari non possunt, vt vtrumque communi voce, ex quo immediate significetur, & ita quamuis idē possit significari duplici via, litteraliter, aut mystice: tamen, vt figura, non potest nisi mystice, & figuratiue, significari, non litteraliter, aut historicè.

Arguitur ad probandum, quòd voce communi sit, in prædicto testimonio, & similibus vtrumque significatum immediate, & litteraliter. Nam potest illa vox immediate respicere duplici via signum, & figuratum, ergo idem quod significatur typicè, & allegoricè poterit historicè. Respōdetur posse quidem ex institutione, tamen vt allegorice significatum in typo, & figura, non potest. Nam esse significatum mystice, & allegori-

gòricè, iuxta definitionem literalis, & mystici ille immediatè per voces, iste immediatè per res.

Arguitur secundò ex Osiandro, quòd in illo loco *ex Egypto, &c.* non sit allegoria, sed fingatur, quia non est vlla similitudo inter vtrumque, in qua ponatur, & fundetur allegoria. Quia Scriptura immediatè significans populum Israeliticum reductum de Egypto, amplectitur plura antecedentia, & consequentia, vt de idolatria, & alijs, quæ non sunt similia, sed dissimilia Christo, vt ei aptari non possint. Confirmatur, quia fieri non potest, vt ille populus innumerabilis sit figura vnius hominis Christi, aut vnus sit figura plurium. Confirmatur ex Iansenio, quòd in illo sit sola applicatio in sensu accommodatio, & non sit in eo sensus mysticus, præfiguratiuus, sicut si historia vnius hominis, applicaretur ad historiam alterius.

Respondetur, ita, quòd in similitudine sit fundata allegoria, tamen similitudo in pluribus, non in omnibus. Neque id necessum est. Deinde similitudo stat in eo, quòd sicut ille populus dicitur filius adoptionis, Christus naturalis. Secundò, quòd sicut ille populus vrgente fame descendit ad Egyptum, Christus vrgente prrsecutione infantiæ descendit in Egyptum. Tertiò, quòd sicut ille populus reducitur per Moysem, ita Christus per Angelum admonentem Iosepho redditum. Quartò, quòd sicut ille populus transiuit per aquas maris, & fuit in deserto 40. annis, ita Christus transiuit per aquas baptismi, & fuit in deserto ieiunans 40. diebus. Quintò, vt sicut ille populus fuit in terra promissa, Christus in cœlo. Ad confirmationem dico, quòd apte potest vnus homo esse figura plurium, & vnius populi. Genes. 25. duæ gentes sunt in vtero tuo: & contra, vnus populus vnius hominis Christi. Ad secundam confirmationem dico, quòd in illo non sit sola applicatio, nam dicitur, quod dictum est per Prophetam.

DVBIVM XIX.

An omnis Scriptura veteris testamenti, adhuc Psalmorum, & Prophetarum significet solùm in sensu mystico, res noui testamenti, & Christum? an vbiquè de Christo exponenda litteraliter? An vbique mysticè? An partim litteraliter de historijs illorum temporum, & partim litteraliter de Christo, partim solum, mystice?

PRima sententia affert, quòd omnis scriptura veteris testamenti sit solùm inter pretãda de Christo in sensu litterali, & historico. In quo existimat se obsequium præstare Deo.

Secunda sententia asserit, in scriptura veteris testamenti nil contineri de Christo ad litteram, adhuc in Moyse, Psalmis, & Prophetis, sed si quid continetur est solùm mysticè. Sed Iudæi, dum legunt illos habent velamen ante oculos, ne legant, & inueniant Christũ, sed solas historias Regum.

Conclusio asserit, quòd *Scriptura veteris testamenti continet, & significat, partim gesta, & historias litteraliter illorum temporum, partim aliqua litteraliter de Christo, partim aliqua, & plurima frequentius figuraliter typicè, & mysticè, de Christo, rebus, & mysterijs noui testamenti.* Ita grauissimi scholastici, & interpretes, quos sequitur Ribera ibidem.

Probatur prima pars, scilicet *contineri, & significari partim historias illius temporis litteraliter*, ex ipsa Scriptura exhibente plurimas historias rerum gestarum, & hominum illius temporis, vt negari non possit per vocem talis Scripturæ illa immediate significari.

Probatur secunda pars, scilicet, *Scripturam illam continere præter historias, facta Regum, bella seruitutes, & captiuitates: aliqua de Christo litteraliter, alia mysticè.* Primò ex PP. quoniam aduersarij plurimum iactant se pro se habere illos, 1. *August.* libro 12. contra Faustum asserentem nil dictum à Prophetis de Christo, vbi affert multa testimonia ex lege, & Prophetis, tum in sensu litterali, tum in mystico. Secundò *Cyrillus 3* in Ioannem cap. 9. ad illa, *Si crederetis Moysi mihi etiam crederetis, ille enim de me scripsit.* Considerate figuras, quæ parturiunt veritatem. Tertiò *Theophilactus* ad illud, *Prophetam suscitauit vobis Dominus.* De Christo multa erant tam in verbis, quàm in signis, & symbolis, vt miraculum rubi, sacrificium Abrahæ, agnũ immolatum. Quartò *August.* 12. contra Faustum capit. 7. omnia quæ continentur in Prophetis de Christo dicta sunt, aut propter Christum significandum, iuxta morem Scripturæ, quæ dum narrat gestum prodit mysterium, iuxta Greg. 20. moral. cap. 1. Idem 17. de ciuit. cap. 3. tripartitur eloquia Prophetarum, siquidem aliqua sunt ad terrenam Hierusalem, aliqua ad cœlestem, alia ad vtramque. Quintò *Hieronymus* in proœmio comment. Isaiam post historiæ veritatem spiritualiter accipienda sunt omnia. Sic Hierusalem, Babilon, Egyptus, desertum, mare, visio quadrupedum, &c. vt quæramus cuncta in sensu, & in omnibus sapiens architectus iaciat Paulus fundamentum, quòd non est aliud præter Christum Iesum. Vbi etiam in Isaia, qui Propheta Euangelicus est, plurima sunt de Christo in sensu hishistorico, & multa in solo mystico. Sextò *Gregor.* homil. 1. in

Eze-

Ezech. Spiritus propheticæ aliquãdo ex præsenti tangit animum prophetantis (postea) aliquando ex futuro, si aliquando de præsenti, & aliquando de futuro, tantum ergo de præsenti locuntur de rebus gestis, populo, de futuro aliquando prophetant de Christo. *Septimò Theodoretus in prolog.* comment. in Daniel. Probat contra quosdam Danielem esse computandum in Catalogum Prophetarum, quoniam inuenitur de Persarum Regno, Macedon. Babilon. & Roman. complura dixisse, quæ Regi Babilonio euenctura essent, & Persas occupaturos regnum, & quædam de Christo locutus est. Interim silentio contineamus. Vbi partim de gestis, & partim de Christo. Octauò *Rupert.* Sancti Prophetæ veraces comprobantur, quoad ea quæ de Christo prædicabant, cum veritas prænunciata, de præsenti eueniebat. Si eueniebat cito captiuitas constabat, quòd veraciter locuti fuerint in nomine Domini de aduentu Messiæ, &c.

Probatur secundò, ex sacra Scriptura. Ezechielis 3. *Fili hominis speculatorem dedi te domui Israel, &c. Si dicente me ad impium, &c.* vsque *requiram.* Hoc, & alijs constat in prophetis esse historialia, quæ non sunt de Christo intelligenda, *ex alijs verò esse plura de illo interpretanda*, vt aduertit Augustinus 12. contra Faustum, vbi reddarguit Manicheos dicentes in libris Prophetarum, nil extare de Christo, cum nil manifestius Ioannis 5. *Scrutamini Scripturas, ipsæ enim sunt, quæ testimonium prohibent de me.* Et ibi, *si crederetis Moysi, & mihi fortè crederetis, de me enim ille scripsit.* Lucæ 24. *O stulti, & tardi corde ad credendum, &c. & incipiens à Moyse, & omnibus prophetis, interpretabatur illis in omnibus Scripturas, quæ de ipso erant.* Vbi expendendum, non interpretasse in via, tam breui, omnes Scripturas, sed quæ de ipso erant, & non omnis de ipso, sed vnam, aut duas, prò viæ breuitate. *Abraham exultauit, vt videret diem meum vidit, & gauisus est.* Roman. 1. *segregatus in Euangelium, quod ante promiserat per Prophetas suos de filio suo, qui factus est ei, &c.* Matthæi 22. *Quid vobis videtur de Christo cuius filius est, dicunt in Dauid, & Christus*, statim obiecit, *si Dauid vocat Christum Dominum* (Psalmo 109. *Dixit Dominus Domino meo*) *quomodo filius eius est?* & ita manserunt conuicti, *vt ex illa die nullus auderet amplius interrogare*, ex quo patet, quòd Iudæi admittebant, vt certum in Scriptura esse aliquid de Christo Licet alij intelligerent de Eliezer seruo Abrahæ, qui loquitur de domino reuertente à cede Regum, si autem non

essent persuasi in Scriptura loqui de Messia non obmutescerent, sed facilis esset responsio. Christus Dominus interpretatus est de se plura in historico, plura in allegorico ex Moyse, Psalmis, & Prophetis. In Iona nil de Christo in sensu historico, ibi enim agitur de gestis, & historia Prophetę in allegorico vero figuratiuo, & typico multa. Iuxta Ambros. in Psalmũ 118. *illuminat*, &c. alludit ad agnum Apocalypsis, qui apperuit librum & soluit 7. signacula eius, & inquit, Solus scientiæ clauem detulit, & dedit nobis. Confirmatur ex Isaiæ 58. *Clama ne cesses quasi tuba*, &c. Vbi Prophetæ non solùm prænuntiabant futura, vt vates, sed vt concionateres dabant reprehensionem, contra peccata præsentia, quibus prouocabant iram Dei.

Vltimò, nam in veteri testamento inclusum erat, & inuolutum nouum, in lege, Psalmis, & Prophetis multa de Christo, vt iam constat, ex quibus satis refutata est sententia, quæ asserit scripturam illam, nil continere de Christo, & similiter altera, quæ asserit ex aduerso, quòd omnia, & singula, & vbique interpretanda ad literam de Christo. Nã nemo, ita insanus esse potest, vt gesta, & historias Regum, & aliorum hominum dicat intelligenda in litterali, & historico de Christo, licet aliqua in sensu mystico. Quia ex Apostolo 1. Corint. 10. licet omnia *in figura dicantur contigisse*. Plura, non figuraliter tantũ, sed litteraliter, & historicè, vt constat ex aliquibus adductis testimonijs. Confirmatur ex ad Gallatas 4. ex illo quòd *Abrahã duos filios habuit*, quoad litteram intelligitur de Isaac, & Ismael, in sensu verò mystico, & allegorico dicit Apostolus, *intelligenda duo testamenta* (vt inquit) quæ *sunt per allegoriam dicta*, idem de illo ad Ephes. 5. *Propter hanc relinquet homo patrem, & matrem, & adhærebit*, &c. quod ad litteram de vinculo matrimonij inter virum, & vxorem, spiritualiter verò, & mysticè de vnione inter Christum, & Ecclesiam. Simili modo plura exprecitatis significant litteraliter gesta, & historias illorum temporũ; mistycè verò, & figuratiuè plura noui testamenti, presertim de Christo; cum alia testimonia exprecitatis immediatè, significent Christum, & litteraliter, *vt Dixit Dominus Domino meo*, & illa quæ exprimunt Christi natiuitatem, passionem, crucem, resurrectionem, & ascensionẽ in cœlos Quorum sunt innumera in Isaia, & alijs Prophetis. Qui à longè *aspiciebant* innumera, *& salutabant*, vtentes præspicilio, & phistula dioptica, instrumẽto visorio, prophetiæ, ex parte concauo, & ex parte conuexo, vt fiant res distantes præsentes, sicut & instrumento prędicto physico solent vti, qui laborant debilitate visus

ad

ad inspicienda distantia, ac si adesſent præsentia, in figura enim præfigurabatur. Et videbantur, ac instrumento visorio, in quo elucet mira concordia inter res veteris, & noui testamenti. Nisi placeat imais, quod in lumine propheticodato à Deo vt aptiori perspicilio, aut phistula dioptia videri à procul stante. Vt prophetia dicatur visio, & prophetæ videntes.

Arguitur autem pro sententijs extremis, vt omnia vbique de Christo litteraliter accipienda, & interpretanda: & nil vbique de Christo accipiendum, & interpretandũ summi possunt. Tunc ex partibus conclusionis, quæ probant aliqua intelligi litteraliter, & ea quæ probãt, non omnia, sed plura litteraliter de alijs factis Regum. Tum etiam ex probationibus conclusionis dub. 16. vbi probatũ est, quòd quando in nouo testamento citantur à Christo, & Apostolis loca veteris, aliqua citari in litterali, alia nõ sed solùm in mystico. Resp. solui facilè possit adhibita distinctione, posita in cõclusionib⁹ fert quàm sit in Propheta. Nam Micheæ, 5. dicitur, *Et tu Bethleem Ephrata paruulus es in millibus Iuda, ex te mihi egredietur, qui sit dominator in Israel.* At verò à Matth. 1. & Ioan. 6. dicitur, *Et tu Bethlehem terra Iuda nequam minima es in Principibus Iuda, ex te exijt dux, qui regat populum meum Israel.* Vbi expẽdendæ differentiæ. Prima, quòd Propheta dicit, & tu Bethleem Ephrata Euangelista verò, & tu, Bethlehẽ terra Iuda, vbi est varietas satim in voce, licet sit eadem vtrobiq; varijs signaculis demonstrata. Secunda, quòd Propheta asserit, quòd sit paruulus in millibus Iuda, Euãgelista verò, videtur negare nequaquã minima es, &c. vbi est contradictio inter parũ, & magnum. Tertia, quod Propheta dicat de Bethleem Ephrata, quæ femininũ genus requirit, sicut & aliæ vrbes apud Hebræos attributum masculini Sehir, id est paruulus, Euãgelista verò ponit femenini, ne quaquã minima es. Quarta, quòd Propheta ponit in millibus Iuda, Euãgelista verò in Principib⁹ Iuda, quæ ergo causa tãtæ varietatis. Quinta, & vltima, quòd Propheta dicit ex te, enim exiet, qui sit dominator Israel, Euangelista verò ex te, enim exiet dux, qui regat, &c

Conclusio asserit, quòd *in citandis locis veteris testamenti, nil excidat memoria, aut malitia, quod non reddat sententiam loci veteris citati. Nec sit discordia inter vtrumque, sed summa concordia.* Ribera

DVBIVM XX.

An in citandis verbis veteris testamenti, excidat aliquod verbum, aut sententia à memoria, ab Apostolis, aut Euangelistis? vt sit discordia inter vtrumque?

RAtio dubitandi est. Primò, nam Euangelista Matth, aliter re-

ad Mich. 5. à num. 12. & alij. Ratio est primò, nam cum sit idē authorSpiritus S. infallibilis per Prophetam, & Euangelistam, nequit esse discordia in sententia. Nam nec obliuio, nec malitia præualeret, sed vellet, nollet scriberet Euāgelista sententiā Spiritus Sancti. Secundò, nam est intollerabile, viro catholico, dicere Euangelistam in citando non inspexisse verba Prophetę, sed memoria retulisse, quæ facilè labitur, & ita ordo rerum gestarum facile disrumpitur, & sensus variatur. Nā cogeremur admittere aliquid falsitatis esse in libris canocis, quo rueret tota authoritas sacræ Scripturæ. Confirmatur, nam si simul admitteretur reddi falsam sententiam, leuis excusatio est reddi falsam ex obliuione, malitia, aut aliter. Et si semel ita contigisse admittatur, semper ita contigisse in dubium verti poterit. Confirmatur, quia argui posset Apostolus, aut Euangelista, falsi, ex quouis accidenti contigisset. Quod abśit à filijs Ecclesiæ: & quòd non sit seruatus ordo rerum gestarum, nec nominū, vt posfuerint vnum nomen pro altero, vt Zachariæ pro Ieremiæ, Sarius studio inquirēda cōcordia, sicut in antilogijs. Et cōstabit mira cōcordia, si explicem⁹ varias solutiones.

Respondetur primò *ad rationes nec dubitandi*, à quibusdam incongruè, vt quòd Euangelista non seruauerit ordinē rerum gestarum, sed vt ocurebant memoriæ inordinatè cum Erasmo, vel quòd editio Hieronimi culpari debet, quæ non transtulit recte ex originali, quæ audiri non debent ab audaci Osiandro, & arroganti. Nā Euangelistæ dictabat Spiritus Sanctus. Hieronymus ingēnio subtili præditus, & peritissimus notitia linguarum.

Respondetur secundò, quòd Bethleem sita prope Hierusalem, dicta est Ephrata, vt distingueretur ab alia, quæ erat in tribu Zabulon Iosue 19. & dicta est Ephrata, ratione fertilitatis, vnde Bethleem Ephrata in qua natus est Christus, dicta est domus panis fructifera, vel ratione Domini cuius fuit, vt Ephrata esset nomen viri illius, 1. Paralip. 4 *Isti sunt filij tui primogeniti Ephrata Patris Bethleem.* Et 70. hic, *& tu Domus Bethleem, qui fuit Ephrata*, scilicet filius. Et Hieronimus, *& tu Bethleem domus Ephrata.* Et Bethleem *in qua natus est Christus*, dici cum hac distinctione Ephrata ab alia, colligi ex Genesi 35. & 48. vbi dicitur. *Mortua est ergo Rachel, & sepulta est in via, quæ ducit ad Ephratā, hæc est Bethleem*, & ita in concordiam redigi Prophetam, & Euangelistam, quòd de eodem oppidulo sit sermo, & Prophera designauerit sub illo nomine Ephrata, Euangelista verò significando, & determinādo situm eius in terra Iuda. Sub variatate verborum redditur eadem

dem sententia ab vtroque. Ad secundam difficultatem inter Prophetam, & Euangelistam, sic dant amicas manus, vt illa verba Prophetæ, *Parvulus es in millibus Iuda*, legi, debeant interroganter, vt includant implicitè sententiam, quam expressit Euangelista, nequaquam minima es, vt mens integra Prophetæ vtraque clausula compleatur. Nec insolitum in S. Scriptura, Isaiæ 46. *Parum es, vt sis mihi seruus ad suscitandas tribus Iacob*, & ex Hebræo apud 70. legitur magnus es, brebiloquutio interrogatiua significat explicitè vnum, sed implicitè responsionem. Legendum autè adhibita interrogatione videtur ex Chaldeo, vbi, parũ vobis est, quòd vocemini serui mei? & in Biblia gotica in Ecclesia Toletana, à S. Ludouico, Rege galliæ donata, legitur cum interrogatione, *Ephrata nunquid parvula es?* Et explicat implicitam partè Euangelista per *nequaquam*. In Scriptura autem pluta indigent iuuari, gestu, sonitu, pronuntiatione, aut ironia, vt Genes. 3. *Ecce Adam quasi vnus ex nobis factus es*, vt exprimatur per dissimilem, & Rom. 8. dicitur, *Quis accusauit aduersus electos Dei, Deus qui iustificat? Quis est, qui condemnet? Christus Iesus, &c.* Et efficitur sensus absurdus si non legatur cum interrogatione, scilicet Deum iustificatorem accusare electos: Christum Saluatorem condemnare. Ita Augustinus lib. 4. de Doctrina Christiana cap. 4. Rursus ex 3. Regum. Vltimò: vbi Rex rogat à Michea, *ire debemus in Ramoth Galaad ad pugnandum, an cessare?* & Respondetur à Propheta. *Ascende, & tradet te Dominus in manu Regis*, vbi si verbũ ascende, non esset dictum irrisorie, aut ironice, sed assertiuè, dixisset mendatium. Illi, enim non erat vtilis aggressio, cui anectitur seruitus, aut captiuatio. Denique plurimi Patres August. & alij tenent referri locũ Prophetæ in vetustissimo codice, ex trãslatione 70. sicut legit Euangelista. Ephratà nequaquam minima es, quod difficile, & meritò probat Ribera ibidẽ à n. 27. sed quid quid de hoc. Respõderi potest cõciliari Prophetam assertiuè loquentem cum Euangelista dicente, *nequaquam*, vt dicatur Bethleẽ parvula ambitu murorum, sed maxima, ratione oriundi Christi ex illa, alumini enim excellentes nobilitant oppida, ciuitates, collegia, à quibus egrediuntur. Et subin dicatur adiũctis. *Ex te egredietur, qui sit dominator in Israel*, Euangelista autẽ dum dicit de eadẽ, quòd *nequaquã sit minima* inter ciuitates Iuda. Loquitur de illa, non vt continetur angustia murorum, sed vt continet Christũ ex illa oriundũ. Quòd autẽ subintelligi debeat ali

qua particula ambitio murorum, aut continẽtia Christi sæpè solitũ est in sacra Scriptura. Præsertim cum textus est grauidus tali emphasi vt exprimatur ad claritatẽ,& conciliationem.

Ad tertiam difficultatem quidam audatia respondent,in originali loco vocis paruulus,&c.poni nomen sahir, pro aduerbio paruũ צָעִיר & poni masculinum pro neutro quod non habent,aut pro aduerbio,vt sit sensus: & tu Bethleem Ephrata parum est, vt sis inter Chiliades Iudæ vrbicales computata, & id reddit Euangelista per nequaquam minima es in principalioribus vrbibus Iuda, licet enim Hierusalem vrbs regia sit maior cæteris,vt inter Principes, Rex tamen inter Principes ciuitatis,nõ es minima,sed maior, an ambitu murorum, an oriundo alumno Christo dictum est.

Impugnatur primò,quia vim nõ euacuat. Secundò, quia in Hebræo pro sahir,nunquã est pro parum. Tertiò, quia nullus accipit pro aduerbio, omnes dicunt esse nomẽ, 70.Ephrata paruul⁹ es, &c. Pagnin. ephrata paruulus es, &c. Batablus. *Parua es, vt sis in millibus Iuda.* Quartò, quia Sahir non signat paruum, sed hominem ætate paruulum. Psal. 67. *ibi Benjamin adolescentulus*, & Psal.118. *Adolescentulus sum ego, &c.* Genes.25. *Maior seruiet minori.* Iob 30. Derident me minores tempore, pro iuniores tempore, est Sahirim. צְעִירוֹת. Vltimò dato, quòd posset reddi aduerbium iuxta Pharasim Hebræam paruum, & à te adolescẽtula redditur sensus inep tus, & tu Bethleem Ephrata parum natu, vt sis in millibus Iuda ideo.

Respondetur ad missio, quòd Bethleẽ appellatur Sahir, & quod nomina vrbium sint fœmenini generis, loqui tamen solet scriptura de vrbibus, ac si essent homines, & frequentius, ac si essent fœminæ, & ita Propheta loquitur de Bethleem, ac de viro adolescentulo, qui inter maiores est minori reuerentia dignus, homuncio es, vt computeris inter Principes Iuda. Amos. 5. *Virgo Israel proiecta es in terram,&c.*

Ad quartam difficultatem. Respondetur, omissis alijs apud Ribera ibidem, quòd in Propheta voce in millibus signatur multitudo, cuius verò rei sit illa multitudo,explicatur ab Euangelista inter principales ciuitates Iuda.Cantic.5.electus ex millibus inter homines, in Hebræo ex multitudine. Implicita autem explicari in determinata determinari expresioriverbo, non probat varietatem in sensu,aut sententia. Ex quo patet ad 5.

(***)

DV-

DVBIVM. XXI. ET VLT.

An Prophetæ decipiantur, existimantes esse Dei loquutionem, cum Dominis, non fuerit loquutus, sed ipsi ex suo capite dicant?

CONclusio asserit, quòd *non esset que magnæ temeritatis dicere à Deo dixisse, quod à Deo, non audierunt, sed ex suo capite.* Primò, ex Doctrina S. Th. 22. quæst. 171. art. 5. vbi distinguit erudite, quòd mens Prophetæ, dupliciter instruitur à Deo. Primò per expressã reuelationem. Secundò, per instinctum, quem patitur mens ignoranter. Iuxta August. 2. super super Genes. c. 17. De illis, quæ sunt illi nota in reuelatione habet certitudinem, de illis verò, quæ sunt in instinctu cognita, non potest certò discernere, ac plenè, an ex suo sint, an à Deo. Colligitur, autem à Deo dixisse, quæ ex illo instinctu scribunt, aut proferunt, cùm recipitur, & probatur, vt canonicum ab Ecclesia. Cum ergo dicunt. *Hæc dicit Dominis, aut misfit me Dominus, aut id acceperunt ex reuelatione,* Dei, aut si instinctu redditi sunt aliunde certi, à Deo motus, non ex suo cerebro dixisse. Nam cùm nõ posit, plene discernere, an ex Deo sit, non dicunt à Deo dicere, ne decipiant audientes. Secundò, nam spiritus prophetiæ reddit certos prophetas, & sine suspitione, Deum esse, qui loquitur, cum dicunt. *Hæc dicit Dominus*, licet non sit necessarium, quòd intelligant, & pnnetrant res & mysteria dicta, quod [signetur, aut non significetur, vt de Caipha, qui dixit propheticè, *oportet vnum hominem mori, &c.* Licet non casuerit Christi morte mundum redimendum. Tertiò, Ie remiæ 4. adeò certi sunt, esse Dei, quæ prænuntiant, nomine ipsius, vt dicant si non respondeat euentus, non ipsos, sed Deum decepisse, & seduxisse. *Heu Heu Domine Deus, ergo ne decepisti populum tuum, & Hierusalem! dicens pax, erit, vobis, & ecce peruenit gladius vsque ad animam.* & c. 20. *Seduxisti me Domine, & seductus sum, factus sum inderisum tota die, quia iam olim vociferens vastitatem clamo. Et ecce factus est mihi sermo Domini in opprobriũ.* Confirmitatur, nam sicut viri graues, & prudentes, non audent proferre mendatia, aut prænuntiare futura, ne sibi indecoram opinionem, irrisionem, & odium concilient, non auderent prophetæ dicere, quòd hæc dicit Dominus cum Dominus, non fuerit loquutus. Confirmatur, nam curam habuit sacer scriptor, cauendi casum oppositum ad tollendum 3. Reg. 13. Vbi propheta senex de Bethel ocurrit bono, venienti ad Ieroboã, & duxit in domũ suam, & fefellit eum, & dum sederet ãd mensam, vbi verè loquutus est Deus dixit viro Dei bono, qui venerat de Iuda. *Hæc dicit Dominus, &c.*

Vlti-

Vltimò 2. Reg. 7. Dauid consulit Natham, vt virum sanctum, & prudentem; non vt Prophetam. An expediret ædificare templum? Respondit Natham ad Regē. *Omne quod est in corde tuo vade, & fac, quia Dominus tecum est*, & non legitur respondisse in nomine Dei, aut missum ad id dicendum. Et capite 12. cum prohibitus est Dauid ædificare, dicitur Natham missi à Domino, & accepisse dicenda. Et ibidem, vbi corripitur, dicitur. *Misit ergo Dominus Natham ad Dauid, &c. Tu es ille vir, &c. Hæc dicit Dominus Deus Israel, &c.*

Arguitur Prophetas, è suo dixisse. Patet, nam saltim è suo capite dicūtur, quæ non eueniunt. Vt Ionnæ 1. *adhuc 40. dies, & Ninive &c. & post 40. dies* vrbs non est euersa. Confir. primò, ex 1. Reg. 7. exemplo Natham, qui Dauidi respondit, quòd *templum ædificaret*, cum Deus non iusserit, potiùs statim per Prophetā prohibuerit. Confirmatur secundò, ex 2. Reg. 14. Gad ait ad Dauid. *Aut septem annis veniet fames in terra, aut 3. mensibus fugiens aduersarios tuos, aut 3. diebus erit pestilentia in terra tua*, tamē solùm dixit Dominus Gad, loquere Dauid *Trium tibi datur optio.*

Respondent quidam ex Gregorio hom. 1. in Ezech. quod ex vsu prophetandi dicunt ex suo, & existimant dicere ex spiritu prophetiæ. *Displicet* propter dicta. Esset maximæ temeritatis dicere à suo dixisse, quod à Deo non audierunt, sed ex suo capite. Respondetur, non ex suo dixisse, quod non audierat, & absolutè, sed vel conditionate, si non pœniterent, aut prædictione comminatoria, quę non petit executionem. Ad primam confirmationem, quod Dauid, non quæsiuit, quid diceret Deus, & quod dixit Natham, non dixit, vt Prophetā, sed vt vir consultus, bonus, & prudens. Ad secundam confirmationem, quòd satis perspicue constat de illis tribus. Quòd si pestis fuit cito sedata, & non durauit trius diebus, prædictio fuit comminatoria, sicut prophetæ Ionnæ.

Ad. *Instructus, &c.*

DISPVT. X.

De idiotismis sacræ Scripturæ.

SACRA Scriptura dicit habitudinem insuper ad idiotismos, quos contraxit ex linguæ Hebraicæ, & Græcæ proprietatibus, in modo dicendi, & significandi interpræ-tationem. Græci, & Latini stilo, & phrasi Hebræi dialecti sœpissimè inhærentes hebraizasse

in versione visi sunt admisisse solecismos, ab illa in nostram deribatos: teste Hieronimo in epistola ad Ephes. lib. 2. quos idiotismos vocamus. Reddunt difficilem sensum passim, & egent explicatione, quã his brebiter adhibere, discurrendo per grauiora necessarium censui. Alijs minoris momenti relictis. Explicatio est vtilis necessaria, & iucunda.

DVBIVM. I.

An scriptura vtatur metaphoris? & fabulis gentilium aliquando? & an symbolis Hierogliphicis, & enigmatibus?

CONclusio est *affirmatiua*. Probatur de *metaphoris*, in quibus receditur à proprietate sermonis. Est enim à propria *in* impropriam translatio. Iuxta quod Isaiæ 11. Barbari homines appellantur lupi, serpentes, dracones, deinde quidquid lædit, aut nocet, sagitta, & igneis, tempestas grando & procella. Deinde selectum frumentũ, vinum & oleum, dicitur adeps, medulla fruméti, vini, & olei: panis, & alimentum dici solet baculum, robur panis. Leuit. 26. vers. 26. *Postquã confregero robur panis.* Isaiæ 3. v. 1. *Ecce Dominator Dominus auferet à Hierusalem, & Iuda, validum, & fortem, & omne robur panis, & omne robur aquæ.* Probatur secunda pars de *fabulis gentilium*, nam citat per imitationem huiusmodi fabulas. Iudic. 16. v. 8. fabula Titanũ; *Nec Filij Titã percusserunt eũ, nec ex celsi gigantes oppossuerunt se illi, sed Iudic filia Merari, &c.* Iob 24. Cornu Amalthæ, & *vocauit nomen vnius (filiæ) diem nomen secundæ Casiam nomen tertiæ cornustibij.* Isaiæ 34. fabulam centaurorum inuenies. Amos 5. de Arcturo, & Orione. *Facientem Arcturum, & Orionem, & conuertentem mane in tenebras, &c.* Vbi expendendum, quòd non approbantur fabulæ. Pugnaret enim contra scripturæ veracitatem, sed se accommodat, in eo modo loquendi vulgi. Probatur tertia pars, scilicet quod vtitur *symbolis geroglificis, & enigmatibus*, ex Dan. 4. vbi per enigma *arboris sub qua umbraculum habitabant bestiæ, volucres, serpentes*, & venenata animantia, significabatur Regnũ, & Imperium, Nabuchodonosor. cap. 2. per *statuam quadrifidam*. 7. per *quatuor bestias*, quatuor Monarchias. Ezechiel. Primò per *curruũ Cherubim, & quatuor animalia sacra*, insinuabatur magnifica Dei potẽtia. Cap. 5 per *machaeram rasilem barbam, pectinem*, indicabantur Caldæi verberantes insolentes Principes Iudæorum, & plebem. Et cap. 17. per *pugnam duarum aquilarum*, pugna, & prælium inter Nabuchodonosor, & Pharaonem. Cap. 29. per *lebetes, & leunculos*, Tyrannis Ioakini, & Sedeciæ. In Ieremia *ira columbæ* &

& gladius columbæ ; erāt indices iræ,& gladij Caldæorum. Daniel 8. per *Hircum,& Arietē*, significabantur,& adumbrabantur, Alexāder Magnus,& Darius.

DVBIVM II.

An scriptura vtatur figuris, tropis, Metonymia, Antonomasia, Antiphrasi, Eufemismo, Ironia, Cathecresi,& Sinedoche,in computatione annorum, Hyperbole,& Prolepsi, & histerologia, & recapitulatione?

CONclusio est *affirmatiua*. Probatur per partes. De *Metonomia*, iuxta quam sumitur, continens pro contento sunt innumera, Calix, pro vino contento, arca pro contentis : Samaria pro ciuibus: templum pro Sacerdotibus: idolum pro deditis ad cultū idolorum, vt superfluat concinare loca. De *Synedoche*, iuxta quam ponitur pars pro toto, & contra, probari potest Exod. 1. *Omnis anima, quæ egressæ sunt de femore Iacob.* Vbi anima pars hominis pro toto omine. psal. 65. *Possuistis homines super capita nostra*, id est super totum hominem. Isaiæ 55. *Lætitia sempiterna, super capita eorum*, id est, super eos. Genes. 40. *Auferet Pharao caput tuū.* Id estte de præstati vita, suspendendo te in patibulo. Et inuerso, toto pro parte, vt dum dicitur in prophetis, *omnes gentes conuertendas esse ad Christum*, ex pluribus interdum conuertendas. *De Antonomasia*, iuxta quam ponitur pro nomine proprio, nomen generale,& vt pro Aristotele Philosophus, pro Paulo Apostolus, pro Euphrate fluuius. Probant penè in numera scripturæ loca, quæ non vacat, & alias notissima. *De Antiphrasi*, iuxta quam, quæ est dictio in contrario sensu vsurpata, ponitur vox pro opposita, vt si dicas bellū, quod non est bellū, pax quæ non est pax, sed discordia. Probatur ex Iob 1. vers. 11. & 20. 15. Vbi benedictio sumitur pro contraria maledictione *Benedic Deo, &c.* 3. Reg 21. vers. 13. Sanctificare, pro pollui. Idem Deut. 22. v. 9. Quod vigilanter attendi debet quia reddit sensum, & significatum omnino repugnans, verbo, clarius, quā in ironia simulata. *Ecce pax, & non erat pax, &c.* De *Euphemismo*, iuxta quem fit translatio significati per vocem ascinalios, per Euphenismum, remouet à se infausta, & incommoda in hostes suos Dauid, dum 1. Reg. 23. dicitur. *Hæc faciat Deus Dauid, & hæc addat*, vbi loco sui substituit inimicos, & sibi imprecatur malū, quod nō sibi, sed alijs accidere optat, nisi sumat vindictam de Nabal. *Deironia*, iuxta quā ponitur diuersus, & aduersus sensus, à prolatis verbis dissimulatione, aut illusione. Probat. ex Genes. 3 v. 22. *Ecce Adam quasi vnus ex nobis factus es*, &c. eritis sicut Dij scientes bonum, & malum.

lum Zachariæ 11. verſ. 13. Fit ſermo de 30. argenteis venditionis, & dicitur decorum pretium, quo appretiatus ſum ab eis. Eccleſiaſt. 11. *Lætare iuuenis* in adoleſcentia tua, pro caue ab illicitis. Quod deprehendi debet ex ipſo filio ſententiæ, & ſenſus in re ſcripta. Vbi ſenſus, pronuntiationis non ſolet indicem dare illuſionis. *De Cathachreſi*, id eſt abuſio, iuxta quam poni ſolet verbum pro illegitime ſignificato, cum deficit propriũ, & confugitur abuſiue, ad minus proprium, & interdum ad diſſimile. Iuxta primum, vt ſi ponatur interfector pro parricida, cum interfector patris dicatur propriè parricida. Probatur ex aliquibus Matth. 9. dicit de cecis curatis à Chriſto, quod diffamauerunt Ieſum, per totam terram illam, abuſiuè ſumpta diffamatione pro bona fama, & laude. Extenderunt Chriſti famam, & laudem per terram illam. Deutor. 15. ponitur pro mutuare, fenerari. Malach. 4. Pœnæ ſolis pro radijs. Pater mendatij pro authore. Pater pluuiæ pro Deo pluuiæ creatore, largitore. Pater canentium, cythara, & organo, pro Tubalcain inuentore illius muſicæ. Ædificare domos, aut deſtruere, pro dare, aut adimere filios, aut poſteros, qui ſunt, ac lapides viui, quibus ædificantur domus politicæ familiæ. De *Synedoche adhuc in computatione annorum*, quæ eſt res difficilis valde, ſed reddit vias planas in computis, & diſcretione magna, & neceſsitate cogente admittenda; iuxta quam ponitur pars pro tota ſumma, & contra. Probatur ex locis, de Chriſti reſurrectione Matth. 27. *Poteſt 3. dies reſurgam*, & Matth. 12. *Sicut fuit Ionas*, &c. *In ventre ceti 3. diebus*, ac noctibus, ſic erit filius hominis, &c. & Chriſtus dicitur fuiſſe in ſepulchro tribus diebus, cùm non fuerint tres integri, & totales, ſed primi, & tertij pars incompleta ſumatur pro toto die. Nam primò, & tertiò, non fuit ex toto, ſed ex parte incompleta, aſcita in numerum ternarium. Iuxta quam doctrinam aduerti maximè debet, quòd ſcriptura dum recenſet annos vitæ alicuius, aut annos Regni alicuius Regis, interdum ſumit incompletos cum completis in numerum, licet ordinarie ſumat in computum completos. Et interdum numerum rotundũ, relictis diebus, menſibus, aut annis infra decenium, & alibi de eiſdem addat, & incompletas partes: & tandem aliquando ſumit, tempus pro anno, & dimidium tẽporis pro dimidio anno. Vt Daniel 7. *Tempus, & tempora, & dimidium temporis*, pro vno anno, & duobus annis, & dimidio anno. De *Hiperbole*, iuxta quã ponitur dictio fidem excedens, gratia augendi: vt fulminis ocyor alis, aut diminuendi vt ſonus muſcæ volantis te deterreat. Cuius etiam notiſsimus vſus in ſcriptura. Probatur

batur ex Genes. 41. vers. 49. venit fertilitas 7. annorum, tantaque fuit abundantia tritici, vt arenæ maris coæquaretur, & copia mensuram excederet. 3. Reg. 10. vers. 27. Salomon fecit, vt tanta esset abundantia argenti in Hierusalem, quanta, & lapidum. 3. Reg. 6. vers. 8. Quòd non est auditus, malleus in templi fabrica. Et Ioan. vlt. vers. vlt. sunt, & alia multa, quæ fecit Iesus, quæ si scribantur per singula, nec ipsum arbitror mundũ capere posse eos, qui scribendi sunt libros. Vbi capiendi libros negatur, capacitas mũdo Hyperbolicè. De *Prolepsi*, iuxta quam fit anticipatio, aut præassumptio rei, inter ordinem prioris seruantes, & posterioris, vt si rei posterius gestæ, anticipetur narratio, probari solet late ex innumeris vnũ vel alterum exẽplum in probationem adducẽ. De Noe dicitur, quòd *genuit Sẽ cũ 500. esset annorũ*, cum solùm esset 480. Nam bienio post diluuium dicitur fuisse Sem 100. annorũ. Deinde Genes. 5. in fine dicitur. *Noe cum 500. esset annorum genuit Sem*, &c. Et cap. sequenti 6. dicitur accepisse, illud oraculum, *non permanebit spiritus meus, in homine*, &c. *Eruntque dies illius 120. annorum.* Vbi illius mundi finis prænuntiatur, & assignantur illi anni, ad pœnitentiam ante finẽ, non verò determinatur numer⁹ annorũ vitæ hominis post diluuiũ, quia plures vixerũt pl⁹ 300. & 400. & Genes. 7. dicitur quòd incipit. *Diluuium anno 600. vitæ Noe, mense 2 septima die mensis*, & ita comprobatur, quòd erat 480. annorum, cum c. 5. dicitur fuisse 500 annorũ, cum genuit Sem: post quod additi illi 120 anni cõplent quingentisimum annũ, cum ergo illo cap. 5. dicitur *Noe 500 annorũ*, per prolepsim anticipati sunt, illi 20 anni. Nam durum est dicere, quòd Deus visa impœnitẽtia mũdi retraxit illos annos, vt illis 500 & illis 100 completi essent 600. Noe in quo inchoatũ est diluuiũ. De *Histerologia, & Recapitulatione*, iuxta quam res posterius gesta, narratur priùs, & cõtra. Probatur ex Genes. 37. Vbi post mortem Isaac aui narratur, quòd *sedecim esset annorũ* Ioseph. Cũ ante mortẽ aui esset 16. annorum. Post v. 29. vel 30. hoc factum est per Histerologiam, quæ est rerum gestarum præpostera narratio, aut contra. Probatur ex Genes. 11. v. 32. dicitur, *& facti sunt dies Thare 205 annorum, & mortuus est*, cum genuisset Abraham anno 70 ætatis ex v. 26. Vocatio autem Abrahę, refertur sequenti c. 12. à v. 1. *egredere de terra tua, &c. &* v. 4. *egressus est itaque Abrahã sicut præceperat ei Dominus.* Vbi vocatio Abrahæ præposterè ad mortem Patris refertur, cum esset ante mortem per Histerologiam. Nisi vellis distinguere duas, vnam ante mortem, alteram post mortem Patris Thare. Deinde act. 7. dicitur exisse Abrahã de terra sua, non ante mor-

tem

tẽ Patris Thare, sed post mortẽ, *& inde post quam mortuus est Patris eius transtulit illã Dominus in terrã istam chanaam.* Quod exponi post siliter, quod vocatio egressionis de terra facta ante mortẽ refertur post mortem. Vel distinguendum de duplici vocrtione ante, & post.

DVBIVM àII.

An in scriptura sit vsus Heriadis, Hypalage, & Enaloge? & an fiat variatio per tres regulas, scilicet Sinonymorum, Enaloge, & Hetherioſie?

PRima cõclusio est *affirmatiua. Quòd sit frequens vsus Heriadis, Hypalage, & Enalage.* De *Heriade*, iuxta quam vnum distribuitur, & diuiditur in duo. Genes. 1. v. 14. *Possuit in firmamento cœli, &c. vt diuiderent lucem, & tenebras, &c. & sint in tempora, & dies, & annos*, id est insigna tẽporum, dierũ, annorum. Ad poætam aurum, frenumque momordit, id est frenum aureum. De *Hypalage*, id est figura, vbi conficitur sensus inuersione verborum. Apud Psal. 18. *In sole possuit tabernaculum suum*, id est in tabernaculo suo possuit solem. In Hebræo, in cœlis suis possuit tabernaculum Soli. Isaiæ 1. *Cognouit bos possessorem suum, & asinus præsepè Domini sui.* Id est Domini illius præsepis, in quo sustentabatur. De *Enaloge* figura sæpissimè, in qua sumi solet quilibet sensus adhuc externus pro intellectu ratione vniuersalitatis respicientis ens intelligibile, & sensibile, imò quilibet sensus perfectus pro imperfectiori. Imò pater potẽtia obiecto, actus pro obiecto Ps. 33. *Gustate, & videte*, &c. *Beatus vir*, &c. cũ visio beata sit pertinẽs ad intellectum, insinuatur per visum, & gustum sensibilem. 1. corint. 4. *Nemo audit*, pro nemo intelligit. Hebræor. 5. *Imbecilles audiendum*, pro intelligendum. Deinde visus sensus ex externorum eminentia omniũ præstantissimus, solet sumi pro quouis sensu. Exodi 20. *Videre voces*, id est, audire. Ioann. 20. Videre pro tangere, quia *Vidisti me Thoma*, pro quia tetigisti me. Exodi. 5. vers. 21. visio pro olfactu. *Fetere fecistis odorem nostrum in oculis Pharaonis*, id est, famã. Deinde actio pro obiecto sumi solet, vt visio pro re visa, Isaiæ 1. vers. 1. & Leuit. 3. v. 10. Auditus pro re audita. Isaiæ 55. spes pro re sperata. Prober. 13. vers. 12. timor pro obiecto, Genes. 31. v. 42. Desiderium, pro re desiderata, & tandem custodia, pro re custodita, Isaiæ 3. vers. 22. His addendum, quòd in sacra Scriptura sunt alij varij vsus enaloge minus frequentes; enalogæ personæ, qua fit transitus à prima, vel secunda in tertiam. Enaloge quoad tempus, vbi ponitur præteritum pro futuro. Abacuc 3. & contra. Item, quoad numerum, vbi tran-

transitur à singulari ad plurale, & contra. Deut. 32, & 33, & in psalmis, & prophetis passim. Item vbi ponitur imperatiuum, pro futuro, potissimum in promissionibus. Ecclesiastici vltimò v. 3. vers. 36. *Possidete aurum*, pro possidebitis, & ibi ponitur, vt certificetur ipsa possessio. Denique Enaloge verbi, pro aduerbio. Psal. 77. *Conuersi tentauerunt*, id est iterum tentauerunt Psalm. 84. *Deus tu conuersus viuificabis nos*, id est iterum viuificabis nos. Vltimò de Hetherioſi, iuxta quam fit variatio, & immutatio in oratione, inuariato, & immutato sensu, permanente eadem sententia. Vt si varietur oratio per deribata ab eadem radice, & principio. Sapio, sapiens, sapientia, sapienter. Amo, amor, amator, amabilis, amans, amanter, amandus, amaturus, amatus. Numus, numulus, numisma, &c. & solet esse multiplex iuxta 3. regulam variandi, per Synonima, Enaolge, & Hetherioſis, de quo statim.

Secunda conclusio, *in scriptura sæpè vsus variationis in oratione, iuxta tres regulas, Synonimorum, Enaloge, & Hetherioſis.* De quibus apud rethores frequenter in exornanda oratione. Ita, vt manente eodem sensu, & eadem sententia fiat variatio, per varias formulas, & modos. Prima *regula variandi*, fit per Synonima, nomina, aut verba, sapio, sapiens, sapientia, &c. Obsecro, precor, deprecor, Doctor, litteratus, peritus, docte perite sapienter, vbi idem conceptus, modus varius, apud Logicos appellatur synonyma, voce græca, apud latinos, vniuoca, ratio eadem, nomina diuersa. Huius primæ regulæ exempla, variatio per synonima. Diligo præceptorem meum, diligo doctorem meum, veneror institutorem meũ, prosequor amore, amo, &c. Secunda *regula variandi*, fit per Enaloge. Et est variatio orationis, per dictiones deribatas ab eadẽ radicè, aut principio, manente eodem sensu, conceptu, aut sententia, siue nominaliter, siue verbaliter. Sapio, sapiẽs, sapiẽtia. Amo, amor, amabilis, amans, amatus, &c. Doceo, docens, docturus, &c. Numus, numulus, numisma, &c. huius secundæ regulæ exempla. Amo præceptorem meũ amor præceptoris, supra alios amabilis præceptor. Tertia *regula variandi*, fit per Hetherioſis, & est variatio orationis, eodem sensu, & sententia perseuerante, per accidentia, proprietates, & attributa, partium orationis, verbi, nominis, pronominis, participij, generis, numeri casus. Idem de dictionibus indelinabilibus, præpositione, aduerbio, coniunctione, interiectione, quibus oratio induit varios colores, retento eodem sensu, & sententia. Huius tertiæ regulæ exempla varia, quæ brebitas, non capit omnia. Aliquando in verbo fit variatio per tempora, Amo præceptorem, amabo in

finem

finem vitæ amem sine pausa, amare nunquam deficiam. In nomine fit variatio per casus, vt amor erga Magistrum est maior significatione amoris, non est vlla mensura amoris erga Magistrum nil par, amorem nullus superat. Amore erga Magistrum nil maius. Similiter in alijs dictionibus fieri potest variatio retento eodem sensu, & sententia, per attributa, accidētia, & proprietates eorum. Solet etiam fieri variatio, si pro concreto ponatur abstractum, pro Redemptore redemptio, pro iustificatione iustitia, 1. Corint. 1. *Christus factus est pro nobis iustitia, sanctificatio, & redemptio?*

In calce *obserua* istas varietates esse valde vtiles, & necessarias ad figurandas, & formandas scripturæ paraphrases, ita tamen disponi debent, vt semper sit idem sensus, & sententia, licet sint varij modi variandi, & exponendi.

DVBIVM IV.

An in Scriptura soleat fieri transitus à figura ad figuratum? A voce figuræ ad expressionem figurati? & ab vna metaphora ad aliam? & poni soleat nomen pro re significata?

CONclusio est *affirmatiua* Probatur *de à figura ad figuratum*, ex Isaiæ 11. *à flore ad Christū*, & *à vastitate Babilonis ad figuratum diem iuditij*. Nahum 3. v. 4. *à Meretrice ad Niniuem* ciuitatem. *Ab erucis, locustis, & bruchis, ad milites*, vastantibus terram, Ioel. cap. 1. & 2. Isaias *à casu Luciferi figura casus Regis Babilonis Balthasaris*, cap. 14. *ad ipsam ruinam Regis*. Exech. 28. *à Cherubino ad Regem Tyri*. Probatur de voce, aut nomine, *figuræ ad rem figuratam*, nomina parentum filijs, & nomen rei quæ comparatur ad eum, cui sit compositio, nomen Dauid Christo. Ezech. 34. vers. 23. *Suscitabo super eos pastorem vnum, qui pascet eos, seruū meum Dauid*. Oseæ 3. v. 5. *Filij Israel quærent Dominum Deum suum, & Dauid Regem suum*. Israelitæ Israel. Idumæi Esau. Probatur de transitu vnius metaphoræ ad aliam. Zachariæ 3. vers. 8. & 9. vix dicitur oriens, cum statim lapis. Oseæ 2. vix synagoga appellatur mulier, cum statim vinea. Isaiæ 27. Diabolus appellatur Leuiathā. id est Balena, & cap. 45. vers. 70. dicitur Draco. Probatur vltimò, quòd poni solent *nomen pro re significata*, Isaiæ 7. v. 4. *Vocabitur nomen eius Emanuel*, pro erit Emanuel & c. 8. *Voca nomen eius accelera, spolia detrahe, festina prædari*, pro verò esse reali, ac si esset spoliator celerim⁹, & prædo festinus. Ieremiæ 4. *Loquar iuditia cum eis*, id est, iudicium agam, infligam pœnas.

(**)

DVBIVM V.

An idem sit interdum binomus? Et an poni soleat ab Hebræis pro nomine proprio, aut gentilitio, interpretatio eiusdem? & an in comparatione tribui soleat alicui vt gentilitium, nomen rei, cui comparatur?

CONclusio est *affirmatiua*. Probatur, quòd vna persona sæpè habet plura nomina, ex eo quòd Genes. 16. *Vxor Abrahæ*, dicitur *Sarai*, & 17. *Sara*, & 11. *Ieschà*. Et Genes. 26. *Vxor*, Esau, *Iudit filia Beeri*. Genes. 36. *Ada filia Edon*. Similiter, *Ester* 2. *Ester Edissa*. *Abimelec Achimelec*. *Iob Iobab*. *Achar Acham*, *Iethro Raguel*, in Genes. alia nomina. In primò Paralyp. sæpè alia viris, & fœminis. Non autem transferuntur in latinam linguam, eo quòd, si in aliam linguam transferantur, ita immutantur, vt vix appareat esse eadem: eò præsertim, quòd interpres soleat attendere ad Etymòn linguæ suæ. Pro *Iehoschuah est Iesus*: pro *Maschiach*, est *Messias*. Pro *Pesaach*, *Pascha*, Pro *Aschasuerus* (1. magnus capitane?) Latina *Assuerus*. Prob. quòd pro *nomine soleat poni*, interpretatio eiusdem apud Hebræos, siue sit proprium, siue gentilitium, quoniã per illud significabant rem specialem, aut mysterium, ne maneret in occulto. Ex Oseæ primo, vbi vocat *filiam absque misericordia*, quæ est nominis interpretatio. Rom. 9. vers. 25. *Vocabo non plebem meam plebem meam, & non dilectam dilectam, & non misericordiam consequutam misericordiam consequutam*. Primò Paralip. 4 vers. 22. pro Ioas, & Saraph Principes Moab in latino, qui stare fecit Solem. Iob vltimo vers. 14. Iob appellat filiam *Vnam diem*, *alteram Casiam*, *& tertiam Cornustibiam*. Probatur tertiũ, scilicet, quòd *in comparatione soleat tribui rei nomen alterius*, cui comparatur, & illi addatur quasi gentilitium. Ex Isaiæ 1. vers. 10. *Israelitæ appellantur impij*, *Sodomitæ*, *Chananæi*, *&c. Audite verbum Domini Principes Sodomorum*. Daniel 13. vers. 56. Daniel cuidam seni Susanæ, *semen Chanaan*, *& non Iuda*. Christus appellat, *Iudam Diabolum*. Quilibet *fortis* appellari solet *Samson*, *sapiens Daniel*. *Potens opulantus Salomon*. *Tyrannus Rex Assur*. Hierosolima impia Apocalip. 11. dicitur *Sodoma*, *& Egyptus*. Apocalip. 18. *Roma impia dicitur Babilon*, & sic sæpissimè, *Idolatria fornicatio*, *& idolatræ adulteri*.

DVBIVM VI.

An idem significet interdum varia? & in diuersis locis diuersa? imò oppositа? & in penuria vocis, aut verbi eodem sit vsus ad signi ficanda diuersa? & eadē res iuxta varias proprietates habeat plures appellationes?

COnclusio est *affirmatiua*. Probatur, *quòd idē varia significet*, nam sepissime peccatum sumi solet pro culpa, pro pœna, pro effectibus relictis in anima, & corpore: Interdum verò, pro hostia, pro peccato, pro immunditia legali ex menstruo, lepra, contactu mortui. Ex Leuit. 12. sic caro sæpè homines carnalibus deuictos, concupiscentia, corruptio, & homo exterior. Probatur secundum, quòd *in diuersis locis diuersa, imò oppositа*, ex Leuit. 24. vers. 15. Moyses. *Homo qui maledixit Deo suo portabit peccatum suum*, id est pœnam illi debitam. Leuit. 17. vers. 16. *Anima quæ commederit morticinum, & lauabit vestimenta, quod si non lauerit portabit iniquitatem suam*, ideſt pœnam illi taxatam. Alibi verò portare iniquitatem designat veniam, remissionem, ignoscere, &c. 1. Reg. 15. Samuel ad Saul. *Abiecit te Deus, ne sis Rex*. Respondet Saul, *peccaui, sed nunc porta peccatum* pro tollera, remitte. Exod. 28. vers. 38. *Portabit quæ Aaron iniquitatem eorum*. Leuit. 10. vers. 17. *Cur non comedistis hostiam pro peccato, quæ data est, vt portetis iniquitatem multitudinis*. Probatur tertium, quòd *in penuria vocis, aut verbi sit vsus vno ad significata diuersa*. Ex eo quòd cum apud Hebræos radices sint pauciſsimæ, quippè non excedant numerum 1000. & idem habeat plures significationes, interpretes, eodem vti solent in varijs significationibus inspectis, tēpore, locis, &c. si צחק Tsahac Latine ludere. 2. Regum 2. vers. 14. facere duellum, surgant pueri, & ludant. Genes. 21. Persequi, vexare, *Vidit Sara ludentem Israel cum Isaac*, id est vexantem. Exod. 32. idola colere, *Manducare, & bibere, & surrexerunt ludere*, id est idolatrare.

Probatur quartū, scilicet, quòd *eadē res iuxta varia officia, iuxta affectiones, & proprietates intituletur pluribus nominibus*. Ex Psal. 18. Lex dicitur præceptum, mandatum, statutum, custodia, &c. Secūdò dicitur iuditium, quia iuxta eam dirimantur lites, æquitas, quia docet æquitatem, veritas, quia docet, quod verum est. Tertiò testimonium, quia dat testimonium diuinæ voluntatis. Quartum testamentum, id est pactum initum cum Deo. Quintò, via Domini, iustificatio, eloquium, sermo, verbum Dei, quia ducit nos ad Deum, reddit iustos, procedit ex ore Dei.

DVBIVM VII.

An nomen, aut verbum gemminatum habeat emphasim? & importet exaggerationem, & magnitudinem in significando, siue fiat geminatio per adiunctum masculinum, siue femeninum intra idem substantiuum, aut diuersam, in recto, & in obliquo? & an asserto adiuncta negatione, & contra?

Conclusio *est affirmatiua.* Probatur *de verbo geminato*, habere in significando emphasim, & exaggerationé. Ex Tren. 1. vers. 2. *Plorans ploravit*, id est fletu vehementissimo, lamentabilissimo. Psal. 117 vers. 28. *Castigans castigauit me Dominus*, id est grauissimè, durissimè, acerbissimè. Habacuc 2. *Veniens veniet*, id est certissimo aduentu. 2. Reg. 9. *Faciens faciam*, id est, sine interruptione, pausa, detentione. Probatur *de nomine* gemminato, aut duplicato immediatè Psal 86. *Homo, & homo natus est in ea*, scilicet Ecclesia, id est, plures homines. Psal 144. *Generatio, & generatio laudabit opera tua*, id est multæ generationes ab vna in aliam. Psal 21. *Tribus tribus Domini*, id est plures tribus. Ioel 3. vers. 14. *Populi populi*, id est multi, plures. *Idem si gemminatio fiat*, per adiunctum masculinum, aut fœmeninum nomen. Isaiæ 3. vers. 1. *Auferet validum, & validum*, id est omne validum. Eccles 2. vers. 28. *Feci mihi cantores, & cantatrices*, id est, paraui musicos in omni genere. Probatur *de geminato*, in recto, & in obliquo inter duo eadē substantiua, de recto ex prædictis. De obliquo probatur habere emphasim, & insinuare in eo genere excellentiam, & eminentiā ex pluribus locis, ibi dicitur *Sancta Sanctorum*, id est præstantissimę sanctitatis. *Vanitas vanitatum*, id est vanissima super vana. Idem etiam probatur *in diuersi substātiis gemminatis*, ex Daniel 11. vers 17. *Filiam fœminarum*, id est pulcherrimam inter fœminas. *Vir virtutum*, id est fortissimus inter viros. Denique *eandem vim habere, si asserto adiungatur negatio opposita, aut contra.* Probatur ex Isaiæ 38 vers. 1. *Morieris, & non viues*, id est certissimè morieris. Ezechiel 18. vers. 21. *Vita viuet, & non morietur*, id est certissimè vita sine morte celerata. Ioann. 1. vers. 20. *Confessus est*, & non negauit, id est confessus est de plano, apertissimè, sine vllis ambagibus.

DV-

DVBIVM VIII.

An sit vsus in sacra Scriptura ponendi in computis numerum completum, relicto, & prætermitto incompleto minori?

Conclusio *est affirmativa.* Probatur primò ex Num. 11. vbi vocantur 70. Scriptores, qui erant 72. sicut dici solet vulgariter 70. Interpretes, cum fuerint 72. vt dictum disp. 8. dub. 15. Rursus Iudic. 9. vers. 18. dicuntur, *interfecti ab Abimelec* 70. *filij* (verbo*al super lapidem vnum*, cum defuerint duo, scilicet ipse Abimelec fratricida, & Ioathan minor natu, qui euasit. Vbi est positio numeri completi septuagenarij. Deinde Exod. 1. vers. 5. *erant igitur omnes animæ eorum, qui egressi de femore Iacob* 70. Et Genes. 46. vers. 27. *Omnes animæ domus Iacob, quæ ingressæ sunt in Egyptum fuere* 70. At verò Actorum 7. vers. 14. *Accersiuit Iacob, & omnem cognationem suam, in animabus* 75. Vbi in loco Genes. & Exodi videntur prætermissi quinque. Non differo modo, an illic numerentur solùm existentes, hic verò additi sint, quinque postea nati. Quod mihi certum, cum Siluio ad Genes. 46. vers. 27. & ad Exod. 1. vers. 5. Vlterius, *Genes* 15. *Abrahæ fit reuelatio.* Futurũ peregrinũ semẽ suũ, in terra nõ suã, *& affligent eos* 400. *annis*, similiter act. 7. dicitur, *& male tractabũt eos* 400. *annis.* Vbi ut ni seruitutis cõputatur numero 400. At *Exod.* 12. v. 40. dicetur: *Habitatio filiorum Israel, qua manserunt in Egypto fuit* 430. *annis.* Vbi in prioribus duobus locis solet dici, poni integrum numerum 400. annorum, & parum curasse de reliquo excessu paruo 30. annorum. Sicut 3. Reg. 2. dicitur, quòd Dauid *regnauit* 40. *annis.* Et 2. Reg. 5. Quòd *regnauit* 40. *annis & 6. mensibus.* Vbi in priori loco ponitur numerus completus maior, relicto minori mensium, Siluius hic Genes. 15. expresso magno reticetur minor. An autem illi 430. anni sint alterius computi, scilicet, à promissione salutis facta Abrahæ, an ab exitu, alterius est disputationis. Addi possunt dicta supra dub. 2. de Synodoche in comparatione annorum, de prolepsi, hysterologia, & recapitulatione, quæ opem ferunt huic ponderi difficultatis incomputatione annorum. Quę tot viros doctos grauat, alijs contentis, quouis effugio. An studio inquirendus sit sensus, & alia conciliatio, nec admitenda facilè talis regula euadendi, vel potius illudendi firmissimã assertionem sacræ Scripturæ, sed indagatione vlteriori insudandum, an vbi additur numerus incompletus aliunde ordienda computatio? vt in duobus: de ingressu in Egiptũ, & de annis seruitutis Doctores sunt excogitati.

DVBIVM IX.

An soleant tractari ciuitates in sacra scriptura, sub nomine, & voce mulier bona? mala? virgo? aut meretrix?

CONclusio *est affirmatiua.* Probatur ex in numeris. Ex 4. Regum 19. vbi dicitur Hierusalem *Virgo filia Sion,* & ad instar virginis sponsæ amentur à Deo, si autem agatur de idolatria, aut vitio solét appellari meretrices, ex Isai. 1. *Quomodo facta est meretrix ciuitas illa fidelis, iustitia habitauit in ea, &c. nunc homicidæ, socij furum, &c.* Tren. Ier. cap. 1. *Quomodo sedet sola ciuitas, &c. facta est quasi vidua domina gentium?*

DVBIVM. X.

Cur nomina solùm generica animaliũ, arborum, gemarum, ponderum, mensurarum, & similium: & non specifica, sint transcripta Hebraicè? & non sint latinitate donata?

CONclusio asserit, *ex penuria nominum transtulerunt nomen Hebraum vt erat.* Primò, nam ea fuit causa nominis generalis, & ita vt idem signet diuersitas תנין Tanin indicat grande magnitudine monstruosum, & ita Genes. 1. v. 21. vertit latinus Cete, Ballenam 70. verò dracones, Sirenum, Tarum בדולח Bedolach, viscosum lucidum, indurescens, latinus, bdelium, genus gumi pellucidi, stilatum ab arbore. 70. verò carbunculum christallũ, transtulit ergo Interpres latinus, vt erat apud Hebræos ex penuria, apud Latinos specierum, vt in Exodo passim Jigna sethim, & aliorum. Idem de mensuris Gomer, &c. similem, & affinem sæpè vsurparũt modium, sectarium, &c.

DVBIVM XI.

An sint variæ appellationes decem tribuum? & similiter aliarum duarum?

CONclusio est *affirmatiua.* Ratio, nam Robam diuisit 10. tribus Israel à Domo Dauid per schisma ab alijs duabus, & sic sæpè appellantur à Prophetis Ephraim, quia ex Ephraim filio Ioseph erat oriundus. Deinde Ioseph, deinde Samaria, quia ibi erat curia, & sedes Regia: reliquæ duæ domus Dauid Regum Iuda, Hierusalem, & Sion. Post captiuitatẽ, Babilonicam *Israel*, & *Iuda* accipiuntur pro Iudæis, ex captiuitate reductis, qui erant de Tribu Iuda maiori ex parte, alij autem qui eis se adiunxerunt eodem nomine sunt appellati (nunc indiscriminatim vocantur) Israelitæ, nunc Iudæi.

DV-

DVBIVM XII.

An respective ad situationem Hierusalem, & Iudææ, sint assignatæ à Prophetis, & Iudæis, positiones orbis, & plagæ, oriens, occidens, aquilo, & meridies.

CONclusio est *affirmativa*, quod situatio vrbis Hierusalem, & Iudææ sint assignatæ in scripturis à Prophetis, & agiographis Iudæis, plagæ orbis dictæ, eo quòd sita est Hierusalem, Deo chara, & Iudææ peculium illius in medio orbis, sic Daniel cap. 11. prædicit, *Reges Austri* (Egypti) *præliaturos cum Regibus Aquilonis*, scilicet Syriæ. Ieremiæ 1. v. 14. Chaldæi, & Syrij vocantur Aquilonares. *Ab Aquilone* (id est Babilone) *pandetur omne malum*. Occidens vocari solet mare, quia mediterraneum sit maiori parte ad occidentem, qui attingit Palestinam. Eadem ex parte est mare ad austrum, & ita *mare significat* plagam Australé Psal. 106. *A solis ortu, & occasu, ab Aquilone, & mari*, id est, austro. Deinde respicienti ad Orientem in illo situ, dextra respicit meridiem, sinistra septentrionem.

(***)

DVBIVM XIII.

An apparitiones Dei in veteri testamento factæ sint per Angelos nomine Dei? & an loqui soleat de Deo scriptura more humano, ac si habuerit corpus, caput, oculos, pedes, &c?

CONclusio est *affirmativa*. Probatur, quòd apparitio Dei sit facta in Angelo, qui in corpore assumpto gerebat personam Dei. Nam qui Moysi apparens dixit: *Ego sum Deus Abraham*, dicitur à Stephano act. 7. *Fuisse Angelum*. Et qui Exodi 19. & 20. tradidit Moysi legem in Syna vocatur ab Apostolo ad Galat. 3. vers. 19. Angelus *per Angelos, &c.* Probatur secunda pars, nam sepissime in scriptura tribuitur Deo forma humana, os, oculi, manus, pedes, & aliæ affectiones, & passiones humanæ ira, gaudium, tristitia, &c. Quæ non sunt in illo, sicut in nobis accidentales, & interdum vitiosè rapientes rationem, immutantes, alterantes in excessus, &c. de quibus apparitionibus veteris, & noui testamenti late, & eruditè Tyræus in tribus libris de apparitionibus.

(.§.)

DVBIVM XIIII.

An in Scriptura vox æternum, in sæculum sæculi, in æternum & vltra, & similes, significent durationem interminabilem, sine fine?

CONclusio asserit, quòd *sæpè significant durationē sine fine, nō semper: aliquando diuturnam, aliquando rei exaggerationem.* Probatur de duratione interminabili, & sine fine. Matth. 18 & 25. *In ignem æternū, &c. in supplitiū æternū, iusti autem in vitam æternam, &c.* Deinde ex PP. qui æternū, sæculum sæculi, vltra non vltra, generatio generationis, nō amplius, dicūt sæpè significare æternā durationem, interdum diuturnam, cuius finis non videtur à tunc viuente. Primò Macab. 2. v. 54. *Phinees zelando zelum Dei, &c. Sacerdotij æterni.* Probemus alterā de diuturna duratione. Isaiæ 23. de Tyro ait, *non adijcies vltrà vt glorieris.* Ezech. 26. de eodem, *non ædificaberis vltra*, id est in longum tempus, & postea reædificata est. 1. Paral. 15. vers. 2. *Quos elegit Dominus ad portandam arcam, & ad ministrandum sibi vsque in æternum.* Probatur, quòd addit exaggerationem ex Ioann. 13. de Petro, *non lauabis in æternum*, id est nō patiar vnquam vllo modo 1. Reg. 18. *Mundus sum in sempiternum*, id est, immunis sum à cede tā impia nunc, & omni tempore. Ionæ 4. *benè iracor ego vsque ad mortem*, id est vehemētia, intensione, quæ possit afferre mortem. Qua autem ratione discerni debeat significatio, ne accipiatur duratio sine fine, pro temporali, ex contextu, & interpretatione Ecclesiæ accipiendum est.

DVBIVM XV.

An Hebrai careant superlatiuis, & comparatiuis, & qualiter formentur, & vertantur in latina nostra?

CONclusio asserit, *carere, & formari addita particula, aut multitudinis.* Probatur ex his, ex innumeris. Psal. 10. *Deus, Deus, & homo, & homo.* Vbi ex geminatione monstratur superlatiuum nostrū, vt sapiētissimus, sanctissimus. Probatur, de *addita particula* excellētiæ, aut magnitudinis. Ex Ps. 16. *omnē escam abominata est anima eorū*: id est, manà continentem omnem saporem, & suauitatē. Ps. 28. *Vniuersa vanitas omnis homo viuens*, id est, summa vanitas, in omni genere rerum. Eccles. 12. *Deum time, &c. & hoc est omnis homo*, id est optimus, & prestantissimus. 1. Reg. 14. *Hi sunt Dij, qui percusserunt omni plaga*, id est grauissima: scilicet submersione in mari rubro. De alijs, enim in ciuitate inflictis, iam sermo præcesserat. Probatur altera pars de *comparatiuis*, quibus carent, & formare solent ponendo, vnum positiuum

tium (non particulam similitudinis, & comparationis) & interdū duo positiua simul, & alijs formulis componendo vnum cum alio, Psal. 117. *Bonum est confidere in Domino, quam confidere in homine*, id est melius. Probatur 16. *Fauus mellis verba compositа*. Deinde assertione prælati, & negatione alterius extremi. Isaiæ 63. *Tu Domine Pater noster, Abraham nescivit nos, & Israel ignorauit nos*. Matth. 23. *Nolite vocare vobis Patrem super terram*, id est cœlestis est pater, non terrestris. Oseæ 6. *Misericordiam volui, & non sacrificium*. Id est volo misericordiam, plusquam sacrificium. Psalmo 21. *Ego autem sum vermis, & non homo*, id est magis vermis, quam homo. 1. corint. *Laboraui in Euangelio, non ego, sed gratia Dei*. Id est plus gratia, quàm ego. Vlterius formari solet comparatiuū, verbo vehementiori. Malach. 1. & Rom. 9. *Iacob dilexi, Esau odio habui*, pro non ita amauit. Item per Lyptotem, vbi solent verbo magis leui, & minus vehemēti intensione 1. Reg. 12. *Nolite declinare post vana* (id est idola) *quæ non proderunt vobis*, id est, valde noxia. 1. Macab. 2. *Non est vtile nobis relinquere legem, & ministrare mensis*, id est erit potiùs pernicioſſum.

(·:·)

DVBIVM. XVI.

De varijs phrasibus scripturæ. *Quid singulis significetur? quid aperire aurem? habere animam in manibus? suscitare verbum? & similibus?*

COnclusio asserit, quòd *scriptura vtitur varijs formulis, & phrasibus, ad intentum significandum*. Et primò. *Aperire aurē alicui*, est dicere aliquid, monere, præcipere 1. Reg. 9. vers. 15. 2. Reg. 7. v. 14. Deinde 2. *habere animam* (aut aliquid) *in manibus*, est expositam habere periculo, eo quòd, quæ in manibus portantur, facili excidunt lapsu. Vlterius 3. *Suscitare verbum* est exigere exercitium, & implētionem illius ad fidem datam, 2. Reg. 7. vers. 15. vnde *suscitare iuramentum, pactum, verbum, rem, arma*, est exercitare illa actibus eorundem, ne sint otiosa. Quartò, *in ore gladij*. Significat aciem, & filum gladij infinities milites occisos in ore gladij, & martyres in occisione gladij mortuos. Quintò, *funiculus distributionis*, dicitur portio assignata hæreditatis, eo quòd fundi, prædia, &c. fune solent diuidi, & partiri. Ps. 15. vers. 6. *Funes ceciderunt mihi in præclaris*. Deut. 32. v. 9. *Iacob funiculus hæreditatis eius*. Psal. 77. *in funiculo distributionis*. Sextò, *inducere* est habere, & possidere illam

Psal.

Psal. 102. *Dominus regnauit decorem indutus est, indutus est Dominus fortitudinem, & præcinxit se.* Ad Roma. 3. vers. 14. *Induimini Dominũ nostrum Iesum Christum.* Septimò, *fodere terram*, est pretio emere, & comparare, Oseæ 3. vers. 2. Octauò, *inire pactum* signat firmitatem, & stabilitatem, præsertim, de pacto salis Num. 18. vers. 29. *Pactum salis est sempiternum coram Deo*, eo quòd sal dicitur incorruptum causaliter, & præseruatiuè. Nonò, *nomine cornu* significatur potentia, & Regnum, eo quòd sit virtus, & potentia in cornibus animalium Psal. 43. *In te inimicos nostros ventilabimus cornu*, id est potentia, validitate. Psal. 74. *Et omnia cornua peccatorum confringam, & exaltabuntur cornua iusti.* Deinde *nomine cornu*, signatur regnum, eo quòd in Regibus residet potentia. Psal. 131. v. 17. *Illuc producam cornu Dauid, &c.* Daniel 7. *Bestia habebat cornua decem.* Lucæ 1. *erexit cornu salutis nobis, &c.* Deci mò, *nomine vasa* significari solent instrumenta cuiusuis artis, & ita dicuntur vasa mortis instrumẽta, quibus mors causatur, & vasa belli, quibus bellum infertur, & vasa Psalmi instrumenta, quibus solet cani Psalmus. Vndecimò, *nomine Principis*, solet significari Sacerdos 2. Reg. 8. Duodecimò, *voce pingues*, solent significari diuites, & potentes, Psal. 77. v. 3. *Adhuc esca erant in &c. & ira Dei, &c. & occidit pingues eorũ.* Decimotertiò, *voce, apud canis*, solet significari, & indigitari res vilissima, & abiectissima 2. Reg. 3. Abner, *numquid caput canis ego sum*, iratus ex verbò Isboset. Decimoquartò, dicitur voce *onus* vaticinium afflictionis, durum, quia sicut onus grauat. Nahum 1. *Onus Ninive* Malachiæ 1. *Onus verbi Domini ad Israel.*

DVBIVM XVII.

An intentio sumi soleat pro actu? & inchoatio pro actu, prosequutione, & consumatione? & verbum actiuum explicari soleat per duplicem actionem, implicitam, & explicitam? & nomẽ pro re significata? & vox agendi, pro virtute agendi, officio, & obligatione?

Conclusio *est affirmatiua.* Probãtur primũ, quod *poni solet pro intentione actus*, ex Rom. 2. *Ignoras quòd benignitas Dei ad pœnitentiã te adducit*, id est intendit adducere, exoptat. Ieremiæ 1. *Constitui te super gentes, &c. Vt euellas, destruas, &c.* Vt intendas euellere vnum, & plantare alterum. Leuit. 20. *Ego Dominus, qui sanctifico vos*, id est intendo, opto, præcipio esse sanctos. Probatur secundò, de *inchoatione pro actu*, quæ non semel ponitur pro actu, ex Apocalips. 3. *Incipiam te euomere*, pro euomam. Cant. 1. v. 6. *Ne incipiã vagari, &c.* pro ne ac-

cu-

tualiter vàger. Sumi etiam solet *in fieri, in prosequtione, & in actu consumato*, vt incipere aliquid facere sit idem ac inclinari, propendere, machinari, moliri, non enim sumuntur semper verba in actu perfecto, & consumato. In hoc sensu Hebræi dicuntur, *eggresi de Egypto vespere* Deut. 16. & Exod. 12. *noctu* & num. 36. *mane*. Initum egressionis vespere, dum immolabatur agnus ad egressum: prosequtio noctu, dum licentia petebatur, & accingendo se ad iter, & mãdatum, & coactionem ad egrediendum, denique mane iam facto fit egressio perfecta, & consumata. Probatur tertio, *de verbo actiuo* exponi solito quasi vim habeat duplicis actionis. Ex Psal. 41. *emigrauit te*, id est faciet migrare. 2. corint. 2. v. 14. *Deus triumphas nos*, id est, facit triumphare. Denique ex Rom. 8. *Spiritus postulat pro nobis gemitibus, &c.* i. facit postulare. Probatur quartò, de nomine *pro re significata*, imò verbo. Ex Isaiæ 8. *vocabitur nomen eius Emanuel*, pro re significata, voca scilicet Christo, qui erit Emanuel. Et Isaiæ 7. *Voca nomen eius accelera, spolia detrahe, festina, &c.* pro esse illius, erit spoliator celerim⁹. Probatur quintò, De voce *agẽdi pro virtute*, officio, & obligatione. Ex hebræo c. 13. *Ipsi enim per vigilant*, id est obligati sunt, ex officio inuigilare, est in eis debitum inuigilandi. Vlterius *pro virtute, & conatu ad agendum*, quãtum in se est. Ex Marc. vltimo *Qui crediderit, & Baptizatus fuerit saluus erit*, quantum est ex parte fidei, nisi aliud obstet, ex Ioan. *Qui tollet peccat mundi*, quantum in se fuit, ante nostra opera.

DVBIVM XVIII.

An sit vsus in scriptura ponendi nomen in vno casu pro alio? & verbum in vno tempore pro alio?

COnclusio est *affirmatiua*. Probatur *de nomine in vno casu pro alio*, ex eo quòd nostri interpretes Hebræis inhærentes, qui casibus carent, & vtuntur eodem nomine immutato per casus, vt nos indeclinabilibus, adhibita distinctione per particulas, aut articulos, distinctiuos casuum, solent hebraizare, & per antiptosim ponũt casum pro alio. Ex 2. Corint. 11. *Sine pro Tito, sine fratres meis*, vbi accipiunt pro fratribus meis. Probatur de *Verbo in vno tempore pro alio*, ex eo quòd Hebræi carent aliquibus tẽporibus, præsenti indicatiuo, &c. & pro illo ponitur præteritum, à quo incipitur coniungatio apud eos. Ex Psal. 115. *Credidi*, id est credo, propter quod *loquutus sum*, id est loquor. Similiter vtuntur participio de præsenti, pro præterito imperfecto ex 1. corint. 12. *Ad simulachra muta prout ducebamini euntes*: Vbi ponitur euntes, pro ibatis. Similiter vtuntur *imperatiuo pro futuro*. Matth. 26.

Sol-

Soluite templum hoc; pro dissoluetis, Apocal. 22. *Qui in sordibus est sordescat adhuc.* Ioan. 13. *Quod facturus es fac citius*, id est facturus indilate.

DVBIVM XIX.

De dictionibus indeclinabilibus. *An sit vsus inchoandi libros per Et, igitur, autem, &c? & An sit vsus ponendi vnum aduerbium pro alio, loco illius? præpositionem, coniunctionem, & vim habeat signficandi pro illis?*

CONclusio est *affirmatiua*. Probatur primùm, quòd *sit vsitatus mos incipiendi libros ab illis particulis*. Ex Ezech. 1. *Et factum est*, &c. Et 2. 3. & 4. Reg. 2. Et paralip. 2. Esdræ, Iudic. Ionnæ, &c. istorum enim scriptores in meditatione rei prædentis in mente, aut scripto versabantur. Et per illas dictiones, aut coniunctiones indicabant illas cum initio talis libri continuandas. Probatur secundò, *de vsu ponendi vnam præpositionem, aduerbium, &c. pro alio*, ex eo quòd sit vsus, & significatio varia, & ita varia vsurpatio. A pro apud, vel coram. Ex Ecclesiastici 41. *Erubescite à Patre, & Matre*, id est coram Patre, & Matre. Deinde *Ad* pro *de*, ex 2. Reg. 3. *Dominus loquutus est ad Dauid*, id est, de Dauid dicens, &c. Lucæ 19. *ait Iesus ad eum, quia hodie salus domui huic*, &c. Id est de eo. Ad Hebræos 1. *& ad angelos quidem dicit*, pro de Angelis quidem, &c. Et ibidem cap. 4. *Ad quem nobis sermo.* Id est de quo, &c. Rursus *in* ponitur vice *plurimarum*, ad Ephes. 1. *In Christo, in Deo.* Et non semel redundat. Lucæ 21. *Si percutimus in gladio.* Genes. 46. *Tuli in gladio, & arcu meo.* Præterea *coniunctio, Et sumitur*, & vsurpatur *variè*, copulatiuè, disiunctiuè, causaliter, aduersatiuè. Vim habet ad ista signanda, scilicet, vtrũque, tametsi, ideo, tamen, &c. sic, sicut, quin etiam, & non semel redundat. Idẽ solet contingere in, aut, vel, quia non, sed, autem, &c. Probatur tertium, *de vsu ponendi vnum aduerbium pro alio*, ex eo quòd id inueniatur in aliquibus locis, v. g. *Quoniam pro quamuis*, ex Psal. 77. *Numquid poterit Deus parare mensam, quoniam percussit petram*, id quamuis percussit, &c. Isaiæ 12. *Confitebor tibi Domine, quoniam iratus es mihi*, id est, quamuis iratus, &c. Deinde vsurpari solet, *eo quòd* pro *quamuis*, ex Ieremiæ 7. *Liberatis sumus, eo quòd*, &c. Id est quamuis fecerimus abominationes, &c.

DVBIVM. XX.

An prticula si sit signum stupentis, admirantis, negantis, & iurantis? & an potuit reddere orationem affirmantem, aut negantem? & an dictio nisi *sit aliquando nota iuramenti execratorij?*

COnclusio est, *affirmatiua*. Probatur primùm, *de particula si*. Ex 8. Reg. 17. Vbi parens Elias Zelo accensus protulit, *viuit Dominus si erit annis his pluuia*, stuperem si esset, non erit vbi etiam *est nota iuramentis*, id est iurò, quòd non erit pluuia. Deinde *reddit orationem* antecedentem *negantem*. Ex Psal. 94. *Sicut iuraui in ira mea si introibunt*, &c. Id est non introibunt in requiem meam, rursus orationem negantem antecedentem, reddit affirmantem. Ex Isaiæ 14. *Iurauit Dominus si non, vt putaui ita erit*. Probatur secundum, de *dictioni nisi*, quod sit nota iuramenti execratorij. Ex Isaiæ 5. *Nisi domus desertæ fuerint*, nã habeat *Deus*, iuxta quòd latini dicunt *occidar, nisi hoc vel illud fecero*.

(***)

DVBIVM. XXI.

An sit vsus ponendi gerundium verbi, loco temporis subiunctiui?

COnclusio est *affirmatiua*. Probatur ex illo Psal. 125. Vbi in *conuertendo Dominus captiuitatem Sion*, id est cum conuerterit Dominus captiuitatẽ Sion. Ex Psal. 141. *In deficiendo ex me spiritum meum*, id est cum defecerit spiritus meus, & mille alijs huius farinæ supra brebitatem.

DVBIVM XXII. ET VLT.

Qua ratione venari, & indagare possit sensus literali? In tot dubijs? Ambiguitatibus? Figuris, tropis, vsurpationibus, adagijs, & vsibus?

COnclusio asserit, *varijs rationibus*. Primò, si accipi possint verba, vt iacent, sine vllo incommodo, & in sensu proprio, non est recurrendum ad sensus improprios, & metaphoricos. Secundò, difficilis locus elucidandus iuxta alium posteriorem facilem & clariorem. Tertiò, mens scriptoris colligi potest ex intentione, & fine, & circunstantijs illius. Quartò, ex traditione, & interpretatione Ecclesiæ, & conciliorum, ex expretsione Patrum sancta, & doctrina illustrium, & ex vniformi,

mi,& vnanimi concordia Doctorum catholicorum. Quintò in dubio venari potest sensus ex antecedentibus, & consequentibus, cohærentia, aut disidentia, si intendatur vnus, aut plures: vnus primario alter secundario: vnus vel equæ omnes. Vltimo ex explicatione idiotismorum, quæ sine illa solent ingerere difficultatẽ, & obscuritatem, quo magis à regula communi recepta videntur declinare. Sumi igitur possunt ex his, & alijs, adminicula, non infirma, ad eliciendum sensum litteralem.

Ad *Sacra Scriptura, &c. Ad omne opus bonum instructus, &c.*

DISPVT. XI. & vlt.

De ratione, & modo studendi, & discendi Sacram Scripturam Bibliorum.

SAcræ scripturæ habitudinem vltimã ad sui ptoprietatẽ, scibilitatem, attingunt viri prouectiores, stulti despiciunt, sicut & alias disciplinas: cum inuestigandi illius arcana fidelibus (proh pudor) dent exẽpla infideles, sutores, feminæ, & viri mechanici. Vt possit studiosus in addiscendis scripturis facile proficere, artẽ & methodũ tradidi. Superest diriga-

mus modum, vt tendat cũ prouectu in scopum, & finem optatum.

DVBIVM I.

An à solo Deo petenda Sacrarum scripturarum scientia? An adhibendum studium? Quis modus obseruandus in addiscendo iuxta præcepta Patrum?

PRima conclusio asserit, *à Deo petendam, non à solo, sed adhibito nostro labore, & studio.* Probatur primùm, ex Iacobi 1. *Si quis vestrum indiget sapientia postulet à Deo.* Deinde ex PP. latissime Aug. 3. de doctrina Christum c. 37. ad prob. 2. *Quoniã Dominus dat sapientiam, & à facie eius scientia, & intellectus,* & in numeri alij apud authores. Probatur secunda pars, quia licet Deus possit infundere, cui volucrit, & sæpè infuderit sine studio, & diligẽtia, vt Adamo, Salomoni, Prophetis, Apostolis, & alijs rusticis, quorũ plenæ sunt historiæ, ipsius enim illuminare cæcos, mitto etiã Brigitam, Theresiam, & alias pias feminas, quibus scripturæ aperuit aliqua arcana. S. Tho. de se dicit, *non tam studio, quam oratione aquisiuisse.* Et quid mirum, si videamus ethnicos iactari de suis fictis, diuinos disciplinarum deribatos afflatus. Et poætas fabulase de Heliconis Parnaseis, &c. Tamen vult Deus, quod in nobis est, faciamus, & non vult facere miracula excusabilia. Manà dedit de cœlo-

so, sed voluit adhibendam diligentiam quotidie in colligendo, & disponendo, cum posset panem coctum poni in mensis voluit, seri, meti, coqui, &c. Secundò, nam viri sanctissimi cum petitione coniunxerunt operas, vigilias, quia sine diligentia expectare, esset Deū tentare, qui voluit causas secundas consuli. Et reprehendunt hæreticos, qui in otio à diabolo decepti transfigurato in angelum lucis sperant se rapi in tertiū cœlum, & audire arcana verba, &c. non volentes adiscere à Magistro humano. Imo dedignantur. In hoc autē duo extrema cauēdo, vel à solo Deo, vel à solo studio sine Deo expectare omnium notitiā.

Secunda conclusio, *discendi modus vnicuique instituendus, iuxta instituti suum.* Ratio nim aliter Episcopus, aliter Doctor, Parrochus, aut concionator, aut priuatus modum tenere debet, aut strenuus miles in confinio hæreticorum, verbo, aut calamo pugnaturus. Sicut ars militaris varium modum assumit, vbi dimicatur solis sagitis, aut vbi etiam bombardis, aut etiam horrisonis sclopis. Sicut etiam ars nautica in oceano, alium habet naucleandi modum, sicut alia pericula, quàm in mediterraneo, & alijs.

Tertia conclusio *Brevis iste modus obseruandi istorū præceptorū, seu regularū iuxta doctrinam Patrū.* Primùm oratio præmittenda iuxta Iacobi 1. *Si quis vestrū indiget sapientia, postulet à Deo, &c.* quòd omnis studij felicitas, & incremētum à Deo pendeat. Secundū *Lectio* assidua, & quotidiana saltim alicuius clausulę, vt nulla dies sine linea, vt vna linea in arte pictoria, & quauis alia: Ciceronis periodum eloquēti: Iustiniani legem iurisperito. Ex Aug. 2. de doctrinam Christiana c. 8. & 9. Erit indagator, qui primo totū legerit, &c. Prima obseruatio nosse libros, &c. Legēdo tamen, vel mandare memoriæ. De assiduitate Bonau. sermo. 19. in exam. Sicut quando homo vidit semel faciem hominis, postea non ita perfectè cognoscit, sed quando videt frequēter: sic de sacra scriptura, quando videtur frequenter efficitur familiaris. Tertiùm *studium* ordinatè, secundùm prius, & posterius, nec inuertatur ordo ex Bonau. ibidem. Studere debet discipulus Christi in sacra scriptura, sicut pueri primo A. b. c. deinde syllabizant, & deinde legunt. Primo in fontali textu, deinde in libris Patrum, & tandem in sententijs expositorum. Quartùm *studium*, cum conferentia, & collatione vnius loci cum alio. Expressè ex Bon. ibidem. Tota scriptura est quasi vna cythara, & sicut vna corda non facit armoniā, sed cum alijs, similiter vnus locus scripturæ dependet ab alio. Ibidem nota quòd animal, quod non ruminat est immundum. Leuitici capite 11. Ruminatio fit

in

in eo quod animal habet duos vẽtres, accipit cibum ad os, & totum ruminat, & protritum in alium vlteriorem ventrem proijcet. Quintò, *ſtudium cum ſubmiſſa* collatione cum Magiſtro doctori. Quia Deus ſuperbis reſiſtit, & humilibus dat gratiam. Ex Caſsiano collatione 14. cap. 10. Si ad ſcripturarum ſcientiam vis peruenire, vt humilitatem cordis primitus conſequaris, quæ non inflat. Ex Bonau. ibidem. Paulus fuit altus, quia ipſe didicerat legem ad pedes Gamalielis. Infra, ſignatum fuit in Gedeone, vbi illi, qui probati fuerunt ad aquas, qui ſcilicet lambuerunt ſicut canes, pugnauerunt, & vicerunt. Sextò, *ſtudium phraſium, & idiotiſmũ*, Sacræ Scripturæ. Plurimum enim refert, quid ſibi vellent varij modi loquutionum, & ob id inſtituta eſt, in hac methodo eorum diſputatio. Septimò, *ſtudium, & peritia antilogiarũ*, & apparentum contradictionum, & concordiæ formulam, id enim plurimum negotij faceſsit in hac facultate nouitijs. Et meritò cum dicere ſibi contraria appareat Spiritus Sanctus prima veritas in dicendo, ſibi conſona vera. Octauo *ſtudium cum* diſcretione commenſurationis, non plus ſapere quàm oportet ſapere, ſed ſapere ſobrietatem. Ex Bonau. ibidem ad Prouerb. 25. Mel inueniſti comede, quod tibi ſufficit, ne forte ſatiatus euomas illud, ne plus extendas, quam ingenium tunm poteſt. Et ex Dionis. de Eccleſiaſt. Hierarch. cap. 6. illi, qui cantarẽt vltra vires, numquam bonam facient armoniam. Seraphim volabant alijs medijs, ne aſcẽdat homo vltra id quod poteſt, nec ſiſtat infra quod poteſt. Vltimũ deniq; quòd ſtudio, *adiungatur vita in gratia, & ſancta*, nam in maleuolam animam, non introibit ſapiẽtia, nec habitabit in corpore ſubdito peccatis. Ex Bonauent. ibidem. Qui in hoc ſtudio vult proficere oportet, quòd habeat ſanctitatem. Vt poſsit ſtudere ad vitam timoratam, & ædificationem. Generationi prauæ, & adulteræ ſignum quærenti dictũ à Chriſto non dabitur niſi, &c. Paulus raptus eſt à terreſtribus, vt audiret arcana verba. Moyſes tabulas dolauit, vt Deus ſcribere t digito legem. Et oculi cæcutientes, & lypoſsi : egre ſuſcipiunt lucem Solis, imitandi, ergo ſunt Sanctiſsimi Patres, & Eccleſiæ Doctores, quibus præcipua cura adquirẽdi virtutes in anima. Deinde ornare mentem diſciplinis, & doctrinis. Et inde ita famoſsi euaſere. De cæteris alijs præceptis, & regulis particularibus obſeruandis ſtatim.

DVBIVM. II.

An statim à pueritia sacræ scripturæ sit incumbendum? & an ante studium sacræ scripturæ sit addiscenda Rethorica, lingua Hebræa, & Græca? Philosophia, Theologia, & aliæ humanæ eruditionis disciplinæ?

PRima conclusio, *optabile, vt statim à pueritia homines incumbeant huic studio pro capacitate, vt statim in his incipiendo balbutire, aut particulæ memoriæ mandare, oportet tamen, vt quam citissimè ad eas discendas dent operam.* Primò ex illo 2. ad Thimoth. 3. *Ab infantia sacras litteras nosti. Secundò*, quia tenatius retinētur in illo statu memorata, iuxta vetus illud: recens seruauit odorem testa diu. *Tertiò*, quia apud Iudæos seruatum olim testantur plures, pueros quinqueues applicari ad Biblia, & suo modo nunc seruari, quoad possibile, vt à nutritibus instruantur in aliquibus verbis balbutire. Vt initium ducat educatio pariter, animæ, & corporis. Ne illud tempus perdatur, cum memoria est tenacissima. Ne quod discendum, sero discere incipiant. *Quartò ex Hieronymo*, vt in epistola ad Lætam de institutione filiæ, adhuc tenera Psalmis imbuebatur, & quotidie de scriptura reddat pensum. *Quintò*, quia si in ea ætate alijs actibus, & disciplinis applicantur, optabilius in ista, vt postea sine difficultate ascenderent ad maiora. Probatur *secunda pars*, quòd *oporteat quam citissimè in adultiori ætate.* Nam præstat serò, quàm nunquā. Secundò, quia sic Ecclesiæ Doctores solemnes fecisse Ambros. August. & constat, & essent sapientiores, si inchoassent ab incunabulis, sed vigilijs redemerunt tempus. Confirmatur, nam illis initijs non sunt incapaces in pueritia, licet requiratur maior capacitas ad maiora, quæ requirunt maturiorem, & adultiorem ætatem, & quietius ingenium, & maturius iudicium.

Secunda conclusio, *sunt valde vtiles prædictæ disciplinæ, & omnium Theologia scholastica vtilior ante studium sacræ Scripturæ.* Primò, quia sine illorum ope plura intelligi perfectè nequeunt. Et illæ disciplinæ plurimum iuuant, propter significationē verborū, rerum significatarum cognationem, affinitatem, &c. sicut iuuant naturalia ad supernaturalia: litteræ naturales aptiorē reddunt naturā ad supernaturalē istam disciplinam, saltim quatenus remouēt impedimēta, imbellis illis instructam naturā presidijs, minus difficile percipere. sed de nostra Theologia scholastica iuuare citra dubium. Vt aperte Basil. tr. ad nepotes. Sicut pannus albus solet intingi aliquo præambulo colore, vt aptius imprimatur perfectior, ita iudicandū antediuina sciētiā permittēdas dis-

ciplinas humanas, idemq; probat, non solùm quòd factis, sed etiam scriptis suis id adhortantur, qui addiscerunt, & addiscendas docent. Basil. Aug. Cassiodorus, & alij innumeri apud authores, præcipuè Serar. hic cap. 28. quæst. 8. Antecedens autem satis constat à Theologia Scholastica, nam sine illa, nec assequi Mysteria Trinitatis, Incarnationis, Sacramentorũ in sacra Scriptura assertorum, nec defendi ab hæreticorum cauillationibus, & calumnijs. *Et de peritia* linguarum, quis dubitet si sine illa retundi, non posse argumenta infidelium, & Iudęorum ex originalibus desumpta, & iuuare supra modum ad intelligendos legitimos sensus. Iuxta dicta disp. 8. de versionibus dubio 8. Deinde nam in fontibus Hebræo, & Græco est Thesaurus limpidissimus, ditissimus, qui virum Theologum potest locupletem facere. Et ita licet non sit simpliciter necessarium, est ita valde perutile, quòd iuxta Doctores nemo potest perfectè dici Theologus, qui nõ fuerit saltim mediocriter instructus. Vltimò, nam idem probant Academiæ Christianæ, quatenus in illis docentur tales discipli næ naturales, & præmittitur philo sophia ad Theologiam Scholasticam, & ad studium sacræ Scripturæ, & in illa perfici cursus ante gradum Doctoratus. Et in Trident. sess. 6. c. 1. honores, & præmia promittuntur illis vacantib⁹.

Arguitur primò pro oppositã parte, quatenus *damnat siue in harũ disciplinarũ naturaliũ philosophiæ &c.* ex ad Colosens. 2 *videte ne quis vos se ducat per philosophiã, &c.* quasi à fidei veritate potius abducat, quam præbeat, aut præsidium conferat. Secundò, *ex Patribus*, Chrisost. ad 1. Corint. homil 4. dum dicit ad Euangelium nil prodesse Philosophiam, aut illius obesse ignorantiam. Et alibi philosophiã errorum matrem, & impeditricẽ cognitionis diuinarum rerum. Cassian. collat. 14. cap. 12. *Quòd qui didicit poetas, & alios exoticos debeat dedisce re, si vellit fœliciter proce dere in sacris litteris addiscendis.* Et Hieronym. epist. ad Eustbochium de custodia virginitatis narrat, *in tribunali Dei sibi dictum Ciceronianum esse, non Christianum, & acerrimè flagellatum, cum graui dolore, & non fuisse somnij imaginem, quia post somnium sensit plagam in scapulis.* Tertiò, *ex Apostolicis cõstitutionib⁹*, quòd non sit vacandum prophanis, quia solent à fide abducere: & quòd Scriptura non egeat mendicare à prophanis, sed in illa contineatur omnis doctrina. Vltimò ex Rabbi Azaria, qui lib. 3. Meorhenaij c. 2. ex Thalmudico tt. refert, dictũ Rabi Ismaeli interroganti an post Bibliæ studiũ discere posset sapiẽtiam Græcam à filio Demæ, illud Iosuæ 1. *Non recedet volumen legis huius ab ore tuo, sed meditaberis in eo diebus, ac noctibus. Vade, & quære horam, quæ non sit ex die, aut ex nocte,*

&

& in ea illam discere. Quod perinde fuit, ac dixisse, nunquam. Quia nulla est, quæ non sit pars diei, aut noctis.

Respondetur *ad primum*, id vetitum in initio religionis Christianæ, quia incipientibus facilis erat ex lectione gentilium, & sophismatibus subire periculum subuersionis. *Ad secundùm loqui* de imperitis quibus quæ ad fidem, & vitam satis. Secus de cultioribus, qui ex philosophia ad illam sunt ascensuri ad alios. In male vtentibus hæreticis, philosophiã esse errorum matrẽ, secus de illa secũdũ se. *Ad illud Cassiani dico*, debere dediscere, si impediant, & obstent, si verò non, aliter. *Ad illud Hieronymi dico*, quòd ipse in apologia secunda aduersus Rufinum diserte somnium, ac deliramentum appellat, non veram historiam, sed narrauit somnium. Constat verò, quòd sopor nõ fuit vanum somnium. Intelligi potest quòd nõ fuit ordinarium, & vsitatum, sed inusitatum, & efficax, quod valuit timorem, & terrorẽ incutere. Sed dato quòd tunc fuerit in ea opinione, postea tamen re exactius examinata, dixit solùm fuisse somnium. Illudautem de plagis, & liuore scapularum post somnium, ipse videre non potuit. Retulit exvi dictę delusionis, ex macilẽtissimo corpore, aut alijs in vigilia à se flagellato. Aut ita apparuisse ex decubitu in duro pauimento Sed dato quòd opinio opposita esset magis probabilis, dico, nõ ita flagellatũ, quia castigabilis esset ex lectio Ciceronis & aliorũ gentilium, sed quia modũ excessit, vel quia fastideret sermonem minus cultum scripturæ, vel quia vacãti Deo in solitudine alia esset vtilior, & honestior lectio. *Ad tertium dicendum*, sicut ad primum, id dictum propter periculum incipientium paruulorũ subuersionis, non quia illæ non possint inseruire, & ancillari sacris. *Ad vltimũ*, ita quosdam sentire, & facere indeos, cum grauis sua ingenia. (Nec mirum si male affecti, nam vt apte Greg. Nazian. lib. rationa veræ Theologiæ. Fit vt *qui linguam absinthio habẽt infectam, quidquid ediderunt absinthium sapiat.* Cuius oppositæ sciẽtia præpararet viam ad illa. Dictum tamẽ ita meditandũ in libro legis diebus, ac noctibus, non physicè, sed moraliter quantum cuique statui commodum. Quòd verò prohibita illorũ lectio intelligendum gratia capiendi maiorem illustrationem, & meliorem doctrinam. Nec veritas ex his quàm ex illis potius eruenda indicetur. Qui ergo perfectior vellit euadere præcultus sit his disciplinis, non præferendo, aut equiparẽdo, sed vtendo illis, quatenus ancillari, possunt diuinis, modo, & sine honesto. In obsequium Saræ subijciatur Agar, non enim decet

nauiganti ad portum salutis, detineri nimium, cantilenis Sirenarum.

DVBIVM III.

Quid in ſacris Bibliȳs primò legendum? & an ſit bonum adiſcere memoriter Biblia ſacra?

PRimà concluſio, *licet in Chriſtiana inſtitutione prius incipiendum à libri noui teſtamenti, inſtructo à veteri incipiendum.* Et optimus erit ordo, qui diſpoſitus eſt in Biblijs: à Geneſi incipiendo peruenire ad ſequentes. Ratio, quia in diſciplinis addiſcendis ordinatè à Philoſophia ad Medicinam, à Metaphyſica ad Theologiam, à Theologia Scolaſtica ad ad Expoſitiuam. Eſt enim ſuus ordo diſcendorum, in quauis arte. Et in ſalutis conualeſcentia dictat medicina, quæ eſcæ dilicatiores prius ſumi debeant, ad reficiendas vires, ne ſthomachum onus plurium egrè ferat, & calor ſuffocetur voracitate, ergo ſimiliter in iſta noſtra, ſed in Geneſi refertur exordium mundi, creatio rerũ omniũ, à quo initiũ cæterorũ ergo. Addo, ordo, nec ineptus, nec inutilis erit, alternare ex vtro que teſtamẽto mane, & veſpere, ſeptimana, & ſeptimana. Tũ quia varietas faſtidiũ tẽperat, tum quia mira cõcordia, & conſonantia inter vtrumque teſtamentum iucundius percipitur, & tenetur.

Secunda concluſio, *Optimum eſt memoriter ediſcere Biblia ſacra, ſiue in primo gradu integra, ſiue in ſecundò ſelectiora, ſiue in tertiò, & infimo, quoad partes aliquas, & auditis aliȳs nouerint, in quo teſtamento, aut libro ſint collocata.* Ratio, nam in nullo alio vtilius, & honeſtius poteſt verſari memoria, quam in oraculis diuinis, & ſacris Scripturis capeſendis excoli, vt creſcat, iterare vt radicetur, & firmetur. Vt ſicut Iulius lib. 6. epiſt. lepta ſuauiſsimus ediſcat Heſiodum, &c. pro Heſiodo Moyſem, Dauidem, Paulum, &c. & volumen integrum Scripturæ ediſcat Theologus ſtudioſus. Confirmatur, nam qui ita ediſcunt, dicant, & conſecrant ſuam memoriam, & exercitium Deo: & aptiores redduntur ad varia munia, docendi, arguendi, concionandi ad gloriam Dei. Et ſibi conciliant authoritatem, & repellunt obiectiones ignominioſas hæreticorum, quòd Chriſtiani non habent in promptu Scripturas. Imò & catholicorum obiurgationes contra eos, qui quoties opus habent ſupellectili, è vicinia quærunt mutuata. Deinde ad imittandum quoſdam PP. antiquos, quibus ita in promptu, vt audito verbo proſequantur ſequentia memoriter, quod & Hæreticis aliquibus, & Iudæis non ſemel contingit. Quod non pudeat, nobis patribus emulari Eccleſiæ pro viribus, qui

Theo-

Theologicò munere sum⁹ adscripti, vt nomen tueri possit, nisi excusset infirmitas, aut ætas.

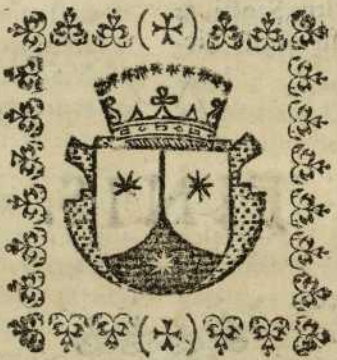
DVBIVM IV. ET VLT.

An in sacris Scripturis sint aliqua prætermittenda, tanquam leuis ponderis, parua, & inutilia?

CONclusio asserit, quòd *absolute in sacra Scriptura nil prætermittendum, tanquã leue, paruum, aut inutile: licet quædã sint, quæ respectu aliorum possunt dici minora, & minus vtilia.* Probatur primum ex PP. Origine, Anastasio, Nizeno, Chrysostomo, Casiodoro, & alijs. Ratio illorum est, quia Scripturę sunt apothecæ Spiritus Sancti, & loquutio, in qua nil otiosè dictum. Et quia ex quouis hauriri possunt sensus, & doctrina salutaris. Probatur secundò, quòd respectu aliorum, quædam dici minora, & minus vtilia ex Christo, qui quædam vocauit iota, aut apex, in quibus non diu immorandum, occupatis studio maiorum, sed illis præteritis ad altiora, & vtiliora gradiendum. Secundò, nam in Scriptura sunt Historiæ, quæ comparatione facta ad res alias, mirabiliores, & vtiliores ad fidem mysteriorum, & doctrinam morum, dici possunt minoris ponderis, & vtilitatis. O vtinam ista ars, & methodus vobis vtilitatem, Deo, & Dei paræ afferat gloriam.

FINIS.

SVB CORRECTIONE
Sanctæ Matris
Ecclesiæ.



LECTVRA

DE

VITA, ET GESTIS SAMSONIS;

PER

MAG. Fr. DIDACVM DE BENAVIDES
Madridenſem, Ordinis Carmelitarum,
Prouinciæ Caſtellæ.

IN ACADEMIA COMPLVTENSI,
Sacræ Scripturæ Primarium, Publicum,
Interpretem.

Ad caput 13. 14. 15. & 16. Libri Iudicum.

PRÆLOQVIVM.

ARTE, & methodo exponendi ſacram Scripturam iam inſtructis, placuit, præponere veſtram vtilitatem, ad concluſiones quodlibeticas, aptius parandas, magiſterio Doctorali, exponendi librũ Scripturæ à principio in finem. Quod egrè ferret veſtra indigentia, & curſus brebitas, & materiæ prolixitas. Nam ex ſelectoribus Scripturæ (more illorum, qui vitas, & geſta Patriarcharum in lucem ediderunt) vitas Heroum, & Iudicum famoſiorum, operæ pretiũ duxi proponendum. Ex quibus ea produco vitam, & geſta, optimi Herois, Iudicis, Principis, de patria, & lege benemeriti, fortis corpore, & animo; nedũ ad inuadendos hoſtes Dei, & patriæ: ſed ad ſitiendam, vrgendam, inferendamque mortem, ingenti mole, templi oppreſione, vt inimicorũ Dei, patriæ ſimul, vindicem ageret. Et Philiſtinorũ terror, orbis prodigiũ Samſon, gloriam, & famam æternam, geſtis, & morte, ſibi conciliaret. *Operis hæc formula.* Primò exponam textum ad litteram

dubio, stilo scholastico assuetis, nõ cõtentus simplici expositione. Secundò, indigitabo ad mystica, & mores, quantum fas interpreti litterario. Cui digredi ad discursus prædicabiles scelus.

TEXTVS.

Cap. 13 vers. 1. *Filij Israel fuerunt mali in conspectu Domini, qui tradidit eos in manus Philistinorum quadraginta annis.*

AD LITTERAM.

Dub. 1. *A quo initium, duratio, & finis status quadraginariæ seruitutis, & oppressionis Israel à Philistinis? quid in causa? an peccatum idolatriæ?*

PRima conclusio asserit, *incepisse ab anno sexto Besam, vno ante natiuitatem Samsonis, duravit vsque ad 40. finisse in eo simul cum vita Samsonis.* Ita interpretes communiter, licet litigent an sint computandi in serie annorum Iudicum, an seiunctim, primam sentit Cornelius hic, & alij, eo quod concurrunt cum vita Samsonis iudicis, alij aliter.

Probatur conclusio, nam anno 6. Besam, Angelus prænunciauit ortũ Samsonis vers. 5. & dicit *incipiet liberare, &c.* oritur statim immediatè anno sequenti, instituitur iudex, anno 19. ætatis: gessit officium iudicis in Israel 20. in quo completi sunt 39. ætatis Samsonis, & 40. seruitutis, quæ incepit vno, ante natiuitatem illius, coincidit vltimus seruitutis cum vltimo vitæ Samsonis. Qui viuens cæsit plurimos Philisteos, & excusit iugum seruitutis, & oppressionis, qua vexabant populum Israeliticum, & vna ruina domus, se, Principes, & 3000. Philistæos incumbentes oppressit, ingenti mole templi, qua se, & omnes illos sepeliuit. Vt occiderit plures moriens, quam viuens glorioßè occiderat.

Arguitur contra, nam Philistęi tempore iudicis succeßoris. scilicet, Heli iterum inuaserunt in Israel, molestarunt, & vexarunt. Ergo non est finita seruitus, & oppressio illo anno 40. Respondetur, quòd sicut incussio sine victoria, imò cum ignominiosa excusatione, non est tam vincere, quàm vinci, ita vexatio leuis incussa, cum repulsa valida, non censeri debet seruitus, quæ dicit impossibilem, aut difficilem excussionem.

Arguitur secundò ex vers. 5. *ipse incipiet liberare Israel de manu Philistinorum.* Ergo non abstulit iugum adhuc in morte. Respondetur, quòd ibi vires infregit eorum, vt non plus valere possent in victoriam.

Secunda conclusio asserit, *peccatum idolatriæ Israelitarum fuisse in*

in causa, vt Deus puniret per manus Philisteorum 40. annis.

Ratio, nam hic dicitur quòd filij Israel rursus *fecerunt malum in conspectu Domini*, quod refertur ad id, quod cap. 10. præcedenti dicitur, quòd *seruierunt idolis Baalim, & Astaroth*, &c.

AD MORES

QVòd *Deus diu dissimulat iniurias suas, & suorum, sed subitò, inopinatò acerbè corripit.* Inseruire potest ad contionem de iuditio Dominica 1. aduent. Fer. 2. post 1. quadr.

Quòd *Deus dissimulat ab initio celera, sed vna die punit iudicio statuta.*

Quòd *dissimulat calumnias contra discipulos quare, &c.* Ad Fer. 4. post 3. *sed statim acerbè excutit, quare, & vos* &c. Et ad Fer. 5. post. 2. Auari diuitis, quem dissimulauit delicato viso indui, indurari contra Lazarum, sed sepultus est in inferno.

Quòd *peccatum idolatriæ pungit valde Deum in maiestate, & honore, cum ita acriter puniat hostili pugna 40. annorum.* Ad Fer. 2. post 4. Vbi *fecit flagellum, & eiecit de templo, irreuerentia vendentes oues, & boues: domus mea domus orationis*, &c.

Quòd *ordinaria scelera contra virtutes Deus paterne corrigit, crimen autem læsæ maiestatis seuerè. Exitiali capitali morte, punit.*

Quòd *bella, quibus respublica* (& nostra Hispania) *funditus euertuntur in pœnam, & vindictam infidelitatis occultæ à Deo permittuntur.* Pro communi plur. Mart. *Cum audieritis prælia surget gens contra gentem, & regnum aduersus regnum, &c.* Et applicari potest adcuiusuis peccati punitionem.

Placuit in vestibulo excitata capita discursuum applicare Euãgelijs, vt tibi sit ratio applicandi cætera, ipsa materiarum concordia, & consonantia pro pulpitis. Nam Cathedræ solùm indigitare fas. Concordiam fige regulam, & erit applicatio facilis.

TEXTVS.

Vers. 2. *Erat vir iste de stirpe Dan nomine Manuè habens vxorem sterilem.*

AD LITTERAM

Dub. 2. *An Pater Samsonis nomine fuerit Manue, & Patria ac stirpe Danita?*

COnclusio est, *affirmatiua.* Serarius, Cornelius, & alij hic. Probatur ex textu, Tribus Dan confinis, & propinquior erat terræ Philistinorum, & ita facile sentiebat experimento inuasiones, & rapinas illorum. Deus tamen, qui dum mulctam vrget, de pietate cogitat: Israelis flagellati, non oblitus,

de-

decernit conceptionem Samsonis, iudicis, & vindicis Israel. De quo Genes. 49. *Fiat Dan coluber in via, cerastes in semita, mordens vngulam equi, vt cadat ascensor eius retro, &c.* Ex Patre Manuè ob insignem pietatem, & religionem illius, & ex matre sterili ad insignem prolem de more, quo decreti sunt insignes viri de parente sterili, Isaac, Ioseph, Samuel, Ioannes Baptista. Qui etiam fuere figura, vmbra, & typus, Christi de virgine nascituri.

AD MORES.

Quòd *viri magni oriri solent ex parentibus sterilibus raro, vt Baptista, quia futuri sunt filij insignes, famosi, & rari, siue inter æquales, siue inæquales, vt Samson singularis, & famossus in bello.*

Quòd *Deus vult nasci viros famossos ex sterilibus, vt non naturæ, sed gratiæ tribuatur natiuitas orti.*

Quòd *Dei omnipotentia, ita habilis est, vt æquè attingat possibilia, & impossibilia naturæ. Prolem ex sterilitate, & fœcunditate, vt eliciat ex infirmitate salutem, ex morte vitam.*

TEXTVS.

Vers. 3. *Angelus apparuit ei, & dixit ad eam. Caue, ne bibas vinum, nec siceram, &c.*

Vers. 5. *Concipies, & paries filium, cuius non tanget caput nouacula, erit enim Nazaræus ab infantia sua, & ex matris vtero, & ipse incipiet liberare Israel de manu Philistinorum.*

AD LITTERAM.

Dub. 3. *Quæ sint structenda ex littera?*

COnclusio asserit, *quinque præcipuè.* Primùm, *quod Angelus apparuit matri Samsonis, & prænuntiauit conceptionem, virtutem, & libertatem Israel per Samsonem,* & professionem Nazaræatus, ab vtero matris dicatum, & per vitam integram. Secundùm *indicitur institutum Nazaræatus*, quod consistebat in intonsa coma, & capillitio irrasso voluntarie, abstinentia à vino, sicera, & omni, quod inebriare potest, & alijs abstinentijs, & cæremonijs. Tertiùm, *quòd* quamuis præcauetur mater per Angeli præceptum abstinentia à vino, inebriante quouis liquore, *mater non fuit Nazaræa ex professione, & voto*, fuit tamen Samson, nam cum ille fuerit Nazareus in vtero, & per vitam, quantum fas fuit in vtero, ante vsum rationis per abstinentiam matris, ne vtero, & lactatione suggeret, aut gustaret haustu suo prohibita per leges. Verbum tamen illud *Caue* continet, & indicat præceptum abstinentiæ præcisse, non, vt inductæ ex lege Nazaræatus, aut voto, quo solus Samson fuit obligatus. Quartùm

tum, *verum prænuntiari, dum dicitur non tanget nouacula caput eius.* Nam verbum est rei faciendæ præceptum, non oraculum rei futuræ, docet non tanget ex instituto, & professione, quam violauit, dum voluntarie aperuit Dalilæ secretum capilli, cui anexa erat ex instituto Dei vis, & fortitudo corporalis. Licet dormienti sit rasa coma, voluntariè tamen in causa. Et ita vel iubet Angelus parentibus, & Samsoni, ne radant comam, sed conseruet integram, & intonsam. Et ita verbum illud est mandatum rei faciendæ, non oraculum rei futuræ, alias illud esset mendax, cum Samsoni sit tonsa coma dormienti. Vltimùm, quòd *cum dicitur erit enim Nazaræus, non indicatur fuisse sanctificatum in vtero matris*, vt quidam existimarunt. Nam cum iubetur esse Nazaræus, vt in vtero seruet leges Nazaræatus, quantum fas est, vt non sugat in sanguine matris sucum ex vino, & sicera, ab illa haustum: non sonat sanctificatronem in vtero, sed segregationem, & separationem à cæteris, qui non profitebantur institutum Nazaræorum, quo in lege veteri à vulgo separabantur, sicut modo religiosi. Et ita fuit religiosus illius testamenti, & typus Christi, & religiosorum noui testamenti, vt ostendit Plato tractatu 2. cap. 19. de statu religioso & Sanctus Hieronymus. Dum dicit ad Lætam. Domino reddidisti Primogenitum, &c. sic ortus est Samson, Samuel, &c.

AD MORES.

Quòd *Deus pluribus sibi dilectis concesserit sanctificationem in vtero, soli virgini Deiparæ in primo instanti conceptionis immunitatem.* Pro festo conceptionis.

Quòd *in lege veteri fuit status verè religiosus, & non solùm figurali ratione.* Pro Dominica 3. aduent. *Misserunt ad Ioannem, qui fuit verè religiosus Eliæ professor.*

Quòd *infantes sint in florenti iuuentute Deo, & statui religioso dicandi.* Pro festo præsentationis Mariæ, *quæ ab infantia dicata est templo cum virginibus.*

Quòd *abstinendum à vino intemperato, præsertim Deo dicatis Ecclesiasticis, & religiosis.* Pro nuptijs *in Chanà Galilææ, defeciente vino adhuc in conuiuio, vbi adfuit religiosa persona Christi.* Pro Dominica 1. post octauam Epiphaniæ, & pro Fer. 4. post 3. *Cum panem manducant. Vbi non obijcitur sicut Christo, quòd esset potator vini.* His, & similibus inseruire potest.

TEXTVS.

Ipse incipiet liberare Israel de manu Philistinorum.

AD

AD LITTERAM.

Dub. 4. *Quid in causa quod dicatus sit Deo instituto Nazaræatus, & abstinentijs à vino, & alijs liberaturus Israel de manu Philistinorum?*

CONclusio, *quia voluit Deus, quasi per suum ministrum sibi dicatum, & segregatum operari tam insigne facinus liberandi Israel.* Nam fuit typus Christi, de quo scriptū est. *Quoniam Nazaræus vocabitur.* An autem solùm incæperit, & inchoauerit libertatem, an etiã perfecerit, *conclusio asserit* inchoasse, & pluribus prælijs perfecisse, & in morte ruina consumasse, non tamen vltimate, vt elapsis diebus, non iterum viribus reassumptis, non inuaserint, sed quoniam, non ita valida copia, & brachio forti, dicitur liberasse. Iuxta supra dub. 4.

AD MORES.

QVòd *Deus voluit in figuris veteris testamenti exercere ministeria officij Redemptoris. Quo glorioſsè functurus erat in nouo testamento.*

Quòd *Deus vult, quòd quilibet impleat ita exacte leges sui status, quòd si fas sit anticipetur legis obseruatio ad initium vitæ. Displicet differri ad senectutem.* Pro festo purificationis in quã virgo impleuit legem Moysis statim, ac impleti sunt dies purificationis, immò ante obligationem legis, quæ numquam obstrinxit Mariam. Item pro festo Circumcisionis cuius legem obseruauit Christus, cũ impleti sunt dies octo. Item pro festo præsentationis Mariæ, cum iusans vix inchoauerat vitam, cum ingressu in templum sumit inſtitutũ perfectionis peragendæ, sine dilatione ad senectutem.

Quòd *licet nutrire comam intonsam ad cultum religiosum, non ad lasciuiam, iuxta morem, & corruptelam huius temporis, qua viri, effeminati reduntur, Samsonatu lasciuo.* Pro Fer. 4. pro Fer. 5. post 5. Magdalenæ capilis suis tergebat, & vnguẽto vngebat. Ad exẽplũ applicatorum, quilibet poterit applicare cæteros intitulatos ad mores. Nam Cathedræ, satis dedisse formulam.

TEXTVS.

Vers. 6, *Vir Dei venit ad me.*

AD LITTERAM.

Dub. 5. *An vir iste fuerit Prophetaꝰ vel Angelus?*

CONclusio asserit, quòd *fuit Angelus Michael, nuntians matri Samsonis conceptionem, & ortum. Ipsa tamen appellauit virum, quia forte apparuit sub viri-*

virili forma, & putabat Prophetam, & ita retulit viro suo Manuè. Ratio nam ex textu constat vers. 3. esse Angelum Domini, quòd verò sit Michael, licet ipse noluerit aperire: sed dixerit nomen esse inefabile: tamen ita sentiunt interpretes, & est congruentia, quòd sicut Gabriel primò anuntiauit Virgini incarnationem, quippè, quæ erat virgo paritura, deindè Iosepho coniugi, ita iste Michael, primò, matri Samsonis, deindè viro. Secundò, quia olim erat Protector Sinagogæ Hebræorum, sicut nunc Ecclesiæ Christianorum, nec mirum adesse Sinagogæ, cuius Samsòn præfuit iudex.

AD LITTERAM.

Dub. 6. *An vir iste fuerit ipse Deus immediate apparens? vel solùm repræsentatiuè ministerio Angeli?*

RAtio *dubitandi.* Inquisitus de nomine, respondet vers. 18. quòd nomen eius est mirabile, ac si dixisset ineffabile. Quòd opinari videtur August. hic à quæst. 52. Apud Cornelium à lapide. Angelum istum opinatur dictum pelè, quòd mirabile significat, & circa Christum. Hic enim est *magni consilij Angelus*, & iuxta Isaiam 9. *Admirabilis.* Secundò, nam inflama ascendit in cœlum victima sacrificij, indicans ipsum esse victimam, & sacrificium, & non accepturum vllum aliud. Tertiò, nam apparitiones veteris testamenti communiter dicunt, quòd apparuit Deus, quod in rigore accipiendum, & non confugiendum ad figuratos sensus.

Conclusio asserit, quòd *iste vir non fuit Deus immediatè apparens, nisi repræsentatiuè in Angelo legato, qui typice repræsentauit Christum.* Ita interpretes, Serarius, Cornelius à lapide, & alij. Ratio, nam ex textu vers. 3. constat esse Angelum in substantia. Secundò, si esset consentiret sibi offerri illud sacrificium, & nõ fuit passus, offerri cibos, quia illis nõ alebatur, nec illud sacrificium ignitum educto igne ex silice, sed in flama illius disparuit, ascẽdens in cœlum, & vt minister defferens Deo, Apocalypsis *vide ne feceris*, non est passus adorari. Vltimò ex communi sententia, quæ asserit apparitiones veteris testamenti exercuisse Deum, non immediatè perse ipsum, sed ministerio Angelorum Tiræus de apparition. tom. 1. latè.

Respondetur ad rationes dubitandi. Ad 1. Cornelius à lapide postquam statuit nomen fuisse, non pelè, nisi cum Iod, vt dicatur peli, vt significetur nomen Christ-

Christi Iesu, cuius prima littera est Iod, quæ præfigurabat, quærit, cur ait Angelus nomen esse mirabile? & asserit, non quia ineffabile, vt Dei, sed mirabile ob plura. Primò, quia sunt puri spiritus, & solùm habent nomina spiritualia, incognita hominibus, & ideo admirabilia, non vocalia, & corporalia cognita. Et ita dum apparent assumunt nomina, Michael, Gabriel, &c. vt innotescant hominibus, & inuocari possint. Secundò, quia nomen significat naturam, & mirabiles dotes gratiæ, quæ sunt supra captum hominis. Tertiò nomen fuit admirabile, quoad miram efficacitatem nuntiandi admirabilia, vt conceptio sterilis, quòd esset futurus Nazaræus, iudex Israelis, valens fortitudine ad hæroica. Similiter, quia miraculosè elicuit ignem ex petra, quo sacrificatus est hædus à Manuè, quòd illæsus ascendit in cœlum, in flama illius: quòd euanuerit in elementa resolutum corpus assumptum. Admiranda in conspecta patris, & matris Samsonis. Denique nomen illius fuit admirabile repræsentatione, tum quia exhibebat Deum, & gerebat legatus sui Principis personam, ratione cuius in rigore dixit, quòd nomen illius esset mirabile, significans Deitatem, mirabilem virtutem, potentiam, & gloriam, &c. Psalm. 8. *Quam admirabile est nomen tuum in vniuersa terra*, vt superet intuitum hominum, & Angelorum, tum etiam quia figurabat Christum mirabilem, incarnatione ex Spiritu Sancto, natiuitate ex virgine, vita miraculosa, sanctitate infinita, doctrina rara, morte, resurrectione, ascensione, missione Spiritus Sancti ignitis linguis, &c. Iuxta Isaiam 9. *Admirabilis consiliarius*, &c. Ad secundam aptius dici, quòd recusauit acceptare sacrificium, consulens offerri Deo, non sibi, quia erat Angelus Dei. Nisi velis, non acceptasse præter se victimam, quoniam typicè erat Christus. Ad tertiam dicendum, apparitiones illas factas ministerio Angelorum, per quos se Deus exhibebat solùm, non immediate, & licet dicatur apparuit Deus, intelligi debet mediatè per Angelos. Et confugitur ex causa rationabili, quia erat olim Deus absconditus, & sub velaminibus, sub igne, & alijs solùm patiebatur se videri.

AD MORES

Quòd *Angelorum custodia vtilitates, & protectiones innumeras offert hominibus.* Pro festo Angeli custodis, & Sancti Michaelis, & pro festo Sancti cuiuslibet patroni Regni, ciuitatis, aut Ecclesiæ.

Quòd *non sunt admittendæ ve-*

ne-

nerationes, & plausus supra dignitatem, & merita, sed moderatè pro exigentia dignitatis, & meritorum, repulsis adulationibus. Pro 4. post 1. Magister volumus signum videre. Pro post Trin. Magister scimus, quia verax est, & viam Dei in veritate doces, licet tributum dare Cæsari an non? Et pro festo Sancti Iacobi accessit mater filiorum Zebedęi adorans, &c.

Quòd *Deus olim se ostendebat magestuosè, sub velamentis maiestatis, Angelis, Seraphinis, tronis, triumphali curru: nunc verò in humilibus, in præsepio, nuditate, paniculis, quibus ostendit maiestatis maiores splendores.* Pro natiuitate Christi, qui ostendit diuinitatem altissimam in paruitate infantilis corporis, præsepio, paniculis, palleis.

TEXTVS.

Vers. 22. *Moriemur quia vidimus Deum.*

AD LITTERAM.

Dub. 7. *An inepta fuerit opinio vulgi, existimantis visionem Dei anexam mortem?*

COnclusio est *affirmatiua.* Serarius, Cornelius, & alij ad istum vers. 22. Ratio, quòd olim conceperint istum timorem, & opinionem innanem moriturum, qui viderit Deum, aut Angelum, ex regula à Iudæis concepta, constat, quæ, si non est orta, est ducta ex illo Exodi 32. *Non videbit me homo, & viuet.* Iuxta August. hic quæst. 54. Hic timor, & innanis opinio fuit concepta, quod Angeli solent apparere morituris, vel quòd citent ad tribunal diuinum, vel quia olim occisa sunt ab Angelis primogenita in Egypto, & militum milliaria exercitus Senacherib, in numeri Sodomitæ, & alia innumera homicidia sint perpetrati, vt ab Angelo, qui apparuit in columna nubis, & ignis, exercitus, & currus Pharaonis, vel quia istę apparitiones spirituum immutationes insolitas, & turbationes causant, vel quia cum apparent familiares Deo, videntur velle extrahere animas exutas corpore ad Deum. Vt Genes. 32. Vt pro miro, & raro dixerit Iacob, *vidi Dominum facie ad faciem, & salua facta est anima mea.* Quòd ista opinio, & timor sit innanis probatur ex innumeris visionibus Dei, & Angelorum, Abrahæ factis, Iacob, Moysi, Gedeoni, Iosue, & alijs, qui viderunt Angelos, & mortui statim nō sunt, qui contra opinionē innanem vulgi præueniebāt, ne timerent mori, assecurando vitam, vt Angelus Gedeoni, ne timeas non morieris.

(***)

AD

AD MORES.

Quòd *Deus est origo fontalis vitæ, & ineptum à vita timere mortem, nisi ex indiscreta culpa.* Pro Feria 6. post 3. vbi Christus dedit vitam Lazaro, sublatis impedimentis lapidis, & ligaturis mortis, Sudario, &c. Item pro festo Pentecostes, Spiritus Sancti viuificantis collegium Apostolorum, sublatis ignorantijs, infundens scientiam, dotes, &c.

Quòd *apparitiones Angelorum, quia inusitatæ turbant, sed Iustis afferunt commoda, peccatoribus supplicia.* Pro festis Virginis vbi legitur *ne timeas Maria.* Item pro natiuitate Ioannis *pro eo, quòd non credidisti verbis meis,* eris tacens, &c.

TEXTVS.

Vers. 24. *Vocauit nomen eius Samson*

AD LITTERAM.

Dub. 8. *An parentibus sit potestas ad imponennda nomina filijs, & an liceat immutari inspirata à Deo?*

Conclusio asserit, *in parentibus esse potestatem patriam ad imponenda nomina suis pignoribus filijs, qui illicite tamen imponerent, alia, præter inspirata à Deo.* Probari poterat varijs ex lecturis, nobis pauca. Adam scientia infusa, qua optime caluit naturas, & proprietates animalium, vt præsidens, & Dominus in signum potestatis imposuit nomina, iuxta naturas, cuntis animalibus terrestribus, & volatilibus saltim (quidquid de aquatilibus) ad eum, vt Imperatorem, & Principem adductis, ministerio Angelorum. Iuxta Genes. 2. *Adduxit ea ad Adam, vt videret, quid vocaret ea,* &c. *Omne, quod vocauit Adam, ipsum est nomen eius.* His agregari possent innumera scripturæ testimonia, quibus dicitur parentes sic, vel sic in signum patriæ potestatis ad eum modum, nomine suo, aut stirpis auitæ, vt signo pecudes inuruntur, aut supellectilia stemmatibus exarantur. Secunda pars inde probatur, nam cum Deus sit Dominus vniuersalis omnium, omni scientia instructus, vt iuxta naturam, & operationes apta nomina imponat: vtens iure supremo dominij, parentes, quibus committitur impositio nominis, de cœlo lapsi, nequeunt, sine vsurpatione iuris superioris aliud exequi. Quo circa Ambrosius ad illud Lucæ *inuebant patri eius, quem vellet vocari eum,* cum lingua non

non posset prohibere appellantes infantem Baptistam nomine patris sui Zachariam, postulato pugillari scripsit calamo, nequaquam, sed vocabitur Ioannes, ac si diceret nos non possumus nomen imponere ei, *qui à Deo nomen accepit, habet vocabulum* (inquit) *non quod eligimus, sed quòd agnouimus reuelatum.* Similiter Mariæ indicitur nomen Christi, & vocabis nomen eius Iesum, ac si diceret. Redemptori congruit nomen Iesus, *ipse enim saluum faciet populum suum à peccatis eorum*, sic in præsenti mater Samsonis, accepit diuinum oraculum, ne patria potestate imponeret nomen, sed à Deo inspiratum. Iuxta Chrisost. August. & alios PP. & ita *vocabit nomen eius Samson*, id est sol paruus, diruens, & vastans Philistæos. Samson enim idem est in hebræo, quòd sol lætitiæ Israelitis in tenebris luctus, & Philistino rum oppræsione. Hic fuit typus Christi, qui est sol iustitiæ. Iuxta Lucę 1. *illuminare his, qui intenebris, & in vmbra mortis sedent.* Malachiæ. 4. *Orietur vobis sol iustitiæ, &c.*

AD MORES.

Quòd *educatio filiorum debet disponi à parentibus, iuxta præscriptum præcepti, & legis diuinæ, non inclinationem paruulorum.*

Quòd *nomen Christiani debet respondere operibus, & opera instituto Christiano.*

Quòd *vult Deus vnumquodque nominari, & tractari iuxta id, quòd in se est, non iuxta id, quòd quilibet pro arbitrio suæ voluntatis inclinatur.*

TEXTVS.

Ex cap. 14. vers. 1. *Descendit Samson in Thamatha. Videns ibi mulierem de filiabus Philistiim nuntiauit patri, &c. quæso, vt mihi accipiatis vxorem.*

AD LITTERAM.

Dub. 9. *An Samson peccauerit petendo à parentibus vxorem ex Philistinis, & non ex suo populo, & an in ea quæsierit occasionem inuadendi Philisteos?*

PRima *sententia* asserit, peccasse contra legem Deutoron. 6. & Exodi. 34. prohibentem Israelitis conuuia cum Chananæis, & Palestinis, quales erãt Philistęi. Secundò, nam motiuum legis erat vitari pericula seductionis, ne blãditijs feminarum, & prauo exemplo idolatrarum, induceretur ad idolatriam, cui periculo se obijciebat Samson in conubio cum filiabus Philistinorum. Tertiò, nam si licuisset etiam hodiè liceret coniu-

gium catholici cum filiabus infidelium, & hæreticorum lutheranorum, Caluiniſtarum.

Prima concluſio, aſſerit, *non peccaſſe contra legem.* Eſt communis interpretum Sararius Cornelius, & alij. Primo, quia id fecit impelente Deo, vt dicitur verſ. 4. quòd res à Domino fieret, & ita diſpenſante in lege ſua. Nam alias iſta cõiugia ſunt periculoſa, & frequenter noxia. Et Apoſtolus 1. Corinth. 6. diſuadet cum infidelibus, & proſequitur Ambroſius Epiſt. 24. Et ipſe Samſon expertus eſt huiuſmodi pericula, & reprobata exemplo Sanctorum. Sancta Iuliana reſpondit diuiti petenti in coniugem: tum matrimonium eſt ſocietas cum inferis. Et Eccleſia irritauit, & dãnuit decreto, impedimenti dirimentis, diſparitatis cultus. Sed arripuit Samſon, tum exdicta cauſa, tum quia erat Chriſti typus, qui deſpondit ſibi Eccleſiam ſponſam gentilem, relictis ſuis Iudæis. Secundò, quia in textu non datur illi vlla reprehenſio ob initum cõiugum. Tertiò, quia in eo quærebat Deus & ille, occaſionem in uadendi Philiſtæos. Nam faciebat hoc dilema, veldant, vel negant petitam Philiſteam, ſi dant tenentur mihi, & meis Hebræis, non inferre bella, vt coniunctis, affinibus ſed ſe exhibere benignos: ſi non præſtent erit litis occaſio ad inuaſionem, ſi non dent, ex negatione oritur ſtatim iniuria, & ocaſio inuadendi, quòd afficiant, me dedecore, repudiando maritum filiabus ſuis. Quod expedit optime S. Ambroſius Epiſt. 24. Qui addidit aliam cauſam honeſtam ducendi vxorem, vt florente, & feruente iuuentute fornicationis periculum vitaret. Quartò, quia Samſon didicit ex Angelo, vt latè probat ex patribus, Serarius hic, & inſinuat textus citatus quòd res fiebat à Deo, incitante, ad quærendam occaſionem inuadendi, & diſplicuit parentibus, quòd ignorarent eſſe à Deo: Deus autem non inducit ad ilicita. Vltimo de habitatione fidelis cum infideli ad inducendum coniugem ad fidem, & periculum inductionis non imminebat fidei firmiſſimæ Samſonis, potius inſtruxit vxorem infidelẽ, & fecit proſelytam.

Reſpondetur ad oppoſita, aut non ligari lege iſtum caſum, ſed potius excipi à Deo. Ad cætera licere ſi incitetur à Deo ob fines honeſtantes, quos ipſe prænouit.

Secunda concluſio aſſerit, *in coniugio petendo quæſiſſe occaſionem inuadendi Philiſtæos ad ad miniſtrandum officium liberatoris ſuorum Hebræorum.* Ita interpretes; & conſtat ex ipſo textu quod dicitur verſ. 4. Quod res à Domino fieret, vt quæreret occaſionem, &c. qua autem ratiane quæreret, conſtat ex

mediato dilemate in probratione tertia, primæ concluſionis, quod ſufficiat inſtaurare ne actum agam.

AD LITTERAM.

Dub. 10. *An requiratur conſenſus parentum ad coniugium filiorum?*

CONcluſio. *Requiritur ad licitum, non ad validum, ſed ſolus coniugum.* Primò, nam filij ſunt ipſa natura ſubiecti parentibus in regimine, preſertim in re graui, & in qua ſcriptura dat præſcripta, & leges ad regimen illorum. Secundò, nam in ſacra ſcriptura illorum mores celebrantur, qui in tali ſubmiſsione dederunt exemplum cœteris optimi moris. Tertiò, ſolet requiri conſenſus eo, quòd filij ex coniugio futuri ſunt heredes, ne ab inuito auo tranſeant. Quartò, nam filij vxor accipitur, & adoptatur, infiliam, ad quod eſt neceſſaria acceptatio parentum. Quintò, nam id fuiſſe ſenſum adhùc gentilium, ſuadent plures hiſtoriæ. Vltimò, nam ita obſeruandum, niſi aliud ſuadeant cauſæ grauiores iuditio prudentis, vt ſi filius infidelium vellet inire coniugium cum femina catholica, quòd inſcio, & inconſulto parente poſſet perficere. Probatur ſecunda pars, nam valide fieret coniugium ſine licentia illicitum, nam plura ſunt illicita, & valida, nam valida eſſet venditio enſis, aut cuiuſuis alterius rei ad malum finem.

Arguitur contra, nam filij ſunt ſui iuris ad ſtatum capeſſendum, vt religioſi, coniugati, &c. quod prætualet patriæ poteſtati. Reſpondetur ad validè fateor, ſecus ad licitè, niſi adſit aliqua cauſa grauis ad aliter faciendum.

AD MORES.

Quòd *fugiendi ſunt aſpectus, & coloquia cum femina eleganti, & venuſta, nam vix Angelica puritas euaſit immunis.*

Quòd *coniugia filiorum ex licentia parentum habent ſibi connexos proſperos fines, illis inuitis infelies exitus.*

Quòd *coniugia inter ſibi ſimiles & æquales nobilitate, & opibus conſerbant vinculum pacis in familia. Diſſimilitudo verò, & inæqualitas alit litres, & diſcordias.*

TEXTVS

Verſ. 5. *apparuit catulus leonis ſæuus, & rugiens.*

Verſ. 6. *Irruit Spiritus Domini in Samſonem ad inuadendum, & occidendum leonem.*

AD LITTERAM.

Dub. II. *An vires Samsonis fuerint à natura? vel à Deo indita, ad excipiendum amplexu leonẽ, & lacerandum?*

CONclusio asserit, *inditas à Deo, & annexas comæ intonsæ.* Ita interpretes, & constat ex textu. Nã cum in hoc primo fortitudinis exemplo descendẽti ad coniugem occurrerit obius leo, catulus fœuus, & rugiens, qui ex iuuentute erat ferotior, & exfame instigante stomacho animosior, & petulantior, inquit textus, quòd irruit Spiritus Domini in Sãsonẽ, quod vertunt 70. insiluit quasi difundens robur, & vires, ad rem arduam, excipiendum brachijs, occidendum, & dilacerandum. Igitur signum est non viribus naturę, sed inditis ab Deo supernaturaliter. Nam vires naturæ non auderent, nec prævalerent ad insigne facinus. Confirmatur, nam nulla arte, & industria vsus est adhoc facinus, quòd præluxit cœteris, non velo euacuauit, quo ex Plinio vires infringi dicuntur, quo vis oculorum, & ardor eneruatur, & pariter vires, sed nihil tale fecit, sed videntem, & oculis scintilantibus excepit brachijs, non armatus, sed in armis: non gladio, aut scoplo ignito globo excusso, sed manibus comprehensum, renitentem, ferociſsimum, & fortisimum animalium dilacerauit. Non ergo viribus naturę, aut industrię, & artis, sed viribus inditis à Deo, quibus infirmitas naturæ euasit validior, fortitudine leonis. Quo gesto inijci potuit opinio, se leonibus fortiorem, & ferotiorem, & animosiorem leonibus, in Philistæos irruiturum. Et re cognita incussus est ingens timor Philistæis, nam quis non timeret fortiorem ex fama leonibus.

AD MORES.

Quòd *qui non quærit, sed excipit occasiones tentationis, erit victor licet inuassor sit leo, Angelus, Deus.*

Quòd *coniugia sunt adeò implicata difficultatibus inaccessibilibus, in superabilibus: quòd qui habet animum agrediendi coniugium debet simul habere ad superandos leones.*

Quòd *vita coniugatorum appareat iucunda, & delectabilis, sed occultat innumeras anxietates, & amaritudines.*

Quòd *cœlibes in præsenti vita carent coniugio amarissimo temporali, sed pro illo substituitur in altera vita delitiosum, & æternum.*

TEXTVS.

Vers. 7. *Et patri, & matri noluit indicare.*

AD LITTERAM.

Dub. 22. *Qua de causa secretum occidendi leonem noluerit reuelare parentibus?*

CONclusio asserit, quòd *quia Dei instinctu, & modestiæ causa, & ne enigma postea proponendum connubialibus anticipata solutione panderetur.* Ob istã rationẽ sibi secretũ reseruare voluit, & nulli aperire, parenti, aut amicissimo. Dedit tamen in eo exemplum imitandum, & laudãdum, ne innani laude suis viribus arrogaret, quod virtute Dei instigante in leonina cæde est excellentiæ.

AD MORES.

Quòd *secreta Dei, non sunt vulgariter manifestanda.*

Quòd *Deo sunt referenda, in eius gloriam, non solùm quæ immediate ab eo sunt gesta, sed etiam, quæ eius ope nostra cooperatione sunt patrata.*

Quòd *fugienda est inanis gloria ex nostris facinoribus intenta. Et quæ ex nobis cum Deo, & quæ ex Deo nobiscum, omnia in gloriam Dei referenda.*

TEXTVS.

Vers. 8. *Et ecce examen apum in ore leonis.*

AD LITTERAM.

Dub. 23. *An in ore solũ insederint? An in corpore? An ibi natura? An aliunde delata ministerio Angelorũ? An fuerint viles, & sordidæ, & mel vile? An generosæ, & mel dulçe?*

CONclusió asserit, *in ore insedisse, circumuolitasse tamẽ per corpus. Secundò non ibi natura, sed aliunde delatas. Non ab homine, sed ministerio Angelorum. Tertiò, fuerunt generosæ, & mel similiter.* Ita communiter interpretes recentiores Serarius, & Cornelius, & alij, contra Abulensem, & Liranum, quoad illam partem, quæ asserit fuisse viles, & sordidas, & mel amarum. Cõstat *primum* ex textu *in ore.* Septuaginta. & alij etiam in ore, licet ex Chaldeo in corpore, sed facile vtitur tropo, pars pro toto, &c. tum quia dilacerato leone, aptior erat locus ad nidificãdum, corpore. Hic apes vissæ sunt in ore plurium in veritate, vt in ore Ambrosij ad facundiam melitam præsignificandam, in alijs fabulosse in ore Iouis pueri postea Rex Cretæ, vt de pluribus fabulãtur Virg. & alij apud Cornel. hic, in hoc enim

verum misterium, aut fictum insinuatur, & in præsenti vt Deus re præsentaret misteria, inferius proponenda. Quòd alij adducunt in probationem, quòd in ore leonis morrui melificarunt, & elaborarunt fauum melis, eo quòd ille leo significabat Christum, qui est leo de tribu Iuda Genes. 49. In quo post mortem est fauus melis eucharistiæ, & examen apum fidelium, qui de vno calice, & de vno panè participamus: potius ad allegoriam pertinet, quàm ad historiæ probationem. Secundò, verò constat, nam licet stando do in ordine naturarum rerum, posset Rex apum cum sequacibus ex alueari volitans nidificare in ore, aut capi industria humana, & ad os leonis defferri (quòd difficile creditu) probabilius videtur Angelorũ ministerio aliun de delatas, & in ore fauum construxisse, eo quòd res disponebatur ab eo ad mysteria futura de ænigmate, & problemate: de comedente cibus, & deforti dulcedo, & ita prædispositæ res est. Tertia pars scilicet *apes non fuisse viles, & sordidas è leone natas, nec mel vile, & amarum*, inde constat ex infra vers. 14. probatur fuisse mel dulçe, quale non creditur generari ex vili, & sordido agmine apum, tum etiam quia est ineficax ratio opposita, quòd natæ sunt apes ex ore leonis, cuius halitus, & oris odor fugitur à generosis, & mundis, vt ex sordido prodirent sordidæ, & mel amarum elaborantes. Sicut in Sardinia mel conficitur amarum, eo quòd ibi apes pascuntur absinthio, nam quamuis os leonis viui esset halitus, & odoris grauis, iam mortui non esset halitus, nec grauis nec impuri. Quæ omnia compinguntur certissimè ex vers. 14. Vbi mel laudatum, & generorum.

ADMORES.

Quòd *Demonis infestationes primo congressu sunt funditus extinguendæ, vt non timeatur vlterius periculum infestationis.*

Quòd *Angeli obsequium, tunc magis placet Deo, cum incumbit vtilius saluti, & vtilitati hominum.*

Quòd *Deus constituit vitam in mortificatione laborum, & in amaritudine mel dulce gloriæ.*

TEXTVS.

Vers. 12. *Proponam vobis problema,*
Vers. 14. *De comedente exiuit cibus & de forti egressa est dulcedo.*

AD LITTERAM.

Dub. 14. *An olim in conuiuio solitum esset, proponi ænigma conuibantibus proposito præmio dissoluenti?*

COnclusio est *affirmatiua*. Ita interpretes hic, & constat facile ex

ex textu, & peruetustis anthoribus, Plutarco, Macrobio, & Athenæo, decem sapientibus apud Cornelium. Constat enim ex historiæ filo, quòd in celebratione nuptiarum Samson suis commensalibus in conubio proposuit problema, id est ænigma. Fuit proprie ænigma, id est obscura, inuoluta, & implexa propositio, in hac forma. De comedente exiuit cibus, & de forti egressa est dulcedo. Vt speciem daret hæroici facinoris, occisi leonis. In cuius ore inuenissent fauũ melis. Et in hebræo est pulchra paranomasia, sic enim habet: de comedente exiuit comestibile, id est de ore leonis vorante, & commedente alia animalia, exiuit fauus, & cibus suauissimus comestibilis: & de forti id est leone, qui est fortissimus animalium, originata est dulcedo, id est mel suauissimum. Ac si insinuasset, leo à me occisus, mihi mel fugesit, & cuilibet actus hæroicus fortitudinis pariet mirificam voluptatem, & gloriam. Et triginta viris in præmium promisit triginta sindones, aut vestes in præmium, si soluerent, in pœnam soluturi totidem, si non soluerent, intra terminũ septem dierum.

AD MORES.

Quòd *mensa non est prophananda scurilitate, & lasciua verborum, sed comitate.* Pro nuptijs Galilææ, vbi Christus repulit, quòd mater carnalis, & fratres quærebant foris.

Quòd *mensa Ecclesiasticorum, & religiosorum est condienda lectione spirituali, non lectura commediarum.*

Quòd *ad difficultatem doctrinæ superandam, inuocandum est adiutorium Sanctorum.*

TEXTVS.

Vers. 14. 15. ad 17, *Nec potuerunt per tres dies soluere. Cumque adesset dies septimus. An id circo vocastis ad nuptias, vt spoliaretis. Septem igitur diebus flebat ante eum. Tandemque die septimo, cum ei esset molesta exponit.*

AD LITTERAM.

Dub. 15. *An Philistæi non valentes inuenire solutionem, instauerint iurgijs, & minis vxorem, vt expiscaretur solutionem à Samsone, ne mulctarentur pœna proposita?*

Conclusio est, *affirmatiua.* Ita interpretes, & constat ex textu, nam cum sperarent inquisitione trium dierum inuenire

solutionem, & nõ inueniſſent, inſtructa vxore à prima die, vt expiſcaretur ſolutionem à Samſone, intantũ rurſus minis, deſperãtes inuenturos: & Samſone repellente vxoris inſtantiam, die ſeptimo iterum ſtimulant vxorem, vt eliceat ſolutionem, quod niſi faceret, ſe illam cũ domo cõbuſturos. Ne ſpoliationem ſindonum paterentur à Samſone. Poſt iurgia, & improperia, quòd vocarunt ad nuptias, vt ſpoliarent tunicis; imò, vt facerent pauperes, vt vertunt Septuaginta, & Batablus; imo, vt poſſiderent ſuas veſtes, vt Chaldęus. Tandem inſtante illa tot inſtantijs, & minis ſtimulata, in fine diei ſeptimi, fletibus, & lachrimis Samſon annuit, & ſolutionem ænigmatis aperuit. Cum dicitur *ſeptem diebus flebat* intelligitur in finem diei ſeptimi, & vltimi, nam incæperat die quarta flere, & compleuit lamentum, & fletum die vltimo, quo extorſit ſolutionem problematis à Samſone. Vbi expendendum eſt quàm ſint inſidioſſæ lachrimæ feminarum, iuxta Catonem, Inſtuit inſidias lachrimis, dum femina plorat, quæ expiſcata ſolutione indilate indicauit ſuis conciuibus, & prodijt maritũ, & impoſuit onus ſoluendi mulctam, quã Philiſtęi erant ſoluturi, ſi ante veſperam non extricarent ænigma.

AD MORES.

Quòd *ingenium mulierebre à natiuitate propenſ m eſt ad fictiones, fallatias, & mendatia, vt nec lachrimis ſit fidendum.*

Quòd *vxor obligata ad ſeruandam fidem viro, facile fidem in infidelitatem verbo, & opere conuertit.*

Quòd *fides vxoris in virum rara auis in terra, & miraculoſſa firmitas, quæ vel ſpe vel metu facile non flexibilis.*

TEXTVS.

Verſ. 18. *Quid dulcius mele, & quid fortius leone?*

AD LITTERAM.

Dub. 16. *An ingenio ſint Philiſtini aſequti ænigmati ſolutionem? An didicerint ab vxore Samſonis? Et an per arare in vitula intelligatur fornicare cum illa, vel inueſtigare ſcrutinio?*

COncluſio aſſerit primò, *non fuiſſe ingenio aſſequutos ſolutionem, ſed detectione vxoris. Secundò, quòd per arare in vitula nõ intelligitur, fornicare cum illa, ſed inueſtigare ſcrutinio.* Nam cum Samſonis ænigma fuiſſet propoſitum in illis verbis. De comedente exiuit cibus, & de forti egreſſa eſt dulcedo producerunt ſolutionem, in illis verbis quid

quid dulcius mele, &c. ac si dixissent, occidisti leonem voracem, & in ore inuenisti fauum melis, Hoc autem non à suo ingenio, sed ab vxore didicerunt minis, & molestijs extorquẽdo. Nam vt constat ex v. 17. statim ac expiscata est, solutionem à viro indicauit ciuibus suis. Deinde ex 18. vbi Samson respondit eis, si non arasetis in vitula mea, nõ inuenissetis solutionẽ problematis. Ex quo probatur secunda pars. Nam quamuis vocauerit Samson vxorem nomine vitulæ, quæ notat petulantiam, & lasciuiam, sicut alijs nominibus, alia vitia notantur feminarum, apud Serarium vulpes, canes, sues, &c. huiusmodi. Sicut vitula nõ satis patiens est iugo impositio, sed facile excutit iugum, & onus: ita vxor Samsonis secretum, tamen verbum illud arare in vitula habet metaphoram, nam sicut arando aperitur terra, & discoperiuntur subterranea, ita, inuestigando, & scrutando in vxore, inuenta est solutio problematis, arcana, & occulta. Vt ex proditione ob leuitatem, & inconstantiam seruandi secretum, sua perfidia imposuerit onus soluendi triginta sindones, vt liberaret Philistæos, nec consanguineos, nec affines. Eorum consulens incolumitati potius, quam mariti, ac si vno verbo eorum iactantiam repulisset dicẽdo: perfidia dedit solutionem, non ingenij vestri acumen.

Notat apte Cornelius ad illud quid dulcius melle? posset respondere sacharũ, illo æuo incognitũ, & in scriptura nulibi memoratum, vsque ad Dioscoridem, Plinium, & Galenum, qui non attigerunt modum liquandi per ignem, ad spissitudinem, candorem, & nimiũ dulçorẽ. Et mistici; Quid dulcius melle? Spiritus Dei Eccles. 24. Spiritus meus super mel dulcis, & hereditas mea super mel, & fauum. Et ad illud quid fortius leone? Dici poterat veritas, omnium rerum fortissima. 3. Esdræ 3. forte est vinum, fortior Rex, fortiores sunt mulieres, super omnia autem vincit veritas. Sed vt verum fatear hic de fortitudine corporali fit sermo, veritas autem in eo nec superat nec superatur.

AD MORES.

Quòd *arcana Regum, & superiorum reseruare valde vtile, pro rebus in republica fœliciter gerendis.*

Quòd *leuitati feminarum non sunt comitenda secreta, & arcana, magni pendoris. Angustum pectus facile euomit recepta.*

Quòd *feminæ facile vincuntur, aut lenocinijs lasciuiæ, vtilitatis, aut commoditatis.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Irruit in eũ spiritus Domini (impelens ad stragẽ hostiũ Israelita-*

tarum, descenditque Ascalonem, & percussit ibi triginta viros, quorum, vestes dedit eis, qui problema solverant.

AD LITTERAM.

Dub. 17. *An Samson iuste fecerit cædem istam Ascalonitarum, & vestium spolium?*

COnclusio asserit, primo *iustè fecisse vtrumquè*. Ita cõmuniter interpretes. Ratio quia fecit impellente spiritu Domini, qui etiam fecit vt Philistęi Tamatẽses nescirent cędem istam, ne insurgerent contra Samsonem, in fauorem Ascalonitarum, sibi confederatorum. Secundò, quia erat iustum bellum cum hostibus Israelis, & spoliatio. Tertiò, nam alias erat obligatio ad solutionem ex inito pacto, quo impositum est illi onus soluendi triginta sindones, aut vestes, nam non initus est contractus sub conditione, quòd suo ingenio asequerentur solutionem, non reuelãte vxore.

Arguitur contra nam Numerorum 6. fuit prohibitum Nazarẽis tangere mortuos, & tetigit, vt adimeret tunicas a cadueribus occisorum, ex quo immunditiam legalem illicitè contraxerit.

Respondetur excusari. Primo quia impulsu Dei iubentis fecit, qui dirigebat, quasi Magister. Secundò, quia intelligi potuit, quòd dispensauit cũ eõ. Tertiò, quia obligabat solutio potentem, & poterat eripiendo ab hostibus. Vltimo quia Deus in ore leonis mortui cibum mellis, & in maxilla asini mortui potum Deus illi præparauit, & ita licite potuit tangere, & cadauera hominum, & vestiarum excusatus à culpa, & immunditia legali.

AD MORES.

Quòd *Rex nec publica, nec prĩuata authoritate potest spoliare innocentem vita, & bonis suis.*

Quòd *suprema potestas non est dominium vniuersale, prœualens supra iura inferiorum, vt possit impune priuare pro arbitrio subditos rebus suis.*

Quòd *Regi in graui necessitate constituto, & indigenti, tenentur subditi subuenire rebus proprijs.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Iratusque nimis ascendit in domum patris sui.*

AD LITTERAM.

Dub. 18. *Quæ causæ reddiderint licitam istam iracundiam, & regressum Samsonis relicta vxore, in domum patris sui?*

COnclusio asserit, *plures extitisse* Primo quia secretam solutionem ęnigmatis acceptam à Sam-

Sãsone reuelauit. Secundò, quia fidem seruandi secretum prodidit. Tertiò, quia voluit imponere marito onus soluendi 30. tunicas, & sindones, quàm iuuenibus, pronubis commensalibus, quos prætulit amor ipsi sponso. Quartò, quia per fraudem extorserunt solutionem ab vxore, & quia vrbs illa Palestinæ tot sibi paranimphos fraudulentos asignauit. Vltimo, quia arrogarunt præmium fraude comparatum ingenio suo. Ratio, nã iracundia in re graui licita est: regressus autem in domum patris, relicta vxore infideli proditione, quòd redolet diuortium, satis iustam habet causam, tum in prædictis, quæ darent dissensiones, & iurgia domestica, tum etiam, quia fecit diuortium, vxor nubens sponsalibus, cum quodam iuuene ex conuiualibus Samsonis, & inde sumpsit ansam nouam, malum inferendi Philistinis.

ADMORES.

Quòd *ira interdum potest esse licita, & separari à peccato.*

Quòd *ex iusta causa est licitum diuortium, non ex iniusta præsumptione.*

Quòd *tenemur deserere pericula, occasiones, & noxia cõmertia peccandi.*

TEXTVS.

Vers. 20. *vxor autem eius accepit maritum, vnum de pronubibus.*

AD LITTERAM.

Dub. 19. *An esset permissum Iudæis, & gentilibus dare repudium? & an viro, an etiam fœminæ? & an dederit Samson?*

Conclusio asserit, *permissum esse libellum repudij viro, non tamen vxori, Iudæis, & gentilibus, & non dedisse Sãsonẽ, nec repudiasse, sed reliquisse, & discessisse.* Constat ex Deuter. 24. & Mathæi. 19. *Moyses permisit dare libellum repudij ad duritiam cordis vestri, ab initio autem non sic.* Secundò, quòd viro data est dicta potestas, notauit hic Abulensis quæst. 3. & ita erat rogandum, à Samsone, an repudiaret, an relinqueret, à qua discesserat iratus in brebe interuallum locorum. Tertio, nam ex capite 15. post aliquantulum temporis rediit Samson ad vxorem, quod probat non dedisse repudium saltim perpetuum. Quartò, nam iniuria insignis illata est Samsoni, tum aparentibus dando puelam alteri ex pronubis, imo, & ab ipsa; quæ dedit repudium, dum adamauit alterum; & admissit ad thalamũ maritalem, in quo pa-

parentes habent excusationem ex textu, quo se excusarunt: dicendo putaui quòd odijsses eam, & ideo tradidi amico tuo, & cum illatæ iniuriæ exhiberet satisfactionem offerēdo sororem iuniorem, & pulchriorem, quæ minor natu solebat prius tradi in matrimonium, despicit Samson, cum nec vellet, nec posset. Illa verò cui non erat permissum repudium, non habet excusationem, cui oblatæ non aquieuit. Potius in furorem actus vindictam est protestatus.

ADMORES.

Quòd *viro licet recessus à coniuge, si ad sit causa. Non difamatio, aut occisio.*

Quòd *vir, qui viuente vxore ducit alteram, non est immunis ab incontinentia, & adulterio.*

Quòd *tenentur vxorati ad cohabitationem. Ne pericula incontinentiæ vxoris sibi imputentur.*

TEXTVS

Ex cap. 15. vers. 1. *Post aliquantulum autem temporis, cum dies messis instaret: venit Samson inuisere volens vxorem, &c. Et prohibuit eum pater illius.*

AD LITTERAM.

Dub. 20. *Cur, & quando redditus Samsonis ad vxorē? Et an hic dederit repudium perpetuum?*

Conclusio asserit, primo, *redüsse, eo quòd iam iniuria flama fuit gelidata,* & pristinus feruor amoris iterum eferbuerat, & eo quòd diuina prouidentia, quærebat opportunitatem, & ocalionem inuadendi Philistęos.

Secundò *quòd reditus fuit tempore messis,* quod constat ex textu, & cum dicitur diminutiuè post aliquantulum temporis, reijcitur sententia asserentium post nimiam absentiam, aut annallem. Cum additur triticeæ, indicatur quòd prior, & ocyor præcessit ordacea. Verbum vero instaret, illud tempus notat, in quo iam segetes incipiunt secari, & partim in fasciculos sunt adglomeratæ, siue in Palestina id soleat incidere inter aprilem, & maium Iosue tertiò. Denique asserit *dedisse hic repudium perpetuum,* & constat, ratio ex textu. Nam cum aduertisset à parente fuisse prohibitum ingressum solitum in cubiculum, & traditam esse vxorem alteri adolescenti ex pronubibus; concepit iram discedendi perpetuo, & inde occasionem iustam summendi vindictam ab illis, & Philistęis. Quoniā existimatio parentis, quòd dedisset repudium, non erat sufficiens excusatio, licet viro, & non vxori esset permissum. Quoniā recessat in in teruallum parum distans, & potuit facile expiscari mens illius, & ita indicat protestatio facta, vers. 3. *ab hac die non erit culpa in me* inferre mala in Philistæos, quippe qui dedissent causam ad summendam vindictam, & vltionem; sub quo præ-

prætextu perſonali, mollitur vindicem agere oppræſionis illatæ in Iſraeliticum populum.

AD MORES.

Quòd *viri præſentia ad vxorem, vt vigil vitat grauia crimina vxoris.*

Quòd *viro coniugato non recedendum ab vxore, adhuc ad licita, & orationem niſi brebi tempore.*

Quòd *illicita coniunctio alieni cum vxorata, parit diſiunctionem ſempiternam inter coniugatos.*

TEXTVS.

Verſ. 4. *Cæpit 300. vulpes. Caudas iunxit ad caudas, & ligauit faces in medio.*

AD LITTERAM.

Dub. 21. *An arte, & induſtria Samſoni ſolæ an etiam adiutorio Angelorum collectæ ſint, & captæ 300. vulpes?*

COnclusio asserit, *non ſola induſtria, & arte illius, ſed opitulante Dei adiutorio per Angelum.* Ita interpretes communiter, licet non desint, qui dicant æquè fortem ad leones, & calidum ad capiendas vulpes doloſas, & volipedes, ac volucres ad fugam Samſonem fuiſſe. Inſinuauerunt, vt arte, doloſas, & veloces in tanto numero ſuperauerit. Ratio, nam licet plurimum iubet ad ſaluandam veritatem iſtam, ne fabuloſa, & ridicula videatur, vt arriſit hæreticis, illud de cane Tobiæ blandiente cauda, regionis illius maxima copia: ſicut in alijs Affrica leonum, Anglia, & Olandia cuniculorum, &c. Iuxta Canti. 2. *capite nobis vulpes parbulas, &c.* Et ſimiliter anni tempore florentis vineæ: Canti. 2. *Vinea noſtra floruit*, coincidens cum tempore meſis, vt obſeruant venatores ad capiendos piſces, & alia volatilia: & ſimiliter valeat ars, & induſtria, qua nõ vulgari peritus fuit Samſon, & tandem ſufficientia temporis ad illas 300. vulpes, non vno die capeſſendas, nihilominus difficile creditu eſſet: tot breui collegiſſe, niſi adeſſet voluntas diuina, & opitulatio hominum, aut Angelorum, ad retia, & alia inſtrumenta venationis, canum, &c. perurgenda: his enim poſitis ceſſat difficultas. Nam tempore Noe adducta ſunt ad arcam bina animalium ferociſimorum, Dei enim ſunt *omnes feræ ſyluarum iumenta in montibus, & boues.* Pſalm. 49. Et ad Adam, vt videret *quid vocaret ea*, & ad dexteram nauigij Petri ingens multitudo piſcium, vt rete rumperetur, ad Moyſem multitudo cinifum, ranarum, locuſtarum, cinomyarum. Mitto alia, fa-

fabulosa apud Serarium, & Cornelium hic de leopardis captis, & pluribus alijs animalibus quid ergo mirum? Si tot cœperit non tam arte, quam ministerio Angelorum. Qui capiebant, adducebant ad manus, & inuitas tenebant ad finem intentum à Deo: inferendum damnum vineis, & segetibus hostium populi Dei, & vtilitatem Israelis, in tribu enim Dã abundabant vulpes nociuæ pascuis.

AD LITTERAM.

Dub. 22. *Quomodo Samson colligauit 300. vulpes, & ligauerit faces?*

COnclusio asserit, quòd *noluit singulis alligare faces, sed binis caudis alligauit vnam facem. Non vt fieret nodus in extremis, sed in medio fortiter colligauit, & cum vellet dimittere accendit faces, non ita, vt simul omnes essent ligatæ, & dissolueretur nodus communis omnium igne accenso, vt dimitterentur.* Quidquid sentiat Abul. pro nobis sunt Liran. Caiet. Serar. & Cornel. Ratio, nam ita in Hebreo, nam sic vertitur posuit facem vnam inter duas caudas in medio. Ita enim ratio postulabat mediorum in finem inflamandi segetes si enim singulis ligasset facile se reciperent in antra & extingueretur ignis, sed facta ligatura in medio binarum caudarum, & accenso igne it. face spino, teda cederina, cupresina pica oleosa, materia facile inflamabili, & difficile extinguibili, expeditæ essent ad velocem cursum. Et non essent si vinculum corpori esset proximum, & si in extremitate caudarũ facile nexus excideret, & instigante igne à tergo discurrerent ocyssimè, & longissimè, & conspicientes alias binas accenso igne. Qui cursus & ventilatione accendebatur magis. Vinæ efugerent, & declinarent vinas, asportantes ignem fugiendum, & ita dispersæ, & distantes irruerent in arua, segetes, vineas, campos, & spargerent vno cursu dispersę in varias partes incendium. Ita tamen, vt nec simul tempore, aut loco dimisserit omnes, nec propè agros, messes, vineas, & oliueta suorum, sed propè Philistinorum, vbi maiori essent damno. Quò vero deuenerint, & quæ dãna intulerint, & an disoluto vinculo in foueas declinauerint, aut igne perierint, an Philistina cędę? Potius diuinã dum, quàm assẽrendum.

***

AD

ADMORES.

Quòd *ille Doctor inter Doctores Samsonicus, qui ligat argumentis vulpes, hæreticos, & igne succendit.*

Quòd *ars, industria, & sapientia solet præstare viribus.*

Quòd *magna semper cura adhibenda in cauendis adhuc vulpeculis hæreticorum, inferentibus damnum in segetibus Ecclesiæ.*

TEXTVS.

Vers. 6. *Et combusserunt, tam mulierem Samsonis, quam patrem eius.*
Vers. 8. *Percussitque eos ingenti plaga, ita, vt suram femori imponerent.*

AD LITTERAM.

Dub. 23. *An Philistæi sciuerint Samsonem fuisse authorem incendij in vindictam? & quid egerunt de sponsa, & socero illius.*

COnclusio asserit. *Sciuisse, & datam occasionem è repudio in secundis nuptijs. Et in pœnam, quòd causam dedissent tantæ calamitati combusserunt accenso rogo sponsam, & eius parentem, qui dedit secundis nuptijs.* Ita interpres Serar. Cornel. Tirin. &alij. Probatur ex textu vers. 6. *ascenderunt Philistini, & combusserunt tam mulierem, quàm patrem eius,* & nomine patris intelligunt 70. Iosephus, paternam domum, immo propinquos exustos viuos, vt genus familiam, & stirpem, igne consumpserint. Adeò comouit Principes, & vniuersos, vt omnium voto, odio, & detestatione flamis voracibus sint adicti viui accesit quòd olim, adultera, incendio mulctabãtur. Genes. 39. Iudas iussit comburi nurum suam Thamar ob adulterium, qualis erat hæc mulier Samsonis, nam alteri tradita nomine nuptiarum, cum reuera, non posset nisi in adulterium hæc Ambrosius cum 70. & alijs PP. apud Serar. quæst. 9. Et Corneli⁹. Et adultera, quæ, vt vitaret incendium minitatum, prodidit mariti secretum, incidit in incendium, voto & acclamatione Principis, & omnium Philistionorum.

Circa illud *de plaga inflicta Philistæis à Samsone*, qui non satis factus incendio, summit alteram à Philistęis, est disidium inter interpretes, *quid intelligendum, quòd præ stragis magnitudine stupentes suram femori imponerent?* Quidam quòd percusit eos calcibus in illorũ femoribus, circumgirando, non armis, sed calcibus calcitrando perfregit femora eorũ. Circumgirabat enim inermis nè à tergo ledi posset. Ita pugnabant in orbem pau-

pauci Lusitani in India contra in numeros barbaros, alij quòd percusit eos in cruribus simul, & femoribus, alij calcibus percutiendo femora, ita varij varie, & pluribus sensibus omissis translationum apud Cornel. & Serarium ibidem quæst. 10. Melius noster vertit, & consentiunt 70. quòd percusit feriendo pasim, obios quosque occidendo, pesundando, mactando, adeò magna plaga, & strage, vt præ stupore tibiam super femur imponerent, quòd signum est stuporis anxij intensi, & grauis imaginationis cogitabundi. In stupore enim solemus pedis vnius suram alteri femori componere. Nec obstat quòd non sit verbum in hæbreo, quòd significet stuporem, nam addi potest in explicationem, sed de hoc alibi.

AD MORES.

Quòd *vna sola mulier venusta est causa ruinæ, & infelicitatis vnius familiæ, totius generis, & regni.*

Quòd *mulier adultera viua cremanda erat.*

Quòd *incendium lasciuiæ feminarum, solo ignis incendio dignas pœnas lueret.*

TEXTVS.

Vers. 8. *Habitauit in spelunca petræ Etham, ligauerunt que eum duobus nouis funibus, & tradiderunt Philistæis.*

AD LITTERAM.

Dub. 24. *An se receperit Samson in speluncam timidus, & profugus in locum munitum? An vt vacaret Deo? Et indemnes redderet suos? Et an sit passus ligari à suis, & tradi Philistæis pro indemnitate suorum? Et in qua tribu sita erat Etham?*

Conclusio asserit primò, *confugisse non timidum in locum munitum*, & angustum vbi vnus miles pro pluribus valet, nam ipse solus in medio, & lato campo pluribus centenarijs præstabat, sed, vt Deo quietus vacaret, cuius impulsu ita præstabat. Deinde ne si fugeret in asylum alicuius ciuitatis suorum, exponeret eos periculo, quod in se solo pro salute suorum maluit suscipere. Secundo asserit quòd *passus est ligari à suis duobus nouis funibus, non veteribus fragilibus, & cordis, aut corigijs: immo ferreis compedibus, & manicis retro ad scapulas, & per cubitos, sub ea lege, & iuramento non occidendi, sed tradendi Philistinis ligatum, pro bono communi suorum.* Et constat ex textu. Nam cum Philistęi egrè tulissent incendium segetum, illatum à Samsone, & castrametati essent in Iuda, & expandissent militari ordine turmam (non turbam tumultuariam) & Iudæi timerent inuasionem, & inquisita causa dedissent incendium, & ignem

nem, vt ligarent Samsonem, quem si non tradidissent ligatum, in caput suum peccaturos. Ipsi Israelitæ collecto exercitu, tria millia Iudæorum, venerunt in speluncam Etham, & increparunt illati incendij in ruinam, & perniciem eorum, quæ instabat minitata: nisi ligatus traderetur Philistæis. Ipse, vt indemnis redderet suos, passus est ligari, vt traderetur Philistęis, dummodo à suis nõ inferretur mors, cum posset illis suadere indecens, & inhumanum esse tradi liberatorem suum, qui causa illorum intulerat incendium in segetes. Et alij probant eo, quòd Samon fuit typus Christi, qui passus est ligari à suis Iudæis, & tradi Pilato, ac Romanis, vt crucifigeretur ab eis, sed ista probatio pertinet ad sensum allegoricum. Asserit tertiò, quòd *sita erat spelunca petræ Etham in tribu Iuda, iuxta vicinum torrentem*, nam licet alij sitam dicant in tribu Simeonis ad torrentem Sorech constat ex Iosue 19. tribum Simeonis in Iudeæ tribus admissam, partem fuisse.

AD MORES.

Quòd *Deus in maiori conflictu suorum acurrit valido subsidio, vt tunc sint magis securi, quo magis angustati periculo inimicorum.*

Quòd *excelsi animi est pro vita, & bono reipublicæ exponere periculo propriam.*

Quòd *victoria parta ab inimicis confugiendum est ad speluncam, & Ecclesiam Petri ad spolia Deo reddenda in gratiarum actionem.*

TEXTVS.

Vers. 14. *Et sicut solent lina consummi ad odorem ignis. Inuentamque maxillam, quæ iacebat interfecit in ea mille viros.*

AD LITTERAM.

Dub. 25. *Qua facilitate Samson ligatus, & traditus Philistæis diruperit vincula? & an in mandibula asini sine alio instrumento militari semper illisa occiderit mille Philistæos? & an ista maxilla fuerie asini vulgaris, an fieri onagri?*

COnclusio asserit primò. *Rupisse funes facilitate, qua lina sica ignis.* Non vt alij legunt, qua ignis consummit ligna, & constat ex ipso textu sicut solent lina consummi ab igne, quæ subitò inflammantur, & celerrime rediguntur in cineres. Vbi vocatur odor ignis, vsitio caloris metaphoricè: & iuxta 70. sicut stupa, cum fecerit ignem. Secundò asserit, *In maxilla virente, & humida, & infracta, occi-*

disse mille Philistæos, sine alio instrumento bellico, Deo conseruante illisam maxillam, ne tot ictibus rumperetur. Et probatur ex historia, & textu citato, nam cum Hebræi, vt se indemnes conseruarent à molestijs Philistinorum tradidissent Samsonem captum, & vinculatum, licet non inuitum, præmonentes tenete eum, & ducite caute, traditus est, & Philistæi læti, & alacres in præda, tubis clangentibus, tympano resonante, vexillo volitante, omnium vociferatione, & clamore victoriam aclamarent, ac si in vno victo plures exercitus deuicissent; nec victores insolentes iurgijs, conuitijs, & improperijs peperciissent, sed nimis insolenter obiurgassent: iruit spiritus Domini in Samsonem in medio castrorum circumseptum, rupit facilè vincula, quibus manibus, & brahijs erat fortissimè ligatus, & sine gladio, telo, hasta, aut clana vlla, animo plùs quam Hærculeo inuehitur in milites circunstantes, & vilissimi animalis mandibula casu iacente in illo loco, percussit, dispersit, occidit, & postrauit mille viros vnus homo, sed iruente spiritu Domini, cæteris timore, & metu fugatis, mansit incolumis. Et licitè tetigit maxillam cadaueris, & occisorum corpora prohibita Nazaræis, nisi adesset iruens spiritus Domini impellens, & dispensans, iuxta supra dicta de cede virorum, quos tunicis nudauit ad solutionem. Tertiò asserit, *Illam maxillam fuisse asini communis, & domestici non feri, qui dici solet onager.* Quidquid Pineda in Iob cap. 6. Primò, quia in textu est chemos, qui non significat onagrum. Secundò, quia ad miraculum satis foret cuiusque mandibula. Tertiò, nam admittitur, quòd in illis locis esse soleant asini grandiores. Vltimò, nam vt illisa, & integra conseruaretur in cesione tot corporum, & cadauerum plurimum facit opinio asserentium, ex Hebræo fuisse humidam recentem, non vetustam à canibus raptam, & corossam, vt illa loco gladij vteretur, quod aptè Tertullianus 5. contra Martionem.

Pro populo solus nullo mucrone, nec armis.
Os retinens asini postrauit corpora mille.

Vt non solùm vnus inermis pro mille armatis, sed supra celebraretur.

AD MORES.

Quòd *Deus non eget copijs militaribus ad victorias insignes comparandas, sed minimis aggreditur, & assequitur gloriosè magna.*

Quòd *plus valet vnus, quàm mil-*

mille, si spiritu Dei dirigatur, & moueatur.

Quòd *diuina virtus efficit sua facinora in talibus circunstantijs, vt probent sine tergiuersatione Deum Authorem.*

TEXTVS.

Vers. 16. *Et ait in maxilla asini in manatibula puli asinarum deleui eos.*

AD LITTERAM.

Dub. 26. *An cecinerit carmen Samson ex insolentia, & arrogantia? an referens gratias in gloriam Dei? cuius ope tam insigne facinus patrauit?*

CONclusiò asserit primò, quòd *Samson cæso exercitu partim, & partim fugato, dixisse non vulgari voce, sed eleuatiori cantando cecinisse illud carmen.* Nam licet in textu solùm sit vox illa *ait*, tamen talis dictio ex re gesta rara, & circunstantijs intelligitur, vt idem valeat, quod intonuit ex lætitia carmen, vt expendit Abulensis, & Caietan. inquiens, ait Samson cantando canticum. Cur sit hoc breuius alijs, & an latius sit prosequutus, quod probant plurimi, statim. Secundò asserit, *non cecinisse ex arrogantia sibi referens gloriam, sed egisse gratias Deo, in cuius ope occidit tot Philistæos.* Ita Interpretes plurimi, quos sequitur Cornelius à lapide hic. Et probatur ex vers. 27. *Cumque hæc verba canens complesset*, proiecit mandibulam, &c. vbi apertè dicitur canendo compleuisse carmen, & non obscurè, aliud æquipollens illo Dauidis, Psalm. 143. *Benedictus Dominus Deus meus, qui docet manus meas ad prælium, & digitos meos ad bellum*, & iteràsse post versus singulos illud carmen Deo in maxilla asini, &c. quasi carmen intercalare, ad illum modum, quo Moyses, & Ana soror post memorabile beneficium transitus maris rubri, illud carmen, *Cantemus Domino glorioscè*, &c. Idem de alijs sacræ Scripturæ canticis, quæ ipsa beneficia, ingratos adhuc, cogunt intonare. Secundò, nam quamuis Samson dicat, in maxilla deleui, non sibi soli, sed offerenti ad manum maxillam, facinus deferri debet. Iuxta illud Apostoli. *Multum laboraui in Euangelio, non ego, sed gratia Dei mecum.* Præsertim cum Samson, non difficile deprehendisset impetum spiritus irruentis in eum in cædem, illam sibi autem primas detulisse, non Deo, incredibile est.

Arguitur ex Ambrosio epist. 70. qui opinatur dixisse ex arrogantia, ideoquè à Deo aflictum, & castigatum ardenti siti, & constat ex vers. 18. Qui debuit euentum diuino fabori deferre, sibi arrogauit, & assumptu innanis gloriæ vocauit nomen loci illius maxillæ interfectionem. Respondetur, ita opinasse, sed non damnauit oppositam sententiam, & ità nihil contra nos, quia non dicimus omnes PP. esse pro nostra sententia. Qua solutione vtendum quoties opponitur aliqua sententia opposita PP. quia non omnes sunt vniformiter loquuti, sed sæpè dissentit vnus à sententia alterius, & nos similiter, præsertim dum stant graues rationes pro nostra sententia.

AD MORES.

Quòd *cauenda sit arrogantia in nostris operibus, nam cum opus sit ab vtroque Deo, & nobis vtri deferēda sit negatio influxus, nobis potius, quam Deo.*

Quòd *Deus sæpè talenta confert ad negotiandum, & ignauia nostra oti sa sine lucro retinentur.*

Quòd *Dei est, quidquid boni fit ope, & virtute Dei.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Aperuit itaque Dominus molarem dentem in maxilla, & egressæ sunt ex eo aquæ.*

AD LITTERAM.

Dub. 27. *An Deus præcibus, oratione, & meritis Samsonis siti laborantis fontem sca urire fecerit è maxilla miraculosè, in præmium illius? an ex alio loco scaturierit?*

Conclusio est *affirmatiua*, ità Interpretes, licet discordent ex quo loco scaturierit. Primò ex 70. qui legunt locum, qui in maxilla, & manifestè in textu citato vbi dicitur, quòd aperuit Dominus molarem dentem in maxilla, & egressæ sunt ex eo aquæ. Secundò ex PP. Ambrosio, Hieronymo, & alijs accipe verba Prudentij in Enchir. Ab ore leonis, mella fluunt, maxilla asini fontem vomit vltro. Et ratio colligitur ex textu, nam post illam stragem mille Philistæorum, post carmen decantatum Deo, vers. 18. valde sitiuit, ex dimicatione præterita motibus corporis, ita excreuit calor, exicatio corporis humidi, quæ liquescit in sudorem, vt præ siti existimaret breui moriturum, & inquit Deo orans, & loquens. En siti morior, nec difficile est sicut fame, ita siti mori posse morales, vt de

de Ismaele infante Agaris, Genes. 21. De Israelitis Exodi 17. De ciuibus Betuliæ Iudith 7. & sane facilius toleratur fames, quàm sitis. Ex Aristot. problem. 5. sect. 28. quidquid alij referant in aliam causam, scilicet superbiam, & arrogantiam, sine qua sitis contingere potuit ex naturali, vt Christo in Cruce clamanti Ioan. 19. *sitio*. Clamauit igitur Samson ad Dominum, inquit textus vers. 18. victoriam illam referens Deo. Tu dedisti in manu serui tui salutem, & victoriam. En siti morior, incidamque manus incircuncisorum. Quæ oratio est contra sitim vrgentem, obsecratio, non sola monstratio, aut indicatio, imò obligatoria valdè Deo, vt ipse sui vitaret ignominiam, cuius ope vrgebat strages, si incideret sitiens, & moribundus in manus incircuncisorum, hostium Dei. Quam vt sibi Saul vitaret anxiè postulauit ab armigero euagina gladium, & *percute me, ne veniant in circumcisi, & illudentes me interficiant.* 1. Regum 31. & non fuere innanes orationes, preces, & merita. Nam sicut Genes. 21. *Exaudiuit Dominus vocem pueri Ismaelis*, morientis siti: ita Samsonis. Cui insigni miraculo dedit fluenta aquæ limpidissimæ ad refocillandam anxietatem, & extinguendam sitim, ardentem, eliciendo ex maxilla asini fontem aquæ. Ex quo oritur statim, *Difficultas. Vnde scaturierint aquæ fluenta?* In quo est varietas sententiarum. Quidam fuisse in loco illo, qui appellatus est Lechi. Secundò Ariasmontani, fuisse in concauo, facto à mandibula relabente in terram proiecta à Samsone. Tertiò, alij ex foramine in illo loco aliunde, quàm ex relapsu mandidulæ ortam. *Verior* tamen ex nostra Vulgata, *ex dente vno maxillæ asini erupisse fortem aquæ*, & ista interpretatio est anteponenda cæteris. Primò, quia ita noster interpres, cui adhæserunt latini veteres, Tertul. Ambros. & alij apud Serar. hic, & Cornelium, imò, & Græci, qui id referunt in sanctitatem Samsonis, nec dissentiunt omnes Hebræi, vt eruditè Serarius ibidem. Tertiò, nam si ex dente molari, aut ex concauo relicto, cum fuit excussus scaturirent aquæ, sed aliundè iuxta interpretamenta dicta plane in textu esset notula, & non relinqueretur res obscura. Nec discordat vox originalis, vt eruditis linguæ sanctæ, expendit Serarius ibidem. Accedit, quod notauit Chrisostomus homil. 15. ex varijs in Matthæi. Ex ipsa maxilla prodijsse, quam tenuerat in manu, non quam tenebat, si verò erupit hic fons ex terra in maxillam, vt inde scaturiret

maius apparet miraculum, ſicut quòd petra virga Moyſis percuſſa ediderit fontem in illo loco, & inſe juuta fuerit Iſraelitas per inculta deſerti.

AD MORES.

Quòd *orationes, & preces ſanctorum ſunt adeò validæ ad impetranda poſtulata, quòd ſint imperium, quibus Deus præſtat obedientiam.*

Quòd *Deus ne deficiat in neceſſarijs ſuis, non dubitauit edere miracula. Cum naturæ deficiunt ſubſidia.*

Quòd *nemini quantumuis vili, & minimo deſperandum, ope Dei magna per ipſum patranda: ſicut per vilem maxillam tot mira, & egregia.*

TEXTVS.

Verſ. 19. *Idcirco appellatum eſt nomen loci illius fons invocantis de maxilla vſque in præſentem diem.*

AD LITTERAM.

Dub. 28. *An ille ſcaturierit de maxilla in manu Samſonis, an proiecta, & iacente in terra? & an duraverit in præſentem diem?*

COnclusio aſſerit, *non erupiſſe è maxilla in manu, ſed in terra proiecta, & iacente.* quidquid nonnulli autumment, cum Sulpicio lib. 1. hiſtoriæ, & inſinuare videatur Chryſoſtom. homilia 15. præcitata, ſed interpretes communiter tenent oppoſitum Serar. quæſt. 16. & alij. Ratio eſt, nam cum effudiſſet Deo orationes, & preces, & proieciſſet de manu maxillam verſ. 17. vidit mirificum ſcaturientem fontem aquarum, nec obſtat, quòd dicitur tenuiſſe manu, nam reſponderi poteſt dictum, quia prius tenuerat maxillam, vel quia iterum accepit proiectam emittentem aquam. De nomine loci illius nõ vacat diſerere videatur Serar. ibidem.

Secunda concluſio aſſerit, de duratione, & exiſtentia illius fontis, *Verbum illud vſque ad præſentem diem extendi ad diem, & tempus, in quo libri Author id ſcripſit, an verò poſt perſtiterit, & quouſque? probabile eſt duraſſe ad tempora Chriſti, & poſt illud ad aliquot ſæcula.* Nam tradit Divus Hieronymus ad ſua tempora perduraſſe in epitaphio Paulæ; imò, & Glicas parte ſecunda annalium, hic fons vſque in diem hodiernum in ſuburnio Eleutheropolis conſpicitur, & fons maxillæ nuncupatur, & ita non temerarium, nunc ſtare, nam vix quingentis annis Glicas noſtrum ſæculum antecedit, nam protulit Anales vſque ad Ioannem

nem Comnenum, filium Alexi Imperatoris, & non constat, quòd æstus are fecerit, aut disparuerit manus alicuius, aut obstruxerit lutum. Hic occurrebat disserendum, *an fons permanserit in maxilla*, aut in loco ab ea denominato? & *ex illa sola iacente in terra fluxerint aquæ?* An *etiam ex elevata è foramine molaris eruperit?* Vtrumque reputat non impossibile Serar. ibidem.

AD MORES.

Quòd *Deo ostensio necessitatis est pro petitione, in ordine ad subsidiũ indulgendum.*

Quòd *gloria Dei in præsenti vita est momentanea, & brevis, cum in futura sit duratura perpetuò, quam æmulantur, quantum possunt longævitates bonorum temporalium.*

Quòd *liberalitas Dei non donat in limitatione, & parvitate, sed in copia, & longævitate.*

TEXTVS.

Vers. 20. *Iudicavitque Israel in diebus Philistim 20. annis.*

AD LITTERAM.

Dub. 29. *An fuerit iudex Samson? quanto tempore iudicaverit? & an solùm 20. annis? & qua ratione? dissimili ab alijs Iudicibus? & an fuerit gigas?*

Conclusio asserit primò, *fuisse Iudicem vnum ex Israelitis: & iudicasse per viginti annos tantùm, non per quadraginta.* Ita Interpretes communiter. Probatur ex isto loco, & ex sequenti capite 16. vers. 31. vbi post mortem relatam dicitur dissertè, iudicavitque Israel 20. annis, & pertinet ad Scripturæ veritatem sinceritatem, & candorem, non fingere rationem iudicandi pro isto in alia significatione, quàm in alijs iudicibus. Et quamuis instet difficultas ex alijs translationibus numerantibus 40. annos, non ob id recedendum, sed laborandum ad explicandam difficultatem, & si sit aliqua confusio annorum, diligentia illustranda est, de quo statim. Secundò, quia PP. illud Genes. 49. *Dum iudicavit populum suum*, ipsi applicant, & ita annumerant inter iudices, & re ipsa de ipso sunt, & miratur Genebrardus lib. 1. Chronologiæ voluisse expungere Samsonem à numero iudicum, & eius 20. annos, quibus iudicasse memoratur, &

meritò, nàm si in Scriptura sit aliquid perspicuum, non debet deseri, licet occurrat aliquid obscurum. Secundò asserit, quòd *licet quidam opinati sint quod* 40. vt Rabini in suis Biblijs, & alij **22.** *Nihilominus fortè bis* 20 *multiplicarunt in* 40. & iterationes, & repetitiones in scriptura nõ duplicãt, fortè occasio, quod hic, & capite sequenti in fine sint 20. repetiti, existimo tamen, quòd licèt bis repetantur, non sint geminandi, vt conficiant 40. Ita interpretes, qui dicunt 20. præsertim Serarius hic ad capit. 16. quæst. 34. Primò, quia eiusdem summæ iterata repetitio non conficit numerum nouum, cum solùm fiat ad firmandam memoriam. Secundò, nam vno ante natiuitatem incipit vexatio Philistęorum, quæ durauit 40. annis, vt supra dubio 1. à 19. instituitur iudex, ergo solùm potuit Iudicum durare vsque ad 39. quo vitam finiuit. Tertiò, nam si iudicasset 40. annis, post 19. ætatis iudicatura illius exerceretur ad ætatem 60. aut plus. In qua ætate non est verisimile diuertisse ad meritrices, & historia notat, paucis mensibus ante mortem diuertisse ad Dalilam. Cui accedit quod illi Rabini, qui aiunt ex Thalmud Hierosolymitano, in quibusdam Biblijs haberi iudicasse 40. annos, id non admittunt, nec amplectuntur, sed contenti sunt 20. de quo late Serarius. Cur autem semel numerati 20. hic, repetuntur capite sequenti, non alia videtur causa, quam ad obseruationem, & memoriam, vel quòd quia illis mirabiliora fecit facinora, quibus atoniti anxere Philistæi. Aliæ possunt videri apud Serarium. Tertiò asserit conclusio, *egisse iudicum, & principatum dissimili, & dispari ratione ab alijs iudicibus*, nam illi iudicium vindicatiuũ exercebant contra Philisteos, non per se, sed per milites, ipse tamen per se ipsum præliando, pugnando, & vindicando. An autem isti anni concurrerent cum primo oppressionis, & seruitutis dictum est supra dubio 1. Quartò asserit, *non fuisse gigantem nisi tropologice, qua qui præstat viribus, robore, & præstantia rerum gestarum solet vocari gigas.* Ita plures quos sequitur Serar. ibidem quæst. 35. Primò, quæ id notum sit sacra Scriptura, sicut de Goliath, & alijs. Secundò, quia erat terrori, & formidini suis aspectus ciuibus Philistinorum, quoties ingressus est ciuitates eorum. Tertiò, quia si non esset communis staturæ omnium, non instarent Dalilæ, vt indagaret, in qua parte corporis sita esset vis mirabilis, sed opinarentur, quòd in corporis vastitate. Quartò, nam quæsisset in amicam, aut vxorem, similem sibi giganteam fœmeninam, nec illa, ita imparem appetisset.

Quin-

Quintò, nam vires inditæ erant miraculosè datæ, ad quod nihil refert magnitudo, aut exiguitas corporis. Magna, sed in exiguo regnabat corpore virtus. Vltimò, nam oppositæ sententiæ fundamentum ex Talmudico, Rabino, quòd si non esset gigas vastitate corporis, vt inter humeros haberet distantiam, 60. Cubitorum non posset, illas deferre latissimas portas ciuitatis. Nam sæpè plures deferunt onere humeris latiora. Et vna alteri imposita, potuit facilius deferri.

Secundò arguitur, nam amplexu duarum columnarum, quibus innitebatur amplissimum tẽplum capiens in tecto 3000. hominum, diruit illud, sed duæ illæ columnæ erant ita distantes, quòd non potuerunt complecti, nisi amplexu brachiorum gigantis ergo.

Respondetur in textu dici amplexasse ambas columnas, alteram dextra, alteram sinistra, sed non dicitur esse distantes, quia poterant esse parum distantes, & illis dirutis, dirui alias cum templo.

AD MORES.

Quòd *iudicis est exercere duo munera l berare innocentem, damnare reum, prospicere bono publico, & auertere malum publicum.*

Quòd *potiùs meretur nomen patris, quam iudicis, qui præcipuè incumbit bono suorum.*

Quòd *solus ille optimus iudex, qui inducitur, & mouetur impulsu Spiritus Sancti.*

TEXTVS.

Ex cap. 16. vers. 19. *Abiit in Gazam, vidit ibi mulierem meretricem, ingressusque est ad eã in ciuitate Gaza Philistinorum.*

AD LITTERAM.

Dub. 30. *Quæ ista vrbs Gaza? & an ingredi ad meritricem sit fornicaricam ea, an agere alterius negotij causa? & an ibi peccauerit Samson meretricando?*

Conclusio asserit, primò, quòd *Gaza est vrbs celebri, amplo, munita, & portuosa ad mare Mediterranæum*, & propter litteram guturalem hain à qua inchoatur etiam Gaza, & ciues Gazæi. Secundò asserit, *vsitatam esse in scriptura phrasim, ingredi ad meretricem pro fornicare cum illa.* Genes. 16. *Ingredere ad ancillam meam, si fortè ex illa suscipiam filios.* 2. Reg. 3 *Cur ingressus es ad concubinam patris mei*, & in re tam clara sufficiant dicta ex innumeris. Tertiò asserit, quod *peccarit Samson mortifere fornicando cum illa.* Ita interpretes communiter, licet alij excussent, sed veritas est præ-

po-

ponenda. Probatur, nam ausus est ingredi ciuitatem istam Philistinorum animo explorandi, per semet ipsum, quod solent alij duces per alios, ementito habitu, aut despiciens periculum vidit in limine, aut fenestra domus mulieram meretricem, aut scortum, non cauponariam, vt statim, & iniecit oculos libidinosos præ inuenili lasciuia, & petulantia, in mulieres Philisteas, & captus est in oculis eius. Ingredi autem ad meretricem, vt constat significat in scriptura fornicari, aut meretricari, ergo fornicatus est Samson. Confirmatur, nam si fœmina ista esset cauponaria, cur scriptura diceret mulierem meretricem, sufficeret dicere vidit mulierem, nomine, autem meretricis scortum significatur. Et dum appellatur meretrix in veritate accipiendū, nisi aliud obstet. Eadem difficultas, est de illa Raab, quæ excepit exploratores, quæ opinatur à quibusdam cauponaria, fortè fuit vtrumque, quod non semel contingit, excipere hospites in domo, & in lecto. Cum ergo dicitur vidit mulierem meretricem, & ingressus est ad eam, non obscurè significatur ex visu concupiscentiam concepisse, quæ peperit peccatum contra præceptum, non fornicandi. Quo amisit gratiam habitualem, non gratias gratis datas, compossibiles cum illo, & ita non amisit fortitudinem alligatam capillis.

AD MORES.

Quòd *cauendus est aspectus inordinatus faminarum, præsertim in flore iuuentutis, nam aspectus, & consensus sæpissime sunt connexi.*

Quòd *facilis est accessus ad fœminam meretricem, sed difficilis recessus ab ea.*

Quòd *ex concupiscentia antecedenti exponitur inhonestus ad pericula vitæ, & fortunarum.*

TEXTVS.

Vers. 2. *Quòd cum audissent Philistini intrasse in vrbe Samsonē, circumdederunt eum, positis in porta custodibus, vt mane occiderent.*

AD LITTERAM.

Dub. 31. *Quas insidias machinati sint Gazei ad capiendum Samsonem intra domum meretricis, & mœnia ciuitatis?*

Conclusio asserit, *in textu contineri, licet conglobatè, & licet eas sic distinguere.* Nam primò ex textu, *circumdederunt eum*, & potest esse duplex sensus. Primus quòd circumirent domum in qua dormiebat, quod probat Abulensis, vt exire volentem inter

terficerent, vel quod cives cum Magistratibus circundarent circum circa muros ciuitatis ad matutinam lucem, vt vrbe exiturum circundarent, vel adhibitis custodibus ad varias vrbis portas: præsertim ad eam, qua erat ingressus, & qua exiturum sperabant. A qua via ad Iudæam, & Tribum Dam, & sine vllo clamore, aut strepitu bellico, ne insidias posset suspicari, aut subodorari, potiùs quietum reddere cum illa nocte, nihil sentiret contra se tentatum, aut domum vbi degebat. Et ex improuiso incideret in spectantes, præparatos, sed ipse præuenit tempus, & in mediæ noctis silentio surrexit, relinquens illusos insidiatores: forte matutinos vigiles, & euasit deferens portas ciuitatis cum sera in verticem montis.

AD MORES.

Quòd *ingenuæ sagacitatis est cretizare contra Cretensem, & vulpinari contra vulpes.*

Quòd *validius robur est diuinum adiutorium, quam humana vigilantia.*

Quòd *facile est Deo comprehendere sapientes in astutia eorum.*

TEXTVS.

Vers. 3. *Apprehendit ambas portæ fores cum postibus suis, & sera, impositasque humeris portauit ad verticem montis.*

AD LITTERAM

Dub. 32. *Quando, & quas portas baiulauerit mirabiliter Samson humeris suis, an domus in qua dormiebat, an ciuitatis Gazæ?*

Conclusio asserit, primò quod *in media nocte ad quam dormiuit.* Vbi vox dormiendi, hic habet significationem de somno, quòd surrexit post venerem, quo expergefactus, vel præsentiens insidiarum inditium, vel suspicatus prudenter, periculum fortè iminens, vel quod satius est à Deo expergefactus, & præmonitus apprehendit ambas portæ fores, quod constat ex textu. Secundò asserit, quòd *apprehenderit ambas portas non domus, sed ciuitatis Gazæ, cum sera qua claudebatur cum postibus suis, & impositas humeris vsque ad verticem montis, qui vocatur Hebron.* Ita interpretes, nam quamuis peccauerit mortaliter fornicando cum meretrice, amisit gratiam gratum facientem, incompossibilem cum mortali, non gratiam gratis datam fortitudinis, quæ alligata erat Nazaræatui, id est comæ intonsæ abstinentia à vino, & alijs obseruantijs. Fornicatio autem cum non tol-

leret

leret Nazaræatum, nec tollebat fortitudinem, & ita potuit pulsare vehementi impetu, vel manibus euellere cardines, postes marculos, fores, seras, aut vectes, & solus portare, quod multi robusti vix possent. Mirum robur mortalibus. Et vaiulauit ad plurimam distantiam. Nam à Gazà ista vrbe maritima distabant montana, quæ respiciunt Hebron, penè septem miliaribus germanicis. Vt aptè prosequitur Serarius, & plane textus ipse loqui videtur de portis, nõ domus diuersorij, sed ciuitatis Gazæ. Nam videtur loqui relatiuè, ad portas ciuitatis, numero præcedenti relatas. Quidam retulerunt ad fortitudinem giganteam, existimantes fuisse gigantem, & distare vnum humerum ab altero 60. cubitis, quòd displicet cunctis interpretibus, quia sita erat fortitudo alligata capillis lacinioſsis, non corpori gigantęo.

AD MORES.

Quòd *quilibet aggreditur ardua facinora, pro impulsu boni sanguinis, & optimi originis.*

Quòd *mirum valdè, quòd amissa gratia animæ, non amiserit gratiam fortitudinis, corporis, nam deserentem diuinam legem deserit valor, & fortitudo ad facinora, & prælia.*

Quòd *insolitum, & rarum est in re litteraria, & militari, viro illustri, non coronari sui memoriam illustri facinore posteritati commendari.*

TEXTVS.

Vers. 4. *Post hæc amauit mulierem, quæ habitabat in valle Sorech, & vocabatur Dalila.*

AD LITTERAM.

Dub. 33. *Qualis hæc mulier nomine, quam amauit Samson? qualis gente, & qualis conditione? an fuerit vxor, an meretrix, & concubina?*

COnclusio asserit. Primò, *vocari nomine Dalila, non verò Dalida*, vt Mendosi quidam codices Latini, & Græci contingit Mendum in Hebræo, ex detracta eminenti parte, lamet, qua remanet in Dalet, similiter in græco apud Serarium, qui probat, sic aptè vocatam, siue ab ortu, siue ab euentu, quo infirmauit robur Samsonis, & opera. Quod prosequi, non vacat. Asserit secundò, *fuisse de gente Palæstina, non Iudæa.* Ita Iosephus, Liranus, Abul. Perer. & alij, quos sequitur Serarius ibidem quæst. 5. Primò, nam textus notauit fuisse Philistæas mulieres, quas adamauit Samson, & ita eodẽ philo, credi potest, ista eiusdem generis, quandiu non excipit illam. Secundò, nam ratio Caietani in contrarium, non est satis efficax, vt deseratur sententia communis, putat enim

enim fuisse Iudæam. Primò, quia non appellatur Palæstina, & inuerti potest in eum, quia nec appellatur Iudæa. Secundò, ex eo quòd dicuntur venisse ad eam satrapę Philistinorum, non suæ gentis, nam non semper dicitur venisse Principes eius gentis, ad quos venitur, nec alterius, sed generatim Principes ciuitatis. Nec tertiò, quo probat fuisse Iudæam, quia non solebat dicere, nisi Philistim super te Samson, quando excitabat eum, & si esset Palestina diceret nostri Philistini super te Samson. Nam plus habet gratię illa concisio vociferationis ad inuestigandum, quid excitatus subito machinaretur, & molliretur. Tertiò asserit, *verius esse fuisse concubinam, & meritricem, non vxorem.* Ita interpretes communiter, licet nõ ignobiles teneant oppositã. Sunt pro nostra insigniores, & PP. apud Serarium ibidem, & Cornel. Primò, quia meretritium tota historia præsefert. Amauit inquit mulierem, & non dixit vxorem. Secundò, nam ex v. 5. constat venisse ad eam Principes Philistinorum fidentes suasuros spe lucri, quòd expiscarentur, in quo esset secretum virium, vt vinci, & occidi posset, & si esset vxor, id non agressi fuissent, nam de coniugali amore, & primigenio id incptè speraretur. Sed tentare, sunt ausi spe lucri, nam leui prætio cõduci potest meretrix, quæ quærit quæstum, & lucrum corpore, ad proditionem, & occisionem amisij, nam ipsæ, vel non amant amasios, sed pretia, vel nimis frigidè, quod auro superari potest. Tertiò, nam ipsa instio Samsone admittebat domi suæ Philistæos secretò ad insidias, quærẽtes accasio nem ad proditionem, & si Samson duxisset vxorem cellari non possent in domo, quia marito omnis patet domus, omnis peruia. Accedit, quòd si esset vxor hãberet ancillas, & famulos in domo, inter quos secretum cellari non posset, occultandi insidiatores, quim aliquis defferret notitiam, & si celebrasset nuptias mirum sanè, si non atulisset aliquem propinquum, aut propinquam gentis suæ, qui audiret, aut videret, & indicaret Samsoni. Quartò, nam si esset vxor duxisset eam Samson in domum suam, gentem, aut patriam, & non maneret ibi tanto tempore. Vltimò ex Abulensi, quod sciẽtes Principes Philistinorum, quòd Samson veniret frequenter ad eam, quod indicat accessum interruptum ad scortum, non assistentem cohabitationem vxoratorum.

Arguitur pro opposita sententia ex sacra Scriptura, & PP. nam hæc mulier, non appellatur meretrix, vt numero 1. Gazæa, sed communi voce mulier, & fortè, vt in tam brebi distantia assignaretur distinctio, quòd illa erat meretrix, non ista. Deindè Chrisost. Ephen. & alij PP. apud Serariũ,

&

& Cornelium appellant vxorem. Secundò ratione, nam fuit mansio diuturna Samsonis, & cohabitatio, blanditiæ, vt dormiret su genua, in sinu illius, quæ signa sunt coniugij. Nam non maneret ibi ita securè, & publicè in tanta vicinorum probatione. Vltimò, nam pluries visitata est mulier à Principibus Philistinorum, qui instabant, quòd deciperet eum, & diceret secretum fortitudinis, & si esset scortum Samsonis, non deberent permittere concubinatum, ergo fuit vxor.

Respondetur ad primũ, quòd scriptura, quę dicit mulierem, non negat meritricem, nec affirmat, sicut de illa Gazæa. Et sæpè in scriptura solent subticeri verba improperiosa, sed nec dicit vxorem, ex circũstantijs tamẽ prædictis, non obscurè colligitur fuisse meretricem, & concubinam. Ad PP. dici potest fuisse illius opinionis, & non damnasse oppositam, à qua sunt alij PP. Ambrosius, Hieronymus, & alij apud Cornelium ibidem, pro nostra sententia. Ad secundũ, illa signa interdum coniungium inutum, inter dũ cõcubinatũ designare. Ad vltimum, quod illi Principes concubinatum dissimularent, vt astruerent insidias, vt caperent, & occiderent.

AD MORES.

Quòd *fœmina est ruina pernitiosa plusquam vincula, exercitus, & leones. Cum his fortior molescit in amplexu Dalilæ.*

Quòd *fœmina lasciua est ad capiendos amantes instrumentum captiosum, sicut laqueus venatoris, & rete piscatoris.*

Quòd *pericula incontinentiæ nullum reddunt cautum ad vitandum relapsum, potiùs infundunt propensionem.*

TEXTVS.

Vers. 5. *Venerunt ad eam Principes, & dixerunt, decipe eum, disce in quo habeat fortitudinem. Si feceris dabimus tibi singuli mille, & centum argenteos.*

AD LITTERAM.

Dub. 34. *Qui, & qua ratione, & quo fine Principes tantæ dignitatis, venerint ad mulierem meretricem, ad scrutadum arcanum, & præmio coegerint?*

Conclusio asserit. Quòd *quinque Principes*, & Satrapę, Acaron, Ascalon, Azotus, Gazà, & Gelt, dicti tales à præcipius his quinque vrbibus, in quas quinque Satrapias erat diuisa, & distributa ditio, & Principes Philistinorum,

rum, vt gererent aristocratiam potius, quam Monarchiam, hi tantæ dignitatis venerunt ad meretriculum. Primò, quia stimulabat valdè publica vtilitas, vt illius causa, non dedignarentur se dejicere ad quoduis humile, & vile, & industria aggressi sùt capere opera dolosa fœminæ, vt aptissimi instrumenti, quem vinculis, compedibus, funibus, multitudine hominum, & clausstris vrbium comprehendere, & occidere, non valuerunt. Nec omnino palam, sed clanculum, ne machinatum olfaceret Samson, nec semel, sed sæpè adierunt meretricem. Secundò *asserit* finem fuisse, quòd Dalila scrutaretur, in qua parte corporis situm esset robur Samsonis, quod supra vires humanas, neruorum, musculorum, osium fortissimorum, diuinitus videbatur abextrinseco conceſſum, & vlteriore fine optasse indicatur textu, vt superare, vincere, & humiliare possent, & redigere ad seriè, & debilitatem cæterorum hominum, ac si non cogitarent de ipso occidendo, vt facilius conciliarent meretricis operam, & ne deterrerent, si mentem occidendi proponerent. Tertiò *asserit* accessisse fidentes deceptioni propositæ ingerere medium ex ingenio muliebri, cui mille decipiendi artes ad indagandum occultum, expectorandum secretum. Quartò *asserit*, accessisse propositio præmiò argenti & auri sacra fame, quæ mortalia pectora cogit auidam, & solicitam redderent vers. 5. dicendo singuli dabimus tibi mille, & centum argenteos, erant enim quinque Principes, & singuli obtulerunt 1100. argenteos, qui multiplicati per quinque conficiunt ingentem summam, nam quilibet argenteus continebat, quatuor regales Hispanos, aut quatuor Iulios Romanos. Nec displicet, quòd inquit Arias obtulisse nomine quinque Prouinciarum, illa quinque millia, & illos 5. Principes nomine proprio ad auxisse quingentos, nomine cuiuslibet 100. Quæ improbæ meretrici cupidæ, & lucri auaræ, quæ corpore quæstum quærebat afferret vim maximam.

AD MORES.

Quòd *Principes, & superiores humilia aggredi pro bono publico, non indecorum, sed glorioſſum, secus pro bono priuato, pro quo solum honorifica, & ardua.*

Quòd *argentum, & aurum rapit humanam voluntatem, & infert dulcem tyrannidem, & violentiam ad difficilia comparanda.*

Quòd *idolo auri, & argenti adhuc turpis faciei, vix est vllus mortalium, qui non exhibeat adorationem, solus Deus homo potuit negare,*

re, & repellere ad eruditionem nostram.

TEXTVS.

Vers. 6. *Dic mihi obsecro, in quo sit tua maxima fortitudo? cui respondit Samson, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 35. *Quot, & quales insidiæ dolosæ Dalilæ? & quæ ellusiones Samsonis? An passus omnes in vigilia, aut somno? An peccauerit mentiendo, & inebriando, & quantæ insidiæ, quam ingens pondus, qua victus manifestauit secretum?*

COnclusio asserit, primò quòd *Dalila est agressa quatuor insidijs explscari secretum, & tres priores sunt ellussæ, & superatæ à Samsone, cauto dolum dolo reppellendo, sed ellussus, & superatus est.* Nam cum fuisset olim proditus ab illa fœmina Thamathæa, in principio priorum trium iudicauit, non esse tutum mulieri committere secretum, ipsa tamen excipiebat venientem Samsonem suauissime, & amantissime, tota florens odorifera, splendidè nittens, verbis blanda, cibis paratis demulcens, vt miser liquaretur. Et cum instaret dic mihi obsecro, in quo sit maxima fortitudo tua. Tribus instantijs? & primæ respondit ille, quòd si ligaretur septem funibus ex neruis taurorum contortis. Ad secundã, quòd si ligaretur nouis funibus, qui nunquam fuerint adhibiti ad vllum opus. Ad tertiã, quòd si septem crines sint plexi litio ad clauum fixum terræ. Et Satrapę Philistinorũ subministrarẽt prædoniti à fida ancillula expetita instrumenta. Ac milites in conclaui latentes prædoniti, ne exilirent, nisi inclamati, & vocati, & ipso vincto prædictis cordis voluisset experiri, an esset infirmatus, sicut cæteri hominum, & inclamasset tribus occasionibus Philistini super te Samson, & ille surgẽs facillime disruperit vincula, & illa maneret ludificata, vt non euocauerit satellites latentes. Deniq; cum Dalila mansisset quæribunda de triplici illusione, vltimum põdus adiecit instantiæ, vt secretum expiscare tur à Samsone illusore ex arte proponendo numerum, & qualitatem nerborum contortorum, funium numerum, crinium septem complicationem, & affixionem ad clauum in terra, aut pariete, vt colorem credibilitatis doret responsis: & cum venisset paulatim ad caput, cum lapsus erat propior, & in procinctu manifestatio, instat illa maiori nixu, quarta insidia. Eius magnitudo, & pondus acreuit, ex his quatuor, quòd cum diceret amare, non probasset opere, & reuelatione clausi secreti in pectore, cuius communicatione, & notitia probatur vis amoris. Secundò ex improbatione tri-

triplicis deceptionis, & mendatij, & vocari passus mendax à meretricula, qui à nemine ferret mendax vocari. Tertiô ex importunitate quærimoniarum, repetitione, per multos dies assiduitate, & diuturnitate. Quartò ex intensione, & præsura. Quintò, ex denegatione blanditiarum, & lænociniorum, accessus, & thalami, quibus adeo defecit afflictione, & angustia. Malet potius vitam prodigere reuelando secretum, quàm Dalilam displicentem habere, & vinci se tandem passus est.

Concluſio asserit secundô, *non fuisse passum omnes ligaturas insidiosas dormiens, sed solùm insidiam insidam vltimam abrasionis capillorum, sed vigilem, & spontaneum fuisse ligatum, imò dictante Dalila vinciendi modos, imò iludentem, & ridentem, sed præseferentem pati periculum, vt daret experimentum amoris.* Ita quidam apud Serarium ibidem. Et suadeor primò ex ipso contextu, vbi nihil est de somno præuio ad vincula insidiosa, solùm ad quartam præmissus est somnus in sinu Dalilæ, vers. 19 & fortè soporatio per soporifera, & somnifica data à Scorto in cibo. Solùm in tertia insidia meminit textus, quòd clamante Dalila, Philistini super te Samson. vers. 14. *Surrexit de somno*, quod solùm probat postquam vigil passus est ligari. Surgens de somno rupit vincula, ac si post ligationem voluntariam dedit operam somno fidens viribus, & debilitati vinculorum, quibus dabat experimentum amoris, & dolo dolum repellebat. Verisimile tamen est Dalilã dedisse soporifera ante ligationem, vt excitando à somno deciperet Samsonem, & daret experimentum amoris, quod excitabat imminente periculo inuasionis Philistæorum, quos tamen ipsa non vocabat quousque experimento videret non posse disrumpere vincula, ne latentes satellites conijceret in excidium vitæ. Altera pars de quarta, & vltima insidia, probatur, nam cum Dalila iam vidisset, vt ait textus vers. 18. quòd confessus esset rei veritatem, & quòd aperuit cor suum, quòd si rasum fuerit caput deficeret fortitudo, & credidisset quòd in vigilia non pateretur radi capillos, fecit eum dormire super genua sua, & in sinu suo reclinare caput, vt inquit vers. 19. & fortè dedit soporifera, quòd verisimilius est, quàm ebriasse vino, contra legem Nazaræatus, vt non sentiret quartam insidiam abrasionis capillorum. Nec sine illa graui soporatione auderet tonsor radere septem crines, id est septem cincinnos, in quos erat distincta cę saries, ne si defluęret sparsa velaret oculos, & faciem. Nam leonem adhuc dormientem timent animalia, & solùm Herculem dormientem inuadere auderent Pigmæi fabulosè, & ita tonsor ad id citatus, & vocatus, ac etiam

prætio conductus ausus est radere capillos dormientis Samsonis, & Dalila clamante, & abigente è sinu suo, Philistini super te Samson inquit, vers. 20. quòd de somno expergefactus surrexit, & existimans posse inuadere Philistæos, inuenit se infirmum, & inermen, sicut cæteri homines, & captus est, ergo solùm istam quartam insidiam de capillationis passus est in somno, non voluntariè, nisi in causa, qua aperuit secretum in quo essent vires alligatæ.

Conclusio asserit tertiò, *peccasse Samsonem saltim venialiter in tribus prioribus mendacijs, quibus mentitus est Dalilæ, dicendo, si septem funibus, &c.* Ita Abulensis, quem sequitur Serarius ibidem. Nam non licèt vnum mendatium ne adhuc otiosum, iuxta August. lib. contra mendatium, licet licitum esset verbis æquiuocis, aut ambagibus cellare, quod quis non tenetur aperire, an liceat vti in bello, aut alibi stratagemate, aut dolùm dolo retundere, alterius loci est, & quamuis liceret Samsoni. Mentire nunquam licuit, aut dicere falsum contra mentem.

Conclusio asserit quartò, *non fuisse inebriatum Samsonem in vlla ex quatuor insidijs, licèt aliàs esset soporatus somnifico papauere, aut quouis alio medio.* Licèt non indocti oppositum sentiant apud Serar. ita Abulen. & alij. Primò, quia in Scriptura non fit vlla mentio vini, aut alterius liquoris inebriantis, aut temulentiæ, & fieret, si infregisset istam legem Nazaræatus. Secundò, nam licet Iosephus, & plures PP. dixerunt ebrium, intelligi non debet de ebrietate propriè dicta, sed pro saturitate immoderata, aliquantulum cibi, ac potus. Quòd si vrgeas Deum permisisse incidere in somno, & amittere comam, & fortitudinem, quia bibit vinum plus æquo contra legem Nazaræatus, vt Basil. homil. 1. & 2. de ieiunio. Ad simul, atque ebrietas, ac scortatio corripuit hominem, captus est ab hostibus: dicã quod dictum, vel PP. in ea sententia non damnasse oppositam. Fateor Cornelium attigisse, & retulisse sententias, & Serarium pondere authoritatis non sucubuisse. Alia, pro sentẽtia oppositæ sunt leuiora, vt quòd sine Cerere, & Bacho friget Venus, nam vino se ingurgitasse, non facilè credo, cum Serario, & alijs.

AD MORES.

Quòd *præstantia virtutis acuit emulationem, inuidiam, concertationem, & quo maior maiorem.*

Quòd *viles pecunijs, iniurijs, & molestijs inducuntur, & obligantur ingenui beneuolentia.*

Quòd *est fidelis iniurioſſimi capere experimẽtũ de diuina perfectione,*

ne, aut humana, sed cupiditas pecuniæ omnia aggreditur.

TEXTVS.

Vers. 17. *Si rasum fuerit caput meum, recedet à me fortitudo mea.*

AD LITTERAM.

Dub. 35. *An in capillo intonso Samsonis vigerent vires, & quomodo? an per modum qualitatis permanentis, vel transeuntis, an vt causa physica, aut morali, vt in signo? & an in alijs membris, & corde, vt in subiecto? & an perdiderit, quia sua culpa amisit cæsariem? alias sine culpa non amissurus, vt si morbo, aut alia causa?*

Conclusio asserit primò, *fuisse in capillis.* Ita Interpretes. Primò, nam interrogatus pluries in quo illæ essent, & toties occultasset, vltimo aperuit, quòd in capillo, ita vt si rasum fuerit caput imbecilis redderetur, sicut cæteri hominum, vers. 17. Secundò, nam rei euentus demonstrauit, nam raso capillo, rasæ etiam sunt vires vers. 20. & renato capillo renatæ sunt vires, & ita alligatæ erant capillis intonsis, vt si nõ raderẽtur culpabiliter, non amitterentur vires in perpetuũ, sed pro illa vice quousque renacerentur.

Conclusio asserit secundò, quòd *fuit qualitas permanens, non cito transiens ista mirabilis fortitudo supra vires humanas.* Ita Abulen. quem sequitur Serar. Cornel. & alij. Primò, nam licet in Scriptura dicatur, quòd irruebat in eum spiritus Domini cum aggrediebatur faciuus aliquod heroicum, solùm indicat Dei instinctum nouum, nouumque animum, & impetum ad illud audendum, non in illo non fuisse per modum qualitatis permanentis. Secundò, nam comæ intorsæ erat aligata ex pacto Dei, quandiu iugiter aleret comam, vt in animo illa, vt signo protestatiuo profiteretur Nazaræatum, sed capillus intonsus habebat permanentiam, ergo æquum erat, quòd haberetur illa mirabilis fortitudo supra vires humanas per modum qualitatis permanentis à Deo concessa. Nam permanente coma permanebat ipse Nazaræatus.

Conclusio asserit tertiò, *fuisse in capillo non tanquam in causa physica à qua deriuaretur in brachia, pedes, & cætera membra, sed vt in causa morali, & tanquam in signo, & symbolo initi pacti, gratiæ, aut doni à Deo concessis.* Ita Interpretes. Prima pars probetur primò, quia in capillo Samsonis non erat mirabilis illa fortitudo supra vires naturæ, vt capillitium, vel esset subiectum, in quo resideret illa qualitas permanens, aut vt in fonte principio, & causa, quæ redderet illum, ita fortem, nam si cæsaries, esset causa

phyſicè dans robur ille eſſet robuſtior cæteris, qui capillos haberent longiores, ſed hoc non, quia omnes Nazaræi habentes comam prolixam eſſent fortiores alijs, adhuc Nazaræis non habentes, ita prolixam, imò non Nazaræis, non alentibus comam, imò Nazaræi temporales eſſent fortiores ſe ipſis poſt tranſactum Nazaræatum. Secundò, nam ſequeretur, quòd fœminæ alentes crines prolixas eſſent fortiores, quam viri tonſi, quòd eſt ridiculum. Tertiò, nam non deberent tonderi valuli, mollitores, & ſimiles, qui incumbunt operibus, quæ requirunt robur corporis: & tonderi non deberet ille, qui optat virium incrementum. Vltimò, nam viri olim tõſi fortiſsimi, præter Nazaræos, & his temporibus plurimi in quibus titilat iſta nouitas alendi crines, prolixiſsimè capillati ſunt valdè infirmi, & effeminati, non ergo erat robur in capillo, vt in cauſa phyſica, præſtante fortitudinem, & robur ſubiecto, præſertim cum non in capillo eſſet, vt in ſubiecto: tum quia potius in lacertis, brachijs, aut membris deſtinatis ad exercitium dilacerandi leones, Philiſtæos, vincula, baiulandi portas, & onera: tum quia dici ſolét validæ, & robuſtæ manus, pedes, membra, non debiles capilli, præſertim cum capillus non ſit pars, ſed ſuperfluum excrementum corporis, quod iam tranſit in ornamentum. Secunda verò pars, ſcilicet, quod fuerint in capillo, vt in cauſa morali, & ſigno pacti initi. Primò probatur, nam hoc donum dedit Deus Samſoni cum pacto, & fœdere, vt Deus ei adeſſet, ſi ipſe perſeueraret in coma intonſa, ſigno exteriori Nazaræatus, vt tamdiu vires vigerent quamdiu ſine culpa illi non deeſſet illa cæſaries, & quia culpa ſua, qua reuelauit ſecretum Dalilæ abraſa eſt, ideo abſtulit Deus illud donum qualitatis, & robur fortitudinis ex ſui corporis membris. Et ita ſignum illud Nazaræatus ex Dei ordinatione dicitur cauſa moralis fortitudinis, quatenus exiſtentia illius ex adiuncto fœdere mouebat Deum, quandiu inſigne religionis gerebat, conferre vires lacertis manibus, & alijs partibus corporis. Et ita capillis adſtrictus, non vt ſubiecto in quo reſiderent, quia erant in membris, vt in ſubiecto, in cęſarie intonſa, vt in ſigno.

Concluſio aſſerit quartò, *non fuiſſe in capillo, vt in ſubiecto.* Nam illo ſublato auferentur vires, ſicut ablato oculo, cui ineſt vis videndi aufertur viſio, quouis modo ſit ablatus, defluxione, morbo, eruitione, ſed ablato capillitio ſine culpa non tollerentur vires, quia dabantur propter internam illam voluntatem proteſtandi Nazaræatum interſa coma vt ſigno, non propter ſignum,

ſed

sed propter rem significatam, non propter cęsariem, sed propter interiorem animi religionem constantem, licet mansisset sine capillis inuoluntariè.

Vltimò asserit, *vires fuisse in capillis, & cæsarie intonsa, non vt in conditione sola sine qua non.* Primò, nãsine illa cęsarie essent vires, vt si infirmitate alopetia, aut alia causa inuoluntaria, sine culpa amitteret cęsariem. Confirmatur, nam effectus causæ, aut conditionis sine qua non, solet esse talis, vt si absit causa, vt conditio non ponatur ille effectus, sed in præsenti poneretur adhuc, si deficeret cæsaries, dummodo esset inculpabiliter ergo.

AD LITTERAM.

Dub. 37. *An vires Samsonis sint alligatæ soli comæ intonsæ? An alijs obseruantijs instituti Nazaræatus?*

COnclusio asserit, quòd *soli comæ intonsæ.* Ita Serar. & alij. Primò, nam textus vbique meminit de mirabili robore, & fortitudine, quam alligauit Deus tenui capillo. Secundò, nam si constitissent vires in capillo, & alijs ceremonijs, non satis respondisset Dalilæ, si rasum fuerit caput meũ, recedet à me fortitudo mea, vers. 14. sed deberet addere alias ceremonias sui instituti, nam ex vna seruandi cæsariem intonsam dici non potest intelligi cæteras à fœmina Ethnica ignorante, nisi ipse explicaret, & patefaceret, nam si in vna manifestata, censerentur & reliquæ, in vna violata censeren tur reliquæ violatæ, vt abstinentia vini tactu mortui, &c. Vltimò, nam voluit Deus solo cap illo alligare vili, & tenui, ne cogitaret à re, tam debili, & futili pendere robur, & ne sibi tribueret, naturæ lacertis, & mẽbris, sed Deo, qui id per Angelum, aut parentes reuelauit, aut interiori aflatu. Nec Abulen. authoritas tanti ponderis, cogit ad deserendam istam veritatem, vt vires perderet, si instituti cæremonias violaret, vt si sciens, & prudens biberet vinum gustasset vbas, tangeret mortuos sine Dei aflatu, quia in his, quæ colligi non possunt sufficienter ex scaiptura, soli standum experimento, nec facile alia admittẽda,

AD MORES.

Quòd *in capite Rege, aut Principe consistit virtus, & robur reipublicæ, vt si amittant, vel capillum boni exempli ruant boni republicæ mores.*

Quòd *Deus in vili, & exili capillo alligat dona sua, vt indicet esse dona sua solius, quæ præstant hominibus fortitudinem.*

Quòd *Ecclesiasticis, & Religiosis maximè incumbendunt minutissima status obseruare, nam in cæremonijs menutissimis stat robur religionis, & status.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Illa fecit eum dormire super genua sua, & rasit 7. crines eius.*

AD LITTERAM.

Dub. 38. *An Dalila inebriauerit Samsonem, vel solùm dederit soporifera in cibo, & potu, ad profundè dormiendum? ne sentiret detonsionem capillorum?*

CONclusio asserit, *non inebriasse, sed verisimile dedisse soporifera in cibo, & potu, illi non prohibito.* Iuxta dicta supra de alijs prioribus insidijs. Ita Abulensis, & alij primò, quia non facit mentionem scriptura vini, aut temulentiæ, & faceret, si violasset legem Nazareatus, prohibentem vinum, siceram, & liquorem inebriantem. Credibile dedisse soporifera, vt profundè dormiret, quia intendebat decapillationem in somno, & vtile erat ne sentiret rasionem, & expergisceretur.

Arguitur pro sententia asserente dedisse vinum, & inebriasse. Primò, quia in Sorch, vbi ipsa habitabat, erat generosissimum, & præstantissimum, & sine Cerere, & Bacho friget Venus, & Venus in vinis, ignis in igne furit. Iuxta Apostolum ad Ephesios 5. *à vino in quo est luxuria*, vt facitari solet à similibus mulierculis ad allendam liuidinem. Secundò, quia Iosephus vocat ebrium, & insinuant PP. præcitati, & ob id permittitur à Deo incedere in somnũ in quo perdidit comam, & fortitudinem. Respondetur tamen ad hæc nihil concludere, & non probare de facto bibisse contra prohibitionem, & consequenter in pęnam non fuisse permissum à Deo incidere in somnũ. Vocasse ebriũ Iosephum, & PP. intelligendum de ebrietate latiori acceptione, iuxta dicta dubio 34.

AD MORES.

Quòd *fœmina diaboli æmula in maiori quiete dissimulat, & celat maius periculum.*

Quòd *in vno vitio intemperantiæ, vt capite vitanda omnia.*

Quòd *fortitudo, & robur animæ in abstinentia, & ieiunio corporis consistit, & ieiunium est vera custodia ab incursu inimicorum.*

TEXTVS.

Vers. 21. *Quem cum apprehendissent Philistini statim eruerunt oculos eius, & tulerunt Gazan vinctum catenis, & clausum in carcere molere fecerunt.*

AD LITTERAM.

Dub. 39. *An Samson iam decapillatus sit captus à militibus? ligatus funibus, ferreisque catenis? excœcatus, & ductus cum ludibrio in Gazam? & coniectus in carcerem? & an in illo sit coactus molere in pistino? Quandiu fuerit? & an in illo pœnitentiam egerit?*

COnclusio asserit primò, quòd *iam decapillatus, & debilitatus sit captus, & ligatus funibus nerueiceis, & catenis, aut manicijs ferreis. Non ab vno, sed à pluribus militibus confluentibus, armis bene instructis.* Ita Interpretes. Primò ex vers. 21. *victum catenis*, &c. Secundò, nam vnus homo, etiam vulgarie roboris in damno iminenti grauis cruciamenti, aut discrimine mortis, non facilè capitur ab vno.

Secundò asserit, *fuisse excœcatum.* Constat ex vers. 21. vbi dicitur, *eruerunt oculos eius.* Secundò, nam in eo intendebant inutilem redere miserè excœcatum ad pugnam, vt si rediret fortitudo, non videret feriendos, & immunes, & securi manerent ab illo. Tertiò ab alijs, vt scilicet, qui oculis peecanerat, oculis plecteretur, & ambo cruerentur cũ dolore maximo, & cruciatu: vidit c. 14. v. 1. mulierem de filiab⁹ Philistinis, & voluit eam in vxorem: vidit Gazæ mulierem meretricem, & ingressus est ad eam: vidit in valle Sorech Dalilam scortum, & amauit eam, à qua insidiatus, & passus est extremam calamitatem, & ita oculi eruciati sunt in pœnam. Sed ista ratio moralis est.

Tertiò asserit, quòd *vinctus sit ductus in Gazam, cum cachinno ludibrio, plausu, & gaudio triumphantes de hoste capto.* Ad quem spectandum, & conspiciendum fuit concursus ciuitatum, & populotum, triumphatoribus gratias agentes & gratulationes: triumphato, & victo conuiciantes improperia, & contumelias, & irrisiones, & non fidentes ciuitatibus munitis per illas ductus est in remotissimam, & celeberrimam Gazam. Constat ex textu citato, *duxerunt Gazam victum catenis.* Secundò, nam ex tali facto intendebantur plura. Primò idolorum honor, quibus referebant victoriam Dei viro ignominia, & deducus. Secundò, vltio, & vindicta. Tertiò, vt in vrbem introducentes per illam portam auulsam improperarent, an auderet iterum exire? Quartò, vt videns domum meretricis dolorem duplicarent, & subsanationem, si non visu, quo erat priuatus ipsorum recordatione. En amittæ tuæ domus, aspice in eam, ne auertas oculos, en stat in foribus ornatissima. Vltimò,

quia illa ciuitas erat munitior, quo eripiebant ab illo ſpem euadendi, & in ſe augebant poſſeſsionis gaudium.

Quartò aſſerit concluſio, quòd *ſit cõiect° in carcerẽ in vinculis, æreis & calibeis.* Iuxta Hebræum in quo vox numeri dualis videtur ſignificare duo vincula alterum in manibus, alterum in pedibus adſtringendis, vt manicæ ferreæ, & compedes apud nos, ita tamen exprimit vincula noſtra latina, vt ſint adhibita in comprehenſione ante deductionem. Nam ait duxerunt Gazan vinctum catenis, ſed non abs re, quod ante impoſita ſint repetita, & innouata cum iniecerunt in carcerem.

Quintò aſſerit, quòd *in carcere coniectus ſit coactus molere, ſed verbum molendi hic exponitur dupliciter.* Primò, improprio, & obſceno, & impudico ſenſu, ita Rabiri priſtini, & moderni. Apud Hieronymum in cap. 47. Iſaiæ, verſ. 1. apud Liran. & alios, qui pro molere accipiunt coire, & agere venerea cum fœminis Philiſtinis, vt ipſe in eis ex ſuo ſemine gigneret alios fortes Samſones, qui redderent talionem Hebræis, & ab illis opprimerentur, ſicut à Samſone Philiſtæi. Sed apagè Rabinorum obſcęnitatem ſimilem illi, quam agreſtius eſt Rex Theſtium apud Polidorum lib. 2. Biblioth. qui filias quinque ſuppoſuit Herculi dormienti, vt repletæ Herculis ſemine ſibi procrearet nepotes Herculeos. Mitto alia ſimilia apud Cornel. & Serar. nam vis verbi molẽdi non cogit ad admittendã ſignificationem obſcęnam. Nec circunſtantiæ carceris vrgent: præſertim, nam iam erat viribus deſtitutus, & fortitudine, & robore ſpoliatus, & reditus ſicut cæteri hominum, & ita non erat optabilis eius genitura, & proles, vt fortis ex ægro. Ex imbecilli, alias generoſo equo, non eſt optabilis robuſta genitura, & proles. Potius timere debebant, quod infirmus infirmos innerbis innerbos, cœcus cœcos ederet catulos. Vel quòd filij inde nati vltores forent iniuriarum illatarum parenti, & haberent vltores, quos ſperabant fortes in Hebræos. Secundò, verbum molendi exponitur in veriori, & propria ſignificatione, vt accipiatur pro actione verſandi, & mouendi molas truſatiles circumgyrando in piſtrino, vt apud nos Taona. Quibus olim, & modo attritum eſt frumentum, ad quod olim cogebantur ſerui, inuiti, captiui, aut malefactores, & ſpontanei inopes pecuniæ cauſa. De quo plures humanitates authores apud Serarium ibidem quæſt. 19. qui cogebantur fungi vicem vilium iumentorum. Coegerunt igitur in carcere miſſerum Samſonem fungi vicem iumenti, quẽ inſtigabãt ad exercitiũ molendi, & atterendi triticũ ęrum

nis

nis virgis, & flagris, vt esset irrisui omnibus, ac ludibrio, sic flagellatus.

Sextò asserit, *fuisse in carcere aliquot mensibus.* Nã manssit necessariò, quousque capilli renasci potuerunt, vt fortitudinem recuperaret. Quidam aiunt, non fuisse tempus integri mensis, quod exegit in carcere, sed dũ monstraret experientia. Incipiunt crescere, & vix in secundò mense potuerunt renasci in illa prolixitate, quæ attingebat formam, & speciem cæsariei Nazaræalis, & ita opus fuit fere tribus mensibus. Licet caput germinarit, & germinandi, verbũ sit traductum à terra germinante herbas, & flores. Et ratione infirmitatis maciæi, & laboris in carcere celeritate pululauerint, sicut in ea longitudine, qua tonsi sunt, & quæ sufficiebat ad cæremoniam Nazaræatus. Nam lex, non exigebat, quod numquam tonderẽtur, quamtumuis excrescerent, sed posse impunè cum pertingerent sufficientem longitudinem, & excessus præscindi, alias pertingerent in prolixissimam, vsque ad pedes, per radicalem iuxtapositionem.

Vltimò asserit, *egisse pœnitentiam.* Primò, deduci potest ex v. 28. *Domine Deus memento mei, & redde mihi fortitudinem pristinam.* Secundò, ex PP. apud Serar. ex quibus probat quæst. 20. quòd egit pœnitentiam in corde suo coniiciens cæcitatem dolorẽ, & laborem, in mollitura mollendi, in pœnam suorum peccatorum Deũ permisisse. Et ita memor, vnde exciderit cũ dolore, & lachrimis veniam à Deo expostulauit, præsertim, cum sit perpessus illas molestias, & irrisiones, pro Dei populo: verisimile est in tanta aduersitate, & calamitate in se reuersum, & conuersum ad Deũ. Deus enim solet aduersis reducere ad se prædestinatos, in chamo, & freno maxillas eorum constringe, qui non, &c.

AD MORES.

Quòd *Deus solet interdum fugitiuos ad se reducere, molestijs, & calamitatibus*

Quòd *munus liberatoris sui populi ipsum deuixit ad sustinendas incommoditates personales, vt liberaret suos.*

Quòd *fides firma in Deum, non extinguitur laboribus, & ærumnis, potiùs accenditur eisdem aduersis.*

TEXTVS.

Vers. 23. *Principes conuenerunt, vt immolarent hostias Dagon, & epularentur, dicentes: tradidit inimicum in manus nostras.*

Vers. 24. *Quod etiam populus videns, eadem dicebat.*

Vers. 25. *Præceperunt, vt vocaretur Samson, & ante os luderet.*

AD-

AD LITTERAM

Dub. 40. *Quæ causæ Principibus, vt conuenirent ad sacrificandum Dagon? & quis Deus Dagon? & qui ludi fuerint, quos lusit Samson ad oblectationem Principum Philistinorum?*

COnclusio asserit, primò *triplicem inter alias causas*. Prima lætitiam publicam, & solemne festum, & hilare. Secunda epulandi illustri apparatu, & pompa, etiam imitante vulgo. Tertia sacrificandi causa Deo suo Dagon, & his festiuis colentes, eo quòd tradidit in manus suas inimicum Sãsonem adiuncta hilaritate, & communi congratulatione, quod probatur ex præcitatis versibus.

Conclusio asserit, secundò circa quis, & qualis fuerit Dagon, *fuit enim Deus Princeps Philistinorum idolum, instar Sirena*, habens faciẽ muliebrem, & ab vmbilico deorsum in piscem, in caudã vsque desinentẽ. Fauent, qui deribant Dagon à Dagà voce Hebræa, id est piscis. Quòd desinebat in formã piscis. Erãt enim Philistæi accolæ maris, & dabant operam piscaturæ, & ita fabricarunt Dagon, quasi præsidẽ piscationis. Licet alij dicãt habuisse caput piscis, & manus hominis. & alij dictum Dagon à voce Hebræa Dagã, id est frumentũ. Iuxta quod quidam censebãt esse Deum præsidem frumenti, qui dabat frumenti abundantiam, & messis copiam suis cultoribus. Alij deniq; pixisse variè virum, aut fœminam facie, & specie fœminea, vti erat Venus, & diserte, apud Serar. & Cornelium, ille hic q. 23. iste ad 1. Reg. 5. Vbi de de Dagon, ante arcam coliso, & perfracto manibus extensis, quòd latè prosequitur Serarius.

Conclusio asserit tertiò, quod *cum vino exhilarati essent Philistæi, eduxerunt Samsonẽ de carcere, & in risus, & cachinos petulantes, coegerunt ludere ante eos*. Cum periret fame, & siti fatigatas, & opere molendini perfractus, & puluere farinulæ volantis aspersus, & deformatus, non vt ederet, & biberet, & recrearetur, sed vt illos temulentos hilariores redderet, & oblectaret. Quo verò ludo, aut risus genere scurilio? Liranus, vult impingendo in parietes, & columnas, & cadendo in terram, quo risum, & chachinum in cæcum misserum excitabant, & sicut scuræ illudebant, quo præbebat illis materiã ridendi. Et miseria, cæcitas, & deformitas aliena risus excitabat. Alij volunt lusisse sustinendo alapas, flagelationes; & fustes, & patiendo quidquid illis inferre libitum erat, sic igitur ludebat, seu illis ludus erat, sustinendo depalmationes, dicta, subsannationes, cõputationes, & vexationes. Nam potentes inflati incalescente vino, id habent de more, post epulas his

his ridiculis ludis iocari. Alij quòd ludebat ante eos saltando ridiculè, eo genere saltationis, quod ab impuris nudis, & obscænis scortis, & scuris solebant fieri in foralibus. Vltimò, quod ludebant ante eos agendo personam morionis, aut scuræ, & ad id genus constituebant inter columnas sub fornice, vt sub arco triumphali, dum videbant victum, & se triumphantes, & illusione dicebant, quòd saltaret murũ, cum esset in compedibus, & alias similes subsanationes. Qui omnes ludi à varijs opinati comprehendi optimè possunt sub vno scilicet, quòd ludebat agendo personam morionis, quod apud nos aptè dicitur el bobo actiuè, & passiuè.

AD MORES.

Quòd *spolia in bello capta Deo vero, vt principali victori in templo sunt dicanda suspensa trophea.*

Quòd *inhumanitas insolens victorum in victos saturatorum in famelicos certissimum vaticinium exitialis cladis.*

Quòd *patientia, & sufferentia calamitatum in præsenti vita, thesaurizat honorem, & gloriam in futura.*

TEXTVS.

Vers. 26. *Qui dixit puero regenti gressus, dimitte me, vt tangam columnas, quibus eminet domus, & reclinare, & paululum requiescam.*

Vers. 27. *domus erat plena virorum, ac mulierum, circiter tria millia, spectantes ludentem.*

Vers. 28. *At ille inuocato Domino.*

Vers. 29. *Et apprehendens ambas columnas quibus initebatur domus.*

Vers. 30. *Concussisque columnis incidit domus super omnes, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 41. *An domus innitens columnis diruta à Samsone, fuerit templum Dagon? quot, & quales sint oppressi ex Phil stæis, & Samsone cum illis? & an se ipsum occidendo peccauerit? & an Sanctus, & vere martyr obtubuerit?*

Conclusio asserit, primò *fuisse domum profanam, & templum Dagon.* Ita interpretes Abul. Serar. Salia. quos sequitur Cornel. hic. Primò ex v. 23. Vbi dicitur, quòd in ea domo, vt in sacra conuenerunt Philistinorũ Principes ad immolandum hostias Deo Dagõ, in gratiarũ actionẽ ob victũ, & captum Samsonem. Et ibi idolis immolata comedisse, vt cũ Deo conuescì videretur si hostiæ immolabantur in templo. Secundò, nam domus priuata, non poterat esse tam ampla, & ita dispositа, vt caperet illa tria millia quæ confluxerant ad illud festum, & vi-

vid.ndum Samſonem ſudentem tum è feneſtris in ſolario eminenti, & cæteris inferioribus feneſtris, ſupra inferiores, & inferum vbi erant columnæ, quibus nitebatur,& incumbebat tota machina, vt Principes, & optimates præſertim antiſtites, & Sacerdotes eſſent in ſupremo ſolario tecto domus,& planiſsimo de more: alij verò in cæteris inferioribus contignationibus, in quibus erant feneſtræ, ita diſpoſitæ; vt videri poſſent in inferna parte domus.

Concluſio aſſerit ſecundò, *eſſe oppreſſos Principes Philiſtinorum, & optimates, qui confluxerant ex varijs ciuitatibus: viros, fœminas, ſenes iuuenes, infantes, & puellas, qui confluxerunt ex tota Palæſtina, cum Antiſtibus, & Sacerdotibus, & ipſe Deus Dagon, & tandem ipſe Samſon.* Primò, ex textu v. 23. Vbi dicitur quot Principes Philiſtinorum, ibi conuenerunt, & verſ. 24. quòd etiam populus, in quo erant viri & fœminæ, ex verſ. 27. etiam conſtat numerus circiter tria milla vtriuſq; ſexus conueniſſe etiam: infantes, & puellas id probat, quòd difficile diuelluntur à matribus, præſertim in feſtis, & ſpectaculis publicis. Similiter corruiſſe Dagon, eius aram, & comminutum in fruſtra, cui immolabant hoſtias, conſtat ex verſ. 23. & tandem, quod ipſe Samſon oppreſor fuerit oppreſus, conſtat ex verſ. 30. Vbi ait, *moriatur anima mea* cum Philiſtinis, quæ mori dicitur, cum non ſit mortalis, ſumpta per Sinodochē, præcipua parte, pro toto homine, qui moritur, aut quia non in ſe, ſed quoad viuificandum in ſeparatione moriatur: quatenus, non vlterius erat viuificatura corpus, & ex eo quòd adijcitur, plures interfecit moriens, quam viuus. Vltimò, nam verbum illud moriatur anima mea, importat præces efficaces, quibus annuit Deus, quod meritum erat heroicum, dare vitam pro vita ſuorum, & erat bene diſpoſitus, iam pœnitens, & in amicitia Dei, & raptus eſt ne malitia, &c. Et ita nolluit Deus edere miraculum liberando illum, licet facile poſſet.

Concluſio aſſerit tertiò, quòd *non peccauit mortaliter occidendo ſe ipſum.* Ita interpretes Serar. quæſt. 31. Cornel. & alij hic. Primò, nam licet ſit prohibitum inferre ſibi mortem proprio conſilio, ac voluntate, non tamen inſtigante mouente, & aflante voluntate diuina, vt colligit Aug. ex eo quòd inditæ ſunt, à Deo vires ad illam machinam commouendam, præſertim cum à conceptione ſit deſtinatus ad euertendos Philiſtæos pro ſua religione, & communi bono ſuorum. Secundò, nam quamuis, non liceret illi directè, & primario inferre ſibi mortem, liceret indirectè, & ſecundariò, in alio directo bono communi, & honeſto, quod obtineri, non poteſt niſi media morte, vt in bello pro cau-

causa religiõnis, & in martyrio pro Christi fide, & licet pro defensione propria inferre mortem inuasori actuali, dum non est alia via declinandi, vt docent moralistæ. Vltimò, nam Apostolus numerat Samsonem in Cathalogo eorum, qui fide salui facti sunt, sed si peccasset mortaliter opprimendo se, & alios in illa ruina templi, non esset colocatus inter Sanctos. Ergo. Remitto probationem ex PP. ad Serarium ob temporis penuriam. Ex quibus latè constat, non peccasse, quia id fecit Dei instinctu, qui ad id faciendum pristinas vires restituit, & feciſſe ad ruinam Dagonis, & gloriam veri Dei. Mitto quod alij dicunt, quòd non se occidit, nec physicè, nec moraliter, vt si gladio se occidisset, sed permisit se opprimi ruina communi, sed nec moraliter, quia intendebat directè occidere Philistæos, se verò permissiuè, & indirectè, quod fuit egregiæ fortitudinis, pati aduersa, vsque ad ipsam mortem commitanter, sed licet subtilia, difficilia, & regulanda per supra dicta solidiora.

Concluſio vltimò asserit, *fuisse Sanctum, sed non martyrem nisi abusiuè, & impropriè.* Probatur primò, ex precedentibus, vbi probatum est quòd occidendo se ipsum, & alios non peccauerit, & Apostolum Hebræorum 11. colocauerit in cathalogo eorum, qui fide salui facti sunt. Ex quo deducitur, quod nõ sit damnatus, sed salutem æternã consequutus, non laureolã martyrij. Probatur secunda pars, nã occubuit, vt milles in bello, pugnãdo contra hostes Dei, vt milites, qui occiduntur in bello contra hæreticos, & Turcas in causa religionis: sed si Samson esset martyr, etiam essent dicti milites, & nemo id audebit dicere, nec scribere in aluo Sanctorum martyrum. Martir enim non pugnat, sed patitur ex amore Dei desistendo à pugna actiua, & offensiua inimicorum Dei, passiua lætus.

Argui solet ex Bachiario Episcopo ad Ianuar. de recipiendis lapsis, vbi vocat Samsonem martyrem, quòd pro Dei religione, & honore veri Dei, & inhonorem falsæ Dagonis, sponte acubuerit. Secundò, nam in occisione Samsonis, inueniuntur omnes conditiones requisitæ ad martyrium. Primò mors voluntaria. Secundò ex amore, & honore Dei testificando Deum, Israelitarum esse verũ Deum, & Philistinorum Dagonem falsum. Tertiò pro præcepto Dei exequendo, firmiter patitur mortem ab extrinseco illatam. Ergo nihil deest, ne scribatur in aluo martyrum. Vltimò, nam sibi intulisse mortem ruina domus, nõ tolit rationem martyrij, sicut, nec in alijs Sanctis martyribus, qui vltrò se tyranno offerebant, & in ignẽ, & flamas se proijciebãt. Quibus simile videtur feciſſe Sãcon.

Resp.

Respondetur Samsonem dici martyrem à Bachiario, & alijs abusiuè solùm. Ad secundũ, id fecisse pugnando, quod licet sit heroicum opus, non martyris patientis, præ amore super omnia, non sub ratione generali. Ad vltimum est latum discrimen in patiendo, in pugna, & sine illa, vt Pelagia, & aliæ virgines martyres. Ipse enim pugnabat, & interfecit moriens plures, quam viuus, occidit enim Principes, & tria millia de populo, id enim intendebat directè inferre in illos ingentem cladem, & morte sua vitam dare suis.

AD MORES.

Quòd *reuerentia est templis adeò debita, quod irreuerentia in Deũ in templo adhùc Dagonis, ruina reipublicæ mulctatur.*

Quòd *qui aliquando magnus, adhùc abiectus, & postratus, mittit splendores suæ magnitudinis.*

Quòd *Deus pro salute hominum assequenda, non dubitat edere miracula, sed vbi est certa, & secura, finit res geri iuxta ordinem naturæ.*

TEXTVS.

Vers. 31. *Fratres eius, & vniuersa cognatio tulerunt corpus eius, & sepelierunt in sepulchro patris sui Manuè.*

AD LITTERAM.

Dub. 42. & vlt. *An Samson sepultus fuerit à cognatis, & concubinis? & vbi? & an benignè annuentibus Philistæis?*

Conclusio asserit, primò *fuisse sepultum à fratribus, & vniuersa cognatione in sepulchro patris sui. Petentibus cadaber illius, & annuentibus Philistæis,* inter Saraà, & Esthaol. Ita interpretes. Primò constat ex præcitato versu. Secundò dicitur sepultus est à cognatis in sepulchro patris sui, non solùm, quia illius opera constructus, aut prætio emptum in legitima possessione, sed quia in illo, iam erat repositus pater defunctus. Nam si vixisset veniret cum cognatis, & propinquis ad petendum, & sepeliendum. Et ita non vi, aut dolo extraxerunt, sed voluntariè, & placidè annuentes. Tertiò, nam licet possent esse iratissimi, vt sæuirent atrocissimè contra cadauer defuncti, vt in morte saltim in frustra diuiderent, aut igne consumerent, immo etiam contra cognatos, & propinquos petentes illud cadauer, illa vniuersali, & funesta strage perciti, tamen admirandum hoc, non solùm in communi luctu, & planctu fundatur, in quo pietas, non dat locum crudelitati, sed quia religio, & veneratio defuncti mouit corda Philistino-

tinorum, vt parcerent defuncto, quem oderant viuũ. Aduerterunt enim Deum illi astitisse in vita in bello, & in morte in illa ruina tẽpli ingentis molis, ad quam diruendã, & euertendam dirũpendo columnas, pristinas vires restituisse, & sita prosequuti sunt casum funestum, pietate, veneratione, & religione.

AD MORES.

Quòd *verior amicitia Dei ad suos, non in eo solùm sita, & vt dilatet vitam eorum ad plures annos, sed in eo, vt acceleret, & assummat ad se, dum sunt in gratia.* Ad euangelium Lazarus amicus noster dormit, & ad Domine si, &c.

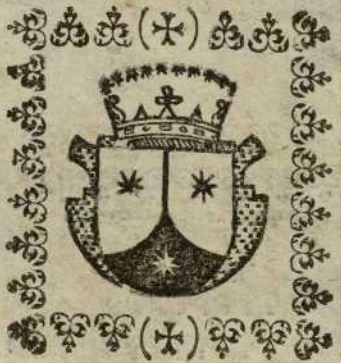
Quòd *temperandæ sunt lachrimæ cum Deus rapit ad se parentes, consanguineos, & amicos, scientes, quòd non tollit nostra, sed recipit ad tempus mutuata sua.*

Quòd *pium valde est honestas exequias agere pro defunctis, præsertim parentibus, consanguineis, & amicis.*

FINIS.

AD GLORIAM DEI,
& Deiparæ.

SVB CORRECTIONE
Sanctæ Matris
Ecclesiæ.



LECTVRA DE SEPTVAGINTA ANNIS CAPTIVITATIS, ET SEPTVAGINTA HEBDOMADIBVS

Ad cap. 9. Danielis.

PER
P. MAG. Fr. DIDACVM DE BENAVIDES
Madridensem, Ordinis Carmelitarum, Provinciæ Castellæ.
IN ACADEMIA COMPLVTENSI,
Sacræ Scripturæ, Publicum, Primarium Interpretem.

PRÆLOQVIVM.

OPTATIS instantium, vt morem gererem, redigendi in facilem, præcisam, brebem, claram, & perceptibilem: illam difficultatẽ (passim in Scriptura iteratam) difficilem, diffusam, longam, obscuram, & imperceptibilem: inscriptam *De 70. annis captiuitatis, & 70. hebdomadis*: institui lectură sub dicto titulo, ad caput 9. Danielis. Vbi simul, agitur de vtraque. Et vt caput integrè elucidetur, instituendum, *De Abominatione desolationis*, non minus intricata, & inexhausta. Si non assequutus fuerim intẽtum, excuset in magnis voluisse satis.

SINOPSIS CAPITIS.

DArius Medus postquã occidit Balthasarem, vltimũ Regem Chaldæorum, & cepit Babylonem, & transtulit imperium in suos Medos, & Persas, & eruit Danielem captiuum ad principatum, odio, & inuidia accusatum, missum in lacum leonum, eductã

illesum, ob quod mirum, Deus Danielis, edicto Regis publicauit verus Deus. Hic Daniel anxiè orat pro libertate suorum Iudæorum è captiuitate Babylonica anno primò prædicti Darij: fit Gabrielis apparitio, & cõceditur oraculo dissoluendam captiuitatem, imò impertitur omni spe maiorẽ liberationem generis humani, captiui sub potestate diaboli, per Messiã, venturum, liberatorem, post septuaginta hebdomades annorum. In quo Dei misericordia merita suplicum excedit, & vota.

TEXTVS.

Vers. 1. *In anno 1. Darij, filij Assueri, de semine Medorum, qui imperauit super regnum Chaldæorũ, &c.* Vers. 2. *Anno vno regni eius, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 1. *Quis fuerit ille Assuerus, qui dicitur pater Darij Medi? & an Assuerus sit nomen proprium, an agnomen commune pluribus? & quis fuerit Darius Medus? an fuerit filius filiæ Nabuchodonosor? an fuerit idem, qui Darius Hystaspis? an fuerit idem, qui Cyrus? an idem, qui Astyages? an idem, qui Cyaxares? & an Rex Medorum exsiliens, obtinuerit imperium Chaldæorum, & præfuerit vno solo anno?*

Conclusio asserit primò, quòd *ille Assuerus fuerit Rex Astyages; quòd nomen Assuerus non sit proprium personæ, sed agnomen commune illustribus Regibus Medorum, & Persarum apropriatum.* Ita Interpretes nobilissimi Tirin. tom. 1. in chronico in fine cap. 33. sequutus Tornell. Maldon. & alios Perer. hic lib. 20. Cornel. à lapide hic, & alij ex Xenophonte, Iosepho, Geronymo, & Græcis historijs, quod diserte satis in re valde incerta obscura, atque perplexa, dicunt enim quod Astyages habuit filium Darium, & sororem Mandanam, qui Darius ex sorore Mandana fuit auunculus Cyri, qui narus est de illa. Primò, quia nihil absurdi continet ista sententia. Secundò, quia concordat cum sacra historia, & profana, vbi dicitur, quòd ille Assuerus, cuius filius dicitur Darius Medus à Daniele sit Rex Astiages. Tertiò ex communi consensu Interpretum. Vltimò ex impugnatione aliarum opinionum inferius statim ponenda, & ita solùm superest, vt verisimilior nostra sententia.

Secunda pars probatur, quòd Assueri nomẽ apud Hebræos, *non sit nomen proprium personale, sed agnomen commune, & significet Principem insignem illustrem, caput excelsum, quod illustribus Regibus Medorum, & Persarum tribui, & apropriari consueuit.* Ita Perer. & Cornel. à lapide ibidem. Primò ex Pagnino libro de interpretatione nominum Hebraicorum, nam pro Assuerus debet scribi, & pronun

nunciari Achassuerus ab Achas, id est magnus, & veros, id est caput. Nã Achasuerus אחשורוש & componitur ex אחש Achas, id est magnus, & ורוש veros, id est caput, ac si dicatur magnus Princeps, magnus Capitaneus. Quo circa hic Darius Medus dictus est filius Assueri, quasi filius Regis magni. Iuxta quod Turcæ appellant suum Imperatorem magnũ Dominum, & Tartari magnum Cham, & iuxta hoc maritus Reginæ Esther appellatus est Assuerus, & Cambyses filius Cyri vocatus est Assuerus 1. Esdræ 4. & in præsenti iste Rex Astyages pater Darij Medi, & auus Cyri, dictus est Assuerus, quasi Rex magnus, & excellens, ergo nomen Assuerus non est nomen proprium vnius Regis, sed commune illustribus, & ab Hebræis fuit appropriatũ aliquibus Regibus Medorum, & Persarum, vt insigne heroicum.

Arguitur primò contra primam partem. Nam in presenti dicitur Darius filius Assueri, qui vt vult Canus lib. 11. de locis capit. 3. in solutione ad 9. fuit maritus Reginę Esther, qui non fuit Astyages. Respondetur, fuisse deceptum Canum, & in Rege Astyage apte cadit nomen Assueri, iuxdicta, non est nomen proprium alicuius personæ, vt mariti Reginæ Esther, sed agnomen commune illustribus Regibus Medorum, & Persarum appropriatum, & ita Regi Astyagi apte congruit, sicut, & aliis prædictis.

Arguitur secundò, vrgentius ex Herodoto, & aliis apud Pererium hic, qui dicunt, quòd Rex Astyages non habuit, vllum filium, sed solùm filiam Mandanam, matrem Cyri, qui postea Dario successit in regno, ergo Astyages non fuit pater Darij Medi, licet Xenophon esse filium referat.

Respondetur primò cum Pereira, fuisse filium non natiuitate, sed adoptione. Nam cum Rex Astiages vrgeretur bello à Cyro bellicosissimo, ne deueniret ad Cyrum, adoptauit Darium Medum in filium, & hæredem regni. Dario autem cessit Regnum Cyrus, ne omnium odia in se concilaret. Respondetur secundò, vesimilius, quòd historia Xenophontis sit præferenda historiæ Herodoti, eò quòd discrepant inter se valde, præsertim in hoc quod Xenophon dat filium, & filiam Astyagi, Herodotus verò negat filium, & Herodotus non sit ita incerte fidei, & à quibusdam est dictus pater mendatiorum, & fabularum.

Arguitur contra secundam partem ex sententia Cani, vbi supra existimantis, quòd nomen Assuerus, non sit nomen commune illustribus, sed proprium, & personale. Et probat, quia maritus Reginę Esther appellatus est

Assuerus nõn semel in libro Esther. Respondetur infirmum esse fundamentum, nam vt constat est agnomen commune illustribus, & ita attributus est marito Esther Cambysi, & in præsenti Astyagi, qui dicitur Assuerus Pater Darij.

Secundò asserit conclusio, quòd *Hic Darius Medus non fuit filius filiæ Regis Nabuchodonosor, nec nepos illius per filiam.* Ita Peter. Hic ad cap. 6 & alij. Primò ex illo Ieremiæ 27. vbi Deus pollicetur se daturum Regnum amplissimum Regi Nabuchodonosor, & filio eius & filio filij eius, *& quod seruient ei omnes gentes, & filio eius, & filio filij eius*, qui fuerunt Euilmerodac & Balthasar, quos S. Hieronymus ad Ieremiæ 27. corrigens sententiam antiquam appellat hostes, auum, filium, & nepotẽ, quorum nullus est Darius. Et Paralip. vltimo de Nabuchodonosor dicitur, *seruient ei, & filijs eius, donec imperet Rex Persarum.* Et *Danielis* 5. non semel dicitur Nabuchodonosor pater Balthasaris, & intelligẽdum remotè per filium eius Euilmerodac interpositum, in quo cõueniunt periti Interpretes, licet id non sit expressum nominatim in sacra Scriptura, nisi solùm generali ratione dicẽdo filio filij eius, tamen 4. Reg. vltimo legitur nomen, & dicitur Rex Babylonis, qui eduxit de carcere Ioachim, & ita putatur filius Euilmerodac, qui successit in Regnõ Nabuchodonosori. Quiddam putant esse idem cum Balthasare. Secundò, nam Deus promisit conseruaturum in familia Regis Nabuchodonosor, in illis tribus dictis personis, regnum Chaldæorum, donec veniat, & tollat imperium Rex Persarum, sed in isto Dario non est conseruatum, nec verificatum, potius abstulit, & extinxit imperium in Chaldæis, interfecto Balthasare vltimo Rege Chaldæo, & transtulit in Regem Medorum, & Persarum, cuius imperio potiebatur iuxta illam Scripturam in conuiuio apparentem in pariete Balthasari; Phares diuisum est Regnum, & datum Medis, & Persis, ergo patet, nam ille Darius, non fuit nomine Chaldæus sicut prædicti, sed Persa, & Medus.

Arguitur pro sententia contraria Theodoreti, oratione 6. in Daniel, qui asserit fuisse Darium Nepotem Regis Nabuchodonosor, ex filia sua Chaldæa, & Patre Medo, & ita inde cognominatus est Darius Medus à patre, cum sit Chaldæus à matre. Primò, quia Ieremiæ 27. policitus est Deus regnum Regi Nabuchodonosor, & filio eius, & filio filij eius, & dedit Balthasari filio. Iuxta Daniel 5. & post istum immediatè dedit illud regnum Dario Medo,

vt

vt igitur illud promissum sit impletum requiritur necessario Darium fuisse filium filij, & consequenter nepotem.

Respondetur primò, quòd illa pollicitatio regni in illis tribus conseruandi non congruit Dario Medo, qui potius euertit. Et mirũ, nõ ita expẽdisse Theodoretũ deinde Theodoretu nõ asserit, quòd sit filiꝰ filij, sed filiæ, licet nõ sit cõsuetudo texendi genealogias per feminas, sed per mares, id ta mẽ accipi debet sine iniuria veritatis, vt non dicatur filius simpliciter, qui non est filius. Et re ipsa fuit Balthasar filius filij, scilicet Euilmerodac. Admitto, quòd dicatur filius Nabuchodonosor, est tamen remote, quia est pater patris.

Conclusio asserit secundò. Quòd *iste Darius non sit idem, qui Darius Hystaspis.* Ita Perer. Ibidem, & Tirin. cum alijs. Primò, nam differt inter vtrumque Darium Hystaspis, nam ille fuit genere Medus, hic genere Persa, ille filius Astyagis Assueri Regis, hic alterius, ille regnauit ante Cyrum, vt constat ex Daniel. 6. in fine, hic post Cyrum, tertius apud Persas, & post vltimum diem Darij Medi multis annis.

Arguitur pro opposita sententia, quæ asserit istum Darium Madum esse illum eundem, qui solet agnominari à Græcis Darius Hystaspis. Pro ista sunt graues authores apud Perer. ibidem. Nam Daniel. 5. dicitur de Dario Medo gessisse bellum contra Chaldæos, & Babilonios expugnasse, & subiugasse illos, & transtulisse imperium in Medos, & Persas, sed ista aptissime congruunt Dario Hystaspis ex Herodoto. lib. 3. Iustino lib. 1. & alijs. Respondetur infirmum fundamentum, nam bis capta est Babilon, & subiecta imperio Medorum, & Persarum. Primum à Dario Medo adiuuante Cyro, eius sobrino bellicosissimo, aut potius per illum. Secundò à Dario Hystaspis post ortam rebellionem, vt ex Herodoto, Iustino, & alijs apud Perer. colligi potest.

Conclusio asserit tertio quòd, *iste Darius Medus non sit idem, qui Cyrus à Græcis.* Ita Perer. ibidem, & alij. Primò, nam Darius iste fuit de genere, & semine Medorum, iuxta initium capitis præsentis, Cyrus verò fuit Persa, de patre Persa generatus, scilicet Cambisse, & matre Mandana, filia Astiagis Regis, vt erudite Tirinus ibidem, & ita fuit Darij ex sorore sobrinus. Et ita dici solet auunculus Cyri. Secundò, nam cum Darius Medus cœpit, & subiugauit imperium Chaldæorum, ac Babiloniam erat ætatis 62. annorum, vt constat ex Danielis 5. & obtinuit imperium Chaldæorum solo vno anno, vt in præsenti versu 2. Cyrus autem nomine eius cœpit, & subiecit, vt collega imperij, aut si ve

lis Darius per ipsum, & Cyrus erat alterius ętatis, & obtinuit imperium Chaldęorum, inquo succesit Dario, non solo anno vno, sed 30. non ego est idem qui Cyrus. Vltimò, nam satis indigitatur Daniel. 6. fuisse diuersum Regnum vtriusque apud suos, licet sit idem imperium Babilonicum, diuersis temporibus, vt Dario successerit Cyrus.

Arguitur contra pro sententia opposita. Nam eą, quæ dicuntur à Daniele de Dario Medo cœpisse Babylonem, debellasse Chaldęam, transtulisse imperium ad Regem Medorum, & Persarum aptari, & tribui solent Cyro à latinis, & Grecis, & ei aptè congruunt. Ergo Darius idem qui Cyrus. Respondetur fuisse diuersas personas, vt constat, auunculus, & sobrinus, & quia Darius ascito coadintore Cyro illa facinora patrauit, vel Darius per Cyrum bellicosum, belligeratorem, ita non mirum idem vtrique tribui, non vt idem sit Darius, qui Cyrus.

Conclusio asserit quartò. Quòd *iste Darius non fuerit idem qui Astiagis à Græcis.* Fauet Perer. ibidem. Primò, nam de Dario Medo constat ex dictis, quòd sit filius Astyagis Regis, quòd gessit bellum contra Chaldęos, & Babylonios, quòd expugnauit, quòd transtulit imperium ad Medos, & Persas, quę non leguntur vllibi de Astyage, & friuolum est dicere non ipsi, sed vni Dario per Cyrũ, aut soli Cyro victorię gloriam atribui. Nam licet ipse in bello operas exercuerit, si in rei veritate Astyages gessisset bellum, iure ipsi posset tribui, præsertim si esset idem quod Darius.

Arguitur pro sententia oppositа, quę asserit, fuisse istum Darium eumdem, qui appellatus est Astyages à Grecis. Ita sensisse, quosdam, dicit S. Hyeron. ad 5. cap. Daniel. ex eo quòd cap. 13. dicitur, quòd post Astyagis mortem susceptit Cyrus Regnum. Sed in Regno Dario succesit Cyrus: ego idem est Astyagis, & Darius. Resp. nõ sequi, nam post mortem Astyagis, in Regno immediate succesit Darius, & post Darium Cyrus, & ita assummit falsum, vt cõfundat personas, & licet Astyagi succesisset Cyrus, non tamen immediate sed post Darium. Scriptura autẽ nihil contra. Alij volunt cum Herodoto Cyrũ bello inuasisse, auũ Astiagem, & eo viuo imperium per vim vendicasse, sed quia non regnauit legitime, solùm exquo legitime regnauit scriptura memorat exordium Regni eius. Ex quo nihil contra nos, dum post Astyagem immediate successerit Darius Medus, & post ipsum Cyrus. Ex illo loco nihil contra nos. Nam ille Astyages non fuit Darius Medus, vt erudite Cornel. ibi, sed fuit auunculus Cyri per filiam: cui succesit Darius filius, aut natus ex pellice, aut adoptiuus in Regno

Medorum, Cyrus verò ipsius ne pos ex filia in regno Persarum. Et ita verificatur textus, quòd Cyrus susceptit Regnum Astyagis.

Conclusio asserit quintò. Quòd *Iste Darius Medus, qui dictus Astyages, Regis Assueri filius, sit is, qui solet dicit Cyaxares, & per sororem, auunculum Cyri eius sobrini.* Ita Perer. hic lib. 7. & citat plures eruditos. Primo ex Xenophonte in libro de Cyropœdia, vbi vocãt Darium Cyaxarem, & filium Regis Astyagis, & fratrem Mandanæ, de qua natus est Cyrus sobrinus eius, quem sibi socium assumpsit ad bel ligerandum, & subijciendũ Regẽ Chaldæorum, & Babiloniorum. Et dedit illi cum filia imperium Babilonicum, post diem vltimum obitus eius. Secundò, nam hic Darius Medus, vt aduertit Perer. ibidem inuenitur, in sacris litteris quatuor nominibus intitulatus, & appellatus apud Daniel. cap. 5. 6. & 9. dicitur Darius: apud 70, Artaxerxes, vt testatur Hyeron. apud Xenophontẽ Cyaxares: apud Daniel. 13. Astyages. Dissentio à Pererio in hoc vltimo, quia hic Astyages, non fuit Darius Medus, sed pater eius, & Mandanæ, & auus Cyri, nepotis. Et fuit inconsequens. Nam dixit quòd Astyages fuit pater Darij Medi, & modo intitulat inter alia nomina nomine Astyagis ex dicto c. & ille Astyages fuit Pater Darij, non Darij, nisi à patre Astyage, vel Astyages simul cum alijs titulis, ad distinctionem patris. Nec insolitum est in sacra scriptura vti binomia, aut quadrinomia, & ne sit occassio confundẽ di sunt plures Darij in sacris, & humanis litteris, nã iste dictus est Darius Medus, alius Darius, Hystaspis à genitore, alius Darius Nothus, aut lõgimanus, alius Darius Artaxerxes Ochus, alius Codomanus. Quos in serie Regum Persarũ mira eruditione, & labore retulit Tirinus tomo 1. in chronico cap. 47.

Arguitur pro sententia, quę asserit, quod Darius non sit filius Regis Astyagis, & auũculus Cyri. Nam in fine cap. 13. Daniel. sic dicitur. *Et Rex Astyages appositus est ad patres suos*, & susceptit Cyrus Perses Regnũ eius. Sed Cyrus immediate succesit Dario. Ergo iste Darius fuit Astyages, nõ filius Astyagis. In quod inclinare videPerer. ibidem faciens illũ quadrinomium, & ex dictis verbis nominari Astyagem, sui immemor, qui inter plures opiniones elegit aientem, quòd Rex Astyages fuit pater Darij Medi, non Darius Medus.

Resp. mihi certissimum, quòd Rex Astyages fuit Pater Darij adoptiuus, vel quia ex pellice fuit illi natus, & fuit similiter auus Cyri, natus ex filia, iuxta cõclusionem, & ita ille Rex Astyages, cuius Regnum susceptit Cyrus in loco nobis opposito, fuit pater Darij Medi & auus Cyri, non Darius Medus. Et miror Pereiram, quòd Darium intitulauerit inter

alia isto nomine Astyagis, nam hic non est Darius, sed pater Darij, & auus Cyri, textus ita intelligi debet, quòd Regis Astiagis morte susceperit Cyrus Regnum eius. Nam Darius regnabat apud Medos, Cyrus apud Persas. Nam licet Dario iure gentium debita esset successio in vtroque, cesit Cyro Regnum persarum, vt nepoti Regis Astyagis, Quia erat amator pacis, & quietis, & noluit discordiam cum sobrino bellicosso, imo post mortē concessurus Regnum Medorum, ob id dicit textus post Astyagem Cyrum suscepisse Regnum eius, non quia idem sit Darius, & Astyages, sed quia post Astyagem suscepit pacificam possessionem Regni Persarum, per vim obtentam consentiente Dario, & scriptura memorat Regnū à pacifica possessione.

Conclusio asserit sextò, quòd *Darius Medus post quam regnauit pluribus annis apud Medos in communi opinione, non regnauit plus vno anno apud Babylonios, & Chaldæos postquam cepit Babylonem, & subiecit Chaldæam*, & ita non rexit *imperium illud Babylonicum, nisi solo vno anno, qui idem fuit primus, & vnus*. Ita præcitati Perer. Cornel. & alij. Primo ex ipso versu 1. & 2. *In anno primo Darij*, & vers. 2. *anno vno Regni eius*. Vbi Daniel appellat primum, & vnum illum annum imperij Darij apud Babilonios, & ita idem significatur vocabulo vnius, & primi. Ponitur enim more Hebræo numerus cardinalis pro ordinali. Idem si significet idem vnus, & primus, vt solet scriptura dicere vnum pro primo, Genes. 1. *vespere, & mane dies vnus*, id est primus. Et Mathei 16. vbi, quòd Christus resurrexit vna Sabbathi, id est die prima post Sabbathum. In præsenti autem ponitur vno anno verisimilius, & aptius, vt sit primus idem, & vnus, quia vno solo anno, & non plus vixit, & rexit imperium Babylonicum, & Chaldaicum. Secundò, nam Darius Medus subiugauit imperium Chaldeorum adiuuante Cyro, aut per Cyrum, ipso anno 70. captiuitatis Iudaicæ, & cepit regnare in ipso anno, & regnauit non plus vno anno apud Chaldæos, vt ipso anno vno inceperit, & desierit regnare. Et in regnum succesit immediate Cyrus, qui soluit edicto publico captiuitatem. Constat ex Danielis 5. *Eadem nocte interfectus est Balthasar Rex Caldæus, & Darius Medus succesit in regnum*, & cap. 6. Daniel perseuerauit vsque ad regnum Darij Regnumque Cyri Persæ, & vltimo Paral. *Anno primo Cyri Regis persarum ad explendum sermonem Domini per os Ieremiæ, suscitauit Dominus Spiritum Cyri*, &c. Et Ieremiæ 29. *Cum ceperint impleri in Babylone 70. anni*. Ex dictis infertur intentum, nam si Darius Medus cœpit imperium Babilonicum

anno,

anno 70. captiuitatis, & Cyrus cæpit idem imperium post mortem Darij, & soluit captiuitatem, Darius nõ plus vno anno vixit, & rexit imperiũ Babilonicum, vt in dicto anno 70. captiuitatis in ceperit, & desierit regnare apud Babilonios, & Caldæos. Quia Dario successit Cyrus, & cœpit ipso anno 70. regnare, & in fine soluere captiuitatem edicto publico. An autem sit euersum imperium Babylonicum isto 70. anno inchoato, aut iam expleto? dicendum statim. Quot autem annis regnauerit Darius in regno Medorum antequam cœperit imperiũ Chaldæorum 35. aut 38. videri potest apud Tirinum, & Perer. ibidem.

Arguit potest pro sententia opposita, nam ille annus 70. captiuitatis non potest esse idem, quo Darius incœpit imperium, & illo defuncto successit Cyrus, & edicto publico soluit captiuitatem. Nam in tam breui tempore comprehendi non possunt tot ac tanta. Præcipue concessio libertatis publicæ, & tot negotia expediẽda in amplissimo Regno, quæ requirebãt quietem, & pacem in tempore bellicosso. Confirmatur, nam illa verba Paralyp. vltimo, *anno* 1. *Cyri Regis Persarum* non significat 1. annum, quo cepit regnare, sed primum concessæ libertatis, & solutæ captiuitatis septuagenariæ.

Respondetur ad primum cogi ipso textu sacro ad coniungenda illa plura in illo vno anno, qui fuit vltimus captiuitatis, vt conuincitur ex præcitatis testimonijs, quibus fides est adhibẽda, licet alias difficile, aut rarò possint tot agregari, sed diuinæ prouidentiæ ita disponẽti nihil difficile, nã difficilius fuit inclinare Cyrũ primo anno, quo cæpit imperium Chaldæorum ad concedendam libertatẽ Iudęis captiuis in Babilonia. Ad secundũ fieri violentiam textui dum dicitur anno primo Cyri dedisse libertatem violenter trahendo, vt intelligatur de anno primo concessę libertatis, quę accidit anno primo quo Cyrus cępit imperium Chaldæorum.

ADMORES.

Quòd *diuina oracula ita sint certa, & indubitabilia, quòd non reeantur examinari per tempora, & ætates.*

Quòd *fuit semper difficilis, & perplexa discussio genealogiarum, & nobilitatum adhùc viuorum Principũ notissimorum.*

Quòd *in domo Dei nihil æstimanda differetio, & distinctio generis, & nobilitatis, here habenda ratio virtutum, & meritorum.*

Quòd *homo mitis, & pius, ac pacificus patietur potius iacturem Regni, quam excidium quietis pacificæ, sicut Darius cum Cyro.*

TEX-

TEXTVS.

Vers. 2. *Ego Daniel intellexi in libris numerum annorum, de quo factus est sermo ad Ieremiam, vt complerentur desolationis Hierusalem 70. Anni.* Vers. 3. *Et posui faciem meam, &c.* Vers. 4. *Et orani obsecro Domine &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 2. *An acciderit euersio imperij Caldaici, & Babylonij ipso anno 70, & vltimo captiuitatis? & an inchoato, & currente, An iam expleto?*

CONclusio asserit primò. *Accidisse 70. & vltimo anno captiuitatis Iudaica, inchoante, & currente: non iam expleto, & transacto.* Ita communiter interpretes Tirin, Perer. ibidem, & Cornel. hic & ad 29. Ieremię. Probatur prima pars ex præcitatis testimonijs, Ieremiæ 25. *Cumque impleti fuerint 70. anni visitabo super Regem Babylonis &c. Et super terram Chaldæorum, &c.* Quæ comminatio cœpit impleri Daniel. 5. illa nocte, qua Balthasar Rex Chaldęus in illo conuiuio splendido prophanauit vasa sacra: quæ pater eius Nabucho-Donosor detulit captiua ex templo Hierusalem, & ait textus, *Eadem nocte interfectus est Balthasar Rex Chaldæus, & Darius Medus successit in Regnum.* Vbi datur intelligi, Regem Darium perse, aut suos inuasisse, cœpisse, & deuastasse imperium Chaldæorum, illo anno 70. captiuitatis Iudaicæ, & cœpisse imperium apud Chaldæos. Quod etiam inuit noster textus, Vers. 1. & 2. *Anno primo, & vno,* pro quo sat sint prędicta. Vbi eiusdem sententiæ sunt in sacra scriptura sparsa innumera. Quibus aptari possunt dubia, quæ super hoc indagamus, prout cuique se obtulerit occasio.

Probatur secunda pars, scilicet: *accidisse illam euersionem 70. anno, & vltimo captiuitatis inchoante, non expleto, & transacto*: ex illo Ieremiæ 29. *Cum impleri cœperint 70. anni visitabo vos, & reducam vos in terram vestram.* Vbi Deus pollicetur in ipso initio 70. annorũ visitã dos Iudęos captiuos, & reducendos in patriam, quòd factum est per Darium Medum, excitante Deo spiritum Cyri, sui sobrini, qui dedit libertatem edicto publico, & impleuit diuinam pollicitationem. Iuxta Daniel. 6. *Porrò Daniel perseuerauit vsque ad Regnum Darij, Regnumque Cyri Persæ.* Certum est autem post excidium imperij Caldaici esse datam libertatem reuertendi in patriam. Secundò, nam non obstat, quòd Ieremiæ 25. dicitur: *Deum visitaturum terram Babylonis, & redacturum in solitudines sempiternas. Cũ impleti fuerint 70. anni visitabo super Regem Babylonis, & super terram Chaldæorum, &c.* Nam illud verbum *cumque*

què impleti fuerit 70. anni, idem valet, ac significat in ipso inchoato 70. anno, non transacto. Iuxta similem modum loquendi scripturæ: in Lucæ 2. cap. *Postquam consumati sunt dies octo, vt circumciderepuer, &c.* Id est cum primò illuxerit dies octauus. Ista enim complètio est numeri annorum, aut dierum cũpræcedentibus, non impletio, & completio eorum quoad se: àlias primò esset contradictio in verbis Ieremię cap. 29. *Cum impleri cœperint*, & 25. *Cum impleti fuerint*, &c. Deinde, nam si ita non intelligatur, sed illo transacto, non impleretur promisio diuina, de visitatione, & libertate anno 70. sed 71 captiuitatis, sicut in simili, postquã impleti sunt dies octo, inchoato die octauo, & currente, non exacto. Aliàs circunscisio Christi accidisset die 9. quòd erat contra legem Moysis.

Argui solet pro sententia opposita, quæ asserit non accidisse euersionem imperij Chaldaici illo 70. anno, & vltimo captiuitatis, ex varijs capitibus. Primò, initium captiuitatis ab varijs inchoandum eliciendo numerum maiorem, vel minorem, 70. annis. Qui non sunt anticipandi, sed inferius exprimendi, cum disquiratur à quo initium inchoandum 70. annorum. Deindè arguendo non fuisse expugnatam Babylonem à Dario, aut Cyro anno primo sui imperij apud Chaldæos, quæ si quis sicut in veritate proposita, exfundamentis poterit facile dissoluere.

Argui solet contra secundam partem, ad probandum non accidisse euersionem imperij Babilonici illo anno 70. captiuitatis incipiente, & currente, sed finito, & transato: ex Ieremiæ 25. *Cum completi fuerint 70. anni.* Cui facile responderi potest, iuxta doctrinam positam in probatione secundæ partis.

ADMORES.

Quòd *Deus facile suorum vindex, priuans maiestate, & sceptro Regni, priuantem vasa sacra cultu sacro.*

Quòd *fidelis Dominus in impletione promissionum. Vix incipit inchoari terminus, cum promissa implet.*

Quòd *Deus punit infra dignum, & dat præmium citra condignum.*

TEXTVS.

Vers. 2. *Vt complerentur desolationis Hierusalem 70. anni.*

Vers. 3. *Et posui faciem meam, &c.*

Vers. 4. *Et orani, obsecro Domine, &c.*

AD

AD LITTERAM.

Dub. 3. *Quis vaticinatus est captiuitatem 70. Annorū? & an inscriptura sit deffinitus talis numerus? quis obsedit Hierusalem, & quoties? An Nabucho-Donosor? & an factæ sint tres captiuitates, & sub quibus Regibus Iudæorum? & an initium 70. annorum inchoandum sit à Regis Iosiæ 13. anno? An à morte Ioakim, aut captiuitate Ioachim seu Regis Iechoniæ? an à captiuitate Regis Sedeciæ? & quando finiti, an in 1. anno Cyri? An in anno Darij Hystaspis? & an distinguendi anni captiuitatis, & anni exicidij templi, & vrbis? & cur Daniel tam anxiè & suppliciter oret pro libertate, quam Deus promisserat sedaturum, cū impleti essēt 70. anni.*

COnclusio asserit primò, Plures prophetas prædixisse, & vaticinasse istam captiuitatem septuagenariam Iudæorum in Babyloniam. Probatur, nam 1. Ieremiæ commissa est vaticinatio cap. 1. *factum est verbum Domini in diebus Iosiæ filij Amon Regis Iuda in 13. anno Regni eius.* Vers. 3. *& factum est in diebus Ioakim filij Iosiæ Regis Iuda vsque ad consummationem primi anni Sedeciæ filij Iosiæ Regis Iuda vsque ad transmigrationem Hierusalem in mense quinto,* & vers. 11. & 13. fit prædictio captiuitatis sub illa metaphora *Virgæ vigilantis, & ollæ succensæ* erumpentis è fornace Babilonica. *Ecce ego conuocabo,* &c. *Et venient,* &c. Quæ indicant Nabucho-Donosorē. Ieremiæ 25. vers. 1. *verbum quòd factum est ad Ieremiam in anno 4. Ioakim filij Iosiæ, Regis Iuda ipse est annus 1. Nabucho Donosor Regis Babylonis* &c. vers. 3. *à 13. anno Iosiæ filij Amon Regis Iuda vsque ad diem hanc, iste tertius & vigesimus annus. Factum est verbū Domini, ad me, & loquutus sum ad vos, & non audistis,* &c. Vers. 8. *pro eo quòd non audistis verba mea.* Vers. 9. *Ecce ego mittam, & assummam,* &c. Et Nabucho-Donosor *Regem Babylonis seruum meum, & adducam eos super terram istam.* Vers. 11. *& erit vniuersa terra hæc in solitudinem, & seruient Regi Babylonis 70. annis.* Vers. 12. *Cumque impleti fuerint 70. anni visitabo super Regem Babylonis.* Idem cap. 29. vers. 10. *cum cepe rint impleri in Babylone 70. anni visitabo vos,* &c. Et Zachariæ 1. vers. 1. *in anno 2. Darij Regis factum est verbū Domini ad Zachariā,* &c. v. 4. *cōuertimi de vijs vestris malis, & nō audierunt* &c. v. 7. *in die vigesima, & quarta vndecimi mēsis Sabath in anno 2. Darij factū est verbū Dñi ad Zachariā dicens: vidi per noctem, & ecce vir ascēdens super eqū rufum,* &c. V. 9. *& dixi, qui sunt isti.* v. 12. & respōdit Angelus & dixit, *Domine exercitū vsq; quo tu nō miserebaris Hierusalē, & vrbiū Iuda, quibus iratus es. Iste iā septuagesim⁹ annus est.* Et in præsenti Dan. 9. *In anno 1. Darij Assueri* &c. *Ego Daniel intellexi in libris numerū annorū, de quo factus est sermo Domini ad Ieremiam Prophetā,*

pe

vt complerentur desolationis Hierusalē 70. anni, & sepenumero in sacris litteris sat in præsenti ista retulisse, vt historiam ad fundamētum dicendorum.

Secundò asserit conclusio. *Quòd in sacra scriptura, sæpe diffinitus est iste numerus 70. annorum, tam captiuitatis, quam excidij templi, & vrbis.* Est vasis totiùs disputationis, & sunt penè innumera in sacris litteris, vt nihil fere sit frequentius, sat sint præcitata testimonia, nec opus est, alijs amplia re in re, tam certa, & frequenti.

Tertiò asserit conclusio. *Obsedisse Hierusalem Regem Babylonis, Nabucho Donosor per se, & suos, & non solùm semel, sed ter duxisse captiuos in Babyloniam, vt merito soleant numerari tres captiuitates Iudæorum, sub Rege Nabucho Donosor.* Ita interpretes apud Perer. in Danielem, Cornel. ibidem, & in Ieremiam, & Tirin. in chonico præcitatos. Primò ex cap. 1. Daniel vers. 1. *Anno 3. Regni Ioakim Regis Iudà*, venit Nabucho-Donosor Rex Babylonis in Hierusalem, & obsedit eam, vers. 2. & tradidit Dominus in manu eius Ioakim Regem Iudà, & partem vasorum domus Dei, & asportauit ea in domum Dei sui, &c. huic similia sunt innumera, satis sit vnum probrebitate.

Secunda pars, quòd *fuerint tres captiuitates Iudæorum sub eodem Rege Babylonis Nabucho-Donosor factas*, notauit Perer. ibidem, & Cornel. ad 1. Daniel. ver. 1. Nam Nabucho-Donosor tor cæpit, & vastauit Hierusalem. Prima fuit anno 1. Regni sui in anno 3. & 4. Ioakim, qua cæpit eum, Danielē, & alios iuxta Ieremiæ 25. v. 1. & Daniel. 1 v. 1. Altera fuit Regis Ioachim, seu Ieconiæ, qui erat binomus post primā octauo anno regni sui, iuxta 4. Reg. 24. v. 14. In qua etiam captus est Prophera Ezechiel, Principes, & plures alij, thesauri domus Dei, & domus Regis. Et cum post 3. menses quibus regnauit excuteret iugū captiuus ductus est. Tertia fuit grauissima Sedeciæ, qui regnauit 11. annis, & obsessus ab ano 9 in 11. profugus apprehensus, & ductus ad Regem Babylonis, cum cæteris ductus est in Babylonē. Post tertiā addi potest quarta, qua anno 19. Regis Babylonis venit Princeps exercitus eius, & incendit templum, domum Regis, & ciuitatē, & vastauit muros vrbis, iuxta 4. Reg. 25. à ver. 8. Prima ex Theodoreto in Coment. ad cap. 9. Danielis inquit. Nam quia ter populus Iudaicus captiuus fuit 1. sub Rege Ioakim, 2 sub filio eius Ieconia, 3 sub Sedecia, ter quoque quodammodo liberatus, & in patriam reuersus fuisse, dici potest 1. sub Cyro. 2. sub Dario ad extremum sub Artaxerxe, qui misit Esdram, & Nehemiam, ut reficerent diruta, & erigerent muros

ros ciuitatis Hierusalem. Secundò ex citatis scripturis 4. Reg. 24. & 25. Nam ter capisse, & vastasse Hierusalem Regem Babylonis Nabucho-Donosor constat manifeste. Nam de prima captiuitate, 4. Reg. 24. vers. 1. dicitur. *In diebus eius* ascendit Nabucho-donosor Rex Babylonis, & factus est ei Ioakim seruus tribus annis. De secunda captiuitate ibidem agitur vers. 10. & dicitur, *in tempore illo*, &c. Venitque Nabucho-Donosor Rex Babylonis, &c. egressusque est Ioachim Rex Iudà, ad Regem Babylonis, &c. & suscepit eum Rex Babylonis, anno 8. Regni sui, & vers. 15. & protulit omnes thesauros, &c. & vers. 14. & transtulit quoque Ioachim in Babylonem. De tertia verò constat ex 4. Reg. 25. vers. 1. *Venit Nabucho-Donosor* in Hierusalem, &c. & vers. 2. & ciuitas clausa est, atque vallata ab anno 9. Regis Sedeciæ, vsque ad 11. & vers. 5. Sedecias profugus comprehenditur, & vers. 7. priuatus oculis, & vinctus catenis ducitur in Babylonem. Denique ibidem vers. 8. agitur de excidio templi, & vrbis. *Anno 19. Regis Babylonis* venit Nabuzardam Princeps exercitus Regis Babylonis, & vers. 9. & succendit domum Domini, & domum Regis, & domos Hierusalem, & vers. 10. & muros Hierusalem destruxit, & transtulit Nabuzardam relinquum vulgus, & vers. 12. reliquit de pauperibus agricolas, &c. Itaque ter, immo quater cœpit, & vastauit Hierusalem, Nabucho-Donosor Rex Babylonis perse, & ministros, ex his autem inadæquatis, & incompletis captiuitatibus, & vastationibus solet compleri vna adæquata, & completa. Vnde autem cœperit originem, & initium, & in cuius regis tempore sit finita, & terminata inquirendum est.

Conclusio asserit, quartò *initium seruitutis, & captiuitatis septuagenariæ Iudæorum inchoandum à 3. & 4. anno Ioakim Regis Iudà, cui coextitit primus annus regni Nabucho-Donosoris, iunioris, Regis Babylonis in Serie Regum Chaldæorum.* A quo fuit inducta seruitus, & captiuitas Regum Iudà, & Iudæorum, quæ fuit omnium prima. De fine verò hic brebiter, latiori calamo in sua conclusione, accidisse ad finem Monarchiæ Chaldeorum, in anno 1. Cyri Regis Persarum, & eius auunculi Darij Regis Medorum, qui ambo successerunt immediate in illa Monarchia Chaldæorum Babylonis. Ita nobilissimi interpretes, vt summi, non posset ab vllo anno verisimilius. Fateor in nulla alia sen-

sententia potuisse firmius figere pedem, propter solida scripturæ fundamenta in re, qua vix non sit vlla maior difficultas, magis obscura, & perplexa in sacra Scriptura, sunt patroni Liranus, Castro, Barradas, & ex recentioribus perituissimus Ribera ad 1. caput Zachariæ à numer. 34. sequuntur alij, non ingnobiles apud Tirinum tom. 1. in Chronico cap. 37.

Primò in probatione, hoc ferendum iudicium, quòd in Prophetis sepe sit prænuntiata Iudæis, & pluries minitata, ista captiuitas septuaginta annorum sub Nabucho-Donosore filio eius, & filio filij eius. Quibus essent seruituri septuaginta annis in finem suæ Monarchiæ Chaldæorum. Et similiter, quòd ipsi Nabucho Donosori sit pollicitum amplissimum regnum septuaginta annorum, sibi, filio eius, & filio filij eius Iudæos tradendos in seruitutem, & captiuitatem in finem Monarchiæ illorum, vsque ad 1. annum Cyri, qui cœpit Babylonem, & occidit Balthasarem vltimum Regem Chaldæorum, sed à principio primi anni Nabucho Donosor fluxerunt 70. anni in fine n. Nam vt probaui fluxerunt ex Nabucho-Donosore 45. ex Euilmerodac 22. ex Balthasare 3. qui simul iuncti faciunt 70. primus autem annus Nabucho Donosoris, coextitit in Serie Regum Iudà 3. & 4. Ioakim, vt probabitur, igitur summi debet initium à 3. & 4. Ioakim. Cuius fuit prima calamitas, seruitus, & captiuitas cæterarum exordium. Discursus est legitimus, & efficax, sed singula assumpta sunt probanda. Primò *probandum, quòd sit pollicitum imperium 70. annorum, supra Iudæos Regi Nabucho-Donosori, filio eius, & nepoti*, & simul Iudæis minitatam per Prophetas, & vaticinatam istam seruitutem, & captiuitatem septuagenariam, ad punitionem peccatorum, vsque ad primũ Cyri, liberatoris edicto publico, ita legitur Ieremiæ 25. vers. 8. *Pro eo quod non audistis verba mea, ego mittam, &c. & Nabucho-Donosor Regem Babylonis, &c.* Et vers. 11. *& seruient omnes gentes istæ Regi Babylonis 70. annis.* Ecce seruitus septuagenaria Iudæorum sub Rege Babylonis. Similiter, legitur Ieremiæ 27. vers. 6. *Ego dedi omnes terras istas in manu Nabucho-Donosoris Regis Babylonis*, & vers. 7. *& seruient ei omnes gentes, & filio filij eius donec veniat, &c.* Videlicet Cyrus, & Darius. Vlterius 2. Paralyp. 26. vers. 20 legitur. *Seruient Regi, & filijs eius*, donec imperet Rex Persarum (Cyrus) & compleretur sermo domini ex ore Hieremiæ: & v. 21. exprimitur, *vsque dum complerentur 70. anni*: Deindè minitatio captiuitatis septuagenariæ, & vaticinatio Prophetarum

non

nõ semel inculcatã est à Prophetis sub variis etiam metaphoris virgæ vigilantis, ollæ succensæ in fornace Babilonis, & ex prædictis testimonis satis constat, vt non sit opus alia coaceruare. Insigne est illud Ieremiæ 27. ex quo cõstat per 23. annos vaticanasse à 13. anno Iosiæ, &c. *Secundum assumptum sit è Serie Regum Caldæorum à* 1. *Nabucho-Donosoris in finem monarchiæ, vsque ad* 1. *Cyri liberatoris fluxisse* 70. *annos.* Sic astruendum. Ex Nabucho Donosore 45. ex Euilmerodac 22. ex Balthasar 3. qui simul iuncti faciũt 70 anni. Singulorum sic probandum Nabucho Donosoris 45. Sic probo, nã legit Ieremiæ 27. v. 11. Iudæos seruituros filio, & nepoti 70. annis, & illam monarchiam duraturam septuaginta annis, quo posito sic probo. Nam Nabucho-Donosor erat in Regno 8. anno regni sui, cum captiuauit Ioachim, seu Ieconiam, & cum duxit captiuum in Babylonem, vt legitur 4. Reg. 24. vers. 12. *Suscepit eum Rex Babylonis* 8. anno regni sui. Deinde legitur, quod post mortem Nabucho Donosoris filius eius Euilmerodac 1. anno sui regni eduxit de carcere Regem Ioachim post 37. annos vinculorum 4. Reg. 25. vers. 27. *In anno* 37. *transmigrationis Ioachim Regis Iudà sublleuauit Euilmerodac Rex Babylonis caput Ioachim de carcere anno, quo cœpit regnare, &c.* Sed ille annus 8. Simul iungendus cum istis 37. faciunt 45. Regni Nabuchodonosoris, igitur pro illo satis sunt probati 45. Deinde pro Euilmerodac filio probari debent 22. Nam pro Balthasare, nepoti sunt expressi 3. in Danielis cap. 8. v. 1. Vbi legitur *anno* 3. *Regni Balthasar* visio apparuit mihi ego Daniel, &c. id autem sic deduci solet ex prædictis testimonijs Ieremiæ 27. à vers. 6. & 2. Paralyp. 1. à vers. 21. constat Iudæos seruituros Regi Babylonis Nabucho-Donosori filio eius, & filio filij eius, patri, filio, & nepoti 70. annis, sed probati sunt pro patre 45. & pro nepote 3. supersunt, ergo pro filio Euilmerodac 22. ad complendos illos 70. ergo certissimum est à 1. anno Nabucho-Donosoris fuisse 70. annos in eo, filio, & nepote vltimo Rege, illius monarchiæ Chaldæorum. Inquirendum superest cui Regi ex Serie Regum Iudà dicat coexistentiam primus annus Nabucho-Donosor, ex Serie Regum Chaldæorum. Nam ab illo summi debet initium captiuitatis 70. annorum in serie Regnũ Iuda, sed coextitit cum 3 & 4. Ioakim, ergo à 3 & 4. Ioakim patris Ioachim filij, summi debet initiũ. Legitimus est discursus. Minor probatur, nam Ieremię 25. à v. 1. Sic legitur *in anno* 4. *Ioakim filij Iosiæ Regis Iuda, ipse est annus primus Nabucho-Donosor Regis Babylonis*, & licet Danielis à v. 1. legatur sic. *Anno* 3. *regni Ioakim, Regis Iuda venit Nabucho-Donosor Rex*

Ba-

Babylonis in Hierusalem, & obsedit eam, & tradidit Dominus in manu eius Ioakim Regem Iuda, & partem vasorum domus Dei, & asportauit ea, &c. non est discordia. Nam 3. & 4. Ioakim coextitit 1. Nabuchodonosoris quoad partes. Et ita facinora primi anni Nabuchodonosoris modo ad 3. modo ad 4. Ioakim solent referri, vt aptè Cornel. ad Ieremiæ 25. In anno 4. Ioakim filij Iosiæ, &c. cæpit enim expeditionem in 3. & perfecit in 4. Et ita à 3. & 4. Ioakim, cuius fuit omnium prima captiuitas satis aptè, & cōgruè peti debet initium, vt si altius repetatur, à Iosia patre supersint, & superfluant plures anni, & si à filio Ioachim, aliàs Iechonia, vel ab aliquo Rege successore desint de dicto numero septuagenario tot anni. Ex quo aliæ sententiæ peccare solent præexcessum, & defectum. Et ex ipso fundamēto, *in hi firmissimo, & solidissimo*, in quo fixi firmum pedem, impugnari, & refelli debent, in eo enim omnia cohærent. Omnia constant. Solùm superest, *præoculis habere seriē Regum Iuda illis solis memoratis, in quibus est discordia sententiarum* à Iosia in Sedeciā, *hæc series Regū Iuda* legitur 4. Reg. 22. à v. 1. legitur, *Iosias regnauit anni* 31. ab huius anno 13 quidam originant exordiū. Deindè legitur 4. Reg. 23. *Instituitur Rex pro Iosia patre suo Ioachaz, & regnauit 3. mensibus in Hierusalem*, deinceps 4. Reg. 23. à v. 36. legitur, quòd instituitur alter filius Iosiæ Rex, & imponitur, *ei nomen Ioakim, & regnauit* 11. *annis*, de isto iudico legi 2 Paralip. vltimo, quòd *vinctus catenis ducitur in Babylonem*, & similiter 4. Reg. 24. à v. 6. quòd *dormiuit cum patribus suis*, & legi Ieremiæ 22. à v. 19. *sepultura asini sepelietur extrà portas Hierusalem*, quin obstat difficultas, quod duci non potuit in Babylonem, & dormire cum patribus in Hierusalem, & sepultum sepultura asini extra illius portas, nā illis 3. annis, quibus 4. Reg. 24. à v. 1. legitur, *& factus est ei* (Nabuchodonosori) *Ioakim seruus 3. annis*, potuit duci vinctus, & reduci in Hierusalem, vt contigit alijs, & mori in Hierusalem, & projci extra portas ciuitatis in fouea, aut vallo, vbi solent asini dilacerandi à volucribus, bestijs. Vlterius 4. Reg. 24. à v. 8. legitur, quòd instituitur *Rex Ioachim pro patre suo Ioakim, & regnauit 3. mensibus in Hierusalem.* Hic in obsidione sponte se subiecit Regi Nabuchodonosori, quia existimauit, id esse de diuina voluntate, & post tres menses regni ductus est in Babylonem, vbi mansit in carcere pluribus annis. Capitur in anno 8. Regni Nabuchodonosoris, vt lēgitur 4. Regum 24. à vers. 8. in 15. non Regni

Series.

Regum Iuda ex

Iosia	18. *anni.*
Ioacijaz	3. *mens.*
Ioakim	11. *anni.*
Ioachim	3. *mens.*
Sedecia	11. *anni.*

sui, quia solùm regnauit 3. mensibus in Hierusalem, vt constat. De isto solet verificari illud Matth. 1. *& post transmigrationem Babylonis Iechonias genuit Salatiel*, hic enim fuit binnomus, dictus Ioachim, & Iechonias. Deniq; instituitur Rex Sedecias, aliàs Mathanias, & vt legitur 4. Reg. 24. à vers. 18. *Regnauit 11. annis in Hierusalem.* Hic fuit obsessus, & in fuga captus, vinctus catenis ducitur in Babylonem, vt legitur 4. Regum 25. à versic. 4. in ista igitur serie Regum à 13. Iosiæ inueniuntur simul iuncti fluxisse 40. annos vsque ad excidium templi, plus minus vè aliquibus mensibus. Nam à 13. Iosiæ ad 31. sui regni fluxerunt 18. pro Ioachaz sunt 3. menses, pro Ioakim patre 11. anni, pro Ioachim filio 3. menses, pro Sedecia vltimo Rege in serie Regum Iuda sunt 11. anni, qui simul iuncti faciũt 40. vsque ad excidium templi. His 40. addit inimica sententia 30. post excidium vsque ad 1. Cyri, vt conficiat 70. sed in quo deficiat dicendum suo loco nobis. sit sat texisse istam seriem Regum Iuda ex citata Scriptura, vt inseruiat instituto, & quis possit facile deprehendere, à quo sit petendum initium in serie Regum Iudæ, qui veniunt in disputationem inter authores. Concluditur ergo initium petendum à 3. & 4. patris Ioakim, cui coextitit primus Regis Nabuchodonosor in serie Regum Chaldæorum à quo fluxisse 70. in finem monarchiæ solidè satis probatum est, cui immediatè successit Cyrus, qui primo anno dedit libertatem edicto publico.

Confirmari solet alijs rationibus deductis, ex eo quôd sunt plura vaticinia Prophetarum, quibus innuitur ista septuagenaria calamitas sub Rege Nabuchodonosor, filio eius, & filio filij eius, nepote suo sub varijs metaphoris de virga vigilãte, sceptro aquilonari, olla succensa de fornace Babylonis, vt legitur Ieremiæ 1. à v. 11. *Quid tu vides Ieremia? virgam vigilãtem, &c. ollam succensam, &c.* idem *de sceptro aquilonari*, sub quibus significatur Rex Babylonis, cui traditi sunt Iudæi puniendi decursu 70. annorum. Quod Ieremias prænuncia uit, & prædicauit per 23. annos à tempore Iosiæ. Traditos autem puniendos per 70. annos Regibus Babylonis legitur præcitatis testimonijs, præsertim Ieremiæ 25. à vers. 11. *Et seruient omnes gentes istæ Regi Babylonis 70. annis*, & Ieremiæ 27. à vers. 7. *& seruient ei omnes gentes, & filio eius, & filio filij eius*, patri, filio, & nepoti. Et 2. Paralip. 36. à vers. 20. *Seruient Regi, & filijs eius, donec complerentur 70. anni. Donec imperet Rex Persarum*, & ista conferunt ad intentum. *Sed computatio* 70. annorum non fit per partes, & ita coniungi debent cum præcedentibus, ex quibus coalescit legitimus, & integer discursus initiũ petẽdum in se-

serie Regum Iuda à 3. & 4. Ioakim, vt si ab aliquo Rege anteriori ordiatur, superfluant. Et si à posteriori, deficiant. Vt inimicæ sententiæ discordantes ab ista computatione necessario peccent per excessum, aut defectum.

Vltimò probari solet. Nam certissimum est, quòd finita, & terminata est captiuitas, finita monarchia Chaldæorũ in anno 1. Cyri, qui in ea immediatè succesit, ita legitur 2. Paralip. vltimo à v. 22. *Anno 1. Cyri Regis Persarum ad explendum sermonem Domini per os Ieremiæ, suscitauit Dominus spiritũ Cyri, qui iussit prædicari in vniuerso Regno, etiam per Scripturam, &c.* Idem legitur 1. Esdræ 1. à v. 1. *In anno 1. Cyri Regis Persarum, vt compleretur verbum Domini ex ore Ieremiæ, &c. & traduxit vocẽ in omni regno, &c.* etiã per Scripturam, *qui est in vobis de populo eius ascendat in Hierusalem, &c.* Sed à 1. anno Cyri retrogrediendo, & ascendendo per seriem Regum Caldæorum ad 1. annum Nabuchodonosoris, qui coextitit in serie Regum Iuda 3. & 4. Ioakim numerantur 70. anni, sicut ab illo descendendo in Cyrum, nam idem est iter Athenis ad Thebas, & è Thebis ad Athenas inuerso ordine, ergo initium petendum à 3. & 4. Ioakim, & finis terminandus in anno 1. Cyri. Et licet ista probatio sit inclusa in nostra priori probatione admissi illam, ad maiorem explicationem.

Arguitur primò pro sententia, *quæ asserit*, quòd *summi debeat initium ab anno 13. Regis Iosiæ*, sicut finis, & terminus in anno 1. Cyri, ita interpretes, tacito nomine, Eusebius apud Perer. in Danielẽ, qui dicit vetustam, tenet Trinus nobilis interpres tom. 1. in Chronico cap. 35. conclusione 5. & 6. sequutus plures PP. & authores Clemẽ. Alex. Euseb. Hieron. August. Isidor. Theodoret. ex nouissimis Enrigus, & alij, & dicit nullibi fixisse pedem firmius, & præmodestia proposuisse disputandi gratia. Primò ex serie Regũ Iuda supra posita, ex qua deducit à 13. Iosiæ ad excidium tẽpli fluxisse ex prædictis annis Regum simul iunctis 40. annos, & post excidium ad 1. Cyri 30. vt simul iunctis conficiatur numerus septuagenari⁹. Illi 40. sunt certissimi, illos verò 30. sic probat. Nã legitur 4. Reg. 25. à v. 27. quòd post mortẽ Nabuchodonosoris immediatus eius successor Euilmerodac eduxit de carcere Regẽ Ioachim vinculatũ 37. annis, à die quo captiuatus est à patre Nabuchodonosor, post tres menses, quibus regnauit in Hierusalẽ in hæc verba, *In anno 37. transmigrationis Ioachim Regis Iuda, &c. sublenauit Euilmerodac Rex Babylonis caput Ioachim Regis Iuda de carcere, anno quo cœpit regnare*, sed ille annus, quo captus, & vinculatus est, erat annus 8. regni Nabuchodonosoris, vt legitur 4. Regum 24. & vers. 12. *& suscepit eum Rex Babylonis anno 8. regni sui.* Si autem ab illis 37.

annis detrahas 8. regni Nabuchodonosoris supersunt 30. plus minùs. Ergo inicti ad 40 qui fluxerunt à 13. Iosiæ cõficitur numerus 70.

Respondetur peccare in multis, & admisso, quòd a 13. Iosiæ fluxerint 40. ad finem vltimi Regis Iuda, scilicet Sedeciæ: non probat intentum, scilicet fluxisse 40. ante excidium templi. Quia plures fluxerunt. Nam in anno 11. Sedeciæ vltimò sui Regni nondum legitur excidium templi, quod accidit anno 19. regni Nabuchodonosoris, vt legitur 4. Regum 25. à v. 8. *Ipse est annus 19. Regis Babylonis. Venit Nabuzardam, &c. & succendit domum Domini, & domum Regis, &c.* Secundò peccat, nam intendit post excidium templi ad 8. Cyri liberatoris edicto publico fluxisse 30. & plures fluxerunt. Nam à 19. Nabuchodonosoris in 45. quibus probaui regnasse, fluxerunt 24. & 22. Euilmerodac, & 3. Balthasaris, qui simul iuncti faciunt 49. Tertiò, nam inepte dicit ab illis 37. annis vinculorum Regis Ioachim detrahi debere 8. annos. Nam anno 8. Regni Nabuchodonosor vinculatus ab ipso est, potius addi, quam detrahi debent. Nam ab excidio, qui accidit anno 19. Nabuchodonosoris ad primum Cyri liberatoris fluxerunt Nabuchodonosoris 24. Euilmerodac 22. Balthasaris 3. qui simul iuncti faciunt 52. ergo non dicitur aptè post exidium templi ad libertatem per Cyrum fluxisse 30. tantum.

Arguitur secundò, nam ista captiuitas septuaginta annorum inchoari debet necessario à 13. anno Iosiæ. Nam Ieremiæ 25. à v. 3. legitur sic, *à 13. anno Iosiæ filij Amon Regis Iuda vsque ad diem hãc, iste 23. annus, &c.* & vers. 9. *pro eo quòd non audistis verba mea, ecce ego mittam, & assummam Nabuchodonosor Regem Babylonis, &c.* ergo summi debet initium à 13. Iosiæ quidquid de fine, & termino.

Respondetur ex dicto testimonio solùm deduci, quod à 13. Iosiæ excurrisse 23. annos, quibus Ieremias prædicabat, & vaticinabantur illam captiuitatem septuagenariam sub Rege Nabuchodonosor, non quod à Iosia sit inchoãda. Quidquid sit an tempore Iosiæ, coregnauerit cum Nabuchodonosore seniori, iunior, siue iunior seorsim, certius enim puto, quòd annus primus Regni Nabuchodonosor coextitit 3. & 4. Ioakim, licet prioribus annis ante primum Regni potuerit fuisse contemporaneus cum vltimis annis regni Iosiæ.

Arguitur tertiò pro eadem sententia. Nam finita, & terminata est captiuitas in anno primo Cyri, vt legitur in prædictis testimonijs 2. Paralip. vltimo à v. 22. & 1. Esdræ 1. à vers. 1. *in anno primo Cyri Regis Persarũ, &c.* edicto publico liberatoris, sed ab illo ascẽdendo,

dendo, & retrogrediendo per seriem Regum Chaldæorum, & seriem Regum Iuda vsque ad annũ 13. Iosiæ inueniuntur cõpleti 70. anni, ergo à 13. Iosiæ summi debet initium. Maior est certissimè probata, minor probatur ex probatione posita in primo argumento, vbi ante excidium templi à 13. Iosiæ fluxerunt 40. & post excidium templi vsque ad annum primum Cyri liberatoris 30. qui simul iuncti faciunt 70.

Respondetur negando minorẽ, ad probationem verò dixi in solutione prioris præcedentis argumẽti peccare in multis, præsertim in eo, quòd dicit ab excidio tẽpli in primum annum Cyri excurrisse tantum 50. annos, quòd est falsissimum. Nam excurrerũt plures, nã vt legitur 4. Reg. 25. excidiũ templi contigit post vltimũ Sedeciæ anno 19. regni Nabuchodonosor dicitur enim sic vers. 8. *mense* 5. 7. *die mensis ipse est annus nonus decimus Regis Babylonis. Venit Nabuzardam, &c. & succendit domum Domini, &c.* à 29 autem ad 45. quibus regnauit Nabuchodonosor excurrerunt 26. & Euilmerodac 22. & Balthasar 3. qui simul iuncti conficiunt plus 30. scilicet 50. plus minus vè.

Arguitur quartò pro eadẽ sententia. Nam à 13 Iosiæ potest summi initium, quin obstent fundamẽta nostræ conclusionis, quòd Nabuchodonosori, filio, & nepoti, Iudæi essent tradendi ad punitionẽ 70. annis, & quòd à primo Nabuchodonosoris in finem monarchię Chaldæorum inueniatur excurrisse 70. annos. Quorum primus Nabuchodonosoris coextiterit 3. & 4. Ioakim patris. Nam dictarum Scripturarum sensus est, quòd in illo decursu, 70. annorum duratio nis monarchiæ Chaldæorum Iudæi essent subijciendi, & puniendi sicut, & alij populi. Non quòd captiuitas esset duratura 70 annis. Ad eum modum, quo legitur Genes. 15. à vers. 13. quòd Abrahæ semen esset, *futurum peregrinum in terra nõ sua, & subijciendum seruituti, & affligendum* 40. *annis*, quod ita intelligẽdum, vt ab oraculo intra quadringentos annos essent affligendi. Et Exodi 12. à v. 40. legitur sic *habitatio filiorum Israel, quã manserunt in Egypto fuit* 430. *annorum*, id est intra illos futuram aflictionem, & mansionem. Nam cõstat à die promissionis, seu reuelationis, non mãsisse, nec afflictos fuisse in Egypto plusquam 225. annis, nam ab ingressu Iacob in Egyptum vsque ad exitum de Egypto, solùm excurrerunt 215. anni: sic in præsenti affligendi, & captiuandi ab anno primo Nabuchodonosoris in finem monarchię duraturę 70. annis, intra illos 70. annos. Præsertim cum in simili forma dicatur subijciendos, & captiuandos alios populos vicinos, & seruituros Nabuchodonosori 70. annis Moabitas, Tyrios, Egyptios, &c. & constat ex Iosepho, & alijs vix

subiectos diuturno tempore, nam Tyrij vix 14. aut 15. reliqui vix 24.

Respondetur mirum, ita sensisse virum egregium scripturarium Tirinum tom. 1. in Chronico Sacro cap. 31. nam in sensu Tyrini difficultas, quæ torsit ingenia esset leuissima, imò esset nulla. Nam Iudæos captiuandos, & puniendos intra 70. annos à 13. Iosiæ, nõ esset ita ingentis difficultatis. Deinde non veniret in controuersiam initium, & finis septuagenariæ captiuitatis, si sensus scripturarũ esset à vaticinio, aut à 13. anno Iosiæ intra septuaginta annos esse captiuandos, & puniendos. Dicẽdum ergo potius fuisse illam captiuitatem septuagenariam iuxta citatas scripturas Ieremiæ 25. à vers. 11. *& seruient omnes gentes istæ Regi Babylonis 70. annis*, quòd indicat seruitutem septuagenarium, non seruitutem breuem coextiturã intra 70. annos monarchiæ, sed sit sermo de seruitute, quæ complectitur 70. annos. & satis manifestè indicatur Ieremiæ 27 à vers. 7. vbi legitur, *& seruient ei* (Nabuchodonosori) *& filio eius, & filio filij eius donec veniat, &c.* Cyrus scilicet immediatus successor, & liberator edicto publico. Illa autem testimonia adducta de seruitute filiorũ Israel in Egypto sinistrè interpretantur. Nam vera intelligentia est à die promissionis, & reuelationis factæ Abrahæ peregrinasse semen, & seruisse in Egypto spatio 430. annorum, ita vt à die promissionis, & reuelationis fluxerint 215. ab ingressu Iacobi in Egyptum ad exitum totidẽ 215. qui simul iuncti conficiunt 430. Deinde non vrget, quod in simili forma dictum sit de alijs populis vicinis seruituros per 70. annos in præcitato testimonio, *& seruient omnes gentes istæ, &c.* cum vix subiecti sint diuturno tempore. Nam est sententia captiuitatem fuisse septuagenariam in Iudæis, & alijs collectiuè, non diuisiuè, in omni collectione, non in singulis, nam plures ducti sunt, & reducti, ex Iudæis. Et ita non mirum idem accidisse vicinis populis, vt vix subiecti, & captiui sint diuturno tempore, cum sint liberati, & reducti.

Arguitur quintò pro sententia, illa alia, *quæ asserit summi initium, non à 3. aut 4. Ioakim, sed à morte eiusdem, quæ contigit anno 11. regni eius, aut ab anno 1. filij eius Ioachim, vna enim videtur communis captiuitas.* Quia solùm interpositi sunt tres menses inter vtramque, & ita dici potest, quòd à clade, & morte Ioakim, aut transmigratione Ioachim, siue Iechoniæ filij eius. Ita Cornelius à Lapide in quo pauciss imis annis à nostra sententia discordat. Nam nos summus, à 3. aut 4. Ioakim, ille ab 11. in clade, & morte eiusdem. Prima & communis captiuitas legitur facta, non in 4. Ioakim, sed vel 11. in clade, aut morte eius,

vel

vel anno sequẽti in filio Ioachim, qui ductus est captiuus, & transmigratione Ieconiæ, fuit enim binnomus. Patet ex 4. Reg. 24. v. 1. 6. & 12. vna enim censetur vtriusque calamitas, eo quòd à clade, & morte patris ad captiuitatem filij solùm intercesit trimestre. Secundò, nam quòd legitur Ieremiæ 25. vers. 1. quòd *in anno 4. Ioakim, qui est annus primus Regis Babylonis, factum est verbum Domini ad Ieremiam*, vt prædiceret captiuitatem, & quòd legitur vers. 11. *Omnes gentes istæ seruient Regi Babylonis 70. anni*, non debet intelligi à tempore illo præsenti, sed futuro, scilicet nõ à præsenti 4. Ioakim, sed à futuro 11. incipient Iudæi seruire Chaldæis per 70. annos. Tertiò, nam Propheta Ieremias cap. 29. vers 10. *Cum cœperint impleri in Babylone 70. anni.* Vbi postquam retulit captiuitatem subijcit, cum impleti fuerint in Babylone 70. anni, ergo initium summi debet à captiuitate Ioachim. Quartò, quia Matth. 1. captiuitas Ioachim alio nomine Ieconias vocatur *transmigratio Babylonis*, ergo non debet peti ab anno 4. Ioakim patris, sed Ioachim filij. Quintò, quia non est instituta ista captiuitas directe pro imperio Regis Babylonis, sed pro punitione Iudæorum, quia nõ audierunt Ieremiam, & Prophetas minitantes à 13. Iosiæ per 23. annos. Vltimò, nam annus 11. Ioakim fuit 8. Nabuchodonosoris, qui cum regnasset 44. aut 45. annis ab 8. ad vltimum supersunt 36. qui simul iuncti cum 34. Euilmerodac, & Balthasaris faciunt 70. captiuitatis.

Respondetur ad primum negando antecedens, & ad probationem ex vers. 12. dico loqui de Ioachim filio, Ioakimi patris, qui solùm regnauit 5. mensibus, vt constat ex 4. Regum 24. vers. 6. *Et dormiuit Ioakim, & regnauit Ioachin filius eius pro eo*, Itaque pater regnauit 11. annis, vt probatur ex 4. Regum 23. vers. 36. *& contra istum accendit 1. Nabuchodonosor*, & in eo fuit initium calamitatis, & captiuitatis. Nam 4. Regum 24. legitur sic *in diebus* (scilicet Ioakim) *ascendit Nabuchodonosor Rex Babylonis, & factus est ei Ioakim seruus 3. annis*, & ita ille, & Iudæi incæperunt exindè mala, & incommoda perpeti, quæ subiungit textus. Ad secundùm dico, quòd à 13. Iosiæ per 20. annos sequẽtes incepit vaticinatio, & prædicatio Ieremię, vt cõstat ex Ieremiæ 25. v. 3. quod si iterũ iteratur in 4. anno Ioakim prædictio prophetica fuit de inchoatione à 4. anno illius, non ab 11. eiusdẽ. Et similiter de cõtinuatione, & fine futuro, & nõ est cõtra rationẽ Prophetiæ, quæ respicit omnes differẽtias tẽporũ. Ad tertiũ dico parũ referre, q̃ memorata captiuitate Ioakim subijciat, *cũ impleti fuerint 70. anni*, nã potius inde colligitur ab ipso Ioakim patre inchoã

dam non ab 11. annō, ſed 3. & 4. minimè verò à captiuitate filij eius Ioachim, nam hæc contigit anno 8. Regis Nabuchodonoſoris, vt legitur 4. Reg. 24. verſ. 12. illa verò anno 1. Regis Nabuchodonoſor, vt legitur Ieremiæ 25. verſ. 1. *in anno 4. Ioakim filij Ioſiæ Regis Iuda, ipſe eſt annus 1. Nabuchodonoſor Regis Babylonis*, & in præſenti ſententia videtur loqui indiſcriminatim de vtroque patre Ioakim, & filio Ioachim, ſiue Iechonia. Ad quartum, quòd in Matthæo legitur, quòd *Ioſias genuit Iechoniã, & fratres eius (inſtante) tranſmigratione Babylonis*, & quòd *poſt tranſmigrationem Iechonias genuit Salatiel*, & ita complectitur inſcriptio vtrumque Ioakim patrem, & Ioachim filium. An autem vterque ſit appellandus Iechonias alterius eſt inſtituti, ſicut & an Ioſias dicatur immediate iſtũ Ioachim, ſeu Iechoniã generaſſe, quiuis ad captiuitatẽ, & reddijt, vel per filiũ Ioakim ex 1. Paralip. 3. petendũ. Ad quintum parum intereſt inſtitutã captiuitatem pro imperio ſeptingenario Regis Babylonis, aut pro punitione ſeptuagenaria Iudæorum. Nam vtrumq; cohærere conſtat dici aptius in inſtituto præſenti, nec opus eſt diſiungi. Ad vltimum aſſummi aliqua incongruè, vt iuxta imaginationem ordiatur tela computationis. Et ab ipſo in ipſum, ſi annus 11. Ioakim patris fuit 8. Nabuchodonoſoris, congruit quod dicimus, quòd annus 3. & 4. Ioakim fuit primus Nabuchodonoſoris. Admitto igitur regnaſe 45. annis, ſed voluntariè ſummit ab 8. 36. vt ſimul iungat cum 34. Euilmerodac, & Balthaſaris. Nam aptius omnia cohærẽt iuxta dicta, ſi ſumantur Nabuchodonoſoris 45. Euilmerodac 22. & Balthaſaris 3. qui debent ſummi velit nolit, vt ex Scriptura ſupra conuictum eſt.

Arguitur ſexto pro ſententia, quæ aſſerit, *Initium petendum ab initio Regis Ioachim, & ab eius captiuitate*. Nam primus annus captiuitatis fuit ille primus annus tranſmigrationis Regis Ioachim, cui coexiſtit octauus annus Regni Nabuchodonoſoris, vt conſtat ex 4. Regum 24. verſ. 10. *venit Nabuchodonoſor Rex Babylonis ad ciuitatem, &c. egreſſuſque eſt Ioachim, &c. & ſuſcepit eum Rex Babylonis anno octauo regni ſui*, qui non poteſt eſſe regni Ioachim, quia vt conſtat ex verſ. 8. *Tribus menſibus regnauit in Hieruſalem*, & ante iſtius captiuitatẽ non legitur alia, *nam licet*, in eodem capite verſ. 1. legatur, quòd contra eius patrem Ioakim *aſcenderit Nabuchodonoſor*, ſolùm legitur quòd *factus eſt ei Ioakim ſeruus 3. annis*, nõ verò quòd ſit ductꝰ captiuus in Babylonem, ergo nõ debet ſummi initiũ 70. annorũ ſeruitutis, & captiuitatis à 3. & 4. Patris Ioakim, ſed à ſeruitute, & captiuitate filij eius Ioachim. ſed huic coexitit octauus regni Nabuchodonoſoris, ergo ab illo ſummi debet

bet

bet initiũ, & non à 3. & 4. patris Ioakim, cui coextitit primus regni Nabucho-Donosoris.

Respondetur, quòd ad inchoã dam septuagenariam seruitutem, & captiuitatem sufficit, quod legitur 4. Reg. 24. vers. 1. quod *in diebus Ioakim* patris *ascendit Nabucho-Donosor, & quod redegit, illum Regem in seruitutem tribus annis*, & inde Iudæos passos plures ærumnas à latrunculis Chaldæis, &c. *Iuxta verbum Domini, quod loquutus est per Prophetas*, vt ibi expresse legitur. Addo quod 2. Paralyp. 36. vers. 6. legitur, de Ioakim filio Iosiæ, quod *ductus est vinctus catenis in Babylonem, & Domini vasa translata*, & quòd *filius eius Ioachim regnauit pro eo, & tribus tantum mensibus*, cum in eodem capite vers. 5. de patre eius legatur *regnasse* 11. *annis*. His videtur obstare, quòd 4. Reg. 24. vers. 6. legitur, *& dormiuit Ioakim cum patribus suis, & regnauit Ioachim filius eius pro eo*, ergo non est ductus captiuus in Babylonem. Item 2. videtur obstare, quod legitur Ieremiæ 22. à vers. 18. *Hæc dicit Dominus ad Ioakim filium Iosiæ Regem Iudæ, non plangent eum, &c. Sepultura asini sepelietur proiectus extra portas Hierusalem*, igitur duci non potuit captiuus in Babylonem, vbi in v. 24. fit distinctio inter patrẽ Ioakim, & filium Ioachim aliàs Iechoniã, & legitur, quòd *licet esset annulus in dextra Dei proiiciendus, & tradendus Nabucho-Donosori*, & legitur vers. 30. *Scribe virum istum sterilem cuius semen, non prosperabitur, & non erit de semine eius vir, qui sedeat super solium Dauid*, quibus obstare videtur, quod legitur Matth. 1. quod *post transmigrationem Babylonis Iechonias genuit Salatiel*, nisi exponatur dici propter Christum, qui nõ est vir purus, sed vir Deus. Quare prædicta, non obstabunt testimonio petito ex 2. Paralyp. 36. nec alia allegata. Non primum ex 4. Reg. 24. nam illis 3. annis, quibus Ioakim pater alterius, fuit in seruitutem redactus, immo, & alijs sequentibus, vsque ad 11. sui regni in Hierusalem, licet vectigal, & tributarius Regi Nabucho-Donosori, potuit duci vinctus catenis, & reduci in Hierusalem, vt accidit alijs, vt moreretur in Hierusalem, & sepeliretur extra portas illius in sepultura asini, in fouea, aut vallo dilacerandus à volucribus, & vestijs. Nec obstat secundum ob eandem rationem, quæ facile componit omnia.

Arguitur septimò pro sententia, quæ *asserit petendum initium à seruitute, & captiuitate Sedeciæ*, qui in obsidione positus est ab anno nono in vndecimum, & in fuga comprehersus ducitur in Babylonem, vt legitur 4. Regum 25. à vers. 1. & statim vers. 9. legitur, quòd *venit Nabuzardam princeps exercitus Regis Babylonis in Hierusalem, & succendit domum Domini*, palatium Regis, domos ciuitatis, & euer-

euertit muros Hierusalem in circuitu, ergo initium captiuitatis, & euersionis summi debet ab illa euersione omnium peremptoria, exitiali, & extrema. Quidquid de fine, & termino inquirendo completo septuagenario in serie Regum Babylonis, & successorum Persarum, & Medorum per Cyrum, & Darium.

Respondetur in allegato testimonio fieri expressam mentionē de excidio tēpli, & vrbis, quod incœpit à 19. anno Regis Nabucho donosor, non verò de seruitute, & captiuitate Iudaica septuaginta annorū, quæ altius petit initiū, à 3. & 4. Ioakim Regis Iudà, qui in serie Regum Iudà, pluribus annis antecessit, vt videri potest in serie Regum Iudà. An autem sint distinguendi 70. anni seruitutis, & septuaginta anni excidij tēpli, & desolationis vrbis, vt sint assignanda diuersa initia, & diuersi fines, in quibus terminentur statim dicendum.

Conclusio asserit quintò, quòd *finiti, & terminati sunt isti 70. anni captiuitatis Iudæorum in anno 1. Cyri Regis Persarum, qui vnà cum Dario Medo, occisso Balthasare vltimo Rege Monarchiæ Chaldæorum cœpit Babylonem, & transtulit illam Monarchiam ad Persas.* Ita interpretes antiqui, & moderni, quos sequitur Perer. lib. 10. in Daniel. Ribera in Prophetas ad primum Zachariæ à numero 34. Trin. tom. 1. in Chronico conclusione prima, & Cornelius hic ad vers. 32. & in Ieremiæ 25. in quo est ferè omnium concordia. Primò ex 2. Paralyp. 36. à vers. 22. Vbi legitur: *Anno autem primo Cyri Regis Persarum ad explendum sermonem Domini, quem loquutus fuerat per os Ieremiæ, suscitauit Dominus spiritum Cyri Regis Persarum, qui iussit prædicari in regno suo, etiam per scripturam, &c. quis ex vobis est in omni populo sit Dominus Deus suus cum eo, & ascendat.* Eadem sententia est expressa, primò Esdræ 1. à vers. 1. vbi legitur: *in anno 1. Cyri Regis Persarum, vt compleretur verbum Domini ex ore Ieremiæ, &c. traduxit vocem in omni regno suo, etiam per scripturam dicens, hæc dicit Cyrus Rex persarum, &c. quis est in vobis de vniuerso populo eius, sit Deus illius cum ipso, ascendat in Hierusalem, &c.* Eadem sententia est expressa Ieremiæ 25. & alijs locis. Secundò, nam ab isto Cyro ascendendo per seriem Regum Chaldæorum ad 1. Nabuchodonosoris, qui coextitit 3. & 4. Regis Ioakim in Serie Regnm Iudà sunt integri, & completi 70. anni igitur, sicut ab illo Ioakim initium ita à Cyro finis, & terminus est petendus.

Arguitur pro oppositā *sententia*, quæ *asserit*, quòd *non sunt finiti, & terminati 70. anni, in primo anno Cyri, sed in 2. Darij Hystaspis ter-*

tertij Regis à Cyro. Ex Zachariæ 1. vbi legitur quòd in 2. anno Darij Hystaspis, qui fuit tertius à Cyro successor dicitur, quod orauit Propheta, quòd Deus ostenderet misericordiam, eo quòd ille annus erat septuagesimus, in quo sit promissus finis, & terminatio captiuitatis 70. annorum. *In anno 2. Darij* (Hystaspis, non Darij Medi) *Regis factum est verbum Domini ad Zachariam, &c.* vers. 8. *Vidi per noctem, & ecce vir ascendens super equum rufum inter mirtheta, &c. & respondit Angelus Domini, qui erat in Zacharia, & dixit Domine exercituum, vsque quo tu non miserebaris Hierusalem, & vrbium Iudæ, quibus iratus es. Iste iam septuagesimus annus est.* Eadem sententia legitur in Danielis 9. sic: *In anno primo Darij filij Assueri, qui imperauit super regnum Chaldæorum in anno vno regni eius, ego Daniel intellexi in libris numerorum annorum, de quibus factus est sermo Domini ad Ieremiam, vt complerentur desolationis Hierusalem 70. anni.* Vbi in anno 1. Darij, qui coextit primo anno Cyri petit, vt impleantur 70. anni complendi in 2. Darij Hystaspis, ex quo colligitur. Primò, non esse finitam, & terminatam captiuitatem in primo anno Darij Medi, qui coextitit primo anno Cyri, ac per consequens, non in primo anno Cyri. Secundò, colligitur ex precitato testimonio Zachariæ 1. quod in anno secundo Darij Hystaspis fuit finis, & terminus septuagenariæ captiuitatis, & non ante in primo Cyri, qui præcessit Darium Hystaspem annis 8 quibus regnauit Cambyses, & 7. Cyri.

Respondetur exponi Zachariæ verba à quibusdam, vt sint legenda, non assertiue, sed interrogatiuè, iuxta correctiora Biblia Plantiniana, & expendenda per modum admirationis. None iste septuagesimus annus est libertatis Iudaicæ! prædictæ à Ieremia, & Prophetis, & interrogatoriè legi ab Hebræa, Græca, & Chaldaica. Secundò, alij dicunt legenda assertoriè, & orare, vt Deus misericordiam libertatis inceptam sub Cyro, & decennio suspensam, tempore successoris Cambysis vlterius non differat. Resp. aliter, eoquòd prædictæ solutiones, non quadrant nostræ sententiæ admodum, & præsertim: nam existimo, non loqui Zachariam de captiuitate Iudæorum, quæ finita, & terminata est in Cyro per libertatem publicam concessam cuilibet, qui vellet illa vti, & reggredi, sed de excidio templi, & vrbis, vt ipsa verba sonant, cuius initium, & finis petendus est, vt statim dicendum à diuersis principijs, ac captiuitas Iudæorum, vt diuersa sint initia, & finis vtriusque. Scilicet initium ab anno 19.

Re-

Regis Nabucho Donosor finis verò, & terminus, non in anno primo Cyri, aut Darij Medi, sed Darij Hystaspis, tertij Regis à Cyro, & ita congruit petitio Prophetæ complendi 70. annos excidij templi in secundo Darij Hystaspis vbi non orat pro solutione seruituris Iudaicæ, quæ edicto publico soluta est à Cyro, sed in illo septuagesimo anno misericordiæ solutionis seruitutis, & captiuitatis orat pro reædificatione tẽpli, & vrbis Hierusalem, misericorditer promissa illis verbis *misereberis Hierusalem, & vrbium Iudæ, & illis reuertar ad Hierusalem in misericordijs, & domus mea ædificabitur.* Vel si non aquiescis dic cum Ribera loqui de impleto septuagenario, non solùm captiuitatis, sed excidij templi, & euersionis vrbis, & orare, iam impleto vtroque septuagenario pro reditione illorum Iudæorum, qui remanserunt voluntariè apud Chaldæos, eo quòd pautiores redierũt in Hierusalem, quam essent necessarij ad implendam, populandam, & reædificandam vrbem, & erigendum templũ. Præsertim, si sit verum, quod mihi videtur difficile redijsse, solùm post expletum septuagesimũ annum captiuitatis, & orare, vt redirent vltimi captiui, qui nondũ compleuerant. Nã existimo fuisse captiuitatem 70. amorum in gente Iudaica collectiuè, non diuisiuè, in omnibus, non in singulis.

Conclusio asserit sextò, quòd *70 anni excidij templi, & desolationis vrbis Hierusalem, incipiunt ab anno 19. Regi Nabucho-Donosor, finem verò, & terminũ in anno 2. Darij Hystaspis. Quod alij dicunt plus minus vè.* Probatur prima pars, nam excidium templi, & desolatio Hierusalem accidit anno 19 Regni Nabucho Donosoris. Nam legitur 4. Reg. 25. à vers. 1. quòd *venit Nabuchodonosor Rex Babylonis in Hierusalem*, & quòd ab anno 9. Regis Sedeciæ, vsque ad 11. & vltimum illius *ciuitas est vallata*, & statim quòd Sedecias profugus captus est excæcatus, & *vinctus catenis ductus in Babylonem.* Deinde legitur vers. 8. *Mense quinto septimæ die mensis ipse est annus nonus decimus Regis Babylonis*, &c. *venit Nabuzardam in Hierusalem, &c. & succendit domum domini palatium*, Regis & domos Hierusalem, & muros incircuitu destruxit. Hoc ita certissimum, quòd non sit ambigendi locus. De fine autem, & restauratione saltim inchoata licentia publica, quæ variis vicibus, & temporibus distantibus, data est, præmit maior difficultas, quæ in secunda parte firmiter est probanda.

Argui solet contra primò, nã excidium templi est inchoatum anno 11. Ioakim cum ipse vinctus catenis captus est in Babylonem, & vassa Domini translata, vt legitur 2. Paralyp. 36. à vers. 6. & *vinctum catenis duxit in Babylonem*

ad

ad quam, & vasa Domini transtulit, & posuit ea, &c. sed ab anno 11. Ioakim in serie Regum Iudà fluxerunt, plusquam 20. anni ad decimum nonum Regis Nabuchodosor, vt videre est in serie Regum Iudà, ergo initium excidij templi altius est inchoandum. Respondetur hic esse sermonem de excidio templi, quoad fabricam, quæ anno decimo nono dicto igne consumpta est, non quoad supellectilia, & vasa depræ data, quæ minus propie dici potest excidium.

Probatur secunda pars. *Finitum, & terminatum excidium templi, & vrbis in anno secundo Darij Hystaspis.* Nam ab anno decimo nono, Regis Nabuchodonosoris ad 2. Hystaspis excurrerunt 70. anni, in quo instauratio templi, & vrbis peracta est, probari solet. Nam à decimo nono Nabuchodonosoris ad 45. sui Regni excurrerunt saltim 26. de Euilmerodac saltim 22. de Balthasare 3. in serie Regum Chaldæorum, cuique succesit, series Regum Persarum, in qua solent numerari de Cyro cum Dario, iuxta varias sententias alij septem, alij decem: Cambysis 8. Darij Hystaspis 2. qui simul iuncti conficiunt 70. plus minus ve *igitur* 70. excidij templi, & desolationis vrbis initium habent à decimo nono Nabuchodonosoris, & finem in secundo Darij Hystaspis, qui succesit Cambysi, Dario Medo, & Cyro. Patet nam legitur Zachariæ 1. quòd in anno 2. Darij Hystaspis, qui fuit successor tertius à Cyro sic. *In anno 2. Darij Regis*, &c. vers. 8. *Domine exercituum, vsque tu non miserebaris Hierusalem, & vrbium Iudà, quibus iratus es, iste iam septuagesimus annus est*, vbi non loquitur de secundo anno Darij Medi. Nam in illo sicut in suo collega imperij Cyro, captiuitas septuagenaria Iudæorum, iam erat finita, & terminata edicto publico, & post tot Reges, & annos, non recte diceretur, in secundo anno Darij Medi, iste iam septuagesimus annus est, apte tamen dicitur in secundo anno Darij Hystaspis, tertij successoris à Dario Medo, & Cyro. Igitur 70. anni completi in secundo anno Darij Hystaspis sunt excidij templi, & vrbis, & orat Propheta, non pro solutione seruitutis Iudæorum, quæ olim erat soluta à Cyro coregnante cum Dario Medo, sed pro instauratione templi, & vrbis. Impleto illo septuagenario excidij, & desolationis. Loqui autem de instauratione templi, & vrbis constat ex dictis verbis, *vsque quo non miserebaris Hierusalem*, &c. & ex adiunctis, *zelatus sum Hierusalem*, &c. reuertar ad Hierusalē in misericordijs, & domus mea ædificabitur, &c. Confirmari solet ex illo Danielis nono. *In anno primo Darij filij Assueri, &c. in anno vno Regni eius, ego Daniel, &c. vt complerentur desolationis*

Hie-

Hierusalem 70. anni, vbi orat in anno primo Darij, vt compleantur 70 anni desolationis Hierusalem, in secundo anno Darij Hystaspis. Nam ab anno 19 Nabuchodonosoris, in quo accidit excidium templi, & vrbis fluxerunt 70. anni excidij, non in primum Darij Medi, vbi finita est captiuitas Iudæorum, sed in 2. Darij Hystaspis, vbi finiti sunt, & terminati 70. anni excidij templi, & euersionis vrbis.

Arguitur contra ad probandum 70. *annos excidij templi, & vrbis esse finitos, & terminatos in anno primo Cyri, non in 2. Darij Hystaspis*, ex illis testimonijs, quibus supra probatum est 70. annos captiuitatis Iudaicæ finitos, & terminatos in anno primo Cyri. Nam videntur loqui expresse de instauratione, & reædificatione templi, & vrbis. Nam legitur 2. Paralyp. vltimo vers. 23. *Hæc dicit Cyrus Rex Persarum, &c. & ipse præcepit mihi, vt ædificarem ei domum in Hierusalem.* Didicerat enim ex oraculo Isaiæ cap. 44. vers. 26. & aliorum Prophetarum, à Cyro nominatim templum, & vrbem instauranda. Similiter legitur Esdræ 1. c. 1. à v. 2. *Hæc dicit Cyrus, &c. & ipse præcepit mihi, vt ædificarem ei domum, quis est in vobis de populo eius, ascendat in Hierusalem, & ædificet domum Domini Dei Israel.* Respondetur dari libertatem edicto publico, & insinuari finem, scilicet ædificandi domum Domini, & instaurandi Hierusalem, sed tamen cum sit prōmissa instauratio, & reædificatio post 70. annos Danielis 9. *Vt compleatur desolationis Hierusalem 70. anni.* Zachariæ 1. *Vsquequo tu non miseberis Hierusalē, & vrbium Iudæ, quibus iratus es. Ecce iste iam septuagesimus annus est:* cogimur indagare finem, & terminum 70. annorum excidij templi, & vrbis, ab excidio, quod accidit anno 19. Regis Nabuchodonosor, & ita cogimur excurrere per Reges Chaldæos, & Persas, & cum inueniamus finem, & terminum in 2. anno Darij Hystaspis, qui fuit tertius à Cyro, ex immediate præcitatis testimonijs in probatione condusionis. Zachariæ 1. & Danielis 9. tenemur amplecti in illo fuisse rigorose finitam, & terminatā, & ex tunc instauratam, & reædificatam, quoad inchoationē, quæ pluribus vicibus, & tēporib' valde distantibus, de instauratione, quasi per partes actum est. Quin obstet, quòd Cyrus andito prædicto oraculo dederit licentiā edicto publico, vt irent, & reædificarent. Idem concesit Darius Hystaspis anno 2. regni sui, vt satis colligitur ex 1. Esdræ 4. 5. 6. & ex 3. Esdræ 4. à vers. 43. deposcenti Zarobabeli, iuxta Regis votum, & rescripto regio, quo visso Iudæi exultarunt. Deniq; 3. Esdræ, concessum anno Artaxergis 7. & Nehemiæ, vlterius anno Artaxerxis 20. cum pluribus donatiuis, & opibus ad templi, & vrbis fabricam 1. Esdræ 7. à vers. 7. & de Nehemia, 2. Esdræ

dre. Et ita concluditur in dicto 2. anno Darij Hystaspis finitam, & terminatam desolationē, vbi primo inchoata est instauratio, & reedificatio, sequenti tempore perfecta, & completa.

Conclusio asserit septimò, ex præcedentibus. *Necessario distinguendos 70. annos seruitutis, & 70. annos excidij templi, & vrbis, vt non sit idem initium, & finis, sed diuersi, & distantes. Vt sint assignanda diuersa principia, & diuersi fines, & termini duplicis calamitatis septuagenariæ, captiuitatis Iudaicæ, & excidij templi, & vrbis.* Ita interpretes nobilissimi, quos sequitur Ribera ad Zachariæ 1. Ratio, nam in præfatis conclusionibus, probatum est, quòd initium 70. captiuitatis inchoatū est à 3. & 4. Ioakim, finis verò est terminatus in 1. Cyri. Initiū verò excidij templi, & vrbis ab anno decimo nono Nabuchodonosoris, finis verò est terminatus in 2. Darij Hystaspis, sed ista sunt initia, & fines diuersi. Nā acciderunt temporibus valdè distantibus, vt constat *ex serie Regum Iudà, & ex serie Regum Chaldæorum.* Cui adiuncta est *series Persarum, à Dario Medo in Darium Hystaspim*, tertium ab illo. Immo necessariò esse distinguendos. Nam testimonia scripturæ allegata ad id cogunt, ergo ita necessario distinguēdi. Secūdò nam dum templum non erat excisum, nec palatium Regis, & domus ciuitatis inflamatæ, nec muri ciuitatis euersi, quæ acciderunt decimo nono Nabuchodonosoris, iam erat inchoata captiuitas, & transmigratio Regis Ioakim, & aliorum pluribus annis ante. Nā ante excidium templi numerati sunt 40 anni, ergo non est idem principium, sed diuersi vtriusque. Tertiò, nam distinctio ista non est figmentum Hebræorum. Nam Iosephus 11. antiquitatum 1. sic: 1. anno Regni Cyri, qui fuit trasmigrationis 70. & decimo, & 11. dicit desertam esse Iudæam, & Hierusalem per 70. annos. Vbi distinguit de captiuitate, & deinde de excidio templi, & desolatione vrbis. Vltimò, nam *ista distinctio est valdè necessaria ad conciliandā loca scripturæ*, quæ videntur oppositā, vt illa de initio, & fine captiuitatis Iudaicæ, & excidij templi, & vrbis, vbi probatum est captiuitatē inchoatam in 3. & 4. Ioakim, cui coexstitit primus Nabuchodonosoris ex Danielis 1. à vers. 1. *anno 3. regni Ioakim, & Ieremiæ 25.* à vers. 1. *in anno 4. Ioakim filij Iosiæ, ipse est annus primus*, &c. *de initio verò* excidij templi legitur accidisse pluribus annis post. 4. Reg. 25. à vers. 8. *ipse est annus nonus decimus Regis Babylonis*, qui incendit templum, & euertit ciuitatem, post vndecimum annum Sedeciæ, ibi vltimum in serie Regum Iudà. Quæ componi solent posita distinctione de initio captiuitatis, & initio excidij templi, quod accidit temporibus val-

valdè distantibus, *similiter componi solent testimonia de fine captiuitatis, & fine excidij* per instaurationem templi, vt illa de fine captiuitatis 2. Paralyp. vltimo à vers. 22. *anno autem* 1. *Cyri &c.* & 1. Esdræ 1. à vers. 1. *In anno* 1. *Cyri, &c.* & de fine excidij templi, & instauratione templi, & vrbis præcitata in 2. anno Darij Hystaspis, vt Zachariæ 1. à vers. 12. vbi Propheta *In* 2. *anno Darij* Hystaspis tertij successoris à Cyro orat pro instauratione Hierusalem, & vrbium Iudà dicens, *vsque quo tu non miſereberis Hierusalem, & vrbium Iudà, quibus iratus es, iste iam septuagesimus annus est.* Quæ componi solent dicendo loqui, de diuersis finibus, qui acciderunt temporib⁹ valdè distantibus. Nã, qui non distinguunt laborant maximè in exponendo isto loco Zachariæ orantis *in* 2. *anno Darij* Hystaspis pro solutione captiuitatis, cum iam sit soluta pluribus annis, à suo anteceſſore Dario Medo, & Cyro, in quibus impleti sunt 70. anni captiuitatis, & ita difficile est quòd *in* 2. *anno Darij* Hystaspis dicatur verè, *iste iam septuagesimus annus est*, vt sint coacti legere interrogatoriè, non assertoriè, quod duram valdè, cum legi possit assertiuè, si fiat sermo de fine excidij templi, & ciuitatis per inchoatam instaurationem, sine violentia textus, imò cohærentia, *vsque quo tu non miſereberis Hierusalem, & vrbium Iudà.* Licet non sit ita violenta aliorum expositio, quòd oret pro pleniori instauratione, aut reditione Iudæorum impleto septuagenario.

Arguitur contra primò pro *sententia*, quæ *affirmat, non esse distinguendos istos* 70. *annos excidij templi, à* 70. *annis captiuitatis Iudæorum, nec duo initia, nec duos fines, & terminos.* Tenet Tirinus tom. 1. in Chronico cap. 35. conclusione secunda. Primò quia illos non distinguunt Prophetæ. Secundò, quia in Cyro vtraque calamitas finem accepit, quia simul liberauit edicto publico à captiuitate, & ab excidio, indulgendo licètiam instaurandi domum Domini in Hierusalem. Nam dedit licentiam Iudæis ad ascendendum in Hierusalem, & ædificandum templum Domini, vt legitur 2. Paralyp. vltimo à vers. 22. *iussit prædicari* in Regno suo, &c. vt ædificarem ei domum, &c. & 1. Esdræ 1. à vers. 1. *In anno* 1. *Cyri, &c. transduxit vocem in regno suo, quis est in vobis de vniuerso populo, eius ascendat in Hierusalem, & ædificet domum Domini Dei Israel.* Tertiò, nam Ieremiæ 25. legitur excindendum esse Regnum Babylonicum, cum impleti fuerint 70. anni, qui 70. anni extendi non possunt vltra excisſam Babyloniam, quæ accidit vltimo anno Balthasaris, cuius Monarchiæ immediate successit Cyrus, qui dedit libertatem edicto publico vers. 12. *cumque impleti fuerint* 70. *anni visitabo super Re-*

Regem Babylonis, &c. Ergo dici nõ potest extendi excidium, & institui instaurationem templi, & vrbis vltra Cyrum ad 2. Darij Hystaspis, à Cyro tertij successorijs, & mariti Estheris. Tertiò, nam dato, quòd à 3. & 4. Ioakim ante excidium templi fluxerint 40. anni, à decimo nono Nabuchodonosoris, in quo accidit excidium non fluxerunt 70. anni, vsque ad secundum Darij Histaspis, vt in eo sit finis excidij terminatus per instaurationem templi, & vrbis. Præsertim, quòd edictum Regium de illa instauranda accidit varijs vicibus, & temporibus valdè distantibus. Nam 1. Cyrus ex 2. Paralip. & initio Esdræ 2. Darius Hystaspis anno 2. regni sui. 1. Esdræ 4. 5. 6. Et 3. Esdræ 4. vers. 43. petenti Zorobabeli annuit regio scripto, & anno 7. Artaxerxis, Esdræ, & Nehemiæ 20. Artaxerxis, vt legitur Esdræ 1. 7.

Respondetur ad primum distingui à Prophetis, vt probaui in probatione vltima conclusionis, imò distinctione conciliari testimonia eorum, quæ primo aspectu apparent opposita. Ad secundùm negandum est, quòd in Cyro finem accipit vtraque septuagenaria calamitas, & ad probationem, quòd dedit licentiam ascendendi, & instaurandi templum dixi ostendisse finem licentiæ, sed nõ instaurasse templum, nec ciuitatem. Vt ostenditur Zachariæ 1. vbi in 2. anno Darij Hystaspis, tertij Regis à Cyro orat Propheta pro eo, *Domine exercituum vsque quo tu non miserebereris Hierusalem, & vrbium Iuda, quibus iratus es. Iste iam septuagesimus annus est*, imò, nec iubauit donarijs, aut destinatis ministris, sicut alij successores, quod est non sola intentione, sed opere instaurare. Ad tertium dico, ab excidio templi, quod accicit decimo nono Nabuchodonosoris ad 2. Darij Hystaspis excurrisse 70. annos. Id mihi suadeo 1. ex dicto loco Zachariæ 1. qui *in 2. anno Darij Hystaspis orat pro instauratione Hierusalem, & vrbium Iuda*, & dicit assortiuè, & non solùm interrogatiuè *Iste iam septuagesimus* annus est, quod intelligi non potest de captiuitate Iudæorum, quia iam olim in antecessore suo Cyro erant cõpleti, ergo intelligendi veniunt de excidio templi, & vrbis. Et ibi emitti orationem pro illorum instauratione. Et quamuis id probabili cõiectura deductum sit, ex dicta scriptura, docti interpretes in eo conueniunt, & sic computant annos ex 45. Regni Nabuchodonosoris, omissis 19. in quo accidit excidium restant 26. Pro Euilmerodac 23. Pro Balthasare 3. his ex serie Regum Persarum adiungunt Cyri cum Dario, in serie Regum Persarũ pro Cyro à capta Babylone 3. Nam alij 27. regnauit apud Persas, quibus etiam coregnauit Darius Medus, alij vtrique tribuunt variè septem, aut decem, pro filio Cyri Cambysse à morte Cyri 6.

pro Cambysis succeſſore Smerde 7.mẽſes,pro Dario Hyſtarpis duo ex 37.ſui regni, qui fuit maritus Eſtheræ,&iſto anno 2. regni fecit poteſtatem Iudæis perficiendi tẽpli fabricam,vt legitur 1.Eſdrę 6. v.7. ſic Tirinus in Chronico cap. 37.in ſerie Regum Monarchiæ in orbe 2.ſcilicet Perſarum.Alij diſcurrunt diſpari numero, ſed leui diſparitate,vt prudenti iudicio dici poſsit à decimo nono Nabucho donoſoris ad finem Monarchiæ Chaldæorum, & Monarchiæ Regum Perſarum ſuccedentium ad 2. annum Darij Hyſtaſpis excurriſſe dictos ſeptuaginta annos, de quo videndus eſt Ribera ad Zachariæ 1.& Tirinus ibidem.

Arguitur ſecũdò,ſuppoſita ſententia,quę aſſerit,à Cyro excurriſſe ad Darium Hiſtaſpim plus 19. annis,vt cõtra Tirini ponẽtis 37. & aliorum ponentium 30. Nã ab anno 1. Nabuchodonoſor ſummitur initium captiuitatis,& finis in Cyro, & à 19. Nabuchodonoſor initium excidij,& finis in 2.Darij Hyſtaſpis, ſed quot diſtant initijs diſtant terminis, & diſtant initijs 19. ergo diſtant terminis 19. ſed terminus captiuitatis ponitur in primo Cyri,ergo terminus excidij poni debet 19. poſt Cyrũ,ergo nõ terminatur in 2. Hyſtaſpis, patet. Quia à primo Cyri in ſecũdũ Hiſtaſpis excurrerunt iuxta Chronologias 30. aut 37.

Reſp.fuiſſe ſententiã cõputantiũ à Cyro in Hyſtaſpim plus quã 19. & 30.& 37.vt Tirinus, ſed illi in ſerie Regũ Iuda omittebãt Euilmerodac 22.annos, & Balthaſaris 3.imò,& cõfundebãt perſonas,& annos,&ita cogebantur ponere in ſerie Regũ Perſarũ dictos annos, ad integrandòs numeros intẽtos in ſuis cõputis.Nobis autẽ non eſt neceſſe ad intentũ, niſi annis Nabuchodonoſoris,qui à 19.excurrerunt ad 45 videlicet 26. & Euilmerodac 22. & Balthaſaris 3. qui ſimul iuncti conficiunt 51.addere 19. à Cyro in Hyſtaſpim ad complendos 70.excidij.

Arguitur tertiò, nã finis excidij templi, & vrbis ſummi debet ab inſtanti,quo exijt edictum ędificã di tẽplum,& erigendi muros, ſed hoc edictũ,aut licentia legitur,ſolùm data (non à Dario Hyſtaſpis) ſed ab Artaxerxe ab anno 7.1.Eſdræ 7.à v.11.in 8.Aut anno 20.eiuſdem iuxta 2. Eſdræ 2.à v. 1. & à Cyro in Artaxerxẽ fluxerunt plures anni, ergo non ſtat computatio certa,& firma.

Reſpond. plures Reges à Cyro dediſſe licentiã reędificandi templum,& intermiſſam fabricã,iterũ proſequendi, Artaxerxes autẽ dedit licentiã 1.Eſdræ 7.citato, ducendi coloniam pertinentium ad cultum templi,idem verò 2.Eſdrę 2 Nehemiæ Pincernæ ſuo erigendi domos,& muros ciuitatis.

Concluſio aſſerit octauò, & vltimò,quòd *ita anxie orat Daniel pro libertate, quam ſciuit promiſſam à Deo*,anno ſeptuageſsimo, qui iam age-

ãgebatur, non quia dubitaret de promissione, *Iam prædicta à Ieremia, & Prophetis: nec quia diffideret de diuina prouisione*, qui nouerat esse constantẽ, & immutabilẽ, *sed quia verebatur Iudeorum peccata demeritura beneficium.* Præsertim si diuina promissio non esset omnino absoluta, vt loquitur schola scholastica, sed conditionalis, posita conditione, oratione, præcibus, & lachrimis Prophetæ, & remotis impedimentis peccatorum illorum Iudæorum. Quos videbat post punitionem, & captiuitatem nihilò meliores, imò fortè peiores esse factos, imò indignos liberatione diuina. Et ita cum in foribus esset præfixum tempus enixè deuotè, & religiosè supplicat. Ista ratio deducta est ex Theodoreto, licet Deus aliquid promisserit, si nos promissis eius indignos exhibeamus, impediemus effectũ beneficientiæ, & ex Hieronymo postulat Daniel, non quòd incredulus sit futurorum, sed vt quod Deus promiserat, per ipsius preces impleret. Deus enim non rarò decernit finem positis medijs, vt posita oratione Stephani conuersionẽ Pauli, & principatũ Iacob in populo Hebræo ex Rebecca sterili, posita oratione, & supplicatione parentis Isaac. Ita in præsenti libertatẽ è seruitute Babylonica positis precibus, & supplicatione Sanctorum virorum, adhibita punitione, & castigatione, & fortè remotis impedimentis peccatorũ. Quæ quia veretur, meritò, & nõ frustra orat, ita anxiè, & religiosè, ne impediãt Iudeorũ peccata. Mitto plurima scripturæ exempla, satis dicta pro breuitate.

AD MORES.

Quòd *peccata ita exoriuntur solent, quòd ira Dei prouocetur, vt tradat puniendos, & castigandos peccatores diuturno tempore, & seuero mulctatori.*

Quòd *Deus dũ seuerè castigat, de restituendis beneficijs sublatis, cogitat.*

Quòd *si Deus castigat seuerè, adhuc innocentes, & templa sua, timeant peccatores seueriorem damnationem.*

Quòd *sit conquiranda æterna beatitudo, decreta dependenter à meritis, studio bonorum operum, vt subsistant requisita, & remoueantur impedimenta.*

TEXTVS.

Vers. 21. *Adhùc me loquente, &c.* Vers. 22. *Dixitque Daniel nunc egressus sum, vt docerem te, & intelligeres.* Vers. 23. *Animaduerte sermonem, & intellige visionem.* Vers. 24. *Septuaginta hebdomades abbreuiatæ sunt, vt adducatur iustitia sempiterna.* Vers. 25. *Scito ergo, & animaduerte ab exitu sermonis, vt iterum ædificetur Hierusalem vsque ad Christum ducem hebdomades septem, & hebdomades sexaginta duæ erũt, &c.* Vers. 26. *Et post hebdomades sexaginta duas occidetur Christus.* Vers. 27. *Confirmauit pactum hebdomada vna, & in dimidio hebdomadis deficiet hostia, & sacrificium, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 4. *Quis sensus legitimus inclusus in verbis? quid significet hebdomada hic apud Danielem, an septenarium dierum, vel annorum? & cur diuiserit Angelus stilo insolito hebdomadas, in septem, & in 62. & in vnam? & quid intelligendum per hebdomadas abbreuiatas? & quando inceperint Danieli hebdomadæ? & quando finierint?*

COnclusio asserit primò, quòd *ista sit breuis legitima, & apta expositio textus. Vt illud verbũ Danielis adhuc me loquẽte, &c. indicet vim orationis, quæ impetrat Dei annuitionem indilate.* Iuxta illud, *voluntatem timentium se faciet*, & de peccationes eorum exaudiet, & iuxta varia exempla sacræ scripturæ, in quibus legitur, non solum exaudisse preces suorum, sed anteuertisse præmio deprecationem vocalem, in præsenti verò dum Daniel effunderet deprecationem apparuit Angelus sub viri specie, qui fuit Gabriel deferens legationem aduentus Christi, mortis, &c. intra spatium septuaginta hebdomadarum, qui elapsis annis non paucis detulit legationem ad virginẽ de incarnatione, & conceptione verbi. Ille enim interpretatur Deus homo. Et ita iuxta nomen detulit congruã legationẽ. An autẽ sit de ordine Seraphinorũ, vt dixere cũ magistro plures apud Cornelium annuntians summã diuinã charitãtem erga homines, quin obstet dici Archangelũ, non admodum curo. Dicitur *tetigisse* Danielẽ, vt excitaret ad vigilẽ attẽtionẽ oraculi Dicitur, *in tempore sacrificij vespertini.* Nã accidit illa apparitio illo tẽpore vespertino, quo solebat offerri iuge sacrificiũ vespertinũ Deinde dicitur, quòd *ab exordio precum*, Danielis, *egressus est sermo*, quia exijt à Deo præceptũ, vt veniret Angelus ad instruendũ, & erudiendum Prophetã Danielẽ, de tẽpore aduentus Messiæ, prædicatione, miraculis, morte, &c. Alia autẽ verba, *quia vir desideriorum es*, indicant in sensu actiuo, quòd desideraret anxie Propheta salutẽ, & libertatem generis humani per aduentũ Messiæ, passiuè verò esse amabilem à Deo, & obiectũ dignũ amore diuino, & longè altius Christus, qui est desideriũ collium æternorum. Adiungitur vlterius *septuaginta hebdomades abbreuiatæ sunt*, & eget disquisitione, qua ratione dici possint abbreuiatæ, & qua nõ. Illud verò, *vt cõsummetur prauaricatio* accipi solet in duplici sensu, & expositione. Prima expositio est, vt impietas in incrementũ summũ assurgat Christicidio, vt incipiat inde medicina. Qua ratione solet peritus medicus permittere infirmitatẽ increscere, vt incipiat medicari. Secunda, & verior, vt consummari præuaricatiõnẽ, idem sit, quod finiri per satisfactionem Christi, qua ratione dici solet, quòd debitum

tum est finitum, consummatum, & extinctum ipsa solutione reali, & instituta sacramenta in finem extinctionem, & mortem peccatorum. Illud verò, *& adducatur iustitia sempiterna*: subintelligendo Christum, qui causaliter piè viuentium est iustitia, sanctificatio, & redemptio, meritis. Iuxta 1. Corinthior. 1, vbi dicitur iustitia æterna, quia secundùm diuinitatem est iustitia nostra æterna causalis, vel quia hic inchoata iustitia temporalis per gratiam perficitur, & consummantur in cœlo æternaliter per gloriam. Id verò quod subiungitur, *vt impleatur visio* intelligendum de re, & euentu prophetico, publicato per oraculum. Vlterius illud, quod adiungitur, *& vngatur sanctus sanctorum*, accipiendum de Christo, qui ratione sanctitatis increatę substantialis hypostaticæ vngitur in sacerdotem, Regem, Prophetam, Doctorem, Legislatorem, & Redemptorem, super alios sanctos sanctitate creata, & accidentali. Est enim Christus omnis sanctitas efficiens causa meritoria, & exemplaris respectu nostræ, cui, qui magis est cõformis, est magis sanctus. Denique cætera à v. 25. *ab exitu sermonis* exposita varijs expositionibus, quæ motiua sunt diuersarum sententiarum egent maiori discussione, subiungenda. Idem de hebdomadis initio, & fine. Et denique illud in vers. 27. *confirmaui pactum*, *& deficiet hostia*, *& sacrificium*, ob id dicitur, quia in dimidio vltimæ hebdomadæ, legis veteris sacrifitia, figuræ: finem accipient agni veri Christi sacrificio incruento Eucharistico, & cruento crucis subrogato, figurato. Et hic locus est illustris ad conuincendos Iudæos de aduentu Messiæ, nam à die quo inchoati sunt septuaginta heddomades, finitas esse, sola pertinacia Iudaica tumultuari potest.

Conclusio asserit secundò, quòd *Hic hebdomada significet septenarium annorum, non dierum, aut aliter.* Est communis, ita Cornelius hic ad vers. 24. Tirinus in tom. 1. in Chronico cap. 38. Rua. tom. 2. controuersia octaua. Nam licet hebdomada in prima impositione nominis significet septennarium cuiuslibet rei, & in vsu vulgari summi soleat pro septennario dierum, imò soleat extendi, & summi pro septennario decenniorum, & centenariorum, & pro septennario Iubilęorum, & in sacra Scriptura pro septennario dierum, vt Genes. 29. & Leuitici 23. & Danielis 10. tamen hic accipi non potuit à Daniele, nec vsus est nisi in acceptione, qua summitur pro septennario annorum. Nam si summeretur pro septenario dierum, septuaginta hebdomades includerent tantũ 490. dies, & illa quæ prædicit Daniel euenirent intra 490. dies, & non acciderunt, quia non est occisus Christus intra illos dies. Nec cessauit hostia, & sacrifi-

cium, nec Iudæi negarunt Christum. Secundò, quia, quæ prædixit Daniel acciderunt intra illas septuaginta hebdomadas: sumpta hebdomada pro septenario annorũ, quibus conficiuntur in multiplicatione septuaginta per septé 490. hac ratione probari potest nõ sum mi hebdomadã à Daniele pro septenario decenniorũ, seu centennariorum, siue Iubilæorũ. Nam illis acceptionibus non congruit id, quod prædictũ est à Daniele euenturũ, quia ante illos septennarios acciderunt vaticinata à Daniele.

Conclusio asserit tertiò, qnòd *diuiserit Angelus illas hebdomadas illo stilo insolito in septem, & in 62. & in vnam à consilio, ratione mysterij.* Primò à quibusdam redditur ratio, ita diuisisse, vt intenderit reddi obscuram prophetiam de aduẽtu Messiæ. Displicet, quia illa verba prophetiæ, ita erant obscura, vt nam indigerent adiuncta maiori obscuritate.

Secundò redditur, *ratio ab alijs.* Ita diuisisse, vt vsui Hebræorum morem gereret, & conformitatẽ. Nã incipiunt numerationes à minori ad maiorem numerum, sicut est in vsu apud grãmaticos, dum posito decennario solent incipere à minori numero, duodecimo, tertio decimo, & alijs iuxta regulas ipsorum: & ita dicunt dixisse octo, & quinquaginta annis. *Displicet,* nam Spiritus Sanctus intendebat in tali diuisione extraordinaria aliquod altius mysteriũ. Secundò, nam post sexaginta duas adiunxit vnam. Ergo in tali partitione obseruauit vtrumque numerando septem ante sexagima duas, & numerando post maiorem numerum minorem, vnius.

Tertia *ratio, & verior.* Causa est ita diuisisse, vt distingueret mysteria per tripartitas hebdomadas: in prioribus septẽ reædificationẽ Hierusalem, murorum, & portarũ per Nehemiam, diu optatam à Iudæi memorabilem, & festiuã. Deinde illam liberationẽ Iudaici populi à morte machinata à Rege Assuero de cõsilio Aman, in eum inuersa, vt suspenderetur Esther præcibus, & Mardochæi monitu, vt legitur in libro Esther. In alijs sexaginta duab⁹ eò, quòd in periodo earum, euentura erant in populo Iudæorum plura memorabilia, partim fausta, partim infausta. Vt Alexandri Magni aduẽtus Hierosolymã, & ditaturum templum maximis munerib⁹. Antiochi persecutionẽ. Principatum Machabæorum: scepstri Iudaici translationem in alienigenam Herodem, & nativitatem Christi fœliciſsimam, & desideratiſsimam, & in fine harũ sexaginta duarũ hebdomadũ, illustris, & faustus Baptismus Christi, Spiritu Sãcti apparionẽ in specie columbæ, & vocem de cœlo lapsam, & publicantẽ nomine Patris, *hic est filius meus dilectus*, in vltima verò illa hebdomada, vna, illustri inter cæteras euẽtura multa memorabilia, & notabilia, & ob id est partitus

in

in duas medietates. in priori euenit prædicatio Christi, miracula in confirmationem doctrinæ finis sacrificiorum veteris legis, subrogato sacrificio Eucharistico, passio, & mors Christi, resurrectio, missio Spiritus Sãcti, &c. in alia verò medietate posteriori diuisio Apostolorũ per orbis partes, & alia vsq; ad trigesimũ sextũ à Christi natiuitate. Et ita dicta est, vna, ab Angelo, id est, vnica in cõgerie mysteriorũ memorabiliũ abinitio mũdi.

Conclusio asserit quartò. *Illas hebdomadas dici abbreuiatas variis rationibus probabilibus. Prima expositio* in acceptione, qua abrebiatio sumitur pro paucitate, vt idẽ sit diffinitas brebitate, aut paucitate. In hoc sensu Matth. 24. legitur de dieb⁹ Antichaisti, quòd nisi breuiati fuissent, nõ fieret salua omnis caro, & abreuiatos propter electos. Idest à Deo prædefinitos, & decretos dies paucos. Et Iob 17. *breues dies hominis sunt*, id est pauci dies mei breuiabuntur, id est pauci erunt. *Secundò dici abbrebiatas* eo, quòd, nõ sunt integræ, & cõpletæ, quia illa vna vltima, nõ fuit cõpleta, sed in medietate Christi mors euẽtura, & illud solet dici abreuiatũ, quod non habet integritatẽ, & cõplementũ. Et ita quia erat venturus Messias, & expiaturus peccata ante integritatẽ, & cõplementum illius vltimæ hebdomadæ, ideo dici hebdomadas abbreuiatas. *Tertiò dici solet abbreuiatæ* in ea dispositione, quę summit abbreuiationẽ pro cõcisione, & decurtatione, vt sit sensus, illas abbreuiatas dici à Deo ad aduẽtũ Messiæ, visis præcib⁹, & meritis Danielis, & aliorũ Sanctorum, quã aliàs in alio ordine rerũ, decerneret, nõ visis aut secluſis precibus, & meritis Sãctorũ. Et ira reuelatur Danieli intuitu orationis suæ, & Sanctorũ fuisse tẽpus aduẽtus Messiæ abbrebiatũ ad septuaginta hebdomadas. Quod nõ esset ita decurtatũ eis præcib⁹ nõ visis aut secluſis. Et Angelus id aduertit in oraculo, *quia vir desideriorũ es in bonũ gentis desiderans* aduentum Messiæ, decurtauit Deus tẽpus, intuitu meritorũ, quod nõ decurtasset illis nõ visis, aut excluſis. Non quòd tẽpus à Deo priùs decretũ efficaciter, fuerit decurtatũ in breuius altero decreto efficaci, immutãte, & reuocãte primũ, cõtra immutabilitatẽ Dei, sed modo prędicto. Ex qua ratione excludi possũt alię.

Cõclusio asserit quintò, *Dici non posse abbreuiatas dictas hebdomadas à Daniele, quia constarent annis breuibus lunaribus, quàm essent si includerent annos solares.* Ista, qui intelligũt Danielẽ de annis solaribus, & Iudæos vsos solaribus. Liranus hic Galatinus 4. de arcanis cap. 14. Driedo lib. 2. de dogmat. c. 5. p. 4. Lucidius 7. de emendatione tẽporũ. 3. & alij. Pro quo. *Dubium. An iste locus Danielis intelligi debeat de solaribus, an lunaribus.* Solaris includit dies 365. lunaris 354. exceditur à solaribus 11. lunares 490. solùm æquant cum 475. solaribus.

Ratio dubitandi pro lunaribus. Nã in 70. hebdomadis sunt 490. anni, & hi sunt 490. lunares, & ab exitu sermonis ad Christũ, solùm includi possunt 490. lunares, & nõ capit 490. solares, sed solùm 347. Secundò, nam Angelus loquens cum Daniele Hebræo vti voluit cõputatione vsitata apud Hebreos lunarium. Tertiò, vox illa abrebiatæ, indicat abreviationem, quæ nõ est alia nisi brevioris anni lunaris, non longioris solaris. Vltimò, ex Pereira hic, nam Angelus voluit aduentũ Messiæ occultare illo insolito modo cõputãdi hebdomadas, & per annos lunares, sicut vtitur, nõ in acceptione pro septennario dierũ, sed annorũ omisso vsitatiori, & ita omisso vsitatiori solariũ.

Conclusio. *Intelligi de solaribus.* Primò, nã sacra Scriptura in chronologia temporũ vtitur annis solaribus, vt dum tradit Gen. 5. *Adã vixisse 930. annos*, & Exodi 12. *filios Israel peregrinasse in Egypto 430 annos.* 3. Reg. 6. *ab exitu de Egypto ad templi Salomonis fabricã fluxisse 480.* non verò lunaribus, nã numeri nõ deberẽt tot, sed quot lunares.

Confir. nam scriptura sæpe cõsentit in numero annorũ cũ chronologia prophana, vt in 1. Macab. quòd *Alexan. Mag. regnauit 12. annis*, & his similibus. Tertiò, nam si anni lunares essent in vsu cõmuni apud Hebræos, sequeretur nõ potuisse agere pascha singulis annis 14. luna mẽsis primi, post æquinoctiũ vernale, vt tenebãtur lege Moysis, & si vsi essent annis lunarib⁹, id nõ potuissent obseruare. Nã si anno præsenti celebrasset luna 14. mensis primi, sequẽti anno celebrarent vndecim diebus ante, quibus lunaris erat minor solari, & anno sequẽti celebraretur vltimo anno vltimo mense, imò sequeretur, vt celebraretur pascha quouis mense anni. *Respondet Pereira*, nõ sequi, nã habebãt menses, nõ immobiles, vt nos, sed mobiles, vt luna. Et ita egissent semper in primo mense, & in prima luna. *Impugnatur*, nam in lege Moysis præcipiebatur celebrari pascha vernali tẽpore, & nõ potuissent. Et vt possent redigebant lunares ad æqualitatẽ cũ solarib⁹, per embolismos, & intercalationes dierum, fere tertio quoque anno intercalato vno mense, & ita annos lunares cum solaribus adæquabant, & redigebãt in chronologiã, vt cõuenirent cum alijs nationib⁹ in computatione annorum.

Resp. ad primũ, negãdo assumptũ, nã 70. hebdomades cõstant 490. annis, verè solaribus. Ad secundũ in frequenti vsu, non fuisse annos lunares nisi quoad ieiunia, festiuitates, & alia, imò redigebant luna res ad solares in cõputis, & chronologijs tẽporũ. Vt cum numerabant annos Adã, Regũ, &c. Ad tertiũ, & vltr. negandum assumptum.

Probatur iam quinta conclusio. Primò, nam Daniel videtur loqui de hebdomadibus compositis, & constantib⁹ dieb⁹ naturalib⁹ viginti quatuor horarũ, & annis cõstãtibus

bus 365. diebus, & quinque horis cum quadrante, non annis lunaribus includentibus dies 354. diuisos induodecim menses, & lunationes. Nam in primis Daniel, vbi in prophetia vniuersa facit mentionem de annis, vtitur annis solaribus, vt in cap. 1. 2. 7. & 8. Ergo idem in isto nono, quia credi non potest tam cito mutasse ab vno capite in initium alterius formulam annorum. Secundò, nam scriptura in chronographia, & historia annorum, attendit ad annos solares, & non ad lunares, & ad intelligentiam computationũ annorum, facilius assequitur numerus attendendo ad annos solares, magis communes, & ordinarios lunationibus, quæ ingerunt maiorem difficultatem. Nec dici potest ad ingerendam illam, & reddendam magis obscuram prophetiam, de mysterio aduentus Messiæ fuisse vsum hebdomadis constantibus lunationibus. Tum primò, quia impertinens erat obscuritati hebdomadum addere aliam obscuriorem. Nam satis obscura erat computatio per hebdomadas constantes annis solaribus, tum secundò, quia dici non possunt, abrebiatæ hebdomadæ, nisi quoad numerum illarum interse, non quad minores dies, vel annos.

Secundò, nam Angelus, & Daniel non sunt loquuti de lunaribus, nam infra est probandum à principio hebdomadarum ad finem fluxisse 490. annos solares, ab euentu igitur, satis firmiter probatur, non esse recurrendum in exponenda abrebiatione hebdomadarum ad brebiores annos lunares.

Vltimò, nam quamuis inter Hebræos essent, admissi duo modi computandi per annos solares, & lunares, & attenderent ad lunares, quoad festiuitates, ieiunia, & reliqua pertinentia ad templũ, tamen non simpliciter, quoad annos, & menses naturales, computationem regularem, sed absoluta reducebant ad cursum Solis, nã aliàs non celebrarent semper, & immobiliter Pascha in luna decima quarta, quæ esset proximior æquinoctio vernali, immo celebrassent in secundo lunari, die vndecimo ante lunam decimam quartam, & ita in sequentibus annis esset variatio in celebrando Pascha per dies multos, quod nõ ita accidebat, quia reducebantur per embolysmos ad cursum Solis annosque solares per adequationes temporum. Et ita Hebræi conueniebant cum alijs nationibus in historia, quoad computa annorũ, rerum gestarum in hoc, vel illo anno, ergo in præsenti recurri, non debet pro abrebiatione hebdomadarum ad annos brebiores lunares. *Ex his excluditur recursus ad abrebiationem*, & decurtationem dierum, quibus constarent illæ hebdomadæ, vt dicerentur abrebiatæ, quia includerent dies minores

ris durationis, quam sint dies ordinarij, & communes regulares, vt sicut legitur Iosue 10. fecisse Deũ miraculosè diem longiorem statione Solis in pugna Iosue contra Reges Amorhæorum, præcipiendo Soli ne moueretur, *obediente Deo voci hominis*, & sicut legitur 4. Reg. 20. & Isaiæ 48. diem prolongatam retrocessione Solis in horologio Achaz, *decem lineis*, aut gradibus, in signum sanitatis concessæ Regi Ezechiæ, sic in præsenti Deum minutiores dies decurrasse, quibus coalescerent hebdomadæ brebiores in signum aduentus Messiæ.

Conclusio asserit sextò. *Non dici illas hebdomadas abbreviatas, quia à Deo tempus decretum, postea alia vice, aut decreto fuerit brebius redditum, & factum.* Primò, quia non est vnde colligi possit fuisse Dei duplex decretum in assignando certo, & determinato tẽpore pro aduentu Messiæ, & fuisse primo assignatum, mutatum in aliud brebius. Nam licet promissio facta Abrahæ de aduentu Messiæ ambierit maius tempus, quod excurrit à promissione facta Abrahæ vsque ad Danielem, quippè excurrerunt fere mille, & quingenti anni respectu hebdomadarum 490. complectentium: tamen tempus semel diffinitum, & decretum, non legitur immutatarum in brebius. Secundò, nam vt docet Theologia scholastica decreta efficacia Dei, non sunt inter se inimica, vt vnum reuocetur per aliud, nec quoad se, nec quoad res efficaciter decretas.

Conclusio asserit septimò, *initium non posse desummi ab exitu, quo facta fuit promissio diuina de instaurando templo, & vrbe.* Est cõmunis. Ratio nam facta fuit variis vicibus, & temporibus valdè distantibus, & inde non potest desummi certum initium, nec numerus definitus annorũ 490. quibus constant 70. hebdomadæ. Tum etiam nam à promissione ad Christum fluxerunt plures aliæ hebdomadæ. Nam Danieli fuit facta plus 500. annos ante: Ieremiæ, & Baruch plus 600. Isaiæ plus 800. ante Christi mortem. Quæ incidit in dimidio vltimæ hebdomadæ, & omnes 70. constãt tantum 490. annis Isaiæ 44. vers. 26. & 45. vers. 13. Ieremiæ 27. vers. 22. & 29. vers. 10. Baruch c. 2. vers. 34. & c. 4. vers. 23.

Conclusio asserit octauò, *Initium sumendum non est ab exitu sermonis, quo exijt edictum aliquod regium de leuanda captiuitate, aut mittẽda colonia, eorũ, qui vellẽt reuerti in Hierusalem gratia ædificandi tẽplum, aut iterum ædificandi Hierusalem, adhuc erigendi domos, & muros ciuitatis, sed desummi debet initium ab exitu sermonis iterum ædificandi Hierusalem. Fine scilicet illius sermonis, pro re significata, scilicet instaurata, & ædificata vrbe, & dedicata Deo plublica festiuitate.* Ita Tirinus in chronico cap. 38.

Pro-

Probatur *desummi non posse ab illo edicto regio.* Nam accidit vicib⁹ variis,& temporibus distantibus. Nam 1. exijt à Cyro, qui audito Isaiæ oraculo, cap. 44. & 45. quo prædictum erat ante fere 200. annos templum,& vrbem instaurandam à Cyro, vi edicti licentiati sunt Iudæi ad illam ædificandam, & expresse 1. Esdræ 1. à vers. 5. *de templo*, & cap. 4. expresè à vers. 12. *De ædificatione ciuitatis,& murorum.* Nam legitur sic, v. 12. *Notum sit Regi, quia Iudæi à te ad nos venerunt, & ædificant ciuitatem Hierusalem extruentes muros eius,& parietes componentes*, &c. idem c. 5. à v. 3. Secundò idem concessit Darius Hystaspis anno 2. regni sui, vt legitur 1. Esdræ 4 à v. 12. *de muris*, & 3. Esdræ 4. v. 43. vbi Rex fit voti memor de ædificanda Hierusalem. Tertiò, nam Rex Artaxerxes (qui dictus est longimanus, eo quòd haberet vnam manum lõgiorem alia) concessit liberam facultatem Esdræ, ascendendi in Hierusalem, ducendi personas Ecclesiasticas, & donaria ad ædificandum templum anno 7. regni sui. Legitur cap. 7. vers. 8 & idem Artaxerxes anno 20. regni sui concessit Nehemiæ pincernæ suo, licentiam ædificandi domos, & muros ciuitatis, vt legitur Esdræ 2. vers. 5. 8. 17. & 19. & cum constet, non insumpisse Nehemiam in ea fabrica trienium, vt perperam Tirinus, cui visum necessarium ad tanti operis molem, ex Iosepho 11. ant. cap. 5. cum 2. Esdræ 6. vers. 15. sic legatur: *completus est autem murus 25. die mensis Elul. 52. diebus.* Nec mirum, nam illa fuit angustia temporum, vt vna manu tenerent arma, & alia trulã, ne in ædificatione impedirẽtur ab hostibus nõ ineptè dici potest summi initium à die quo exijt sermo, & edictum regium de instauranda, & ædificanda ciuitate, & muris ob simultatem edicti, & rei, quæ fuit exitus edicti. Ex quo probatio secundæ partis.

Probatur *initium sumendum in generali ab exitu sermonis* de ædificanda vrbe, & muris, id est instaurata, & ædificata vrbe, omni fabrica concluſa. Nam verba Danielis, id indicare videntur, *ab exitu sermonis, vt iterum ædificetur Hierusalem*, vbi verbum *exitus* in phrasi visitata summi consueuit, non pro expresione sermonis tantum, sed pro re significata, fine, in quem exijt sermo, vt sit sermonis exitus obiectiuus, & ita summa, non pro ipsa expresione edicti, ædificandi, sed pro re dicta, & ædificata, quod tenet Tirinus ibidem conclusione tertia. Et confirmari potest ex congruentia. Nam initium congruè potest summi ab ædificata ciuitate, & omni fabrica completa, in cuius dedicatione contingit illud insigne miraculum. Nam cum

Sa-

Sacerdos Nehemias iussisset perfundi aqua lapides altaris est accensa flama, & ex lumine, quod refulsit ab altari consumpta est die dedicationis, vt legitur 2. Machab. 2. vers. 9. *Nehemias obtulit sacrificium dedicationis, & consummationis templi* (& vrbis) *& descendit ignis de cœlo, & consumpsit holocaustum, &c.* Sicut olim acciderat Moysi, & Salomoni. Quæ dedicatio celebrata est lætitia magna, vt peruenirent ad aures Regis Persarum cum insigni miraculo, quod accidit 2. Esdræ 12. ver. 42. & 2. Machab. 1. vers. 33. & quia instaurata fuit anno 20. Artaxerxis longimani, ideò in particulari ab illo anno initium summendum esse 70. hebdomadarum fluētium, vsque ad Christum, & non à 23. vt existimauit Tirinus deceptus mendatij fundamento Iosephi insumptum esse triennium in tanta fabrica perficienda. Quòd admitti nefas contra 2. Esdræ 6. vers. 15. præcitato, vbi legitur *planè insumptos esse solùm* 52. *dies.*

Ex dictis colligitur, non esse admittendam sententiam discordantem à nostra. Primò, *non quæ asserit initium summendum ab initio mundi.* Ratio, nam ab illo exciderunt plus 35400. anni ad Christum. Secundò, *non ante captiuitatem Babylonicam.* Quia non congruit verbis Danielis, *ab exitu sermonis*, &c. quibus Angelus apperuit Danieli initium inceptionis. Nam loquitur de exitu sermōnis iterum ædificandi Hierusalē. Vbi non intelligitur alius exitus, nisi ille, cuius fuit facta mentio 2. Esdræ 2. scilicet Artaxerxis longimani anno 20. regni sui, dantis licentiam Nehemię pincernę suo, iterum ædificandi Hierusalem, quæ fuit data post fininitam captiuitatem pluribus annis, scilicet sexaginta, plus minusvè. Tertiò, *non quæ asserit initium habuisse intra tempus captiuitatis.* Quia ab occisione Balthasaris, non legitur exijsse sermonem dandi licentiam iterum reædificandi Hierusalem. Deinde, nā ab illo anno ad Christi passionem, fluxerunt plures anni, quam capiant 70. hebdomades scilicet plus 540. annis cum hebdomadæ, solùm constet 490. hac ratione manet excluſa sententia, quæ dedit initium ante reditum ex captiuitate Babylonica. Quartô, *quæ asserit habuisse initium à 1. Darij filij Astyagis Assueri.* Nam nō dum Cyrus dedit licentiā reddeū di in Hierusalem, reædificandi tēplum erigendi muros. Angelus autem declarauit Danieli initium habituras ab exitu sermonis, iterum ædificandi Hierusalem. Item nam à 1. Darij, sicut à 1. Cyri fluxerunt plures anni, quam capiant 70. hebdomadæ, nam fluxerunt, 540. anni, & hebdomadæ constant 490. Quintò, *quæ asserit incepisse à 2. aut 6. Darij, qui dedit licentiam intermissæ fabricæ templi iterum insequendæ.* Quia non exijt edic-

edictum iterum ædificandi Hierusalem, erigendi domos, & muros. Deinde quia ab illo tempore, ad Christum fluxere plures anni, quã capiant hebdomadæ Danielis, quia fluxere plusquam 500. cum illæ constent prædictis 490. & ita à nullo comodius initium summendum, quam à 20. Artaxerxis, vt in sequenti conclusione.

Conclusio asserit nonò. *septuaginta hebdomadas Danielis initium habuisse ab anno 20. Artaxerxis Regis, filii Xerxis, non à 7. eiusdem Artaxerxis, alias dictus Darius longimanus*: nisi ille septimus sit solitariè regnantis, & coincidat cum dicto vigisimo, quod difficile, existimo istum 20. Artaxerxis esse solitarie regnantis. Nam ita numerantur alij anni, vt 32. apud Esdam 1. & 2. Pro ista sententia sunt eruditi interpretes apud Cornelium hic, qui probabile existimat initium summendum ab anno 20. Artaxerxis longimani, licet probabilius dicat esse summendum à 7. Tirinus refert plures alios in chronico cap. 38. tenet Rua ibidem contrariorum, octaua secutus innumeros. *Ratio fundamentalis est* nam initium est summendum ab exitu sermonis, vt iterum ædificetur Hierusalem, vsque ad Christum ducem, iuxta Angeli oraculum. Nam ab exitu sermonis de ædificanda, & instauranda Hierusalem, legitur futuras septuaginta hebdomades, & terminandas in Christo duce, sed iste exitus sermonis de reædificanda Hierusalem, platæa, & muris eius, solùm habuit initium à 20. anno Artaxerxis, non à 7. nam illo solo anno legitur exisse mandatum, & donatam potestatem Nehemiæ pincernæ Regis iterum ædificandi Hierusalem 1. Esdræ 2. vers. 5. & 6. ergo. Minor probatur, nam anno septimo regni Artaxerxis, vt legitur Esdræ 1. cap. 7. à v. 8 exijt edictum de colligendis donarijs ab Esdra, & alijs pertinentibus ad cultum diuinum, non verò est vllum verbum de reædificanda Hierusalem, platæa, & muris eius. Nã ibi legitur à vers. 6. quòd *Esdras ascendit de Babylone*, &c. & *dedit ei Rex omnem petionem*, & vers. 8. *venerunt in Hierusalem mense quinto ipse est annus septimus Regis Artaxerxis*. 2. autem Esdræ 2. legitur, quod anno 20. Regis Artaxerxis exijt edictum à Rege ad instantiam Nehemiæ, vt iterum ædificetur Hierusalem, domus, & muri ciuitatis. Nam legitur v. 1. *In mense Nisan anno 20. Artaxerxis Regis* v. 5, & *ædificabo eam* v. 8. *muros ciuitatis* vers. 17. *venite, & ædificemus muros Hierusalem*, & ob id Nehemiæ tributtr instauratio ciuitatis. Nam legitur Ecclesiastici 49. vers. 15. *Nehemias erexit nobis muros eueersos, & stare fecit portas, & seras, & erexit domos nostras*, &c. in quo insumpsit dictũ tempus, ergo generaliter initium summi debet ab instaurata, & ædificata ciuitate platæa, & muris, & particulariter

ter, nõn à septimõ Artaxerxis in quo solũ exijt sermo de donarijs, & alijs pertinẽtibus ad templum, & cultum diuinum, & ministros, Sacerdotes, leuitas, cantores, &c. sed à 20. Artaxerxis, in quo Rex concessit Nehemiæ amplissimam facultatem ædificandi Hierusalem, domos, portas, & muros ciuitatis.

Secundô argumento *petito ab historiographis, & chronographis.* Inter quos magna fuit varietas præsertim, in referendis his, quæ accidere ante Christum. Illi autẽ chronologiæ standum, quæ magis congruit sacræ Scripturæ. Nam quæ discordat admittenda non est à catholico, vt Iosephi 11. antiquitatum cap. 5. vbi asseruit, quòd *Xerxes concessit Nehemiæ facultatem reædificandi Hierusalem, & muros eius*, quòd non à Xerxe, sed *Artaxerxe legitur concessam 2. Esdræ 2. anno 20. regni sui.* Item Iosephus ibidem dixit quòd Nehemias in erigendis muris ciuitatis cõsumpsit tres menses, cum dicat scriptura 2. Esdræ 6. vers. 15. *Erexisse quinquaginta duobus diebus.* Hæc igitur *regula obseruanda.* Quòd illa chronologia præferenda. Quæ magis congruit scripturæ, & magis videtur iuuare ad disquirendam, & aperiendam veritatem. Fuit olim varietas maxima, cum græci præsertim curricula temporum per Olympiades numerabant. Olympias autem constat quatuor annis. De Ethymologia à ludo Olympico, & alijs pertinentibus egit latè Lucidus libro de die passionis Christi cap. 7. ex Eroslo Philone, Annio, & alijs. Qua alijs reiectis visum est vti in præsenti, non obstante, quòd dissentiant alij, ego præfero, quia magis congruit scripturæ, nam nulla alia chronographia, melius possunt cõputari anni 490. qui continentur in 70. hebdomadibus Danielis. *Ratio.* Nã vt constat ex sacra Scriptura hebdomades orduri debẽt, *ab exitu sermonis, vt iterum ædificetur Hierusalem, platea, & muri ad Christum ducem.* Qui non exijt à 7. Artaxerxis, vt superiori probatione probatum est, ex 1. Esdræ 7. sed à Rege Artaxerxe anno 20. regni eius. Ex 2. Esdræ 2. v. 1 vbi Rex Nehemiæ pincernæ suo, illam facultatem erigendi ciuitatem & muros, cum priuilegijs concessit, sed sic est, quod huic anno 20. coextitit Olympiadis 81. annus 2. & ab ista succedentes Olympiades includunt illos 490. annos, qui continẽtur in 70. hebdomadibus. Igitur initiũ summẽdum est ab illo 20. anno Artaxerxis, cui coextitit Olympiadis 81. annus secundus. Suadeor hoc discursu, & præmissis, quod natiuitas Christi incidit in Olympiadis 194. anno vltimo. Vt probat etiam chronologia Cœsarienſis: & Baptismus, vbi Christus actus vitam priuatam exijt in publicum, & à Patre publicatus est *filius eius dilectus*, in principio hebdoma-

dis

dis septuagesimæ, in cuius medio crucifixus Olympiadis 202. anno 4. Aprilis 3. *sic ergo ducendi calculi.* Ab Olympiadis 81. anno. 2. ad Olympiadē 202. inueniuntur excurrisse 19. ad priorem integrādum centenariū, cui iungendę sunt aliæ 102. Olympiades, quę simul iunctæ conficiunt 202. in cuius anno 4. occisus est Christus. Tunc sic simultiplices 121. Olympiades, quæ excurrerūt ab 81. ad 202. per quatuor (quia Olympias includit quatuor annos) conficitur summa 484. annorum. Quibus *adde duos* Olympiadis 81. initialis: qui ducti non sunt ad computum: & insuper à dimidio hebdomadæ in finem (in qua occisus est Christus) addas quatuor, quæ post passionem excurrerunt in finem, terminatum post resurrectionem, & simul iungas calculos, inuenies summam 490. annorum, qui includuntur in 70. hebdomadibus Danielis. In hac ratione computandi fixi firmum pedem. Aliorum calculos computaui. & fateor ad numerum, non veniſſe. Potiùs aduerti recurrisse ad annos lunares.

Xerxis 20.
Olimp. 81. *ann.* 2.
194. *ann.* 4. *natiuit.*
102. *initio Baptizat⁹*
202. *ann.* 4. *occis⁹.*
Ab 81. *ad* 202 *Olimp. restant*
121.
Multiplica per. 4.
sunt ann. 484.
illius primæ 81.
adde 2. 2.
Et 3. ♀ *qui superfunt, post passionem.*
vel 4. 4.
Sumant ann. 490.

Qui *includuntur in 70. hebdomadibus à 7.*

Confirmatur, nam suppositā firmitate istius computationis, non potest sustineri, quòd initium sit summendum 70. hebdomadarum ab anno 7. eiusdem Artaxerxis. Nam ab illius 20. probatum est, excurrisse illos 490. annos, quibus constat 70. hebdomadæ. Igitur superfluunt, qui à 7. fluxerunt in 20. *nisi velis* dicere quòd quidam, quòd iste 20. fuit coregnantis cum patre Xerxe, qui fuit septimus seorsim, & solitarie regnantis, in quo est difficultas. Nam Xerxes regnauit 20. annis, & licet Artaxerxes filius à 5. potuerit coregnare cum patre, in quo expeditionem parauit in Græcos, & potuerit relinquere filio regni gubernium, incertum est. Nam puer ineptus satis erat ad regendum, præsertim cum ipse esset minimus alijs filijs Xerxis, vt Dario. &c. sed de hoc suo loco.

Conclusio asserit decimò. *Non fuisse finitas, & completas 70. hebdomades in passione Christi, sed post Christi mortem, restarunt tres anni, & aliquot menses ad integrandum, & complendum numerum 490. annorum. Qui includuntur in 70. hebdomadibus Danielis.* Nec *finitæ sunt, & terminatæ in excidio vrbis Hierosolymitanæ sub Tito, & Vespasiano.*

Pro-

Probatur *finitas, non esse in passione Christi*, ex isto loco Danielis, vbi legitur *post hebdomadas 69. occidendum Christum in dimidio, & hebdomadis* 70. igitur in dimidio hebdomadis vnius, & vltimæ occisus est Christus, & alia medietas septuagesimæ hebdomadæ restabat implenda post Christi morte. Patet, quia ante septuagesimam hebdomadam, non est occisus Christus, sed in medio eius, vbi hostia, & sacrificium veteris legis defecit, posito figurato sacrificio cruento nouæ legis Christi, cruce oblati in sacrificium. In qua dedit finem hostijs, & sacrificijs veteris legis, illis verbis prolatis vltimò, *consumatum est*, & inclinato capite tradidit spiritum. Nam post illas 69. hebdomadas, illa vna vltima, in complementũ 70. in cuius dimidio deficienda erat hostia, & sacrificium, subrogato sacrificio Christi, non est vlla alia, vltra 70. speradita, sed vltima 70. quæ includebant illos 490. annos.

Probatur *finitas esse post Christi passionem, & mortem, tertio anno cum dimidio*, quod alij dicunt quarto inchoato. Nam vt supra dictum est, ab Olympiadis 81. anno 2. vsque ad Olympiadis 194. annum 4. solent numerari anni fere 455. quibus addi debent 32. & 3. menses vitæ Christi. Nam vt dictum est in principio hebdomadis 70. fuit baptizatus, & à Patre declaratus filius, sanctus sanctorum, &c. & ipse cœpit prædicare suam legem Euangelicam, tribus annis sequentibus, fere cum dimidio, & in medio dictæ hebdomadæ 70. cruci affixus. Quibus conficitur numerus annorum 487. paruũ plus, minus vè, quibus deinde adiungi debent 3. anni, cum aliquot mensibus, qui fluxerunt post Christi mortem, qui restant ad integrãdos, & complendos illos 490. annos, qui includuntur in 70. hebdomadibus Danielis. Cui chronologiæ standum, quippè in illa facilius omnia intelliguntur, & amicabilius omnia consonant.

Probatur *non fuisse finitas in excidio Hierosolymitano sub Tito, & Vespasiano, neque ad illud fuisse dilatatas, & prolongatas. Nec minus ad aliud quoduis excidium posterius.* Vt quod accidit sub Helio Adriano, licet aliud sentiant Clemens. Alex. Tertul. & alij. Primò, nam fuit occisus, vt probaui in dimidio hebdomadæ 70. ita vt ad integrandam, & complendam 3. anni plus minusue restauerint, sed à morte Christi ad quodlibet excidium dictorum fluxerunt plurimi. Nam ad excidium sub Tito Vespasiano fluxere ferè 40. anni. Ad sub Helio 140. Qui post impletas 70. hebdomades superfluunt, & redundant.

Arguitur contra dicta à Burg. quia si post reuelationem Angeli factam Danieli in anno 1. Darij, tanto post tempore summi deberet initium sequeretur, quòd

quòd Daniel non potuit habere vllam certitudinem de initio, & consequenter de certo tempore aduẽtus Mesię. Nam iam erat defunctus illo anno 20. Artaxerxis Longimani. Respond quòd intellexit initium, & finem per reuelationem, licet ipse dum viueret nõ vidit adimpleta. Et de ratione prophetiæ, non est intelligere vaticinata, nec minus videre. Caiphas prophetauit nesciens quid diceret Ioan. 11. Deinde sufficit cognouisse quantum requirit lumen propheticum, licet non videant re ipsa adimpletionem, vt Isaias percognouit, & prædixit virginis partum, cui ipse non astitit.

Arguitur secundo ex Lirano, quia si esset sumendum initium à 20. Artaxerxis sequeretur, quod Mardochæus, qui fuit captiuus sub Nabuchodonosore vixerit annis 259. Nam vixit ab illo tempore vsque ad annum Artaxerxis 12. vt legitur Esther 2. vers. 6. qui translatus fuerat de Hierusalem eo tempore, quo Nabuchodonosor Rex Babylonis transtulerat Iechoniam, Regem Iuda, & cap. 3. à vers. 7. legitur: mense 1. (Nisam) anno 12. regni Assueri, &c. qui erat Artaxerxes magnus, &c. & ipse Liranus intendit coligere intentum ex varijs chronicis. Respondetur cum Lucido 7. de ratione temporum cap. vltimo. Illas Chronicas esse mendosas. Secundò, quòd iuxta Philonem in breuiario temporum, quòd Mardochæus vixit 198. annis, & superauit ætatem Isaac 18. annis. Nam Genes. 45. dicitur quod Isaac vidit 188. & ita non mirum. Nam Mardochæus, vt legitur Esther 2. præcitato captiuatus est in Babylonem cum Iechonia, qui ductus est captiuus anno 8. Nabuchodonosoris 4. Regum 24. cui coextitit Olympiadis 45. annus 1. iuxta chronographiam, & vsque ad 12. Assueri Artaxerxis coexistentis Olympiadis 48. & vnus annus, quæ constant annis 193. & Mardocheus vixit annis 198. & ita excessit illum numerum, & potuit asportari ætatis 5. anno.

Arguitur pro *sententia* Cornelij hic, quæ asserit: *initium 70. hebdomadarum summendum à 7. anno Artaxerxis Longimani.* Primò, nam à Christo ascendendo, & retrogradiendo in computatione 490. annorum solarium, quibus constãt hebdomadæ primus incidit in anno 7. dicti Artaxerxis, & ita videri certum à posteriori ab illo initium summendum. Nam si aliunde, vt à 20. inchoatur initium, non poterit expleri numerus 490. annorum, nisi à retro altius, scilicet à 7. fiat computatio, quia iste 7. Artaxerxis coexistit cum Olympiadis 80. 4. anno, & Christi Baptismus cum Olympiadis 201. anno 4. in quo coincidit 15. Tiberij: & in Baptismo Christus declaratus est dux, & Doctor à Pa-

tre, *Hic est Filius, &c.* à quo 7. Artaxerxis fluxerunt 69. hebdomades includentes annos 483. & in medio vltimæ, id est anno 487. occidendum Christum, & post illius mortem tribus annis finiendas, & complendas 70. hebdomades, id est annos 490. Secundò, nam eo 7. anno exijt sermo Artaxerxis iterum ædificandi Hierusalem, vt colligitur Esdræ 7. à vers. 6. Nam ædificato templo, cum dedit illi omnem petitionem suam, quam optabat, credibile est dedisse ædificandi domos, & erigendi muros, vt intra illos essent tuti ab hostibus circumuecinis. Tertiò, nam ex illo edicto ducti sunt Iudæi in Hierusalem ab Esdra, & illi data est potestas constituendi leges, & iudices, & non videtur alia causa nisi, vt iterũ ædificarent Hierusalem, & ibi viuerent vita ciuium. Nam Nehemias anno 20. Artaxerxis accepit potestatem circa fabricam Hierusalem, vt legitur Nehemiæ 1 vers. 3. & 2. vers. 13. & ante ipsum domus ciuitatis, & muri erant ædificati. Nam ipse, vt legitur ibidẽ, inuenit murum dissipatum, & portas exustas, non vt olim à Nabuchodonosor, sed à Sanaballat, & alijs hostibus. Nam ibi ducta est colonia plurium sacerdotum, & leuitarum, & ibi inuenit eos, & ibi non possent habitare tuti ab hostibus circumuecinis, nisi essent vallati muris. Nam 1. Esdræ 4. à vers. 13. *Datur notitia Regi, quod ædificabatur ciuitas, & muri*, & vers. 21. *sententia prohibentur, donec aliud sit imperatum*, & vers. 24. *Etiam intermissa est fabrica templi.*

Vltimò, quia Eusebij, & aliorũ Chronologia cõputant illos 490. annos, quibus constant 70 hebdomades ab illo 7. anno Artaxerxis ad occisionem Christi, & solet deduci euidenti calculo annorũ, nec argui potest ista sententia nouitatis. Nam tenent plures antiqui, & moderni ibi relati,

Respondetur ad primum, negando antecedens, & probationẽ, ad vlteriorem dixi, quòd 20. Artaxerxis coexistit cum Olympiades 81. anno 2. & in 7. Artaxerxis non potuit cum Olypiade 80. licet in aliquibus consentiamus. Ad secundum dico in 1. Esdræ 7. solùm legi, quòd Artaxerxes anno 7. dedit licentiam, & omnem petitionem ducendi colonias in Hierusalem Esdræ, circa ea, quæ pertinent ad altare, templum, & ministros vsque ad cantores, cum his, quæ pertinent ad cultum Dei, & eximendi eos à tributis, & vestigalibus 2. Esdræ 1. Et expressius 2. legitur, quòd Artaxerxes anno 20 regni sui dedit potestatẽ ædificandi, & erigendi domos, turres, & muros vers. 8. 17. & 20. vt in his duobus locis nitatur maximè nostra sententia, & decipiatur opposita. Ad tertium dico edictum, & licentiam datam Esdræ illo anno 7. Artaxerxis 1 Esdræ 7. solùm continere pertinentia ad alta-

altare templum cultum sacrum, & ministros, data verò Nehemiæ 2. Esdræ 1. & expresse 2. præcitato fuit iterum ædificandi, olim diruta ciuitatis, & murorum quidquid sit de licentia concessa Esdræ iuxta petitionem primò respicientem templum cum anexis. Deindè erigendi muros, quod ibi est in silentio, & 2. Esdræ 2. legitur concessum à Rege Artaxerxe anno 20. Regni sui pincernæ suo Nehemiæ, quòd videtur assonare cum isto textu, ab exitu sermonis, vt iterum ædificetur Hierusalem. Ad vltimum dico, quòd illa Chronologia authorum est admittenda, quæ congruit cum veritate sacræ Scripturæ, vt admissa à nobis, alia dissona abijcienda.

Arguitur pro *sententia* Tirini tom. 1. in Chronico cap. 38. quæ *asserit desummi posse initium in generali ab instaurata, & integrè fabricata Hierosolyma, & dedicata solemniter*, & cœlesti miraculo supra dicto ignis consummentis sacrificium, *Et in particulari non ab anno* 20. *Artaxerxis longimani, sed* 23. quo integrè reædificata est quoad interna, domos, & plateas vsibus publicis ciuium necessarias, in quo Nehemias insumpsit triennium, vt tanti ædificij moles exposcebat, & quod ille 23. annus Artaxerxis fuit à die, quo simul cum patre Xerxe cœpit imperare à 5. anno regni paterni, qui anno 5. regni sui iturus ad prælium contra Græcos adscinit filium Artaxerxem successorum, & collegam imperij de more Regnum orientaliū, tamen dicit, quod ille annus 23. corregnantis fuisse vnum, & eundem cum octauo post patris mortem solitariè regnantis, ita vt ab initio Xerxis fuerit annus 28. Artaxerxis annus 8. solitariè regnātis. Primò ex Chronologia, quæ illi visa est ex calculis certissima. Nam ille 23. Artaxerxis simul regnantis cum patre, & 8. à morte illius solitariè regnantis cum Xerxes, solùm regnauerit 20. annis, ille inquā concurrit cum Olympiadis 80. anno 4. & Olympiadis 202. anno 2. occisus est Christus, deficit hostia, & sacrificium agnorum, & vitulorum legis veteris, & successit nouum Eucharisticum, & denique adiunctis tribus annis, & dimidio à Christi passione, & morte finiuntur, & complentur 490. anni, quibus constant 70. hebdomades Danielis, vt patebit volenti numerare. Quia calculi quadrant ad imusim, quos ipse non duxit, sed nos numerabimus, statim, vt inspiciatur summa ex illis deducta.

Respondetur discrepasse à nobis numero illo ternario. Nos diximus ab anno 20. Artaxerxis. Nam id expresse legitur in Scriptura præcitato loco ex 2. Esdræ 2. Illi verò tres anni sunt additi ex deceptione originata ex Iosepho 11. antiquit. capit. 5.

Nam existimauit, quod Nehemias in erigenda fabrica domorum, & murorum insumpserit triennium, vt minimum: cum legatur 2. Esdræ 6. vers. 15. insumpsisse in ea angustia, & celeritate ædificandi *solùm* 52. *dies*. De coincidentia autem annorum Xerxis cum annis Artaxerxis, etiam est difficultas. Nam cum Xerxes solùm regnauerit 20. annis, & à 5. coregnauerit filius solitariè, solùm potuit regnare à 20. in quo moritur pater, & si ab initio regni paterni dinumerentur 28. vt coexistat cum 8. solitariè regnantis inepte petitur initium à 20. Artaxerxis coregnantis cum patre. Nam à 5. in 20. solùm corregnauit 15. & ita videtur, quòd non possit dici esse vnum, & eundem annum illum 23. cum patre regnantis, cum eiusdem 8. solitariè regnantis. Sed his parco. Expendo alia, illud de computatione calculorum difficilius apparet: ni decipiar in re obscura. Ex principijs positis in argumento sic ducendi calculi: ab Olypiade 80. impleta suo quadriennio ad 202. annum secundum, vt ipse assumit ad occisionem Christi fluxerunt 121. Olympiades, si multiplicentur quater, conficiuntur anni 484. De vltima in integrum posita in calculis detrahendi sunt duo anni ab illa summa 484. & remanent 482. his addi debẽt tres anni cum dimidio ad integrandum numerum 70. hebdomadarum, quę sunt finitæ à Passione Christi, illo triplici anno cum dimidio, cum in priori triplici & dimidio vltimæ hebdomadæ occisus sit Christus, & ita simul iuncti faciunt 485. annos cum dimidio, qui non complent, & æquant illos 490. quibus constant 70. hebdomadæ. Et ita subductis calculis non inuenio summam completam 490. annorum, nisi velit Tirinus aliter computare.

AD MORES.

Quòd *quidquid extra Deum, est limitati esse, diffiniti, initio & fine.*

Quòd *Deus præuenit anticipatis prophetijs mysteria natiuitatis, & mortis Christi.*

Quòd *quæ diruta sunt in ædificio spirituali animæ, celeri diligentia, & breui spatio reparari debent. Ne hostibus dentur tempora ad impediendũ.*

TEXTVS.

Vers. 25. *Vsque ad Christum ducem.*

AD LITTERAM.

Dub. 5. *Quis sit hic intelligendus per Christum ducem? an Messias in lege promissus, an alius? & an ille iam venerit, fuerit que Iesus Nazarenus filius Virginis Mariæ, vel quispiam alter?*

COnclusio asserit primò, *intelligendum in hac prophetia Danielis per Christum ducem, Messiam in lege, prophetis promissum, filium Vir-*

Virginis Mariæ, qui dicitur Messias, & Christus per anthonomasiam, non verò quiuis alter appellatus vocabuli generalitate, Messias, Christus, vnctus dux, aut Propheta. Ita catholici contra perfidiam Iudæorum, qui mille figmentis sunt vsi in obscuranda ista veritate. Vt qui accipit Ioannem Hyrcanum, qui fuit vltimus Pontifex Iudæorum: & qui accipit Cyrum: & qui Herodem Agrypam: & qui distrahunt, & accipiunt alios maiori, & stolidiori insania, qui facile refutari possunt, quòd illis non conueniat, quæ hic Daniel designat, vt quòd *Accipiat finem peccatum, adducatur iustitia sempiterna, occisio in dimidio vltimæ hebdomadæ*, & alia de quibus in discursu.

Primò, nam quæ Daniel proposuit, si rectè expendantur non conueniunt vlli alteri, quam vero Messiæ, filio virginis, vt consideranti singula, & vniuersa manifestè constabit. Vt quòd veniens in mundum erat preuaricationi primorum parentum finem impositurus: deleturus iniquitatem: alaturus iustitiam sempiternam: adimpleturus visiones, & prophetias: & quòd esset vngendus sanctus sanctorum: & denique crucifigendum fore in dimidio vltimæ hebdomadæ. Quæ quidem nulli apte conuenire, & congruere possunt, sed solo Messiæ, qui erat futurus Deus, & homo. Nam licet generali ratione aliquibus conueniat vnum, aut alterum ex vocabilibus atributis, vt vox dux, Christus, aut Messias, vt de Cyro Isaiæ 45. *Hæc dicit Christo meo Cyro*, & nomẽ dux alijs, æqui uoca tamen ratione, ac dictus fuit Christus à Prophetis speciali, & propria ratione vnctus, & sanctus sanctorum. Christus vnctus oleo diuinitatis, non illa generali ratione qua dilecti dicuntur Christus. *Nolite tangere Christos meos.* Et dux multis modis aptis Christo qui in Baptismo publico Patris testimonio est dux, doctorque fidelium constitutus. Iuxta Isaiæ 55. *Ecce testem populi dedi eum ducem, & præceptorem gentibus*, & Math. 2. ex Micheæ 5. *Ex te enim exiet dux, qui regat populum meum Israel* fuit enim dux multis modis, vita bene morigera, doctrina vera, & Euangelica, exemplo, miraculis. Antea enim egerat vitam priuatam; à Baptismo autem cœpit exercere ducis officium publicè. Prædictum autem testimonium adhuc Scribe, & Sacerdotes Iudæorum intellexerunt de filio virginis. Præterquam quòd prædicta alia attributa soli ipsi, non alijs creaturis aptari possunt, vt quòd erat *Deus, & homo*, qui Danieli erat reuelatus, & *quòd fuisset occideddus in illo dimidio vltimæ hebdomadæ*, vt latè apud Cornelium in Danielem cap. 9. & Ruatom. 2. Controuers. 8. vbi refutantur placita occisionis Agrypæ, & Hyrcani, cum nondum essent cõpletæ hebdomades 69. post quas erat occidendus Christus, iuxta hoc Danielis vaticinium.

Conclusio asserit secundò. *Venisse iam Messiam in lege, & Prophetis promissum in priori suo aduentu benigno, ad redimendum genus humanũ, & expectari in secũdo, & ad iudicandum, cum potestate magna, & maiestate, ad præmiandos bonos, & puniendos malos.* Est Catholicorum contra perfidos Iudæos, qui tenebras etiam offundunt, qui non eiusdem Messiæ; sed duplicis admittunt duplicem aduentum: eo quòd non expræsis verbis inueniunt distinctos in Prophetis per verba prioris, & posterioris. Cũ tamen euidẽter ex illis colligantur, & per diuersa exercitia, nisi ita vellent delirare. De primo aduentu legitur Isaiæ 9. de generatione temporali *Paruulus enim natus est nobis, & filius datus est nobis, & factus est principatus super humerum eius.* Datus filius Dei, natus verò nobis secũdũ quòd homo, & sceptrum crucis principãtis super humero suæ obedientiæ, & sufferentiæ, & passionis vsque ad mortem. Et alibi legũtur multa ei pertinentia ad priorem aduentum Zachariæ 9. *Ecce Rex tuus veniet tibi iustus, & ascendens super asinam &c.* Isaiæ 53. de passione *vidimus eum, & non erat aspectus, &c.* Virum *dolorum, &c.* verè *languores nostros ipse tulit, & dolores nostros ipse portauit.* Ad idem Psal. 21. Deindè de ascensione in cœlum Psal. 23. *Introibit Rex gloriæ*, Isaiæ 63. *Quis est iste gradiens in multitudine virtutis suæ.* Quæ sint sat, ne innumerã multiplicemus. Ex quibus satis cõstat prior pars conclusionis. Deinde de secundo aduentu cum potestate Magna, & maiestate leguntur etiam innumera: Malachiæ 3. *Ecce venit, &c. Et quis poterit cogitare diem aduentus eius, & quis stabit ad videndum eum, ipse enim quasi ignis conflans, &c.* Danielis 7. *Ecce in nubibus cœli quasi filius hominis veniebat*, & Psalm. 49. *Ignis in conspectu eius exardescet, &c. Aduocauit cœlum desursum, & terram discernere populum suum.* Qui hæc, & alia huiusmodi cõsideranerit, facile admittet duplicem Messiæ aduentũ. Nec valet effugiũ Iudæorũ, quòd admitti debet, non eiusdẽ Messiæ duplex aduentus, sed duplicis, eo quòd vni personæ non congruunt dicta valdè diuersa, in benignitate ad redimendum, & in potestate, & maiestate ad iudicandum. Nã eidem personæ, pro diuersis temporibus possunt aptari, & de eodẽ Messia verificari. Vt patebit de eodem Messia vaticinia prophetarum verificari. Addi potest illud Isaiæ 51. *Consurgere, consurge induere fortitudinem, &c.* Vbi illius verbi replicatio indicat eiusdem duplicem aduentum. Psalm. 95. *Quoniam venit iudicare terram.* Vbi de vno, & eodem Domino bis esse venturum vaticinatur propheta, sed insania difficilè reuincitur, & qui vna vice incarnatum negant, duplici vice incarnatum

ad

admittere coguntur, vt non de eodem Messia; sed de duobus, duos aduentus astruant.

Probatur primo conclusio, ex presenti testimonio. Danielis 9. est enim hic locus illustris de aduentu Messiæ. Exquo Iudæi conuinci possunt nisi obsisteret perfidia venisse Messiam. Nã à die quo istæ septuaginta hebdomades inchoatæ sunt, saltim vsque ad præsentem diẽ inueniuntur impletæ: excurrerunt enim 490. anni ad Christum, & cum tot alij excurrerint ad præsentem diem, semper Iudæi manent obstinati, & varijs figmẽtis eludunt vires istius testimonij, vt vidimus, accipientes de Ioanne Hyrcano, Cyro, Nabuchudonosore, & alijs, templo Iyerosolimitano. Quib⁹ minimè quadrãt, nec tẽpus, nec mirabiles effectus, & egregia attributa vaticinata de Messia. Nobis sat, quòd sit efficax secundùm se ad conuincendum intẽtum disposito rationabiliter: secus indisposito, irrationabili perfidia, vt non credatur Messiæ aduẽtus, licet meridiana luce clarius ostendatur, vt refert respondisse Romæ Iudæum Pinto argutè conuincenti, Cornel. à lapide hic cap. 9. circa versum 25.

Secundò solet probari ex illustri illo testimonio Genes. 49. *Non auferetur sceptrum de Iuda, nec dux de femore eius, donec veniat qui mittendus est, & ipse erit expectatio gẽtium*, sed impleta est huiusmodi prophetia saltim in tempore Herodis Assalonitæ, qui non erat Iudæus sed Gentilis, & dicebatur Rex, iuxta Math. 2. *In diebus Herodis Regis*, licet esset intrusus à Romanis, inde ergo satis probatur venisse Messiã. Fateor difficultatem esse graué. An ex ista prophetia possit probari intentũ, & quo modo sit intelligenda? & ita de eo instituendum dubium statim;

Probatur tertio ex illo Danielis 2. de visione illius statuæ ex varijs metallibus constructæ, capite aureo, pectore, & brachijs argenteis, ventre & femoribus æreis, tibijs, cuius denique vna pars pedum erat ferrea, & altera fictilis, quæ visa est: *Donec abscisus est de monte lapis sine manibus*, qui percussit statuam, & redegit quasi in fauillam, vt amplius visa non fuerit, lapis autem *factus est mons magnus, & implenit vniuersam terram.* Vbi per varia metalla varia regna indicari significauit Daniel, *Lapis* autem *abscissus sine manibus* significabat Messiam de virgine ortum sine virili semine, iuxta intelligentiam omnium Hebræorum, & Catholicorum, qui illud imperium vltimum Romanorum sibi subiecturus erat, vt contigit tempore Constantini Magni, igitur iam venit Messias. primo suo aduentu ad redimendum.

Vltimo. Pluribus alijs omissis ex illo Aggei 2. Vbi legitur *Ego commouebo cœlum, & terram, &c. Et veniet desideratus cunctis*

gentibus, & implebo domum istam gloria, &c. Et gloria domus istius nouissima plusquam prima. Vbi in hac prophetia ille desideratus cunctis gentibus intelligitur Messias, iuxta expositionē adhuc Hebræorum: vtfit sermo in templo secundo futuram maiorē gloriam, quàm in primo. Quod explicari debet apta, & congrua ratione: non ratione fabricæ, nam in eo diuitijs, & opulentia Salomonicum infinito penè interuallo superauit secundum. Fuit ergo maior gloria secūdi, quam primi, non alia ratione, nisi ob præsentiam Messiæ, qui fuit præsentatus in secundo templo, in eo docuit, prædicauit, & mira multa gessit. Et ita in eo templo iam erat impleta prophetia, antequam disiparetur, & everteretur per Titū, & Vespasianum. Nec satis commode dici potest, dici maiorem gloriam templi secundi, quam primi, ratione maioris durationis: tum quia non erat tanti momenti, vt esset præferenda primo magnifico, ditissimo, ornatissimo, arca testamenti, propitiatorio, & alijs, quibus primum præstabat duratione. Deindè, nam illa duratio fuit potius in ignominiam, quam gloriam per Antiochi deturpationē, & cōculcationem: iuxta possita in libris Machabęorum per ingressum Pompeij in sancta sanctorum, & denique per incendium Titi, quæ potius cedebant in ignominiam, quam in maiorem gloriam. Maior igitur gloria astruenda est ex Christi præsentia in templo. Nam illud expræssit Malachias cap. 2. *statim veniet* ad templum sanctum suum dominator, quem vos quæritis, &c. Quæ à primè coherent cum prophetia Aggęi. Qua verò ratione verificetur commouisse Deum cœlum, & terram dicunt quidam quòd quia in natiuitate Christi aparuerunt tres Soles; similiter stella, quę duxit Magos; & quia motus est vniuersus orbis, vt scriberetur sub Augusto Cęsare. Terra autem dicitur mota cum in passione, & morte Christi petræ scissæ sunt, monumenta aperta sunt, & acciderunt terremotus magni. Cum igitur impleta sint omnia in illo templo iterum reędificato post captiuitatem Babylonicam, dicendū, venisse Messiam, qui sua præsentia reddidit magis glorioßum secundū, quam primum. Quod licet arca testamenti fuerit glorificatum, non Christo, figurato, cuius præsentia caruit.

Arguitur primò, *pro Iudæorum perfidia*, qui varia figmenta, cogitarunt, vt angustias argumentorum Christianorum effugiant, & multis modis, se in omnem partem torquent, vti solent facere mendaces. Et primo ex illo Deut. 30. *Reducet te Dominus Deus tuus de captiuitate, & rursum congregabit te de cūctis populis, in quo te ante dispersit &c. Introducam in terram, quam possederūt patres tui &c.* Sed Iudæi dispersi sunt per orbē plus

plus 1500. annis, & nõ reducti in terram promissam, & possessam à patribus. igitur dicendum, quòd non venit Messias vsque modo, cum modo sint dispersi.

Resp. ibi fuisse loquutum Moysem de reductione à captiuitate Babylonica ex misericordia Dei per licentiam redeundi in patriam, qua quisque potuit vti, nisi per ipsum stetisset, qui voluit manere inter Babylonios, & Assirios. Secus si ipsi grati stetissent, & nõ perpetrassent alia maiora scelera, quam patres eorum. Cæterum quia non admiserunt Messiam, immo iniecerunt manus in eũ, & crucifixerunt, non mirum si ab eis auerterit faciem suam, & misericordiam; & iterum dispersérit, & & subiecerit opprobrijs, & contumelijs inter gentes.

Arguitur secundò ex illo Ezechielis 39. *Et scient quia ergo Dominus, eo quod transtulerim eos, &c. Et congregauerim eos super terram suam &c. Et non abscondam vltra faciem meam ab eis*, quæ intelligi nequeunt de solo redditu ex captiuitate Babylonica, quia post illã, & redditum promittit Deus, quòd iterum non abscondet faciem suã ab eis, sed videmus abscondisse in dispersione, qua sunt dispersi inter gentes, & subiecti tot opprobrijs, & contumelijs. Igitur non est impleta ista prophetia, & per consequens Messias nondum aduenit.

Resp. quidam cum Lirano illa verba, & non abscondam vltra faciem meam, intelligenda, nõ de primò aduentu Messiæ, sed de secundo post interfectum Antichristum. Tunc enim Iudæi conuertendi sunt ad Ecclesiam. Secundò, quidam intelligunt de primo aduentu, illo enim promisit Deus congregaturum eos super terrã, postquam reuersi sunt ex captiuitate Babylonica: non absolutè, & simpliciter, non auersurum vltra faciem suam ab eis, sed sub conditione: si in via Dei ambulassent, si correspondentiam dedissent, si ingrati non stetissent. Sed quia Christicidium perpetrarunt, flagitium omni hyperbole, & exaggeratione maius, & deterius: ideo auertit faciem, dispersit, opprobrijs & cõtumelijs affectos, quousque in finem mundi conuertatur ad Christum.

Arguitur tertiò ex illo Isaiæ 2. *Et erit in nouissimis diebus &c. Præparatus domus Domini in vertice montium &c. Et fluent ad eum omnes gentes, &c. Et conflabunt gladios suos in vomeres, & lanceas suas in falces: non leuabit gens contra gentem gladium, nec exercebuntur vltra ad prælium*, sed ista vaticinia non sunt impleta, ergo signum est non venisse Messiam. Minor probatur. Nam primo dicitur quod sit venturus in nouissimis diebus, & non venerunt dies nouissimi, & qui natus est ante mille, & sexcentos annos non potuit esse Messias. Secundò, quia mons domus Domini non est positus in vertice montium, nec super omnes

res colles, quia super montẽ Sion, & Hierusalẽ non sunt positi Tabor, Sinai, & Carmelius. Tertiò, quia non venerunt ad eum Messiam omnes gentes, vt crederent in eũ. Quartò, quia gladij nõ sunt cõflati in vomeres, & lanceę in falces, nec in orbe prælia cessarunt, potius in Iudea attrocissima bella fuere suborta, vt tempore Titi Vespasiani, Adriani, &c. Et ita illud non est impletum non leuabit gens contra gentem gladium, nec exercebuntur vltra ad prælium. & ita in aduentu Messiæ, in quo Rege pacifico futura erat pax in orbe, quæ non est impleta. Ergo non potuit esse Messias, qui venit ante impleta signa vaticinata in eius aduentu.

Respondetur. Quid intelligendum pernouissimos dies statuendum? & dico non semper intelligi dies vltimos durationis mundi, sed sępe intelligi dies aduentus Messię Gen. 49. vbi Iacob morti proximꝰ dixit filijs. Congregamini, vt annũciem, quę ventura sunt in diebus nouissimis. Vbi prędixit de tempore aduentus Messię. Ita in præsenti testimonio Isaiæ per dies nouissimos intelliguntur dies primi aduentus Messię: licet interdum accipiantur pro fine mundi, & vltimo aduẽtu Messię ad iudicandum. Ad illud secundum de eleuatione mõtis domus Domini non est intelligenda eleuatio localis, quam fingunt Hebręi tempore Messię futuram super dictos mõtes, & coles, sed de eleuatione montis Sion supercęteros secundùm excellenciã, & præstantiam rerum mirabilium fiendarum à Messia. Fecit quippè in Hierusalem mira multa, fecit videre cęcum à natiuitate, dedit salutem infirmo in probatica piscina, misit Spiritum sanctum Apostolis, & ita impletum est vaticiniũ. Tertia, etiã probatio minoris impleta est, quod venerunt ad Messiã omnes gentes: nam licet dictio illa vniuersalis omnes, sępè accipiatur por vniuersitate, non semel vt inpræsenti accipitur pro multitudine, nam multi ex nationibus venerunt ad Messiam, & receperunt fidem, & ita cum dicitur veniene ad eum omnes gentes, idem est ac multi ex gentibus, vt dicitur in Actis Parthi, Medi, Ælamitæ, &c. De quarta probatione minoris de pace tempore Messiæ futura dubiũ non est, quòd in orbe fuerit summa pax, & venerit toto orbe terrarum in pace compositio, & melius in Iudea. Tunc enim Romani dominabantur, vt dicatur ab Euangelista, vt describerentur vniuersi orbis sub Augusto Cæsare, & per istum loquendi modum videtur notari pax saltim illius prouinciæ Iudaicæ in exteriori gubernatione, quin recurratur ad vlteriorem, venit *Rex pacificus*, & Redemptor per gratiam, doctrinam, & exemplum dans pacem, relinquens pacẽ, &c. Et Angeli prænuntiarunt *in ter-*

rapax, id verò quòd subiungitur non exercebuntur vltra in prælium, ita intelligendum, quòd in sacra scriptura illa dictio *vltra* accipiatur pluribus modis, primo vt significet tempus perpetuum vt Genes. 9. *Nequaquam vltra interficietur* omnis caro aquis diluuij, vt sit idem, quòd nunquam. Secundo significat longum tempus '4. Reg. 6. *Et non vltra venerunt latrones Syriæ in terram Israel*, id est longo post tempore. Tertio, accipitur pro breui temporis spatio. Genes. 35. *Non vocaberis vltra Iacob*, sed Israel nomen tuum, id est breui spatio temporis non vocaberis Iacob sed Israel. Igitur in præsenti nec exercebuntur vltra ad prælium vacinatur Isaias, quòd pro spatio breui vitæ Messiæ immo in aliquo spatio temporis post eius viram non excitandum prælij, vtnō est excitatū. Vsque ad bellū Titi, & Vespasiani, quando rebelati sunt Iudæi contra Romanos.

Arguitur quartò, ex illo Isaiæ 11. *Egredietur virga de radice Iesse &c.* Vbi vaticinatus est de tempore Messiæ multa, quæ non videntur impleta tempore Iesus Nazareni, vt quòd *de radice Iesse egrediatur virga*, & *de virga flos*, *in quo requiescat spiritus Domini* &c. Et quòd *habitet lupus cum agno*, & *leo cum oue*, & quòd *leo comedat paleas sicut bos*, & quod *puer paruulus minet eos.*

Resp. loqui sub metaphora, & nominibus rei vegetatiuæ, & sub nomine rerum irrationalium, iuxta phrasim familiarem scripturæ: immo interdum fit transitus à metaphora in proprietatem, à figura in figuratum. Et ita, sub nomine virgæ de radice Iesse loquitur de Maria, sub nomine floris de Christo, ex illa nascituro, aliàs ineptè addidisset propheta, quòd requieseret super eum spiritus Domini. Imo nec Iudæi quantumcumque cœci sint, possunt coniungere cum virga, & flore irrationali spiritū Domini, spiritum consilij &c. Deinde esse familiare scripturæ, loqui de hominibus sub nomine rerum in animatarum, immo de ipso Deo. Constat ex Amos 4. vbi de Deo dicit. *Leo rugit quis non timebit*, & Genes. 49. Iacob loquens de Iuda ait, catulus leonis Iuda, & de Benjamin filio suo: *Benjamin lupus rapax*, & proberuiorū 27. Princeps impius *leo rugiens*, & vrsus esuriens. Et ita in præsenti explicari debet sine difficultate, de vnione, & pace fidelium sub Messię disciplina. Et ita nō est difficile verificari, quòd habitabit lupus cū agno, Pardus cum hædo; nam loquitur de populo Hebreorū & gētiliū sub nominibus animaliū inimicorū, ac si diceret: Hebræi, & Gentiles ante aduentum Messiæ contrarij, & aduersi; post in vna Ecclesia Christi simul, & pacificè vitam acturos sub vna fide, & doctrina, & sacramentis, vt omnium credentium esset cor vnum & anima vna, iuxta act. 4. ita PP. in numeri apud Ruz. ibidem.

Ar-

Arguitur quintò ex Isaiæ 14. *Propè est vt veniat tempus eius &c. Et possidebit eos domus Israel in seruos, & ancillas, & erunt capientes eos qui se cœperant.* Ecce vbi tempore Messiæ non sunt assumendi populi gentium, sed futuri serui Iudæorum, & feminæ ancillæ, sed non legitur hoc esse impletum. Igitur nondum venit Messias.

Resp. intelligi variè. Hieronymus, & alij asserunt intelligi de regressu è captiuitate Babylonica, breui disoluenda: & reducendos in patriam, & plures ex populis Gentilium reuersuros cum eis, viros, feminas in eorum famulatu, qui eorum erant dominati. Alij cum Tertuliano, & Ambrosio referunt ad tempus aduentus Messiæ, & dicunt sensum prophetiæ esse completum, siquidem Gentiles, qui dominabantur Hebræis ad iuncti sunt illis, & etiã discipulis Christi, & serui futuri in Ecclesia, non seruitute corporali, sed ingenuæ obedientiæ, vnitatis, & dilectionis. Iuxta illud Psal. 4. *Dabo tibi gentes, hereditatẽ tuam, & possessionem tuam terminos terræ*, quòd iam inspicitur completum.

Arguitur sexto ex Isaiæ 30. vbi de aduentu Messiæ cum ipse sit venturus ad salutem populi vaticinatur. *Et erit lux lunæ sicut lux solis, & lux solis erit septempliciter &c. In die, qua alligauerit Dominus vulnus populi sui, & sanauerit percussurã plagæ eius*, sed in Sole & luna non sunt visa ista signa vaticinata, sed spectantur videnda. Ergo nondum aduenit Messias.

Resp. variè interpretari à Patribus. Augustinus tom. 4. in quæstion. de nou. & vet. testamento cap. 105. de Christi priori aduentu, vt ipse sit Sol iustitiæ septempliciter refulgens septiformi munere donorum, veniens ad sanandum vulnus generis humani, & delendum chyrographum peccati Adæ, Ecclesia autem lunæ comparata fulgebit, sicut sol, virtute, & sanctitate iustorũ. Alij verò ex Hieronimo intelligunt, de secunde aduentu Christi ad iudicium, in quo innouanda, & immutanda omnia, & purificanda, vt Sol fulgeat septuplum quam antea luna: sicut mortalitas inducta per peccatum induitura immortalitatem. Iuxta primã interpretationem dici debent impleta vaticinata, quòd intendimus. Iuxta secũdã, nil officit nostræ sententiæ. Nec mirum non impletum, cum expectetur aduentus iudicialis.

Arguitur septimo ex Isaiæ. 53. Vbi vaticinatur de Messia vẽturo, quòd *si posuerit pro peccato animam suã videbit semen longæu.* Cui consonat illud Ps. 88. *Et ponam in seculum seculi semen eius, & thronũ eius sicut dies cœli*, sed Christus non habuit filios, nec posteros in seculũ seculi, ergo nõ fuit Messias promissus.

Resp. impletũ esse. Duplex enim est modus generationis corporalis, & spiritualis, non habuit filios generatione corporali, bene spiritua-

quali medio semine doctrinæ discipulos, Apostolos è quibus propagatio in sæculi finem, & vitam futuram sempiternam.

Arguitur octauò, ex illo Ieremiæ 3. *In tempore illo* (scilicet Messiæ) *vocabunt Hierusalem solium Domini, & congregabuntur ad eam omnes gentes*, sed non est ablata potestas ab omni gente, & redacta in Messiam, & non habuit solùm in Hierusalem, ergo non venit. Deinde ex eodem cap. 23. *ecce dies veniunt*, & suscitabo Dauid germen iustum, & regnauit Rex, &c. in diebus illis saluabitur Iudà, &c. vbi prædicitur, quòd per Messiam erant saluandi omnes Iudæi, & non sunt saluati per Christum, sed potiùs per illum, aut causa illius dissipati, dispersi per orbem, & mala perpessi, ergo non venit Messias, nec Christus ad congregandos, & saluandos Iudæos, sed perdendos.

Respondetur ad primum, ex cap. 3. petitum. Loqui sub nomine Hierusalem, de Ecclesia Christi, in qua in aduentu priori Messiæ colligendi erant fideles ex gentibus, & in ea erigendum solium Christi Summi Pontificis, & Petri, & successorum, cui subijcitur in spiritualibus vniuersa orbis potestas. Dico ad alterum ex cap. 23. sæpè in scriptura nomine Iudà, & Israel significari fideles confitentes Christum, non vt perfidos Iudæos, & ita in diebus Messiæ vaticinatur, quòd saluandi essent omnes confitentes, & credentes Christum ore, & opere vocãtes eum Dominum suum, quòd iam impletum vidimus. Quod si cum Lirano referatur ad fideles, iam saluos factos per Christũ cõsummatnr saluandos, in cœlo implendum speramus, & non officit instituto.

Arguitur nonò, ex illo Danielis 7. vbi loquitur de Messia. *Aspiciebam ergo, & eccè in nubibus cœli, quasi filius hominis veniebat, &c. & dedit ei potestatem, &c. potestas eius potestas æterna, &c.* Sed ista, non sunt impleta, quia nemo venit, vsquemodo in nubibus cœli, nec cum potestate, æterna, & regno perpetuo. Igitur, non venit Messias.

Respond. quod Iudæi cæcitas & perfidia confundit primum aduentum cum secundo, & tribuit primo, quod secundo, & contra. In præsenti autem satis apertè intelligitur, loquutum de secundo aduẽtu Iudiciali. Nam statim sub dit iudicium sedit, & libri aperti sunt. Et ita non mirum, non venisse in nubibus cœli, qui speratur venturus, & videndus cum potestate magna, & maiestate.

Arguitur decimò. ex illo Micheæ 2. *Congregatione congregabo Iacòb*, &c. *ponam quasi gregem in ouili*, quasi pecus in medio *caularum, &c. ascendit enim pandens iter antè eos, &c. & transiuit Rex, &c. & Dominus in capite* eorum, sed

hoc

hoc non impletum est. Nam non vidimus, vnquam congregatum vniuersum populum Hebræorum quasi oues in vno ouili, & Messiam Regem, vt caput eorum præcedentem eos. Igitur Messias nondum aduenit.

Resp. interprætari variè, Hebræorum quidam referunt ad Regem Sedeciam, quando aufugit per portam sui hortus, ascendens antè Iudæos in Babylonem vinculis captus coram suis Iudæis. Catholici verò referunt ad tempus Messiæ, & intelligunt, quòd Christus patres in lymbo congregatos, vt oues in ouili educit, aperiens portas, & ducens eos, ascendit in cœlũ ante eos, in capite eorum, quod iam impletum est. Alij intelligunt de fidelibus, sub nomine Iacob, & Israel congregandis in vnam Ecclesiam, vt oues in ouili tempore Messiæ, in quo iuxta Ioan. 10. fiet vnum ouile, & vnus pastor: colligendorum, tum ex synagoga Iudæorum, qui fidẽ Christi receperunt, tum ex gentilitate, quæ à Regibus Magis venit ad Ecclesiam. Vbi in vnitate fidei, & dilectionis erãt victuri sine tumultu rixarũ, & cõtentionum, quod etiã vidimus impletum relictis Iudæis in sua perfidia.

Arguitur vndecimò, ex illo Zachariæ 6. *Ecce vir oriens, nomen eius, &c. & ædificabit templum Domini, & sedebit, & dominabitur super solio suo.* Vbi prædicitur Messiam ædificaturum in Hierusalem aliud tertium templum, sed vsquemodo, non fuit ædificatum, nec à Christo. Igitur indè colligitur in mundum Messiam, non venisse.

Respondetur, quòd cum ex Daniele constet Hierusalem, & sanctuarium dissipanda, vsque ad mundi finem & consumationem, non potuit intelligi vaticinium Zachariæ, de tertio templo à Messia ædificando materiali, sed intelligi de spirituali templo ex lapidibus viuis construendo per Christum: id est Ecclesia militante, aut triumphante, quæ dici potest aptè templum Domini, & ita cæcutiunt Iudæi de materiali intelligentes.

Arguitur vltimò, ex Ezechielis 38. & 39. & ex Zachariæ 14. vbi prophetæ videntur nuntiare per Regem Gog, & gentem suam Magog inferendum bellum contra Hierusalem, & captiuandos Iudæos, sed in aduentu Messiæ occidendum ab illo Regem Gog, & euertendam gentem Magog, & Iudæos reducendos in patriam Hierusalem, & ibi regnaturum cũ eis perpetuò, sed ista non fuut impleta, igitur non aduenit Messiæ aduentus, in cuius tempore erant ad implenda.

Respondetur omissis variis expositionibus. Prædicta non intelligi patranda in primò Messiæ aduentu, sed paulò ante secundum iudiciarium. Et ita prælium Gog, & Magog prædictum à Prophetis

non

non erat futurum iuxta figmentum Iudæorum per Regem Gog corporalem, & materialem contra Hierusalem terrestrem, sed per mysticum Antichristum, & Magog, illius sequaces ex vniuersis nationibus, & præcipuè habitantibus in terra Magog, id est in Scithya, vel ex illis gētibus orundis, immanibus Turcis, Tartaris, &c. contra Hierusalem spiritualem, sub nomine terrestris significatam scilicet Ecclesiam, & ita in secundo aduentu venturus Christus, & occisurus Antichristum gladio oris sui, & congregaturus fideles, & sanctos suos, & ducturus in cœlestem Hierusalem, patriam cœlestem, vbi regnabit in perpetum cũ sanctis suis. *Agit solet hic* de Gog, & Magog, & disquiri an fuerint in orbe vera gens, & vbi, vt non solùm sint accipienda mysticè, sed historialiter. *Variæ sunt sententiæ*, alij dicunt fuisse Getas, & Masegetas. Et repulit Augustinus 20 de ciuit. cap. 11. Alij cum Plinio 4. histor. cap. 23. in Celesyria ciuitatem, quæ à Scithys appellabatur Magog, patria prodigiosa. Alij cum Appiano libro de descriptione mundi esse ciuitatem in Asia. Alij à Gog descendisse Gotos, iuxta Ambros. 2. de fide cap. vlt. cui Hieronymus, nec assensit, nec dissensit in quæst. Hebrai. ad 10. Genes. tamen Isidorus in Ethymologijs consensit. Alij *verius* cum Iosepho 1. antiquit. cap. 11. fuisse Prouinciam possessam à posteris Iaphet. Ex Genes. 10. inter filios Iaphet, filij Noe Magog à quo per posteros possess. appellata est Magog, & postea fuisse Scithyam, & Rex eius appellabatur Gog.

Quæres, an narrata Ezechielis 38. & Apocalyp. 20. de bello Gog, & Magog sint accipienda historialiter, vel misticè. *Ratio dubitandi* est. Nam ex Ezechielis, & Zachariæ vaticinijs videtur prænuntiatum per Regem Gog, & gentem Magog, inferendum bellum in Hierusalem, & captiuandos Iudæos, & venturum Messiam, & euersurum Gog, & Magog, & reducendos Iudaos in Hierusalem, quæ videntur redolere historiam. *Dico* in hoc varias fuisse sententias, quidam olim cum Lactantio Tertul. & alijs dixerunt intelligenda historialiter de bello mille annis, post Antichristum, qui post tres annos cum dimidio est occidēdus, & post mille annos inferendum bellum inter Diabolum, & sanctos, quod prælium appellatum est Gog, & Magog ab Ezechiele, & Ioanne, quod displicere solet ex Matth. 24. & 25. vbi statim post Antichritum dicitur Christus venturus ad iudicium, non post mille anos. *Alij* dixerunt intelligendum mysticè accipientes illud bellum mysticè de prælio Diaboli, & sequacium sub nomine Gog,

Gog & Magog præliantium cum Michaele Archangelo, sed repulit Hieronymus, ad 36. Ezechielis, vt dissonam scripturæ. *Alij* cum Eusebio, Cæsar. lib. 9. cap. 3. de demonstratione intelligunt per Gog, & Magog historialiter imperatorem Romanum, & exercitum eius, sed debile fundamentum ex numer. 24. iuxta 70. legentium Gog pro Agag, tranflatione corrupta facile repellitur corruptione. *Alij* ex Theodoretur ad 38. Ezechielis dicunt historialiter Gog, & Magog esse Alexandrum magnum, & posteros eius in Regno, & exercitum dimicantem, sæpe contra Iudæos, qui liberati sunt per Machabæos. Sed solet *refelli*, quòd sit contra Ezechielis 38. vbi legitur. In exercitu Regis Gog futuros Etyopes, Lybios, Cappadoces, & alios, qui nunquã inuasserunt armis Hierusalem, præsertim in tempore Machabæorum. Secundò, quia ita illud, præliũ describitur ab Ezechiele, vt post illud, non sit aliud futurum bellum, & Machabei pluries post modum debellarunt contra hebræos: vt constat ex Iosepho de bello Iudaico. *Alij* ex Ambrosio 2. de fide cap. vlt. Intelligit, illud bellum Gog, & Magog de bellis paratis à Gothis, sed solet refelli, eo quòd describitur ab Ezechiele, vt post illud bellum, non sit aliud futurum, & Gothi post primum plura intulerunt. *Alij* ex Hieronimo ad Ezechielis 38. non historialiter, sed misticè intelligunt sub nomine Gob, & Magog de bello inferendo ab hæreticis contra Ecclesiam: Augustinus verò 20. de ciuit. cap. 11. de bello inferendo à Diabolo, & exercitu eius congregato ex mũdi nationibus, sub nomine Gog, & Magog, duce Antichristo, quod magis accedit ad probabiliorem sententiã. *Vltima, & communior sententia*, est illa verba Ezechielis, & Ioannis non accipienda historialiter, sed misticè sub nomine Gog, & Magog, de prælio inferendo ab Antichristo, & assecl's, conciliatis ex diuersis nationibus præsertim habitantibus in terra Magog in Scithya, & ex illis oriundis, iuxta dicta conta Hierusalem, non terrestrem, sed spiritualem, scilicet Ecclesiam Christi, quẽ occisurus est Christus gladio oris sui in vltimo aduentu Iudiciario, liberaturus suos prędestinatos, sanctos, ductus in cœlum regnaturus cũ eis in perpetuum.

Conclusio asserit vltimò, quod *Messias in lege promissus, quem iam venisse diximus, & hic dicitur Christus dux, non alius accipi debet, quam Iesus Nazarænus filius Mariæ virginis*, non Ioannes *Hyrcanus*, *Cyrus Herodes*, *Agrypa*, *aut alij*. Iuxta supra dicta. Est veritas catholica à qua Iudæi disentiunt præsua perfidia.

Probatur primò, ex Prophetijs ante aduentum Christi adimpletis in eo, ab Adam in Christum,

tum; & in primis præsignata est illi mater virgo Genes. 3. *Inimicitia ponam inter te, & mulierem semẽ tuum, & semen illius, &c.* Vbi dum dicitur oriundus de semine fœminæ excludi videtur semen viri, sed clarius Isaiæ 7. *Ecce virgo concipiet, & pariet filium.* Deindè ex loco determinato natiuitati eius Micheæ 5. *Et tu Bethlehem Ephrata, &c. ex te mihi egredietur, qui sit dominator in Israel.* Vlterius ex circunstantia temporis præsignata à Daniele 9. *Per dictas hebdomadas*, & ex Genes. 49. *De non auferendo sceptro à Iudà, donec veniat qui mittẽdus est.* Deinceps ex Abacuc 3 ex nomine illi imponendo, *& exultabo, in Deo Iesu meo.* Vlterius ex designatione aduentus pacifici in paupertate, mirabili doctrina, miraculis, modo pacifico moriendi. Zachariæ 9. *Ecce Rex tuus venit tibi mansuetus, & iustus, & Saluator,* Isaiæ 53. *Tanquam agnus ad occisionem ducetur*, & Isaiæ 9. *Erit sepulchrum eius gloriosum*, & in alijs etiam prophetis: *Aperientur oculi cæcorum, aures surdorum patebunt, saliet sicut cerbus claudus*, &c. Sed hæc vniuersa, & alia innumera signa aduentus eius sunt impleta in Christo Iesu, filio Mariæ Virginis, & non in alio, vt expendenti singula patebit, nullus enim præter illum fuit Deus & homo, nec Saluator generis humani, natus ex sola Virgine, vt in nullo cadãt dictę proprietates, & signa. Ergo ille solus fuit verus Messias.

Secundò probatur ex authenticis testimonijs in vita Christi datis à fide dignis omni exceptione maioribus in tempore, in quo vixit in mundo, quæ rem manifestè conuincunt. Et in primis ex Gabrielis Archangelis testimonio Lucæ 1. *Ecce concipies in vtero, & paries filium, & vocabis nomen eius Iesum. Hic erit Magnus, & filius altissimi vocabitur.* Deindè ex testimonio militiæ cœlestis Lucæ 2. *Gloria in altissimis, &c. Euangelizò gaudium magnum, quia natus est vobis hodie Saluator, qui est Christus Dominus in ciuitate Dauid.* Deinceps ex varijs testimonijs ab hominibus Hebræis, & gentilibus. Ab Elisabet, & Zacharia, Lucæ 1. à Simeone, & Anna prophetisa Lucæ 2. à Nicodemo, Ioannis 3. à Petro Matth. 16 à Centurione, Matth. 27 ex Sybilis, & alijs, quæ non vacat recensere, imò ex inimici testimonio, vt dici solet salus, ex testimonio dęmonum Marci 1. & 3. *Quid nobis, & tibi Iesu Nazarene? veniśti ante tempus perdere nos, scio quod sis sanctus Dei.* Denique ex illustri Patris ęterni testimonijs Matth. 3. in Baptismo, *Hic est filius meus dilectus*, & in transfiguratione Matthæi 17. similiter: sed non videntur, posse esse falsa tot egregia testimona, Igitur illa persona, de qua efferuntur, fuit Messias, qui iam venit, qui fuit filius Mariæ Virginis.

Tertiò probatur ex varijs mi-

raculis factis in eius rei comprobationem. Quæ Deus non faceret in comprobationem falsi. Et in primis iuxta Prophetam Isaiã cap. 29 & 35. præostendentia, quòd operaturus illa esset verus Messias, & impleta leguntur Matthæi 11. vbi Iesus Baptistę discipulis interrogantibus: *Tu es, qui venturus es? an alium expectamus?* Respondit Christus, *Renuntiate Ioanni, quæ auditis, & viditis, cæci vident, claudi ambulant, leprosi mundantur, &c.* Sed Deus non concurreret ad probationem rei falsæ, per huiusmodi miracula, in probationem, quòd Christus esset Messias promissus. Ergo verum est venisse Messiam operantem talia miracula.

Vltimò probari potest, ex impletione euentuum prędictorum à Christo, quę satis probant prędicentis notitiam circa futura, quæ soli Deo propria est. Et in primis Lucæ 19. de ruina Hierusalem super quam *fleuit, quia venient dies in te, & circundabunt te inimici tui vallo, &c.* Deinceps iuxta Matth. 24. prænuntia tribulationum, & persequtionum, quas passuri erant discipuli. *Tradent vos in tribulationem, & occident vos, & eritis odio omnibus, &c.* Deindè iuxta Marci vltimo, miracula ab Apostolis patranda prænuntiantur. *In nomine meo dæmonia ejicient, serpentes tollent, & si mortiferum quid biberint, non eis nocebit, super egros manus imponent, &c.* & statim subiungitur: *illo profecti prædicauerunt vbique, Domino cooperante, & sermonem confirmante, sequentibus signis*, miraculis. Denique miris alijs miraculis, ab Apostolis factis in confirmationem eiusdem veritatis, quæ referre non patitur breuitas. Illud mirè rem exaggerat de Ecclesiæ futura duratione. Iuxta Matthæi vltimò. *Ecce vobiscum sum omnibus diebus vsque ad consummationem sæculi.* Et Matth. 16. *Portæ inferi non prævalebunt aduersus eam*, sed impleta sunt ista vaticinia, vt vidimus. Ergo veritas est venisse Messiam, & fuisse Prophetam filium Virginis.

Argui posset pro perfidia Iudæorum, qui in omnem se vertunt partem, vt veritatem figmentis obruant, accipientes hic per Christum ducem plures, Ioannem Hyrcanum, Nabuchodonosorem, Cyrum, Herodem, Agrypam, & plures alios, quos latius refert Cornelius ibidem, & quia non sunt cohærentia testimonia illorum, breui & efficaci argumento refutantur à dicto Cornelio, & satis à nobis supra, dum de Cyro, ad illud. *Hæc dicit Christo meo Cyro*, cui, nec nomen in propria speciali significatione, nec alia attributa Christi Domini cohærent, vt saluare populum à peccatis, &c.

Arguitur secundò ex omnibus argumentis fabricatis con-

trà secundam conclusionem, nam si probassent non venisse Messiam, vim haberent ad probandum, non fuisse Iesum Nazarænum, filium Virginis, nec illa, nec solutiones repeto, ne actum agamus.

AD MORES.

Quòd *perfidia Iudaica ex incrementa cæcitatis & obstinationis assumpsit, vt luci Scripturarum, & naturalis luminis obcluserit aditum.*

Quòd *Deus sui desertores, in finem pro meritis deserit.*

Quòd, *qui non recipit primum Christi aduentum pacificum, incidet in manus secundi seueri, & iudicialis.*

TEXTVS.

Vers. 26. *Vsque ad Christum ducem.*

AD LITTERAM.

Dub. 6. *An sit intelligenda Prophetia Iacob, Genes. 49.* Non auferetur sceptrum de Iuda, nec dux de femore eius, &c. donec veniat qui mittendus est, &c. *de aduentu Messiæ? & quinã illius sensus? & an ex illa sufficienter probetur venisse Messiam, contra Iudæos?*

RAtio *dubitandi* pro asserente, quòd non possit intelligi de aduentu Messiæ, & ex illa nil pro aduentu Messiæ conuincatur contra Iudæos. Primò, quia à tempore prolationis talis prophetiæ Iacob moribundi benedicentis filiũ Iuda inter cæteros, defecit, nõ semel, sed sæpe sceptrum, & dominatio à tribu Iuda. Patet, nam non incepit vnquam inter Iudæos, nisi (vt quidam) ab exitu Israel de Egypto, & fuit diuisum in quadrifariã dominationem discursu temporum. Primum genus dominationis, & gubernationis floruit inter principes, & duces: vt in Moyse vexillifero anteſignano eorum, & successore Iosue à cap. 12. Exodi ad librum Iosue, in his censeri debet ablatum, quia non fuerunt ex tribu Iudà. Nam Moyses fuit de Leui, & Iosue de Ephraim. Secundum inter Iudices ab Othoniel in Samuelem, ex libro Iudicum, & 1. Reg. & non omnes ex tribu Iudà, sed Othoniel, & Abesan. Tertium inter Reges, à Saule in Sedeciam vltimum. In his etiam ablatũ, eo quòd Saul nõ fuit ex Iudà, sed Benxamin, licet fuerit Dauid successor. Sedecias fuit ductus captiuus in Babylonem ex 4 Reg. 24. Quartum inter duces simul & Pontifices finita captiuitate, à Zorobabele, duce & Pontifice in Machabæos. Vbi fuit in eadem persona imperium, & Sacerdotium. Et hic similiter, eò quòd non ex tribu Iudà, sed Leui, ex 1. Machab. 2. & alibi, vt liquet de Machabæis successoribus ad Herodem magnum Ascanolitam, qui regnauit tẽpore Christi, & non ex tribu Iudà, sed alienigena ex patre Idu-

meò, & matre Arabe, & occidit ambitionæ regni descendentes legitimos ex stirpe Regia. Hic occidit innocentes, non ergo subsistit vaticinij veritas toties disrupta illo discursu 600. annorum.

Secundò, nam est difficultas insolubilis, quòd non fuit sceptrum, regnum, aut gubernatio ducalis in Iudà, à die vaticinij in Christum. Nam deficit in Ioachim, aut Iechonia, sterili, iuxta Ierem. 22. *Scribe virum istum sterilem, &c. nec erit de semine eius vir, qui sedeat super solium Dauid.*

Tertiò, nam sceptrum fuit ablatum à Iudà tempore captiuitatis, vbi series regum Iudà finem habuit. Nam saltim in Rege Sedecia videtur expirasse vltimo regum, qui ducti sunt captiui in Babylonem. Et defecisse necessum est saltim per 70. annos. Quibus durauit captiuitas sub Nabuchodonosore, filio, & nepote, licet sublata per Cyrum, edicto publico reposita sit in Zorobabele de tribu Iudà, inde duce populi Israel.

Quartò, nam licet illa dominatio à Zorobabele transierit ad Machabæos per 155. annos, vsque ad Christum, non fuit in illis continuata, quia non fuerunt ex Iudà, sed Leui, imò & desijt ante Christi natiuitatem, in Herode Ascalonita imperante Iudæis plus 29. annis.

Quintò, nam Patriarcha Iacob singulis vaticinijs protulit singulis filijs excellentiam, & dignitatem, vt capitibus singularum tribuum, vt quæ dicuntur Iudæ, ad Iudam tantùm pertineant, manere sceptrum intra tribum Iudà, & non dilatandum ad alias tribus, sicut quæ Iosepho, aut Benjamino ad solas suas: ergo illa vox *Iudà* accipi non debet, vt nomine Iudà fit intelligenda omnis natio, aut gens Iudæa, vt complectitur omnes tribus, quæ conficiunt vnum populum Iudaicum, vt à Iudà fiat appellatio gens Iudæa, ita vt verificetur prophetia in quacumque tribu, in qua subsiterit sceptrum regale, aut gubernatio ducalis, seu potestas dominatiua.

Vltimò, nam magna fuit varietas sententiarum inter Hebræos, non intelligentes prophetiam de Mesia, & ita ex illustri loco nihil concluditur efficaciter contra Iudæos. Nam vbi nos legimus, donec veniat, qui mittendus est, legitur in Hebræo שילה syloh, quod nomen est oppidi, & loquitur de Saule, qui mittendus erat Rex à Deo, vngendus in syloh, vel Ieroboan, ibi coronando à decem tribubus: aut Nabuchodonosore assumpto à Deo ad euertendam Hierusalem, inflamandum templum, & ducendum Reges, & ciues in captiuitatem Babylonicam.

Conclusio asserit primò, quòd *sit intelligenda prophetia de aduentu Mesiæ, & sic, vt sit sensus de sceptro*

to non auferendo à Iuda in descendentibus, sed duraturum continuè ad diem aduentus Christi, sed ex quo cæperit ius, & Regia, & ducalis potestas, imò quoad actualem vsum penitus, vt non sit deinceps restituendum, in quauis à Iudâ, ita denominata, nec finaliter auferendum, quin sit restituendum, donec transferatur in alienigenam circa tempus Messiæ. Ita grauissimi. Ex PP. Græcis, & Latinis, quos citat, & sequitur Castro 3. Apolog. annotatione ad ista verba. Rua tomo 2. contr. contr. 8. fol. (mihi) 641. ex nouissimis Siluius tom. in Genes. ad cap 49. Tirinus hic quatenus dicit vni tribui, & regno adiunctis alijs tribubus sceptrũ obtigisse.

Probatur pro maiori, quia iuxta istam expositionem non auferetur penitus, & vltimatè, ita vt non sit deinceps restituendum, donec veniat Christus, quo Rege proprietario quoad spirituale, & temporale præsente, spirat Vicarius, & depositarius illius nationis Iudaicæ, qui retinebat, & conseruabat vsque dum *surgeret Propheta Domini fidelis*, scilicet Christus. In illis enim vigebat, quin transferretur ad alienigenam, vt re ipsa est translatum in Herode Rege Ascalonita primo alienigena, gentili, Philistæo, per vim intruso à Romanis iuxta Tirinũ, vbi dici non potuit (vt in alijs) tenuisse sceptrum nomine, & cõsensu illorum, & non potuit, quin circa illud tempus veniret Messias. Et ita summitur ex hoc solido argumentum contra Iudæos iam venisse Messiã, & illos mansisse sine spe recuperandi in posterum. Ita omnia satis coherẽt, omnia constant, & nulla ratio dubitandi præmit, vt patebit ex solutione.

Probatur illa pars, *Non accipi romen illud Iuda pro filio Patriarchæ Iacob, nec pro ipsius tribu specialiter, sed pro natione, & populo Iudaico.* Primò, nam ita cõgruit in sacra Scriptura Malach. 3. *Placebit Dom nosacrificium Iudæ*, id est plebis Iudaicæ vniuersæ. Et 1. Macab. 1. non semel dicitur *ciuitates Iudæ*, vbi erant de pluribus tribubus. Præsertim, vbi post captiuitatem fuere commixti, & illi adscripti, & agregati. Secũdò, nam dato quòd non sit sensus, quod statim à die vaticinij viguit sceptrum in filio Iudâ, aut ipsius tribu, sed, quòd ex quo obtigerit, non sit penitus auferendum, & sine spe vlterius recuperandi, quin brebi, aut circa illud tempus adueniat Messias. Et quod à Dauid, & posteris sit possessum, & continuatum in tribu Iudâ inter Reges, adhuc tempore captiuitatis, vel qua viguit ius sine vsu, aut etiam cum illo, ita vt non sit ablatum in tempore captiuitatis, vel quia Ioachim in ea non desijt esse Rex, sicut nec Manasses in Babylone 4. Reg. 21. nec Rex Frãcisscus primus Galliæ Madriti captiuus, aut quia ex Regis Babylonis permissu habebãt Iudi-

ces, adhuc in cauſis criminalibus de natione, & gente ſua iuxta Daniel 13. tamen negari non poteſt in rigore loquēdo, quòd Saul Rex tenuit ſceptrum, & non fuit de tribu Iuda ſpecialiter, ſed Benjamin, & illius tempore non venit Meſias, igitur accipi debet nomen Iudà generali ratione pro natione Iudaica vniuerſa, vt poſsit in hac parte ſine vi verificari vaticinium. Idem dici debet in Machabeis, quos fuiſſe de tribu Leui conſtat ex 1. Machab. 2. & in illis fuit continuatum, & in dicta acceptione facile verificatur, & non cogimur recurrere, vt ſaluetur, ad id ſufficere lineam maternam Iudaicam, licet per paternam ex Leui eſſent oriundi, eo quòd ſic nati dicuntur geniti ex femore Iudà, nam effugium friuolum, nam ex viri linea præſertim, ſi aliud medium efficacius occurrat, videtur aſsignandum.

Probatur *illa negatiua, vt non ſit ſenſus de non auferendo ſceptro à perſona Iudæ, & deſcendentium ex ipſius tribu in ſpeciali acceptione.* Nam in primis non dicit ſceptrū ſtatim futurum in Iudà, aut ipſius tribu. Nam non definit tempus, quo ſit illi adiudicandum, ſed indicatur, quòd ex quo obtigerit, ſiue à Moyſe, Ioſue, Regibus, Saul, Dauid, &c. non ſit auferendum diffinitiuè; quin breui circa illud tēpus veniat Meſias. Deinde conſtat, reſediſſe in Saule ex tribu Beniamin, & Machabæis ex tribu Leui vſque ad Herodem Regē alienigenam, in cuius tēpore venit Meſias: ergo nomine Iudà veniunt intelligendæ Iudaicæ nationes aliæ tribus, non ſpecialis, licèt principalis Iudà, ſed omnis Iudaica generali acceptione, vt amplectitur alias, Leui, Benjamin, &c. ſic à Iudaica denominata, niſi vellis recurrere ad futiles alias euaſiones, in quibus minus acquieſcit animus, quā in dicta.

Probatur vltima pars, quæ dicit legitimum ſenſum eſſe, *quòd ex quo cœperit, & contigerit ſceptrum in natione Iudaica, non defuturū penitus, quin breui ſit aduentus Chriſti.* Nam in hoc ſenſu, & acceptione Iudà pro natione Iudea, admiſſa in ſacra Scriptura præcitata, facilè difficultas inſuperabilis euacuatur, & omnia cohærent. Nam ſemper viguit in natione Iudaica, ſiue ex ſpeciali tribu Iuda, ſiue Leui, Benjamin, &c. Et fuſius patebit ex ſolutione rationis dubitandi.

Reſpondetur *ad rationes dubitandi.* Ad primam negando antecedens, & probationem. Excogitatę ſunt enim penè innumerę expoſitiones prophetiæ ad ſolutiones. & generaliter in Dauide fuiſſe primò ſceptrum prætermiſſo Moyſe, Ioſue, & alijs, & à Dauide continuant per alias, ante & poſt captiuitatem, imò per Machabæos ex Leui, in quib⁹ fuit in depoſito ad Chriſtum, cui reſeruabatur iuxta 70. cuius erat regnum iuxta Caldæum, & id ex conſenſu, & nomi

nomine Iudæorum, vt posit dici in rei veritate, quod retinuit Iudà, sicut quod Romani imperabant adhuc, dum Traianus Hispanus, & alij possidebant sceptrum, & quod Poloni, licet alij nomine ipsorum, sine electione imperarent, vt Stephanus Transilua nus, Enricus, Gallus, & Sigismund' Suecus. Aliter si intrusus per vim, vt Herodes Ascalonita. In quo nequit verificari possedisse sceptrum nomine Iudæ, aut consensu tribus. Imò addunt Lira, Abul. & alij sufficere ad id verificandum Machabæos ex linea materna oriũ dos ex femore Iacob, & tribui Iudà adoptatos, licet aliàs ex paterna ex Leui. Erat enim liberũ pontificibus ducere vxores ex quacũque tribu. Ac si ratio generis, & familiæ non esset petenda ex parte patris. *Alij*, cum Cano 2. de locis cap. 11. Respondent distinctione, retinuisse semper sceptrum quoad ius, quidquid quoad vsum, quoties in alia tribu resedit, cum iure, & spe recuperandi libertatem, & sceptrum, & resedisse sola lege depositi. Quasi non fauent Iudæis hodie talis solutio, cum enim sint sine sceptro, dicere possunt esse cum iure, & spe recuperandi, quandiu non aduenial Messias, suæ Vicariæ proprietarius. *Alij* respondent illis argumentis probari interruptionem temporalem, non ablationem diffinitiuam, & totalem sine spe recuperandi, sicut contigit olim in prædictis casibus, quasi sit sufficiens ad intentum prophetiæ. *Non auferetur*, &c. *Alij* sic exponunt, & respondent intelligi de maiori, & diuturniori possessione sceptri in tribu Iudà, quàm in alijs, quòd satis exaltat honorem, & gloriam Iudæ, & non opus esse ab eo nunquam auferri, ac si ita mansisset mens prophetiæ satis explorata. Denique *alij* præsius interpretantes vaticinium, non acquiescentes dictis responsionibus, de non auferendo quoad ius, & quoad vsum, quoad tempus, non quoad perpetuitatẽ: sunt excogitati distinctionem illam de Iudà pro filio, & de Iuda pro tribu, de Iudà pro tribu speciali, & pro natione Iudaica, intelligi enim debet propheticè, & præcognouisse ratione Iudæ filij eius, & tribus, illa appellatione compellendam esse omnem nationem Iudaicam, constantem tribubus, potius quam à Benjamin, aut alia tribu. Quòd cedebat in maximam gloriam Iudæ præ cæteris, & præscius in benedictione Iudæ, id ipsi prænuntiasse à sua natione, nomine suo nuncupata non auferendum sceptrum, donec veniret Messias, quo dificultas manet euacuata, quæ instabat ablatum esse à Iuda, dum resideret in persona alterius tribus.

Ad secundùm, iam constat; qua ratione non sit sceptrum ablatum à Iudà tempore captiuitatis, vel quia in Ioachin, aut Iechonia Rege

captiuo. Nam sit ius, sicut dictum in Rege Francisco captiuo Madriti. Aut quia ex permissu Regis Babylonis Iudæi habebant de gente sua iudices, etiam ad criminalia. Ex Daniel 13. vt apte Siluius ibidem. Illud autem obiectũ ex Hierem. 22. alij explicant, non de sterilitate physica, sed politica, non futurum Iechoniam sine liberis, quia numerantur octo eius 1. Paralip. 3. sed quôd non sit habiturus filius, qui sit futurus Rex, in solio Regis Dauid. Alij, quod non sit futurus de semine eius vir purè, quia eius successor Christus nõ est vir purus, sed simul Deus.

Ad tertium constat ex ad secundum, nec opus est actum agere.

Ad quartum constat iam, quòd licet Machabæi sint oriundi ex Leui à Aron erant de gente Iudaica. Illud de Herode Tirinus erudite quærit, quare Herode intruso, non statim fuit aduentus Messiæ, sed distulit ad eius annum 36. Et respondet, quia vi, & armis tenebat imperium viuente Aristobulo, & Hircano legitimis, quibus dolo occisis, Iudæ Primates reclamauerunt, & fidei iuramento dato, ac sub protestatione Iuris in alienigenam transtulerũt. Siluius autem ibidem, cur non venerit statim, ac Herodes cæpit frui regno, sed anno 29? Respondet aptius, quia illud verbum propheticæ, *donec veniat* accipi non debet, vt in eodem instanti, hora, aut die, sed vt idem valeat, ac circa illud tempus, aut sub illo Rege alienigena indilatè venturum.

Ad quintum, quòd intendit diruere fundamentum conclusionis, dico singulis filijs singulas prænũciasse prærogatiuas, cuique seorsim ab alijs, ista autem comprehendit vtilia, sibi & cæteris, quòd ipsi soli fuit specialis gloria, non solùm, quia erat habitura sceptrum longiori tẽpore, quam aliæ, sed quia sub nomine Iuda habitura erat quæcumque alia Leui, &c. erat habitura. Ita tamen, vt idem elogium non fuerit ceteris speciale, vt in Iuda, in quo fuit quasi per se in alijs dilatatum per participationem ab illo, siue analogam, siue æquiuocam.

Ad vltimum dico primò, quòd opinionum multitudo circa veritatem aliquam non diruit, aut reddit falsam. Ad eum modum, quo opiniones circa Christi personam, alij Ioannem Baptistam, alij Eliam, aut vnum ex Prophetis non derogat veritatem à Petro prolatam, *Tu es Christus*. Deinde concludi efficaciter, non est conuinci sine tergiueratione, aut dissensu, sed vim habere argumentum quantum est ex se ad persuadendum rationaliter suscipientem, non renitentem cum ceca perfidia. Ad illud de Syloh dico nihil istas nugas proficere Iudæis. Saul enim non est vnctus in Syloh, sed in Cariatharin. Ex 1. Reg. 7. Ieroboam,

non

non fuit electus, & coronatus in Regem decem tribuum in Syloh, sed in Sychem. Ex 3. Reg. 12. Nec defuit sceptrum à Iudà per Nabuchodonosorem, vel quia iuxta dicta in conclusione, & ad secundum, non fuit sceptrum ablatum à tribu Iudà, adhuc in captiuitate saltim sub natione Iudaica, vel sub Rege, ibi captiuo. Deinde, nam ipsi Hebræi seniores, aut iuniores præmi debét illo vaticinij, *& ipse erit expectatio gentium*, id est dignus, & summè expectabilis, qui suscipiatur, & obediatur ab omnibus: ex Pagnino. *Et ipse saluabit populum à peccatis*, &c. ex Matth. 1. vbi illud *ipse* refert præcedentem, qui non potuit esse vllus illorum, nec Nabuchodonosor, quia nulli conuenit saluatio populi à peccatis. Denique nam ipsi Hebræi, seniores intelligunt prophetiam, de Mesia. Per Syloh significatum. Et fauet paraphrasis Chaldaica, dum pro Syloh ponit Mesiach. משיחא Quo circa Galat. Caiet. & Pagninus in Thesauro sub dictione scil שילה dictio Syloh, indicat filium eius, vt sit fœmenini, & sit idem ac filius fœminæ solius, sine viri congressu, & quasi deriuetur à Syliah, quæ significat matricis saculum, aut receptaculum, in quo concipitur infans. Et ita illud prophetiæ, donec veniat Syloh, intelligebat, donec veniat filius ex sola fœmina conceptus.

Conclusio asserit secundò. Ex *illa prophetia satis sufficienter, probari Mesiæ aduentum, iam peractum.* Et communis. Ratio, nam sceptrum, iam est re ipsa ablatum à Iudà, in tempore Herodis Regis, qui non fuit ex Iudà, sed alienigena Ascalonita ex patre Idumeo, & matre Arabe, vt est adnotatum Matth. 1. dum Christi natiuitas refertur *in diebus Herodis Regis*, intrusi à Romanis sine consensu Iudæorum, aut electione, & ita impletum est prophetiæ tempus, sicut impletas hebdomades Danielis dictum supra, igitur ex illustri loco, satis efficaciter arguitur contra Iudeos, si ipsi acquiescere velent veritati, & non esse auferendum, sed iam ablatum ex Herode alienigena Rege intruso: ergo concluditur, quod iam venit. Nisi velint dicere, non ablatum quoad eius, sed quoad vsum, & exercitiũ, & auferendum, dum veniat, vbi assumitur ratio, quà quidam catholici defendebant successionem continuam, adhuc in captiuitate, & in Machabæis, sed planè decipiuntur, nam vaticinium loquitur, de non auferendo, quoad vtrumque ius, & vsum, videat ipsorum perfidia, an ipsi potiantur vsu regali.

Argui solet ex rationibus dubitandi contra conclusiones. Responderi etiam solet ex solutionibus adhibitis.

(.·.)

AD

AD MORES.

Quòd *regio virtutum apparatu, palmis, & plausu excipi debet aduentus Regis pacifici, & Redemptoris, ne incidatur in aduentum seueri Iudicis.*

Quòd *eminentiæ regalis inter homines splendeat, donec adsit præsentia Regis Regum. Tunc submittenda corona, vt omnis appareat vasallus in præsentia Regis.*

Quòd *optabilis fœlicitas vasallũ constitui Regis, qui vasallos erigit in Reges. Non contra, Reges reddit vasallos tributarios.*

TEXTVS.

Vers. 26. *Et non erit eius populus, qui eum est negaturus.*

AD LITTERAM.

Dub. 7. *An Iudæi essent admissuri Christum, an in ipsum conspiraturi, & male tractaturi? & an Iudæi passuri essent grauia incommoda in mundi finem? & an sint illa mala perpessi ob Messiæ Christicidium?*

Conclusio asserit primò, *Iudæos agnituros minime Messiam ob mentis cœcitatem, & animi perfidiam.* Ita docuit Isaias cap. 1. dicens: *Israel autem me non cognouit, & populus meus non inteliexit.* Cum cognouisset bos possessorẽ suum, & asinus præsæpe Domini sui. Deuter. 5. *Prænaricata est in me domus Iudæ, & domus Israel, negauerunt Dominum, & dixerunt, non est ipse.* Idem cap. 8. *Milvus in cœlo cognouit tempus suum, turtur, hirundo, & cyconia custodierunt tempus aduentus sui, populus autem meus non cognouit, &c.* Oseæ 5. *Non dabunt* cogitationes suas, vt reuertantur, &c. & Dominum non cognouerunt, &c. Isaiæ 6. *Ex cœca cor populi huius, & aures eius aggraua, &c.* Alia videri possunt apud Securim in repertorio cap. 16. Igitur Iudæi non erant agnituri Messiam ob peccata, & idolatriam. Probatur, quòd nec admissuri, sed insurrecturi aduersus. Ex Psal. 2. *Astiterunt, &c. & conuenerunt in vnum aduersus Dominum, & aduersus Christum eius, &c.* Habac. 1. vbi per exaggerationem incredulitas memoratur. *Admiramini, & obstupescite, quia opus factum est in diebus vestris, quod credet nemo, cum narrabitur.* Quo vsus est Apostolus in actis capit. 13. ad improperandam perfidiam circa opus incarnationis, & aduentus Christi. Nec obstat, sic esse legendum, ex originali Hebræo. Quia opus fiet, quod non credetis. Nam ponitur pro præterito futurum, & contra, more prophetico, æquiparando vtriusque certitudinem. Deinde, nec facescit negotium illa vox, *nemo.* Nam a li-

aliqui suorum receperunt, quoniam dicit exaggerationem, & quòd fuerunt pauci, & rari.

Conclusio asserit secundò. *malè, & peruersè se habituros Iudæos, & conspiraturos contra Messiam, & acerbè tractaturos.* Probari potest ex innumeris testimonijs, quæ congerunt expossitores adhuc petitis ex veteri testamento. Vide Galat. lib. 8. à cap. 12. ad 19. Securim ibidem à cap. 12. ad 17. ex quibus selegi sequentia. Primò ex Psalm. 21. vbi latè de Messia. *Videntes me derisserunt me, &c. Circumdederunt me canes multi, Concilium malignantium obsedit me. Foderunt manus meas, & pedes meos, &c. Diuiserunt sibi vestimenta mea, &c.* Consonat illud Psalm. 34. *Et aduersum me lætati sunt &c. Congregata sunt super me flagella, &c. Scissanauerunt me, &c. Frenduerunt super me dentibus suis.* Ex Isaiæ 5. *Vinea facta est &c. Et fecit labruscas.* Hebræi legunt iuxta Galat. *Fecit spinas*, iuxta alluſionem ad coronam de spinis. Idem ex Isaiæ 50. *Corpus meum dedi percutientibus, &c.* Clarius cap. 53. *Non est ei species, neque decor, &c. Et non aperuit os suum.* Zachariæ 13. *Quid sunt plagæ istæ &c.* Denique expræsenti cap. Daniel. *Et in medio hebdomadæ occidetur Christus, &c.* Vsque : *qui esset eum negaturus.* Et licet Iudæi tam aperta contendant obnubilare suis interpretamentis deliris, impugnatur meridiana luce clarius à Burgens. in Scrutinio p. 1. distint. 5. cap. 7. ex glosis Rabinorum. Galat. lib. 8. cap. 12. alijs innumeris.

Conclusio asserit tertiò quòd. *Iudæi passi sunt, & patientur multe mala corporalia, & spiritualia in finem mundi* : Est certissima, & notissima. Probatur prima pars, de calamitatibus, *Ante & post aduentum* Messiæ. *Ante* includit tres præcipuas, prima fuit seruitus Egypti ex Exod. à cap. 1. Secunda captiuitas Babylonica ex Ieremię 25. & 29. & 4. Reg. vltim. Tertia captiuitas sub Antiocho Rege, ex lib. Machabeorum.

Probatur secunda pars de *post aduentum.* Vbi fuit duplex genus malorum. Corporalia sunt bella sub Tito & Vespasian. Vbi fuit enersio Hierusalem. Et à Daniel. cap. 9. prædicitur sub nomine *abominationis*, & exponit S. Lucas cap. 21. *Cum videritis abominationem &c.* Quæ dicta est à Daniele &c. Et explitatius. *Cum videritis circumdari ab exercitu*, &c. Et Christus fleuit super Hierusalem. *Circumdabunt te vallo &c.* An intelligi possit de abominabilibus sacrilegijs intra templum per Iudæorum mores, aut imagines Cæsaris, & aliorum Titi, & Adriani sacri-

crilega adoratione statim. Pro nostra est Augustinus. Epistola 80. ad Hesich. tom. 2. qui sat prò mille, si mille non adessent. Dein de *spiritualium* fuit vnum templi Prophanatio à Pompeio, & Caio illata, alterum absentia illa quinque illustrium in templo Salomonis; ignis de cœlo descendens super sacrificia, Arca Dei cum in ea contentis, in qua solebat apparere inter Cherubinos dans oracula, & responsa prophetis interrogantibus; Rationale quoque iuditij; imo & mira plura, quæ non capit brebitas. His anectenda cessatio legis, sub qua comprehendebantur quinque præcipua: decalogi præcepta moralia, iudicialia, cœremonialia, promissiones pro obseruantibus, comminationes in delinquentes, & sacramenta in remissionem peccatorum instituta, licet antiquata non sit, quoad naturalia decalogi. Colligitur facile ex Isaiæ 2. *De Sion exibit lex, & verbum Domini de Hierusalem.* Vbi pro mulganda in Euangelica. Nec dici potest, loqui de lege noua scribenda in corde carnali, non de cessatione illa scripta in tabulis lapideis. Nam iuxta Ezech. 11. Auferendum erat Iudæis cor lapideum, scilicet assuetum tabulis lapideis, & dandum cor carneum. Quia illius loco danda erat gratia spiritualis iuuans, viuificans, & coniungens homines cum Deo. Vlrerius ablatio sceptri Regalis, sacerdotium, prophetas, iterum non restituenda. Vltimo inter mala spiritualia huiusmodi, quæ acciderunt Iudæis solet numerari mentis cæcitas, cordis perfidia obstinatio inflexibilis, & dispersio inter gentes. De quo erudite Burgēs p. 2. Scrutinij, dist. 6. à c. 3. de triplici cęcitate Iudæorū, & eius causa. De quo Deuter. 28 *Percutiat te Deus cæcitate, & palpes in meridie, sicut solet cæcus in tenebris.* Isaiæ 6. vbi dixit. *Festinant, vt effundant sanguinem innocentem.* Statim. *Palpauimus, sicut cæci parietem, impegimus meridie, quasi in tenebris, &c.* De dispositione inter gentes, quæ reddit vagos, & profugos sede, & regno, de quo Daniel. 9. Isaiæ 25. Ieremiæ 19. vbi sic. *Conteram populum istum*, sicut vas figuli, quod non potest vltra instaurari. Fit apta comparatio. Vas enim in minutissimas, & distantes partes diuissum impossibile est ab vllo figulo in vnum redintegrari. Vltimò prædixit Ezech. cap 7 in irrisionem, & opprobriū tradendos. *Adducam pessimos de gentibus, & possidebunt domos eorum, & sanctuarium, &c.* Quòd impletum, explicant plures, in Sarracenis, Sanctuarium, & loca terræ sanctæ ocupantibus.

Conclusio asserit quartò, *Accidisse Iudæis dicta mala, ob Messiæ repudium, iniurias illatas, & sacrilegum Christicidium.* Ita intrepretes, & olim Samuel, in Epistol. ad Rabi Isaac, cap. 6. & 7. & late Burgens. in 2. p. Scrutinij dist. 6. à cap.

cap. 2. Galat. lib. 4. cap. 24. & Ribera in Proph. ad Oseæ 3. à num. 25. Perer. hic. Rua vt supra, & alij. Probatur primo, ex sacra scriptura Isaiæ 1. *Vè genti peccatrici &c. Semini nequam &c. Dereliquerunt Dominum, blasphemauerunt sanctum Israel.* Messiam, qui per anthonomasiam dictus est sanctus, iustus, &c. Subiungit sceleris pœnam. *Et derelinquetur filia Sion, vt vmbraculum in vinea, tugurium in cucumerario. & sicut ciuitas, quæ vastatur* Psal. 92. *Captabunt in animam iusti, & sanguinem innocentem condemnabunt, &c. In malitia eorum disperdet eos.* Amos 2. *Super tribus sceleribus Israel, & super quatuor non conuertam eum, pro eo quòd vendiderit pro argento iustum, &c.* Id est Messiam, iustus per anthonomasiam. Ac si intellexisset per tria priora, venditionem Ioseph, cui respondet seruitus in Egypto. Vituli, & Idolorum adorationem, cui captiuitas Assyriorum Homicidiũ Prophetarum, cui captiuitas Babylonica. Super his tribus placandum Dominum, & indulgentiam ignoscturum. Super vltimum verò scelus, venditionem Iusti, non inflectendum, aut conuertendum ad veniam. Vt intelligant ob id dispersionem incursos duraturam in finem sæculi. Quod insinuat sceleris grauitatem in indignatione Dei, qui punit citra dignum, non vltra condignum. In deserto puniuit populum ob vituli adorationé, Moysem ne intraret in terram promissam, eius sororẽ lepra, Heli priuatione vitæ, posteros Sacerdotio. Ita Iudæos eiecit ignominiosè è Hierusalem, dispersit in gentes, priuauit sceptro tot mille plus annis, ob scelus hoc sacrilegum. Cum olim Deus promisserit, Dent. 18. *Si legem custodirent, in terra Chanaan conseruaturum, ab inuasione hostium defensurum, & omnibus bonis cumulaturum.* Denique his consonat in præsenti textus Daniel. 9. *Post hebdomades 62. occidetur Christus, & non erit eius populus, &c. qui eum est negaturus.*

Secundò ratione. Nam cum pro mensura delicti sit arbitranda pœna, grauis, leuis, diuturna aut brebitanea, brebis purgatorij, æterna inferni: afflictio in captiuitate Babylonica leuis, 70. annorũ, ista autem post Titum dispersio ignominiosa, ærumnosa, diuturnata ab illo ad plus mille sexcentos annos, imo æuiternatura, vsque in finem sæculi, & sine spe vlla interpellationis, pausæ, reductionis, aut redintegrationis, ad libertatem, & fœlicitatem pristiã: omnino desparata salute, sine inducijs, vt olim per Prophetæ leuamen, aut miraculum solans, vt in alijs præsuris, & captiuitatibus, in quibus Deus curam, & memoriam eorum ostendebat: arguit accidisse, ob sceleris enormitatem, repudium, negationem, venditionem, illusionem, inhumanam crucifixionem, immanem

atrocitatem, & sacrilegam in Christicidio Messiæ; cuius assignari non valet, vlla alia potior causa: vbi fiat flagitij, & suplicij par commensuratio. Vt eruditè discurrit S. Hieronymus tom. 3. in epist. 129. ad Dard. vbi solita eruditione id expendit, & ampliauit. Confirmatur, ex eo quòd Iudæi in alijs præsuris, & calamitatibus habebant apud Reges, & Principes, viros in magno prætio, qui nationis curam gerebant, vt Moysem in Egypto, Danielem in Babylone, Mardochæum apud Assuerum, & Esther. Post Titum ad hæc tempora in ignominiosa dispersione, nil simile auditum est, & si quis alicubi in prætio habitus, potius in sui, & suorum ruinã versum est. Vt eruditè expédit Burgens. ibidem cap. 10.

Argui potest accidisse dicta mala alijs de causis, in exercitium, & probationem patientiæ, incrementa virtutum, vt legitur Sancto Iob, & Tobiæ seniori accidisse. Tobiæ 2. *vt posteris daretur* exemplum patientiæ eius sicut, & Sancti Iob. Vel generaliter ob gentis suæ communia peccata, videlicet odium, quo se inuicem prosequebantur, aut alia in templo cõmissa, aut ob vituli adorationem, aut cuiusdam iusti incogniti venditionem, vt ob Iosephi à fratribus in Ægyptum, non Messiæ. Apud Galatin. lib. 4. cap. 23. Burgens. ibidem cap. 2.

Respondetur accidisse ob scelus dictum, non ob fictas causas. Si non deliquissent, potius bonis ditarentur, iuxta Deuter. 28. *Si audieris vocem Domini, &c. faciet te excelsiorem cunctis gentibus, &c. & venient benedictiones, &c.* quibus carere sunt experti pluribus adhuc annis: quarum vna, *& eris semper supra, & non subter*, nunc sub pedibus vniuersorum calcibus pessundantur, igitur ob peccata, & vitia, non propter patientiæ, & virtutis exercitamentum, & probationem. Igitur potius propter vitia scelestissima dicta æquius est contigisse. Probatio enim virtutis, numquam ita diuturna, & tot sæculis prorogata.

Dubiosum. *Cur non sint puniti brebi periodo in momento. sine ita diuturna, & dilatata pœna?* Conclusio cum Burgensi ibidem. Ita in gratiam Ecclesiæ Christi, vt labenti tempore resipiscerent eorum aliqui, & illi aggregarentur, vel vt delicti atrocissimi grauitas suplicio dilatato indicaretur, & memoria perpetuaretur. Mitis enim est acerbissima pœna subitò, & citò torqueri, quam lento igne consumi. Iuxta Psal. 28. *Dispergе illos* in virtute tua, &c. famen patientur, vt carnes, &c. dispergentur ad manducandum, &c.

AD

AD MORES.

Quòd *sanguine, & patria coniunctis sit debitus cordialis intimus affectus, & inuenitur in eis, non semel sentia, & acerbitas exoriuntans exutiens confugientes, vt ad Asylum.*

Quòd *vis amoris vnitiua inter consanguineos, & eiusdem professionis ali & foueri debet studio. Nam dissidium solet in odium, & discordiam non diariam, sed interminabilem sine fine.*

Quòd *Christicidium adeò sacrilegum, & immane scelus, vt non satis pro meritis puniatur, nisi desertione finali in sua cæca perfidia.*

TEXTVS.

Vers. 26. *Et non erit eius populus, qui eum est negaturus, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 8. *An Iudæi Israelitæ sint aliquando conuertendi ad Christum, & reducendi ad fidem eius saltim in fine mundi? & an omnes, an plures? & an Eliæ prædicatione?*

Conclusio asserit. *In fine mundi tempore Antichristi reducendos, & ita plurimos, vt dici possit omnes, in re tamen non omnes, & in prædicatione Eliæ, & Enoch.* Est communis. Perer. in Daniel lib. 15. cap. 12. Tirinus ad idem. Ribera in proph etas ad Oseæ cap. 3. *in nouissimo dierum*, & alibi. Cum modo, populus olim eius, speciali dilectione, & beneficijs, sit desertus, & repudiatus, vt verificetur illud Oseæ. 1. *Vocate nomen eius non populus meus, & ego non vester Deus.* Dedignatione, non iuris abdicatione.

Primò ex sacra scriptura Daniel. 12. vbi Angelus ad Daniel. *In tempore illo* (scilicet in persecutione Antichristi) *saluabitur populus meus, omnis qui inuentus fuerit in libro.* Expendit Theodor. non omnes, sed qui Eliæ prædicatione digni salute erunt. Et in libro præscientiæ Dei assignati. August. 20. de ciuitat. cap. 15. *Præscientia, quæ fallí non potest liber est vitæ.* Et Angelus Danieli videtur innuere. Nam illud signum vniuersale *omnes, &c.* restringitur adiunctis. *Qui inuentus fuerit in libro vitæ.* Et si omnes essent reducendi, & saluandi Angelus dixisset simpliciter, in illo tempore saluabitur omnis populus. Et id esset lætum nuntium Danieli anxio pro salute suorum. Deinde Oseæ 3. *Quia dies multos sedebunt filij Israel sine lege, & sine Principe, & sine sacri-*

sacrificio, & sine altari, & sine ephod, & sine Theraphim. Et post hæc reuertentur filii Israel, & quærent Dominum Deum suum, & Dauid Regem suum, &c. In nouissimo dierum. Vbi non fit sermo de ipso tempore captiuitatis Babylonicę vbi quidam mentiti, fuisse, *sine templo sine, &c.* Sed de dicto post Christum in fine mundi sequente Antichristo. Quia de illo tempore dicitur, non erit pax, &c. *Sed vndique terrores omnibus habitatoribus terrarum, &c.* quæ apte coherent tempori vniuersalis iuditij. iuxta Lucæ 21. *Cum audieritis prælia*, &c. *surget gens contra gentē*, &c. *& erunt terremotus magni*, &c. Nā licet post captiuitatem fuerint terrores in Iudæis, sed non in omnibus habitatoribus terrarum, imo tunc non pugnabit inter eos ciuitas, contra ciuitatem. Sed permitto. Tum secundò in Babylone, non fuit Israel sine Deo verò, quia coluit verum, licet sine oblatione sacrificiorum. Non fuit sine Rege, & Principe. Quia legitur 4. Reg. vlt. quod Rex Ioachim è carcere regebat suos, permissu Regis Babylonis, & puniebat adhuc capitaliter, iuxta Daniel 13. de senibus Susanæ. Et quòd eductus est de carcere ab Euilmerodach filio Balthasaris *anno primo regni sui*, & posuit in trono, & commedit in conspectu eius. Qui genuit Salathiel, qui Zorobabel, qui Principes totius populi. Vt bene Ribera hic ex Ruperto, iuxta Genes. 49. *Non auferetur sceptrum de Iudà donec*, &c. Non fuit sine Propheta. Nam ibi erat Daniel captiuus, Ezechiel, & viri præstantissimi socij Danielis, & Zorobabel cum alijs. Et non fuit sine Sacerdote, nam fuit Iosedech, & postea filius Iesus. Et non sine lege, nam habebant Moysis. Tum quia in illo tempore 70. annorum, non constant, non fuisse fornicatos, id est exhibitos cultum Idolis, sicut post Christum. Denique, quia non desijt ille populus esse populus Dei, igitur dicta verba aptius conueniunt huic tempori, quam illi, post Christum enim in finem mundi sunt sine lege, quia Moysis, iam non subsistit. Nam lex obligans non est, vt quis viuat iuxta illius præscriptum, & obseruari non potest sine peccato, quoad cæremonialia, legalia, &c. Tum 4. quia Zorobabeli, non conuenit appellatio Dauid Regis quæsiti, sed aptè Christo dicto tempore ab eis quæsito. Nam vnus homo, non solet appellari nomine capitis, aut authoris, sed collectio vnius gentis. Vt Israel omnis populus, Iuda vniuersa tribus. Et Christus appellari potest aptè Dauid, non quia oriundus ex illo secundum carnem. Nam hac ratione etiam Salomon, Roboam,

Abra-

Abraham, Isaac, Iacob, & alij posteri Dauid dicerentur, sed quia sæpè Scriptura tribuit nomen figuræ figurato, & hic Christus, Dauid, Salomon, &c. quia per illos figuratus. Et dato quòd Zorobabel possit dici Dauid, non potuit dici Rex. *Regem suum.* Nam licet dici posset dux Iudà. quia iuxta Agæi 1. eduxit populum. Rex appellatus est nunquã, nec valuit, nam Ieremiæ 22. est vaticinium. *Nec erit de semine eius.* Scilicet Regis Ioachim, cuius fuit nepos, qui sedeat super solium Dauid, quidquid de sterilitate physica iuxta dicta. Et tandem quia vim non habet, quod in eodem loco dicatur. *Dilige, &c. adulteram sicut Deus diligit filios Israel, & ipsi respiciant Deos alienos.* Quod referri debet, ad tempus captiuitatis, non ad post Christum, in quo non adorarunt idola. Nam Dei est duplex dilectio erga illos. Prima, erga illas dolentes. Secunda, erga occidentes Christum discredentes, negantes, repugnantes. Hac secunda diligit, dum dicit ei. *Dies multos expectabis me.* Editur prophetia de discursu, & interuallo temporum post passionem ad finem mundi, & in tempus captiuitatis septuagenariæ, non possunt cadere verba supereſt ergo illud *in nouissimo dierum.* Loqui vaticinium de periodo in finem mundi, in quo prædicitur conuersio.

Probatur prior, & altera, scilicet, futuram conuersionem tempore, quo grassatur crudelitas Antichristi, tum ex dictis, tum ex Rom. 11. *Nolo autem vos fratres ignorare Mysterium, &c. quia cœcitas ex parte contigit in Israel, donec intraret plenitudo gentium, & sic omnis Israel saluus erit.* Sed post plenitudinem non fluxere plus anni ad conuersionem in aduentum Antichristi, & in finem sæculi. Nam iuxta Hypolitum Maryrem oratione de consumatione sæculi, & Damascen. 4. de fide cap. 27. ad Ioan. 5. *Ego veni, & non accipistis me, si alius, venerit in nomine meo illum accipietis.* Antechristum excipiendum, & salutandum, vt Regem à Iudeis, & sesurum in veteri templo Iudaico, non in catholico. Et hoc quia, charitatem veritatis non receperunt, iuxta Apostolum 2. Thesal. 2. vbi tunc mittendus est Elias, & Enoch, ad quorum prædicationem conuersio, iuxta Malach. 4. *Ecce ego mittam vobis*, Eliam Prophetam, antequam veniat dies Domini magnus, & horribilis, & conuertet cor patrum ad filios, & cor filiorum ad Patres eorum. Matthæi 27. *Elias venturus est*, & restituet omnia. Apocalyp. 11. *Dabo duobus testibus meis*, & prophetabunt, &c. Sed hi duo interficiendi sunt ab Antichristo iuxta Apocalyp.

11. colligitur, ergò conuersionem Iudæorum futuram in tempore Antichristi, quia illi non sunt prædicaturi nisi 1260. diebus, qui simul iuncti conficiunt tres annos cum dimidio. Ex Apocalyp. 11. vt tantundem regnaturus sit Antichristus, ex Danieli 2. Vbi constat, quòd sit coniuncta conuersio fini mundi, & Deum venturum ad iudicandum à morte Antichristi 45. die, docet Hieronymus ad Daniel 12. *Beatus qui expectat, &c.*

Probatur altera pars. Quòd *sint conuertendi, ita plurimi, vt dici possit omnes, non tamen omnes re vera.* Constat ex dicto supra Daniel 12. ubi dicit: *Saluandos* (non omnes absolute) *sed cum limitatione, qui scripti sunt in libro vitæ.* Vbi vniuersalis illa omnis restringitur more Scripturæ, per illam qui scripti sunt, vbi inueniendi non omnes, sed aliqui, in quo scribi, aut deleri dicuntur iuxta Augusti. sermone 2. in Psalm. 68. secundùm opera illorum. Nam præscientia Dei est inuariabilis, & in illa semel scripti non deleantur, aut iuxta Sanctum Thomam 1. part. quæst. 24. art. 3. scribi, aut deleri simpliciter, secundùm decretum diuinum, aut secundùm quid secundùm præsentem statum, aut præsentem iustitiam, seu iniusticiam. Et in libro Ezech. *Intus, & foris*, intus æternaliter, foris temporaliter in gratia. Secundò ex PP. Theodoret. ad istum locum Daniel. *Non omnes, sed qui scripti sunt saluandos.* Gregor. homil. 12. in Ezech. *Non omnes, sed qui Eliæ prædicatione permissi, alios in stagnum ignis, qui consentient Antichristo.* Iuxta Apocalyp. 20. Accedit Oecumen. ad illud Rom. 11. *Donec intraret plenitudo gentium.* Sicut non intrauerunt omnes ex omnibus gentibus, sed maior pars, *ita non omnes Iudæi, sed fere omnes saluabuntur.* Theophil. ad idem, *saluus erit, qui crediderit*, non qui non.

Probatur vltima pars, quòd *fiet conuersio prædicatione Eliæ, & Enoch.* ex dictis PP. quibus addit Antesignanus Augustin. 20. de ciuitate cap. 29. *Per Eliam expositâ sibi lege vltimo tempore ante iudicium Iudæos in Christum verum esse credituros, celeberrimum est in sermone, cordibusque fidelium*, etiam Theoretus, & Gregorius proximè citati, & plurimi ad dicta loca.

Arguitur primò pro sententia, quæ *asserit, omnes esse conuertendos.* Primò ex locis Scripturæ. Daniel 12. *In illo tempore saluabitur omnis populus, &c. qui scriptus est in libro vitæ.* Matthæi 17. *Elias quidem veniet, & restituet omnia.* Apostolus ad Roman. 11. *Cum intrauerit plenitudo*

do

do gentium, tunc omnis Israel salvus erit, & citat ad id probandum illud Isaiæ 59. *Veniet ex Sion, qui eripiet, & auertit impietatem Iacob.* Accedit Chrisostom. ad illa Apostoli ibidem expendit. *Non dixit quanto magis correptio ipsorum, sed plenitudo*, id est vniuersi.

Respondetur cum Pererio ibidem, quòd sit mos in vsitato modo loquendi humano, & sacræ Scripturæ, loquutio & sententiâ generalis, quæ verificatur solùm in pluribus, nec exigit omnes. Nam quod in genere, aut serie aliquæ rerum est in multitudine plurima, solet dici omne, signo vniuersali, & generi tribui, quod est in pluribus partibus inferiorum. Et ita intelligendum in prælegatis, vbi sumitur particula *omnis*, pro multitudine plurium, & propter multitudinem numerosam enuntiatur omnis Israel, omnis populus conuersus, & signum illud vniuersale omnis restringitur, & coarctatur adiuncto. *Qui scriptus fuerit*, &c. & ita conficitur sensus. Quod veniet ex Sion, qui eripiat, & auertat captiuitatem Iacob, quòd veniet Messias descendens ex Iacob secundum carnem, à quo conuersio nationis Iudaicæ, & ablatio peccatorum. Et non debet referri ad prædicationem Christi, & Apostolorum, quia in illa non sunt conuertendi omnes, cum videamus tot in sua cœcitate, & perfidia permansuros, sed ad finem mundi, quia cum tunc non sit impletum vaticinium, sequitur in fine sęculi complendum. Ad illud ex Chrisost. solùm intendit loqui de plenitudine, & numerositate gentilium, nec parificanda in Iudæis.

AD MORES.

Quòd *non sit ita abominabilis in Iudæis perfidia directa, cœca, & obstinata, ac infidelitas reflexa, quæ reddit certos se habere fidem Inceam, & oculatam in expectatione Messiæ.*

Quòd *Iudæi possunt inducere confusionem, & pudorem Christianis, quòd ipsi sint magis viuidi, & tenaces in sua perfidia, quàm ipsi in sua solida, & firma fide.*

Quòd *infidelitas præsertim Iudaica est ab initio ægritudo tabifica, & lethalis, à qua vix vnus, aut alter ad fidem veram, aut pristinam reuocatur.*

TEXTVS.

Vers. 27. *Et erit in templo abominatio desolationis, & vsque ad consummationem, & finem perseuerabit desolatio.*

AD LITTERAM.

Dub. 9. & vlt. *Quid sit abominatio desolationis stans in loco sacro, in templo, prænuntiata ab Angelo Danieli?*

RAtio *dubitandi*, ab ipsa rei difficultate sumit incrementum, nam illa propositа à Christo Matth. 24. subiungit sic: *Qui legit intelligat.* Secundò à diuersitate, & varietate opinionum. Nam primò *quidam* ex Irænео lib. 4. aduersus hæreses. Intelligunt, & explicant, de Antichristo, sedente in templo, & faciente se adorari, vt Deum, & Messiam, qui meritò dicitur abominatio, quoniam ista sacrilega adoratio à Deo detracta, sibi arrogata, & enormia scelera eiusdem, & turpissima verè sunt abominabilia. Dicitur verò desolationis, quia sacrum cultum templi euertet, prophanabit, desolabit, & perseuerabit in templo (vt in Castro) vsque ad cœdes, & strages, etiam suorum Iudæorum, vt desolati penitus videantur.

Displicet, nam licet non distet multum ab scopo, non integrè attingit, vt constabit. Deinde ab alijs impugnatur, quia ex antecedentibus, & consequentibus liquet. Referri ad abominandum scelus in christicidio, in cuius punitionem, & vindictam, Iudæi desolandi cum vrbe, & templo in finem.

Alij intelligi de abominando idolo in templo colocato ab Antiocho Epiphane, Iosephus lib. 12. antiquit. cui in ara offerri victimas porcinas à religione Iudæorum alienas cogebat, & prophanari templum, Deo dicatum, & inscribi titulo idoli, Iouis, Olimpij. Idolum autem more scripturæ dicitur *abominatio*. Cui consonare videtur illud 1. Macab. c. 1. Vbi de Antiocho, quòd super altare Dei ædificauit idolum abominationis.

Displicet primò, nam idolo Antiochi nequeunt applicari verba. Primò, nam prænuntiatio est de cęde Christi, & calamitatibus inferendis ob illam ab exactis 70. hebdomadibus. Secundò, nam illud Idolũ Antiochi non fuit abominatio, diutius duratura vltra tres annos, vt ista in finem, vt indicauit Christus Matth. 24. illam abominationẽ de qua sermo, post sua tempora futuram. *Cum videritis abominationem desolationis, quæ dicta est à Daniele, &c.* Positam in loco sacro, *Tunc qui in iudæa est, &c.*

Dein-

deinde temporis adiungit signa, *Erit tribulatio, qualis non fuit, &c. vsque ad tempus illud. Sol obscurabitur*, &c. quæ sunt signa prænuntiata à Christo iudeis. Et solùm temporibus Antichisti congruunt. Quidquid de vno aut alio.

Alij intelligunt de imagine, & statua imperatorum gentilium, posita intra templum, & vrbem sanctam (& ob id dicitur stans in loco sacro) à victoribꝰ ibi cõstituta. Hieronim. in Math. intelligi de Antiocho, imagine Cæsaris à Pilato posita, aut statua Adriani, quę iuxta scripturam appellatur abominatio. Theodoretus hic, intelligi de imagine Cœsaris nocte à Pilato illata, cum esset legibus interdictum. Theophilact. & Eutym. ad Math. 24. intelligunt de imagine Titi imperatoris, posita in aditu templi; post expugnatam ciuitatem.

Displicet aliquibus primò quia Christus loquitur non de præterita abominatione, sed futura. Illam præterijsse de Cęsare constat ex Iosepho præcitato. Secundò; nam idem libro 18. de antiquit. cap. 4. Imaginem Cęsaris, non permansisse ibi, sed contradictione Iudęorum eductam iussu Pilati, incitati de tanto studio Iudaico legis. Illud de Titi, & Adriani fidem non habet, nec Iosephus, qui interfuit expugnationi, quidquam memorat, in lib. 7. de Bello Iudaico.

Alij intelligunt de oblatione sacrificiorum, & cœremoniarum, sacrilega, abominabili; & detestabili, post mortẽ Saluatoris. Catherin. hic. Erit abominabilis desolatio, ipsa sacrificiorum oblatio erit sacrilega, & detestabilis Deo in templo, post Euangelij promulgationem.

Displicet quia id esse adominabile paucis Iudęorum erat notũ, imo paucis Christianorum. Secundò; nam abominatio posita est in signum imminentis calamitatis, desolationis, exilij Iudęorum. Cum à morte Christi in euersionem Hierusalem fluxerint 40. anni igitur referri debet ad aliud.

Alij ex Abulens. ad 24. Math. Iansenio. Helesio, Baronio, & alijs, intelligunt de abominando, & execrando scelere flagitiorum, cædum, & rapinarum intra templum à Iudæis, qui se Zelotas nuncupabant, cum essent facinorosi: in templo, vt in castro grassantes, & trucidantes suos, sub zelo legis & Patriæ, ipso tempore obsessionis à Romanis. Prius sub Celestio præside, deinde sub Vespasiano, & Tito. De quibus Iosephus ibidem lib. 2. cap. 28. *In Zelotes viget omne genus iniustitiæ, omne malitiæ facinus æmulati, sunt nullo prætermisso.* Et lib. 6. cap. 16. adiecit. *Commisisse ea sacrilegia, quòd si Romani euersores tardassent, ciuitatem cũ illis hiatu terræ deglutiendam, aut igne cæli sicut Sodoma deuorandam.*

Displicet aliquibus. Nam licet dici possent dicta nefaria Zelotarum

rum abominatio, aptari non posſe nomẽ de ſolationis dicũt. Nã ab illis nõ inducta eſt euerſio templi, & vrbis, ſed à Romanis. Secundò; nam poſt mortem Chriſti non fuit amplius templum ſanctum, quòd prophanari poſſet ita, aut expiari illo ſuplitio. Et Romani non ob id, ſed ob rebellationem illos affligebant, ſed id accidebat ob inhumanam, & atrocem occiſionem Chriſti: iuxta Lucæ. 19. *Fleuit ſuper illam* (Hieruſalem) *dicens, &c. Quia venient dies in te, & circundabunt te inimici tui vallo, & non relinquent lapidem, ſuper lapidem, eo quòd non cognoueris tempus viſitationis tuæ.*

Alij Origen. Auguſt. Caiet. Salmer. Perer. Suar. & alij apud Tirin hic dicunt: per abominationem intelligi exercitum Romanorum obſidentium Hieruſalem, quòd dicitur abominatio, eo quòd abominabili claſſe gentilium conſtabat. Qui colebant, & adorabant idola, à Iudæis abominata, & execrata; de ſolationis verò, quia deſolauit, & euertit, templum & Vrbem. Primò ex Lucæ 21. vbi illud Math. 24. *Cum videritis abominationem deſolationis*, dum ſcripſit poſt illum, redijt explicatius in hæc: *Cum videritis circundari ab exercitu Hieruſalem, Tunc qui in Iudæa ſunt fugiant ad montes.* Obſeſis ſera eſſet fuga, non alijs in alijs non obſeſſis, aut nõ vaſtatis ciuitatibus in Iudæa. Et ita idem eſt apud Mathæum, & Lucam abominatio deſolationis, & exercitus circundans Hieruſalem: imo & ex ipſa ſerie narrationis. Secundò, quia Deus permiſsit ſcelera Zelotarum, homidij, rapinarum, &c. Ob immane, & ſacrilegum Chriſticidium, imo, & inuaſionem & deſolationem Hieruſalem à Romanis, iugulantibus Iudæos, inſtar pecorum. Quo circa Pererius diſtinguit duplicem obſidionem Hieruſalem, primam à Ceſtio præſide Syriæ, quæ fuit brebiſima. Et non expugnauit interiorem partem ciuitatis, ſed exteriorem, ſoluit, & fugit, inſequentibus Indæis, cum magno illius excidio: ſecunda à Tito imperatore. Et loqui Lucam de vltima probat, ex excidio templi, vrbis, & Iudęorum, in ore gladij iugulatorum, fugatorum, & diſperſorum in omnes gentes, quæ in obſidionem Ceſtij non cadunt, bene in Titi imperatoris.

Alij, Tirinus, Cornelius à lapide, intelligunt ſimul de vtroque. Vt abominatio ſit exercitus Romanorum, & prophanatio tẽpli Zelotarum, qui in templo, vt in caſtro, ſub Zelo Patriæ, & legis, adhuc in ſuos graſſabantur, rapinis, & cędibus. In pœnam forte occiſionis Chriſti: Ratio illorum; nam fuit abomi-

na-

nabile vtrumque scelus, præcipue Romanorum ob idola, imagines, Iouis, Palladis, Martis, & aliorum, in vexillis pictas, & in templo, vt trophea inductas. Et Solidant ex Iosepho inspectore oculato, lib. 2. de Bello cap. 25. & 5. cap. 2. & 7. cap. 13. Qui adiunxit: *fuisse sermonem vulgarem inter Iudæos, capiendam, & expugnandam vrbem, cum Iudæi propriis manibus templum Dei violassent, & plurimos nobiles ominasse Iudæis post obsidionem Cestij imminere extremam aliam cladem.*

Displicet ex parte, non enim rem integram attigit, nisi includat alia. Vt constabit ex solidiori fundamento nostræ conclusionis.

Conclusio asserit, *comprehendi vaticinio Danielis sub nomine abominationis desolationis, simul calamitatem Iudæorum, sub exercitu Romano um, & calamitatem Christianorum, sub Antichristo. Siue prior abominatio sit typus secundæ, & prior sit exercitus Romanorum obsidens, & prophanans templum dicto modo, suis vexillis cum imaginibus idolorum quæ de more scripturæ dicuntur abominatio indecens in pœnam Christicidij: & secunda sit Antichristus sedens in templo vt in solio maiestatis, & faciens se adorari, vt Deus, & vt Messias, ab illo in vniuersum orbem. sibi arrogans, & vsurpans sacrum cultum, & prophanans ingluuie flagitiorum: siue prior & posterior nomine abominationis simul immediate significentur, & præuntientur.* Quòd mihi non opus, satis primum, vt eodem verbo vtrumque à Deo dicatur per os prophetæ, & illa dicatur de solationis cultus Dei, templi eius, nunquam reparati, licet plures tentauerint copijs recuperare Hierosolimam; ista verò vniuersi orbis desolãdi in finẽ mundi, sine reparatione vlteriori. Ita nobilissimi pro priori parte præcitati, pro vltima opinione, pro secunda Epiphanius, & alij citati pro prima apud Tirinum hic. Ratio pro singulis peti potest ex dictis, in prima, & vltima opinione, quæ illas sigillatim, & non frigidè probant. Ego verò ita de vtraque simul, sic probo. Nam constat idem esse dictum à propheta Daniele, & relatum ab Euangelista Matheo; vt vtriusque sit idem scopus, idem adæquatum obiectum, & amplectitur vnam abominationem desolationis integram, vel duas sigillatim immediate, aut mediate, in priori, vt in typo secundam. Ita vt sit dicta re ipsa vtraque; quod facile quidam admittunt apud Tirinum ibidem, nescio, an illa vox, vt *in typo* accipiatur rigorosse,

an latius prō ācomodatiōne, aut applicatione. Sed à Matheo simul refertur vtrumque. De abominatione, quæ sit exercitus obsidens Romanorum, iuxta dicta liquet. Nam constat idem esse apud Matheum cap. 24. *Abominationem desolationis stantem, &c.* Et apud Lucā *exercitum circumdantem Hierusalē.* Nam quod ille inuolutè scripsit, *Cum videritis abominationem.* Lucas posteà scribens expressit cap. 21. *Cum videritis circundari, &c.* De abominatione, quæ sit Antichristus constat. Nam simultate verborum contexuit historiam, ex antecedentibus, & consequentibus, quæ identitatem rei signant; idē tempus, & circunstantias. Et adiūxit latius per particulas, quæ simultatem rei, & temporum designant. Vix retulit *Cum videritis abominationem, &c.* Cum subiungit. *Tunc qui in Iudæa est, &c. Tunc si quis dixerit, hic est Christus, &c.* Notiones autem *tunc* simultatem temporum designant. Vbi manifestè loqui de Antichristo, probat textus, & signa illius, & illorum temporum, quæ nec aptè cadunt in alia, nec possunt; intentū non indigitare. Nā subiungit. *Statim post tribulationem dierum Sol obscurabitur, &c.* Et alias notas tēporibus Antichristi speciales, apud probatæ fidei authores, & sacram scripturam. Apud Iræneum ibi dem. Quòd *Antichristus in templo Hierosolimitano in solio Throno sit sessurus,* & imperaturus se adorari, ibi & in vniuerso orbe, vt Deus, & Messias, sibi arrogans abominabiliter Dei cultum. Apud Math. ibi dem. Primo quòd, *erit tunc tribulatio, magna, qualis non fuit ab initio mundi,* neque fiet, ne illa maior obsidionis Romanorum. Secundo, quòd *nisi abbrebiati fuissent dies illi;* id est decretati pauci *non fieret salua omnis caro, sed ita propter electos.* Gratia liberandi à periculo seductionis imminentis, ex signis, & prodigijs mendacibus Antichristi, & apud Math. 24. *In errorem inducantur (si fieri posset) etiam electi:* Tertiò illæ præcautiones. *Si quis dixerit hic est Christus, aut illic, nolite credere.* Quartò *statim* (id est nō multò post) *tribulationem Antichristi,* in priori ad vniuerfalem omniū resurrectionem. *Sol obscurabitur, & luna non dabit lumen suum, &c.* Quintò *Tunc apparebit signum filij hominis in cœlo.* Id est insigne crucis Christi. Sextò *Tunc videbūt filium hominis, venientem* in nubibus &c. Quòd intelligi debet, non de aduētu ad saluandū, sed de aduentu ad iudicandum. Sextò, & vltimo. *Et mittet Angelos cum tuba, & voce magna,* resonante intellectualiter. *Surgite mortui venite ad iuditiū. Et congregabunt electos eius &c.* Si ergo idem prædictum à Prophetā, & relatum ab Euangelista: & Euangelista comprehendit vtrūque, verisimile videtur, Prophetam Danielem sub nomine *abomina-*

nationis vaticinasse de vtroque. Nã retulit *abominationem desolationis, quæ dicta fuit à Daniele propheta.* Nam subiunxit de Antichristo, de tempore illius, cum illis notis specialibus, quæ solùm cadunt in ipsum, & patet ex paritate. Nam sicut *abominatio* illa templi per Zelotas, & occisio per Iudæos, induxit obsidionem, & euersionem templi, & vrbis per Romanos, irreparabilem perpetuo: ita *abominatio* illa templi per Antichristi sacrilegia, inducet euersionem totius mundi; vnquam iterum reparandam. Igne enim orbis cõflagrandus, non restituetur vnquam in pristinum statum. Quo circa aduertit erudite Tirinus hic, quòd dicta desolatio templi, & vrbis, sit duratura infinem mundi. Quoniam plures, tam Iudei, quam alij, qui conati sunt instaurare, impediti sunt prodigio Cœlesti, vt sit vrbs sub anathemate perpetuo. Et astruit ex PP. Rufino, Chrisostomo, & alijs. Nam non in eodem loco sita est, quæ nũc extat. Licet sit ab Antichristo instaurandum ex parte templũ & vrbs. Qua autem ratione dicta est à Daniele propheta *abominatio* relata ab Euangelistis de exercitu Romanorum, & Antichristo? An immediate vtraque? An in priori vt typo, & figura posterior? Sat mihi à spiritu sãcto per prophetam in illa, vt typo, & figura. Sicut & alia iuxta Euangelistarum loquutiones, *Vt impleretur, quòd dictum est per prophetã Ex Egypto vocaui, &c.* Et similes. Dici autem in typo, & in figura sufficit ad verificationem, præsertim in nostra sententia, asserente sensum mysticum huiusmodi esse intentum, & de mente spiritus sancti, & aliquãdo (licet non immediatius) principalius. Iuxta dicta in lectura de Arte, & methodo disp. 9. dub. 2. 8. & 16.

Responderi debet ad oppositta, nil vrgere, quòd non sit satis impugnatum. Ad penultimum & vltimum ex parte nobiscum consentire, nec excludere adiunctam partem, à nobis probatam.

ADMORES.

Quòd *maximo cultu, & reuerentia, debent venerari loca, & templa Deo sacra, quoniam assistit in illis specialiter præsentia Dei.*

Quòd *sola præsentia Dei sat ad felicitandum templum, & vrbem, & absentia ad infelicitandum.*

Quòd *qui dicat Deo sacellum sacrum, obstingit ad indulgenda magna beneficia, & qui prophanat ad infligenda acerba suplicia.*

Quòd *templi prophanatores maximè timere debent, ne ab illo citentur ad iuditium: sicut deboti cultores sperare, à terrestri in celeste glorioſſimum transferendos.*

FINIS.

AD GLORIAM DEI,
& Deiparæ.

SVB CORRECTIONE
Sanctæ Matris
Ecclesiæ.



LECTVRA DE CHRISTO ADORATO A REGIBVS

PER

F. MAG. Fr. DIDACVM DE BENAVIDES
Madridenſem, Ordinis Carmelitarum,
Prouincia Caſtellæ.
IN ACADEMIA COMPLVTENSI,
Sacræ Scripturæ, Publicum, Primarium
Interpretem.

AD CAP. II. MATHÆI.

Cum natus eſſet Ieſus in Bethleem Iuda, in diebus Herodis, &c.

SINOPSIS CAPITIS.

EVangeliſta deſcribit, primo vocationem Magorũ per ſtellam, & aduentum eorum in Hieruſalem, 2. Hedodis cum ciuitate turbationem 3. Chriſti Domini infantis adorationẽ, & oblationem regalem munerum, & regreſſum in Magorum regna.

TEXTVS.

Verſ. 1. *Cũ ergo natꝰ eſſet Ieſus, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 1. *Quare hic Euangeliſta in initio hiſtoriæ fecit mẽtionẽ Chriſti nati, loci temporis, & Regis?*

COncluſio aſſerit, quòd *ad firmandam fidem hiſtoriæ.* Ita inter pretes Mald. Cornel. à lapide, & noſter Sylueira hic tom. 1. & alij. Primo ex PP. Remigius expendit illa dicta poni ab Euangeliſta ad conciliandam fidem hiſtorię. Nomẽ pueri, *cum natus eſſet Ieſus*, nomen loci, *Bethleem Iuda*, nomẽ Regis, & temporibus *in diebus Herodis Regis*. Secundô, nam id eſt in vſu, & more hiſtoriographi, tam ſacri quam prophani. Daniel 1. *anno* 3. *Regis Ioachin* 7. anno 1. Balthaſaris Regis. Matth. 15. imperij Tiberij Regis, vel Cæſaris.

ADMORES.

Quòd *mendax vigilet de inconſequentia ne in mẽdatio cõprehendatur*

Quòd

Quòd *res magni ponderis, & momenti non est suscipienda cecè, & imprudenter, sed ex causis, & motiuis credibilitatis, vt historiæ istius mira, & rara.*

Applicatio fieri debet Euangelijs, quibus congruunt moralia assumpta, facile cuique, vel leuiter experto in decantatis ab Ecclesia. Ideo in cęteris clausulis indigita bode more moralia. Tu applica varijs, & diuersis quib⁹ consonāt. Exēpli gratia Euāgelijs, in quibus agitur de veritate in dictis, & factis Marci 12. Vbi de tributo reddēdo Cęsari ex imagine illius redarguit Christus tētātes, exarata in numismate, & circūstātijs Math. 22. similiter Pharisæos de diuinitate inscios. *Si Dauid vocat Christum Dominum, quomodo filius eius est?* & Math. 24. redarguit diaboli allegata ad præcipitium ex scriptura mentito, scriptura inveritate exposita. Cuiq; facilis similis applicatio instituto nostro, & breuitati molesta. Moralia tamē indigitabim⁹ in tui vtilitatē, & obsequium. In fine in indicem moralium adiungemus, quem dedi extra horā, cum ampliationibus,

TEXTVS.

Vers. 1. *In Bethleem, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 2. *Cur dicitur natus in Bethleem potius quam alibi, vt in Roma Domina orbis?*

Conclusio asserit, *Ita dici non sine causa rationabili, sed pluribus congruentijs.* Primò, vt Micheę vaticinium cap. 5. diceretur impletum, *& tu Bethleem Ephrata, &c. Exte enim exiet, &c.* Secūdo ex S. Th. 3. p. q. 15. art. 3. quia conuenientius natus est in Bethleem, quia in eo oppidulo natus fuit Dauid 1. Reg. 17. Cui facta fuit promissio de aduentu, & filiatione Christi, & ostenderetur impleta ipso loco natiuitatis. Cōfirmatur, nam oportebat, quòd vbi erat radix Iesse ibi nasceretur flos scilicet Christus, & facile probaretur Christum fuisse filium Dauid, & successorem in sede regni. Tertiò vt ex loco natalis conuincerentur Principes, & scribæ iam fuisse natum Messiam. Et ita cum Maria, & Ioseph haberent alibi domicilium in Nazareth, veniunt in Bethleem, vt *Edicto ab Augusto de scribendo vniuerso orbe* præstarent obedientiam, & ibi cōtigit fęlicissimus partus. Vltimo, nam si elegisset Romā, caput mundi, opulentissimam ciuitatem posset credi fuisse filium imperatoris, & potentia subdidisse fideles. Et ita vt diuinitatis virtutem celaret, vt suo tempore manifestaret, elegit parentes, & patriam pauperculā, Apostolos imperitos, & impotentes: iuxta Apostolum 1. Corint. 1. *Infirma mũdi elegit Deus, vt confundat fortia,* & inde deriuaretur fides suauitate, & efficacia gratiæ in vniuersum orbem.

AD

AD MORES.

Quòd *fidelis promissio exigit implctionem, vt ex concordia inter vtrũque fiducia conciliatur.*

Quòd *diuina omnipotentia mira, & egregia operatur per instrumenta debilia, & inutilia, vt sibi facinoris arroget gloriam.*

TEXTVS.

Vers. 1. *In Bethleem, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 3. *Quanam Bethleem in qua natus est Christus? & an legi debeat Bethleem Iudà? An Iudæ, vel Iudææ per duo ee.*

CONclusio asserit primò, quòd *illa Bethleem in qua natus est Christus sit, quæ sita est in tribu Iudà aliàs Ephrata, non in tribu Zabulon,* iuxta Iosuæ 19. Ratio, nam intendit Euangelista distinguere, & separare sub Iudæa, illam in qua natus est Christus ab illa, quæ sita erat in Galilæa in tribu Zabulon, de qua agitur loco Iosue præcitato sub terra Iudeæ comprehensas, & non separaret, nisi designaret adiuncta differentia Iudà Nã Iudæa complectitur vtramque terram, & ita opportuit distingui, & designari, licet terræ essent distinctæ, & distantes situatione, vbi illud nomen Bethleem erat commune vtrique.

Conclusio asserit secundò, quòd *legi debet Iudà, non Iudæ, nec Iudeæ per duo ee.* Ita Cornel. Gisslandus, noster Sylueira, & alij ibidem. Ratio nam legi debet cum Romanis, & Græcis, qui ita legunt. Secundò, nam vox Iudà designat Bethleem, quæsita erat in tribu Iudà, & distingui debebat ab alia, quæ sub Iudæa erat sita in tribu Zabulon, terra autem Iudeę complectitur vtramque, & non esset distinctio si diceretur Iude, aut Iudeæ, sed Iuda. Post Schisma enim decem tribuum, quæ crearunt Regem Ierobam, & tribui Iudę adhæsit tribus Benjamin fuit ex vtraque vnum regnũ, in quo regnauit Roboam, & posteri, vsque ad captiuitatem Babylonicam, quod dictum est regnum Iudà.

AD MORES.

Quòd *in Ecclesia vna, & eadem, habitant boni, & mali, reprobi & prædestinati, & distingui, & separandi boni, à noxia communicatione malorum.*

Quòd *in iuditio vniuersali Iudicis sententia separandi sunt reprobi in ignem æternum, prædestinati in vitam æternam.*

TEXTVS.

Vers. 1. *In diebus Herodis Regis &c.*

AD

AD LITTERAM

Dub. 4. *Quis fuerit iste Herodes? cur dicitur Regis? & cur fiat mentio de alienigena?*

CONclusio asserit primò, quòd *Hic fuit ille Herodes, qui appellatus est magnus, cognomento Ascalonita, filius Antipatris, natione Idumæus, quem Senatus populusq; Romanus euexit in titulum Regis, post subiectos Iudæos, & occissum Antipatrem parentem, sub Antonio Senatus Consulto. Non verò fuit ille, qui decollauit Baptistam, & iussit illudi Christum, nec ille, qui iussit occidi Iacobum fratrem Ioannis gladio, Actor.* 12. Ratio nam tres solent memorari Herodes, primus Ascalonita, secundus Antipa, tertius Agrippa; & hi tres: pater, filius, & nepos, sub 1. scilicet Ascalonita nascitur Christus, & fit infanticidium innocentium, & isto Herode defuncto fit regressus Christi ab Egypto. Sub 2. decollatur Baptista, & illuditur Christus Lucæ 23. Matth. 14. Sub 3. denique occiditur Iacobus gladio Actor. 12. ex quo originatus est ille versus: Ascalonita necat pueros, Antipa Ioannem. Agrippa Iacobum, claudens in carcere Petrum.

Conclusio asserit secundò, quòd *dicitur Herodis Regis ad distinctionem alterius, qui non fuit Rex, sed Tetrarcha Galilææ.* Ratio ex dictis, nam Antipatris filius Ascalonita, & nepos illius, ex filio Aristobulo dicuntur expressè Reges, non verò Antipa. De Ascalonita in presenti. *Herodis Regis.* De Agrippa actor. 12. *misit Herodes Rex* manus, &c. de Antipa verò nullibi dicitur, quòd esset Rex solùm iudex, qui in tribunali damnauit Christum.

Conclusio asserit tertiò, quòd *fecit mentionem Euangelista de Herode Rege alienigena, non sine mysterio, & rationabili causa.* Primò, vt diceret, iam esse sceptrum translatum à Iudâ in alienigenam, ac proinde venisse iam Messiã, quod insignum aduentus eius erat prædictum. Genes. 49. vers. 10. *Non auferetur sceptrum de Iudâ, nec dux de femore eius, donec veniat, qui mittendus est*, iuxta Chrisostomum Theophi. & alios. Apud Cornel. & Syluei. Quo circa aduertit Cornelius ex Iosepho 15. antiquitatum cap. 14. & 20. cap. 8. quòd Herodes audiens illud oraculum, sibi illud adaptauit, vt se Regem stabiliret Iudæorum, & firmaret, sibi Regnum, & ideo ædificauit Iudæis singulari munificentia amplissimum templum, & dedicauit illud suo natalitio, & aniuersario Regni.

AD MORES.

Quòd *Deus habet in memoria Reges, etiam perditissimos dando auxilia ad salutem.*

Quòd

Quòd *Deus vult superiores adhuc improbos suis titulis honorificis dignitatis pertractari.*

Quòd *Deus immutat superimpletionem promissionum, præsertim de adventu Messiæ, ad convincendam perfidiam Iudæorum.*

TEXTVS.

Vers. 1. *Ecce Magi ab oriente venerunt Hierosolimam, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 5. *Quid demonstret illa particula demonstrativa ecce? & qua ratione possit apte aduentum Magorũ? & an adorauerint 13. die post natiuitatem Christi?*

CONclusio asserit primò, *indicasse celeritatem accingendi se ad iter; licet aduenerint Hierosolimam post Christum natum.* Ratio nam visa stella, statim dispositi sunt ad iter, & statim indilatè, & continuo, iter perfecerunt in brevissima temporis periodo, & ita designatur simultas apparitionis stellæ cum inchoatione, & prosequutione itineris, & ita apte significat (præter alia) animi promptitudinem, &c. Iuxta phrasim scripturæ Genes. 26. *adhuc loquebatur, & ecce Rachel veniebat,* & Iob. 3. *adhuc loquente vno, veniebat alter, &c.*

Conclusio asserit secundò, quòd *Magi adorauerint Christum tertia decima die post natiuitatem.* Est cõmunis Mald. Cornel. Tirin. Sylvei. & alij contra affirmantes adorasse post natiuitatẽ vno, aut duobus annis. Primò ex Ecclesiæ cõmuni traditione. Secundò ex glossa, quòd non est mirandum venisse in tredecim diebus, quia portarunt equos de Arabia, & dromedarios, qui sunt adeò veloces, vt percurrant vno die, viam trium dierum alterius equi communis, iuxta Hieronymum, & Philostratum in vita Apolonij, qui ait in vno die confecere quadraginta leucas. Tertio, nam Regio eorum, non ita longe distabar, quòd non potuerint venire, in tam brebi tempore, vt dicemus statim, disquirentes ex qua regione venerunt ab oriente. Quartò, nam vocati Magi, ex gratitudine beneficij celeriter confecerunt iter, nam animus gratus nescit tarditatem: est valdè velox ad referẽdam gratiam. *Nã gratia, quæ tarda est ingrata est, gratiæ nãq; cum fieri properat gratia grata magis,* vt vtar verbis Alciati. Quintò, nam Euangelista satis indicat venisse brebi tempore illis verbis, *ecce Magi venerunt,* quę indicant simultaneam connexionem vnius cum alio, iuxta phrasim scripturæ præcitatam ex Genes. 29. *adhuc loquebatur, & ecce Rachel veniebat.* Sextò, nã Leuit. 12. erat præscriptum tempus purificationis ad quadraginta dies vltra quos, non licebat immorari, & ita non mansissent in Bethleem Maria, & Ioseph quim irẽt ad Hierusalẽ, vt sisterẽt, & præsentarẽt infantem Domino, sed Magi inuenerunt eos in Bethleem

leem, ergò venerunt ante expletum quadrageſimum diem. Septimò, quia eſt incredibile in tam brebi itinere inſumpſiſſe duos integros annos, licet venirent pedeſtres. Magalanius enim circunuenit mare, vniuerſum orbem, duobus annis, ſuperatis non paucis impedimentis. Vltimò, nam non eſt confugiendum ad Dei prouidentiam (vt quidam cum Remigio) cum facile fieri potuiſſet naturaliter illud iter 12. diebus.

Arguitur contra, nam venerunt ex oriente, Perſia, Arabia, Tharſis, & Sabà, quæ diſtabat adminus per ducentas leucas, quę tã brebi periodo pertranſiri, non poſſent. Secundò, qnia viſa ſtella, non ſtatim venerunt, ſed poſt diſpoſsitionem, & præparationem regij apparatus, in quo vnum, aut duos annos inſumpſerunt. Vltimò, & vrgentius ex illo textus *ab matu, & infra* occidit multos pueros (Herodes) ſecundùm tempus, quòd exquiſſerat à Magis, vbi indigitatur didiciſſe Herodem à Magis appairtionem ſtellæ contigiſſe biennio ante aduentum, & ita occidiſſe infantes bimos.

Reſpondetur ad primũ, quòd in equitatu, ſin quo venerunt facil le erat conficere iter, in 13 diebus ſi ſingulo quoque die poterant percurrere quadraginta leucas. Ad ſecundùm, quòd accincti ſunt ad iter celeriter, facilis enim diſpoſitio anxijs, & propenſis ad iter, præſertim potentibus, & regibus, quibus ingens ſupellex, & rerum copia. Ad vltimùm didiciſſe à Magis tempus ſtellæ à 13. diebus cętera adidiſſe ex ſuo capite, & malitia in infanticidio infantum à prima die in duos annos, & inuerſo ordine abimatu, & infra, vt comprehenderet Chriſtum infantem natum intra bienium.

AD MORES.

Quòd *in Dei obſequio eſt adhibenda diligentia, & abijcienda deſidia.*

Quòd *parcendum, nec labori nec rei familiari, & opibus, vt ſubſiſtat recognitio, & adoratio veri Dei.*

Quòd *non eſt differenda virtus pœnitentia, & bona opera, nam dilatio in ſenectutẽ eſt valdè periculoſa.*

TEXTVS.

Verſ. 1. *Ecce Magi, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 8. De ſcientia, qualitate, numero, & Patria Magorũ. *An Magi fuerint maleſici magia diabolica? & an fuerint Reges? & quot tres, vel plures? & an ex regione Perſia, Chaldæa, Arabiæ? & quorum Regnorum Reges?*

Concluſio afferit primò. *Non fuiſſe maleficos magia diabolica præſtigiatores, phytones, ſed ita appellari*

leri ab Euangelista Magos honoris causa, sapientia, & magia naturali ornatos, Mathematicos, Astrologos ex inspexione syderum prædicentes naturalia. Ita Interpretes. Primò ex PP. Cypriano, Leone, & innumeris apud Cornel. Maldon. Tirin. & Sylnei. Secundò, nam licet nomen Magorum in vitium abierit, est nomen commune, & comprehendit duplex genus bonorum, & malorum, iuxta quod distingui solet duplex magia naturalis, & diabolica habens obseruationem siderum ad præsagiendum euentus naturales, & habens comertium cum dæmone, oraculo faciendorum, cum igitur nemo debeat præsummi malus nisi probetur, & non sit probatum aduersus istos Magos affectos magia diabolica existimandi sunt satis probatissimi, & eruditissimi in magia, & astrologia naturali. Tertiò, nam Magi nomen est vsitatum apud Persas in bona significatione pro sapiente, Philosopho, Astrologo, & similiter apud Hebræos, & est Hebræum originaliter, vt docet Genebrardus à radice הגה haga, id est meditari, & inde מהגרם Magin meditãtes, & speculantes. Meditatio enim ex Ptolomeo est clauis sapientiæ, & meditabundi, qui fiunt sapientes, vel iam sunt. & ex Hebræis sequaces Chaldæi vocant Philosophos, Magos, teste Hieronymo in cap. 2. Danielis. Et inde Arabes, Syri, Persæ, Ethyopes Orientales vocant sapiẽtes, & Astrologos Magos, ex Tertuliano contra Iudæos, & ita male Munsterus in Euangelio Hebræo, quod introducit, vt authographũ Matth. pro Magi vertit מכשפים Mecasiphim, id est incantatores, & præstigiatores. Verum Ethyopicus fauet, pro Magi, adoratores, quia hi venerunt ad exhibendam adorationem Christo.

Argui solet proposita sententia, quæ asserit fuisse maleficos, & Astrologos, Iuditiarios, Sagos, & incantatores, ex PP. August. Ambrosio, Origine, & alijs, qui dicit Iudiciarios.

Respondetur esse pro nobis alios PP. & istos, ita fuisse huius sententiæ, quòd non dixerint esse inopinabilem oppositam, & ista forma solutionis est adhibenda quoties quis præmittur sententia opposita PP. ne irrogetur irreuerentia, si detur absolutè repulsa, quod non fit decenter, sed petulanter, vel loqui de iudiciaria naturali.

Conclusio asserit secũdò, quòd *isti Magi fuerunt Reges.* Et est communes sensus, & vox fidelium appellantium Principes, & Regulos contra Caluinum, & Bezã irridentes, quòd Ecclesia id credat, & sinistrè interpretetur illud Psal. 71. *Reges Tharsis, &c.* sentiunt nobiscum disertè præcitati pro prima adducti. Primò ex præcitato Psal. *Reges Tharsis, &c.* Reges Arabum, & Saba. Secundò ex PP. Cypriano, Basil. Hieren, & alijs innu-

meris apud præcitatos, nam purè Philosophi inopes de more, non deferrent thesauros prædiuites, & gazas ditissimas in munera Christo. Vltimò, nam si non essent Reges, quibus debita est reuerentia facile possent capi, & puniri ab Herode, qui non est ausus contra maiestatem, potius aquiescens illorum exemplo dixit (voce tenus) se quoque iturum ad adorandum, simulando tamen in animo Christicidium priuati enim, & vulgares homines non auderent profiteri publicè Regem Iudæorum natum, præsertim in præsentia Regis actu posidentis quamtumuis tyranicè.

Cur autem Euangelista vocauit Magos, & non intitulauit Reges sunt plures rationes. Prima ex Cassian. quia erant pusilli Reges, seu Reguli sicut amici Iob, & ille de quo Ioan. 4. *erat quidam Regulus*, &c, non enim erant Magi ex potētissimis, & opulentissimis Persarum. Secunda ex Cornelio, nā Euangelista non vocat Reges, sed Magos, quia fuit artis Magorum ex stella dignoscere res miras, qui ex astris solent diuinare, euentus, & ex insolito Christum, non verò proprium muneris, & officij regalis. Tertiò ex Barradas, quia sæpè scriptura solet prætermittere hoc nomen Regis, sicut prætermisit in Iob, qui fuit Rex, & in tribus amicis eius, qui fuerunt Reges, vt constat ex Tobiæ 2. cap. Quartò, quia illustrius erat testimonium publicatū de Christo à sapientibus, quàm à Regibus, eò quòd in sapiente ratio magis suasoria, & efficax est, quam potentia imperatrix in Rege. Vltimò, nam quærebant Regem Deum natum, in cuius conspectu terreni habentur serui, & famuli depositā coronā Regali, & nomine, & appellatione Regis. Sicut in præsentia Solis non splendet Luna, nec stellæ micant, aut scintillant, & ita illi senes de quibus in Apocalypsi in præsentia agni sumittebant coronas, deponebant diademata.

Argui solet ad probandum, quòd *Magi non fuerint Reges.* Primò, quia Ecclesia non proponit id de fide, sed vt opinabile tantùm. Secundò, quia non præteriret Euāgelista, sed vt vocauit Magos, adiungeret Reges. Nam id pertinebat ad maiorem gloriam, & dignitatem Christi, quòd eius adoratores essent Reges, longe plus, quam sapientes. Tertiò, nam si fuissent Reges excepisset eos Herodes cum aplausu, & apparatu Regis.

Respondetur ad primum nōs non intendere, id esse de fide, sed de sensu probatissimo Ecclesiæ. Ad secundū, iam constat ex dictis cur Euangelista silentio præterierit titulum Regiū, & explicuerit sapientum, & Magorū: adinstantiā dico apud viros graues, & doctos magis est æstimabile, & credibile testimonium sapientis ad conciliā dum assensum, quā Regis potentissimi, quidquid sit apud imperitos, & vulgares. Ad tertiū, & vltimum

dico

dicò, non excepisse Herodem Regio apparatu, sed id tribuendum immoderatę superbię, & inflatę arrogantiæ, si nō possit excusari inopinato, & repentino ingressu eorum in curiam Regiam, non defectui, & orbitati dignitatis regalis.

Cōclusio asserit tertiò, *fuisse tres numero Reges, nec plures, nec pauciores.* Ita Interpretes præcitati. Primò ex antiqua Ecclesię traditione, & receptissima pictura. Secundo, ex PP. Augusti, Leone, Ruperto, & alijs, horum verba apud præcitatos. Tertiò, nam licet Euangelistę non faciant mentionē de numero dicit Glossa, quòd tres Magi, vno itinere veniebant adorare. Quartò, nam certū est fuisse non vnum tantū, quia plures Magos in numero multitudinis exprimit Euangelista, deindè non duali numero tantū, aliunde est probabilis coniectura peruenisse ad numerū ternariū, tum ex triplici nomine, quo inueniuntur nominati apud Magistrū historię scholasticæ ex Hebręo, & Gręco. Nomina in Hebręo sunt Appellius, Amelio, & Damasco, in Gręco Palaat, Malgalath, & Seratim in latino Gaspar, Melchior, Balthasar. Beda eruditè in collectaneis, ita nominat, & depingit. Primus dicitur fuisse Melchior, Senex, canus, prolixa barba, & capillis, hic obtulit aurū, vt Regi Domino. Secūdus Gaspar, iuuenis, rubicundus, & imberbis, Deū honorauit Thure, vt oblatione digna Deo. Tertius, niger, fuscus integrè barbatus, est prosfus per myrrā, Christū filiū hominis mortalē, & moriturū. Quintò quidā solēt probare fuisse tres ex triplici munere, quæ probatio eatenus admitti potest, quatenus prior plus auri obtulit, secundus plus Thuris, tertius plus myrrę. Nā verisimile est obtulisse singulos tria munera, aurum, thus, & myrra, vt quilibet profiteretur infantē natū, simul esse Deū Regē, & mortalē. Et moriturū pro salute hominū, & maior fuit nobilitas dedisse singulos terna, quàm singula munera. Nobilius id est dāti, & gratius accipiēti. Imò in morte, se ipsos obtulisse in sacrificio martyrij, quasi aurū, thus, & myrram Christo. Ab idolarris occisos ob Christi prędicatiū tradit Lucius dexter in chronico anno Christi 70. in Arabia fęlici ciuitate Sesamiæ sanctorū Martyrū, triū Regū Magorū, Balthasaris, Gasparis, & Melchioris, qui Christū adorarūt. Addit Cornel à lapide, inde eorū sacra corpora translata sunt Constantinopoli, inde Mediolanum in Ecclesiā Dominicanorū, Federico autē deuastante Mediolanum ipse tria corpora trāstulit in Coloniā. Vbi pia religione colitur, & Cornel. à lapide se dicit testem oculatum, & sępe illa venerasse.

Ex dictis datur repulsa hęretico Bezę, qui ridet fuisse tres ex triplici munere, facile do singulis tria. Si acquiescat cæteris probationibus. Similiter datur repulsa alijs somniantibus

fuisse duodecim, & alijs quatuor decim ex Scriptura apocripha.

Conclusio asserit quarto, *fuisse Arabes orientales, & ex illa regione venisse ad Christum* Ita Interpretes aiẽtes venisse ab oriente: est tamẽ discordia ex qua regione orientali venerint, alij asserunt ex Persia ex Chrisost. Cyrilo Alex. & alijs apud Sylueir. & Cornel. Eo quòd Persia est in situ orientali respectiuè ad Iudæam, alij venisse ex Chaldæa, nam Chaldæi dediti erant astrologiæ, & Magos intuitu stellæ cognouisse Christum, & erant posteri Abrahæ, qui vocatus est à Deo ex Chaldæa ad Iudæam; iuxta Hieronym. & alios apud Cornel. alij ex Mesopotania venisse. Nam inde erat oriundus Balaan, qui Numerorum 24. prædixit istam stellam, typum Christi. Alij ex India, scilicet Calecutio apud Nauarr. qui asserit se accepisse ab Osorio Episcopo Algabiorum, & haberi in Annalib⁹ Calecutij, eorum Regem fuisse vnum ex Magis, aut primarium comitem, & cum Tho. Apostolo prædicasse. Deindè Ossorius lib. de gestis Emanuelis Regis Lusitanorum asserit accepisse ex traditione Indorum fuisse vnum ex Magis Regem Cranganoris, qui distat parua distantia à Calecucio, & fuisse sub nigro colore, quasi Ethyopem. Mapheius addit libro 2. hist. Indiæ fuisse Regem Culam, & monitu Sybillæ Indicæ venisse ad Christum, cum alijs stella duce.

Probatur prima conclusio, scilicet *esse verisimilius fuisse Arabes*, quia id consonat sacræ Scripturæ in qua vocantur filij orientis, & Epiphanius ad id ait, fuisse successores Abrahæ, qui fuit pater credentiũ, ortos ex Cetura, habitantes in parte Arabiæ regionis Magodiæ. Nam filij Abrahæ ex Cetura, Saba, Madian, & Epha separati sunt à patre Abraham dimissa illa, & filijs, data hæreditate, seu muneribus, vt essent separati à filio Saræ, scilicet Isae hærede, & discesserunt in plagam orientalem, & habitauerunt in Arabia fœlice, Genes. 25. Confirmatur, nam id respondet vaticinio Isaiæ capit. 60. vbi prædicit Sabeos, Madiam, & Epha, qui omnes sunt Arabes, esse venturos ad Christum, cum muneribus, Et ita Ecclesia videtur intelligere Isaiæ vaticinium dum in officio Epiphaniæ recitat illius verba. Confirmatur, nam id etiam respondet illi oraculo Regij psaltis Psalm. 71. *Reges Tharsis*, & insulæ munera offerent, Reges Arabum, & Sabà dona adducent.

Secundò probatur, nam Arabia est magis vicina cum Iuda, quàm Persia, quæ distat leucis 11300. quod iter non potuis-

sent

sententia cõficere in 30. diebus delicati Reges nisi ægre, & difficulter, licet cursores tabelarij assueti quotidie decurrere in dromedarijs 40 leucas facile possent, imò nec isti valerent cursu continuo decurrere.

Tertiò, quia Regina Sabba venit ex Arabia ad videndum, & audiendum Salomonem cum simili munere 3. Regum 1 quę fuit typus Magorum venientium cum muneribus, non obstante, quòd dicatur venisse ex Ethyopia, quia non erat nisi orientalis, non Meridionalis vergentis in Occidentalem, sed pars Arabiæ. Ipsa enim complectitur ambitu mare rubrum regiones adiacentes, vicinam Ethyopiam orientalem, vnde Madianitę solent appellari Ethyopes, non quia nigri, & fusci; similiter vxor Moysis Madianitis solet dici Ethyopissa, vt numerorum 12. & mare Rubrum dici solet sinus Arabicus, quia tam cis, quàm vltra hoc mare diffusa est Arabia, & ita verisimile est vnum Magorum fuisse Ethyopem; imò fuscum ex pictorum figura non reprobata ab Ecclesia: & dicitur venisse ex Ethyopia Regina Sabba, tum etiam quia Psalm. 71. dicitur *Reges Arabum, & Sabba dona adducent, & statim: coram illo*, procident Ethyopes. Magi autem dicuntur Reges Tharsis, quia erant Reges maris Rubri, quod dici solet Tharsis, vt huius vocis sint variæ vsurpationes, vt dicantur naues Tharsis à portu illius, ita appellatæ, & distrahi solet ad plures regiones maritimas, adhuc Mediterraneæ.

Quartò idem probatur ex donis allatis à Magis. Nam Arabia fertilis est auro, thure, & myrra, vt apud nos inualuerit pro oprimo, & selecto auro. Et ita appellari solet Arabia fœlix, quippè aurifera, thurifera, & aromathifera: ex Plinio lib 12. Virg. 2. Georgic. India mittit ebur, &c. & est talis vberta: myrræ, & aromathum, vt reste Plinio lib. 4. cap. 17. non sint alia ligna ad ignem, nisi odorifera, & ingens auri copia adeò, vt illius gentis suppellex auro, & argento condita, adhuc vincula malefactorum, vt Mela lib. 5. capit. 10. dicat, *æra exornantur auro* sonitum vincula fabricant.

Vltimò. Nam illud vaticinium Balã de ista stella Magorum æditum fuit in Moab, qui erat in Arabia teste Hyeron. in locis Hebraicis, & ex illa Pineda lib. 5. de rebus Salomonis cap. 14. venisse Reginam Sabbaa ad Salomonem, & Magi ad Christum, & Sabbaa sita in Arabia fœlice, vbi floruit religio Christiana. Ex quibus constat, quorum Regnorum fuerint Reges. Iuxta Psal. Reges Tharsis Arabum, & Saba.

Arguitur contrà. Nam difficile est venisse ab Oriente, si venerunt ex Arabia, & Saba. Nam sunt Regiones Meridionales. Secundò, nam non potuerunt venire ex Arabia, & Persia in spatio 13. dierum, dato quòd probaretur fuisse Persas ex donatiuo, & munere, eò quòd erat lex Persica, non adire vacuum sine munere.

Respondetur, Regiones inter medias, interdum dici Orientales, interdum Meridionales, quòd expendi debet respectiuè ad situs, & positiones differentes. Qua verò ratione tam breui potuerunt venire supra dictum, quòd partes extremæ illarum regionum non distabant longa intercapidine à Iudæa.

AD MORES.

Quòd *vera sapientia in eo consistat, vt inducat ad inquirendum Deum, & salutem æternam.*

Quòd *in præsentia Regis Regum non debet vllus apparere Rex, sed omnes serui deponentes diademata Regis.*

Quòd *Deus largitus est hominibus ingentes diuitias, & thesauros, vt in obsequium Dei omnia conuertantur.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Qui natus est Rex Iudæorum, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 9. *Quare Christus dicatur Rex Iudæorum, & non totius vniuersi? & an habuerit ius hæreditarium ad Regnum temporale Israeliticum? & quare coram Rege Herode interrogant de nato Rege Iudæorum?*

Conclusio asserit primò, *dicta verba in rigore accipienda, non solùm materialiter, vt qui natus est fiat Rex Iudæorum, sed formaliter, vt sit sensus, quod sit natus Rex natiuitate, aut natura, Rex legitimus Iudæorum cum iure hæreditario, vt distinguatur à Rege Herode non natura, sed intrusione à Romanis.* Ita interpretes, & plures PP. apud præcitatos, & Syluei. tom. 1. cap. 5. q. 41. Bernardinus Senen. Athanasius, & citatur noster Bachonius, fauet Cornel. hic quatenus dicit deberi omne Regnum, non solùm ratione vnionis, sed iuris, non solius Iudeæ, sed orbis, & iure primogenituræ à Dauid, & Salomone, erat enim Regni eorundem hæres, & successor, & ita verè Rex Iudæorum.

Probatur primò ex Scriptura, vbi non semel dicitur, *Rex Israel, Rex Iudæorum, &c.* Ioan. 1. *Tu es Rex Israel,* & Matth. 2. *Rex Iudæorum,* & in rigore sunt accipienda, ne vis inferatur textui, & similiter sic acclamatur Rex, & ipse non cõ

tra-

tradicit Matth. 21. Marci 11. Lucæ 19. *Benedictus qui venit Rex, &c.* & in frõte crucis inscribitur *Rex*, & videtur annuere *inclinato capite.*

Secundò probatur, quia Deipara Maria descendebat ex familia Dauid, & poterat succedere in Regno temporali deficiente viro ex lege numer. 27. v. 8.

Tertiò probatur efficaciter, nam dicitur 1. Machabæorum capit. 14. quod cum iam cessasset regnum in familia Dauid ex concessu communi conuentum, & decretum, Simonem Machabæum esse ducem, & Sacerdotem, *donec surgat Propheta Domini fidelis*, scilicet Christus iuxta Deuteronomij. 18. *Propheta sicut me, &c.* Iuxta PP. Dionisium S. Thom. & alios apud Silueyram, si ergo principatum fuit translatum, fuit translatum, non omnino absolutè, sed vsque ad dictum tempus, in in quo surgeret Propheta Domini fidelis, scilicet Christus, ergo vbi aduenit, nascitur cum iure ad Regnum temporale, nam fuit facta translatio ex communi consensu nunquam reuocato. Quia obstet illud Ioan. 19. *Non habemus Regem nisi Cæsarem.* Nam ille populus non agnouit Christum esse Messiam. Iuxta Actorum 3. *Nunc scio fratres*, quia per ignorantiam feciſtis, sicut Patres vestri. Si cognouissent, non crucifixissent, & ita perseuerauit illa vox, quòd Messias esset Rex ipsorum.

Vltimò, nam licet à filijs Dauid sit translatum temporale ob peccata, tamen Christus fuit legitimus filius Dauid, & non habuit vllum peccatum, & ita non potuit priuari regio illo titulo. Confirmatur ex Ezechielis 21. vbi de Sedecia, *tolle coronam, &c.* Donec veniat, cuius est, (iuxta Hieronimum) vsque ad Christum, cui reseruata est, & iuxta 70. *donec veniat*, cui debetur, & corona ista Sedeciæ est imperium temporale. Vltimò confirmatur ex illo, *Dabit illi Dominus sedem Dauid patris eius, & regnabit, &c.* Sed Dauid habuit sedem temporalem, nõ spiritualem, quia non fuit Sacerdos, ergo fuit in Christo ius ad regnum temporale, licet non fuerit vnquam in actuali possessione, & ne fieret Rex temporalis fugit in montem, dum alij essent in Iudæa in actuali possessione in tempore suo.

Arguitur pro opposita sententia, quæ asserit, *Non habuisse ius ad regnum temporale, licet vt filius Dei habuerit spirituale ad totum vniuersum.* Tenent satis communiter antiqui, & moderni noster Vualdensis, Sotus, Valentia, Vazquez, Suarez, & alij apud Silueiram. Primò, quia si haberet ius temporale ex eo esset, quia in Scriptura appellatur Rex. Psalm. 71. Ieremiæ 23. Daniel. 2. sed in illis non agitur de Regno temporali, sed spirituali. Nam dicitur sempiternum, æternum, &

cuius Regni non erit finis. At verò Regnum temporale habet finem, & terminum, & quodlibet habebit in fine mundi saltim. Confirmatur ex PP. Augustin. 10. de ciuitate cap. 7. pro mille. Vbi de eo in persona Saul dicit, non carnaliter, sed spiritualiter regnaturum Et Basil in catena ad illud Lucæ 1. *Dabit illi Dominus*, sedem Dauid patris eius, dicit intelligendū, non de materiali sede.

Respondetur, quòd Christus habuit ius, ad hoc ad regnum temporale, licet non habuerit possessionem, & vsum. Quod sæpè intendunt PP. iuxta quòd interpretanda verba adducta in confirmatione.

Arguitur secundò, nam si habuisset ius, haberet aut quia filius Virginis, aut quia filius Ioseph putatiuus, sed ex nullo titulo, ergo, minor probatur, nam à Dauid deriuatur in posteros per Salomonem, sed beata Virgo, non descendebat nisi per alium filium, scilicet Natham ex communi sententia, Lucæ 3. vbi linea Virginis enarratur, *qui fuit Natham*, qui fuit Dauid, &c, & admisso quòd esset ius in Virgine, ipsa viuente, non deriuaretur ad Christum: vlterius non ex alio titulo, quòd fuit reputatus filius Ioseph, qui à Dauide per Salomonem descendebat, iuxta genealogiam Matth. 1. quia non constat habuisse primogenituram, cui cōtingebat ius ad regnum, & illo admisso non erat Christus filius naturalis Ioseph, quidquid quidam appellent legitimum legitimate legali, alij putatiuum, alij adoptiuum. Institutus autem maioratus non contingit adoptiuo in præiudicium legitimi, & naturalis successoris.

Respondetur iuxta dicta ex 1. Machabæorum, quòd cum iam cessasset ius in familia Dauid, est deriuatum communi decreto ad Simonem ducem, & Sacerdotē, *dum surgeret Propheta Domini*, fidelis, qui est Christus, qua ratione contigit illi ius statim, ac concipitur, & nascitur de Virgine, quamuis Ioseph pater putatiuus descendat à Dauid per Salomonem, & ad hoc non erat opus alio, nisi filiatione Virginis, qua posita ante obitum, & sine illo obtinuit.

Arguitur tertiò ex Ieremiæ 22. vbi dicitur de Iechonia descendēte de Dauid, *Scribe virum sterilem, non erit de semine eius vir, qui sedeat super solium Dauid.* Vbi videtur priuatus successore in regno tēporali in pœnam peccati, & ita consequēter Christus ab illo descendens nō habuit ius ad temporale.

Respondetur à quibusdā, quòd Deipara, & Christus non descendebat à Dauid per lineam Salomonis, & Iechoniæ in eo puniti, sed per Natham, in cuius punitione transit ad lineam alterius filij, scilicet Natham. Secundò respond. & melius ad litteram cum glossa interlineali, quæ ita exponit non erit de semine eius vir purè humā-

manus benè, qui sit homo Deus. Tertiò iuxta dicta lectura de 70. hebdom. dub. 6. & alibi.

Arguitur vltimo ex illo Ioan. 18 vbi Christus dixit Pilato *Regnum meum*, non est de hoc mundo, vt indicaret, nõ habere ius ad Regnum temporale, sed solùm ad spirituale, & mirè confirmatur ex summa pauperie, quam professus est Christus, quæ excludit ius dominium, & vsum ad temporale.

Respondetur ex S. Th. tertia parte q. 59. art. 4. quòd Christus habuit quidem potestatem sed nõ vsum, & modum imperandi temporaliter, quo fruuntur alij Reges, & hoc ius potest componi sine vsu, cum summa paupertate omni dominio proximo, cum vsu abdicato, iuxta 2. Corinth. *qui cum* esset diues egenus pro nobis factus est.

Conclusio asserit secundò, quòd *est dictus Rex Iudæorum, non vniuersi orbis, cum id gloriosius plublicaretur Rex Regum, &c. ex sufficiente causa.* Primò, quia ita dictus anthonomasticè, Messias de progenie Iudæorum promissus, & natus, & primò ad salutem eorum Matth. 15. *non sum missus* nisi ad oues, quæ perierunt domus Israel, vt cõstaret publicè aduentus eius in mundum, & Iudæos magis obligatos ad eum excipiendum, & non haberent excusationem, & damnarentur seuerius, quòd non venissent ad recognoscendum Regem, & adorandum, vt Reges extranei, & allatis muneribus. Confirmatur, quia dum intitulatur *Rex Iudæorum*, & non totius vniuersi, cum posset optimo iure, ipsi Iudæi strictiorem obligationem, sibi impositam recognoscerent speciali beneuolentia, & ex opposito, sibi imponi grauiorem damnationem.

Conclusio asserit tertiò, quòd *cum gloriosius esset dici filium Dei, quam Regem vniuersi, aut Iudæorum, meminit Euãgelista (ex Magis) solùm Regem Iudæorum, & non sine causa, sed multiplici.* Prima, vt Zachariæ vaticinium cap. 9. ostenderetur impletum. *Ecce Rex tuus* venit tibi, vbi particula tuus indicat Iudæorum. Secundò, nã voluit summere initium prædicatorum, non ab inaudito, & inusitato nomine apud homines, aut etiam filius Dei; sed à frequentiori vsitatiori scilicet Regis, iuxta Chrisost. homill. 7 in Matth. Ne tanti mysterij, scilicet incarnationis filij Dei veritas rudes animos, in scandalum concitaret, & iam instructis in fide aptius, & cõgruentius introduceretur, quòd esset filius Dei. Vltimò, nam Iudæi intelligebant Christi Regnum futurum temporale, & ideo ne interrogatio induceret confusionem, non interrogarunt de natiuitate filij Dei Regis æterni, sed Regis Iudæorũ, vt conciliarent dilectionem, & amorem, dum audiunt suæ nationis Regem, & facilius excitarentur

tur ad excipiendum amabiliter, cum si audirent filium Dei, aut Regem Cœli, ad dignam reuerentiam tanto Rege.

Conclusio asserit quartò, quòd *ita interrogant fidenter de Rege nato Iudæorum ex sufficienti causa.* Primò, quia Magi instructi de cœlo agnouerunt Deum natum esse Regem Iudæorum, & ideo venisse adorare, cum non venerint vnquã adorare alios Reges Iudæorum, quod probat S. Th. 3. p. q. 36. art. 8. sapienter quæsiuisse Christum inspiratos ab Spiritu Sancto, & ita natum publicassent. Secundò, quia Magi existimarunt fuisse natum Regem vniuersalem, & ita in præsentia eius, non timebant particularem. Tertiò, nam parati erant pro veritate Christi subire incommoda, vsque ad mortem ex Chrisost. Homil. 2. in Mat. *nõ timebãt* Regẽ præsentẽ, dum considerabant futurum, non dum viderant Christum, & parati erant pro eo mori. Qui enim respicit æterna despicit facile temporalia, vt Baptista, & alij Christi prædicatores, & ita licet esset valdè durum in Regis præsentia intitulare alium Regem, quod prohibitum erat sub capitali lege Romana: Magi spernentes, audatia, & constantia armati ausi sunt profiteri Christum legitimum Regem Iudeorum, præferentes illegitimo, Herodi, intrusso à Senatu populoq; Romano. Vt latè expendit Cornel. à Lapide.

AD MORES.

Quòd *solus Christus Rex iure intrinseco naturæ est cæteris præferendus iure derivato, & ascitio.*

Quòd *pro obsequio veri Dei posthabendæ sunt Regiæ dignitates, & omnia temporalia.*

TEXTVS.

Vers. 2. *Enim stellam eius, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 10. De natura stellæ. *An fuerit vera stella? & an creata de nouo? de qualitate splendore vbi, & quando apparuit? de eius motore, itinere, & cursu, & cur dicitur eius? & cur conduxit in Hierusalem, si ducebat in Bethleem?*

Conclusio asserit primò, quòd *non fuit initio mundi creata, sed de nouo.* Ita interpretes, Maldon. Cornel. Tirin. Syluei. & alij. Primò ex PP. Chrisost. Eutimio S. Th. & alijs apud præcitatos. Secundò, nam licet Deus vti potuerit alia stella firmamenti, aut ex cœlestibus, asserendum est id fecisse, quod importat minorem mutationem vniuersi. Si aduceret Magos vna stella cœlesti, opus esset multis miraculis. Primò nam stella cœlestis mouetur circulariter ad motum cœli, ista verò motu lineali recto,

recto, & partim circunflexo pro viæ exigentia. Secundò, cœlestis, nõ luceret die, sed nocte; ista autẽ die ac nocte. Tertiò, nam cœlestis haberet motum perpetuum, & cõtinuum, ista verò discretum, & cum vicissitudine; nam quando opportebat iter agere Magos; ibat; cum quiescere; quiescebat, & stabat. Quartò, nam ista interdum apparebat interdum disparebat, & occultabatur, nam disparuit, cum Magi intrarunt Hierosolimam, & iterum apparuit in egressu rutilans, scintillans, & splendifera. Quintò, probatur quia communis, & vera sententia est, quòd fuit constructa, composita de nouo ex aærea materia, in aære terræ vicino, vt aptè S. Th. Abul. hic quæst. 11. & alij PP. & hoc erat facilius, & vsitatius in similibus miraculis, vt in miraculo triplicis Solis aparentis in die natiuitatis, in comætis radijs vt caudis in digitantibus istam, aut illam Regionem, vt in præsenti. Ista enim radijs coruscis indigitabat versus Iudæam, quo Magi intendebant præmere iter, & in multiplicatione panis, & piscium in deserto, & in assumptione corporum elaboratorum ab Angelis, & similibus.

Conclusio asserit secundò. *Non fuisse veram stellam de specie, & natura cœlestium, sed fuit corpus illuminosum sub figura, & apparentia stellæ; & ita dicitur stella, non quoad veritatem, sed similitudinem.* Ita præcitati pro prima. Primò ex PP. August. Amb. & alijs apud præcitatos. Secũdò, nam si esset stella cœlestis, & vera fuisset visa à principibus, & obseruata ab Astrologis; sed non fuit vnquam, imo cum visa fuit à Magis ita Astrologis peritis, iudicata fuit miraculosa, extra seriem, & ordinem cœlestium. Et non mirum, quod appellauerit stellam Euangelista, nam fuit, quoad similitudinem. Et hac ratione solet dici stella, comæta apparens in aære. Tertiò, nam sufficit ad intentum ducendi Magos stella similitudinaria, & nõ cogit præmens necessitas dicere, quòd fuit vera cœlestis, imo incõueniens dicere esse veram, & cœlestem, & descendisse de cœlo, sede, & statione sua relicta, ad dictum officium exercendum, præbendi ducatum, dirigendi, quiescendi, & standi super domum, vbi erat puer, vt stetit Sol ad Iosue imperiũ. Vltimò, solet probari rationibus ad ductis pro priori parte. Nam stellæ veræ, & cœlesti difficile adaptari possẽt officia, huic stellæ tributa, quæ non repeto ne actum agam.

Argui solet pro asserente, *fuisse veram, & cœlestem de numero corũ.* Tum ex PP. tum quia iuxta regulã PP. sic accipiẽda verba scripturæ in rigore, vt sonãt, nec discedẽdũ ad improprium sensum, & figuratũ, nisi sit aliquod graue incõueniens, sed asserit Euãgelista fuisse visam stellã, ergo fuit vera, nõ similitudinaria; & apparẽs, vt arcus Iridis. Resp. pro nobis etiã esse nõ

igno-

ignobiliores PP. Deinde in asserendo fuisse veram, & cœlestem, incurruntur incommoda præostensa. Cum dicitur visam admittimus veritatem illius corporis lucidi, quod potuit terminare visum.

Conclusio asserit tertiò. *Fuisse stellam splendidissimam diffundentem radios clarissimos dilatatos, versus Iudæam, vt indicem more cometarum: an intensiores solaribus incertum.* Similiter *apparuisse in figura coronæ Regiæ, vt index esset Regibus aptus.* Ratio. Nam vt daret ducatum, & dirigeret Magos, non opus erat ingenti fulgore, vt superaret intensione radios Solis, sed sufficiebat splendor remissior, vt erat in columna nubis, & ignis Exodi 13. illuminans noctem in solitudine filijs Israel in innumera multitudine. Secundò, nam caueri debet in scriptura, quoad fieri possit omnis loquutio hyperbolica, quæ quã tũ inclinat in exaggeratione, tãtũ videtur declinare à veritate, & euertit veritatẽ potius, quam adstruat; loquutiones autem oppositę sententiæ videntur valdè hyperbolicæ, qualis est Prudentij, qui ita canit. *Stella Solis rotam vincit decore*, &c. Et Imperfecti in Matth. homill. 6. dicentis, ipsos Solis radios proprio fulgore superabat, magis ipsa resplendẽs, qui benigne sunt tẽperandi, quòd non sint loquuti in veritate, sed per exaggerationẽ, & hyperbolẽ, non semel vsitatum in scriptura, vt non est auditus malleus in fabrica templi Salomonis.

Argui potest pro placito asserente; *stellam superasse splendore Solem*, tum ex PP. præcitatis; tum quia stella, ista lucebat in meridie in præsentia Solis, in qua non potest lucere luna, ergo signum est fuisse splendidiorem sole, & superasse fulgores solares. Respondetur ad 1. ex PP. reliquisse opinabilem nostram sentẽtiam, specialius quòd sint loquuti, non in veritate assertiua, sed exaggeratiua, & hyperbolica, quę interdũ inseruit, vt retificatio veritatis assertæ. Ad secundũ, non mirum, quòd sydus splendidissimum appareret in prę sentia Solis, saltem ipsis Magis, id enim in Dei dispositionem reducendum, qui miro medio illos ducebat.

Conclusio asserit quartò. *Apparuisse in Oriente Magis supra Regiones, in quibus habitabant perpendiculariter, non verò super Iudæam, sed inde diffundisse radios indices versus Iudæam, & duxisse suo motu in Iudæam; quæ in situatione orientalis erat respectiuè ad Iudæam.* Ita cõmuniter interpretes. Primò, nã dicit Euangelium fuisse visam à Magis in oriente, & ibi agitur, non solum de situ, vbi Magi aderant, & à quo vidissent super Iudeam, sed de loco, in quo apparuit perpendiculariter ad regionem orientalem. Secundò, nam verisimile est quod si visa esset in Iudæa à Magis in oriente existentibus, non silen-

silentiō præteriret Euangelium, sed aduerteret. Tertiò, ex S. Th. 3. p. quæst. 36. art. 7. ad illud *vidimus stellam eius in oriente*, dicit: nō est intelligendum, vt ipsis posſitis in oriente, visa fuerit stella existens in terra Iudà; sed quod in oriente existentem viderunt, & præcesserit eos ducens ad Iudæam. Vltimò, nam viæ dux in ipsa Regione visus, ducit in terminum, aliam ciuitatem, aut Regionem: vt frequenter contingit transeuntibus portus aliquos. Et ita textui est valdè conforme, quod visa sit in Regione orientali à Magis, & inde motu suo duxisse ad Iudæam respectiuè occidentalem. Nam dicit Euangelium. *Ecce stella*, quam viderant in oriente antecedebat eos, vsque dum veniens staret, subi erat puer.

Argui solet, nam dicitur in textu, *vidimus stellam eius in oriente, & venimus.* Acsi dixisset nos in orientali Regione positi vidimus stellam eius in statione perpendiculari indigitante Iudæam, & intuitu eius ducti venimus, versus illam. Stabat enim sicut Sol designans Bethleem. Et videtur, non incongruens, nam ex illa Regione orientali, non erat difficille intueri stellam stantem, & designantem Iudæam.

Respondetur inferre vim textui interpretationē. Nam licet, id esset possibile, vt ab orientali Regione esset intuita stella stans perpendiculariter supra Iudæam tamen, non ita contigisse de facto indicat textus, dicens, quòd stella visa antecedebat, & dirigebat motum ad quietem in terminum.

Conclusio asserit quintò. *Apparuisse stellā ipsa die natiuitatis Christi. Non ante aut post inchoasse apparitionem.* Ita interpretes disquirentes in quo tempore apparuit. Primò, ex PP. apud præcitatos. Secundò, nam ista stella indicabat natum, non prænunciabat nasciturum, non indicabat præteritam natiuitatem, nec præsagiebat futuram post vnum, aut duos annos, sed præsentem. Tertiò, ex illis verbis *vidimus, & venimus*, quæ indicant à visione stellæ inchoasse viā, nam illa posita fuit quasi index, vnde agnosceretur, & dicit indicem & simultatem natiuitatis indicatę. Vltimò ex sententia, quæ asserit mirabilem aduentū in 13. diebus à natiuitate. Nam si stella apparuisset vno anno, aut biennio ante natiuitatem, non esset mirum brebi tempore venisse, & via illorum astrui debebat ampliori tempore.

Arguitur pro sententia, quæ asserit *apparuisse vno, aut duobus annis ante natiuitatem.* Primò, ex illo sacri textus *Abimatu, & ita infra occidit multos pueros, Herodes secundùm tempus, quod exquisierat à Magis.* Sed occidit bimos, & inferioris ætatis, vt essent comprehensi omues bimi, & inferioris ætatis fuit, ergo biennū tempus exquisitum à Magis, circa apparitionem stel-

stellæ, & natiuitatem Christi. Secundò, nam ita apparuisse oportuit biennio ante natiuitatem, vt præparari possent aditer, & præuenire Regium apparatum, quæ in 13. diebus, non ita commodè poterant aptari.

Respondetur, quòd inspecto tempore inquisito à Magis apparitionis stellę indicis natiuitatis, machinatus est Herodes suæ cautionis gratia infanticidium bimorum, & infra minoris ætatis, sed non ita quòd illi esset regula, & forma decernendi infanticidium, sed præ malitia & astucia diffiniuit biennes & infra, ad vnum diẽ ætatis.

Conclusio asserit sextò. *Illam stellam fuisse motam immediate ab Angelo illius motore.* Ita interpretes communiter. Ratio. Nam verisimile est illius motum varium, rectum, circumflexum: appariti onem, disparitionem: quietem, stationem, & alia. Dirigi, non potest commodè, nisi ab intelligentia motrice ratione prędita. Nã non prædeterminata ad vnum: admodum illius columnæ nubis & ignis illuminantis per noctem populum Israeliticum, & expandentem se per diem in vmbraculum, ad Solis calores leuandos. Exodi 13. versu 19. motæ ab Angelo, vt moueretur populus, & quiescentis in mansionibus, vt quiescerent castra, & præcedentis viam admodum ducis antesignani. Nec obstat, quod ibidem dicitur, *Iam aduenerat vigilia matutina, & ecce respiciens Dominus per columnam nubis, & ignis*: quia id probat primum, & principalem motorem fuisse Deum, Angelum verò ministerialem, & immediatum.

Conclusio asserit septimò, quòd, *fuerit iter, & cursus stellæ varius, & diformis.* Ratio Nam ante ibat ducatum præstans Magis, modo via recta, modo obliqua, & reflexa pro itineris varietate, interdum mouebatur, interdum quiescebat; nunc apparebat, nunc disparebat, vt in ingressu Hierusalem, deindè iterum apparet in egressu, & fecit in termino, Bethleem stationem perpendicularẽ, ostendens maiori fulgore domunculam, in qua natus erat Christus, & tandem disparuit resoluta in pristinam æream materiam, ex qua fuit arte facta: vt eruditè Abul. quæst. 14. & suadet similitudo dictæ columnæ ductricis Israel, quæ cum euntibus ibat, & cum stantibus quiescebat: erat enim typus huius stellæ, & ita per omnia erat conformis.

Conclusio asserit octauò. *Conduxisse Magos in Hierusalem, dum duceret in Bethleem, non sine causa.* Prima, vt in curia Regia Hierosolimitana interrogatione eorum fieret publica natiuitas Christi, & adiuncta stellæ apparitione, vt testificantis firma fides adhiberetur, & Iudaica negligentia, & per-

perfidia fieret inexcusabilis, & damnabilius, ex diligentia, & fide Magorum; quippè inquirentium Christum, accensi fidę de longinquo & remoto veniens, cum prope ipsi existentes, nec inquirerent, nec tamen scirent, in quo facti sunt similes iuxta PP. lapidibus milliarijs, qui viam ostendunt viatoribus, & immoti manent. Et tabellis hospitiorum, qui indicant domicilium, & non ingrediuntur. Et operarijs conductis ad fabricam arcæ, in qua non sunt ingressi, & salutem consequuti, sed innundatione perierunt.

Conclusio asserit vltimò, quòd *ista stella dicitur eius, non sine sufficienti causa.* Ratio: nam cum illæ cœlestes sint eius iure creationis, ista specialiratione intitulatur eius: quia est creata, vt index ad ostensionem eius nati in carne mortali, ad dirigendam viam venientium ad Christum, ad publicandum eius natiuitatem, ad indicandum tempus, & locum in quo cæterispræstat, licet aliàs dirigant viam peregrinantium, & nauigantium.

TEXTVS.

Vers. 2. *Vidimus stellam, & venimus*, &c.

AD LITTERAM

Dub. 11. *An ista stella steterit fixa in oriente? an fuerit comitata Magos in Iudæam? & quare sint ducti per stellam ad Christum? & qua ratione visa stella cognouerint natum? cur disparuit in ingressu Hierusalem? & an fuerit vna, vel plures?*

Conclusio asserit primò, *illam stellam, non stetisse fixam in oriente, sed assiduè comitatam Magos, cursu suo in Iudæam.* Ita præcitati interpretes sequuti S. Thom. Lyranum, Abulensem. Probatur primò, ex PP. ex quibus Chrisol. serm. 156. dicit *ambulante Mago stella ambulabat, dormiente, excubabat, stante, stabat*, quo circa Ecclesia canit in Hymno, *ibant Magi, quam viderant, stellam sequentes præuiam.* Ex Euangelio *antecedebat eos.* Secundò, nam stella visa in oriente disparuit in ingressu Hierusalem; & iterum apparuit in egressu, & tandem quieuit in statione super, *vbi erat puer*: igitur non stetit fixa in oriente, sed motus, & cursus duxit in terminum Bethleem, assiduo comitatu, quin transiret de extremo ad extremum prætermisso medio. Vltimò, nam iter erat incertum, & difficile ex Arabia in Iudæam, & ita fuit opus, vt præiret dux itineris

ad

ad perficiendum iter, & animo ossio res redderentur illius sodalitio.

Argui solet pro sententia, quæ asserit, *mansisse, & hæsisse fixam in oriente, & inde non fuisse motam, neque comitasse Magos*. Iansenius, Caiet Barrad. & alij apud Cornel. Primò ex textu in quo dicitur *vidi stellam eius in oriente*, non in itinere, & iterum vidisse in egressu ex Hierusalem. Secundò, nam si in via esset visa in comitatu eorũ, vi dissent, non solùm in Oriente, sed alibi in decursu viæ, & termini, sed Euangeliũ solũ refert duas visiones alteram in oriente, alteram in egressu Hierusalẽ, ergo nõ fuit comitata in itinere. Vltimò, nam Magi didicerant ex prophetia Balaam orituram stellam indicem Christi nati, & ipsi satis sciebant iter in Iudæam, ergo non fuit opus quod illa stella duceret cursu suo in Iudæam, sed in oriente fixa manens indicaret diffusis radijs iter ad Christum.

Respondetur ad primũ, quòd dum dicunt vidisse stellam in oriẽte, indicarunt initium visionis, ac si dixissent in oriente incepisse visualem apparitionem, sed non ibi fixam hæsisse, sed vidisse ducem, & præuiam in viæ cursu, & disparuisse in ingressu Hierusalẽ. Vnde coacti sunt scicitari, & interrogare Iudæos, *vbi Christus nasceretur*. Ad secundũ, quidam retinent, in die illam stellam retraxisse fulgorem, vel velo nubis obnubilatam, vt esset conspicua Magis duntaxat, cæteris inuisam, acsi vere disparuisset; effulsisse autem in nocte radijs, & splendoribus coruscis. Ad eum modũ, quo illa columna ignis, quæ fuit figura, & typus huius stellæ, & dux antesignan', populi Hebraici. Exod. 13. v. 9 *Dissplicet*, quia sufficiebat in nocte videri lucem illam prodigiosam, vt populi concitarentur in sequelam Magorum, quod nõ legitur factum. Nec vrget simili de columna nubis, & ignis. Nam illa erat alterius instituti pro voluntate Dei ad indicem pernoctẽ, & vmbraculum per diem.

Respond. secundò, verisimilius esse, visam esse non solùm à Magis, sed ab alijs, tum quia Deus dedit in indicem Christi nati, & non erat causa, cur nolet cognosci à cęteris natum saluatorem, quòd si visã non sunt secuti, vel ideo fuit, quia videntes stellam, non videbant mysterium, & referebant illud signum in aliud ignotum, vel quia detinebantur curis rerum temporalium. Sicut viso eclypsi Solis Iudæi in passione Christi, non sunt conuersi, & Dionisius videns Athenis conuersus est, quia Paulus docuit, illa die fuisse crucifixum, & mortuum Christum; vnauxilium idem, quibusdam efficax alijs inefficax, ad quærẽdũ Deum. Ad tertiũ admitto potuisse discere ex Balaam illam prophetiã, sed ignorasse locum, & ita didicisse ex stella ducatum, & licet non esset distantia infra 300. leucas in is con-

contingit itineris difficultas, quę superaretur stellæ ducatu.

Conclusio asserit secundò, *aptissimè Magos fuisse ductos, & vocatos per stellam ad Christum, & satis conuenienter. Cuius cõuenientiæ ass gnari solent rationes multæ.* Primò ex PP. Gregor. Chrisost. & alijs apud Cornel. & Syluei, quia ipsi Magi erant astrologi, & facilè scire poterant istam non esse cõmunẽ, sed prodigiosam, & aliquid diuinum, & mysteriosum præseferre, vt sydus splendidissimum conditorem syderũ, iam natum demonstraret, cui inseruiebant creata cuncta. Et ab eis curiosius obseruaretur, quia hominesingenui maiorẽ attẽtionẽ constituunt in familiaribus, in quibus versantur. Secũdò ex Nisseno, & Ambrosio apnd Syluei, ad numerorum 23. vbi prædixerat Balaam, *orietur stella ex Iacob*, Magi iuxta prædictionẽ sui progenitoris, cuius filij vocabantur, obseruarent stellæ ortum indicem stella Christi ex Iacob, facilè enim quisque maiorũ suorum recipit, & sequitur doctrinam. Tertiò ex Nazianceno, nam Magi assueti obseruatione astrorum, vt signa, & pronostica futurorum instruerentur stella de natiuitate Christi. Vltimò, nam pastores vocantur per Angelũ, Magi per stellã, quia erat frequens apud Iudæos apparitio Angelorum, apud Gentiles verò inusitata, & incognita, & ita Gregor. Homil. 10. in Euangelia dicit, quòd pastores vocãtur per vocem Angeli, vt fideles, Magi verò per signa, vt infideles, & gentiles. Iuxta Apostolum. *Prophetiæ fidelibus* datæ sunt, signa autem infidelibus.

Conclusio asserit tertiò, *Cognouisse Magos stellam signum esse Christi nati, non ex arte astrologiæ, sed ex instinctu, & reuelatione diuina, & exterius ex prodigiosa stella indice Christi.* Ita Interpretes Maldo. Cornel. Syluei. Primò ex PP. Basil. & alijs apud Cornel. & Syluei. Secundò, nam ex oraculo Balaam numerorum 24. quorum Magi fuere posteri, & successores discere potuerunt, quod tempore, quo oriretur stella ex Iacob, erat natus Rex Iudæorum, & ita traditione habebant receptum, sed viderunt stellam, ergo inditio stellæ colligere potuerunt Christum natum. Confirmatur ex doctrina PP. Basil. Hieron. & alijs, qui dicunt, agnouisse Magos stellam esse indicem Christi ex Balaam, & Sybilla Erytrea. Tertiò, ex eò quòd dicitur *vidimus stellam eius*, id est indicem natiuitatis eius, & loqui de illa; ac de re notissima ex communi fama post oraculum Balaam, de quo Author imperfecti homilia 2. deputasse in monte, qui obseruarent stellas, vt aduerterent nouũ indicẽ, & ex sydere, & prodigiosa nouitate simul cum vaticinio Balaam, & ita non mirum dedisse ex nouo ortu stellæ figurantis Chtistum eius ortum, & natiuitatem.

Argui solet pro opinione, quia

asserit, *cognouisse per artem astrologiæ Christi natiuitatẽ*. Ac si in astris sit signatum futurum, & fatali necessitate euenturũ, quod prædicitur ex constellatione stellarũ. Alya co q. 30. in Genes. Senensis, & alij apud Cornel. & Syluei, ex eò quòd in tempore natiuitatis fuit concursus Iobis eum Saturno in signo Cancri, & additur Oroscopus, quo erat pars Virginis, qui indicabat Religionis mutationẽ in culmine cœli Saturnus, inferiori parte Sol, & in figura Christi Oroscopum spectandũ, & indicari partũ Virginis, ex syderũ aspectu benigno. Sicut cometæ solent indicare frequenter insolitos euentus, vt mortes Regũ. Respond. prædictionem ex astris pluſquã euẽtuũ naturalium, & ex necessitate naturæ esse omnino superstitiosam, & incertam, nisi aliàs adsit diuina dispositio, qua fiat connexio inter signum, & signatũ. Primò, nã in causa naturali præcognosci non possunt mysteria fidei, vt natiuitas Christi ex Virgine immaculata, quia nulla res naturalis qualis est ille aspectus, & concursus stellarũ, neutiquã vim habet ad determinãdam prędictionẽ rerum supernaturalium, & mysteriorũ fidei. Secundò, quia prædictio præsaga futurorum solet nitti in experientia Astrologorũ, vt quia in vno anno experti sunt in coreursu Martis cum Iobe in Libra euenisse prælia, colligunt ergo isto anno in simili concursu euenient prælia, sed in re præsenti nõ præcessit vlla experiẽtia, vt ex alicuius Virginis partu potuerit præsagiri partus Deiparæ Virginis: nõ ergo fuit vnde isti Astrologi diuinarent natiuitatem ex Virgine. Tertiò, nam ex Oroscopo, & concursu stellarũ in natiuitate pueri faciunt astrologi coniecturam, si ascendit stella Iobis futurũ infantẽ Iobialem, si Martis pugnacissimũ, & bellicosum, si Saturni, tristẽ, & melancolicũ, si Lunæ varium, & mutabilem, & sic de alijs. Quia istæ stellæ inclinant, & influunt in tales complexiones, & certificant effectus; sed nõ est vlla stella, quæ dicat ordinem inseparabilem, & inenitabilem connexionẽ cum partu Virginis, Incarnatione Verbi, meritis, & miraculis Christi, nam ista superant vim Astrorũ, & solùm possunt operari Dei omnipotentia supernaturali. Præsertim cum Christus subdi non possit dominio stellarum, potius illæ sub illius, cũ sit Dominus omniũ. Quartò, & vltimò, nã astra solùm inclinant, non necessitant, & sapiens dominabitur astris, & nullis ineuitabile fatũ. Vt aptè Augustin. 2. contra Faustum cap. 5. vbi impugnat Manichæos assertores, non ideo Christus natus est, quia illa stella extitit, sed ideo illa exorta est, quia Christ⁹ natus, est indicat⁹.

Arguitur secundò pro opinione asserente, quòd *Magi per stellam cognouerint natiuitatem Christi*, quia in ea visa fuit imago pueri gestantis crucem, & virginẽ amplexu bra-

brachiorum complectentis, in quo indicabatur Christi incarnatio ex Virgine, & eius crucifixio in Caluario, quod solet referri ex Borragine, & Authore imperfecti in Matth. homil. 2. Respondetur, id esse incertæ fidei, & referri saltim ab imperfecto, vt acceptum ex lib. Apocriphis Settianorum, licet id fuisse verum pietati valde congrueret.

Arguitur tertiò pro placito asserente, *didicisse Christi natiuitatē ex stella prænuntiata Numerorum 24 à Balaam*; tum quia isti Magi erant periti in astrologia, & in astris signa obseruabant; tùm quia quidam opinati sunt, quòd ista stella fuerit Spiritus sanctus descendens sub forma stellæ, sicut sub forma columbæ, ignis, aeris, &c. tum quia sunt opinati fuisse Angelum aurigam stellæ, probum, aut improbū, aliunde non videtur impossibile Deum indicasse filij natiuitatem, sicut fecit diuulgari à Dęmonibus expulsis ex obsessis miraculosè illius diuinitatē. Respondetur discere potuisse ex Balaā stellæ ortū, quæ esset figura, & typus Christi; sed nō didicisse tēporis natiuitatē, nec locū. Ex astrologia autē nihil supernaturale mysteriorum fidei potuit certo diuinari: admitto authores grauissimos asseruisse, fuisse Spiritū Sanctum; sed interpretandi, benigne, non personaliter, sed efficaciter illuminando mentes; quia stella exterius apparente interius mentem illuminabat. Admitto etiam Angelum aurigam stellæ, & motorem illius localiter, Deum tamen illuminasse, & mouisse mentem Magorum, vt indicem natiuitatis agnoscerent. Denique licet non sit impossibile diuulgari mysteria per Angelos inuitos, non constat improbum Angelum mouisse stellam, & diuulgasse natiuitatem Christi; potius sanctum, & bonum.

Conclusio asserit quartò, quòd *fuit vna, & eadem stella, quæ ab initio apparuit in Oriente, & quæ iterum apparuit in egressu ex Hierusalem ad Bethleem, non plures distinctæ.* Primò ex textu vbi dicitur, *& ecce stella, quam viderant in Oriente antecedebat eos vsque dum veniens staret supra vbi erat puer.* Vbi in singulari loquitur de stella, & indicat identitatem inchoantis ducatum, & prosequentis in finem. Secundò, quia vna sola sufficiebat ad intentum ducendi illos, & non sunt multiplicanda miracula, nisi vbi est vrgens necessitas; & ita quærenti quare Magi per vnam stellam sunt vocati, & ducti, aptè respondetur, quia sufficiebat vna, & non erat vrgens necessitas plurium. Vltimò, nam vna fuit illa columna nubis, & ignis, quæ dirigebat populum Hebræorum in deserto in terrā promissam Exodi 12. quæ fuit figura, & typus huius stellæ, cum constaret valde diuersis, nube & igne, &

nocte illuminaret, & die obumbraret, ergo vt sit concordia figuræ ad figuratum dicendum, quòd ista stella fuit vna, & eadem vtrobiq; & diuersis temporibus (sicut vna, & eadem columna nubis, & ignis) cum variis, & diuersis exercitijs, motus, & quietis, apparitionis, & disparitionis, ad imitationem columnæ cum suis, cuius emula fuit stella.

Conclusio asserit vltimò, *disparuisse diuinum in Hierusalē, vt Magi deserta à stella cogerentur ingredi, & interrogare, & publicare natiuitatē per interrogationē.* Primò, ad instructionem, & confusionē Iudæorum, eò quòd gentiles veniebant requirentes per alienas prouincias, & illi ab infantia instructi per Prophetas, & legisperitos nō requirebāt, nec suscipiebant Christum natum in terra sua. Secundò, vt interrogati Iudæi vbi Christus nasceretur essent coacti respōdere de Bethleem, & ita post interrogationem, & responsionem, inquit textus, qui cum audissent, abierunt, & ecce stella, quam viderant in oriente antecedebat eos, vsque dum veniens staret supra vbi erat puer.

AD MORES.

Quòd *stella diuinæ gratiæ, non solū excitat, sed etiam etiam comitatur ad bona opera.*

Quòd *Deus se ingerit inclinationi, & studio cuiusque, vt suauiter ad se trahat omnes.*

Quòd *Deus excitat ad studium bonorum operum, non solùm interna illustratione, sed externa protectione admouendo proficua, & repellendo noxia.*

Quòd *Deus non semel tantùm, sed semel, & iterum vrget nostram iustificationem vsque quo assequatur intentum.*

TEXTVS.

Vers. 3. *Audiens autem Herodes Rex turbatus est, & omnis Hierosolyma cum illo. Etiam turbata est.*

AD LITTERAM.

Dub. 12. *Quare turbatur Herodes audiens natum Regē Iudæorum? & quare dicitur tota Hyerosolima turbata?*

Conclusio asserit primò, *turbari Herodem multiplici ex causa, & inter litterales sit prima.* Ideo turbari, quia audiebat legitimum Regem natum, & cum esset Tyrannus, timuit amittere Regnum, erat enim intrusus per tyrannidem, & alienigena, & meritò timuit, quod Iudæi audientes legitimum, & proprium facilè exciperent, & extraneū repellerēt, qui enim iniustè possidet, timore, & angore possidet, præsente legitimo, & naturali possessore, & ita egisse comprobatur, eò quòd Herodes partim dolo, partim vi, & aperto marte fecit occidi, vt illorum occisio pareret securi-

curitatem ; primo enim occidit Hyrcanum Pontificem, deinde illius nepotem Pontificem Aristobolum, & filiam, & eius matrem Alexandram, deinde filios filiæ Marianæ Aristobolum, & Alexandrum, & alios legitimos hæredes, & tandem ista fuit causa cur aggrederetur occidere Christum legitimum Regem Iudęorum in illo infanticidio bimorum ortu, quæ ratio est deducta ex innumeris PP. quos congerit Sylueria ibidem. Secundo ideo turbatur, quia vt ait Anselmus timebat indignationem Romanorum, si illam stationem amitteret Regni intrusi admittendo legitimum. Nam Romani decernebant, ne quis diceretur Deus, aut Rex sine cõsilio, & assensu suo. Tertiò, ideo timebat, quia sibi conciliauerat odium Iudæorum pluribus ex causis ex quibus non leuior, quòd vexabat rempublicam tributis onerosis, & facile timebat coniurationem exoriri ad excutiendum graue iugum impositum à Tyrano, & alienigena: nam à naturali, & proprio, licet egrè sustinetur præsertim vrgente Regis indigentia. Mitto alias minus litterales, ideo timere, nam maximæ dignitati sepe solet esse anexa ingens cura, timiditas, & angor amissionis, & ideo timuisse, quia possidebat mala conscientia in præiuditium legitimi, & ideo timuisse, quia est valdè ærumnosum Principari præsertim Tyrano subijci sub potestate inferioris ; durum enim est videre æmulum in prosperis 1. Reg. 2. & legit Symachus, aspicies tribulationem, semper enim grandis potestas timori, & angori maximo subiecta est.

Conclusio asserit secundò, quòd, *omnis Hierosolima turbata est*, quòd intelligendũ non, quòd omnes, sed quod aliqua pars. Nã accipitur omnis Hyerosolima in Metonymia, continens pro contento, aut synedoche totum pro parte, & contra, pro illa scilicet parte, quæ assistebat Herodi, secus pro Simeone iusto, & alijs spectantibus Christũ, cum esset ratio magna gaudendi omnibus Iudæis de aduentu Mesiæ, Regis legitimi, & Redemptoris Israel; nam erat glorioſsius habere Regem de genere suo, quam de extraneo, & alieno. & ita est ratio turbationis ex litterali; quia formidabant amittere dignitates, & priuari sacerdotio, eijci de templo, amittere oblationes, & donatiua, & remoueri à turpi lucro, & symonia ex aduentu Regis legitimi, Sancti, & iusti iudicis. Secunda ratio timoris est, nam formidabant occidi ab Herode, si turbationi illius non aquiescerent publica conturbatione, simulando saltim illi adstituros, & auxiliaturos, lenocinantes illius Tyranidi, quasi adulatores complices. Iuxta Paschasiũ lib. 2. Metuebãt (inquit) Mesiã, ne illos puniret, & castigaret male vtentes

officio Pontificis, sacerdotis, scribę, &c.

ADMORES

Quòd *suprema potestas maioni quatitur timore, anxietate amittendi Regnum præcipue Tyranicum.*

Quòd *accensus inuidia egre fert excellentiam, & dignitatem contemporaneam.*

Quòd *iniquus Populus Principi iniusto est in adiutorium, & disfauorem pauperi, proximo, ope destituto.*

Quòd *adulatio cogit ad lenocinium Principis, cum iactura, & dispendio priuato.*

TEXTVS.

Vers. 4. *Et conuocans Principes sacerdotum, & scribas sciscitabatur ab eis vbi Christus nasceretur.*

AD LITTERAM.

Dub. 13. *Cur conuocauit Principes Sacerdotum, & Scribas? & an fuerit in Populo Iudaico vnus Princepes, & Pontifex summus? & quare ab illis quærit locum natiuitatis? & quinam sint Principes sacerdotum? qui scribæ? Et vbi natus esset?*

Conclusio asserit primò. *Interrogasse Principes, & scribas Sacerdotum, non aulicos, & familiares, imperitos, quia cupiebat diffiniri veritatem certissimè sine omni adulatione.* Ratio, nam est consilium petendum, & inquirendum diligenter à doctis, & eruditis, ij autem erãt Principes sacerdotum, & scribæ in lege doctissimi, erant enim legisperiti litterati, & scribæ peritissimi, publici notarij, quorum erat munus, non tantum scribendi, sed interpretandi, & legendi sacram scripturam. Qualis fuit Esdras scriba Dei in lege doctissimus, vnde sæpe solebant vocari legisperiti licet alias essent iniquissimi, intenti lucris, comoditatibus, & grauãdis oneribus.

Conclusio asserit secundò. Quòd, *quærit ab illis locum natiuitatis Christi, non sine causa.* Prima, nam ideo voluit scire certò, vt quæreret facilimè, & inuentum interficeret: quia non solum sub dolo quærebat, vt diuinaret illorum animum erga Regem natum; sed vt occideret. Secunda ex Hugone Cardinali; quòd interrogauit, vt præueniret testes apud Romanos, testificantes nihil omississe diligentię circa inuestigandum Regem nouum. Vltimo interrogasse vt fatentes veritatem, esset in sui confusionem, & inexcusabilitatem, quòd quem sunt confessi, crucifixuri essent, & licet diuina prouidentia posset id accidisse, vt inuiti cogerentur interrogatione ita respondẽtes, mihi verisimilius, incertum est, id mouisse animum Herodis, & ita est ista ratio minus litteralis prioribus.

Conclusio asserit tertiò. *Fuisse in*

in populo Iudaico vnum tantum summum Pontificem, & sacerdotem stando in lege ordinaria. Ita Abulensis 2. Reg. 8. &. 9. & hic q. 26. Rodulfus lib. 4. in Leuiticum q. 3. & nouissime Mald. Siluei. & alij. Primò, ex Math. 26. Marci 1. & Lucæ 22. ex quibus constat non improbabiliter fuisse tantum vnum Principem sacerdotum. Et Leuitici 21. vers. 10. Vbi dicitur summus sacerdos Maximus inter fratres ex familia Aaronis. Secundò ex PP. August. Cyril. Chrisost. & alijs apud Mald. & Syluei. Tertiò, nam Numerorum 35. vers. 12. non teuertebatur in patriam homicida à ciuitate profugus, ante mortem Pontificis, quòd si essent plures, erat exprimendum de cuius morte esset sermo. Confirm. ex Exodi 29. vers. 19. quia filius non induebatur veste summi sacerdotis nisi post mortem patris. Quartò; nam dixi *ex lege ordinaria*; nam potestate diuina fuit olim facta dispensatio vt Moyses, & Aaron fuissent summi sacerdotes, & nō ineptè deducitur ex Ps. 98. *Moyses, & Aaron* in sacerdotibus eius. Deindè ex PP. August. Nazianceno, & alijs apud Sylueirā, quòd latè insequitur Lorinus. Rursus est sententia communis quòd Abiathar, & Sadoc fuerint summi sacerdotes, vt latè Toletus, Pineda de rebus Salomonis, & alij apud Sylueiram; & colligitur ex 2. Reg. 15. & ex primò. Paralipomenon 24. Vltimo quòd in populo Iudaico fuerit tantum vnus summus Pōtifex, & sacerdos colligunt aptè Maldon. & noster Beaugxamis ex illo Ioan. 11. vbi dicitur de Chaipha. *Cum esset Pontifex anni illius, & Ioan. 17 adduxerunt eum ad Annam primum, erat enim socer Caipha, qui erat Pontifex anni illius*, & ita Caiphas erat solus in Pontificatu.

Argui potest *fuisse plures summos Pontifices, & sacerdotes tempore Christi* ex Ioan. 18. *Annas, & Caiphas.* Secundo, ex Lucæ 1. vbi dicitur de Zacharia Patre Baptistæ, *Cum sacerdotio fungeretur in ordine vicis suæ.* Vbi indicatur fuisse plure annuales, qui fungebantur summo Pontificatu, & videtur sententia Aug. tract. 49. in Ioan. Resp. quòd Chaiphas erat Pontifex, nō Annas, ex præcitato solum colligi potest, quòd asset Annas iudex ordinarius. Ad secundū dico fuisse Sacerdotem Zachariam, sed non summum, nisi accipiatur vox summus latiori acceptione pro capite, & Principe familiæ. Ad Diuum Augustinum dico, ita sensisse, sed non censuisse inopinabilem nostram sententiam, quam sequimur ex alijs patribus, & forte inclinauit Augustinus.

Conclusio asserit quartò. *Istos Principes sacerdotum fuisse capita diuersarum familiarum sacerdotalium*: Ita interpretes, qui nobiscum asserunt fuisse vnum summum Pontificem; cæteros

dici Principes sacerdotum, eo quòd fuerint capita primaria diuersarum familiarum sacerdotalium. Primò ex 2. Paralip. 36. & hi erant ex magno Concilio Sanhedrin, & in templo inseruiebant per vices suas ad sacrificia quotidiana, vt dictũ est de Zacharia Luc 1. Secũdò, nã tẽpore Dauidis iam erant plures Principes sacerdotum, vt constat ex 1. & 2. Paralip. præsertim ex 1. 24. Nam Dauid cum in familia Aaronis essent multi ad vitandam confusionem, & contentionem diuisit eos in 24. Clases, seu familias, & qui erat caput alicuius familię ex sacerdotalibus dicebatur Princeps sacerdotum, & ita in præsenti dicebantur Principes Sacerdotum, non plures summi Pontifices; sed plures primarij diuersa capita familiarum. Vltimo; nam summi sacerdotis primogenitus filius succedebat in Pontificatu parẽti defuncto, eratque summus Sacerdos, & ingrediebatur semel in sancta sanctorum.

Conclusio asserit quintò. *Qui sint scribæ? dicitque fuisse Notarios publicos.* Ex Remigio in Math. qui dicit sunt Scribę non tamen tã ab officio scribendi, quã interpretandi sacras scripturas; Erant enim legis Doctores, qui custodiebant scripturam, explicabant sensus earum, & conficiebãt instrumenta publica, constat ex 4. Reg. 22. Esdræ 7. Math. 7. ex quibus constat de officio eorum; erant enim non legislatores, vt quidam opinati; nam eorum non erat tam eminens dignitas, vt haberent potestatem condendi leges; sed solùm dicebantur legis periti, non conditores, ex Lucæ 7.

Cõclusio asserit vltimò. Quòd, *Quæsiuit Herodes vbi nasceretur non vbi natus esset; quia scire volebat sub calidiate, & dolo, an iam esset natus? An nascitnrus?* Iuxta Paschasiũ lib. 2. in Math. Si posset deprehendere ex vultu, an gauderent de natiuitate Regis eorum in lege promissi, an tristarentur, an æqualis essent animi erga iam natum, & nasciturum, vt iam natum occidere diligentius satageret.

AD MORES.

Quòd *solet reddi suspectum inditium ex vnitate sanguinis, patriæ amicitiæ, & ita cauendum.*

Quòd *simulatio semper intendit aliud, quam demonstrat exterius.*

Quòd *in re publica vnius capitis gubernium præferendum in Monarchia cæteris, sicut in re familiari.*

Quòd *Doctores, & Magistri tenẽtur incumbere sapientiæ, fidei, scripturæ, & morum ad dirigendum plebem in doctrina sancta.*

Quòd *cauenda sint periculæ ruinæ spiritualis, & temporalis de præsenti, & in futurum.*

TEX-

TEXTVS.

Vers. 5. *At illi dixerunt in Bethleem Iuda, sic enim scriptum est per prophetam.*

AD LITTERAM.

Dub. 14. *Cur natus est Christus in Bethleem? & quis fuerit Propheta citatus sine nomine? Et quare hic Euāgelista in narratione prophetiæ sit vsus diuersitate, & mutatione verborū? an seruauerit sensum, non verba? & quæ sint antilogiæ inter Prophetam, & Euāgelistam? & qua ratione concilientur?*

Conclusio asserit primo, quòd *voluit nasci in Bethleem multiplici ex causa.* Prima, vt impleretur ista prophetia Micheæ 5. nominati sub nomine solo Prophetæ, cum subintelligi debeat Micheas. Secunda fuit vt haberetur filius Dauidis, qui fuit natus in Bethleem, & cui facta fuit promissio de futuro Messia; vt aptè Cornel. & Sylueira; qui addunt alia moralem, vt scilicet doceret amplecti humilia natalitia, humilem domum. Iuxta Leonem serm. 1. de Epiphania, qui formam serui, præelegit, natiuitatem Bethleē vt sui ortus gloriam ocultaret, & publicaret exemplo, parentum gloriam ocultandam, & humilia propalanda. Aliæ rationes in dubio secundo faciunt ad præsens.

Conclusio asserit secundò, quòd. *Iste Propheta innominatus fuit Micheas cap. 5. sua prophetia hic relatus communi nomine.* Ita interpretes præcitati Cornel. Maldon. Sylueira, & alij, & non est insolitum citari Prophetas sub nomine comuni, & reticeri proprium. Math. 1. *sic dictum est per Prophetam, ecce virgo,* &c. Et intelligebatur Isaias, quasi omnium esset vna prophetia ab eodem spiritu sancto vera, certa, & infallibilis. Denique ex Ruperto in prolo go in Matheum, vbi ait: soli Dauid, & Micheæ reuelatus est locus natiuitatis Christi. Dauid, Psal. 131. *Ecce audiuimus eam in Ephrata,* id est Bethleem. Genes. 35. vers. 19. Micheæ verò præcitato loco.

Conclusio asserit tertio. *Illa diuersitate processisse Euangelistam, quia retulit dictum testimonium, vt dictum à Principibus, & Scribis, sed diuersitas non fuit in sensu, & substantia, sed in verbis, vt facilius innotesceret Herodi alieginæ.* Primò pars probatur; nam ab Herode facta fuit interrogatio Principibus sacerdotum, & scribis, vbi Christus nasceretur, & illi responderunt in Bethleem Iuda, & citarunt testimonium à Propheta dictum, hoc retulit Euangelista diuersitate, non in sensu sed in verbis. Nam ista sunt verba prophetę Micheę cap. 5. numero 2. *Et tu Bethleem Ephra-*

Ephrata paruulus es in millibus Iuda ex te mihi egredietur qui sit dominator in Israel, & egressus eius ab initio, à diebus aeternitatis Euangelistę verò verba sunt hæc, *Et tu Bethleem terra Iuda, nequaquam minima es in principibus Iuda, ex te enim exiet dux, qui regat populum meum Israel.* Vbi inter prophetam, & Euangelistam est diuersitas in verbis tantum: nam idem est sensus substantialis inter vtramque, vt statim constabit, quod non est infrequens in scriptura. Accipite vnum aut alterum exemplum. Isaiæ, 7. legitur, *ecce virgo concipiet, & pariet filium, & vocabitur nomen eius &c.* Math. vero 1. legitur *sicut dictum est per Prophetam ecce virgo in vtero habebit, pariet filium, & vocabunt nomen eius, &c.* Secundum erit, Ieremiæ 31. Legitur, *vox in excelso audita est lamentationis, luctus, & fletus Rachel plorantis filios suos.* Math. verò secundùm quòd *dictum est per Prophetam Ieremiam. Vox in Rama audita est, ploratus, & vlulatus Rachel plorans filios suos,* &c. In quibus inuentur diuersitas, non in sensu, nam est idem vtrobique, sed in verbis, & noster Euangelista retulit scribarum verba aliàs, si intenderet referre sensum, & verba Prophetæ, non immutaret vel minimum verbum, sed Scribæ, & legis periti non protulerunt verba Prophetæ ipsi Herodi, vt ille facilius perciperet, nam erat alienigenâ, & non habebat notitiam vllam illius nominis Ephrata, erat enim nomen vetustissimum, quo intitulata erat Bethleem, & minus notum quam nomen Iuda, & ita responderunt in Bethleem Iuda, vt visitatiori, & notiori verbo conciperet de quo erat sermo in præsenti, vbi agebatur de loco natiuitatis Christi. Ista enim Bethleem in tribu Iuda erat binnomia, & à conditore dicta est Ephrata, nam eius fuit conditor, & pater Bethleem, ex 1. Paralip. 4. vers. 4. *isti sunt filij primogeniti Ephrata, pater Bethleem,* Ephrata autem apud illos Hebræos idem est quòd frugifer, & significat Bethleem, nam est interpretata domus panis, ita Cornel. à Lapide, & recentiores. Non melatet quod dicit Gislanus, quòd vocata est Ephrata ab vxore Caleph, & facta ibi fame tempore Elimelec, & Nohemi vxores peregrinati sunt interram Moab; & inde rediisse Nohemi viduam cum nuru Ruth vt habetur cap. 1. Ruth, & transacta fame reddiisse in Bethleem in tempore abundantiæ, quę est vocata tunc Bethleem, ratione copiæ, & abundantiæ panis. Et Herodes ignorabat historiam, & ob id non responderunt scribæ Bethleem Ephrata, sed Bethleem terra Iuda, sita enim erat in terra Iuda, vt distingueretur ab altera, quæ erat in terra Zabulon. Ruth enim primo satis aper-

apertè constat quòd ante regressum Noëmi cum Ruth nuru illud oppidum vocabatur Bethleem, & ita in præsenti leue videtur disidium, an sit appellatum Ephrata, à viro conditore, aut vxore eius, id verò certum est ex 1. Paralip. 4. quòd Ephrata fuit pater Bethleem, & ita fuit binomia Ephrata, & Bethleem.

Probatur secunda pars, scilicet quòd *diuersitas non fuit in sensu, sed in verbis*; si enim sincerè expendantur, est triplex antilogia inter Prophetam, & Euangelistam. Prima est quòd Matheus appellat Bethleem, Micheas Ephrata, & iam ostendi, quòd idem oppidulum fuit binnomum, & ita est concordia in sensu, nam id est significatum per verba diuersa. Secunda antilogia est quòd pro verbis Micheæ *Paruulus es*, scribit Matheus omnino contrarium dicendo *nequaquam minima es*, & aduersatiuam clausulam, sed discordia est in verbis. Primo quidam probant dicendo, quòd in Michæa clausula illa *paruulus es* legi debeat cum interrogatione; paruulus es? Nam licet sis minima, nequaquam, euades enim maxima oriundo Christo, quod sine interrogatione legit Euangelista per aduersatiuam, *nequaquam minima es*. Displicet, quia interrogatione carent codices Romani. Secundò alij verius intelligi implicitè illam particulam aduersatiuam apud Michæam in stylo sermonis, quam protulit Euangelista explicitè, vt sit sensus ò Ephrata paruulus es populus, in situ quidem murorum, ita, sed nequaquam in Principibus à te ortis, & oriundis. In te natus est Rex Dauid, ex te orietur Christus. Etenim viri præclari, virtute, nobilitate, litteris, armis, exaltant & magnificant sui originis ciuitates, Genealogias, collegia, Religiones, sed de hac antilogia latius nostra lectura de arte, & methodo exponendi sacram scripturam disputatione 4. dub. 16. & 9. dub. 20. Tertia antilogia, est quòd Michæas habet *in millibus*, Euangelista verò pro millibus legit *in Principibus Iuda*; sed in idem recidit; nam apud Hebræos verbum Eleph significat militem, & Principem. Nam in Principibus Iuda idem est, quòd inter Principes vrbes, & homines contentos ambitu earum; in millibus idem est, quod inter ciuitates continentes innumera millia, vnde dici solent principes. Nam à Moyse erat populus Israel dispertitus Chiliadas per millia familiarum, & vna quaque habebat suos principes, & Duces, &c. Ex Exodi. 18. & Iudic. 6.

Ex quibus est adhibita decisiõ ad alia quæsita in dubio quæ sint an

antilogiæ inter Prophetas, & Euangelistas, & qua ratione possint redigi in concordiam.

AD LITTERAM.

Dub. 15. *Quare Pontifices, & scribæ nõ retulerint integram prophetiam? & cur non dixerint ex te exiet filius Dei & Rex; sed dux? & cur non rexit omnem populum Israel? & quare non fecit mentionem de gẽtibus? quæ recta sunt per Apostolos?*

CONclusio asserit primò. *Non retulisse Euangelistam integram Prophetiam; quia scribæ cætera silentio continuerunt.* Ita Syluei. Et alij. Primo, nam si retulissent illa verba prophetiæ Herodi, *& egressus eius ab initio, à diebus æternitatis.* Non tentaret Herodes occidere Christum, & infantes; nam forte attendisset, quòd erat Rex immortalis, & æternus ab initio, seculorum; non mortalis terrenus, licet malitia eius esset eò cæca, & obdurata, quòd non aquiesceret testimonio Magorum, & stellæ; nam non ita clare deduxit ex illis, esse Regem cęlestem, sed temporalem Iudęorum. Iuxta mẽtem imperfecti in Math. homil. 2. & S. Th. hic. Secundò nam Scribæ dimidiarunt silentio, & ita retulit Euangelista. Dimidiasse autem vaticinium, quia iudicabant ægrè accipiendum ab Herode, & ideò suppręsisse cęteras clausulas. Vltimo vt captarent Regis fauorem, & lucrum, silentio Regis legitimi intrusum adulantes.

Conclusio asserit secundò. *Non dixisse ex te exiet Rex, aut filius Dei, sed dux, qui pascet populũ, ex can sa.* Primo iuxta Chrisostomum; nam in principio oportebat silentium tanti mysterij. Secundò ob rationes iam dictas, quibus silentio conticuerunt.

Conclusio asserit tertiò, quòd *licet Christus non rexerit omnes, & singulos populi Israel temporali gubernatione, in re erat Rex temporalis Iudæorum,* & dicitur rexisse doctrina Israel, quia rexit, qui crediderunt in eum, & hic est figura synecdoche. Et si non rexit omnes quoad efficatiam eorum malitię tribuendum, in maiorem iacustationem quòd sui eum non receperunt.

Conclusio asserit vltimo. *Non fecisse mentionem de Gentilibus prophetiam, quos rexit mediantibus Apostolis, vel quia implicitè dixit sub particula Israel,* quæ summi solet pro credentibus, vel ne scandalizaret Iudæos desserendos, & vocandos gentiles. Præsertim cum inchoata esset illorum vocatio in his Regibus.

AD MORES.

Quòd *veritas debet spectari secundùm se præcisa dignitate, aut in dignitate proferentis.*

Quòd *veritas debet fideliter referri in narrationibus.*

Quòd *idem est sensus in verbis à Prophetis, & Euangelistis prolatus, licet sit diuersitas verborum, sicut idem auctor omnium Spiritus Sanctus.*

Quòd *in scriptura, non sunt contradictiones in re, sed in apparentia.*

Quòd *prædicatores tenentur integram veritatem aperire Regibus, siue vltrà assentationem.*

Quòd *Doctores aperire debent veritatem auditoribus stilo claro, vt ab omnibus percipiantur.*

TEXTVS.

Vers. 7. *Herodes clam vocatis Magis, &c.* Vers. 8. *& mittens illos in Bethleem dixit ite, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 16. *Cur Herodes vocauit Magos secretò, & non publice? & cur diligenter inquisiuit ab illis, & quare nō iuit cum Magis in Bethleem, nec vllus de populo? & cur intendebat occidere sub prætextu adorandi, si existimabat Deum? & quare iubet interrogare de puero, & non de Rege.*

Conclusio asserit primò, quòd *vocauit Magos secretò, & non publicè multiplici ex causa.* Prima vt inuestigaret ab illis, sine testibus omnes, & singulas circunstantias nati Regis, & apparitionis stellæ, indicis, quia qui male agit odit lucem, ille autem intendebat infanticidium ad Regni sui securitatem. Id autem quòd inter plures cōfabulatur in colloquio publicatur facilius, & aliunde animus dolosus procedit simulatè, vt aliud sit in corde, & aliud appareat in lingua, in corde habebat infanticidium, in lingua adorationem. Et vt apte Chrisologus sermone 158. mens simulata nihil palam audet, fur enim amat noctem, & latro occultus tendit insidias. Secundò vocauit secretò, & non publice, ne Iudæi officerent inquisitionem, & machinationem mortis sui Regis, & inde excitaretur rumor, & tumultus in populo, qua expectabat Messiam, & vt amatores Regis oriundi ex natione sua rebellarentur in alienigenam intrusum. Vt notati sunt PP. Chrisost. Ansel. S Thom. & alij apud Sylueriam.

Conclusio asserit secundò. *Ita diligenter quæsisse à Magis, quia timebat brebi recessuros, illo inuentato, nec reddituros ad certificandum, de inuento puero.* Nam facile labitur occasio inquirendi, & certificandi, & illa præsente arripi debet iuxta Remigium in Matthæū.

Conclusio asserit tertiò, quòd *non accessit ad Bethleem cum Magis multiplici ex causa.* Prima, & à prio-

ri

ri fuit diuina voluntas in cuius manu est cor Regis, quæ non mouit, vt abiret cum Magis. Secunda, & maxime litteralis, ne si iret cum eis, non inueniret puerum. Nam iudicauit, quòd esset notissima sua crudelitas, & timerent parentes pueri manifestare eum, aut fugerent in aliam regionem occultam, ne posset inueniri. Tertia, nō iuit cum Magis qui vidit interrogantes, vbi nasceretur, & ire in dubiū, præsertim cum in ingressu Hierusalem disparuisset stella dux antesignanus, & si sciret iterum apparituram in exitu de ciuitate. Iret cum eis, si udicaret se ire in rem certam, vt erudite Abulensis quæst. 34. Quinta, non iuit cum illis, ne Iudæi suspitionem haberent, quòd ipse intendebat malum in proprium Regem, & ne citò se mouentem ex animi leuitate aduerterent Reges alienigeni. Sexta, ne Iudæi olfacientes velle Herodem occidere suum Regem diligenter, eum occultarent. Deni que non iuit, cum Magis ex diuina prouidentia ad euitanda incōuenientia, ne Magi impedirentur videre Christum, & ne occideretur ante tempus præscriptum à Deo. Et ne fieret miraculum subtrahendit puerum ab oculis eius, aut quoduis aliud in eius defensionem. Et tandem quia infidelitas, & stultitia eius, non merebatur inuenire, & videre Christum.

Conclusio asserit quartò, quòd, *non iuit aliquis de populo cum Magis multiplici ex causa.* Prima, à priori est ratio diuinæ voluntatis, quæ non mouit efficaciter. Nam nemo potest venire ad Christum, nisi Pater traxerit eum. Secunda, ex Leone sermone 4. de Epiphania. Nam Iudæi iniusti placere voluerunt Herodi, cum dissidentia sui legitimi Regis Christi iusti autem, & morigeri Iudæi non sunt ausi præ timore ire cum Magis, cum tamen essent bene affecti erga proprium Regem, ne conciliarent eius iram, & furorem. Et ita, nec boni, nec mali secuti sunt Magos, vt Herodi se conformarent. Nam mouetur orbis Regis ad imperium, & mouetur cum Principe vulgus. Adeo, validum est, & efficax Regis exemplum, vt omnes post se trahat bonos, & malos, spōtaneos, & inuitos. Et vt aptè Chrisostomus sermone de continentia Ioseph. Est exemplum in animalibus sequentibus ducem, vnam ouem, grex; vnam columbam omnes, &c.

Conclusio asserit quintò. *Intendisse occidere, cum esset Deus multiplici causa.* Prima, & litteralis quia non sciebat esse verum Deū licet audiret esse Messiam, tum quia Principes, & Scribæ à quibus interrogauit Michææ Prophetiā truncauerunt, in silentio prætermittentes dicta verba, & *egressus eius ab initio*, à diebus æternitatis, & cum ipse esset alienigena, non

non erat satis instructus in lege,& licet multi ex legisperitis, & alijs eruditis Messiam esse Deum existimarent, non erat populo vulgare, & dato quòd audierit vir iniquus, non dedit assensum,potius existimauit, quòd licet Messias esset vir iustus, & bonus posset occidi ab ipso,sed decipiebatur Herodes in eo, quia prædictio de futuro Messia erat efficax,quam ipse impedire non poterat, & dissipuit multomagis si furor ira,& passio, ita eum excæcauit, vt existimaret se posse occidere puerum, licet esset Deus, vt contingit illis Philistæis 1.Reg.4 qui cùviderint arcã adductam ab Israelitis ad castra recognoscentes Deũ, *ij sunt Dij, qui percusserunt Egyptum* existimauerunt se posse erigere contra Deũ dicentes,*confortamini*, & estote viri Philistini,& bellate. Dominãdi liuido ita mentes oppressit, vt admittentes Deum venisse in castra, sibi suasserunt posse triumphare.

Conclusio asserit sextò. *Intendisse occidere sub pretextu adorandi, quia finxit se velle Christum adorare, vt sibi fidos, & obsequentes redderet Magos*, sub fraude vulpina occultans animum occidendi, voce adorabat & animo iugulabat,Magis dicit se adoraturum,vt Deum, & interius destinabat occidere vt hominem,& Regem.Sic Carazalla in sinu matris occidit fratrem imperij consortem apud Sparcianum in vita Xetè fratris eius,& vt mitigaret scelus,prætextu pietatis retulit fratrem inter Diuos,dicens sit Diuus,dum non sit viuus.

Cõclusió asserit vltimò, quòd, *iussit interrogari de puero, & non de Rege*, quia vt aptè Chrisostomus talis erat ambitio, quòd nec vocari Regem eum sustinebat, & ita vocauit puerum,& non Regem.

AD MORES.

Quòd *secreta magni momenti, & ponderis,siue status, siue militiæ, non sunt communicanda multis ad fœlicem euentum.*

Quòd *citò prærripienda boni occasio,ne dispareat.*

Quòd *improbi difficile agregantur congregationi iustorum ad Dei obsequia.*

Quòd *misera mortalium conditio, quæ præfert iniquam voluntatem Regis terræ, & contemnit præcepta Regis cœlestis.*

Quòd *ea est audatia vehementis passionis, vt audeant in Deum cupiditate boni temporalis.*

Quòd *ambitio sui honoris auida, non patitur,nec rumorem aliorum.*

TEXTVS.

Vers. 9. *Qui cum audissent Regem abierunt,& ecce stella.*

AD

AD LITTERAM.

Dub. 17. *Cur ſtella diſparuerit ad ingreſſum Hieruſalem, & iterum apparet Magis in egreſſu, & ducit ad Chriſtum?*

CONcluſio aſſerit primò, quòd *ſtella, quæ in via ducatum præbuit ad introitum Hieruſalem diſparuit multiplici ex cauſa.* Prima, vt publicarent Chriſtum Meſiam natum in ciuitate, quæ erat caput totius regni, & ex illa manifeſtarent illius maieſtatem, & illorum exẽplo excitarentur Iudæi ad excipiendum Chriſtum, & adorandũ, & confunderentur, quòd propinqui, non quærerent quærentibus exteteris gentibus. Secunda ex Hugone, quia in lege inſtructi, & domeſtici, *ſi non audirent Moyſem, & Prophetas, nec ſiquis ex mortuis ſurrexerit credent*, Lucæ 16. & ita non illuxit eis ſtella, vt conuerterentur. Sed iſta ratio eſt minus efficax. Nam diſparere debebat iſta ſtella, non ſolùm in ingreſſu Hieruſalem, ſed in ingreſſu ipſius Iudeæ, & non diſparuit, vbi iam erant domeſtici legis. Similiter eſt parum litteralis, quæ dicit diſparuiſſe, quia amittit lucem Dei, qui appropinquat Hypocritis, & hæreticis, & recuperat, dum recedit ab eis, quia diſparere debebat in ingreſſu terræ Iudà, vbi habitabant Iudæi. Tertia eſt ex parte Magorum, vt inquirerent de illo Rege nato, & firmarentur in notia, quòd eſſet Rex, Deus, & Meſias, dum ſcirent à Iudæis certò expectari. *Sed non eſt firma*, tum quia Magi ex illuſtratione diuina ſciebant, quòd inquirere poſſent à Iudęis, potius videtur diſparuiſſe propter primã rationem. Quartò redditur ex parte Magorum, ex Caſsiano lib. 1. cap. 14. vt Magi nouici j in fide, & incipientes amplius firmarentur teſtimonio Prophetarum. Et illo fouendi, & iubandi, ſicut plantæ teneræ ſolent ſæpius irrigari ad augmentum. *Videtur infirma*, quia ſatis diuina gratia, & illuſtratione erant roborati. Quintò, ex Bernardo ſermone 3. de Epiphania amiſsiſſe cœli ducatum, flagitantes terrenũ conſilium. Nam ſignum cœleſte deſſeruit conuerſos ad terrenum documentum, quæſierunt enim ducatum humanum, dum interrogant, vbi eſt qui natus eſt, &c. & ideo deſſeruntur à ſtella cœleſti. *Sed hæc ratio* eſt myſtica. Secundò, quia non quæſierunt ſtella vigente, & apparente, ſed poſtquam diſparuit interrogant, vbi eſt, &c. & ita ſtandum priori, vt magis litterali. Vltima, quia diſparente ſtella in ingreſſu, licet nõ iudicarent fuiſſe deluſos, & ductos in incognitum potuerunt cogitare in illa ciuitate natum, & ignoraſſe locum, & domum determinatam, & ideo quærebant vbi eſt, qui natus eſt, ac ſi dicerent

in

Magis potuit non esse reuelatus determinatus locus, & ita existimo contigisse, vt fides, & obedientia cœca probaretur, quæ non discussit curiosè in initio, nisi de insequenda stella, non de inquirendo determinato loco. Et ita disparente stella cogitare potuerunt, quòd indicata ciuitate natiuitatis, solùm superesse posset inquirēda domus, & ita interrogant vbi est.

Conclusio asserit secundò, quòd *iterum apparet in egressu, vt inchoatum perficiat opus, & lætitia perfundat magna, cum amissa recuperatur, & in fide firmarentur signo externo, ne ab incepto desistant.* Deinde, vt digressi à consilio prauo Herodis, cœlesti illuminatione mentis, & corporis præmiarentur, sed ista satis est mystica. Vltima ex Abulensi quæst. 39. vt esset index Christi nati in Bethleē inter cæteros recenter natos designata domuncula, in qua quieuit, & licet vissa fuerit ista ratio, non multum firma Patri Syluestræ, eò quòd illuminati interiori gratia peruenire poterant ad Christum, sicut excitati per Angelum pastores, & sicut Simeon, & Anna interno spiritu agnouerunt Christum in templo, tamen licet non fuerit de necessitate, fuit de liberalitate copiosa Dei, qua interius, & exterius illuminat, præsertim cum id fuerit necessarium ad continuandum inchoatum mirabile signum, indicatiuum Christi, aliàs nec ob initio apparitionis, & excitationis fuisset necessarius illius ducatus, assiduo motu per viam dirigendo, & anteceden do eos, cum interior illuminatio sufficeret ad dirigendum.

Conclusio asserit terriò, quòd *Magis reuelata fuit Christi natiuitas, non verò determinatus illius locus, ex rationabili causa.* Prima, vt illorū fides, & obedientia prompta probaretur. Secunda, vt nouicij in fide spe alerentur vlterioris, & specialioris signi dandi per gradus, vt tandem peruenirent ad finem, & terminum optatum. Id enim Deo non insolitum, sed de more, initia disponere suis, vt reuelet gradualiter cætera. Genes. 11. vbi præcipit Abrahæ, *exitum de terra sua, & de cognatione sua in terram*, quam postea erat demostraturus, & vt expendit D. Laurentius de ligno vitę cap. 7. de Abrahamo. Qui exiuit nescies, quò iret, quia perfecta obedientia debet esse simplex, & cœca, non discutiens, & curiosa. In quo Magi superarunt fortè fidem, & obedientiam Abrahami. Nam ille exiuit de terra sua nescies, quò iret, sed sibi propositis sex præmijs magni ponderis, vt aduertit Caietanus, ex initio capitis 12. Genes. & non legitur simile accidisse Magis, sed exisse de suis Regnis, nescientes quò irent.

AD MORES.

Quòd *qui distrahuntur ad terrena, amittunt cœlestia.*

Quòd *vult Deus inuigilare de erudiendo proximo in doctrina fidei, & morum, etiam cum dispendio nostræ commoditatis.*

Quòd *habenti ad manum præceptorem, & doctrinam salutis, & non proficienti negatur cœlestis, & publica.*

Quòd *fides nostra ita firmam habet certitudinem, quod nō veretur suscipi informationem inimicorum, potius iuuant credibilitatem.*

Quòd *Deus dat initium ad salutem nostram, & prosequitur cooperans in finem.*

Quòd *obedientia cœca, & prompta debet esse aurita, & executiua sine ingenio ad discutiendum, & examinandum præcepta.*

Quòd *ille agit viam salutis tutius, cum cœcè pergit in confidentia Dei.*

TEXTVS.

Vers. 10. *Videntes autem stellam gauisi sunt gaudio magno valde.*

AD LITTERAM.

Dub. 18. *An ista stella, quæ apparuit in egressu Hierusalem sit alia ab ea, quæ in oriente apparuit? & cur dicat Euangelista, quòd gauisi sunt, & gaudio, & magno, & valde?*

Conclusio asserit primò, quòd *non apparuit alia stella præter illam, quæ primò apparuit Magis, sed vna, & eadem fuit vtrobique.* Ita Interpretes communiter iuxtà dicta dubio 11. conclusione 4. vbi egimus de vnitate stellæ, quod iterum reuocandum in memoriam. Nam ex illis fundamentis vnitatis probatur etiam negatio alietatis, & diuersitatis, nec hic occurrit aliquid ampliandum, nisi quod refert Gislandus ex Boragine de apparitionibus varijs stellarum, & ex Chrisostomo, quòd quædam stella Magis in monte existentibus vissa, quædam descēdit ad eos in forma pueri, quædam apparuit in cœlo in circulo aureo, quæ continebat puellā puerum in vlnis tenentem, & iuxtà eam senex, qui non tangebat eam, quem puerum dicunt Christiani esse Dominum suum, & refertur ex Albumazar. Verum an sit certæ fidei, an incertæ, & superstitiosæ ibidem dixi, licèt sit pietati, & mysterio consonum, dum aliud non occurrat credibilius.

Conclusio asserit secundò, quòd *gauisi sunt gaudio magno, cum nemo gaudeat sine gaudio, vt indicaret fuisse maximum, & nimium supra modum ex causa sufficienti.* Primò indicem amissum inchoatum ducatum recuperarunt in finem perficientem, & illo non esse delusos, id enim quod placet, & delectat, semel amissum ad tempus redintegrat lætitiam, & gaudium cum recuperatur. Vt Iobo Regi amissa bona restitura reduplicarunt gaudium, & lætitiam, & Tobiæ lumen oculorum, quo priuatus

tus est ad tempus, iterum restitutum peperit ingentem lætitiam cap. 11. & Iosepho amissa libertas, restituta in Egypto lætitiam peperit ingentem, & consonat originali Hebræo, vbi legitur גְּדוֹלָה מְאֹד Geddola meod, id est maximo magno valdè, vel magno nimis Secundò, nam intellexerunt ex indice iterum apparente cum maiori fulgore, esse iam vicinum porticum, seu domunculam Christi infantis nati, quò ab initio tendebant. Tertiò, quia sublata est illis ambigendi occasio, & suborta confusio, an itineris inchoati oleū, & operā perdidisset, & dimissa tristitia, & turbatione intensissimo gaudio sunt exhilarati. Quartò ex Euthymio gauisi sunt visso duce veraci, quia legis Doctores in Hierusalem illis valde confusi, & suspecti sunt. Quintò, vt quidam volunt gauisi sunt gaudio magno valdè, quia gaudium de Deo dicitur perfectum, & magnum, iuxta magnitudinem obiecti, iuxta loquutionē scripturæ, Isaiæ 61. *Gaudens gaudebo* in Domino, & Anselmus ibi gaudio magno, qui gaudet propter Deum, qui est verum gaudium, sicut vita viuit, qui viuit virtutibus, quæ sunt vita spiritualis, & morte moritur, qui est in peccato, quod est mors, & Marci 16. de lapide, quo in sepulchro Christus claudebatur, dicitur *erat quippe* magnus valde, non tan quantitate molis, quàm dignitatis Thesauri concluſi, iuxtà Scuerum in Cathæna. Iam magnus meritò, quàm forma, qui creatoris corpus claudere, & operire sufficit. *Sed ista ratio* plus est mystica, quàm literalis. Nam digreditur ad mores, & dicta replicatio gaudentis gaudio magno valdè, indicat intensionem affectº, redolet enim exaggerationem, quam importare solet idiotissimum, verbi geminati in scriptura. Iuxta dicta in arte, & methodo anni præcedentis disput. 10. de idiotisimis scripturę dubio 7. de verbo geminato, quòd habet Emphasym in significando. Ibi videri possunt, ne actum agam.

AD MORES.

Quòd *dolens de amissa gratia, & virtutibus dispositus est valde proxime ad illa recuperanda.*

Quòd *bona cœlestia meritò sibi arrogant magni dignitatem, cum terrestria magnifica, sunt pusilla, & parua in comparatione illorum.*

Quòd *lætitia, & gaudium rerum cœlestium implent appetitum, terrestrium vix sinum replent.*

TEXTVS.

Vers. 11. *Et intrantes domum inuenerunt puerum cum Maria Matre eius, & procidentes adorauerunt.*

AD LITTERAM.

Dub. 19. *Cur ſtella ſtabat ſupra vbi erat puer? & quæ ſit iſta domus, quàm dicit Euangeliſta intraſſe Magos? an ſit diuerſorium, vel porticus illi annexus, vel aliqua alia domus, in quam ſit translata habitatio? & quare dicatur inuenſſe puerum cum Maria matre eius, & Ioſephi nulla ſit mentio? & quid ſit procidentes adorauerunt? & quot modis adorauerint?*

COnclusio asserit primò, quòd *ſtetit ſtella ſupra vbi erat puer, vt indicaret locum natiuitatis.* Ita interpretes. Primò ex PP. Aguſt. in Matth. ſtetit ſupra caput pueri, quaſi dicẽs, hic eſt, quem quæritis, & demonſtraſſe ſtando, quod loquendo non poterat demonſtrare. Sanctus Maximus in ſermone de Epiphania. Dicere videbatur, hic eſt puer, quem natum teſtabatur de cœlo, hic eſt ille Rex magnus, qui venit ſociare cum imperio cœleſti regnum terrenum. Secundò, nam illa ſtella inſtituta eſt ex ſua creatione, vt eſſet index Chriſti nati, & loci vbi natus eſt, ergo congruum erat, vt quieſceret, & ſtatione ſua indicaret Chriſtum, & locum.

Circa ſecundũ, inquiſitum. Prima *ſententia* aſſerit hic vocari domum in quã intrantes Magi inuenerunt puerũ, & adorauerunt, nõ diuerſorium, aut ſtabulum illi annexũ, ſed domũ vnã ex cæteris Bethleẽ. Primò ex PP. Theophilacto, Epiphanio, & alijs, quos ſequitur Maldonatus, Franciſcus Lucas, & alij. Secunda ex textu, vbi dicitur, & *intrantes* domũ, cum de paſtoribus dicatur Luc. 2. quòd *inuenerunt infantem inuolutum, & poſitũ in præſepio*, non ergo confundi debet particula *domus*, cum particula *præſepij*, quod ſitum tenet in ſtabulo, & porticu hoſpicij, aut diuerſorij. Tertia, nam licet Chriſtus ſit natus in præſepio, quia nõ erat Virgini locus in diuerſorio publico, & hoſpitia pro recipiẽdis aduenis, qui cõfluebant turbatim ad deſcriptionẽ iuxta edictũ, quòd exit à Cęſare Auguſto, vt deſcriberetur vniuerſus orbis, tamen illo tẽpore peracto, relicta eſt vacuitas hoſpitũ, nõ ſolũ in illo diuerſorio, ſed alijs domibus Bethleẽ, & fuit Chriſtus translatus ad aliã habitationẽ, & honeſtiorẽ locũ, quia hic dicitur intraſſe domũ, & in ea Chriſtũ adoratũ à Magis. Vltimò, quia in ſtabulo, & præſepio adoratum nõ in honeſtiori domo, videtur dictũ cõtionatoris, ad augendã pietatẽ fideliũ, & exaggerãdã fidẽ Magorum, qui coluerunt in tãta humilitate, credẽtes verũ Deũ, & Regem cœlorũ. Cõfirmatur, nã ipſa pietas parentũ ſuadet in ſtabulo natũ repoſuiſſe in cõmodiori loco, vt inuenirint Magi, non iacentẽ in præſepio, ſed in domo honeſta, aut in vlnis matris.

Se-

Secunda *sententia* asserit. Hic *vocari domum diuersorij stabulum in quo natus fuit Christus, vt in eodem loco sit natus, & adoratus à Magis.* Primò ex PP. Hieronymo epistola 17. ad Marcellam, ecce inquit, in hoc parno terræ foramine natus, & hic inuentus à pastoribus, hic adoratus à Magis. Augustinus sermone 1. de Epiphania abscondebatur in stabulo, & agnoscebatur in cœlo, & alijs innumeris apud Cornelium hic, & Sylueirã ibidem quæst. 29. Secundò ex textu vers. 9. *Vsque dum veniens staret supra vbi erat puer*, vbi non expressit, nisi aduerbium locale, non particulã domus, aut diuersorij. Tertiò, nam prioris sententiæ fundamentum est infimum. Nam posito edicto ab Augusto, vsque ad diem decimum tertium à natiuitate, in quo intrarunt Magi, non fuit vlla vacuitas in diuersorio, aut alijs domibus, imò nec per multos dies, septimanas, & menses, in quibus confluebat diuitum copia ad descriptionem, & censum, quę posset occupari à Virgine, Christo, & Iosepho, constitutis in tam extrema paupertate, vt diceret Euangelista, *non erat illis locus* in diuersorio, quod durase videtur vsque adorationem Magorũ. Quartò, nam constat in stabulo mansisse Christum, & Virginem in puerperio vsque ad purificationem plusquam tredecim diebus. Quintò, nam Christum adorari à Magis, vbi natus est, magis consonat textui. Nam inquirebant vbi natus esset, quod distrahit ad alium situm priuatæ domus, quàm à diuersorij stabulum, non satis congruit, nec Christi paupertati, & humilitati, & contemptui rerum temporalium, quod non obstenditur honestè in opibus palatijs, & pompis huius sæculi, Sextò, nam non obstat fundamentum contrarium ex textu, vbi dicitur, *& intrantes domum*, quia nomine domus hic vocari potest stabulum illius diuersorij, iuxta morem scripturæ 1. Reg. 4. vbi dicitur. Arripite duas baccas fœtas, & recludite vitulos earum domi, id est in stabulo, imô stabulũ illius diuersorij ratione coniunctionis cũ illa potest appellari domus per methonimiam continens pro cõtento, & cõtra, aut synedochẽ pars pro toto, & contra. Vltimò, nã hic vocari domum, stabulum in quo natus est Christus, indicat sensus, & communis traditio Ecclesiæ, & antiqua pictura receptissima, in qua pingitur adoratio in porticu tugurio, & stabulo.

Conclusio asserit secundò, *dictam secundam sententiam esse veriorem*, sed media sententia concilians extremas placuit Cornelio à lapide, *quæ arrisit*, vt dici possit Magos ingressos domum, & vocari domum ipsum diuersorium, quia ingressi sunt in stabulum ipsius diuersorij. Primò, quia dicit Lucas, non erat eis locus in diuersorio, & inuenerũt infantem positum in

præsepio vno ex illis in stabulo constructis. Secundò ex fundamentis secundæ sententiæ, quatenus habent vim pro nostra.

Conclusio asserit tertiò, quòd *Ioſephi hic non fit vlla mentio ex rationabili cauſa.* Primò ex Cassiano, S. Th. & alijs quod Sylueirá q. 30. ne Magi putarent infantem more caterorum ex virili semine fuisse conceptum, & natum, & Ioſephũ fuisse Patrem naturalem Christi. *Diſplicet*, nam credibile est fuisse diuina illuminatione illustratos, vt nihil tale, vel in suspicionem veniret. Instructi enim erant de mysterio. Secũdò, nõ fit mẽtio Ioſephi, sed Mariæ, quia ad esse naturale Christi, illa vt vera mater, nõ verò Ioſephꝰ cõduxit, & ita inquit Albertꝰ Magnꝰ magis ostẽdebatur diuinitas, in qua nihil operis habebat Ioſephꝰ. *Diſplicet* propter dictã rationem contra primam. Tertiò, non fit mentio Ioſephi, quia Euangelista tantum egit de pertinentibus ad mysterium de inuentione pueri, cum Maria Matre eius, & in eius vlnis inuenerunt, & adorauerũt sicut in nocte natiuitatis in præsepio pastores iuxta Ecclesiæ picturam, omissis alijs circunstantijs, loci, temporis, & societatis assistentium, sicut & comitatus, & apparatus Magorum, & hospicij eorum in Hierusalem, quæ ratio Sylueiræ satis probabilis. Vltima planior Ioſephi nullam factam mentionem, quia domi non erat, sed iuerat in vrbem, aut agrum, vt necessaria Virgini, & Christo deferret, vel ex diuino cõsilio, vel ex obsequio maritali, & cura Patris familias, & ita se gessisse coram Magis, Virginem & Ioſephum, vt Magi intelligerent, aut Dei instinctu, aut ipsorum informatione, ex Virgine sola natũ per virtutem Spiritus Sancti, Ioſephum autẽ solũm curatorẽ Christi, & administrum familiæ, Beata enim virgo, vt dono linguarum erat prædita potuit in lingua Arabica, & alijs formare colloquium de modo conceptionis, partus, & natiuitatis Christi. De inuentione autem, & colloquio pium mihi videtur, quod latiori calamo refert Gislandus ex S. Vincentio in sermone 1. de Epiphania, quòd Reges mirati, quòd staret stella in illo porticu, & emitteret fulgores splendidiores, ac si diceret, hic est Rex, quem quæritis cum non viderent magnificam domum, aut palatium, & interrogasse Virginem, *vbi eſt, qui natus eſt Rex Iudæorum*, & Virgine ostendente filium, ipsi procidentes adorarunt, dicẽtes, ò Domine, ò Saluator, qui infinitus in diuinitate immortalis, & impassibilis, factus es homo in humanitate mortali & passibili, creator creatuta gratias agimus tibi, & in recognitionẽ pedes osculamus, & munera deferimus, & alia pia colloquia cũ Virgine Matre. O Virgo benedicta! quæ peperisti nobis Saluatorem, templum Domini, sacrarium Spiritus sancti, &c.

Con-

Conclusio asserit quartò, quòd *procidere secundùm gramaticos coalescit, pro, & cado, & inde dicitur procidere idem ac ante procul cadere*, & ita procidere significat cecidisse ante facies suas, ante infantem, & Virginem, & ita non solùm exhibuisse cultum politicum, & ciuilem, vt Regi Iudęorum, sed sacrũ latriæ cultum, vt Deo vero. *Ratio*: Nam instinctu diuino cognouerunt diuinitatem eius. Secundò, nam obtulerunt thus, quod soli Deo debetur, & ita Fulgentius sermone de Epiphania ait: attende quid obtulerint, & agnosces quid crediderint. Vltimò, nam dies ista à Græcis vocatur Epiphania, & Theophania, id est apparitio Dei, eò quòd Christus eo die sit declaratus Deus, solemniter à Magis; & vt Deus ab eis adoratus, & solemiter in Regem iuratus.

Conclusio asserit quintò, circa quare Magi procidentes adorarunt? dicendum, quòd *in signum & recognitionem diuinæ Maiestatis*. Ratio, nam licet pastores non adorauerint procidentes, Magi, quo sapientiores illis, eo magis exhibent maioris recognitionis, & submissionis signum, sic inflectentes se, vsque ad corporis humilitatem per pauimentum. Nam licet vtrique cognouerint Deum, solùm legitur de pastoribus, quod glorificauerint Deum, de Magis autem, quòd procidẽtes adorauerũt. Illis enim rusticitas fuit excusatio, Magis autẽ ingenium politicum profundiorẽ docuit adorationem. Secundò, nã Magi edocti sunt Spiritu Sancto, Pastores verò ab Angelo, & ita ea fuit differentia ex Ruperto 2. in Matth. cap. 3. in modo adorationis, quæ fuit in modo magisterij, Spiritus enim Sanctus sui habens altiorem excellẽtiæ cognitionem erudit ad profundiorem humilitatem. *Sed ista ratio*, non ita litteralis, ac prima. Tertiò, nam Magi ex infidelitate vocati ad fidem maiori sumissione indulgentiã requirunt, grauati scilicet maioribꝰ peccatis, & obligati maiori beneficio, iuxta Augustin. homil. de Epiphania. Nam pro mensura grauitatis culpæ, & maioritatis beneficij exhiberi debet submissio, & pœnitentia. Nam ex maiori beneficio maior imponitur obligatio, sed ista non ita litteralis sicut prima.

Conclusio asserit sextò, quòd, *sic procidentes humi, adorauerunt in signũ submissionis profundæ animæ, & corporis*, & rerum temporalium. Nã cum instinctu Spiritus Sancti cognouerint infantem esse verum Deum omnium creatorẽ animæ, & corporis, &c. oportuit omnibꝰ id præstare, & Deum colere, anima, & corpore, & thesauris.

Conclusio asserit septimò, *quinq; modis latriæ adoratsse Christũ*. Ratio, nam quinque modis exerceri solet cultus latriæ. Primò internus, mentaliter scilicet, in Dei cogniti, & dilecti debita submis-

fione, vt in Angelis reperitur. Secundò exterius in vocali recognitione, & subiectione in oratione; laude gratiarum actione, &c. Tertio fit corporaliter, & personaliter in inflexione corporali capitis, corporis genuflexione, & postratione. Quartò in rerum externarũ oblatione, & donatiuo pertinentium ad dominium adorationis in recognitione superioris, & altioris dominij. Vltimum in immolatione exterioris sacrificij, protestatiui diuinæ authoritatis; est enim author vitæ, & mortis; sed Magi exhibuerunt cultum latriæ his quinque modis; quia interius recognouerunt, dilexerunt, submissi sunt, voce orarunt, laudarunt, gratias egerũt, capite & toto corpore se humi postrauerunt, & pro sacrificio aurum, thus, & myrram obtulerunt.

AD MORES.

Quòd *Doctores, & Magistri indicent Christum, & salutem, non transeunter. sed pedetentim.*

Quòd *in humilitate, & paupertate inuenitur Deus potius, quàm in aula Principum diuitijs, & voluptatibus sæculi.*

Quòd *Reges terræ ostendunt dignitatem, & maiestatem in fastu, & apparatu argenteo, & aureo, & Palatijs, Rex uerò cœlestis aliter in paniculis, & humili domicilio.*

Quòd *vbi adest Regis, & Reginæ maiestas inferiorum adsit silentium.*

Quòd *quo quis est instructus maiori ingenio, & talento maiori præmittur obligatione ad exhibenda maiora obsequia.*

TEXTVS.

Vers. 11. *Et apertis thesauris suis obtulerunt ei munera, aurum, thus, & myrram.*

AD LITTERAM.

Deb. 20. *Quare Magi obtulerunt munera Christo? & quare aurũ, thus, & myrram? & an singuli singula, vel singuli terna? & cur fiat mentio oblationis Magorum, & non Pastorum? & quomodo se habuerit infans, virgoque, erga Magos adorantes?*

COnclusio asserit primò, *obtulit ista munera multiplici ex causa.* Prima ex Leone, & alijs PP. in recognitionem diuinæ maiestatis, & protestantes fidem, quam corde tenebant muneribus oblatis profidentes, se fœudatarios supremi Regis. Confirmatur. Nam ideo voluit Christus sibi offerri dona, vt recognosceretur vt Rex. Nã fuit vetus mos apud Arabes, & Persas (vt aduertit Cornel. hic, & Syluei. q. 32. ex Paschasio, & D. Th.) & omnium orietalium semper adire Regem, & Principem, non nisi cũ muneribus, quasi hic sit vectigalis honor Regi debitus: Genes. 43. & 1. Reg. 10. Et voluit Christ⁹ sibi obseruari, quę circa Dominos, & Reges tẽporales solebãt obseruari

&

& id erat iuxta legem Dei Exodi 23. vers. 15. *Non apparebis in aspectu meo vacuus*, & 2. Paralip. 9. Regina Sabaha dedit pretiosa munera Regi Salomoni, & recipiet maiora; & sic Magi obtulerunt Christo, qui est verus Salomon, & receperunt ab illo maiora spiritualia. Secundò, nam Magi intendebant Christum recognoscere, & honorare perfectissime; vt creatorem spiritualium, & temporalium, & ideo non sunt contenti fide interiori cordis exhibere reuerentiam, sed exteriori oblatione munerum, & ideo post adorationem obtulerunt munera, quia honor, & reuerentia perfecta consistit in subiectione, & oblatione; & cum soli Deo sint manifestanda interiora per exteriora, aperti sunt thesauros, in via reconditos hominibus, in signum, quòd ille erat verus Deus; sed ista apertio aliquid habet de mystico. Tertiò, nam conditio humana dat munera potenti, & forti, aut quia sperat beneficium, aut quia formidat potentiam 1. Reg. 25. Abigail dat Dauidi, quia formidabat potentiam; & similiter Genes. 30. Iacob fratri suo Esau, & ita ex Maximo homil. 6. de Epiphania, ait, quòd inquirunt, vt Regem munerant, & adorant vt Deum; quæ ratio incidit in litteralem. Mitto alias mysticas, vt quòd diuites debent proijcere ad pedes Christi, & pauperum delitias, & diuitias, & quod diuitiæ sint offerendæ cultui diuino, non includendæ in scrinio, specu, aut fouea, terra, & denique, quod Mariæ venienti ad soluendum tributum solui debeant, à Magis præstantissima tributa.

Conclusio asserit secundò, *obtulisse Magos aurum, Thus, & Mirrham*, vt refert D. Thomas, & Cornel. hic ex diuo Bernardo, vulgari ratione aurum ad matris sustentationem in subsidium paupertatis, mirrham ad infantis linienda membra, & consolidanda, & thus ad loci fœtorem abigendum ex animalium assistentia in stabulo. Sed altiori ratione, & sublimiori mysterio. Ratio. Nam ille sensus est humilior, & sublimius erat mysterium, & quòd illa ratio non sit ita consona probatur Primò, quia ista munera sunt allata à Magis, qui ignorabant, an esset inueniendus in humili loco, & fœtido, & ita ex illa intentione præueniri non potuit Thus; sed sunt allata ex sua terra feraci aromatibus; est enim Arabia ferax teste Ezechiele cap. 27. & Plin. lib. 12. c. 14. & ita Christo sunt allata, vt pretiosa dona, quibus illa Regio abundabat. Secundò, nam verisimile est, quòd vbi Christus erat nihil fœtidum pateretur ab Angelis, aut parentibus, & credibile est fuisse repulsum. Tertiò, nam ad virginis indigentiam succurrendam, & infantuli artus consolidandos, non erat necessaria ingens copia Thuris, & mirrhæ,

&

& ita ista ratio, vt humilis, & vulgaris est deserenda, & inuestigandum subtilius mysterium. Quartò, & vltimo, ratio magis vera, atque germana deducitur ex PP. videlicet, obtulisse aurum, thus, & mirrham, vt singuli proferrentur *auro Regem, thure Deum, mirrha mortalem.* Est sententia Gregorij homil. 10. Hieronymi, approbantis Iuuencij versiculum. Thus, aurum mirrham Regique, hominique, Deoque. Leo sermone 1. de Epiphania. Ambrosius lib. 2. ad 2. Lucæ. Ex quo hæc ratio. Nam Magi illuminati ab Spiritu Sãcto *obtulerunt aurum, vt Regi, thus vt Deo, mirrham vt homini mortali,* & quòd in corde credebant, munera protestabantur, erat enim Deus, & homo moriturus pro genere humano, mirrha quoque condiuntur corpora defunctorum ad incorruptionem. Nam cum sit sicca exicat humiditatem, præcauet fœtorem, impedit vermes, &c. Deinde thus appellabatur honos ab antiqnis, vt honores diuini, qui soli Deo deferuntur, & prima sacrificia instituta erant thuris fumigationes, deinde aurum, & argentum reddi solet Regibus, in recognitionem vectigalem supremæ maiestatis. Matth. 20. *Ostenderunt numisma census,* & ait, *reddite, quæ sunt Cæsaris, Cæsari, &c.* plures aliæ adduci solent rationes ad allegoricum, & tropologicum sensum, de tribus virtutibus dicandis Deo fide, spe, & charitate, & de tribus võtis Religionis, obedientia, paupertate, & castitate; sed istæ, & similes sunt mysticæ, videri possunt, apud Sylueiram, & Cornel. à lapide.

Conclusio asserit tertiò. *Obtulisse singulos terna munera, non singuli singula.* Ita interpretes, Sylueira in expositione 13. Cornel. ibidem, Gisslandus dub. 61. Primò ex PP. Remigio, Anselmo, Bonauentura, & alijs apud præcitatos, & sequuntur Abulensis, Lira, & alij. Secundò quia quilibet credebat Christum esse Regem, Deum, & hominem passibilem, moriturum pro hominibus, & ita quilibet tria protestabatur, & prædicabat terno munere, non enim vnus credebat Deum, alter hominem, alter Regem, vt singuli singula offerrẽt iuxta fidem de illo. Tertiò, quia id congruit dignitati Regiæ, offere terna, & in eo erant pares. Deinde id congruebat mysterio, vt sicut in Christi persona illa tria simul elogia inueniebatur, ita in oblatione singulorum, illa tria terno munere, simul significarentur. Aliæ rationes mysticæ minoris momenti, vt terna quisque offerret pro tribus personis, patre, matre, & filio, non sunt ad institutum, neque aptè quadrant.

Conclusio asserit quartò. *Fieri mentionem oblationis Magorum, & non Pastorum multiplici ex causa.* Primò, quia erant maioris valoris, & æstimationis. Secundò, quia non solum fuere dona magna liberalitate

late oblata apertis thesauris, sed quia fidei, & interioris deotionis exterior manifestatio, & protestatio. Tertiò, quia in illa oblatione importabatur fides gentiliũ, venientium ad Christum, & in tribus Regibus significabãtur venientes ad fidẽ ex tribus partibus vniuersi, Asia, Africa, & Europa, licet ipsi essent Arabes, & Sabæi nationaliter, nõ Africi, aut Europæi, & ista vocatio Gẽtilium est maioris momenti, & æstimationis digna, & maiori memoria. Ex qnibus diſplicet, illa ratio dicentium fieri memoriam Magorum, quia fuerunt primi, qui detulerunt dona Christo. Nam Ecclesiæ traditione cõstat priº detulisse pastores, licet non fiat mentio apud Euãgelistas.

Conclusio asserit quintò. *Se gessisse infantem instar aliorum puerorum, non recipiendo propriis manibus munera, sed interuentu Virginis, & interius acceptando.* Ratio nã si puer manibus acciperet, & verbis gratificaret videretur excessisse ætatem infantiæ, & non suscepisse naturæ humanæ infirmitates, sed illis astitit, pro mensura Apostoli, *cum essem paruulus*, sapiebam, vt paruulus cogitabam vt paruulus loquebar vt paruulus, cum autem factus sum vir euacuaui, quæ erant paruuli. Secundò, ne si loqueretur infans putaretur phantasma. Tertiò, ne si vt Deus transiliret infantiæ terminos manifestè d gnosceretur, vt diuinũ numẽ, & fidei meritum, quodadmodo diminueretur in Magis. Nam fides, non habet meritũ, vbi humana ratio præbet experimẽtum, vt in Thoma circa veritatem resurrectionis inferẽte digitum in latus Christi, quasi experimento probans crucifixum, re surrexisse, & audire meruit, *quia vidisti me Thoma credidisti, beati, qui non viderunt, & crediderunt.*

Conclusio asserit vltimò. *Ita se gessisse Deipara, vt susceperit munera, cum demonstratione gratitudinis, & ingenti lætitia facie, gaudio perfusa, quòd vidisset filium triplici, dono veneratum, vt Regem, Deum, & hominem mortalem, sed non* exoruitã te lętitia, vt sanguis cordis sit trãsmissus ad faciem, & partes externas in rubore, vt in eo debilitatẽ causaret, aut vitã abriperet, & extingueret. Vt contingere posse in ingenti passione gaudij, aut tristitiæ probant medici, ex multis historijs comprobat Valerius, Maximus lib. 9. c. 12. & intermemorabilia est illud insigne, & aptissimũ ad præsens institutũ, quòd refert Gellius lib. 3. noct atti. cap. 15. Diagoram, Rodiũ videntem tres filios suos, vt insignes coronatos in varijs artibus, & plausu communi acclamatos subitò præ gaudio perijsse: Deipara, autem non finebat passiones immoderatas exorbitare, sed cum debita temperantia versari. Addo *ita se gessisse cum Magis, vt Doctrix, & magistra fidei, & religionis Christianæ fundatrix.* Iuxta PP. Cyrilum, Alexandrinum, Rupertum, & alios, apud

Syl-

Sylueiram quæst. 35. instruxerit de arcanis fidei nostræ de mysterio Trinitatis, & alijs, vitæ, mortis, resurrectionis, & accensionis Christi. Ratio, nam erat maxime conueniens, vt Magi de his omnibus instruerentur, vt prædicatores in Regionibus suis. Nam cum futuri essent Christi anuntiatores in suis regnis ratio exigebat, vt de illis mysterijs aprimè essent instructi, & Deo est semper tribuendum, id quod facilius apparet, & facilius videtur instrui per beatissimam Virginem, quam per aliũ modum extraordinarium, & miraculosum, vt Deipara, non sit comprehensa illa lege Apostoli mulierem in Ecclesia docere, non permitto, sed sit omnium doctrix, & magistra fidelium, & Doctorum. Nam ita est ornata plenitudine scientiæ infusæ, vt melius cæteris possit Magisterium exercere, ergo cum Magis exercuisse valdè verisimile est.

AD MORES.

Quòd *pauperi exhibenti Christum singuli, non singula solùm, sed terna donatiua quantum fas est sunt largienda cumulatissimè.*

Quòd *gratissimum Deo munus se & terna sua dicare Deo, in statu religioso per obedientiam, paupertatem, & castitatem.*

Quòd *Deus habet maximam æstimationem, non solùm magni donatiui diuitum, sed minimi pauperum ex animo oblati.*

Quòd *quisque morem gerat possibilitati sui status, ne excedens phasti, & sumptibus sit phantasma ciuitatis.*

TEXTVS.

Vers. 12. *Et responso accepto in somnis ne redirent ad Herodem, per aliam viam reuersi sunt in regionem suam.*

AD LITTERAM

Dub. 21. & vlt. *An Magi interrogauerint de regressu, qui dicuntur accepisse responsum in somnis? & quare admonentur in somnis de via? & à quo sint admoniti, an à Deo, Maria, infante, aut Angelo? & quare stella, quæ duxit, non reduxit? & cur non redierunt ad Herodem? & cur per aliam viam reuersi sunt, si semel crediderunt infantem esse Deum potentem se tueri ab Herode?*

Conclusio asserit primò. *Non inquisisse voce, quid imperaret diuina voluntas de regressu; sed corde, & pio affectu.* Ita interpretes ex Glossa. Prima ratio ex textu, vbi dicitur *responso accepto*, supponit enim responsum inquisitionem, & interrogationem, & non legitur fuisse vocalem, super est ergo, vt verisimile fuisse interiorem mentalem. Secundò, nam ipsa indigen-

gentia responsi, vt dirigerentur de regressu, ne renũtiaretur Herodi inuentus infans, est loco interrogationis apud Deum, qui indigentias, & opera nostra inspicit, vt voces, nec vt homines eget audire per verba. Intuetur enim cordis interiora, & exteriora, & animi optata suscipit, vt verba. Iuxta Exodi 14. vbi Dominus ait, ad Moysem, *quid clamas ad me?* cum non voce, sed corde clamaret, & Ionæ 13. & *clamauit de ventri ceti*, cum corde, & non posset ibi formare voces, sine aere verberato, & solet esse figura antiphrasis, vbi tacitè quæstioni respondetur.

Conclusio asserit secundò, quòd *sunt admoniti de via in somnis non sine causa*. Prima. Nam hoc genus respondendi, est vsitatum in scriptura, vt via secretiori admoneantur Dei ministri de diuina voluntate; vt constat ex penè innumeris oraculis, inspiratis in somnis, cum soleant alia dari in vigilia. Secunda. Nam in fide roboratis, iam sufficiebat minus excitamentum ad viam capiendam, & non erat opus sensibili, & exteriori, sicut antea ad fidem vocati per stellam irradiantem, aut alio simili adminiculo: ad istum modum Abrahæ in fide tyroni percipitur vigilanti *exire de terra sua, & cognatione sua*, multis propositis; & promissis præmijs. Genes. 12. cũ verò, iam esset in fide perfectior, & adultior, præcipitur sacrificare filium in holocaustum, vt notauit Amb. August. & alij, vt dum in fide erat iuuenis vigilans allicetur præmijs; in fide verò, perfectior, leuiori insinuatione, præcipitur in somnis opus valdè egregium; sic de Agar Genes. 12. Iacob 28. & pluribus alijs. Vltima, in somnis admonentur, & ab Angelo; quia gerebat illorum curam, & vigilabat in salutem eorum, illis dormientibus; sicut Angelus pro Petro dormiente in carcere actorum 12. excitauit. Percussoque latere Petri excitauit eum dicens. Surge velociter, solutis vinculis, reserato carcere, sopito custode.

Conclusio asserit tertiò. *Fuisse instructos immediate a Deo, vel mediate per Angelum, sed à Deo est verisimilius*. Primò, ex PP. Hieronymo, & alijs apud Sylueiram latiori calamo hic quæst. 37. Secundò. Nam licet vtroque medio possit fieri instructio, & reuelatio à Deo immediate per infusionem specierum, vel ministerio Angeli, est valdè verisimile dedisse responsa imprimendo speciem vię capessendæ. Et quidam confirmant ex eo, quòd PP. responsum appellant oraculum, quod fit per Deum, nõ quod per Angelum; sed quod à Deo immediate fit, per Angelum solet oraculum, loquutio Dei, & responsum, quia ab eo originaliter procedit. Vltimò. Nam si fieret reuelatio per Angelum visibili modo, ita narrasset factum Matthæus iuxta morem, sicut de Angelo

gelo apparente Ioſepho in ſomnis vt fugeret in Ægyptum, & de eodem, vt inde regrederetur in Nazareth.

Concluſio aſſerit quartò. *Non fuiſſe inſtructos de via capeſſenda ab infante, nec à Deipara.* Ita communiter interpretes. Primò, non ab infante, ne ſi puer loqueretur, putaretur phantaſma, tum ne videretur, non ſuſcepiſſe infantias noſtras, & infirmitates, tum ne diminueretur meritum fidei Magorum ex illa manifeſtiori eloquutione. Secundò, non ſunt inſtructi à Dei para, vt ſilentio infantis conformaretur, nouit enim, id incumbere curæ, & vigiliæ Dei, tum denique, nam in præſenti vita conſiderabat, meditabatur, & tacebat myſteria; erat enim illi hoc tempus tacendi pro hominibus, dum verò in gloria ſedit à dextris Dei loquitur ſæpius pro hominibus, vt illorum aduocata apud Deum. Sed hæc vltima ex Ruperto, non ita litteralis, ſicut prior.

Concluſio aſſerit quintò. *Non reduxiſſe ſtellam Magos, ſicut duxit ex cauſa rationabili.* Prima. Nam inſtituta fuit ex creatione, vt dirigeret ignorantes in locum natiuitatis infantis, illo autem inuento in diuerſorio Bethleemitico, facile ſcire poterãt in qua orbis plaga eſſent regiones, & Regna ipſorum, vt non egerent ſtella reductrice, cum facile, vel à ſe, vel ab homine viam capere poſſent. Secunda, quia in fide, & gratia erant, iàm magis probati, & ita maiori, fauõre oportuit reduci, quam duci, & ita ducti ſunt per ſtellam, & reducti per Deum in ſomnis admonentem, iuxta Eutymium, & Theophilactum, apud practicatos. Tertia, adduci ſolent aliæ rationes ex PP. ſed videntur myſticæ, vt quod ſpoliati auro, & terreſtribus ſupereſt duci per Deum omnium creatorem, & quòd Deus ſe exhibuit circa illos, qualiter ipſi circa Deum, ipſi enim perſonaliter veniunt, nõ interpoſito legato, & ita Deus nõ per interpoſitum paranymphum viam demonſtrat.

Concluſio aſſerit ſextò. *Non reddiſſe ad Herodẽ multiplici ex cauſa.* Prima, quia ſi reddirent, & informarẽt de infante nato, & loco, ipſe Herodes ſtatim veniret ad occidendum, vt poſtea intentauit, & dum expectauit redditum diſtulit occiſionẽ, & ſic occideretur Chriſtus ante tẽpus, vel tueri ſe deberet miraculoſè, & vtrumque erat inconueniens. Secunda, quia Magi, non promiſſerunt, aut iurarunt redditum, licet Herodes impoſuerit curam de redditu cum inuenirent. Tertiò, quia ſi ei indicarent nomen pueri, genitricis, & Ioſephi, Herodes ipſos haberet inuiſos, & filij eius ipſos perſequerẽtur. Vltimò, ſolent adduci aliæ rationes, ſed videntur myſticæ, vt quòd fides, & ſancti non ſunt miſcendi cum infidelibus, & quòd in via Dei, non ſit retrocedendum, & quod non ſit relinquendus Chriſtus,

tus, vt fiat reuersio ad Herodem, & quòd, qui venerant fideles ad Christum adorandum, reuerti non debent ad prodendum, & tradendum Christum, & ita per viam aliam reuersi sunt in regionem suam.

Conclusio asserit vltimò. *Reuertisse per aliam viam credentes, quòd Christus si vellet, posset se tueri ab Herode ex causa rationabili.* Primò, quia diuino responso accepto, fides, & obedientia enituit maxime, sine curiositate discutiendi, an esset necessitas recedendi occultè ab Herode, cum puer esset Deus, qui facile se tueri poterat; in eo fuit meritum fidei, vt nihil disquirerent, sed obediētia prompta obtemperarent. Secundò. Nam verisimile est concepisse ex fide, nondum esse tempus occisionis Christi, sed reseruari in adultiorem ætatem, nec fuisse expediens multiplicari miracula ad eum defendendum ex insidijs Herodis.

In calce *quæri solet, quid fecerit virgo de auro, & donatiuis Regum.* Conclusio. *Dedisse pauperibus*, vt in purificatione, & præsentatione Christi in templo, non habuerit vnde soluerit siclos pro redemptione primogeniti iuxta legem Exodi, nec pro purificatione matris vnde emeret agnum, quod solebat offerri à diuitibus, sed obtulit more pauperū par turturum, aut duos pullos columbarum, ita interpretes ex PP. Bernardo, & Vincentio Ferrerio.

AD MORES.

Quòd *Deus solet præuenire pias petiones suorum largiendo ante petitionem vocalem.*

Quòd *Deus ad admonendos pios, vix insumit leues excitationes ad impios verò ingentes, & plures.*

Quòd *stella ducens Magos ad Christum, & disparens instruit prædicatores, & confessarios ducere doctrina fideles ad Christum, & non intromitti vlterius, nec apparere vltra visitando in domibus suis.*

Quòd *vitanda est familiaritas, & sodalitas cum impijs, & peccatoribus, ne inficiamur peccatis similibus.*

FINIS.

LEC-

AD GLORIAM DEI,
& Deiparæ.

SVB CORRECTIONE
Sanctæ Matris
Ecclesiæ.



LECTVRA DE FVGA CHRISTI IN ÆGYPTVM, ET Regressu in Nazareth.

PER

P. MAG. Fr. DIDACVM DE BENAVIDES
Madridensem, Ordinis Carmelitarum, Prouinciæ Castellæ.

IN ACADEMIA COMPLVTENSI,
Sacræ Scripturæ, Publicum, Primarium Interpretem.

Ad cap. 2. Matth. *Ecce Angelus, &c. Fuge in Ægyptũ, &c.*

PRÆLOQVIVM.

CELEBRIS est in Ecclesia fuga Christi in Ægyptum, & festũ exilij Deiparæ, & ob id seiunxi lectura à Christo adorato à Regibus. Cum vtrumque amplectatur Matthæi cap. 2. quo illi vltimam manum, operæ prætium duxi admouendã.

SYNOPSIS.

EVangelista in 2. part. principali cap. describit, Angeli duas apparitiones, postquam Magi reuresi sunt in Regionẽ suam; priorem, quæ præmonuit Iosephum de fuga in Ægyptum, ob imminens infanticidium, postremam, iam defuncto Herode, de regressu in patriam Nazareth.

CAP. II. PARS POSTERIOR

TEXTVS.

Vers. 13. *Ecce Angelus Domini apparuit in somnis Ioseph: dicens. Surge, & accipe puerum, & Matrem eius, & fuge in Ægyptum, &c.*

AD LITTERAM.

Dub. 1. *Quis fuerit iste Angelus apparens? & an apparitio facta sit statim post adorationem, & an in Bethleem, an in Nazareth? & cur potius sit reuelatio Ioſepho in ſomno, quàm in vigilia, & cur potius illi, quàm Deiparæ?*

COnclusio asserit primò, quòd *iste Angelus fuit Gabriel.* Ita Interpretes Sylueira tom. 1. lib. cap. 7. expositione 1. Gislandus, & alij. Primò ex PP. Anselmo, Origine, & alijs, quorum verba apud præcitatos. Secundò, nam ille fuit incarnationis paraninphus, & Legatus, *missus est Angelus Gabriel*, apud Luc. 1. & ita verisimiliter creditur egisse cætera pertinentia ad Christum, licet non sit expresum in textu.

Conclusio asserit secundò, *fuisse minime factam istam apparitionem, statim post adorationem Magorum, sed post decursum aliquod tempus, non tamen ante diem, in quo iussit Herodes fieri infanticidium*, ita Cornel. Sylvei. & alij. Ratio. Nam licet dicatur in textu, *qui cum recessissent, ecce Angelus, &c.* intelligi debet cum S. Thom. interpositis quibusdam diebus, tum quia textus non requirit simultatem temporalem inter recessum, & apparitionem; sed more scripturæ insinuatur celerrima inter vtrũque, vt, cum dicitur Genes. 2. quòd *Eua concepit, & peperit Cain*, vbi inter conceptionem, & partum fuit interpositio temporis, mensium naturalium, & ita exponi debet textus iste, vbi post recessum Magorum refertur apparitio, tum etiam, quia interponenda nonnulla ineuitabiliter, videlicet, quòd post recessum Magorũ sit ductus Christus in Hierusalem, & præsentatus in templo postridie Kalendas Februarij, ex Lucæ 2. & similiter interserẽdum, quod inde reddierit in Nazareth patriam suam, quæ sita erat in Galilæa Luc. 2. vbi fuit facta ista apparitio, & non in Bethleem, vbi adoratio, & inde ex Nazareth inchoata fuit fuga in Egyptum, quim obstet, quod solet obijci ex Augustino, fugisse non ex Galilæa, sed Iudæa, ex eo, quòd id dicitur vers. 22. quòd Ioseph reddiens ex Egypto cogitauit ire Iudæam, ac si fugerit ex ea in Egyptum, nam in textu solùm exprimitur, quod audiens, quòd Archelaus regnaret in Iudæa pro Herode patre suo, timuit illò ire, vbi insinuatur cogitasse ire in Iudæam, non decreuisse, non quasi inde exierit, sed vt adiret templum Hierosolimitanum; vt ibi ageret gratias Deo pro fœlici regressu ex Egypto; sicut est in more viro religioso. Vltima pars probatur, nam nõ videtur verisimile, nec consequens dicti, quòd in eo die ante sententiam infanticidij

fit

sit facta talis apparitio ; nam esset admonitio facta Iosepho in somnis nimis lentipeda, & morosa, quæ iam in ianuis haberet difficultatem fugiendi sine strepitu, & tumultu, imò occultè indutias ad fugiendum, non præueniebat.

Conclusio asserit tertiò, *Istam apparitionem Angeli factam fuisse in Nazareth, non in Bethleem.* Ita Interpretes Cornel. Syluei, & alij, Primò ex Luc. 2. vbi dicitur, quòd post impleta, quæ lex præcipiebat circa infantis præsentationem in templo reuersi sunt in Nazareth ciuitatem suam, vbi facta est apparitio ; nam inter discessum Magorum, & fugam in Egyptum intercessit præsentatio in templo, & ita historia est disponenda, & contexenda, vt impletis prædictis, cum habitarent in Nazareth sit facta admonitio Angeli de fuga in Egyptum.

Conclusio asserit quartò, *fuisse factam apparitionem Iosepho dormienti, potius quam vigilanti rationabili ex causa.* Prima, quia vir erat perfectus, cui non semel facta est similis apparitio, vt ne desereret Virginem grauidam, & ita non egebat miraculosa apparitione corporali, cum esset in vigilia. Iuxta illud 1. Corinthiorum 13. *Prophetia data est fidelibus, signa infidelibus*, & iuxta illud Num. 12. v. 6. *Si quis fuerit inter vos propheta Domini in visione apparebo ei, vel per somnium loquar ad illum*, & sic *misit Deus soporem in Adam* ad tollendam costã, in quo somno extatico plura mysteria reuelauit de incarnatione Verbi, in qua persona fuit coniugium naturarum, vt in matrimonio duo in carne vna. Secunda, quia in somno, & abstractione à sensibus exterioribus anima est inquiete, aptior ad recipienda diuina oracula. Vltimò, nam ad exponendũ Iosepho mãdatum, & imperium de fuga non requiritur libertas vigiliæ, & ita vbi requiritur consensus, vt Virginis ad incarnationem fit visibilis Angeli apparitio, & in vigilia, in negotio verò fugæ, sufficit interna monitio, & reuelatio.

Conclusio asserit quintò, *fuisse factam istam apparitionem, & reuelationem, potius Iosepho, quam Virgini multiplici ex causa.* Prima ex Abulensi, quia Ioseph erat pater familias, vir Mariæ caput, & Dominus eius, *caput enim mulieris est vir*, iũxta Apostolum, & moueri debet ad eius imperium, & ideo illi soli intimatur mandatum, *accipe puerum, & matrem eius, & fuge*, & si Virgini fieret reuelatio, & intimaret Iosepho, videretur imperare, cum sit mulieris obedire. Confirmatur, quia Virgini toleretur occasio exercendi obedientiam marito. Secunda, nam Iosepho data est cura de custodiendo, & nutriendo infante, & ita illi fit admonitio custodiendi per fugam, & si fieret Virgini videretur tale officium illi commissum reuocatum, & consignatum

Virgini, sine illius defectu. Vltimò probatur ab aliquibus, quia virgo erat illuminata per scientiam infusam, & instructa donis Spiritus Sancti, & intelligentia sacræ Scripturæ, vbi agitur de ista fuga in Egyptum, Isaiæ 19. Oseæ 11. *ex Egypto* vocaui filium meum, ergo non egebat in hoc negotio Angelo reuelante sicut egebat Ioseph. Sed hic non est disputatio de indigentia, sed de facto, cur illi, & non Virgini sit facta admonitio, & ita præcitatis standum. Mitto consultò aliàs rationes, quia non admodum litterales apud præcitatos.

AD MORES.

Quòd *viris pijs, & deuotis spiritualibus loquitur Deus per spiritus Angelicos.*

Quòd *diuina præcepta, & imperia, vt cumque leuiter insinuata sunt opere exequenda.*

Quòd *Deo gratissimum virum coniugatum curam gerere de custodia familiæ, & coniugis prompta obedientia.*

TEXTVS.

Vers. 13. *Surge, & accipe puerum, & matrem eius, & fuge in Ægyptum, & esto ibi vsque dum dicam tibi.*

AD LITTERAM.

Dub. 2. *Cur Angelus imperat, vt surgat? & cur prius nominatur filius, quã mater? & cur dicitur, vt accipiat prius puerum, quam matrem? & quare non exprimit nomen vtriusque? & cur non nominat Virginem coniugem Ioseph? & cur Angelus suasit fugam, & Christus voluit fugere cum tueri se posset? & cur fugerit in Egyptum, quam in aliam regionem? & quid acciderit in via?*

CConclusio asserit primò, quòd *Angelus imperat, vt surgat, quia iacebat recubans.* Ratio, quia apparitio facta est in somno, dum cubabat. Secundò, quia verbum surgere interdum solet significare celeritatem in agendo, à qua, quis vocatur, dũ est in quiete somni, & ita surgere, idem est, quòd abijcere disidiam, & arripere celeritatem.

Conclusio asserit secundò, quòd *prius nominatur puer, quam mater, & prius dicitur, quòd accipiat puerum, quam matrem multiplici ex causa.* Primò, vt insinuaretur imminens periculum magis imminere filio, quàm Matri, cauebat enim ab infanticidio innocentium. Secundò ex Imprefecto homilia 2. in Matthæum, & S. Thomam hic, quia propter puerum mater præparata est, non contra, quasi filius esset maioris dignitatis, qua pro salute omniũ natus est, & ita ma-

maiori diligentia curandum, & assecurandum. Tertiò quia Beatissima Virgo imitabatur, & sequebatur in gratia, & sanctitate filiũ, & ita accepto filio consequenter accipiebatur, & trahebatur post illum mater. Iuxta quôd Patres ab Ecclesiastici 24. *quasi plantatio* rosæ in Ierico, dicunt, quòd sicut Acanthus sequitur Solem intuitu quocumque conuertatur, ita Virgo sanctissima filiũ Solem iustitiæ. Sed ista ratio minus est litteralis cæteris. Vltimò, nam non obstat, quòd solet citari, quòd in vsu scripturæ, prius fit mentio matris, quam filij, vt Genes. 20 Deus dixit Abrahamo *eijce ancillam, & filium eius*, & Exodi in descensu Moysis in Egyptum, *tulit ergo Moyses vxorem suam, & filios suos*, & ita contra stilum videtur Euangelista, filiũ posuisse quam matrẽ, hoc inquã non obstat, nã hic habetur ratio periculi imminentis, quod vrgebat magis filium, quàm matrem. Nisi velis dicere stilum præferre matrẽ filio, pro dignitate, hic verô inuertitur ordo, quia filius erat maioris dignitatis, sed prius est litteralius.

Conclusio asserit tertiò. *Non exprimi nomen pueri, & matris, Iesum, & Mariam, non sine rationabili causa.* Prima, quia cum esset doloris ocasio, magis quæretur dum fieret expræsio proprij nominis vtriusque charissimi, & dilectissimi, qua cratione Christus in cruce pendens, dum commendaret discipulum genitrici, non appellauit illam, matrem, sed mulierem, ne lanciaret cor eius mentione chari nominis. Qua ratione lanciauit Isaac cor parentis, dum dixit, *pater mi* vbi est victima holocausti? Secundò, non exprimitur nomen Iesu, & Mariæ, vt indicaretur, non opus esse tali expræsione, quia Ioseph omnes cogitationes intedebat in solum Iesum, & Mariam, non in alios, quia eius curæ erant commissi. Nec dicitur accipe Deum, sed puerum, ad fidem Ioseph commendãdam, qui dum audiret puerũ, credebat, & venerabatur Deũ. Mitto alias rationes minus litterales, vt, quòd nomen Mariæ præstat quietẽ, & securitatem, & ita tẽpori, & occasioni præsẽti, nõ cõgruebat quies, sed iniquies, & solitudo ad euadendum periculum pueri.

Cõclusio asserit quintò. Quòd, *Nõ nominat Angelus virgem coniugẽ Ioseph, vt in alijs occasionibus, rationabili ex causa.* Prima; nam cum supponit desponsatum, implicitè coniugem eum iam dixerat, *Noli timere* accipere Mariam coniugem tuam, & ita non fuit opus iterum reppetere. Vltima; nam non sine misterio appellauit matrem filij, non coniugem viri, nam iam post partum sola nuncupatio matris publicari oportebat, vt illius solius indicaretur filius naturalis, & manifestaretur sine viri consortio concipisse Christum.

Conclusio asserit quintô.

Quòd, *Suasit Angelus fugam, & Christus arripuit, non sine mysterio, sed multiplici ex caussa.* Prima, nam licet facile posset declinare indignationem Herodis, & eludere infanticidas varijs modis, aut se reddendo inuisibilem inter medios hostes, vt Ioan. 8. elusit volentes lapidare, vel suspendo concursum, ne valerent manus inijcere in ipsum, tamen conueniens non fuit, nisi vt fugeret, non timore perculsus, vt aptè Chrisol. sermon. 150. sed ex mysterio, vt ostenderet se hominem mortalem, verum, non phãtasticum inter cœteros humanæ naturæ, vt creditur reuelatum S. Brigitæ in lib. 5. interogatione 12. & consonat Chrisostomus homil. 8. in Math. fugisse cum latere posset, & preuenire occisorem, ne suspicari posset fabula assumptio carnis; probauit igitur se hominem fugiendo, sicut esuriendo, sitiendo, patiendo, & sufferendo crucé, & maluit vocari in dubium potestatem fugiendi, quam veritatem carnis assumptæ. Ista sententia traditur ab Athanasio Euthimio, & alijs diuersitate verborum. Secunda, fugit mortem, qui sponte venerat subire mortem. Nam pro tẽporis qualitate, & negotio oportet fugere, aut mori; si enim puer moreretur salutis causam absoluendam in cruce doctrinam, miracula, & ędificationes exempla anticipatio præriperet, & periret ędificatio nostra. Vltima; voluit fugere, vt daretur exemplum fugiendi tyranos ab vna ciuitate in aliã, & ad ocasionem aliam magis vtilem, & fructuosam dilataretur fidei protestatio in facile Tyrani, & vtilitatem assistentium, & vt detur locus irę; verum ista non est ad modum litteralis, sed mystica, mitto eam, & alias eiusdem farinæ ad contionatores, vt quòd fugerit Herodem in pœnam, & suplitium illius, qui non erat dignus inspicere faciem, & gaudere præsentia Christi, & quòd officio redemptoris incepit soluere tributa pensionum, & pænalitatum in hac fuga. Deinde fugisse iuxta legem Exodi. 23. dicentem, non esse occidendum agnum in lacte matris, aut in ea excoquendum, ne ipse agnus Dei in amplexu matris fugens lactem, pendens ab vberibus occideretur. Latiori calamo verba PP. apud Syluei, ibidem q. 4.

Conclusio asserit sextò, quòd, *fugit in Egyptum potius quam in aliã regionem.* Asiam &c. pluribus ex causis fusiori calamo apud Cornelium hic, & Syluciram ibidem q. 5. Prima vt impleretur quòd dictum est per Prophetam à Domino, Oseam c. 11. *Ex Egypto vocaui filium meum*, quòd intelligitur de Christo primô, & principaliter in sensu mistico: licet litteraliter de populo Israelitico, in exitu de Egypto, figura, & typo Christi, huius generis sunt alia testimonia Isaiæ 19. *Ecce Dominus ascendes super*

per nubem leuem, & ingredietur Egyptum, & commouebuntur simulachra à facie eius, & ad ingressum illius idola corruisse scribit S. Hyeronimus, & alij vt hæc traditio videri possit prisca, & antiqua. Secundò, elegit Egyptum in fuga ad asylum potius, quam aliàs prouincias viciniores, eò quòd illo tempore erat libera ab Herode, & alijs Tetrarchijs, & Iurisdictione, ac si fieret trãsitus ab vno regno in aliud, tum etiam, quia ab incursu hostium, erat securissima, & tutissima ob Nili fluuios, aut riuos, quibus alluitur. Ingreditur enim in mare ōstijs quinque. Et hinc Iudæi ibãt in Egyptum, vt ad locum munitum, dum fugiebant Chaldæos, & Assirios. Tertio, quia fuit Egyptus hospitium, & refugium tempore famis, & peregrinationis antiquorum Patrum, Abraham, Iacob, & Ioseph, &c. vbi habitarunt per ducentos annos, vsque quo euocati sunt à Deo per Moysem, & ibi repeteret antiqua incunabula progenitorum ad breue tempus. Sed priores rationes sunt magis litterales, quam istæ, sicut, & aliæ videlicet, vt vbi occisus est agnus paschalis illius figura Exodi 12. ad esset figuratum, & illius descensu daretur signum pacis, & amicitiæ, in occisione primogenitorum, præsentia, & visitatione primogeniti Dei, & mulctati virga Moysis pacifica visitatione fouerentur, & vt visititione sua, quippè veri Dei idola, & superstitiones tolleretur. colebãt enim vitulũ, canem, fellẽ, Cocodrilum, & ingreditur, Christus, vt purget ab idolis, & ad veram fidem perducat, & deducat. Nõ vt olim ad submersionem mortiferam in mari Rubro, sed viuificam in Baptismo, & tandem visitatione sua illuminet Egypti tenebras, & sanctificet terram illam sua præsentia. & reddat Egyptum feracem fructiferam sanctorum, vt ex tunc Antonios, Macharios, & alios sanctos Egyptus germinaret eremitas, & solitarios instituti Eliani sequaces. Aquo originaliter prodire Carmelitæ, & imitatiuè authores religionum.

Conclusio asserit quintò. *In via mira accidisse secundùm opinionẽ quorundam*, præsertim Iacobi de Borragine, & Gislandi, qui inter illa numerant, quòd referunt ex historia tripartita, quòd infanti ingredienti vrbem Egypti Hermopolim inclinauit se arbor præexcelsa vsque ad terram, insignum venerationis. Secundò, quòd palma se inclinauit offerendo fructus suos ad alendos parentes, & radice scatuisse fontem ad potandos. Tertiò defendisse ab incursu latronum, & Bellouacensis in speculo historiali lib. 6. capit. 49. testatur, feras, leones, bones, &c. inclinabant capita illis, & viam ostendebant. Cœterum Cornelius alapide, & Sylueira

lib.2. cap. 7. q. 12. ex Gelasio Papa, & Ruderico Episcopo vlisponensi, hæc, & alia censent fabulosa, ex lib. apocripho intitulato infantia Saluatoris, & ex Alcorano de fide suspecta quibus adhære, dum Ecclesia aliud non docet, do, quia mira, non amittunt fidem si forte habent, ex eo, quod misceantur fabulosis, & apochriphis, & damnatis à viris doctis, & quòd tale opinatur, forte est verum.

AD MORES.

Quòd *diuina consilia, & præcepta statim scitissime implenda, non differenda.*

Quòd *nec familia Sanctissimorum est libera, & immunis ab anxietate dolore, & laboribus præsentis vitæ.*

Quòd *Christus Dominus ab infantia sua, vt indicet dilectionem, subijt incommoditates.*

Quòd *verbum ante humanitatẽ allumptam visitat improbos flagellis, infans factus delitijs.*

TEXTVS.

Vers. 13. *Futurũ est enim vt Herodes quærat puerum ad perdendum eum,*

AD LITTERAM.

Dub. 3. *Vnde Angelus certo præscire, & prædicere potuit Herodem quæsturum infantem ad occidendum? & cur voluerit occidere? & cur non occidit statim ac illusus fuit à Magis? & si existimabat Deum, quomodo ausus fit aggredi occisionem?*

Conclusio asserit primò. Quòd, *licet ex ingenio Herodis, & ambitione regnandi potuerit conicij coniecturaliter illud futurum, non tamen certo, nisi Angelus didicisset ex visione illius in verbo, aut potius ex Dei reuelatione.* Iuxta opiniones cognoscendi Beatos creaturas in verbo. Ratio; nam cognitio certa futuri contingentis pendentis ex causa libera est propria solius Dei, vt creaturæ communicari nõ possit, nisi altero ex prædictis modis, an autem Angelus possit, esse prophera, vel ipsa cognitio beatifica inseruiat prophetiæ, sibi, & Christo an sit opus speciebus, non est istius instituti.

Conclusio asserit secundò. *Voluisse occidere infantem, quia timebat dignitate regali reppellendum, vt intrusum in aduentu infantis legitimi Regis Iudæorum.*

Conclusio asserit tertiò. Quòd *non occidit statim ac illusus fuit à Magis, sed distulit ex triplici causa.* Prima, nam vt dicit glossa existimauit Magos fuisse illusos, & deceptos falsa apparitione stellæ. Secunda, vt sic dissimulando facilius caperet puerum inopinatè. Tertiò, quia à Cœsare vocatus adiuit Roman, & sic fuit impedi-vno circiter anno, & illlo distulit animum occidendi puerum.

Conclusio asserit quintò. *Voluisse occidere puerum, quem audierat Messiam duplici ex causa.* Prima, quia non certo cognoscebat Messiam, sed audiens in dubio hæsit. Secunda, quia si credidit in eam in incidit mentis excecationem, & dementiam, præ ambitione regnandi,

di, vt existimaret, & de liberaret posse inducere necem, interficere, & de ponere à dignitate regali, & bi vsurpare. Ratio; nam ingens ambitio, & passio inclinat in affectus rerum impossibilium, si non efficaces formaliter, saltim virtualiter, quia quantum est ex se perficeret opere, si non ocueretur impedimentis, vt patet in Angelo affectante diuinitatem, vel secundum substantiam, vel æqualitatem, vt nulli subesset, & cæteris præesset, vel in homine, qui cupit efficaciter, virtualiter occidere se potentiorem, & validiorem, aut accedere ad monialem nisi obstaret clausura, aut ad coniugatam, principem, aut Reginam nisi cohiberetur impedimentis.

ADMORES.

Quòd *sunt cohibenda iuditia temeraria rerum, quæ fugiunt scientiam nostram.*

Quòd *ambitiosus nihil intentatum relinquit vt regnet.*

Quòd *ambitioso impossibilia facile possibilia apparent.*

Quòd *est delirium quidquam aggredi contra Deum, adhuc existimatum.*

TEXTVS.

Vers. 14. *Qui consurgens accipit puerum, & matrem eius nocte: & secessit in Egyptum.*

AD LITTERAM.

Dub. 4. *Cur de nocte fugit Ioseph? & an ipsa nocte, vel alia sequenti? & cur dicitur accepit puerum, & non accepit filium? & quantum distet Nazareth: ab Egypto?*

COnclusio asserit primò *fugisse de nocte cum puero, & matre, quia fugæ erat valde acomodatissimũ tempus.* Ratio; nam licet Angelus apparens nocte, non præciperet ex præsse quòd fugeret nocte, dixit implicite eo, quòd intrètio erat, vt recederet, quo magis occultè fieri posset, & ita elegit noctem, vt tempus fugæ magis opportunum vbi enim res est in periculo, est adhibenda industria, & cautio prudentialis, ne tentur Deus spe miraculi cum caueri potest euentus humana diligentia. Vltimo quia non obstat, quòd Abraham ingrediès Egyptum Genes. 12. timens quòd si diceret Saram esse vxorem suam, occideretur, & dixit sororem, quo rapta est Sara ad Regem, & in periculo puditiæ vxoris fiduciam habuit in protectione Dei, nam ibi defficet ars, & industria humana, & vbi defficit, ad Deum recurrit fidens vxoris custodiam de diuina prouidentia, antea enim vsus est industria instruendo illam, quòd diceret esse sororem, sed in raptu ad aulam regiam, vbi defficit humana di-

diligentia recurrit, & fugit ad protectionem diuinam.

Conclusio asserit secundò. *Satis probabile esse fugisse ipsa admonitionis nocte, nec distulisse in secundam, aut tertiam.* Ita eruditi interpretes, quos citat, & sequitur Sylueira ibidem q. 8. Caiet. Barrad. & alij. Prima, quia textui est magis conformis, vbi dicitur, quòd admonitus insomno *accepit puerum nocte*, &c. Secunda, quia in eo eluceſcit magis prompta Ioſephi obdientia, vt expendit hic Cornelius, ſuppo nens noſtram ſententiam, licet non expreſſe diſcutiens, qui æmulus Abrahæ, qui eadem nocte, qua accipit oraculum de ſacrificando filio Iſaac, tulit illum de nocte, & eadem nocte. Vltimò, nam admonitio Angeli fortè facta eſt prima nocte in inchoatione ſomni, & ita facile potuit diſponere de rebus ſuis, & paupercula ſupellectile reliqua periodo eiuſdem noctis. Nec reliquiſſe primo occupanti, & fortè ſalutauit vicinos, & illis reliquit, quæ portare non potuit, vt non differret executionem mandati, cum infantis periculo.

Arguitur contra ex Abulenſi hic q. 59 qui aſſerit, *non fugiſſe, aut ſeceſsiſſe ipſa nocte admonitionis*, ſed *ſecunda, aut tertia, quia* ibat in Egyptum per diuturnum tempus vſque dum de alio admoneretur, & ita ad diſponendum de ſupellectili, & preparandum neceſſaria ad iter, egebat dicto tempore. Secundò, quia ſi diſcederet inſalutatis vinicis inijceret ſuſpicionem grauis mali, prout cuique occurreret. Reſpond. brebi potuiſſe diſponere de paupercula ſupellectile, præſertim, ſi contigit apparitio in initio noctis, & fortè non opus erat emere aliquid ad peregrinationem, ſed Dei prouidentia erat in domo. Ad ſecundũ potuiſſe intimiores vicinos ſalutare, & licet relinquerentur inſalutati, bona opinio de virgine, & Ioſepho tolleret omnem ſuſpitionem.

Concluſio aſſerit tertiò, quòd, *dicit accepit puerum, & non dicit filium ex rationabili cauſa.* Prima, quia non erat pater naturalis pueri, ſed tantum nutricius. Secundò, quia licet eſſet pater naturalis in opinione vulgi, locutio in veritate ſcribenda erat ab Euangeliſta, niſi dum exprimitur ſermo de vulgi opinione, vt *quem dicunt homines* eſſe filium hominis? alij Ioannem Baptiſtam, alij Eliam, &c. Solet confirmari, ex illo verbo accepit puerum, accepit tanquam in tutelam, vt illud Geneſ. 43. *Ego ſuſcipio puerum*, de manu mea require illum; & exponit Albertus Magnus de ſuſceptione in tutelam, licet Carthuſianus accepit puerum, & baiulauit in vlnis, aut ſcapulis. Quæ quidem benigne accipienda, non vt in hac acceptione pueri ſit inſtitutus nutricius, qui iam erat antea, ſed vt exerceret factũ officij tutelaris.

Concluſio aſſerit vltimò, quòd,

illud

illud verbum recesſit nocte in Egyptũ non ſit ita accipiendum, vt peruenierit in ipſa nocte in Egyptum, niſi ordine intẽtionis, non ordine executionis. Intelligendum receſſiſſe inchoatiuè à Nazareth, verſus Egyptum. Ratio, nam inter poſsita erat longa intercapedo, & diſtantia inter Nazareth, & Egyptũ, quæ nõ poſſit peragi, niſi miraculoſè in breui ſpatio vnius noctis. Nã ſi fides eſt adhibenda Abulenſi, quæ in re ſcripturaria mihi maxima hic q. 60. ducto computo dicit intercedere 20. leucas inter terminum Iudeæ, & Egyptum à Gaza, in Cayrum 20. terrę habitabilis, deſertę verò vaſtitatis 50. alij ex Nezareth ad Cayrũ 100. Nec reffert, quòd Iſraelitæ in exitu de Egypto in terram promiſſam conſumpſerint. 40. annos, nam ducti ſunt à Moyſe via circũflexa, non directa.

AD MORES

Quòd *imminentia pericula ſalutis animæ, omni celeritate ſunt fugienda.*

Quòd *ille, cui incumbit cura familiæ tenetur, arte, & induſtria procurare proficua, auertere noxia, & nociua*

Quòd *cum iactura rerum temporalium ſolicite curandum eſt, de obſequio Dei.*

TEXTVS.

Verſ. 15. *Et erat ibi vſque ad obitũ Herodis, vt adimpleretur quòd dictum eſt à Domino per Prophetam. Ex Egypto vocaui filium meum.*

AD LITTERAM.

Dub. 5 *Cur Euangeliſta faciat mẽtionem de Ioſephi ingreſſu, & manſione in Egypto, & non de Mariæ, & Pueri? & in qua ciuitate, & quotto tẽpore? & quis iſte Propheta innominatus? & cur introducitur Propheta teſtimonium, Ex Egypto vocaui, &c. Et an intelligatur ad litteram de Chriſto, vel de populo Iſrael?*

Conclusio aſſerit primò, *Ioſephi ingreſſum, & manſionem expreſſiſſe, non verò Mariæ, & Chriſti, non ſine myſterio, & cauſa rationabili,* Prima; nam in ſuperioribus iam erat præmiſſa mentio illorum. Ratiò, nam Ioſeph erat caput familiæ, & in capite erat contenta Maria; & filiꝰ Ieſus politicè, aut œconomicè ad eũ modũ, quo Rachel dicitur deſcendiſſe in Egyptũ ad adorandũ Ioſephũ, figurata nomine lunæ, cum perſonaliter non deſcẽderit, nam illa defuncta, eſt adoratus Ioſeph, & non adorauit, niſi viro adorante: in quo dicitur deſcendiſſe, & adoraſſe, & vbi ille erat, illa etiam, vt vxor eſt in viro vt in capite.

Concluſio aſſerit ſecundò. *Manſiſſe in ciuitate Solis, quæ græcè dicitur Heliopolis, & Babylone dicta à Chaldæa.* Ita communiter PP. Anſelmus S. Thom. Abulenſ. & alij, quos citat, & ſequitur Sylueira ibidẽ q. 13.

Prin-

Primo, quia in ciuitate Heliopoli habitauit olim Iacob cum filijs, ex Ioſepho, ſecundò antiquitatũ cap. 4. & ibi voluit Deus exulari Chriſtum, vbi Iacob, & Iſraelitæ exulauerunt. Secundò, quia inter Heliopolim, & Babyloniam eſt in horto balſami fons, in quo fama eſt lauiſſe Mariam infantem Ieſum, & eius paniculos, & lapis in quo extendebat, vt exicarentur, & ita eſt veriſimile in vtraque ciuitate extrema inhabitaſſe. Tertiò, ex Abulenſi q. 60. quòd in ciuitate Heliopi, 360 Idola (iuxta dies anni) in templo ad ingreſſum Chriſti corruiſſe, ſicut ad ingreſſum Arcæ, quę erat figura, & typus Marię, Dagõ, ſed aſſertio veritate ſuperat efficaciã probationũ

Concluſio aſſerit tertiò. Quòd, *licet quidam ſentiant manſiſſe vno anno, alij biennio, alij quadriennio, alij quinquennio, vel ſexenio, verius eſt manſiſſe ſeptenio in habitatione Ægypti.* Ita innumeri PP. & authores S. Thomas, Benauentura, Abulenſis, & alij, quos reffert, & ſequitur Sylueira ibidem. Primò, ex communi traditione populi Chriſtiani Secũdò ex reuelatione ſactæ Sãctę Brigitæ lib. 6. cap. 58. Tertiò, nã vt bene Baronius cõſtituit redditum ex Ægypto anno Chriſti 8. quid autem ibi egerint definiri non poteſt, & liber de infantia Saluatoris præcitatus eſt in certę fidei.

Cõcluſio aſſerit quartò. Quòd, *propheta innominatus ſit Oſeas cap. 2. dicens, Ex Egypto vocaui filium meum, & inducitur teſtimonium ab Euangeliſta aptiſsimè*, quia ſcribat Iudæis, quibus nihil probatur ſine teſtimonio.

Cõcluſio aſſerit vlt mò Quòd, *dictum teſtimonium propheticum ſit intelligendum ad litteram de populo Iſraelitico educto de ſeruitute Egypti, myſtice verò, & principalius de Chriſto filio Dei naturali.* Ita innumeri PP. Hieron. & alij apud Sylueyrã ibidẽ q. 14. interpretes, ſcholaſtici, Barradas, Beaugxamis, Suarez, Vazquez, & alij quos citat, & ſequitur. Ratio, nam vt dictum, eſt in noſtra arte exponendi diſput. 9. dub. 18. ſenſus litteralis expendi debet ex omnibus, & ſingulis antecedentibus, & cõſequentibus particulis, ſed plures prædicti teſtimonij cohærent populo Iſraelitico, & minime aptari poſſunt Chriſto vt adoratio, &c. ergo non intelliguntur litteraliter de Chriſto, ſed ſolùm miſticè, in illo exitu populi, & reductio Chriſti infantis. Quantumuis communi voce cõprehendatur vtrumque, ſæpe enim in figura intenditur ab Spiritu Sãcto, licet non immediatius, ſaltim principalius. Vltimò, nam dicit Euangeliſta, *vt impleretur*, quòd dictum eſt per prophetam ergo in aliquo vero ſenſu intelligitur de Chriſto, non in litterali, quia ex Oſea conſtat agi de populo Iſraelitico, & plura, quæ de illo dicuntur, nõ coherẽt Chriſto, ergo intelligi debent in myſtico, qui etiã eſt in-

tentus ab Spiritu sancto, & interdum principalius, nō immediatè, sed mediatè, & interpositō alio in quo significatur.

Arguitur pro sententia Ianse nij, qui asserit *aptari Christo in sensu accommodatio, dilecto filio Dei.* Vt si illud poætæ, omnis in Ascanio chari stat cura parentis, accommodetur alicuius filio valdè charissimo, ita illud populi chari, Dei Christo filio charo.

Respondetur, non posset intelligi prophetiam in solo accommodatio, quia ille non est intentus, vt dixi in arte exponendi disput. 9. dub. 13. Deinde, nam dicit Euāgelista, vt impleretur, &c. & aliud est impleri scripturam, in qua prædictum, est impletum, in sensu aliquo. Nam dicitur per interpositam figuram, & rem, figuratum, aliud verò accommodari, quod valdè distat, quia est ille accommodatius, qui præter institutum, & mentem Authoris fingitur significatus, & applicatur, & accommodatur quibuslibet, vt dictat occasio, iuxta dicta ibidem dub. 13.

Argui potest pro sententia, quæ asserit, *intelligi de Christo, & de populo in sensu litterali*, pro qua citatur Liranus, Abulensis, & innumeri alij apud Sylueiram ibidem. Nam idem locus scripturæ potest habere plures sensus litterales, præsertim si sub voce communi plura significentur, vt hic sub nomine communi filij, populo, & Christo.

Respondetur, iuxta dicta in arte, & methodo exponendi, sub eodem loco posse significari plura litteraliter, si immediate significetur vtrumque, non tamen, si vnū immediatè, & alterum mediatè, per rem interpositam præsertim dubio 7. In præsenti autem, licet sub voce cōmuni filij possit vterque, non immediatè significatur populus, & Christus, sed immediatè populus, & mediatè in populo Christus, quoad exitum in figura figuratus.

Arguitur ex Osiandro. Nam in vno, & innumerabili populo, non potuit repræsentari, vt in figura, vnus homo Christus. Respondetur posse. Nam erant plures in genere entis, in genere figuræ, & figurati intentionali, vna figura vnius figurati. Et vnus homo Abraham potuit significare plures vnius populi, cuius erat caput, & ita inuerso ordine plures vnius populi, vt vnitate figuræ figurant Christum.

AD MORES.

Quòd *in familia solus vir caput illius intitulari, & vocitari debet.*

Quòd *vir vxoratus, ita per dilectionem, sibi coniunctam habeat vxorem. Quod illo nominato, in corde sita, censeatur nominata mulier.*

Quòd *viri, & vxoris vna concors, & simultanea debet seruari cohabitatio, nec dissidio dissiungenda.*

Quòd

Quòd *Labores subacti pro Deo, sunt patienter tolerãdi, licet diu durẽt.*

TEXTVS.

Vers. 16. *Tunc Herodes videns, quòd illusus esset à Magis iratus est valdè, & occidit omnes pueros, qui erant in Bethleem, & finibus eius ab imatu, & infra.*

AD LITTERAM

Dub. 6. *Quare Herodes existimauit se illusum à Magis? & cur potius perpendit tunc, quam antea? & quæ de causa tunc irascitur? & quare non contra Magos, sed cõtra pueros?*

CONclusio asserit primò, *existimasse se illusum à Magis, & tunc non sine causa.* Primò, quia expectabat, reddituros Magos ad ipsum, videbat, non redijsse, aliundè fama increuerat natiuitatis pueri, ex publicatione pastorum, & ex relatione exploratorũ, qui ab eo missi sunt, didicerat, non illusos esse Magos stella indice, sed fuisse inuentum puerum, & adoratũ, & hilares, & lætos redijsse per alium viam in regionem suã, quod tunc inuestigatus, certò sciuit, & non antea, & alia de præsentatione Christi in templo, de confessione Simeonis, quod esset Messias, lumen ad renelationem gentium, & gloriam plebis Israel, de Ana prophetisa, &c & ideò tunc potius quam antea existimauit se illusum, quia non redierunt, vt ipse expectabat, & forte, vt insinuat imperfectus in Matthæum, existimauit magis obsequutos parentibus infantis Regis, quam sibi. Secundò, nam iudicauit fuisse vilipensum à Magis, non obsequentibus ipsi præcipienti, quòd si inuenissent renunciarent, vt ipse etiam adoraret. Tertiò, ex Chrisostomo homilia 2. Herodes illudebat Magos dicens, vt renunciarent, vt ipse adoraret, & vidit ab illis illusum esse, & illusionem illusione depulsam, incidens in foueam, quã fecit. Vltimo, ex Alberto magno. Nam Herodes fuit illusor, & reputauit illusionẽ omne id, quod optatis suis, nõ obtẽperabat, nã qualis quisque est iudicat alios, & facile sibi credit, quidquid suspicatur, & ita superbus omnes alios iudicat elatos, & superbos.

Conclusio asserit secundò, quòd *Nunc irascitur Herodes ex fundamento.* Primò, quia habebat in optatis occidere puerum, & desideriũ videbat frustratum, quia Magis recedentibus iudicabat, se non posse inuenire puerum, & ideo iratus est vehementer. Secundò à quibusdã, nam Magi ediderãt promissionẽ, & fidem reuertendi, & ex fide violata concepit indignationem, & iram. *Sed in textu* talis promissio, non exprimitur, aut iuramentum reuertendi; & si esset ex fide, qua credidissent datam, vt adoraret, obli-

obligati erant solùm in ordine ad adorationem, iuxta mentem promittentis, & iurantis, sed non ad internetionem detecto animo occidẽdi. Tertiò, ex Chrisologo sermone 152. Nam dolet impietas, dum se experitur defraudatum optatis, & furit, & fremit in se ipsã. Vltimò, ex allegatis vlterius pro prima parte conclusionis iræ enim fundamentum, quod à Magis se iudicauat illusum, & quod vilipendens Magos, se inuenit vilipensum, & quòd fallax in alios experitur in se reuersam fallatiam, & tandẽ, quia timebat aduentu pueri adiunctis Magis in fœdere, amicitia, amissurum regnum, & ab illo detrudendum per vim, & potentiam, & ita irascitur contra fautores.

Conclusio asserit vltimò. *Non tã in Magos, quã in pueros sæuisse, & irã conceptam contra principes vertit in infantes imbelles, & inermes.* Primò, nam ea est conditio potentium huius sæculi, vt dum rabiem in supremos Dominos euomere, non possint, inuertant in fragiles, & impotentes, dum enim difficille iudicat parare exercitus cõtra Magos, parat satellites contra innocentes, & imbeles infantes. Secundò, nam illud iudicauit remedium opportunius, & efficacius ad cauendum sibi, & repellendum exitium imminens ex infante nato, Rege Iudæorum, occidere omnes infantes, & mittere falcem in teneram segetem, vt inter omnes interficiat vnum intentum, in quo vidit Regnum periclitari.

AD MORES.

Quòd *insolentorum, & superborum ea conditio est, vt quidquid, non arridet, infestet, quod non fauet sit aduersum.*

Quòd *maiestas non aplausa totis viribus euomit iras, & furores.*

Quòd *iracundi furor languescit erga potentes delinquentes, & acuitur, & efferuescit in imbeles, & pauperes.*

TEXTVS.

Vers. 16. *Et mittens occidit omnes pueros, qui erant in Bethleem, & in omnibus finibus eius.*

AD LITTERAM.

Dub. 7. *An Herodes iusserit fieri infanticidium, statim eodem anno, quo Magi recessere in regna? an distulerit ad annum sequens à Christo nato decimum quintum mensem? & cur distulit ad illud tempus? & an occiderit infantes bimos? & quomodo intelligatur* abimatu, & infra? *& an occiderit per se, vel per ministros? & cur in Bethleem, & in omnibus finibus eius? & quot fuerint occisi? & an fuerint vere martyres Christi? & an in pœnam peccati parentum sit volitum infanticidium?*

Cõclusio asserit primò, *occidisse infãtes, nõ statim post Magorũ discessũ, sed anno sequẽti, qui à Christo*

nato

nato inchoabatur secundus, & ita occidit infantes bimos inchoatos, non completos, vt natos post ortum stellæ quindecim mensibus plus minusvè, ita Augustinus, & alij PP. innumeri, quos refert, & sequitur Cornelius à lapide hic, quæ videtur sententia media, inter sententias, quarum vna asserit, occidisse bimos ante ortum stellæ, alia occidisse infantes trium mensium à natiuitate Christi, vt occiderit trimestres. Primò, nam id videtur magis conforme historiæ Euangelicæ ex congerie rerum, quæ nõ potuit breui absolui. Nam dicitur, quod vbi primum cognouit Herodes se illusum esse à Magis, iratum esse, & misisse satellites ad bimorum infanticidium, credebat enim Christum simul tempore natum, cum stella indice, non ante, aut post, & audiuit Christum in templo præsentatum, cum esset trium mensium ab ortu 40. die, scilicet 2. die Februari, vbi Ecclesia agit festum purificationis, & fuisse celebratum, vt Messiam à Sancto Simeone, & Ana, & increscente timore iusit occidi bimos sub ortũ stellæ, natos intra biennium ab ortu stellæ, fuit enim diligenter scrutatus tempus natiuitatis stellæ, vt occideret, qui nati fuerant sub illius ortu, non diu ante, vel diu post, sed intra biennium à stella, cum scilicet Christus esset vnius anni, & trium mensium, quasi intra quindecim menses natos, vt occiderentur pueri recenter nati vsque ad biennium, vt occideret bimos, id est, qui duorum erant annorum, & infra, qui nondum pertingerant biennium. Et ita intelligi debet illud abimatu & infra, accipiendum esse, non copulatiuè, sed copulatim, sicut cum dicitur duo, & tria sunt quinque, omnes planetæ sunt septem, omnia elemẽta sunt quatuor, non copulatim, vt bimos occidit, & maioris ætatis. Secundò, ex eo quòd iuxta Nicephorum 1. historiæ cap. 14. Elisabetha in spelunca fugit insertum persequutionem Herodis cum filio Baptista cum esset bimus, & Baptista natus est ante Christum sex mensibus, & ita in infanticidio erat viginti mensium, & vnius.

Arguitur pro sententia, quæ asserit *occidisse infantes, qui nati erant biennio ante apparitionem stellæ*. Nam gratia securitatis iussit illos interfici, sicut interfecit, non solum in Bethleem, sed ad maiorem securitatem in omnibus finibus eius, cui accedit nimia, & barbara cruditas, & quòd inter reliquias innocentium ostenduntur ossa longioris ætatis. Respondetur, ipsum satis fuisse certificatũ de ortu stellæ, & Christi, & perministros informatum de præsentatione in templo die quadragesimo ab ortu, & ita solum occidisse natos intra biennium sub stellæ ortu, & vix credi posse, ita fuisse irrationabilem, & stolidum, vt occideret adhuc securitatis gratia in

fan-

fantes ortos ante natiuitatem stellæ biennio, & cum periculo opinionis odij cõciliandi, imò repulsæ tyranni intollerabilis. Admitto occidisse infantes Bethleemitas, quia ibi natus est Christus, & populorum confinium, ratione cautionis, quia verisimile iudicare poterat ibi recessisse. Ad illud de reliquia, dico, forte carnifices excessisse, vt inter bimos occidisse aliquem adultioris ætatis.

Arguitur pro sententia, quæ asserit, *occidisse infantes, post annum, & quatuor dies*, ex Glossa (Gislandus) à natiuitate Christi. Nam Ecclesia celebrat festum innocentium, non vt acciderit quarta die post natiuitatem Christi, sed anno sequenti quarta die intra bimatum. Respõdetur, occidisse sub pascha, fluente ab ortu Christi mense circiter decimo quinto. Ecclesia tamen celebrat festum vltima die paschæ natiuitatis, vt exornet Christi natiuitatem, adiuncto festo occisorum pro illo, non verò ipsa die, qua celebrat, redeunte anno. Vt opinatus est Sa, & Barradas, & plures, quos sequitur Sylueira.

Arguitur pro sententia, quæ asserit, *occidisse statim post discessum Magorũ*. Ex textu, vbi dicitur tunc occidisse, cum vidit se illusum esse Magis, & mittens occidit, & particula &, simultatem notat, sed cõtigit postquam informatus est de præsentatione in tẽplo, facta post quadraginta dies à natiuitate. Respondetur, coniungi res ab Euangelista simultate historiali, non tẽporali, vt cum dicitur fœmina cõcepit, & peperit, vbi particula, &, notat simultatem historialem, conceptus, & partus, non temporalem.

Conclusio asserit secundò. *Distulisse ex causa infanticidium ad secundum annum à natiuitate stellæ, & Christi non completum, sed inchoatum, vt acciderit 15 mense post Christi natiuitatem.* Ita Interpretes ex PP. sequitur Cornelius hic, & Sylueira q. 9. Primò, nam distulit, vt se de Christi ortu, persona, loco, & parentibus informaret, & inueniret modum occidẽdi omnes, ne vnus quidem efugeret, vel è parentibus absconderetur, ad quod, vt notat Abulẽsis iussit scribi omnes in cathalogo nomine, & ætate determinatis, vt scribi solet modo à Parrochijs in Baptismo, & olim in circumcitione infantum, dies natiuitatis, & nomen infantis, & parentum, & ita per cathalogum euocasse singulos, & cum essent euocati simul in singulis vicis cuiuslibet pagi, & oppidi, per carnifices occidisse. Et vt finem obtineret, instituisse iuxta Antoninum, vt prætextu festi ad se afferrent matres infantes bimos, ac præmium daturum. Secundò, nam Herodes obtinuit facultatem ab Augusto, vel per se ipsum, vel per legatum ad occidendum infantes, etiam filium Alexandrum, & Aristobolum, vnde Macrobius lib. 2. Saturnali cap. 10. refert inter Au-

gusti iocosos, quòd cum audisset occidisse inter infantes, etiã filium dixisse facetia melius esse, fuisse Herodis porcum, quàm filium, eò quòd Iudei non occidebant porcos, neque comedebant, quia erat eis prohibitus æsus immundorũ Leuitici 11.

Conclusio asserit tertiò, *Occidisse infantes biennes inchoato biennio ab ortu stellæ, non completo.* Ita Interpretes Cornelius à lapide, & alij. Ratio est, nam exquisiuit à Magis tempus stellæ indicantis natiuitatem Christi Regis Iudæorum, & ita ineptum erat, & irrationale timere alios infantes natos ante natiuitatem stellæ, & Christi, timuit ergo infantes natos ab ortu stellæ vno die vsque ad finem biennij, fluentis, non completi, sed ad mensem decimum quintum. Nam timebat natos sub ortu stellę intra biennium, & ita edictum infanticidij comprehendit infantes vnius diei natos, vsque ad quindecim circiter menses fluentes à natiuitate stellæ, & Christi. Et hoc significatur illa clausula abimatu & infra, à puero vnius diei, vsque ad duorum annorum fluentium inchoatorum.

Arguitur pro sententia, quæ asserit, *occidisse infantes biennes, ante ortum stellæ, & Christi, & similiter biennes post illius natiuitatem.* Primò, nam id videtur induci per illam clausulam textus abimatu & infra. Secundò, nam non mirum, quòd iusserit interfici prædictos biennes, licet Christus solùm attigisse vnum annum, cum aliquot mensibus; poterat enim timere natos iuxta tale tempus, non supra, aut infra ante stellæ ortum, & Christi. Nam id fecit ratione securitatis, sicut cautionis gratia occidit, non solùm Bethleemitas, sed confines populorum, vbi non existimauit Christum natum, iuxta informationem susceptam, & tu Bethleem, &c.

Respondetur iuxta dicta superiori conclusione, illam clausulam abimatu & infra, intelligendam, iuxta expositionem inchoati biennij pro completo. Ad secundùm, quòd licet fuerit iratus valde, non ita deliraſſe, vt comprehendi voluerit infantes biennes ante ortum stellæ, sed post ortum Christi. Nam in eo satis consulebat incolumitati sui Regni, si occidisset natos ab ortu stellæ, & Christi, inter quos comprehendere volebat Christum. Et illud simile nõ vrget de internecione Bethleemitarum, & conuicinorum; quia poterat credi prudenter plures confugisse ad confines, ad asylum occultum.

Conclusio asserit quartò, *Occidisse infantes non per se, sed per ministros præcepto, & edicto suo.* Ratio intelligitur ex textu, vbi dicitur, quòd *mittens* occidit infantes: quia misit per carnifices, & exequutores, missos, vt decebat Regiam dignita-

nitatem, & Maiestatem operari, non immediatè personaliter, sed per ministros.

Conclusio asserit quintò, *occidisse infantes in Bethleem, & in oppidis confinibus*. Primò quia exprimit textus. Secundò, quia erat in dubio, an ibi mansissent, vbi natus est, vel esset delatus ad oppida circumiacentia, & ita comprehendit omnes populos, ne inter aliquos euaderet quæsitus Christus.

Conclusio asserit sexto, *occidisse infantes numero quasi quatuordecim millia*. Ita Interpretes, sequitur notissime Cornel. hic. Primò, nam non est credibile in eo loco Bethleemitico, & oppidis confinibus fuisse tempore Herodis infantes bimos plus, quam ista 14000. vt quidam opinati fuisse numero centum, & quadraginta quatuor millia, iuxta Apocalip. 4. vbi visa sunt à Ioanne 144000. Nam loquitur de vniuersitate Martyrum omnium, non verò de numero summa, & aggere occisorum ab Herode. Vltimò, nam id habent Abyssimi in Can. Missæ, & Græci in suo Kalendario.

Conclusio asserit septimò, *fuisse verè martyres Christi*. Primò, quia ita coluntur ab Ecclesia. Secundò, quia in odium fidei sunt iugulati, & ex liberali Dei ordinatione, ac institutione martyrium dedit gratiam infantibus, & mundauit ab originali eos, qui nondum erant circũcisi, sicut Baptismus in Ecclesia Christi. Tertiò, nam ipso opere confitentes Christum non ore, martyrum lauream sunt assequuti ex tribus classibus Martyrum. Alij enim sunt, qui sola voluntate, vt qui optat martyrium, & non assequitur, alij, qui sine voluntate expressa, vt isti infantes re ipsa, & opere; alij denique, qui voluntate, & opere simul suscipiunt martyrium à tyranno, vt sunt innumerabiles adulti. Et ita mors pro Christo in carne perpessa sine voluntate personali profuit innocentibus ad salutẽ, & gloriã. Et iuxta Augustſerm. de innocentibus tyranus, nõ potuit tantum paruulis prodesse obsequio, quantum profuit odio.

Conclusio asserit vltimò, *Infanticidium innocentium accidisse in pœnam peccati parentum*. Ratio, nam licet ipsi non dederint causam, vt punirentur infanticidio, dederunt parentes, qui hospitio non receperunt Virginem grauidam, nec sponsum Iòsephum, visis adhuc miraculis in ortu stellæ, ne displicerẽt Herodi, & ob id Deus permisit prouocari Herodem ad infanticidium, & tandem voluit, ipsum etiam Herodem ob infanticidium puniri, imò quantum in ipso fuit ob Christicidium. Nam quinto die post illud perucussus est febri, angina, tussi, dissenteria, hydrope, podagra, pediculari morbo, asthmate, putredine, verendorum, & alijs, quibus, exalauit, truculentam animam, & se ipsum occidere agressus

est, & filij eius admissi sunt solùm ad Regni potestatem, aut thetrarchiæ, non ad Regnum integrum, & infœliciter perierũt, imò & posteriori intra breue spatium centum annorum mundo excesserunt, paucis exceptis, iuxta Ioseph. 17. antiquitatum cap. 8. qui refert reputatam esse diuini numinis iustam vindictam.

AD MORES.

Quòd *crudelitas (si humana) dum differt vindictam, non laxat, sed acuit ad inuasionem crudeliorem.*

Quòd *infantes sui martyrij exemplo instruunt adultos ingenuè dare vitam pro Christo.*

Quòd *obsequia exhibita Christo, Mariæ, & Iosepho liberalissime præmiantur à Deo, quò denegatio acriter, & seuerè multatur.*

TEXTVS.

Vers. 18. *Vox in Ramà audita est, &c. Tunc impletum est, quod dictum est per Ieremiam Prophetam dicentem, vox in Ramà audita est ploratus, & vllulatus multus, Rachel plorant filios suos, & noluit consolari, quia non sunt.*

AD LITTERAM.

Dub. 8. *Vbi est in Ieremia locus citatus ab Euangelista, & quibus verbis? & cur non transtulit, vt originali? cur induxit prophetiam? & de quo in sensu litterali? & quid sit Ramà? & quid nomine Rachel? & cur vocãtur Rachel genitrice plorantes? & cur ipsa potius, quàm Lya, Iacob, aut alij? & qui sint filij, qui plorãtur? & cur noluerit consolari?*

Conclusio asserit primò, quòd *in cap. 31. vers. 15. est locus citatus ab Euãgelista.* Ratio, nã licet ibi dicatur vox in excelso, in Hebræo dicitur in Ramà; est enim Ramà nomen vrbis, ita appellatæ, quòd sita sit in excelso, vt aptè Cornel. in Ieremiam, est vrbs in tribu Benjamin iuxta Bethel, & Gauà, per quam ducti sunt Iudæi captiui in Babyloniã, Ieremiæ 40. Deinde *asserit*, quod ille locus iacet, & *legitur sub his verbis. Vox in excelso audita est lamentationis, luctus, & fletus Rachel plorantis filios suos, & nolẽtis consolari super eis, quia non sunt.* Vbi idem est sensus Euangelistæ citantis, & Ieremiæ citati. Nã idem intelligitur per Ramà Euangelistæ, & per excelso Prophetæ. Nã Ramà vrbs à situ excelso, vsurpauit nomen, & ita in re transtulit, vt in originali. Nã Hebræi exprimebãt sermone Hebraico, potius quã interpretationẽ Ramà, pro loco excelso

celso situationis. Deinde dico, *induxisse prophetiam, nequis crederet infanticidium accidisse præter Dei scientiam, ipso ignorante, & impotente ad præuisionem*, iuxta Chrisostomum. Secundò, nam scribebat Iudæis, quibus nihil suadebatur sine probatione manifesta.

Conclusio asserit secundò, quòd *licet sit satis probabilis sententia, quæ asserit, quòd ista prophetia sit intelligenda litteraliter de ista cæde, & infanticidio innocentium, vt nomine Rachel possint intelligi omnes matres Bethleemiticæ plorantes filios suos*, eò quòd dicitur in textu impletum est, quod dictum est per Prophetam, & quia Rachel sepulta est iuxta Bethleem, vbi facta est illa cædes, & in finibus eius, vbi non solùm occisi sunt infantes tribus Iuda, sed, & Benjamin, qui erant posteri Rachelis, & licet alij ex tribu Iuda essent descendentes à Lya, quia fuit mixtus Benjamin, cum Iuda *potest dici Rachel absolute mater vtriusque*, & ita ploraſſe filios occisos ab Herode, non personaliter, eò quòd iam defuncta erat, tamen in persona supposita per fictionem, licet per exaggerationem, & quòd fuit tam ingens calamitas in infanticidio, vt posset excitari Rachel defuncta ad planctum. Sed *dicitur ploraſſe in persona matronarum Bethleemiticarum*, vt tenet eruditè Cornelius à Lapide ad hoc testimonium Ieremiæ, & insequitur Sylueira cum alijs. Verumtamen parcant amici, *dum stet veritas*, iuxta quam asserit conclusio, hic non agi ad litteram de infanticidio Innocentium, sed agi solùm in sensu mystico, & ita prophetiam intelligendam litteraliter de cæde atrocissima Benjaminitarum propter vim illatam vxori illius Leuitæ Iudicum 20. iuxta Originem, Hugonē, & alios, quorum fuit Rachel auia. Vel si mauis, hic agi ad litteram de captiuitate duarum tribuum in Babylonem. Vel, si placet decem tribuum in Asirios, nam Rachel fuit mater tribus Benjāmin in ipso filio suo Benjamino, in cuius enixu prædolore expirauit in partu propè Bethleem; & quia Rachel fuit mater Ioseph, Patris Ephrahim, qui fuit caput decem tribuum, & in sub nomine Rachel significantur matronæ illarum tribuum ab ipsa descendentium, plorantes infantes suos, vt Rachel dicatur plorasse nō in persona sua, sed in persona matronarū plorantium, quarum erat auia remota in dictis captiuitatibus interfectis. Iuxta Sanctum Hieronymum, D. Thom. & eruditos Interpretes Sanchez, Maldonatum, & alios apud Cornelium ibidem.

Primò suadetur ex doctrina, non semel tradita in arte, & methodo disp. 9. dub. 17. vbi dictum, quòd scriptura veteris testamenti significans in sensu mystico, & figurato res noui, non significent in sensu litterali; sed in mystico. Nā significantur non immediatè per

voces, sed per res; & ita implicat, quòd id, quod significatur per res, significetur in sensu litterali, in figura enim nõ significatur aliquid noui testamenti in sensu litterali, sicut dictũ ibi, quòd illud Prophetæ. *Ex Egypto vocaui filium* meũ intelligendũ ad litterã de exitu populi Israelitici de Egypto, & in eo mysticè de exitu, aut regressu Christi infantis ex Egypto, sed in prædictis atrocissimis necibus, saltem in captiuitatibus ad litterã significatis in loco Prophetæ, potuit significari ista cędes inhumana infantiũ innocentiũ, vt in figura figuratũ, in quo videntur sibi omnia cohærere, & correspondere. Nam vbique Rachel, vbi ploratus, vbique cędes filiorum, &c. ergo ineuitabiliter intentum.

Argui potest pro Cornelio Sylueira, & alijs. Nam non valet dicere impletũ esse vaticiniũ litteraliter in prædicto excidio, aut illis omnibus, qui fuere typus, aut figura infanticidij innocentiũ, & mysticè in cęde innocentiũ. Secundò, nam non valet Ieremiæ verba de dicto excidio aptari in infanticidio innocẽtiũ, eò quòd omnia cohærent, & similis est in vtroq; occisio, luctus matrum, &c. Nã occisio eorũ, qui ducti sunt in Babylonem, non potest dici typus occisionis innocentiũ, tum quia Iudæi ducti sunt, & occisi ob sua peccata, non verò innocẽtes: illi ducti in Babylonẽ, isti in cœlũ. Tertiò, nam non dicitur impleri scripturã, vbi quid accidit simile, aliàs diceretur Ieremiæ prophetias de excidio Hierosolymorũ fuisse impletas in excidio maiorũ Cõstantinopoli, aut ciuiũ cuiusq; vrbis, & prophetias de Christi passione impletas esse in passione cuiusuis martyris. Quartò, nã dici possent impleri scripturas in sensu accõmodatitio, quod dixit nemo, quia sensus accommodatitio ab vno simili in aliud, diceretur impletio, & de intento Spiritus Sancti.

Resp. ad primũ iam cõstare ex probatione cõclusionis, qua ratione id, quòd immediatè per res significetur in sensu litterali, & qua ratione id, quod significatur per res significetur in sensu mystico, & ex intẽtione Spiritus sancti. Ad secundũ dico, nõ sufficere aptari, sed hic nõ fit aptatio, aut accõmodatio, sed in vno excidio significatur aliud infantium, & ita hic fit plusquã accõmodatio, nam applicatio, seu accõmodatio fit præter intensionẽ Spiritus sancti, significatio verò vnius in alio, est de intẽtione & mente illius. Ad id autẽ, quod viget Cornel. quod occisio innocentiũ sanctorũ non potuit significari mysticè in aliquorũ occisione impiorũ in captiuitate Babylonica, miror virũ, ita scripturarium in eo hęsisse, illius pace, dico id nõ est inconueniens. Nam negari non potest, quòd in exitu Israel de Egypto significaretur mysticè reggressus Christi infantis ex Egypto, & tamen multi in illo populo

erant

erant peccatores, & idolatræ, nec vrget, quòd propter peccata sint ducti in Babylonem, tum quia nõ instituitur in typum sub omni ratione personali, sed sub ratione illius immediatè per vocem, & significãte mysticè aliud. Ad tertium dico, non dici impleri ratione similitudinis vnius historicæ ad aliam, sed quia in vna intenditur alia, quòd non habet locum in pura applicatione, & accommodatione, ex quo disoluta manent adiuncta in discursu argumenti.

Conclusio asserit tertiò, quòd *hic accipitur Ramaa pro ciuitate, ita nuncupata in tribu Benjamin.* Iudic. 19. *distans per quatuor leucas à Bethleẽ*, & quia ita sit in loco excelso, dicit Ieremias vox in excelso, vbi cum Hebræo legimus, vox in Ramaa, per eam enim ducti sunt Iudæi captiui in Babyloniã, Ieremiæ 40. Ita Cornelius, & Sylueira, & ita benignè accipiẽdi sunt, qui fugiunt ad sensus figuratos, vt intelligatur, quòd illa cædes excitauit voces, & clamores, vt per exaggerationẽ dicatur, quòd illa vox in excelso cœlo ascendens audiri potuit.

Conclusio asserit quartò, quòd *nomine Rachel intelligi debeant omnes matres Bethleemitæ plorantes filios suos, per methonimiam in matre capitali contentæ, aut contra, quæ dicuntur Rachel* ex triplici causa. Prima, quia Rachel fuit mater Benjamin, & posterorum eius, qui cum fuisset commixtus cum Iudà, dici possunt, non ineptè posteri Rachel, non solùm occisi ex Benjamin, sed ex Iuda, & ita matronę istę plorantes filios suos suscipiunt nomen Rachelis capitalis. Secundò, nam Rachel venit in Bethleẽ, & in partu Bẽjamin prę dolore expirauit, & sepulta est in Bethleẽ, & possedit eam quodadmodo suo corpore sepulto, vt videretur esse mater omniũ Bethleemitarum. Tertiò, quia per exaggerationem dici potuit, quòd fuit adeo ingens ploratus, & clamor illarum matronarũ cum cęde innocentium, vt nõ essent satis viuẽtes matres, sed excitaretur mortua Rachel ad plãctũ cõplendum. *Sed ista ratio minus litteralis est cæteris.*

Arguitur, nã dici nõ potest, quòd Rachel plorat, cum plorant matronæ Bethleemitæ infantes suos. Nã ad Rachelis filios non pertinebãt infantes Bethleemitæ, sed ad filios Lyæ, quia Rachelis filius fuit Benjamin, & omnes ex tribu illius, ad tribum Iudà filij Lyæ, & ita potius dici deberet Lyam plorasse filios suos Bethleemitas in tribu Iudà, quàm Rachelem. Respondetur, quòd ista ratio dubitandi iam supra dissoluta est, dum diximus, quòd Rachel fuit mater Benjamin, & consequenter infantium Benjaminitarum, & similiter, quia fuit Benjamin commixtus cum tribu Iudà infantes occisi in Bethleem, etiam reduci possunt ad Rachel, cum autem cędes sit facta in Bethleem, & in finibus eius,

quì pertinebant ad tribum Benjamin, erant enim valdè coniuncti, & ita credi potest, occissos fuisse infantes ex vtraque tribu, & ita di ci potest ploraſſe vtramque tribũ in infanticidio Iudeę per Bethleẽ, Benjamine per Ramaa, & ita Rachel plorat, licet fuerit mater Benjamin, & non nisi per illũ Iuda, in cuius terra erat Bethleem, sed Lya soror eius, sed ratione sepulturæ fuit mater, & ratione commixtionis Benjamin cum Iuda, licet in propria persona, potius dicatur ploraſſe per metaphorã, cum propriè solùm plorauerunt personaliter matres innocentium.

Conclusio asserit tertio, quòd *potius dicitur plorans Rachel, quàm Lya, Iacob, aut alij, ex sufficienti causa.* Prima, quia si fiat comparatio eius ad Iacob caput illius populi, & cæteros progenitores, mulier ex debilitate sexus magis est propensa ad lachrimas, & filiorum compassiones, licet viri interdum in dolore, & lamento excedant Genes. 37. *Descendam* lugens in infernum, Iacob ob Ioseph, si verò fiat comparatio inter fœminas potius dicitur Rachel plorãs. Primò, quòd ad illã pertinebant occisi ex vtraque tribu ob dictam rationem in præcedenti conclusione. Secundò, quia Rachel cum ingenti dolore, & dispendio vitæ comparauit filium Benjamin, quẽ appellauit filium doloris, & ita pluris æstimatur filius, cum tanto discrimine adquisitus, & cũ amittitur relinquit sui ingentem dolorem, quo maiori æstimatione, & prætio erat comparatum, & quo dilectio est vehementior in possessione, fit maior dolor in amissione, & absentia. Et ita dicatur Rachel plorans, quæ vehementiori lumentu sentit absentiam, quo maiori dilectione, & dispendio aquisiuit præsentiam. Mitto alias rationes, quia sunt magis mysticæ.

Conclusio asserit sextò, *Ploraſſe filios innocentes occissos, non filios occidentes peccatores.* Ratio, quia vt dicit Euangelista, ita ploranit, quòd in tanto fletu non admisit vllum leuamen, eò quòd non erat existẽs filiorum præsentia, sed intereuntium occidentium erat existens præsentia, occisorum absentia, erplorat filios occisos, non occissores. Nec obstat, quòd Rachel Ecclesia plorat occissores, non occissos, nam obstat, quod occissores fortè incurrerent adeò graue peccatum, & damnationem æternam, quia ista ratio est valdè mystica. Nam licet occisi iunocentes sint in æterna fœlicitate plorat absentiam in morte, & posteritatem cultorum Dei, quæ ex illis si viuerent sperari posset.

Conclusio asserit vltimò, *noluisse consolari ex ratione adducta in textu, scilicet, quia non sunt.* Ratio, nam siue sit sermo de filijs occisis in prædictis excidijs litteraliter, siue mysticè de his infantibus occisis pro Christo, ratio textus est optima. Nam genuit filios, vt essent

&

& cum impediuntur, vt sint, & existant, in tãto discrimine noluit habere, & admittere leuemen vllum, quia non est leuamen, vbi non restituitur præsentia rei dilectæ, & amissæ. Et ita Ecclesia in absentia suorum fidelium incumbit lamentationi, & clamoribus cimbalorũ, non obstante spe, quòd sint in meliori fœlicitate possessione æterna eorum animæ, dum est absentia præsentiæ.

AD MORES.

Quòd *veritas, non renuit probari in iudicio, & reddere sui fulcimenta, sicut mendatium.*

Quòd *Deus loquitur verbis, & rebus.*

Quòd *parentis est tristari, & lætari de fastis, & infastis filiorum.*

Quòd *ea, quæ cum maiori amore possidentur, cum intensiori dolore relinquuntur.*

Quòd *Ecclesia pia Mater lamenta, & clamores assummit in absentia corporali suorum fidelium defunctorũ.*

TEXTVS.

Vers. 19. *Defuncto autem Herode ecce Angelus Domini apparuit in somnis Ioseph in Egypto.* Vers. 20. *dicẽs: surge, & accipe puerum, & matrem eius, & vade in terram Israel, defuncti sunt enim, qui quærebant animam pueri.*

AD LITTERAM.

Dub. 9. *Quare defuncto Herode iubetur Ioseph redire ex Egypto in terram Israel? & quanto tempore mã sit Christus in Egypto, An vsque ad annum trigesimum? & cur dicitur defuncto Herode, cum Christus ligatus in passione missus sit ad Herodem? & quare non determinauit de aliqua parte regni, sed vniuersaliter in terram Israel? & cur dicitur in plurali defuncti sunt, cum solus Herodes, quæsisset occidere puerum? & cur dicitur quæsisse animam, cum intenderit occidere corpus?*

CONclusio asserit primò, *iubẽri defuncto Herode, ex causa rationabili.* Ratio, nam non erat ratio ad amplius manendum in Egypto ad euitandum periculum pueri, cessante causa periculi, sed post mortem Herodis inquirentis animam pueri, cessabat causa imminens puero, ergo illa cessante non erat ad ibi amplius manendum. Confirmatur, nam erat causa, vt ipse, & parentes essent exules extra patriam diutius, quam exigebat vitatio periculi, cuius causa re cesserant in Egyptum.

Conclusio asserit secundò. *Non mansisse in Egypto, vsque ad annum trigesimum, nec infra biennium.* Ita interpretes Cornelius hic Sylueira similiter cap. 9. q. 1. Prima,

nam

nam ex Euāngelista cōstat, quòd *cum esset Iesus annorum duodecim, remansit in Hierusalē*, & inuentus in templo inter Doctores, ergo nō remansit in Egypto, vsq; ad annū trigesimum. Secundò, nā si mansisset tam diuturno tēpore, erat incōueniens, nam non agnosceretur à Iudæis esse de semine Dauid natū in Bethleem, & de genere Iudæorū, vt Ioannis 7. illi fuit obiectū, præsertim, cū ipse vellet ostendere Iudæis se esse verū Messiam, & cōueniens erat, quòd subtraheretur illis ambigendi occasio. Tertio ex parte doctrinæ. Nā si in Egypto tādiu permansisset possent Iudæi venire in suspicionem, quòd eius sapiētia esset adquisita arte humana, nam inter Egyptios olim erat Acadæmia in vrbe Mēphis, cuius contrarium mirati sunt, *quomodo litteras scit*, cum non didicerit, autumnantes diuinitus inditam. Cō firm. nam in suæ prædicationis initio, agnitus esse debebat eruditꝰ in omni genere, ne fieret calumnia, quòd nō vidissent in obseruātia legū, cui obiectioni à quibusdā respōdet in curatione infirmorū Matth. 5. *non soluisse legem*, sed impleuisse, & immerito scandalizari, cū vidissent mira, & virtutes ante prædicationē. Quartò ex parte miraculorum, tum quia Iudæi suspicarētur si immorasset in Egypto tāto tēpore, quòd maleficè operaretur miracula, quippè contraxisset contagiū artis diabolicę ex diuturna cōsuetudine cū maleficis, & incantatoribus, qui in arte Magicā erāt peritissimi in Egypto, vt quidā suspicati sunt dicentes, *in Beelzebut* eiecisse dæmonia, cui respondit reuincēs illos, quòd dæmoniū, non haberet, sed in digito Dei eiecisset dæmonia. Confir. nam non erat cōueniens, vt subitò in Iudæa operaretur mirabilia, sed expediebat, vt gradatim ostenderet sapiētiam, & alia magnalia, discurrendo per ætates. Nam prudentia est paulatim, nō subito in magna prosilire, ne mens percipientis magnitudine mirabiliū obruatur. Etita omnia dispossuit mira sua, aptè ordinare in nostram salutem, vt assuefacti minoribus, maiora ample cterentur.

Secunda verò pars probatur, quòd in Egypto nō est immoratus infra biennium, nam Angelus non statim defuncto Herode apparuit Iosepho, quia Herodes obijt circa tēpus paschale, ex Iosepho 17. antiquitatū capite 11. & Ecclesia scribit reditū in martyrologio Romano die 7. Ianuarii, iuit enim in Egyptū vno anno ante obitū Herodis, & regnante Archælao filio Herodis, & verisimile est in initio Archelai redijsse, iuxta fide dignos Historiographos apud Corneliū, & Sylueiram, quibus fides est adhi bēda, licet Baronius sit opinionis ætatis anno nono, Armonius 7 Iāsenius 5. in quorū opinione immoratus est, vltra bienniū, & in aliorū, vsq; ad trigesimū, vide historiā latiori calamo relatam ex Iosepho

apud

apud Cornelium, ab Herode per filios, quã patiatur nostra brebitas.

Conclusio asserit tertiò. *Aptè dici defuncto Herode rediisse Christum, licet in passione dicatur delatum ad Herodem.* Ratio, nam vt dictum est supra dub. 9. tres solent memorari Herodes in Euãgelio, & Actis, Ascalonita, Antipa, & Agripa, hic de quo dicitur defuncto Herode est primus, & ad secundum remittitur Christus, & illuditur, tertius est sub quo Actorũ 12. occisus est Iacobus, & vinculatus Petrus.

Conclusio asserit quartò. *Non determinasse aliquam partem regni, sed dixisse generaliter, quòd reddiret ad habitandum in terram Israel, ex rationabili causa.* Prima ex Hugone, quia ex indeterminatione intelligeret designari digniorem, vt Hierusalem. Sed parum vrget, quia ita non specificauit principaliorẽ, potius aperitur facultas eligendi quilibet. Nam defuncto Herode, periculũ expirauit, & in qualibet erat, vt in loco tuto. Secunda, ex Glossa, Lirano, Abulẽsi, & alijs nõ designatur locus, vt iterum rediret in dubitatione ad consulendum Deum, & daretur occasio iterum collequendi cum Angelo, & accipiendi instructionem, & consolationem ab ipso, & si instrueret ab initio, non daretur occasio ambigendi, dubitandi, colloquendi, certificandi, & consolandi, quia de medio toleretur omniũ ansa, & occasio Vltimò, nõ assignauit Angelus locũ, vt prudentiæ illius electio loci relinqueretur, & ita solùm præcipit, quòd discedat ab Egypto, & vadat in teram Israel.

Conclusio asserit quintò. *Dici in plurali defuncti sunt, qui quærebãt, cum solus Herodes quæreret ad occidẽdum multiplici ex causa.* Prima ex S. Th. 1. 2. q. 82. eo quòd in scriptura solet poni numerus singularis pro plurali per figuram Antiphosim, sed profundissimum latet mysterium. Secunda ex PP. Hieronymo, & alijs apud Sylueiram, quia Scribæ, & Pharisæi cum Herode sunt meditati necẽ Domini; illius studio aquiescentes, & Herode mortuo extinctos esse, an verò sint eodem tempore defuncti cum Herode physicè, an politicè, non definiunt plures, alij solũ insinuat defunctos politicè, quatenus extincta potestate Herodis plures ex prædictis, & aulicis, cõplices, & cooperatores, cõsilio, & adulatione dicuntur perijsse quoad iniquam motionẽ illius potestatis. Tertia, & forte magis litteralis, eo quòd, vt aduertit Cornelius, Herodes, & filij ambiẽtes Regnũ contra patrẽ, & Messiã legitimũ Regẽ, ob coniurationẽ innitã cum Scribis, & Pharisæis iusi sunt interfici ab Herode, & interfecti sunt, teste Iosepho lib. 17. antiquitatum capite 8. hi fuere Aristobolus, Alexander, & Antipater, licet alij filij manserint superstites Archelaus, & Herodes Antipas, qui in passione illusit Christum, indutum veste alba, qui non sunt defuncti fal-

saltem biennio, post defunctum patrem Herodem, & cum rediit Christus, adminus biennis in terram Israel, non autem constat istos intendisse occisionem Christi verisimilius est illos defunctos, cũ Herode defuncto. Vltimò, nam Herodes per ministros satellites carnifices in infanticidio intendebat occisionem Christi, defuncto autem Herode, credibile est plures ex dictis ministris vita excessisse, & non solùm quoad potestatem, quam exercebant, & ita potuit dici in veritate, quod defuncto Herode defuncti sunt querentes animam pueri, saltim quoad potestatem inquisitiuam, in cuius virtute quærebant animam Christi.

Conclusio asserit vltimò, quòd *dicitur quæsisse, animam, cum voluerit occidere corpus multiplici ex causa.* Prima nam ea fuit crudelitas Herodis, vt non solum voluerit occidere corpus mortale, sed etiam animam immortalem. *Sed hoc* plus habet exaggerationis, quã veritatis. Secũda ex Alberto Magno, quòd quærebat animam pueri, non secundùm substantiam, quæ spiritualis, & immortalis cum sit, non potest capi ab hominibus, cõprehendi, aut occidi, sed quærebat animam, secundùm actum animandi. Tertiò, quia in scriptura summitur anima pro animatione, & vita corporali, & ita quærere animam pueri, iuxta phrasim idẽ est, ac quærere vitam corporalem pueri. Iuxtà 3. Reg. 19. vbi dixit Elias *derelictus sum ego solus, & quærunt animam meam*, idẽ 1. Reg. 22. & Iob 2. Nam licet *timendi sunt, qui occidunt corpus, animam non possunt occidere*, sed solus Deus, qui potest in nihilum reddigere. Herodes autem, non habebat potestatẽ creandi, & anihilandi animam. Vltimo dixisse animam, non corpus, vt significaretur, quòd in Christo, in veritate erat anima rationalis, & reijceretur ærror, quòd in Christo non erat anima, sed diuinitas loco animæ, qui fuit ærror Appolinaris.

AD MORES.

Quòd *est consilium Angelicum accendendi ad familiaritatem, vbi vita spiritualis animæ non est in periculo, & recedendi ab ea vbi imminet ruina vitæ spiritualis.*

Quòd *pro conseruanda vita spirituali animæ desserenda sunt patria parentes amici, etiam cum discrimine incommoditatis.*

Quòd *in progressu virtutis, initio, medio, & fine, aduersarius eodem nomine diabolus appellatur.*

Quòd *Deus cum dat monita salutis, non prius determinat euentus liberos quam determinetur, sed relinquit arbitrio liberam electionem ad vtramque partem.*

Quòd *multi quærentes vitam corporalem, solicitant interitum, & mortem spiritualem animæ.*

TEX-

TEXTVS.

Vers. 21. *Qui consurgens accepit puerum, & matrem eius, & venit in terram Israel.* Vers. 22. *Audiens autem, quòd Archælaus regnaret in Iudæa pro Herode patre suo, timuit illò ire, & admonitus in somnis secessit in partes Galileæ.*

AD LITTERAM.

Dub. 10. *Quid intelligatur per terram Israel venisse Ioseph? & cur timuit ire in Iudæam? & cur Angelus monet ire in Galilæam? & cur timuit in Iudæa Archælaum, & non timuit in Galilæa Herodem?*

CONclusio asserit primò, *quod illa vox terra Israel sit generalis, & significabat regnum Israeliticum. Quod diuidebatur in tres partes principales, Iudæam, Galilæam, & Samariam,* & Angelus monuit, & imperauit quòd iret, in terram Israel, non designando, aut determinando Regni partem, licet Ioseph potuerit intelligere Iudæam, quia erat pars potior terræ Israel, & in ea erat templum Domini, & adire cogitabat in illud, vt pro reditu felici ageret gratias Deo. Præsertim cũ Dei iussu adire deberent in templum masculi hæbræi singulis annis, tribus vicibus, Exodi 23. licet in mente Angeli aliò dirigeretur.

Conclusio asserit secundò, *quòd timuit ire in Iudæam rationabiliex causa.* Prima ex textu, quia in Iudæa regnabat Archælaus in loco Herodis parentis defuncti, non ita vt verè Rex, vel habens titulum regium, sed spem, & gubernationem ex beneplacito Augusti, si tamen bene se gereret in administratione, & ita dicitur regnare Archælaus, non regio titulo, sed regia potestate, & gubernatione, vt apte cum Caietano, Cornelius, & Sylueira ibidem, & quia male se gessit, relegatus est in lugdunum Galliæ, teste Iosepho 2. de bello Iudaico cap. 6. & Tyrannidem parentis erat imnitatus, & ita imminebat periculum, vt vbi puer appareret in ea ætate, in qua occisi fuerant infantes cõtemporanei. Quia infidelitas, & seuitia parentis, ibi regnabat in Archælao. Secũdò, reddi solet, quòd ideo cœpit timere, quia erat in dubio, & perplexitate, an designasset Angelus sub verbo in terram Israel, Iudæam, Samariam, aut Galilæam, in quas partes erat diuisum Regnum Israeliticum. *Verùm ista ratio* affinis est præcedenti, & non exprimit timoris causam, sed dubij, & perplexitatis. Vltimò, nõ obstat, quod solet obijci, quòd nulla fuit occasio dubitandi, aut timendi, cum Angelus dixerit defuncti sunt enim, qui quærebant animam pueri, præsertim in Ioseph viro iusto, qui non debuit timere posita Angeli admonitione, sed

sed fidere sententiæ,& cõsilio Angeli, nam vere acquieuit Angelo in monitione eundi ad terrã Israel,sed cum esset diuisum in tres partes, & audisset, quòd Archælaus filius Herodis regnaret in Iudæa,vt vir prudens incœpit timere,eò quòd sciebat parentis tyrannidem hæreditasse, & ita secessit in Galilæam. Nam licet in ea gubernasset alter filius Herodis, scilicet Antipa, non erat ita ambitiosus,& crudelis.

Conclusio asserit tertiò, quòd *Angelus iterum apparens,monuit eus ire in terram Israel,monuit ire nõ in Iudæam,sed in Galilæam, quin mutaret præceptum, sed explicaret.* Ita doctissimi interpretes cum Cornelio,& Sylueira hic q.7. Primò,nã Angelus optimè nouerat, quid securitatis, & quid periculi esset in Iudæa, si Archælaus intellexisset Christũ reducem, euasisse infanticidium contemporaneorum, & quid securitatis esset in Galilæa, vbi Herodes frater Archælai, & filius Herodis Ascalonitæ gubernabat, & ita non direxit Iosephũ in terram Israel, ad eam partem Regni scilicet Iudæam, in qua vigebat periculum Archælai, nec mutauit sententiam, sed fortè explicauit Iosepho,fortè prius existi manti,sibi præcipi ire in terrã Iudà,quę erat principalior,& in qua erat templum,cum autẽ videt,aut errorem in Iosepho, aut occasionem explicandi,in quam partẽ dirigebatur imperio, admonetur in somnis, vt secederet in partes Galilææ.Et ita Angelus, non processit incõsequens in motione cœlesti cum induxit ire in terrã Israel, & nũc secedere in partes Galileę, quia(vt dictum) Regnũ Israel cõprehendebat illas tres partes Iudæam, Samariã, & Galilæam, sed adjici explicationem, cuius partis via esset arripienda ad habitationem securam,& tutam,sub qua Galilæa,erat Nazareth,in qua Ioseph habebat domũ, quidquid sit, an Virgo haberet,vel non haberet in Bethleem, quod difficille videtur in textu,vbi dicitur declinasse ad porticum diuersorij, eo quòd non esset illi congrua domus.

Conclusio asserit quartò, quòd *Ioseph timuit in Iudæa Archælaum, & non timuit in Galilæa Herodẽ Antipam, Ascalonitæ filium ex causa rationabili.* Prima,quia non erat tanta ratio timendi in vno ac in alio, nã Archælaus regnabat in Iudæa pro Herode patre suo, Herodes verò Antipa filius Herodis Ascalonitæ,infanticidæ, non regnabat in Galilæa,sed gubernabat,vt Thetrarca.Nam Herodes ex septem filijs,quos habuit, iussit tres occidi,ante mortem duos,& in morte vnum: & ex quatuor remanentibus instituit Archælaum regni successorem si corona imponeretur de consensu Augusti Cæsaris, qui cum videret litigantes de consilio Caij Cæsaris decidit litem, vt regnum diuideretur in quatuor thetrarchias, & vnicuique vna assig-

signaretur in administrationem, Archælao Iudæam, Herodi Antipæ Galilæam, Philippo Traconiti dem, Lisanię Abilinam, iussit tradi. Iuxta Lucę 3. licet cũ spe Regni, si bene se gererent. Quibus autem fuit concessum postea nomen Regis, cũ data demate, & insignijs regalibus Antipæ, & Agrippæ ex Euãgelio, & Actis, & ex Iosepho antiquitatum 10. c. 10. latius cõstabit, igitur maior erat ratio timendi, in Iudæa Archęlaum, quam in Galilęa Antipam, quia maior potestas dat magis liberam potestãad efficiendum pro libertate.

Impugnatur, nam licet vera sit historia relata, & lucem afferat historiæ Euangelicæ timendi maior ratio fundari, nõ poterat in maiori potestate vnius, quã alterius, quia neuter erat Rex, nã licet in hoc textu dicatur, quod Ioseph audiens, quòd Archælaus regnaret pro Herode patre suo, intelligi debet, non Regio titulo, & diademate, sed Regia potestate, si bi ab Augusto Cæsare delegata in dicta thetrarchia, & administratione. In quo fuit paritas inter istos fratres. Nam etiam Herodi Antipę legata est sua thetrarchia.

Secundò, solet reddi ratio, quòd timuit magis Archælaũ in Iudæa, quàm Antipam Herodem in Galilæa, quia de parentis voluntate constitutus erat Rex totius regni terræ Israel Iudęæ, Galilęæ, &c. at verò Antipa Herodes contra patris voluntatem, de consensu imperatoris Romani habebat præsidentiam in Galilæa, & ita Archęlaus patrocinabatur machinationes, & malefacta parentis, Antipa verò Herodes, non fauebat malitię Herodis Ascalonitæ.

Impugnatur in eo, quòd dicitur Archælaũ institutũ esse à parente Regẽ, illo defuncto inter filios superstites his fuit orta, & definitaab Augusto, iuxta dicta diuiso regno in thethrarchias, cuilibet filiorũ assignando suam, placet verò, in eo quòd insinuat in Archælao fundari maiorem rationem timoris in Iudæa, qua in Antipa Herode, in Galilæa, vnde ratio reddi oportet.

Et ita videtur mihi *ratio magis germana* iuxta graues Authores, magis timeri Archælaum ratione sue indolis, maioris malitię, maioris ambitionis, maioris crudelitatis, maioris imitationis tyrannidis parentis. Qui si intellexissẽt Christum euasisse infanticidium, & videret apparere in Iudea reducem ex Ægypto, reuocaret ad necẽ. Nec illi falsa imponimus, nam vt constat ex Iosepho præcitato ob ambitionem, & sæuitiam, & malum regimen missus est in exilium ab Augusto post nouem annos, & Antipas Herodes, fuit adeptus nomen Regis cum diademate, & insignijs regalibus, de quo latiori calamo Cornelius, & Sylueira ibidem,

(***)

AD

AD MORES.

Quòd *Angeli consilia graduali ter dantur, vt gradatim, quis ascendat ad virtutum fastigia.*

Quòd *Dei incuria ad nostra incrementa plus valet, quam ingens nostra solicitudo.*

Quòd *est valdè frequens discordia inter filios, vt maior sibi arroget integram hæreditatem, & ejiciat cæteros à participatione in summam paupertatem.*

Quòd *si cogat nec sit ita: eligendi inter malos superiores, ad incundam vitam socialem, prudentius eligitur, qui est minus Tyrannus, & crudelis.*

TEXTVS.

Vers. 23. *Et veniens habitauit in ciuitate, quæ vocatur Nazareth, vt adimpleretur, quod dictum est per prophetas, quoniam Nazaræus vocabitur.*

AD LITTERAM.

Dub. 11. & vlt. *An fuerit Christus Dominus re ipsa Nazaræus nationali, & vnde dictus Nazaræus? & à quibus Prophetis dictum sit vaticinium, quòd* Nazaræus vocabitur? *& an ob virginitatis votum in Nazaræatu veteris legis? & quare cum natus sit in Bethleem, & non in Nazareth, non fuit vocatus Bethlehemita, sed Nazaræus?*

Conclusio asserit primò, quòd *fuerit Christus Dominus re ipsa Nazaræus, ita denominatus à loco, & patria, in qua conceptus, & educatus est, non verò Nazaræus legalis à religione, & secta Nazaræorum.* Ita PP. comuniter, & interpretes Cornelius hic, Sylueira ibidem q. 12. Ratio prioris est, nam ex Luca constat, quòd *missus est* Angelus Gabriel paranimphus cœlestis ad enunciandum Virgini Mariæ Verbi Incarnationem, & conceptionem Christi, in ciuitatem sitam in regione Galilææ, cui nomen Nazareth, vbi dato consensu conceptus est Christus, & licet natus in Bethleem, tamen fuit educatus per plures annos in ciuitate Nazareth. Quæ iuxta Andricomium in descriptione terræ Sanctæ ædificata est super montem, quam ambiebat arcus circa domos, & domicilia ciuium, instar coronæ, & distabat à Hierusalem itinere triũ dierum, aspectu pulchra, & formosa, & ita ab isto oppidulo Christi patria Nazareth, appellatus aptè est Nazaræus, seu Nazarænus, & quia sita erat in regione Galilææ dictus est etiam Galilæus. Secunda pars probatur, nam summi solet Nazaræus dupliciter. Primò pro naturali à loco Nazareht. Secundò pro legali à religione, & secta Nazaræorum veteris legis, erant enim olim religiosi Deo dicati separati à vulgari turba, qui se à vino, & alijs abstinebant, tactu mortuorum, &c. Sed Christus Dominus, non abstinuit à vino, nec incubuit pluribus

ribus ceremonis Nazarẹorum, ergo non potuit dici Nazaræus à Nazarẹatu legali, ita Hyeronimus Eusebius, & alij PP. ergo dictus est Nazarẹus solum naturalis à loco, & patria suæ conceptionis. Minor autem latius est statim probanda, vbi dicendum de religione & secta Nazarẹorum, cœsarie, voto abstinentiæ vino, & alijs cœremonijs, quæ non obseruauit Christus ex religione, & professione Nazaræatus.

Conclusio asserit secundò, quòd *nomen Nazaræatus significet sanctum, floridum germen, secundùm opinantes*, qui conciliari possunt, si dicatur sanctus allusione ad floridum germen. Quo Cornelius aptè opiniones oppositas conciliauit. Ratio, nam alij dicunt, quòd Christus dictus sit Nazarẹus à dictione hebræa scilicet נזיר Nazir per litteram Zain, id est sanctus, segregatus, quia Christus vnione hypostatica fuit sanctus vnitus Deo, & separatus ab omni pura creatura. Iuxta quòd illi religiosi veteris legis dicati Deo, incumbentes Sanctitati, separati à vita vulgari, dicebãtur Nazarẹi Num. 6. Et ita dici Christum Nazarẹum à nomine prædicto significante sanctitatem, &c. Non semel inuenitur in Propheti. Danielis 9. *vngatur sanctus sanctorum*, iuxta quòd Burgensis dicit citari ab Euangelista illud Psal. 131. *super ipsum efflorebit sanctificatio mea*, & ita Christus fuit nomine Nazarẹus, vt significat sanctum, sanctificatum, segregatum; nam fuit diuinitate sanctificatus, Pontifex, legislator Redemptor, & Doctor. Secundò, fauet caracter, quo vbique scribitur ab Euangelista, Nazarẹus, aut Nazarænus per litteram Zetta, quæ in Hebrẹo est Zain, Nozer, & Nacir. Tertiò nam dignius est vocare Nazaræũ, per Zain; id est sanctum, quã Nasarẹnum per Tsade, id est floridũ. Vltimò fauet huic sentẽtiæ, quòd dicat Euangelista, quòd dictũ est per Prophetas, in quo ostendit de disse sensum, non vnius, sed multarum scripturarum, quæ dicunt fore Christum S. per Antonomasiã. Secunda pars. Primò; nam alij passim opinatur, quòd Christus dictus sit Nazarænus, vt hoc nomen scribatur non per Zain, vt Nazarẹnus, sed per Tsade vt à נצר Neser dicatur Nasaranus, id est floridus, aut floridum germen, iuxta quòd inuenitur in Propheta Isaia c. 11. & *flos de radice* ẹius ascender, vbi in Hebræo respondet dictioni flos, Neser, נצר per Tsade & ita Nasaræus idem est quòd floridus, & germinans in gloriossam, arborem, præticossos fructus producentem. Secundò, quia Christus de Virgine est floridum germen, omni genere virtutum, qui in passione concussus insuflante aduersitate, odorem suauissimum diuinitatis, gratiæ, & virtutum efflauit. Tertiò huic fauet, quòd in titulo crucis qui Romæ ostenditur scribitur per Tsade, non per Zain

dicto נוצרי notseri, & ait Pagninus se testē occulatū, Cornel. verò inspiciēs sępius discernere non potuit, nam litterę erant exosæ, & discernere nō potuit, an scripta esset per Zain, aut per Tsade, & fidē nō parum auget, quòd titulus iste scriptus sit à Pilato, & ministris Romanis parū peritis, an dicendū Christus Nazarenus, aut Nasarenus per Zain, aut per Tsade, cui Pagnino fidē dederunt quasi testi oculato gauisimi interpretes.

Cęterū *mihi verisimilius videtur* cōciliari posse istā litterē, si dicatur dici Nazarenum inspecta dictione נזר Nezer per Zain, id est sanctitas, si fiat alluśio ad נצר Netser Tsade, ideśt flos, germē, nā istę duę litterę Zain, & Tsade, figura & sono sunt valdè affines, & solēt cōmutari cū alijs inclusis, vt in cōiugatione Hitpael iuxta Belarminū. Iuxta quod in Propheta Psalte inuenitur Psal. 131. vtrūque. *Super ipsum autem efflorebit sanctificatio mea*, vbi cōiugatur Nezer, id est, sanctitas cū flore, aut florido. Vltimō ex Hieronymo in dictū Psalmū Nazarēus interpretatur sanctus, & omnis scriptura cōmemorat sanctū futurū, & possum⁹ dicere, quòd eisdem verbis in Isaia sit scriptum *exiet virga* de radice Iesse, & Nazarēus, de radice eius cōscēdet. Cōfirm. quia ista duo nomina sunt sibi cognata litteris, & sensu. Nā, qui est Nazarēnus sanctus, & separatus à terrenis, est etiā Nazarēus, id est floridus virtutibus. Vltimò, nam Ioann. 1. cum Philippus indicasset Christū oriundū à Nazareth obijcit Nathanael, *à Nazareth* potest aliquid boni esse? Facit ad intētū, quòd Iulianus apostata per cōuitiū vocabat Christū Galilēū, & Nazarenū, quòd Nazareth erat sita in Galilea inferiori, & à Christo cœlesti figita, & telo percusus moribūd⁹ prę rabie dicebat, vicisti Galilæe, & sanguinē effusū manu exhibēs dicebat saturare Nazarēne.

Cōclusio. asserit tertiò, quòd *licet sit satis à fficilè assignare Prophetas, in quib⁹ dictū sit illud*, vaticiniū, quoniā Nazarēus vocabitur. Nam est varietas inter authores. Nā primò quidā dicūt, quòd hic Euāgelista citauit nō verba, sed sensū, & interpretationē secundū quod nomē, per litteras Zain, & Tsade significet sanctū, & florem, & omnis scriptura testatur fuisse vtrūque, vt cōstat ex citatis testimonijs in prędēti cōclusione. Deinde alij dicāt cū Brixiano hic nō citare Euāgelistā verè Prophetas, sed interpretes colligētes interpretationē, & sensum, ex implicita scriptura. Quod *non videtur amplectendum*. Nā ille modus loquēdi, vt impleretur, quòd dictū est per Prophetas, non satis verificatur per interpretes, sed intelligi debet propriè Prophetas. Deinde alij opinātur cū Leone à Castro, Eucherio, & alijs in figura dictum esse de Christo, *quoniam Nazaræus* vocabitur, vt in Samsō, qui fuit typus Christi, legitur Iudicū 13. *erit puer Nazaræus ab infantia sua*, & in religiosis Nazarēis veteris legis, qui fuerūt typ⁹ Christi,

ri, & in Ioseph de quo Genes. 49 *flat in capite Ioseph, & in vertice Nazarai inter fratres suos*, quòd in sensu litterali intelligitur de Ioseph, in mystico de Christo inter fratres suos Apostolos, quin obstet distinctio sensus litteralis, & mystici. Alij opinãtur perijsse codices Prophetarũ, quos citat Euãgelista, q licet difficilè visũ sit aliquib⁹, alijs nõ ita, quia plures citãtur libri in sacra scriptura, qui modo nõ extãt vt aduerti in arte & methodo, disput. 3. dub. 3. & disp. 4. dub. 9. iuxta Chrisostomũ, Euthimiũ, Theophilatũ, & alios. Deinde alij citari ab Euãgelista Isaiam Prophetã c. 11. *Egreditur virga de radice Iesse, & flos de radice eius ascẽdet.* Nã in Hebræo habetur. Et *Nazara⁹* de radice eius crescet, quin obstet, quod citat plures prophetas, & illud legitur in Isaia tantũ, nã sæpè in scriptura ponitur pluralis pro singulari; & in Syriaco multi dicũt scripsisse Euãgelistã in singulari. Et denique, nã in multis locis dicitur flos Cãtic. 2. ego flos cãpi. *Verũtamẽ mihi veri simile videtur citari ab Euãgelista, nõ solũ sensum. sed verba, nõ solũ vnũ Prophetã, sed plures.* Primò, nã ex relatis sentẽtijs cõstat, quòd magis difficile visũ est in hac quæstione, assignare Prophetas, quos respicere potuerit Euãgelista, & iã citat⁹ est saltim Dauid, & Isaias. Et accedit, id inueniri in alijs locis, & vt veri ficetur dictũ per Prophetas, nõ necessũ est, dici per illa ordinata verba, sed dici per idonea illud significantia. Secundò, nã dictũ esse per Prophetas, nõ cogit dici in sensu litterali, sufficit dici in mystico, in figura eorũ, qui typ⁹ fuere Christi, vt in Sãsone, Iosepho, & alijs: sicut vt impleatur illud vaticiniũ, *Ex Egypto vocaui filiũ meũ*, sufficit historialiter, & literaliter dici de populo in exitu de Ægypto, & in illo mystice de Christo. Vltimò, nã si quis requirat etiã verba ex prædictis distinctionib⁹ Nazir, & Neser satis ostenditur dupler significatio sanctitatis, & floridi germinis aptari Christo, quæ non semel inueniuntur in sacra scriptura.

Cõclusio asserit quartò, *Nõ dici Christũ Nazaræũ ob virginitatis votũ, vt Nazarei religiosi veteris legis ex insigni voto castitatis in secta Nazaræorũ, siue ad tẽpus emissũ, siue per totã vitã perpetuũ* Ratio, nã in secta Nazaræorũ plura erant in obseruãtia, quæ Christus nõ est professus. Nã licet cęsariẽ intonsam gestauerit, nõ ex obseruantia Nazaræatus, illi abstinebant à vino, & ab omni, quòd ex vbis procedit, Christus verò vsus est modico, vt dictabat ocasio, vt in Canà Galilææ.

Hic per incidentiam occurrit diserere. *An in lege veteri constiterit status verè religiosus, per emissionem votorũ? & an primatus sit in lege noua à Christo, & Apostolis? & an Virgo sanctissima, prima omnũ in orbe emiserit votũ virginitatis, & castitatis?* & respõdeo, nõ esse instituti præsentis, sed historialis, quod si agerẽ latiori calamo scriberẽ, quod modo cõ

pendiò extitiſſe ſub Elia, & Eliſeo parentibus, & filijs Prophetarum Primò, ex innumeris PP. qui aſſe runt, non ſolum vixiſſe in volun taria obedientia paupertate, & ca ſtitate, non ſolum temporali, vt quidam, ſed perpetua, vt in colle gijs Prophetarum. Apud Syluei. hic c. 9. q. 10. ſed mihi ſufficeret Ioannis Ieroſolimitani in t. 9. Bi bliothecæ, quos congeſsi ad typũ, & retuli præſes in Carmelo, & ſu ſtẽtãs in Academia, nõ ſine appro batione Doctorũ, & certè iſtã ſen tẽtiã probauit in iuditio cõtradi ctorio ſuprem⁹ Senat⁹ Sãctę inqui ſitionis demonſtratu in trib⁹ vo tis veteris legis, vt iã ſolũ ambige re poſſit, vel, ignar⁹ hiſtoriarũ vel inuidus tãtę excellẽtiæ, nec inſtitu ti præſentis latior comprobatio. Deffero Deiparæ Mariæ primatum dignitatis, & excellentiæ in vouenda caſtitite, Eliæ verò, & Aſecclis Carmelitis primatũ tem poralem. Iuxta Methodium homi lia de purificatione t. 3. Bibliot. Puritatis Marię Elias Propheta præſcius, ac immitator in ſpiritu. cum eſſet vitæ illius ſibi coronam colligauit, ac ſi dixiſſet, quòd Dei parævotum Virginitatis præuiſ ſimum ab Elia fuit originale exem plar, ex quo tranſcripſit copiam vouendi tria in illa congregatio ne Prophetarum. Sed de hoc in in dice conceptuum ad mores, & re petitione de hoc inſtituto, hic cum alijs in fine, niſi hoc volumẽ excreſ cat mẽſurã, tunc ad aliũ remitto.

Concluſio aſſerit quintò, quòd *cũ natus ſit in Bethleẽ, nõ fuit vocatus Bethleemita ſed Nazarę⁹ à Nazareth in qua fuit cõceptus, & educatus ratio nabili ex cauſa.* Primòquia ibi cõce pt⁹, & ibi diuinitati, eſt humanitas vnita in perſona diuina, & ibi nu tritus eſt lõgo tẽpore, & parẽtes, pater putatiu⁹ Ioſeph, & vera ma ter eius ibi habebãt domiciliũ. Et ita à ciuitate originaria, potius no mẽ ſuſcepit, quã à Bethleẽ in qua natiuitate temporali ortum du xit, & manſit breui tempore. Et ad dit Abulenſis quęſt. 99. Ita voca tum Nazarenum à Iudęis, quia ex errore putarunt natum in Naza reth, cum viderent illum ibi diu turno tempore nutritum, cum bre ui manſerit in Bethleem, in qua contigit partus, in tranſitu ad Hie ruſalem, vbi deſcribebatur vniuer ſus orbis edicto Auguſti. Secun dò, nam non indigebat nobili, & glorioſſa nomenclatura, qui ha bebat, ex Iſaia *Admirabilis conſi liarius Deus fortis*, &c. & non eru buit ignobile nomen Nazaræi vili reputatũ, vt Ioannis 1. in pro beruiũ à Nazareth poteſt aliquid boni eſſe? Sed iſta eſt myſtica, & nõ redditur ratio litteralis, quare po tius; coaptauit ſibi nomẽ Naza rẽi poti⁹, quã Bethleemitę. Vltimo quòd voluit in Nazareth ſibi vſur pare nomẽ quia interpretatur flos, & ſibi voluit virtutum flore ornari & de illa gloriari potius, quam de nobiliori nomine Bethleemitę. Nã illo exprimitur sãctitas dequa

glo-

gloriatur, quia est superior omni gloria mundi. Verum ista est mystica, & pertinens ad mores instruendos, & ita prima præferenda cæteris.

AD MORES.

Quôd *nobilitate patriæ adiungi debent egregia facinora, nam à sola familia laudari ignominiosum est.*

Quòd *nobilitati patriæ, & generis, præfertur in Dono Dei nobilitas sanctitatis, & virtutis.*

Quòd *in lege veteri floruit status vere religiosus, non solùm in figura, sed in veritate, & realitate.*

Quòd *non semel ex vili oppidulo oriuntur viri famosissimi.*

FINIS.

AD GLORIAM DEI,
& Deiparæ.

SVB CORRECTIONE
Sanctæ Matris
Ecclesiæ.



INDEX
DISPVT. ET DVBIORVM
litteralium in Lecturis contentorum.

Pagin. indicat paginæ numerũ cuiusque Lecturæ seorsim.

LECTVRA

De Arte, & Methodo exponendi sacram scripturam.

Disput. 1. De essentia, quidditate, & existentia sacræ Scripturæ? pag. 3

Dub. 1. An sit aliquod Verbum Dei præter increatum, in tempore? Quid Dei Verbum? & quotuplex? Et an solùm increatum sit verè Verbum Dei? 3

Dub. 2. An sit, & quid sit sacra Scriptura? & an sit Verbũ Dei scriptum? 5

Dub. 3. & vlt. Qui libri sint? & quot ex quibus sacra Scriptura Bibliorum constat? Qui canonici, & authentici? & an contineant Verbum Dei? 9

Disput. 2. De causa efficiente, principali sacræ Scripturæ. Authoritate, & veritate illius. 10

Dub. 1. Quis sit author principalis Bibliorum? 10

Dub. 2. An Deum esse authorem Bibliorum possit probari euidenter lumine naturali, extra scripturam? 11

Dub. 3. An Deum esse authorem Bibliorũ possit, & debeat prõbari aliunde, quam ex scriptura? 12

Dub. 4. Quibus rationibus possit probari aliunde, quam ex scriptura, Deum esse authorem Biblorum esse prudenter credibile, & meritò credendum? 12

Dub. 5. Quomodo Deus dictauerit Biblia sacra? 15

Dub. 6. Quomodo Deus sit author Bibliorum? 16

Dub. 7. Qua ratione Deus afficiat sacri scriptoris mentem, voluntatem, & manum? 16

Dub. 8 An scriptores sacri Biblici scripserint libere, an arrepticij, correpti, & coacti? 17

Dub. 9. An sacra Scriptura sit dicta a ab Spiritu sancto, & requirat assistentiam illius? 18

Dub. 10. An sufficiat impulsus propriæ voluntatis ad scribendam scripturam sacram? An sit requisita motio, & impulsus Spiritus sancti? 20

Dub. 11. An sit necessaria reuelatio adscribendam sacram scripturam? & an talis esse possit, sine vlla reuelatione, vt sufficiat motio, & directio Spiritus Sancti. 21

Dub. 12. An vt Scriptura habatur

sacra sufficiat, quòd res, & sententia scribenda diuinitus dicte tur à Deo? & suggeratur scriptori sacro? An etiam scribendi voluntas, idioma, seu verba, quibus exprimatur? 23

Dub. 13 An omnia, & singula, quę sunt in sacra scriptura sint dicta ta ab Spiritu Sancto? An dicē dū, quòd res & sententię graues, aut leues assertiuè, secus relati uè, vt nō sit distinguendū inter dicta à Deo, & dicta ab scriptore? 24

Dub. 14. Quę & quanta sit veritas sacræ scripturæ? & an illa nihil sit verius ex parte authoris, & scriptoris principalis sententiæ & verbi scripti? 26

Dub. 15 An verba Dei scripta in volumine Bibliorū sint veriora, præ alijs verbis Dei prolatis per se immediatè, aut mediate per Angelos, aut homines? 27

Dub 16. An sit? Quāta, & quotuplex authoritas sacrę scripturę, Bibliorū in se, & quoad nos? 28

Dub. 17. Vnde acciperint Biblia sacra istā authoritatē certissimā, & immunē ab errore, & falsitate quoad se, & quoad nos? 30

Dub. 18. An sit necessariū Ecclesię testimoniū, ad recipiēdā, & credendā authoritatē scripturę respectu nostri, vt authoritas scripturæ probetur, per authoritatē Ecclesiæ? & an sufficiat Ecclesiæ testimonium, vt sit vtilis, etiam traditio? 31

Dub. 19. Quæ authoritatū sit maio scripturæ, aut Ecclesiæ, perhibētis testimoniū de illa, quoad se, & quoad nos? & an sint pares? 33

Dub. 20. An admitti debeat preter Verbū Dei scriptū, Verbū Dei traditū æqualis authoritatis, ita vt *omnis*, sed non sola scriptura sit diuinitus inspirata? 36

Dub. 21. An Verbū Dei scriptum credatur propter Dei Verbum traditum? & an petendū ex traditione, qui libri sint sacri? 42

Dub. 22. In quod debeat resolui certitudo nostri assensus, circa authoritatē infallibilem sacræ scripturæ? An in Deū primam veritatē? An in Ecclesiæ authoritatem, & testificationem? 45

Dub 23. An in probatione authoritatis sacrę scripturę, & Bibliorū, per authoritatē, & testificationē Ecclesiæ sit admittendus circulus necessariō, & ineuitabiliter? & an ille sit vitiosus, & inutilis? 46

Dub 24. An authoritas infallibilis sacræ scripturæ Bibliorum sit vnus ex articulis fidei? 48

Dub. 25. An scriptura sacra, & sola sit Iudex, & regula in negotio fidei, & religionis decidendo? & quis sit Iudex ordinarius, & humanus, an Ecclesiæ authoritas, & illius traditio? 49

Disput. 3. De claritate, & obscuritate sacræ scripturæ Bibliorum. 57

Dub. 1. Quæ & qualis sit claritas, vel obscuritas sacræ scripturæ Bi-

Bibliorũ? An ita perspicua, vt in se ipsis sine vlla interpretatione possit legi, & intelligi etiam ab idiotis, & cũ fructu spirituali? 57

Dub. 2. An Scriptura sacra Bibliorum sit adeò difficilis, & obscura in sensu litterali, &c. vt non valeat se sola intelligi, sed egeat magisterio, & arte interpretandi? 60.

Dub. 3. Quæ sit causa obscuritatis sacræ scripturæ? 64.

Dub. 4. Cur Deus voluerit scripturam sacram Bibliorum, ita esse difficilem, & obscuram in litterali, & alijs? 68.

Dub. 5 An Scriptura sacra Bibliorum fuerit conueniens, & necessaria hominibus? 71.

Disput. 4 De epitectis, elogijs, & nominibus Sacræ scripturæ Bibliorum de illius perfectione, & præstantia, stilo simplici, & eloquentia. 74

Dub. 1. An sint epitecta, & nomina varia sacræ Scripturæ Bibliorum, quæ, & qua ratione illi sunt aptata? 74.

Dub 2. Cur vocetur vetus, & nouum testamentum? 76.

Dub. 3 An innitũ fœdus, & pactũ in quo, non intercedit mors testatoris recte appelletur testamentum? 76.

Dub. 4. Cur scriptura Bibliorum vocetur instrumentum, vel instrumenta? 77.

Dub. 5. Cur impositum sit scripturæ nomen Bibliorum? 78.

Dub. 6. Vnde, & cur dicta sit scriptura Bibliorum, scriptura adhuc sacra diuinitus inspirata, & Deifica? 78.

Dub. 7. Cur libri sacri sint appellati authentici, canonici, Deifici? 79.

Dub. 8. An Scriptura sacra Bibliorum aptè dicatur epistola Dei ad nos missa? 79.

Dub. 9. An Biblia sacra sint integra, & perfecta essentialiter, & accidentaliter? 79.

Dub. 10. De sacrarum litterarum eloquentia. An sint disertæ, & eloquentes sacræ Scripturæ? & quid de illa senserint Gentiles, Christiani, & PP. 80.

Dub. 11. Quod sit discrimen inter sacram Scripturam, & alias scripturas? 82.

Dub. 12. An habeatur apud Lutheranos, & Caluinistas vera, & legitima scriptura? & An liber illorũ sit Biblia sacra? 82.

Dub 13. An Biblia sint appellanda liber Dei? & an possit appellari liber hereticorum? 83.

Dub. 14. Qui sint sacræ Scripturæ varij effectus? & qua ratione sit causa illorum? & quatenus? 84.

Dub. 15. An apud Apostolum omnis, & vniuersa scriptura Bibliorum, an solum vetus testamentum possit appellari littera occidens? & an tota integra Biblia sit littera viua, & viuificans? An littera mortua, & occidens? 86.

Dub. 16. An obstent antilogiæ ne scrip-

scriptùrà habeatur diuina, & sacra? 89.

Dub. 17. An ex solo scripturæ sen su litterali possit conñci argumentum efficax ad astruenda mysteria fidei? & abigendos errores? An etiam ex mystico, spirituali, & accommodatitio? 90.

Disput. 5. De forma sacrorum Bibliorum, quoad vocem linguam, idioma, scripturam, & caracteres? vbi de Origine linguę sanctę, & scripturæ sacræ? 92.

Dub. 1. Qua lingua vsus sit Deus per se, & per alios loquutũ? 93.

Dub. 2. Qua lingua fuerint vsi homines in paradisso? & in priori ad diluuium, Hebræa, an Chaldæa? 94.

Dub. 3. An lingua paradisi, & communis, ante diluuium extet modo, & quæ illa sit? 98.

Dub. 4. An lingua hebræa sit omnium prima, & antiquior? & quibus indicijs, & argumentis asseratur illius primatus? 99.

Dub. 5. An lingua Togormana Scytia, Phrygia, Cimbria, siue Ascania (quæ eiusdem sunt varia nomina) fuerit omnium prima, senior, & antiquior? 101.

Dub. 6. An lingua Syra fuerit omnium prima? 103.

Dub. 7. An primi Chaldæi fint vsi dialecto hebraica? & an vsus linguæ hebraicæ fuerit apud Chaldæos, & Mesopotamos? & an omnis Chaldæa habuerit, vulgarem linguam, quam nunc vocamus Hebræam? 104

Dub. 8. An fuerit vsus linguæ hebraicæ extra Chaldeam in Chana, ante aduentum Abrahæ in Chaldæam? 107

Dub. 9. An fuerit vna lingua, vel plures ante ædificiũ Turris Babylonicæ, & ante diluuiũ? 109

Dub. 10. An Noe, & omnes homines communi consilio conspirauerint, & inuauerint ad ædificationem Turris? 110

Dub. 11. An diuisio communis linguæ facta fuerit in 72. linguas, & fuerint totidem posteri Iacob, qui ingressi sunt in Egyptum? 111

Dub. 12. Cur Sem commendetur in sacra scriptura ab Heber quinto nepote suo? & quis, & qualis fuerit Hæber? 114

Dub. 13. An ab Hæber sint appellati Hebræi eius posteri? & An fuerint eius posteri Chaldæi? 115

Dub. 14. An inuentum litterarum ad scribendum fuerit vtile? & adeò vtile ad scripturam sacrã vt habeatur ex beneficio Dei? & quinam damnauerint vsum litterarum? 115

Dub. 15. An fuerint necessariũ, & conueniẽs ab initio scribi scripturam sacrã litteris, & caracteribus? & quo idiomate, & caracte re primùm scribi cœperit? & an à tempore Moysis? 117

Dub.

Dub. 16. An lingua Hebræa fuerit amissa Israelitis in Egypto? 119
Dub. 17. An Moyses acceperit donō linguam hebraicam? 121.
Dub. 18. An ars scriptoria sit reuelata Moysi ad exarandā caractēribus sacrā scripturā? sicut ars fabrilis Besaleel ad fabricandas effigies Hyeroglificas Tabernaculi? 122
Dub. 19. An sit diuinitus restituta Moysi lingua Hebræa amissa Israelitis in Egypto, ad instruendum populum lingua, & caractere hebraico? 126
Dub. 20. An canticum Moysis fuerit inspiratum Israelitis omnibus adhuc infantibus, & mutis? & An negari possit accidisse miraculum in cantico simultaneo? 128
Dub. 21. An prima scriptura fuerit nomen Domini? An tabulæ decalogi, vt litteræ Alphabetariæ initium habuerint in lege tabularum? 130
Dub. 22. Quinā scripserit tabulas decalogi Deꝰ digito suo? an Moyses instrumēto in silice? 132
Dub. 23. *De origine sacræ scripturæ?* An fuerit Moyses primus scriptor, an Iob? & an Moyses incœperit scribere libros sacros in Egypto, an in Madiam? 133
Dub. 24. An Moyses scripserit Genesim, & librum Iob? & quod vtriusque prius? 136
Dub. 25. An Moyses prius scripserit Genesim, & Iob, quā Ps. 89? 136
Dub. 26. An ante Genesim Moyses scripserit libros alios, qui ipsi solent imputari? 137
Dub. 27. Quibus caracteribus olim vsus Moyses, an lex olim scripta fuerit à Moyse in caractere hebræo maiori, & quadrato? an in minori, & hyspanico, ita vt qui legitur hodie sit ille in quo ab initio scripta fuere lex, & Biblia sacra? 138
Dub. 28. An à tempore Moysis caracteres Hebræi sint affecti pūctis loco vocalium in libris Bibliorum? vbi quando, & à quo sint excogitata, & inuenta puncta? 140
Dub. 29. Cur Moyses, non scripserit nisi litteris consonantibus, non vocalibus, aut earum loco punctis? 142
Dub. 30. Cur Esdras reliquerit caracteres Mosaicos, & vsus fuerit Assyrijs? & an restituerit scripturam amissam, dilaceratā in suam integritatem? 142
Dub. 31. Et vlt. An scriptura sacra Bibliorum, aliquandō tota liter perierit in excidio templi, & captiuitate Babilonica? & an sit restituta per Esdram, & qua ratione? 144

Disput. 6. De fine sacræ scripturæ Bibliorum. 145

Dub. 1. Quis sit finis sacrorū Bibliorū, proximꝰ, & remotus? 145
Dub. 2. Quis sit finis Dei authoris Bibliorum, docendi per se, & per alios? 146

Dub.

Dub. 3. An Deus in docenda Ecclesia sit vsus scripto, non solo, sed scripto, & traditione simul? & cur nõ vno solo modo, sed vtroque, scripto, & traditione simul, voluerit Ecclesiam erudiri? 147.

Dub. 4. & vlt. An finis particularis scripturæ respiciens generalem sit ille quaduplex ab Apostolo commendatus 2. ad Thimot. 3. *Doctrina, redargutio, correctio, eruditio?* 148.

Disput. 7. De ordine sacrorum librorum diuisione, & partitione. 148.

Dub. 1. Quis sit ordo librorum sacræ scripturæ in vniuersum apud latinos. 149.

Dub. 2. De diuisione sacrorum librorum de toto ad partes, prima diuisione in nouum, & vetus testamentum, an sit & quid sit? nouum, & vetus testamentum? 149.

Dub. 3. Cur in sacræ scripturæ, volumine alij libri appellantur veteris, alij noui testamenti? & cur res contentæ dicantur vetus, & nouũ testamentũ? 152.

Dub. 4. An sit diuisio veteris, & noui testamenti apta in species librorum? Historiales, sapientiales, legales, prophetales? & an sit vtilis diuisio librorum in capita, & capitum in versus, & quis author illius? 153.

Dub. 5. An diuisiones librorum in capitã, & capitum in versus sint canonicæ in Biblijs correctis? 154.

Disput. 8. De versione sacræ Scripturæ è primæua lingua in alias, Chaldaicam, seu Thargum, Syriacam, Græcam 70. Latinam, & vulgatam nostram vernaculam, & alias? 155.

Dub. 1. An sit licitum sacram scripturam à primæua lingua in qua scripta est in alias conuersio, seu translatio? 155.

Dub. 2. An sacra Scriptura à primæua lingua in alias conuersa sit verè verbum Dei? 157.

Dub. 3. Quis sit optimus modus conuertendi scripturam è primæua lingua, vt reddatur verbum pro verbo, aut sententia solummodo? 158.

Dub. 4. Quænam fuerit primæua lingua, à qua facta est in alias sacræ scripturæ translatio? 158.

Dub. 5. An perierit primitiuus textus Hebræus totaliter aliquando? 159.

Dub. 6. An originales hebræi primitiui permanserint incorrupti, vsque ad tempora Christi, & Apostolorum? 159.

Dub. 7. An qui legitur hodie textus Hebræus sit vitiatus, quoad vniuersas clausulas communi consilio, & perfidia Iudæorum in odium Christi, vt sit discordia à primitiuo prototypo? 160.

Dub.

Dub. 8. An in dubio ad indagandam profundius mentem vulgatæ editionis sit licitus, & vtilis recursus ad originales hæbreos. 164.

Dub. 9. An sit aptior interdum sententia relicta in originali hębræo ad fidei dogmata elucidanda, & comprobanda, quàm sit possita in editione nostra vulgata? 165.

Dub. 10. Quotuplex sit versio sacræ scripturæ è primęua lingua in alias? 166.

Dub. 11. *De versione Caldaica seu Targum.* Quæ sit versio Caldaica? cur appelletur Thargum? Et quotuplex sit Thargũ? 166

Dub. 12. *De visione syriaca.* Quæ sit versio Syriaca, quis author, quæ authoritas, & vtilitas? 167.

Dub. 13. *De versione Græca veteris, & noui testamenti.* Quot veteris testamenti versiones Græcę? & an aliqua fuerit ante Alexandrum Magnum? & an editio græca noui testamenti sit omnino incorrupta? 167.

Dub. 14. *De versione, & editione 70. Interpretum.* Quæ nam fuerit ista versio græca? quæ intitulatur 70 Interprætum? an à Iudæis missis in Egyptum ab Eleazaro Pontifice ad instantiam Regis Ptolemei? & qnis Rex Ptolemæus, an Philadelphus? & a quo petijt interpretes? & quo fine. 170.

Dub. 15. Quot interpretes missi ad fuerunt versioni 70? An 72. & quales fuerunt? quos libros trãstulerint? Vbi, & quo tempore facta fit versio? & quanto tempore absoluerint? 171

Dub. 16. An inceperint versionẽ inuocando Deum? quantam adhibuerunt diligentiam in vertẽdo? & quantum gratiæ dederit Deus? & an habuerint assistentiam spiritus sancti? & illa sit requisita ad translationem? & an semel, vel pluries verterint? 173

Dub. 17. Quo plausu fuerit recepta ista versio 70. à Rege, & cœteris? & qua ratione postea à quibusdam improbata? 176

Dub. 18 Quæ sit authoritas huius versionis 70. in sua syncerita-te, & integritate? 177

Dub. 19. An ista versio 70. olim fuerit deprauata? Et an hodie sit correcta? 177

Dub. 20. An ista editio 70. in initio suo consenserit omnimoda concordia cum originali hebræo? & quæ causę cur videatur dissentire ab illo? & an sit admittenda, & probanda ista versio 70? 179

Dub. 21. An perierint Archetypa 70. interpretum? & quo tempore, incendio, aut bello? 181

Dub. 22 Quæ huius versionis 70, prodiere editiones latinę? & quotuplices catholicæ, & hęreticæ. 182

Dub. 23. An sit vtile fuerit tot versiones latinas? & quæ omnium

nium optima? 183
Dub. 24. *De nostra vulgata versione.* Quis nostrę vulgatę author? an D. Hieronimus veteris & noui testaméti? An transtulerit ex hebræo vetus testamentũ, paucis exceptis ex græco? & an ex græco transtulerit nouum, vel solum emendauerit? 184
Dub. 25. An S. Hieronymus semel confecerit versionẽ Ecclesiastè ex hebræo, an pluries? quoties? & an nullũ alium librũ prætermissum? & quomodo? quam optimo officio interpretis? 187
Dub. 26. Quã peritè, & diligenter, & fideliter verterit, & emendauerit S. Hieronymus? 188
Dub. 27. Qua ope diuina afflatus verterit, & emendauerit S. Hieronymus? An sit profecta ista nostra editio latina, ex assistentia Spiritus Sancti? & an sit requisita? 189
Dub. 28. Quæ olim ab initio authoritas, receptio, & approbano strę versionis vulgatæ de cursu, temporis, & nunc? 192
Dub. Quę, & quanta versioni nostræ vulgatæ sit tributa, authoritas à Tridentino? an in genere visionis tantum? & an accipienda diffinitè cum certis modificationibus? & an secundùm se absolutè, & simpliciter, aut respectiuè comparatè ad alias editiones, Hebræas græcas, & Latinas, præteritas, præsentes, & futuras, vt omnibus præsentibus, anteponetur tali decreto? & an amplecti debeat cum omnibus, & singulis partibus? & an possit fieri melior? 193
Dub. 30. An irrepserint mendæ in nostram versionẽ ex parte versoris, an solùm ex parte typographorum? & quid à Pontificibus erga correctionẽ factũ? 198
Dub. 31. *De præfatione ante textum sacrorũ Bibliorũ.* An fuerit alicuius authoris? quantæ authoritatis? An sit minoris, quam sit sanctio Pontificea? aut Synodica? 199
Dub. 32. Quid præfatio ad lectorem posita primo loco complectatur? 200
Dub. 33. An ex illa clausula posita in prefatione ad Lectorẽ: scilicet in editione nil nõ canonicũ extraneum, aut ascititium ponere visum esse, recte colligatur illa omnia in correctis Biblijs contenta esse canonica? 201
Dub. 34. Quid cõtineat Clemẽtis 8. Sãctio, in breui posita ante latinam correctam editionem? 101
Dub. 35. An omnium, & singulorum, quæ in præfatione illa insunt, & etiam in Biblijs correctis fiat approbatio, illis litteris Apostolicis in illo breui? 222
Dub. 36. An liceat priuata authoritate, ab vllo notari aliquid, corrigi, aut emendari in editione vulgata latina? 204
Dub. 37. *De versione vernacula.* Quę vernacula versio? quotuplex? & an liceat transferre scripturã sacrã Bibliorũ in linguas vernacu-

ctilas, & singulis legere, & quibus, & quid statuerit Ecclesia? 204

Disput. 9. De Interpretatione exegetica, & expositiua sacræ scripturæ, vt exponibilis, & sensib° illi°? 210

Dub. 1. Quotuplex sit interpretatio, & sēsus sacræ scripturæ? 210
Dub. 2. Quid sit sensus litteralis sacræ scripturæ? 212
Dub. 3. Quotuplex sit sensus litteralis? 216
Dub. 4. An quilibet scripturæ locus admittat sensum litteralē? vel sit aliquis sine litterali solo mystico? 216
Dub. 5. Quis sit sensus litteralis parabolarum? An rei similis? an applicationis ad rem cui fit applicatio? 218
Dub. 6. An sit dicendum, quod in tota scriptura sit vnus tantum sensus litteralis, & nullus alius adhuc mysticus? 220
Dub. 7. An vnus, & idem locus scripturæ habeat plures sensus litterales?
Dub. 8. An in scriptura præter sensum litteralē sit etiā mysticus? quid sit & quotuplex? 223
Dub. 9. An sit sensus mysticus in veteri, & nouo testamento? & in omnibus, & singulis partibus vtriusque? 226
Dub. 10. An sint plures sensus mystici in vno, & eodē loco sacræ scripturæ, eiusdē speciei? 227
Dub. 11. An in sola sacra scriptura sit sensus mysticus? an in alia scientia, & doctrina? 228
Dub. 12. An culpandi PP. antiqui in mystico sensu eliciēdo ex litterali? & an aptè verbis, & factis illum cōmendauerint? 230
Dub. 13. An præter sensum litteralē, & mysticū sit in scriptura alius sensus, qui dicitur accommodatitius? & quis ille? & qua ratione vtendum? 231
Dub. 14. In quo cōueniāt, & differāt sensus litteralis, & mystic°? in quo sint similes, & dissimiles? quis dignior, & min° dign° quoad efficaciā argumētandi? 223
Dub. 15. An à sensu accōmodatitio possit sumi efficax argumētum ad fidei dogmata probanda, & improbāda opposita? saltim à simili, & exemplo? 234
Dub. 16. An quādo scriptura veteris testamēti citatur in nouo, citetur semper in litterali? An etiam in mystico, & accommodatitio? 236
Dub. 17. An vox scripturę indicās id quod in figura dicitur in veteri testamēto cōtigisse, habeat duos sensus litterales, figuræ & figurati, gesti, & gereddi? 238
Dub. 18. An possit significari aliquid in alio mystice, & idem simul historicè & litteraliter? saltim voce cōmuni, indice vtriusque signantis, & signati? 240
Dub. 19. An omnis scriptura veteris testamēti adhuc Psalmorū & prophetarū, significauerit solū in sensu mystico res noui testamenti, & Christum? An vbique de Christo exponenda litteraliter? An vbique mystičè?

Am

An partim litteraliter de Historijs illorum temporum, & partim litteraliter de Christo? partim solùm mystice? 241

Dub. 20. An in citandis verbis veteris testamẽti, excidat aliquod verbum, aut sententia à memoria ab Apostolis aut Euangelistis, vt sit discordia inter vtrumque? 245

Dub. 21. & vlt. An Prophetæ decipiantur existimentes esse Dei loquutionem, cum Dominus nõ fuerit loquutus; sed ipsi ex suo capite dicant? 249

Disput. 10. De idiotismis sacræ scripturæ. 250

Dub. 1. An scriptura vtatur metaphoris, & fabulis gentilium aliquãdo? & an symbolis hyeroglificis, & ænigmatibus? 251

Dub. 2. An scriptura vtatur figuris, tropis. Methonymia. Anthonomasia, Antiphasi, Euphemismo, Ironia, & Cathecresi, Synedoche, in computatione annorum, Hyperbole, & Prolepsi, & Hysterologia, & Recapitulatione? 152

Dub. 3. An in scriptura sit vsus Heriadis, Hypalagè, & Enalogè? & an fiat variatio per tres regulas, scilicet, Symonimorum Enalogè, & Hetherioseis. 255

Dub. 4. An in scriptura soleat fieri transitus à figura ad figuratum? à voce figuræ ad expressionem figurati & ab vna metaphora ad aliam? & poni soleat nomẽ pro re significata? 257

Dub. 5. An idem sit interdum binomus? & an poni soleat ab hæbræis pro nomine proprio, aut gentilitio interpretatio eiusdẽ? & an in comparatione tribuiso leat alicui vt gentilitium nomẽ rei cui comparatur. 258.

Dub. 6. An idem significet interdum varia? & in diuersis locis diuersa, imo oppolita? & in penuria vocis aut verbi, eodem sit vsus ad significanda diuersa? & an eadẽ res iuxta varias proprietates habeat plures appellationes? 259

Dub. 7. An nomen aut verbum gẽminatum habeat emphasim? & importet exaggerationem, & magnitudinem in significando? siue fieret gemminatio per adiunctũ masculinũ, siue femeninum intra idem substantiuum aut diuersum in recto, & in obliquo? & an asserto adiuncta negatione, & contra? 260

Dub. 8. An sit vsus in sacra scriptura ponendi in computis numerum completum relicto, & prętermisso incompleto minori? 261

Dub. 9. An soleant tractari ciuitates in sacra scriptura sub nomine, & voce Mulier bona, mala, virgo, aut meretrix? 262

Dub. 10. Cur nomina solùm generica animalium, arborum, gẽmarum, ponderum, mensurarum, & similium, & non specifica sint transcripta hębraice, & nõ sint latinitate donata? 262.

Dub. 11. An sint varię appellatione

nes decem tribuum? & similiter aliarum duarum? 262
Dub. 12. An respectiuè ad situatione Hierusalē, & Iudæe sint assignatæ à Prophetis, & Iudæis positiones orbis, & plagę, oriēs, occidēs, aquilo, & meridies? 263
Dub. 13. An apparitiones Dei in veteri testamēto, factę sint per Angelos nomine Dei? & an loqui soleat de Deo scriptura more humano, ac si haberet corpus, caput, oculos, pedes, &c? 263
Dub. 14. An in scriptura vox æternū, & in sæculū sæculi, in æternum & vltra, & similes, significent durationem interminabilem sine fine? 264
Dub. 15. An Hebręi careant superlatiuis, & comparatiuis? & qualiter formentur, & vertantur in latina nostra? 246
Dub. 16. *De variis phrasibus scripturæ.* Quid singulis significetur? Quid aperire aurem? habere animā in manibus? suscitate verbum? & similibus? 265
Dub. 17. An intentio sumi soleat pro actu? & inchoatio pro actu, prosequutione, & cōsumatione? & verbū actiuū explicari soleat per duplicē actionē, implicitā & explicitā? & nomē pro re significata, & vox agēdi pro virtute agendi, officio, & obligatione? 266
Dub. 18. An sit vsus in scriptura ponendi nomē in vno casu pro alio? & verbum in vno tēpore pro alio? 267
Dub. 19. *De dictionibus indeclinabilibus.* An sit vsus inchoādi libros per. Et, igitur, autē, &c? & an sit vsus ponendi, vnū aduerbium pro alio loco illius? præpositionē, coniunctionē, & vim habeat significandi pro illis? 268
Dub. 20. An particula si sit signū stupentis, admirātis, negātis, & iurantis? & an potuit reddere orationē affirmātē, aut negātē? & an dictio *nisi* sit aliquando nota iuramenti execratorij? 369
Dub. 21. An sit vsus ponendi gerundium verbi, loco temporis subiunctiui? 269
Dub. 22. & vlt. Qua ratione venari, & indagari possit sensus litteralis in tot dubijs? ambiguitatibus? figuris tropis, vsurpationibus, adagijs, & vbi? 269

Disput. 11. & vlt. De ratione, & modo studendi, & discendi sacram scripturam Bibliorum? 270

Dub. 1. An à solo Deo petenda sacrarum scripturarum scientia? An adhibendum studium? Quis modus obseruandus in addiscēdo iuxta præcepta Patrū? 270
Dub. 2. An statim à pueritia sacræ scripturæ sit incumbendū? & an ante studium sacræ scripturæ sit addiscenda Rethorica, lingua Hebræa, & Græca? Philosophia, Theologia, & aliæ humanæ eruditionis disciplinæ? 273
Dub. 3. Quis in sacris Biblis primò

mò legendum, & an sit bonum adddiscere memoriter Biblia sacra? 276
Dub. 4. & vlt. An in sacris scripturis sint aliqua prætermittenda, tanquam leuis ponderis, parua, & inutilia? 277

LECTVRA

De vita, & gestis Samsonis.

Dubia litteralia.

Dub. 1. A quo initium duratio, & finis istius quadragenariæ seruitutis, & oppressionis Israel à Philistinis? Quid in causa? An peccatum idolatriæ? Pag. 2.
Dub. 2. An Pater Samsonis nomine fuerit Manuè, & patria, ac stirpe Danita? 3
Dub. 3. Quæ sint astruenda ex littera? 4
Dub. 4. Quid in causa quod dicatus sit Deo, instituto Nazaræatus, & abstinentijs à vino, & alijs, liberaturus Israel de manu Philistinorum? 6
Dub. 5. An vir iste fuerit Propheta? vel Angelus? 6
Dub. 6. An vir iste fuerit ipse Deus immediatè apparens? vel solùm repræsentatiuè ministerio Angeli? 7
Dub. 7. An inepta fuerit opinio vulgi existimantis visione Dei anexam mortem? 9
Dub. 8. An in parentibus sit potestas ad imponenda nomina filijs, & an liceat immutari inspirata à Deo? 10
Dub. 9. An Samson peccauerit petendo à parentibus vxorem ex Philistinis, & non ex suo populo? & an in eo quęrierit occasionem inuadendi Philistæos? 11
Dub. 10. An requiratur consensus Parentum ad coniugium filiorum? 13
Dub. 11. An vires Samsonis fuerint à natura? vel à Deo inditæ, ad excipiendum amplexu leonem, & lacerandum? 14
Dub. 12. Qua de causa secretum occidendi leonem, noluerit reuelare parentibus? 15
Dub. 13. An in ore solùm insederint Apes? An in corpore? An ibi natæ? An aliunde delatæ? ministerio Angelorũ? An fuerint viles, & sordidæ, & mel vile? An generosæ, & mel dulce? 15
Dub. 14. An olim in conuiuio solitum esset proponi ænigma cõ uiuantibus, proposito pręmio dissoluenti? 16
Dub. 15. An Philistæi non valentes inuenire solutionem, instauerint iurgijs, & minis vxorem, vt expiscaretur solutionem à Samsone, ne mulctarentur pœna proposita? 17
Dub. 16. An ingenio sint Philistini assequuti ænigmatis solutionẽ? an didicerint ab vxore Samsonis? & an per arare in vitula, intelligatur fornicare cum illa, vel inuestigare scrutinio? 18
Dub. 17. An Samson recte fecerit cæ-

cædem istam Ascalonitarum,& vestium spolium? 20

Dub. 18. Quæ causæ reddiderint licitam istam iracũdiam, & regressum Samsonis relicta vxore,in domum Patris sui? 20

Dub. 19. An esset permissum Iudæis, & gentilibus dare repudium? & an viro, an etiam fœminæ, & an dederit Samson? 21

Dub.20.Cur, & quãdo fuerit reditus Samsonis ad vxorem? & an hic dederit repudium perpetuum? 22

Dub.21.An arte,& industria Samsonis sola, an etiam adiutorio Angelorũ collectæ sint, & captæ 300.vulpes? 23

Dub.22.Quomodo Samsom collegerit 300. vulpes, & ligauerit faces? 24

Dub. 23. An Philistæi scierint Samsonem fuisse authorem incendij in vindictã? & quid egerũt de spõsa,& socero illius? 25

Dub. 24. An se receperit Samson in speluncam timidus, & profugus in locum munitum?an vt vacaret Deo? & indemnes rederet suos? & an sit passus ligari à suis,&traddi Philistæis,pro indemnitate suorum? & in qua tribu sita erat Ethan? 26

Dub.25. Qua facilitate Samson ligatus, & traditus Philistæis disruperit vincula?& an in mãdibula asini sine alio instrumẽto militari, semper illisa occiderit mille Philistæos?& an illa maxilla fuerit asini vulgaris, an feri onagri? 27

Dub. 26. An cecinerit carmen Samson ex insolentia, & arrogantia? An referens gratias in gloriam Dei? cuius ope tam insigne facinus patrauit? 29

Dub. 27. An Deus præcibus,oratione, & meritis Samsonis siti laborantis fontem scaturiri fecerit è maxilla miraculosa in præmium illius, an ex alio loco scaturierit? 30

Dub. 28. An ille scatuerit è maxilla in manu Samsonis? An proiecta, & iacente in terra? & an durauerit in præsentem diem? 32

Dub. 29. An fuerit Iudex Samson? Quanto tempore iudicauerit? & an solùm viginti annis? & qua ratione dissimili ab alijs iudicibus? & an fuerit Gigas? 33

Dub. 30. Quæ ista vrbs Gaza? & an ingredi ad meretricem sit fornicare cum ea, an agere alterius negotij causa? & an ibi peccauerit Samson meretricando? 35

Dub. 31. Quas insidias machinati sint Gazæi ad capiendum Samsonem intra domum meretricis, & mœnia ciuitatis? 36

Dub. 32. Quandò,& quas portas baiulauerit mirabiliter Samson humeris suis, an domus in qua dormiebat, an ciuitatis Gazæ? 37

Dub. 33. Qualis hæc mulier nomine, quã amauit Samſon? qualis gente? & qualis conditione? An fuerit vxor? An meretrix, & cõcubina? 38

Dub. 34. Quis, & qua ratione, & quo fine, Principes tantæ dignitatis venerint ad mulierem meretricem ad ſcrutandum arcanum? & præmio coegerint? 40

Dub. 35 Quot, & quales inſidiæ doloſę Dalilæ? & quæ eluſiones Samſonis? an paſſus omnes in vigilia, aut ſomno? An peccauerit mẽtiendo, & inebriãdo? & quantæ inſidiæ? quam ingens pondus, qua victus manifeſtauit ſecretum? 42

Dub. 36. An in capillo intõſo Samſonis vigerẽt vires, & quomodo? An per modũ qualitatis permanentis, vel trãſeuntis? An vt cauſa phyſica, aut morali, vt in ſigno? & an in alijs mẽbris, & corde, vt in ſubiecto? & an perdiderit, quia ſua culpa amiſerit cæſariem, aliàs ſine culpa non amiſurus, vt ſi morbo, aut alia cauſa? 45

Dub. 37. An vires Samſonis ſint alligatæ ſoli comę intõſę? an alijs obſeruantijs inſtituti Nazaræatus? 47

Dub. 38. An Dalila inebriauerit Samſonẽ? vel ſolũ dederit ſopori fera in potu, ad profundè dormiendum, ne ſentiret detonſionem capillorum? 48

Dub. 39. An Samſon iam decapillatus ſit captus à militibus, ligatus funibus, ferræisque catenis, excęcatus, & ductꝰ cũ ludibrio in Gazam, & cõiectus in carcerẽ? & an in illo ſit coactus molere in piſtino? quandiu fuerit? & an in illo pęnitẽtiã egerit? 49

Dub. 40. Quæ cauſæ Principibus, vt conuenirent ad ſacrificandũ Dagon? & quis Deus Dagon? & qui ludi fuerint, quos luſsit Samſon ad oblectationem Principum Philiſtinorum? 52

Dub. 41. An domus innitens colũnis diuiſa à Samſone fuerit tẽplum Dagõ? Quot & quales ſint oppreſsi ex Philiſtæis, & Samſon cum illis? & an ſe ipſum occidẽdo peccauerit? Et an Sãctꝰ; & verè martyr occubuerit? 53

Dub. 42. & vlt. An Samſon ſepultus fuerit à cognatis, & conciuibus? & vbi? & an benigne annuentibus Philiſtæis? 56

LECTVRA
De 70. ann. captiuit. & 70. hebdom.

Dubia litteralia.

Dub 1. Quis fuerit ille Aſſuerus, qui dicitur Pater Darij Medi? & an Aſſuerus ſit nomen propriũ? An agnomen cõmune plurib⁹? & quis fuerit Darius Medus? An fuerit filius filię Nabuchodonoſor? An fuerit idẽ qui Darius Hyſtaſpis? An fuit idẽ qui Cyrus? An idẽ qui Aſtyages? An idẽ qui Cyaxares? & an Rex Medorũ præexiſtens obtinue-

nuerit imperium Caldæorum? & ptæfuerit vno solo anno? 2

Dub. 2. An acciderit euersio imperij Caldaici, & Babylonij ipso anno 70. & vltimo captiuitatis, & an inchoato, & currente, an iam expleto? 10

Dub 2. Quis vaticinatus est captiuitatem 70. annorum? & an in scriptura sit diffinitus talis numerus? Quis obsedit Hierusalē? & quoties? An Nabuchodonosor? & an factę tres captiuitates? & sub quibus Regibus Iudæorum? & an initium 70. annorum inchoandum sit à Regis Iosiæ 13. anno? An à morte Ioachim, aut captiuitate Ioachim, seu Regis Iechoniæ? An à captiuitate Regis Sedeciæ? & quādo finiti? An in primo anno Cyri? An in anno Darij Hystaspis? & an distinguendi anni captiuitatis? & anni excidij templi, & vrbis? & cur Daniel tam anxiè, & suppliciter oret pro libertate, quàm Deus promiserat sedaturum, cum impleti essent 70. anni? 12

Dub. 4. Quis sensus legitimus inclusus in verbis? Quid significet hebdomada hic apud Danielē? An septenarium dierum, vel annorum? & cur diuisserit Angelus stilo insolito hebdomas in 7. & in 62. & in vnam? & quid intelligendum per hebdomadas abbrebiatas? & quando inceperint Danielis hebdomadæ? & quando finierint? 36

Dub. 5. Quis sit hic intelligendus per Christum ducem? An Messias in lege promissus? An ali? & an ille iam venerit? fueritque Iesus Nazarenus, filius Virginis Mariæ? vel quispiā alter? 52

Dub. 6. An sit intelligenda prophetia Iacob. Genes. 49. *Non auferetur sceptrum de Iudā*, nec dux de femore eius, donec veniat, qui mittendus est, &c. de aduentu Messiæ? & quinā illius sensus? & an ex illa sufficienter probetur venisse Messiam contra Iudæos? 67

Dub. 7. An Iudæi essent admissuri Christū? An in ipsum conspiraturi, & male tractaturi? & an Iudęi passuri essent grauia incōmoda in mūdi finem? & an sint illa mala perpessi ob Messiæ Christicidium? 74

Dub. 8. An Iudæi Israelitæ sint ali quando conuertēdi ad Christū, & reducendi ad fidem eius? saltim in finem mundi? & an omnes? an plures? & an Eliæ prædicatione? 79

Dub. 9. & vlt. Quid sit abominatio desolationis stans in loco sacro, in tēplo, prænunciata ab Angelo Danieli? 84

LECTVRA

De Christo adorato à Regibus.

Dubia litteralia.

Dub. 1. Quare hic Euangelista in initio historiæ fecit mentionē

Christi nati, loci temporis, & Regis? pag. 1
Dub. 2. Cur dicitur natus in Bethleem, potius quam alibi, vt in Roma Domina orbis? 2
Dub. 3. Quænam Bethleem, in qua natus est Christus? Et an legi debeat Bethleē Iudà, an Iudæ, vel Iudeæ per duo ee? 3
Dub. 4. Quis fuerit iste Herodes? & cur dicitur Regis? & cur fiat mentio de alienigena? 4
Dub. 5. Quid demonstret illud verbum demõstratiuũ *Ecce*? & qua ratione possit aptè demonstrari per illud aduentus Magorũ? & an Magi adorauerint die decimà tertia post natiuitatem Christi? 5
Dub. 6. *De scientia, qualitate, numero, & patria Magorũ.* An Magi fuerint malefici magia diabolica? & an fuerint Reges? & quot tres vel plures? & an ex regione Persiæ, Chaldeæ, Arabiæ, & quorũ regnorum Reges? 6
Dub. 7. Quare Christ⁹ dicatur Rex Iudæorũ? & cur non totius vniuersi? & an habuerit ius hæreditariũ ad regnum tẽporale Israeliticũ? & quare corã Rege Herode interrogant de nato Rege Iudæorum? 12
Dub. 8. *De natura stellæ.* An fuerit vera stella? an fuerit creata de nouo? de qualitate splẽdore, vbi & quãdo apparuit? & de eius motore, itinere, & cursu? & cur dicitur *eius*? & cur conduxit in Hierusalẽ, si ducebat in Bethleem? 16
Dub. 9. An ista stella fixa steterit in Oriẽte? an cõmittauerit Mãgos vsq; in Iudæã? & quare sint ducti per stellã ad Christũ? & qua tatione visa stella cognouerint Christũ natũ? & cur ista disparuit in ingressu Hierusalẽ? & an fuerit vna, vel plures? 21
Dub. 10. Quare turbatur Herodes audiens natum Regem Iudæorum? & quare dicitur tota Hierosolyma turbata? 26
Dub. 11. Cur conuocauit Principes Sacerdotum, & Scribas? an fuerit in populo Iudaico vnus Princeps Põtifex summus? & quare ab illis quærit Herodes locũ natiuitatis? & quinã sint Principes Sacerdotũ, qui Scribæ? & vbi natus est? 28
Dub. 12. Cur natus est Christus in Bethleem? & quis fuit Prophe ta hic citatus sine nomine? & quare hic Euangelista in narratione prophetiæ sit vsus diuersitate, & mutatione verborum? an solùm seruauerit sensum, nõ verba? & quæ sint antilogiæ inter Prophetã & Euangelistã? & & qua ratione redigantur in concordiam?
Dub. 13. Quare Pontifices, & Scribæ nõ retulerint integram Michææ prophetiã? & cur nõ dixerint ex te exiet fili⁹ Dei, & Rex, sed dux? & cur non rexit omnẽ populũ Israel? & quare nõ fecerit mentionẽ de gentibus, quæ rectæ sunt per Apostolos? 34
Dub. 14. Cur Herodes vocauit Magos secretò, & non publicè? & cur diligẽter inquisiuit à Magis? & quare non iuit cum illis in

in Bethleē, nec vllus de populo? & cur intendebat occidere sub prætextu adorandi, si existimabat Deū? & quare iubet interrogare de puero, & nō de Rege? 35

Dub. 15. Cur stella disparuerit ad ingressum Hierusalem? & iterum apparuerit in egressu, & ducit ad Christum? 38

Dub. 16. An ista stella, quæ apparuit in egressu Hierusalem sit alia ab illa, quæ in Oriente apparuit? & cur dicat Euangelista, quòd gauisi sunt, & gaudio, & magno, & valdè? 40

Dub. 17. Cur stella stabat supra vbi erat puer? & quę sit ista domus, quā dicit Euangelista intrasse Magos? an sit diuersorium? vel porticus illi annexus? vel aliqua alia domus, in quā sit trāslata habitatio? & quare dicatur inuenisse puerū cum Maria Matre eius, & Ioseph? nulla sit mētio? & quid sit procidere, & procidentes adorauerūt? & quot modis adorarunt? 42

Dub. 18. Quare Magi obtulerunt munera Christo? & quare aurū, thus, & myrrā? & an singuli singula, vel singuli terna? & cur fiat mentio oblationis Magorum, & non pastorum? & quo modo se habuerit infans, & virgo erga Magos adorantes? 46

Dub. 19. & vlt. An Magi interrogauerint de regressu, qui dicuntur accepisse responsum in somnis? & quare in somnis admonētur de via? & à quo sint admoneti, an à Deo, Christo, Maria, aut Angelo? & quare stella quę duxit, nō reduxit? & cur nō redierunt ad Herodē? & cur per aliā viā reuersi sunt? si semel crediderūt infantē esse Deū, potentem se tueri ab Herode? 50

LECTVRA

De Fuga Christi in Ægyptū, & regressu in Nazareth. 1

Dubia litteralia.

Dub, 1. Quis fuerit iste Angel⁹ apparens? & an apparitio facta sit statim post adorationē? & an in Bethleē, an in Nazareth? & cur potius sit reuelatio Ioseph in somno, quā in vigilia? & cur potius Iosepho, quam Mariæ? 2

Dub. 2. Cur Angelus imperat, vt surgat? & cur prius nominatur filius, quā mater? & cur dicitur, vt prius accipiat puerū, quā matrē? & quare nō exprimit nomē vtriusque? & cur non nominat Virginē cōiugē Ioseph? & cur Angelus suasit fugā, & Christus voluit fugere, cū tueri se posset? & cur fugerit in Egyptum, potius, quam in aliam regionē? & quid acciderit in via? 4

Dub. 3. Vnde Angelus certò præscire, & prædicere potuit Herodē quæsiturū infantē ad occidē dū? & cur voluerit occidere? & cur nō occidit statim, ac illusus fuit à Magis? & si existimauit Deum quomodo ausus sit aggredi occisionem? 8

Dub. 4. Cur denocte fugit Ioseph? & an ipsa nocte, vel alia sequenti? & cur dicitur accepit puerū, & nō accepit filium? & quantū distet Nazareth ab Epypto? 9

Dub. 5. Cur Euangelista faciat mẽtionem de ingressu, & nomine Ioseph in Egypto, & non de Mariæ, & pueri? & in qua ciuitate manserit? & quanto tempore? & quis Propheta innominatus? & cur introducitur testimoniũ Prophetæ, *Ex Egypto* vocaui, & an intelligatur ad litterã de Christo? vel de populo Israel? 11

Dub. 6. Quare Herodes existimauit se illusum à Magis, & cur potius perpendit tunc, quã antea? & qua de causa tunc irascitur? & quare non contra Magos, sed contra pueros? 14

Dub. 7. An Herodes iuserit fieri infanticidium, statim eodẽ anno, quo Magi recessere in regna? an distulerit ad annũ sequẽs à Christo nato, ad decimũ quintum mensem? & cur distulerit ad illud tẽp? & an occiderit infantes biennos? & quomodo intelligatur *abimatu & infra*? & an occiderit per se, vel per ministros? & cur in Bethleẽ, & in omnibus finibus eius? & quot fuerin occisi? & an fuerint vere martyres Christi? & an in pœnam peccati parentum sit volitum infanticidium? 15

Dub. 8. Vbi est in Ieremia locus citatus ab Euangelista, & quib⁹ verbis? & cur non transtulit, vt in originali? & cur induxit prophetiã? & de quo intelligatur in sensu literali? & quid est Ramà? & quid intelligatur nomine Rachel? & cur vocatur Rachel genitrices plorãtes? & cur ipsa potius, quã Lya, Iacob, aut alij? & quinã sint filij, qui plorãtur, & quare noluerit consolari? 20

Dub. 9. Quare defuncto Herode iubetur Ioseph reddire ex Egypto in terrã Israel? & quanto tẽpore mãsit Christus in Egypto? an vsq; ad annũ trigesimũ? & cur dicitur *defuncto Herode*, cum Christus ligatus in passione missus sit ad Herodẽ? & quare non determinauit de aliqua parte regni, sed vniuersaliter in terrã Israel? & cur dicitur in plurali *defuncti sunt*, cũ solus Herodes quæsisset occidere puerũ? & cur dicitur quæsisse animã, cũ intenderit occidere corpus? 25

Dub. 10. Quid intelligatur per terrã Israel in quã dicitur venisse Ioseph? & cur timuit ire Galileam? & cur Angelus monet ire in Iudæã? & cur timuit in Iudæa Archælaũ, & non timuit in Galilæa Herodem? 29

Dub. 11. & vlt. An fuerit Christus Dominus re ipsa Nazaræus nationalis? & vnde dictus Nazaræus? & à quibus Prophetis dictum sit vaticiniũ, quòd *Nazaræus vocabitur*? & an ob virginitatis votũ in Nazareatu veteris legis? & quare cum natus sit in Bethleem, & non in Nazareth, non fuit vocatus Bethleemita, sed Nazaræus. 32

FINIS.

IN-

INDEX

DOCTRINAL. CONCEPTVVM

AD MORES,

QVI IN LECTVRIS SVNT INdigitati, & huc adiecti cum fulcimentis, & probationibus suis.

PRO

Sacris concionibus.

NE

Horam lectionis litterariæ insumerent, aut studia litteralia caliginarent.

LECTVRA

De vita, & gestis Samsonis.

QVòd *Deus diu dissimulat iniurias suas, & suorũ, sed subitò inopinatò acerbè corripit.* 3

1 Ex clausula textuali post 40. annos sustinentiæ vna templi ruina punit.

2 Chrisost. homil. 30. in Genes. ad *Ecce Adam*, &c. post dilatata colloquia cum illo, & Eua, punit priuatione, & exilio è paradiso, præcludit viam ad lignum vitæ, & ostium paradisi, & adhibet Angelum custodem cum *gladio flammigero, & versatili.*

3 Chrisost. homil. 30. in Genes. ad illud. *Ecce vnus est populus*, &c. dissimulat in erectione fabricæ Turris Babylonicæ à fundamentis ad culmen, sed subitò conuocantur diuinæ personæ, aut Angeli *venite confundamus linguam eorum.* Diruit superbum ædificium, & dispergit erectores in orbem.

Quòd *Deus dissimulat ab initio mundi scelera, sed vna die punit, iuditio statuta.* 3

1 Ex clauſ. tex. vbi post plures dies, menses annos, quibus sustulit peccata Israelitarum, statuit

tuit dum, & tempus 40. annorum deuastationis Philistæorum ad punitionem.

2 Matth. 13. vbi cum ille Dominus, & hærus videret in aruis, vbi triticum seminauerat excreuisse *simul, & Zizania*, & instaretur ab agricolis suis, *vis imus, & colligimus ea?* Non aquieuit, sed prohibuit *finite crescere, &c. in tempore messis dicam messoribus colligite primum Zizania, &c.* vbi missi expectant dum, & tempus statutum ad alligandum in faciculos, & comburendum.

3 Abul. ad Genes. 18. & 19. *veneruntque duo Angeli Sodomam vespere.* Vers. 23. Sol eggressus est super terram, &c. *igitur Dominus pluit super Sodomam, & Gomorham sulphur, & ignem à Domino de cœlo.* Vbi non mirandum, quod inflamaturus vereatur exequi, quin aperuerit Abrahæ, nec possit cælare, quòd illius sufferat instantias suspendendi si sint 50. iusti, si 45. 40. 30. 20. 10. Quòd hospitentur illa nocte apud Loth, quòd educat illum, vxorem, &c. extra Sodomam, quia inducias dat, qui decreuit die decretata, ignis pluuia punire. *Deus index iustus, patiens, qui non irascitur per singulos dies.*

Quòd *dissimulat calumnias contra discipulos, sed excutit acerbè quare, & vos.*

1 Ex claus. tex. vbi sustulit suos Israelitas per 40. annos hostiliter impugnari à Philistæis, sed subita ruina ingentis ædificij rigide, & seuerè tumulauit.

2 Matth. 21. vbi Pater familias *misit seruos*, vt exigerent ab agricolis redituarijs annuos fructus, quibus lapidatis, & occisis *misit alios, & fecerunt similiter*, denique mittit sibi charioré filium, dicens *forte verebuntur filium meum.* Qui dicêtes *Hic est hæres, &c.* expulsum extra vineam, occiderunt. Vbi dissimulauit diu dicta scelera, sed cum venit Dominus, *quid agricolis?* Malos male perdet, & vineam locabit alijs. Id est puniet supplicio omni exaggeratione maiori.

3 Exodi 3. Deus patitur Israeliticum populum affligi in Egypto dura seruitute plus 20. annis in luto, latere, & alijs præsuris. Sed ait *vidi afflictionem, &c. descendi, vt liberem*, & ad intentum nullum, nõ lapidem mouet. Moysem cum virga, & miraculis, reddit aquas in sanguinẽ, educit ranas, dispergit cinifes, obtenebrat aærem, percutit primogenitos, & tandem submergit Pharaonem, & exercitum eius in mari rubro.

Quòd *peccatum Idolatriæ pungit valde Deum in maiestate, & honore, & ita acriter punit.*

1 Ex claus. text. vbi Israelitæ idolatria, qua à Deo supræmã excellentiam auferunt, & dant idolis, ipsius præcordia infigunt, & ideo in nasione hostili Philistinorum diuturna, 40. annorum suppliciantur.

2 Exod. 32. *Fac nobis Deos, qui nos præcedant.* Aquiescit Aaron, & opere

opere fusorio eduxit vitulũ, & *Hi sunt Dij, qui te eduxerunt.* Pupugit Deum valde videns referri beneficium eductionis vitulo nouiter conflato, non extante, quando educti sunt de Egypto. Conqueritur gemebundus Moysi, qui descẽdens iratus est valde, adeò vt dixerit. *siquis est Domini iungatur mihi, & filijs Leui, ite de porta ad portam, & occidat vnusquisque fratrem, amicum, & proximum.* Et illa clade ceciderũt 23000. hominum, & ait Moyses *hodie consecratis manus vestras Domino.* Adeò pũgitur idolatria, peccato lesæ Maiestatis, vt tan ingenti clade per sacras manus leuitarum recuperet Maiestatis honorem.

3 Daniel 2.3. illa statua ex varijs metallibus conflata, auro, argẽteo, ære, &c. ad cuius instar erigi fecit Nabuchodonosor aliam *statuam auream*, in qua, vt in symbolo, & prototypo iussit se adorari, plusquam politica adoratione, sacra. Quam renuẽtes exhibere tres illi iuuenes *missi sunt in fornacem ignis.* Perculit valdè Deum, quippè ipsi honorem, & cultũ deferebant, Deo debitum, sed illa, lapillo de monte scisso percussa in puluerẽ redacta est. Ista autem villipendio luit pœnas, & sui prototypi inuersione in bestiam donec *agnosceret Deum cœli*, solum dignum adoratione sacra. Et scieret quod dominetur excelsus in Regno hominũ c. 4.

Quòd *ordinaria scelera contra virtutes Deus paterè corrigit, crimen autem lesæ Maiestatis seuerè exitiali morte punit.* 3

1 Ex clauſ. text. vbi filij Israel homicidijs delinquẽtes leui pœna corrigebantur, dum autẽ dant operam idolorum cultui, traduntur in festandi à Philistæis, inuasionibus 40. annorum.

2 Daniel. 5. vbi Regis Balthasaris ordinaria peccata intẽperantiæ in conuiuio parato optimatibus mille, leuiusculis mulctis sũt percussa, cum autẽ accessit temulentia, & adducta vasa templi Hierosolimitani, à Patre captiuata, prophanarentur, & Deos *aureos argenteos, & lapideos, iubilarent*, in eorum villipendium: in eadem hora, fine dilatione *apparuerunt digiti, quasi manus hominis scribentis, &c.* sententiam capitalem, priuationem vitæ, & regni depositionẽ per inuadentes Persas, & Medos.

3 Ex 4. Reg. 1. vbi Rex Ochozias infirmus mittit nuncios ad cõsulendũ Beelzebud Deũ Accarõ super salutem Regis. *Elias occurrit nuncijs* per ter, & tandem inducto Angeli descendit ad Regem, & increpans dixit. *Hæc dicit Dominus, &c. quia misisti nuncios, &c. quasi non esset Deus in Israel, &c. à quo interrogares. Ideo de lectulo super quẽ ascendisti, non descendes, sed morte morieris:* Mortuus est ergo quoniam exquirere oraculũ futurorũ abalio quã à Deo est ab illo aufferre sciẽtiã propriã Dei, & defferre idolis, quod scelus non solũ pœna infirmitatis, sed extrema capitali puniendum. Quòd

Quòd *bella quibus Respublica (& nostra Hispania) funditus euertuntur, in pœnam, & vindictam infidelitatis occultæ à Deo permittantur.* 3

1 Ex clauſ. tex. vbi Iſraelitæ iterum reciderunt In malum, ſcilicet ſeruierunt idolis Baalim, & Aſtaroth, & ob id impetuntur bellis quadragenarijs Philiſtinorum.

2 Baſil. ad 1. Reg. 17. vbi ille Philiſtæus *exprobabat agmina Dei Iſrael* adoleſcens Dauid aggreditur inuaſionem, & victoriam ex 5. ſelectis lapidibus ſuperfluunt 4. vno ictu capitis intulit mortem. Temeritas audacia in Gigantem, orbis terrorem, bellum campale moliri à iuuene, & inermi, ſine armis Saul. Eſt vnus vna Phalanges ad ſumendam vindictam de infideli exprobrante Iſraelem Dei, conuicia in Deum facile ſuperabilem reddiderunt, *in funda, & lapide.* Oculati ſint Reges, & reſpublicæ, ne infideles ſecretos patiantur.

3 Philiaſter, hæreſ. 95. ad Iudicum 6. vbi quòd Iſrael poſtulauit auxilium contra Madiam, cuius exercitus innumerabilis c. 7. v. 12. *ſicut arena, quæ eſt in littore maris.* Angelus erigit ad ardua Gedeonem *Dominus tecum virorum fortiſsime.* Et Deus ex conciliato exercitu, fecit eum dimittere pluries, ſemel 22 ꝟ 000. militũm, iterum alios, qui non lambuerunt aquas, vt cum ſolis 300, hiſque pro armis buccinis, & hydriis cũ lampadibus, inuaſſerit, vicerit, & fugauerit hoſtes, ſed cur non ita? ſi caſtra Madiam hoſtes Dei continebant, & ipſe Gedeon. cap. 7. v. *deſtruxit aram Baal, & ædificauit altare Domino,* illud redidit Maddianitas inermes, hoc Gedeonem armatum. Vna ſola mulier Iudith de capitauit Holofernem, & vicit exercitum Aſsirionem inimicorũ populi Dei.

Quòd *viri magni oriri ſolent ex parentibus ſterilibus raro, vt Baptiſta quia futuri ſunt filij inſignes, famoſi, & rari, ſiue inter æquales, ſiue inæquales.* 4

1 Ex clauſ. text. vbi pater Samſonis dicitur habere vxorem ſterilem, & ex illa prodijt vir Samſon, inſignis, religione Nazaræatus, in bello famoſus, in facinoribus occidendi Leonem, poſtrandi exercitus, deferendi portas ciuitatis, diruendi ædificium ad glorioſum ſui ſepulchrum.

2 Andræas Hieroſ. ad Lucæ 1. *Quomodo fiet iſtud quoniam virũ, non cognoſco.* Virginitas eſt ſterilitas, quæ partum neſcit, ego inter mulieres nouũ modũ naturę indu cam, ita licet rarò. *Erit enim magnus, & filius altiſsimi vocabitur, & regnabit, &c.* ex ſterili *magnus altiſsimus Rex.* Ita ex Sara Iſaac, cãput poſteritatis Chriſti *in Iſaac ſemen, &c.* ex Anna Samuel egregius Propheta Domini, & ſic de alijs.

3 Ambroſ. lib. de Iſaac, c. 7. ad Ge-

Geneſ. *Terra autem erat inanis, & vacua*, &c. *& ex ſterili terræ luto fixit Deus primum hominum, caput vniuerſorum*, qui fecundauit, & ornauit orbem. Fecunditas eſt ſpecioſſa, quid agro pleno pulchrius cum ſegetes fluctuarent?

4 Exod. 17. Pſ. 77. *Percuſit petram, & fluxerunt aquæ, & torrentes inundauerunt.* Vbi ex ſterili ad ſcaturigines prodiere fluenta. Miraculum. Quòd in ſequeretur Iſraelitas per deſertum, miraculum, quòd prodirent *dulciſſima de petra, oleumque de ſaxo duriſſimo.* Vbi ex ſterili mirabilia. Emiſsit Deus *agnum Chriſtum Dominatorem terræ à petra deſerti*, id eſt ex Ruth. vxore ſterili.

Quòd *Deus vult naſci viros famoſos ex ſterilibus, vt non naturæ, ſed gratiæ tribuatur natiuitas orti.* 4

1 Ex clauſ. text. vbi licet Patri fecundo poſſet tribui prolificatio, non matri infecundæ, ſed Deo fecundanti.

2 Chriſolog. ſerm. 87. ad illud Ierem. 6. *Hic menſis 6. eſt illi, quæ vocatur ſterilis.* Eliſabeth inepta ad prolem ſenectute, & ſterilitate. Vt quid tot impedimenta? *ſterilitas ſenectute grauatur extrema, vt totum credatur diuinum, cum nil fuerit humanum.*

3 Geneſ. 17. verſ. 16. *Dixit Deus ad Abraham, ex ea* (Sara) *dabo tibi filium*, Abraham *riſit* dicens in corde ſuo. *Putas ne centenario naſcetur filius, & Sara nõ nagenaria pariet?* c. 18. verſ. 10. cum illi tres Angeli apparuerunt poſt menſam idem oraculum repetentes, audiens Sara riſsit *poſt oſtium. Erant enim ambo prouectæ ætatis, & Saræ deſierant fieri muliebria. Conſenui, & Dominus meus vetulus eſt voluptati operam dabo?* Paulus expendit Rom 7. *Non eſt infirmatus in fide, nec conſiderauit corpus mortuum.* Imò in ſpem cõtra ſpem credit naturæ. Vt quid riſsit? quo aut vbi difficultas, aut impoſsibilitas, in ſenectute? in ſterilitate. Caiet. *Confortatus eſt in fide, dans gloriam Deo*, qui de ſenectute, & ſterilitate, elicit prolem, vt ſibi arroget gloriam.

4 Baſil. Seluc. ad 1. Reg. 16. vbi mittitur Natham ad eligendum Regem ex Iſai filijs, & repulſi aſsiſtentes in curia, qui ſceptrum ſolicitudine ambire poterant. *Miſsit, & adduxit adoleſcentulum Dauid*, in deſerto paſcentem oues. Vt quid de deſerto eligitur? *ne videretur eſſe humanum, Dauid gregem paſcit, & Deus thronum parat.*

Quòd *Dei prouidentia, ita habilis eſt vt æque attingat poſsibilia, & impoſsibilia naturæ, prolem ex ſterilitate, & fecunditate, vt eliciat ex infirmitate ſalutem, ex morte vitam.* 4

1 Ex

1 Ex clauſ. text. vbi elicuit ex ſterili, [& infecunda, fertilem & fecundam prolem.

2 Geneſ. 30. Rachel ad Iacob. *Da mihi liberos alioquim moriar.* Ac ſi in eius poteſtate eſſet reddi ſterilem, fertilem, infœcũ dam fœcundam. Reſpondet Iacob *numquid pro Deo ego ſum?* Aptè quidem, quia Dei omnipotẽtia, ita habilis eſt, vt ex ſterilitate eliciat fœcũditatem.

3 Geneſ. 42. vbi Ioſeph iuſſit æconomo ſuo, vt vas illius argenteum, re poneret ſupra triticum, & prætium in ore ſacci fatris iunioris. Ecce vbi requiſitoria in primo diuerſorio, inquiritur de delicto decerni tur, quòd ſit *reus mortis ille* in cuius ſacco ſit inuentũ. Cum autẽ inueniretur in ore ſacci iunioris exclamant. *Quidnam eſt hoc, quòd fecit nobis Deus!* O ſtulti, id fecit Ioſeph miniſterio œconomi. O diſcreti qui noſtis, Deũ, qui ſterilitatẽ tritici reddit fecũditatẽ, paupertatẽ & inopiã in diuitias, & copiã, ſicut ex nihilo elicuit omnia.

4 Hieron. epiſt. 34. ad illud ad Hebr. 11. vbi Deus promiſſerat Abrahæ poſteros, *vt ſtellas cœli, & arenam, quæ eſt in littore maris* multiplicandos, *in ſemine tuo, &c.* Deinde præcipit, *Tolle* filium tuũ, &c. vnde ſperari poterat dilata poſteritas. Oblitus, & immemor promiſsionis factę? neutiquã. Non deſperat poſt mortẽ eſſe victurum *ſciens, quòd poſſet à mortuis reuocare*, cui faciles ex mortis obedientia paſsiua elicere vitam, ex infirmitate ſalutem, &c.

Quòd *Deus pluribus, ſibi dilectis conceſsit ſanctificationem in vtero, ſoli Deiparæ in primo inſtanti conceptionis immunitatem ob originali.* 5

1 Ex clauſ. text. vbi in priori ad conceptionem Sãſonis, ante quã habeat eſſe exiſtẽs, præueniturReligioſſa lege Nazaræatus, abſtinentia à vino, & liquore inebriante, tactu defuncti, &c. ita Maria immunitate à culpa originali mortifera per gratiæ gratum facientis decorem.

2 Roman. 5. verſ. 15. vbi Apoſtolus ad litteram, vt non ſemel in ſchola aſſertum eſt, docuit immunitatem. *Non ſicut delictum, ita & donum.* Vbi diſparitatẽ inrer excellentiã gratiæ, & ignobilitatẽ culpæ aſtruit. *Si enim vnius delicto multi mortui ſunt, multo magis gratia Dei Ieſu Chriſti in plures abundauit.* Vbi culpa vincitur à gratia. Si multi, & plures diſcutiantur reſpectiuè, quòd culpæ ſubiecta ſint in minori multitudine, quam gratiæ, & præſtet gratia intenſione, efficacitate, iteratione, vbertate, ſed difuſione, & antelatione ſubiectiua, & id multò magis, non leui exceſſu, ſed ingenti. Si igitur ſit aſsignandum aliquod ſubiec

tum

tum extra illam multitudinem redigendum ad illam pluralitatem, magis copiosam nullum rationabilius, quam Deiparæ anima, iuxta Trident. institutionem, de cuius mente est non loqui de B. Virgine, *vbi de peccatis agitur*. In illa multitudine Apostoli, agitur de peccato inficiente multos, non comprehendi satius in illa plenitate superante multitudinem, præueniri Mariam gratia gratificante, impediente infectionem originalis, displicentem, nec in subiectis Angelicis, sed in humanis à stirpe Adami, de quibus ibi sermo. Et si dicas quòd esse substantiale subiecti, solet præcedere accidens gratiæ, hic autem accidens anteuertisse substantiam, si gratiæ esse obiectiuum anteuertat esse existentiale actuale, vt sit in eo ista præstantia gratiæ vt à Deo. Nil dissonum.

3 Basil. Seleuc. orat. 9. expendit illud edictum Pharaonis, Exod. 1. in infantes Israelitarum. *Quidquid masculini sexus interficite, quidquid femininæ reseruate.* Non quòd priuilegium reseruationis, solas feminas attigerit, typum virginis, ab inundatione generali reseruandas, sed quòd infans, antequã haberet esse, & vitam extra vterum ad existendum in mundo, habebat esse, vt edicto incurreret mortem, quod *in matrice processerat* pœnam ferebat. Ad huius instar, inuerso, anteuertit Deus edicto, quòd vitæ gratiæ ad inducendam vitam anteuerteret esse naturæ in conceptione (in sensu dicto) esse obiectiuum decretatum, ad esse existentiale.

4 Hieron. epist. 34. ad illud Genes. *Quia fecisti hanc rem.* Et præuenit ne extendas manum super puerũ. Si impeditur exercutio infanticidij. Quo pacto dici potuit vere, *quia fecisti*, & assignatur ob meritum premiũ copiosæ posteritatis, *iam voluntate iugulauerat quem haredem audierat*. Inquit eleganter. Vbi infans viuus habuit vitã, vt posset esse defunctus affectiue, quin esset defunct⁹ re ipsa, vt posset redire in vitam. Ita in præsenti.

5 Et vltimò. Frãciscanus collector in duobus tom. scriptorũ varia de cõceptione, in informatione edita à P. Ojeda, Iesuita, erudita colligit. cap. 1. traditionem conceptionis ab Elia petitus, gratulationis gloriam ordini Carmelitarum reddit, quòd posit deponere antiqua traditione, plus 1500. annorũ, qui ab Eliæ reuelatione fluxerunt. Religio nostra vicem primo genitoris olim hui⁹ deuotionis obtinuit, aliæ illustres, Franciscana, Iesuita, &c. genitæ munus nutricis suis solemnijs exhibuerunt. Probat quidem antiquam traditionem Ojeda ex nostro Ioann. 44. Patriarcha

Hiero-

Hieroſolim. lib. de Inſtitutione Monachorum cap. 32. ad illud *Ecce nubecula parua, quaſi veſtigium hominis aſcendebat de mari.* Ex qua per Giæzi prænunciauit Regi vaticicium pluuiæ futuræ, vt abiret in curru, ne occupet te pluuia. *Quid ſacramenti præter hiſtoriam, viſio illa contineret, Elias dignatus eſt aperire conſortibus ſuis.* A quibus traditum tenemus Deum reuelaſſe Eliæ, ſub figurata viſione myſteria. Inter quæ præoſtenſum eſt Eliæ, quòd *quædam infantula, per illam nubeculam ſignificata eſſet munda, ab omni peccatorum ſorde.* Licet *eſſet originaliter eiuſdem naturæ cum mari, de mari amaro, ſine vlla tamen amaritudine.* Vbi in typo, ſymbolo, & figura Maria habuit eſſe, vt eſſet immunis ab originali amaritudine, antequam haberet eſſe in ſe exiſtentiali, actuali, quo reddita eſt immunis, vt ſufficiéter anticipatè præoſtendere tur Eliæ, & conſortibus celebrãdum, ante plus mille annos, quin obſtaret Mariam, non habere tunc eſſe ſubſtantiale exiſtentiale, vt immunitas accidentalis gratiæ, anteueneret eſſe ſubſtantiale, exiſtentiale Mariæ, vt infelicitas mortis poſterorum, ante eſſe exiſtentiale, felicitate immunitatis ante eſſe exiſtentiale virginis cõpenſaretur, vt in Maria, in eo ſuperabundaret & gratia, & non ſolùm anticipatè præuideretur, vt culpa in multis, ſed intenderetur in pluribus, inter quos princeps Maria.

Quòd *in lege veteri fuit ſtatus verè religioſus, & non ſolum figurali ratione.* 5

1 Ex clauſ. text. quatenus in lege ſcripta erat Religio Nazaræorum, ſegregata à vulgaribus, nec ſola, ſed alia altior, & perfectiori ſtatu præſtãtior. Quæ verò? Eliæ Prophetæ, authoris Ordinis Carmelitarum.

2 Nam Religio Carmelitarum, non ſolum *tenet ſucceſionem hæreditariam ab Elia, & Eliſeo, qui montem Carmeli in habitarunt*, vt expreſſe Sixtus 4. & alij Pontifices in Bullis, in noſtro Marimagno, quod nouitate typorum reddiuiuum eruerunt in manuale volumẽ Zeloſi noſtri PP. Excalceati. Sed conſtitit in ſtatu verè religioſo in veteri lege, non ſolo exercitio obedientiæ, paupertatis, & caſtitatis, ſed ex voto, vt requiritur ad veram Religionẽ, monachatum, vt in noua, detractis, ſolemnitatibus, perfectionibus, poteſtate clauiũ, & alijs circunſtantijs, quæ adiectæ ſunt in lege gratiæ ſub Chriſto, omnis perfectionis Exẽplari. Hęc eſt ſententia firmiſsima in Carmelo antiquæ obſeruantiæ, & nouæ obſeruãtiæ, PP. Excalceatorum, ex noſtra familia, mitto ſcrip-

scriptores Vualdēs. Bach. Ayg. Bonon. & nouissimos reffero. Cornejo, Muñoz, Alegre, Romā ex nostra Hispania. Ex ista Thomam à Iesu, Ioann. à S. Maria in historia prophetica, quorum authoritas firmant difficiliora. His placuit adiungere quod me præside olim in publica concertatione, ea Princeps quæstio exagitata est à D. Doctore Montesino primario, & Merino Vesperario validissimis argumentis, qui plausu responsiones, & doctrinam huiusmodi admisisse ostenderunt. Sed quod vim affert maximā, id est quod zelus Elianus Relig. PP. excalceatorum post prolixas excusiones historiæ propheticæ, examinatis, & apprime expensis defensorijs à tribunali S. & general. Inquisitionis editum est decretum ann. 1639. die 9. mens. Decembr. Quod inter alia probat, quòd *in lege scripta extitit votum castitatis perpetuæ, obedientia, & paupertatis, & verus Monachatus, ac religio, demptis supra dictis perfectionibus, & solemnitatibus legis gratiæ.* Vt autem subsistat vera religio requisita sunt dicta tria vota, saltim simplicia admissa ad statum, vt in Societate Iesu post bienium constituunt statum religiosum non minus, quam solemnia eiusdem, vel alterius Religionis.

3 Ex PP. quos coacerbari prohibet breuitas Qui optauerit, videat magni ponderis exquisitas in altera ex repetitionibus, quod libeticis recitatis in gymnasio Academiæ. *An primatus temporalis in vouenda castitate sit deferendus Eliadis, vel Deiparæ, & Christo? an solum dignitatis, & excellentiæ.*

4 Exod. 3. Moysi intendenti introduci ad visionem illam Dei existentis in medio rubi prædisponitur, quòd soluat calceamēta, & vepribus caro mortificatur. Vbi symbolum ad intentum Deus in rubro pungentibus spinis, Deus in religione in rubro adumbratur ob præsuras, & seueritates. Ingressurus religionem primo exercetur in obedientia præceptiua. Secundò in paupertate abiciendo calceamenta, & alia temporalia; Tertiò in castitate, qua caro mortificatur insinuata in punctione pedum per spinas, & vepres. Deinde solet assumi illud eiusdem cap. vers. 13. vbi Moyses instruitur à Deo, vt petat licentiam à Rege egrediendi ex Egypto, & ingrediendi in desertum, *via trium dierū ad exibendum sacrificium Deo*, & aptè dum quis petit licentiam à parentibus ad relinquendum sæculum, ingrediendi desertum Religionis, & sacrificandum se Deo via trium votorum obedientiæ, paupertatis, &

castitatis. Iterùm solet illud Cant. 4. De spõsa placida Deo *triplici clausura. Hortus conclusus soror mea, Hortus conclusus, fons signatus*, & applicari ad triplicis Religionis religationem, quibus quis cohibetur ab exercitio propriæ voluntatis, à diuitijs, & temporalibus, & à delitijs veneris. Denique illud Apocalyp. 12. in cœlo, *Mulier amicta sole, & luna sub pedibus eius, & in capite eius corona stellarum duodecim*, quod aptari solet animæ religiosæ, in trium votorum præmium. Caput, quòd obedientia submisit in terra, serto & corona stellarum sit redimitum in cœlo, pedes, quibus paupertate calcauit argentea, aurea, &c. ornentur splendore Lunæ cœlestis, corpus quod mortificatione carnalium, & castitatis cultu denigrauit in terra, splendoribus solis amiciatur, & induatur in cœlo. Præmijs scilicet, & laureolis, tribus virtutibus respondentibus.

Quòd *infantes sint in flore ti iuuentute, Deo, & statui religioso dicandi.* 5

1 Ex clauſ. tex. vbi non ab incunabulis solũ feligitur Samson in Nazaræatum, sed à die conceptionis. Et præmonetur Mater caueat à liquoribus prohibitis in Nazaræatu, vt illis abstinentijs in succo asuescat in sans instituto.

2 Genes. 44. vbi *Ioseph præcepit dispensatori*, impleri sacco fratrum frumento, & pecunia *scyphum* autem argenteum cum prætio in ore sacci iunioris, forte, vt sub illo prætextu reuocaretur à diuersorio, & oppido, in palatium, & contubernium ex fratribus iunior, præcæteris sibi placidus, non vt illos affligeret, sed vt apte Oleaster, *quia licitum est amorem alicuius erga alium experiri.* Ita Deus manifestat amorem erga infantes, dum illos præ alijs adultioribus reducit ad domicilium religionis.

3 Ierem. 1. Deus ab vtero disponit Ieremiam ad legationem, ad ciuitatem. *Prius quam te formarem in vtero noui te, & antequam exires de vulua sanctificaui te, &c.* cum autem dispositum vult mittere, se excusat dicendo, *nescio loqui, quia puer sum.* Instatur *noli dicere*, &c. *quoniam & mittam te ibi, &c.* Sufficitur multis, dedi te in ciuitatem munitam in columnam ferream, &c. & misit manum suam, & tetigit, & tandem illi assistit omnis tutela Dei, *ego tecum sum*, qui ob tot replicas satius repelli deberet, cum Isaiæ in simili sat seraphinum, & non immediate, sed igne quem forcipe tulerat de altari labia tetigerit. Placet potius, quia repetit puer sum. Geronim. ad Isaiæ 6. *Ad Ieremiam, quia dixerat puer sum nescio loqui ex-*

extendit ipse Dominus manũ suã, ad Isaiam Seraphim mittitur. Ita hic placidior se exhibet Deus, vt paruulos ducat ad se in religionẽ, imô grandioribus statuens paruulũ in medio dicit nisi efficiamini, vt paruuli, &c. finite paruulos venire ad me.

4 Genes. 18. Abraham tulit, & intulit domum de armẽto, *vitulum tenerrimum, & optimum*, ad deliciandum Deum hospitem in Angelis. Oleaster *Selegit sanctus senex, quod erat hospitibus erogandum, nos viliorem obolum, pecus morbidum, Deo tribuere solemus.* Incundior est Deo infans tenerimus ætate, & optimus morigeris, vt illo delicietur intra domum religiosam, & vulgus solet offerre puerulum stolidum, aut filiam deformem, & infirmã, & his peiora. Quòd *abstinendum à vino intemperato, præsertim Deo dicatis Ecclesiasticis, & religiosis.*

1 Ex claus. text. vbi fit præcautio ne bibat Mater Samsonis liquorem inebriare potentem, ne sugat puer dicatus in Nazaræatum abstinentem ab eis.

2 Ambros. de Elia, & ieiunio cap. 16. ad 3. Reg. 19. *Proiecit se, & obdormiuit in vmbra Iuniperi, & ecce Angelus Domini tetigit, & dixit surge, & comede. Respexit, & ecce ad caput suũ subcinericius panis, & vas aquæ, &c.* Mensa plane religiosa prò viri temperantia. Vnde exprobat intemperatos ebriosos, diffinitione ebrietatis, *est insertiuũ insania.* Per hanc homines colore variantur, oculis igneſcunt in furore, ardescunt, &c. & Seneca epist. 83. *ebrietas est voluntaria insania.*

3 Basilius homil. in ebrietatem ad illud Psal. 113. *Simulachra gentiũ argentum, & aurum, &c. Os habent, & non loquentur oculos habent, & non videbunt, aures habent, & non audient, nares habent, & non odorabunt, manus habent, & non palpabunt, pedes habent, & non ambulabunt. &c.* Quid quæso sunt ebrij *aliud? quam gentium idola*, oculos habent, & nõ vident, &c.

4 Hieronimus in vita Paulæ, ad Genes. 19. *& mansit in spelunca ipse* (Loth) *& duæ filiæ eius cum eo, &c.* Dixitque maior ad minorem, &c. inebriemus eum vino, dormiamusque cum eo. *Conceperuntque duæ filiæ de Lot patre suo.* Sancta Paula peragrans terrã sanctam, cũ veniſſet ad Segor, recordabatur speluncæ Lot, & in lachrimas versa, *Virgines socias admonebat esse cauendum vinum, in quo est luxuria.*

5 Noe vir perfectus illusus à filio, Holofernes decapitatur à fœmina, dives epulo sepultus est in inferno, Balthasar Rex Babylonicus temulen-

tus vidit apparitionem manus scribentis, interitum, & depositionem Regni per Caldæos. Ita ebrij in ludtribrium, & ignes inferni.

Quòd *Deus voluit in figuris veteris testamenti exerceri officia Redemptoris, quo glorioſe functurus erat in nouo testamento.* 6

1 Ex clauſ. text. vbi in Samſone typo, & figura Chriſti liberatoris ſui populi Iſraelitici ab inuaſione, & moleſtia Philiſtinorum, quaſi in nouiciatu rudimentis aſſuaſit ad liberandum genus humanum ab inuaſione, & moleſtijs diaboli.

2 Geneſ. 1. *Faciamus hominem ad imaginem, & ſimilitudinem noſtram*, vbi ſolet moueri difficultas, *An Deus creaturus hominem induerit, aut aſſumpſerit formam humanam*, non in vnitatem ſuppoſiti, ſed ſicut Angeli corpora ad apparitiones. Oleaſter hic *ad faciamus hominem in vmbra noſtra*. Iuxta originale Hebraic. ait; *Puto Deum cum hominem produxit formam humanã aſſumpſiſſe*. Et probat, nam *ſtatim habuit colloquium cum primis Parentibus, & ſerpente*, ſi verò quæras in quo ſit iſta ſimilitudo animæ ad Deum mitto te, ad Paulum ad Eph. 4. *Induite nouum hominem, qui ſecundùm Deum creatus eſt*. Vbi diſtinguitur de veteri, & de nouo per Chriſti redemptionem à Deo præuiſſo peccato placidum munus Redemptoris, vt ex tunc illius incarnationis genus, in nouitiatum delitioſum aſſumpſerit.

3 Geneſ. 32. *Et ecce vir luctabatur cum eo vſque mane*. Vbi ſtrictiſsimo amplectu vir iſte ſibi corpus humanum Iacob copulabat, ſolubili haud facili amplexu, niſi iam irradiante aurora, vbi myſticè PP. vnionis vmbram, & figuram ambiebat ante Mariæ exiſtentiam, illa autem illuſceſcente mundo ampliorem, & veriorem affectat, qua in hypoſtaſis vinculo coniungat. Oleaſter ad Geneſ. 1. *Ad Deus ſpiritus eſt. Scio cum hoc Deum ſæpiſsime in humana effigie loquutum Moſeh, & alijs*, ſanctis veteris teſtamenti.

4 Hebræor. 1. *Cum iterum introducit primogenitum in orbem terræ, dicit adorent eum, &c.* Caietan. hic, *Bis ſcriptura introducit Meſſiam in orbem terræ*. An ſit prima in æternitatis exiſtentia, & ſecunda in aduentu in carne. An in carnis exiſtentia prior, & ſecunda in reſurrectione. An in aduentu Redemptoris, & in aduentu iudicis. An olim in figura, & prænuntio, & nunc in rei exiſtentia extra cauſas. Ita his varie explicant Patres. Caiet. *in iterato aduentu introducit prædicendo primogenitum Dei Meſſiam, venit ad acci-*

accipiendam possessionem orbis terrarum, qui regnat in dextera maiestatis in excelsis. Theophil. hic ad illud, *exiui à Patre, & veni in mundum. Egressum istum introitum nominat Paulus, à metaphora hæreditatem adeuntium, vel possessionem assumentium.*

5 Theophilact. ad 1. Hebr. *Multifariam multisque modis, olim Deus loquens, in Prophetis, &c. Quid multifariam multisque modis?* Et respondet, *multis operibus, siue figuris visiones multiplicaui, in manibus Prophetarum assimilatus fui.* Ad eum modum, quo inturus coniugium, mittit primo sui imaginem, deinde venit persona. In figuris enim præsignabatur incarnatio, quę in persona exercebatur fine cõcupiscentia Redemptoris. Petra autem erat Christus, sicut illa percussa dedit laticẽ aquę, Christus flagellatus sanguinis pro omnibus, adhuc vt dilatauerit excellentiam ad Mariam instituendo corredemptricem, quatenus dedit ei humanitatẽ, qua redemptionem exercuit. imò & ad religiones muneri redimendi *captiuos* ex instituto addictas, vt pro liberando è carceribus captiuo relinquatur in carcere, & compedibus Redemptor. Vt in fornace Babilonis, vbi tres illi infantes vinculati, ille, qui introspectus est, & Rex vidit similem filio Dei, vt Redemptorem: *Ego video quatuor viros ambulantes in medio ignis, & species quarti similes filio Dei.* Dan. 3. vers. 92. Angelus qui descendit cum eis fecit medium fornacis, *quasi ventum roris flantem*, vers. 50. ita religio sus solatio reddit vincula, & carceres tollerabiles.

Quòd *Deus vult, quòd quilibet impleat, ita exactè leges sui status, quòd si fas sit anticipetur legis obseruatio ad initium vitæ. Displicet differri ad senectutem.* 6

1 Ex clausul. text. vbi legis Nazaræatus obseruantia præuenitur, nõ solũ ab infantia Sãsonis, sed ab initio sui esse cõceptę

2 Matth. 20. Pater familias sui officij munus exequij poterat, & quauis hora sicut de facto *exijt ad horam 9.* tamen non sibi visus satis dare, nisi illa die cum officio, non coniungeret exercitia, *in aurora.* Euseb. Emis. hic. *Patri familias, qui exijt primo mane conducere operarios.* Sic fit in regno cœlorum, sicut in vinea patris familias, in qua ipse primo mane exiens operarios conduxit, ipse officium non habet otiose, à prima luce, vt suo exemplo solicitos requirat operarios. Nam quantum temporis otiatur, tantundem dispendiat de fructibus.

3 Oleaster ad illud Genes. 2. *Posuit in paradiso voluptatis, vt coleret, & custodiret.* Non vult hominem seruum otiari, nouerat quota mala docuit otiosi-

tas, in qua se ipsum cum tota posteritate damnauit. *In quo duo nobis necessaria, vt bortos qui vos ipsi sumus excolamus, & vt virtutes quas colimus custodiamus ab impetu*, furantium dæmonum.

4 Iosue 2. *Mulier abscondit viros*, exploratores Iericho, nec tradidit. Accipit incolumitatē suæ domus, si in fenestra qua dimisit, apprehēsum videret in in uasione funiculum coccineum ait textus vers. 21. *& illa dimittens eos appendit funiculum coccineum in fenestra*, non differt salutis priuilegium, cum non subito esset inuadenda ciuitas, *sapiens mulier* (inquit expositor) *non distulit*, vix est institutum insignum priuilegij, & cautionis periculi excidij imminentis, cum pēdet, vt exerceat. Nec patitur dilationes. *Nullum aptius* existimauit tempus, quam præsens, anticipauit cautionis exercitium, vt securius euaderet excidium.

Quòd *licet nutrire comā intonsam ad cultum rei giosum, non ad lasciuiā iuxta morem, aut corruptionem huius temporis.*

1 Ex clausu text. vbi si Samson alebat crines prolixos, & intonsos, in eo intendebat adferre signum Nazareæ obseruātiæ, non capitis lasciua ornamenta.

2 Apostolus 1. Corint. 11. *Vir si comam nutriat ignominia est illi, mulier verò si comam nutriat gloria est illi, quoniā capilli pro velamine dati sunt illi.* Qua autem ratione viro sit ignominiosum fœminæ verò gloriosū. Caiet. hic *infamiam sibi conciliat*, quia velamentum capitis indicat, nō esse caput fœminæ, fœmina autem dum cæsarie velat caput, & dum *orat velato capite* innuit quod sibi redundat in gloriam, esse sub potestate viri, habere caput virile à quo originē trahit à formatione, ille nutrit capilitium sibi ignominiā, fœmina verò in recognitionē religiosam sui capitis, quod illi vergitur in honorē, & laudem. Sarę Gen. 20. autē dedit Rex 300 siclos, vt esset *in velamen occuli rum, & in memoriam delicti, in virum illati, dum se liberam ab illius cōiugio*, de consilio mentita sororem ipsi Abrahæ, vt benè illi esset ob gratiam illius.

3 Absalon 2. Reg. 14. v. 21. legitur, *Vir non erat pulcher in omni Israel sicut Absalon*, pulchritudo autem præcipue expenditur ex capillitio, & cæsarie, vel à colore, aut pondere, cuius vt volunt Rabini erat studiosus, & quoniā prolixa erat vt singulis annis tonderetur, inquit textus, *Cæsaries grauabat caput eius*: item dicitur, quòd ponderabat *capillos capitis sui ducentis siclis*, vel quia vendebātur illo prætio. Vendebantur fęminis ad capillaturas, & orna-

men-

mentã, vel quia pondus daretur pro pondere ducentorum siclorum. Si aleret studio capillitiũ ad sustinendum galeæ pondus, vt insignes milites olim, vt ictus inimicorum impunè sustineret, non illi præsagiũ in bello aduersum: aſt ad lasciuiam pulchritudinem vanam, cupiditatem nimiam siclorum infaustũ, & exitiale. Chrisost. homil. in Psal. Ad 2 Reg. 18. *Adhæsit caput eius quærcui, &c. & mulus cui insederat pertransiuit*, dum parenti inferret bellum. Spectaculum admirabile, ex pilorum coma à coma arboris tenebatur, & coma tenebat coma tyranum, vbi diadema patris gestare contendebat. Et tom. 1. in Psal. 7. asſignat causam, imô & traiectionis *trium lanceārum* intentum parricidium, *Profuit quidem coma, pro ligno arbor extitit.* Deus autem tulit sententiã. *In verticem ipsius iniquitas eius descendet.* Mystice glosſa. Arbor Absſalon significat patibulũ Gehennę. Abiit Absſalones huius temporis, & Sãsones cesareatos simili pœna in furca orci æternaliter suspendantur.

4 Magdalena Lucæ 7. *Ecce mulier in ciuitate peccatrix. Lachrimis, &c.* & capillis tergebat, cum solutis crinibus, sine libinoso ornamento incomptis nõ crispatis, pro linteo tergens pla cidior Deo. Remissionem pec catorum impetrat. Hier. epist. ad Furiam loquitur de Magdalena. *Meretrix baptizata lachrimis, quanto fœdior, tanto pulchrior.* Nec mirum, ante crines plexuit ad laqueandos amasios, nunc soluit ad pietatem exercẽdam, & reuerentiam pedibus Christi. Illi superflua naturæ, Christi pedibus necessaria ad pietatem vt illis aptetur illud Cant. 7. *Coma capitis tui sicut purpura Regis iuncta canalibus*, lachrimarum.

5 Cantic. 4. *Vulnerasti cor in vno oculorum, & in vno crine colli tui*, originales Hebræi, & Græci, *in vno ornamento colli tui.* Ac si in fœmina superfluant ad ornatum tot multitudines capillorum naturalium, & adiunctorum aliarum. Quo temperari, & moderari debent tot, tanti, ac prætiosi adinuenti splendentes vermiculati, tintinabula ad ornatum.

Quòd *Angelorum custodia innumeras vtilitates, & protectiones affert hominibus.*

1 Ex clauſ. text. vbi ab Angelo Gabriele sub viri specie nuntiatur conceptio, qui & comittatur discursu vitæ, & impellit ad egregia facinora, ab hostibus protegit, & tandẽ illustri morte in victoria, & triumpho ducit ad alteram vitam. Ita Angelus custos cum sibi commisſo.

2 Exod. 13. vers. 2. *Ecce ego mittam Angelũ meũ qui præcedat in via, & introducat in lo. ũ, quem*

præparaui, &c. Hæc non Deus se solo, licet dicatur *est nomen meũ in illo*, quia nomen gerit Regis repræsentatiue, vice Rex, & Por rex. Nec Moyses, licet dux ante signanus populi in terram promissam, sed verè Angelus Michael præses militiæ exercitus Hebræorum, qui præibat in columna nubis per diem, & ignis per noctem. Qui sicut olim præfuit synagogæ Iudæorum, nunc Ecclesiæ Christianorum. Huius Angeli custodis officia quinque præcipua. Primum est præcedet te. Secundum custodiet in via. Tertium introducet in locum, quem præparaui, terram promissam Chanaam. Quartum non dimittet cum peccaueris. Quintum est nomen meum in illo. Hæc applicari possunt Angelo custodi, cuiusuis hominis, qui à natiuitate datur in custodiam, & in vita cõmittatur, in morte, in purpatorio, &c. vsque dum introducat in terram promissam, scilicet in gloriam cœlestem.

Ecce ego mittam Angelum, non exprimitur nomen, & Matth. 18. de custode, *Angeli eorum*. Quòd sumit nomen ab officio custodiendi, & dicitur custos, ac si esse, solùm habeat esse suæ custodiæ. Quæstio inter expositores, quo die ex 6. creationis, sunt Angeli creati? & dicunt primo sub nomine, *lucis* nec fit illorum memoria vsque ad sextã, quia vsque ad illã non erat creatus homo custodiendus, aut repellendus à paradisso. Introducitur repente. Possuit Seraphim, & gladium flammigerũ ad custodiendam viam ligni vitæ. *Primum officium est* præcedere in via, vt Angelus qui sub *columna nubis, & ignis præcedebat castra Israelitarum*, illuminans noctem, & viam per solitudines Exod. 14. & interposuit se inter castra Hebræorum, & Egyptiorum obtenebrans caligine, ne viderentur à Pharaonis exercitu. Similiter Raphael *ducit, & reducit Tobiam*, & à periculis pisces horrifici, & cæde dæmonis, cum coniuge in Patriam. *Secundum officium*, traducit per aquas baptismi immunem, & liberum à culpis, & submergit, & suffocat in aquis peccatũ, vt Exodi 14. *Traduxit populũ per aquas maris rubri*, & reduxit super eos, Egiptiosaquas maris, curr⁹ Pharaonis, & exercitus eius proiecit in mare. *Tertium officium* liberare ab inuasione peccatorum, vt defendit Danielem ab inuasione Leonum, *Conclusit ora Leonum*, ne illum deborarent Daniel 3. *Quartum officium*, tueri à periculis iustitiæ humanæ, iruentis in innocẽtes, vt Daniel 13. Angelus per Danielem innocentiam Sussanæ à senibus, prætoribus inuectã. *Quintum officium*, leuare afflictiones, & dare solamen, vt Daniel

niel 1. Angelus detulit prandium cum Abacuc, in famis leuamen, Dan. 14. *in lacu Leonũ. Sextum officium* impedire necem violentam, vt Genes. 22. Qui prohibuit Isaac violentam iugulationem, *ne extendas manum* supra puerum. *Septimum officiũ*, instruere de arte, & stilo lucrandi facultates ad transigendam vitam, vt Genes. 31. Angelus docuit Iacob illum modũ producendi fœtus, *vni colores, & discolores per virgas.* Ad transigendam vitam in familia in obsequio Dei. *Octauum officium*, reprehendere peccata commissa, & non dimittere impunè cũ offenditur Deus. Vt Angelus qui misit Eliam ad carpendũ Regem Ochoziam 4. Reg. 1. & minitandam pœnam mortis ob cultum, & reuerentiam Beelzebub. *Nonum officium*, reficere sacramẽtis suasu, & excellentiori Eucharistiæ, vt 3. Reg. 19. detulit *Eliæ subcinericium panem, & vas aquæ*, in quo vt erudite noster incognitus ad illud Psal. 81. *Cibauit eos ex adipe. Figuraliter fortificatus est ille magnus Pater noster Elias, de quo dicitur 3. Reg. 19. quòd cum surrexisset comedit, & bibit, &c.* Expetitum est vnũ ex argumentis, quibus conuictum est innominatum, & incognitum authorem, esse ordinis Carmelitarum, vt in præfatione, in editione iam cogniti, Fr. Michaelis Ayguani Bononiensis. *Decimum officium*, aperire, & reuelare Dei voluntatẽ, & præcepta, vt Angelus per Danielẽ Regi. Dan. 2. *Est Deus in cœlo reuelans mysteria*, visionẽ illã statutæ. Et innumera alia, vt Ioãni apparẽs in apocalypsi. *Vndecimũ officiũ*, medicari infirmitates corporales, vt *Tobiæ oculos*, & mira alia innumera. *Duodecimum officium*, reducere in collegium, & contubernium sanctorum fugitiuos, vt Genes. 16. *Reduxit Agar fugitiuam* ad familiam Saræ, heræ suæ obedientiam. Iosephum, Mariam, & Christum ab Egypto in patriam Nazareth. *Tertiũdecimum officium* solari in Agonia mortis constitutos, vt Matth. 22. Angelus *in agonia* calicis, & mortis repræsentatę confortatus est, non per ignoti ostensionem, sed à virilis Dei actione, & laude. Nobis aliter, & aliter. *Decimumquartũ officiũ*, inuigilare in sepulchro in diem resurrectionis defuncti cadauer, vt contigit Christo in sepulchro, visi enim sunt duo Angeli *vnus ad caput, & vnus ad pedes. Decimumquintum officium*, suis viribus, & instantijs quantum datum eripere ab incendio, & flamis æternis inferni, in cuius symbolo Genes. 19. *Angelus apprehendit manu Lot*, & suos, ne illo igne dimisso de cœlo in ciuitates, cum Sodomitis concremarentur. *Decimumsextum officium*, quantum in se est solari

igne

igne purgatorij detentos, & mitigare solatio, vt Daniel 3. illos tres pueros missos *in fornacem*, vt reducetur ignis voracitas ventus suauiter flans. *Decimum sextum officium*, indicare, insinuare, & dirigere in patriã cœlestem, vt in symbolo, Genes. 28. vidit Iacob. *Angelos ascendentes, & descendentes*, per schalam à terra pertingentem cœlum, & Dominum intentẽ schalę, quasi inuitans domo eę-lesti excasum à terrestri sui cõsanguinei abunculi. Hic verò à corpore sodali dimissæ animæ, quòd indicatur illis, & introduset in locum, quem præparaui, ibi terram promissam, hic patriam cœlestem.

Quòd *non sunt admittenda veneraciones, & plausus supra dignitatẽ, & merita, sed moderata pro exigentia dignitatis, & meritorum, repulsis adulationibus.*

2 Ex clauſ. text. vbi Angelus apparens, vir dicitur, & licet nomẽ eius esset mirabile ratione Dei, cuius gerebat personam, respuit tamen oblationes, & sacrificia soli Deo congrua.

2 Ex eo, quod historia 2. Reg. 1. dicit de illo viro Amalecita, qui casu venit, vbi Saul erat occisus, cum armigero. Et vt gratiam Dauidis adulatione aucuparet, fixit se Dauidis hostem occidisse, & ait, *& tuli Diadema, quod erat in capite eius, & armillam de brachio illius, & attuli ad te Dominum meum huc.* Verũ, qui pro nuncio sperabat recipere mercedem, sicut qui occidit Abner virum inoxium in domo, non solùm excutitur verbis accerbis, sed luit dignas pœnas indilate, *gladio mortuus est.* Cum autem PP. Theodoret. Eucherius, ex quibus Abulens. mirantur de inæqualitate mercedis afferenti coronam Regis inimici, dicuntquè repulisse, quia tulit, vt lenocinio gratiam Regis aucuparet, quasi regalem aliã coronã supra suã expetijsset, & blandiri optaret ineptè, irreuerentia Regis Saul.

3 Armatur Dauid ad pugnam, cum Philistęo in campũ, in Castra. 1. Reg. 17. Armis æquæstribus Saul induitur, *cœpit tentare, an sic armatus posset incedere*, & inueniens experientia se potius impeditũ, repulit arma militaria, dicens, quia *non possum sic incedere, quia vsum non habeo.* Accepit tamen sibi accõmodata, pastoralia, fundam, baculum, peram pastoralẽ, quinque lapides, &c. ò incauti adolescentis temeritas ad tantũ prælium inermis. O capacitas potius, inquit Abulens. ibidem, *non deseruit baculum pasteralem ad pugnam, quia semper habere solitus erat.* Tu solitas susci pe vrbanitates, repelle extraordinarias, & supremas adulationes, quib' nil vtilitatis, & fructus nisi inanitas, & vanagloria.

4 Matth. c. 19. Accessit ad Iesum ille vir verbis adulationis exterioris *Magister bone, quid faciam, &c.* auscultat verba Christus, abijcit, & repellit interrogationem, ac stultam, cum instituere tur ad vitam æternam. *Quid me vocas bonum, nemo bonus nisi solus Deus.* Fuit ne sine proposito, extra chorum? non est eadē Dei Patris, & Christi diuinitas? Hilarius hic. *Nomine bonitatis abstinuit, cui sit necesse impia punire. Non quod bonus non esset, sed cū grauæ seueritate iudex esset venturus. Soli Patri reseruans qui omne iudicium dedit filio.* Quòd si inquirentis de salute adulationē repellit, quid tentantis? *Magister scimus, quia verax es, & viam Dei in veritate doces, licet tributū dare Cæsari, an non?* Quos acerba repullit excusione. Matth. 22. *Quid me tentatis Hypocritæ,* qui aliud sensu, aliud verbis ostēditis. *Ostendite numisma census &c. cuius est hæc imago? Cæsaris. Reddite quæ sunt Cæsaris Cæsari, & quæ sunt Dei Deo.*

Quòd *Deus olim se ostendebat Magestuose sub velamētis Maiestatis, Angelis, Seraphinis, tronis, Triumphali curru, nunc verò in humilibus in præsapio in nuditate, panicalis, quibus ostendit maiestatis maiores splendores.* 9

1 Ex clauſ. text. vbi ostenditur in Angelo, & sub viri simulachro.

3 Daniel. 2. apparuit in somnis *illa statua grandis* (diuitana à Daniele) *caput ex auro*, &c. & varijs metallibus composita, sed *pedum pars fictilis* cap. 3. Rex ad sui regni amplititudinem, & suæ maiestatis celsitudinem, demonstrandam, iussit erigi alteram *statuam altissimam auream*, & iussit adorari à primatibus, & plæbeis, ad muficæ sonitus sub pœna iectionis in fornacem ignis. In quem missi sunt tres illi pueri renuentes dare cultum Dei. Theodor. *voluisse facere præstantiorem, vissa in summo in vilioribus materijs*, & pedum parte fictili, *& ita fecit auream*, in suæ maiestatis ostentationem. Chrisost. *Ecce Deus in auro non lucet*, & ita negatur, illi auro Dei ad oratio, satius in alijs inferioribus metallis se ostenderet, vt facies olim in auricalchi, satius se ostenderet in terra, aut pede fictili, si se vellet ostendere.

3 Exodi 32. *Fac nobis Deos, qui nos præcedant.* Quibus Aaron *Tollite inaures aureas*, &c. & opere fusorio fecit ex eis vitulum conflatilem, & dixerunt: *hi sunt Dij tui, qui te eduxerunt de terra Ægypti*, & obtulerunt hostias, & holocausta. Meritò *videt* Tertul. *aureos Deos colitis, quos vectigales habetis, & ponitis sub hasta.* Deus enim non suæ excellētiæ maiestatatē ostēderet in auro, vt Reges terræ.

4 S. Prosper ad illud Apostoli 2. ad Philip. *Qui cum in forma Dei esset, &c. semetipsum exinanit formam serui accipiens, in similitudinem hominum factus, & habitu inuentus, vt homo. Propter, quod Deus exaltauit illum, &c. flectatur. c.t. & infer.* in corpusculo pueri, & paniculis se ostendere intēdit maiestas Dei. Vtique aptè. *Rex Israel mutauit habitum vt capi posset.*

5 Deus voluit Eliæ parenti ostendere magnitudinē suam, maiestatem. 4. Reg. 19. in spelunca Oreb. *Quid hic agis Elia?* & ille *zelo zelatus sum, &c.* & *quærunt animam meam*: & ait: *egredere*, sta in monte coram Domino, *& ecce Deus transit, &c.* in quo se illi ostendit? non in grandi spiritu subuertente montes, *non in ignis commotione, sed in sibilo aurę tenuis*, & pallio pelicęo auscultat Deum. *Quid hic agis Elia?* & ille *zelo zelatus sum.* In illis se illi ostentauit Dei præsentia, & magnifica gloria.

Quod *Deus est origo fontalis vitæ, & ineptum est à vita timere mortem, nisi ex indiscreta culpa.* 10

1 Ex clauſ. text. vbi ineptè parens Samsonis ex visione, aut apparitione Dei concipit timorem mortis, cum ex vita Dei immortali apparente, ineptę: ex vita mortali propria eius timeri posset, quæ ex limitatione, & mortalitate annexa, in dies consummente (vt candelam flama) rationabilius timeri deberet, quàm ex vita fontali. Vnde hauritur, pereniter scaturiente, vitæ nostræ aqua, in qua viuimus, mouemur, & sumus.

2 Genes. 2. *Formauit igitur Dominus Deus hominem de limo terræ, & inspirauit in eum spiraculum vitæ, & factus est homo in animam viuentem.* Ex puluere inani mi formatur, & habenti halitum vitalem, dicitur quod *puluis es*, inde igitur timeri deberet mors, quam vita mortalis sibi adiunctam habet, quàm ex præsentia Dei. Quæ auram insuflauit vitalem, vitę fons immortalis, & perenis, quæ non nouit occasum. Athanas. in Caten. ad Lucæ 1. *Ex quo audiuit Adam terra es, & in terram ibis, mori, & corrumpi cępit corpus eius.* Vnde in parte corporis, ex qua habuit esse, habet non esse, terra labilis, anima autem vitam præstans, sed finitam, limitatā, nō immortalem, & perennem, sed mortalem, vnione viuit, solutione nexus moritur.

3 Daniel 3. Rex, *vidit in fornace* Babylonis *tres pueros illæsos*, & alium inter eos, *similem filio Dei*, & miratur in pulueres, & cineres, non redactos, potius redditum ignem ventum aura suauiter flantem. Quid mirum? vitam mortalem ali flatibus Dei? & eius præsentia, & red-

di rediuiuam, & vires ignis mortiferas reddi auras vitales, *non tetigit eos ignis*, neque contriſtauit.

4 Ezech. 1. Apparuit *viſio illa currus gloriæ Dei*, quid rigatus aligeris, ſacratis animalibus, oculatis vndique, varijs facicbus aſpectabilibus vehiculantibus diuinam Dei Maieſtatem. *Quaſi aſpectus hominis deſuper*, ingenti ſonitu alarum per crepante, motu in tumultu, & fragore rotarum. Non mirum animalia animata, ita clangore perſonare, ſed vnde in inanimatis rotis ſerpentibus, & rotantibus ſuper terram? *Spiritus vitæ erat in rotis*, à præſentia Maieſtatis Dei in Trono deribatus, ad eius vocem *ibant, reuertebantur, volitabant, aut ſubmittebant alas ſuas*. Vt ab illo ſpiritus vitales diffunderentur in omnes, ſicut à Sole radij ſolares illuſtrantes omnia. *Solem ſuum facit ortri ſuper bonos, & malos*, vt fugiat nullus ſplendores eius, niſi opacitate ſua ſtudeat caliginari.

Quòd *Apparitiones Angelorum, quia inuſitatæ turbant, ſed iſtis afferunt commoda, peccatoribus ſupplicia.* 10

1 Ex clauſ. text. vbi apparitio Angeli parentibus debotis attulit nuntium infantis naſciturj, & liberationis populi in adultiori ætate.

2 Rex Saul mentito habitu adiuit Phytonifam 1. Reg. 28. *vt ſuſcitaret arte*, & exorciſmis magicis *Prophetam Domini Samuelem*, vt prænuntiaret euentum belli. Cum autem vidiſſet mulier Samuelem *exclamauit voce magna*, & rogante Rege. *Qua liseſt forma eius?* reſpondit *vir ſenex aſcendit, & ipſe amictus eſt pallio*. Si erat aſſueta nocturnis apparitionibus, & intendebat defunctum reſuſcitari, quomodo expaueſcit, vt extollat vocé, cum apparet ſenex venerabilis, & amictus pallio? ſi appareret horrifica viſio alicui⁹ damnati, cũ catenarũ ſtrepore, flammis circumſeptus, non mirum excitari horrorem. Sed aptè quidem, apparitio enim adhuc hominis ſancti à noſtro communi modo viuendi tam aliena, apta eſt excitare tremorem, vel quia præuenit incantationes, & apparuit, non ita citò ſperatus, vt placuit Cornelio hic. Licet Abulenſ. & alij. Exclamaſſe dicant, quia timuit de vita ob magiam a Saule prohibitam, eo cognita. Verum iam verſ. 10. iurauerat Saul, nil ob id mali euenturum. De raris autem immutationibus viuorum, ob apparitiones defunctorum, plenæ ſunt hiſtoriæ, & late Tyræus de apparitionibus damnatorum.

3 Matth. 16. *Angelus Domini deſcendit de cælo, & reuoluit lapidem* ſepulchri Chriſti, à mortuis

tuis resurgentis, & cum viderent Angelum sub iuuenis specie, *& cooperium stolla candida ob stupuerunt*, vt opus esset ab illo quietari. *nollite expauescere.* Sed quid de fœminis meticulosis in quit hic Eusebius Emisen. *Si veri milites exterriti sint, custodes, & facti velut mortui*, & cum clamarent ad Principes in ciuitate dederunt eis pecuniam copiosam, vt dicerent discipulos abstulisse.

4 Act. 12. Angelus apparet rutilans Petro vincto, *inter duos milites, catenis duabus*, & cum esset excitatus, & eductus è carcere, & in vico recessisset Angelus, expergefactus *existimabat se vissum videre*, ac si esset alienatus à se, nam *reuersus in se dixit nunc scio, quia Deus per missum Angelum eripuisse*, adeò insolitæ visiones immutant videntes. Et ex insolito, discipuli putabant, quòd Christus ambulans super mare *esset Phantasma.* Imo assistentes Paulo *stabant stupentes, audientes sonitum vocis* factæ illi, *neminem videntes.* Hęc pro varijs immutationibus apparitionum adhuc Angelorum. De vtilitatibus illatis, bonis, & incommodis, malis, late supra, de custodia, & officijs Angelorom.

Quòd *educatio filiorũ debet disponi à parẽtibus, iuxta præscriptũ, præcepti, & legis diuinæ; non inclinationem parulorum.* 11

1 Ex clanſ. text. vbi imponitur nomen Samſom à parentibus, iuxta diuidam reuelationem, & ab vtero incipit educari, abstinens succo inebriante, adhuc in matre, iuxta Nazaræatum.

2 Genes. 30. vbi Angelus indicauit Iacob modum virgarum, quo familiæ suæ ditandæ consuleret, qui iam Labano tot annis consuluerat. *Tolleusque Iacob virgas populeas, &c.* posuitque *eas in canalibus, &c. vt greges ante oculos haberent virgas, & in aspectu earum conciperent.* Vnde fœtus edebantur, iuxta species quas præconcipiebant, albas, nigras, variegatas, &c. Oleaster hic. *Si industria vtaris, vt diteris nullum peccatũ, si abſit fraus, & dolus.* Si quæras, *an sit naturale, vt conciperent fœtus, quales habuit imagines, dum concipiunt. Puto, quod sic, non omnino necessario.* Tu verò imagines bonæ doctrinæ, virgæ, legis diuinæ obijce filijs in infantili ætate, vt bene morigeros mores concipiant, ne sinas appetitus sensibiles sequi impulsus.

3 Genes. 21. *Cumque creuisset puer* (Isaac) & ablactatus esset, &c. *Cumque vidisset Sara filium Agar Ægyptiæ ludentem cum Isaac filio suo, dixit ad Abraham, ejice ancillam, & filium eius*, causa non fuerunt iocalia paruulorum, sed docebat colere imagines idolorum. Oleaster hic. *Adolescens iuxta viam*

suam

Iuam ait sapiens, cum senuerit non recedit ab ea, ideo parentibus elaborandum est, vt non fiant pueros suos cum malis versari.

4. Proberb. 4. *Audite filij disciplinam Patris, vt sciatis prudentiam* consulit Salomon. *Nam, & ego fui filius, & coram matre mea, & docebat me, atque dicebat, possidе sapientiam possidе prudētiam,* &c. principiū sapiētiæ possidе, & arripe illam, *& exaltabit te.* Ita Deus Matris doctrinam, sua infusa sapientia decorauit.

Quōd *nomen Christiani, debet respondere operibus, & opera instituto Christiano.* 11

1 Ex clauſ. text. vbi abinitio imponitur nomen Nazaræus, & abstinentiæ à vino, & alijs, & intonſa cōma, conformis est instituto Nazaræatus.

2 Matth. 25. Parabola talentorum, *vni dedit quinque talenta, alij duo, alij vnum,* &c. Eucumen. hic. *Acceptimus talentum fidei, non referimus lucrum bonorum operum, veluti infideles serui puniemur.* Imo pluſquam, nam vertitur fides in damnabiliorem condemnationem.

3 Bernard. ſerm. 24. in Cant. ad Iacobi 2. *Fides sine operibus mortua est, sicut corpus sine anima mortuum est,* ſic & fides ſine operibus mortua eſt. *Fidem tuam* (inquit) *dilectio animat, probat operatio,* ne ſit Chriſtianus, vt homo pictus, vt ſimulachrum gentium. Quod *os habet, & non loquitur, oculos, & non videt, pedes & non ambulat,* neque eſt ſpiritus in ore ipſorum, aut ſicut pictura æquitis bellicoſiſſimi, & validiſſimi (Cid, Rui, Diaz) euaginato gladio ſupra ceruices Maurorum, illato nullo ictu, aut abciſſa ceruice, aërem verberans. Ob id Apoſtolus 1. corint. 9. *Ego ſic pugno, non quaſi aërem verberans, ſed caſtigo corpus meum,* &c. inimicum animę, quod affligi, & mortificari debet. Neſis Chriſtianus, aut Religioſus habitu, aut titulo annulari, ſed exercitio, & operibus.

4 Iacob 2. *Quid proderit fratres mei, ſi fidem quis dicat ſe habere, opera autem non habet, numquid poterit fides ſaluare eum? & oſtende mihi fidem ex operibus.* Saluian. t. 4. Biblioth. 4. de prouid. *Boni teſtes ſunt actus, ſine quibus fides probari non poteſt.* Scholaſticus, qui non probat peregiſſe curſus, non admittitur ad gradus in vniuerſitate. Nec qui non perfecit actus, & concluſiones ad Lauream Doctoratus. Quamtumuis in matricula adſcriptus, & veſtem laciniosam geſtauerit. Ita nec fidelis ſine operibus ad gloriam.

5 Author imperfecti homil. 34. ad illud *Fides ſine operibus mortua eſt.* Ita Sicut defunctam habet, qui non habet opera, vt

ille

ille qui *accepit vnum talẽtum, & posuit in sudario*, vt in mortaja, *& ille ens fodit in terram*, & inclusit, vt defunctum in sepultura. Hic in die iudicij audit *serue nequam. Vt quid mittitur* (inquit) *in tenebras exteriores? quia perdidit talẽtum* (fidei) *neutiquã: sed quia habens habuit otiosum*, & nil operibus lucratus est.

Quòd *vult Deus vnumquodque nomi nari, & tractari iuxta id, quòd in se est, non iuxta id, quod quilibet pro arbitrio suæ voluntatis inclinatur.*

1 Exclauſ.text. vbi Samſon ab vtero Nazaræus, aſſueuit ab ſtinentijs à vino, & alijs, adhuc ex vtero matris, cui præcipitur abſtinentia ab illis, vt nec ſuggat infans prohitum ſuccum inſtatu.

2 Iſaiæ 7. *Vocabitur nomen eius Emanuel, butyrum, & mel comedet, vt &c.* Vatab. *pro consuetudine infantium, licet præstet illis* educabitur papilis illorum pro ætate.

3 Caiet. ad illud ad Galat. 4. *Quanto tempore hæres paruulus est, &c. sed sub tutoribus, & actoribus est, vsque*, &c. *Affert metaphoram*, ſatis manifeſtam, in puſilis minoris ætatis, qui relinquuntur à Patre ſub commiſarijs, quos tutores appellamus, procuratoribus, ac diſpenſatoribus rei familiaris, *cum sit Dominus omnium*, vt pro ætate haberet tutorem, vt ſolent infantes ad latus ad eruditionem pedagogos, ne diſcrepent ab honeſto, & nobili.

4 Caiet. ad 1. corint. 11. *Cum essem paruulus loquebar, vt paruulus, cogitabam, vt paruulus, cum autem factus sum vir euacuaui, &c. Declarat rationem*, præſentis ſtatus, ex relatione ſtatus puerilis ad virilem.

5 Anſelm. ad Matth. 26 ad illud, *mitte gladium tuum in vaginam, &c.* reprehendit in Eccleſiaſtico, illud genus deffendendi Magiſtrum, cum alias actio exigebat gratitudinem. *Increpari meruit, quia sicut non conuenit Regibus, id quod pertinet ad stollas, sic nec Episcopis, quæ Regis sunt.* Non placet Eccleſiaſticus agens militiam. Quiſque ſui ſtatus exerceat cohærentia, nec altiora appetat, reijciat. Aman cupiebat adorationem Mardochæi, pluſquam ciuilem, Dauid paſtoritia exercitus, nõ admittit, ſed repellit arma Saulis æquæſtria, & ob id diſpares, vtriuſq; exitus. Idem pro fœminis. Ne vulgaribus ſint in optatis, ornamenta nobilium.

Quòd *fugiẽdi sunt aspectus, & collo quia cum femina eleganti, & venusta, nam vix angelica puritas euasit immunis.* 13

1 Exclauſ. text. vbi Samſon vir dicatus Nazaræatui vix vidit feminam Philiſtinam extranei inſtituti, cum expetiuit à parentibus in vxorem.

2 Lu-

2 Lucæ 1. *ingressus Angelus, Ave gratia plena, & ecce concipies in vtero, & paries filium.* Cum Angelo fides esset statim adhibenda vix euasit immunis ab interrogationibus, & replicationibus, & prolixitatibus fœminarum, sed ita Citò non credit, ne leuis corde haberetur. Ambros. ad *ne timeas*. Angelus apparet, & timet? ita prudenter. Apparet in figura adolescētis in cubili, & insperatus. *Trepidare* (inquit) virginum est, & ad omnes viri ingressus pauere, omnes viri afflatus vereri. Discant, & mulieres. Discant, & viri vereri aspectus, imò halitum fœminarum, est enim pestilentiæ inducens mortem.

3 Ambros. serm 39. allusione ad illa. *Mulier, quam dedisti mihi sociam dedit, & comedi.* Potuerat Adam inter delitias paradisi inconcussus stare, si Eua ibi non fuisset. Videte rem miram Diabolus, vbique insidiatur homini, sed vbi mulierem inuenit, vicit.

4 Lucæ 7. Magdalena in domo Pharisæi *osculabatur pedes eius & vnguento vngebat*, & murmurantibus, quod sinebat se tangi à muliere peccatrice, respōder, quòd *præuenit corpus in sepulturam*, ac si tactus illius esset præsagium mortis, & sepulturæ, ac si non posit tangere, quim sepeliat moribundum. Cum autem iam apareret illi vita glorioſa sub specie, & habitu hortulani, prohibet tangi. *Noli me tangere.* Ibi patitur, hic repellit, fœminę tactus ita. Ibi iam moribundus prope sepultur. m, hic iam viuus réijcit. *Quæris mortuum viuentem, tangere non mereris.* Quasi tactu inferat mortem.

5 Genes. 39. *Mulier per singulos dies molesta erat adolescenti.* Ioseph, & cum ipsa solicitaret, *dormi* mecum, incolumis ab ea non euasit, relicto pallio, diffamatus, & vinctus est.

Quòd *coniugia filiorum ex licentia parentum habent sibi connexos prosperos fines, illis inuitis infelices exitus.*

1 Ex claus. tex. vbi Samson à parentibus petijt, vt non solùm indulgerent licentiā, sed essent internuntij, qui peterent, *sibi in vxorem.*

2 Oleaster ad illud Genes. 2. *Aduxit eam ad Adam, vt videret quid vocaret ea.* Si assumitur excosta ita homini coniuncta, cur distans formatur, vt adduci, à Deo dicatur ad eius conspectū, an vt parentis adsit cōsensus ad coniugium cum Adamo? *colligo male fieri per nuntios, & inter absentes, derelinquit vir patrem suū, & matrem suam quantum ad cohabitationē*, & associationem, non quantum ad consilium, & assensum, & ita erunt amorconiugij, vt mulier sequatur virū caput, & deserat adhuc patriam,

vt Rachel, Lya, Rebecca, Ruth, viros peregrè domiciliantes.

3 Guilelm. ad Genes. 2. *Propter hanc relinquet homo Patrem, & matrem, & adhærebit, &c.* in sua incarnatione relinquit Patrem, *non per naturæ diuinæ separationẽ, sed humanæ assumptionem in vnitatem personæ* inseparabilem, non tamen sine Patris consensu hoc coniugium, qui misit filium suum in mundum eo fine.

4 Genes. 24. *Historia* de Abraham mittente seruum Eliezer sub iuramento internunciũ *ad accipiendam vxorem filio Isaac* ex natione sua. Et augurium, aut prognostricum, ex adolescentulis eam esse, quæ petenti potum dederit sibi, & camelis, vt fuit Rebecca, quæ acceptis inauræis renunciauit fratri, & introducto hospite, & aperta legatione coram parentibus, & fratre, & dato consensu, ex quo pẽdebat res, exigitur, & puellæ. En Rebecca coram se est *tolle eam, & proficiscere*, & sit vxor filij Domini tui. Et post parentum consensum vocemus puellam. *Non debet sine vtriusque consensu* coniugium fieri adhuc dato Parentum, & Eliezer internũcij. Vnde diuites lætos, & fœliciſsimos exitus habuit coniugium. Idem de Tobiæ Iunioris, ex consensu parentum fœlicem liberationem à Dæmone, regressum in Patrim, muneribus, & diuitijs onustum.

Quòd *coniugia inter sibi similes, & æquales nobilitate, & opibus, conseruant vinculũ pacis in familia, dissimilitudo verò & inæqualitas alit littes, & discordias.* 13

1 Ex clauſ. tex. vbi licet ordinariè assumi solerẽt ex eadẽ natione, & populo, hic ad introducendam intentionem diuinam petitur ex Philistæo.

2 Ex Genes. 2. *Hoc nunc os ex ossibus meis, & caro de carne mea.* Expendit Oleaster. *Quasi os, & carnem suam diligat*, vb paritas omnium strictior, inter idem, & se ipsum.

3 Genes. 2. *Non est bonum esse solum faciamus ei adiutorium simile sibi, Adæ verò, non inueniebatur.* Non Angelus supra ipsum, non bestia infra. *Tulit vnam de costis, &c. & ædificauit ex ea Euam*, & adduxit ad Adam, &c. Qui recognouit, sibi æqualem. *Debent esse matrimonia libera, non coacta, similiter debent inter pares fieri.* Nam si alter superet, aut nobilitate, aut diuitijs est incentiuum perpetuum iurgiorũ, & discordiarum in familia.

4 Oleaster ad Genes. 24. Abrahæ ad Eliezer. *Perges ad terram, & cognationem meam.* Vbi requirit eiusdem patriæ, & cognationis vxorem filio. *Ad monent vxorem esse diligendam, quam maiorum suorum mores probe noueris*, vt non esset cultus disparitas. Idem ibidem ad *Dominus benedixit Domino meo. Non possumus satis mira-*

mirari serui prudentiam, qualiter exaltat Dominum, ac si diceret si diuitias quæras ditissimus est in omni diuitiarum genere.

Quòd, *qui non quærit sed excipit occasiones tentationis, erit victor, licet inuassit sit Leo, Angelus, Deus.* 14

1 Ex claus. text. vbi inuadentem Leonem excipit Samson amplexu, & dilacerat victor.

2 Ambros. lib. de Ioseph. cap. 5. ad illud Genes. 39. *Mulier per singulos dies molesta erat adolescenti.* Tangit, & solicitat, quæ solicitari debebat; non senem, iam libidine defuncta, sed adolescentem, in quo incalescentes spiritus ebuliant, subseruientes libidini. Et in vrgenti discrimine, *reliquit pallium*, & euasit victor. Ita. Ideo quia ipse non se intromisit in illius venustæ cameram, sed officij sui studium, & propensio. *Commissum à Domino nequibat deserere ob sequium.* Incidit in tentationē, non quæsiuit, & ideo *labor illius non inanis in Domino.*

3 Dauid quæritur adolescentula 3. Reg. 1. *Quæ foueat eum, dormiatq; in sinu suo, & Rex non cognouit eam.* Adducitur Bersabe. *& concepit* de Rege. Quæ causa discriminis? 2. Reg. 11. *Requisiuit Rex, quæ esset mulier.* Quam vidit è solatio.

4 Aug. q. 11. vtriusque test. *Adtolle filium tuum, & tulit nocte*, inscia matre, cum autem eleuato euaginato gladio ad ictum Angelus prohibet *ne extendas, &c.* & euasit liber à periculo mortis, vouet Iepte, id quod primo occurret, reuenti cum victoria immolaturum Domino, filia virgo pulchra exilijt prima. Dolet intimo affectu ob votum, & tandē indiscretus in vouendo, & inhumanus in implendo adimit vitam filiæ, quæ in sacrificio est oblata. Quid quod Isaac euasit, & filia Iepte occiditur? *Abrahæ præceptum est, in eo introductus est Pater, & filius*, & ita in eo non excidit: *Iepte voluntarie se ingessit in votū, & filia in periculum incursu.*

5 Genes. 32. vbi Iacob euasit victor expugna nocturna Angeli, quia inuasus ab illo, *luctabatur, vsque mane. Si contra Deum fortis fuisti.*

Quòd *coniugia sunt adeò implicita difficultibus inaccessibilibus insuperabilibus, quod qui habet animū aggrediendi coniugium, simul habet ad superandos Leones.* 14

1 Ex claus. text. vbi Samsoni eunti ad sponsam inuasit Leo esuriens rugiens, ac si inauguraret difficultates in matrimonio.

2 Hieron. lib. 1. contra Iouin. ad 1. Corint. 7. *Solutus es ab vxore, noli quærere vxorem, si nupserit virgo non peccauit, tribulationem tamen carnis habebunt, &c.* in paradisso voluptatis coniu-

gij, tribulationes? ita. *Si in carne tribulatio in qua videbantur habere delitias, quid erit reliquum?*

3 Artemid. lib. 2. c 18. allusione ad *tollat crucem suam*. Pro eodem coniungi matrimonio, & crucifigi vxori Est enim crux viri *vxorem non habenti nuptias prædicere*, est idem ac prædicere crucifixionem, & idem dare cõiugem, ac dare crucem, in qua (sicut Christus ex sua) clamet ad Deum.

4 S. Basil. epist. 1. *Alligatus es vxori noli quærere solutionẽ, solutus es ab vxore, noli quærere vxorem.* Mirum quidem, si vinculum, non quærendum, nec optandum, solutio inquirenda, & optanda, sed neutrum! Caliginosa perplexitas. *Coniugio mancipatum, agmen curarum excipit, vna quæque die suam parit caliginem.* Inuadit coniugatum exercitus curarum, & quouis die est in caligine, & perplexitate. Si fœmina sit de formis, & sine sale in mensa, & contubernio fastidium, si venusta, & elegans eget vigili, custodia, vt vir in domo sit, vt in castro specula, an die aut nocte inuadant hostes: si inepta, & stulta molestũ, si discreta intelligens intolerabile interloquutorium. Si sterilis, & sine prole, viro optanti, prolem, & suæ domus nobilis maioratum angor, & mœstitia, si prolifera, & fecunda angit solicitudo in educatione, & enectione ad dignitates: si affabilis visitatio, & multitudo amicarum confluentium onus graue, si litigiosa inuisa est marito, cõ sanguineis, vicinis, concluditur tandem in cõiugio die singula, caliginosa perplexitas, vt ignoret, an incedat hac via, vel oppo sita.

Quòd *vita coniugatorum apparet iucunda, delectabilis, sed occultas innumeras anxietates, & amaritudines.* 14

1 Ex clauss. text. vbi Samsonis tot anxietates, & iniucunditates in matrimonio inuenit, vt diuerteret ab illius cohabitatione, vt iucundaretur de digressu ad virum alterum, vt de illius parentis, & fœminę combustione, non satiaretur vindicta, sed arripuerit vltiones ex philistinis.

2 Genes. 2. *Misit soporem in Adam, & tulit vnam de costis eius* ad fabricandam vxorem incipit homo diminui decosticari, & miraculo sopiri somno extatico, nam si naturali sentiret dolorem in euulsione costæ. Quid hoc opus est Domine? nunquid deest figulo lutum, aut eo vidente, vt opus sit soporem inducere? Ostendit, quam difficile sit ab homine aufferre, quod in eius cedit vtilitatem. Nam est beneficium

cum

cum onere ponderosissimo, non sinunt, sibi aufferri, quod sibi vtile est.

3 Ambros. ad illud Iob. 2. *Benedic Deo, & morere.* Iob *quasi vna destultis mulierib⁹ loquuta es, &c.* vbi expendi debet, quod Diabolus, vt S. Iobum acriter pungeret, tulit omnia sua bona, greges ouium, camelorum, domos, filios, & feminam vxorem reseruauit, ad leuamen? ad acerbiorem dolorem. *Sancto viro calide cuncta diripuit, sed valde calidius adiutricem suam mulierem reseruauit*, vt prouocaret ad desperationem iurgijs, incrementa dolorum maiora dedit, quo à charissima maius sperabatur leuamen.

4 Gaud. Brix. tom. 1. dom. 2. post epiph. in Biblioth. ad illud. *Vinum non habent*, quo Deipara filio fecit instantiam, quã vissus est repulisse asperitate illorum, *quid mihi, & tibi mulier?* & in occasione, vbi coniugiũ celebrabatur lætitia brebi temporis periodo duratura, vbi erat coniugium. *Ibi virtus lætitiæ defecerat, vbi vinum non habẽt, quoniã vitium lætificat cor.* Quid molestię non sit copiã? vbi vxor per singula instantia diei, iterum atque iterum repetit virò, illud fastidiosum verbum, vinum non habeat, promptuarium non habet necessaria, filij alimenta, vestes, famuli salaria, fœmina ornamenta, &c.

Quòd *cœlibes in præsenti vita carent coniugio amarissimo temporali, sed pro illo substituntur in altera vita delitiosissum, & æternum.* 15

1 Ex clauss. text. Samson in præsenti expertus onera matrimonij, in alia erit liber ab illis, sed animæ ibi Deus charissimus, & felicitans sponsus.

2 Apoc. 14. *Ecce agnus stabat supra montem Sion, & cum eo 144000. millia, habentes nomen eius scriptum in frontibus suis, & cantabant quasi canticum nouum, &c. Hi sunt qui cum mulieribus, non sunt coinquinati, virgines enim sunt, & sequuntur agnum quocumque ierit.* Vbi pro vxoribus, quibus in præsenti vita non sunt matrimonio coniuncti, datus est agnus spõsus, sunt enim eius nomini adscripti, & illum sequuntur, vt sponsa sponsum, cum stolis albis, & palmis, in manibus eorum.

3 Ambros. lib. 1. de virginitate alluss. *Ecce sponsus venit exite obviam ei* Matth. 25. parabola virginum *è cœlo accersiuit, quod imittaretur in terris, nec immerito viuendi vsum quæsiuit è cœlo, quæ sponsum sibi inuenit in cœlo* Moniales, & Virgines in præsenti vita carent sponso humano, nõ agno diuino, à cœlo venit idæa aut exemplar coniugij virginalis, hic carent sponso humano, habent fœminæ matronæ, sed in alia vita virgines habebunt, vbi matronæ carent vin-

culo coniugali, fœlicius inchoare hic spirituale coniugium, quod semper est in futuro duraturum.

4 Matth. 22. Christo prædicanti *resurrectionem mortuorum.* Objicitur difficultas de fœmina nupta septem viris, si est resurrectio, *cuius erit haec mulier ex* 7. quorum fuerat? Christus quietat inconueniens dicendo in præsenti vita, cum illa expirasse vincula coniugalia, & ita in futura liberam reddi fœminam à 7. viris, eo quòd in alia vita non sunt futura coniugia corporalia, *neque nubunt neque nubentur, sed erunt sicut Angeli Dei*, spirituales, qui non iunguntur vinculo corporali, bene spirituali cum agno. Vnde si impresenti sunt coniugia corporalia, non in futuro. Si autem non sint in cœlibe corporalia, erit spirituale, pro illo substitutum, vinculo perpetuo. Sponsa vocatur ad nuptias, veni sponsa. Hortus conclusus, fons signatus, Sygillo virginitatis.

Quòd *secreta Dei non sunt vulgariter manifestanda.* 15

1 Ex clauſ. text. Samson noluit reuelare parentibus adhuc secretum Leonicidij.

2 Ex 1. Corint. 2. *Audiuit arcana verba, quæ non licet homini loqui.* Fidet Deus secreta amori Apostoli sarius capacitati, & sagacitati illius, quia expendit arcana sygillasse labia silentio, vt refert Plutarchus Alexandrum viro sibi priuato, qui à tergo epistolæ secreta peruasit, annullo *Ephestioni labia, Sygillo annulli clausisse.*

3 Imperfectus in Matth. 17 homil. 35. *Assumpsit secreto discipulos, vt secretum* suæ proximæ passionis aperiret. Reiectis fœminis, quæ amore insequebãtur à longe. *Cur non fœminis debetis, sed viris Apostolis?* reuelatio secreti est præmium, non tam meriti, quam virilitatis. Tulit solos Apostolos, & mortis suæ annuntiauit mysterium, quia *semper pretiosior Thesaurus in melioribus vasis includitur.*

4 Imperf. ibidem ad idem *assumpsit secretò.* Vbi segregat discipulos à turba, declinauit ab itinere seorsim, forsitam, sciens quòd ventura esset *mater filiorum Zebedæi, vt peterent*, quæ petierunt. Sed nec aperte aperuit, solum insinuauit in repulsa petitionis. *Potestis bibere calicem, quem ego? &c.* Nam animus mulieris molis est, & in tali negotio citius excitatur ad lachrimas, & ita si non verbis, lachrimis publicaret mysteria dolorosa. Quid gloriosa? post reuelatum Apostolis transfigurationis, instruit silentium. *Visionem nemini dixeritis*, &c. vbi acriter reprehendendæ sunt fœminæ adhuc debotæ, quæ leuitate inanis gloriæ, cupiditate, aut forte luci, vera vel imagina-

Maria in oratione accidentia, alijs præcipuè Principissis, & nobilibus euulgant, vt omnia captent.

Quod *Deo referēda in eius gloriam, non solùm, quæ immediate ab eo sunt gesta, sed etiam quæ eius ope nostra cooperatione sunt patrata.* 15

1 Ex clauſ. text. vbi refert in Dei gloriā, quod in virtute conceſſæ virtutis ſuis brachijs dilaniauit Leonem.

2 Oleaſter ad Geneſ. 4. *Poſſedi hominem per Deum*, Eua ait quando natus eſt ex ipſa Cain. Si eſt filius à te genitus, & naturæ humanæ fructus, cur refers in Dei beneficentiam? *Non conſideranit filium beneficium eſſe naturæ*, ſed totum in Deum refert, ac ſi nullæ partes eſſent naturæ. Vides mulierem gratiſsimam? filium in Deum cum gratiarum actione referebat.

3 Ioſephus 1. antiquit ad 1. Regum 21. facit mentionem, Dauid dixit ad Achimelec. *Si habes hic ad manum haſtam, aut gladium? quia gladium meum, & arma mea, non tuli mecum*, & dixit Sacerdos, *Ecce hic gladius Goliat, quem percuſiſtis in valle therebinti*, Dauid, non eſt huic alter ſimilis, da mihi eum. Hoc gladium non ne tuum iure belli, cur petis dono? *Suſpenderat iam in templo*, vt victoriam illam, non ſibi, ſed Deo tribuēdam fateretur, & ita quod ſuum olim, nunc vt Dei donū ſuſcepit.

4 Rupert. lib. 4. ad Apocalyp. 4. *Adorabant viuentem in ſecula ſeculorum, mittentes coronas ſuas ante tronum Domini Dei ſui.* Si ſuas cur agnoſcitur ſupra Dominus, ipſorum? ius ferri ad Dominium Domini pertinet. *Conſiderantes, quod* non ſuis meritis, ſed gratia coronas aſſequuti, & ita non gloriantur de proprio, quaſi non acceperint.

Quòd *fugienda eſt innanis gloria ex noſtris facinoribus intenta, & quæ ex nobis cum Deo, & quæ ex Deo nobiſcum omnia in gloriam Dei referenda.* 15

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon, ſilētio cœlat lenocidium, ſubtrahens ab innani laude hominum, vt plenius referat in Deum, id quod Dei virtus, cum brachijs dilacerantibus Leonem erat operata.

2 Oleaſter ad Geneſ. 1. *terra erat inanis, & vacua, & tenebræ erant ſuper faciem abiſsi, & Spiritus Domini ferebatur ſuper aquas.* Sunt peccatores *vani, ineptiad ad finem, ad quem ſunt creati, vt in eis nil appareat*, quod gloriæ, aptum eſſe videatur. Terra qualis à principio fuit, vana, vacua, & tenebroſa, ſed eſt ſpiritus Dei, qui ex informi formoſam, ex vana vtilem, ex vacua implet virtutibus. Hic docemur qualia ſint ſine ſpi-

ritu, & luce diuina.

3 Historia 1. Reg. 17. De gigante occisio à Dauide *lapide* à funda dimisso. *Assumens autem Dauid caput Philistæi attulit illud in Hierusalem, arma verò eius posuit in tabernaculo.* Quæri solet, cur non appendit in templo? Et lapidem, qui ictum fecit, fundam, quæ dedit impulsum, & ponitur gladium, quod truncauit caput? Lapis, qui innauit, & interfecit, appendi potius debebat, aut saltim funda, quæ virtutem dedit impulsus, gladium, quod defunctum iam truncauit, appendi non deberet, sine innani gloria giganticidij, à lapide, & funda illati. Ita. Sed nec lapis, nec funda, quia intulerunt mortem; cum strepitu, & fragore innani; bene gladium, quod truncauit, & in occulto faginæ inclusus fuit. Ex quibus reprehendi debent omnes affectantes gloriam, supra nobilitatem, virtutem, litteras, &c. & præsius qui illis veris vacui, solis fictis, & præsumptis innanem gloriam aucupantur.

Quòd *Dæmonis inuasiones primo congressu sunt funditus extinguendæ, vt non timeatur vlterius periculũ inuasionis.* 16

1 Ex claus. text. vbi Samson inuadentem Leonem primo congressu, non solum fugauit, vt iterum posset reddire, sed dilacerauit, occidit vltimõ, vt apte Rupert. lib cap. 2. de victoria verb. Dei applicat Christo, qui repulit Diabolum Leonem inuadentem primo congressu, sibi Leonem occurrentem discerpit.

2 Historia Iudicum 16. *Si rasum fuerit caput meum, recedet à me fortitudo mea, & deficiam, eroque sicut cæteri homines* Meretrix vocauit tonsorem, & rassit septem crines eius. Et amisit vires ad breue tempus, quo iterum excreuerunt, & redierunt vires, & perfractis columnis templi se, & innameros interfecit, quod non egisset, si nobacula, quæ rassit pilos, abscinderet gutur illius. Hic PP. moralizant Quòd inimicus *non est debitandus, ad tempus præsens sed occidendus in præsens, & futurum.* Nobacula acuta *forticulam, dum radit pilos fini*, reddit de præsenti inuenem, sed non in futurum. Nam redente pilo redijt senecta.

3 Iudic 13. Historia Ciuitate Bethuliæ obsessa ab Holoferne, & exercitu, fœmina Iudic descendit in castra, & illo dormente, implorato diuino auxilio, cum lachrimis, *confirma me Deus in hac hora* accessit, & pugionem eius exoluit, *& apprehendit comam, & abscidit caput eius*, & regressa fuit in Bethuliam. In prælium autem descendentes Bethulienses, prouocantes ad prælium, au-

aufugiunt ad Principem militiæ, & dum existimant sopitum, dormientem, manent imperterriti: dum autem omnis *exercitus decollatum audissent, tremore agitati fugæ præsidium sumunt*, insequuntur Bethulienses, colligunt spolia, & omnino suis terminis fugant. Hic PP. moralicantes. Diabolum, & exercitus vitiorum, non vt cumque repelli, sed funditus illum occidi, ita fugari à terminis.

4 Dan. 4 Rex Nabuchodonosor *Videbam, & ecce arbor in medio terræ magna arbor, &c. pertingens cœlos, & subtus eam habitabant animalia, & bestiæ, & in ramis volucres cœli, &c.* Et ecce vigil sanctus descendit, & clamauit *præcidite ramos, excutite folia, dispergite fructum, fugiant bestiæ, & volucres succidite arborem* &c. PP. moralizant *securis ad radicem*, deberet pelli occasionis peccandi. Nam parum est ignire meretricis papiros, excutere imaginem, opus est omnino, *securi ad radicem, ad truncum*, inquirere securitatem, radicitus euellere peccandi occasionem præsentem, & in futurum. Eusseb. emiss. serm. de S. Laur. de filiculnea infructuosa, *succide, vt quid terram occupat, tales sunt multæ infructuosæ, quæ excindentur, & in ignem mittentur.*

Quòd *angeli obsequium, tunc magis placet Deo, cum incumbit vtilius saluti, & vtilitati hominũ.* 16

1 Ex clauſ. text. vbi non solum Angelus iuuat Samsonem ad Leonicidium, sed adducit examen apum ad cadauer, vt inde eliciat fauum melis.

2 Historia Exod. 32. vbi visa populi Idolatria ad iracundiã prouocatus Deus dicit Moysi. *Dimitte me vt irascatur furor meus.* Oleaster. *Quis te ligauit Deus? ligatum habent sancti*, vt nõ puniat, nisi ipsi permittant, & se solui rogit, vt ligetur. Cur Domine irascitur furor tuus contra populum tuum, quem eduxisti de terra Egypti, ne quæso dicant Egyptij calide eduxit eos. *Tu vocas populum meum vt perdas, ego tuum, vt parcas*, Tu opus liberationis in me transfers, ego verò in te refero. Ecce Dominus in columna nubis, & igne Deus officiũ gessit custodis, id imponit Moysi, & dũ replicas, & instantiãs pro populo allegat, qua nollet Deus magis iracundari, placatur, ex officio custodis, quem gerebat, & eundem delegat in Moysem vt custodem agat. Idem ad illud, *ecce Angelus meus præcedet te.* Inquit, quoniam ducatum Dei à se reiecerant, subrogatur vicarius, Angelus. Ita placet officiũ custodis, vt nequeat deseri per se, aut per vicarios, homines, aut Angelos.

3 Genes. 28. Iacob *Vidit quæ in somnis scalam stantem super ter-*

terram Angelos quoque Dei ascendentes, & descendentes per eam, & Dominum innitentem scalæ, & dicentem ego sum Dominus Ab abam Patris sui, &c. Dormienti excubias agunt Angeli Deus ab hostio cœli benigne audit obsequia ascendentium, & descentium, aligera solicitudine. Oleaster hic. *Vigilat super nos illa oculus diuinæ prouidentiæ* mittens, & remittens illos administratorios spiritus, qui nos custodiant in omnibus vijs nostris inceſſanter.

4 Lucæ 10. *Homo quidam descendens ab Hierusalem incidit in latrones, & despoliauerunt semiuiuo relicto*, transiere plures, sacerdotes, leuitæ, &c. & dimisserunt in campo, expositum in elementijs, Samaritanus verò ligauit vulnera, duxit, & posſuit in custodia stabularij, *curã illius habe, &c. Quis videtur proximus?* qui custos illius, & custodem stipẽdiauit. Ad hæc Theophilact. *Docemur igitur per parabolam, vt simus parati ad misericordiam proximi, qui indiget*, nostro subsidio, ac nostra custodia, quã nostræ naturæ proximi præstãt Angeli naturæ hominum, è paradisso sauciatæ. Ille enim per placuit, qui custodiæ maiora beneficia exhibuit. *Vide supra* in discursu de Angelorum officijs varia, illi exhibita, grata Deo, quo vtiliora.

Quòd *Deus constituit vitam in mortificatione laborum, & in amaritudine mel dulce gloriæ.* 16

1 Ex clauſ. text. vbi in ore fœtidisſimo, & corpore ferocisſimo Leonis gignitur mel dulce, & honor, ac gloria Samsonis apud homines.

2 Apostolus ad Colosens. 3. *Mortui estis, & vita vestra abscondita est cum Christo in Deo, cum autem Christus apparuerit vita vestra, tunc, & vos apparebitis cum ipso in gloria. Mortificate, ergo membra vestra, quæ sunt super terram.* Vbi Apostolus inducit figuram hominis mortificati, demiſſis oculis, cruzatis brachijs, habitu aspero, facie pallida, & macilento corpore, osibus sola pelle coopertis. Hic interius viuit Deo, exterius appareret mortificatus, quasi mortuus. Qui autem cum Crhistus apparuerit ad iudicandum, apparebit virens, & floridè viuus. Caiet. hic. *Effectum apparitionis in iuditio significat. Apparebit tunc vi uificans nos in corpore, vitæ immortali.* Apte id significari post in arbore tempore hyemis, sine fronde, flore, fructu, apparet, quasi mortua, sed interius vita gaudet. Irradiante primo vere emittit frondes flores, & fructus, illuceſcente sole. Ita huic accommoda viro mortificato in spe futuræ gloriæ. *Mortificatos quidem carne viuificatos autem spiritu.* Vt visi sint oculis, insipientium mori, cum sint

in

in interiori pace.

3 Apostolus 1. Corint. 15. alludit ad illud Ioann. 12. *Nisi granum frumenti, &c. si autem mortuum fuerit multum fructum affert.* Vbi probat futuram resurrectionē mortuorū. *Quomodo resurgunt mortui? insipiens tu quod seminas, non vivificatur nisi prius moriatur, seminatur in corruptione, esurget in incorruptione, seminatur in ignobilitate, resurget in gloria*, Euseb. emiss. in f. s. Laur. ad dictum Apostoli, *constat quod frumenti granum, si in arca seruetur non crescit*, si seminetur, & in terra moriatur, multum fructum affert. Caiet. hic. *Quidam dixerunt, ex quibus apparuit Christus in glorioso corpore*, ad fidem futuræ resurrectionis spectat, quod mors somnus appellatur, quia resurrecturi sunt à morte, *sicut qui dormiunt resurgunt à somno.* Alias essemus miserabiliores omnibus hominibus, quia in hac vita quicumq; sunt in Christo sperantes, nil habent, nisi vincula, carceres, &c. *alij suadent comedamus, biuamus cras moriemur. Quasi mortificati, non essent* resurrecturi in vitam glorioſſam.

4 Chrisost. homil. 84. in Matth. ad Lucæ 22. *Apparuit Angelus confortans eum*, & statim subito, *& factus in agonia prolixius orabat.* Et *factus est sudor sicut gutte sanguinis decurrentis in terrā.* Euangelista cum apparitione cœlesti coniunxit orationem, & angustias, & sudorem sanguinis, *ne res ista videretur, hypocrisis.* Nam figmentum videretur gloria, apparitiones sine angustia, & sanguinis effusione. *Sic enim oportuit pati Christum*, & ita intrare in gloriam suam. Ne existimet delicioſus epulo, Adā filius, sine sudore vultus vesciturum pane gloriæ.

Quòd *mensa, non est prophananda scurilitate, & lasciuia verborum, sed commitate, honestanda.* 17

1 Ex clauſ. text. vbi in mensa connubiali solebat de more proponi ænigma ab ingenio extricandum, & soluendo ſ. b præmio.

2 Euseb. Emiss. Dom. 17. Post Pent. ad Lucæ 14. *Cum introisset Iesus in domum cuiusdam Principis Pharisæorum Sabbatho manducare panem, & ipsi observabant eum.* Nō delitioſis cibis inhiare in se ostendit. *Solo pane contentus*, & insidiabantur, an in verbis, aut factis aliquid viderent, vnde accusare possent. *Repulit* Christus lectione reprehensiua in sanatione Hydropici, quæ fuit materia, vt Christi virtus, & perfidia illorum manifestaretur. *An licet in Sabbatho curare?* & ipsi tacuerunt. Nam si dixisset licere, non erat in quo accusarent. Si non, timebant, quia ipsi in Sabbatho multa operabantur, & quia cogitabant insultare, quia Sabbāthum violare

lare, non formidasset præoccupauit lectione doctrinali. *Quis non educet de puteo asinum, aut bobem dilapsum in die Sabbati?* & conuicti, non dederunt responsum. Sed quid responderent? qui ie (inquit) *tam euidenti syllogismo conclusis esse videbant.* Simili lectione confudit Phariſæum ſcandalizatum, quod pateretur ſe tangi, ablui lachrimis, & tergi capillis à Magdalena. *Aquam pedibus meis non dedisti*, hæc autem, &c. ſimiliter aſsiſtentia in menſa Zachæi mollita eſt cõuerſionem, & reſtitutionem quadruplam.

3 Mar. 6. *Et cum dies opportunus accidisset, Herodes fecit cœnã natalis ſui Principibus, Tribunis, & primis Galilææ.* Sed lectione funeſta præmiata eſt ſaltatio puellæ labidinoſſa, & in eius gratiam iuſſus eſt decollari Baptiſta. Quod dictaſſet lectionem catholicam: *non licet tibi* habere vxorem fratris tui. Euſeb. Emiſ. ſerm. de decollatione Baptiſtæ. *O impietas iuſtus decollatur, caput eius in diſco affertur*, conuiuantibus apparatur magnum quidem ferculum, ſed ad videndum horribille, vt caput illud in menſa *in ſilentio lectitaret*, non licet tibi, &c. Sed ſatius, vt Balthaſari in mẽſa *apparuerunt digiti manus ſcribentis* ſententiam mortis, & amiſsionis regni pro lectione menſæ, ita caput Ioannis æternam damnationem Herodi. Abſit talis aſpectus horribilis in menſis Regũ, abſint & impudicæ fœminæ, hiſtriones; ſcurræ, libidinoſæ choreæ, honoretur menſa Hiſtoria graui, anteceſſorum, exempla ad egregias virtutes, pacificam, & iuſtam gubernationem, &c.

Quòd *Menſa Eccleſiaſticorum, & Religioſorum eſt condienda lectione ſpirituali, non lectura comediarum.* 17

1 Ex clauſ. text. vbi ob Religioſam præſentiam Samſonis dicati inſtituto Nazaræatus, poſt epulas introduci ſolum decebat confabulatio honeſta, ſicut illis erat in conſuetudine proponere ænigma diſoluendam.

2 Euſeb. Emiſ. Dom. 2. poſt epiph. ad Ioann. 2. *Nuptiæ factæ ſunt in Canâ Galileæ, & erat Mater Ieſu ibi.* Littera præmiſſa qualiter (inquit) ſpiritualiter intelligi debeat audiamus. *Hæc nuptiæ non ſunt corporum, ſed animorum. Toties ad* nuptias inuitamus quoties aliquam ſententiã authoritate eorum (Chriſti, & Apoſtolorum) firmamus. Menſa ergo refficit corpus cibo corporali, animam cibo ſpirituali: vbi adſunt perſonæ, ita Religioſæ Chriſtus, Maria, Ioſeph, & forte Ioannes Euangeliſta, & alij. Sit procul à menſa Religioſa, & Eccleſiaſtica, ſcurilitas, lecturæ facetoſæ, comediarum, con-

cõdiatur lectioni spirituali; more Augustini Episcopi, & Religionum. Regula Carmelitarum cap. 4. *De communi refectione*, docet. Quæ erogata sunt communiter sumatis, *aliquam lectionem sacræ scripturæ audiendo.*

3 Ioann. 13. vbi *cœna facta* lauit pedes discipulorum. *Vos vocastis me Magister, & Domine, & bene dicitis sum etenim*, sed quia Magister sum, meam doctrinam recipite (inquit Emis. Fet. 5. in cœna. *Exemplum dedi vobis*, vt quemadmodum ego feci, ita & vos faciatis. *Istam lectionem lectitauit charitatis, & humilitatis*, supra cœnam discipulis addiscendam, & exercendam.

4 Marc. vlt. in mensa vltima discessurus Christus ad Patrẽ, *recumbentibus vndecim Apostolis*, vbi tot personæ religiosæ honestabant mensam, non defecit duplex lectio, altera reprehensiua incredulitatis circa resurrectionem, altera doctrinæ tradendi Euangelica documenta in vniuerso mundo. *Prædicate Euangelium omni creaturæ.* Greg. Papa homil. 29. Increpata duritiæ, *quid admonendo*, dicat audiamus, *euntes in mundum* vniuersum, prædicate Euangelium omni creaturæ.

Quòd *ad difficultatem doctrinæ superandam inuocandum est adiutorium sanctorum.* 17

1 Ex clauis. text. vbi Philistini conuiuales, non valentes ingenio assequi ænigmatis solutionem, confugiunt ad vxorem, vt expiscetur à Samsone.

2 Iacobi 1. *Si quis vestrum indiget sapientia postulet à Deo*, qui dat omnibus affluẽter, & nõ improperat. Chrisolog. serm. 11. ad *dicit vt lapides* panes fiant, expendit, quod ars diaboli valde dormitauit, dum egenti adfert lapides, qui offerre satius delicatas epulas. Sed quid ille? petenti panem dabit lapidem? petenti ouum, scorpionẽ? Deus dat affluenter. *Miser cupis tentare, sed nescis, debueras vrgere* inediam, non horridis, sed gulosis, istis non modo Dei filiũ, sed filiũ hominis laquæare non posses. Nã à diabolo, nec salus, nec scientia, nec quoduis aliud admittendum, sed à sanctis.

3 Hist. act. 8. vbi *Angelus Domini loquutus est ad Philippum*, vt adiungeret se currui, in quo ille *vir Ethyops*, Eunuchus Reginæ, *præfectus super omnes gazas*, qui venerat adorare Hierusalem. Cui legenti Isaiam Philippus, Putas intelligis, quæ legis? qui ait, & quomodo possum, si non aliquis ostẽderit mihi. Cui apperuit Philippus, & baptizato, raptus ab Angelo, disparuit. Vbi PP. ita *ad Sanctos recurrendum* pro intelligentia dubiorũ addiscenda, sicut & Paulo ad pedes Gamalielis act. 11. & Na

bu-

buchodonos. à Ioſepho ſomnũ, & ſolutionem.

4 Hiſtoria Dan. 2. vbi Rex Nabuchodonoſor, cũ nec ſomnii, nec ſignificationis ſibi eſſet conſcius, nec Malefici, Arioli, diuinaſſent. Introductus eſt ad Regem, Daniel, captiuus, qui dixit myſterium interrogatum indicari non poſſe ab vllo diuino, ſed *eſt Deus in cœlo reuelans myſteria*, qui per ſuos miniſtros exponit. Cui Rex *putas ne poſſe mihi indicare ſomnium*, quòd vidi, & interpretationẽ? expoſuit viſionẽ, illam ſtatuæ, prognoſticum futurorũ. Quo circa Auguſt. 12. de Geneſ. ad litt. C. 9. *Danielis excellentia tenetur, & probata eſt*, quæ Regi, & ſomnium quod viderat dixit, & quid ſignificaret apperuit.

Quòd *ingenium muliebre à natiuitate propenſum eſt ad fictiones, fallacias, & mendatia, vt nec lachrimis ſit fidendum.*

1 Ex clauſ. text. vbi vxor Samſonis ſub prætextu amoris, & fidelitatis erga maritum, ſuorum Philiſtinorũ potius agens cauſam, pœnę ſolutionis fugiendæ, expiſcatur ſolutionem, quo onus ſoluendi inuertit in maritum.

2 Hiſtoria Geneſ. 27. vbi Rebecca prędiligens Iacob, quàm Eſau natu maiorem, audiens Iſaac velle dare benedictionem Eſau poſt cibos de venatione illius, præoccupauit euentum, & fecit, quòd Iacob afferret hædum, & offeret cibos, & pelliculis chirothecas cõficit ad manus, vt ſi attrectaretur à Patre cęco deciperetur, vt euenit, *vox quidem vox Iacob eſt*, manus autem manus ſunt Eſau, quo natus eſt anteriorem benedictionem. Quo circa Oleaſter hic ad *accepit veſtes Eſau*, & pelliculas, *Mirabilis artifex ſimulationum fœmina*, neque ſolum verbo ſed opere facto nouit optimè mendatia componere. Sicut Eua, & ne tangeremus.

3 Geneſ. 31. *Rachel furata eſt idola Patris ſui*, & fugit cum marito, inſequtus eſt Pater, & comprehẽſus in diuerſorio. Et queribundo de furto Labano, ipſe Iacob expoſuit omnem domum, & ſupellectilem ſcrutinio. Audiuit Rachel, & *abſcondit ſub ſtramento*, & ſedit deſuper. Accedente Patris ſcrutinio excuſatur, quòd non aſſurgat, eò quod *acciderit* conſuetudo fœminarum. Quo circa Oleaſter. *Admonui eum, qui filiam coniugatã domi habet furẽ, potius, & latronem, quam filiam habere*, ac ſi diceret eſt latro verè, filia ficte, quæ etiam fingit arte muliebri menſtruum, ne pitas patris cogeret ad aſſurgendum, & furtum detegeretur. De figmentis plura interpretes hic, & circa figmentum filiæ Pharaonis, quo ſimulauit, ſe grauidaſſe, & peperiſſe Moyſem, Exod. 2. Meretri-

retrix simulans filius viuum alterius, esse sibi proprium. Iuditha simulans eleganti habitu homicidium prudentia, &c.

Quòd *vxor obligata ad seruandam fidem viro facile fidem in infidelitatem verbo, & opere conuertit.* 18

1 Ex clauſ. text. vbi vxor Samſonis ſuorum cauſam egit, quàm viri, cum proditione, & diſpendio illius.

2 Oleaſter ad Geneſ. 39. vbi vxor Putiphar *per ſingulos dies moleſta erat adoleſcenti* Ioſeph. Rogando importunè, non ſemel, ſed iterum, & iterum, quæ ſolicitare debebat. *Reliquit pallium in manu, ne relinqueret pudicitiam.* At illa optatis deluſa crimen inijcit in innocentem, imò in virum qui emit mancipium, vt illuderet. *Artifex malitia incredibili fœmina*, quę vim intulit, & quęritur paſſa. Retinuit pallium, ſi pudica eſſet, non diuulgaret opprobriũ, ſed diuulgando ſe ręam conſtituit. *Voluit* (inquit) *Dominus huius impudicæ fœminæ*, technas oſtendere, vt ſint cauti viri de cętero. Nec in omnibus vxori fidem eſſe adhibendam.

3 Geneſ. 12. Hiſtoria Abrahæ cum vxore. *Noui quòd pulchra ſis mulier*, & quòd imminet ex tua elegantia mihi periculũ, *dic quod ſoror meæ ſis*, vt bene ſit mihi ob gratiam tui. Vix ingreditur curiam Egypti, cum defertur ad palatium Regis, qui prænenitur flagellis à Domino, ne violaret, & adulteraret. Quę ritur de viro, & reſtituit, *cur dixiſti eſſe ſororem*, nunc accipe eam, & vade. Expendit Auguſt. 22. cõtra Fauſtum c. 33. Quod cauit vitę ſuę, ne occideretur, quia *maritus, de reliquo Dee cura eſſe*, cępitque hic Pater fidei in ſpem contra ſpem credere, fidẽs Deo, & puditię Saræ, *quod ipſe impudire non poterat contra Reges potentiam.* Non illatum eſt adulterium in tantum Patriarcham, ſed iminens fuit, dicente ipſa, quod *eſſet ſoror.*

4 Iudicum 15. *Cum reuertiſſet Samſon inuiſere volens vxorem ſuam*, prohibitus eſt à Patre vxoris, dicente *ſe tradidiſſe* matrimonio amico, & indignatus incendit ſegetes vulpibus. Philiſtini igne multauerunt adulteram, & parentem. Quo circa Ioſephus ait. *Ipſam parentem, & cognatos fuiſſe exuſtos.* Olim adulteras, qualis erat hęc mulier punitas incẽdio, fertur, ſicut iuſſit cõburi Iudas Thamar nurum. Geneſ. 38. cũ alijs tẽporibus alijs pœnis ſint mulctatę, vt lapidatione, Leuit. 20. Alibi per aquam maledictionis, qua vter diſrumperetur Num. 5.

Quòd *fides vxoris in virũ rara auis in terra, & miraculoſa firmitas, quæ vel ſpe, vel metu facile non flexibilis.* 18

1 Ex clauſ. text. vbi ex tribus quas adamauit Samſon, nec

nec vlla seruauit fidem sine proditione, nec prehabuit illam, vel amicis, vel conteraneis, vel maritis.

2 Daniel 13. Susana castissima, *si enim hoc egero mors mihi est, si non egero non effugiam manus vestras, melius est mihi absque opere incidere in manus vestras, quam peccare in conspectu Domini.* Chrisost. homil. de Susana. *Falsos testes possunt occidere famam*, non occidere conscientiam. Rarum exemplum fœminæ, quòd decreuerit apud se, potius igne comburi, innocens, vt adultera, quam illicita, & obscena admittere contra Deum, & innocentiam. Vnde. August. 1. de ciuitate cap. 18. & 19. Quòd *fuit maior castitas Susanæ, quam Lucretiæ, quæ à vulgaribus*, ita exaltatur, ob tria, quòd Lucretia admisit libidinem Tarquinij, ne infamia dehonoraretur, hæc sprouit famam, vt conseruaret puditiam: illa sceleri addidit scelus mortis illatæ, ista immunis ab vtroque, &c. Pertulit adulterium Lucretia, non est puditiæ charitas, sed infirmitas. Christianæ habent intus gloriam castitatis, testimonium conscientiæ.

3 *Fides in virum rara*, est apud Iud. 19. Vbi cum vir Leuites deferet in domũ vxorem suam, & hospitarentur apud senem, adolescentes ciuitatis irruentes in domum postularunt educi leuitem ad abutendum eo. Hortati sunt minus malum explendi libidinem cum senis filia, & hospitis vxore. Illa abrepta, inuita, & exalata præ obsistentia noctis, effugit mane ad ostium hospitij, vbi relictus fuit vir, exalauit animam. Ambrosius lib. 3. off. cap. 13. ad hæc, fidem raram vxoris apendit, quæ quæsiuit virum suum, & ad ostium vbi manebat corruit. *Voluit mori iuxta maritum, & illi adhuc exequias funeri exercere.* Hinc reprehendi possunt fœmine vxoratæ, quæ sponte cõ grediuntur cum alijs, nec violentia opus, extrahi cupiditate voluptatis, pecuniæ auiditate, aut donatiuorum, vt pro fidelitate coniugali certent ad mortem. Nec leuiter inflectantur.

Quòd *arcana Regum, & superiorum reseruare, valde vtile, prorebus in republica fœliciter gerendis.*

1 Ex claus. text. vbi vxor Samsonis expiscata est solutionem ænigmatis, & aperta concubialibus, coegit ad pœnam maximam, & ad occisionem virorum, quorũ vestibus mulctam soluit.

2 Iuditha increpauit Principes ciuitatis Bethulienſis in obsidione Holophernis circumdatos, quod *si Deus non dedisset auxilium intra paucos dies*, se traderent Holopherni, vt potius Deus irritaretur assignato termino,

minò, quàm moueretur ad adiutorium. Ipsa autem cogitauit consilium, quòd illis non aperuit, potius dixit, *nolo, vt scrutemini actum meum,* vnde egredièti de ciuitate nocte cum sola Abra sua mirantes pulchritudinem, nil interrogantes dimiserunt, dicentes *Deus det tibi gratiam, & omne consilium sui cordis sue virtute corroboret.* Dissimulauit secretum adhuc cum militibus, & aulicis Olophernis, & meritò, nam à secreto pendet rei fœlix euêtus. Augustus serm. 228. de tempore, qui est de Heroe Iuditha. *Ecce Iudith, spes omnium populorum procedit, sua sapientia consolatur.* Et sermone 229. *Iudith bellator* animus, alienum pectus obsedit. Optima Bellona, quæ in pectore stragemata bellica cogitauit, & celauit, quibus vicit excogitata in pectore Olophernis, & de illis victoriam repòrtauit, quæ si suis indicaret res exitum, ita fœlicem, non esset adepta.

3 Gedeon assequitur victoriam lumine secretò in lagenis testaceis, quo subitò exhoruere hostes, si sciretur stratagema occultæ lucis viderent hostes, & victoria non esset assequuta.

4 Tobiæ 12. *Sacramentum Regis abscondere bonum est.* Cornel. *Bonum est zelare Regis arcanum, quoad* à Secretò pendet rei fœlix executio. Iuxta illud Gelij lib. 10. c. 15. *Taciturnitas consiliorum Thesaurus.* Eximia est virtus præstare silentia rebus.

5 Antigonus Rex Macedoniæ filio Philippo roganti, *quãdo mouebimus castra,* Respondit *Metuis ne, tu solus tubam, non audias?* Publicet tuba militaris militiæ secreta, victoriæ plures proditione secreti sunt delussę. Quòd *leuitati fœminarum non sunt committenda secreta, & arcana magni ponderis. Angustũ pectus facile euomit recepta.* 19

1 Ex clauſ. text. vbi vxor Samsonis expiscata solutionem ęnigmatis facile aperuit conuialibus.

2 Genes. 27. Isaac morti prò ximus vocauit filiũ Esau, & petijt cibum de venatione, vt impertiretur benedictionẽ. *Quod cum audisset Rebecca* instigauit Iacob, vt præueniret cibum, & obtineret benedictionem, & maioratum, & Pater deceptus concesit. Oleaster hic. *Docentur coniugati secreta sua, etiam ab ea, quæ in sinu eius dormit occultare, quoniam inimici hominis domestici* eius, nec timet maritum propter filium, quem immodice diligebat.

3 Historia Tobiæ 12. *Tobias vocauit ad se filium suum dixitque ei,* quid possumus dare viro, qui venit tecum. v. 5. *& vocantes eũ Pater, scilicet, & filius,* tulerunt in partem. Doctus Lyranus in *secretiorem partem domus.* Quid referet vxorem, aut cognatos

ad esse etenim *Sacramenta n Regis abscondere bonum est*. Quasi fœmina non esset apta secretò, Pater & filius secum segregant seorsim Raphaelem, ad id pertractandum.

4 Plin. c. 61. de viris illustribus, quòd *Metellus Macedonius amico interroganti, quid destinasset animo aggredi*, Respondit *Tunicam exuerem si consilium meum scire* existimarem.

Quòd *Fœminæ facile vincuntur, aut lenocinijs lasciuis, vtilitatis, aut commoditatis.* 19

1 Ex claus. text. vbi facile leuibus adducitur vxor, vt expiscetur solutionem problematis.

2 Genes. 38. Historia Thamar, & Iudæ. Iudas sollicitat ad liuidinem, at illa. *Quid dabis mihi, vt fruaris concubitu meo:* Dixit *mittam tibi hædum*, at illa patiar, si dederis arrhabonem, donec mittas, & dedit *annullum, & armillam, & baculum*. Expendit Oleaster *iustam esse corpori suo mercedem, quæ datur meretricibus*, sed hædus parui valoris est, pignora autem, *Annullum sigillandi, amictum tuum*, significat inuolucrum capitis, hic valor, non dicit quidquã de baculo, sed erit minoris. Vide quibus adducta est fœmina, alias nobilis ad concubitum fornicarium.

3 Ioann. 4. Christus petit à Samaritana *da mihi bibere*. Samaritana, *quomodo tu Iudæus cum sis bibere à me poscis*, quæ sum mulier Samaritana. Christus *si scires, quis est, qui dicit tibi da mihi, &c. Tu petijsses ab eo, & dedisset tibi* aquam viuam. Vt audit verbũ dandi, replicat impossibilitatibus, hauritorium non habes, nec quæ funem, insuper puteus altus est, & manibus attingere nõ vales. Respõdet Christus, quòd *qui viuit ex putei aqua, sitiet iterum*, qui ex illa, quã dabo, non sitiet in æternum. Samaritana *Domine da mihi hanc aquam, vt non sitiam*, nec veniam huc haurire. Vbi expendunt aliqui PP. qnã apte Christus ad captandam, & capiendam fœminam introduxit colloquium dandi, & accipiendi, *si scires donum Dei*. Quibus sunt ingenio, & natura propensæ, & ipsa capitur, vt petat illam aquam indeficientem, qua excusset laborem veniendi ad fontem. Theophilact. ad hæc. *Et mulier quomodo his affecta est? humiliter, opinatur*, enim defensibili aqua sermonem haberi. Tamen indicat profectum, nam primo dubitabat, vnde habes aquam viuentem? nunc susci pit dicens, *da mihi hanc aquam*, & quoniam Christus caluit ingenium huiusmodi, quæ afficiuntur donanti, & magis plus donantij, instat. *Si miraris Iacob, qui dedit hanc aquã*, magis admirari oportet, qui præbet melioré, quæ in dies magis, ac magis multiplicatur. Aqua capitur,

4 Oseæ 2. Deus de populo sub metaphora meretricis dicétis. *Vadam post amatores meos, qui dant panem mihi, & aquas meas, lanam meam, linum meum,* oleum meum, & potum meum. Cum autem via præpeditur ſpinis, quærit, & non inuenit dicit. *Vadam ad virum meum priorem, quia bene* mihi erat tunc magis, quam nũc. Vbi ſola maiori vtilitate capitur alijs poſt habitis. *Tibi, ò inepta, & ſtulta fœmina* re præſentatur Diabolus in amante, qui dicit hæc *omnia tibi dabo, ſi cadens adoraueris me*, dat fictũ mundum, diuitias, &c. nõ quod illius eſt, ſed quod tuum, lanam tuam, oleum tuum, vinum tuũ. Quod *Rex, nec publica, nec priuata authoritate poteſt priuare innocentem vita, & bonis ſuis.* 20

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon iuſte authoritate iudicis vindicatiua hoſtiũ Dei, & iure belli, impellẽte Deo cęſsit. Vita, ex ſpolianit veſtibus Aſcalonitas.

2 Hiſtoria Suſanæ Dan. 13. vbi ducitur ad mortem iniuſta ſententia ſenum, qui aggreſi ſunt violare, *excitauit Dominus Danielis ſpiritũ.* Siſtere facit ducentes ad ſuplicium, & examinatis ſeorſim ſenibus conuicit mentitos, & inuſtos coram populo, ipſo aprobante, & inflectẽte in eos pœnam talionis. Aug. ſerm. 118. de tẽpore. *Caſtitas Suſanæ affuit in iuditio, ne innocentia* damnaretur. Presbyteros impudicos conuicit, & in iuditio falſos accuſatores obtinuit, biſque victrix reos facit teſtimonij, *quos reos facit adulterij, ſi creatur iudicem Danielem.* Secura eſt de victoria caſtitas.

3 Exod. 2. *Moyſes egreſſus eſt ad fratres ſuos, vidit que afflictionẽ eorũ, & virum Egyptiũ percutientõ quemdã de Hebræis, cũque circũſpexiſſet huc atq; illuc, & nullũ ad eſſe vidiſſet, percuſsũ Egyptiũ abſcõdit Sabulo.* Oleaſter ad *percuſsũ Egyptium.* Caute operatus ſit vt *prius huc atque illuc reſpexerit,* & ſic occiſus fuit percuſor, *docet nos cõmunem* iniuriã vindicare. Verum nec licuiſſe priuata authoritate, *probat eius cautio* huc, aut illuc. De publica conſtat, nõ habuiſſe poteſtatem, aut iuriſdictionem, peccauit ergo ſicut Malchus abſcindens auriculam in defenſam Chriſti? *neutiquam, neuter.* Excuſatur vterque ab Aug. 3 q. nou. & v. teſtam. q. 8. *Percuſsit eum, quem contra ſe armatum videbat,* & ad necandũ Dominum. Chriſoſt. homil. 86. in Matth. excuſat ex pio amore ad Magiſtrum Moyſem alij. Quia licet non eſſet iudex, nec miniſter Pharaonis. *Erat Dominus per manus illius liberaturus Hebræos,* & iam incipiebat executionem ſuæ legationis, & ille Egyptius non erat innocens, ſed facinoroſus in Hebræũ, cũ innocẽs, nec à Rege priuari poſsit vita, nec bonis ſuis.

Quòd *suprema potestas, non est dominium vniuersale, prævalens supra inferiorem, vt possit impunè priuare pro arbitrio subditos rebus suis.* 20

1 Ex clauſ. text vbi Samſon priuat vita, & veſtibus Aſcalonitas, impulſu, & poteſtate, à Deo conceſſu in hoſtes ſuos.

2 Hiſtoria 3. Reg. 21. Rex Acab. cupidus poſsidēdi vineā Naboth. ad ſibi hortum fabricā dum, accepit repulſum pretij oblati: Regina Iezabel, vt Regis mærorē leuaret, vineæ poſſeſsione per ſceleſtos crimē impoſſuit leſæ Maieſtatis, quo lapidari fecit, & fiſco vineā addici, titulo confiſcationis. Elias obiecit, *occidiſti, & poſſediſti* iniqua cede, *inducam ſuper te malū*, & lege talionis occideris. Imperfect. in Matth. *Hiſtoria Nabot antiqua, ſed vſu quotidiano renouatur.* Vnde Reges, & ſuperiores cauere debent, ne aliena rapiant, ne ſoluant talionē. S. Ambroſius lib. de Nabot à c. 11. in 3 carpit diuetes auaros, & rapaces, qualis Acab. *Non tam cupitis poſsidere tanquam vtile, ſed alios vultis excludere.*

3 Hiſtoria celebris 3. Reg. 3. Rex Salomon pro tribunali, audita cauſa litigātium fœminarum ſuper filio viuo, cuius eſſet vtriuſq; cogitauit ſagaciter ſtratagema. *Afferte gladium, diuidite infantem viuum, & detur cuiq; ſua medietas.* Vera, cauſa cedit, *dare illi iuſantem viuū*, ficta māter *nec mihi, nec tibi ſit, ſed diuidatur*, cum autē Salomon audiuit *diuidatur*, iudicauit illam non eſſe genitricē, & iuſsit iuri alterius dari infantē. Quo circa S. Ambroſ. lib. 2. de officijs cap. 8. *Sapientia igitur fuit diſtinguere conſcientias latentes, & eruere veritatem ex occultis, & penetrare mentis viſcera.* Iuſtitiæ quoque, vt vera mater reciperet ſuum, & quę necauerat ſuum, alienum non tolleret. Iuſtitiæ enim officium reddere vnicuique, quod ſuum eſt. Vbi non voluit Rex priuare pro arbitrio genitricem veram ſua progenie, & conſignare fictæ matri, vt iuſtitiæ leges inuiolatas ſeruaret. Licet Pharao, & alij violarint edicto, *quid quid maſculini ſexus interficite*, quidquid fœminini reſeruate.

Quòd *Regi in graui neceſsitate cōſtituto, & indigenti tenentur ſubditi ſubuenire rebus propriis.* 20

1 Ex clauſ. text. in qua Samſon præindigentia ſoluēdi mulctam, abſtulit triginta veſtes ab hoſtibus totidem Aſcalonitis. Cum illi non obtulerint. Vbi pati ſpoliationē (forte) vt vindici hoſtium Dei tenerentur.

2 Euſeb. Emiſ. ad Matth. 21. *Ite in caſtellum, & inuenietis aſinam, &c. ſoluite, & adducite mihi, & ſi aliquis vobis aliquid dixerit, dicite, quia Dominus his opus habet, & confeſtim dimittet eos.* Expendit quod

Regi

Regi indigenti, *ecce Rex tuus*, &c. & supremo Domino in egestate inseruire debent supellectilia dominorum inferiorum. *Dominus* (inquit) *his opus habet, non qualisumque, sed horum & omniũ. Quis tenere audeat, quos iubet soluere omnium Dominus?* vnde Regi in egestate succuri debet, nec decet illi negari necessaria. Præcipue si insumat pro bono communi.

3 Ambros. Apolog. cap. 7. ad illud 2. Reg. 23. *O quis mihi daret potum aquæ de cisterna, quæ est in Bethleem.* Vix audierunt tres egregij milites Regem in campo constitutum indicasse indigentiam aquæ, cum irruerunt per medios hostes, expositi vitæ periculo, & subsidiũ attulerunt Regi. At ille *libauit Domino, & effudit.* Ita æstimatur aqua adducta cum tanto periculo militum? Non despicitur. Sed erigitur in exemplum Regum. Nam Rex non satiari debet de tanto ingenti periculo vassalorum. Ipsi operati sunt obtulentes, vt ingenui vassali, ille vt optimus Rex. *Prospexit ne cui Regum vsus viuendi alienis periculis quæreretur.* Reges attendere debent, ne sine vrgenti necessitate grauent suos gabellis, & tributis, & oneribus, intollerabilibus, quę injciunt vasallos in vitæ extrema dispendia, at in egestate notoria, & pro communi bono, desideranti, nedum exigenti, ingenuè ofterri debent. Idem de subsidio filiorum erga parentes inopes, vt Isaac exposcenti cibos de venatione, diligenter accurrit Esau ad deferendum.

Quòd *ira interdum potest esse licita, & separari à peccato.* 21

1 Ex clauſ. text. vbi iratus est Samson, & iusta causa.

2 Historia Genes. 31. vbi Laban incõstans innita pacta cũ Iacob mutauit, & inflexit decem vicibus, vt solent diuites cum pauperibus in suam vtilitatem, vsque dum, vt apte Cornel. huius mutationis *anno 6. pertæsus Iacob aufugit cum vxoribus, & familia*, insequitur Laban quæribundus de recessu ipso insalutato, & insuper quòd furatus sit idola. Patitur scrutiniũ supellectilis, vt sit visa calumnia. Iacob tot ac tantis passus, (ratione vt aiunt onustus) tumens cum iurgio ait. *Ob quam culpam exarsisti post me, quid inueneris de substantia domus tuæ? Pone hic, & iudicent inter me, & te.* Iacob ita patiens inflatur, & irascitur. Vbi patientia? excusit onera? Cornel. *Præ ira, & indignatione iusta* alias mitissimus, læsa enim *patientia fit furor.* Oleaster hic. *Timor timidum facit, ne forte esset idola inuenturus, postquam non inuenit, iustitia fecit audacem.*

3 Exod. 32. Moyses mitis-

simus virorum *cum appropinquasset ad castra, videt vitulum, & choros, & iratus valde proiecit tabulas, & confregit eas ad radicem montis. Et contriuit vitulum vsque ad puluerem.* Cum Deus irascitur de vituli erectione Moyses temperat, & cohibet iram Dei, dicẽtis, *dimitte me, vt irascatur furor meus.* Et mittisimus hic inflamatur ira, & non cohibet se. Oleaster ad hæc. *Agit partes optimi ducis orat instantissimè apud Deum, sed sæuit & acerrime arguit coram peccatoribus, vt doceat*, prælatum mittem se ostendere, dum orat pro peccatore, sed zelo plenum dum reprehendit in faciem. Vbi proximi patienter sunt sustinendi, vt reddant omnia debita charitatis, sicut ex Iacobi 5. hortamur patientiam habere, vt *agricola, vt colligamus fructus* spirituales.

Quòd *ex iusta causa est licitum diuortium, non ex iniusta præsumptione.* 21

1 Ex claus. text. vbi Samson ex dictis iustis causis diuertit ab vxore in domum Patris, quòd magis amaret conteraneos, quàm maritum, quod illum voluerit onerari, illos alleuiari, &c.

2 Gilbert. serm. 2. ad Cant. 3. vbi sponsa quærebat spõsum in thalamo. *In lectulo meo per noctem quæsiui, quem diligit anima mea*, quæsiui illum, & non inueni, surgam, & circuibõ ciuitatem, &c. sponsus ad ostium pulsabat *aperi mihi*, caput meũ, &c. & respondit ignauia, *laui pedes meos* quomodo? &c. vnitatem abiecit thori, & repulit sponsum, nec aperuit, quia iam corpus, & pedes in quiete in lecto. Sed cum sensit recessum, fugã, repudium thori, anxia quærit prostatu. *Qui scit occupatio, quiescit. afflictio, sed dilectio nescit quiescere*, quiescit in lecto, & desiderat dilectum.

3 Tobiæ 8. cõiugio innitto inter Tobiam iuniorem, & Saram, cui dæmon occiderat tot viros. Post cœnam accedente tempore acumbendi, Tobias sponsam hortatur, vt tribus noctibus vacaret orationi, & *tertia transacta in nostro erimus coniugio.* Orat Tobias *tu fecisti Adã, & dedisti adiutorium Euam*, & scis quod non luxuriæ causa, sed solã posterorũ dilectione, in qua benedicatur nomen tuũ. Sara *Miserere nobis Domine*, &c. Cumque Raguel existimaret defunctum, vt alios, præueniens sepulchrum, mittit ancillã, ingressa cubiculum reperit eos *se cum pariter dormientes.* Sponsus ignauus diffet thori concubitum sponsæ concupiscenti, diuortium trium dierum! sed potius cautus, *Causa effugiendi* periculum mortis illatæ cæteris antecessoribus, & accedendi *more sanctorum* inuocato

Deo

Deo, nõn more gentilium. Quo circa Augustᵘˢ. 3. de Doct. Christiana cap. 18. *Non est in carendo difficultas, nisi cum est in habendo cupiditas*, nouerant illi veteres in ipsis coniugibus luxuriam esse, & abutendi intemperãtiam, quod Tobiæ testatur oratio, quando est copulatus vxori. Ad orationem diuortiũ est iusta causa, iuxta Apostolum 1. Corint. 7. *nolite fraudare, &c. nisi ex consensu ad tempus, vt vacetis orationi.* Caiet. hic. *Peccatum enim est, iniustitiæ est negare coniugi debitum.* Talis enim continentia vtilis est ad vitam spiritualem.

Quod *tenemur deserere pericula, occasiones, & noxia commertia peccandi.* 21

1 Ex clauſ. text. fugit Samſon mulierem iam odioſam, tot cauſis datis diuertendi, ne inde ſuboriantur diſſenſiones maiores.

2 Oleaſter ad Geneſ. 2. *Præcedit ne comederemus, & ne tangeremus illud, ne forte, &c. moriamur.* Præcepit Deus ne ederent, ſub timore, & interminatione mortis, & imminentia mortis diſſuaſit non ſolùm eſſum, ſed tactum. *Mentiris, dicens Deum prohibuiſſe comedere, & tangere, cum ſolũ prohibiſſet eſſum. Sed timore mortis legẽ ſeruandã arbitrabaris. Timor ex vna lege duas feciſſe viſus eſt.* Nõ edẽdi, & non tangẽdi. Vt ſcilicet vitaret tactum, occaſionantem eduliũ.

3 Geneſ. 20. Abrahæ vxor pulchra adeò, vt renũcietur ſtatim Regi, qui captus eſt in oculis eius. Cũque prænonitus eſſet vxoratam, dimittens *illam*, dicit. *Ecce dedi mille argẽteos fratri tuo, hoc erit tibi in velamen oculorũ.* Non ſufficiebat tradi marito, ad cauenda pericula, ne alter deprehẽdat eã ad thalamũ? Quoniã viſa rapit intuẽtem ad illicita, occultet vello venuſtatẽ, ne iterũ accidat ſimilis lapſus. Oleaſter, *Auferenda ſunt fœminis, quæ poſſunt ruinæ occaſionem dare.* Niſi Dauid eſſet intuitus Berſabe, non adulteraret, & interficeret maritũ. Niſi ſerpens colloquia texeret cum Eua, nõ daret conſenſum ad eſum: promi vitiũ, quo corruit humana progenies.

Quòd *viro licet receſſus à coniuge, ſi adſit cauſa, non diffamatio, aut occiſio.* 22

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon deſerit coniugem adulterã, nõ litigat cum ea, & meritò, ne diffamet. Nec occidit vtrumque, cum facile eſſet occidenti ſimul plures.

2 Euſeb. Emiſ. Sabbat. poſt 3. ad Ioann. 8. Mulieris deprehenſæ, in adulterio. *Lex præcepit huiuſmodi lapidare. Tu ergo, quid dicis?* Ieſus *digito ſcribebat in terra, qui ſine peccato eſt, primus in illã lapidẽ mittat.* Audientes *vnus poſt vnum abierunt.* Et remanſit

solus Iesus. Qui sine peccato posset lapidare. *Vbi qui te accusabant?* respõdit *nemo Domine.* Cui *nec ego te condemnabo.* Vbi arguẽtes ex lege redarguti suis peccatis deserunt accusationem, & lapidationem. *Digito Dei lex scripta, hic est digitus*, qui eam *scripsit*, scribens in terra intelligentiam, lapidari, nõ à talibus, quales vos estis. *Ecce omnia noua facio. Vade, & amplius, &c. liberata est misera, inbẽte misericordia.* Adultera hodie dimitti potest, amplius, non post, interfici, in adulterio. Vt incurrat damnationem æternam.

3 Matth. 1. *Maria desponsata Ioseph*, apparuit grauida, nec infamata est apud vicinos, & familiares, quoniam sciebant desponsatam. Ioseph zelotypia mouebatur *nolebat traducere in domum suam*, quam videbat grauidam, nisi defero, periculosum sentiebat dare libellum repudij. *Ioseph cum esset iustus voluit dimittere*, quam accusare nolebat, ne diffamaretur, ne occideretur. Hæc cogitanti, *Angelus apparuit*, quid consuluit? diffamare libello repudij, interficere gladio? Minime. Id Diabolus, aut diabolicus homo consuleret. *Noli timere, noli dubitare, tolle*, zelotypiam, pelle suspitionem. Euseb. *Accipe quasi dominam, non quasi coniugem* sis ei obediens, non imperans, vt maritus. Quare? quod in eâ natum est de Spiritu Sancto est.

Quôd *vir qui viuente vxore ducit alteram, non est immunis ab incontinentia, & adulterio.*

22

1 Ex claus. tex. vbi Samson diuertit ab adultera, sed non iniuit adulterè secundum matrimonium. Cum licita esset polygamia vxorum, sed non soluto prioris vinculo, vinculabatur cum alia.

2 Matth. 19. *Et accesserunt ad eum Pharisæi tentantes eum, & dicentes. Si licet dimittere vxorem quacumque ex causa?* Fuit quæstio controuersa eo tempore. De graui causa non dubitant, inquirunt de leui. Tentant captiosa, & vicorni, vt capiant vtraque decisione. Si non licet incurat in indignationem diuitum, dimitentium, si id licere, suggilaretur sententia, vt imperfecta, canalium, in Magistro perfectionis. Respondet Christus *negatiua.* Et probat ex scriptura. Primò, quôd in creatione olim hominis dictum, *masculum, & fœminam fecit eos.* Inter quos institutum vinculum inter masculum, & fœminam, & vnum, & vnam. Secundò, quòd ex Adamo Eua sit formata, vt ex vno subsistant duo, vt vnitas sit capitis, & membri

bri, & vna caro vtrumque, aut quia vtriusque est commune dominium, aut quia ex vtroque duo, prodijt vnum genitum, duorum vna caro. Vt separatio non cõtingat, nisi per mortem, sicut non separatur caput ab alijs partibus nisi per mortem. Et ita est vinculum insolubile, & perpetuũ. Tertiô, quia vinculum irrescindibile ex Dei institutione, rescindi, aut diuidi non potest institutione humana, & quod Deus vniuit, diuidat, quod coniunxit dissungat, quod sociauit dissociet. *Quis audeat in Dei opere, homine*, capud à corpore separare, & mutilare? Vltimò, ratio est à priori, quòd Deus suprem⁹ Dominus, naturæ author, ille ius naturæ indidit, & instituit, vt ius alteri traderetur corporum ad solam copulam, intra coniugium insolubile, nisi fit dispẽsatio Dei. Cui accedit mystica, vt ista insolubilis vnio esset typus, & figura vnionis verbi cum carne nostra, & per eam cum Ecclesia. Iuxta ad Eph. 5. *In Christo, & in Ecclesia*. Pharisæi, Scripturæ opponunt Scripturam. *Quòd Moyses mandauit dare libellum repudij*, vxori, sibi exosæ, & dimittere. Respondet Christus, *Verbum mandauit dimittere inuertendo in permisit ob duritiam suam*, ne si dimitti non patereretur, occideretur. Vt trãsiretur ad aliud coniugium optatum. *Ab initio autem* institutum vinculum insolubile, non permittebatur dimitti, nec libello repudiari, & ita *reuocat permissionem dimitendi* vxorem, & reuocat libellum repudij. Et reducit in pristinum statũ. Subijcit, *Dico vobis, quòd quicumque dimisserit vxorem suam nisi ob fornicationem*, & aliam duxerit mæchatur, & qui dimissam duxerit mæchatur. Vbi reuocat dimisionem, & libellum, & reducit rem ad pristinum statũ, vt legislator.

Hic *difficultas* ingens, quæ torsit authores, iaculata ab hæreticis, teste nostro Guidone tt. de hæreticis. *Igitur qui dimisserit ob fornicationem, & ducit aliam non mœchatur*, ergo *dimitti potest vxor fornicaria, & solui coniugium, adhuc quoad vinculum per adulterium*, nam erat sermo de solutione quoad vinculum. An liceret dimittere, *quacumque ex causa*. Oneri subcubuit Caiet. hic. Respondeo, *sic sonare textum secundùm litteræ sensum*, non audeo, &c. *intelligo igitur ex hac IesuChristi lege licitũ esse Christiano dimittere vxorem ob fornicationem carnalem, & posse ducere aliam vxorem. Soluta semper Ecclesiæ definitione*. Secus de fœmina, non est par ratio, nam nec in veteri lege vxor poterat repudiare virũ. *Hic error* est damnatus à continua traditione Ecclesiæ, & Apost. 1. Co-

Corinth. 7. vers. 10. & Rom. 7. vers. 1. & à Trident. sess. 24. Can. 6 & 7. & *ad argumentũ* à contrario petitum. Acquiescunt aliqui, cum limitatione, *pro lege veteri*. Displicet, quia hic clare Christus Moysis dimissionem, & libellum damnat adulterij, dicto sancto. *Aliỳ* dimissionem fidæ, & castæ damnasse, de infida, & adultera se habuisse negatiue nil dicendo, ad arcendam inuidiam, & odium illorum hominum. *Ad rem*, & institutum Cornel. à lap. hic ex PP. Pharisæi duas quæst. propósuerunt tacite. *An liceret* dimittere vxorem ex quacumque causa? & *An illa dimissa*, & dato libello, dissolutum esset matrimoniũ? vt posset aliud inniri? & respõdit duabus. *Qui dimiserit, nisi ob fornicationem, mœchatur*, quia ista est habenda causa idonea. Secunda, *Qui dimissa vxore, aliam* ducit mœchatur. Quasi prius quæsitum esset de causa dimittendi, posterius de dissolutione. Vt aliud iniri possit. Euangelista autem dum complectitur, vna concissa responsione vtramque fit obscurus. Iuxta prouerbium. Et ita repetitione legi debet, qui dimiserit vxorem nisi ob fornicationem, & qui duxerit aliam mœchatur. Idem si dimittat castam, & inoxiam mœchatur, siue ducat aliam, siue non ducat. Quia violatur ius dimissæ ad insolubile vinculum, & perpetuum. Et Mœchia est vitium directe impugnans matrimonium.

3 August. de adulterinis cõiugijs tom. 6. totus est in probando non esse licitum contrahere cum eo, qui adulteram dimisit, & contra, & in eo quòd soluit sola mors vinculum matrimonij cap. 19. Ad 1. Corint. 7. *Mulier alligata est legi, quandiu vir eius viuit*, ergo consequẽter vir alligatus est, quandiu mulier eius viuit, *hæc alligatio facit, vt coniungi alijs sine adulterina copulatione non possint*, & cap. 13. Hæc namque alligatio non soluitur etiam per repudium, & sic *non soluit eam nisi mors coniugis, non adulterantis*, sed de corpore exeuntis. Vnde concluditur intentum, quod qui ducit alteram viuente priori, siue innocente, siue adultera, & inuerso ordine, conficiat adulterium.

Quòd *tenentur coniugati, & vxorati ad cohabitandum, ne pericula incontinentiæ vxoris sibi imputentur.* 22

1 Ex clausul. text. si præsentia Samsonis adesset vxori, fortè vererentur tradere alteri viro.

2 August. sermone de Ioseph, & Domina sua, ad Genes. 39. *Immisit oculos vxor Domini eius. Crimen Dominæ fuit, quæ malè vidit, non Ioseph, qui male videri nõ voluit*, nec in eo culpa est, quia non

non erat in potestate serui, ne videretur à Domina. *Maritus debuit cauere vxoris oculos*, benè excusauit scriptura dicens, *immisit oculos*, vxor Domini eius, in Ioseph. Discant viri cauere fœminæ vxoris, non solùm turpitudines operum, sed oculorum, ne sibi damnum imputetur.

3 Genes. 20. Caiet. ad *ecce dedi fratri tuo mille argenteos, ipse tibi velamẽ occulorum ad omnes.* Verba sunt monitoria, *vt de cætero Sara vocet Abraham, non fratrem, sed maritum*, quoniam hoc titulo, & nomine mariti, velabit oculos omnium, ne eam concupiscant. Ipse sub nomine mariti erit velamen, id est *prohibitio* concupiscentiæ, his qui tecum sunt, & alijs. *Præsentia adhuc sub voce mariti prohibebit*, quod appellatio sororis, & fratris suasit, & de eo grauiter conquæritur Rex, quòd dixerit sororem, non vxorem. *Accipe vxorem tuã & vade.* Ille verò calide exhibuit nomen mariti, quo cohiberet aliorum appetitiones.

Quòd *viri præsentia ad vxorem, vt vigil vitat grauia crimina vxoris.* 23

1 Ex claus. text. Præsentia Samsonis vitaret adulteria cõiugis, illo viuente commissa.

2 Genes. 2. Adam sibi coniugio copulauit Euam in paradiso. *Hoc nũc os ex ossibus, &c. & adhærebit vxori*, ac si non solũ exigeret vinculum animorum, sed etiam indistantiam locorum. Oleaster ad Genes. 3. *Sed serpens erat calidior, &c. qua dixit ad mulierem.* Non auderet forte præsente viro. *Admonet hic locus dicendos, non homines, sed serpẽtes, qui miris modis conantur* ad peccata proximos trahere. Et fœminas ne maritis insciis, & absentibus, habere colloquium, cum aliquo, præsertim cum astutis, & calidis, sed cognoscant se facile posse decipi.

3 Cant. 2. vbi *sponsus* diligens specula sponsæ. *Ipse stat poterit pariete nostrũ respiciens per fenestras, prospiciens, per cancellos.* Vbi PP. exhortantur sponsos agant excubias, & vigiliam, vt sciant, *quid agitur domi*, & vitent ac remoueãt noxia. Vt à castro militares excubiæ, ne inuadatur classe hostili. Cum adhuc fratres sponsæ vigilias in eo insumant circa sororem in die qua alloquenda est, admittendo sibi spõsum, *si murus ædificemus propugnacula, &c.* Omni custodia custodiri debet, nulla superfluit.

Quòd *viro coniugato non recedendum ab vxore, adhuc ad licita, & orationem, nisi brebi tempore.*

1 Ex claus. text. vbi digressio Samsonis, adhuc ad licitam inuisionem parentum intulit tot damna relata.

2 Apost. 1. Corint. 7. Propter *fornicationem vnusquisque suã*

vxo-

vxorem habeat, & vnaquæque suũ virum habeat. Caiet. *non dicit propter generationem, sed propter fornicationes vitandas. Nolite fraudare nisi forte ex consensu ad tempus*, & vt vacetis orationi: Ne subtrahatis debitum inuicem, *Peccatum enim iniustitiæ est negare debitum siue fraude, siue fingendo excusationem, siue aperte negando*, An nõn licet aliquando subtrahere? Ita. *Ex consensu ad tempus* ad vacandum orationi. *Collige tres conditiones appositas vacationi ab vsu coniugij.* Prima est ex cõsensu, secunda ad brebe tempus, tertia vt vacent ieiunio, & orationi, & rursum, *reuertimini in id ipsum, ne tentet vos Sathanas*, completo brebi tempore, iterum redeant ad vsum coniugij.

3 Exod. 3. *Vadam, & videbo visionem hanc magnam*, cum pasceret oues Ietro soceri sui, *relicta vxore* in ciuitate, relicto grege soceri ad hoc, *Solue calceamenta de pedibus*, ita illi coniuncta. Non sat reliquisse ciuitatem, quim vxorem, & calceamenta illi ita coniuncta? Oleaster hic, *Non prohibet mysteria, sed vult, vt reuerenter ea tractent, & ideo præcipit soluere calceamenta.* PP. aliter *pro sola visione, & colloquio cum Deo vxorem*, & alia coniuncta nobis dimittẽda. Sic Abraham insciã, & relicta vxore perexit ad litandum Deo filium. Et ille pater familias reliquit domum, vxorem, cum familia, vt oratione peteret panem à vicino. Imò male audit, ille qui vocatus ad principem excusatur, *vxorem duxi non possum ire.* Cum Angeli Abrahæ hospites passi sint, relinqui domum, & vxorem, vt afferret ille è grege edum ad illos indulgendos, & diliciandos.

Quòd *illicita coniunctio alieni cum vxorata parit disiunctionem sempiternam inter coniugatos.*

1 Ex clauf. text. vbi propter illicitam coniunctionem adulterij cum vxore Samsonis, in vindictam incendit segetes, discordias, & prælia intulit Philisteę nationi.

2 Historia 2. Reg 13. *Amon prænalens viribus oppressit eam* (Thamar) *& cubauit cum ea.* Absalon scito euentu dissimulauit, & concepta vindicta, distulit ad bienium. Dauid Pater *contristatus est valde.* Non est loquutus Absalon ad Amon, *nec bonum, nec malum, oderat enim Absalon Amon*, eo quod violasset Thamar sororem suam. *Factum est autem post tempus bienij*, prætextu tondendi oues. Absalon inuitauit patrem Regem Dauid, & recusante, rogauit, *veniat obsecro saltim Amon frater meus.* Et facto conuiuio regali, præuenit famulos: *Observate, cum dixero vobis percutite eum, interficite, nolite timere. Ego enim sum qui præcipio vobis. Fecerunt sicut præcepit*

cipit *Absalon, & fugerunt.* Et inde subortus planctus in domo Regis, & discordiæ in Regno. Aufugit autem Absalon in refugiũ Regis Gesur. Ad hæc Abulen, *Debuisset Dauid Amnonem ob stuprum punire. Quare iusto Dei iudicio inde sequuta sunt tot tantaque mala Dauidi, & Amnoni.* Nam hic occisus, ille regnum pene cum vita amisit. Absalomo vlciscente violationem sororis suæ.

3 Similis est præcedenti Historia 34. Genes. vbi cum intuitus esset Princeps Sychem Dinam, vi oppressit virginem. Cui data est in vxorem, sub lege accipiendæ religionis circuncisionis virorum. *Responderunt filij Iacob* (ad Sychem, & Patrem eius) *in dolo, seuientes ob stuprum sororis.* Oleaster *admonet locus non fidendum illi*, cui fuisti iniurius. Accepta conditione circuncidẽdi masculos. *Ecce die 3. quando grauissimus vulnerum dolor est, duo filij Iacob, Simon, & Leui fratres Dinæ cũ gladijs ingressi sunt vrbem, interfectisque omnibus masculis, Hemor, & Sichem pariter necauerunt, tollentes Dinã de domo Sichem sororem suam, & cæteri filij Iacob irruerunt, & depopulati sunt vrbem in vltionem stupri.* Quo circa Oleaster *ad acceperunt gladios suos.* Qui tam pauci invitam, audatiores fiunt ad iniuriam vindicandam, quos magis lædit opprobrium.

Quòd *ille Doctor inter Doctores Sam. sonicus, qui ligat argumentis vulpes hæreticos, & igne succendit.*

25

1 Ex clauss. text vbi Samson vulpinauit contra vulpes, dum vulpibus dimissis, facibus ignis alligatis incendit segetes, & intulit damna infestãtibus Philistæis.

2 Apost. 1. Corint. 3. *Sapientia mundi stultitia est apud Deum scriptum est enim, qui apprehendit sapientes in astutia eorum.* Theophil. hic. *Tanquam stultos apprehendit Deus sapientes. Tanquam stulti, & insipientes arguuntur. In calliditate, qua putabant se omnia nouisse, nil scire inuenti sunt.* Piscatoribus, & coriarijs in rebus necessarijs rudiores, & aggrestiores.

3 Euseb. Emiss. Dam. 13. post Pent. ad Matth. 22. *Pharisæi consilium inierunt, vt caperent Iesum in sermone. Magister scimus, quia verax es. Licet censum dare Cæsari,* an nõ? ea calliditate tentant, *vt si dicat potius Deo, & templo quam Cesari.* Herodiani raperent, & ad iudicem traherẽt, & accusarent. Si non licere, & esse peccatum tributa soluere, arguitur, quod dedisset Petrus pro se, & illo ne scandalizaret, cũ omni essent immunes. *Cognita Iesus nequitia. Quid me tẽtatis hypocritæ?* Ostendite mihi numisma census, *in denario autem scripta erat Cæsaris nomen, & imago.* Et ait, *cuius est hæc imago, &*

super

supe: scripto. Respōderunt Cæ *saris.* Optime. *Ex tuo te iudicasti, reddite ergo quæ sunt Cæsaris Cæsari, & quæ sunt Dei Deo. Vide* (inquit Eusebi.) *ipsa sua responsione eos ligat. Vide quomodo* Dei sapientia comprehendat sapientes in astutia eorum. *Ipsi testes sunt, esse Cæsaris, quod ostendunt.* Quod Cæsaris est, quare Cæsari non reddatur? *Imò quare Cesari tollant, quod Cæsaris esse fatentur.*

4 Ad idem argumentū adduci potsūt dicta supra. *Cum cō uicit arguentes de sanato in Sabbato,* Syllogismo sub num. 17. *& Danielis conuincentis,* falsi, & inusti iudices Susanæ sub num. 20. *& si Dauid vocat Christum Dominum,* quomodo filius eius est? quo ita co ıclusit pro diuinitate, vt *ausus sit nullus,* eum amplices interrogare.

Quòd *Ars industria, & sapientia solet præstare viribus,* 25

1 Ex claus. text. vbi, vnus homo Samson industria vulpium, tot infestabat Philistinorum vrbes, & clases.

2 Historia 1. Reg. 17. *Cumque Philistæus vidisset Dauid despexit eum. Erat enim adolescens rufus, & pulcher aspectu.* Philistęus ad Dauid. *Nūquid canis ego sum, quod venis ad me cum baculo. Dauid ad Philistæum. Tu venis ad me cum gladio, & hasta, & clypeo, ego venio ad te in nomine Domini.* Tulit vnum lapidem, & percussit Philistæū. *Præualuit in funda, & lapide in nomine Domini.* Vbi lapis impulsu fundæ, & arte illius dimissus, præualuit viribus Gigātis. Dauid lapidem funda dimisit. Deus direxit illū in scopum frontis. Aptius Chrisost. homil. de Dauid, & Goliat. *Tu venis ad me fidens in gladio, ego in Deo, tu terrenis dimicas, ego cœlestibus pugno. Tu venis in armorū virtute, ego in potētissimo genitore. Dei est enim hæc pugna, Dei erit, & ipsa victoria.*

3 Celebris quinque panum multiplicatio in Christi manibus 5000. hominum alimentum, quæ quinq; famelicis sufficiens. *Quid inter tantos?* accepit Iesus, & aspectus in cœlum, *benedixit, fregit, & dedit. Et sustulerant duodecim cophinos fragmentorum plenos.* Eusch. Emiss. hic Dom. 4. in Q. *benedixit pānes, vt sua benedictione multiplicātur, sic à principio Dominus benedixit* seminibus, cuius benedictione accepta semel, fructificare non cessant. *Panes intra vnum cophinum poni potuissent,* antequā manducarent, duodecim sunt iam cophini reliquiarum. *Quid facit Deus, quod mirabile non sit?* Cur mirabile non est, quòd *singulis annis, ex pauco semine, nobis replet horrea.* Exiguum alimentum quinque panes, sed virtus, & industria Dei superat famen, quinque millia essurientium.

Quòd *magna semper cura adhibenda,*

in

in cauendis adhuc vulpeculis hæreticorum, inferentibus damnum in seggetes Ecclesiæ.

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon adiutorio Angelorum collegit vulpes, & exulauit ardentibus facibus à ditionibus Iſraelitarum, ad regiones Philiſtinorum.

2 Auguſt. de temp. ſerm. 101. De Samſone, ad Cant. 2. *Capite nobis vulpes paruulas, quæ demoliuntur vineas.* Videamus myſterium, *Quid fecerit Samſon, offenſus* (quod vxor diuiſionem ſui fecit) tradendo ſe duobus maritis. Sicut hæretici, qui Eccleſiam diuiſerunt vxorem Domini voluerunt ſibi abducere, cæpit vulpes, adulteram, adulterantes vxorem, *de quibus* Cant. 2. *Capite nobis vulpes paruulas exterminantes vineas.* Quid eſt capite? *Confutate, conuincite,* ne exterminentur Eccleſiaſticę vineæ. *Quid eſt aliud capere vulpes, niſi hæreticos reuincere diuinæ legis authoritate, & teſtimonijs* Sanctarum Scripturarum, velut vinculis alligare. Vulpes capit, hæreticos, qui prima habent blanda, & deceptoria opera, vt conſumant, eos, qui ſuis ſeductioribus acquieſcunt.

3 Hiſtoria Exodi 1. quod Rex timuit paruulos Hebræorum, & edicto accipi, & ſubmergi in flumen præcepit. Cum obſtetricibus dixerit. *Quãdo obſtetricabitis Hebræas, ſi maſculus fuerit interficite eum* inter genua matris, *ſi fœmina reſeruate.* Sibi potius cauere debebat de grãdibus adultioribus. *Conſidera quæſo, quibus armis mœnijs, militibus, voluerit ocurrere futuro bello,* qui polire debuit arma, cingere menijs ciuitates, parare milites, & globos, *in vnum facimus de nccandis pueris coniurat.* Nec innatos, ſi videbat in dies multiplicari, & ſi non præſentem claſſem timebat, futuram adultiorum formidabat, & à radice prę uenit damnum. Ad huius inſtar ille Barbarus capit infantes illos tres, nolentes dare cultum ſacrum ſtatuæ aureæ, & inijcit in fornacem. Horum more, legenda ſanctorum infantium, inſignis Magiſtris Iuſti, & Paſtoris, ærarij quidem (abſit adulatio) totius nobilitatis, religionis, & ſapientię, nulli ſecundi, *qui ſupra ætatem, ſupra vires, abiectis tabellis, in domum Dæciani properant, & publice Chriſtianos eſſe profitentur.* Quos cum vt pueros vapulari, nec ab ea mente detcrreri aduertiſſet: veritus, ne ſi eius crudelitas, in certamen deſcenderet, à pueris vinceretur, *extra opidum abripi iubet, & ſilentio occidi.* Ne ſanguis ille martyrum eſſet ſemen Chriſtianorum. O gloria ciuitatis Complutenſis, quæ eximios milites fidei aluiſti Domino. Quod ergo

gò Deus suæ omnipotentiæ do no assequitur per paruulos, id astucia hæreticalis aggreditur, simulata religione vulpina, quos capi inuigilet Sacta Inquisitio, ne damnum inferant in seggetes Ecclesiæ, in prodigijs, & signis mendatibus, præcursores Antechristi.

Quòd *vna sola mulier venusta est causa ruinæ, & infœlicitatis vnius familiæ, totius generis, & regni.* 26

1 Ex claus. text. vbi ob iniuriam ilatam à coniuge, admittente alterum maritum, iniuria lacessitus: igne cremata est cum parentibus à suis, & à Samsone segetes Philistinorum.

2 Ex positis sub numerò proximo 23. vbi, quot lites, discordias, ruinas, domus, generis, & ciuitatis pariat, illicita coniunctio cum fœmina Thamar, Dina, &c. inseruiat pro isto, ne ampliemus, & actum agamus. Addi potest à contrario quàm fœlices exitus, suæ ciuitatis familiæ, & totius gentis, attulerit vna mulier optima Heroina Iuditha, ex proxime dictis. *Tu gloria Israel*, tu letitia populi nosti, quia viriliter feciſti, & post virum tuum alterum non noueris.

Quòd *mulier adultera viua cremenda erat.* 26

1 Ex claus. text. vbi vxor Samsonis adulterij pœnas luit igne.

2 Historia Genes. 38. Dei adultera Thamar, quæ violauit sponsalia Selæ, filio Iudæ in cõcubitu cum Iuda. *Producite, vt comburatur*, ait S. Thom. *in publico iuditio, vt iudex eam igni adiudicet.* Cornel. à lap. *Hinc patet illo prisco sæculo fuisse mortem, eam que ignis.* Deus post per Moysem iussit occidi adulteros per lapidationem. Leuit. 2. idem adulteris mulieribus per aquas maledictionis, quæ vterũ disrũperent. Num. 5. vbi latiori calamo, de varijs pœnis, quibus apud diuersas nationes puniebantur adulteræ. Et Iudic. 15. ad *Combusserunt*, tam mulierum, quàm patrem eius, addit Iosephus, *Cognatos quoque eius fuisse exhustos.*

3 Oleaster ad Genes. 20. *Pluit Dominus super Sodomam*, & Gomorram sulphur, & ignem à Domino de cœlo, & subuertit ciuitates. *Conueniens fuit pœna delicto, vt qui luxuriæ insolitæ igne flagrabant*, pisce, & igne de cœlo misis comburerentur. Sed isti quodammodo etiam adulteri, sicut adulter, qui alio quã vasse vxoris congreditur, ita Sodomitæ, quod alio, qnàm vasse naturali turpiter diffundi tur. Hic addi solet à PP. Quod non iam vita functa adulteta, sed viua cremenda erat. Adeò graue facinus adulterium, vt tali pœna esset puniendum.

Quòd *incendium lasciuiæ faminarũ*

solo

solo ignis incendio dignas pœnas lueret. 26

1 Ex clauſ. text. vbi conſtat vxorem Samſonis, adhuc à Magiſtratibus ſuis, cum parentibus, ignis ſoluiſſe pœnas.

2 Ex immediatè diſcurſu præcedenti dictis, quæ adduci poſſunt ad hoc, ne amplietur ſcriptum.

Quòd *Deus in maiori conflictu ſuorum, accurit valido ſubſidio, vt tunc ſint magis ſecuri, quo maiori auguſtiati periculo inimicorum.* 27

1 Ex clauſ. text. vbi cum Samſon in ſpelunca etiam obſideretur ab exercitu trium milliũ ſuorum, vt traderetur Philiſtæis: paſſus ligari funibus, & tradi, diſſoluit vincula, & euaſit immunis.

2 Ambroſ. lib. de Ioſeph ad illud Dan. 13. *& flens ſuſpexit in cœlum*, Suſana in agonia, dum duceretur ad ſupplicium, vt adultera, cum iudices haberet contra ſe, imò opinionem populi, omni ope humana deſtituta, *excitauit Dominus ſpiritum Danielis*, qui conuicit iudices iniquitatis, & eam eripuit multante illos pœna talionis. *Suſanam taxat in iudicio, melius loquta eſt oraculo, & ideo prophetæ meruit defenſionem, quæ propriæ vocis non quæſiuit auxilium.*

3 Act. 12. *Cum autem produxiſſet eum eſſet Herodes, in ipſa nocte erat Petrus dormiens inter duos milites, vinctus catenis, &c. & ecce Angelus Domini aſtitit. Surge velociter, & ceciderunt catenæ, & diſceſſit.* Et *Petrus nunc ſcio verè, quia miſſit Dominus Angelum & eripuit me de manu Herodis, & de omni ſpectatione plebis Iudæorum.* Cum eſſet in conflictu, vt vulgo (en la capilla) ad ſupliciũ die ſequenti; expectante plebe, eripit Deus per Angelũ. Quid mirum? dormire poteſt, ſi Deus pro illo vigilat. Caiet. *Hinc clarè patet, quantum valeat oratio Eccleſiæ pro Pontifice in carcere. Dixerat quod neſciebat, quòd verum eſſet, quod fiebat per Angelum. Exiſtimabat ſe viſum videre, propterea dicit ad ſe reuerſus ex illa alienatione, erant enim ſenſus tanquam ligati.* Simile accidit Danieli, quem Deus non eripuit, ne imponeretur teſtimonium, ne mitteretur in lacum leonũ, ne exciperetur ab illis, ſed ne dilaceraretur, *concluſit ora leonum*, vt non timeant præſentem periculo, & ſpererẽt in eo, dum arripiuntur, inde fœliciter euaſuros.

Quòd *excelſi animi eſt pro vita, & bono reipublicæ, exponere periculo propriam.* 27

1 Ex clauſ. text. Vbi Samſonici animi fuit, pro incolumitate ſuorũ, pati, ligari, & tradi Philiſtæis.

2 Hiſt. 1. Reg. 17. *Quid dabitur viro, qui percuſerit Philiſtæũ, & abſtulerit opprobriũ de vniuerſo Iſrael?* Cum autẽ agitur de præ-

lio cũ Regẽ, nec retificat mercedem, nec verbum de illa solũ dicit, *Vadam, & auferam opprobrium populi*, & Rex ad Dauid, *vade, & Dominus sit tecum*. Chrisost. homil. de Dauid. Laudibus exaltans. *Tu formidanti populo, & Goliæ sæuitiam molienti, dum fortissimè geris, victoriã de hoste Dei, populo tradidisti.*

3 Hist. Iudic. 15. vbi Ozias Princeps populi Israel, inter laudes Iudithæ reuertenti victori, & deferenti caput Holofernis. *Quia hodie nomen tuum, ita magnificauit, vt non recedat laus tua de ore hominum, &c. pro quibus non pepercisti animæ tuæ propter angustias, & tribulationem generis tui, sed subenisti ruinæ ante conspectum Dei nostri. Tu gloria Hierusalem.* Tu lætitia popnli nostri. Vatabl. *Tu excellentia* Ieroso!ymitanorum. *Tu præclara generis* nostri gloriatio. Hieron. præfatione in Iudith. *Triumphali laude eam præconijs declarante*, ei virtutem talem tribuit (Deus) vt inuictum omnibus, vinceret, *& insuperabilem superaret*. Pro suis vitam exposuit, victum Olofernem trucidauit. *Tanti dux fœmina facti.*

Quòd *victoria parta ab inimicis, confugiendum est ad speluncam, & Ecclesiam Petri, ad spolia Deo reddenda, in gratiarum actionem.* 27

1 Ex claus. text. vbi Samson confugit in speluncam Etham, non timidus, sed gratus Deo, illi referens gloriam.

2 Historia 1. Reg. 17. *Assumens Dauid caput Philistæi, attulit illud in Hierusalẽ, arma verò eius posuit in tabernaculo suo.* Primò tulit caput in castra, & vrbes, & tandem in Hierusalẽ, caput regni. Gladiũ Goliat sacrauit Deo, & in eius tabernaculo reposuit, vt esset victoriæ huius, acceptæ à Deo perenne monumentũ Basil. Seleu. orat. 15. *Sectũ caput cum sectore gladio victoriæ parenti donatũ offert*, & cum quo deuicerat, Deo offert, & ei victoriam arrogat. Rogarẽ, an excellẽtius libare aquã sitibundum Dño, vel spolium militare?

3 Histor. Iudith 13. vers. 19. *Ecce caput Olofernis, Principis militiæ asiriorum. Per manum fœminæ percussit illũ Dominus Deus noster*, & 14. v. 1. *Suspendite caput super muros*, & 16. v. *vniuersa vasa bellica Olofernis obtulit in anathema oblimonis.* Heronia, & bellona egregia caput, & arma belli ea illi ex spolio donata, obtulit, & dicauit Deo, ciuitatis muro in memoriale sempiternum. S. Ambros. lib. de viduis. *Hoc opus non dexteræ tantum, sed maiora trophæa sapientiæ. Nam manu vicit Olofernem solum, consilio vicit exercitum.* Suspenso enim capite Olofernis suorum erexit animos, & fregit hostium, eoque cęsi sunt, & fugati, & fecit viros fortiores.

Quis scholæ filius hic nõ ce-

le-

bret glorioſa trophæa Mauro-rum, quæ in Orami obſidione eminentiſsimus, & ſanctiſsimus inter diuos merito recẽſendus, Cardinalis Ximenius Ciſneros, qui (alter Ioſue) fecit ſtare Solẽ, abſtulit prædam, vexilla, tubas militares, & claues Orami; vt in ſacello D. Ildephonſi ſuſpenſa, quæ Dei erant, Deo in memoriale redderentur. Et illuſtriſſima Academia tanto erectore, & fundatore glorioſa, annuis ſolemnijs recolens æternæ memoriæ mandaret.

Quòd *Deus non eget copijs militarib⁹ ad victorias inſignes comparandas, ſed minimis aggreditur, & aſſequitur glorioſe magna.* 28

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon ſola maxilla aſini, ſine alio inſtrumẽto militari, occidit mille Philiſtæos.

2 Hiſtoria Exod. 8. ad Pharaonem durum emoliendũ, *conſtituit Deus Moyſem, Deum Pharaonis*, & virgam miraculoſam comiſſus, varijs miraculis, aquarũ in ſanguinem, ranarum, &c. inuaſſus: Maleficis *ſimiliter* facientibus non conuincebatur, adeſſe omnipotẽtiã Dei, & cõgerit claſem *ciniphum*, infeſtiſsimorũ, & moleſtiſsimorũ (niſi velis pediculorum) & cum Magi conarẽtur producere ſimiles, vt educerent ciniphes à terra *non potuerunt*, & exclamarunt. *Digitus Dei eſt hic*, & cũ iterũ induraretur, inuehitur alio exercitu muſcarũ & aquieuit, victus his beſtiolis. Oleaſter expendit illud, *digitus Dei eſt*, ſi Magi virtute diaboli ca operati ſunt maiora, cur non ita minutiſsima? quæ aliàs virtute naturali poſsẽt. In hoc eſt manifeſta Dei omnipotentia? ita. Nã *fuit demõ impeditus à Domino, vt cognoſceret Dei potẽtiã*, quæ dũ minutiſsimis aſſequitur magnalia, non exiguam illorum virtutem, ſed infinitam ſuam manifeſtat. Nec vult De⁹ ſibi inferri bellum pigmæis, ſicut ipſe infert muſcis Pharaonibus.

3 Ambroſ. ſerm. 88. ad illud 1. Reg. 17. Saulis ad Dauid. *Nõ vales reſiſtere Philiſtæo, quia puer es: Hic autem vir bellator eſt, &c.* Quid pueri pigmei ad gigantẽ? O Rex indiſcrete, ætate quidẽ hic adoleſcens, ſed iam accingit gladiũ ad latus in Dei armamentario. *Videbatur inermis, ſed gladio diuinitatis erat armatus.* Nã puerorũ agmine gerit Deus militiã. Vnum paruulum ſtatuit in medio, iam prouectorum, & illo diſcutit, & reijcit illorum tumorẽ & arrogantiã, vt *niſi conuerti fuerint*, vt paruulus, nõ eſſent ingreſſuri regnum cœlorum, *Infirma mundi eligit*, vt cõfundat fortia, fœminam delicatam Iuditham, vt abſcindat caput Olofernis, & cogat ad fugam copias militares. S. Didaci humilitatem iuxta Academiam ad inflatos, & tumidos exulandos.

Quôd *plus valet vnus, quam mille si Spiritu Dei dirigatur, & moueatur.* 29

1 Ex claus. tex. Vbi Samson maxilla tecluso alio instrumento, sed tantum nutu Dei agitata deleuit totos Philistæos.

2 Hist. 2. Reg. 17. vers. 40. *Tulit baculum suum, & elegit quinque limpidissimos lapides de torrente.* Et misit in perã pastoralẽ, & fundam *manu tulit, & processit. Tulitque vnum lapidem,* & fundam iecit, & percussit Philistæũ in fronte. Hugo minus aptè censuit fuisse Goliam prostratum à Dauide *lapidibus ternis*: aptius August. homil. 31 inter 50. *lapide veniente* deiectus est. Sed cur potius vno quam alijs quatuor? Philo, seu Pseudophilo, in antiqu. Bibl. *D. uidé insiripsisse nomẽ Domini in lapide*, quo percussit Goliat: vnde Ecclesia, in funda, & lapide in nomine Domini, ille vnus præferendus cæteris, quia virtute Dei regebatur, vt sagitta in scopum, frontem.

3 Chrisost. homil. de Dauid & Saule. ad illud 1. Reg. 11. *Percussit Saul mille, & Dauid decem millia.* Quo fœminæ elegantes præcinebant ei, victor, Dauidi reuertenti à prælio cæsso Goliat Tulit egrè Saul præcellentiã illius supra se, & præ ira in decorauit, dicendo, *Dauid dederunt 10. millia, & mihi mille dederũt.* Sat Rex adulatus dicendo, percussit Saul mille, cum illa victoria tota deberetur Dauidi, qui cęsso vno Goliat percussit millia hostiũ, & amplius. Totã sibi arogare volebat, & detrahi ab vno, qui aggressus est, *in nomine Domini exercituũ*, ac si esset vn⁹ phalanges milliũ, verè occidit vnus pro mille, vnũ Goliat pro mille militibus, *occidendo Goliam percusserat decẽ milia hostium, & amplius.* Meritò igitur sic victoria acclamatur. Sicut & Aureliani Imperatoris, qui sua manu, & gladio occidit 48. armatas, & diebus diuersis vltra 950. diefesto à pueris saltitãtib⁹. *Vn⁹ homo ille, mille mille viuat, qui mille occidit.* Ita apud Theoc'ium scriptorẽ temp. Cesareor. apud vopiscum in Aureliano.

Quôd *diuina virtus efficit sua facinora in talibus circunstantijs, vt probent sine tergiuersatione, Deum autorem.* 24

1 Ex claus. test. vbi insigne facinus fit maxilla, cui tribui non potest, & ita soli Deo deferri, à quo fit per illam.

2 Nissen. in Cath. D. Th. ad *ibat Iesus in ciuitatẽ Naim, & esse rebatur defunctus filius vnicus matris suæ.* In egressu defuncti, occurrit portæ ciuitatis sepeliẽdi in campo, sistit pheretrum in multitudine testiũ: venit nõ rogatus, vt à sororib⁹ Lazari, sed inopinatus, & casu. *Adolescens, tibi dico, surge.* Et resedit in pheretro defunct⁹. Vt quid in præsentia tot testiũ, eorũque comitantium

tium funerali pompa? Nec vocatus, nec rogatus? *Ne diceret aliquis, quòd mortuus non erat, Iam defuncto obiare fatetur Euangelista.*

3 Historia Lucæ 22. Petrus *percussit seruum Pontificis, & amputauit auriculam eius dexteram.* Et Iesus ait, *Sinite, &c. & cum tetigisset auriculam eius, sanauit eum.* Vbi in præsentia principũ & Sacerdotum, & vniuersæ cohortis. Reprehendit facinus egregium Petri, in fauorem Magistri, & conuersus ad seruum insolentissimum, qui non solùm deauricnlari merebatur, sed decapitari, abscisam iam aurẽ, & inanimem iunxit capiti, & sanauit. O benignitas! cum de effugio cogitare debebat intentus est in resciſſa auricula consuenda capiti? vt Dei potentiã suadeat miraculo irrefragabili, nec conuincitur turba, vt ab incepto desistat. *Iesus itaque manifestum miraculum facit, & auriculam sanans miraculo, patientiam suam ostendens, & per miraculum inducens eos, vt ab insania desistant.* His adiungi possunt supra allata de adolescente occidente Philistæum lapide, & de Iuditha Heroina audente in decapitandum Olophernem, quæ euidens inditium virtutis diuinæ facinora perficientis, per instrumenta, quæ non tibi, sed virtuti diuinæ referenda demonstraret.

Quôd *cauẽda sit arrogãtia in nostris operibus, nã cum opus sit ab vtroq; Deo & nobis, vtri deferẽda sit negatio influxus? nobis potiꝰ, quã Deo.* 30

1 Ex clauſ. text. Samsonis impulsu, & motione percussiua maxillæ motæ ab illo facinus est patratum, & quod vtrumq; facinus fuit, sibi defert Samson deleui in maxilla, ac si ipsa non deleuisset immediatius.

2 Caiet. ad 1. Corint. 15. Apostolus, *Abundantius omnibus laborani, non ego, sed gratia Dei mecum.* Si ab ipso prodijt Labor in Euangelio, & cum excessu ad alios Apostolos, cur negat sibi laborẽ, ab ipso prodeuntẽ, quasi ab ipso nõ prodierit? est à gratia, & ab illo alio opus bonum, sed si alterutri negari posset in fluxus, sibi negandum, qui non virtute sua, sed gratiæ impendit operas. *Corrigit Paulus, quod dixerat, ego laborani, quasi sibi ipsi arrogans, quod laborauerat plus alijs in Euãgelio, corrigit attribuendo, nõ sib: secundũ ſ. ipsum, sed gratiæ Dei mecũ, quæ est cum eo, faciens illũ laborare. Et dixit, quæ est mecũ, non quæ est in me, vt intelligamus gratiã Dei efficere opera, cum homo cooperatur. Hominis cooperantis est dicere gratia Dei mecũ, otiosus, & vacans potest dicere gratia Dei, quæ est in me.* Vbi instari potuit Thomista constitui gratiã efficacem habitudine ad cooperationem, cum posset esse gratia efficax secundum se in ali-

quo ōtians, & vacua, sed ad scholasticos scholastica.

3 Hist. Genes. 12. *Egredere de terra tua, &c. faciam que te in gentem magnam, atque in te benedicentur omnes cognationes terræ, & in semine tuo benedicantur, &c.* & cap. 22. *Tolle filium tuum, quē diligis Isaac, &c.* & ibi offeres in holocaustum, vt in puluere redactus, nil illius supestiret. Oleaster ad hæc: *Putas non pulsasse senis animum, vt Deum reputaret mendacem, qui in Isaac vocaturum semen promisserat, & nunc præcipiebat immolare. An hæ promissiones tuæ, vt des, quæ non petimus, vt post quam dederis, tam facile auferas? Filium immolare disponit, sciens vt inquit* Paulus, *quod à mortuis posset resuscitare.* Vbi docet simus maiori animo, scientes, quòd qui tentat solet dare vires ad superandam tentationem. Vbi ex natura defuncti sperari non potest gignenda proles, bene ex suscitati, vt vtrique respōdeat, sed si cui sit desperanda, sane filio occidendo, quam gratiæ suscitandi à mortuis. Vt ab vtroque prolificatio, & dilatatio seminis Abrahami. Sed absit à defuncto arrogantia, dum spes prolificandi initur gratiæ suscitationis.

Quòd *Deus sæpe talenta confert ad negotiandū, & ignauia nostra, otiosa sine lucro retinentur.* 30

1 Ex clausi. tex. vbi Maxilla datà Samsoni solicita occisioni Philistinorū, instrumēta alia otiosa damnat inanime instrumētū, quòd Dño. nō atulit lucrū.

2 Lyranus ad Apocalypsi 3. *Ecce ego sto ad ostium, & pulso, si quis audierit vocem meam, & aperuerit mihi ianuam, introibo ad illum, & cœnabo cum eo, & ipse mecum.* Vbi Deus vult nos attentos vocationi suæ, & gratię admonenti, vt non sibi, sed ignauiæ nostræ imputetur otiositas, & carentia effectus, nostri consensus. *Pulso ad bonum supernaturale, si quis audierit vocē meā, consentiendo monitioni meæ, & aperuerit mihi ianuam, intrabo ad illum per gratiam gratum facientē, & cœdabo cum eo, & ipse mecum.* Vbi satis insinuatur vtriusque influxus, & operatio in bonum opus, quod non Dei solius, sed Gratiæ Dei, & hominis, illi cooperantis, vt reddi possit efficax, aut inefficax, in actu secundo, vt ignauia nostra reddatur sine fructu, effectu, lucro. Iuxta Triden. sess. 6. cap. 5. *vt qui auersi erant à Deo, per eius excitantem, & adiuuantem gratiam, eidem gratiæ liberè assentiendo, & cooperando, ad suam iustificationem disponantur.* Est enim ex se gratia huiusmodi, quasi indifferens, vt fiat, aut non fiat efficax, inspecta hominis cooperatione, vt sine ea, sine suo fine, & lucro sit defraudata.

3 Matth. 11. Christus aptissimè. *Vè tibi Bethsaida. Vè tibi*

Co-

Corozaim. Quid tanti excidij,& doloris causa? Nam eadem auxilia, signa, & miracula, ibi operata inaniter, & in vacuum sine subsequuta pœnitentia,alibi facta,reddi possent efficatia, cum fructu,& lucro, pœnitentiæ. *Quæ si in Tyro,& Sydone factæ essent virtutes, quæ factæ sunt in vobis, olim in cilicio, & cinere pœnitentiam egissent.* Tyrij enim, & Sydonij illa non reliquissent otiari,& fraudari fructu,& pœnitentia. Idem intétum sequuntur plures PP. noster Cyrill. lib. 11. in Ioann. cap. 21. cum eadem præsentia, doctrina Christi, & auxilio Apostoli, cum ea perseuerarunt, Iudas non perseuerauit. August. autem libro 6. contra Pagan. quæst. 2. Cur Christus non vocauit antea Paul. Matthæum, Magdal? Nam *antea non erat obtemperaturi.* Vt idem non solùm respectu diuersorum, sed eiusdem pro diuersis occasionibus,reddi possit efficax, aut inefficax, cum effectu,aut sine illo, vt non habere stet per ignauiam nostram, quod non accideret, si gratia ex se, & ab intrinseco sine nostra cooperatione esset efficax. Et ob id exhortatur Apostolus ad Corinth 6. *Ne in vacuum gratiam Dei recipiatis*, quod ineptum esset, nisi sufficiens impelens in consensum, effectu vacuari non posset. Ob id Greg. 7. Moral. cap. 13. ad Psal. 2. 3. *Quis ascendet, &c. Qui non accepit in vano animam suam.* Qui radicale principium operationum, non sinit otiari, & reddi vanum impulsum in operationem vitalem. *Ille in vanum accipit, qui sola præsentia cogitans, non attendit* futura, non respicet vltimum finem. Ita talentum gratiæ negotiatiuum, & lucratiuum, sine negatio; & lucro boni operis, in vanum accipitur, si nõ conectitur operatio. Ex quo caueri debet, ne talentum dignitas, officium, cathedra prauo vsu inanis, & sine fructu arbor reddatur, intemperie nostra.

Quòd *Dei est quidquid boni fit ope,& virtute Dei.*

1 Ex clauss. text. vbi in maxilla, & virtute illius, collatæ à Deo, dicitur factum insigne facimus, delendi, mille Philistæos. Vt in Deum sit originaliter refundendum, quidquid boni per nos operandum.

2 Rom. 9. *Non est volentis, neque currentis, sed miserentis est Dei.* Vbi Augustin. tomo 3. in Enchir. ad Laurent. cap. 32. subtilius in his, quæ ad gratiam pertinent, Ne liberum arbitrium glorietur, vt ab ipso incipiat meritũ, nam Deus est, qui operatur in nobis, primã bonam voluntatem, igitur

non volentis, neque currentis, sed miserentis est Dei. Sed cum opus bonum sit ab vtroque, vt nec solius diuinę misericordię, nec solius liberi arbitrij, vt non sufficiat sola miseriaordia Dei, si non sit etiam voluntas hominis. *Si ergo rectè dicitur* (inquit grandis) *est Dei miserentis, quia id voluntas hominis sola non implet, cur non è cõtrario, non Dei miserentis, sed volentis est hominis, quia id misericordia Dei sola non implet?* Nullus dicere audibit, non est Dei miserentis, sed hominis volentis, *vt totum Deo detur, qui hominis voluntatem præparat,* & adiuuat, nolentem præuenit, vt vellit, volentem subsequitur ne frustra vellit.

3 August. t. 2. in quæst. Hilarij epist. 89. quæst. 2. Ad 1. ad Chor. 4. *Quid habes, quod non accepisti? Si autem accepisti, quid gloriaris, quasi non acceperis.* Vbi astruit non sufficere liberum arbitriũ ad implenda præcepta si nõ adiuuetur. Opus est enim medico male se habentibus, & venit vocare peccatores, iustos dixit sanos, peccatores, egrotos. *Non itaque de suis viribus præsumat egrotus, quia in virtute multitudinis suæ non erit salus.* Ne sit sicut phreneticus, qui se sanum putat, vt non quærat medicum. Desinant insanire, *non respuant adiutorium*, sicut egrotus baculum, aut seruum, cui innitatur ad gressus. *Sed nisi accepisset, quid haberet voluntas?* Quid habes, quod non accepisti, si autem accepisti, quid gloriaris, quasi non acceperis? *Hoc autem dictum, vt qui gloriatur non in se ipso, sed in Domino glorietur.* Et qui non habet vnde glorietur, non sperret à se ipso, sed præcetur Dominum, derige me secundum verbum tuum. *Iubet Deus continentiam, & dat continentiam, iubet per legem, dat per gratiam*, non quancumque, sed illam secretam, quam nouit habituram effectum, per quam discernit à reprobo, vt ipsius sit discretio in actu primo, licet quis in virtute gratiæ se discernat in actu secundo.

4 Historia 4. Reg. 2. vbi filij Prophetarum indicarunt ad parentem suum, & nostrum Eliseum. *Ecce habitatio optima, sed aquæ pessimæ*, si non salseputras, olidæ, &c. *Egressus ad fontem misit in illum sal, & ait, sanaui aquas has, & non erit in eis vltra mors, neque sterilitas.* Vbi quod ex suo habebat aqua fontalis prauitas erat, sed ex quo sal missum salubritatem. Ambros. serm. 87. de Eliseo. *Cuitas sterilis fuit Ecclesia, vbi venit Christus cœpit esse fœcunda insperso sale Apostolis, qui sunt sal terræ,* & gratia promerita. A primi parentis lapsu natura adhuc infirma, vt sine salubri

lubri gratia, nec supernaturalia opera, nec minimum leue morale. An autem sit debitum minimum ad scholam cum agerem de gratia.

Quòd *orationes, & præces sanctorum sunt adeò validæ ad impetranda postulata, quod sint imperium, quibus Deus præstat obedientiam.* 32

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon vix ſiti præſus impendit præces, cũ ſtatim è maxilla fontem ſcaturire facit.

2 Lyran. ad 2. Paralip. 7. *Compleuitque Salomon domum Domini, & apparuit ei nocte, & ait audiui orationem tuam.* Quæ? illa cap. 6. Deus Iſrael non eſt ſimilis tui Deus in cœlo, & in terra, qui cuſtodis pactum, & miſericordiam ſeruis tuis. Quaſi auditus pacta, & leges orantis, nunc dicit ſe audiſſe, & annuiſſe orationi, & leges acceptaſſe. Si clauſero cœlũ, & pluuia non fluxerit, & præcepero locuſtæ, vt deuoret terram, & miſſero peſtilentiam in populum meum, & conuerſus populus deprecatus me fuerit, ego exaudiam de cœlo. Oculi quoque mei erunt aperti, & aures meæ erectæ ad orationem eius. Magna vis orationis petentis cum fiducia poſt dedicationem templi, vt leges, & imperia imponat Deo oculatæ inſpectionis, & auritæ auditionis, vt omnia dicta mala auertat ab orante. Imo obliget Deum, vt ſit eã ſemper expoſitum ad audiendum, & annuendum. *Id eſt paratus ero ex audire orationem*, in tempus futurum ſine determinatione.

3 Hiſtoria 3. Reg. 17. Elias ad Regem Acab. *Viuit Dominus ante cuius vultum ſto. Si erit annis his ros, & pluuia, niſi iuxta verbi oris mei.* Et cap. 18. *Vade oſtende te Acab, vt dem pluuiam ſuper faciem terræ*, vt iuxta Iacobi. 5. Elias homo erat ſimilis nobis paſsibilis, & oratione orauit, vt non pluer et ſuper terram, & non pluit annos tres, & menſes ſex & turſum orauit, & cœlum dedit pluuiam, & terra dedit fructum ſuum. Quis hic qui ita oratione claudit & aperit nubes. Nonne Deus Pater pluuiæ? Ita, ſed magna vis orationis, vt imperio, & legibus faciat Deum ſtare. Ita exclamat Euch. *In terris homo loquitur, & imperio eius cœleſtes obediunt poteſtates.* Ad idem illud Ioſuæ. *Obediente Deo* voci hominis.

Quòd *Deus ne deficiat in neceſſarijs ſuis, non dubitabit edere miracula, cum naturæ deficiunt ſubſidia.* 32

1 Ex clauſ. text. nam vbi non affuit fons ad ſitim extinguendam Samſonis, elicit ſcaturiginem aquæ, ex maxilla ad leuandam ſitim.

2 Hiſtoria Matth. 17. Quod cùm

cùm veniſſet Ieſus Capharnaũ, *acceſſerunt ad Petrum, qui didragma accipiebant*, & dixerunt ei. *Magiſter veſter non ſoluit didragma?* Oſtendit Ieſus Petro ipſum liberum eſſe à tributo ſoluendo cum ſuis, ipſe quippe Dominus Rex ſupremus, ipſi autem filij liberi. *Ne ſcandalizemus eos vade ad mare, mitte hamum, & piſcem, qui primus aſcenderit, tolle & aperto eius ore, inueniens ſtaterem, & da eis pro me, & te.* Nonne apud Iudam erãt loculi? illa communitas diſcipulorum tali egeſtate præmebatur, quòd ne illis neceſſaria deficerent ex bono communi, conficitur miraculum capiendi piſcem, in cuius ore eſſet illa moneta, qua ſoluitur illud tributum vegtigale, altiori demonſtrata potentia Regis exigentis. Ita Theophilact. hic. *Ne reputemur contemptores legis, da illis tributum. Vt oſtendat, quod Deus ſit, & Dominus maris, miſsit Patrum tollentem ſtaterem exore piſcis.* Vbi miraculo lo diuino vtitur, ne detrahatur neceſſarium diſcipulis.

3 Euſeb. Emiſ. ad Lucæ 7. *Adoleſcens tibi dico ſurge, & reſedit, cœpit loqui, & tradidit illum matri ſuæ.* Nonne ſufficeret ſuſcitare adoleſcentem, quim efficeret loquutionem exercere, quim tradederet matri, quæ vidua erãt? Doluit viduitatis, orpitatis mariti, & filij, & ne illi deeſſet in neceſſarijs obſequij ſocietatis, & ſubſidij operatur miraculum. Ipſius enim mæſtitiæ exigebat talem conſolatorem. *Merentium conſolator Deus.* Illorum maxime, &c.

4 Ex varijs miraculis ad idẽ intentum. Vt populo fame, & ſiti laboranti in deſerto educit aquam è petra, pluit manà de cœlo. Confluentibus populis poſt ipſum, nec habentibus, quid manducarent, ne deficerent in via, miraculo dedit Chriſtus panes. Danieli in lacu Leonũ defert per Angelum Habacuc cum prandio meſorum.

Quòd *nemini quamtumuis vili, & minimo deſperandum, ope Dei magna per ipſum patranda, ſicut per vilem maxillam, tot mira, & egregia.* 33

1 Ex clauſ. text. vbi per vile inſtrumentum maxillæ aſſini vulgaris tot facinora natus.

2 Hiſtoria Ioſeph. Iunior cæteris fratribus, miſſus in profundum ciſtenæ, venditus Madianitis, iterum ob teſtimonium impoſsitum ab vxore Putiphar, ob diuinam ſcientiam diuinandi ſomnum Pharaonis euehitur ad Principatum Regni, conſtituitur Dominus domus regiæ, vt erudiret Principes

cipes Senatores sciolos scientia adquisita, altiori sua infusa. Oleaster. ad Genes. 41. Tu eris super domum meam, & iuxta os tuum armabitur populus. Id est ad imperium tuum coniungetur, siue ad bellum, siue ad consilia. Et equitare fecit super currum secundum. Id est vehi fecit eum. Clamauerunt, coram eo genuflectente populo, quasi vocarent eum Patrem tenerum, Patrem propter sapientiam, tenerum propter iuuentutem.

3 Ex discursu in quo ostendi, Deum per minima aggredi magna. Per infantem Dauid occisionem Gigantis, per delicatam Iuditham Holophernis occisionem. Per infantem paruulum statutum in medio Phariseorum retundit arrogantiam, denique Christus ætate infantili, annorum duodecim, sedens in medio Doctorum, vt è Cathedra docebat Magister, cum ætate non appareret discipulus.

Quod *Deo ostensio necessitatis est pro petitione, in ordine ad subsidium indulgendum.* 32.

1 Ex clauf. text. vbi, non opus erat Samsoni longa inuocatione, ad impetrandum à Deo suæ sitis subsidium, Deo enim sat interior desiderij insinuatio.

2 Historia Exod. 14. Constituto ad oras maris rubri altissimis rupibus recluso, iruentibus post tergum Egyptijs, ait Moyses. *Nolite timere Dominus pugnabit pro vobis, & vos tacebitis.* Et Dominus ad Moysem, *quid clamas ad me? Loquere, vt proficiscantur.* Displicet oratio Moysis, ac si perfringeret clamore caput? Orat mente, non voce, quæ æstimatur apud Deum, vt clamorosa apud homines, non reprobatur, sed approbatur, cum ostenditur periculi euasio. August. in serm. *Cum oras, clama, non voce, sed mente. Tacentes exaudit Deus, Ieremiam in carcere, Danielem inter Leones, Tres pueros in fornace, latronem in cruce, non est locus, vbi non sit Deus.* Casiod. in Psalm. 16. Alluf. Ad *desiderium pauperum exaudiuit Dominus*, præparationem cordis eorum audiuit auris tua. *Oratio* (inquit) *illius est perfecta, cuius causa clamat.*

3 Chrisolog. serm. 28. ad illud. *Quid tibi vis faciam?* Respondit cæcus. *Domine, vt videam.* Christus. *Respice. Confestim vidit.* Non habuit vllos suæ sanitatis sollicitatores. Quia fuit oculis cæcitas. Christus iussit illum addu-

adduci ad se, vt priuatio ipsa in silentio ostensa visum impetraret. O magna pietas *ad se trahit non habentes*, vt impleat. Aptum simile. Cum vidisset Pater filij prodigi nuditatem capitis, corporis, & pedum, præcepit seruis, *cito proferte stolam primam, date anulum in manu eius, & calceamenta in pedibus eius.* Eutim. ad Lucæ 15. *O visum acutissimum vidit paratus ad susceptionem.* Indigentiæ à longe vissæ mouent diuinam pietam, sine vllis clamoribus ad subsidium.

Quòd *gloria Dei in præsenti vita est momentanea, & breuis, cum in futura sit duratura perpetuo, quam æmulantur, quantum possunt longeuitates bonorum temporalium.*

33

1 Ex clauſ. text. vbi fons ille ſcaturiens è maxilla, breui durauit vſibus Sãſonis, licet alijs diuitius dilatauerit fluenta.

2 Oleaſter ad Exod. 33. vbi Moyſes cum audiret vocem Dei, & non videret faciem, & formam loquentis, & impetraſſet, vt loqueretur ſicut amicus, cum amico inſtat, *oſtende mihi gloriam tuam.* Quam? viſionem glorioſſam futurã, faciei Chriſti in Thabor? Viſionem claram Beatam? Ita plures. Satius *gloriam, & ſplendorũ faciei aſſumptæ.* Poſteriora mea videbis faciem meam, &c. vt igitur, oſtenderet formam glorioſſam. *Cumque tranſibit gloria mea, ponam te in foramine petræ. Et protegam dextera mea, donec tranſeam,* tollam qua manum, & videbis poſteriora mea, faciem meam videre, non poteris: Petit gloriam videre permanenter adhuc formæ glorioſſæ Dei, & conceditur tranſeunter, vt manus cancellis impediatur, vt poſteriora ſola permitatur videre? Ita. *Nõ niſi vellatè, ea quæ ſunt Dei cognoſcere poſſumus, & qui ſcrutator eſt maieſtatis, opprimetur à gloria. Conſidera ad quid homo poſsit, in hac vita pertingere. Vt ſe ſe Deus homini oſtendere velit.* Imò ſi petijſſet ex tunc videre gloriam transfigurationis, cui aſtitit ex gloria, & ſplendore in corpore Chriſti citò tranſeunte cognoſcere poſſet, quòd gloria Dei, adhuc corporalis in præſenti vita eſt brebis, & trãſiens, vt anhelemus ad æternam, & perpetuam.

3 Hiſtoria Act. 12. Angelus apparuit Petro incarcerato, *& lumẽ refulſit in habitaculo carceris*, & excitato Petro, & educto de carcere, inquit textus, *& proceſſerunt vicum vnum, & continuò deſceſsit Angelus ab eo.* Glorioſa Angeli ſocietas ſemel conceſſa, tam brebi, parce largitur, quod ad vicum vnum, non ad plures diſtantias, extra ciuitatis pericula. Deſerto inuaderet angor, & timor, quod iterũ caperetur. PP. cõmuniter moralizantes. Sane fœlicitates glorioſæ in

vita

vita præsenti, vix incipiunt cũ finiunt, vix oriuntur, cum intereunt. Imò, & visio Beata sicut viatori concessa in præsenti vita, non diu durans, sed instantanea, & citò disparens. Vt anhelemus ad perpetuo duraturam.

Quòd *liberalitas Dei non donat in tum tatione, & in paruitate, sed in copia, & longauitate.* 33

1 Ex clauſ text. vbi non solum largitus est fontem è maxilla, sed diuturnans perenitate.

2 Historia Exod. 16. vbi laborantes Israelitæ fame in deserto, in amaritudine vrinam, &c. moreremur iuxta ollas, &c. Dominus, ego pluam vobis panem de cœlo. Pluit autẽ manà in maxima copia, & non vno solo die, sed 40. annis, & manà sapiebat vnicuique iuxta id quod volebat, iuxta Sapient. 16. *omne delectamentum* in se habentem, & secundùm plures importabat, non solũ sapores, sed substantiam ad appetitum comedentis, vt conuerteretur in ouum, gallinam, sacharũ ad votũ comedentis sapient. 16. ad quod quisque volebat conuertebatur Hæc ita (inquit textus) vt sciatis, quia ego Dominus. Sed colligere licebat in mensura, aut sine illa, vt seruari posset? Per singula gomor. Oleaster ad *collige*, de die in diem, Cur non Domine dedisti ad mensem, hebdomadam; sed ad singulos dies? vult Dominus ab eius prouidentia pendere, & ad id colligite ex eo singuli quantum sufficiat. Cur nõ quantum superfluat? Non est parcus Dominus, nec ad mensuram panem de cœlo descendere fecit, sed in maxima copia, voluit ex copia solùm, quæ necessaria sunt sumi. Vbi docemur quam mala sit superfluitas.

3 Historia Num. 20. *Loquimini* ad petram, & illa dabit aquas. Cumque eduxeris aquã de petra bibet omnis multitudo, & iumenta. Cumque eleuasset manum, percutiens virga bis silicem egressæ sunt aquæ largissimæ, ita vt populus biberit, & iumenta. Et cum larices, fluentaque largissimè diffluerent, non pro vno tantum, sed pro singulis, & omnibus, imò etiam bestijs, irascitur Deus, vt quid? sibi gloriæ aliquid detractum coram filijs Israel, & punit, non introducetis hos populos in terram promissam. Oleaster hic, sunt qui peccasse asseruut, quoniam non sunt loquuti ad petram sicut Dominus imperauerat ex solo verbo absque aliqua percussione dedisset largissimas. Verius. Pro eo quòd dubitando, an posset aquam è petra educere. Non me ostendistis singularem in operibus, non introducetis populos

pulos. Nisi interueniſſet aliquid incredulitatis, quam primum in verbo Dei percuteret lapidem, *laticem ex ſe copioſum emitteret iuxta verbum Domini.* Non erat opus alio modo, quã dicere. Inſequitur Apoſtolus 1. corint. 10. *Bibebant* de ſpirituali inſequente eos petra, petra autem erat Chriſtus. Ac ſi non ſat petræ dediſſe ſemel aquas largiſsimas, & in ſolitudine remanere ſine illis recedentibus, cui daret, inſequitur inclinatione, & pondere ſuo ingentem multitudinem, vt innumeris beneface-ret figuraliter, & ſpiritualiter bibebant de petra nobiliori, Chriſto venturo, & inſequturo ipſos, qui percuſſus flagellis effudit latices largiſſimos ſanguinis pro omnibus. Ad monemur dare pro Deo, & Chriſto, cum nomine eius pauper percuſit aures, etiam petreas.

Quòd *iudicis eſt exercere duo munera, liberare innocentem, damnare reum, proſpicere bono publico, & auertere malum publicum.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi Sam. ſon dicitur Iudicaſſe Iſrael, 20. annis in bonum Iſrael, in perniciem Philiſtinorum, mille artibus ſollicitans quietem publicam illorum, & auertens inquietem, bellorum illatam à Philiſtæis.

2 S. Ambroſ. 2. de offic. c. 8. ad 3. Reg. 3. *Rex ait* (Salomon) *date huic infantem viuũ, & non occidatur. Hæc eſt enim mater eius.* Vbi Rex litem difficilẽ decidit inter meretrices, cum primo ſedit pro tribunali ad iudicandum. Non pro potentia ſuprema inuerteret formam iuſtitiæ, & tolleret, & daret, cui liberet? *Sapientiæ fuit diſtinguere latentis conſcientias, & eruere veritatem. Iuſtitia quoque, vt quæ ſuum necauerat, alterum non tolleret*, ſed vera reciperet ſuum, & ita ſolemni iuditio liberauit innocentem, & damnauit reã.

3 Ex 1. Petri 2. Hortatur. *ſubiecti eſtote, &c. omni humanæ creaturæ, propter Deum ſiue Regi, quaſi præcellenti, ſiue ducibus, tanquam ab eo miſſis, ad vindictam malefactorum, laudem verò bonorum, &c. non tantum bonis, & modeſtis, ſed etiam diſſolutis. Hæc eſt enim gratia.* Expendit Caiet. hic. *Dicit omni, non diſtinguendo* inter ethnicos, & fideles propter Deum, vt ſciant in foro conſciæ teneri ad ſubiectionem, ſunt enim miniſtri Dei. Subiecti eſtote omni homini, *non dicit omni tyranno, ſed omni* creaturæ humanæ, officium regiminis, humanam naturam appellat, &c. non ſine cauſa gladium portat? Quæ ad vindictam malefactorum, male operantium, laudem bonorum,

id

id est *benefactientiam*. In eo enim intendetur bonum publicum, dum præmiantur laude boni, dum puniuntur suplicio mali.

Quòd *potius meretur nomen Patris, quem Iudicis, qui præcipue incumbit bono suorum.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi dicitur quod Samſom iudicauit Iſrael ann. 20. cum ratio eſſet diſsimilis ab alijs iudicibus, quæ aſtrueret nomen Patris ſuorum, quam iudicis, cum illos protegendo, & inferendo punitionē impugnantibus Philiſtæis iudicem egeret.

2 Chryſolog. ſerm. 7. ad Matth. 6. & *Pater tuus, qui videt in abſcondito reddet tibi.* An non reddi præmium meritis opus eſt iuſtitiæ commutatiuæ, aut diſtributiuæ? aut gratificationis? aſſumat igitur titulum Domini, iudicis, aut gratificatoris, & non Patris, vt exigat à ſubditis iure ſupremo obſequia ſibi debita. Exigat, vt exhibeantur gratis ſine præmiandi onere. *Vbi mutauit Dominum in Patrem, voluit magis charitate, quam potestia regnare.* Paterno monuit affectu, *ne quid nobis de labore deperiret.* Patrem ſe iactat, non omnipotentem, cum illicit præmijs, quia non vult, vt ſibi ſolum gratis exhibeantur obſequia, ſed ſpe, & ardore præmij. Nam Paterni affectus eſt merita, & obſequia, non relinqui defraudata præmio.

3 Paſchaſ. lib. 9. ad illud Matth. 21. *Simile eſt regnum cœlorum homini Patri familias, qui exijt primo mane conducere operarios in vineam.* Non eſt Dominus, & Herus vineæ? ipſi non conducibiles prætio, aut ſtipendio? non aſsumat nomen Patris, inſpiciens filios, ſed Domini Regis, aut Heri reſpiciens ſeruos, mancipia. Vt quid cohibet illum titulum, & exhibet alterum Patris familias? *Maluit ſe Patrem dici quam Dominum, &c. Vt conſiderantes bonitatem, non inuiti ſeruirent, ſed liberi, quaſi filij amantiſsimi genitoris.* Titulus Dominij dicit relationem ad ſeruitutem, egrè fertur titulus inducens ſeruos, benigne Patris inducens filios. Vt homini Regi inuitanti ad hunc ad conuiuium, & epulas, non arriſerint omnes, vt opus fuerit imperare. Exi ad exitus viarum, & compelle intrare. Vt titulus Regis rediderit inuitos inuoluntarios coactos.

Quòd *ſolus ille optimus Iudex, qui inducitur, & monetur impulſu Spiritus Sancti.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi Samſon exercuit iuditium vindicatiuum contra Philiſtinos inſtru-

tructus destinatione, & assignatione Spiritus Sancti, & instinctu eiusdem, cuius electiones.

2 Historia Genes. 38. *Thamar concepit. Instante autem partu apparuerunt gemini in vtero. Vnus protulit manum, in qua obstetrix ligauit coccinum dicens, iste egredietur prior, illo verò retrahente manum, egressus est alter.* Fœmina eligit ad maioratum, & signat coccino, & prædicit, quòd ille egredietur prior ex vtero materno, & dixit incertum. Mirum quod infantes in palestra vteri dimicantes pro maioratu designato vno alter egressus sit prior, & obtinuerit maioratum. Hominis fallax electio, Dei infallibilis, & certa. Obtinet maioratum, quippe nõ sequitur informationem fœminæ humanam, sed consilium, & consultationem diuinam. *Ostedit non pendere ex arbitrio nostro, sed ex voluntate Dei, quod sit primogenitus.* Qui decreto Dei in finem dirigitur, & destinatur, certissime attingit illud, vt sagita missa impulsu in scopum. Vt Ieremias *prius quam te formarem in vtero, &c.* & Prophetam dedite: *in pharetra sua, &c.* & inde eruitur, & arcu mittitur in legationem, & dignitatem indubitabiliter, & inde felices euentus.

3 August. ad illud ad Galat. 1. *Paulus Apostolus, non ab hominibus, neque per hominem, sed per Iesum Christum.* De excellentia sui Apostolatus iactabũdus gloriatur, & mire exaltat supra caterorum, quòd illi dignitatem Apostolatus susceperunt, licet non à puro homine, sed ab homine Deo, Christo: tamẽ passibili, ante gloriam resurrectionis. Vbi passibilitates, & infirmitates veri hominis demõstrabat: ipse tamen non à puris hominibus defectibilibus in certo electionis, neque per hominem solùm, sed Deum, Iesum Christum, idque ab eo glorioso in corpore, cum passibilitates, & infirmitates cohibens, se glorioſum Deum manifestat è cœlis. Christi passibilis in terris, ad se ipsum gloriosũ in cœlis, est ne vlla certior electio? aut actio collatiua dignioris Apostolatus? absit. Sed ita exaltat sui Apostolatus excellentiã in veraci prædicatione, vt in impossibili inaqualitate missionis eiusdem Christi passibilis, & impassibilis discrimen insinuet. *Qui ab hominibus mittitur mendax est, verax, qui per Iesum Christum, totum Deum, iam post resurrectionem missus est. Nenisi-mus Apostolorum.* Ita exaggerat maiorem certitudinem in eligendo, & muneris ampliorem, & fructuosiorem veracitatem, in eo qui speciali illa sufficitur dignitate, & impulsu specialis instinctus monetur, cum dat dig-

dignitatem, & sufficientiam in agendis, *Vas electionis, vt portet nomen coram Regibus.* Vt iactetur de Apostolatu Iesu Christi, ac si ipse solus posset iactari, & gloriari.

Quòd *cauendus est aspectus inordinatus fœminarum, præsertim in flore iuuentutis. Nam aspectus, & cõsensus sepissime sunt connexi.* 36

1 Ex clauſ text. vbi Samſon vidiſſe mulierem meretricem in Gaza, & ſimul ingreſſus ad eam refertur.

2 Auguſt. t. 9. lib. de honeſt. mulierum cap. 1. ad 1. Corint. 6. *An nescitis, quia iniqui regnum Dei non possidebunt? nolite errare, neque fornicarij, neque idolis seruientes, neque fures, neque anari, nec ebriosi,* &c. fugite fornicationem. Expendit, quod inſtruxerit vitia omnia reſiſtentia fugari, & vinci, non dixit de vitio libidinis reſiſtite, *sed dixit fugite fornicationem.* Nonne reſiſtentia fugatur, ſicut & alia vitia, & victoria reportatur? *Vitijs debemus Deo adiuuante resistere, libidinem fugiendo superare, iuxta Eccles. 9. Noli attendere in faciem Virginis, ne escandalizet te vultus eius, Ioseph.* Geneſ. 39. *Reliquit pallium, & fugit. Contra libidinis impetum, apprehende fugam, si vis obtinere victoriam.* Aſpect' enim facilè inclinat ad lapſum, fuga ab aſpectu victoriam.

3 Idem ibidem ad Pſalm. 118. *Auerte oculos meos, ne videant vanitatem.* Cur petitur, quod poteſtatis hominis eſt, non videre, non conijcere oculos. Videre noſtrum eſt, bene autem, aut male videre ad glorificandum Deum, aut illam concupiſcendam, Dei, & hominis, auertat Deus, ne videat ad concupiſcendum, nam *qui viderit ad concupiscendum, iam mœchatus est in corde suo.* Voluntas faciendi prona, eò impenſa reputatur pro opere facti. *Dum aliquis libidinoso oculo mulierem considerat, in secretum mentis venenum instillat mortis.* Audiamus ſcripturam, *auerte oculos meos ne videant vanitatem.* Ille qui ad concupiſcendum oculos defixerit, & morari in corde permiſerit, *non poterit excutere à se sine plaga animæ, sicut si carbones apprehenderit, nisi cito proiecerit. Si diutius voluerit tenere abire non poterit sine vulnere.* Ad hæc plura exempla, Dauid vt vidit Berſabel à ſolaribus domus Regiæ, requiſiuit, quæ eſſet, & attulit. Senes in Suſanam. Holofernes in Iuditham. Vt ſanius conſilium fuga.

Quòd *facilis est accessus ad fœminam meretricem, sed difficilis regressus ab ea.* 36

1 Ex clauſ. text. vbi faciſè Samſon ingreſſus ad fœminam, difficilis fuit inde regreſſus.

2 Auguſt. lib. de Honeſtate mulierum cap. 2. ad illud, *Ipſe liberabit* me de laqueo venantium. Vbi diabolum figurat officio venatoris incumbẽtem, & vtentem familiaritate fœminarum, vt venator laquæis ad capienda volatilia, aut animalia, perdices, & piſces, &c. quibus ampliſsimus aditus, & ingreſſus, ſed anguſtiſsimus ad exitum, vnde aues collo ſuſpenſæ manent, animalia comprehenſa pedibus, piſces obeluſi vectibus. *Et ideo fratres* contra adiutores diaboli, Dei adiutorium imploremus, vt de laqueo venantium nos liberare dignetur. *Ideo iugiter* clamemus cum Propheta, oculi mei ſemper ad Dominum, quoniam ipſe euellet de laquæo pedes meos.

3 Lyra ad ſapient. 14. de idolis nationum. *Creatura Dei in odium factæ ſunt, & in tentationem animæ hominum, & in muſcipulam pedibus inſipientium. Initium enim fornicationis eſt exquiſitio idolorum.* Vbi idola ex auro, & argento conflata odioſa facta ſunt Deo, quippè detrahunt ſibi adorationem Deo debitam, inſuper facta ſunt inſipientibus in muſcipulam, dum tentant eos ad ſui adorationem, & apoſtaſiam à Deo. Quid ſibi vult initium fornicationis eſt exquiſitio idolorum? An quia amantes fœminas, vt idola, quibus exhibent cultum, & venerationem? forte. Aptius Lyra. *Initium enim fornicationis, id eſt idolatriæ, quæ eſt fornicatio ſpiritualis.* Habet ergo vtraque receſſum à Deo ſine animo reuertendi ad exibendum cultũ, vni per fornicationem carnalem, alteri per ſpiritualem. Sicut apoſtata à fide eſt qui recedit à fide ſine animo reuertendi, & apoſtata à Religione, qui recedit à monaſterio ſine animo redeundi. Eo quod idolũ, & fœmina idolatrata, ſunt in muſcipulã inſipientibus. Quippè in muſcipula, qua capiuntur mures, ampliſsimæ ſunt portæ ad aditum, ſed quæ parant aditum ſpiculis complicatis impediunt pungentes faciem ad regreſſum. Exemplum in antro leonis egrotantis, cui animalium nullus morem viſitationis ingreſſus, cui liber eſſet regreſſus. Excuſauit ſe vulpes, ſibi cauens dicendo, *veſtigia* cerno omnia te verſum, ſpectantia nulla retrorſum. Vt de inferno facilis deſcenſus auerni, ſed reuocare gradum, ſuperaſque euadere ad auras, hic opus, hic labor. Ita ad illicitum fœminæ amorem ingreſſus facilis, regreſſus difficilis. Caueat igitur prudens ab ingreſſu ad illam, cum inſpiciat veſtigia omnia verſus illam, reſpicientia rara retrorſum. Eccleſ. 19. *Vinum, & mulieres apoſtatare faciunt ſa-*

sapientes, vt enim apostasia affectus, recessus sine animo reuertendi. Sapientes Salomon. Fortes Samson. Sanctos Dauidē, cepit, Proh. quot sine regressu capti.

Quòd *ex concupiscentia antecedenti exponitur inhonestus, ad pericula vitæ, & fortunarum.* 36

1 Ex claus. text Vbi Samson ex libidine in pellicem exposuit se periculo, vt caperetur intra domum, & à custodibus ciuitatis occideretur.

2 August. t. 9. de honestate mulierum cap. 3. ad illud Salomon. Prouer. 6. *Nunquid alligabit aliquis ignem in sinu suo, vestimenta eius non ardeant, aut quis ambulabit super prunas, vt plantæ eius non comburantur?* Ac si diceret ex applicatione ignis ad vestem illatione necessaria induci vestis, fortunarum, ad immodicos sumptus euersionem, imò, & animæ à Christo redemptæ. *O quanta iniquitas!* (exclamat) *vt animam, quam Christus sanguine redemit, propter momenti delectationem libidinis diabolo tradat. Vere miserāda conditio est, vbi quod delectat cito præterit, & sine fine permanet, quod cruciat.* Sub momento libido transijt, & animæ infœlicis opprobrium manet in æternum.

3 August. ibidem alluſ. ad 2. Reg. 11. *Vidit mulierem se lauantem, ex aduerso super solarium suum.* Ex visione autem, & contemplatione nuditatis fœminæ venustæ, quot, & quæ originata sunt incommoda, & flagitia? Adulterium, homicidium Vriæ, militum plurimorum, &c. nec mirum ex concupiscentia antecedenti venerea tot nata sunt oriri funera. *Dauid ille sanctissimus, in mille passionibus præsens vidit mulierem nudam*, & adamauit eam, & statim homicidium simul fecit, & adulterium. Vt impunè fœmina vxorata deliciaretur, virum data opera iussit ingeri à Ioab in vrgentius periculum belli, vt occideretur, nec dolet de innumera militum caterua occisa, dum legit, *etiam Vrias* seruus tuus occubuit. Quot strages, quot lites, quot diuitiarum excidia, ex tanto antecedenti facinore non sunt in orbe suborta, ex solo vno capite.

Quòd *ingenuæ sagacitatis est, cretizare contra Cretensem, & vulpinari contra vulpes.* 37

1 Ex claus. text. Vbi Samson in domo mereticis obsessus militibus, & mœnijs vrbis circumseptus, obclusis ianuis, adhibitisque vigilibus, præuenit astutia astutos, vt dilaberetur è manibus, ex ciuitate illis delusis, eliminando clausuram, & deferendo humeris portas euasit.

2 Lyra ad illud Psal. 7. *Ecce parturit* iniustitiā, &c. peperit iniquitatē. Lacū aperuit, &

effodit eum, & incidit infoueam, quam fecit. Conuertetur dolor eius in caput, & in verbum ipsius iniquitas eius descender. Exponitur de Rege Saule in Dauid. Saul concepit dolorē ex inuidia, quod plº Dauid laudaretur in choræis, per cusit Saul mille, & Dauid decem millia. *Itaque sub simulatione amititiæ, quærebat eum interficere*, 1. Regum 18. *non rectis oculis aspiciebat Dauid à die illa*, & cogitabat tradere in manus Philistinorum, & dedit ipsi filiam Michol sub onere deferendi centum præputia Philistinorum. *Dabo filiam illi, vt fiat ei in scandalum, & sit super eum manus Philistinorum.* O vulpina caliditas sub prætextu amicandi intimo vinculo generis per filiam, mollitur animum pellendi è vita per Philistæos. *Sed incidit in foueam, quam fecit. Saul quæsiuit occisionem Dauid per Philistæos, & ipse incidit in hoc malum, quia fuit occisus ab eis.* Ideo subditur incidit in foueam, quam fecit, conuertetur dolor eius in caput eius, & in verticē ipsius iniquitas eius descendet. Id est malū, quod cō cepit contra Dauid, conuertetur super eum. Dauid prædixit mortem Saulis. *Fodit foueam, & incidit in eam.*

3 Appositè dicta supra ad ampliandum argumentum, sub numero 17. de calumnia, si licet sabbatho curare inflexa in calumniatores. Sub num. 22. de accusatione in adulteram inflexa contra acussatores. Et num. 25. de tributo dando, aut negando Cesari, vbi sua responsione eos comprehendit, in astutia. Argumentum enim ad hominem ingenioso est ex dictis ab ipso in ipsum. Vt suo gladio iugu etur, vt Olophernes, suo ense trucidetur vt Goliat, Hic instauro, non repeto ne plus equo volumen augeatur.

Quòd *validius robur est diuinum adiutorium, quam humana vigilantia.* 37

1 Ex clauf text. Vbi spiritus Dei assistens Samsoni vigilabat, dum dormiebat, excitat, præuen.t vigiles ciuitatis, & illusos, & frustratos reliquit fuga, deferens hostia ciuitatis.

2 Lyra ad Psal. 117. *Nisi Dominus ædificauerit domum, in vanum laborauerunt, qui ædificant eam. Nisi Dominus custodierit ciuitatem frustra vigilat qui custodit eam vanum est. Vobis ante lucem surgere, &c.* Salomon fecit Psalmum istum, quia reputabat se, & populum non sufficere ad ædificationem domus Domini. Quis enim præualere poterit, vt ædificet ei, domum dignam, dixit, nisi Dominus ædificauerit, nunc opera, & vigiliæ artificum ad ædi-

ædificium confluentium nil efficiunt, nil fabricantur? ita sane, sed validius diuinum adiutorium cum illis, *dirigendo, & confortando artifices.* Domus dupliciter ædificatur corporaliter ex lignis, & spiritualiter per doctrinam, & in vtraque requiritur diuinum auxilium. *Alloquitur artifices dicens vanum est vobis, & adducitur exemplum de custodia ciuitatis humanæ, quæ non valet, sed vana sine diuina.*

3 Historia Genes. 31. Vbi Laban solicitus augendi facultates, & greges suos paciscitur cum Iacob varijs vicibus de iure apropiandi greges, fœtus albos, nigros, varios, &c. Oleaster hic ad *Mutasti mercedem meã decem vicibus, &c.* animo arrogandi plures fœtus. Nisi Deus Patris mei, &c. *Affuisset mihi nudum me dimisisses.* Industria datur Iacob augendi greges ab Angelo, quæ nec venisset in mentem, nec omni adhibita sua diligentia tot lucraretur, quot mutationibus soceri annuendo in præiuditiũ sui. Hæc incuria potius vigil cura, qua Deus inuigilabat pro ipso, quam omnis eius industria, & connatus non assequeretur. *Mutationes quas fecit Laban, in vtilitatem conferunt Iacob.* Vos inquit Ioseph fratribus cogitatis de me malum, Deus autem vertit illud in bonum. *Ecce qualiter Deus curet iustos*, vt non permittat aliquem illis nocere, & corripuit pro eis Reges. *Abstulit Deus* gregem Patris vestri, & dedit mihi *mirũ valde est, quod furatur Deus impijs, vt tribuat iustis.* Præteriens quasi casu vidit cœcum à natiuitate, & induxit visum. Ambulans iuxta mare, vocat ad inopinatum Apostolatum. In monte quinque millia hominũ nil cogitantium de deferendo alimento, ita satiat, vt superfint 12. cophini, quod operari non posset omnis eorum sollicitudo, & industria.

Quòd *facile est Deo comprehendere sapientes in astutia eorum,* 37

1 Ex clauſ. text Vbi Samson instinctu Dei vigilias, & industrias ad ipsum capiendam facile vicit, & superauit.

2 Aptissima sunt pro isto argumento, fulcra supra sub præsenti numero 37. & ibi remissiuè plura, à quib⁹ abstineo, ne crescat immodice volumen, paucis inflectis proflunt in hæc.

Quòd *quilibet aggreditur ardua facinora, pro impulsu boni sanguinis, & optimi originis.* 38

1 Ex clauſ. text. Vbi Samson ex vi, & fortitudine indita, insigne facinus eleminandi portas, & deferendi ad cacumina montis est operatus.

2 Epiphan. de vitis Prophetarum, alluſ. ad Eccleſiaſtici 48. *Surrexit Elias Propheta quasi ignis, & verbum ipsius quasi facicla*

cula ardebat,&c. Sic amplificatus est Elias in mirabilibus suis, & quis poterit similiter sic gloriari tibi? Qui deiecisti Reges ad perniciem, & confregisti facilè potentiam ipsorum. Qui vngis Reges ad pœnitentiam, & Prophetas facis successores post te. Qui receptus es in turbim ignis. Qui inscriptus es in iudicijs temporum leuire. *Beati qui, &c. & in amicitia tua decorati sunt, nam nos vita viuimus tantum, post mortem autem non erit tale nomen nostrum.* Elogia tot ac tanta & tam egregia, tam zelo Dei igne inflamata, vt ausus esset in faciem Regib⁹ dicere, non ego turbaui Israel, sed tu, & domus Patris tui, qui dereliquistis mandata Domini, &c. ignem è celo toties extrahit ad igniendos quinquagenarios, ad inflamandandum sacrificium, vt finem cursus fecerit eleuatione in æthera curru equorum igneorum. Vt igne inflamaret doctrinæ in fine mũdi homines, seductos ab Antichristo! Plane in Regalem, & Sacerdotalem eius originem, in prodigiosam conceptionem, in incunabula ignifera, vnde hausit tot ignis flamas, vt sibi arripuerit insignezelatoris Dei. *Elias* (*inquit*) *de tribu Aron, Leuita, ex Thesbis existebat, vbi ædes Sacerdotibus consecrata. Cum parens grauida niteretur, patri visio apparuit. Viri niueum* præseferentes habitum infantem salutabant, matrisque vberibus ignem euellebant, & flamam ignis, cibi loco ministrabant. Visa ad sacerdotes in Hierusalem retulit. Respondit oraculum. Caue,&c. erit quippe lumen filij huius domicilium, sermoque eius demonstratio, iudicabit Israel, tum in igne, tum romphea. Hic est ille Elias, qui ter ignem è cœlo deduxit. Qui,&c. Qui turbine ignis assumptus est. Hic obiter expendant Carmelitæ niueum habitum in visione, niueum præseferentes habitum infantulum Eliam salutantes præsignatum, & incumbendum ignẽ spiritualem zeli diuini, illorum more fidelibus cibi spiritualis loco ex instituto ministrãdũ, & tot parentis egregia emulari præconia. Ne incidant in illorum deliquium, qui (Ioan. 8.) iactabantur de origine. *Nos semen Abrahæ sumus*, nemini vnquam seruiuimus, quos carpit Christus, *si semen Abrahæ estis, opera Abrahæ facite.* Latices, & impulsus, ac propensiones boni sanguinis tanti patris ostendẽda per opera, ne glorientur, de elogijs defunctorum. Igitur, *attendite ad petram vnde excisi estis, & ad Saram, quæ peperit vos*, Isaiæ 51. Vt generositate optimi inflati originis aspiretis,

retis, & anheletis ad egregia, & ardua optimi originis digna. Eliæ filij, Eliæ facinora egregia sectamini.

2 Lyra ad Historiã 1. Reg. 18. Aggrediente Dauide prælium duellare cum Gigante, & victore redeunte de illo. *Assumens autem Dauid caput Philistæi, attulit illud in Hierusalem.* Rex Saul ait ad Abner Principem militiæ suæ, *de qua stirpe descendit hic adolescens?* Iterum instat priuato, *interroga cuius filius sit iste puer.* Et denique Rex victori, & habenti in manu caput Philistæi ait ad eũ *Saul. De qua progenie es, ò Adolescẽs?* Dixitque Dauid, *filius serui tui, Isai Bethleemitæ ego sum.* Cur toties interrogat de stirpe, de progenie, de filiatione, ex insigni audacia, & celebri victoria? ex capite Goliat trucidato. Discrete satis conijci poterat ex regio sanguine oriũdum. Nam ille animus, audacia, victoria satis superque publicabant. *Ideo volebat scire, si esset de bono genere, ita quod filia esset ei competenter assignata, in vxorem*, in præmium egregij facinoris. Filia Regis coniux poscit virum regium. Et ideo *Dauid respondet esse Isai Bethleemitæ filium*, id est se esse è tribu Iuda, quæ erat regalis, iuxta Genes. 49. *Non auferetur sceptrum de Iuda.* Illustris quidem sanguine, illustrior ægregijs operibus. Illustrem progeniem reddidit operibus, illustriorem. Illustris enim origo sanguinis instillat secretos ausus ad ardua.

3 Ephren. syr. serm. de laudibus Ioseph. ad Genes. 44. Historia. *Apud quem inuentum fuerit, quod quæris morte moriatur, &c.* Fiat iuxta sententiam. Et scrutatus saccos à maiori, vsque ad minimum. *Inuenit scyphum in sacco Benjamin.* At illi scissis vestibus, &c. Clamarunt, & mirati, & attoniti obiurgarunt. *Nonne tu es filius Rachel, quæ cum Patris sui idola furata esset, negauit, & abscondit subter stramenta Cameli*, & sedit desuper. Et ne surgere cogeretur excusauitur se, quod accidisset secundùm consuetudinem fœminarum? ac si dixissent proberuio matrizat, *Filius matris*, furis idolorum, redolere debebat mores maternos, furando scyphum. A contrario, sicut originem optimi sanguis arguunt impulsus in optima facinora, ita propensiones in furta ignominiosa, furtum idolorum Genitricis. Sunt enim insignia opera indices originis, & nobilitatis. Ignobiles propensiones, ac viles, ignobilis, & infamis.

Quòd *mirum valde, quod amissa gratia animæ, non amisisset gratiam fortitudinis corporis, Nam deserentem diuinam legem deserit valor, & fortitudo, ad facinora, & prælia.* 38

1 Ex clauſ. text. vbi mirandum in Samſone amiſſa gratia, non amiſſam fortitudinem (nõ ſunt conexæ gratia gratum faciens, & virtus illa roboris ceſſa) ſed potuit.

2 Exod. 32. Moyſes deſcendit de monte cum tabulis legis. Audiens autem Iosue tumultũ populi vociferãtis (agentis feſtiua vitulo) dixit ad Moyſem, *vllulatus pugnæ auditur in caſtris.* Reſpondet, *non eſt clamor adhortantium ad pugnam, ſed vocem cantantium ego audio.* Mirum quod idem ſtrepor, & rumor vocum diuerſa inſonuerit in auribus Moyſi legiferi, & in auribus Iosuæ ducis militiæ. Verũ ſimultas vtriuſque, viſa varijs aſpectibus, nam deſerentem verum Deum, ſibi inſtituendo idolũ, & leges Dei, deſerit valor, & fortitudo militaris. *Incipiebat crimen diuulgari inter hoſtes, & veri Dei protectione deſtitutos in eos inſurgerent.* Moyſes rectè audit, non eſt vox ad hortantium ad pugnam, uociferatio canora colentium idolum. *Ideſt non eſt fortium iactantium fortitudinem in victoria, non eſt vox virorum, qui vincunt in prælio.* Ac ſi diceret, non bene audit, præſagium imminentis, & graſantis cladis videtur, quod euenit, hortante Moyſe, *Occidat quis fratrem, &c. in qua die ceciderunt innumera virorum.* Iosue miles inſignis explicatius, ac ſi didiciſſet experientia, deſerentes diuinã reuerentiam & leges, deſerere valorem, & adiutorium Dei ad prælia. *Vllulatus pugnæ auditur in Caſtris*, ac ſi inde coniecisset augurium belli in eos. Oleaſter ibidem ad *vox belli auditur in caſtris. Bonus dux, qui ſemper timuit ſuis à bello.*

3 Hiſtoria Exod. 17. Vbi memoratur peccatum diffidentiæ Iſraelitarum, *& quia tentauerunt Dominum dicentes, eſt ne Dominus in nobis, an non? Venit Amalec, & pugnauit contra Iſrael in Raphidim.* Moyſes periculum præſentiens mittit Iosue cum militibus ad ocurſum, & fugit *ad orationem. Ego ſtabo in vertice collis habens virgam Dei in manu mea, &c. Cumque leuaſſet Moyſes manus vincebat Iſrael, ſi autem paululum remiſiſſet.* Oleaſter hic, *Cauendum eſt valde, ne dubites de præſentia, & protectione Dei, quoniam ſtatim hoſtis adeſt*, ſequitur pœna peccatum. Quam primum peccauit hoſtis attuit peccati vltor. *Ecce vires*, quid ſine Deo valeant. Oratio iuſti plus militat vno memento, quam infinitus

nitus exercitus vna die. Magis præcibus, quam viribus fidendum, sic Moyses prius de bello agendo ducem instruit. Ipse verò montem Deum præcaturus conscendit, Moyse eleuante manum prævalebat Israel, sin autem pululum remisisset superabatur Israel. *Audis* quid valeat oratio iusti assidua? Vt orã te vincat exercitus, intermitente orationem nõ vincat, sed vincatur, perseuerante oratione perseuerat victoria, cessante cessat, ac si cessatio cessare faceret valorem militum, & augeretur hostium.

Quòd *insolitum, & rarum est in re litteraria, & militari viro illustri non coronare sui memoriam, illustri facinore posteritati commendare.* 38

1 Ex clauſ. text. vbi Samson glorioſum ſibi nomen, & famam ſempiternam comparauit inſigni facinore eliminãdi portas ciuitatis, & deferendi ſuis humeris ad montis faſtigia.

2 Oleaſter ad Geneſ. 12. *ædificamus ciuitatem, & turrim, cuius culmen, &c. & celebremus nomẽ noſtrum*, &c. Ædificium in gentis turris ad refugium, alterius diluuij propriæ charitatis, & incolumitatis eſſet. Sed ad nomen, & famam captandam, & in poſteris celebrandã innanis vanitatis, & ad id nullum, non lapidem mouere. Inquirere conſultare, decretare. *Facile coniunguntur homines, ad ea quæ ſunt vanitatis. Conſidera hominis ingenium, ſcit facile inuenire modum, ad quæ deſiderat. Iſti inuenerunt modum laterum, & cæmenti, cum non eſſet vſus illo tempore, & voluit Dominus; diuellere à fiducia in rebus vanis, & oſtẽdere ciuitatẽ noſtram, nullum poſſe cuſtodire, ſi non dominus ipſe cuſtodiat ciuitatem.* In vanum vigilat, qui cuſtodit eam.

3 Hiſtoria Iudith. 1. *Arphaxad Rex Medorum, &c. & ipſe ædificauit ciuitatem potentiſſimam, ex lapidibus quadratis & ſectis fecit muros eius, &c. & gloriabatur quaſi potens in potentia exercitus ſui, & in gloria quadrigarum ſuarum.* Inflata ſuperbia, & dominandi libido ciuitatis ampliſsimæ munitæ diffuſa per orbem fama fuit origo, & cauſa belli. Alij Reges, qui nec parem, nec ſuperiorem gloriabundum, & iactabundum, niſi egrè, & cum inuidia ſuſcipiunt. Machinas belli in eam mouent, capiunt, euertunt. Nabuchodonoſor, vita regnoquè priuauit. Ciuitatem opulentiſsimus ædificat, vt famam conſeruet, & vitam amiſsit. Talis eſt innanis gloriæ exitus. Liranus ad hæc, *& gloriabatur* (inquit) *ſingulariter*, in potentia bellatorum, & in gloria curruum ſuorum, nam antiquitus in curribus pugnabatur. *Vanitas affectantis ſin-*

singularitatem exclusiuam caterorum, omniam odia conciliat, & in se conuocat ad pugnam. Quo circa *Artabani Regis monitum Xerxi. Vides vt in maxima aedificia, & arbores Deus tela contorquet, neque insolescere Deus sinit cogitationibus amat enim Deus incidere, quæ eminent omnia. Et cauSa? neminem sinit, quidpiam magni de se ipso sentire.*

3 Apocalyp. 5. *Vidi in dextera sedentis in throno librum, scriptum intus, & foris. Sygillatum Sygillis septem.* Quod intus scriptum latet nec obijcitur oculis intuentium immune à labe innanis plausus, & vanitatis, quod autẽ foris exaratos habet caracteres, sibi potest conciliare facile visſum, & captare vanitatem. Nam sygilla septem prohibet solum obtutum scientiæ interioris, non quærentis plausum. Lira hic. *liber iste est diuina scientia in qua sunt omnia scripta.* Liber in dextera, quia per manum dẽxteram operamur, ideo liber dicitur esse conuenienter in manu Dei. Signatio autem, ita designat clausionem, & nemo poterat aperire, & soluere signacula, nisi agnus. *Hic infertur dignitas Christi, qui solus inuentus est dignus aperire, & alijs annuntiare sine innani gloria.* Ab sit à sacro scriptore exarare intra librum doctrinã, & foris innaniter diuulgare, & gloriari. Abstineat ab innani gloria (ne inuadat librum) muniendõ sygillis septem, ne aditum inueniat innanitas. Scribat, vt doceat, non vt luceat.

Quòd *Fœmina est ruina pernitiosa, plusquam vincula, exercitus, & Leones, cum hi fortior, molliescit in amplexu Dalilæ.* 40

1 Ex clauſ. tex. vbi Samſon qui vicit illa omnia vincitur amplexu Dalilæ.

2 Rupert. lib. 2. in Geneſ. ad illud. *Mulier quam dedisti mihi soleam dedit mihi de ligno, & comedi.* Vt Diabolus, vt ſuaderet Euam imperfectiorem, & facilio rem viro, vtitur ſuaſſorio collo quio, promiſsione fallaci Deitatis, remotione mendaci incurrẽdæ mortis, auerſione, & odio prohibitionis impoſsitæ, vſque dum decepta ſit mulier. Vir neꝰ ſuaſſus tot interloquutionibus ab Eua. Suaſsit præcibus, induxit verbis melliflu's, inſtauit lachrimis importunis, inuexit rationibus efficacibus? fribola igitur reditur, excuſſatio. *Mulier quam dedisti sociam dedit.* Ac ſi Dei fuerit in culpam imputatum cõſtituiſſe ſociam, & dediſſe. Quaſi mollis, & delicioſſa ſocietas valorem integritatem, & ſeueritatem Adami tot dotibus inſtructi deliciauerit, mollificauerit banditijs ad aſſenſum. *Qualis autem, & quanta ſit muliebris importunitas, diuina, & humana teſtantur exemplaria* ſola ſocietas momentanea,

nea, & largitio pomi fuit ad instar importunitatis. *Non seducendo, sed cogendo potius, imperando magis quam aliquod fingẽdo, hoc effecit, vt vir obediret suæ voluntati plusquã Dei.* Vt si vir esset sub potestate fœminæ, non verò fœmina sub obedientia, & potestate viri. Vt liquefiat cera ad imperium ignis.

3 Historia Iudithæ. cap. 9. & 10. In oratorio diffusa longa oratione petit inter alia, *fac Domine vt gladio proprio eius superbia amputetur, capiatur laqueo oculorum suorum in me, & percutiet eum ex labijs charitatis meæ.* Cap. 10. *exuit se vestimentis viduitatis, induit se vestimentis iucunditatis suæ, induitque sandalia pedibus, assumpsit, &c. & omnibus ornamentis ornauit se.* Cui etiam Dominus contulit splẽdorem. Præsentatur Olopherni, placuit illius discreta ratiocinatio. Inuitatur ad conuiuium per Vagao. Acceptat. *Quæ ego sum, vt contradicam Domino meo, omne quod erit ante oculos eius bonum, & optimum faciam, quidquid illi placuerit.* Et surrexit, & ornauit se vestimento suo, & ingressa stetit ante faciem eius. *Cor autem Holophernis ẽconcussum est, erat enim ardens in concupiscentia eius.* Quis Olophernis animi, & vultus ferocitatem temperaui? Quis Leonem mansueuit? Quis sedentem in conopæo in throno, ita deliniuit, vt saliuæ diffluerent de ore? sicut de oculis scintillę furoris dimitebantur. Nutat Principis militiæ solium, cõcutitur illius cor, liquescit, vt cæra ad aspectum venustæ, & elegantis, vt aspectus solus sit pro fascinato maleficio, silentium pro lingua, ornamẽta muliebria pro liquante philtro. Augustad hæc serm. 278. Quã cum videret Olofernis *solutus* est sensibus. Iacuit mulieris vultu captiuus, licuit mulieri exarmare iuuenes, & debellare fortes. *Decepit* sincera corruptũ, fefelit casta polutum, pudica peremit adulterum, sobria iugulauit ebriosum. In bello iusto vim tectam licitam, stratagema dolosum, quod indiferens est ex se, & ex fine accipit bonitatem, aut malitiam, dictat ratio, & ita fuit ille dolus laudabilis Iudithæ in verbis, & ornatu corporis. Secus in feminis ex fine capiendi, & inducẽdi ad illicitum amorem. Ipse Olofernes captus est, non cœpit ipsa. Quòd *fœmina lasciua est ad capiendos amantes instrumentum captiosum, sicut laqueus venatoris, & rete piscatoris.* 40

1 Ex claus. text. vbi Dalila capit amplexu Samsonem, nec dimittit.

2 Ex dictis sub n. 36. Quòd

sit

sit laquæus venatoris, & fagena cor illius, quod sit muscipula pedibus insipientis, &c. quæ in hoc aspectu flecti possunt, vt inseruiant discursui. Vide etiam sub n. 17. & 18. & 22. nec addi fas noua intentæ brebitati voluminis.

Quòd *pericula incontinentiæ nullum reddunt cautum ad vitandum relapsum, potius infunderet propensionem.* 40

1 Ex claus. text. vbi Samson in dilectione, & concupiscentia fœminarum à prima in secundam, & in cæteras priori propensione reincidit.

2 Historia 2. Reg. 12. vbi Nathan arguit sic Dauidem nomine Dei. Sub metaphora diuitis occidentis ouem dilectam pauperis, vt hospiti delicias inconuiuio pararet. *Dixit Nathan ad Dauid. Tu es ille vir. Ego vnxi te in Regem super Israel, &c. Vriam percussisti gladio, & vxorem accepisti in vxorem. Quamobrem, non recedet gladius de domo tua, eo quod despexaris me, & tuleris vxorẽ Vriæ Hethæi, vt esset, vxor, tua.* Hoc iram Dei inflamat, vt mittat Prophetam, & increpet, & inducat punitionẽ, & vindictam? Hoc præmisso priori delicto adulterij, & homicidij honestum, & laudabile consulendum, vt illius pudori honestati, & famæ consuleretur. Sibi in vxorem, & in reginam asciscendo, quam pellicem cognouerat & inde potius excussari, quàm reprehendi, & puniri deberet. Fuit quintum Dauidis peccatum, prohibitum enim erat Iudæis illam duci, quæ fuit maculata, & deturpata adulterio. Pulchritudo Bersabee excussare poterat priorẽ accessum, & homicidium, sed dum ab illa concupiscencia transeunti, ad permanentem, & perpetuum accessum (licet validum esset matrimoniũ) indicatur libidinis à priori in vlteriores relapsus, vt vitium vitio additur, quod displicuit coram Domino. Introduxit eam in domum suam amore priori imbutus, & libidinosum in castum matrimonij commutauit. Egregriè Theodoretus q. 25. *Deus magis succensuit ob matrimonium, quam ob prius adulterium, nam illud cupiditatis erat vehementissimæ quæ rationi induxerat torporem, &c.* Hoc dicta ratione ex priori propensio ad vlteriores, quos honestos contugium reddidit.

3 Caiet. ad illud Ioan, 4. *Da mihi aquam, ve veniam huc.* Vade *voca virum tuum, & veni, dixit non habeo virum. Benedixisti, quinque enim viros habuisti, & nunc quem habes, nõ est vir tuus.* Valde reprehensibile, quod post tot cognita viros legitimo matrimonio, libido, & concupiscencia non sit satiata, vt adhuc incumbat, voluptati viri illegiti

mi,

mi, & à legitimis discurat ad virum illegitimum. Sed ò altissima Christi sapientia. *Iesus antequam donet aquam petitam, dicit, vt vocet virum suum, quia moralis honestas habet, vt non donetur mulieri nuptæ, nisi consciо viro. Vt fit testis pudici doni.* Fictione cõfessione detecta, quòd ille vir putatiuus non esset suus legitimus ex confessione, & ore suo illam *incipit arguere congruenti*. *Quinque habuisti, & hic quem nũc habes nõ est vir tuus. Aperit mulieris gesta à principio adolescentiæ eius, &c.* Quasi vitia adolescentiæ non reliquerit, sed à licita voluptate manserit propensa ad alteram, & alteram, vsque ad illicitã, & illegitimã. Iuxta Iob 20. ossa eius replebuntur *vitijs adolescentiæ, & cum eo in puluere dormient.* Vt inuertere impetũ, & propensionem veneream sit prope sepulchrum.

Quòd *Principes, & superiores humilia aggredi pro bono publico, non indecorum, sed gloriosum, secus pro bono priuato, pro quo solùm honorifica, & ardua.* 21

1 Ex clauſ text. vbi Principes visitationem adhibent meretrici, & pellici, indignam tantorum virorum nisi finis eliciẽdi, & expiscandi secretum fortitudinis Samsonicæ per illius instantiam excussaret.

2 Historia Genes. 18. Abraham tres illos Angelos hospicio receptus. *Dixit ad Saram. Accelera tria sata similæ, commisce, & fac subcinericios panes, ipse verò ad armẽtum cucurrit, & tulit inde vitulum tenerrimum, & optimum. Deditque puero, & festinauit, & coxit illum. Tulit butyrum, & lac & vitulum quem coxerat, & posuit coram eis, ipse verò stabat iuxta eos sub arbore.* S. Hieron. epist. 26. ad Pamach. *Nobiles, & senex famulos, & seruos mittere decentius ad gregem, vt afferent hædum humeris suis, & stare famulantes hospitibus.* Satius nobili decẽtissimum, pro obsequio hospitalitatis per se ipsum exercere meritum, vt sibi capiat maius præmium. *Ipse pedes lauit, ipse pinguem vitulum portauit humeris de armento. Stetit vt seruus peregrinis prandentibus. Et Saræ manibus coctos cibos ieiunaturus apposuit.* Cum ille, & illa munia illa seruorum, & ancillarum, quibus abũdabant exequi possent.

3 Caiet. ad illud Ioann. 13. *Sciens* quia à Deo exiuit, & ad Deum vadit, surgit à cœna ponit vestimenta sua, præcinxit se. Misit aquam in peluim, & cœpit lauare pedes discipulorum suorum. O stupenda Christi humilitas! videris tuæ excellentiæ diuinæ oblita, quæ tot humilia à tanta dignitate diuina infinitate distantia, ac indecentia in se assumit, cum adessent discipuli, quibus dari posset commissio præcingendi linteo

tēō, mittēdi aquam in peluim, coadiuuandi ad lotiones. *Sciens se omnipotentem, & supremis gratiæ donis excelsum, ne à nescio, incō sulto, & propriæ conditionis rationem non habente, excitatum interpretareris, & paruipenderes actū humilem,* & præcinxit se, *ne indigeret ministro porrigente linteum ad extergendum.* Pro communi bono exemplo humilitatis dando. Si ego Dominus, & Magister laui, & vos debetis, &c. exēplum dedi vobis, vt quemadmodum ego feci, ita & vos. *Hortandi sunt Reges* ex Christi facto, qui per semet ipsum tot, & humilia peregit, per se ipsos quot facultas permisserit exequenda, nec remitti Regalis officij operas ad priuatum aliquem aulicum, sed sicut Christus per se peregit dicta, spectantibus Apostolis, ita illi, saltim grauiora spectantibus tantum aulicis priuatis.

Quòd *argentum, & aurum rapit humanam voluntatem, & infert dulcem tyrannidem, & violentiam ad difficilia comparanda.* 41

1 Ex clauſ. text. vbi Principes pecunijs auro argenteo inducunt meretricem, vt expiscetur à Samsone, in qua parte resideant vires.

2 Rupert in Euang. lib. 1. c. 15. alluſ. ad *simulachra gentium, argentum & aurum,* &c. ad *ostendit omnia regna mundi,* &c. *Hæc omnia tibi dabo, &c. si cadens adoraueris me.* Diabolus plus fidit auri, & argenti, quam diffidat de sua natura deformi, & dedigna, cum adhuc Christum inuehitur diuitijs, & regnis oblatis, vt flexo poplite Dēmonem (vt plures) adoret. *Pagani, & gentes diabolum in simulachris adorauerunt.* Filij Israel in deserto vitulum ex auro, & argento cōflatum erexerunt in Deū, & illi gloriam suæ libertatis ex Egypto retulerunt. *Hi sunt Dij, qui te eduxerunt, &c.* Exod. 32. Cui erexerunt altare, & dicarunt festiua, vt si non quia Deo putatiuo, quia auro vero. Eam vim habet aurum, vt inflectat, non solum voluntatem, sed iuditium, vt dicant, *Hi Dij tui qui te eduxerunt.* Cum die esterna non essent.

3 Chrisol. in Matth. *Hæc omnia tibi dabo, si cadens adoraueris me.* Prima, nec secunda inuasione, & tentatione, non capit experimentum per diuitias, & regna mundi idæata, sed reseruat ad vltimam. *Omnibus viris fortiorem pecuniarum cupiditatem locauit, quasi omnibus valentius. Magis idonea ad supplantandum adhibet extrema. Quod etiam in S. Iob tentatione reseruauit.* Inducendo vxorem, vt improbitate inclinaret ad desperationem. Quid possit *auri sacra fames ad* violentanda, & rapienda humana pectora, quisque nouit.

Quòd

Quòd *idolo auri, & argenti; adhuc terpis faciei, vix est vllus mortalium, qui non exhibeat adorationẽ. Solus Deus homo potuit negare, & repellere ad eruditionem nostram.* 42

1 Ex clauſ. text. vbi Dalila pecunijs incitata eſt ad aggrediendum facinus detegendi vires ſecretas, in quo ſibi imminens terror, & excidium.

2 Ex præallegatis in præcedenti diſcurſu, quæ facile infleti poſſunt pro iſto. Ne increſcat volumen plus ſolito abſtinemus ab alijs.

Quòd *præſtantia virtutis acuit æmulationem, inuidiam, concertationem, & quo maior maiorem.* 44

1 Ex clauſ. text. vbi Samſonis præſtantia tot inſidias, cauillationes, & expugnationes excitauit in Philiſtæis.

2 Hiſt. Geneſ. 37. *Diligebat* Ioſeph valde, &c. fecit tunicam polymitam, &c. videntes fratres quod à Patre plus cunctis filijs amaretur, oderant eum, nec poterant pacificè loqui. Vt occidere cogitauerint, & miſſerint in ciſternam, & vendiderint. Præſertim cum ſuam præſtantiam ſupra cæteros inſinuauit, referens illud ſomnium de Sole, Luna, & ſtelis adorantibus. Et aliud de manipulis circunſtantibus, & adorantibus ſuum eleuatiorem. Mirum fratrem, & tot egregijs refulgentem, ita odio inſequi! excellentiæ argumentum ab inuidis impugnari. Quo circa Oleaſter. *Oculati debet eſſe ſuperiores in oſtendenda dilectione, ne in eorum, quos præ cæteris diligunt, inuidiam prouocent, vt fratres Ioſeph in eum. Non ſat fuit Deo Ioſeph facere ampliori dilectione dignum, ſed oſtendit duplici ſomno fratribus fore præponendum.* Quo exarſit inuidia fratrum in eam Ioſephi præſtantiam.

3 Hiſtoria 1. Reg. vlt. Philiſtini præualuerunt in Iſrael, & acti ſunt in fugã, *& omne pondus prælij verſum eſt in Saul*, & ſagitis percuſſus eſt læthaliter. Cum non eſſet *vir in Iſrael melior illo, ab humero, & ſurſum eminebat ſuper omnem populum.* 1. Reg. 9. Præſtantia iſta non ſolum ducis, & capitanei exercitus, ſed eminentia corporis ſufficiens cauſa, vt totum pondus belli incumberet, & inueheretur in ipſum. Lyra. *Notetur, quod erat excellentis bonitatis, conſequenter deſcribitur eius aptitudo corporis.* Ab humero, & ſurſum, in quo noratur fortitudo corporis, quæ multum eſt neceſſaria in Regibus. Homines inuidi frequenter machinas, & inuectiuas inijciunt in id, quod intuentur eminentiæ in alijs, ſupra ipſos, vel

no-

nobilitatis, virtutis, sapientiæ, &c. vt Pharisæi in Christum conspirant. *Quid facimus, quia hic homo multa signa facit?* Excellentiæ igitur, & præstantiæ argumentum improbari, & insequi à malis. Sed improbatio virtutis egregia laudatio.

Quòd *viles pecunijs, iniurijs, & molestijs inducuntur, & obligantur, ingenui beneuolentia.* 44

1 Ex clauſ. text. vbi pellex oblatis pecunijs, ſuadetur, & adducitur à Philiſtæis, vt eliciat ſecretum in quo vires.

2 Oleaſter ad Geneſ. 3. vidit mulier, quòd bona eſſet arbor ad veſcendum. Nos, *pulchrum* viſſu, aſpectuque delectabile. Diabolus conſilium dedit edendi poſito diuinitatis lucro, vt maiori propoſito facilius obtineret. ſicut Chriſto, *Hæc omnia tibi dabo.* Et diuertit ad inſtandum pomo minus æſtimabili, & eius pulchritudine ad viſſum, & ſapore ad guſtum. *Attende hic ſerpentis fragilitatem. Suaſsio non ſufficit ad fœminam deijciendam in peccatum, ſed pulchritudinem guſtumque fructus obiectauit, vt quod non faceret conſilium, pulchritudo pomi perficeret.* Ego reducerem in fragilitatem potius fœminæ, & vilem appetitionem, cui non pręcioſſa, ſat futilia, vt adducatur.

3 Euſeb. Emiſſen. Dom. in Palm. Ad Matth. 26. *Quid vultis mihi dare, & ego cum vobis tradam. At illi conſtituerunt ei triginta argenteos.* Ad inſigne facinus, & infame ſcelus vendendi Magiſtrum adducitur diſcipulus exiguo, & vili prętio? ita. Quis nisi infamis Iudas, tam vili pretio adduci potuit. *Homo pacis mæ, in quo ſperabam, ampliauit ſupplantationem. Appenderunt mercedem meam 30. argenteis. Dixit de prætio ironice, quia indecorum, & inconuenens erat, vt mundi Saluator, tam vili prætio venderetur.* Ex his cauendum, ne ſis alter Iudas, dum amicos inimicis, Regem, & regnum hoſtibus, iuſtitiam Cathedrandis triginta argenteis, & turpius, & infamius minori, & viliori moneta tradendas, arbitraris.

Quod *eſt ſcelus iniurioſum capere experimentum de diuina perfectione, aut humana. Sed cupiditas pecuniæ omnia aggreditur.* 45

1 Ex clauſ. text. vbi Dalila ſcortum inducta, & allecta cupiditate pecuniarum periculum agit de virtute roboris Samſonis ſæpè, vt locus intentaretur inferendi mortem.

2 Oleaſter ad hiſt. Num. 20. Cum indigeret aqua *populus conuenerunt aduerſus Moyſem.* &c. obiurgantes quòd eduxerit de Egypto in deſertum, vbi

vbi siti peribant. Moyses causam detulit Deo. *Tulitque Moyses virgam* sicut præceperat ei Dominus, *audite rebelles incredduli, num de petra aquam poterimus eijcere?* Et percussit, & egressæ sunt aquæ largissimæ. *Hæc est aqua contradictionis, vbi iurgati sunt filij Israel contra Dominum. Et sanctificatus est in eis.* Diuina omnipotentia quæ tot mira ad fidem suorum, & fiduciam augendã patrauerat, adhuc non est integram fidem assequuta: Tentant potentiam Moysis, imò Deum in ministro cum virga vicaria omnipotentiæ, & eductione aquæ largissimè probat potentiam Moyses, imò Dei, cuius omnipotentiæ virtus erat tentata. *Constat ex his litem fuisse inter Deum, & populum, & fuisse super potentia Domini. Putarem an posset aquas de petra educere insolens iurgium, quo tentant diuinæ potentiæ virtutem,* sed anxietate sitis satiandæ negotium aggreditur, assequitur miraculo, sibi in confusionem, Deo in gloriam, ex eorum incredulitate assurgente. Fuit in eis sanctificatus ex miraculo, quoniam videntes eius potentiam, laudauerunt eam.

3 Caiet. ad 2. ad Corint. 13. Paulus absens per epistolas inducebat Corint. ad pœnitentiam, ne dilatarent ad aduentum, & præsentiam: vt sat illis Deum, loqui per illum verbis, & scriptis, nec expectasent, id probari per opera punitiua, vt incestuosus per vexationem Dæmonis, quem tradidit in interitum carnis, vt spiritus saluus fiat. *An experimentum quæritis eius, qui loquitur in me Christus*, ne periculum, & experientiam virtutis Dei in me faciatis, credite doctrinæ, ne cupiatis vexationem, & punitionem Magistrã. Nam iniuria exigit vltionem. *Corinthij non se emendantes, quærunt facto experiri Christum sapientem in ipso Paulo.* Et dicit, ne experiantur sensibilem vltionem. *Tradebat Christus in Paulo, quos volebat, Paulus damnabat vexationi sensibili Sathanæ,* satius aquiescere exhortanti, quam punienti. Tentantes volumus signum videre è cœlo terra, &c. excutiuntur. Generatio praua, & alij tentantes de numismate Cæsaris. Quid me tentatis. Hypocritæ, &c.

Quòd *in capite Rege, aut Principe cõsistit virtus, & robur rei publicæ, vt si amittant, vel capillum boni exempli, ruant boni reipublicæ mores.* 47

1 Ex clauis. text. vbi capillitio detracto è capite Samsonis, omnia corporis membra, sine virtute ulangida, & infirma facta.

2 Historia 1. Reg. 31. *Arripuit Saul gladium, & iniuit super eum. Quod cum vidisset armiger*

eius, videlicet, quòd mortuus esset Saul irruit etiam ipse super gladiũ suum, & mortuus est cum eo. Principis exemplum efficacissimum ad sui imitationem, nec solùm ad opera ordinaria, sed ad inferendam sibi mortem? imitatio omni exaggeratione maior. Quo circa Lyranus, Exemplo Principis sibi inferre mortem admittit excusationem? neutiquam, *Fuit enim non virtutis ad ardua honesta, sed timiditatis, & pusillanimitatis: iste non excusatur, nec ab Hebræis, nec Latinis. Timens grauius affligi à Dauid, quasi desperans sibi subripuit vitã. Quod factum fuit pusillanimitatis, prout declarat Augustinus de ciuitate Dei.* Et apte. Principis enim capitis delyrium, & præceps temeritas non cogit ad exemplum. Licet nil valeat, vt vita regentis (vt edictum ad humanos animos) & moueatur cum Principe vulgus. Secus ausus ad licita, vt dare vitam ad exemplum, & imitationem Christi. *Poteſtis bibere calicem quem ego, &c. Dicunt possumus.* Et alter sequutus est, gladio occisus ab Herode Aggripa, Ioannes in frixione in dolio. Quo circa Euseb. Emissen. *Dicebat de calice passionis biberunt Iacobus, & Ioannes, non quod ambo vitam finerent martyrio. Iacobum occidit Herodes, Ioannes non occisus, sed in pathmo relegatus, & in feruentis olei dolium missus.* Principis mors laudabilis laudabiliter immitatur à subditis.

3 Chrisost. homil. 6. in Matth. ad illud cap. 2. *Audiens autem Herodes Rex turbatus est. omnis Hierosolima cum illo.* Rex tyrannus, intrusus timere ingressum legitimi, & naturalis rationi consentaneum, sed Iudæi, qui audiunt legitimum, & naturalem, qui eripiat à seruitute intrusi, & gentilis, & adducat insignia bona, omnino irrationabile. Rex timidus præ oculis. Memoria parentum, qui optati seruitutem egyptiacam inter Egypti ollas carnium mori suasit timorem. *Auersabantur* (sicut Patres) *Dominum beneficia conferentem. Præferebant quam in Egypto sustinerunt seruitutem.* Adeo efficax maiorum exemplum, vt sua deat auersari bonum, adoptari malum. Hoc de his præsertim verum, qui à Rege obtinebãt officia, quibus possent priuari à Rege Sancto Christo, secus de iustis Simeone, Anna, & alijs qui expectabant, & optabant aduentum.

Quòd *Deus in vili, & exili capillo alligat dona sua, vt indicet esse dona sua solius, quæ præstant hominibus fortitudinem.* 47

1 Ex clauſ. text. Vbi insignis virtus roboris alligatur pilo Samsonis, non armis illius, vt nil facinoris sibi arrogent arma,

ma, pilus facinus integrum.

2 Historia 1. Reg. 17. *Saul indutt Dauid* (equæstris) *vestimentis suis, & imposuit Galeam æreā super caput eius, & vestiuit eum lorica. Accinctus ergo Dauid gladio eius, cœpit tentare, si armatus posset incedere. Dixitque ad Saul, non possum sic incedere, & deposuit ea. Et tulit baculum suum, & elegit quinque limpidissimos lapides, & fundam manu tulit, &c.* Stultitia adolescentis respuis validissima arma offensiua, & defensiua, quorum quodlibet posit parturire victoriā, & prœeligis debilissima instrumenta, baculum, fundam, lapides, vnde nec faustus euētus speraripotest. Sed satius discretus & prudens. Arma Saulis apta ad pugnam hominum, hæc Dei pugna, quæ armis non indiget. Nec armatus, sed inermis intentat, & assequitur victoriam. Augustin. serm. 5. de verbis Apostoli, *sic sic, alter non, omnino aliter non prosternitur inimicus*, sic innermis prævalet contra armatum. Manifestum Deum ad pugnam Saul armis non indigere, sed valide per inermes. In inermi potentia Dei belligeratur. Ambros. 1. de officijs cap. 35. *Itaque* prudentiam fortitudinis comitem habuit in prælio. Nam aduersus Goliam singulari certamine dimicaturus arma quibus onoraretur respuit, nūquam nisi cōsulto Domino bellum adoisum est.

3 Christus Dominus expugnaturus orbem eligit, & mittit viros, non belligeratores, non armatos, non doctos, non diuites. Viros pauperes, indoctos, inermes omni potentia destitutos. *Sine sacculo, sine pera, sine calceamentis.* Optimos potentes, diuites, doctos. Neutiquā. Pie Ambros. t. 5 lib. 3. in Lucæ 6. non sapientes, non diuites, non nobiles, sed piscatores elegit, *ne traduxisse* prudentia, ne redemisse diuitijs, ne potentiæ nobilitatisque authoritate, traxisse aliquos ad suam gratiam videretur, vt veritatis ratio, non disputationis præcelleret. *Stulta mundi, & contempt bilia elegit, vt confundat fortia, &c.* supra sub num. 33.

Quòd *Ecclesiasticis, & Religiosis maximè incumbendum, minutissima status obseruare. Nam in cæremonijs minutissimis stat robur religionis, & status.*

47

1 Ex clauis text. Samson in capilli occulta obseruantia vires, & robur validissimum. Cum abscinditur, amisit vires Samsonicas, & vitam.

2 Historia Exod. 19. Deus legislator daturus legem Moysi in monte sub caligine, fulguribus, tonitruis, incussit timorē in existentes in castris. Præparari præcipit, sistere ad radicē mō

tis, & prohibet illius terminos sub pœna mortis curiositate, aut aliter transilire. *Constituesque terminos populo per circuitum, & dices ad eos, cauete ne ascendatis in montem, nec tangatis fines illius. Omnis qui tetigerit montem, morte morietur* O rigor ingens prohibitionis! videris Domine, *mandata tua custodiri nimis.* Laturus legem præuenis eius obseruantiam prohibitione alia onerosissima. *Ne ascendant.* Apte: *ne tangant terminos, & fines,* rigidissimum. Oleaster hic, *Audis quanta sit diuina clementia, quæ admonet toties, ne contingat punire transgressores. Similiter dura cervix humana, vt non solùm duplici admonitione, sed sæpè opus sit vallo ad retinendam.* Admonitionem, & cautionem adhibet, vt *cum velit præcepta obseruari, prohibeat initia transgressionum. Ob hanc causam Dominus Euæ prohibuit* (ea teste) interdictæ arboris contactum. *Ne venire contingeret ad esum.* Sic Christus Matth. 5. & 6. initia peccatorum seuere *interdicit, ne contingat ruere in grauiora.* Hic Dominus prohibet non solùm montis ascensum, sed accessum, & contactum, *Disce quã sit cauendum peccatorum terminos accedere, si non vis peccare.* Hoc quod cauet Deus in præcepto suo ne violetur, sed nec ad id accedatur, Religiosis maximè prohibendum, ne regula violetur, nec in substantia, nec in circunstantijs, *nam qui spernit modica* (inquit Bonau q. 18. c. regul.) *citò decidet.* Qui intendit nimiam obseruantiam in vtroque, saltim attingit substantialem obseruantiam. Sicut *sagitarij* solent aliquantulum altius scopo impulsare sagitam, vt si neruus languide excutiat, finem, & scopum trajciat. Oseæ 5. legitur *Facti sunt Principes Iuda, quasi assumentes terminum,* in fundis dilabuntur quousque latissimum in alieno fundo præfigat. Doct. (Velazquez) dilabuntur à cultu Dei, paulatim, & *ingrediuntur in idolorum.* A patuis in præcipitia peruenitur. Religionis Samsonica fortitudo, & valor in pilo leui consistit. Multum valde interest regulæ leuiuscula spernere. Abstinentia, ieiunium, silentium, verborum otiositas, asperitas vestium, ornatus valorosus supellectilium, hæc spernens facile substantialia violabit, vota transgredietur. Quare S. Theresia nostræ Prouinciæ alumna (in Abulæ Incarnatione, sub nostra obediencia ad meum tempus, vltimæ enim visitationi adfui socius visitatori, olim Prouinciali) Spiritu Sancto instigata, Regulæ seueriorem obseruantiam (non primitiuam, sed priorem mitigationem cuius nos vltimam) aggressa est renouare, comitibus nos-

nostræ Prouinciæ V. PP. Fr. Ioanne de la Cruz, tunc Collega nostri Collegij S. Andræę Salmãticensis, nũc inscripti nouiter. S. Thæresiæ, Magistro Heredia Priore Methynensi, & alijs, qui se excalciauerunt, primo fœminis, deinde viris extruxit. Quibus Virgo sapiens, prudenter strictissime prohibuit, permittere regulæ, & constitutionum dispensationes, & relaxationes, ne noua obseruantia integritate religiosissima decideret, potius incremẽta seueritatis indies increscerent, iuxta illius mentem, & votum efficiendi quidquid intelligeret esse perfectius.

2 Oleast. ad Genes 3. *De lig noscĕtiæ boni, & mali, ne comedas, &c. præcepit ne comederemus, &c. ne fortè moriamur.* Deus prohibuit vnum pomum, vt mortiferum, & lethale, & sub dubio ambigis de morte? *existimabat mulier, vt pro vnius pomi esu, non esse Deum tam seuerum, vt vellit eos perdere, & ideo ait ne forte.* O stulta, est quidẽ vnius pomi esus initium peccati, transgreditur prohibitum, ascisitur genero humano vniuersale peccatũ; & vltimo perpetua damnatio. Vnius pomi esus, qui finem habet, & terminum in tam graui ruina vniuersi generis humani, valde cauendus. Abstinendum igitur valde ab inchoanda leui transgressione Religionis à qua ruina totius præparatur. In minutissimo oculo, & *subtilissimo crine*, sponsæ religionis, ac in tota sponsa venusta videtur deliciari diuina complacentia, *Vulnerasti in vno oculorum, & in vno crine colli tui. Cant.* 4.

Quòd *fœmina diaboli æmula, in maiori quiete dissimulat, & celat maius periculum.* 48

1 Ex claus. text. vbi Dalila sub delicioso amplexu, soporiferis, quiete, & somno proditionem celat, & intentum abscindendi capillos, eneruandi vires Samsonis ad traditionem, & mortem.

2 Euseb. Emis. Dom. in palmi ad Matth. 16. *Adhuc eo loquente Iudas vnus de duocim venit, & cum eo turba multa cum gladijs, & fustibus, missi à principibus Sacerdotum. Et accedens ad Iesum dicit Aue Rabi, & osculatus est eum.* In osculo pacis insolens proditio, in accessu pacifico ingens militum inuasio, vbi maius periculum, amica securitas? ita. Sed à quo nisi à discipulo proditore. *Hoc signum propter Romanorum milites, qui Christum non cognoscebant, Iudas proditor dedisse videtur.* Sub signo pacis, signum belli hostilis.

3 Historia Genes. 27. Vbi Rebecca audiens Isaac moribundum, petijsse ab Esau cibum, vt benediceret, instat

Iacob sibi dilectiorem, vt asserat antea, & obtineat benedictionem. *Timeo* ne inducat super me maledictionem pro maledictione. Illa super me sit ista maledictio filij mi. Attulit, obtulit, attrectatur an sit pilosus Esau, decipitur senex. Sub vestibus Esau, cibo expetito simulatio, & fictio personalis delitescit graue periculum maledictionis pro benedictione. Oleaster. *Mirabilis artifex simulationum fœmina, quæ verbo, & facto nouit optime mendatia componere.* Verbo inducens timidum maledictionis. *Mala pro bonis imprecabitur mihi*, ne timeret intorquendo supra se, factis induens vestimentis odoriferis Esau, & pellibus induens manus, ac chiroteeis, quibus obtinuit benedictionem sub imminente imprecatione maledictionis sub consilio, & securitate materna in se intorquente. Dormiebat sub sopore graui in quiete Ionas, cum imminebat, & fremebat in ipsum periculũ tempestatis subortæ. Sub diaboli allegata scriptura in manibus tollent te præcipicium Christi,

Quòd *in vno vitio in temperantiæ, vitanda omnia.* 48

1 Ex clauſ. text. vbi in vitio intemperantiæ venereæ, & delicijs fœmineis Dalilæ incurrit plura vsque ad sui internecionem.

2 Theophil. ad 1. Thimot. 6. *Radix omnium malorum est cupiditas, quam quidam appetentes, &c. inseruerunt se doloribus multis.* Vbi de cupiditate anhelante ad incrementa diuitiarum. Non parcet auarus vllo vitio, vt thesauros congerat. *Nec parcit viuentibus, neque mortuis. Hos quoque depredatur. Insurgit in parentes, fratres, ac quæ Dei sunt expolliat. Tolle de medio, & non aderit vllum bellum, inimicitia. Neque erit fornicatio. scortum enim argenti causa se se prostituit.* Addi posset idem de cupiditate venerea, quod *illa sit radix omnium malorum.* Ærroris infide, litium, discordiarum, bellorum, homicidiorum, &c. vt qui radicem admittit, se expositum existimet vniuersis peccatis.

3 Ex positis sub numero 23. de coniunctione cum vxore, quæ peperit lites discordias, innumera mala, quæ *inflecti possunt* in hunc intentum. Illud de violatione Thamar. Dinæ. Et de concupiscentia Dauid, quæ peperit rapinam vxoris ad palatium, homicidium Vriæ, & militum cum illo interfectorum, ingratitudinem insigni Capitaneo, &c. de concupiscentia venerea illius fœminæ Putiphar, vnde testimonium in castum Ioſephum, iniectio in vincula diuturno tempore, cum mille alijs incommodis carceris,

ris, & similia, quæ indigitasse sufficiat.

Quòd *fortitudo, & robur animæ in absti nentia, & ieiunio corporis consistit, & ieiunium est vera custodia ab incursu inimicorum.* 48

1 Ex claus. text. vbi si Samson abstineret à cibo, & potu, in quibus sunt propinata soporifera, in quibus somnum, & luxuria, frigeret sine illis venus. Et ieiunium, & abstinentia ab illis esset illi pro Angelo Custodiæ ab inuasione Philistinorum.

2 Theophil. ad illud 2. Corint. 12. *Libenter gloriabor in infirmitatibus meis, vt inhabitet in me virtus Christi.* Quæ ratio? *cum infirmor tunc fortior sum.* Apte. Quæ infirmitates, aut morbi sunt isti? capitis dolor à diabolo causatus? insurgentes motus libidinis? ieiunia, mortificationes corporis? *Ne existimes febrem, aut id genus morbos, interpretatur ipse has infirmitates indnans, quod sint contumeliæ, & alia*, in contumelijs, in necessitatibus, in angustijs, in persecutionibus, in carceribus, &c. *Quia audini, quòd virtus in infirmitate perficitur*, Deinceps gloriabor in infirmitatibus meis. Hæc enim quo plures fuerint, hoc vberiorem Dei, *potentiam mihi conciliant.* Ne arbitremini, quòd contristatus de stimulo carnis verba fecerim, sed potius gloriationis causa, *Dei potentiam maiorem attrahens ad me ipsum afflictionum intentionem.* Quid miraris Dei potentiam? *Nam & ego tunc potens sum, Dei gratia mihi assistente.* Cum carceri inclusus est, in fide Christi carceris custodem instituit: quando passus est naufragium reddit attonitos Barbaros: quando vinctus astitit ad iudicem, superior factus est accusatoribus, *igitur quando imbellis erat in periculis constitutus, tunc fortis, & splendidus erat.* Mortificationes mortem corpori, vitam animæ afferunt. Mortificationem Iesu in corpore circunferentes, & vt vita Iesu manifestatur in nostra carne mortali.

3 Euseb. Emis. Dom. in Palm. ad Matth. 26. *Pater si possibile est, transeat à me calix iste, &c. Spiritus quidem promptus est, caro verò infirma.* Quid hoc? in repræsentatione calicis præfigiantis corporis mortem, indicatur ausus animæ, & timor corporis? Quid mirum immortalem audacem ad imminentem mortem? mirabilius, si mortale non solum non timeret, sed anhelaret. Anima resistit potenter tentationibus, caro infirma, & fragilis est, nisi oratione roboretur, in carnem Dei cadit timor, in vtrumque? Neutiquã. *Nemo putet in timore mortis*

eum orare, vt calix passionis ab eo transferatur. Cū indicat Petro dissuadenti passiones. Vade scandalum mihi es, quia non sapis ea quæ Dei sunt. Hoc condimentum passionum, quo sollicita honoris caro diffundit præcoces riuulos sanguinis, defluentis in terram, antequam illatione vulnerum exilire cogatur à carnificibus, animus in arcem erigitur, dum corpus infirmitate notatur. Exemplo Christi, in sere aud ciam corpori refugiēti mortificationes & inuerte illius imbecillitatem, in valorē, & fortitudinem.

Quòd *Deus solet interdum fugitiuos ad se reducere molestijs, & calamitatibus.* 51

1 Ex clauſ. text. Vbi Samſon à Deo profugus peccatis meretricum, per erumnas excęcationem, incarcerationem, vincula, incommoda reducitur ad meliorem frugem, agendi pœnitentiam, inuocando Deū, & exigendo reſtitutionem fortitudinis.

2 Euſeb. Emiſſ. ad Luc. 15. Parabola *Homo habuit duos filios*, fugitiuus diſsipata ſubſtantia viuendo luxurioſe: facta fame valida, *cœpit egere*, & tandem miſſus in villam, vt paſceret porcos. Vt nec alimento illorum famen ſatiaret. *In ſe reuerſus* expendit, quibus incōmodis inſequutus, & fame laboraret, quā nec mercenarij, qui abundabant panibus, & ille famē peribat, decreuit. *Surgam ibo ad Patrem meum. Fac me quaſi vnum de mercenarijs.* Quem fugitiuum è domo fecit copia, reducem fecit inopia. *Niſi fuiſſet extra ſe non diceretur reuerſus in ſe. Tunc reuerſus, quando* memoriam recuperauit, vt domus Patris ſui recordaretur. Sic igitur ſurrexit, qui mortuus in peccato iacebat. Et quomodo venit, niſi pœnitentia, & corde contrito, & contribulato. *Hæc enim via reddeunt peccatores ad Dominum.*

3 Greg. 3 cur. paſt. admon. 3. ad 2. Petri 2. *In voce humana loquens, prohibuit Prophetæ inſipientiam.* Hiſtoria Balaam Propheta ibat ſuper iumentum ad maledicendum populum Dei, in anguſto maceriæ occurrit Angelus minans euaginato gladio, vt inflectat iter, percutienti virga poſteriora iumenti, & ſtimulo pungenti, vt iter inſequeretur; inſidentem admonet iumentum ipſius Angeli, & prohibentis inſipientiam prophetæ, loquens voce humana aperiēs, Angelum prohibere. Moralizat ſale moralitatum artifex. Quod caro propenſa ad delectabilia indecentia, procliuis ad diſona contra rationem, & Deum, caſtigata diſciplinis, & mortificationibus reducitur, in viam rectam, vt incedat, quo

vo-

vocat spiritus, recedat ab illo, in quod propendit apetitus carnalis, & inseruiat spiritui, quæ inseruiebat carnalibus. *Plerumque caro tarda flagello suo menti Deum indicat, quem mens ipsa carni præsidens, non videbat.* Domet homo iumentum, cui insidet, & cogat oculos, pes, manus, corpus, inseruientes turpibus, inseruiant honestis, lachrimis, flagellis, visitationi hospitalium, &c. cum Dauide *quam multipliciter tibi caro mea.*

Quòd *munus liberatoris sui populi ipsum deuixit, ad sustinenda incommoditates personales, vt liberaret suos.*

1 Ex clauſ. text. vbi officium, & munus liberatoris illi à Deo impositus dicta sibi anexuit onera pœnalia, vsque ad interitum.

2 Oleaster ad Exod. 32. *Vade, descende, peccauit populus.* Si ipse peccasset equum esset dimitti à colloquio, & conuersatione iucunda Dei, sed peccauit populus, erectione, & adoratione vituli, cur ipse priuatur tanto bono, & mittitur ad dolendum de tanto malo, & puniendum idolatras? quia gerebat officium ducis, & principis populi. *Nil iucundius diuino colloquio, & priuatur dux ob populi peccatum. Discant ex hoc loco, &c.* Qui docent &c. superiores, cum videãt hic Dominum, ducem à suo colloquio reijcere, vt subueniat populo, *& Seruatorem, ter oratione reliquisse, vt discipulorum suorum* tentationi subueniret. Vigilate ne tentet vos Sathanas, &c.

3 Hilar. can. 31. in Matth. *Assumpto Petro cœpit pauere, & tædere, & mœstus esse, &c. tristis est anima mea, &c.* Quid angit? immi ens mors? neutiquam, venerat ad subeundam mortem. *De his quo assumpserat mœstitudo.* Prælatia Petri, & aliorum, paucorum discipulorum, & morigerorum angit animam beatam! Quid non oneret plurium & immorigerorum? Caue, aut certa, pro inducendis moribus, ad mortem.

Quòd *fides firma in Deum non extinguitur laboribus, & erumnis, potius accenditur eisdem aduersis.*

51

1 Ex clauſ. text. Tantum abest, quòd Samson insequutus ærumnis, molestijs, carceribus desistat ab insequendo officio liberatoris, & vindicis, quòd accenditur ad plures sustinendas, vsque ad interitum ruina templi.

2 Nazianz. ad cant. 8. *Aquæ multæ, nõ potuerunt extingere charitatẽ, nec flumina obruent illã,* fidei etiam congruit accensæ. De qua præsertim in Martyribus. *Excisa florer,* vt vitis abscisione palmitum. *Aduersus ferrũ certat,* vt Hidræ capita abscissa, ex quibus alia pullulabant.

Morte

Morte vixit, vt ignis fornacis ac cenſi ferrarij inflamatur aſperſione aquarum. *Et afflictione pullulat*, vt filij Iſrael in Egypto, qui quo magis callidè præmebantur ad interitum, multiplicabantur magis ad vitam. Vt quò fidelium gens martyrio extingui contendebatur à Tyrannis, in plures augebatur, *vt ſanguis martyrium eſſet ſemen Chriſtianorum*, dùm turbæ illo aſperſæ, imo & ipſi carnifices ſuſcipiebant fidem, & pro ea vitam offerebant.

3 Imperfectus in Matth. hom 36. ad illud. *Quanto magis præcipiebat, vt taceret*, tanto magis, &c. vt cæci donati viſi, donari viſi ſunt etiam lingua, & clamore. Silentium impoſitum rumpebatur clamoribus in æthera, prædicabant. *Talis eſt natura fidei, quanto magis* vetatur; tanto magis accenditur, Apoſtolo teſte. *Sancti per fidem vicerunt regna, operati ſunt iuſtitiam, &c. obturauerunt ora Leonum, extinxerunt impetum ignis, effugauerunt aciem gladij, in occiſione gladij mortui ſunt*, quaſi paſsiua gutturis actiuam gladiorum ſuperauerit, & de illis obtinuerint victoriam. Viuebant vita temporali, & occiſione donati ſunt æterna.

Quòd *ſpolia in bello capta verò Deo, vt principali victori in templo ſunt dicanda; ſuſpenſa trophæa.* 53

1 Ex clauſ. text. vbi Philiſtini captum Samſonem, belli prædam, ducunt in templum idoli ſui Dagon, dicantes feſtiuis, belli hoc ſpolium, ſed in eius ruinam, & excidium.

2 Theod. ad 1. Reg. 5. *Tulerunt Philiſtini arcam Dei, & intulerunt eam in templum Dagon, & ſtatuerunt eam iuxta Dagon.* Cumque ſurrexiſſent diluculo, ecce Dagon iacebat pronus in terra ante arcam Domini, vt ei quaſi authori victoriæ defferrent ſpolia, vt dicerent vicit Deum Hebræorum. O ſtulti, victoriam acclamatis de arca! ſatius ipſa de vobis, & Deo veſtro. Non ipſa belli ſpolium Dagon, potius Dagon ſpolium belli illius. *Cum poſt victoriam arcam contempſiſſent, ipſa experientia, quanta Dei virtus eſſet didicerunt.* Vt Dagon in ſpolium ceſſerit Arcæ, in qua Deus figurabatur. Ille non Deus cui ſpolium dicandum, ille ſpolium dicandum arcæ, Dei victoris.

3 Adduci poſſunt ad intentum dicta ſupra ſub Num. 17. & hæc illi aggregari, vt affini inſtituto.

Quòd *inhumanitas inſolens victorum in victos, ſaturatorum in famelicos, certiſsimum vaticinium exi-*

exitialis cladis. 53

1 Ex clauſ. text. vbi Samſonem victum inſultabant victores, famelicum epulati, afflictum illuſores, præſagientes ruinam fatalem.

2 Cyprian. de bono patientiæ ad Matth. 4. *Vade Sathana, Dominum Deum tuum adorabis, & illi ſoli ſeruies.* Inuadentem dæmonem toties triplici tentatione hoſtiliter ad vincendum, ita blande leniloquio repellitur. Cum hoſte, tam truculento aſperitate verborum, atrocitate operum, cum odio, felle, & amaritudine, non oporteret concertandum? in conflictu inuadendum pro victoria æquum, non victum, & humiliatum. Nam cum inimico poſtrato benignius agendum eſt, non inſolenter inſultandum. *Congreditur cum tentante diabolo, & contentus viciſſe inimicum, nil conatur vltra verba.* Cum reppelli poſſet durè, & duplicari pœnas.

3 Hiſtoria 4. Reg. 6. Rex Syriæ certificatus, quod Eliſæus inſidiarum contra Iſraelitas notitias ſuggerebat, & dirimebantur contracautione, miſſum exercitum ad capiendum Eliſeũ obcæcatum interrogantem pro illo, ſub ſpe dirigendos inſequentes illum, duxit eos in ciuitatem Samariæ, & cum apertis oculis oratione Eliſei aduertiſſent incidiſſe in manus Regis inimici timuerunt, Rex Iſrael cum vidiſſet eos dixit ad Eliſeum, numquid percutiam eos Pater mi? at ille ait, non percutias, ſed pone panem, & aquam coram eis, vt comedant, & bibant, & vadant. Religioſus ignorat iura belli, nonne ſatius iugulari omnes, vt aiunt in ore gladij, ne vlterius bellum inferet? quid illis dari panem, & dimitti? ita prudentius. Cum hoſte miraculoſe capto, & humiliter proſtrato, non acerbitate, ſed benignitate confligendum. Quo circa Chriſoſt. vel quiſquis author tom. 1 hom. de Eliſeo, & detectis inſidijs Syrorũ. *Mirantur* (Syri) & ſtupent, ſibi pro morte victum, pro interitu cibũ, conuiuiũ pro pœna parari. Propheta docuit prior inimicos foueri, docuit primus hoſtib⁹ parcere, docuit aduerſarijs pro pœna epulas exhiberi. Victos laute tractari, in victos nõ inſolenter inſultãdũ. Reges pro nobilitate de more victos Reges laute ſolent tractare. Mortuo Leoni ſolũ lepores inſultari. Ouidius ſale in eo multis præſtant bruta. *Corpora magnanimo ſatis eſt proſtraſſe Leoni.*

Quòd *patientia, & ſufferentia calamitatum in præſenti vita, theſaurizat honorem, & gloriam in futura.* 53

1 Ex clauſ. text. vbi Samſo-

sonem virum, sufferentem improperia in morte pie tractãt religiosè sentiendo de illo, qui sine virtute cœlesti tot egregia non peregisset.

2 Iacobus epist. cap. 5. totus in commendanda patientia. *Ecce beatificamus eos, qui sustinuerint. Sustinentiam Iob audistis, & finem Domini vidistis, quoniam misericors Dominus, & miserator.* Sanctus Iob exemplum patientiæ pro brebi tempore, altius Christus in finem vitæ in cruce. Dominus præmiator in præsenti, & in futura, hic temporaliter, illic æternaliter, bis liberalis. Nazianz. orat. 11. in præsenti vita concedit bona in arrhas futuri præmij. *Ille retributor in hac etiam vita rependit, &c. & in inuisibilibus fidem astruens,* vt beatificati sint in præsenti in choatione præmij temporalis, in pignus consumati, & æterni.

3 Origen. ad Matth. 25. *Statuet oues à dextris.* Qui oues, quæ saluantur? qui sicut oues ad occisionem ducti, silentio perferunt iugulum, leui solùm balatu resonante. De iustorum patientia in perferendis, ærumnis. *Dicuntur oues, cum laduntur, & tacent.* Et in benignitate probati, preces transmittunt ad Deum. Perfectio charitatis in eo enittet, quòd *charitas patiẽs est, benigna est, non æmulatur, non cogitat malum, &c. omnia suffert, &c.* Viri qui agunt præsertim de vitæ spiritualis perfectione audiant, & opere cõpleant illud Prob. 26. *Noli respondere insipienti ad insipientiam eius, esto sicut mutus & tacens, & quasi non audiens.* Si finem imponere litibus desideras.

Quòd *reuerentia in templis est adeò debita, quòd irreuerentia in Deum, in templo adhuc Dagonis, ruina reipublicæ mulctatur.*

1 Ex clausi. text. vbi in templo Dagonis illi festiua, Deo vbique colendo irreuerentia. Vnde id exigebat ruinã in vindictam.

2 Theophil. ad Matth. 21. *Eiecit flagello de templo vendentes oues, & bobes. Mensas numulariorũ & cathedras euertit, &c. Domus mea, domus orationis vocabitur. Vos autem fecistis eam speluncam latronum.* Qua authoritate flagellis pellit indecenter negotiantes, & appellat domum suam? Quis te constituit principem super numularios, venditores, &c? *Ostendit, quæ Patris, & sua esse, & tamquam dominus domus templi honestatis templi curam habens.* Eijciendo oues, & bobes præsignificauit, quod *displicebat iam sacrificium animalium olim Deo dicatum. Non opus esse, vltra sacrificio, & immolatione, sed oratione.* Vide ne templum Dei, quod est in te, facias speluncam Dęmoniorum. *Fit spelunca, si habuerimus cogitationes amicas rebus car-*

carnalibus. ¦Cogita Christum in Ecclesia flagello spirituali pellere de templo lasciuos è circulis, & caue tibi, & time à lenocinijs, quibus insequeris creaturam, te distrahentem à Deo, illi iniuriosam, & ingratã. ¦Cauendum contrahi peccatum, vbi speras à Deo veniam.

3 Oleaster ad Exod. 32. Hist. Vituli adorati, vbi in fastigio montis aderat Deus digito scribens tabulas Moysi, præsentia sua sacrati. *Si quis est Domini, &c. iungatur mihi, &c.* Et præcepit leuitis, *ite de porta ad portam, & occidat vnusquisq; fratrẽ*, &c. Vindicare Deum ab iniuria illata per idolatras, decens & sanctum, per manus autem leuitarum dicatarum cultui sacro indecẽs. Neutiquam. *Hodie consecrastis* (inquit Moyses) *Manus vestas Deo. Si iudex malorum es, non putes te irreligiosum esse. Non minus Deum colis epere, quam si donaria, & sacrificia manibus sacris Deo offerres.* Deo acceptissimum est sacrificium punire peccatores, sicut colere sanctos. O si in Ecclesijs vigilarent superiores sæculares, & Ecclesiastici, vt pœnis punirentur violantes sacra.

Quòd *qui aliquando magnus, adhuc abiectus, & postratus, mittit splendores suæ magnitudinis.* 56

1 Ex clauss. text. vbi Samson vinculatus, lexoculatus, illusus, inedia, & fame debilitatus, insignis roboris dat signum, amplexu columnarum diruens templi machinam.

2 Theophilact. ad Lucæ 23. Christus in cruce pendens *voce magna clamans emisit spiritum, &c. in manus tuas commendo, &c.* Signa magna suæ dedit diuinitatis. In Sole Luna, velo templi, petris, monumentis, cõcessione paradisi latroni, &c. emissione vocis magnæ in extremo vitæ, vbi cæteri remisso halitu expirant, vt assistens centurio, inde deduxerit *vera hic homo iustus erat.* His tot ac tantis mirandis signis diuinitatem *ostendit, quod non per impotentiam crucifixus est, qui talia fecit posset illos perdere. Cum voce magna clamasset emisit spiritum. Non enim sicut communis homo, sed cum magna potestate mortuus est,* habebat potestatem animam ponere, & accipere eam iterum. *Et mortem nominauit animæ depositum* (in Patris manibus) *tanquam iterum recepturus.* Cruci affixus emittit diuinitatis, & magnitudinis suę signa, splendores.

3 Hist. 1. Reg. 17. *Dauid percussit Philistæum in frõte eius, & cecidit in faciem suam super terram.* Et animam agens dedit valoris signa. Quæ? Philo, seu Pseudophilo in antiquitati. Bibli, dicit quôd cum Goliat *videret Dauidem euaginantem gladiũ*

suum

suum ad trucidandum dixisse. Festina, interfice me, & exulta. Cui Dauid aperi oculos tuos, ante quam moriaris, & vide interfectorem, qui te interficit. Et respiciens Aliophylus vidit Angelum, & dixit, non solus occidisti me, sed qui tecum aderat, cuius species non est, sicut hominis. Et Dauid tũc abstulit caput eius ab eo. Vbi sibi conciscere ipsam mortem animosi signum, similiter soli homini Dauid, non referre victoriam. Sed altiori Numini. Magnus enim adhuc abiectus, prostratus, moribundus egregij valoris, & animi ostendit stemmata. Oportet, & te virtutibus insignem, adhuc insequutum persecutionibus, infortunijs, virtutis dare indices, vt Sanctus Iob inter aduersas fortunas, *Dominus* dedit, &c. sit nomen domini benedictum, nec lacessitus iniurijs, inferas similia vindicta.

Quòd *Deus pro salute hominum assequenda, non dubitat edere miracula, sed vbi est certa, & secura, finit res geri iuxta ordinem naturæ.* 56

1 Ex claus. text. vbi pro salute Samsonis, non dubitaret miraculo eripere, sed cum iam certa esset facta pœnitentia, non prohibet ruina templi occidi pariter cum Philistinis.

2 Euseb. Emiss. Dom. in Palm. ad Matth. 26. *Et ecce vnus exemit gladium suum, & percutiens seruum, amputauit auriculam eius.* Petri amor cohibetur mitte gladium, &c. *An putas, quia non possum rogare Patrem meum, & exhibebit mihi plusquam* 12. *legiones Angelorum, quomodo ergo implebuntur scripturæ?* Prophetarum de crucifixione, & morte mea. *Vos duodecim* (discipuli) *estis, qui pro me pugnare contenditis*, ego si volo subitô habere possum plusquam duodecim legiones Angelorum, *quod igitur non me defendo* (miraculosè) *non est impotentia, sed voluntas*, si enim Dominus se defendere voluisset, neque gladij ei resistere potuissent. *Hoc enim ipse monstrauit, cum ad vnam responsionẽ eos postrauit.* Ego sum abierunt retrorsum. Potuit ergo Christus effugere manus ministrorum, ne inferretur ipsi mors, sed noluit, sed finit rerũ series in ordine suo. Cum iam venisset hora eius, vt transiret de hoc mundo ad Patrem.

3 Theophilact. ad illud Hebræor. 11. *Sancti* per fidem, &c. in occisione gladij mortui sunt. Nonne qui obturauerunt ora Leonum, vt Daniel, qui extinxerunt impetum ignis, vt tres pueri, qui effugauerunt aciem gladij, vt Elias. Qui ludibria experti, vt Eliseus apueris. Qui lapidati sunt vt Stephanus. Quis secti sunt vt Isaias. Qui mira operabantur,

vt

vt montes transmutarent, Leones ignes, &c. superarunt; cur in occisione gladij tandem occisi sunt? Alij per fidem ora gladij euasserunt, alij in occisione gladij obierint mortem. Poterat Deus si vellet, vt aliquando voluit eripere ex ore gladij, voluit tamen iugulo Sanctos martyres ordinarie vltimum obire diem.

Quòd *verior amicitia Dei ad suos non in eo solum sita est, vt dilatet vitam eorum ad plures annos, sed in eo, vt acceleret, & assumat ad se dum sunt in gratia.* 57

1 Ex clauſ. text. vbi Deus amicitiæ indices dat Samsoni pœnitenti satis expleuisse sui officij munia, & dispositum ad mortem, ad quietem laborum.

2 Lyra ad Sap. 4. *Iustus* si morte præ occupatus fuerit, in refrigerio erit, &c. consumatus in brebi expleuit tempora multa. Placita erat Deo anima illius propter hoc properauit educere illum de medio iniquitatum. Qui vel affectant præsentem, vel negant immortalitatem animæ, & futuræ vitæ sempiternam gloriam facile, non acceptarent pro speciali fabore vitæ brebitatem, optantes in præsenti diu immorari. Iustus autem, hoc beneficium admittit in præmium, & priuilegium. *Hic ostenditur* præeminentia iustorum brebioris vitæ, viuunt iusti ad moriendum temporaliter, & moriuntur ad viuendum æternaliter; mali viuunt, sibi ad vitam temporalem, moriuntur ad mortem æternalem. Videbunt finẽ sapientis, & contemnent, & post delitias decidentes in contumelia inter mortuos in perpetuum, &c. Sic probatur mortuus est diues, & sepultus est in inferno Lucæ 16. & sic priuantur honore iustorum, factum est, vt moreretur mendicus, & ministerio portarerur ab Angelis in sinum Abrahæ. In præsenti Samsonis, & cæterorum clades idem interitus, & funus omnium, dispares Dei fabores, & in dispares fines.

3 Historia. Elias fugit mortem minitatam à Regina Iezabel. Peruenit fugitiuus in desertũ. Sub iunipero petit, quod refugit. *Petiuit animæ suæ, vt moreretur.* 3 Reg. 19. *Nec melior sũ quam Patres mei.* Tolle animam meam. Elia ne superbias existimans tibi meritis indulta tot egregia facinora, vicisse Reges, Principes, &c. Deo instigante. Vinceris, ita solius fœminæ terrore, vt mortem illa minitante perhorrescas. Quid petis quod sola assistentia sine fuga consequi non possis? An putas merito meliori supra Patres tibi vitam largitam, meritis vlterioribus eges, vt tibi mors

pe

permiratur. Chrisost. homil. de Elia, & Petro. *Deus* declarare voluit miracula illa, non ab Elia, sed à sua potentia facta fuisse. Operante Deo subijciebas Reges, abscedente vna mulier terribilis visa est. Ob dormiunt lasus, suscitatur ab Angelo. *Surge* comede grandis enim tibi restat via, admeritū cō parandum mortis. Hoc suis Deus annuit in meritorum præmium, tibi altius supereſt.

Quòd *temperandæ sunt lachrimæ, cū Deus rapit ad se parentes, consanguineos, amicos. Scientes quòd non tollit nostra sed recipit ad tempus mutuata sua.* 57

1 Ex clauſ. text. vbi Samsonis consanguinei scientes interitum eius, non lachrimarum profusione adeò impediti, quòd non petierint defunctum ad sepulturam (parentis) qui iacebat, non apud suos, sed extraneos.

2 Chrisost. ad illud Iob *Dominus* dedit, Dominus obstulit, sit nomen Domini benedictum. Grata pignora filiorum abstulit Deus à Sancto Iob, greges, facultates, domos, &c. accepit mutuo à Deo, ipse sua recuperat, superst obligatio agendi gratias pro tempore, quo cesit illa mutuo. *Nec animus* (Iob) deiectus, nec oratio eius in Deum fuit iniuriosa; quod tyrannice subtraxerit parentes, aut amicos, filios, &c. Sed magis cum gratiarum actione.

3 Basil. orat de Iulita Martyre. Hortatur gratias reddentus in illius mortel, iuxta exemplum Bernardi in obitu sui fratis Gerardi. *Si dolemus* ablatum Gerardum, non obliuiscimur, quòd fuit datus, & gratias agimus, quòd illum habere meruimus.

4 Hier. Alluſſ. ad, *Domine* si fuisses hic frater meus, &c. satius dixisses meum iure creationis, cesi pro tempote tibi, non tam tuus, quàm meus dici debet. Consolatur (vt Christus sorores) Tyrasiam in funere suæ filiæ. *Commodauerat*, vt haberes, quanto tempore voluisset, vt cum vellet rursum auferet, nil abstulit tuum, qui dignatus est recipere propriū. Dedit mutuo seruato, sibi iure illæso repetendi pro voluntate. Ad hæc in funere Reginæ Margaritæ austriacæ nostræ, in ter Hieroglifica funeralia mausolæi hoc sale conditum. E nube descendebat manus in terram, quæ arripiebat gemmam ad cœlum. Hoc carmine. Mutua gemma pio in tempus concessa Philippo est. Iure suo repetens tollit ab orbe Deus. *No lleba hurtada la perla, que el mismo que la prestò, como dueño la cobrò.* Ita consanguinei Samsonis recuperant suū, Deus suū insignem ministrum militiæ.

Quòd

Quod *piũ valde est honestas exequias agere pro defunctis parentibus, consanguineis, amicis.* 57

1 Ex clauſ. tex. Vbi cõſanguinei Samſonis defuncti, exigunt defuncti cadauer, & Philiſtæi annũt pie, nec eiiunt in defunctum, igne mulctantes, ſed benignè tradunt opinione de ſuis faciendis conceptã, ad pias exequias funerales.

2 Hiſt. Deut. 34. *Aſcẽdit Moyſes ad montem Nebo, & viſſa terra promiſſa, mortuuſq; eſt ibi Moyſes ſeruus Domini, iubente Domino, & ſepelivit eum in valle Moab. Et non cognouit homo ſepulchrũ eius vſque in præſentẽ diẽ. Fleuerunt que filij Iſrael triginta diebus,* & nõ ſurrexit in Iſrael vltra Propheta ſicut Moyſes &c. Oleaſter adhęc, *multi Principes dedignantur exequijs intereſſe ſuorũ, Dominus ſepelire ſeruum dignatur.* Nec ſat a mori ſepelire Angelos, per ſe. Quare Deus nõ vis homines ſeruitui Mauſoleũ cognoſcere, quo eũ recõdiſti? Vt nos doceat nõ debere cum alijs hominib⁹ conuerſari, qui familiariter cũ Duo cõuerſatur. *Defflendi ſunt boni prælati, & paſtores.* Nõ ſurrexit alius ſicut Moyſes. Iſte locus clamat id, quod docuit ſapiens, *ne laudaueris hominẽ in vita ſua,* ſed qui à Deo miris eloquijs fuerat eleuatus, laudibus hominum, non indigebat.

3 Hiſt. 4. Reg. 13. *Eliſeus* ægrotabat infirmitate, qua, & mortuus eſt, deſcenditque ad eum Ioas Rex Iſrael, & fleuit coram eo, dicebatque Pater mi, Pater mi, curus Iſrael, & auriga eius. Mortuus eſt ergo Eliſeus, & ſepeliuit eũ. Lyra hic *eat ſam* fletus Regis aſsignat. Deſcẽditq; Rex, quia vita Eliſei multũ valebat ad defenſionem regni ſui. Cornelius à lapide Quod Rex cum alijs pias funeris exequias cõpleuit. Moriẽti aſſuiſſe Ioas *Regẽ, ac filios Prophetarũ diſcipulos ſuos, iam per totũ Iſraelẽ propagatos, vltimaque ab eo ſanctitatis, & religioſæ vitæ monita accepiſſe.* Vixit centũ annis, & amplius, *in religioſa diſciplina octoginta.* Mortuuſque eſt anno mundi 3204. ait Salianus, ante Chriſtũ anno 849. Equum enim erat tãti viri exequias honorificas funerales Regem egiſſe, & diſcipulos Carmelitas tanto parenti.

Lectura de 70. ann. Captiuit. & 70. Hebdom.

Quòd *diuina oracula, ita ſint certa, & indubitabilia, quod non vereãtur examinari per tẽpora, & ætates.* 9.

1 Ex clauſ. tex. vbi apparitio Angeli nomine Dei prænũtiantis Danieli libertatẽ captiuitatis, imò totius generis humani per aduentũ Meſiæ, poſt Dariũ, & ſeptuaginta hebdomades annorum, quæ impleta credimus refertur.

2 Lyra ad illud act. 2. *Et cũ cõplerentur dies pentecoſtes, erant omnes*

nes pariter in eodē loco, & factus est de cœlo sonus, tanquā aduenientis spiritus vehementis, &c. Deus in promissis implēdis fidissimus, nec differt præfixi termini lapsum, dum est fieri impletionis. Suā absē tiā discipulis dolentibus, substituit promissa prę sentia Spiritus Sācti. *Nisi abiero Paracletus non veniet, & dum assumptus fuero, mittam eum ad vos, &c. Paracletus autē Spiritus Sanctus, quem Pater mittet in nomine meo, ille vos docebit omnia, &c.* Præfixa tēporis periodus, erat dies pentecostes, cum cōplerentur, labente tēpore ante fixū instans, peremptorius cōtingit aduentus Spiritu Sancti super Colle giū Apostolorū. *Præmissa promissione, & spectatione debita Spiritus Sancti, hic ponitur adimpletio promissi, & primo ponitur hæc adimpletio, secundo adimpletionis admiratio.* Dies pentecostes, ideſt 50. dies, à penta, quod est quinque, & à coste quod est decem, quinquagesima namque dies à paschate, celebris erat apud Iudæos in memoriam beneficij datæ legis in Synai Exod. 10. Quinquegesima die ab egressione de Ægypto, & cōuenienter ila die infussum est Apostolis Spiritus S. donū, per quod lex Euāgelica impressa fuit, & firmiter radicata in cordibus eorum. In quo legis Euangelicæ facta est solemnis promulgatio, illo in gēti sono, & strepore, vt solent leges, aut prægmaticę Regales tubis, & tympanis in foro publico. Caiet. prę mit. *Est sermo de die quinquagesimo, & dicit debuisset cū inciperet dies nondū cōpleretur, nā res gesta scribitur eueniſſemane diei. Docet scitō, quod dies incipiebant à prima noctis hora apud Hebræos, & res gesta mane hora tertia recte scribitur, dum cōpleretur dies, diuiso die in duas partes* à vesperа in mane, & mane vsq; ad vesperam apud Hebræos, dici pars secunda, iā agebat horā tertiā, & ita nō incipiebat, sed dies ille cōplebatur. *Et est sermo de quinquagesimo die à resurrectione Christi,* quo exactissime Christi reuelatio, & promissio ante per acta inuenitur impleta.

2 Theophil. ad 11. ad Hebræos, *Fidę Noe respōso accepto de his, quæ nō videbātur metuens aptauit arcā in salutē domus suæ, per quā damnauit mūdum.* Noe accepit diuinū oraculū de diluuio futuro, dedit assensum Deo, prænūtiauit cæteris, & fabricauit arcā illā tot annis, ad saluādū progeniē, & tot ictib⁹, & strepor ib⁹ in fabricatione, vt declamationib⁹ induit inundationis præconē, *& visus est,* eis quasi ludens loqui, vt simile prænuntiū dilubij ignis Sodomitis. Gen. 19. & hos, & illos infalibilis Dei euētus subiro inūduit. Diuinū oraculū Dei siue per se, siue per Angelos certissimā habet impletionē. *Noe à Deo edoctus, non fuit incredulus, cū omnib⁹ voluptatib⁹ indulgerent, nec quidquā periculi spectarēt. Credē, metuit diluuiū, cōstruxitq; arcā.* Illis incredulis iuxta 1. Petr. 3. *in diebus* Noe cū fabricaretur arca, inūdatione incredulitatis pœnas soluentibus, vt nec gigas euaderet. *Quod fuit semper difficile, & perplexa disquisitio genealogiarū, & nobilitatū, adhuc virorū Principū notissimorū.* 29

1 Ex

1 Ex clauſ. tex. Vbi ingẽs difficultas in inquirẽda, & definienda progenie illius Aſſueri patris Darij, & ſimiter ipſius Darij, an fuerit hic, ille, aut ille, &c.

2 Moyſes in Gen. deſcribens omniũ adhuc creaturarũ geneſes, aut generationes à Deo, authographus, chronologus, Hebræus c. 11. *Hæſunt generationes Sem.* V. 12. *Arphaxad genuit Sale.* Indubitatũ immediate, aut mediate per Caynã, difficilẽ, & obſcurã rei veritatẽ reddire 70. ſic genealogiãdo. *Arphaxad genuit Cainem, & Cainã genuit Sale.* Et quod caput eſt ita legitur apud S. Lucã, nõ ſolũ tranſcriptorẽ vt 70. ſed vere ſacrũ ſcriptorẽ inſtinctu, & calamo Spiritus S. ſcribentẽ. Hinc interpretes diuiſi in ſuas claſes. *An inter Arphxad, & Sale ſit interũcienda generatio Cainã, aut intermittẽda, vt intermiſit Moyſes.* In bello vtrinque ſpes, vtrinq; metus, mitto littẽ de numero annorũ. Inſtituo. *An ſit Moyſes ſequẽdus omittẽs, an S. Lucas interũciens.* Cũ autẽ vterque ſit ſcriptor Sacer, & ſcriba Spiritus S. neutri deferẽdus error, & periculi nõ minoris eſt dicere, Moyſem hic eſſe mutillũ, quã Lucã eſſe ſuperfluum, illũ truncatũ, iſtũ redundãtẽ, hiſtoriã, & cronologiã reddi corruptã, & falsã per exceſsũ, aut defectũ. Igitur in perplexitate genealogia. Nõ mirũ reddi difficiles plures, & labe rinthioſas. *Vt alij Moyſis ſentẽt ã, alij Lucæ cũ catholici redigãt in cõcordiã*, pro exigẽtia admiſſæ ſentẽtiæ. *Prima ſententia* inter nouiſsimos interpretes aſſerit Cainã fuiſſe mediũ inter Arphaxad, & Sale. Siluius hic ſecutus alios. 1. Quia ſic habẽt 70. (nõ ex originali Hebræo vbi non eſt) ſed ex traditione, vel hiſtoria Hebrẽorũ, vel inſpiratione diuina, & auget fidẽ, quod olim habita eſt, vt Vulgata. 2. Quod S. Lucas c. 3. legit, qui fuit Sale, qui fuit Cainã, qui fuit Arphaxad. Etſi error irrepſit in 70. qui ſolũ fuere tranſcriptores, nõ potuit in S. Lucam, qui fuit ſcriptor inſpirãte, & dictãte Spiritu S. cui aſcribi nõ poteſt error, &c. licet cadat error in tranſcriptorẽ, nõ potuit in ſcriptorẽ originalem, nec poteſt inſeri indictato, & ſcripto à Spiritu S. licet intrudi poſſet in ſcripto typographiæ. 3. Nã poſt Xiſti editionẽ correctã, periculosũ in fide videtur dicere, nõ ita correctam, ſcriptã, typographam, quod ſubſit iterũ iudicio Eccleſiæ, vt vlterius poſsit iterũ perpurgari, & expungi. Quod innuere etiã videtur Trid. dũ vult ſuſcipi cũ omnib⁹ ſuis partib⁹, vt in Eccleſiæ legi cõſueuit. Et legi cõſtat, qui fuit Sale, qui fuit Cainã, qui fuit Arphaxad. 4. Quia ſicut Moyſes omiſsit cõſulto generationẽ Cainã, quia ratio inſtituti id poſtulabat, quia ſicut ab Adã ad Noe recenſuerat decẽ generationes, aut perſonas, ita à Noe vſq; ad Abrahã, diſtribuit in decades. & neceſsũ fuit omitere redũdãtẽ, cur potius Cainã, quã aliũ incertum, quia affine eſt Cain fratricida deteſtabilis Cainã: quoniã autem 70. non diſtribuebant genealogias in decades, integrũ cathalogũ exibuerunt interpoſitione Cainã, ob

quod Lucas etiã secutus Græcos, & scribens græcis interseruit, ita similiter Matth. c. 1. in Christi genealogia in tres decades distributa, in vna omisit tres Reges Ochoziã, Ioas, & Amasiã, ergo Moysis omisio potuit suppleri ex Luca, sicut Matthæi ex 4. Reg. 9. 11. & 12. quin veritati Spiritus S. in aliquo derogetur. Solitũ enim est Euangelistæ vnius defectũ suppleri ex integritate historiæ alterius latioris. 5. Quia non sequitur inconueniẽs. Nõ minoris periculi vnum esse mutilũ, & aliũ redundantẽ. In præsenti neutrũ. Moyses non fuit mutilus omittẽdo Cainã, nec dixit falsum, sicut nec Matthæus omittẽdo dictos tres Reges, quia nõ est ita, si est ratio instituti ad omittẽdum, vt dicta. Lucas nõ fuit redundans, nã nihil habet, nisi quod in rei veritate erat scribendũ. Deinde nõ est tanti periculi crimẽ omittere. si sit ratio tacẽdi, aut omittẽdi, dum nõ sit intentũ negandi, quanti assignare generationẽ, quæ in veritate nõ sit admittẽda. Nã qui exprimit asserit fuisse, & dicere assertiue id, quod nõ est, est crimẽ falsi. Deniq; in S. Matth. c. 2. omissa est vna generatio, & legitur mẽdosse, & restitui potest ex libris Regũ, legitur enim, *Ioas* autẽ genuit Iekoniã, & fratres eius in transmigratione Babilonis, & legi debet cũ Epiph. & alijs, *Iosias* genuit Iekoniam, & fratres eius, Iekonias autẽ genuit Iekoniam in transmigratione Babilonis.

2 Sentẽtia inter interpretes recensiores asserit nõ esse interserendam generationẽ illã Cainã inter Arphaxad, & Sale. Cornelius à lapide hic; vter sit sequẽdus Moyses omittens, aut inserens? Respõdet. *Moysen esse sequendũ, & omittendum Cainã.* Et omisso incõuenienti de annis à diluuio ad ortũ Abrahæ alterius instituti. Prob. 1. Quia regula est August. 15. de ciuit. c. 3. *Si ab originali dissentit translatio, et linguæ cedendũ est, vnde facta est translatio in liã per interpretationẽ.* Sed in Biblia Hebrea, Chaldea, & Latina hic, & 1. Paralip. omittitur Cainã, ergo dissensus 70. & codicis Lucæ ab originali, corrigi per illũ debet, nõ vt dictũ ab Spiritu S. (quod absit) sed vt intrusus à librario, aut sciolo ignoro originalis Hębraici, cum irrepsisse videret in 70. inseruit in Lucã. 2. Nam Moyses in genesi; vt primus authografus descripsit historiã, & crohologiã mũdi, & creaturarũ genesim à Deo, & aliàs peritissimus Hebręus, qui in prõptu habuit genealogias. Omissio autẽ ingens esset vitiũ in historia & genealogia. Nec refugi debet ad rationẽ distribuendi per decades, nã id non probatur intendisse, potioris instituti historiographi, aut chronographi integre referre. 3. Nã cũ Biblia Hebręa, & Chaldæa hic, imò Hebræi, Philo, Iosephus, & alij veteres, imò, & olim in versione 70. non fuerit initio, irrepsisse hoc mendum in versionem 70. de typographo, aut sciolo

&

& infernise in Lucam est admodum verisimile S. Heron. q. in Genes. si legisset in 70 *Cainam* nō dissimulasset, nam notat vbicumque differunt ab Hebreo, vt quod in generationibus Adæ Seth. Enos Genes. 5. Vbi Hebræi ponunt 190. annos ipsi 200. & ita tempore Hieronimi non irrepserat Cainam in 70. & in Lucam. 4. Nam plura exēplaria (græca adhuc) in Luca omittunt Cainam, vt ipse Beza testatur Luc. 3 & ita Xistus Senens. lib. 5 annot. 88. & alij plurimi expungunt Cainā 5 Nam sententia multorū est irrepsisse plura, vel intrusione ludæorū, in his, quæ ad Messiam pertinēt, vel inscia, aut imperitia typographorum, & à pluribus doctis in dies notātur plura, vt possint à Pontifice, Ecclesia expungi, non ex dictata veritate à Spiritu Sancto, sed dicta intrusione, & est sentētia, quod irrepsit nomen Abraæ pro Iacob, act. 7. 16. & Ieremię Matth. 27. & alijs iuxta dicta lect. de arte, & methodo Fol. 193. & 204.

Resp. ad primum irrepisse in 70. & nō ex Hebræo, sed à sciolo ignorante illud, & inde intrusisse in Lucam.

Facile fingitur traditio, & historia Hebræorū, sicut & insoira tio diuina, vbi tot insignes Hebræi non meminerunt. Contra fidē 70. pugnauit S Hyeron. Versio tamē amplecti debet iuxta dicta à nobis in arte, & methodo disp. 8. de vers pag. 176.

Ad 2. aptissimū est discrimē inter trascriptorē & scriptorē itepsit tamē in Lucā nō à dictatore Spiritu Sancto (quod nefas) sed ab intrusore in scriptū. Ad 3. nō esse periculosū in fide post Xisti expurgationē posse intrudi malitia, aut inscitia per typographos plura, quæ expūgi, & vlterius possint perpurgari a Pōtifice, Cōsilio, & Eccesia, vt olim ante editionē correctā Sixti: vbi Vulgata habebatur in veritate dictata ab Spiritu S. salua fide expūgi potuerūt intrusa, vt iussu Xisti 5. Frāciscus Lucas innumera ab ipso obseruata posita in suo libello, secus de veritate dictata ab Spiritu S. in qua nihil incerti, aut falsi, quod expūgi possit. Nisi zelo indiscreto oppletus, sine distinctione vlla cōfusus, idē sonet expungi de veritate dictata, & expūgi de falsitate intrusa, & trepides timore, vbi nō est timor. De Tridētini mente late diserui in lectura de arte, & methodo disp. 8. dub. 29. pag. 193. & 204. *An probauerit in ratione versionis?* Et qua ratione sibi potestatē indemnē reliquerit ad vlterius purgandū, & per purgandū intrusa, in quo negā do, potiꝰ periculū deferibile est ad tribunal S. Inquis. Ecclesia autē olim, & hodie plura permisit, quæ expunxit in rei veritate perfecta. Sicut non interseri in

Genealogia Xpi. ex libris Regũ, generationes omissas. Ad 4. nõ facesit negotiũ omissa ab vno, supleri posse ex integritate alterius, vt omissa à Mattheo in genealogia ex libris Regũ, si probarentur omissa, sed in præsenti nõ probatur omisisse Moysẽ, quod tenebatur impingere, ob dictas rationes cogentes, expendentes originalia. Ad 5. admittendum nec Moysem, nec Mattheũ omittentes fuisse mutillos, & truncasse veritatẽ data opera, & periculum manifestius in assertiue redundantẽ. Ob id tamen nõ conuincitur debuisse Moysem inferere generationẽ, quã forte iudicabat intrusam. Quod si legitur in Luca, iam cõstat nõ prodisse à Spiritu S. dictãte, sed à spiritu scioli ignari introducẽte, de quo iuditiũ liberũ Ecclesiæ, an expũgi debeat, vel permitti, cui standũ, vt iudici, cõtrouersiarũ.

3. Theophil. ad Lucæ 3. *Et ipse Iesus incipiebat esse, &c. Vt putabatur filius Ioseph, qui fuit Heli, &c. qui fuit Adã, qui fuit Dei.* Matheus texit Christi genealogiã stillo ordinario, aparentibus ad descẽdentes, à fonte in riuulũ, à radice ad ramos. Lucas autẽ inuerso ordine. Quod difficultatẽ ingerit, sicut paruulis retrogredi ab vltima littera Alphabeti ad primã. *Recenset Lucas retrogrado ordine à Matthæo, vt ostendat, quod is, qui natus est in carne à Deo sit.* Id ostẽdi semper difficilius, nec semel Christ⁹ elaborauit, vt ostẽderet, *se à Deo eriisse, se Patrẽ habere Deũ. Vide quomodo recẽsendo cathalogũ recurrat in Deũ, quæ cansas emittit alia. Difficilis creditu est natiuitas Christi, quod sine semine sit.* Volens igitur Euãgelista ostẽdere, *quòd sine semine aliàs factus, factus sit homo.* Ascẽdit ad Adã, & Deum. Si nõ credis, quod Christus secũdus Adã sine semine factus sit, ascẽde ad priorẽ Adã, & inuenies sine semine factũ à Deo, qui fuit Adã, qui fuit Dei.

4. Caiet. 1. ad Thimot. 1. *Rogauite, vt denuntiares quibusdã, ne aliter docerẽt, neq; intẽderẽt fabulis, & genealogijs interminatis, quæ quæstiones præstãt magis, quã ædificationẽ Dei.* Quę est in fide, & subiungit sui exemplũ. Nobilis fuit eques Paulus, & de se sic loquitur. *Gratias ago ei, qui me (deiectũ ex equo) confortauit, qui primus blasfemus fui, & persecutor, & cõtumelios⁹, sed misericordiã Dei cõsecutus sum, &c. Christus venit peccatores saluos facere, quorũ primus ego sum.* Ouerenobilis eques, exẽplũ factus viris nobilib⁹, qui discipulo Thimothæo cõmendas, *vitãdas genealogias interminabiles*, & dũ de te verba facis, qui vere posses iactare genus, proauos, quos nõ fecisti, deprimeris humilitate *improbãs blasphemias, & peccata, quæ à te sunt perpetrata.* Egregie Caiet. nõ dicit, neq; intẽderent genealogijs (nã melius nomẽ bonũ, quã diuitiæ multæ) *sed interminatis, quæ scilicet sunt sine termino.* Et rationẽ subdit. Quæ

quæs-

quæstiones præstãt magis quam ædificationes, quod interminatę præbeãt quæstiones, clarũ est, & quod multiplicãdis quæstionib⁹ magis prosint, quã diuinæ dispẽsationi. Quot difficultates in genealogijs interminatis, littes, cõtẽtiones, innumera testantur in religionib⁹ militarib⁹, dilatato stemate prętẽsori, in Academijs, Collegis. *Curã habe de bono noine.* Sed caue nimietatẽ, elationem, despectionẽ aliorũ. Quis adhuc innanis glorię cupidus à patre, & matre progenitus, à 4. auis, & 8. proauis, à 16 atauis, à 32. progenitorib⁹, & inde per 6. aut 8. generationes indagat⁹ inueniat ascẽdẽtiæ notos progenitores, quorũ nec nomina, nec cognomina, nec occupationes, aut munia, aut sthemata olfecit, nec sine ingẽti difficultate indagari possit, an, alicunde maculã aliquã contraxit. His plane hodie immaculatus, & nobilis habetur, & haberi debet, cui nihil maculę probatur. Nequis ignobilis haberi debet, nisi probetur, præsertim, vbi informationes, aut probationes tot odijs, praueloquẽtijs, & lucris obnoxiæ sunt, vt bonus malus, malus bon⁹, lux tenebræ, tenebræ lux iudicari possunt. Nõ qui se ipsum cõmẽdat, ille probatus est, sed quem Deus, & veritas commendat.

Quod *in domo Dei nihil æstimanda discretio, & distinctio generis, & nobilitatis, bene habenda ratio virtutum, & meritorum.* 9

1. Ex claus. tex. vbi, & ponitur Regũ, & principium nobilitas, & Angeli reuelatio de libertate Israelitarum, & generis humani per aduentũ Messię, sed eius Princeps habetur ratio, & substãtialis scopus illorũ, vt circũstãtiarũ accidẽtaliũ.

2 Chrysost. hom. 3. in Matth. ad Ioan. 8. semẽ Abrahæ sumus, neminiunquã seruiuimus, Christus cohibet innanẽ iactantiã progenitorũ, ne fili⁹ Dauid glorietur de gladio parẽtis iugulãte Goliath. Si ipse timiditate gallina, nec Iacob de scala, aut lucta, cũ Angelo, si nil simile accidit illi, nec filius parẽtis Salomonis, si ipse ignorãtia, & mentecaptus. *Si filij Abrahæ estis, opera Abrahæ facite.* Nõne egregia facinora parẽtũ idonea materia iactabilis? Parẽtibus, qui fecerunt, non filijs, qui non fecerunt. Infame de solis facinoribus Parentum gloriari. Nullus ergo de gloria Parẽtum gloriatur. De solis virtutib⁹ proprijs gloriandum in Domino in domo Dei.

3. Ambros. de Paradis. cap. 4. ad Gen. 2. *Formauit igitur Deus hominẽ de limo terræ, &c.* Originalis hominis origo puluis innanis? Fœminę? Tulit vnã de costis eius, & ædificauit ex ea Euam. Homo anima, vita rationali ornatus fœminæ fontalis scaturigo. Quis nobilitate clarior, & illustrior. Homo, an Eua? Mulier inferior reperitur. Mulier enim primum decepta est, & virũ ipsa, &c. Apte. in domo Dei nõ habetur nobilior, qui nobilior origine, clarioribus parẽtib⁹ nat⁹, sed qui illustrioribus ditat⁹ virtutib⁹, pignoribus, nõ

qui hæreditate cæpit à suis, sed qui adquisitione vigilijs, & sudoribꝰ cõparauit. Illustra quod accepisti illustriorib⁹ factis, ne ab illis degeneres, nã si de defuncti egregijs gloriaris, nõ de tuo, sed suo, de ossib⁹ putridis, non de viuis, de eo quod fuit, & hodie nihil est, nisi quod à te est, aptè Anastas. Sinaita.

Quod *homo mitis, & pius, ac pacificus patietur potius iacturã Regni, quã exidium quietis pacificæ, sicut Darius cum Cyro.*

1. Ex clauss. tex. Vbi Darius auunculus Cyr. bellicosi, non solum sibi adhibuit comitem in expugnatione Babilonis, sed ingenue cessit illũ cũ principatu.

2. Oleast. ad Gen. 30. historia. *Dixitq; Labã* (ad Iacob) *quid tibi dabo? at ille ait, nil volo sed si feceris quod postulo, iterũ pascã, & custodiã pecora tua.* Inito pacto de cuiuscũque lucro. *Erant alba, & nigra quæq; Labi, cætera vero Iacob.* Nec sterit pacto, *sed mutauit mercedẽ vicibus.* Iacob verò dissimulabat, & sustinebat, ne violaret pacẽ, ne oriretur dissidiũ. *Si quãdo dixit varientur mercedes tuæ, &c. Si quãdo dixit.* Alia quæque accipies pro mercede. O rara viri sufferentiæ mansuetudo, quæ tot mutationibus ingenue acquieuit, nec rũpit pacẽ & vnionẽ, cũ toties irritetur. *Rarum inter generũ, & socerũ bonã amicitiã fuisse deprehendimus* (infra) *ubi simul aduerte iustũ figurã gerere sphericã, vt quocũque vertas eum, sede propria habet. Mutationes, quas fecit Labã in vtilitate cesserunt ipsi Iacob. Hoc enim interest inter pium & impium. Quod si impius vertas, non est simulans, si pius quocunque se vertet, sedem adquirit, quod impij eligunt, vt bonum, illud illis in malum vertit Deus.*

3. Theophil. ad Luc. 12. historia inter duos fratres, iurgiũ, & & litigiũ super hereditate paternam. *Magister* dic fratri meo, vt diuidat mecũ hæreditatẽ, at ille dixit ei: Homo quis me cõstituit Iudicẽ, aut diuisorẽ super vos Dixit quod illos, videte, & cauete ab auaritia fratrũ litigiũ deferre arbitro, nõ videtur ita repellẽdã discordiã finiri curat, qui decisionẽ quæret. *Decet nos Domine, quod non sit opus multum occupari in terrenis, dimittit ad sacra, qui vacauerat, vt partiretur hæreditatẽ. Decet omnino ob tẽporalia negotia nõ contendendũ cũ fratribus, cedendũ magis illis, etiam si vellint esse auari.* Ne sit iurgium inter pastores meos, & pastores tuos, &c. Si regionẽ, quæ ad dexterã elegeris, ego ad sinistrã pergam. Genes. 13. Vbi ob litẽ vitãdã cedit sobrino, & minori auũculus, & ætate maior. Vnde inualuit apud PP. *Laudandi, qui litigare* Videmus litigãtes eligisse cautos litigantes eligisse, vt malint cessari, quã incubuisse molestijs magnis, cum iustitiæ ministris

Quod

Quôd Deus *facile sacrorum vindex priuans maiestate, & sceptro Regni, priuantem vasa sacrata cultu sacro.* 11

1 Ex Clauſ. text. Vbi Regi accidit euerſio imperij Babylonici in punitionem prophanationis Vaſorum Sacrorum, quę Pater Nabuchodonoſor attulit à templo Hieruſalem.

2 Lyra ad 1. Reg. 5. *Tulerunt* arcam Dei, & intulerunt eam in templum Dagon, & ſtatuerunt eam iuxta Dagon. Ecce Dagon, iacebat pronus in terra ante arcam, & reſtituerunt in locum ſuum. Die altera inuenerunt iacentem ſuper faciem ſuam, caput, & duæ manus abſciſæ erant ſuper limen. Aggrauata eſt manus Domini ſuper Azotios, & demolitus eſt eos. Captiuitas irreuerentiam irrogauit maximam. Ante dum illam timebant, non ſunt percuſſi à Deo, dum deſpiciebant, vt captiuam. *Vbicunque ducebatur populus, percutiebatur.* Et in templo collocata ad latus idoli, ſemel, & iterum perfregit idolum, nec cohabitat adoratio Dei, cum adoratione idoli, vt ſenere percutiat in eius præſentia exibentes cultum ſacrũ, & idolo. *Ecce Dagon pronus in terram, quaſi faciens ei reuerentiã, & cum tulſſent Sacerdotes Dagon ante quam perciperet populus, Domin s addit ſecund. m ſignum per detruncationem idol., palmæ ſu per limen.* Aggrauata eſt manus Domini, percuſsit Deum, percuſsit, & populum. Vt puniti omnes, qui irreuerentiam intulerunt arcæ, non percuſsi, dum timere cohibiti, non auſsi ſunt captiuare. Res ſacra poſcit cultu ſacro venerari.

2 Chryſoſt homil. 22. in Ioann. ad illud, *ſubuertit* menſas numulariorũ. Domus mea, &c. ejecit de templo vendentes oues, & vobes, acrius tamen inuehitur in euertendo menſas Numulariorum; quæ cauſa? Argentum, & aurum in mensis, ac in altaribus, ſpecimen præſeferit idolorum; ſimulacra gentium argentum, & aurum in domo Patris, ſolum Patri ſunt ergenda altaria, cætera euertenda. His adiungi poſſunt dicta ſub num. 17. de vita Samſ. & 2. Et quod Oza percuſſus eſt vita ſuper temeritate retinendi arcam ne rueret, quod religionis videbatur, & appellatur temeritatis cum in ſententia ſola ducẽdi in plauſtro Brutorum, & non Sacerdotum videretur mulctanda.

Quôd *fidelis Dominus impletione promiſſionum vix nouit inchoari terminus cum promiſſa complet.* 11

1 Ex clauſ. text Vbi libertas à captiuitate promiſſa à Deo, cum impleri cœperint Septuaginta anni in vltimo inchoato, & labente, non completo fit euerſio imperij Babylonij;

ci

cui proxima libertas in Cyro succeſſore.

2 Ex adductis ſub num. 9. de indubitabili impletione diuini oraculi, quæ ampliſima ſunt pro iſto, ne alijs ampliemus ſcriptum.

Quòd *Deus punit infra dignum, & dat præmium citra condignum.* 11

1 Ex clauſ. text. vbi peccata Hebræorum punienda captiuitate ſeptuagenaria inchoante vltimo anno, non completo, incipit iam vrgeri ſupra meritum eorum; vt puniantur infra tempus, & præmientur vltra tempus promeritum.

2 Hiſt. Exod. 42. *Ioſeph iuſit miniſtris, vt implerẽt eorum ſaccos tritito, & reponerent pecunias ſingulorũ inſaculis ſuis. Datis ſupra cibarijs in viam.* Cum autem vnus apperuiſſet ſacum, vt daret pabulũ iumẽto, & ita inueniſſent in omnibus, exclamauerunt, quidnã eſt hoc, quod fecit nobis Deus! miniſtri Ioſeph fecerunt iuſu illius, ſed certe pretio dare æqualẽ tritici menſuram, imo, & inde ſupra cibaria, ipſi Deo referendum, cui proprium dare citra, & ſupra condignum. Norunt iuſti omnem euentum bonum in Deũ referre, à quo cũcta procedere ſciũt. Qui operarijs dedit ſtipendiũ æquale diariũ, imo, & iuſit dari par minus temporis laborantibus, cũ illis, qui portauerunt pondus diei, & æſtus. Dare paritate laboris, iuſtũ erat, dare ſupra liberalitatis.

3 Theophil. ad Matth. 18. Chriſtus inſtruit Petrũ, quod dimittat, non vſque ſepties tantũ, ſed vſq; ſeptuagies ſepties. Ideo aſſimilatũ eſt Regnum cœlorũ, *homini Regi, qui voluit rationẽ ponere cum ſeruis ſuis*, & cum oblatus eſſet vnus qui debebat decem millia talenta, vt difficilis eſſet par ſolutio, niſi in carcere lueret in corpore. *Procidens orabat patientiam habe in me*, & omnia reddã tibi, & miſſertus Dominus dimiſit eum, & debitũ. Vbi ergo illa ſeueritas, ille rigor iuſtitiæ dictantis eum, vxorem, & filios venundari debitã æqualem ſolutionem pœnalem, quem iam ſe benignius gerit, vt minori ſolutione debito, imo nulla ſit contenta, quod ſummè infra dignum debitũ. *Vide miſſe ricordiam Domini, ſeruus, nec venia dignus erat, & tamet ſi ſeruus, non remitti omnia, ſed prorrogari tempus peteret, miſericordia dimiſsit omnino debitum.* Diſce & tu, &c. non ſuffocare proximũ debitorem inducias petẽti ad integrã ſolutionem. Adulteram deprehenſam in adulterio dignam lapidatione iuxta legem, leuiori pœna, reprehẽſione mulctatam dimiſit, nec ego te condemnabo, vade iam amplius noli peccare, ne &c.

Quòd *peccata ita exoriuntur ſolent, quod ira Dei prouocetur, vt tradat puniendos, & caſtigandos peccato-*

res

res diuturno tempore, & seuero mul ctatori. 35

1 Ex clauſ. text. Vbi peccata Iſraelitarũ adeo prouocauerũt iram Dei, vt aduxerit Regem Chaldæorum in obſidionem ciuitatum, & duxerit eos captiuos in Babylonem, & punierit captiuitate ſeptuagenaria.

2 Oleaſt. ad Geneſ. 6. *Videns quod multa malitia hominum eſſet in terra, omnis quippe caro corruperat viam ſuam, dilebo, inquit,* hominem, quem creaui, inundabit iniquitas, inundatione diluuij erat ſuffocanda, diſluuio implacabili tradidit puniendos. *Deus iuſtificat ſuam cauſam, nec ſeuit, niſi nos malitia ſeuire cogamus, niſi videret in terris malitiã multam, gladium ſeueritatis ſuæ, non exerceret.* Diſcant peccatores nõ multiplicare mala, niſi prouocare Deum nolunt. Prudens homo, iuſtus, patiens, adeo poteſt irritati, & laceſsiri, vt eximat gladiũ in prouocantẽ ad certamẽ duellare, & acceptet, & gladietur in agro ad alterutrius interitum.

3 Hiſt. 4. Regũ. 1. Rex Ochozias mittit quinquagenarios ad conſulendum Beelzebut. Occurrit Elias, prænũciat in punitionem, mortem. Rogat Rex cuius figuræ, & habitus eſt vir ille. Reſpondent. Vir pilloſſus, & zona pellicea accinctus renibus, (in Eccleſia veteri Salmantina hoc habitu hiſpido pallio melote eremita, recte pictus in trãſiguratione, & alijs, quibus corrigi debẽt Eliæ picturatis coloribus) miſsi quinquagenes ſedẽti in vertice mõtis. *Homo Dei, Rex præcepit, vt deſcendas,* inflectit cõuicium, *ſi homo Dei ſum, deſcendat ignis, & deuoret, &c.* Idẽ ſecundo contigit. Vltimus quinquagenarius flexo poplite præcatur miſſericordiam, & deſcendit. Religioſſe pater adeo inſolens erat conuitiũ, adhuc ironice obiectum? *Homo Dei,* quod reddis ſeueram vindictã, vt igne conſummas duos pentacontharios, quã tũuis imperioſſe, & ſuperbè Regij mãdatarij (vt proberbium) inoxij ſunt à culpa. Oporteret Religioſſum, non iracundũ, ſed benignum, & patientẽ ſe exibere. Hæc inſolentia in Deum ipſum redundat, qũi miniſtri Dominus eſt. Quare ſui, & potius Dei iniuriam vltus eſt. Non eſt Deus in Iſrael, vt eatis ad conſulendũ Beelzebut, vos oſtendiſtis facto, ibi non eſſe Deum, qui poſſet reſpondere vobis. Oraculo lætho, aut funeſto. Elias cognouit per reuelationẽ, quod irriſoriè vocabãt hominem Dei, & ex hoc ex Dei ſententia erãt puniendi, & prænuntiauit dicẽs, Si homo Dei ſum vere, & nõ irriſorie deſcendet ignis, &c. Vt ſuplicio credatis eſſe verũ Deũ, cuius veri Dei miniſtrũ inuitũ capere contenditis, vt iniuria exorbitet ſupra miniſtrum, & in maieſtatem Deitatis, Deum.

Quod

Quòd *Deus, dum seuere castigat, de restituendis beneficijs sabbatis cogitat.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi tempore, quo puniebat Iſraelitas illa captiuitate ſeptuagenaria, de eorum libertate, & reſtitutione in Hieruſalem agebat, & reuelabat Danieli per Angelum.

2 Theophil. ad 1. Corinth. 11. *Dominus* Ieſus in qua nocte tradebatur accipit panem, & gratias agens fregit, & dixit accipite, & manducate, hoc eſt corpus meum, &c. cum certo cognouiſſet illa nocte tradendum à proditore diſcipulo miniſtris Iudæorum, tamque in ianuis eſſe comprehenſionem ad mortem, maius omni exaggeratione dedit beneficium ſui corporis ſub Euchariſtiæ Sacramento commenſabilibus, nec excluſit Iudam à menſa, & cõmunione, cum videret proditionis animum in pectore. O benignitas inaudita, quæ dum proditionem machinatur diſcipulus, donat diuiniſsimo Sacramento. *Ea etiam nocte, qua mactandus erat, Iudam proditorem menſe ſuæ incumbentem habuerit.* Imo, cum executioni mandaſſet traditionem, & oſculo falſæ amicitiæ proderet, appellatur honorifico titulo amici, *amice*, &c. imo dum crucifigeretur à carnificibus, & facinus illud ſacrilegum perpetrarent Ignoſce illis, &c.

3 S. Zeno. ſerm. de timore ad Ionæ. 2. Præparauit Dominus piſcem grandem, vt deglutiret Ionam. Dum Prophetæ inobedienciam agebat, dum fugam à facie Domini inſequebatur, dum Niniuitas impœnitentes prædicatione fraudabat, dum ſocios in naui, & ſe exponebat iacturæ præparabat Dominus, Alteram nauem viuam, depoſitum ſuſpicientem, ad redendũ in columne depoſitum, cum præparare ſacius ad deficiendum, atterendum dentibus, & interficiendum. *Sepelitur cæco in hiatu, & litus quo tendebat inuenit, fœlix magis ſepulchro, quam naui.* Cete grande excepit præcipitatum è naui, vt ſepulchro defunctum, ſed reddidit depoſitum cuſtoditum maiori fœlicitate; quam naui portum appulſura, cum iactura naufragij. Gratias tu age Deo, quod dum in actu peccandi incumbis, poſſet te dimittere orco deplutien dum perpetuo, & ſolum tradit pro præſenti iuſtitia, vt eruat, & liberet, cum Auguſt. in ſoliloquijs. *Stabat draco ipſe paratus vt me ad infernum raperet*, & tu prohibebas.

Quòd *ſi Deus caſtigat ſeuere adhuc innocentes, & templa ſua, timeant peccatores ſeueriorem damnationem.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi captiuitas duxit ad huc patulos imo cétes, nec pepercit tẽplo, depreda-

datus est. Incensus, & euersus est, vt inde timor cæteris peccatoribus illam occasionantibus incutiatur patiendi pœnas.

2 Chrisost. hom. 4. de Verb. Isaiæ. tom. 1. ad 2. Para ip. 26. *Statim orta est lepra in fronte eius*, coram Sacerdotibus in domo Domini. Rex Ozias ausus est, sibi arrogare officium Sacerdotum, præ inuidia forte, quæ non solum paritatem, sed superioritatem affectat, tulitque thuribulum, vt offerret in altari Thimiamatis contradicēte clero. *Non est tui officij Ozia, vt adoleas incensum Domino*, sed Sacerdotum, qui consecrati sunt ad ministerium. Et punitus statim, sine dilatione lepra, & in fronte. Quod in fronte loco publico, & patenti, sat in secretiori, ita oportuit. *Vt lex* posita in loco sublimi, dicens. Nolite facere mala, ne patiamini similia. Si Rex, qui eminentia maiestatis spectabilis, ita seuere punitur, incuti timore debent inferes, quod non impune, & cum venia effugient.

3 Hieron. ad Ionæ. 1. *Et timuerunt viri timore magno, & dixerunt ad eum, quid hoc fecisti? Cognouerunt viri quod à facie Dei fugeret, quia indicauerat eis. Et dixerunt quid faciemus tibi, & cessabit mare à nobis?* Quod timetis vos, si Prophetam agnoscitis, delinquentem? propter illum exorta est tempestas, non propter vos. Sed si agnoscitis fluctus propter ipsum concitatos vos impune abituros, non desperetis. Si itaq; ipse fugitiuus, quid interrogatis ab infirmo medicinam eius, & vestrum? *Mare* ibat in vindictam Domini, ibat, persequens fugitiuum Prophetam, &c. Sed cum Dei ministrū videbsnt, ita persecutum, & flagellatum, timebant, ne in ipsos inueheretur, qui ministros punitionis se existimabant constitutos. Vltionem creatoris se vlterius differre non posse. Si Lucæ 21. venturus in iudicium ponit signa in sole, luna, & stellis, priuans solito splendore, ac si essent nocentes. Quid timendum reis peccatoribus? Si filius ascendit Hyerosolimam, & tradetur, & flagellabitur, &c. quid mirum sequi discipulos stupentes?

Quôd *sit conquirenda æterna beatitudo decreta dependenter à meritis, studio bonorum operum, vt subsistant requisita, & remoueantur impedimenta.* 35

1 Ex clauſ. text. vbi præuisa oratione, & meritis Danielis, decreta liberatio à captiuitate, illius oratione executa ad ferūntur requisita, remouentur retardantia, vt concedatur merito Prophetæ.

2 Theophil. ad Matth. 25. *Venite benedicti, &c.* Possidete paratum vobis regnum ab origine mundi. Esurini, & dedistis mi-

mihi manducare, sitiui &c. hospes eram, &c. nudus, &c. infirmus, & visitatis me, in carcere, & venistis ad me, &c. Non liberalius eligere ad possessionem præmij gloriæ, his meritis, non visis, & examinatis, sed posidete, quoniam complacuit dare sine meritis? Neutiquã. *Non præmiat, aut punit antequam dijudicet. Vide autem Dei iustitiam, quo modo laudet, & prædicet sanctos.*

3 Chrysost. homil. 6. Ad Matth, 20. *Sedere* autẽ ad dexteram meam, vel sinistram, non est meum dare vobis, *sed quibus paratum à Patre meo.* Fatigati, & lassi præmium est sedes, non consanguinei. *Non est meum id dare, sed quibus labore, & sudore præparatum est.* Itaque solicitudo est adhibenda accepto talenta. Operari meis ad redendam rationem. Operario vineæ, vt accipiat mercedem, iuxta 2. Petri 1. *Fratres satagite, vt per bona opera vestra, certam vestram vocationem, & electionem faciatis.* Occurrit communis obiectio. Si Deus decreuit mihi gloriam, ipse implebit decretũ, licet non apponam bona opera, & si nõ elegit ad gloriã voluntate, & decreto efficaci, nemo poterit obsistere quãtumuis bene operetur, immutare decretum. Quo induxere hæretici cessationem ab studio bonorum operũ. Agricolæ seminanti angustias afferebat ista cogitatio (vt memini apud Costerum) cum bonus Episcopus, transiens, acceptus per reuelationẽ, à salebra in veritatem certam reduxit. Decreto Dei, statutũ, an in vere sit fructus colligendus, vel non: si non inutile est diffundere grana seminũ, si sic, Deus implebit decretum, licet nõ diffundas semina. O Pater sine semine non possunt sperari fruges. O filij, nec sine operibus gloria. Qui parce seminat, parce metet &c. Certifica, & redde firmã quoad se, per opera vocationem tuam, & electionem ad gloriam. Quia nec datur, nisi atẽto merito, nec decreta est dari sine illo indepẽ dẽter ab illo. Illud de prima vocatione ad gratiam congruam, quam dari potius, quam incongruam in diuinam misericordiã reducendũ, sicut & discretionẽ prædestinati à reprobo in actu primo; licet pendeat etiã ab homine discretio, qua se discernit in actu secũdo, penes cuius habitudinẽ cõstituitur cõgruitas, aut incongruitas. Ex quo nõ inducitur necessitas antecedẽs in liberũ arbitriũ, sicut absoluta, efficaci antecedenti voluntate, quamtumuis præscindat à medio libero, & necessario, sed dari habituram effectum potius, quam aliam gratiam.

Quòd *quidquid extra Deũ est, est limitati esse definiti initio, & fine.* 52

1 Ex claus. tex. vbi captiuitas quantumuis diuturna, & sep tua-

tũ genaria comprehenditur cã cancellis, & extremis limitibus, principio, & fine.

2 Lyra ad Eccleſiaſtè. 1. *Oritur ſol, & occidit, &c.* innanitatẽ, & inſtabilitatem, & limitationẽ rerum appellauit vanitas vanitatũ in rebus omnibus, quæ ſub ſole fiunt, in quibus inueniri non poteſt fœlicitas, de cuius ratione eſt firmitas, & ſtabilitas. *Eccleſiaſtes pertractando opiniones aliorũ de falacitate, arguit ad diuerſas partes, poſt determinat veritatẽ. Vanitas vanitatũ, repetitio ad maiorẽ aſſertionem eiuſdẽ, & ad probationẽ ſui dicti in generali, ſubdit, quid homo habet, niſi inſtabile, & amiſsibile per mortẽ.* Apte adducit probationõ de Sole. Oritur ſol, & occidit, &c. ab oriẽte vidit, & cognouit occaſum ſuum; & interitus exterminis *in motu ab oriente in occidentẽ declinat.* Ac ſi celeri curſu dici ortũ, cũ interitu copularet, vt homo, cui cuna ſepulchrũ, vita breuis in ortu, vix in occaſu. Eſſe ſuſcepit limitatũ extremis ortu, interitu. Vix incipit viuere, cum pertingit mori, nec ita diuturna, quod limites, nõ agnoſcat.

3 Theophil. in Ionæ. 4. *& præparauit Dominus Deus hederam, & aſcendit ſuper capud Iona vt eſſet vmbra ſuper capud eius. Et parauit Deus vermem aſcenſu diluculi in craſtinũ, & perempſit hederam, & exaruit. Sub dilucum nata die poſtero, ſub diluculum vermibus cibus facta eſt.* Vt quod oritur, cuius vita frondoſſa, & opacitate plena, iacet inter diliculũ ortus, & diluculum interitus. Hæc ſapientiſsime ſub diuino conſilio, ita geruntur, vt diſcamus humanam imbecillitatẽ, &c. ſicut hæderæ, & homini, & rebus creatis eſſet in ſimili ratione tradidit, & mari immenſo æquos terminos præfixit, ad quos peruenire fas, trãſilere nefas. Hic confringes tumentes fluctus tuos.

Quôd *Deus præuenit anticipatis prophetijs myſterianatiuitatis, & mortis Chriſti.* 52

1 Ex clauſ. tex. vbi ab Angelo prænunciatur Danieli libertas populi è captiuitate Babylonica, & ſimul libertas generis humani per aduẽtũ Meſiæ Redẽptoris, grande, & memorabile beneficium, memoria non excidendum.

2 Theophil. ad Ioann. 16. *Sed hæc* locutus ſum vobis, vt cum venerit hora, eorum reminis camini, quia ego dixi vobis. Prænuntiauerat magna, triſtia, & læta, triſtia de perſecutionibus, & morte, quam paſſuri eſſent, &c. læta de aſſumptione in cœlum, aduentu Spiritus Sancti, itu ad parandum regnũ illis in cœlo. Hęc magni ponderis, & momẽti digna prænũtio. Dixi hæc prius quam fierent, & vos multa aſpera paſſi, &c *Hæc autẽ locutus sũ vobis, vt quãdo videritis moleſta illa euenisſe, credatis de reliquis, non enim poteritis dice-*

dicere, quod iucunda prædixerim vobis, cupiens decipere. Verum sicut annuntians tristia non decepi, ita neque læta dicens, fide fuerim indignus.

3 Oleaster ad Genes. *Congregamini*, vt annuntiem quæ ventura sunt in diebus nouissimis. Moribundus Pater non vnum, aut alterum, sed duodecim filios, sibi circum lectum congregari, vt prædicet magna futura singulis. Benedictionem Patris vestri, non putes paruas meas benedictiones, fuerunt robustiores benedictionibus progenitorum, fuerunt multo plures, & admeliora se extenderũt, quam benedictiones Abraham, & Isaac, *illi enim vnicos benedixerunt, iste verò.* 12. *Non loquimur hic de benedictione Abrahæ, quæ Messiam respicit.* Hæc enim præstat cæteris, sed de temporalibus, hic de multitudine, & pluralitate benedictionum in 12. filios.

Quod *quæ diruta sunt in ædificio animæ, celeri diligentia, & breui spatio reparari debent, ne hostibus detur tempora ad impediendum.* 52

1 Ex claus. text. Vbi mœnia ciuitatis Hierusalem diruta ingenti Artificum copia, & incredibili diligentia reædificabantur, ne dilatio conciliaret inuasionem hostium.

2 Cyril. Alex. ad illud Ionæ 1. *Facta est tempestas magna in mari, & nauis periclitabatur conteri, & ex lamauerunt vnusquisque ad Deum suum*: Exagerari satis, non potest solicitudo & diligentia imminentis naufragij, vel fluctuum inuasione, aut ruptione aliqua, accurunt vniuersi industria, viribus sarcinas, onera proijciendo, inuocando Deum, vt isti vnusquisque Deum suum, quæ causa? Nam imminentia trãsijt facile in sum mersionem, scissura, & ruptio nauis citissimum naufragium, cui omni industria opem, & remedium afferunt, sed cum ista non afferunt præsidium, ad Deos confugiunt. *Tuba nautica, ad vsitata auxilia confugiens, nauim releuat, vt vndis eminear, & ita facili deinceps cursu feratur. Nam principijs obstant, sero medicina paratur*, cum mala per longas cõualuere moras. Satius cito cedere fugitiuum exposcenti tempestati, ne vlterius magis seuiret. Apte hic Chrys. tom. 1 in fine. *Nautæ* non agnita causa naufragij, iactatione rerum subleuari arbitrabantur, apud se periculi sarcinam retinebant, & magis corpore Prophetæ grauabantur, non magnitudine corporis, sed peccati. oportet statim admisso peccato in animæ naui, statim pronce re, ne ingraueſcat spiritualis tempestas; nam quod per pœnitentiam non deletur, suo pondere in aliud trahitur.

3 Chrysost. tom. 1. homil. de

de Absalon, ad 2. Regum 15. *Misit autem Absalon exploratores in vniuersas tribus Israel dicens, statim, vt audieritis clangorem buccinæ, dicite regnauit Absalon in Hebron.* O filij nequissimi proditio in parentem, cuius tibi regnum, coronam arrogas. Non sat tot iniurijs peperciſſe, non sat dissimulare fratricidium Principis Amnon, quod etiam assurgis in coronam Parentis? sollicitata ciuitatum, & ciuium conuiratione. Sed ò diuina prouidentia, si parcas non dissimilas priores iniurias, fratricidium, &c. sed cito punisset, non deuenirent scelera ad immedicabilem statum. Dum non resecantur scelera increscunt. Dum in Absalon non vindicatur facinus fratris occisi, in parricidium Patris iteratur, vbi iam conspiratione regnum rebellioni addictum sit, incapax remedij negotium. Sic si rebellioni regnorum Cathaloniæ & Lusitaniæ infantuli, nostra corona Castellæ occurrisset, non ita adoleuisset, quod difficilis reddita sit restauratio. Oporteret tu in rebellione sensum contrarationem. *Sentio aliam legem in membris meis* repugnantem legimentis, clamat Apostolus citissimo accurras validissimo imperio, retrahens à sensibilibus, ne te in maiora, & deteriora præcipitent in statum peccati mortalis inueterati, in quo viuens, non auderes mori.

Quòd *perfidia Iudaica ea incrementa cæcitatis, & obstinationis assumpsit, vt luci scripturarum, & naturalis luminis obcluserit aduitū.* 67.

1 Ex clauſ. tex. Vbi manifestis testimonijs aduentus Christi de sceptro ablato à Iuda, de impletis hebdomadibus Danielis, non solum non acquiescunt, sed effugia varia excogitarunt. Imò nec pacifice iam audiunt, sed obturant aures, more aspidis surdæ, obturantis aures, altera contiguitate cum terra, altera cauda obclusa, ne capiatur musica venatorum.

2 Theophil. ad Ioann. 19. *Tolle, tolle, crucifige eum.* Expendit multiplices instantias pro liberando Christo, & totidem replicas Iudæorum, ne susciperent, sed damnarent vsque ad cœnam, & irrationalem repulsam. Primo *quam accusationem* (cap. 8.) habetis aduersum hominem hunc? Replicant sine discussione causæ. Si *non* esset hic malefactor, &c. instat *accipite* eum vos, replicant, *nobis* non licet. Instat, *ego nullam inuenio causam, &c.* Vultis dimittam Regem Iudæorum, an Barrabam? replicant, Barrabam. Instant, *Regem vestrum crucifigam?* Replicant *non habemus* Regem, nisi Cæsarem. Instat ostendens coronatum spinea corona, & flagellatū acerbè, vt pietate emoliret,

liret, replicant odio, & furore, *Tolle, tolle*, crucifige eum. *Vide quod forma examinis, & iudicij vtitur. Ecce, inquit, Rex vester.* Nec Iesum condemnat, nec Iudeos confutat manifeste, sed quasi occulte exprobat, vt sycophantis. Quasi dicat. Ecce dicitis hominem, attentare, inuadere Regnum, nihil audentem, *& ita accusatio falsa est.* Quid enim habet tyranni? Milites, diuitias, nobilitatem. *Ecce Rex vester.* Quæ vtilitas, si occideritis eum, qui ne in minimo nocere poterit, at illi tolle, tolle, crucifige, vrgent, & quærunt crucem, &c. nec instantijs placantur, potius cæco impetu solicitant crucem.

3 Chrysost. serm. 52. Ad Marci 19 *Magister attuli ad te filium meum habentem spiritum surdum*, & dixit discipulis, vt eijcerent, & non potuerunt. Quid in causa, vt informarent surdum? *Vt desperarent Parentes posse curari eum, qui audire non poterat.* Nam cui patent aures, non est ita difficilis salus. Egebat famosiori medico, Christo, in casu desperato à discipulis. Christus dixit *Epheta*, quod est adaperire, & statim *aperta sunt aures eius.* Ita in mysticis non est diffidenda salus eius, qui habet aures audiendi non impeditas, & ob id Malcho restituit *aurem* abscissam, ne impossibiliter salutem, perfidia, odio, & cæcitate obturatis Iudæi difficilis rara, & in fine mundi in Christum fides, & conuersio. Sis defunctus, vt Lazarus, ligatus manus, & pedes institis, dum peruia sit auris, vox diuina recipietur, & suscitabitur. *Lazare veni foras.*

Quòd *Deus sui desertores in finem pro meritis deserit.* 67

1 Ex claus. tex. Vbi indicitur, quod non erit eius populus per dilectionem (quidquid per originem) qui nec admissurus, imò negaturus in finem, qui deserit Deum, fit dignus, vt deseratur.

2 Oleast. ad Exod. 33. *Vade* ascende de loco isto tu, & populus tuus, & mittam præcursorem tui Angelum. Non enim ascendam tecum, quia populus duræ ceruicis es. Audiensque populus sermonem hunc pessimum, luxit, & nullus ex more indutus est cultu suo. Peccauerat populus idolatria vtili, deserendo verum Deum, qui eduxit de terra Ægypti, & duxerat vsque illuc in columna nubis, & ignis, à qua respexit in castra Ægyptiorum, iam desertores suos deserit, & mittit legatum Angelum, qui ducat, triste nuntium Dei præsentia demerita, in absentiam sui. Quo non insequenda lachrymis, mœrore, & luctu. *Non vult Dominus populum ducere,*

re, *quia tanta maiestas, & sanctitas non facile ferret eorum errores. Iste textus adumbrat pulchre quantum debeat peccator sentire recessum, & absentiam Dei.* Nam consurgere solent aduersus animam præsidio Dei destitutam. *Deus* dereliquit eum, persequimini, & comprehendite eum, quia non est qui eripiat.

2 S. Max. serm. 2. de Pasch. ad Matth. 27. *Hora 6.* tenebræ factę sunt super vniuersam terram. Velum templi, &c. petræ scissæ sunt monumenta, &c. Quæ causa tanti doloris funesti luctus in vniuersa terra, &c. *Quid mirum? Cum lux descendit ad inferos. Obtenebrari tuncta.* Deserunt illum, cum non recipiunt Regem, imò occidunt. Quid mirum deseri ab illa luce, quæ illuminat hominem omnem. Et reliqui in tenebris suæ perfidiæ, vt Sol cunctos in tenebris, cum absconditur occasu.

Quòd *qui non recepit primum Christi aduentũ pacificum, incidet in manus secundi, seueri, & iudicialis.* 67

1 Ex clauſ. tex. Vbi Iudæi, qui Christum non erant recepturi, sed negaturi, aduentu pacifico, perfida expectatione incident in fine mundi, in aduentum terribilem Iudicis.

2 Theophil. Ad Matth. 21. *Homo quidam erat Paterfamilias, qui plantauit Vineam, &c. & locauit eam agricolis*, & peregre profectus est. Apropinquante tempore reddendi redditus, & fructus, lapidauerunt seruos, & missio filio hærede similiter, cum ergo venerit Dominus vineæ, quid faciet agricolis istis? Ex suo ore eos iudicat, *malos male perdet*. De quo aduentu fit sermo, de primo, aut secundo aduentu? Videtur quidem hoc sentire, sed melius. *Dominus* vineæ Deus Pater, qui misit Filium suum ab illis occisum, qui impingunt in lapidem Christum, confringentur in secundo aduentu, qui ergo non benè susceperuut liberalem benefactorem, recipient seueriſsimum punitorem.

3 Lyra, ad illud Psalm. *Deus Iudex, iustus, fortis, & patiens, &c. Numquid irascitur per singulos dies? Nisi conuersi fueritis gladium suum, vibrabit, arcum suum tetendit, & parauit illum, & in eo parauit vasa mortis, &c.* Expendit. *Deus Iudex iustus, reddens Iustis, & iniquis secundum suam iustitiam, & iniquitatem perpetratam. Fortis, quia nullus potest impedire. Patiens, quia non statim punit iniquitatem. Sed spectat*

tempus pœnitentiæ. Ideo subditur, nisi conuersi fueritis gladium suum vibrabit, ad vos perforandum, &c. His similia gesta illius Imperatoris Thamorlani Scytarum. Prima die obsessionis ciuitatis vexillum præostendebat album, insignium benignitatis, qua sibi humiles subiectione esset admissurus, secunda rubrum, & purpureum in signum inuasionis in rebelles, igne, & sanguine, & tertia nigrum in funestum, & lethale. Præueni tu Deum benignum, ne incidas in iratum.

Quòd *Regio virtutum apparatu palmis, & plausu excipi debet aduentus Regis pacifici, & redemptoris, ne incidatur in aduentum seueri Iudicis.* 74

1 Ex clauſ. tex, Vbi præſentatur tempus prioris aduentus Chriſti, vt ducis, vt alliciat muneris benignitate, vt illi aggregentur ſequaces, proteſtatur, quod non erit eius populus, dilectionis ratione, qui eum ſit negaturus.

2 Præcedentis ſunt aptiſſima fulcra pro iſto, & in vita Samſonis ſub num. 1. ne amplietur. Rex pacificus, &c. In terra pax, &c. Ecce Rex tuus, tibi venit manſuetus, vt benigne recipias, ne reddas iratum.

Quòd *eminentia regalis inter homines ſplendeat, donec adſit præſentia Regis Regum. Tunc ſubmittenda corona, vt omnis appareat vaſſallus in præſentia Regis.* 74

1 Ex clauſ. tex. Vbi præſentatur Chriſtus dux, vt cæteri inſtituantur ſequaces.

2 Hiſtoria 2. Reg. 6. Rex Dauid, cum religione, ſolemni proceſsione transferretur arca in domũ Obededon, in cythara ludens, & ſaliens coram arca illuditur ab vxore Michol aſpiciente è feneſtra, vidente Regem Dauid, ſubſilientem, atque ſaltantem coram Domino, & deſpexit eum in corde ſuo, & ait, *quam gloriosus fuit hodie, Rex Iſrael*, diſcooperiẽs ſe, &c. & nudatus eſt (regali purpura) *quaſi nudetur vnus de ſcurris.* Dauid autem redarguendo inanitatem compeſcuit. *Ante Dominum, qui elegit me, &c. Et ludam, & vilior fiam, pluſquam factus ſum.* Ac ſi dixiſſet, ante Dominum quisquis apparet, ſeruitutis officium debet aſſumere. Fundat id, quod in eo relationem Domini in me ſerui, in eo Regis in me vaſſalli: exui oportuit diadema Regium, & purpura Regali ſeruus, & vaſſallus ante Dominum, & Regem. Hic expendens Sanctus Ambroſ. lib. 4. epiſt. 30. ad Sabin. *Ludebat Domino puer, & ideo placuit amplius, quia ita ſe humiliauit Deo*, vt Regale poſt haberet faſtigium, & exhiberet Deo quaſi ſeruus miniſterium.

3 Lyra ad Apocalyp. 4. *Et ecce sedes posita erat in cœlo, & supra sedem sedens, &c.* Procidebant viginti quatuor seniores ante sedentem in throno, *& mittebant coronas suas ante thronum.* Si coronæ erant suæ, cur submittebant ante sedentẽ? ti essent illius iuste, quod illius erat illi reddi deberetur. Mittẽtes coronas ante thronum insignum reuerentiæ, per hoc confitentes, quod habẽt à Deo. Si ipsum Dominum protestantur reuerentia, simul se seruos profitentur. Serui ergo deponant coronam ante Dominũ, vbi ille illucescit in throno Rex Regum, dispareant Reges creati. Oriente & illuminante Sole, dispareant stellæ, quæ accipiunt lumen à Sole.

Quod *opprobrium felicitas vassallum contra sui Regis, qui vassallos erigit in Reges, non contra Reges reddit vassallos, tributarios.* 74

1 Ex eiusdem textu. Vbi promittur Christus dux suorũ, & dum venit reponitur sceptrum regale apud tribum Iuda, imò gentem Iudaicam ad ipsum reseruatum Prophetam Domini fidelem.

2 Historia Genes. 41. Ioseph diuinato somno, & interpretato Pharaonis, dixit Rex ad Ioseph vno tantum regni solio te præcedam. Ecce constitui te super vniuersam terram Ægypti. Tulitque annulum de manu sua, & dedit in manu eius, vestiuitque stola vilsina, & collo torquem auream circumposuit. Fecitque ascendere super currum suum secundum, clamante præcone, vt omnes coram eo genu flectant, & præpositum esse sciant vniuersæ terræ Ægypti Hac solemni pompa publicatur Rex Ægypti infra supremum, soli soli distantia reseruata, & iurant cuncti flexo poplite. Rara fœlicitas seruum è carcere eductum eleuare ad eminentiam Regiam, vt flectant genua, quibus ille flectabat, vt præsente Rege, ipse haberetur etiam Rex, vni soli differentia, per participationem Regis instituentis seruos Reges. Quod Deus elegit, exaltat Princeps *In potestate Regis est nobiles facere. Iuti regnorum præponi.* Hoc enim proprium Dei, qui suscitat de puluere egenum, & sedeat cum Principibus, & solium gloriæ teneat. *Facit dormire, & ministrat.*

3 Histor. 3. Reg. 12. *Venit Ieroboam, & omnis multitudo Israel, & locuti sunt ad Roboam dicentes. Pater tuus durissimum iugum imposuit nobis.* Tu itaque imminue paululum de imperio durissimo, & de iugo grauissimo, & seruiemus tibi. Qui relicto consilio Senum, præaccepto iuuenum respondit. *Pater meus posuit super vos iugum graue, ego autem addam super iugum vestrum.* Pater meus cœdit

vos flagellis, ego autem cedam vos scorpionibus. Lyra ad hæc. *Istud consilium* fuit valde fatuum, & præsuntuosum. Quia Salomon fuit Rex excellentissimus, Roboan verò erat rudis, & inde orta est olim populi reuelatio, excutientis intollerabile iugum. Omnes enim egre patiuntur ex suo statu deijci in vilem, & misseram seruitutem. Vt Domini suarum facultatum fiant peioris conditionis, ac si vt serui illi seruirent, tributa intollerabilia redderent. Cordatius consilium Senum, qui mitius agi cum vassallis consuluerunt, vt tributa redderent, ne radicitus euelatur arbor, quæ redit Domino fructũ temporibus suis.

Quòd *sanguine, & patria coniunctis, sit debitus cordialis intimus affectus, & inuenitur in eis non semel senitia, & acerbitas exorbitans, & excutiens confugientes, vt ad Asylum.* 79

1 Ex clans. tex. Vbi licet Iudaicus populus esset populus Christi Paternus, & Gentilibus, qui pietate natiua obstricti erant ipsum recipere, impie in ipsum seuierunt, repulerunt, crucifixerunt.

2 Hist. Genes. 45. *Ioseph* dis. simulauerat agnitionem, & affectum erga fratres, semel, & iterum venientium Ægyptum, ad emenda sibi frumenta necessaria, eumque pie suscepisset, & parasset conuiuium, & reddi fecisset pretium in ore saccorum, & indigentiam leuasset. *Non se poterat vltra cohibere Ioseph, multis coram adstantibus. Vnde præcepit, vt egrederentur cuncti foras, & nullus interesset alienus agnitioni mutuæ.* Et eleuauit vocem cum fletu, quam audierunt Ægyptij, & omnis domus Pharaonis. Et dixit: *Ego sum Ioseph, &c. Pro salute vestra misit me Dominus ante vos in Ægyptum.* Osculatus est omnes fratres suos, & plorauit super singulos, & se gessit benigne, vt daret eis necessaria, vt afferrent Patrem, & suppellectilia omnia, vt ipsis in Ægypto commoda vitæ præpararet. O rara Iosephi dilectio exemplum suscipiendi cognatos amplexibus, osculis, lachrymis, suspirijs, & blanditijs. Fratres adhuc iniurios excepit. Augustin. serm. 83. de tempore. *Osculabatur singulos, itaque odium fratrum charitatis lachrymis abluebat.* Discе à Iosepho efficacissimum exemplum amoris, Philtrum conciliandæ dilectionis, *vt ameris, ama*, vis amari, ama. Vis laudari, lauda. Vis potiri primis partibus, cede alteri prius, apte Chrysost. hom. 13. ad pop.

3 Theophil. ad Lucæ 4. Christus dixit, similitudinem medici, sibi identitate coniuncti, qui ægrotans, non curat

se

se ipsum. *Medice curate ipsum, quanta audiuimus facta in Capharnaum, fac, & hic in Patria tua.* Dominus quod dicit? *omnino dicens mihi fac, & in patria mirabilia, quæ in Capharnaum feciſti.* Hoc enim est, quod dicit, medice cura te ipsum, iuxta proberuium, quod ægrotantibus medicis dicebatur. *Ego dico vobis, quod feciſſem multa ſigna apud vos* patriotas meos Nazaræos, sed scio commune proberuium, quod nullus Propheta acceptus est pretiosus in patria sua, sed si aliunde veniat admirabuntur illum. Sic Eliam viduæ Iudæorum, non susceperunt, Sereptana susceperit. Eliseus purificauit leprosum alienigenam. O stulti, si ratione patriæ postulatis, ita stulte vobis conferri beneficia extraneis collata, cur eadem obligatione obstricti, non benigne susciptis, & mira eius plauditis? Compatriota, & consanguineus discat exhibere beneficia suis, quæ sibi voluerit exiberi. Vt vtriusque soliciter amor mutuus mutua cõmoda, & officia.

Quòd *vis amoris vnitiua inter consanguineos, & eiusdem professionis, ali & foueri debet studio, nam disolui solet in odium, & discordiam non diariam, sed interminabilem sine fine.* 79

1 Ex clauſ. tex. Vbi populo Iudaico denegante Christum, ab eo disiunctus est, & desertus, non ad diem, sed in finẽ mundi solũ redintegratur[a].

2 Histor. Geneſ. 28. Esau expertus supplantiones Iacob fratris sui, adeo odio interminabili exarsit in eum, vt dixerit, verbis minacibus, *Venient dies luctus Patris mei, & occidam Iacob fratrem meum.* Vt audierit Rebecca, & fecerit absentari in opidum auunculi Labani ex maioratu, & benedictione suffuratis ingens adeô odium concepit, vt dissoluerit fraternitatis teneritudinem, & induerit odium occidendi dilatatum, in fratrem intimum, cognatione, & sanguine? Ita euenire solet, vt intimus amor vertatur in odium ad vindictam implacabilem. Oleaster ad hæc. *Quantum* interest parentem habere superstitem, vt Esau metuerit parentem senem, cœcum, & mancum, ne andeat fratrem occidere. Prius odiuit fratrem, postea armabat se ad homicidium. Odium separandum est à corde, ne ad deteriora inducat.

3 Euseb. emiss. Domin. 22. post Pentecos. ad Matth. 18. *Egressus autem seruus ille, inuenit vnum de conseruis suis, qui debebat ei centum denarios, & tenens suffocabat eum, dicens, redde, quod debes, & procidens*

conseruus eius rogabat, patientiam habe in me, & omnia reddam tibi: ille autem nolluit, sed abijt, & misit eum carcerem. Durum valde, quod seruus conseruo, qui eiusdem muneris sunt, & officij incommoda suffocationis, & carceris intulerit, cum ob idem conseruitutis officium illi indulgentiam inducere congruum esset, sed præmit ad carcerem, & mortem, nec Domini obligatur exemplo ad remissionem, ob quod punit illum valde acerbe. *Omnes enim sunt conserui, qui vnius Domini sunt serui. Hanc similitudinem ad quid attulit? ipse Dominus protinus exponit sic, & Pater meus cœlestis faciet vobis, si non remiseritis fratri, vnusquisque de cordibus vestris.* Certè nefandum, & abominabile est, eos, qui sunt eiusdem professionis, artis, aut scholæ, lites, & discordias alere, inimicari, ne interminabiles fiant ad diuturnum tempus. Iuxta Poetæ. *Artis in eiusdem contentio est, dyra magistris,* cantori inuisus quis nisi cãtor erit. Quòd *Christicidium adeo sacrilegium & immane scelus, vt non satis promeritis puniatur, nisi desertione finali, in sua cœca perfidia.* 79

1 Ex clauſ. tex. Vbi prædicitur, quod populus Iudæorum nationalis Christum erat negatione deserturus, imò affixurus inhumane ligno, & coguntur soluere talionem, vt desertores desertione afficiantur.

2 Euseb. Emiss. Fer. 6. post. 2. ad Matth. 21. *Nouissime misit ad eos filium dicens, verebuntur forte filium meum,* Agricolæ autem dixerunt, *venite occidamus.* Expectauit corripendos ab occisiones seruorum, & occiderunt filium irreuerentia, & inhumanitate. Super punitionem ex eorum ore elicit sentiam. *Quid faciet Dominus agricolis illi?* Interrogat sententiam, *vt ipsi suo iudicio se ipsos damnarent.* Ille malos male perdet. *Ideo dico vobis, auferetur à vobis regnum Dei. Quia Dei filium occiderunt, ideo regnum Dei auferetur ab illis, & dabitur genti populo. Dominus ait. Vocabo, non plebem meam, & non misericordiam consecutam,* super quem ceciderit lapis conteret eum, cadit Dominus super eos, quibus irrascitur, *ipse est ille lapis abscissus de monte sine manibus, qui statuam comminuit, per quam omnis multitudo iniquorum figuratur.*

3 Hyer. ad Isaiæ 1. 24. *Heu consolabor super hostibus meis, & vindicabor de inimicis meis.* Solatium tuum Deus bene ex benignitate, & misericordijs, non ex vindicta, & acerbitate. Solatium Dei punire peccatores inimicos Dei, & filij sui occissores. Consolatio Dei super inimicis est, vt qui non senserunt beneficia, supplicijs cor-

plicijs corrigantur. Quæretis me,& non inuenietis, *& in peccato vestro moriemini.* Caueri debet quærela, qua Deus in gemiscit quæribundus. Me derelinquerunt fontem aquæ viuæ, & foderunt sibi,&c. caue ne sis, vt ficulnea, cui quærenti fructus, & non reddenti imposita est in pœnam perpetua sterilitas. *Numquam ex te fructus nascatur in sempiternum.*

Quòd *non sit ita abominabilis in Iudæis perfidia directa, cæca, & obstinata, ac infidelitas reflexa. Quæ reddit certos se habere fidem in ceam, & occultatam in expectatione Messiæ.* 86

1 Ex claus. text. vbi non recipi Messiam benigne à suis abominabile, & impium, negare autem quod reflectentis est, abiuratione veri negati execrandũ maxime est.

2 Caiet. A d Ioann. 8. *Nonne benedicimus nos, quia Samaritanus es, & Dæmonium habes.* Non sat credere miracula fieri virtute Diuina, doctrinamque esse à Deo, sed intendũt tribuere Dæmoni vtrumque? Et id reflexa sententia ratificantes. Nonne benedicimus nos. Vbi manifestant se quidem id dixisse, sed modo cognoscere, quod benedicunt, & modo approbant dicta. Nec aiunt, benedicunt, sed benedicimus nos, manifestantes se esse illos, qui perseuerant dicendo hæc. O cæca perfidia Iudaica cæcitate reflexa probata, in pingens in parietes, nam si cæcus cæcum ducit, ambo in foueam cadunt. Cæci somniantes se visum habere, cum sint in tenebris, in tenebris ambulabantibus mouebuntur fundamenta terræ, nec maior cæcitas, quam habita visio, nec deliramentum maius, quam habitũ discretio, nec turpius iudicium, quam appellatio negans, *lucem diem, & tenebras noctem.* Sed hæc est Iudaica cæcitas, qua dilexerunt magis tenebras, quam lucẽ, Solem Iustitiæ, & non viderunt Solem.

5 Greg. Ad Psalm. 101. *Similis* factus sum pellicano *solitudinis*, factus sum sicut Nicticorax in domicilio. Quid agit Pellicanus in solitudine? Deglutit venenata, angues, lacertos. Quid nicticorax in domicilio? Extinguit lucem, fugit oleum lampadis, & in caligine tenebrosa mulcet sibi cantu. *Pellicanus venenatis animalibus vescitur, nicticorax solet nocte cantum cantare.* Ve mihi (ait Dauid) cui similia contigisse lachrymor. Deglutiui venenata, & lethalia flagitia, adulterij, & homicidij. Extinxi vitã Vriæ, & in absentia caliginosa illius voluptatis cantilenam transegi cum Bersabee. Sed, ô infelitiores Iudæi, qui in insolitudine veræ fidei perfidiam venenatam deglutitis, & fidei luce ex-

extincta, in perfidię cæca obstinatione, occulatiores iactatis in expectatione Messiæ.

Quòd *Iudæi possunt inducere confusionem, & pudorem Christianis, quod ipsi sunt magis viuidi, & tenaces in sua perfidia, quam ipsi in sua solida, & firma fide.* 83

1 Ex clauſ. text. vbi per fidia expectandi Messiam Venturum, negando veniſſe, arguit imbecillem fidem asſerentem aduenisſe tepidis obſequijs gratum habentes.

2 Theophil. ad Matth. 12. *Viri Niniuitæ ſurgent in iudicio cum generatione hac, & condemnabunt eam, quod ipſi penituerunt ad prædicationem Ionæ, & ecce pluſquam Ionas hic.* Aliud exẽplum *Regina Auſtri excitabitur in iuditio cum generatione hac, & condemnabit eam, quia venit à finibus terræ, vt audiret ſapientiam Salomonis, & ecce pluſquam Salomon. Hoc loco oſtendit* illos in extremam perditionẽ veniſſe, quod ipſum nõ ſuſceperint, & redarguit exẽplo Niniuitarum, qui ad prędicationem Ionæ egerunt pœnitentiam, & ipſi Iudæi ad prædicationem Chriſti nobilioris, non ſint conuerſi. Exemplo etiam Regiuæ Sabba, cui nec obſtitit diſtantia, nec infirmitas ſexus, ne veniret ad audiendam ſapientiam Salomonis, & cum Iudæi habuerunt viri, & præſentem ſapientiorem, non audierunt benigne, vt acquieſcerent. *Regina a longe venit, quamuis eſſet mulier infirma, vos autem, cum venerim ad vos, & dixerim arcana, non ſuſcepiſtis.* Exemplum eſt doctrina efficaciſsima, & ſyllogiſmus concludens, & peti ſolet ab exemplo prauorum ad bonos, in bonis confirmandis, vt ſalus ex inimicis. Si illi perfidiam ſuam totis niſsibus inſectantur, vos fidem firmam. Paulus, ſicut exhibuiſtis mẽbra ſeruire iniquitati, ſic exhibete in ſeruire iuſtitiæ.

3 Oleaſter. Ad Iſaiæ. 6. *Vbi Seraphini clamabant alter ad alterum, & dicebant Sanctus, &c.* Iſaias ait, *vè mihi, quia tacui, quia vir pollutus, &c.* Vox dolentis indicans internum animi dolorem de ſilentio diuinæ laudis, cum ſeraphim ſuo exemplo cãtes, docerent laudare Deũ. *Doluit ſe tacuiſſe, cum alios vidit laudes Domini decantare.* In preſenti doleant fideles tepidi, cum videant infideles feruidos in ſua perfidia, & ve perfidis, qui cum viderint fideles collere Chriſtum fide, in illum præſentem, non mouentur tanto exemplo, vt admittant præſentem, ſed expectent cæca perfidia, & obſtinata futurum.

Quòd *infidelitas præſertim Iudaica, eſt ab initio ægritudo tabifica, & lethalis, aqua vix vnus, aut alter, ad fidem veram, aut priſtinam reuocatur.* 83

1 Ex

1 Ex clauſ. text. vbi dum dicitur quod non erit eius populus, qui ipſum eſt negaturus, ſatis indicatur, negationem illam prognoſticum ægritudinis lęthalis, aqua vix contagio lęſus euaſit.

2 Theophil. Ad 1. Corinth. 5. *Auditur* inter vos fornicatio qualis, nec inter gentes, & vos inflatis eſtis, & non magis luctum habuſtis, vt tollatur de medio veſtrum, qui hoc opus fecit, &c. Tradere huiuſmodi Sathanę in interitum carnis, vt ſpiritus ſaluus fiat. *Inflati eſtis ob doctrinam, quæ eſt ab illo inceſtuoſo Corinthio.* Eſt enim peſtifera, & contagioſa, cuius halitus caueri debet, vt lethalis, nec luxiſtis, vt è medio veſtrum tolleretur contagioſus. *Debebatis lugere tamquam ſuper morbo, & peſte, vt tolleretur ex vobis.* Vt publica noxa, ſi ſenſualis infirmitas, ita eſt contagioſa, vt pelli debeat, ne inficiat alios infirmitate lethali, quanto magis perfidia Iudaica, vt ex Eccleſia Chriſtianorum, ne intoxicet cæteros. Vt igne conſummatur. Sicut tempore graſſantis peſtis omnia indumenta, & ſup pelectilia igni traduntur, ne lęthum afferant ſanitate perfruẽtibus. Ex intoxicatis enim vix vnus, vel alter euaſit incolumis ad vitam.

3 Hiſt. 2. Paralip. 26. Rex Ozias ſe ingeſsit in rebus ſacris & officio Sacerdotum addolenti *incenſum in altari Thimiamatis.* Et percuſsit eum Deus lepra in fronte, & expulſus eſt ſtatim de templo, & ipſe citiſsime exiliuit. *Fuit igitur Rex Ozias leproſus, vſque ad diem mortis ſuæ, & habitauit in domo ſeparata plenus lepra, ob quam electus erat de domo Domini.* Quo circa Procopius ad Iſaię. 6. *Malorum* ſocietas peſtilẽtia, vt vnus malus, & Rex pellatur ad locũ ſeparatum, ne rẽplublicam inficiat contagio, vt ſuo ad diẽ mortis. *Legis præcepto leproſus extra caſtra tamquam impurus pelli iuberetur,* vt ab vno timeatur alios cõtagiari. Ad intentum, ſocietas Iudæorum ſcibi, & alijs peſtilentia, & doctrina morbida, tabes, qnæ vel aflatu inficit ad mortẽ. Beatur vir, qui non abijt in conſilio impiorum, & in cathedra peſtilentię docens inficit cæteros, *& vt cancer ſerpit.* Abſcindi ergo debet membrum canceratũ, prius quam totum infeſtet ad necem. Horũ ſocietas fugienda. Tert. de expect. cap. 37. *Num ergo fugies illam cathedram hoſtium Chriſti peſtilentiarum, ipſumque aerẽ vocibus ſceleſtijs conſtrupatum.*

Quòd *maximo cultu, & reuerentia debent venerari loca, & templa Deo ſacra, quo maiori aſſiſtit in illis ſpecialiter præſentia Dei.* 89

1 Ex clauſ. text. vbi, vt infra tum indicitur, futuram intẽ-

abo-

abominationem desolationis per Antichristi, & idolorum præsentiam, cum sola Dei esset in templo veneranda.

2 Hist. Genes. 28. *Vidit Iacob scalam. Dominum innitentem schalæ, & Angelos ascendentes, & descendentes, cum euigilasset de somno ait, vere Dominus est in loco isto.* Vere locus iste sanctus est. Sentētia quidem, non dormientis, sed vigilantis, aderat ibi præsentia Dei in summitate schalæ, vt in altari, versabantur ministri, Angeli, Angelica puritate. Quid ergo in signum reuerentiæ? *tulit Iacob lapidem, quem supposuerat capiti suo. Erexit in titulum fundens oleum desuper,* qua potuit lapidem altare constituit Deo, sacrauit oleo, substitutum constituit templi magnifici. Oleaster ad hæc. *Vere Dominus est in loco isto, veneranda, & metuenda sunt valde loca diuino cultui applicata, docet locus, quam cautè, vbique nobis agendum sit, cū præsentem sciamus vbique.* Templum Dei cœlum, terra scabellum pedum, terra quoque altare Dei: venera vbique præsentiam. Venera in sacellò cœlum Dei, in Ecclesia speciali assistētiam. Quo circa Bern. *Quomodo* ignorare poterat, quod non esset locus, vbi non esset Deus? Est vbique, aliter, & aliter apud impios in dissimulatione, apud iustos in gratia, apud inferos in impietate sua, apud Angelos in gloria, in loco isto, vt operetur, atque custodiat, vt Adamus in paradisso. Quis tantum custodem non vereatur in Paradyso suo, à quo expulsus Adamus ob irreuerētiam esset dictus, sicut Deus.

3 Isaias (cap. 6.) *Vidi* Dominum sedentem super solium, excelsum, & eleuatum, & ea quæ sub ipso erant, replebant templum. Maiestas in solio exigebat venerationem, & cultum. Angeli exhibuerunt alatis vocibus, & cantibus in laudes Sanctus, &c insensibilia super luminaria cardinum timore, & tremore, vt Christum patientem in cruce pœnæ concussione, velum scissione, & cętera pro modulo suo. Deum in rubro Moyses excalceatione, *solue, ne appropries, terra in qua stas, Sancta est.* Vt tu exuas affectus mortales in templo Dei.

Quòd *sola Dei præsentia sat ad fœlicitandum templum, & vrbem, & absentia ad infœlicitandum.* 89

1 Ex clauss. text. vbi Hierosolymitanum Diuina prȩsentia fœlix absentia, quoad fauores ab idolorum in vexillis præsentia, imo Antichristi, in fœlicitatem, vsque ad ruinam, & euersionem contraxit.

2 Aggei 2. *Magna erit gloria domus istius nouissimæ, plusquam primæ.* Fabrica, architectura, diuitijs, vasis, suppelectilibus, ornamentis? Minime, illud Salomo-

lomonicum illis longe, lateque superabat. Quo ergo? Præsentia Christi oblati in templo nouissimo. *Veniet ad templum sanctum suum Dominator, quē vos, &c. & Angelus testamenti, quem vos vultis.* Sola eius præsentia sufficiens ad fœlicitandum; & reddendum glorioſum supra illud Salomonicum orbis miraculū portentoſſum.

3 Anſel. in enar. Ad Matth. 27. *Resplenduit facies eius, sicut sol, & inde vestimenta facta sunt alba, sicut nix.* Corporis splendidiſsimi ambiens veſtimentū, quaſi domus, templum ab illius glorificis ſplendoribus illuminatum candore, fœlicitatum claritate. Miſtice autem Christi veſtimentum cœlum, Eccleſia. *Dominus in cœlo faciet mundam Eccleſiam veſtem ſuam.* Ab omni inquinamento carnis. Eſt enim lux illuminans omnia, ſimili in muliere ſigno magno, quod apparuit in cœlo amicta ſole luna ſub pedibus, in capite eius corona ſtellarum duodecim; illius fœliciſsima cœleſtia, fœlicitabat cœleſtia.

4 Abſentiam infœlicitare inde Oſeæ 9 *Ve eis* cum receſſero ab eis, diſperibunt. Vt paſtore recedente, greges inuaduntur à feris, lupis, &c. ad carnificinam! Ex quo receſſit ab illis, inuenerunt eos multa mala. Aptiſsime Oleaſter ad Geneſ. 4. *Ecce* eijcis me hodie à facie terræ, & à facie tua abſcondar, ero vagus, & profugus in terra, omnis igitur, qui inuenerit me, occidet me. Videtur ex abſentia à facie Domini, non irrationalis illatio, acſi liberam haberent facultatem, omnia mala inuadendi, quem Dei infœlicitat abſentia facialis. *Cauendum ne Deum habeamus offenſum. Quoniam non ſolum eum, ſed & omnes creaturas eius habebimus aduerſarias, non dabit terra fructum.* Denique cuncta nobis negabunt, quæ ſua ſunt, Sol, Luna, aſtra omnia. Nā Deo abſente ſol abſentabitur, relinquet in tenebris, Luna, & aſtra negabunt influxus, & inde exitialis perditio.

Quòd *qui dicat Deo ſacellum, oliſtingit ad indulgenda magna beneficia, & qui propfonant, ad inſtigenda acerba ſupplicia.* 39

1 Ex clauſ. tex. vbi Iſraelitæ præſertim illi Zelotes, qui templo, vt caſtro acerbitatibus adhuc in ſuos vtebantur prophane, coegerunt Deum ad inferendam euerſionem, in ſupplicium, quo erectores ad diffundenda beneficia.

2 Ex ſupra ſub numero 32. de orationibus, & præcibus ſanctorum poſt dedicationem templi, ad impetrāda beneficia. *Oculi* mei erunt aperti, & aures meæ erectæ ad indulgenda beneficia, & benigne expediēdas petitiones.

3 Niſ-

3 Niſen. In orationem Domini. Ad Ionæ 2. *Orauit Dominũ de ventre cæti.* In tẽplo Hieraſolymitano deſtinata erat profuſſio orationis ad impetranda ne ceſſaria, vbi promiſſerat Deus orantibus optata conceſurũ oculis apertis, auribus intentis. Ionas in vẽtre cæti impetrat ſalutẽ, & euaſionem incolumẽ, quid? *Oratio Ionæ cætum domũ effecit, vt in ventre quaſi in domo oraret.* Cum enim oratio ſit ſolus Dei cultus, & vbique ſit Deus, vbi funditur, ibi templum, facellum cõſtruitur. Noe dicauit aram, vt facellum Deo, & fit ſaluus. Ciſternam Ioſeph, & euaſionem impetrauit, ſimilitet fornacem tres pueri, & egreſsi illæſi. Lacum leonum Daniel, & liberatus eſt. Lectũ Ezechias. Crucem bonus latro. Carcerem Petrus, & euaſit mortem. Sed nullus locus aptior templo ad orationem, vbi ſpecialius oſtenditur Dei præſentia. Rex in Regno eſt per potentiã, cui omnes ſubiecti, in curia tamen, & palatio ſpeciali ſuæ præſentiæ oſtẽſione. Sic Deus vbique, ſed in tẽplo ſpirituali fauorabili præſentia. Chriſoſt. tom. 5. homil. 79. ad pop. *Domi orari poteſt, ſed non poteſt, vt in Eccleſia, vbi clamor ad Deum vnanimiter emittitur. Vbi oratio in communitate dignificatur conſortio bonorum, in conſpectu Angelorum* pſallam tibi Deus meus, adorabo, ad templum Sanctum tuum, &c.

4 Quod qui prophanant templa, obligant Deum ad incutienda ſuplicia, inde ſuaderem, nam ex quo Rex Balthaſar vaſa templi prophanauit, *apparuerunt digi manus ſcribentis*, mortis ſententiam, & regni depoſitionem. Idem ex ſequentibus.

Quòd *templi prophanatores maxime timere debent, ne ab illo citentur ad iudicium, ſicut deuoti cultores ſperare, à terreſtri in cœleſte glorioſſum transferendos.* 89

1 Ex clauſ. text. Vbi prophanatores templi inde extracti ſunt ad interitum, inuaſione exercitus circundantis Romanorum.

2 S. Marcial. epiſt. 1. cap. 7. Ad Apocalypſ. 12. *Pugnabat* cum Dracone, & non eſt inuentus locus eorum amplius in cœlo, & proiectus eſt Draco ille magnus. In peccato dignitas, vt eijcerentur, & exulatentur, Lucifer, & ſequaces loco patrio, in quo creati ſunt in cœlo, vbi non quieſcit impuritas peccati ad thartara, miſtice cor tuum eſt cœlum Dei, vbi admittitur peccatum, à Spiritus Sancti dulcedine relegaris. *Recedente Spiritu Sancto à tabernaculo mentis euacuatur homo dulcedine, impletur amaritudine.* Similiter, vt Lucifer, & ſequaces exulantur à cœlo, nullusque locus eſt ei in cœlo, ſed proijcitur *Draco ille magnus* peccator.

3 Ter-

3 Tertul. Ad Geneſ. 3. *Fecitque* Deus Adæ, & vxori eius tunicas pellicеas, &c. & emiſsit eos de paradyſo voluptatis. Vix incidit in delictum, cum natiua patria originaria exulatur, & ignominiæ induitur veſtimentis, nonne ſatius permitti aliquantulum ibi immorari, vt expenderet quanta per culpam amiſsiſſet? Neutiquam, expendat exul. *Paradiſus* enim fouit iuſtum, pellit peccatorem. De originis loco exterminatur, quippe deliquerat. Pellitus datur orbi, vt metallo. More facinoroſsi, qui patria ſit exul, & damnatur ad triremes, fodinas metalli, aut orami præſidia.

4 Procop. Ad 16. Iſaiæ. In illud 2. Paralip. 26. *Rex Ozias è ſanctuario egredi iubetur leproſſus.* Et extra Ciuitatem, ne vicinia eius illa polluereт, eo quod ſe ingeſsit officio ſacro adolendi thura Sacerdotium, & ſæcularitate prophanauit, percutitur pœna lepræ. *Hieroſolymam ſecedere recuſans, præſentia pollutam reddidit.* Dignus eſt enim peccator templi ſacra prophanans, pelli inde, & ad iuditium Dei citari, & ibi pœna infamali torqueri, extra Sanctuarium, & cœleſtia domicilia. Vicina ſocietas malorum omnia prophanat, vt caueri poſſet, ne redumdet in Deum, quod impoſsibile.

Lectura de Chriſto adorato à Regibus.

Quòd *mendax vigilet de in conſequentia, ne immendatio deprehendatur.* 1

1 Ex clauſ. text. vbi Euangeliſta inſpectis ſubſtantia hiſtoriæ, & circunſtantij deſcripſit aduentum Magorum. Ad inſtructionem dicentis, ne ex vna, aut altera claudicans mendax comprehendatur.

2 Hiſt. Geneſ. 28. Iſaac. *Quis eſt tu filii mi? Ego ſum primo genitus tuus Eſau. Feci ſicut præcepiſti mihi. Surge, ſede, comede, vt benedicat mihi anima tua.* Senex cæcus cautus ne daret alteri, inquirit argutione, & redargutione. Accede ad me fili, vt tangam, & probem, vtrum filius meus ſis, an non. Deprehendi, non potuit mendatium, cum tentaret ex circumſtantijs. Quoniam Rebecca prænenit manus piloſſas. Veſtes odoriferas, & qua voce non poterat decipere, capitur, inconſequentię, ex circumſtantia vocis. Odor filij mei, &c. Vox Iacob eſt, ſed manus ſunt Eſau. *Ole ſter*

ter, ad. *Apropinqua*, & palpabote. *Adhibenda diligentia, ne decipiaris.* Tentauit in aliquibus deceptus, non in voce, acsi dixisset, si odor vestimentorum, & manus pilosæ sunt Esau, quomodo vox Iacob est. Deprehensus mẽ datij ex voce, sed prævaluere cætera. Punitus est dum ipse captus est mendatio vocis, licet non sit negata benedictio, fraude extorta, quod dedecet virum nobilem.

3 Bernard. serm. 64. Ad 2. Cant. *Capite* nobis vulpes paruulas, versipeles dolosæ vita gaudent, morte simulant. Quid capere prodest, satius suplicij mors, ne damna inforant vineis Mistice. *Mendaces capi mendatio grauius supplicium*, quam abigi, exterminari, aut occidi, capi in dolo, & astucia sua in verbis ad hominem ab ipsorum inconsequentia in ipsum, egre illis capi, quam occisio sufficiat, si capiatur. Qua, si prodas, expugnes, deducas ad medium, quibus apparere (mendatium) perire est, &c. Mendatium amat tenebras, veritas lucem, mendax non venit ad lucem, ne arguatur opera eius discussione, & examine. Euangelista nobilẽ dedecet mendatium, quod reddit ignobilem, & licet à mendatio vix immunes sint sanctiores, sunt tamen Spiritus Sancti Amanuenses. *Homo Sacerdos de semine Aaron venit, non decipiet nos.* 1. Machab. 7. Satius Euangelista, cui non solũ dedecet mendatium, sed Euangelistæ nobilitatem amitteret, si mentiretur.

Quod *res magni ponderis, & momenti non est suscipienda cæce, & imprudenter, sed ex causis, & motiuis credibilitatis, vt historia istius mira, & rara.* 1

1 Ex clauſ. text. vbi Reges Gentilitatis aduenisse ad recognoscendum Christum infantem, Regem, insolitum, rarum, & maximi ponderis arcanum, & stella duce, &c. Notari debet sub Rege, & circumstantijs, quibus accidit, vt ea fides profunde radicetur.

2 Caiet. Ad 1. Ioann. 4. *Charissimi* nolite credere omni Spiritui, sed probate, si ex Deo sit, an non. Quoniam multi Pseudo Prophetæ exierunt in mundum, In re ambigua, discussio manifestat. PseudoPropheta bifaciem exhibet ex visu bonus, ex risu malus, siue examine stultum alterutrum accipere. *Monet ad discernendum spiritus, & necessitatem explicat. Docet signa discutiendi spiritus. Primum signũ confessio, quod ipse venerit Messias in carne signum est Diuini spiritus in homine.* Positis ergo signis credibilitatis, non leui sed prudentiali corde imperatur assensus.

3 Theophil. Ad Ioann. 4. *Erat quidam regulus, cuius filius in-*

infirmabatur Capharnaum, &c. Rogabat, vt saluaret filium eius, &c. Incipiebat enim mori. Dixit Iesus nisi signa, & prodigia videritis, non non creditis. Et instabat, descende prius quam moriatur, quasi non posset, si vellet defunctum suscitare. Dicit ei Iesus, vade filius tuus viuit. Credidit, sed imperfecte. Quando perfecte? cum occurrit ei seruus afferens lætum nuntium vitæ. Suscitatus est, qua hora melius se habuisset. Dixerunt. heri hora tertia reliquit eum febris. Cognouit ergo Pater, quia illa hora erat, in qua Iesus dixisset, filius tuus viuit, & credidit ipse, & domus eius tota Collatis signis, & hora, qua reliquit febris, cum qua prænuntiauit Christus, dicitur quod credidit. Nõ ne ante perpensa illa signa crediderat. Sanè. Sed imperfecte, *vt ergo dicitur à seruis hora, in qua melius habuisset, & in meliorem transyisset, valetudinem, planè credidit Domino. Prior enim eius fides imperfecta erat, quam neque fides quis recte vocauerit. Tunc perfectè credidit, quando & de hora dicit.* Tunc accidit subito salus, quæ ex causa naturali sperari non posset, & ita credidit inesse ei diuinam virtutem. Nec Angeli aperiunt cœli portas, nisi discussis signis venientis Regis gloriæ. Leui cor de creditur res grauis, nisi veritas expédatur ex signis credibilitatis. vt in fide nostra.

Quòd *fidelis promissio exigit impletionem, vt ex concordia inter vtrumque, fiducia concilietur.* 3

1 Ex clauso. tex. Vbi promissio Messiæ sub circunstãtijs promissionis, impleta est de facto sub eisdem, & sic fiducia indefirmitatem acquisiuit.

2 Oleaster ad Genes. 21. *Visitauit Dominus Saram, sicut promiserat, & impleuit, quæ locutus est, concepitque, & peperit filium in senectute suâ, tempore quo prædixerat ei Deus.* Risus Saræ, cum audiuit promissionem concipiẽdi, & edendi filium (vt sæpe peccata) obsistere diuinæ promissioni, aut retardare impletionem, non mirum, sed non ita. *Inter cætera, quæ in Deo relucent, præcipuũ est veritas, vt non solum, quæ promiserit, compleat, sed eo tempore, quo promisserit.* Vbi aduertit, *quod non obstante risu Saræ, & Abrahæ, Dominus quod promiserat, adimpleuit, vt in hoc suam ostenderet veracitatem.* Quare Paulus ad Roman. ait, *est autem Deus verax,* omnis autem homo mendax. Deus implet nobis pollicita, vt impleamus promissa ministeria, iusti implent, & suo tempore.

3 Ad hoc intentum immediatè positum de impletione promissionis Christi facta Regulo de salute filij agonizantis, & impletione, iuxta horam, & tempus, ne alijs increscat volumen.

Quòd *Diuina omnipotentia mira, & & egregia operatur per instrumenta debilia, & inutilia, vt sibi facinoris arroget gloriam.* 3

1 Ex clauſ. tex. Vbi ex virginea ſterilitate naſcitur, quæ virginitas, ſicut ſterilitas phyſica partum neſcit, & ex opidulo exiguo, non ampliſsima Roma, aut alia ampliori orbis, ne ſuum vendicent, quod à Deo.

2 Ad hoc adduci poſſunt pō ſita in indice lecturæ Samſ. ſub num. 28. & 33. ne intumeſcat volumen hoc adiunctis.

Quòd *in Eccleſia vna, & eadem habitant boni, & mali, reprobi, & prædeſtinati, & diſtingui, & ſeparandi à noxia communicatione malorum.* 3

1 Ex clauſ. tex. Vbi ſub eadem Iudæa ſita eſt Bethleem duplex, Zabulon, & Iudæ. Illa in qua non, hæc in qua ſic, natus eſt Chriſtus, nec confundi debent.

2 Clemenſ. 6. Strom. Ad Iſaiæ 11. *Habitabit lupus cum agno, & in tempore aduentus Meſiæ.* Quid ò ſtulti Iudæi accipitis ſenſibiliter, & materialiter de lupo, & agno? vt cum in aduentu videtis efferatos, & ſeuire vnum in aliud, colligatis non veniſſe. Si metaphoræ nucleum penetraretis, veniſſe potius inueniſſetis. Nā in Eccleſia Chriſti ſimul pacifice degunt Iudei, & gentiles ſub vnitate fidei, Baptiſmi, &c. Gentes efferatos Iudei pacificos mores oſtētant, ſed iam ſeiungēdi, qui recedunt ab vnitate fidei.

3 Greg. ad Matth. *Simile eſt Regnum cœlorum decem virginibus &c.* Quinque fatuę, & quinque prudentes. In cœlo nil fatuum reprobabile, cur ego ſimile prudentibus, & fatuis perhibetur? *Sæpe cœlum præſentis temporis Eccleſia dicitur, in qua mali cum bonis, & reprobi cum electio commixti ſunt*, recte ſimilis virginibus prudentibus, & fatuis eſſe præhibetur.

Quòd *in iuditio vniuerſali iudicis ſententia ſeparandi ſunt reprobi in ignē æternum, prædeſtinati in vitam æternam.* 3

1 Ex clauſ. tex. Vbi licet vox Bethlem ſonet vtramque ſobri, & docti, ponunt diſtinctionem inter vtramque, vt in vna ſit fœlicitas nati Chriſti, in alia non.

2 Theoph. Ad Matth. 13. *Simile eſt Regnum cœlorum ſeminanti ſemen in agro ſuo. Venit inimicus, & ſuperſeminauit zizaniam, & abijt. Serui, vis imus, & colligimus ea? Non. Sinite vſque ad meſem, in tempore meſis, dicam meſoribus, colligite zizania in faſciculos ad comburendum, triticum congregate in horreum.* In area præſentis vitæ, ſimul cohabitant boni, & mali, zizania, & triticum. Dicitur igitur de Angelis, quod in conſummatione cōgregabunt zizania in faſciculos, non enim quis vltra operari pote-

ferit. Frumentum autem à meſoribus Angelis congregabitur in cœleſtia horrea.

3 Emiſſen. homil. 1. in nat. confeſ. ad Matth. *Homo* quidã, &c. vocauit ſeruos, &c. Et vni dedit quinque talenta, & alij verò vnum. Venit, poſuit rationẽ cum eis, & ſeruo quinque ſenſibus viſum danti, alijs auditum, aures, &c. Dedit præmium. *Euge ſerue bone, &c. Intra in gaudium Domini tui.* De hoc gaudio beati, qui habitant in domo tua Domine, &c. *De illo videamus, qui abiens fodit in terra, & abſcondit pecuniam Domini ſui.* Tollite ab eo talentum. Quoniam ſine ratione inſipiens apparebit. Inutilis ſeruus eijcietur in tenebras exteriores, illic erit fletus. Maxima diſtantia gaudij à fletu, domo Domini, à tenebris exterioribus. In his ſeruandi, in vitam æternam, in ignem æternam.

Quòd *Deus habet in memoria Reges etiam perditiſsimo, dando auxilia ad ſalutem.* 4

1 Ex clauſ. tex. Vbi memoratur Herodes Rex intruſus immanis, cui Magi dant annuntia aduentus, & natiuitatis Chriſti.

2 Hiſt. Ionæ 3. Deus optans ſalutem omnium, non ſolum Iudæorum ſibi in peculiũ, ſed Gentilium adoptandum, mittit Ionam minaci prænuntio, & tandem prædicat, *adhuc quadraginta dies, & Ninive ſubuertetur*, niſi ad pœnitentiam confugiant. Peruenit verbum ad Regem Niniue, *& ſurrexit de ſolio ſuo, &c.* Cum eſſet adeò flagitioſus, cui paterent aditus adulationis, lenocinia feſtiua, quod gratiores in aula, qui oblectamenta adferunt, delatum eſt verbum Ionæ minitantis, cum Reges tardi eſſe ſoleant admonita audienda, & tardioros ad exequenda, in Rege talis facta commotio, vt ſubitò pœnitentiam ſolemnem egerit, vt ſurrexerit de ſolio ſuo, abiecerit veſtimentum, indutus eſt ſacco, & ſederit in cinere, & edicto publico voce præconis iuſerit agi pœnitentiam. S. Ephr. ſerm. de Ionâ, & pœnit. Niniuit. *Rex ſe ipſum populo exhibuit, & exemplo, cernens eum ciuitas ſacco amictum conſternata eſt. Plorauit Rex ſuper totam ciuitatem, aſpiciens eam in luctu, ſacco amicta. Omnes pariter lugebant, ita vt etiam lapides ad lugendum prouocarent.* Optat ſalutem omnium, neminem vult perire perditiſsimum.

3 Ad hunc ergo modum miſsit Deus legatos ad alios Reges, ſed non ſimili euentu, Samuel ad Saulem 1. Regum 15. *Pro eo quod abieciſti Verbum Domini, abiecit te Dominus, ne ſis Rex.* Articuli manum ſcribentis mortis ſententiam, & excidium Regni per Perſas, Medos, &c. Balthaſari,

Eliam ad Acab *de lectulo, &c.* Nathan ad Dauid. Baptista ad Herodem, *non licet tibi, &c.* O vtinam Regem pœnitentem Niniue imitarentur, ivt & subditi imitarentur Niniuitas, Deus enim vult omnes homines saluos fieri.

Quod *Deus vult superiores adhuc improbos suis titulis honorificis dignitatis pertractari.* 5

1 Ex clauſ. tex. Vbi per Euãgeliſtam Herodes adhuc intrusus, & ſceleſtus intitulatur titulo Regis.

2 Theodoret. q. 29. ad 2. Reg. 15. *Reuertere*, & habita cum Rege, Dauid alloquitur ſic Getheum, vt filium Abſolonem Regem inducat reuereri. Inſenſibilitatem potius ſapit, quam animi generoſitatem, Regem filium odio inſequentem parentem, non inimicum Tyrannum, parricidam, ſed Regem, admiranda Dauidis lenitas cum perſequeretur, & inuaderet filius execrandus. Vt ſceleſtibus *Regibus adhuc habendam reuerentiam*, doceret exemplo. Sunt qui auerſantur nomini Chriſti: *Ille qui baptizat trans Iordanem.*

3 Euſeb. ſerm. Dom. In palm. ad Matth. 26. *Ieſus* autem ſtetit ante Præſidem, vt delinquens, & facinoroſus in viſitatione Iudicis. Et interrogauit præſes, *Tu es Rex Iudæorum?* Satius aſſertiue, quam interrogatiue ſuo Regio titulo compellaretur? Sane, *Quod præſes interrogatiue dixit, Chriſtus affirmatiuè ſuſcepit.* Et plectentes Coronam de ſpinis poſſuerunt ſuper caput, & arundinem in dextera eius, & illudebant dicentes. Aue Rex Iudæorum. Illi illudentes fecerunt nobis magni ſacramenti, in veritate hæc ſuſcepimus, & veneramur. O quot immorigeri, aut detrahunt à ſuperiori titulum dignitatis vulgari nomine inuerecunda omiſſione verſantes, aut ſi præmuntur inuiti intitulare inſignia dignitatis inflectunt veritatis reuerentiam in illuſionem, æmulati Iudæos carnifices corona, & ſceptro Chriſtum ornantes, ad illuſionem, & ludibrium. Satius in veritatis reuerentiam inuerti, vt aſtruit Apoſtolus, *Obedite præpoſitis veſtris, non ſolum bonis, & modeſtis, ſed etiam diſcolis, & vitioſis. Hæc eſt enim gratia.* Iudæ peiores, qui adhuc traditurus dixit. *Aue Rabbi*, & Iudæis, *Aue Rex Iudæorum*, cum darent illi alapas.

4 Theoph. ad Matth. 17. *Impoſuerunt ſuper eum cauſam ipſius ſcriptam, Ieſus Nazarenus Rex Iudæorum.* Et annuit inclinatio capite. *Illi enim Regnum adſcripſerunt pro accuſatione. Verum teſtimonium fidele ab inimicis adductum, Rex quidem eſt Dominus, qui venit vt ſaluet Iudæos.* Laudabile ſuperiori cum titulo

ſuo

sno illusione nominatur con jcere mentis oculos in crucifixum, vt & annuat titulo, & iniurijs imploret à Deo veniam. Prælatus indignus honorandus.

Quòd *Deus in agila super impletione promissionum, præsertim de aduentu Messiæ ad concitandam perfidiam Iudæorum.* 5

1 Ex claus. tex. Vbi Deus per Euangelistam impletam promissionem Messiæ ostendit ex sceptro translato ad Herodem Gentilem. Vt inde cõuinci possit perfidia Iudæorum expectantium aduentum.

2 Ambr. ad. *Eritis sicut Dij, ecce Adam quasi vnus ex nobis factus es.* Promisit fastuosè, & mẽdaciter, vt probauit euentus prodens mendacem, & ignobilem, ne fidem vlterius præstaret. *Euam promissi honoris ambitio decepit, ideo remedium datur, vt soli Domino seruia.* Qui fidem implet, stat promissis, ne fides promissionum periculum experiatur. Rex non implens, suæ Regiæ opinionis excidium patitur.

3 Historia 1. Reg. 18 Promisserat Rex Saul Dauid filiam suam Michol in sponsam, si victor attulerit decem præputia Philistinorum, at ille, & implet promissa. *Dedit itaque Saul Michol filiam in vxorem.* O Rex incaute filia, vires, & potentiam adauges, vt tollat de manu sceptrum, de capite coronam, grauius hoc periculum, in quo non est implenda fides Regi. Eripiat, tollat, dum fides Regia non violetur, Iosephus ad hęc 6. antiq. 13. *Turpe duceret tergi ersari, vel mentiri collocat ei filiam nomine Michol.* Pereat Rex, regnum, dum veracis opinio non pereat. Regi, Principi, nobili mendatium maius excidium. Ad idem vide in hac lectura sub num. 3.

Quòd *in Dei obsequio est adhibenda diligentia, & abijcienda desidia.* 6

1 Ex claus. tex. Vbi visa stella illuminante, & conuocante statim accincti sunt ad iter, vt 13. die natum adorauerint.

2 Eusseb. Emis. In dedic. Eccles. Ad Luc. 19. *Zachee festinans descende, quia hodie in domo tua oportet me manere, & festinans descendit.* Vbi imperiũ vrget festinantiam, festinus obsequitur obedientia sibi præceptum, & obedientia prompta respondeat. *Iam igne fidei interitus ardebat, qui sic obedientiam, & obsequium exterius exhibebat. Multum iam fide crenerat, & si statura pusillus erat.*

3 Caiet. Matth. 28. *Surrexit* sicut dixit. Cito euntes dicite discipulis eius, quia surrexit. Angelico spiritu sine mole corporis ocyssime volit re fas, fœminas autem Angelus velocem iubet instare cursum, non sat anunciare illis, facile oqui, sed iter agere citissime, tarde

scit fœmina. *Sic, parentes exierunt cito de monumento, afficiuntur simul timore, & gaudio. Visi Angeli perseuerat timor, aderat auditæ resurrectionis gaudium.* Timore, & gaudio, vt calcaribus, vt alis agitantur. *Currentes, intellige velocem ambulationem, quæ in muliere* (graui) *appellatur cursus.* Optat Dominus præceptis, & vocationi suæ statim pareri, nec differri executionem, conuersionem. Stomachum inquietant tardi tepidi, frigidi; placent Angeli ministri spirituales sine tarditate molis, vt ignis, & fulgur velocissimi rumpentes moras.

Quòd *parcendum, nec labori, nec rei familiari, & opibus, vt subsistat recognitio, & adoratio veri Dei.* 6

1 Ex clauſ. tex. Vbi Reges, nec labori, itineris, sumptibus pepercerunt, vt Christum Regem natum recognoscerent, & adorarent.

2 Euseb. Emis. In die Sancti Andreę ad Matth. 4. *venite* post me faciam vos fieri piscatores hominum, illi relictis retibus, & Patre secuti sunt Dominum. *Non ita* poterant sequi Christum cum retibus expediti, & illi duo fratres Iacobus Zebedæi, & Ioannes, qui statim relictis retibus, & Patre in naui, secuti sunt eum. Quid opus relinquere retia, nauim, Patrem, quæ cõponi cum sequela Christi facile possent, secus, quam telonij vsuræ Matth. vt temporalia postponunt Christo, vt nec illorum dispendiũ pareant pro tanto magistro. *Opere* pretium est considerare, quanta fuerit beatorum fratrum obedientia? Qui ad vnius iussionis vocem, non solum retia, sed & Patrem relinquentes, Christum secuti sint. Reliquimus omnia, & secuti sumus te, inquit Petrus, omnia reliquit, qui reliquit omnia, quæ habet, nec aliquid sibi retinuit.

3 Hist. 3. Reg. 19. *Elias* parẽs, *misit palium suum super Eliseum.* A lapide, *vt vocaret eum ad te sequendum, sibi socium sui instituti* participem, vti iam Nouicijs in Religione datur paliũ, siue vestis eiusdem Religionis. *Hac igitur ceremonia* institutus est Eliseus Propheta socius, & successor Eliæ, *ex laico factus est Religiosus.* Ex agricola Propheta, ex idiota Theodidactos. Vnde statim reliquit bobes, domũ, parentes, & secutus est Eliam. Quid onus, & sarcina bobes, & aratrum ad illud Eliæ institutum? Quod conuiuium celebrat bouum, & insuper aratrum intrudit prolignis ad coquendas illas. A lapide. *Suis vale dixit, vt ostenderet se omnia relinquere, ac latum sequi Eliam.* Abul. *Nihil voluit sibi manere, reliquum in sæculo, vt liber, & expeditus transiret totus ad Dominum, quia in re exemplum dedit Religiosis.*

Quòd,

Quòd *non est differenda virtus pœnitentiæ, & bona opera, nam dilatio in senectutem est valde periculosa.* 6

1 Ex clauſ. tex. Vbi Reges Magi non differunt conuertionem à gentiliſsimo in fidem Chriſti, ſed ſtatim viſa ſtella interiori ſpiritu docti illam, & opera ſuſcipiunt, inquirendo, deferendo propria per aliena regna diuagantes.

2 Euſeb. Emiſ. homil. de bono latrono ad Luc. 23. *Domine memento mei, &c. Hodie mecum eris in paradyſo.* Hodie inuocat, & hodie datur ei paradyſus, huius exemplo peccatores, & facinoroſi diu dilatare poterant pœnitentiam in vltimam agoniam vitæ, ita differenti paradyſus negandus? Neutiquam. *Ille nec* ſalutis tempus ſcienter diſtulit, nec ſpem indeſperationis noui ſimum reſeruauit, nec ante Chriſtum ſciuit. In extremo placuit Deo, quia ad fidem non fuit illa hora extrema, ſed prima, in eodem puncto, quo vocatus præſtitit obedientiam, idem inſtans cognoſcēdi Chriſtum, fuit vitæ extremum, ſalutis aſſequendæ primum. Tibi iam accidit hora prima vocationis, eadem ages pœnitentiam, ne raro exemplo decipiaris, vltimam vitæ ſomnians, primam vocationis, cum iam ſit vndecima, imò vltimatus occaſus.

3 Nazianz. ad Matth. 15. *Qui vnum acceperat, abiens fodit in terram, & abſcondit pecuniam Domini ſui.* Cum poſt elapſum tempus poſuit rationem cum ſeruis, & talentis acceptis adferētibus lucra, euexit *ad gaudium Domini.* Adſcito ad rationem lucri impenſi reddendam, illo, qui accepit vnum talētum. Viſa eius inertia, imò duritia in Dominū, ac ſi vellet inde fructus colligere, vbi non ſeminaſſet. Cum facile ex campſore pecuniæ traditæ ad cambium poſſet repartere lucrum. Acerbe tractatur, *ſerue inutilis*, & ligatis manibus, & pedibus iuſſus eſt mitti in tenebras exteriores, vbi fletus, & ſtridor dentium. Extrema ſeueritas videtur. Si ſeruus ligatur manibus, & pedibus, qua induſtria, & diligētia ſibi poterit comparare lucrum? Poſt ſepultum talentum, & obuolutum in ſudario funerali, iam de lapſo vitę tempore, poſt mortem non eſt idoneum præſtitutum tempus adquirendi lucrum. Ante oporteret lucrum quæſiſſe. *Inter gratiam, & mortem temporis aliquid intercedat, &c.* Ad lucrum, qui admiſſit, ſpem omnem lucrandi, poſt mortem ſtulte ſtatis ſperare poteſt. Caue tibi ne differas talenta gratiæ, & fidei tibi collata in halitū vitę vltimum ſolicitare lucrum, tunc poſsibilis contritio peccatorum, cum inſtant anguſtiæ, &

dolores graues infirmitatis, sed valde difficilis, contingens, & rara, ue fidas salusem ex raro cõtingenti perpetuam.

Quòd *vera sapientia in eo consistit, vt inducat ad inquirendum Deum, & salutem æternam.* 12

1 Ex clauſ. tex. Vbi Reges Magi non ex ſapientia peritiſſima aſtralogiæ, ſed ex interiori illuſtratione ducti ſunt ad inquirendum Chriſtum.

2 Oleaſter ad Deut. 4. Vbi Moyſes ad populum indigitans legem. Audi Iſrael ſtatuta, & iudicia, vt faciatis, & viuatis. *Hæc eſt veſtra ſapientia, & intellectus, vt audientes dicant, en populus ſapiens, & intelligens. Incepit legem Domini explicare, vt redderet promptiores ad legem audiendam, & faciendam, & illud faciatis, & viuatis.* Expendit ad cap. 6. *Non ſolum* vt ſciatis, ſed vt faciatis, quia ſeruus ſciens *voluntatem* Domini, & non faciens vapulauit plagis multis. Et apte nam quid prodeſt ſapientia ſpeculatiua, niſi in praxim tranſeat, inducentem ad opus. Fumoſa cognitio, quã Deus etiam malis communicat, Angelo Lucifero, Salomoni, &c. Vera ſapientia obſeruatio eſt diuinæ legis impellens ad illam. *Ad hoc enim præcepta ordinantur, vt populus timeat, & diligat Deum.* Vnde populus publicari poteſt glorioſe ſapiens, & intelligens, qui audit legem, & operatur præcepta, & viuit in eis.

3 Bernardus ſerm. 74. In Cant. ad Matth. 25. Parabola Virginum, *Quinque fatuæ, & quinque prudentes* Diſcrimen, quod quinque fatuæ acceperunt lampades ſine oleo, prudentes lampades cum oleo. Lucem cum operibus, lucem ſine operibus, Vnde illæ repudiatæ, iſtæ verò prudentes admiſſæ. Illis datur repulſa neſcio vos. Et merito. *Non aliunde fatuas puto, niſi quia dicentes ſe eſſe ſapientes, ſtultæ factæ ſunt. Hæc à Deo audire habent, neſcio vos.* Stultius nil, quam iactare ſapientem ſine operibus. Illa ergo ſapientia laudabilis, quæ impellit, & perducit habentem in ſalutem æternam. Quid profuit Lucifero ſapientia ſua. Ezech. 28. dum præſumptione, & arrogantia ſapientiolæ ſuo fumos, & flatus alit, vt appetat ſedem in monte teſtamenti, ſimilis ero altiſsimo? Bernard. ibidem, *ſic habere perdere eſt*, quę non inducit in humilitatem, ſed elationem, ſcientia enim ignorantia, quam boni mores, & opera honeſta non reddunt glorioſam Sancti idiotæ altiſsime ſapiunt, qui ſalutem æternam bonis operibus comparare agnoſcunt.

Quòd

Quòd *in præsentia Regis Regum non debet vllus apparere Rex, sed omne. serui deponentes diademata sua ei.* 12

1 Ex clauſ. text. vbi dicuntur Magi non Reges, cum reuera fuerint Reges, prudenter deponentes titulum Regum, dum inquirunt, vbi natus eſt Rex Iudæorum, Regum Rex.

2 Ex adductis in indice lecturæ de 70. annis capt. ſunt iſtius inſtituti ſub num. 74. Abſtineo ab alijs adijciendis obbrebitatem.

Quòd *Deus largitus eſt hominibus ingentes diuitias, & theſauros, vt in obſequium Dei omnia conuertantur.* 12

1 Ex clauſ. text. vbi Regis iſti vt inquirant, videant, & reuereantur Chriſtum Regem natum, itineri prolixo, & magnis ſumptibus expenſis non parcunt. Imo deferunt theſauros, quos largiſsime poſt offerant.

2 Euſeb. emiſſ. In natal. Apoſt. homil. 4. Ad Matth. 19. Iuuenis diuitis. *Magiſter quid faciam, vt habeam vitam æternam? Serua mandata, &c. Cuſtodiui à iuuentute mea. Si vis perfectus eſſe vade, vende omnia quæ habes, & da pauperibus, & habebis theſaurum in cœlo. Ille abijt triſtis*, quia multas habebat poſſeſsiones. *Iſte nõ bene intellexit, Diliges proximum, ſicut te ipſum*, aut ſi intellexit, non bene reſpondit, cum nihil indigenti dediſſet, *putabat ſe bene diligere, quia non occidebat, quia ei non auferebat bona*, quia iniurias alias in eũ, non faciebat. *Ideoq; qualiter intelligere debeb t, ait vende omnia, & da.* Ille implet legem, qui non peccat in dilectione Dei, & in dilectione proximi, omnia indigenribus largitur. *Abijt triſtis, magis in terrena poſſeſsione, quam in cœleſtis theſauri promiſsione, ſpem habebat.* Qui enim in diuitijs ſpem ponunt, valde difficile ſaluari poſſunt. Vnde Dominus, *facilius eſt camellum per foramen acus tranſire, quam diuitem intrare in Regnum cœlorum.* O miſer quid dicere diuitias habens, non ſunt diuitiæ, quæ Deo non inſeruiunt, in ſuis pauperibus alendis. Dines ſolus, qui virtutibus opulẽtus Deo inſeruit, ſine Deo nullæ diuitiæ. Optime diuitiæ, quæ in pauperum arca ſeminata fuges theſaurizant cœleſtes, fœlicitatis theſauros.

3 Expoſitis ſupra ſub num. 6. Inſtituto inſeruiunt præſenti, ne ſcriptum dilatetur plus optatis.

Quòd *ſolus Chriſtus Rex in re intrinſeco naturæ eſt æteris præferendus iure deriuato, & aſcititio.* 16

1 Ex clauſ. text. vbi Chriſtus Rex ante quam natus, cæteri natiuitate ingerunt ſe in Regna à parentibus, deribata, & morte euaneſcũt. Chriſtus Rex in æternum.

2 Aret.

2 Aret. Ad Apocalyp. 19. *Et habet nomen in vestimento, & in femore scriptum Rex Regum, & Dominus Dominantium.* Rex cœlestis est vere Rex substantiuè, Reges terreni exhibent Regium fastũ ad tempus, ab intrinsecis naturę iste, ab extrinseca deribatione illi. Terreni in veste, & purpura Regali, tantum, cœlestis in illa, & intrinseco femore soluptam habent dignitatem. Glorioſius, esse in rei veritate, quã in apparientia. His ne ille præferendus? Sane. *Per femur autem naturam carnis designare, quod vere humana sit, nõ phãtastica.* Vnde iactari quis poterit de eo, quod vere est, non de eo quod adiungitur, vt de vestimento, quod induenti extrinsecum. Quid gloriæ histrioni verò vulgari, & ignobili Regem agere, induere insignia Regalia in theatro? nil.

3 Seleuc. Orat. 25. Ad Matth. 16. *Quem* dicunt hominis esse filium hominis? Alij Prophetam Ieremiam, alij Baptistam, alij Eliam, &c. Illorum variæ opiniones rẽ ab extrinseco principio, vulgi informatione iudicant, *Vos autem* familiares, & domestici è propinquo, *quem me esse dicitis?* Petrus nomine cæterorum, *tu es Christus filius Dei vivi.* Attigisti in rei veritate substantiam articuli. Inde tibi, mihique gloria, vt non à te, sed à Patre dideceris. *Quod eandem naturam cum Patre feras, &c. Ab incarnatione nomen sortitus.* In vnitate naturæ diuinæ cum Patre Regia filiatio fundata. Quod naturæ tuæ tuum est, alterius, quod alienum est. Esse Regem Regum tibi insitũ à natura, confessio mea, mea extrinseca gloria tibi. Regibus consulendum, quod puluis sunt, & in puluerẽ desinunt in Mausoleis, ne intumescant Regali corona, sceptro & insignijs Regalibus, quibus Regem agunt in mundi theatro. Iudic. 2. Rex ille pontentissimus Dominus orbis Arphraxad intitulatur *Rex Medorum.* Prius re, posterius titulo adscititio cõtigit. Illud naturæ, hoc officijs attributum.

Quòd *pro obsequio veri Dei postha-benda sunt Regiæ dignitates, & omnia temporalia.* 16

1 Ex clauſ. tex. vbi Reges Magi, vt obsequiũ præstarent Christo Regi nato, non dedignantur Regias submittere dignitates, insumere expensas itineris, & defferre thesauros, vt per illos se iactarent potius Reges, quam coronis.

2 Ex adductis in huius lecturę indice à numero 12. & immediate sequenti, non adiungitur aliud pro brebitate.

Quòd *stellæ diuinæ gratiæ, non solum excitat, sed comitatur ad bona opera.* 26

1 Ex clauſ. tex. vbi stella ductrix Magorum, non solum inducit, vt iter inchoent fixa manens

nens insitu apparitionis, sed motu suo gerit ducem simul, & comitem ad terminum, supra, vbi erat puer.

2 Hist. Exod. 15. *Dux fuisti in misericordia populo, quem redimisti, & portasti eum in fortitudine tua ad habitaculum sanctum tuum.* Vbi Moyses in musicis instrumentis, cum innumera multitudine filiorum Israel precinerunt glorioſe Canticũ Domino, quod eduxerit eos de Ægypto, illa columna nubis, & ignis vexillifera, & fuerit commitata ad terram vsque promissam sapientiæ 10. *In via* mirabili, & fuit illis in velamen diei (ad leuandos ignis æstus) & in luce stellarum per noctem, ad illuminandos viæ anfractus in terra illa desserta ad promissam, vberem, & fertilem, vbi non solum sunt introducti, sed plantati. Oleaster ad hæc ex metaphora euellentis, & ducentis arborem ex vno horto in alium. *Parum est si te Deus ducat ad bona, nisi te in eis plantauerit.* Alij inũnuata methaphora nutricis deferentis in amplexu infantem infortitudine pedum suorum, motu continuo ab vno loco in alium, ab vna domo in aliam comitando.

3 August. In solliloq. cap. 18. aliàs ad Matth. 14. *Iube me Domine ad te venire super aquas*, ait Petrus ad Christum ambulantem super vndas, ac solida saxa. *Veni.* Cumque impauidus, & audax enaui descenderet ad aquas, *& cepisset mergi. Clamauit. Christus, extendit manum, & aprehendit, modica fidei, &c.* Peritia piscator enatandi non perficit iter, nisi illi manus porrigatur ad Christum, ita quod in virtute voeis Dei inchoatur, non perficitur sine manu Dei comite. *Da quod* iubes, & iube quod vis. Si iubes veni ad me, da manum, vt continuetur via, te comite, sicut inchoata, te duce.

Quòd *Deus se ingerit inclinationi, & studio cuiusque, vt suauiter ad se trahat omnes.* 26

1 Ex clausi. text. vbi vt Magos, astrologos, Reges ad se inclinaret, stellam creat ductricem, vt gerat ducatum astronomicum.

2 Oleaster ad Genes. 1. *Faciamus hominem ad imaginem, & similitudinem nostram.* Deus Spiritus est, in spiritu autem non cadit effigies aliqua corporalis, quam Deus imitteretur, cur hominem anima, & corpore compactum, dicitur creare ad imaginem, & similitudinem suam? Interpretantur quidam communiter de imagine spirituali, vt anima tribus identificatis

cata potentijs, aut radicata Dei vnios essentia Trini in personis representet. *Puto Deum, cum hominem produxit, humanam formam assumpsisse. Nam statim habuit colloquium cum homine, vt quod dicitur ad similitudinem, & imaginem, in vmbra nostra referatur ad corpus assumptum.* Ac si ad formandas voces egeret assumpto corpore, aut sine illo nequiret fieri colloquium spiritualibus infusis speciebus. Assumat ergo, vt iudicem agat, & post peccatum reprehensione, sibi hominem ad pœnitentiam conciliet. *Factus omnia omnibus.* Vt verbis vtamur Apostoli, *vt Christum lucrifaciam*, cum Iudæo Iudeus, cum gentili gentilis, &c.

3 Euseb Emis. Dom. 1. Post Epiph Ad Luc. 2. *Inuenerunt illum in templo sedentem in medio Doctorum audientem illos, & interrogantē eos. Magna cum omnium admiratione, & plausu, quod infans duodecim annorum interrogaret difficilia, & solueret quæstiones Doctorum.* An ætati aptius nō congruerent infantum iocalia? Agebat cum doctoribus, & induebat magistrū. *Morem agens* peritissimi Magistri, qui nunc interrogando, nunc respondendo instruit discipulos. Ad illos igitur imbuendos doctrina sua moribus, illorum morem gerebat. Sic varias induere solebat formas. *Patris familias* cum operarijs. *Regis* cum vassalis. *Hortulani* cum Magdalena inquirente in horto suscitatum sepultura.

Quòd *Deus excitat ad studium bonorum operum, non solum interna illustratione, sed externa protectione admouendo, proficia, & repellendo noxia.* 26

1 Ex clauſ. text. vbi Magos ad se vocat non sola externa stella ductrice, sed latius interiori illustratione. Pellit moras, instigat studium, & solicitudinem.

2 Theophil. ad 1. Corinth. 10. *Fidelis Deus, qui non patietur tentari supra id, quod potestis, sed faciet cum tentatione proventum, vt possitis sustinere.* Consolatur, *non finit tentari vltra vires, sed viribus tollerabilem adoriri vos faciet.* Non nisi humana facili, leui. *Quauis vires exuperat?* sane, *nisi auxilietur, & præbeat fœlicem euentum.* Liberationem celerem simul, atque nos inuaserit tentatio, quod pertinet ad externā protectionem, remouere instantem, ne inuasione diuturna vires debilitet, comparet victoriam instigatione, & improbitate.

3 Oleast. Ad Genes. 21. *Eijce ancillam, & filium eius.* Sara ad Abraham, eo quod vidit cū Isaac Ismaelem ludentem, quid quid sit, vel arrogantem sibi maioratum, vel Idolorū iocalibus assue

assue facientem, sat Ismaelem incitantem propulsare. Cur matrem Agar innocentem inoxiã? Vtrumque pellendum immediate incitantem Ismaelem, & Agar mediate, aut simulantem, aut etiam instruentem. *Elaborandum est parentibus, vt non sinant pueros suos cum malis versari.* Addoscens iuxta viam suam, etiam cum senuerit non recedet ab ea. Illud ad puerilem intimam assuetudinem, hoc ad illius externam gubernationem. Mistice ad internam suggestionem, & externam consiliationẽ. Dei vmbra Ioseph, qui vt ad se venire parentem efficaciter tentaret, & pecuniam in marsupio, & planstra, vt ipsam, & suppellectilem asportarent fratribus consulit.

Quod *Deus non semel tantum, sed semel, & iterum vrget nostram iustificationem, vsquequo assequatur intentum.* 26

1 Ex clauss. text. vbi semel, & iterum apparet stella inchoatione ante ingressum Hierusalem, & in prosecutione post egressum, vsque quo ostendit indice natum infantem.

2 Oleaster ad Exod. 8. *Ingredere ad Pharaonem.* Sæpe, nec semel Deus præcipit Moysi dari legationem suam, vt dimittat populum ad emoliendum cor Pharaonis. Et quatit ærumnis, incommodis, miraculis, sanguinis, ranarum, cinisum, tenebrarum, occisione primogenitorum. Nec homo homini tot instantias præsentaret, sustinens irrumperet, vel iras, aut imprecationes. *Mirabilis est valde Domine patientia sua, quis enim ex potentatibus huius sæculi, tanta tolleraret regulo, quem posset statim debellare, totiesque admoneret, & rogaret, neque iam sæuiret? Arguit patientia Dei* impatientiam nostram, optat spontaneam salutem.

3 Theophil. ad Luc. 14. *Homo quidam fecit cœnam magnam, & mittit seruum hora cœnæ. Venite quia iam parata sunt omnia.* Et ceperunt simul omnes excusari. Primus villam, emi, Alter iuga bouum, &c. Alter vxorem duxi, seruus nuntiauit domo. Dixit seruo, exi cito in plateas, &c. Ait seruus adhuc locus est. Ait Dominus, exi in vias, & sepes, & compelle, &c. Quis non miratur hominis huius conuiuantis anxiam, instantiam trahendi homines adhuc inuitos ad cœnam. Deus hic adumbratus, qui pluries tentat hominum salutem, & conuersionem. *Quotidie cœna illa paratur, & vocantur omnes ad regnum, quod Deus præparauit ante originem mundi.* Nõ absimilis pater familias, qui exiit per singulas horas, vocare operarios ad vineam, vt mereãtur denarium gloriæ. Diabolus similiter saragit, semel, iterum, & pluries inuadere tentatio.

tionibus, perdat, ſtà firmus in bono, ſine te, vincere non poteſt.

Quòd *ſuprema poteſtas maiori quatitur timore, anxietate, amittendi regnum præcipue tyranicum.* 28

1 Ex clauſ. tex. vbi Rex Herodes prius incutitur timore, deinde plebani ciuitatis illius.

2 Hiſt. Dan. 5. *Rex Balthaſar fecit grande conuiuium optimatibus ſuis mille. Præcepit, vt afferrentur vaſſa aurea, & argentea, quæ aſportauerat Pater eius de templo, quod fuit in Hieruſalem.* Quid inſanius, quam oſtentare potentiam ſæcularem tyranidem, Dominam rerum ſacrarum. *In eadem hora apparuerunt digiti, quaſi manus hominis ſcribentis in ſuperficio parietis aulæ Regiæ. Rex aſpiciebat, & facies Regis commutata eſt, cogitationes conturbabant, compages rerum ſoluebantur, & genua ad inuicem collidebantur.* Nec fuit viſsio imaginaria ſolius Regis, cuius ſcriptum manſit exaratũ in pariete, vt legi poſſet, & tamen Principes aulici, cæteri conuiuales non ita timore magno concutiuntur. Manus vindicis diuinæ Iuſtitiæ gerebat cauſam contra Regem, appendens in ſtatera, & inuentus minus habens, quam deberet, cum intromittendo potentiam in ſacra, nec dignus regnõ nõn ſacro. Inter feſtiua funeralia, inter gaudia triſtia, in vita interitum. *Ineadem nocte interfectus eſt Balthaſſar Rex Chaldæus.* Ad hæc S. Stephan. Pap. decernit de conſecrat. diſt. 1. cap. veſtiment. *Sacratis alijs vſibus non debent frui, quam officijs dignis Deo, Eccleſiaſticis. Ne vltio, quæ Balthaſſar Regem percuſsit, ſuper tranſgredientes veniat, & faciat eos ad ima (ex faſtigio elationis dominationis ſacrorum) corruere.* Vt proprium Regnum amittat, qui alienum tyrannide occupauit. Illa manus tenere ſtateram diuinæ iuſtitiæ, tibi exiſtima, in qua illius Regis trutinabantur merita, gladium pendentem, puta ſuper caput Regis conuiuantis. Quid gloriæ, deliciarum imminente ſuſpenſo gladio filo tenui? Cicero ſale Tuſculan. 5. Quod Dionyſius tyrannus Damoeli inuidenti, & ſæpe murmuranti fœlicem fortunam, vitãm beatam Regum, & tyrannorum periculo ſuo oſtendiſſe in fœlicitatem, conſtitui iuſit in lecto delicioſſo, aureo, parari abaces aureos, argenteos, adferri mensam exquiſitiſsimis epulis plenam, famulis pulcherrimis inſeruiri, imponi coronam in capite, &c. Impendi tamen gladium filo tenui minitantem caput. Et quid ſibi gloriæ amplius

plius optare,& beatitudinis rogari. Respondit, vt liceret abire cito,quia iam beatus esse nolebat. Greg. Turon. lib. 5. Histor. Franc. sibi rogatum à S. Saluio, quid videret super tectum Regiæ, & cum respondissent tegulam, quod nuper Rex poni præcepit. In suspirio vocem elatus ait, *ego video euaginatum gladium*, iræ Dei super domum pendentem. Ac signum euentus,quod accidit obitus filiorum Regis. Salutare cuilibet imaginare, sibi idęam similem inter vitę fausta, læta gaudia, epulas choreas, tripudia, ingentes diuitias, imminens capiti gladium, vndex diuinæ iustitiæ. Digitos scribẽtes. *Mane* vitę periodum, *Thechel* iuditium, *phares*, infernus sempiternus. Vt nollit fœlicitatem anxiam breuem vitæ, cum dispendio æternę fœlicitatis, sine anxietate, & amaritudine.

3 Expende Si vacat, si opus, ingentem turrim Babylonicam fulmine irę Dei fuisse funditus euersam. Saulem Regem 1. Reg. 28. Samueleexcitato à Phitonissa timore exanimen, vt cibo eguerit confortari, non ità Phitonissam eum animantẽ, licet vidisset. Diuitem illum dicentem, quod haberet in annos plurimos horrea redundantia, comede, bibe. Audisse stulte hac nocte repetent animã tuã, & time ab altitudine diei, quod cœlestia fulgura ciuitates potentissimas, turres elatissimas inuadunt sępius.

Quòd *accensus inuidia egre fert excellentiam, & dignitatum contemporaneorum.* 28

1 Ex clauſ. text. vbi Herodes Rex intrusus ira, & æmulationem audire nolebat alios Reges, prę sertim ditionis suę.

2 Oleast. Ad Genes. 37. Historia. *Israel diligebat Ioseph. Valde eo quod in senectute genuisset eum, fecitque ei tunicam polymitam. Videntes fratres quod plus cunctis filijs amaretur, oderant eum, nec poterant quidquam pacifice loqui.* Non sat fuit Deo Ioseph facere ampliori dilectione dignum, sed ostendit duplici somnio præponendum fratribus in Regno. Solem, lunam, & stellas vndecim adorare. Manipulum astare in agro super cæteros fratrum. Quod duplicauit odium inter fratres, optandum illi regnum, cnius gloriam, honorem, & opes corregnantes essent lucraturi. Sed inuidia consortis præstantem auersatur, adhuc fratris. *Numquid Rex noster eris, &c. Inuidia omnia interpretatur in malũ, egre ferunt etiam fratres regnum fratris sui.*

3 Chrisost. homil. de Dauid, & Saul ad 1. Reg. 18. *Percussit Saul mille, & Dauid decem millia.* Fœminę elegantes in-

inchoreas musicis distributas Dauidi victori deferenti caput Philistæi præcinebat, & cum gloriæ carmen Saulí decantassent, *indignatus est, quod sibi gloriæ socium addidissent.* Inuidus enim impatiens cõsortis, sed immerito. Nam si indignandum erat potius conueniebat Dauidem indignari, quod cum solus totum gessisset, haberet alterum laudis participem. Inuido sat partem alienæ, sibi arrogasse gloriæ. Qui solus gloriosus optat esse, insanit valde. Si gloria alterius inuidum cruciat, silentio comprimat, præsertim Saul, qui cum non fuerit periculi socijs in pugna, est socius in præmio, ne distorqueatur interius, cum viderit æmulum in prosperis Israel.

Quôd *iniquus populus Principi iniusto est in adiutorium, & disfauorem pauperi, proximo, ope destituto.* 26

1 Ex clauſ. text. vbi non pauci tam aulici, quam vulgares Regis timori, & turbationi plaudunt, & lenocinantur suo odio in Christi aduentũ, & natiuitatem.

2 Teophil. Ad Ioann. 11. *Quid facimus quia hic homo multa signa facit?* Post illam solemnissimam resurrectionem Lazari quatriduanã, *& quale hoc crimen, quia multa signa facit? Vide malignitatem Iudæorum.* Commouentium populum, vt non videantur insidiari Christo propter inuidiam, vt haberetur pro puro homine, rationẽ afferunt quasi multitudo periclitatura esset, & suo tempore consulti, quid faciam de Iesu? Crucifigatur, cum falsos testes quæsijssent.

3 Hist. Dan. 6. Præfectus est Daniel satrapis inuidentes illi præfecturam, insidias parant, vt deponi iubeatur à Rege, & mitti in lacum Leonum. *Principes, & satrapæ surripuerunt Regi, & locuti sunt sic. Dari Rex in æternum viue. Consilium inierunt omnes Principes regni tui, Magistratus, & satrapæ, senatores, & Iudices, &c. Vt omnis qui petierit petitionem à quocumque Deo, nisi à te, mittatur in lacum leonum, &c.* Dato decreto calumniatur Daniel, quod cõtempsisset, & mittitur in lacũ leonum, cum multi tumultuati essent contra illum. Quo circa. Pius. 2. lib. De misseria aulicorum, vbi quanta in aulis sit inuidia vanitas, pericula corporis, & animæ. *Si salutem* animæ quæritimus, fugienda sunt atria Regum, &c. In quibus inuidia, & ambitio dominatur. Concluſ sit Deus ora leonum. Rex moratus, cum intellexisset (à lapide hic) Danielis hostes imposſuesse, & dolosse edictum extorsisse, vt sibi fidissimum Danielem, è medio tollerent, impossuit illis pœnam æquissimã talionis, & missi in lacum, dilace-

dilacerati sunt antequam ad pa utimentum peruenirent.

Quòd *adulatio cogit ad lenocinium Principis cum iactura, & dispendio priuato,* 28

2 Ex clauſ. tex. Vbi Iudæi aulici occupati honoribus ab Herode timentes, ne Chriſtus deponeret, illi aſſentantur, ne Chriſtus admittatur Rex.

2 Rupert. ad Matth. 26. *qui intingit mecum manum in paropſide hic me tradet. Cæperunt singuli dicere, nunquid ego sum Domine?* Quod verbum eſt annuentis, & venerantis, Iuda perfidus nunquid ego ſum Rabbi? Quod perfide lenocinantis adulatione, & blanditijs in ore, & inſidijs in corde. *Dicere Magiſter ſiue Rabbi; non Domine, cordis eſt longinqui, id eſt remoti à familiaritate dilectionis.* Inſidioſa quidem verba adulatoris. Vt Iael in occurſum Siſaræ Principis militiæ Regis Iabini fugientis, deuaſtati è prælio ei verbis fraudulentis hoſpitium offerentis. *Intra ad me Domine mi, intra ne timeas.* Dominum appellans, vt amantis affectum oſtenderet, ſed qui dedit aures adulationi, dedit, & caput clauo, quo dormiens adulationis blanditias cum morte commutauit. Iudicum 4. v. 26.

3 Philo Carpath. ad Cant. 5. *Inuenerunt me vigiles, qui custodiunt ciuitatem, percuſerunt me, & vulnerauerunt me.* His blanditijs, & adulationibus inſequitur fœmina elegans, & à nobilibus, prætoribus ciuitatem cuſtodientibus, id euertere, non conſulere eſt patriæ, cõciuibus. Nil minus. *Ab his enim ſatius eſt ad tempus occidi, quam ab adulantibus ad gehennam exoſculari.*

4 Chryſoſt. homil. 44. ad Matth. 12. *Magiſter volumus à te ſignum videre, &c.* Reſpondit acerbe, *generatio mala, & adultera ſignum quærit.* Adulationibus iraſcitur, & non percuſoribus. *Quid? Cum aſſere interrogant, leniter reſpondet, dum verò* aſſentatur, vtitur acrimonia, omni ſe perturbatione ſuperiorem, oſtendens ad tui exemplum. Adulter blandus inimicus. Corripiat iuſtus in miſericordia, & increpet, oleum peccatoris, non impinguat caput, molitur enim ſemper diſpendium in inſidias.

Quòd *ſolet reddi ſuſpectum iudicium ex vnitate ſanguinis, patriæ, amititiæ, & ita cauendum.* 30

1 Ex clauſ. tex. Vbi à principibus, & Scribis Iudæis ſumitur iudiciũ de aduentu Chriſti, ſed reddi poſſet ſuſpectum ex vnitate nationis Iudaicæ, & patriæ.

2 Oleaſter ad Geneſ. 38. Iudas cum ageret magiſtratum iudicauit in cauſa Thamar af-

finis seuerè iuxta legem. At illa intimata sententia. *Producite, vt comburatur.* Misit ad socerum dicens, *de viro* cuius hæc sunt, concepi. Agnosce, cuius annull', & armilla, & bacculus, qui agnitis muneribus ait. *Iustior me est.* Si causam propriam, vel nurum affinem in tribunal adduci agnouisset, non ita sed, aliter pronuntiasset. Cum agnoscit sui, & illius sententiam reuocat. *Aduerte qualiter qui alios seuiunt peccatores, cum se reos intelligunt mitius iudicent. De Dauid legimus, qui tam seuere voluit punire* diuitem occisorem ouis pauperis, ignorans aduersum se tulisse sententiam mortis.

3 Hist. Susanæ Dan. 13. *Vbi Iudices impudici, & falsarij, qui rei erant*, criminis adulterij in causa Susanæ rei, testis, & iudicis causam agunt, & punitionem mortis, quam in se pronuntiare deberet sententia, infligunt in innocentem, & castam Susanam. *Condemnauerunt eam ad mortem*, & cum duceretur ad supplicium, & sistere lictores Daniel imperaret, & inqui Iudices Danielem arbitrum constituerent. *Veni, sede in medio nostrum, & iudica nos.* Separatos sigillatim conuicit falsitatis in causa propria ex ore ipsorum, & talionem imponit omnis populus. Conuincerat enim eos Daniel ex ore suo falsum dixisse testimonium. Quo circa Augustinus serm. 118. de tempore. *Castitas Susanæ in iudicio falsos accusatores obtinuit. Et victrix reos facit testimonij, quos reos facit adulterij.* In causa propria personæ amici, aut coniuncti, nō solum suspicionis notam, sed criminis noxam in se pronuntiare debebant.

Quòd *simulatio semper intendit aliud, quam demonstrat exterius.* 30

1 Ex clauis. tex. Vbi Herodes, simulabat se inquirere ad adorandum, cum interius inquireret ad occidendum.

2 Lyra ad 2. Reg. 11. *Vade in domum tuam, & laua pedes tuos. Et secutus est eum cibus Regis.* Et quod non attendisset nunciatum est Dauid, & ait ad Vriam. *Nunquid non de via venisti, quare non descendisti ad domum tuam?* Quis? tam solitum reddidit Regem indulgentiarum, & delitiarum militis, imō vt vocaret, & comederet coram se, & biberet? Causa fuit non deliciandi animus, sed celandi adulterium, imputandi fœtum, vt sui fœtus suppositionem adornet. Faciens propinari latenter potum in ebriatiuum, & sic cum vxore dormiret *tamen non fuit deceptus.* Vnde inde appellatur ad aliud scelestius genus, simulationis. Fingitur recommendatitia epistola ad Ioab militiæ Principem, in latebris interius virus, mortis sententia innocentis

centis militis fidissimi, & strenuissimi. Simulachrum vitale aureum, interiora plena veneno mortifero. Vt inde teste Clemen. Alexand. 2. strom. Et ex illo Sanchez hic ex litteris Vriæ, fixisse Gentiles fabulam Bellerophontis, quod *acceptis litteris commendatitijs à Rege Proto ad Iobatam sit præcipitatus in mortem.*

3 Hist. 1. Regum 21. Dauid, vt declinaret iras Saul coactus fugere ad Regem Achis Geth, cui occiderat Philistæum Gigantem. Vt ibi lateret melius incognitus, accidit, vt agnosceretur. *Nunquid non iste est Dauid? &c.* Timuit, & vt euaderet mortem simulatione, *mutauit vultum coram Achimelech.* Et finxit se infatuatum, delirum, insanum, vt diffluerent saliuæ per barbam, & timpanizaret ad ostia ciuitatis, & titubando inflecteret tibias, decideret in terrã, vt fit in phreneticis, stupidis, stultis. Sobrius interius erat, ebrium ostentabat exterius. Insanam mentem præferebat exterius, qui interius sanam habebat, virtutem robustum gerebat interius, qui tibrarum imbecillitatem monstrabat exterius. Mille fallentias inordinatas præferebat, qui arte altiori interius abundabat. Vt accusationem obiectam infirmaret, vt vitæ periculum euaderet. Augusti ad titul. Psal. 33. Quem Dauid cecinit in gratiarum actionem Deo, eum euasit periculum. *Benedicam* Dominum in omni tempore, cui in fronte titulus. Dauidi, cum immutauit vultum suum coram Achimelech, & dimisit, & abijt. Stultum agere, quid indiscretius, & stultius, sed quid in occasione ad tempus cautius? *Saliuæ igitur super barbam decurrentes, quid sunt? virtutem eius tegentia infirma verba.* Cato *stultitiam simulare loco prudentiæ summa est.* Fictio peccaminosa? Non. Abulens. *instinctu* Dei. fecit silentium, & simulatio veritatis occultatio, quis agendo personam alteram, & ex causa iusta, mentiri opera, & facto non est, sed virtutis occultatio. Sic Samuel obtexit intentum vngendi Dauid in Regem, personam immolaturi agens. Gedeon, occultauit paucitatem militum, per fractione subita lagenarum repræsentantiam plures. Iosue, vt exire prouocaret de ciuitate Hai ciues, & in plano occideret, arripuit effigiem timiditate fugientis, quibus stratagẽma bellicum licitum probari solet, imò in moribus, ieiunium, & mortificationem tegere lotione faciei, & hilaritate consultum.

Quòd *in Republica vnius capitis gubernium præferendum in Monachia*

cæteris, si vxor in re familiari. 30

1 Ex claus. cæv. Vbi Principes Sacerdotum, aut capita familiarum Sacerdotalium habebant supra se vnum omnium caput Summum Pontificem, & Sacerdotem.

2 Oleaster ad Deuter. 6. *Audi Israel Dominus Deus noster, Deus vnus est.* Attentos illos reddit, vt reddat cautos periculi imminentis in ingressu terræ, in qua colebantur multi Dij. *Ideo voluit eos de Dei sui vnitate admonere, vt ipsa multitudo deterreret à cultura eorum. Difficile est multis Dominis seruire, quanto magis Dijs.* Deus ostendit vnitatem, vt vnius Dei ostendat faciliorem, & aptiorem obedientiam, & cultum, quam multorum, & varia obsequia. Id insitum à natura vnam gruem sequuntur plures, Examen apum vnam Regiam ductricem. In vna familia vnus Dominus, ne sit multorum discordia, & confusio, vna vxor, ne duplici tumultuaret domus, quæ non patitur Saram, & ancillam. Eijci, oportuit ad vitandas lites, vnius filij vnam legitimam genitricem. Non duas illas litigantes decidet Salomon.

3 Theoph. ad Ioan. 19. *Ecce* Rex vester, &c. Tolle, tolle, crucifige, dicit eis Pilatus Regē vestrum crucifigam? Respondérunt non habemus Regem, nisi Cęsarem, sed admittere nolunt simul duos Reges, vt vnus supersit, alter crucifigatur. *Insuper vide, quomodo alium Regem præter Cæsarem non agnoscunt, se imperio Romanorum subiicientes, & Dei regnum reppellentes.* Videri possunt allata dub. 13. istus lecturæ.

Quòd *Doctores, & Magistri teneantur incumbere Sapientiæ, fidei, & scripturæ, & morum ad dirigendum plebem in doctrina sancta,* 30

1 Ex claus. rex. Vbi Herodes conquirit legisperitos, & Doctores, vt ab eis vindicet doctrinam Scripturæ de Natiuitate Christi.

2 Oleaster ad Exod. 3. *Veni mittam te ad Pharaonem:* Dominus ad Moysem. Ille autem se iudicans ineptum, & balbum ad palatium aulæ Regiæ, ait ad Deum. *Quis sum ego, vt vadam ad Pharaonem?* Promittitur diuina assistentia, *ego ero tecum.* Replicat, *ego vadā. Sed si dixerint quod est nomen eius?* dixit, *ego sum qui sum.* Replicat, datur ei virga, cum potestate faciendi miracula cap. 4. Et cum iam tot esse videretur suasus ad legationem, *Obsecro Domine, non sum eloquens ab heri, & nudius tertius, impeditioris, & tardioris linguæ ego sum,* Dominus ad eum. *Perge. Ego ero in ore tuo, & docebo te, quid loquaris.* Replicat, *obsecro Domine mitte, quem missurus es.* Quis sustineret tot ac tantas replicas,

qui

qui non respueret, & alium eligeret? *Iratus in Moysem Dominus ait, Aaron frater tuus scio, quod eloquens ipse, &c. vt erit Propheta tuus.* Quis non miratur tot, ac tories Moysem recusasse legationem ex defectu scientiæ, & elocutionis, quam plures stulti, & balbutientes acceptarent. Nõ acquieuit Sanctus vir Deo, quousque ei socium in legatione daret, quia reputat ministerio se imparem, non solùm non admittit, sed postulat instanter socium scientificum, & eloquentem, eius Deo fideiussore.

3 Theod. q. 20. ad 2. Reg. 6. Historia. *Arca* imposita plaustro boum, *illis recalcitrantibus*, declinabat in ruinam, statim accurrit Oza ne decideret in terram, *& extendit manum, & percussit eum Dominus super temeritatem, & mortuus est iuxta arcam.* Stupendum plane! Præmianda potius, quam punienda videretur illa arcæ sustentatio. Quæ temeritas? quæ ita subit à morte punitur. *Cũ Deus iussisset quod Sacerdotes ferrent arcam suis humeris, eam tulit in plaustro.* Impo nenda erat prælatio in humeris rationalibus, imponitur in irrationalibus bobus temeritas grauiter punienda. *Intelligens* gubernacula po idebit. Prober. 1. *Quia* scientiam reguli sti, repellam te, ne Sacerdotio mihi fungaris, Oseæ. 4. Quis nõ miretur ignorantes stultos ad huiusmodi munera temere anhelare, nõ timentes sibi interitum subitaneum, & improuisum, vt Ozæ, si cœcus cœcum ducat, &c.

Quòd *cauenda sint pericula ruinæ spiritualis, & temporalis de præsenti, & in futurum.* 30

1 Ex clauſ. tex. Vbi Herodes Rex sub simulatione adorandi occultabat animum non tantum capiendi infantem Regem, sed occidendi, & perdendi. Vt sibi, suoque regno consuleret. Non solum de præsenti capiendo, sed in futurum occidendo, ne esset illi locus regnandi.

2 Ex positis supra, in indice lecturæ de Sams. sub num. 26. De inuasionibus dæmonum repellendis de præsenti, vt non iterum redeant in futurum. Ex iugulatione Samsonis. Holophernis, & erradicandi arborem Nabucodonosor. Ob breuitatẽ intentam indigito.

Quòd *veritas debet spectari secundũ se præcisa authoritate, aut dignitate proferentis.* 35

1 Ex clauſ. tex. Vbi veritas natiuitatis Christi exquiritur, sed allegantur Prophetę sine expresione nominum, vt ipsa secundum se expectabilis ostendatur.

2 Hist. 4. Reg. 9. Elisęus misit vnum à filijs Prophetarum, & dixit, *accinge* lumbos, & tolle lenticulam olei, & inuenies in Ramoth Galaat Iuhu inter Principes militiæ,

& vnges in Regem Israel. Accesſit, & vocauit Iehu ad cubiculũ. *Verbum mihi ad te ò Princeps. Iehu ad quem ex nobis? Ille, ad te ò Princeps, ingreſſus eſt Iehu cum eo cubiculum, & ait fundens oleum ſuper caput. Hæc dicit Dominus, vnxi te Regem ſuper Iſrael. Apperuit oſtium, & fugit. Principes, quid venit ad te inſanus iſte? Noſtis hominem. Falſum eſt, ſed narra,* locutus eſt mihi. Hæc dicit Dominus, *vnxit te Regem ſuper Iſrael,* Principes feſtinarunt, *& tollens vnuſquiſque palium ſuum,* poſuerunt ſub pedibus in ſimilitudinem tribunalis, *& cecinerunt tuba, & dixerunt, Regnabit Iehu.* Expendit Lyra quod Propheta, vt inſanus venit, & exiuit fugiens, vt nuntius falſi haberetur, tamen verbum ab inſano delatum, eam vim habuit, vt verum, quod ei acquieuerint, & iuraueriut, & admiſerint in Regem, & cito palijs ſtratum regale erexerint, & Regem acclamauerint. *Vt quærerent gratiam Regis, noui.* Reputabantur Prophetæ inſani, *quod contemnebant bona huius mundi,* quod ab illis erat alienum. *Noſtis hominem ex habitu. Erant enim diſcipuli Prophetarum, religioſi diſtinguebantur ab alijs in habitu, per quem cognoſcebantur eſſe de diſcipulis Prophetarum,* habitu vili aſpero, & horrido. Illi autem verbo Dei ſine authoritate defentis, imò cum inſania, & vilipendio perſonæ ſubitam præſtiterunt obedientiam, cum ex illo maiorem conciliare deberet fidem. *Noſtis hominem quod ſit de Prophetis, & per conſequens, quod ſit locutus verum, & bonum.*

3 Theoph. ad Ioann. 11. *Vnus* autem ex eis Cayphas, cum eſſet Pontifex anni illius, dixit, vos neſcitis quidquam, expedit, vt vnus homo moriatur pro populo, ne tota gens pareat. Quamuis ita corrupta erat dignitas, *vt eſſet venalitia, & dumtaxat per vnum annum, non per omne vitæ tempus, Sacerdotio fungeretur. Tamen aderat Spiritus Sanctus operans in his, qui vniti erant. Gratia ſpiritus ore illius vſa eſt ad prædicendum futura.* Tametſi pollutum cor eius non attigerit, præciſa illius virtute, & ſanctitate veritas prolata eſt, fecit enim, vt à mala mente procederent verba habentia mirabilem prophetiam. Vnde ſuperior Princeps Prælatus, etſi indignus, & immorigerus æſtimandus tamen, ſuſcipiendus.

Quòd *veritas debet referri fideliter in enarrationibus.* 35

1 Ex clauſ. tex. Vbi Pontifices, & Scribæ non retulerunt Herodi integram prophetiam

tiam Micheæ, in quo declinauerunt ab integra clausula illius.

2 Histor. 2. Regum 1. Homo Amalecites apparuit Dauid, *veniens de castris Saul veste conciſſa, & puluere conſperſus caput, & cecidit ſuper faciem ſuam, & adorauit, & dixit*, quod Saul mortuus est in prælio. *Nam casu veni in Gelboe, & Saul incumbebat ſuper haſtam ſuam*, & dixit, *ſta ſuper me, & interfice me*, quoniam tenent me anguſtiæ, *& ſtans ſuper eum, occidi illum, & tuli diadema, quod erat in capite eius, &c.* Et attuli ad te Dominum meum huc. Dauid vocans vnum de pueris ſuis, irrue in eum, qui percuſit, *& mortuus eſt.* A lapide expendit ex Theod. Abulenſ. Lyran. *Mentitur ergo hic iuuenis dicens, ſe Saulem occidiſſe, vt gratiam Dauidis aucupetur, Dauidi adulatur*, Scripturæ potius credendum, quæ diſerte aſſerit, quod Saul ſe ipſum occiderit 1. Regum 31. & ita merito Dauid, *Sanguis tuus ſuper caput tuum.* Tibi imputa, quia faſus es te occidiſſe Saulem Regem, Hæc lex talionis a Deo ſancita. *Vere tamen detulit diadema Saulis*, qui caſu venit in Gelboe (ait Abulenſis) & detraxit. Hiſtoriam refertur mentitus eſt in occiſione, licet verum dixerit in detractione diadematis allati, & luit ſanguine homicidium, quod mendaciter confeſſus eſt.

2 Daniel 13. Hiſtoria Senum, qui capite damnauerunt Suſanam, quod non conſenſit turpitudini eorum, & cum duceretur ad ſuplicium. Daniel ab eiſdem conſtitutus Iudex, *Veni, iudica nos, &c.* Siſtunt rectores cum plebe, ſeparat eos Daniel ſigilatim, & ſeorſim rogat à priori, ſub quo arbore viderit Suſanam impudice agentem cum iuuene. Reſpondit, *ſub Schino.* Dixit Daniel, recte, mentitus es in caput tuum. Ab altero idem reſpondit in conſpectu multitudis *ſub primo*, & viſa diſcordia in enarratione hiſtoriæ, *Exclamauit multitudo, & interfecerunt eos*, ſecundum legem Moyſis, & ſaluatus eſt ſanguinis innoxius. Veritas ſui premium, & medatium ſui ſuplicium expoſcit.

Quòd *idem eſt ſenſus in verbis à Prophetis, & Euangeliſtis prolatis, licet ſit diuerſitas verborum, ſicut idem author omnium Spiritus Sanctus.* 35

1 Ex clauſ. tex. Vbi inter verba Ieremiæ, & Matthæi eſt ſola diſſonantia verborum, idem tamen ſenſus in ſubſtantia.

2 Apoſtolus ad Hebræos 11. Cui familiare, quod *omnia in figura contingebant illis.* Nobis datum figuratum, illis

pictura in confusso, nobis in expressiori penicillo. *Iuxta fidem defuncti sunt omnes, non acceptis repromissionibus, sed eas à longe aspicientes, & salutantes.* Laboris mercedem, vel terram promissam, vel Messiam promissum, mysteria eius, Legem, Sacramenta, &c. In figuris tamen præfigurantibus illa ipsis res gestas, præsignantes gerendas, prænidentes, vt in imagine obiectiua Cæsarem. In transitu maris baptismum, in petra Christum, in Mana Eucharistiam, &c. Illa signa, ista signata. A longe aspicientes, & salutantes. Salutare tuum expectabo Domine, Theophilat. *Indicat deinceps ibilibus bonis mysteria, adeòque arcana, tum vidisse, tum salutasse. Sumpta metaphora à nauigantibus, & procul cernentibus desideratas vrbes, quas præ ientes familiariter salutant.* Iuxta dicta in lectione de arte, & methodo disput. 9. dub. 19 Vbi in veteri testamento, inclusum & inuolutum nouum, in Leg. Psal. & Prophetis multa de Christo. Vbi quod Prophetæ à longe aspiciebant, & salutabant, vti Prophetia (procul visiua) ac instrumento visorio, perspicilio, aut phistula dioptica, ex parte concauo, & ex parte conuexo, vt idem distans fiat præsens. Vt Prophetæ dicantur procul videntes, idem quod nos prope. Vt idem sit significatum, Prophetarum, & Euangelistarum. Vt si nunc adessent Prophetæ possent vsurpari, quod beati, *sicut audiuimus per fidem, vidimus. Per intuitionem visionis beatæ.*

3 Caiet. ad 1. Chorint. 10. *Nolo vos ignorare fratres, quod Patres nostri omnes sub nube fuerunt, mare transierunt, eandem escam spiritualem manducauerunt, eundē potum spiritualem biberunt. Bibebant autem de spirituali petra consequente eos. Petra autem erat Christus.* Quod olim veteres biberent de illa petra, quę percussa virga Moysis latices, & fluenta dedit aquarum, & quod non in vno situ tantum, sed quod miraculosè eorum classes pedester sequeretur per deserta facile. Quod autem de Christi fluentis distantis signati, & potati sint, difficile. *Consistit ergo ratio in hoc quod bibebant de Messia de spirituali petra, potius spiritualis,* in materiali prefigurata, iuxta quod id quod dictum Exod. 12. de Agno Paschali. *Os non comminuetis ex eo.* Ioann. 19. *Ad Iesum autem, cum viderunt eum mortuum, non fregerunt eius crura, &c.* Vt mira notetur inter vtrũque concordia.

Quòd *in Scriptura non sunt contradictiones in re, sed in apparietia.* 35

1 Ex claus. tex. Vbi mira cõcordia cohærent verba Prophetæ, & Euangelistæ, licet primo aspectu discordare videantur.

2 Ex

2 Ex dubij litteralis 14. conclusionibus, vbi expenditur discordia,& redigitur ad concordiam. Michæas Propheta, & Euangelista Matth. Adiunge exlect. De Arte, & methodo dicta disp 4. Dub. 16. vbi quædam antilogiæ in concordiam redactæ, probant mirifice intentum, nec fas breuitati actum agere.

Quòd *prædicatores tenentur integram veritatem apperire Regibus, sine vlla assentatione.* 35

1 Ex clauſ. text. Vbi Pontifices, & ſcribæ ſciſcitati, nõ retulerunt Herodi integrã prophetiã Micheæ. Si retuliſſent, *egre ſus eius à diebus æternitatis*, forte non auderet inquirere ad occidendum.

2 Hiſtoria 2. Paralip. 26. *Cum Rex Ozias* ſe intromitteret in materijs Religionis Eccleſiaſticis, vt incenſum thuribulo vellet, vt Sacerdotes adolere Azarias, & alij libere increparunt, & clare. *Non eſt tui officij Ozia, vt adoleas incenſum Domino, ſed Sacerdotum.* Maieſtas ſuaui adulatione non ſeuera, & libera increpatione præmonenda, ita, ante illius obſiſtentiam, ſed cum ingerit ſe in rebus ſacris, & materijs Religionis impenſe, prohibenda acerbe, & libere. Moueat lachrymas, non audatiam, querat planctum, non plauſum. Libere increpet, ſuperior, non blandiatur, vt inferior canis Domino. Pulchre Chriſoſt. homil. 4. de verbis Iſaiæ. *Vide libertatem, vide mentem ſeruire neſciam.* Elias non ego turbaui Iſrael, ſed tu, &c. qui ſecuti eſtis Baalim. Baptiſta, Non licet tibi habere vxorem fratris tui. In cãuſa Religionis debent libertatam, & zelũ Eliæ, & Baptiſtæ induere Regij contionatores ſaltim.

3 Expoſitis in indice huius lecturæ ſub num. 4. quæ inflecti facile ad hoc, ne amplietur volumen.

Quòd *Doctores debent aperire veritatem auditoribus ſtillo claro, vt ab omnibus percipiantur.* 35

1 Ex clauſ. text. Vbi Herodi Regi non ſatis integre, & aperte Sacerdotes, & ſcribæ retulerunt Prophetiæ verba, cum deberent integre, & clare, vt facile perciperet, nec conciperet facinus occidendi Chriſtum.

2 Oleaſter ad Exodi 34. *Cumque deſcenderet Moyſes de mõte Sinai, tenebat duas tabulas teſtimonij, & ignorabat quod cornuta eſſet facies eius ex conſortio ſermonis Domini.* Timuerunt, & non audebant accedere. *Videntes faciem cornutam*, vocatique ab eo venerunt, *quibus præcepit cuncta, que audierat à Domino. Impletiſque ſermonibus poſuit velamen ſuper faciem ſuam.* Non ſatius in facie prominentia attulit cornua, vt apictoribus perperam pingatu., *ſed in facie admodum cornuum*

egre-

egrediebantur ex locutione cũ Deo fuit hæc lux participatio lucis, in qua Dominus apparebat. Lucem habitat inacceſsibilẽ. Sed cur cum tabulas, & præcepta legis adducit in manibus facies tot mittit lucis radios, & ſplendores? Vt legis præcepta illumina rentur expulſis tenebris, vt ab omnibus facile legerẽtur, & perciperẽtur, quibus peractis cohibuit ſplendoresvelo admitiorẽ, & familiarem conſuetudinem cum eis. *Debent ſancti viri prædicatores ſe ſe audientium capacitatibus accommodare, & eis tradere diuina, prout capere poſſunt.*

3 Hilar. Ad Matth. 5. *Vos eſtis lux mundi, ſic luceat lux veſtra, vt videant, &c.* ſuperfluum luci præcipere, vt luceat, vt abigat caliginoſſas tenebras. Ita ſane luminaribus Soli, lunæ irrationalibus, verum oportet ratione præditis officia lucis inſinuare. *Natura lucis eſt, vt quocumque circumferatur emittat lucem, interimat tenebras, luce dominante*, vt prædominium lucis præemineat ſupra tenebras obſcurãtes, ne comprehendatur à tenebris. Lux cœleſtis duxit Magos antecedens, *vſque dum ſtaret ſupra, vbi erat puer*, quaſi digito ſupra caput illuminans, & deſignans. Et in Thabor, *reſplẽduit facies eius, ſicut Sol, &c.* Vt claritate reſplenderet doctrina, in qua Elias, Moyſes, & diſcipuli verſabantur.

Quòd *ſecreta magni momenti, & periculoſa, ſiue ſtatus, ſiue militiæ, non ſunt communicanda multis, ad fœlicem euentum.* 37

1 Ex clauſ. tex vbi Herodes ſecreto vocauit Magos ad informandum ſe de natiuitate infantis Regis, nec aperuit mentem de occidendo illo ſub prætextu adorandi.

2 Expoſitis in indice lect. de Samſ. A num. 15. in 19. incluſiue, ne adiunctis brebitas excedatur.

Quòd *cito præripienda boni occaſio, ne diſpareat.* 37

1 Ex clauſ. tex. vbi Herodes *diligenter didicit à Magis tempus ſtellæ*, ne ſi moroſuſe exhiberet, illi proficiſcerentur illo inſalutato, & in ſua ignorãtia relicto.

2 Phil. Carpath. Ad cant. 5. *Aperi mihi, &c.* quo ſponſus pulſabat ad fores ſponſæ, illa autẽ ignaua reſpõdente, *laui pedes, &c. exui tunica. &c.* quomodo? diſceſsit, & cum illũ optauit in thalamo, nec inuenerat. Surrexit ſolicita, *quæſiuit per vicos, & ciuitatis ſepta. Et percuſſerũt cuſtodes, & tulerunt paliũ.* Sera enim diligentia infructuoſa, & erum noſſa, ſed tãdẽ poſt labores inuenit, quẽ *anima diligebat*, aeſi laboris perpeſsio olim recuſſati iterũ reſtituta eſſet. Satius *ad tẽpus occidi.* E pueri manibus euolauit paſſerculus, nec lachrymis effugientẽ reduxit. Euanuit Chriſtus ex menſa diſcipulorũ in caſtello

tello Emaus, relinquens illos in sui anxietate, & desiderio, quem habebant præsentē, optabāt absentem. Nonne cor nostrū, &c. signum prognosticum recuperandi absentem anxietas post amissum. Vt cognouit Magdalena quod Iesus acnbuisset, auiditate festina, non amisit occasionem connersionis, & absolutionis. Lucæ. 7.

3 Euseb. Emiss. Ad Matth. 2 *Qui consurgens accepit puerum, & matrem eius nocte, & secessit.* Angelo præmonetur, cautiorē esse fugā, vigilà somno, nec difert, ipsa nocte eadem citissime fugā exequitur, rumpit moras, noctis difficultates, ne fugiat fugiendi congrua occasio. Fugit Christus, & in nocte fugit. Fuga perse difficilis, noctis obscuritate difficilior, &c. Ne disparendi occasso, & effugiendi periculum imminens dispareat. Sic Iudic. 7. *Gedeon de nocte consurgens, & omnis populus cumeo* fugit hostes. Abraham accepto oraculo immolandi filium, nocte *surrexit, non expectauit diem* (inquit Hugo) obedientia festina, statim post mandatum satagit, ad implere aufugiens, ne sera impedimentis, vel dimoueretur, vel retardaretur.

Quod *improbi difficile aggregantur congregationi iustorum ad Dei obsequia.* 37

1 Ex clauf. text. Vbi Herodes cum posit comitari Magos benigne inquirentes Christum, non se adiunxit illis, potius conspirauit aulicos ad sui consilium.

2 Lyra ad 3. Reg. 18. *Congrega ad me vniuersum Israel, in monte Carmeli, & Prophetas Baal* 450. *Prophetasque lucorum, &c.* Accedens Elias ad omnem populum Israel ait, *Vsque quo claudicatis in duas partes. Si Dominus est Deus, sequimini eum, si autem Baal, sequimini illum, & non respōdit ei populus verbum.* Elias contendebat reducere, & congregare ad Dei veram fidem infideles, & conuincere euidenti miraculo, & cum Eliæ propositto esset optima, quippe quæ respui non deberet, sed admitti, eo difficile eos adduci. *Quod* non responderint verbum, nec bonum, nec malum. Quæ causa? *Quia aliqui colebant Dominum, & cum hoc Baal similiter.* Super signum, visibile probetur vobis quod Deus Israel ipse sit Deus, & non Baal, sequimini eū ipsum colendo, & non respondit ei populus verbū. *Quia ingrauabat huius probationis modū.* Quam difficile sit adducere ad bonam frugem improbos, & aggregare ad gregem collentium Deum, vt nec acquiescant miraculis, & probationibus euidentibus.

3 Theophil. Ad Ioann. 9. *Iesus* luto inunctis occulis cæci nati visum restituit, vt de illo dubitauerint, & du-

xe-

xerint ad Phariſęos, & interrogantibus quomodo viſum recepiſſet? Dixit, impoſſuit lutum ſuper occulos, laui, & video. Et aliis quidem aſſentientibus, aliis diſſentientibus. Inquirunt ab ipſo cæco quę illius ſententia? & dixit, *quia Propheta eſt.* Fit alia inſtantia, vocantur parentes, rogantur an ille eſſet filius eorum? Ita. Vrgentur, *quomodo videat*, & quis aperuit oculos, aiunt, *neſcimus, ipſe ætatē habet, interogate.* Et præſentem iterum, & iterum inſtant interrogationibus, vt ipſe cęcus dixerit, *Dixi vobis iam, cur iterum vultis audire?* Num etiā vos vultis diſcipuli eius fieri, eius Collegio aggregari? Conuiciati ſunt, & dixerunt. *Tu diſcipulis eius eſto, nos diſcipuli Moyſis ſumus.* Nos ſcimus quod Moyſi locutus eſt Deus, hic autem neſcimus vnde ſit. O improbitas, & pertinatia, quę tam euidenti miraculo non adduceris, vt eius collegio aggregentur. *Dicunt nos ſcimus quod Moyſi locutus eſt Deus, cum non vidiſſent, ſed audiniſſent eum, quem viderant miracula facientem, & quem audierant ſuperna loquentem impoſtorem vocant.* Vides inſipientiam à malitia profectam? *Vos ò Iudæi reieciſtis, ego dico magis eſt mirabilis. Quia homo non eſt ex nobilibus apud vos, qui talia poteſt.* Et ita vndique manifeſtū, quod ſit maioris potentię, vt non indigeat humano auxilio. Ex aduerſo autem boni facile adducuntur ad congregationem pie colentium, & obtequentium Deum. Vt *oues, quæ aſcenderunt* de labacro, acerbatim in gregem concilientur.

Quôd *miſſera mortalium conditio, quæ præfert iniquam voluntatē Regis terræ, & contemnit præcepta Regis cœleſtis.* 37

1 Ex clauſ. tex. vbi aulici adhuc Iudęi, quorū optatis, magis arridere deberet Rex ſuæ nationis, morem gerunt Herodi. Reges autem Magi aſsiſtunt imperio, & ductui Regis Cœleſtis, ipſum deluſum relinquentes.

2 Lyra ad 2. Reg. 11. Dauid ſcripſit Epiſtolam ad Ioab. Miſitque per manum Vrię ſcribens in Epiſtola. *Ponite Vriam ex aduerſo belli, vbi fortiſsimum eſt prælium, & derelinquite eum, vt percuſſus intereat.* Igitur cum Ioab obſideret vrbem, poſſuit Vriam in loco, vbi ſciebat viros eſſe fortiſsimos. Egreſſique viri de ciuitate bellabant aduerſum Ioab, *& ceciderunt de populo Dauid, & mortuus eſt etiam vrias æthęus.* O ſcelus proditorum, quo maius vix fingi potuit, vt monuerit ſecreto ſocios commilitones, vt in pugna deſſererent, & cingi hoſtibus, & permitterent occidi, ſed ò Principis Ioab impia obedientia Regis terreni contra prohibentem legem homicidij Regis cœleſtis

tis,& cum euentũ belli rescripsit instruit nuntium. *Si videris* indignari, dicito etiam Vriæ seruus tuus occubuit, acsi interretionem centum excusaret, additio vnius Vriæ vlterius. Vt Dauid cognosceret quod Ioab non fecerat illud insultum ex ignorantia artis bellicæ, sed vt impleret mandatũ Regis. Missio speculatore abscidit caput Ioãnis in carcere Herodes, ne incurreret periurium, admisit homicidium.

3 Oleast. ad Exod. 1. vbi Rex Ægypti præcepit obstetricibus Hebræorum. *Quando obstetricabitis Hebræas si masculus fuerit interficite eum, si fœmina reseruate. Timuerunt autem* obstetrices *Deum, & non fecerunt iuxta præceptum Regis Ægypti.* Non ita religiosse, & pie ausi sunt Ioab & cæteri aulici, & magistratus, qui vt obtemperent Regi, violant præcepta Dei, quasi occidi innocentes per alios instructos secreto lictores, seruaret manus Regis innoxias. *Volunt impij mala facere alicuius manibus, sed quid possit ostendit Dauid factum, qui gladio filiorum Amon, cum Vriã occidissent, innocentem se arbitrabatur, sed non fuit.* Quid his fœminis fortius, quæ non timentes animositatem Regis, masculos seruauerunt contra eius imperium? A quibus discant aulici timendum magis, Deum, quam Regem.

Quòd *ea est audacia vehementis passionis, vt audeat in Deum cupiditate boni temporalis.* 37

1 Ex claus. text. vbi Herodes, vt obtineret regni possessionem pacificam, audet Deum iugulari.

2 Eusseb. Emis. F. 6. Post 2. Ad Matth. 21. de Patre familias, *qui locauit vineam agricolis.* Et aprehensos seruos exigentes annuos fructus lapidauerunt, occiderunt, ne redderent. Missit ad eos filium: agricolæ dixerunt intra se, *hic est hæres, venite occidamus eum, & habebimus hæreditatem eius.* O inepti nullavia melius lucrandi, quam reddendi fructus, dum illos, & hæreditatem integram vobis arrogandi fine, heredem occidistis, & hæredem, & hereditatem amisistis. *Manifesta sunt hæc, in quibus Dominus prophetabat passionem suam, iam impleta videmus.* Extra vineam quid? Extra *portam passus est.* Agricolæ id est Principes Sacerdotum timuerunt locum, & gentẽ amittere, & ideo dederunt consilium, vt interficerent.

3 Lyra ad Dan. 13. *Ingemuit Susanna, & ait angustiæ mihi vndique sunt, & quid eligam ignoro.* Si enim hoc egero mors mihi est, si non egero, non effugiam manus vestras, *sed melius est mihi incidere in manus vestras, quam peccare in conspectu Domini.* Angustiæ discursum turbasse videtur.

Si

Si egeris non tibi mors, sed delitiæ & senum plausum, gratulationem conciliabis, periculũ euades, vitam custodies in columem. Si autem non acquieueris delitijs, incides in vitæ iactu ram. *Angustiæ sunt. Angustiosſum est mori, & angustiosſum est fieri dignam morte per peccatum. Melius est mihi vitam corporis amittere, quam vitam animæ. Quia fieri pœna dignum, est simpliciter malum, quia est malum culpæ, puniri non est malum simpliciter, quia est malum pœnæ.* O virilis fœminæ resolutio, quæ nec cupiditate delectationis tẽporalis allecta, nec metu amittendæ vitę superata, nec spe, nec metu impulsa ausa est peccare in Deũ. Expendit egregie in exemplum aliorum. Nam iuxta Matth. 16. *quid prodest homini, si vniuersum mundum lucretur, animæ verò suæ detrimentum patiatur, aut quam dabit* homo commutationem pro anima sua, dum timore temporalium amittunt æterna. Quid enim omnia terrena, nisi ventus fumus, & bulla apparens, digna, non generosso estimatore, sed despectore.

Quod *ambitio sui honoris auida non patitur, nec rumorem alienum. in prælatione.* 37

1 Ex clauſ. text. vbi Herodes instruit Magos, *ite interrogate de puero*, acti, nec nomen haberet, nec titulum Regis, sed ambiens suum, nec vocem alterius patiebatur.

2 Hist. Genes. 37. Iacob misit Ioseph ad inuisendos fratres, pascendos greges. Post alia duo somnia præsagium futuri principatus in Ægypto. *Videbam quasi per somnium Solem, lunam, & stellas vndecim adorare me, &c.* Frates autem egre ferentes, *numquid Rex noster eris? &c.* Videntes venientem a longe dixerunt. *Ecce somniator venit, venite occidamus, &c. & tunc apparebit quid illi prosit somnia sua.* Quid ecce somniator? Non insignitus est nomine Ioseph? Ita. Cur non ita nominatur? Inuisum est adhuc nomen inuisi odio habiti. Oleaster hic. *Ecce somniator, ecce qui se Dominum somniat. Ecce qui in somnis Dominus est, qui non re, sed somnio Dominum futurum nostrum arbitratur, qui somniat quod vult.* Et ad morum imposſitionem, *egre ferunt etiam fratres regnum fratris sui,* imo nomen fratris regnaturi. Præuidit àlonge imperium, sed non prope improborum fratrũ delocutionem, & decretum occidendi.

3 Chrisost. Ad Ioan. 5. *Quid facimus quia hic homo multa signa facit?* caret nomine, nonne vulgares appellãt Iesum? Sane. *Ne proprio quidem nomine intitulare dignantur.* Sic discipuli Baptistæ. *Ille qui baptizabat trans Iordanem,* narrant inuidia parum eorum illius gesta magistro, ac si suo mi-

mine proprio essea priuatus, inuidia non finit sæpe, aut odium nomina inuisi præcellentis publicari. Tunc cũ *filij matris meæ pugnauerunt contra me*, acsi fratris impugnantis, & incommoda inferentis esset nomen nullũ. Satis generosè honorificare suo nomine, & titulis, & illos tacere, & silentio comprimere, si imminet diffamatio, vt cum nomine occultetur. Addi possunt dicta, in huius lecturæ indice, num. 28.

Quòd *qui distrahuntur ad terrena, amittunt cœlestia.* 39

1 Ex claus. text. vbi Magi ingressi in Hierosolymam interrogaturi de eo, quod indicabat stella cœlestis, amisserunt ducatum cœleste, inquirentes humanum.

2 Hist. Iudicum 7. vers. 5. & 6. *Qui lingua lamberit aquas, sic vt solent canes*, separabis seorsim præcepit Dominus Gedeoni. Et ipse nomine Dei militaribus, cæteris relictis, acsi aptiores essent ad victoriam assequẽdam, qui stantes cauis manibus aquam summere, & more canum cito lambere probati viderentur, quasi illi trecenti illo modo statario bibentes fortiores se ostenderent, quippe siti, & quieti paulum indulgere volentes, quam alij, qui humo, corpore postrato, minori labore, maiori quiete aquæ fluenta haurirent. Quæ tanti discriminis causa? Obedientia. Placuit Augustino quæst. 37. fuerat præceptum, vt hoc facerent, alij alias, cur curuatis genibus postratos fuisse exauthoratos, alios qui integro, & erecto corpore caua manu bibentes probatiores? Ad præsens. Abul. quæst. 10. *Non quasi* ad satiandum ventrem, sed irrouandum gutur, & qui pauciori egere cibo, & potu visi, ipsi fortiores, alij moles haberentur ad pugnam, & victoriam. Blens. Epist. 94. *In trecentis facta est populi liberatio.* Quos ideo præelegit Dominus, quia necessitati satisfecerunt, non didicisse aquam bibere inter exquisita conuiuia. *Ideo maioren gratiam erga Deum comparati.* Quia de aquis fluentibus, & fugacibus delectationibus, & bonis vitæ solùm capiunt, quantum capit concauum aquæ in manu. Quasi lambendo guttam, non postrato corpore capientem.

3 Ex Hist. 4. Reg. 2. Elias præscius sui ascensus in cœlum, expossuit Eliseo, vt peteret quid vellet, ipse enim erat paratus in discessu relinquere pignus ostensiuum amoris. Petiuit duplicem spiritum, difficultatem expossuit *postulatis*, attamen, inquit, *si videris me, quando tollar à te*

erit

erit tibi, si non videris non erit. Vidit ex exclamauit Patermi, &c. & dimisit ei palium. Chrisost. Cur ipsum compulit conditio ne largiendi tanti muneris, eleuare oculos à terra in cœlum, vt dimitteret spiritum duplicem? Et cur non tulit secum palium in æthera? susceperturus cœlestia, digredi visum, eleuari oportuit à terrenis. *Mundi immundo vestimenta dimisit.* Si enim demissos oculos haberet in terrã non susciperet in palio spiritũ duplicem cœlestem. Nitentes, vt fundamento terrenis facile supernis deleuntur. Aurum, argentum, æs, & alia prętiosa metalla illius statuæ effigiantis regnum Nabucodonosor lapillo facile corruerunt, nitebantur enim *pede terræo.* Addi possunt posita anum. 12. & à 16.

Quòd *vult Deus inuigilare de erudiendo proximo in doctrina fidei, & morum, etiam cum dispendio nostræ commoditatis.* 40

1 Ex claus. text. vbi Magi dicti sunt Hyerosolymam digressione directi itineris, vt Herodem, & Hierosolymitanos instruerent de natiuitate Messiæ Saluatoris.

2 Hist. Ionæ 3. *Factum* est verbum Domini ad Ionam secundo dicens, surge, & vade in Niniuem, & prædica in ea prædicationem, &c. A cæto deglutitus, angustiatus, euomitus iterum secũdò mittitur, nec erumnis, & laboribus perpessis excusatur. Alium aptius posset Deus mittere pro conuersione Niniuitarum, ne cum tanto prędicatoris dispendio intenderetur. Optat Deus consequi salutem omnium etiam gentium ad huc cum dispendio suorum prædicatorum. Hieron. in cap. 3. Ionę. *Sufficit* ei naufragij, & eborationis sola correptio, vt qui imperantem, non senserat Dominum, intelligeret liberantem. Delinquenti seruo post plagas, velle imputare quod fecit superfluum, &c. Ipse autem secundo imperatus eiumnis, & laboribus solicitat conuersionem Niniuitarum.

3 Isaiæ 20. Isaias incedit nudus aliàs vir nobilis de stirpe Regia in Vrbem Hierusalem, vt ad pœnitentiam perduceret. Pœnitens Ieremias cap. 18. Vinculis, & catenis ferreis onustus, vt indicaret cum sui liberi dispendio captiuitatem, & vinculationem Iudęorum, re potius, quam verbo imminentem. Et nunc discipulos mittit, *sicut agnos inter lupos*, & Lucę 10 Prącipit nollite portare saculum, neque peram, neque calceamenta, nec duas tunicas. Cum tanto prædicatorum dispendio commodis repudiatis mittit, nec tot parci vult, dum salus proximi intendatur, quam anxie optat, illis proferenda. Amb. Inc. 10. Lucæ ad act. 3.

Ro-

Rogabat, vt eleemosinam acciperet, &c. Intendebat in eos sperans se aliquid accepturum ab eis. Carpit claudum Ambrosius, videntem Petrum sine sacculo, & pera, & aurum, vel argentum exposcentem. *Vides Christi discipulum, & aurum quærit?* Cum penuria auri, & Euangelicæ paupertatis incõmodis, satius iperare salutem. *Non habeo, quod non dedi, sed quod dedi habeo, in nomine Iesu, surge, & ambula.* Hanc tibi eleemosimam auro potiorem veni dare. Vè non euagelizanti, nisi spe, & lucro pecuniæ, & cõmoditatis temporalis, vt silentio studeant, nisi subsistãt. Operarij tamen alendi.

Quòd *habenti ad manum præceptorẽ, & doctrinam salutis, & non proficienti, negatur cœlestis.* 40

1 Ex claus. tex Vbi Herodẽ habentem Scribas, à quibus discere poterat locum, & tempus Natiuitatis Christi, & non addiscentem, deserunt Magi, & stella cœlestis.

2 Theoph. Ad Lucæ 16. Vbi auarus dines ex tormẽtis exposcebat ab Abraham. *Rogo ergo te pater, vt mittas Lazarum in domum Patris mei, habeo enim quinque fratres, ne & ipsi veniant in hunc locum tormentorum.* Respondit, *habent Moysem, & Prophetas, audiant illos.* At ille dixit, *non Pater, sed si quis ex mortuis iret ad eos, pœnitentiam agerent.* Ac si dixisset, miraculosus concionator ex sepulchro cõsurgens, fidem maiorem terrore conciliaret, quam alij familiares, & ordinarij. Quo non obstante, repellitur instantia. *Si illis non acquieserint,* nec concionatori defuncto. Quæ ratio tanti discriminis? An in pœnam existimandi fabulas, scripturas, & voces prædicatorum, negatur defunctus miraculosus prædicator? Sane potuit, sed tatio, *nil tam vtile, vt scripturarum scrutatio. Illæ sunt lucerna, & lumen, quo lucente fur deprehenditur. Curanda Scriptura Moysis, & Prophetarum, quæ satis ad salutem, non curanda defunctorum spectra. Diabolus potest apparenter facere.* Vt seducat imprudentes, magis fidendum de doctrina Scripturæ, per concionatores, *quæ decipere non potest,* minus suscitationi mortuorum, quæ introduci potest apparenter à Diabolo, inferni doctrinas seminante. Vnde qua cura incumbendum est Doctoribus, & predicatoribus doctrine sacræ, quæ magis commendabilis est, resurrectione apparenti defuncti, vt quærant auditorij planctũ, non plausum.

3 Caiet. ad Lucæ 17. *Cum ingrederetur Iesus quoddam castellum, occurrerunt ei decem viri leprosi, qui à longe leuauerunt vocem dicentes Iesu præceptor, miserere nostri,* dixit, *ostendite vos Sacerdotibus.* Quorsum Sa-

cerdotes, si Christus erat mundaturus miraculose, an, vt fidem habeant, & illos venerentur? Sane. Ne dilatetur salus remissione priori ad Sacerdotes. Oportet ita, licet antequam accedant ad illos, sint mundandi, vt contigit, *dum irent mundati sunt.* Quæ causa? Erat Sacerdotum iudicare de mundatione à lepra, & ob id, *Iesus non mundatos, sed mundandos mittit ad Sacerdotes, censores veræ mundationis. Vbi fidem leprosorum nota, confidentiam in verbis Iesu, quod inueniendi essent mundi coram Sacerdote.* Ille enim erat stilus ordinarius ex Leuit. 4. Et ob id remittit ad illos, & fides laudatur eorum pro salute, & anticipate datur implenti dispositionem Christi, vt merito eius, quæ ab illo conferebatur. Standum consilio Doctorum, & doctrinæ, dum altiori extraordinario modo, non confertur.

Quòd *fides nostra ita firmã habet certitudinem, quod non veretur suscipi informationem inimicorum, potius iuuant credibilitatem.* 40

1 Ex clauſ. tex. Vbi Magorum instructio doctrina cœlesti, & stellæ ducatus de Natiuitate, & aduentu Messiæ, exponi facile potuit examini peritorũ Scribarum in Hierusalem sine vllo sui excidio, & periculo.

2 Hist. Genes. 7. *Factumque est diluuium 40. diebus super terram, & multiplicatæ sunt aquæ, & eleuauerunt arcam in sublime à terra. Porrò arca ferebatur super aquas.* Arca, vbi fidelis Noe cum familia fidei seruabatur, & animalium semina ad efficiendum nouum orbem, agitari potuit varijs fluctibus hinc inde, illinc que, obrui tamẽ, tantum afflut, vt quo increbescebant aquę, potius magis eleuarent, vt ambularet incolumis super diluuij vortices. Quo circa Greg. homil. 38. Arca (allegorice) diluuij, quæ præsentis Ecclesiæ typum gesit, &c. C. firmiter de Summ. Trinit. & fid. Cath. *Arca est Ecclesia Catholica, vna est fideliũ vniuersalis Ecclesia, extra quã nullus omnino saluatur.* Pepin. *Arca est Ecclesia militans* (allegorice) quã olim aquæ tribulationum Tyrannorum, & hæreticorum eleuauerũt, id est, eleuari fecerunt in sublime à tera. Nam *sicut ficulnea ventis agitata*, producit grossos suos, ita Ecclesia viros moribus, & litteris refertos, qui resisterẽt aduersarijs. *In cuius figuram* legitur Exod. 1. Quod Ægyptij oderant filios Israel, & *tanto magis multiplicabantur*, & crescebant. Ecce ergo quomodo aquæ multiplicatæ eleuauerunt arcam, exposita fides fluctibus integra.

3 August. ad Psal. 96. *In petra exaltasti me. Lætentur insulæ multæ, &c. Ecclesia insula est*, fundata in petra, Petro, fide illius, sicut

sicut insula tundi potest fluctibus, frangi non potest, sed magis frangit venientes. Sic Ecclesia Dei. Quid timeat inuasionem fluctuũ, quæ fluctus quatit, & frangit. Quid Petri nauicula varijs fluctibus agitata? *Quati potest, frangi non potest.* Quid timeat inuadi fluctibus, Christi diuinitas? Varię opiniones, alij Ioannem, alij Eliam, alij Ieremiam, inuadere, non derogare, nec recusat examen, *honor Regis iudicium diligit securus* indamnabilitatis. Addi possunt dicta in indice huius lect. à 1. 2. & 3. inclusiue.

Quòd *Deus dat initium ad salutem nostram, & prosequitur cooperans in finem.* 40

1 Ex claus. tex. Vbi Deus inchoauit vocationẽ Magorũ ad Christũ, & insequitur, dum per contati firmantur, & tandẽ iterum stella apparente perducuntur ad situm, vbi infans natus.

2 Expositis in indice huius lect. à num. 26. persequentes 4. discursus, quæ huic aptissimi, alium excusant.

Quòd *obedientia cœca, & prompta debet esse aurita, & executiua sine ingenio ad discutiendum, & examinãdum præceptum.* 40

1 Ex claus. tex. Vbi Magi illuminati de Christi natiuitate, non requisierunt de loco, aut domo, sed quasi cœca obedientia secuti sunt stellam ductricem.

2 Chrisost. ad Gen. 22. Isaac immolandus, incipit inquirere curiosè à Patre. *Ecce ignis, & ligna, vbi est victima holocausti?* Cui Pater, *Deus prouidebit filij mi.* Cohibuit indaginem vlteriorem filij, cum insinuauit Dei præceptum, & prouidentiam, cum supereesset disquisitio, an ipse futurus esset. *Simul atque audiuit Deum, nihil postea locutus est, nec amplius erat curiosus,* Sed rem indiciissam reliquit, nedum discuteret curiosius, minus obediens videretur.

3 Oleast. ad Genes. 3. *Serpens ad mulierem. Cur præcepit vobis Deus, vt non comederetis de omni ligno paradysi.* Inuestigatur præcepti causas, vt dissuadeat obedientiam respondenti. *De fructu omnium vescimur, de ligno quod est in medio paradisi, præcepit nobis Deus, ne comederemus, & ne tangeremus, ne forte moriamur.* Replicat, *nequaquã morcemini, sed eritis sicut Dũ scientes bonũ, & malum.* Versipeles ostẽdere nititur Deũ inuidũ, qui nollet in scientia cõ sortẽ. *Docemur non esse nostrũ discernere præcepta superiorũ, sed obtemperare, modo non sit malũ. Obediendũ est, non discernendũ.* Diabolicũ ingeniũ indagare, iudicare cõtra Apostoli doctrinã. *Quis es tu, qui iudicas legẽ*, non es iudex legis, sed factor.

Quòd *ille agit viam salutis tutius, qui cœce pergit in confidentia Dei.* 40

1 Ex claus. tex. Vbi Magi fi-

ne vlla disquisitione fidunt stellæ ducatui, securi de itineris fœlici termino.

2 Philo.lib.Quis diuin. rerum hæres ad Genes. 15. *Exi de terra tua, &c. faciam te crescere, &c. credidit Abraham* Deo. Omnia deserit fiducia in Deum, & exijt. Nec mirum omni humana ope destitutum deseruisse, si habet fideiussorem diuinum. Illa sola independenter a cæteris sat superque abundans. Res magni animi est non inescari rebus mortalibus, sed fiduciam in Deo. Illæ deficere possunt, Deus omnipotens semper indefectibilis, presto est, securus graditur, qui ducit fideiussorem.

3 Theophil. ad Lucæ 22. *Quando misi vos sine sæculo, & pera, & calceamētis, nunquid aliquid defuit vobi? Ad illi dixerunt nihil.* Non facius præuenire sæculum, & in pera differre necessaria, ne quid deficeret, & nec necessaria, nec perā, inqua portarē tur denegare? Fiduciam in Deo gestabant? Sane. Omnia necessaria deferebant, absque necessarijs dimisit. *In his oportebat discere eius virtutem. Faciebat eis omnia necessaria affluere.* In solo Deo omnia abunde deferebant, cæteris destitutis, ipse solus sat. De quo Augustin. *Deus meus, & omnia.* Qui necessariorum oblitos 144000. hominum, sui sequaces satiauit panibus. &c.

Quòd *dolens de amissa gratia, & virtutibus dispositus est valde proxime ad illa recuperanda.* 41

1 Exclam. tex. Vbi tunc Magi amissi stellam cœlestē in Hierusalem magis propinqui ad recuperationem, cum dolebant de stella, & ducatu amissis.

2 Euseb.Emis. Fer. 5. Post Pasch.ad Ioan. 20. *Mulier quid ploras?* Christus ad Magdalenā. *Illa, Tulerunt Dominū meū, & nescio vbi posuerunt eum.* Hoc cum dixisset, *conuersa retrorsum, vidit Iesum stantem,* Non est plorandū, sed plaudendum, hæc, *dies lætitiæ*, non mœroris. *Læta venimus nuntiare tibi.* Aperi oculos lachrymis plenos, *nam oculi, qui plorant absentiā, merentur præsentiam, potius ad illum respice, quem tanto amore videre desideras.* Interrogationem duplicauit, *vt audita voce eum cognosceret.*

3 Theophil. ad Lucæ 15. Prodigus plurib⁹ erumnis edoctus ait. *Surgam, & ibo ad Patrem meum, & dicam, Pater peccaui in cœlum, & corā te, iam non sum dignus vocari filius tuus.* Quid infert id proponas dicendū, Es nescitus, quod recipiet filiū prodignum, qui se elongauit à præsentia Patris? Ita sane. Si quærit suspirijs, & lachrymis, inueniet Patris præsentiam. *Cum adhuc longe esset, vidit eum, & accurrens, ruit in collum eius. Neque enim expectauit, donec filius veniret ad se, præuenit, & amplexatur.* Olim quando se elongabat filius, tem-

tempus erat, vt ab amplexu se elongaret, *nunc cum reddit, & appropinquat se per conuersionem* tempus est amplexandi.

Quòd *bona cœlestia merito sibi arrogant magni dignitatẽ, cum terrestria magnifica, sint pusilla, & parua, in comparatione illorum.* 41

1 Ex clauſ. tex. Vbi Magi merito dicuntur gauiſi gaudio magno, & valde, cum eſſet de illo luminari cœleſti ducente ad Chriſtum, cum gaudia terreſtria non ſint digna tam grandi nomine.

2 Chryſolog. ſerm. 122. Lucæ 10. *Pater Abraham, mitte Lazarum, vt intingat extremum digiti ſui in aquam, & refrigeret linguam meam, quia crucior in hac flamma.* Conditio iniquorum inconſiderata. Si cum epulabaris quotidie ſplendide, nec micas, nec aquæ potum dediſti, quo iure nunc petis ab eo guttam aquæ in ardoris ſubſidium, ſed ſi vritur, & ardet lingua, imò totum corpus, & anima in flamma, gutta aquæ in extremo digiti intincti, quo poterit leuare cruciatus? Si te iam poſidet totius ignis inferni, quare ſolùm linguæ æſtibus deſideras ſubueniri? Sentit forte, & merito, quod tantillum gloriæ, ſi peruenireт, ſitim omnem extingueret, ardores omnes leuaret totius corporis, & animæ. Ea enim boni cœleſtis magnitudo, quod vel leuaret magnitudinem ſuperet terreſtrium, vt quod magnitudo eorum præſtare nõ potuit epuloni, epulato quotidie ſplendide, præſtaret ſtilla gloriæ.

2 Theophil. ad Lucæ 14. *Homo* quidam fecit cœnam magnam, & vocauit ſeruos, &c. Vt inuitarent cõuiuas, & denique, *ite ad exitus viarum, & quoscumque, &c. vt impleatur domus mea diſcumbentium.* Cœna quidem magna, ſed quid inter tantos? *magna autem cœna eſt, quoniam ex confeſſo magnum eſt ſalutis noſtræ myſterium* (infra) *& quotidie cœna illa præparatur, & vocantur omnes ad regnum, quod Deus præparauit ante mundi originem.* Indiſcreti plane illi, qui magni adeò ducebant temporalia, villam, iuga boum, vxorem, vt magnitudinem cœnæ veram ſuperantem exigua illa ſpernerent, & vili facerent.

Quòd *lætitia, & gaudium rerum cœleſtium implet appetitũ, terreſtriũ, vix ſinum replerent.* 41

1 Ex clauſ. tex. Vbi Magi hilaritate maxima valde impleti ſunt viſione iterata ſtellæ cœleſtis.

2 Euſeb. Emiſ. Domi. 5. poſt Paſcha ad Joann. 16. *Vſque modo non petiſtis quidquam in nomine meo, petite, & accipietis, vt gaudium veſtrum ſit plenum.* Quid eſt hoc? Legimus enim Chriſti diſcipulos petiiſſe multa, ſedes in regno temporali, exiſtima-

te illuminase cœcos, sanase paraliticos, & alia multa miracula feciſſe legimus. Omnia ista non sunt quidquam? *Cum manifestum sit eos in nomine Iesu multa petijsse, dicit eos non petisse ea, quæ pertinet ad salutem.* Petite quid. *Vultis audire quid? Vt gaudium vestrum sit plenum? Illud gaudium plenum est, quod nunquam finitur, quod æternũ est.* Si igitur temporalia quæramus, *sic vt nõ amittamus æterna,* quæ faciant omnem appetitum.

3 Lucæ 10. Lazarus cupiebat saciari de micis, quæ cadebant de mensa diuitis (& merito) nemo illi dabat, qui nulla potestate fieri posset humana, micas tẽporaliũ saciare, appetiones esurientis.

4 Hist. 3. Reg. 17. apte. Elias petijt à Sereptana, *paulum aquæ.* Iterum, *buccelam panis in manu tua.* Illa respondit, *non habeo nisi quantum pugillus capere potest farinæ, & paululum olei* in lecyto, mihi, & filio meo, *Vt comedamus & moriamur.* In manu fœminæ erant quidem pusilla, quæ vix infantem alere possent ad horam, in manu Eliæ, iam cœlestia, ipsum, & ipsam indeficienter, diuturno tempore, quousque pluit, & alimenta superefluebãt. Adiungi possunt discursu superiori immediatè posita. Quòd *Doctores, & Magistri indicent Christum, & salutem non transeunter, sed pedetentim,* 46

1 Ex clauſ. tex. Vbi stella sui cursus finem, & terminum statuit, super domunculam, & caput Iesu, indigitans statione Christum, hic est puer, quem natum præindicaui.

2 Euseb. Dom. 1. post Epiph. *Post triduum inuenerunt eum in medio Doctorum audientem illos, & interrogantem eos.* Triduum fortè sedit, & pedetentim quidem, vt exposcebat ratio audiẽdi, disputandi, non quasi stans ad postem breui, sed sedens in Cathedra per horam, aut diem. Quibus durare solet apud nos disputatio? Ita. *Ipse igitur interrogabat, ipse respondebat, morem agens periti magistri, qui nunc interrogando, nunc respondendo discipulos instruit.* Vt repulerit distrahentes parentes à docendi munere. *Quid est quod me quærebatis,* nesciebatis, quia in his, quæ Patris mei sunt, oportet me esse?

3 Euseb. Emis. in Sabbath. S. ad Matth. 28. *Angelus* enim Domini decendit de cœlo, & accedens reuoluit lapidem, & sedebat super eum. In lapide sedens, vt è Cathedra docebat mysterium resurrectionis, & si vellis intra sepulchrum, aptius illa figura Cathedræ imitatur, siue prius, & posterius suo ordine vtrumque. *Cathedra sedens docuit Magisterium, surrexit,* sicut dixit, venite, videte locum, vbi positus erat Domi-

minus. *Nam, & Ecclesiæ Doctores sæpe locum nobis ostendunt, in quo positus fuerat Dominus, dum exempla Scripturarum exponentes*, vbi natiuitas, passio, & resurrectio fit prophetata nos docent. *Sic sedebat supra fontem* colloquio diuturno, instruens, & docens Samaritanam, *& sedens in naui*, vt Cathedra, *docebat turbas*, vi illius exemplo, & tu solicites negotium tuæ salutis, non cursim, & per transenam, sed ex proposito, data opera cogitabundus, de Doctore confessario, de Prædicatore magis spirituali. Quem celebrent plantus audientium, non plausus, sicut adhibetur cura, & solicitudo accuratior de meliori quærendo medico corporali. Pudet enim breuitati incumbere recitantis sacrum, concionatoris garrulli, Doctoris latius opinantis. Caue, quod est via lata ducens ad perditionem, & tarthara.

Quòd *in humilitate, & paupertate inuenitur Deus potius, quam in aula Principum, diuitis, & voluptatibus sæculi.* 46

1 Ex clauſ. tex. Vbi Christus natus inuentus est à Magis in humili diuersorij porticu, non in aula Herodis, aut opulenta, & populosa Hierosolyma.

2 Euseb. Emis. Fer. 5. in cœn. ad Ioan. 13. *Cœna facta, surgit à cœna ponit vestimenta sua, præcinxit se linteo, misit aquam in peluim, & cæpit lauare pedes. Petrus tu mihi lauas pedes!* Nonne maiestas satis, superque abscondita, simulata, formam serui accipiens, quis lauantem vidisset, opere serui, quod Dominum in seruo simulatum, latere diuinaret. Non Petrus, qui agnouit, *tu es Christus filius Dei viui.* Non decet. *Tu Dominus, ego seruus. Tu Deus, ego homo. Tu creator, ego creatura.* Tu mihi lauas pedes? Christus, *quod ego facio tu nescis modo, scies postea.* Magni sacramenti est significatio. *Me docente, & exponente postea scies.* Quando? vos vocatis me Magister, & Dominus, & benedicitis, sum etenim, licet in forma serui, *in serui humilitate mea dominatio. Dicitis, & ita est, quia Magister sum, recipite meam doctrinam, quia Dominus, custodite mandatum. Reges gentium dominantur eorum.* Vos autē non sic, qui maior minister, qui præcessor ministrator. In aula Regnm, ipsi egent palatijs, purpuris sup pellectili aurea, argētea. Ego illis non egeo ad authoritatē internam. Habent palatium, & regiam, vt honorentur. Ego præsepe, domunculam, crucem, sepulchrum, quod honorem Humilitrs serui præstantia dominationis honoratur.

3 Theoph. ad Hæbr. 11. *Fide Moysis grandis factus negauit*

uit se esse filium filiæ Pharaonis, magis eligens affligi eum populo Dei, quam temporariam habere iucunditatem, æstimas maiores diuitias thesauris Ægyptiorum improperium Christi. Miranda Moysis resolutio. Fides Moyses renuit dici filius filiæ Pharaonis, deserens principatum, amplectens impropria crucis Christi, id magis æstimans thesauris Ægyptiorum, & hoc quando grandis factus? Cum regia deserit, cum amplectitur humilia Crucis, & suorum. *Regiam delitiarum communicationem, & participationem, declarat temporariam iucunditatẽ peccati.* Ex quo cauti reddi debent versantes in aula regia, fugiendi pericula, vbi frequentius fastus, odium, inuidia, superbia, ambitio, & alia annumera, quæ tot captos habet animo, & corpore, vt Petrus ingressus Principis atrium, vna ancillæ redargutione, Christum negauerit.

Quòd *Reges terræ ostendunt dignitatem, & maiestatem in fastu, & apparatu argenteo, & aureo, & Palatijs, Rex verò cœlestis aliter in paniculis, & humili domicilio.* 46

1 Ex claus. tex. Vbi Christus infans visus est à Magis in diuersorij porticu pro palatio, in stabulo pro Regali throno. Per illa tamen ostendit Deus magnalia, vt Magi pectore serpente, & postrato, se suaque regalia submisserint.

2 Hist. Genes. 37. Vbi Principatus Ioseph futurus in Ægypto præfiguratur, & adumbratur, *in Sole luna, & stellis* exhibentibus adorationẽ, nec mirũ in aureis, argẽteis, & alijs rutilis ostentare solent Reges terræ, apparatus Regię dignitatis suæ, Oleaster hic. *Ostendit fratribus præponendum Ioseph um duplici somno*, Solis, & lunæ deargentatæ, & stellarum splendore, & copia diuitiarum, adumbrata per tritici manipulos.

3 Theoph. ad Lucæ 16. Vbi ille epulo diues auarus copiam suorum ostendebat. *Homo* quidam erat diues, qui indubitatur purpura, & bisso, & epulabatur quotidie splendide, & erat quidã mendicus nomine Lazarus, qui iacebat ad ianuã eius vlceribus plenus, suę pauperiei notissima signa. *Dispar valde diuitis, & pauperis, ac distans ostentatio. Diuitiarũ, & paupertatis*, copię, & inopię. *Hæc bene sequuntur ad superiora, quia prius docuerat, vt nos recte circa diuitias gereremus.* Et meritò cõiungit sententiã per exemplum diuitis. Epulabatur quotidie, & nõ mediocriter, sed splendide, hoc est sumptuose. Lazarus pauper erat, & infirmus grauiter vlcerosus. Nonne homo tam splendidus propio nomine in ciuitate famosus, an innominatus? Sed si pauper proprio intitulatur nomine, potiori ratione diues, ita splẽdidus, & maiestuosus, minus quidem in domo

no Dei, in qua pauper diues, & diues pauper æsti matur. *Diuitē igitur iſto loco abſque nomine in parabola aſſumpſit, vt pote, qui neque dignus ſit, qui à Deo nominetur. Vbi pauperis habetur ratio, vt egregij viri nominati, & famoſi.* Ab Angelis Dei incarnati ſigna dā tur Paſtoribus: *inuenietis infantem pannis inuolutum, & poſitum in præſepio.* Vt Auguſt. exclamauerit, *quis eſt iſte Rex tam paruus, tam magnus, non dum in terris loquens, & in cœlo edicta proponens.* Et ingreſſurus Hieruſalē, *ſedet ſuper aſinam*, alter cum equitatu, apparatu, & baldachino, &c. Ad regni poſſeſſionem.

Quòd *vbi adeſt Regis, & reginæ maieſtas, inferiorum adſit ſilentium.* 46

1 Ex clauſ. text. vbi Magi nō appellantur Reges, inquirentes eum, qui natus eſt Rex, ſed Magi. Et videtes ſummiſsionis ſerui ſigna dederunt, recognoſcentes adhuc muneribus Regem Regum.

2 Ex poſsitis in huius lect. in dice à num. 12. Illa huius ſunt inſtituti, nec repeti patitur noſtra breuitas.

Quòd *quoquis eſt inſtructus maiori ingenio, & talento, maiori præmitur obligatione ad exhibenda maiora obſequia.* 46

1 Ex clauſ. text. vbi Magi ſapientes poſtrati offerunt pretioſa dona, & theſauros, cum Paſtores more ſuo longe inferiora paſtoritia.

2 Ambroſ. lib. 1. offic. cap. 40. ad Ioſue 10. *Sol contra Gabaon, ne mouearis, & luna contra vallem Aialon.* Vtrique videtur præceptum impoſitū, cum & orbibus imponi deberet, vt figerent motus ſuos, & ſola obediētia Solis maioris luminaris, non lunæ minoris exprimitur. *Stetit itaque Sol in medio cœli.* Vt moraliter promptior obedientia, & quies exprimeretur. *Cum aduerſus Gabaonitas ſurgeret prælium, & vereretur, ne nox impediret* victoriam, mentis, & fidei magnitudine, *clamauit ſtet Sol, & ſtetit.* Si timebat impediturā lunam, ſatius cohibere illam, aut imperare. Exhibuit plane, quaſi rationalis obedientiā. Solis autem exprimitur, qui aprōptioris obediētiæ præcepto tenebatur luminare maius. Cuiſatis dedit obedientia. Vix luci imponitur præceptum, antequam habeat eſſe, *fiat lux*, cum ſtatim paret, *& facta eſt lux.*

3 Procop. ad Num. 10. *Dominus ad Moyſem, fac tibi duas tubas argenteas, &c. Si ſemel clangueris (tuba) venient ad te Principes. Si prolixior clangor, mouebuntur caſtra.* Non ita recte Principes, & nobiles, non ſemel, ſed bis, aut ter pulſandi, vt veniant ad tabernaculum, & exhibeant obedientiam, multitudo autem inferior ſemel, quippe, quę maio-

ris

ris ſubmiſsionem tenentur dare ſigna. Verum. Recte ita. *Vnius tubæ ſonitu, Principes citius obedientes, plebs ſæpius repetito clangore, ad tabernaculũ Domini*, Ex quo certe reprehenſibiles inferiores qui cũ viderent prælatos, & ſenes primo pulſu cimbali exhibere obedientiam, & cætera obſequia ſtatus, illis ſit opus pluribus, vt non tam ſpontanei, quã compulſi exhibeant. *Cum enim augentur dona, rationes etiam creſcunt donorum.* Tanto ergo humilior, atque ad ſeruiendum Deo promptior, quiſq; debet ex munere, quanto ſe obligatiorem eſſe cõſpicit in reddenda ratione ſanctiſsime.

Quòd *pauperi exhibenti Chriſtũ, ſinguli, non ſingula ſolum, ſed terna donatiua, quantum fas eſt, ſunt largienda cumulatiſsime.* 50

1 Ex clauſ. text. vbi Magi ad id prouocãt ſuo exẽplo, quippe non ſinguli ſingula, ſed ſinguli terna numera Xpo. obtuleruṫ.

2 Eucher. ad 3. Reg. 18. Hiſtoria. *Elias* mittitur ad viduam Sareptanam præmente fame, vt paſceretur. *Præcpi* enim mulieri viduæ, vt paſcat te. Acceſſit, & primo petijt. Da mihi paululũ aquæ in vaſe, vt bibã, & cum pergeret, vt afferret, clamauit poſt tergumeius dicens. Affer mihi (buccelam panis) ſubcinericiũ panem paruulum, & illa ſignificaſſet, tantum habere pugillum, vt ipſa, & filio comedẽtibus, facilis inuaſio mortis. Replicat Elias. *Mihi primũ fac, tibi, & filio poſtea.* Dira inſtantia videtur Prophetæ, vt ſibi ſubſidiũ, cum vitæ viduę, & filij diſpendio. Exclamat. *O venerabile per ſæcula factũ, petit poculũ, mox offert. Et quod diuites non habebãt, vidua erogabat. Paſcit pane, quæ die poſtero erat cum filio moritura (& inferius) deſpexit vim naturalis affectus, non de ſe, non de paruulo ſolicita. Occidit in ſe naturæ officia, & affectus erga hoſpitem, effectus eſt crudele ſepulchrum.* Sed duplicem dãti eleemoſinã panis, & aquæ duplicata, imo multiplicata, reddidit Deus. Vt ſine alio agricola, colone, pluuia, ſemine, area, ſit domus facta, cellarium iugiter manans.

3 Hiſt. 3. Reg. 17. *Abſconde* re intorrente Charith, & ibi de torrente bibes, coruiſque præcepit, vt paſcant te ibi. Et cum coruus ſit auis vorax, immitis, rapinaria, vtitur illa, vt expenditore ad alendũ Eliã. Non ſat, in ſiccitate arente dediſſe fluenta aquæ? Non ſat dediſſe panem quin carnẽ, & quin mane, & veſpere? Non ſatis mendico, imò mendicantiũ prothoparẽti, qui Dei amore, ſibi erogãt neceſſaria. Auth. mirab. ſacrę ſcript. apud Auguſt. lib. 2. cap. 17. *Prophetæ præcipitur miniſtrari à coruis. Vt auis, quæ fallax erat ante Noe, fidelis miniſter efficitur Eliæ. Vnde vero carnes, & panes de tule-*

tulerit. Ipse videret, qui officiū cō mitebat. Deus, qui solū potu, sed cibo, & bis per diem reficiebat per ministros voraces fidissime. In cuius vmbra Iosephus fratribus non triticum, sed etiā pecunias, & schiphum. Dat enim suis mensuram refertam, & coagitatam.

Quòd *gratissimum Deo munus se, & terna sua dicare Deo, in statu Religioso, per obedientiam, paupertatē, & castitatem.* 50

1 Ex claus. text. vbi Magi se, suaq; terna munera dicātes Deo sui exēplo, excitant alios, se, & sua dicare in statu Religioso. Illis donis ista tria adumbrātur.

2 Tert. lib. de Idolatria, allusione ad hæc. *Obtulerunt Domino aurū, thus, & mirrhā. Thus illud, & mirrham, & aurum, ideo infanti obtulerunt, quasi clausula, sacrificationis, & gloriæ sæcularis.* In quo mirifice adumbratur sacrificium, quo quis se offert Deo, & sua in statu, & professione religiosa votorum obediētiæ, paupertatis, & castitatis. In thure, quo fumigatur supremus. Obedientia, quæ est recognitio superioris, per renuntiationem propriæ voluntatis, sub voluntate directiua superioris, in auro alteri oblato abdicatio rerūper votum paupertatis. In mirrha, qua castigātur, & exicantur carnes, mortificatio carnalis per votū castitatis, quo quis cohibet impulsus, & propensiones ad accessus libidinosos. His igitur de se, & suis, religiosus in professione Deo littat sacrificium.

3 Adduci possunt adhoc institutū proposita in lectura de vita, & gestis Samsonis in indice secundo sub num. 5. Quod in lege veteri fuit status Religiosus, nec alia addi patitur breuitas.

Quòd *Deus habet maximam æstimationem non solùm magni donatiui diuitum, sed minuti pauperum ex animo oblati.* 50

1 Ex claus. text. vbi thesauri oblati Magorum, magni habiti sunt à Christo, Deipara, & Iosepho, sed non ita vt donatiua pastorum, & pauperum despicata essent.

2 Theoph. ad Marc. 12. *Iesus expectabat, quomodo turba mitteret æs in gazophylatium, & multi diuites mittebant multa. Et venit quædā vidua pauper, misitque minuta duo, quod est quadrans, & dicit discipulis. Amē dico vobis, quod vidua hæc pauper plus misit, quam omnes,* in thesaurum, vnde Sacerdotes pauperes, & viduæ alebantur. Si illa dedit minutū, & cæteri multa, quomodo ista dedit plus, quam omnes? An quia illi de superfluis dederunt, & ista de necessarijs totam substantiam? Ita, Christi ratio, an quia eleemosina sit ita Deo gratissima, vt illa Iudex corrumpetur, vt pro ea sententiam

pro

proferat? Placuit Chrisost. homil. 33. sed non eget nostris, sed nostra voluntate, cuius honorem munere expresum acceptiorem habet. *Vidua, accessit suâ voluntatem declarans opibus abundantiorem. Gloria tibi Christe, qui, & parua gratiore sæpe habes, quã magna.*

3 August. in Psalm. 42. ad illud 2. Chor. 9. *Hilarẽ datorẽ diligit Deus.* Non solũ quia Deus eleemosyna honoratur, sed quia nostris non eget, sed nostra hilaritate, qua augetur eleemosyna, vt quo hilarior, sit auctior, & placentior. *Si panem dederis tristis, & panem, & meritum perdidisti.* Vnde Chrisost. Si alacriter detur, *duplex erit eleemosyna, & quia damus, & quia hilariter damus.* Vnde respexit Deus ad Abel, & ad munera, quia licet minora fratre, obtulerit obsequentius, hilarius, ad Cain autem non respexit, licet tristis, obtulerit ditiora.

Quòd *quisque morem gerat possibilitati sui status, ne excedens phastu, & sumptibus, sit phantasma ciuitatis* 50

1 Ex claus. Tex. Vbi Reges isti apertis thesauris offerunt munera, sed de more Regum, vt exemplo eorum, quisque iuxta possibilitatẽ status, se gerat in cunctis.

2 Eus. Emiss. Sabbath. post cin. ad Marc. 6. *& videntes eum super mare ambulantem, turbati sunt dicentes, quia phantasma est, & clamauerunt.* Quid cogit voces extollere? Inusitato itinere, & raro hominem incedere, clamant, & dicunt phantasma. Si viderent nauigantem, aut natãtem, quod ordinarium inter homines, nec clamarent, nec dicerent phantasma maris, at solubilibus, & fluxibilibus aquis, vt solidis lapidibus ambulantem, excitat clamorem, & existimationem phantasmatis. *Ego sum, nolite timere.* Dixit, *ego sum. Vt quis esset agnoscerent, agnita voce, quam cognitam habebant.* Et Petrus iubente ipso, se credidit pelago, sciebat enim Saluatorem omnia posse, & nil minus in mari, quam in terra, potestatem habere. Quo circa, cum quis in ciuitate supra facultates existimatas, videtur epulari, vestiri, seruiri famulis, equitibus, solet omnium excitare rumorem, & appellari ex insolito phantasma ciuitatis, ac si id non in rei veritate contigisset, sed in quimera somno, & phantasia. Idem de ministro, qui à nocte in mane (vt dici solet) splendidus, & dies apparet. Idem de fœmina eleganti, vnde murmur excitatur contra eos.

3 Ex possitis in indice lecturæ de Samsone à num. 11. in 13 Quod quis nominetur, & tractetur iuxta id, quod in se est. Iuxta mensuram nobilitatis, ætatis, officij, dignitatis, diuitiarũ,

non

non excessu exorbitanti, qui excitet admirationem omnium, & murmurationem.

Quod *Deus solet præuenire pias petitiones suorum, largiendo ante petitionem vocalem.* 53

1 Ex clauſ. text. vbi Magi ante petitionem vocalem de inſtruendo regreſſu, ſola mentali conſultatione, accipiunt diuinũ reſponſum de alia via capeſſeuda ad regreſſum.

2 Pſalm. 31. *Dixi* confitebor aduerſum me in inſtitiam meam Domino, & tu remiſiſti impietatem peccati mei. Vbi ſolet expendi, quod dum Dauid proponit accuſationem, & confeſsionem de futuro, ſui factus accuſſator, reus, & Iudex, agit gratias pro abſolutione, & remiſsione, non futura, ſed præterita. Quaſi remiſsio anteuerterit petitionem, & confeſsionẽ, vt videatur à Deo iudice, ſibi arrogaſſe, & ab illo detraxiſſe ſententiam diffinitiuam, & ipſo iudicante, & pronuntiante ſententiam, Deus pronuntiauerit. Id reſpexit Euſeb. Emiſſ. homil. de pœnit. Niniuitarum, ad. *Non iudicabo bis in id ipſum. Id eſt, quod tu in te ſeuerus agnoſcis, ego propitius ignoſcam. Et quia præueniſti ſententiam meam, recondam gladium meum.* Ad eum modum quo cum ſonus ſclophi in auribus concrepat, iam cecidit lepus, & præda.

3 Euſeb. Emiſſ. homil. de bono latrone ad illud. *Domine memento mei, dum veneris in regnum tuum. Hodie mecum eris in paradiſo.* Vbi oratio, & petitio reſpiciebat iudicium Chriſti Iudicis vniuerſalis futurum, poſſeſsio autem indicitur de præſenti, hodierna. *Non dixit de præſenti ſuplicio eripe me, ſed de futuro iuditio libera me. Videamus quid reſpondeat Dei bonitas, quæ præces ſuplicum excedit, & vota. Hodie, inquit, &c. acſi diceret. Quid me tantopere exorandum putas, vt indiem inditij meminerim tui? Quid me ad præſentem retributionem parratum diſsimulas? Hodie mecum eris in paradiſſo, hæreditaria, & paterna ſede.* Adiungi poſſunt poſsita in indice de Samſone à Num. 32. perſequentes diſcurſus.

Quòd *Deus ad monendos pios, vix inſummit leues excitationes, ad impios verò ingentes, & plures.* 53

1 Ex clauſ. text. vbi interiori illuſtratione Magi præmonẽtur de regreſſus via, nec opus fuit voce exteriori, vt ſatis inſtruerentur, & præſtarent obedientiam.

2 Oleaſter ad Geneſ. 27. *Nunc ergo fili mi acquieſce conſiliis meis, & vadens ad gregem affer, &c.* Præcognouit periculũ incurrendi maledictionem parentis, pro benedictione lucranda. Sed obedientia filij morigeri acquieuit conſilio matris etiam

etiã cum sui periculo, quod inuertit mater in se ad filij securitatẽ. *Admonemur hic filij obedire superioribus, non solũ, cum dura sunt, sed cum prima fronte peccata esse videntur, cum superiores viros timoratos nouerunt.*

3 Basil. Seleu. orat. 12. ad Ion. 2. *Præparauit Dominus piscem grandem, vt deglutiret Ionã.* Propheta non acquiẽuit præcepto diuino imperanti, surge, vade in Niniuem, & fugit aliò à facie Domini, hoc est ab executione præcepti, non à præsentia præceptoris, qui vbique esse fide credebatur. Et vt obedientiam præstet Propheta fugitiuus Deus, omnem nõ lapidem mouet. Excitat tempestatem, in flantur maria, vndẽ exigunt fugitiuum ad carcerem: præiaciũtur sortes, vt indicent delinquẽtem, causam tempestatis. Et data sorte mittitur in mare, & præparatur bestia, vt deglutiat Ionam inobedientem. *In viuo sepulchro ferebatur.* Carceratus aluo. Velli tnollit, ad Niniuem legationis. Sunt enim adeò obdurati homines, vt Pharao ad cuius obedienciam, tot Moysis monitiones, tot miracula fuere necessaria. Imo ad conuiia opulenta, semel, & iterum repetitis vicibus vocantur conuiuæ, & quidã compulsi adfuerunt. Ad Adamum reducendum ad pœnitentiã, opus fuere repetitis vocibus. Adam, Adam, vbi es? cum vix emissa voce, dixit fiat lux, & facta est lux, &c.

Quòd *stella ducens Magos ad Christum, & disparens, instruit prædicatores, & confessarios ducere doctrina fideles ad Christũ. Et non intromitti vlterius, nec apparere vltra, visitando in domibus suis.* 53

1 Ex clauſ. tex. vbi stella illa duxit Magos, vt indice indigitauit Christum, illo autẽ semel ostenso, disparuit, nec intra illorum aulas iterum visa est, ad diuitias illorum captandas.

2 Ps. 77. *Et duxit eos in nube diei, & tota nocte in illuminatione ignis* in terram promissam, fluentem lacte, & melle. Lyra *in nube diei, id est columna nubis, & ignis. Columna ignis ostendebat eis viã in tenebris noctis.* Noster Incognitus addit, *vt dux esset itineris in vtroque tempore, numquam defuit columna nubis per diẽ, nec columna ignis per noctem.* Sed defuit cum ingressi sunt in terra promissam, adquam ducatum gerebat, & statim disparuit, nec illius fuit accolla. Ita Angelus qui duxit, & reduxit Tobiam iuniorem per viam disparuit.

3 Historia Tobiæ 13. Angelus Raphael ducit Tobiam iuniorem ad terras extraneas, & reducit coniugatum ad domũ Patris. Et cum ageretur de reddenda mercede fidissimo Sodali, qui de tantis periculis eripuit, declarat se esse Angelum, qnietat turbationem, & timorem

rem eorum, & dicit. *Tempus est ergo, vt reuertar ad eum, qui me misit.* Vos benedicite Deum, *& narrate mirabilia eius. Et cum hæc dixisset, ab aspectu eorum ablatus est, & vltra eum videre non potuerunt.* Similiter Philippus instructus est ab Spiritu Sancto, vt adiungeret se currui, in quo vehebatur ille Princeps, Reginæ Candacis, at vbi expos fuit illi scripturam de agno Christo occisso propter salutem omnium, statim disparuit, raptus ab Angelo ad Azoto, nec permisit se duci in domum, & regiã illius, vt ibi delicate aleretur, indueretur, ditaretur. Ex quo instruendi sunt concionatores Euangelici, & confessarij, quod communicent verbo, & exẽplo cum Principibus, Principissis, nobilibus, vsque dum indicent Christum, viam suæ salutis, sed non vlterius appareant in visitatione, in eorum domibus, sed in deserto cellæ se cohibeant, nec vlterius inde sibi comoda, delitias, diuitias, aut illicita (absit) solicitent. Sic Eliseus instruxit fratellum illum donatum, aut clericum, vt vngeret Iehu in Regem clanculum, & peracto munere aperuit ostium, & fugit, vt à Principibus reputaretur insanus. Nec vlterius cum nouo Rege remanut, vt inde sibi lucra, & æstimationem compararet: & 1. Reg. 17. Dauid statim ac cythara expulit Dęmonem à Saul in palatio reuersus est, vt pasceret gregem, nec ibi vlterius est immoratus. *Lyra non habebat affectum cytharizandi coram eo.* Ideo, ad officium Pastoris, reuersus est, in domum Patris.

Quod *vitanda est familiaritas, & sodalitas cum impijs, & peccatoribus, ne inficiamur peccatis similibus.* 53

1 Ex clauſ. text. vbi Magi inuenti Christum, & firmati in fide illius, non sunt permissi redire ad Herodem intendentem Christicidium. Sed diuerti.

2 Procop. in cap. 6. Isaię ad paral. 26, *Historia.* Ozias egredi iubetur è Sanctuario *orta lepra in fronte*, ne adhuc sanctuarium inficiat, & ciuitatem, est enim malorum societas pestilentia, aut pestilentiæ Cathedra, quæ vel societate, halitu inficit & lædit sanctissimos. *Legis præcepto extra castra leprosus, secedere recusans, totam vbem præsentia sua polutam reddidit.* Adeò cauenda est in re morali leprosi moribus commercium, vt contagione inficiat cęteros adhuc morigerõs.

3 Historia cap. 39. Genes. vbi impudica fœmina, quæ ad libidinẽ concitauit Ioseph̃, adolescentem castissimũ, vt arrep-

to

to palio per vim illum detineret, & cogeret. *Ille relicto pallio egressus est foras.* An in palio cõtagium veneris, aut pestis luxuriæ, quòd deseritur, ne inficiat castum? Ita. Oleaster, *Reliquit vestimentum, ne relinqueret pudicitiam.* Caueat ergo vnusquisque à societate, & commercio malorum, nec sibi fidat. Nam contagiari adhuc Angelus timuit, qui immunda labia Isaiæ non manu, sed *forcipe, & calculo* interposito, mundare agressus est.

Lectura de Fuga Christi in Ægyptũ, & regressu in Nazareth.

Quôd *viris pijs, deuotis, & spiritualibus loquitur Deus per Spiritus Angelicos.* 4

1 Ex clauſ. text. vbi Deipatæ, & Ioſepho datur reuelatio, & inſtructio de Fuga in Ægyptum.

2 Hiſtoria Ioſeph. Geneſ 39 *Miſſus* in carcerem ob crimen impoſitũ ab vxore laſciua Putifar. Viſitatur à Deo vir caſtiſsimus, fit illi diuini ſpiritus infuſsio ſomniorum Pincernæ & piſtoris. Et illo referẽte Pharaoni, educitur de carcere, & diuinat annos ſterilitatis, & fertilitatis in ſpicis plenis, & debilibus: bobus pinguibus, & macilentis cum Magis, & ariolis ſit negatũ. Oleaſter ad Geneſ. 39. *Fuit Dominus cum Ioſeph*, & non cum alijs in carceratis, qui vbique eſt. Ita, ſed amicabili præſentia cum eo, & infuſsione illuſtrationum, & reuelationũ. *Dominus iuſtum commitatur. Non timebo mala, quoniam tu mecum es. Qui venditum iuſtum, non dereliquit, ſed cum eo deſcendit in foueam, donec afferret illi ſceptrum Regni.*

3 S. Methodius tr. de caſtitate ad illud 3. Reg. 19. *Reuerſus eſt Angelus Domini ſecundo, & tetigit, eum, dixit qui illi, ſurge, & comede, grandis enim tibi reſtat via.* Tot factæ ſunt aparitiones Angeli Eliæ fugienti fœminam Iezabel? Vtique, viro duplicis ſpiritus, dicente Eliſeo, *fiat in me duplex ſpiritus tuus. Vnde ferunt Eliam fugientem à facie mulieris Iezabel, veniſſe, & accepiſſe cibum, quia fugientibus ſtimulum carnis fœminam, & voluptatem per fugium lignum germinauit.* Ad hæc dilecto Ioanni ſpiritualiſſimo, & caſtiſsimo fiunt Angelorum apparitiones, & reuelationes in inſula Pathmos. Petro in carcere, Apoſtolorum Principi, nequis immerſus rebus temporalibus, ſibi facile ſua deat ſomnia obtingentia, eſſe illi factas diuinas reuelationes, quæ ad conciliandum ſibi innanem gloriam, facile omnibus, & ſingulis referat.

Quod

Quòd *diuina præcepta, & imperia, vt cumque leuiter insinuata, sunt opere exequenda.* 4

1 Ex clauſ. tex. Vix intimatur Ioſepho fuga *ſurge &c.* Cum ſtatim indilate eadē nocte exequitur.

2 Hiſtoria 1. Reg. 16. Vbi Samuel miſſus eſt à Deo vngere Dauid in Regem, & cum eſſet in agro, dixit ad Iſai Patrem illius, vt mitteret ante menſam pro illo adducendo. *Mitte, & ad duc eum, nec enim diſcumbemus, prius quam ille veniat.* Quid in mora, nonne conſultius quieſcere, & ſedere ad menſam, dum Dauid adduceretur ex agro? Abul. ad id q. 28, *Solicitus erat circa mandatum Domini explendū, ita vt interdum non curaret de cibis, vt expleret mandatum Dei.* Illa diligentia, & celeritate vult Deus præcepta, & imperia ſua expleri, vt nulla ſit interponenda mora, omnis abijcienda deſidia.

3 Ambroſ. ad Geneſ. 24. Vbi Eliezer ſeruus Abrahæ miſſus ad Patriam Abrahę, vt iuxta inſtructionem quæreret ſponſam Iſaac filio Domini ſui, cumque fatigatus ex itinere peruenisſet ad domum illius, & rogaretur, vt ſederet ad menſam, & poſtea ſuæ legationis rationem oſtenderet, dixit, *non commedam, donec loquar ſermones meos.* Seruus quidem videtur minus ſedulus, & ſolicitus, non imminet vllum periculū dilationis, quod motuum tantæ vrgentiæ? *Ad inſtruendum eos, quibus aliquid iniungitur, quod non prius manducauit puer Abraham appoſitum ſibi panem, quam mandatū Domini exequeretur.* Deus enim mandauit mandata ſua cuſtodiri nimis. Hoc motiuū, quo inſtruxit Eliſeus Laicum fratrem, cum deferret baculum ad ſuſcitandū infantem vi duæ Si aliquis te ſalutauerit, ne reſalutes. Et Chriſtus *neminem per viam ſalutaueritis.* Cum mittit Apoſtolos ad perficienda eius ordinata, non negat opera vrbanitatis, ſed ſolicitat expeditā, & promptā ſui imperij executionem. Contra ſegnitiem aliquorum, qui adeò pigre, & tepidè Dei mandata executioni mandant.

Quòd *Deo gratiſsimum virum coniugatum curam gerere de cuſtodia familiæ, & coniugis prompta obedientia.* 4

1 Ex clauſ. tex. Vbi Ioſephus admonetur ab Angelo de ſibi incumbēte cura protegendi infantem fuga, & Virginis expedita, & prompta obedientia.

2 Theophil. Ad Ioan. 2. *Vocatus autem Ieſus ad nuptias,* cum defeciſſet vinum, dixit Mater Ieſu ad eum, vinum non habent. Dicit ei Ieſus, quid mihi, & tibi mulier? Optabat virgo aliquod ſignum oſtendere ſuæ diuinitatis, aliena videtur, & acerua repulſa filij pietati, &

reuerentiæ erga matrem. *Increpat nos absurde, Si non adest vinū oportet illos, quibus deest accedere, & rogare.* Cura enim de prouidenda familia, de necessarijs, ad eos pertinēt, qui habent munus Patrisfamiliæ, ad cæteros obsequi, illi morem gerere.

3 Genes. 29. Historia. *Ego sum Deus Bethel. Surge, & egredere de terra hac in terram natiuitatis tuæ.* Et dum recedit à domo Labam, qui toties mutauerat vices in gregibus, arte fallēdi, & sibi arrogandi ampliores fœtus, ait textus. *Surrexit* itaque Iacob, & impositis liberis & cōiugibus super camelos, abijt. Tulitque omnem substantiam suam, greges, & quidquid in Mesopotania adquisiuerat. Optimus Paterfamilias, qui vxorū, & filiorum, & omnium supellectilium curam gerit, vt illa retraheret à domo Labam Soceri, & duceret in locum rutiorem. Oleaster hic. *Vix, aut raro inter generum, & soceram bonam amicitiā deprehendimus.* Nil viris sanctis sine numine agendum. *Licet Iacob summe redditum desideraſſet, non ausus est redire sine imperio Dei. Vbi disce quam sint curæ iusti Deo, qui curat eos ducere, & reducere.* Et voluit vxores consulere, & iustificare causam apud illas, vt irent sponte cum marito in eius patriam. *Perdisce prudentiam Iacobi.* Egit opus prudētis Patrisfamiliæ in cura gerēda suorū. Sic Deipara Iosepho admonēte discessus extra patriā in Ægyptum, spontanea obedientia acquieſcit. Quod alijs fœminis in exemplum ad maritos, libenter obsequendos.

Quòd *diuina consilia, & præcepta statim citissime implenda, non differenda.* 8

1 Ex clauſ. tex. Angelus siue intimet consilium fugiendi, siue præceptum, sine discrimine inter vtrumque, aut vlla discussione, indilate parent, fuga præcoci, placidus Ioseph Deo.

2 Historia Iosue 4. *Præcepit Dominus Iosue, vt erigeret duodecim eminentes lapides ad oras Iordanis in monumentum,* & memoriale perenne, miri & stupendi prodigij transitus arcæ, & populi, aquis ad vtrumque latus se erigentibus in cœlum, ad iterperuium. Iosue autē imperauit populo, vt id statim executioni mandaret. *Fecerunt filij Israel, sicut præceperat eis Iosue.* Spontanea quibem obedientia, sed non sistit eo. *Alios duodecim lapides posuit in medio Iordanis, vbi steterunt Sacerdotes, qui portabant arcam Domini.* Hos quidem erigi fecit sine dispositione, & imperio diuino, & inquit textus. *In illa die magnificauit Dominus Iosue coram omni Israel.* Et merito, nam spontanea obsequia digna laude,

de, & exaltatione, & honore. Abulenſ. hic, quæſt. 11. *Non iubetur*, quod erigeret eos in alueo Iordanis, ſicut priores, ſed dicitur, quod Ioſue eos poſuit. Addidit præceptis alios conſilij, & ſuper erogationis, & ideo ita placuit, vt magna veneratione, & æſtimatione apud Iſraelitas à Deo commendaretur.

3 Hiſtoria Geneſ. 24. Vbi Eliezer fidus ſeruus Abrahæ, miſſus ad eligendum filio Iſaaco vxorem in Nachor Meſopotamiæ, vbi peruenit ad ſolis occaſum ad fontem puteale, vnde puellæ hauriebant aquam. Apud ſe ita concepit. *Puella, cui dixero, inclina hydriam, vt bibam, & reſponderit bibe, quin & camellis tuis dabo potum, ipſa eſt, quam præparat Iſaac, Domino meo.* Apte quidem, & prudenter. Nam illa, quæ non ſolùm exhibet petita, ſed etiam ſuperaddit obſequia politica, & vrbanitatis, & ſupererogationis, ipſa eſt, quæ digna eſt, vt ſit ſponſa Domino meo Iſaac, vbi Gloſſa Interlinealis, miſtice, illa illius, &c. *Talis* anima facta eſt ſponſa Chriſti.

4 Genebrar. ad Pſal. 52. *Voluntarie ſacrificabo tibi victimas, &c.* Non *tantum* offeram, quæ mihi iniunxiſti, verumetiam addam multa ſponte, & liberè. Spontanea obſequia magni apud Deum. Spontaneos diligit maxime Deus.

Quòd *nec familia ſanctiſsimorum eſt libera, & immunis ab anxietate, dolore, & laboribus præſentis vitæ.* 8

1 Ex clauſ. tex. Vbi familia omnium mortalium, ſanctitate illuſtrior, anguſtijs, & anxietatibus transfigitur in fuga, imminente timore Herodis, Deipara, Ioſepho, & Infantulo Chriſto gregalis, dum intenditur occidi Chriſtus. Anguſtiatur Mater, vt affectet gaudia cœleſtia libera ab anxietate.

2 Ex Hiſtoria Geneſ. 42. *Cumque adoraſſent fratres Ioſeph, & agnouiſſet eos, quaſi ad alienos durius loquebatur interrogans eos, vnde veniſtis, exploratores eſtis, vt videatis infirmiora terræ veniſtis.* Quibus fratres afflicti maximè ſunt. Et iterum idem repetit, & vt probent oppoſitum, iubet, in vinculis manere, vſque dum probent vera dicta, adducendo tenerrimum Benjamin. Auertitque ſe parumper, & fleuit, & iuſit, vt implerent eorum ſaccos tritico, & pecunias ſingulorum in ore ſaccorum. Si hæc beneficia erat eis collaturus, quid turbam fratrum tot infectatur calumnijs, cum ſui tanta teneritudine flectus? *Non ſinit amor amantem diu cruciari* (in-

quit Oleaſter hic) ſed neque fingere. Vbi docet non ſolum innocentibus mala non facere, ſed nec aduerſus eos ficte aliquid moliri, ſed vis fieri alicui poteſt ad bonum eius, vt illos ad ſe omnes reduces cum Patre faceret: hac fictione vtitur affligēdi ad tempus. Filius meus Ioſeph viuit, vadam, & videbo, antequam moriar, reuixit Spiritus Parentis audito nuntio.

3 Abulenſ. ad Geneſ. 22. *Toles filium tuum, &c.* Si hoc, cur illud? *Ne extendas manum ſuper puerum, &c.* Cum iam euaginato gladio intendebat vitam tollere ab eo, cui vitale eſſe dederat generatione? Non tollit vitam vere, ſed apparenter, non executione, ſed intentionaliter, & ad breue tempus, vt indulgeat largiore duratione. *Multiplicabo ſemen tuum, &c. Mors eius eſſet durior morte propria, elegiſſet magis mori, quam filium occidere.* Minatus eſt mortem, vt largiretur fœliciorem, & largiorem vitam.

4 Chryſoſt. ad Matth. *iuſſit eum* Dominus venundari vxorem, filios, &c. Vt ſolueret talenta remiſſa. Merito, quia ſæuitiam exercuit circa alterum conſeruum, ſed vbi pietas, & benignitas Domini, vbi agit rigidum exactorem. Non excludelitate id facit, ſed ex incredibili, in eum curâ. Volebat eum terreri minis, vt ſupplicanti daret copioſam veniam.

6 Quòd *Chriſtus Dominus ab infantia ſua, vt indicet dilectionem, ſubijt incommoditates.* 8

1 Ex clauſ. tex. Vbi vix infans vitæ curſum inchoauerat, cum transfugæ incommoditatibus exponitur.

2 Bernard. alluſ. ad illud Apocal. *Agnus occiſſus ab origine mundi*, antequam habeat eſſe vitale exiſtentiale ad mortem, iam habet ad anticipatam occiſionem. *Vide quantum feſtinauit, dum à natiuitate octauum vix expectat, vt tibi impendere ſuum ſanguinem* incipiat in laboribus a iuuentute.

3 Chryſoſt. ſerm. 150. Ad *fuge in Ægyptum.* Videtur fugere mortem, qui venerat vitam dare pro omnibus, redolere videtur animi imbecillitatem fugere labores, fugere moriendi occaſionem, & effundendi ſanguinem pro multis, qui ad id ita propenſus ab infantia. *Fugit in Ægyptum, vt cedat tempori, non Herodi.* Scatebat in venis ſanguinis parua copia, habet propenſionem ingentem ad diffundenda maiora fluenta, & ideo pro ætate ſuſtinet incommoditates expectans maiores in adultiori ætate. Vbi

in-

in horto fiant guttæ sanguinis, riui defluentes in terram, in cruce donec vltimam effundat gut tam aqua inuoluta. Cum enim vt aiunt PP. vna guttula sufficeret ob infiniti valoris pretium ad redemptionem, non sufficiebant nisi plurimi fluenta ad ostentationem ingentis propensionis inexhausti amoris. Vt illius exemplo patienter labores sustineas.

Quòd *verbum ante humanitatem assumptam visitat improbos flagellis, infans factus delicijs.* 8

1 Ex clauſ. tex. Christus infans Ægyptios visitat sua præsentia benignus, cũ ante assumptionem carnis filius Dei flagellis plagarum, & submersionis in mari Rubro mulctauerit.

2 Historia Genes. 24. *Præcepit, vt egrederentur cuncti fora, & nullus interesset agnitioni mutuæ. Ego sum, ait frater vester, quẽ vendidistis in Ægyptũ. Nolite pauere, pro salute enim vestra misit me Dominus ante vos in Ægyptum, & osculatus est fratres suos.* Qui antea dure tractauerat objiciens esse exploratores. Oleaster ad 46. Genes. & osculatus est fratres suos. *Ecce qualiter soluunt sancti mala sibi à fratribus illata.* Ante osculum dure tractauit, post benigne, & pacifice. Simbolum aptissimum ad institutum præsens. Ante osculum naturarum in vnitate personæ Deus seueris flagellis, post suaui visitatione.

3 Cyril. in Ioann. lib. 12. in Ioann. cap. 42. ad *in monumento so nouo, in quo nondum quisquam positus fuerat.* Quid monumenti ista nouitas? Locus ille ante ingressum Christi sepulchrum cadaueri destinatũ, post vitali surgenti à mortuis. *Nam ipsa in morte Christi ad somni conditionem mutata est.* Nam sepulchrum domicilium defuncti cadaueris, domus gloriosa Christi resurgentis, mors horribilis, somnus dulcis, & suauis. Vt corpus implens sepulchrum fœtore, impleat floribus, & aromatibus odoriferis gloriæ. Vt postquam Elisei corpus ingressus sepulchrum, cadaueris ibi latentis viuificum suscipiens contactũ, iam assurgit in auram vitalem illi sparsam.

Quòd *sunt cohibenda iuditia temeraria rerum, quæ fugiunt scientiam nostram.* 9

1 Ex clauſ. tex. Vbi Angelus ad prædicendum infanticidium Herodis, non nititur aliquo medio, & indice fallaci, ex indifferentia, sed certo ex determinatione. Visione beata, aut reuelatione diuina.

2 Historia 3. Regum 18. Vbi Elias septies orauit pro pluuia petenda. *In septima au-*

tem vice, ecce nubecula parua, quasi vestigium hominis, ascendebat de mari. Vt autem audiuit hoc ab illo religioso laico statim instituit nũtiũ. *Vade, & dic Acab, iunge currum tuum, quia sonus multæ pluuiæ est.* Ex quo ergo signo sumit certum pronosticum pluuiæ futuræ? An nubecula illa connexionem inseparabilem habebat cum pluuia? Ex illa astrologiæ peritus forte certo sibi prænuntiaret. Sed Deus vult Eliam septies mittere orationem pro illa, vt iudicet, Dei esse cum nube coniungere pluuiam copiosam. Abulens. q. 33. *Forte hoc erat, vt non extolleretur Elias, quasi certo, &c.* aut ipse prędicaret futurum, quod supra illũ erat, aut suæ solum orationi tribueret cito *velociter.*

3 Historia Genes. 37. Ioseph somnio duplici prænouit futurum Principatum in Ægypto. *Videbam quasi per somnũ Solem, Lunam, & Stellas vndecim adorare me.* Quod cum Patri, & fratribus retulisset. Respondérunt fratres. *Nunquid Rex noster eris?* Non aliud diceret ex stellis astronomus, illud signum futuri principatus, non aliud Propheta, sed dum contra consilium, & decretum diuinum venditione reddunt mãcipium, auertunt dominationem, aduocant principatum. Greg. 6. moral. cap. 12. *Ideo ist adoratus (Ioseph) quia venditus. Sic diuinum consilium dum deuitatur, impletur.* Ex astris non potuit certo pręsciri futurus principatus, quia nil connexionis somnij illius cum futuritione, sed adiuncto diuino decreto, quod connectit optime, & certo. Hinc vanum omnino, manum præbebit vati, prę sertim mulierculis Ægyptianis, nam licet *in manu hominum signa, & lineamenta constituerit* Dominus teste Iob, *vt nouerint singuli opera sua*, sine Deo sola prænuntiari potest indigitatio, non futurus euentus, qui fugit scientiam nostram.

Quòd *ambitiosus nil intentatum relinquit, vt regnet.* 9

1 Ex clauf. tex. Vbi Herodes ob sui stabilem conseruationem in regno, intentat plura. Magos renuntiare infantis nati locum, & infantium occisionem præcocem.

2 Hieronym. ad Isaiæ 14. *in cœlum* concendam super astra Dei exaltabo solium meum, sedebo in monte testamenti, in lateribus Aquilonis, ascendam super altitudinem nubium, similis ero altissimo. Ambitiosus, & inflatus superbus tot gradus, tot ascensiones meditatur, ambitio illius inquieta, & seditiosa, quæ nullũ non lapidẽ tentat, mouet. *Ista dicebat, vel antequã de cœlo corruerit vel postquã currit, sit in cœlo positus, q sonoro dixit ascendam in cœlum? Cum esse*

esset in cœlo, id est, in firmamento, cupiebat ascendere in cœlum, vbi solium Dei est, si postquam de cœlo corruit, debemus intelligere, quod nec præcipitatus quiescat, sed sibi grandia promittat, non vt inter astra, sed super astra Dei sit.

3 Historia Genes. 38. Vbi Iudas concubuit cum Thamar nuru sua. Instante autem partu, apparuerunt gemini in vtero, ac in palestra acriter dimicantes, & iugiter pro obtinendo maioratu, vt vnus proculerit manum, & obstetrix ligauerit coccionum, & dixerit, *iste egredietur prior*: retrahente verò, *egressus est alter*. Si in illorum infantilitate ambitionis esset capacitas, molliri poterat durius bellum, quo tot media tentarentur ad maioratum, litigare pro præcoci egressu, retrahi vnum ab alio, violenter præoccupare natiuitatem? Sibi conspirare obstetricis plausum: ita, sed magis ambitiosa, & diligentioris solicitudo, quæ tot tentauit in casum vanum est molita. Nam egressus est alter. Quæ causa? Oleaster hic ad. *iste egredietur* cap. 39. *Vult Deus ostendere, non pendere ex arbitrio nostro, quis sit primogenitus.* Licet enim quis nullum nõ lapidem moueat, ad obtinendum optatum, validius voluntas Dei, insidiosa, & inquita ambitione.

Quòd *ambitioso impossibilia facile possibilia apparent.* 9

1 Ex claus. tex. Vbi Herodi facile visum, & Reges sibi obsequturos in redditu credidit, & facili infanticidio se in Regni violenta, & intrusa possessione conseruari.

2 Carthus. in Matth. *Dic vt sedeant hi duo filij mei, vnus ad dexteram, & alius ad sinistrã in Regno.* Ambitio in excelsa fastigia, viribus, & dignitatibus impossibilia semper audax, cumq; Christus inordinatã petitionẽ corrigere tentaret dicẽdo. *Potestis bibere calicẽ, quẽ ego bibiturus sum*, audent impauidi, & deglutiunt mortẽ sine inquisitione, & discussione, quid cõtineatur in calice, cautior Christus, qui obijcienti Angelo dixit. *Si fieri potest, transeat à me calix iste.* Quæ hęc promissio, & ambitio præceps? non ne sati⁹ inquirere, quid in calice cõtineretur, & quid esset virius in propria virtute. Sed ambitio cęca ausus habet temerarios in difficilia, in impossibi ia, vt idẽ respondérent si possent montes ab vno in aliũ locũ transferre, anihilare orbem. Mutari in Angelos, & Deum. Quid si in calice mors? Qua ratione deglutirent, qui relicto eo, mortis vmbrã fugerunt. *Petitio ista fuit multipliciter inordinata, quia ex præsumptione, & elatione petũsse videntur volentes summi esse in gloria, qui nondum sanctis similes erant*

erant in merito. Ac si sessio ista vim virtutis naturalis, & dignitatem consanguinitatis non excedat. Quid impossibilius, quam illud optatum Regis sub Lucifero, *Super astra Dei exaltabo solium, similis verò altissimo.*

3 Imperfect. in Matth. ad Lucæ 4. *Hæc* omnia tibi dabo, cui volo do illa. Quid vendicas omnia tua, qui nil habes? *Domini est terra, & plenitudo eius*, impossibile tuum esse, quod sub illius dominio est, tua non in re, sed in ambitione, & phantasia, qua & dominari supra dominium omnium, vt cadens adoret sui infimam, & turpem creaturam. Deciperis, mentiris. *Et si alijs mentiebatur esse omnia, apud se tamen sciebat, quia non erant eius*, sed Dei, & ita repulsus. *Dominum Deum tuũ adorabis, & illi soli seruies.* Ad idem Ambros. eritis sicut Dij, diuinitatem impossibilem, & fallacem *promisit. Promissi honoris, Euam ambitio illecebrosa decepit.* Quæ si Deum solum adorare voluisset, indebita non quæsisset.

Quòd *delirium, quidquam aggredi contra Deum adhuc existimatu.* 9

1 Ex claus. tex. Vbi Herodes audet in infanticidio bimorum Christum occidere, quem saltim opinione existimabat Regem, & Deum.

4 Hist. 1. Reg. 4. Vbi Philistei desdenderunt in castra contra Israel. Illi autem tulerunt ad exercitum arcam fœderis. *Cumque venisset arca fœderis Domini in castra, vociferatus est omnis Israel, & audierunt Philistim, & cognouerunt, quod arca Domini venisset in castra, & ingemuerunt dicentes, ve nobis. Quis nos saluabit de manu Deorum sublimiũ, qui percusserunt Ægyptum.* Cum hæc meditassent, meditati sunt fugam? Audaciã in eam. *Estote videri Philistim, confortamini, & bellate. Ceciderunt de Israel viginti millia peditum, & arca Domini capta est.* Temeritas audere in arcam iam cognitam, & cum capitur in ea deferunt interitũ idolo Dagon, stragem omnium segetum, & incommoda, quæ cogat in reuerentia restituere, vt accidit, de facto. Ad hæc Procop. *Dum Philistini arca apparente extimuissent, acceperunt vtilitatem, & auxilium, cum contempsissent arcam post victoriam, ipsa experientia didicerunt, quanta Dei virtus esset.* In agressione delira temeritas. In victoria summa in fœlitas solicitantur. *Dura manus contra nos.*

3 Iansen. in conc. c. 71. ad illud. *Verebuntur forte filium meum*, misserat seruos aliũ occiderunt, alium lapidauerunt, exquirẽtes redditus, & fructus vineę. Decrenit Pater familias, & misit filium sperans reuerent a se versaturos circa illũ. *Verebimur forte.*

te. Illo autem agnito. *Hic est hæredes.* Audacius, & acerbius se illi mortem minitantur, vt accipiant hæreditatem. Ingens illorum temeritas, & audacia in hæredem iam cognitum. Sed si Pater iam præuiderat euentũ, vt quid exponit periculo filium? Quod si exponit, ignorantiam fugere non potest. *Non ignorantiam significat Dei, sed quidquid fieri esset iustum, & quid expectari posset ab eis.* Quod quis Regem palio celatum inuehatur gladio, quem existimat hostem ignorantia, non irreuerentia est, sed cũ facie detecta profert, ego sum, non summittere arma, & flexo poplite veniam postulare, petulantiæ inuerecundæ, sed insequi, & vrgere gladio, inauditæ insaniæ delira mentum. Caueant Christiani, qui Deum cognouerunt, non sicut Deum reuereri, & glorificare.

Quôd *imminentia pericula salutis animæ omni celeritate sunt fugienda.* 11

1 Ex claus. tex. Vbi ipsa nocte ad monitionis fugitur imminens mors corporis infantis. Vt doceat seruili celeritate fugere imminentem mortem animæ.

2 Ex adductis in indice lect. de vita Sams. à Num. 21. quod cenemur desere re pericula peccandi: & sub num. 36. quod cauendus est aspectus fœminarũ, & sequenti, quod facilis accessus, sed difficilis regressus. Et in dice de Christo adorato sub. 6 Quod est adhibenda diligentia, &c.

Quôd *ille, cui incumbit cura familiæ, tenetur arte, & industria procurare proficua, & auertere noxia, & nociua.* 11

1 Ex claus. text. vbi S. Iosephus optimus pater familias subito aggreditur, nocte fugam periculi infantis, & absentiam securam.

2 Ex indice in lectura de vita Sams. sub num. 35. Quod iudicis est exercere duo munera, & 40. & sequenti.

Qnod *cum iactura rerum temporalium sol cite curandum est de obsequio Dei.* 11

1 Ex claus. tex. vbi Iosephus statim ac admonitus est de fuga, ipsamet nocte inuigilauit de ducendo infantulo in locum tutum, forte cum personali incommoditate sua, & desertione suppellectilium in domo.

2 Euseb. Emiss. in Dom. in palm. ad Matth. 26. *& si oportuerit* memori tecum, non tenegabo. Tecum paratus sum in carcerem, & in mortẽ ire. Magni audet Petrus audatior cæteris, & à Christo cohibetur, quo magis accenditur, & præuisa negatione constans adhuc incommoda mortis offert prosequela Magistri. *Non enim putabat Petrus, vt alicuius persecutionis*

nis timore, fidei & dilectionis flamma extingui potuisset. Omnis constantia non hominis, sed Dei est. Ob sequia Dei insequenda docet, etiam cum iactura commoditatum, imò & vitæ, & non solũ deliciis, & commoditatibus.

3 Historia Genes. 28. Iacob. *Si Dominus dederit mihi panem ad vescendum, & vestimentum ad operiendum, & reduxit me, &c. Erit mihi Dominus in Deũ.* Quid hoc? Et si non det tot tibi commoditates, non sequeris illum pro vero Deo? Satius, & si non dederit, erit mihi in Deum, ita potius. Ostẽdit pluribus oneribus ex tunc sequendũ. *Iacob tenebatur Deũ verũ pro Deo habere, nihilominus hoc vouet, vt nos doceat, posse pluribus vinculis alligari.* Ac si diceret adhuc cum onere votorum, & obligationum est insequẽdus Discipuli sequebãtur Christum, non ad solam gloriã Thaboris, sed ignominiam crucis stupentes. Imo, & sponsa, quæ nimis delicatã se exhibuit, cum pulsante sponso respondit. *Laui pedes quomodo &c.* Surgit de lecto, & per noctis latebras formidabiles, percussionem, spoliationem pallij, feruida insequitur, donec inuenit, & introduxit in domicilium. In quo culpandi, qui ita sui amatores, & si quid incommodi se se obijciat deobligantur sectandi institutum Dei.

Quod *in familia solus vir caput illius intitulari, & vocitari debet; alio secluso.* 13

1 Ex clauſ. tex. vbi Ioſephi ſolius mentio fit, non Mariæ vxoris, niſi in viro capite ſubintellecta.

2 Oleaſter ad Geneſ. 2. *Non eſt, bonum hominem eſſe ſolum, faciamus ei adiutorium ſimile ſibi, quod ſit coram eo, ſicut nuntius ipſius.* Vbi non dicit faciamus alterũ hominẽ in ſocium, vt eſſent in familia paradyſi duo capita æqualis poteſtatis, & dignitatis, *ſed ſimile adiutorium*, quod ſupponit Principem prototypum. Quod ſit coram, ſicut nuncius, qui ſupponit ſuperiorem ſociũ, non Dominum. *Audiant vxores, & diſcant, non eſſe virorum Dominas, ſed miniſtras. Libido virorum, ex miniſtris dominas fecit.* In quo viri ſibi prudenter cauere debent, ne ex libidine patiantur ipſas aſſurgere in Dominas capitales familiarum

3 Hiſtoria Geneſ. 38 *Solem*, Lunam, & ſtella, vndecim adorare me, Num ergo mater tua, & fratres tui adorabimus te ſuper terram? Ita. Quo autem ratione verificari poſſet adoraſſe Patrem, & Matrẽ Rachel, quæ mortua erat, cum deſcendit Iacob in Ægyptum diſcuſsit Oleaſter. *Dicerem aut quod in Patre adorauerit ſimul mater, quæ reputatur idem cum viro in ſubiectione.* Qua propter, cum caput mulieris ſit vir, adorante viro, adora-

re

re censetur,& mulier in capite. Vt septem ille aprehenderint virum vnum,&c.tantummodo in uocetur nomen tuum super nos &c. Infandum enim,vel in familia fœminam erigi, & assurgere in caput,vel admitti alios viros,qui legitimum maritum habeant in seruum, & familia fiat monstruosa pluribus capitibus capitata.

Quòd *vir vxoratus,ita per dilectionem sibi coniunctam habeat vxorẽ, quod illo nominato, in corde sita, censeatur nominata mulier.* 13

1 Ex clauſ. tex. vbi Angelus Ioſepho loquitur, ſed ſimul,& virgini in cordis domicilio cõtentæ, quod ſurgat, & intuto conſtituant infantem.

2 Oleaſter ad. *Tulit vnam* de coſtis,& ædificauit ex ea mulierem, & adduxit ad Adam, vt videret qnid vocaret eam, & vocauit virago,quia de viro aſſumpta eſt. Nec de capite tulit, nec de pedibus, de litere, vbi reſidet in corde vis amoris. *Vt quaſi os, & carnem ſuam diligat.* Vt illoviro nominato,virago deriuatum censeatur nominatum.

3 Gillelm. ad Geneſ. 2. *Propter hanc relinquet homo patrem, & matrem, & adhærebit vxori ſuæ, & erunt duo in carne vna*, non ſolum duorum deciſis partibus in vna prole,ſed vxore per dilectionem vnita in vnitate cordis. Sicut duæ naturæ diuina, & humana in vnitate perſonæ. Quod magnum ſacramentum verificauit Paulus in Chriſto, & in Eccleſia, *non per naturæ diuinæ, ſed humanæ aſſumptionem in vnitatem perſonæ.* Et ex præcedenti diſcurſu apta huic.

Quòd *viri, & vxoris vna concors, & ſimultanea debet ſeruari cohabitatio, nec deſidio diſiungenda vlla ex cauſa.* 13

1 Ex clauſ. text. vbi Ioſephus poſita admonitione de fuga in Ægyptum, non relinquit Mariam coniugem, ſed iubetur accipere puerum, & matrem, ne diſiungantur domicilio,& cohabitatione.

2 Expoſitis ſupra in indice de vita Samſ.ſub num. 22.& 23.ne ampliemus ſupra menſuram.

Quòd *Labores ſubacti pro Deo ſunt patienter tollerandi, licet diu durent.* 14

1 Ex clauſ. text. vbi Ioſephus iubetur exul commorari in Egypto vſque dum præmoneatur de obitu Herodis ad regreſſum,& ibi exulatus incõmoda pro illo tẽpore perpeti.

2 Hiſtoria Geneſ. 29. *Seruiuit Iacob pro Rachel ſeptem annis, & videbantur illi dies pauci, præ amoris magnitudine.* Et cum appoſita eſſet Lya, Seruiuit alijs ſeptem annis

annis pro Rachel, intollerabilis fraus viro, sed repetitus, & diuturnus labor. Oleaster. *Fuerunt in oculis eius pauci dies, quia diligebat eam. Facit facilia grauis amor.* Infra. Vbi. *Vides, quid sint boni malis, quod propter eos tollerantur.*

3 Chrisost. Ad Genes. 50. vbi Ioseph. Venditus à fratribus in seruum, coniectus est in vincula, & missere bienio, & amplius, passus est in carcere. *In seruum venundatus est Ioseph, humiliauerunt in compedibus pedes eius, ferum pertransijt anima eius, donec veniret verbum eius.* Quo constitutus, & eleuatus ad Principatum. *Considera quod pro illo breui tempore, quo seruiuit, & carcerem sustinuit, octoginta annis regnum administrauerit.* Per labores ita ad Principatum, sed protollerantia maius præmium, vt tollerati patienter, Deum, præmium assequantur. Vt Iobo tot patienti reddiderit *bona duplicia.*

Ad idem aptissima in indice de vita Sams. sub num. 53. *Quod patientia, & sufferentia* calamitatum in præsenti vita, &c. & in indice de fuga Christi sub num. 8 quod etiam Sanctorum familia est obnoxia angustijs, & calamitatibus, &c. & indice de Christo adorato sub num. 6. Quod nec labori parcendũ, vt subsistat adoratio Dei,

Quòd *inflatorum, & superborum ea conditio est, vt quidquid non arridet infestet, quod non fauet sit aduersum.* 15

1 Ex claus. text. vbi Magos recessisse insalutato, & impremonito Herode, idem illi ac illusum à Magis.

2 Euseb. Emiss. Dom. 3 in quad. ad Lucę 11. *Qui non* est mecum contra me est, & qui nõ colligit mecum dispergit. Contendebat Christus probare contra Scribas, & Pharisęos, quod nil commune haberet virtutis cum Dęmone, vt in Beelzebut Principe Dæmoniorum ejiceret Dæmonia, & vtitur alijs argumentis, *vt cum fortior armatus venit* in castrum, pellit possessorem, & dimittit inermen, vt ipse è medio eiecit Principem tenebrarum foras, sed instat illo, eo quod officia sint diuersa, imò aduersa. *Ille dissipandi, ego ædificandi, ille dispergendi, ego congregandi dispersos.* Ille inuadit in eos, ego libero. *Euidenti sylogismo eos concludit, quod non ejiceret in virtute illi, & Belzebud communi.* Nam qui non est mecum, cõtra me est, & qui non colligit mecum dispergit. Non est igitur ipse mecum, nõ sanat oues, vt ego, non congregat ones, vt ego, non ducit ad vitę pascua, vt ego. Quid igitur facit? Vis audire quid? Spargit, dissipat, occidit, & quoad potest, ad damnationem ęternam trahit. Hoc est enim quod dicit, qui non est

me-

S. S. Radnorshire, N. 22° 23′, E. 37° 15′*†	29.78	756.4	71	21.7		sse.			4		2		se.	0	0			hazy.
S. St. Francis, S. 17° 30′ W. 97° 45′†	29.96	761.0				nne.			1		0		s.	0	0	long	cross	threatening
Schr. S. B. Hubbard, N. 36° 25′, W. 74° 11′†	30.09	764.3	70	21.1		se.			2		7		se.	0	0			clear.
Bk. Southern Belle, N. 49° 20′, W. 7° —′*†	30.13	765.3	54	12.2		n.			5		5		nne.	0	0	sm'h	se.	cloudy.
S. S. Strathleven, N. 35° 23′, E. 17° 46′	29.85	758.2	60	15.6		w			4		10		w.	0	0	hv'y	n.	clearing
F. S. Sunbeam, N. 50° 12′, W. 3° 38′	29.87	758.7	65.8	18.8	72	w.			4		3		wnw.			mod.	wnw.	raining.
Bg. Teneriffe, N. 39° 10′, W. 73° 00′	29.88	758.9	43	6.1	92	sse.			4		10		wnw.	2 h'r	2 h'r	3	wnw.	d. clouds.
Bk. Truro, N. 47° 45′ W. 37° 00′*†	30.11	764.8				nne.			7					0	0	3	s.	drizzling.
U.S. F. C. S. S. Fish Hawk, Washington, D. C†	30.20	767.1				nne.			2–3		8		nnw.	21 h'r	21 h'r	r'gh	ne.	
Bk. Usko, N. 37° 14′, W. 68° 51′	30.37	771.4	45	7.2	84	nne.			3		9		nne.	0	0	mod.	ssw.	clearing.
Bk. Vincenzo Aceame, Lisbon, Portugal†			59	15.0		nnw.			3		10		nw.	3 h'r	3 h'r			cloudy.
Schr. Viola Reppard, N. 37° 26′ W 74° 00′†	30.41	772.3	64.4	18.		ne.			4		8		sw.	0	0	long	se.	light rain.
Schr. Walter L. Plummer, Miragone, Hayti, W. I*†	30.13	765.2	50	10.0		nnw.			6		10		nnw.	0	0			
Bk. Wandering Jew, S. 20° 00′, W. 35° 33′†	30.00	762.0				s.			1		2		s.	0	0		nnw.	cloudy.
Bk. Warden Law, S. 37° 16′, W. 75° 42′	29.97	761.2	74	23.3		sse.			6		10		sse.	24 h'r	24 h'r	large	sw.	fine.
Bgt. Willie, S. 38° 34′, E. 15° 30′*†	30.02	762.5				se.			4		8		se.	12 h'r	12 h'r	sm'h	s.	squally.
S. Wm. Woodbury, N. 36° 48′ W. 73° 49′*†	30.44	773.2	59	15.0		ssw.			3–5		8		ssw.	0	0	rg'h	sw.	raining.
	30.20	767.1	52	11.1		n.			6		6?		nw.			cross	nnw.	cloudy.
																			clear.?

S. S. The Queen, N. 41° 32′, W. 57° 37′†	29.93	760.2	56	13.3	.....	wnw.	.....	.....	6	.....	10	.....	ne.	12 h'r	12 h'r	short	ne.	raining.
S. S. Santiago, Cienfuegos, Cuba W. I.	29.98	761.5	52	11.1	.....	ne.	.....	.....	5	.....	8	.....	.....	14 h'r	14 h'r	h'vy	wnw.	misty.
S. S. City of Alexandria, N. 34° 18′ W. 76° 10′†	30.20	767.1	74	23.3	86	calm	.....	.....	0	.....	.....	.....	ese.	shr's	sh'rs	high	ese.	squally.
S. S. City of Merida, N. 23° 09′, W. 82° 22′	.....	.....	60	15.6	.....	nw.	.....	.....	6	.....	8?	.....	.....	0	0	.....	.....	fine.
S. S. Knickerbocker, N. 27° 08′ W. 79° 43′*†	30.11	764.8	71.6	22	.....	ne.	.....	.....	1	.....	10	.....	nw.	0	0	sm'h	n.	clear?
			74	23.3	.....	nne.	.....	.....	1	.....	.....	.....	ne.	0	0	light	ne.	cloudy.
	30.06	761.0	57.8	13.8	.....	w.	.....	.....	7	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	w.	cloudy.
									3	.....	.....	.....	.....	.....	.....	long	.....	cloudy.
S. S. Amerika, N. 52° 00′, E. 2° 35′*	29.97	761.2	43.5	6.4	72	e.	.....	.....	4	.....	10	.....	w.	15 h'r	15 h'r	.....	w.	cloudy.
S. S. Donau, N. 49° 37′, W. 27° 04′	30.09	764.3	.....	.....	.....	w.	.....	.....	2-3	.....	10	.....	.....	0	0	sm'h	.....	covered.
S. S. Elbe, Off Ameland's Id, Netherlands	30.02	762.4	37.4	3.0	100	ne.	.....	.....	6	.....	10	.....	nne.	6 h'r	6 h'r	r'gh	ne.	covered.
S. S. Oder, N. 40° 34′, W. 71° 59′	30.15	765.8	40.1	4.5	.....	nne.	.....	.....	6	.....	10	.....	nne.	0	0	mod.	ne.	cloudy
S. S. Ohio, Galveston, Texas	30.30	769.6	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	4	.....	8	.....	nne.	5 h'r	5 h'r	r'gh	nne.	fair.
S. S. Salier, N. 53° 52′, E. 7° 33′	29.99	761.7	44.6	7.0	.....	.....	.....	.....	5	.....	10	.....	nnw.	2 h'r	2 h'r	r'gh	n.	cloudy.
S. S. Werra, N. 40° 40′, W. 69° 56′*	30.26	768.6	41.9	5.5	.....	n.	.....	.....	2	.....	5?	.....	se.	0	0	sm'h	.....	clear?
S. S. Belgic, Hong Kong, China †....	30.23	767.8	73	22.8	85	se.	.....	.....	6	.....	10	.....	sw.	.....	.....	mod.	nw.	cloudy.
S. S. Oceanic, N. 37° 32′, W. 157° 20′*	30.00	762.0	63	17.2	89	sw.	.....	.....	0	.....	0	.....	.....	0	0	.....	.....	foggy.
S. S. City of Augusta, Savannah, Ga†	30.17	766.3	.....	.....	.....	sw.	.....	.....	3	.....	0	.....	.....	.....	.....	long	wnw.	foggy.
S. S. Mississippi, N. 43° 34′, W. 124° 33′ †	30.32	770.1	47	8.3	85	sse.	.....	.....	1	.....	fg.	.....	.....	.....	.....	sm'h	nw.	hazy.
S. S. Columbia, N. 38° 00′, W. 123° 05′†	30.27	768.8	51	10.6	89	ne.	.....	.....	2	.....	7	.....	ese.	.....	.....	.....	.....	clear.
S. S. Oregon, Port and, Oregon†	30.23	767.8	40	4.4	58	calm	.....	.....	0	.....	0	.....	.....	.....	.....	.....	.....	clear.
S. S. Ancon, N. 32° 39′, W. 117° 15′†	30.16	766.1	56	13.3	75	se.	.....	.....	1	.....	0	.....	.....	.....	.....	sm'h	.....	clear.
S. S. Dakota, Seattle, Wash. Ter†	29.73	755.1	46	7.8	77	se.	.....	.....	4	.....	8	.....	se.	12 h'r	12 h'r	sm'h	.....	cloudy.
S. S. Australia, Sydney, N. S. W.	30.07	763.8	69	20.6	90	sse.	.....	.....	3	.....	5?	.....	sse.	0	0	.....	.....	clear.
S. S. City of New York, Sydney, N. S. W†	30.08	764.0	78	25.6	86	calm	.....	.....	0	.....	0	.....	.....	1 h'r	1 h'r	.....	.....	clear.
S. S. City of Pekin, N. 22° 58′, E. 117° 14′†	30.35	770.9	69	20.6	75	ene.	.....	.....	0	.....	10	.....	n.	0	0	mod.	ene.	cloudy.
S. S. City of Sydney, N. 12° 00′ W. 161° 25′†	29.91	759.7	77	25.0	82	ene.	.....	.....	3	.....	8	.....	nne.	⅛h'r	⅛h'r	h'vy	ne.	light rain.
S. S. Grenada, N. 12° 52′, W. 88° 42′†	29.92	760.0	81	27.2	78	e.	.....	.....	1	.....	0	.....	.....	0	0	sm'h	s.	clear.
S. S. San Jose, N. 15° 50′ W. 98° 07′*†	30.16	766.1	.....	.....	.....	nw.	.....	.....	2	.....	0	.....	.....	0	0	long	nw.	
S. S. Bermuda, Roseau, W. I†	29.94	760.5	81	27.2	.....	n.	.....	.....	1-2	.....	2	.....	n.	sh'rs	sh'rs	long	nnw.	fine.
S. S. Caracas, N. 24° 28′, W. 69° 30′†	30.03	762.7	76	24.4	88	n.	.....	.....	5	.....	8	.....	n	0	0	h'vy	nne.	cloudy.
S. S. Valencia, N. 24° 35′, W. 69° 30′†	30.05	763.3	76	24.4	73	nne.	.....	.....	5	.....	6	.....	ne.	0	0	h'vy	nne.	fine.
S. S. Belgenland, N. 47° 47′, W. 32° 14′†	30.36	771.1	54	12.2	100	n.	.....	.....	4	.....	10	.....	n.	21 h'r	21 h'r	.....	.....	misty.
S. S. Nederland, N. 49° 21′ W. 37° 09′†	30.37	771.4	44	6.7	.....	w.	.....	.....	4	.....	10	.....	w.	.....	.....	cross	w.	cloudy.
S. S. Pennland, Antwerp, Belgium	30.06	763.5	35	1.7	80	sw.	.....	.....	2	.....	10	.....	wnw.	0	0	.....	.....	cloudy.
S. S. Rhynland, Jersey City, N. J	30.26	768.6	46	7.8	69	nw.	.....	.....	4	.....	4	.....	n.	.....	.....	.....	.....	fair.
S. S. Waesland, Jersey City, N. J	30.30	769.6	37	2.8	81	n.	.....	.....	5	.....	6	.....	nne.	0.09	2.3	.....	.....	fair.
S. S. Maas, N. 44° 09′, W. 56° 55′–	.....	.....	50.4	10.2	76	ne.	.....	.....	8	.....	10	.....	ssw.	21 h'r	21 h'r	9	e.	raining.
S. S. P. Caland, Rotterdam, Holland	30.01	762.2	34.7	1.5	93	sw.	.....	.....	3	.....	7	.....	nw.	.....	.....	.....	.....	cloudy.
S. S. Schiedam, N. 42° 54′, W. 60° 38′	30.02	762.5	62.4	16.9	85	ne.	.....	.....	0	.....	10	.....	wnw.	4 h'r	4 h'r	h'vy	ne.	hazy.
S. S. W. A. Scholten, New York, N. Y	30.42	772.7	36.0	2.2	90	w.	.....	.....	2	.....	8	.....	nw.	0	0	.....	.....	
S. S. State of Florida, Glasgow, Scotland	29.55	750.5	47	8.3	.....	se.	.....	.....	2	.....	10	.....	.....	0	0	.....	.....	cloudy
S. S. State of Georgia, N. 53° 54′, W. 22° 20′†	29.81	757.2	47	8.3	.....	wnw.	.....	.....	8	.....	5	.....	wnw.	sh'rs	sh'rs	mod.	wnw.	showery.
S. S. State of Indiana, N. 41° 45′, W. 61° 08′†	29.89	759.2	52	11.1	.....	ne.	.....	.....	7	.....	8	.....	ne.	4 h'r	4 h'r	r'gh	ene.	cloudy.
S. S. State of Nevada, New York, N. Y†	30.30	769.6	31	— 0.6	.....	ne.	.....	.....	7	.....	8	.....	ne.	0	0	.....	.....	clear.?
S. S. Hekla, N. 51° 25′, W. 35° 20′*†	30.23	757.8	48.2	9.0	.....	nw.	.....	.....	1-5	.....	8	.....	nw.	0	0	ong	sw.	fair
S. S. Thingvalla, N. 57° 58′, E. 7° 20′†	30.08	764.0	40.1	4.5	.....	ene.	.....	.....	3	.....	3	.....	ene.	0	0	mod	ene.	clear.
S. S. Iowa, N. 51° 17′, W. 15° 19′ *†	29.90	759.4	55	12.8	.....	w.	.....	.....	5	.....	6	.....	w.	14 h'r	14 h'r	r'gh	w.	fair.
S. S. Plantyn, N. 40° 31′, W. 52° 03′	29.92	760.0	.....	.....	.....	.....	.....	.....	6	.....	6	.....	ene.	6 h'r	6 h'r	r'gh	ne.	squally.
S. S. Britanic, N. 51° 22′, W. 14° 55′†	29.88	758.9	54	12.2	93	wsw.	.....	.....	9	.....	9	.....	w.	2 h'r	2 h'r	r'gh	w.	cloudy.
S. S. Celtic, N. 41° 12′, W. 61° 28′†	29.92	760.0	52	11.1	86	e.	.....	.....	5	.....	9	.....	e.	6 h'r	6 h'r	h'vy	e.	overcast.
S. S. Germanic, N. 49° 38′, W. 25° 14′ †	30.24	768.1	55	12.8	.....	wnw.	.....	.....	7	.....	10	.....	w.	3 h'r	3 h'r	mod.	w.	overcast.
S. S. Lepanto, N. 42° 00′, W. 47° 44′*	30.01	762.2	57	13.9	.....	ene.	.....	.....	7	.....	9	.....	w.	3 h'r	3 h'r	h'vy	n.	cloudy.
S. S. Marengo, N. 50° 37′, W. 09° 01′*†	29.90	759.4	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	9	.....	8	.....	ne.	24 h'r	24 h'r	h'vy	n.	cloudy.
S. S. Romano, N. 45° 05′, W. 45° 45′	30.17	766.3	51	10.6	.....	ne.	.....	.....	3	.....	4	.....	ene.	12 h'r	12 h'r	sm'h	ne.	cloudy.
S. S. Salerno, N. 44° 44′, E. 30° 06′			46	7.8	.....	sw.	.....	.....	7	.....	8	.....	se.	0	0	r'gh	ne.	fine
S. S. Aries, N. 39° 48′, W. 74° 15′*†	30.19	766.8	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	9	.....	10	.....	sw.	0	0	h'vy	sw.	
S. S. Catherine Whiting, Providence, R. I†	30.22	767.6	.....	.....	.....	ne.	.....	.....	7	.....	9	.....	nne.	1 h'r	1 h'r	long	nne.	squally.
S. S. Norman, N. 42° 23′, W. 71° 05′	30.16	766.1	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	1	.....	.....	.....	.....	snow	snow	.....	.....	
S. S. Saxon, Philadelphia, Pa*†	30.42	772.7	39	3.9	.....	nne.	.....	.....	5	.....	.....	.....	ne.	snow	snow	.....	.....	heavy snow
									6	.....	10	.....	.....	.....	.....	.....	.....	
MISCELLANEOUS.																		
Bk. Adelaid, N. 18° 00′, W. 64° 20′ *†	29.91	759.7	80	26.7	.....	nnw.	.....	.....	5	.....	1	.....	n.	0	0	long	nnw.	fair
Bg. Alcira, Maracaibo, Brazil	29.90	759.4	96	30.0	.....	ene.	.....	.....	1	.....	2	.....	ne.	0	0	.....	.....	clear.
S. Annie M. Law, Kobe, Japan *†	30.21	767.3	54	12.2	.....	ne.	.....	.....	1	.....	5	.....	nw.	0	0	.....	.....	fine.
Bk. Anna Thormann, S. 14° 50′ E. 98° 41′*	29.98	761.6	76.8	24.9	85	se.	.....	.....	6	.....	9 k	.....	se.	inap.	inap.	r'gh	sse.	cloudy.
S. S. Antonio Lopez, N. 23° 44′, W. 42° 46′ *	29.94	760.5	80	26.7	74	ne.	.....	.....	1	.....	3	.....	.....	0	0	long	ne.	clear.
Bk. Aquidneck, S. 1° 26′ W. 33° 23′*†	30.10	764.5	.....	.....	.....	ese.	.....	.....	3	.....	.....	.....	se.	.....	.....	light	se.	clear.
Bk. Aureola, N. 51° 09′, W. 86° 50′*†	30.00	762.0	60	15.6	.....	wsw.	.....	.....	5	.....	10	.....	nw.	2 h'r	2 h'r	mod.	w.	dense fog.
Bk. Alba, N. 57° 21′, E. 6° 01′*†	30.10	764.5	37.8	3.2	.....	wsw.	.....	.....	7	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	snowing.
Bk. Bayonnaise, N. 18° 48′, W. 53° 00′ *†	29.92	760.0	.....	.....	.....	w.	.....	.....	2	.....	10	.....	w.	12 h'r	12 h'r	large	se.	rainy.

VESSELS, WITH POSITION AT TIME OF OBSERVATION.	Barometer reduced to sea-level.		Temperature of the air.		Relative humidity.	Wind.				Clouds.				Rainfall or melted snow in the past 24 hours.		Sea-swell.		Weather.
						Direction.	Velocity.		Force.	Amount and kind.		Direction.				Character.	Direction from.	
	Inch.	Mill.	Fah.	Cent.	Per cent.	From.	Miles p. hr.	Mtrs. p. sec	0–10	Upper. 0–10	Lower. 0–10	Upper. From	Lower. From.	Inch.	Mill.			
MERCHANT MARINE.—Continued.																		
S. S. Parthia, N. 42° 24′, W. 65° 35′*†	30.03	762.7	44	6.7	.....	nne.	.....	.....	6	--	6?	.....	nne.	6 h'r	6 h'r	sli't	n.	overcast?
S. S. Scythia, N. 41° 50′, W. 53° 36′	.....	.....	54	12.2	87	nne.	.....	.....	4	.....	10	.....	ne.	o	o	mod.	ne.	dull.
S. S. Colina, N 45° 34′, W. 38° 46′†	30.12	765.0	.....	.....	.....	nne.	.....	.....	3	.....	10	.....	nne.	5 h'r	5 h'r	long	se.	raining.
S. S. France, N. 49° 48′, W. 11° 13′†	29.83	757.7	53.6	12	.....	sw.	.....	.....	3	.....	k	.....	sw.	o	o	sm'h	nw.	cloudy.
S. S. Labradore, New York, N. Y*†	30.20	767.0	48.2	9	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	o	o	.....	.....	.....
S. S. Abyssinia, N. 51° 30′, W. 8° 59′*	29.70	754.4	57	13.9	87	wsw.	.....	.....	4	.....	fg.	.....	W.	o	o	mod.	n.	dense fog.
S. S. Wisconsin, N. 46° 06′ W. 47° 48′	30.15	765.8	38	3.3	.....	n'e	.....	.....	3	.....	8	.....	e.	o	o	sli't	.....	fair.
S. S. Wyoming, N. 45° 26′, W. 52° 04′*	30.23	767.8	34	1.1	.....	ne.	.....	.....	4	.....	2	.....	ene.	o	o	mod.	se.	fair.
S. S. Bohemia, Hamburg, Germany †	29.80	756.9	.....	.....	.....	wnw.	.....	.....	2	.....	10	.....	nw.	8 h'r	8 h'r	.....	.....	overcast.
S. S. Cimbria, N. 41° 28′ W. 64° 34	29.92	760.0	50.0	10.0	.....	nne.	.....	.....	8	.....	10	.....	nne.	9 h'r	9 h'r	h'vy	ne.	covered.
S. S. Frisia, N. 49° 04′ W. 16° 18′	30.02	762.5	58	14.4	.....	wsw.	.....	.....	6	.....	10	.....	wsw.	3 h'r	3 h'r	mod.	wnw.	misty.
S. S. Silesia, New York, N. Y†	29.93	760.2	50	10.0	.....	wnw.	.....	.....	5	.....	10	.....	.....	6 h'r	6 h'r	.....	.....	covered.
S. S. Vandalia, N. 49° 28′, W. 9° 40′	30.13	765.3	36.2	2.3	.....	nw.	.....	.....	7	.....	8	.....	nw.	3 h'r	3 h'r	6-7	nw.	d. clouds.
S. S. Wieland, Elbe River, Germany	29.97	761.2	56.1	13.4	.....	wsw.	.....	.....	6	.....	10	.....	wsw.	o	o	mod.	wsw.	cloudy.
S. S. Mentmore, N. 45° —′ W. 51° —′*	30.03	762.7	.....	.....	.....	ene.	.....	.....	4	.....	8	.....	ene.	o	o	mo t.	ne.	fine.
S. S. Nessmore, N. 51° 12′, W. 14° 07′	30.27	768.8	.....	.....	.....	ene.	.....	.....	5	.....	8	.....	e.	o	o	high	e.	threatening.
S. S. Archimedes, N. 48° 50′, W. 25° 06′	29.83	757.7	56.3	13.5	95	w.	.....	.....	6	.....	10	.....	.....	o	o	short	w.	hazy.
S. S. Hevelius, Rio de Janeiro, Brazil*†	30.01	762.2	.....	.....	.....	wnw.	.....	.....	3	.....	10	.....	w.	6 h'r	6 h'r	long	wsw.	overcast.
S. S. Ptolmey, N. 12° 45′, W. 50° 30′†	30.20	767.1	72	22.2	.....	sse.	.....	.....	3	.....	4	.....	sse.	o	o	.....	.....	clear.
S. S. Bulgarian, N. 51° 32′ W. 19° 36′ *	29.93	760.2	82	27.8	75	ese.	.....	.....	2	.....	5	.....	nnw.	o	o	2	ese.	d. clouds.
S. S. City of San Antonio, Nassau, Bahamas†	29.91	759.7	.....	.....	.....	w.	.....	.....	7	.....	10	.....	w.	5 h'r	5 h'r	high	w.	.....
S. S. Colorado, New York, N. Y †	30.12	765.0	76	24.4	.....	ne.	.....	.....	3	.....	2	.....	ne.	o	o	.....	.....	fair.
S. S. San Marcos, N. 26° 53′, W. 88° 10′	30.30	769.6	32	0.0	.....	une.	.....	.....	2	.....	2	.....	nne.	18 h'r	18 h'r	.....	.....	clear.
S. S. Archimede, Palermo, Sicil *†	30.17	766 3	76	24.4	.....	ese.	.....	.....	4	.....	1	.....	ese.	.....	.....	sm'h	.....	fine.
S. S. Glenapp, S. 21° 00′, W. 40° 00′†	29.78	756.4	04	17.8	73	wsw.	.....	.....	6	.....	6	.....	wsw.	6 h'r	6 h'r	.....	.....	cloudy.
S. S. Glenfyne, N. 34° 59′, W. 73° 01′	29.89	759.2	78	25.6	.....	s.	.....	.....	7	.....	9 k	.....	s.	6 h'r	6 h'r	r'gh	s.	raining.
S. S. Chalmette, New York, N. Y†	.....	.....	.....	.....	.....	nnw.	.....	.....	5	.....	10	.....	nw.	1 h'r	1 h'r	sm'h	se.	rainy.
S. S. New York, N. 31° 40′ W. 80° 10′†	30.19	766.8	38	3.3	.....	nne.	.....	.....	5	.....	3	.....	nne.	o	o	h'vy	ne.	clear.
S. S. Denmark, N. 48° 47°, W. 20° 14′	30.05	763.3	68.0	20.0	.....	wsw.	.....	.....	3	.....	8	.....	w.	o	o	.....	.....	cloudy.
S. S. Egypt, N. 51° 08′, W. 21° 45′†	30.05	763 3	60	15.6	.....	wsw.	.....	.....	6	.....	10	.....	w.	o	o	mod.	w.	cloudy.
S. S. England, Liverpool, Eng	29.97	761.2	.....	.....	.....	wnw.	.....	.....	5	.....	8?	.....	w.	6 h'r	6 h'r	long	wnw.	cloudy.
S. S. Erin, N. 47° 35′, W. 36° 56′	29.92	760.0	.....	.....	.....	se.	.....	.....	4	.....	2	.....	se.	o	o	.....	.....	clear ?
S. S. Greece, N. 40° 37′, W. 71° 58′	30.32	770.1	54	12.2	.....	nne.	.....	.....	6	.....	10	.....	ne.	18 h'r	18 h'r	sm'h	wsw.	cloudy.
S. S Helvetia, N. 41° 15′, W. 61° 45′	29.96	761.0	46	7.8	.....	n.	...	.....	7	.....	10	.....	nne.	3 h'r	3 h'r	r'gh	n	gloomy.
S. S. Holland, N. 49° 32′, W. 11° 27′	29.93	760.2	56	13.3	.....	ne.	.....	.....	6	.....	10	.....	ne.	12 h'r	12 h'r	short	ne.	raining.
S. S. The Queen, N. 41° 32′, W. 57° 37′*†	29.98	761.5	52	11.1	.....	wnw.	.....	.....	6	.....	10	.....	.....	14 h'r	14 h'r	h'vy	wnw.	misty.
S. S. Santiago, Cienfuegos, Cuba W. I.	.....	.....	74	23.3	86	ne.	.....	.....	5	.....	8	.....	ese.	shr's	sh'rs	high	ese.	squally.
S. S. City of Alexandria, N. 34° 18′ W. 76° 10′†	30.20	767.1	60	15.6	.....	calm	.....	.....	0	.....	.....	.....	.....	o	o	.....	.....	fine.
S. S. City of Merida, N. 23° 09′, W. 82° 22′	.....	.....	71.6	22	.....	nw.	.....	.....	6	.....	8?	.....	nw.	o	o	sm'h	n.	clear ?
S. S. Knickerbocker, N. 27° 08′ W. 79° 43′*†	30.11	764.8	74	23.3	.....	ne.	.....	.....	1	.....	10	.....	ne.	o	o	light	ne.	cloudy.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
S. S. Amerika, N. 52° 00′, E. 2° 35′ *	29.97	761.2	43.5	6.4	72	e.	.....	.....	3	.....	o	.....	.....	.....	.....	long	.....	cloudy.
S. Donau, N. 49° 37′, W. 37° 04′	30.09	764.3	.....	.....	.....	w.	.....	.....	4	.....	10	.....	w.	15 h'r	15 h'r	.....	.....	cloudy.
														o	o	sm'h	.....	covered.

66
11

1986